आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

.जे. स. २२४१/५७) पौष शुक्ल ११, रविवार संवत २०४६ वि. दिनांक ७ जनवरी १९९० (घोषणा पत्र स. ७/२८ २ ७५)



मनुष्य कौन है ?

"----- मनुष्य उसी
… कहना- जो अन्यायकारी
…लवान से भी न डरे और
धर्मात्मा निर्बल से भी डरता
…है। अर्थात् अन्यायकारियों
के बल की हानि और न्यायकारियों
… बल की उन्नति सर्वदा किया
…रे। इस काम में चाहे
…तना भी दारुण दुःख प्राप्त
…, चाहे प्राण भी भले ही
जावें परन्तु इस मनुष्यपन
रूपीकर्म से पृथक कभी न
होवे।

—— ऋषि दयानन्द

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू. ३०/
एक प्रति	१ ०० रू. मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

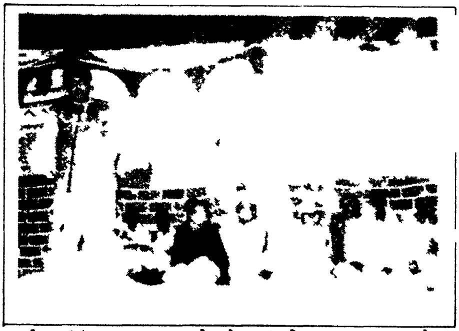
प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष

अंक-१

आर्यसमाज एव राष्ट्र की उन्नति के लिए गहन विचार-विमर्श में तल्लीन आर्य नेतागण



बायें से दाए- डा0 श्रीमती आशा रानी राय, श्री मनमोहन तिवारी, आचार्य वेदव्रत अवस्थी, श्री प0 इन्द्रराज, डा0 विनय प्रताप, श्रीमती सन्तोष कपूर।



आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नवनिर्वाचित मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए आर्य प्रतिनिधियों को सभा के आगामी वर्ष के कार्यकलापों की रूपरेखा बताते हुए।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा
उठा उष्ण तू राजकर समाज।
आर्य समाज आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- पौष शुक्ल ११, संवत् २०४६ वि.
७ जनवरी १९९०, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

चेतना के स्वर

राष्ट्र की जनता ने अपने बहुमत से लगभग चार दशकों तक केन्द्रीय शासन में शासनारूढ़ कांग्रेस के विपक्ष में मत देकर सत्तापरिवर्तन का समर्थन किया और पुराने कांग्रेसी एवं तपे तपाए स्वच्छ छवि के राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में जनतादल ने केन्द्र में शासन भार सम्भाल लिया। नई सरकार के अस्तित्व में आते ही गृहमन्त्री भारत सरकार की पुत्री का अपहरण हो गया। यह एक ऐसी चुनौती थी जिस पर सम्पूर्ण राष्ट्र एवं विदेश में गहरी चिन्ता छा गई। अपहरणकर्ताओं ने गृहमन्त्री की पुत्री डाक्टर रुबिया की रिहाई के लिए अपने साथी उग्रवादियों जावेद अहमद ज़रगर, नूर मोहम्मद-कलवाल शेर खान और मोहम्मद अल्ताफ बट्ट को रिहा करने की मांग रखी जो अन्ततः स्वीकार कर ली गई और सभी आतंकवादी छोड़ दिए गये और हमारी पुत्री हमें वापस मिल गई।

छोड़े गये उग्रवादी दुर्दान्त किस्म के आतंकवादी हैं। इन्हें पाकिस्तानी कैम्पों में प्रशिक्षण दिया गया है और यह वहाँ से ए0के0 47 रायफलें तथा भारी मात्रा में गोलाबारूद लेकर आये थे और अनेक आतंकवादी घटनाओं में जुड़े हुए थे। इन्हें पाकिस्तान जाते हुए ही पकड़ा भी गया था। इनकी रिहाई पर कश्मीर में खुशियां मनाई गई, लोगों ने पाक समर्थक नारे लगाए और अपने घरों तथा बिजली के खम्भों पर पाकिस्तानी झण्डे लहराए। ऐसा मालूम हो रहा था कश्मीर अब भारत का नहीं पाकिस्तान का कोई प्रान्त या उपनिवेश है।

नारी के सम्मान की रक्षा करना भारतीय संस्कृति की अक्षुण्ण परम्परा रही है। रामायण और महाभारत इसकी प्रत्यक्ष गाथायें हैं। किन्तु जिस ढंग से डाक्टर रुबिया की रिहाई सम्भव हुई है वह निश्चित ही महाचिन्तनीय विषय है। यह रिहाई भारत के लिए बहुत मँहगी साबित हो सकती है। अपहरण की घटनाएं विश्व के प्रत्येक स्थान पर होती रही है और होती रहेंगी परन्तु जिस प्रकार इस निर्णायक लड़ाई में हमने घुटने टेक दिए- उससे निःसन्देह उग्रवादियों के हौसले बढ़ेंगे और यदि उन्हें स्थानीय जनसमर्थन भी मिलता रहा तो निश्चित रूप से कश्मीर और पंजाब भारत से नाता तोड़ लेने में सफल हो सकते हैं।

यहाँ एक बात और सुनने में आई है। यहाँ हम उसका उल्लेख करना इसलिए भी आवश्यक समझते हैं कि यह बात स्वयं भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी जैसे विश्वसनीय मुख से निकली है। उनका कहना है कि डा0 रुबिया एक मस्जिद में रखी गई थी और इसका पता स्थानीय प्रशासन एवं जनता को था। उसे प्रतिदिन घर से खाना पहुँचाया जाता था और यह सब नाटक खूंखार आतंकवादियों को छुड़ाने के लिए मिलीभगत के रूप में किया गया था। इसमें भारत सरकार की पराजय का मुख देखना पड़ा है राष्ट्र का अपमान हुआ है। पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी का यह कहना कि मैं इस काण्ड को "एक पिता के नाते नहीं अपितु प्रधानमन्त्री की हैसियत से निपटाता" बहुत मायने रखता है। व्यक्ति से राष्ट्र बड़ा है। रुबिया यदि कुर्बान हो जाती और राष्ट्र की गरिमा पर आँच न आने देती तो हमें भारत माँ की ऐसी लाड़ली पर नाज़ होता। गुरुगोविन्द-सिंह के जिगर के टुकड़े दोनों बच्चों, जोरावर सिंह, फतेह सिंह ने जिन्दा दीवाल में चुना जाना पसन्द किया परन्तु अपने धर्म को नहीं छोड़ा। इसराइल ने आनन फानन में अपने कमाण्डो दस्तों को भेजकर विदेश की भूमि से अपने अपहृत नागरिकों को अपहर्त्ताओं से छुड़ा लिया था। भारत ने जिस तरीके से अपनी पुत्री को मुक्त कराया है वैसा तरीका शायद ही किसी राष्ट्र ने कभी अपनाया हो। हम चेतावनी के स्वर में यही कहना चाहते हैं कि यह तरीका अपनाकर अथवा यों कहना चाहिए कि- "घुटने टेककर" हमने जो सफलता प्राप्त की है उससे उग्रवादियों के हौसले बढ़ रहे हैं और वे भविष्य में और ऐसी अनेक घटनाएं कर सकते हैं। इन तत्वों के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। उसकी योजना है कि भारत के ये दोनों सीमान्त प्रदेश पंजाब और कश्मीर हिन्दूरहित बना दिए जायें और फिर स्थानीय सहयोग से इन पर पाकिस्तानी आधिपत्य आसानी से जमाया जा सकता है या आपस में मिलकर कश्मीर का हिस्सा पाकिस्तान को पंजाब का हिस्सा खालिस्तान का स्वप्न देखने वाले उग्रवादियों को दिया जा सकता है।

इधर पाकिस्तान ने भारत की सीमाओं पर बड़ा जबर्दस्त ऐतिहासिक युद्धाभ्यास किया है और कल्पित नामधारी देश पर हमले की योजना बनाई है जो और कोई नहीं भारत देश ही है। उसकी योजना है पहिली स्टेप में ही कश्मीर हथिया लिया जाय और स्थानीय जनसहयोग से वहाँ पपेट शासन पाकिस्तान का घोषित कर दिया जाय। भारत के सामने यह बड़ी जबर्दस्त चुनौती है, इसका इलाज भारत की सैन्यशक्ति को कई सौ गुना बढ़ाकर तथा सामाजिक स्तर पर आर्यसमाज के शुद्धीकरण अभियान को बढ़ावा देकर ही किया जा सकता है।

श्री कृष्ण बल्देव महाना दिवंगत



श्री कृष्ण बल्देव महाना

आर्यजगत में यह समाचार बड़े ही दुख के साथ सुना जायेगा कि आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष, लखनऊ की अनेक जनसेवी सामाजिक धार्मिक संस्थाओं के संस्थापक संचालक आर्यसमाज के महानस्तम्भ प्रसिद्ध उद्योगपति श्री कृष्णबल्देव महाना का लखनऊ में दिनांक- 3। दिसम्बर-1989 को प्रातः देहावसान हो गया।

उनके शोक में नगर की अनेक शैक्षणिक सामाजिक संस्थाएं, आर्यसमाजें, आर्यप्रतिनिधि सभा कार्यालय एवं श्रृंगारनगर, आलमबाग, चन्द्रनगर आदि अनेकों मोहल्लों की अनेकों दूकानें बन्द रहीं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य देवव्रत अवस्थी ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर उनके अन्तिम दर्शनार्थ लखनऊ नगर तथा बाहर से आया हुआ शोकाकुल जन समूह उमड़ पड़ा था। उनका जीवन आर्यजगत के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित रहा। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व तक वे सभा के बृहदधिवेशन में सम्मिलित हुए थे और सभा के कार्यों में रुचि लेते रहे थे।

दिनांक- 8 जनवरी 1989 को सायंकाल 2 1/2 से 4 1/2 बजे तक उनके निवास श्रृंगारनगर 569क/28 पर शोकसभा का आयोजन है।

सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए उन्हें अपनी शतशत श्रद्धांजलि अर्पित की है और दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए तथा पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की है।

साइमन कमीशन 'गो बैक"

जन्म शताब्दी का पुण्यस्मरण

जीवन की एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक घटना

पुण्यश्लोक पं० रासबिहारी जी तिवारी

• गोपीकृष्ण अरोड़ा आई.ए.एस.



स्वर्गीय प रहम बिहारा तिवारा

दिसम्बर 1927 में काकोरा काड के चार शहीद जब एक के बाद एक फांसी पर चढ़ाये गये तो वतन और आजादी का भावना सारे देश में बिजली की तरह कौंध गयी थी। उसी समय साइमन कमीशन की नियुक्ति का घोषणा से देश तिलमिला उठा था। कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में पारित प्रस्ताव ने कमीशन के बहिष्कार को संगठित रूप प्रदान कर दिया। लाहौर में लाला लाजपतराय पर पुलिस के डंडों के प्रहार से उनकी मृत्यु ने बहिष्कार आन्दोलन को और भी उग्र बना दिया था

साइमन कमीशन के लखनऊ आगमन के हफ्तों पहले से उसके बहिष्कार की व्यवस्थित योजना कार्यान्वित की जाने लगी थी। उस जमाने में मोटरें नहीं इक्के, तांगे, चलते थे। आज तो मन्दिरों में कीर्तन तथा मस्जिदों में अजान के लिए लाउडस्पीकर स्थायीरूप से लगे हैं। और किसी मीटिंग का ऐलान करने के लिए अगर जीप नहीं तो रिक्शा में ही लाउडस्पीकर से ऐलान किया जाता है। उस जमाने में इस काम के लिए इक्के किराये पर लिए जाते थे। इक्के के एक डंडे पर कांग्रेस का झंडा बांध दिया जाता था और दो आदमी अगल-बगल बैठते थे और साथ में एक ढोलक तथा एक कमची होती थी। थोड़ी दूर चलकर इक्का रोक दिया जाता था। एक आदमी ढोलक पर जोर-जोर कमची मारकर नगाड़े की तरह बजाता था और दूसरा इक्के पर ही खड़े होकर चिल्लाता था।

खलक खुदा का, मुल्क हिन्दोस्तान का

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में काकोरी काण्ड 'ब्रिटिशराज के कफन की कील के नाम से याद किया जाता है। इसकी सम्पूर्ण योजना आर्य समाजियों ने बनाई थी। योजना पुरुष थे 'स्व० पं० रास बिहारी तिवारी और कार्य जिसे के अगुआ थे आर्यसमाज के प्रमुख सदस्य श्री रोशनसिंह जिन्हें दण्ड स्वरूप फांसी की सजा हुई थी। श्री तिवारी जी ने उनके पुत्र श्री चन्द्रदेव को गुरुकुल वृन्दावन में अध्ययनार्थ भेजा तथा शिक्षा के अतिरिक्त अन्य सभी व्ययों की व्यवस्था की। श्री चन्द्रदेव स्नातक बनने से पूर्व दो बार स्वतन्त्रता संग्राम में जेल गये।

आर्यसमाज के नेता तथा कार्यकर्ताओं के राष्ट्रीय संग्राम में योगदान पर एक स्वतन्त्र शोध की आवश्यकता है।

–सम्पादक।

हुक्म कांग्रेस कमेटी का । इसके आगे जो भी एलान करना होता मीटिंग हो जुलूस निकलने की बात हो अथवा किसी राष्ट्रीय नेता का स्वागत करने के लिए स्टेशन पहुँचने की बात हो–ऐलान कर इक्का आगे बढ़ जाता था।

साइमन कमीशन के बहिष्कार का ऐलान हफ्तों पहले शुरू हो गया था। जैसे-जैसे वह दिन नजदीक आता गया इस प्रकार के ऐलानों के साथ उन्हीं इक्कों पर मुहल्ले मुहल्ले छोटे-छोटे भाषण देना भी शुरू कर दिया गया था। स्ट्रीट कार्नर मीटिंगों का यही प्रारम्भिक रूप था।

प्राय एक सप्ताह पहले बहिष्कार योजना का कार्यक्रम एक कदम और आगे बढ़ाया गया। हर मुहल्ले में जुलूस निकाले जाने लगे और बड़ी-बड़ी सभायें की जाने लगीं। अमीनुद्दौला पार्क (वर्तमान नाम झंडे वाला पार्क) पूरे शहर की कार्यवाहियों का केन्द्र था क्योंकि वहीं कांग्रेस का कार्यालय तथा वहीं लखनऊ के तत्कालीन सर्वमान्य नेता बाबू मोहनलाल सक्सेना का निवास स्थान था। (श्री औषधालय के ऊपर रास्ता पीछे से है। उस समय उस पट्टी में वही आखिरी इमारत थी)।

प्रारम्भ में तो अधिकारियों की ओर से कोई रुकावट नहीं डाली गयी लेकिन साइमन आगमन के एक दिन पहले 29 नवम्बर 1928 को जब हजरतगंज क्षेत्र में नरही से एक छोटा सा जुलूस पं० जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में और दूसरी ओर वैसा ही छोटा जुलूस पं० गोविन्द वल्लभ पन्त के नेतृत्व में बाहर निकला तो घुड़सवार पुलिस ने रोका। रोका ही नहीं डंडे भी चलाये थे यद्यपि उच्चाधिकारियों के आदेश पर पुलिस और घुड़सवार तुरन्त बाद ही हटा लिये गये थे लेकिन यह खबर सारे नगर में फैल चुकी थी कि नेहरू जी पर डंडे पड़े। उस शाम की सभा की उपस्थिति विशाल हो गयी थी।

और 30 नवम्बर को साइमन कमीशन के आगमन वाले दिन प्रात चार बजे एक साथ मुहल्ले-मुहल्ले नहीं मुहल्ले की हर गली के नुक्कड़ पर बिगुल बज उठे थे। तीन बार बिगुलों की गुहार के बाद 5-5, 10 10 की टुकड़िया झंडा लिये प्रभाती गाती हर ओर से निकल पड़ीं। उन सबके कदम चारबाग स्टेशन की ओर थे और हर कदम पर उनकी संख्या में वृद्धि होती जा रही थी। मुख्य जुलूस अमीनुद्दौला पार्क से चला था, जिसमें पं० जवाहरलाल-नेहरू पं० गोविन्द वल्लभ पन्त बाबू-मोहनलाल सक्सेना श्री चन्द्रभानु गुप्त अगुआ थे। श्रीराम अनाथालय (जहां

— शेष पृष्ठ १० पर

साइमन कमीशन (1927)

समस्त देश ने कांग्रेस के आवाहन पर साइमन कमीशन का बहिष्कार किया- कमीशन इस भयानक विद्रोह की भावना को देख कर बम्बई से ही वापस चला गया। किन्तु 1928 में वह पुन भारत आया। 26 नवम्बर को साइमन कमीशन के विरोध में सरकारी मनाही होने पर भी लखनऊ में जुलूस निकाला गया- चन्द्रभान जुलूस निकालने के पक्षपाती थे। कुछ पुराने नेता इसका विरोध कर रहे थे। 28 नवम्बर के जुलूस में पं० जवाहरलाल पं० गोविन्दवल्लभ पन्त शरीक थे। पुलिस के निर्मम प्रहार से इनके भी चोटें आईं। 30 नवम्बर को कमीशन का लखनऊ आगमन था। प्रात 7 बजे बड़े जुलूस के साथ नेहरूजी पंतजी चन्द्रभानु स्टेशन की ओर बढ़े। जुलूस में महिलायें भी थीं। पुलिस ने जुलूस को बेकाबू देखा तो फौज बुलाई गई। पुलिस अफसर टिपसन बार-बार लाठी प्रहार का हुक्म दे रहा था। किन्तु जनता ने साहस न छोड़ा। चन्द्रभानु गुप्त को छोटे कद का फायदा रहा। पं० गोविन्द वल्लभपन्त और पं० रासबिहारी तिवारी सबसे अधिक पुलिस की लाठियों का शिकार हुए। कमीशन का कैसरबाग बटलर पार्क में भोज था विनोदी चन्द्रभानु ने अपने साथियों के साथ पतंग पर साइमन-गो-बैक लिखकर इस उक्ति से उड़ाई कि ठीक भोज के समय पार्क में पतंग गिरी। उत्कट देश प्रेम और विद्रोह में विनोद गुप्त जी की खूबी रही है।

——स्वतन्त्र भारत से साभार

महामानव दयानन्द और उनके कार्य

लेखक- अरविन्द घोष
अनुवाद- श्री देवेन्द्र दत्त द्विवेदी

जब भावी पीढ़ी नवजागरण से सम्बद्ध महापुरुषों के जीवन को देखेगी तो अद्वितीय विदत्ता एवं महान कार्यों से सम्पन्न एक व्यक्ति अनुपम एवं अतुलनीय स्पष्टता के साथ उसके सामने हठात् उभर आयेगा। वह दृश्य ऐसा होगा जिसमें अनेकों पहाड़ियों की चोटियाँ ऊपर नीचे जाती हुई अपने अंग प्रत्यंगों को छाव हरे वस्त्रों से आँखों को मुग्ध कर रही हों, परन्तु इन सबमें एक पर्वतश्रृंग अपनी विशेषता रखता है वह अपनी शक्ति, अपनी सुदृढ़ वज्र के समान बनावट के साथ अपने शिखर की हरियाली के बीच वाले एक देवदारु वृक्ष से गगन की उच्चता को चूम रहा हो। शक्ति एव उर्वरता प्रदान करने वाला एक निर्मल निर्झर घाटी को आरोग्यता तथा जीवन के जल से सींच रहा हो। मेरे मन पर स्वामी दयानन्द ने ऐसा ही प्रभाव डाला।

यह काठियावाड़ प्रदेश ही था जिसने इस सबल सुधारक एवम् नव-निर्माता को जन्म दिया। इस विचित्र-भूमि का स्फूर्ति एवं चेतनता, गिरनार तथा पहाड़ियों की दृढ़ता, उसके (काठियावाड़) किनारों से टकराती हुई सामुद्रिक तरंगों के उद्घोष, अविकृत प्रकृति के सारे-के-सारे मानवीय उपादान उस व्यक्ति की चेतना तथा चरित्र में प्रविष्ट हुए थे। शरीर दृढ़, अकृत्रिम, (किन्तु विकसित), स्फुरण एवं प्रबुद्धता से युक्त वह व्यक्ति सजीव कृतियों का जनक बना।

उस व्यक्ति ने मेरे मन तथा मेरी भावना पर जो प्रभाव डाला है यदि उसे व्यक्त करूँ तो उसके चरित्र के उन दो महान् लक्षणों पर विचारना आरम्भ करना होगा जो समस्त समकालिकों एवं समकर्मियों से उसे पृथक् करते हैं। अन्य महान् भारतीयों ने भारत की चेतना में अपने को उड़ेल कर, अथवा समाज के गतिशील गात्र के साथ एकीकरण द्वारा नवनिर्माण की प्रक्रिया में जो योगदान दिया है वह एक दिन प्रकृति के औपचारिक प्रजनन के रूप में अभिव्यक्त होगा। वे प्रेरक किंवा उत्तेजक शक्ति के रूप में कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे और वे हमारे बीच स्मृति के रूप में आज भी जीवित हैं और आज हम जो हैं, उनके बिना नहीं हो सकते थे। साथ ही, निश्चयपूर्वक हम यह भी नहीं कह सकते कि उनके किस कार्य का विशेष तात्पर्य क्या था और कौन-सी वस्तु उनकी भावना से स्पष्टतः प्रभावित है?

रानाडे तथा विवेकानन्द

महादेव गोविन्द रानाडे का उदाहरण हमारे सामने है। और, वह भी उस काल से सम्बद्ध है जिसमें वैविध्यपूर्ण कार्यों की अतिशय अपेक्षा थी। यदि कोई विदेशी हमसे यह पूछे कि इस मराठा, अर्थशास्त्री, सुधारक तथा देश-भक्त ने निश्चित रूप से क्या किया? तो उत्तर देने में हमें किंचित कठिनाई का अनुभव होगा। और, अन्त में हमें अन्य प्रश्नों के भी उत्तर देने होंगे। "महादेव गोविन्द रानाडे नहीं होते तो आज का महाराष्ट्र कैसा होता? साथ ही, आज का भारत उस महाराष्ट्र के अभाव में कैसा होता?" जो लोग मनुष्यों और घटनाओं के प्रवाह को प्रभावित करने की प्रक्रिया में अपना पूर्ण विलय कराने में समर्थ थे, अथवा वे लोग जिनकी शक्ति एवं कार्य अधिक स्पष्ट थे उन सबके विषय में भी मेरी प्रतिक्रिया समान है। विवेकानन्द

जिन्हें पौरुष की प्रतिमा अथवा नर-शार्दूल कहा जा सकता है उन्होंने अपने पीछे जो कार्य छोड़ा वे उनकी संरचनाशक्ति तथा दृढ़ता के अनुरूप नहीं थे। हम उसके प्रभाव को अति उन्नत रूप से कार्यरत पाते हैं। लेकिन, हम यह तो नहीं जानते हैं, कि उसकी महत्ता, अनुभूति एवं ऐहिक दृढ़ता का स्रोत क्या था? फिर भी, हम यह कह देते हैं, "देखो विवेकानन्द अपनी माता (भारतभूमि) तथा उसकी सन्तति की आत्मा में जीवित हैं।" ये सभी व्यक्ति अपनी-अपनी मिश्रित कार्यों की तुलना में बहुत बड़े हैं। अपने पीछे जो कार्य छोड़ गये हैं, उनकी तुलना में इनके अमूर्त एवं व्यापक प्रभाव महत्तर हैं।

अतुलनीय दयानन्द

दयानन्द की कार्य पद्धति सर्वथा भिन्न थी। इस व्यक्ति ने मनुष्यों की घटनाओं की अनिश्चित विधाओं तथा प्रवाह में अपने को विलीन नहीं कर दिया। अपितु, उन सब पर अपने सुदृढ़ व्यक्तित्व की छाप लगा दी। यह वह व्यक्ति है जिसकी सभी मूर्तिमती कृतियां उसकी आत्मिक सत्ता की संततियां हैं- वैसी संततियां जो अपने जनक के दृढ़ एवं सशक्त व्यक्तित्व की प्रतिकृतियां हैं। वह व्यक्ति उन सभी कार्यों को साफ-साफ जानता था जिन्हें सम्पन्न करने के लिये उसे इस धरती पर भेजा गया था। इस दिव्य दृष्टि सम्पन्न जन्मजात-संरचयिता ने साधनों का चयन किया। परिस्थितियों को अनुकूल बनाया तथा अपनी मान्यताओं को दृढ़ता के साथ साकार किया। मैं ईश्वर की शिल्पशाला में कार्यरत इस शिल्पी को जब भी देखता हूँ तो समस्याओं से सफल संघर्ष करती हुई इनकी अनेक प्रतिमाएँ मेरे दृष्टिपथ में अवतीर्ण होती हैं। वह प्रकाश का सैनिक था, भगवान की सृष्टि का प्रदीप्त योद्धा, मनुष्यों और उनके सामूहिक प्रयासों का शिल्पी, समस्याओं का निर्भीक एवं सफल समाधान, दृढ़ आत्मशक्ति-सम्पन्न तथा अजेय था। दो बातें दयानन्द को सबसे पृथक करती हैं। मेरी दृष्टि में आत्मिक वर्चस्व एवं सशक्त व्यवहारिकता-ये दो शब्द दयानन्द का प्रथम परिचय प्रदान करते हैं।

दयानन्द की सभी कृतियों की गणना यदि हम विराम भी ले लें, तथापि यह स्वीकार करने के लिये हम बाध्य हैं कि उसने जिस भावना से सारे कार्य किए उसने (उस भावना ने) उसे हमारे महान् निर्माताओं के मध्य महत्तम बना दिया। उसने राष्ट्रीय चरित्र में प्राचीन आर्य तत्वों को पुनः प्रतिष्ठित कर दिया। मैं समझता हूँ कि यह उसकी दूसरी विशेषता है जो प्रथम के मूल में है। हम सभी प्रवाहों के प्रभाव में बह जाते हैं। हम बाह्य प्रभावों को अपने में प्रविष्ट होने देते हैं तथा अपनी भंगिमा उन्हें निर्धारित करने देते हैं। जब कुछ रूपायित हो जाता है तो प्रभावकारिणी एक नई धारा फूट निकलती है। हम स्वयं अप्रभावी एवं निश्चेष्ट रहते हैं। हमारी कोई चेष्टा होती भी है तो, परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने की। यदि हम में संघर्ष-शील पौरुष कभी जागता भी तो वह क्षण-स्थायी एवं दिशाहीन बनकर। हम तो अवसरवादी हैं।

दयानन्द ने जिन वस्तुओं को पाया उन्हें आत्मसात किया, जिन्हें हितकर समझा उन्हें मंगलमय स्वरूप देकर प्रकट किया। वह प्रकृति की लचीली रचना नहीं था स्वयं प्रकृति को ही लचा देने वाला था। वह आज भी हमारी क्रियाहीन अयोग्यता को ललकार रहा है- कह रहा है-- ओ भारत, (भारतवासियो) अपने अनगढ़ रूप पर मत इतरा। उठो जागो और परमात्मा की इच्छा के अनुकूल, उसकी प्रकाशमयी प्रेरणा के अनुकूल, अपने को संवारो। उसकी (परमात्मा की) इच्छा के अनुकूल अपने को गढ़ो। और गढ़ो जीवन को में। आत्मा बनो, पर मानुष। परमात्मा का सेवक बनो, पर प्रकृति का स्वामी। ये बातें हैं जो दयानन्द के व्यक्तित्व की ओर इंगित करती हैं। उसकी अन्तःकरण में परमात्मा विराजता था। उसके दृष्टि-पथ में स्पष्ट चित्र थे और मनोनुकूल प्रतिमाएं गढ़ने में उसके हाथ समर्थ थे। वह स्वयं वज्रांग था, तथा वज्र-जैसी चोट से उसने वस्तु संघटना की।

भारत की परम्परागत आधार शिला वेद

दयानन्द का जीवन-वृत्त हमें बतलाता है कि वह आत्मिक क्रियाशीलता का सशक्त निर्झर था। उसके सभी कार्यों पर उसकी स्वयं समुद्भूत-शक्ति तथा दृढ़ता अंकित है। उसने वस्तुओं के व्यावहारिक रूप पर दृष्टि क्षेप किया तथा तत्काल समझ गया कि भारत के नूतन क्रान्तिकारी प्रादुर्भाव की प्रेरणा उसके जीवन तथा उसकी संस्कृति के मूल में निहित है। वह प्रादुर्भाव उसके (भारत) प्रथम जन्म के पुष्प से फलित होगा। महान् वैदिक ओज ()। (के साथ उसने इस धर्मग्रन्थ (वेद) पर हाथ डाला जिसके मूर्खतापूर्ण तथा तत्वज्ञानशून्य भाष्यों ने विद्रूप उपस्थित कर दिया था। भाष्यकारों के अज्ञान ने उसे उच्च आसन से अपकृष्य कर बर्बरों की गाथाएं बना दिया था। दयानन्द ने वेदों में देखा इस राष्ट्र के स्रष्टा अपने पूर्वजों की गम्भीर एवं गरिमा-पूर्ण आत्मशक्ति का उत्स-दैवी ज्ञान, उपासना तथा कर्म का आधार। मैं यह नहीं कह सकता कि दयानन्द का

— शेष पृष्ठ ९ पर

आर्य भजनोपदेशक प्रतियोगिता व भजनोपदेशकों का सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के 104वें वृहदधिवेशन के अवसर पर डी0ए0वी0 कालेज लखनऊ के सुसज्जित पन्डाल में दिनांक 24 दिसम्बर-1989 को एक भव्य संगीतात्मक प्रतियोगिता रात्रि में 8-30 बजे से आयोजित हुई। इस प्रतियोगिता में सभा के भजनोपदेशकों के अतिरिक्त अन्य कई विख्यात संगीतज्ञ, कवि तथा कवियित्रियों ने अपने सुमधुर भक्तिसंगीत से पण्डाल में उपस्थित अपार जनसमूह का रात्रिभर भक्तिरस से परिपूर्ण मनोरंजन किया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभा के निम्न भजनोपदेशकों को माननीय सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराजजी द्वारा मंच पर निम्न प्रकार दि0 25दिसम्बर को प्रातः कालीन अधिवेशन में पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।

प्रतियोगिता परिणाम :

1-श्री गजराज सिंह जी"राघव" प्रथम भजनोपदेशक

ऊनी शाल- श्री विक्रम सिंह जी आर्य, प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के सौजन्य से।

100=00 रु0 की सम्मान राशि एवं वैदिक साहित्य सभा द्वारा।
100=00 रु0 श्री ओमप्रकाश जी आर्य सिया द्वारा।

2-श्री योगेशदत्त जी आर्य, द्वितीय भजनोपदेशक

ऊनी शाल- श्री विक्रम सिंह जी आर्य, प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के सौजन्य से।

100=00 की सम्मान राशि एवं वैदिक साहित्य सभा द्वारा।

3-(क) श्री तेजपाल सिंह जी आर्य तृतीय भजनोपदेशक
(ख) श्री बृजपाल जी शर्मा, तृतीय भजनोपदेशक।

प्रत्येक को 100=00 की सम्मान राशि तथा वैदिक साहित्य सभा द्वारा इसके अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियोगियों को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया।

मनमोहन तिवारी — मन्त्री
हरिश्चन्द्र आर्य — अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

शोक प्रस्ताव

दि0 17 दिसम्बर 89 को आ0स0 मोहम्मदी (खीरी) में श्री हरद्वारीलाल-रस्तोगी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया। परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करें।

"आलोकित हो"

— राधेश्याम आर्य

जन - जन जीवन आलोकित हो,
मानव का मन अब प्रमुदित हो,
ज्ञान तथा विज्ञान तरणि की -
नूतन स्वर्णिम रश्मि उदित हो।
ज्ञानालोक धरणि पर फैले,
दूर हटें सब भाव विषैले,
क्षत - विक्षत हों मानव - मन के--
द्वन्द पनपते जो मटमैले।
शान्ति सुखों का शुचि प्रवाह हो,
दीन-दलित की नष्ट आह हो,
परहित-परसेवा की खातिर--
मन में उपजी मृदुल चाह हो।
धर्म पथों पर चलें निरन्तर,
पथ प्रशस्त हों पावन शुचितर,
प्रगति पथों पर बढ़ता जाए-
कदम हमारा अभिनव द्रुततर।।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

- आर्यसमाज तालिबनगर (अलीगढ़) का 11वाँ वार्षिकोत्सव दि0 10 से 12 दिसम्बर 89 तक धूमधाम से मनाया गया। उर्दू के विरोध में प्रस्ताव पास किया गया।

वधू चाहिए

चि0 राजेशकुमार आयु 21 वर्ष रंग गेहुआँ स्वस्थ इन्टर पास साथ में टाइप भी जानता है तथा भजनोपदेशक का कार्य करता है, के लिए गृहकार्य में दक्ष आर्य विचारधारा की सुन्दर व शिक्षित कन्या की आवश्यकता है, विवाह दहेज रहित जाति-पाँति का बन्धन नहीं। पता- सीताराम आर्य, ग्राम- खेरवा पो0 कुरसौंवाँ,जि0हरदोई।

- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के निरीक्षक आर्य मुनि वानप्रस्थ ने निम्न आर्यसमाजों का दिनांक- 2,3 दिसम्बर जाफराबाद, 3,4 दिसम्बर आ0स0 सिरकोना, 4,5 दिसम्बर आ0स0 शीतलगंज 5,6 गुलवन, 6,7 ग्राम पुरेव 10,11 दिसम्बर पतरही आर्यसमाज का निरीक्षण किया। तथा कार्यकर्ताओं की बैठकें कीं। साप्ताहिक सत्संग के लिए प्रेरणा की तथा सार्वदेशिक सभा के तीन सूत्रीय कार्यक्रम का पालन करने की प्रेरणा की गोवधबन्दी, अंग्रेजी हटाओ, शराबबन्दी के आन्दोलन को सफल बनाने की प्रेरणा की।

पृष्ठ ४ का शेष.....

मौलिक भाष्य वेदों की सुनिश्चित व्याख्या के रूप में स्वीकार किया जायेगा या·नहीं। इस आश्चर्यमयी गम्भीर ऐसी वाणी के अन्य अंगों पर प्रकाश डालने वाली इतर सूक्ष्म व्याख्याओं की भी आवश्यकता है-- ऐसी मेरी धारणा है। लेकिन, यह एक सामान्यसी बात है। मुख्य तो यह है उसने (दयानन्द ने) भारत की परम्परागत आधार शिला को समझा। साहस-पूर्ण कल्पना तथा वेदों के प्रति सूक्ष्मदृष्टि के आधार पर युवकों, अन्यजनों या सम्पूर्ण राष्ट्र को शिक्षित (अनुप्राणित) करने का संकल्प लिया। एक दूसरे ओजस्वी व्यक्ति राममोहन राय ने नदियों और धान के खेतों के किनारेकिनारे बंगाल को झक-झोर कर जगाने की चेष्टा की। लेकिन, वह भी उपनिषदों के पास ही जा रुका। दयानन्द ने उससे भी आगे बढ़कर भारत के उद्गम स्रोत को वेदों में देखा वह था। राष्ट्रीय चेतना-सम्पन्न तथा उसे (राष्ट्र को) देदीप्यमान बना देने में समर्थ। वह जिन कार्यों का जनक बना सभी राष्ट्रीय भावना से अनिवार्यतः ओत-प्रोत थे।

दयानन्द का राष्ट्रवाद

राष्ट्रवादी होने के लिये रूढ़िवादी होना आवश्यक नहीं। अतीत से सबल सामग्रियों को निकाल कर अर्वाचीन जीवन के प्रवाह में डाल देना ही सुधार या नव सर्जन की शक्तिमती विधा है। दयानन्द की कृतियाँ अतीत के वैसे ही सिद्धान्तों का पुनर्ग्रहण हैं जिनके सांचे में वर्तमान ढल सके। हम इस प्रयास में पाते हैं, उस अकृत्रिम निर्झर को जो मूलतः विशुद्ध, अपने उद्गम के अनुरूप नैसर्गिक तथा पुनःपुनः नवीन होने में सक्षम है।

हमने इस व्यक्ति के कार्यों में तथा स्वयं इस व्यक्ति में सत्यनिष्ठा एवं पूर्ण स्पष्टता से ओत-प्रोत नैसर्गिक कृति-शक्ति को पाया। स्पष्ट चिन्तन-शीलता, स्वयं तथा अन्यों के प्रति ऋजुता, कर्तव्यों के प्रति सत्य-निष्ठा, हमारी कुटिल, उलझी हुई तथा पतनोन्मुखी मानवता के लिये वरदान होती है। इस श्रेष्ठ कर्मी की शक्ति एवं ओजस्विनी सफलता का यही रहस्य है। प्रकृति चाहती है कि दृढ़ संकल्प तथा स्पष्टता के साथ कोई उसके द्वार खटखटाये और तभी उचित और अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं। यह भी उचित है कि आचार्य अपने अनुयायियों पर अपना स्थायी छाप छोड़े जिससे कि यह कहा जा सके कि समर्पित व्यक्तियों का एक संगठन है, अथवा वैसी सामग्रियां उपस्थित हैं जिनका यथावसर उपयोग किया जा सकता है।

दयानन्द की छाप सत्य

सत्य अतिशय सरल प्रतीत होता है, तथापि है कठिन। सत्य वैदिक शिक्षा का एक महान शब्द है। आत्मा में सत्य, दृष्टि में सत्य, उद्देश्य में सत्य, क्रिया में सत्य, व्यवहारिक-सत्य, आर्यत्व, चारित्रिक शुद्धता, दृढ़ निष्ठा कथन और कर्म में समरूपता प्राचीन आर्य आचार के स्वरूप थे। अविकृत ओज प्रमाणित करता है कि मनुष्य प्रकृति से दूर नहीं भगा है। यह निसर्ग के पुत्र देव-पुत्र की पहचान है। यही छाप है जिसे दयानन्द ने अपने पीछे छोड़ा, यही प्रतिमा है जिसे देखकर उस शिल्पी का अनुमान किया जा सकता है। भारत में दयानन्द की भावना अपने विशुद्ध रूप में सजीव और क्रियाशील रहे। हमें वे सभी वस्तुयें प्रदान करती रहे जिनकी हमें आवश्यकता है- अर्थात् विशुद्धशक्ति, अतिशय स्पष्टता सूक्ष्मदृष्टि, सुदक्ष क्रियाशक्ति और सत्य संकल्प। " ◘

अस्मिता का अपमान

•डा. श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफेसर कालोनी,
श्यामगंज, बरेली।

अस्मिता का चल रहा अपमान
चाल शकुनी सी बनाई
प्रिय सुमेधा है सुलाई।
चम्पई छवि को सुलाकर,
बेल है विष की लगाई।
सौत घर में आ गई जब
कुलवधू को शेष क्या स्थान।

हैं दिवस "हिन्दी" मनाते,
दूर उर कितने बनाते।
थोप कर "उर्दू" वृथा ही
पथ-प्रदर्शक कब लजाते।
सूत्र उलझाते स्वयं ही,
जो समझते प्रेम का सोपान।

आग हैं पहिले लगाते,
मेघ का अभिनय रचाते।
ग्रस्त हैं दुर्नीतियों से,
"विदुर" को बन्दी बनाते।
खोखली कर नींव अपनी,
गा रहे हैं किस विजय का गान?

प्राण शव में फूंकते हैं,
मूल बिन, तरु सूखते हैं।
जागरण के स्वर मुखर जो,
क्यों उन्हीं से ऊबते हैं।
साम्प्रदायिक सर्व पोषित,
एकता का कर रहे अवसान।

भारती से द्रोह करते,
त्याग है यह देश पावन,
कुर्सियों का मोह जिनको,
पर उपेक्षित गेह आँगन।
देश को परदेश कर के,
क्या सफल नेतृत्व की पहचान।

भूमि, जन, संस्कृति, सुभाषा,
तत्व के निर्माण करते,
राष्ट्र है जिनसे समुन्नत,
विप्लवों को शीघ्र हरते,
खोलकर निज दुर्ग अपना,
शत्रुदल का कर रहे सम्मान।

पृष्ठ ८ का शेष.....

49-श्री वेद प्रकाश जी इंजीनियर,
बी0-10, शम्भु नगर, मेरठ।
50-श्री रामनारायण गुप्ता,
आर्यसमाज सिरोटिया बाजार,
सोनभद्र।
51-श्री राजेन्द्र प्रसाद जी श्रीवास्तव,
आर्यसमाज प्रतापगढ़। प्रतापगढ़।
52-श्री डा0 राम बरदान सिंह जी,
आर्यसमाज, महाराजगंज, रायबरेली।
53-श्री प्रो0 सेवाराम जी त्यागी।
पुलिस ट्रेनिंग कालेज, सीतापुर। ◘

यज्ञ एवं जन जागरण समारोह

आर्यसमाज मकूर (उन्नाव) का वार्षिकोत्सव यज्ञ एवं जन जागरण समारोह दि0 12 से 14 जनवरी 1990 को सम्पन्न होगा जिसमें अनेक विद्वान भजनोपदेशक पधार रहे हैं जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

पृष्ठ ३ का शेष.....

अब आर0टी0 ओ0 का दफ्तर है। के पास पं0 रासबिहारी तिवारी जुलूस सहित उसमें शामिल हो गये थे।

चारबाग स्टेशन उस समय पूरा बना नहीं था। जहां अब 1 नं0 का प्लेट फार्म है वह बाहर निकलने का मार्ग था। उसके सामने खाली मैदान पड़े थे। बीच की सड़क के इधर भी लाटूश रोड के दोनों ओर खुले मैदान थे। वह रेलवे की ही जमीन थी। जिनके बीच से लाटूशरोड निकलता थी। हजरतगंज से जाती हुई बस जिस सड़क पर बांये मुड़कर अपने स्टैण्ड पर जाती है उस समय वह निकासी की सड़क थी और उसी से सरकारी गाड़ियां जाने वाली थीं, जुलूस को स्टेशन के अन्दर जाने के पहले चौराहे पर ही पैदल पुलिस ने रोक दिया था। अतः लाटूशरोड के बाईं ओर के मैदान में उपर्युक्त सड़क के मोड़ के सामने जुलूस खड़ा हो गया।

सड़क के एक ओर जनता की भीड़ थी तो दूसरी ओर पुलिस और घुड़सवारों की भीड़ थी जिससे वह मैदान, जो अब रेलवे का खेल का मैदान है पूरा भरा हुआ था।

इधर नारे लग रहे थे। झुंडों के बीच कोई कुछ हंसी की बात कह देता तो इतनी जोर के कहकहे लग उठते मानों नारे ही लग रहे हो। शायद यह नापसन्द हुआ या शायद बहिष्कार प्रदर्शन के लिए चुना गया। वह मोर्चे का स्थान असुविधाजनक था अथवा जो हो। अचानक उस ओर से घुड़सवारों का एक झुंड घोड़ों को सरपट दौड़ाता आया और छोटे, बड़े-बूढ़े बच्चे सभी पर निर्दयता से डंडे बरसाना शुरु कर दिया। देखते-देखते कितने धराशायी हो गये। भगदड़ मच गयी। नारों की गूंज में चिल्लाहट, पुकार और कराहने की आवाजों ने मिल कर एक भयानक वातावरण उपस्थित कर दिया था।

तभी कोई चिल्लाया था नेहरु जी को बचाओ। बहुत से भागते हुए लोग वापस मुड़कर दौड़े। आसपास खड़े लोगों ने नेहरु जी को घेर कर पुलिस के डंडों के विरुद्ध मानो उन्हें कवच पहना दिया था। डंडे उन्हीं पर पड़ते रहे नेहरु जी पर आंच नहीं आयी अन्य सभी पर लाठियां पड़ रही थीं। अचानक किसी ने या कइयों ने नेहरु जी को उठा कर प्रथम पंक्ति से काफी पीछे कर लिया। तभी घुड़सवार भी वापस हो गये। लेकिन पुलिस उस स्थान पर एकत्र हो गयी। अतः प्रदर्शनकारी लगभग आधा फर्लांग दाहिनी ओर उसी पंक्ति में पुनः एकत्र हो गये, और नारों से आकाश गूंज उठा सायमन गो-बैक। उसी समय मोटरों की एक कतार तेजी से गवर्नमेन्ट हाउस की ओर निकल गयी। इन सारे प्रयासों के बावजूद सुनते है कि स्टेशन के अन्दर भी किसी ने नारा लगा ही दिया था साइमन गो-बैक।

लाठीचार्ज के बाद जुलूस काफी छट गया था। प्रदर्शन के बाद जुलूस कांग्रेस दफ्तर वापस चला। रास्ते में लोग छटते गये। कांग्रेस की ओर से स्टेशन पर भी और वापसी पर भी ऐलान किया गया था कि जिन लोगों को चोटें आयी हैं वे उनका विवरण कांग्रेस दफ्तर में लिखवा दें। मालूम नहीं कितनों ने लिखवाया। बहुतों ने तो नहीं ही लिखवाया।

शाम को अमीनुद्दौला पार्क में विशाल सभा हुई। कांग्रेस नेताओं के अतिरिक्त दो प्रमुख वक्ता और थे। स्वामी रामतीर्थ के शिष्य नारायण स्वामी जो वेदान्त की विरक्ति भूल कर इस शान्तिपूर्ण बहिष्कार प्रदर्शन पर भी अमानुषिक आक्रमण से विचलित हो उठे थे और दूसरे थे आधुनिक लखनऊ के निर्माताओं में से एक पं0 रासबिहारी तिवारी जो उस समय एम0एल0सी0 थे। बांयाहाथ पट्टियों से बंधा था अतः एक ही हाथ से एक कागज दिखा कर उन्होंने कहा था यह वह नक्शा है जो अधिकारियों ने मुझे दिया था। इसमें प्रदर्शनकारियों के लिए खड़े होने का स्थान लाल स्याही से दिखाया गया था मानो यह चेतावनी पहले ही दे दी गयी थी कि खून बहाया जायेगा।

और जिस समय यह सभा हो रही थी उधर बटलर पार्क में ताल्लुकेदारों की ओर से साइमन और उनके साथियों को दावत हो रही थी। प्रदर्शन वहां हो सकना असम्भव था फिर भी हुआ। चौधरी खलीकुज्जमा के मकान की छत से बंधी एक पतंग उसी क्षेत्र में गिरायी गयी जिस पर लिखा था साइमन गो-बैक। घटना विचित्र थी अतः यह कह कर उसे और विचित्र बनाया गया कि वह काली पतंग ठीक साइमन साहब की मेज पर गिरी थी।

कुछ दिनों बाद जब कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन के बाद श्री चन्द्रभानु गुप्त ने मोतीलाल मेमोरियल सोसायटी की स्थापना की तो उसने वहां मैदान जहां प्रदर्शन हुआ था। स्थान प्राप्त कर स्मारक के रूप में प्रथम मोतीलाल मेमोरियल होम्योपैथिक अस्पताल, उसके बाद बालसंग्रहालय और बालक्रीड़ास्थल बनवाया गया। और बाकी जमीन पर रवीन्द्रालय बनाने के लिए राज्य सरकार को अनुमति दे दी गयी।

उपसंहार

साईमन कमीशन को आये और गये लगभग 45 वर्ष बीत चुके साईमन। रिपोर्ट पर हुए गोलमेजसम्मेलनों में हिन्दू मुस्लिम प्रथक निर्वाचन तो कायम रखा ही गया था हिन्दुओं में भी सवर्ण और अनुसूचित जातियों के प्रथक निर्वाचन की योजना बनी थी। किन्तु वह योजना गांधी जी के अनशन और अन्ततः अम्बेदकर समझौते के फलस्वरुप सफल न हो सकी। जो हो, अब तो यह सब इतिहास की बातें हैं। अब हम स्वतन्त्र हैं। बालिग मताधिकार पर संयुक्त निर्वाचन की व्यवस्था है। ■

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

"स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दिनांक- 23-12-89 को आर्यसमाज आदर्शनगर में प्रातः कालीन सत्संग में मनाया गया जिसके स. श्री मदनमोहन जोशी और आचार्य वैद्य कुन्दन लाल आर्य ने स्वामी जी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला।

सामवेद पारायण यज्ञ समारोह

पूज्य महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी का स्वर्गवास 20 जनवरी 89 को रोहतक में हुआ। महात्मा जी की जन्म एवं स्वर्गवास की तिथि एक ही (20 जनवरी) रही। स्व0 महात्मा जी का सारा जीवन यज्ञ से ओत-प्रोत रहा। तपोवन देहरादून आर्यनगर रोहतक- गुरुकुल विरजानन्दाश्रम करतार पुरादि अनेक आश्रमों के आप अधिष्ठाता रहे। स्व0 महात्मा प्रभु आश्रित जी से दीक्षा लेकर आजीवन आर्यसमाज की निष्काम भाव से सेवा की। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर 1983 में चारों वेदों के यज्ञ के आप ही ब्रह्मा रहे। लखनऊ नगर से और विशेषकर आलमबाग क्षेत्र की आर्यसमाजों से स्व0-महात्मा जी का बड़ा स्नेह रहा। अत आर्यसमाज आदर्शनगर लखनऊ आगामी 16 से 21 जनवरी 90 तक सामवेद से पारायण यज्ञ स्व0 महात्मा जी पुण्य तिथि पर कर रहा है। इस यज्ञ के ब्रह्मा स्व0 महात्मा जी के सहयोगी श्री चैयनमुनि जी होंगे। लखनऊ नगर एवं बाहिर से भी वैदिक विद्वान पधार कर अमृत वर्षा करेंगे। पण्डिता-मनोरमा जी भजनोपदेशक भी पधार रही हैं। स्थानीय विद्वानों को सम्मानित भी किया जावेगा। प्रीतिभोज भी होगा सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह इस यज्ञ में पधार कर लाभ उठावें एवं यहां समारोह की शोभा बढ़ावें। बाहर से पधारने वाले महानुभावों के निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज की तरफ से होगी। ऋतु अनुसार अपना बिस्तर साथ लाने की कृपा करें।

गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

अलवर जयपुर सड़क पर स्थित आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव 25, 26 नवम्बर 1989 को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस उत्सव में न केवल राजस्थान से हजारों आर्यजन पधारे अपितु दिल्ली तथा हरियाणा से भी आर्यसमाज के सदस्यों को लेकर 6बसें वहां शामिल हुईं। इस कार्यक्रम में स्वामी ओमानन्द जी महाराज, प्रो0 रत्नसिंह, श्री छोटू सिंह एडवोकेट प्रधान आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा पं0 आशानन्दजी ने विशेष भाग लिया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस समय 70 कन्यायें गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

वैदिक धर्मप्रचार

आर्यसमाज रामपुर मुन्सी द्वारा वेद प्रचार दिनांक- 4 से 9·12·89 तक मेला स्थान में वैदिक यज्ञ एवं उपदेश होता रहा। जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। यह कार्य डा0 सूर्यप्रकाश-आर्य द्वारा सुसम्पन्न हुआ।

--

- आर्यसमाज बसेड़ा में दि0 12दिसम्बर-89 को डाक्टर रामनाथ जी के घर पर यज्ञ हुआ। जिसमें अनेक लोगो ने भाग लिया जनता पर वैदिक धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न हुई।

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम में बसन्त मेला

दि· 1 व 2 फरवरी 1990 को महर्षिकण्व की तपस्थली तथा भारतवर्ष नाम के जन्मदाता भरत की जन्मस्थली कण्वाश्रम कोटद्वार भावर में श्री सत्यदेव जी भारद्वाज की अध्यक्षता में बसन्त पचमी मेला दि0 31 जनवरी व 1,2 फरवरी-1990 तक धूमधाम से मनाया जायगा। जिसमें राष्ट्र मेध यज्ञ, विद्वान सन्तमहात्माओं के प्रवचन नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश आयु 7 से 10 वर्ष ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन, स्व0 ब्रह्मदेव स्मृतिदंगल, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन कृषि सम्मेलन, धार्मिक चलचित्र, योगाभ्यास आदि कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। दानी महानुभावों से निवेदन है कि नकद, धन, गेहूं, चावल, चीनी आदि भिजवाने की कृपा करें। कार्यक्रम के लिए समस्त आर्यजगत आमंत्रित है। - अध्यक्ष गुरुकुल।

शोक समाचार

महाशय तीर्थराज गुप्ता जम्मू निवासी की मीरजापुर आवास में दि0 7 दिसम्बर 89 को आकस्मिक निधन हो गया अन्त्येष्टि संस्कार श्री सूर्यदेव-शर्मा व श्री सुदर्शन राय ने सम्पन्न कराया आ0स0 मीरजापुर में शोक प्रस्ताव पास किया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति व शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

आर्यसमाज मसवासी (रामपुर) के प्रधान श्री चेतराम जी गुप्त (चेयरमैन ग्राम मसवासी) का दि0 11 दिसम्बर 89 को निधन हो गया। इनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यानुसार किया गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

कानपुर- दि0 7·12·89 को श्रीसूरजसिंह-त्यागी के निधन पर श्री दिव्यमुनि, वानप्रस्थी, श्री भारतभूषण त्यागी प्रधान आ0स0 ग्वालियर श्री लक्ष्मी नारायण-त्यागी पूर्व प्रधान भोपाल, ने आध्यात्मिक प्रवचन दिया लोगों पर बहुत मार्मिक प्रभाव पड़ा। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सौरख (फर्रुखाबाद) के श्री पूर्णानन्द आर्य का दि0 2 अक्टूबर 89 को निधन हो गया उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार हुआ परमात्मा दिवंगतआत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

श्री अजीत किशोर कपूर 58 न्यू कालोनी बाबागंज (प्रतापगढ़) की माता जी का निधन 2 दिसम्बर 89 को हो गया जिसका शान्ति यज्ञ 6 दिसम्बर 89 को हुआ परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

आर्य समाज चाँदपुर

आर्यसमाज चान्दपुर का 93वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 7-12-89 से 10-12-89 तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रीमति सावित्री देवी-शर्मा बरेली श्री उत्तम चन्दजी शरर पानीपत, श्री रूपचन्द जी दीपक श्रृंगारनगर लखनऊ, उच्चकोटि के विद्वानों ने अपने प्रभावशाली प्रवचनों से नगर की आर्य जनता को धार्मिक लाभ से लाभान्वित किया। दिनांक- 7-12-89 को नगर में विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें आर्यसमाज के तीन सूत्रीय महाभियान का जनता में विशाल प्रदर्शन किया गया।

केरा कत में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज केराकत जौनपुर में दि023 दिसम्बर 89 को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सोल्लास सम्पनन हुआ। दयानन्द बाल मन्दिर के आचार्य गण तथा बच्चों का कार्यक्रम हुआ। आर्यमुनिवानप्रस्थने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उनके त्यागमय जीवन से उपस्थित जनसमूह को प्रेरणा लेने की सलाह दी। सभी लोगों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यमित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष ४५६६३
पंजीकरण स० एल०डब्ल्यू/एन पी ७६
पौष शुक्ल ११
७ जनवरी रविवार १९९०

अन्तरंग सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों तथा अन्तरग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक- 28 जनवरी 1990, रविवार को प्रात 11 बजे, आर्यसमाज गणेशगज, लखनऊ में सम्पन्न होगी। सभी नव निर्वाचित अधिकारियों एव अन्तरग सदस्यों से निवेदन है कि यथासमय यथास्थान पधारने की कृपा करें।

— मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

● आर्य समाज कोसीकलाँ में "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ प्रात 8½ बजे से हवन (यज्ञ) छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रोग्राम तत्पश्चात्- श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ-

संचालक- मन्त्री- श्री अशोककुमार आर्य

प्रमुख वक्ता- श्री सतीशचन्द्रआर्य
श्री कैलाश नारायणआर्य
श्रीमतीमिथलेश भटनागर
श्री श्री राम आर्य।

● श्री स्वामी मध्यानन्द वैदिक सन्यासी भारत भ्रमण पर हैं, लोगों को चाहिए कि उनका स्थान-स्थान पर स्वागत करें उनके विचारों से लाभ उठावें।

नवीन आर्यसमाज स्थापित

लखीमपुर के सरैय्यां लाहौरीनगर पो0 सीरी में 1,2,3 दिसम्बर 89 में ब्रह्मानन्द आर्य भजनोपदेशक मण्डली तथा उदयवीर सिंह भजनोपदेशक तथा वीर कवि सिद्धान्तालंकार के भजन व उपदेश हुए। दि0- 3 दिसम्बर 89 को दिन के 2 बजे जिला सभामन्त्री- श्री आनन्द स्वरूप ने श्री राधेश्याम जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज के स्थापना समारोह हजारों की संख्या में जनता को सम्बोधित किया। जिसमें श्री शिवदत्त जी प्रधान व श्री गोपाल कृष्ण मंत्री बने। इसी श्रृंखला में ग्राम, बरोठिया, बोझवीपुर्व, भगनापुर में दि0- 12 से 18 दिसम्बर तक तीनों आर्यसमाजों की स्थापना हुई।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोग्रेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं. २२४१/५७) माघ कृष्ण-३ रविवार-संवत् २०४६ वि., दिनांक १४ जनवरी १९९० (घोषणा पत्र स ७/२८ २ ८५)



अद्भुत पुरुष

सहस्र शीर्षः पुरुषः
सहस्राक्षः सहस्रपात्
सः भूमिं सर्वतस्पृत्वा अत्यतिष्ठत्
दशांगुलम् ।
---- यजुर्वेद

हजारों सिर वाला, हजारों आँखों वाला, हजारों पैरों वाला वह अद्भुत विराट पुरुष है जिसने सारी भूमि, द्यौ, अन्तरिक्ष को अपनी दश अंगुलियों से पकड़ रखा है। (ऐ मानव ! उसके ज्ञान से, उसकी दृष्टि से, उसकी पकड़ से तू बच नहीं सकता है) ।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम. ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. 30/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३ वाँ वर्ष
अंक - २

समस्त मानवों की एक ही मातृभूमि

वेद में मातृभूमि समस्त पृथ्वी को कहा गया है- "माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः"। इसलिए वेद संकुचित देशभक्ति की शिक्षा नहीं देता है। वेद का दृष्टिकोण समस्त भूमि को मातृभूमि की भावना से जोड़ना है। आज मानव समाज के सम्मुख सबसे बड़ा प्रश्न किसी एक देश की शान्ति अथवा समृद्धि से नहीं है अपितु उसका लक्ष्य तो विश्व में निवास करने वाले समस्त प्राणियों एवं समस्त राष्ट्रों की सुखसमृद्धि से है। इस प्रयास को कार्यरूप देने के लिए ही यूनाइटेड नेशन्स ऑर्गनाइजेशन्स जैसी अनेकों संस्थाएं कार्यरत हैं जो राष्ट्रों के मध्य उत्पन्न हुए अनेकों विवादों को सुलझाने का माध्यम बनी हुई हैं।

व्यक्ति एक इकाई है और निःसन्देह जिस भूमि या माँ के गर्भ से उसका जन्म हुआ अथवा जहाँ उसका पालनपोषण हुआ है उससे उसका विशेष लगाव होना स्वाभाविक है। इसीलिए "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" की श्रेष्ठ भावना उद्भूत हुई। किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का चरम विकास समाज, राष्ट्र और अन्तर्राज्यीय सीमाओं को लाँघता हुआ "विश्वं भवत्येक नीडम" की परम उदात्त वैदिक भावना में पहुँच कर ही समाप्त होता है और यही मानव के मानवता की चरमपरिणति है। इस सन्दर्भ में वेद की निम्न प्रस्तुति कितनी परिपूर्ण मानवीयता से भरी हुई है- इसे देखिए------

"अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता
सः पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाः
अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् - अथर्ववेद 7/6/1

अर्थात् अदितिः = मातृभूमि (समस्त पृथ्वीमण्डल) हो स्वर्ग का सुख देने से द्यौ, गमनागमन का मार्ग देने से अन्तरिक्ष, पालन-पोषण करने से माता, रक्षा करने से पिता, पवित्र तथा रक्षक होने से (पु+त्र), कल्याणकारक तथा मार्गदर्शक होने से विश्वेदेवाः, पचांयती व्यवस्था करके समाजव्रत में सहायक होने के कारण पञ्चजन है। अदितिः के दो अर्थ हैं (1) जिसके टुकड़े न हों (2) अदनात् अदितिः अर्थात् जो अन्नदात्री हो। समस्त पृथ्वी अविभाज्य है और अन्नदात्री है।

आज की परिभाषा में राष्ट्र क्षेत्रीय सीमाओं में बान्ध दिया गया है इसलिए राष्ट्रभक्ति या देशभक्ति संकुचित शिक्षा देने वाली बनती जा रही है जब कि वेद में इसकी आज्ञा नहीं है। "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" किसी देश विशेष अथवा उस देश में रहने वाले वर्गविशेष की ओर इंगित नहीं कर रहा है अपितु समस्त विश्व में फैले हुए आर्यराष्ट्र के जागरण की बात कहता है। "अहं भूमिमददाम आर्याय" में स्पष्ट रूप से प्रभु ने हमें समस्त पृथ्वी का उत्तरदायित्व सौंपा है और उसे आर्यत्व की भावना से परिपूर्ण करने का आदेश भी दिया है। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का सीधासादा यही भाव है। इस परिप्रेक्ष्य में हम आज कितने संकुचित हो गये हैं यही चिन्तनीय है, विचारणीय है। आज हमें "एक विश्व" "एक साम्राज्य" "एक मातृभूमि" और एक शासन की वैदिक शिक्षा को मूर्त्तरूप देते हुए आगे बढ़ना है।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- माघ कृष्ण-३, संवत् २०४६ वि.
१४ जनवरी १९९०, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

प्रधानमंत्री से निवेदन

काश्मीर और पंजाब में दो-टूक दृढ़ नीति अपनाइए

भारतीय जनता ने कुछ सोच-समझकर आपको, आपके दल को भारत के भविष्य की बागडोर सौंपी है। आप उस महामानव वृद्ध लौह राजनीतिज्ञ लाल बहादुर शास्त्री के मानसपुत्र माने जाते हैं जिसने अपने चरित्रबल, दूरदृष्टिपूर्ण राजनीतिक चातुर्य से भारत की अस्मिता को ऊँचा उठाने में अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी परन्तु सिद्धान्तों की बलि नहीं होने दी। यह कह देने मात्र से काम नहीं चलेगा कि कश्मीर और पंजाब समस्या कांग्रेस शासन की देन है। कांग्रेस का भारत के राजनीतिक क्षितिज पर एक पुरातन इतिहास रहा है। "आत्मनिर्णय" के सिद्धान्त को स्वीकृति देकर उसने निःसन्देह एक महान ऐतिहासिक भूल की थी। जिसका परिणाम हमें भारतविभाजन के रूप में मिला और विभाजन का यह काला नाग माँ के सिर पर फिर मँडराने की चेष्टा में आज भी दत्तचित्त है। हमें अतीत की भूल से शिक्षा लेनी चाहिए और जो हो गया सो हो गया किन्तु अब इस कालेनाग को सदा सर्वदा के लिए भारतीय इतिहास से मिटा देना होगा।

आज कश्मीर और पंजाब में क्या हालत है यह किसी से छिपा नहीं है। सुनियोजित ढंग से इन दोनों प्रदेशों को हिन्दूरहित बनाने की चेष्टा की जा रही है। आज़ादी मिलने के समय जितने हिन्दू मारे गये थे सम्भवतः उससे अधिक ही हिन्दू आज़ादी मिलने के बाद इन चार दशकों में बंगलादेश, पंजाब और कश्मीर में हुए नरसंहार की भेंट चढ़ चुके हैं। हमने संविधान में धारा 370 कश्मीर के लिए इसलिए लगाई थी क्योंकि वहाँ की जनता को जिनमें अधिकांश मुस्लिम हैं, विशेष सुविधाएं मिलें, उनका जीवनस्तर ऊँचा हो और वे भारत की मुख्यधारा के सजीव अंग बनें। परन्तु उसका परिणाम यह हो रहा है कि कश्मीर में भारतविरोधी प्रचार चरम सीमा पर पहुँच चुका है। "भारत मुर्दाबाद" "पाकिस्तान जिन्दाबाद" के नारे अब वहाँ आम बात होती जा रही है। भारतीय स्वातन्त्र्य दिवस अथवा गणतन्त्र दिवस पर पाकिस्तानी झण्डे लहराना भारत की अस्मिता को भारत में चुनौती देना है। ऐसा मालूम होता है कि कश्मीर घाटी की सम्पूर्ण जनता को भारत के खिलाफ बग़ावत करने के लिए तैयार किया जा रहा है।

भारत की प्रभुसत्ता और अखण्डता के विरुद्ध नारे लगाना तथा दूसरे देश के प्रति वफ़ादारी दिखाना स्पष्ट देशद्रोह है और ऐसे लोगों को भारत में रहने का कोई अधिकार नहीं है। भारत में रहना है तो भारत को पूज्यस्थली मानना ही होगा। इन भारत विरोधी प्रदर्शनों के खिलाफ़ भारत के समर्थन में कश्मीर वासियों ने एक भी प्रदर्शन श्रीनगर, बारामूला, अनन्तनाग या कश्मीर में कहीं भी नहीं किया। क्या शासन अपने स्तर से भी ऐसे प्रदर्शन नहीं करवा सकता है। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि सम्पूर्णघाटी पाकिस्तानी समर्थक तत्वों से इतनी भयभीत है कि भारत के समर्थन में सामूहिक रूप से सड़क पर निकलने की हिम्मत ही नहीं कर पा रही है।

पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने की विशाल योजना बना रहा है। सीमाओं पर पाकिस्तानी सेनाओं का युद्धाभ्यास शुरू हो गया है और कल्पित देश (और कोई नहीं सिर्फ भारत) पर हमले का अभ्यास इस बात का स्पष्ट उदाहरण है। उसकी योजना है कि इधर पाकिस्तान हमला कर दे उधर कश्मीर और पंजाब में आन्तरिक विद्रोह बड़े पैमाने पर प्रारम्भ करा दिया जाये। पाकिस्तान की सीमा पर रहने वाला हर मुसल्मान अपने मुल्क के लिए प्राण देने को तैयार है जबकि हमारी सीमाएं घोर असुरक्षित हैं घोर असुरक्षित' पंचमांगियों द्वारा किए जाने वाले बगावत का अड्डा बनती जा रही हैं। कश्मीर घाटी में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों की गतिविधियों के कारण भयभीत सैकड़ों हिन्दुओं का कश्मीर से पलायन शुरू हो गया है वहाँ के लोकप्रिय समाजसेवी प्रेमनाथ भट्ट ऐडवोकेट की पिछले दिनों दिन-दहाड़े हुई हत्या से हिन्दुओं में असुरक्षा की भावना फैलती जा रही है।

धारा 370 में कश्मीर के लिए विशेष दर्जा देते हुए इस बात का प्रावधान किया गया था कि भारत का कोई नागरिक न वहाँ स्थायीरूप से बस सकता है, न मकान या भूमि खरीद सकता है न वहाँ का मतदाता बन सकता है न कोई व्यवसाय चलाने के लिए लाइसेन्स प्राप्त कर सकता है। हो सकता है तत्कालीन नेताओं के मस्तिष्क में यह बात रही हो कि कश्मीर कश्मीरियों का रहे। परन्तु यह धोखा साबित हुआ है। हजारों पाकिस्तानी छद्मवेष में कश्मीरियों की शह पर कश्मीर में आकर स्थायीरूप से बस गये हैं। उन्हें पहिचानना और निकालना मुश्किल हो रहा है। अब यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो चुकी है कि स्थानीय जनता का समर्थन भी उन्हें प्राप्त है। ऐसी दशा में हिन्दू वहाँ किसके सहारे रह सकता है।

यही हाल पंजाब का है। पिछले चुनाव में लोक सभा के लिए चुने गये आठों व्यक्ति स्वयं को खालिस्तान की माँग के प्रति समर्पित किए हुए हैं और अपने राष्ट्रविरोधी रूख को छोड़ने के लिए तैयार ही नहीं हैं। इन दोनों प्रदेशों की गम्भीर समस्या पर बहुत ही कड़ा रूख अपनाना होगा। तुष्टीकरण की नीति बहुत ही घातक सिद्ध हो सकती है। हम यहाँ आपको कविवर माघ की एक उक्ति का स्मरण दिलाना चाहते हैं-

"व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः" वे मूर्ख पराभव को प्राप्त होते हैं जो मायावियों के साथ मायावी व्यवहार नहीं करते। ऋषि दयानन्द ने भी आर्यसमाज के नियमों में "यथायोग्य व्यवहार" की बात लिखी है। अतः समय रहते सावधान हो जाने की इतिहास की पुकार को सुनिए। ◘

उपचार दर्पण

समस्या- "मेरी बाई हिप्स में दर्द हो जाता है। जब दर्द आरम्भ होता है, तो बाई टांग ठण्डी हो जाती है।"

- रमेशचन्द्र सती, दानया-अल्मोड़ा।

समाधान- सरसों- तेल की मालिश करके स्नान किया करें। प्रात. "उत्तानपाद-आसन" करने के बाद चित्त लेटे हुए प्रत्येक टांग को बारी-बारी मुकदर की भाँति घुमाया करें। प्रत्येक भोजन के बाद आर० कम्पाउण्ड (अलारासन आयुर्वेदिक) की दो गोलियाँ लेकर, अर्जुनारिष्ट (गुरुकुल कांगड़ी) की दो ढक्कन दवा में समान जल मिलाकर तीन मास तक पीते रहें। बथुवा और मेथी के साग के साथ गेहूँ की रोटी के साथ एक बाजड़ा (बाजरा) की रोटी भी खाया करें।

0 रोगी अपना विवरण और दो डाकलिफाफे निम्न पता पर भेजा करें।

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
फलाहारी
आर्यसमाज पिथौरागढ़
उत्तर प्रदेश।

योग साधना शिविर

स्वामी केशवानन्द योग संस्थान, रूपनगर दिल्ली की ओर से एक मास का एक योग साधना शिविर दिनांक- 11·1·90 से 10·2·90 तक त्रिवेणी तट पर प्रयाग में आयोजित किया जा रहा है। योगराज महामहोपाध्याय ब्रह्म मित्र अवस्थी, आचार्य प्रणव श्री-नारायण स्वामी आदि सन्त साधकों का मार्ग दर्शन करते हुए उन्हें आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

अब जमाना आ गया है, "गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का"

— लेखक- डॉ॰ सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
डब्लू ७७ ए ग्रेटर कैलाश। नई दिल्ली

जमाना था जब भारत में आर्यों का राज्य था। उनकी भाषा संस्कृत थी, उनकी संस्कृति का आधार सच्चरित्र तथा संयममय जीवन था। इसलिये उस समय संस्कृत की पाठशालाएं थीं, शिक्षा का माध्यम संस्कृत था, पढ़ाये जाने वाली पुस्तकें वेद, उपनिषद् आदि भारतीय संस्कृति के ग्रन्थ थे। जमाना बदला, मुसलमानों का राज्य आया, शिक्षा का क्षेत्र बदल गया। पाठशालाओं की जगह मदरसे खुलने लगे उर्दू तथा पर्शियन पढ़ाई जाने लगी, देशवासी उर्दू में लिखने-पढ़ने लगे। मुझे याद है, हैदराबाद में आचार्य रामदेव जी के साथ मैं एक हिन्दू जज के घर में बैठा था, उनके सिर पर पर्शियन-टोपी थी, उनका सारा खानदान ऐसा लगता था मानो पर्शिया से आया है। शहर में हर दुकान पर उर्दू लिपि में लिखे बोर्ड टंगे थे। जमाने ने फिर पलटा खाया। भारत में मुगलों की जगह अंग्रेजों का शासन आ गया। जहाँ पाठशालाओं की जगह मदरसे खुले थे, संस्कृत की जगह उर्दू-फारसी का बोलबाला हो गया था, वहां अब उर्दू-फारसी की जगह अंग्रेजी चलने लगी, मदरसों की जगह स्कूल-कालेज खुलने लगे, उर्दू फारसी की जगह ही अंग्रेजी पढ़ाई जाने लगी। इसमें लोग मैकाले को दोष देते हैं। क्यों मैकाले ने क्या दोष किया था? जो राज करता है, वह अपनी भाषा, अपनी संस्कृति के बिना राज कैसे कर सकता है? गोआ में पुर्तगाल का राज था, वहां के लोग अब भी पोर्तुगीज बोलते हैं, पांडुचेरी में फ्रेंच राज था, वहां के हिन्दू-मुसलमान-ईसाई सभी फ्रेंच बोलते हैं। यह स्वाभाविक है। जो राज करता है, उसे ऐसे कार्यकर्ताओं की जरूरत होती है जिनसे वह कार्य ले सके। इसलिये मुसलमानों ने राज्य करने के लिये उर्दू-फारसी के कारकुन तैयार किये, अंग्रेजों ने अंग्रेजी में गिट-पिट करने वाले बाबू लोग तैयार किये, और इनसे पहले राज्य करने वाले हिन्दुओं ने पंडित तैयार किये और राज्य का हर कार्य संस्कृत में किया भारतीय शासन में यहां की भाषा यहां की संस्कृति का पनपना आवश्यक था।

प्रश्न यह है कि अब क्या किया जा रहा है। पहले तो यह देखना है कि यह हो क्या रहा है। इस समय जो हो रहा है उससे जान पड़ता है कि अभी इस देश में अंग्रेज ही राज्य कर रहे हैं। ऊपर से नीचे तक किसी क्षेत्र में देख लें सब जगह अंग्रेजी ही अंग्रेजी चल रही है। वही कोट, वही पैन्ट, वही नेकटाई जो अंग्रेजों का वेश था भारतवासियों का हो गया। कोई नहीं जानता कि गले में नेकटाई क्यों बांधते हैं, अंग्रेज बांधते थे, हम बांधते हैं। राष्ट्रपति भाषण करेंगे तो अंग्रेजी में, प्रधानमन्त्री भाषण करेंगे तो अंग्रेजी में, संसद में भाषण होंगे तो अंग्रेजी में, समाचार-पत्र निकलेंगे तो अंग्रेजी में, पुस्तकें छपेंगी तो अंग्रेजी में यह बात नहीं है कि इस देश के पास अपनी कोई भाषा नहीं है। भारत दुनिया भर में सब से पुराना देश है, क्या इसका कारोबार बिना किसी अपनी भाषा या अपनी संस्कृति के चलता था या चलता रहा। या तो मान लिया जाय कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद अब भी इस देश में अंग्रेजों का ही राज्य है, या यह मान लिया जाय कि यह जंगलियों का देश है। न इसकी अपनी कोई भाषा है, न अपनी कोई संस्कृति है। इसे उधार लेकर ही जीना है। इसके साहूकार दूसरे लोग हैं।

संसार का इतिहास बतलाता है कि जब राज बदलता है तब सब-कुछ बदल जाता है- भाषा और संस्कृति तो बदलती ही है, और कुछ बदले या न बदले- ये दो चीजे तो बदलती ही हैं। हमारा सदियों का इतिहास यही बतलाता है।

मुझे और बातों से कुछ लेना-देना नहीं है। मुझे तो इस देश की शिक्षा, जीवन तथा संस्कृति पर कुछ विचार करना है। भारत में जब अंग्रेज आये और उन्होंने सब जगह अंग्रेजी शिक्षा के शिक्षणालय खोले तब उनके विरोध में अपनेपन को कायम रखने के लिये आर्यसमाज ने जिसे अंग्रेज विद्रोही संस्था कहते थे, जगह-जगह गुरुकुल खोले। अंग्रेजों ने राज करना था इसलिये उनकी सुविधा के लिये मैकाले ने कालेजों का सूत्रपात किया जिसमें अंग्रेज अफसरों की सुविधा के लिये अंग्रेजी जानने वाले बाबुओं का निर्माण होने लगा। प्रश्न यह है कि अब भी क्या अंग्रेजों का ही राज्य है जो अंग्रेजी में नाम पढ़ाये जाने वाले कालेज धड़ाधड़ खुलते जा रहे हैं जिनमें युरोपीय संस्कृति का इन्जेक्शन दिया जा रहा है और गुरुकुलों का नाम लेने वाले भी अंग्रेजी सिखाने वाले और अंग्रेजी सभ्यता को बढ़ावा देने वाले कालेजों को ही खोलते जा रहे हैं।

राज बदला तो सब कुछ बदलना चाहिए, नहीं बदलते तो मानना पड़ेगा कि अभी राज नहीं बदला। जब हम राज बदलना चाहते थे तब हमने शिक्षा को बदल दिया स्कूलों की जगह गुरुकुल खोल दिये। प्रश्न यह है कि स्वराज्य मिलने से पहले अगर गुरुकुलों की संख्या 50 थी तो अब 50 की जगह 100 होने के स्थान में 4-5 क्यों रह गयी।

महात्मा गांधी ने शिक्षा को बदलने की कोशिश की थी और नई तालीम नाम की एक नवीन-शिक्षा-प्रणाली बनाने की कोशिश की थी, परन्तु वह सफल नहीं हुए। भारत की अपनी पुरानी एक शिक्षा-प्रणाली चलती आ रही है। उसकी तरफ आर्यसमाज के बिना अन्य किसी का ध्यान ही नहीं गया। वह शिक्षा-प्रणाली गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली थी। आज राज हमारे हाथ में आ गया है- इससे मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि हमें उर्दू-फारसी- अंग्रेजी का बहिष्कार कर संस्कृत को उसके स्थान में बिठा देना चाहिए। भाषा तो संस्कृति तथा विचारधारा का माध्यम होती है। भाषा शरीर है, संस्कृति उसकी आत्मा है भाषा चाहे उर्दू फारसी या अंग्रेजी हो, इन भाषाओं में इस देश की आत्मा का होना आवश्यक है। उर्दू-फारसी में उसकी अपनी संस्कृति है, अपने विचार है, अंग्रेजी में अपनी संस्कृति तथा अपने विचार हैं, संस्कृत में अपनी संस्कृति तथा अपने विचार हैं। हमें आत्मा से लेना-देना है, शरीर से नहीं। भाषा कोई भी हो सकती है, हमें देखना है कि हमारी संस्कृति के विचार तो नष्ट नहीं हो रहे। मेरे देखने में तो यह आया है कि अंग्रेजियत के बढ़ने के साथ-साथ हमारे युवकों का चरित्र हनन भी हो रहा है, अगर यह समझा जा रहा है कि मानव जीवन में मुख्य स्थान अंग्रेजी बोलना, अंग्रेजी-जीवन बिताना और अंग्रेजियत के रंग-में-रंग जाना है। जब मैं कहता हूँ कि जमाना गुरुकुल शिक्षा के निर्माण का आ गया है, तब मेरा अभिप्राय यह है कि हमारे जीवन में अंग्रेजियत की जगह भारतीयता का होना लाजमी है।

जब हमने गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का सूत्रपात किया था तब उस प्रणाली के आधार भूत तत्व क्या थे? मैं तो स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संचालित गुरुकुल कांगड़ी में 14 साल पढ़ा हूँ, और वहीं 25-30 साल कार्य करता रहा हूँ। इस दृष्टि से गुरुकुल के मूलाधारों को मैं निम्न प्रकार प्रकट कर सकता हूँ।

(क) सदाचार- गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का प्रगाढ़तम आधार "सदाचार" है। सदाचार इतना व्यापक शब्द है कि इसके भीतर आचार-सम्बन्धी सब-कुछ आ जाता है। मैकाले को बाबुओं की जरूरत थी, जो अंग्रेजी ऑफिसर को यहां की व्यवस्था में अंग्रेजी जानने के कारण सहयोग दे सकें। इसके लिये उसने उस शिक्षा-व्यवस्था की नींव डाली जो आजकल चल रही है। आज उस तरह की शिक्षा की जरूरत नहीं रही। आज सच्चरित्र, ईमानदार व्यक्तियों की

— शेष पृष्ठ ११ पर

रामजन्म भूमि और आर्यसमाज का दृष्टिकोण

• डा० भवानीलाल भारतीय

हिन्दू स्वभाव से ही मूर्तिपूजक है और इस्लाम का अर्थ ही है बुतशिकनी मूर्ति को तोड़ना। पैगम्बर साहब ने काबा के धर्म स्थान पर रखी विभिन्न देवताओं की मूर्तियों को वहाँ से हटवा दिया। अब वहाँ केवल संग असवद ही रह गया है, जिसे हज के समय प्रत्येक हाजी मुसलमान चूमता है। हिन्दुओं के मंदिर निर्माण की कोई सीमा नहीं, गली गली, चौराहों, रास्तों पेड़ों के नीचे, पर्वतों की चोटियों, गुफाओं, खेतों और खलिहानों में उसने मंदिर बनाये और बनता जा रहा है। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने हनुमान की एक विशाल पर्वतकाय प्रस्तर मूर्ति बनवाई है और उसके निर्माण पर लाखों रुपये भी खर्च किये हैं। मुसलमान की बुत शिकनी की भी कोई इन्तिहा नहीं, उसने हिन्दुओं के मठों, मन्दिरों, धर्म स्थानों और पूजास्थलों पर स्थापित मूर्तियों को तोड़ा, उनको धराध्वस्त किया। शायद वह समझता था कि ऐसा करने से ही दुनियाँ से मूर्तिपूजा हटाई जा सकेगी। मूर्ति बनाना इन्सानी फितरत है, उसे तोड़ना मनुष्य की जहालत का सूचक है।

स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण भिन्न प्रकार का है। न वे मूर्तिपूजक और न मूर्तिभंजक। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सृष्टि के विधाता परमात्मा की कोई मूर्ति बनाना सम्भव ही नहीं है। वे इस बात के भी पक्ष में नहीं थे कि बने बनाये मंदिरों को ध्वस्त किया जाय। जब फर्रुखाबाद के कुछ अति उत्साही आर्यसमाजियों ने उनसे अनुरोध किया कि वे यदि अंग्रेज हाकिम को इशारा भर कर दें तो सड़क के बीच बनी देवता की मढ़िया हटाई जा सकती है, तो स्वामी जी का स्पष्ट उत्तर था कि मैं तो लोगों के हृदय में बसी जड़पूजा की भावना को हटाना चाहता हूँ, मंदिरों में स्थापित मूर्तियों को हटाने में मेरी कोई रुचि नहीं है।

अवतारवाद के सिद्धान्त के पनपने के पश्चात ही राम, कृष्ण आदि अवतारी पुरुषों के मंदिर बने। भारत में मूर्तिपूजा का चलन जैनों से आरम्भ हुआ। उनके विचारानुसार उनके पूज्य तीर्थंकर ही परमात्मा हैं और उनकी धातु या प्रस्तर निर्मित मूर्तियों की ही पूजा होनी चाहिए। सनातन धर्मियों ने जैनियों के ही अनुकरण पर चौबीस या दस अवतारों की कल्पना की। तत्पश्चात राम, कृष्ण आदि के मंदिर बने और उनकी षोड्शोपचार, साडम्बर पूजा चर्चा का आरम्भ किया गया।

वर्तमान में अयोध्या स्थित राम जन्म भूमि का विवाद देश के सभी प्रबुद्ध नागरिकों का ध्यान आकृष्ट किये हुए है। भारत के लगभग सभी प्रमुख धर्मस्थल इस्लामी कट्टरता के शिकार हुए हैं।

काशी में विश्वनाथ के मंदिर को तोड़कर ज्ञानवापी मस्जिद बनाई गई। जब औरंगजेब ने विश्वनाथ के मंदिर को तोडने का आदेश दिया तो पुजारियों ने शिव प्रतिमा को कुएँ में फेंक दिया और अपने भक्तों में प्रचारित किया कि विश्वनाथ जी म्लेच्छ के दर्शन नहीं करना चाहते, अतः अपनी इच्छा से ही कूप में प्रविष्ट हो गये हैं। मूर्तियों और उनसे सम्बद्ध चमत्कारों का कोई अन्त नहीं है। ये चमत्कार दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं और अच्छे खासे समझदार लोग भी इन पर सहज भाव से विश्वास कर लेते हैं। मथुरा में कृष्ण जन्म स्थान का मोहल्ला कटरा केशवदेव कहलाता है। वहाँ भी एक विशाल मस्जिद बनाई गई। बिड़ला ने इसके पीछे कृष्ण की जन्म, स्थली का पुनर्निर्माण कराया और उसे एक भव्य स्मारक का रूप दिया।

किसी महापुरुष के जन्म स्थान को ऐतिहासिक दृष्टि से सुरक्षित एवं संरक्षित करना शासन का कर्तव्य है। यही कारण है कि महात्मा गाँधी के पोरबन्दर स्थित जन्म स्थल, पं० नेहरू के जन्मस्थान आनन्द भवन आदि को ऐतिहासिक महत्ता प्रदान कर उन्हें सर्व साधारण के लिए दर्शनीय बनाया गया है। राम और कृष्ण तो करोड़ों भारतवासियों के लिये आदर, प्रेरणा, सम्मान और श्रद्धा के पात्र हैं, अत यदि उनके जन्मस्थान को भव्य ऐतिहासिक स्मारक के रूप में विकसित किया जाय तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है।

जैसा कि मैं निवेदन कर चुका हूँ आर्यसमाज मूर्तिपूजा का विरोधी है, अत वह किसी स्थान या जड़वस्तु को परमात्मा का प्रतीक मानकर उसकी उपासना करने का समर्थन नहीं कर सकता। हिन्दू मंदिरों में प्रचलित जड़ प्रतिमाओं की पूजा अर्चा वैदिक मन्तव्यों के नितान्त विपरीत है। अयोध्या में भगवान् रामचन्द्र के जन्म स्थान पर अनेक बार मंदिर बने और उतना ही बार बुत शिकन मुसलमानों द्वारा वे तोड़े भी गये। यह स्थान विगत कई शताब्दियों से दोनों सम्प्रदायों के बीच वादवि[illegible] और अभियोग का एक अहम मुद्दा बना हुआ है। सोचना चाहिए कि आर्यसमाज का इसके बारे में क्या दृष्टिकोण हो सकता है।

प्रथम तो भारतवर्ष में जितने धर्मस्थानों को मध्यकाल में इस्लाम के आक्रमण-कारियों ने दूषित और नष्ट किया उनके बारे में एक आम सहमति बनाने का यत्न होना चाहिए। यह तो सर्वथा असम्भव ही है कि अब तक जितने धर्मस्थान आततायियों के द्वारा भ्रष्ट किये गये हैं वे सभी अपने उसी पूर्व रूप को प्राप्त कर सकेंगे। अजमेर का प्रसिद्ध पुरातत्व स्थल अढाई दिन का झोंपड़ा किसी समय जैनमतावलम्बियों की पाठशाला रही होगी, आज वह मुसलमानों के अधिकार में है। दिल्ली में कुतुब मीनार के समीप की फतहे इस्लाम नामक मस्जिद भी किसी हिन्दू मंदिर को ध्वस्त कर उसके पत्थरों से ही निर्मित हुई है। ऐसे स्थानों की गणना करना भी अशक्य है और यह एक दिवास्वप्न ही है कि ये सभी धर्म स्थान पुन हिन्दुओं के अधिकार में आ जायेंगे और वहाँ पुनः उसी प्रकार की पूजा अर्चा आरम्भ हो जायेगी।

आज अयोध्या स्थित रामजन्म भूमि का विवाद प्रत्येक भारतवासी को आन्दोलित कर रहा है। राजनैतिक पार्टियां इसे एक अहम मुद्दा बना रही हैं और जन सामान्य की भावनाओं को भड़का रही हैं। उधर सरकार ने इस सारे विवाद को न्यायालय के सुपुर्द कर दिया है और बड़ी मासूमियत से कह रही है कि दोनों पक्षों को न्यायालय के फैसले को स्वीकार कर लेना चाहिए। किन्तु क्या स्वयं सरकार ने ही अतीत काल में साम्प्रदायिक मुद्दों से जुड़े संवेदनशील प्रश्नों पर अदालत के फैसलों को स्वीकार किया है। शाहबानो को गुजारा भत्ता देने के मामले में सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को न केवल ठुकराया, बल्कि संविधान में ही संशोधन कर तलाकशुदा मुसलमान महिलाओं के भरण पोषण के लिये उत्तरदायी व्यक्ति को तो सर्वथा मुक्त ही कर दिया। एक बात यह भी है कि बृहत मानवसमूहों की भावनाओं से जुड़े प्रश्नों पर अदालती फैसले थोपना कभी कभी हानिकर सिद्ध होता है। अच्छा तो यही रहता कि आपस की सूझ बूझ और सुलह सफाई से ऐसे पेचीदे सवालों का उत्तर खोजा जाय।

शायद आम हिन्दू या आम मुसलमान को ऐसे विवादास्पद प्रश्नों को लेकर निजी दिलचस्पी नहीं होती। भारत के गाँवों, कस्बों और शहरों में बसने वाले आम मुसलमान का बाबरी मस्जिद से क्या लेना देना? वह तो अपने जुमे या ईद की नमाज समीपवर्ती मसजिद में पढ कर ही अपने आराध्य की उपासना कर लेता है। यही बात हिन्दुओं के लिए भी कही जा सकती है। किन्तु आर्यसमाज से तो कुछ अधिक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण की आशा करनी चाहिए। यदि अयोध्या के रामजन्म भूमि स्थल को एक ऐतिहासिक स्मारक का रूप दिया जाता है, तबतो आर्यसमाज उसका समर्थन करेगा। अन्यथा यदि देश के अन्य लाखों मंदिरों की भाँति उसे भी केवल मूर्तिपूजा का ही अड्डा बनाया जाता है तो कम से कम आर्यसमाज तो इस कार्य को जड़पूजा को बढ़ावा देना ही मानेगा। भारत की कांग्रेसी सरकार सदा से ही अपनी मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के कारण कुख्यात रही है। उसके नेतागण हिन्दुओं को तो शान्ति, सौमनस्य, भ्रातृभाव और साम्प्रदायिक सौहार्द की सीख देते हैं, किन्तु सैयद शहाबुद्दीन और अब्दुल्ला बुखारी जैसे वाचाल फिर्कापरस्तों की नाक में नकेल डालने की जुर्रत उनमें नहीं है।

अब रामजन्म भूमि का मसला विश्व हिन्दू परिषद् ने अपने हाथ में लिया है। इस संस्था का इरादा विवादास्पद

— शेष पृष्ठ १० पर

कश्मीर में खूनी सैलाब, तुष्टीकरण का नतीजा

● शिव कुमार गोयल

केन्द्रीय गृहमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की युवा पुत्री डा0 रुबिया का श्रीनगर में सरेआम अपहरण किये जाने तथा पाकिस्तान समर्थक पाँच कुख्यात आतंकवादियों को अपनी शर्तों पर मुक्त कराने के बाद छोड़े जाने की सनसनीखेज घटना ने अब यह स्पष्ट कर दिया है कि कश्मीर में डा0 फारूख अब्दुल्ला की सरकार की जगह आतंकवादियों की समानान्तर सरकार चल रही है। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम से पाकिस्तान समर्थक आतंकवादियों के हौसले इतने बुलन्द हो जाएंगे कि वे भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति करने में नहीं हिचकिचाएंगे।

आज यदि कश्मीर में भारतीय सेना न हो तो पाकिस्तान को श्रीनगर में अपना झण्डा फहराने में शायद पल भर भी न लगे। परन्तु अब दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह बन गई है कि आतंकवादी सेना को भी चुनौती देने लगे हैं। कश्मीर घाटी लम्बे समय से पाकिस्तान समर्थक आतंकवादियों की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का केन्द्र बनी हुई है। पाकिस्तान के गुप्त प्रशिक्षण केन्द्रों में तोड़फोड़ तथा हत्याओं की ट्रेनिंग लेने वाले हजारों खूंखार युवक कश्मीर घाटी में सक्रिय हो चुके हैं। हाल ही में उन्होंने पाकिस्तानी जासूस मकबूल बट्ट को फांसी की सजा देने वाले न्यायाधीश की हत्या कर सनसनी पैदा की था। अब केन्द्रीय गृहमंत्री जैसी हस्ती की बेटी का दुस्साहसिक अपहरण कर, तथा जेल में बन्द पाँच कुख्यात आतंकवादियों को रिहा कराकर पूरे संसार का ध्यान अपनी गतिविधियों की ओर खींचने में वे सफल रहे हैं।

कश्मीर में पीपुल्स लीग, महाज-ए-आजादी तथा कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट नाम से तीन भारत विरोधी संगठन सक्रिय हैं। जमाते इस्लामी तथा अन्य कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों का उन्हें समर्थन प्राप्त है। ये पाकिस्तान समर्थक तत्व इतने प्रभावी हैं कि वे खुलकर 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस पर विरोध दिवस मनाते हैं। 15 अगस्त और 26 जनवरी को कश्मीर बन्द कराने में सफल होते हैं। जगह-जगह "पाकिस्तान जिन्दाबाद" के नारों से आकाश सिर पर उठा लेते हैं।

पाकिस्तान में प्रशिक्षण

पाकिस्तान में जहाँ पंजाब के आतंकवादियों को तोड़फोड़ तथा हिंसा का प्रशिक्षण दिया जाता रहा है वहीं "कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट" के तत्वावधान में कश्मीर के युवकों को भी प्रशिक्षित किया जाता रहा है।

इसी वर्ष 15 अगस्त स्वाधीनता दिवस के अवसर पर श्रीनगर क्षेत्र में किए गए बम विस्फोटों के सिलसिले में जब पुलिस ने पाकिस्तान सीमा से लगे गाँव कुदवारा में छापा मारकर मंजूर उल इस्लाम को गिरफतार किया तो उसके पास से रूसी रायफल, बम तथा भारत विरोधी साहित्य बरामद हुआ था। मंजूर उल इस्लाम ने यह सनसनीखेज रहस्योद्घाटन किया था कि वह पाकिस्तान के एक प्रशिक्षण केन्द्र में तोड़-फोड़ की ट्रेनिंग लेकर लौटा है। उसके बहुत से साथी भी पाकिस्तान से हथियार, विद्रोही साहित्य आदि लेकर लौटे हैं।

पुलिस ने कुछ अन्य आतंकवादियों को भी गिरफ्तार किया जिन्होंने बताया कि पाक अधिकृत कश्मीर में अलिमाबाद, अलिमापुर, लोहाबट्ट तथा मुजफ्फराबाद में एक दर्जन प्रशिक्षण केन्द्रों में कश्मीरी युवकों को तोड़फोड़ व हिंसा की ट्रेनिंग दी जा रही है। इसके अलावा पेशावर, फैसलाबाद व काचीगरी में भी इसी प्रकार के कैम्प चल रहे हैं जिनमें पाकिस्तान के खुफिया और सैनिक अधिकारी स्वयं प्रशिक्षण दे रहे हैं।

इन प्रशिक्षण केन्द्रों से निकले युवकों ने ही जुलाई और अगस्त में श्रीनगर के केन्द्रीय तारघर तथा श्रीनगर क्लब के भवनों में भीषण बम विस्फोट किए थे। 21 अगस्त को मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला के निकट सहयोगी तथा नेशनल कान्फ्रेंस के नेता मोहम्मद यूसुफ हलवई की श्रीनगर में सरेआम गोली मारकर हत्या की गई थी। उस समय मुख्यमंत्री ने विधान सभा में यह स्वीकार किया कि यह हत्या पाकिस्तान प्रशिक्षित युवकों की करस्तानी का परिणाम है। उस समय तो मुख्यमंत्री ने भावावेश में आकर यहाँ तक कह दिया था कि यदि कश्मीर को बचाना है तो भारत सरकार को पाकिस्तान में चल रहे इन प्रशिक्षण केन्द्रों पर हमला कर देना चाहिए।

हत्याओं का दौर

पाक प्रशिक्षित आतंकवादियों ने श्रीनगर में पुलिस डी0आई0जी0 अली मोहम्मद बटाली के घर भी बमों से हमला कर उनकी हत्या का प्रयास किया था। उस दौरान एजाज अहमद दर नामक आतंकवादी पुलिस की गोली से मारा भी गया था। जुलाई-अगस्त के दौरान कश्मीर घाटी में लगभग सौ प्रशिक्षित आतंकवादी गिरफ्तार भी किए गए थे किन्तु राज्य सरकार उन्हें आने जाने से रोकने में सर्वथा असफल रही है।

अवामी एक्शन कमेटी के अध्यक्ष मौलवी फारूखी तथा पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम मोहम्मद शाह आदि अलगाववादियों को खुला संरक्षण देते रहे हैं। कश्मीर के डिवीजनल कमिश्नर मुहम्मद शफी पंडित ने यह स्वीकार किया था कि पाकिस्तान समर्थक आतंकवादियों को कुछ विपक्षी नेताओं का भी संरक्षण मिलता रहता है। जब कभी प्रशासन या पुलिस इन आतंकवादियों के विरुद्ध कार्यवाही करती है तो ये विपक्षी नेता युवकों पर जुल्म होने के आरोप लगाकर कार्यवाही रुकवा देते हैं।

कश्मीर घाटी में रहने वाले हिन्दुओं पर इन तत्वों का इतना आतंक छाया है कि वे भारत के समर्थन में दो शब्द भी नहीं कह सकते।
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को जुलूस निकालते समय इन तत्वों ने चेतावनी दी थी कि वे "भारत माता की जय" जैसा नारा कदापि न लगायें। इस धमकी के कारण हिन्दुओं ने कृष्ण जन्माष्टमी का जुलूस ही नहीं निकाला। इसी वर्ष 28 सितम्बर को श्रीनगर तथा अन्य क्षेत्रों में हिन्दुओं के घरों पर हमले किए गए। अनेक मन्दिरों को आग लगा दी गई। करनपुर (श्रीनगर) के एक प्रशिक्षण संस्थान से लौट रही 6 युवतियों का अपहरण कर उन्हें चेता बाजार के एक मकान में ले जाया गया तथा उनके साथ अनाचार किया गया। बारामूला में अनेक हिन्दुओं के घरों पर पथराव किया गया। जम्मू-कश्मीर राज्य भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष टीकालाल टपलू ने अलगाववादी तत्वों का विरोध किया तो उनकी सरेआम हत्या कर डाली गई। कारगिल में बौद्ध लामा लोबजांग पर "पाकिस्तान जिन्दाबाद" के नारे लगाते हुए प्राणघातक हमला किया गया। लद्दाख क्षेत्र में भी अब हिंसा की खुली घटनायें होने लगी हैं।

अब्दुल्ला से फारूख तक

जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान समर्थक तत्वों को खुलकर खेलने का मौका हमारी सरकार की तुष्टीकरण की नीति के कारण मिलता रहा है। शेख अब्दुल्ला की मृत्यु के बाद तुष्टीकरण की नीति पर चलते हुए ऐसे विवादास्पद व्यक्ति को राज्य की सत्ता सौंप दी गई। केन्द्र सरकार उनसे नाराज हुई तो राज्य में "घोर साम्प्रदायिक" के रूप में कुख्यात उनके बहनोई गुलाम मोहम्मद शाह को मोहरा बनाकर मुख्यमंत्री के पद पर बिठा दिया गया। राजनीतिक लाभ के कारण फिर शाह को हटाकर डा0 फारूख को पुन उस पद पर सुशोभित कर दिया गया। गद्दी से उतरने ही शाह ने "कश्मीर को भारत के शिकंजे से मुक्त कराने" के राग अलापने शुरू कर दिए। केन्द्र सरकार की इस घातक नीति के कारण ही कश्मीर में धारा 370 लागू है जिस कारण उस घाटी को पाकिस्तान समर्थक तत्वों से निजात कदापि नहीं मिल पायेगी। कश्मीर को पाक समर्थक तत्वों से मुक्त कराने का एक ही उपाय है कि वहां सेवा निवृत्त सैनिकों को बसाया जाये, देश के अन्य भागों के लोगों को वहां रहने की छूट दी जाय। यह कार्य 370 धारा के रहते हो ही नहीं सकता।

— शेष पृष्ठ ९ पर

नेतागिरी

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार
आर्यसमाज गोरखपुर

अश्मभव परशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव। पत्थर बन मेरे बेटे। केवल चट्टान नहीं कुल्हाड़ी बन बेटे, और सोने की तरह चमक मेरे बेटे। पिता ने जातकर्म संस्कार में पुत्र को लक्ष्य करके कहा। महाभारत में भीष्म पितामह के बचपन की एक कथा सुनी थी। बचपन में उनका एक नाम था देवव्रत। वह अपनी माता के साथ अपने ननिहाल में थे पत्थरों पर खेल रहे थे एक चट्टान से लुढ़क पड़े तो क्या हुआ यह नहीं कि देवव्रत की हड्डी पसली टूट गई बल्कि यह कि चट्टान जिस पर बालक देवव्रत गिरा था टूट कर चकनाचूर हो गई।

यूनान में बच्चों को मजबूत और शक्तिशाली बुद्धिमान और सुन्दर बनाने के लिए उन्हें उत्पन्न होने के साथ पत्थर पर गिराया जाता था और जो बच्चे बच जाते थे उन्हें राष्ट्र की सम्पत्ति समझा जाता था। यही व्यक्ति देश के संचालक और नेता माने जाते थे। इसलिए नेतृत्व शक्ति के विकास के लिए दृढ़ता तर्क शक्ति और कीर्ति या सुयश की आवश्यकता मानी गई है।

परन्तु नेतृत्व और नेतागिरी एक चीज नहीं। नेतृत्व के लिए तो वेद में कहा गया है -

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां
विषासहि ।।

- अथर्व १२/१/५४

राष्ट्र का नेता राजा कहता है मैं साहसी हूँ वीर हूँ भूमि भर में उत्कृष्ट हूँ दुश्मन से मुकाबला पड़ने पर छक्के छुड़ा देने वाला हूँ। सब शत्रुओं को परास्त करने की शक्ति मुझ में है। जिस दिशा में कदम बढ़ाऊँगा दुष्टों को पकड़ पकड़ कर मसल डालूँगा। यह तो नेता के गुण हुए। "नेतागिरी के लिए इन गुणों की जरा भी आवश्यकता नहीं। नेतागिरी को अंग्रेजी और हिन्दी में मिलाकर कहें तो वह लीडरशाही हो जाती है। शाही शब्द जब किसी शब्द के साथ लगता है तो वह उस वाद का सूचक हो जाता है। जैसे नादिरशाही शब्द है। नादिरशाह एक मुसलमान बादशाह था और आक्रमण करते-करते वह भारत में पहुँच गया और दिल्ली में पहुँच कर जो अपनी शाही पन दिखाया और जो यहाँ की जनता पर अत्याचार किए वह 'नादिरशाही' हो गई और आज भी घृणा की दृष्टि से देखी जाती है। कुछ लोग लोकतन्त्र को शायद लोकशाही कहते हैं पर आज कल 'लोकशाही' तो भाषणों के लिए बच गई। नादिरशाही ने लीडरशाही या नेतागिरी का रूप धारण कर लिया।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पढ़ रहा था। गुरुकुल और मेरे समय के गुरुकुलों के जीवन में सदाचार और तपस्या का उज्ज्वल रूप मिलता था। पर थे तो हम भी लड़के ही। लड़कों का स्वभाव कुछ शरारतों की ओर तो झुका रहता है। यद्यपि वह जमाना लीडरशाही या नेतागिरी का नहीं था पर फिर भी इसके कीटाणु सब जगहों की भांति वहाँ भी आ गए थे। एक लड़का था हरीश। हरीश शरीर से लम्बा चौड़ा था। उसका शरीर जितना तगड़ा था बुद्धि भी उतनी ही मोटी थी। गणित और व्याकरण उसे न तो समझ आते थे और न याद होते थे। फेल होते होते वह अन्त में हमारे साथ आ गया और फिर गुरुकुल छोड़ दिया। परमेश्वर भी विचित्र लीलायें करता है किसी को शरीर दिया तो बुद्धि में कमी कर दी बुद्धि दी तो शरीर से अस्वस्थ और क्षीण बना दिया। धन और मकान दिया तो पुत्र ही नहीं हुआ। पुत्रों की संख्या वृद्धि हो गई तो खाने के लाले पड़ गए। सभी सुख के साधन रहे मकान धन दौलत मोटर गाड़ी बाल बच्चे सब दिए तो एक पागल मस्तिष्क की बना दे दी। कितना न्यायकारी है प्रभु। यह नहीं कि सारी सृष्टि को प्रभु ने ऐसी बना रखा है। स्वामी दयानन्द को प्रभु ने सब कुछ दिया। प्रखरबुद्धि बलिष्ट एवं स्वस्थ शरीर, ज्ञान का सागर दिया तो कर्म करने का कौशल भी दे दिया। मैं जब स्वामी दयानन्द की तुलना विश्व के अन्य महापुरुषों से करता हूँ तो ऐसा लगता है कि सबके गुणों को एकत्र करके महर्षि दयानन्द को प्रभु ने बनाया। जरा देखिए

अमृत की खोज में जंगल पहाड़ और नदियों के स्रोतों की खोज डालना और अपनी आयु को घोर तपस्या में बिताना उनके जीवन को श्री राम के बनवास से भी बढ़कर बना देता है। आत्मा को अजर अमर और अविनाशी मान कर हमेशा लोक सेवा के मैदान में डटे रहना, कुरुक्षेत्र में गीता का उपदेश करते हुए श्री कृष्ण महाराज को सामने ला देता है। भगिनी और चाचा की मृत्यु से प्रभावित होकर विवाह की तैयारियों व समारोह में से भाग निकलना और अपने जीवन को ब्रह्म समाधि में लगाकर मृत्युंजय पद को पाने के लिए अमृत की खोज करना भगवान बुद्ध की बोधि वृक्ष के नीचे की समाधि की सहसा याद दिलाता है। दीन, दुखियों, अपाहिजों और अनाथों के लिए आँसू बहाते हुए महर्षि क्राइस्ट जान पड़ते हैं। शास्त्रार्थ की वेदी पर खड़े हुए और धुआँधार भाषण करते हुए वे आचार्य शंकर दीख पड़ते हैं। एकेश्वरवाद और वैदिक सार्वभौम भ्रातृभाव का उपदेश करते हुए मुहम्मद साहब प्रतीत होते हैं। भक्ति और ध्यान में मग्न उनमें सन्तप्रवर रामदास, कबीर, दादू चैतन्य, नानक, तुकाराम आदि सभी भक्तों की प्रतीति होने लगती है। देश की दुर्दशा से सताए हुए जब वे गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य ... विदेशी ... से अच्छा ... नारा लगाते हैं ... चक्रवर्ती राज्य सराज्य स्वतन्त्रता, स्वाधीनता की चर्चा ... हैं और अपने देश ... व ... और ... में सन्तप्त हुए वे उनके सुधार की चेष्टा करते हैं तब आर्यावर्त के गौरव ... संस्कृति के उद्दीपक ... के पालक वे प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप गुरु गोविन्द सिंह और छत्रपति शिवाजी महाराज मालूम पड़ते हैं। मुझे महर्षि दयानन्द को छोड़कर अन्य कोई व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न नहीं दिखाई देता। ऊपर के सभी धर्मोपदेशक और नेता सम्माननीय हैं पर नेतृत्व की दृष्टि से मुझे महर्षि अद्भुत व्यक्तित्व के प्रतीत होते हैं।

... मैं कहाँ बहक गया बात तो मैं कुरुक्षेत्र गुरुकुल के छात्र हरीश की कर रहा था और बहक कर महर्षि दयानन्द की चर्चा करने लगा। हाँ तो हरीश में लीडरशाही के कीटाणुओं का प्रवेश हो गया और उन लीडरशाही ... को ... बनाने में कमजोर और निर्धन ... विद्यार्थियों में ... के ... साथ में छोटे छोटे ... हो उनके पीछे नारे लगाते हुए चल ... तब वे ... बन जाते हैं ... ... की लोकोक्ति ... चरितार्थ कर ... भागी बनाने के ... को आगे कर देते ... गुरुकुल कुरुक्षेत्र ... कमजोर ... और ... । ... में ... ... था। ... योजना के अनुकूल एक मास्टर साहब को परेशान करना ... उन दिनों ... आन्दोलन ... था। भगतसिंह राजगुरु और सुखदेव को फाँसी ... सम्भावना थी ... नगर नगर ... अनेक रूपों में ... का भी आर्यसमाजी ... ... के महान रहने और ... जगहें गुरुकुल कांगड़ी के ... भगतसिंह के गुरु स्वामी दयानन्द के ... लाला लाजपत राय ... दयानन्द कालेज का वह छात्र था। तब भला यह सी०आई०डी० गुरुकुलों को क्यों छोड़ते। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के मुख्याधिष्ठाता जी एक रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर थे। अम्बाला के रहने वाले। अंग्रेजों के पिट्ठू। हमने अपनी योजनानुसार अपने को क्रान्तिकारी समझते हुए गुरुकुल की सभी लालटेनें घटी तथा इस तरह के सामान छिपा दिए। और जब खोज मची तो आगे आगे सी०आई०डी० मास्टर-साहब और पीछे-पीछे हम छोटे बच्चे या लड़के और यह सब तो हमारे जिम्मे था। लीडरशाही का लीडर तो पूज्य होता है। हरीश दूर खड़े तमाशा देख रहे थे। एक उपयुक्त स्थान पर पहुँचने पर मैंने हाथ में ली हुई खड़ाऊँ से ऐसा हाथ मारा कि लालटेन चकनाचूर हो गई और मैं तो एक आलमारी में छिप गया और लड़के कमरे में भागे। आगे-आगे लड़के और उनके पीछे सी०आई०डी० मास्टर। मुझे याद है मेरी तरह एक छोटा लड़का

— शेष पृष्ठ ७ पर

नशेमन से धुआं उठता है, तुम कहते हो सावन है।

— सन्तोष 'कण्व'

गतांक से आगे

मैं वादो की बात कर रहा था, साम्प्रदायिकता से समझौतों की बात। राष्ट्र को बिना बताए राष्ट्र के भविष्य का सौदा करने का परिणाम अन्तत क्रान्ति ही हुआ करती है।

इन्दिरा जी के समय में जब कांग्रेस की हालत खस्ता हुई तो उन्होंने उस समय की घोर साम्प्रदायिक संस्था मुस्लिम मजलिस से गुप्त समझौता किया। डॉ0 फरीदी उसके अध्यक्ष थे। इससे पहले मुस्लिम लीग से हाथ मिलाया था। जब लोगों ने आपत्ति की तो कह दिया कि यह जिन्ना वाली लीग नहीं अपितु राष्ट्रीय मुसलमानों की संस्था है।

उत्तर प्रदेश में मुस्लिम मजलिस और केरल में मुस्लिम लीग। दोनों घोर साम्प्रदायिक व राष्ट्रविरोधी संस्थाएं। जिस लीग को कांग्रेस ने राष्ट्रीय विचार के मुसलमानों की संस्था घोषित किया उसी ने भारत दर्शन नामक पुस्तक पर बवंडर खड़ा कर दिया। केरल में आठवीं कक्षा में पढाई जाने वाली इस पुस्तक में नेहरू जी की जीवनी थी। लीग की दृष्टि में यह साम्प्रदायिक पुस्तक थी। उसने चेतावनी दी कि यदि इसे पाठ्यक्रम से नहीं निकाला गया तो बलवा हो जाएगा। जो नेहरू जीवन भर मुसलमानों का पक्ष लेते रहे उन्हीं को केरल की मुस्लिम लीग साम्प्रदायिक बताकर बलवे की धमकी दे रही थी और उनकी बेटी इन्दिरा वहीं लीग के साथ संविद सरकार चला रही थी।

केरल के शिक्षा मन्त्री थे लीग के मोहम्मद कोया। उन्होंने वहां की पाठशालाओं में हजारों फारसी अध्यापक नियुक्त किए थे वह भी इस शर्त के साथ कि फारसी पढने वाला कोई छात्र हो अथवा नहीं अध्यापक अवश्य रहेगा। निश्चित ही लीग ने कुछ शर्तों पर कांग्रेस का साथ दिया होगा। वे वादे देश से छिपाए गए बाद में जो हुआ वह सामने है। पहले गुप्त समझौता किया फिर कोया को शिक्षा मन्त्री बनाकर जरा से केरल में दसहजार फारसी अध्यापक रखवा दिए।

यह सब मैं इस लिए याद दिला रहा हूं ताकि पराजित कांग्रेसी अपने अन्दर झांक कर देखें कि सत्ता के लिए वे किस हद तक गिरे हैं। हिन्दुओं को गाली देकर ही कोई मुसलमानो का नेता बन सकता है। मुस्लिम मजलिस के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ0 फरीदी भी इसके अपवाद नहीं थे। उनका परिचय उनके निम्न वक्तव्य से ही मिल जाएगा--

हमने (मुसलमानो ने) डेढहजार वर्ष तक हिन्दुस्तान पर शासन किया है। हम शासित अल्पसंख्यक बनकर यहां नहीं रह सकते।
हिन्दुओं को हिन्दू बनकर रहना है तो, वे नेपाल चले जाएं।

पहले तो कांग्रेसी नेता कहते रहे कि मजलिस सभी मुसलमानों की संस्था नहीं है। लेकिन जब इन्दिरा जी की गद्दी डांवाडोल हुई तो उन्होंने इसी मजलिस का दामन पकडा। दोनों में गुप्त सम्पर्क हुआ और गुप्त समझौता। वह समझौता क्या था कहते हैं कि इन्दिरा जी ने फरीदी को पांच वचन दिए थे।

1. उत्तर प्रदेश की दूसरीभाषा उर्दू कर दी जाएगी।
2. सेना पुलिस आदि सभी विभागों में मुसलमानों की अधिकाधिक भरती होगी।
3. रामपुर में उर्दू विश्वविद्यालय बनाया जाएगा।
(4) मुस्लिम पर्सनल ला में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।
(5) उत्तर प्रदेश का राज्यपाल या मुख्यमन्त्री मुसलमान होगा।

जब यह रहस्य उदघाटन हुआ तो इन्दिरा जी चुप्पी साध गई। इशारा कर दिया राजेन्द्र कुमारी बाजपयी को। उन्होंने कह दिया कि ऐसा कोई वादा नहीं किया गया। लेकिन इसके बाद का घटना क्रम कुछ और ही कहानी कहता है।

प0 कमलापति त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री थे। केन्द्र सरकार ने उनसे त्यागपत्र लिखवा लिया। इन्दिराजी को डर था कि हो सकता है कि त्रिपाठी जी उर्दू के लिए आनाकानी करें। अब रास्ता साफ था। राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर बागडोर सौंप दी राज्यपाल को। न जाने कहां से ढूंढ कर अकबर अली को निकाला और राज्यपाल की कुर्सी पर बिठा दिया। उन्होंने आते ही फरमान आदेश निकाला

1. उर्दू के पत्रों का जवाब उर्दू में दिया जाए।
2. सभी अदालतों में उर्दू की अर्जियां ली जाएं और उन पर उर्दू में ही कार्यवाही की जाए।
3. राज्य के समस्त सरकारी और गैरसरकारी स्कूलों में उर्दू अध्यापक अवश्य रखा जाए चाहे पढ़ने वाला विद्यार्थी एक ही हो। यदि कोई न हो तो वह अन्य विषय पढ़ाए।
(4) उर्दू की पाठय पुस्तकें सरकारी खर्चे से तैयार करवाई जाएं। सरकारी व्यय से ही उनका प्रकाशन हो तथा विद्यार्थियों को निःशुल्क वितरित की जाएं।
(5) उर्दू सचिवालय तथा उसका निदेशक अलग हो।
(6) उर्दू एकेडेमी अलग बनाई जाए।
(7) सभी सरकारी विभागों में उर्दू का प्रयोग किया जाए।
(8) उर्दू को राज्य की दूसरी भाषा माना जाए तथा इसके लिए कानून बनाया जाय।

यह सब क्या सिद्ध करता है इन्दिरा जी ने फरीदी से समझौता किया था। उर्दू को दूसरी भाषा बनाए बिना ही यह सब किया गया। इस दिशा में कानून बनाने के लिए कई बार विधेयक और अध्यादेश लाए गए लेकिन दाल नहीं गली। इन सब प्रयासों की कहानी उत्तर प्रदेश राजभाषा संशोधन विधेयक 1989 में कही गई है। कानून बनाने की कोशिश बहुतों ने की लेकिन जनमत के विरोध की आशंका और अपने मन की कलुषता से नहीं बना सके। अब नारायण दत्त तिवारी चुनाव हारने के बाद कहते हैं कि कांग्रेस ने तो अपना वादा निभाया है।

इतना ही नहीं तिवारी जी ने एक और फुलझड़ी छोड़ी है। कहते हैं आशा है कि नई सरकार लम्बित अध्यादेशों को लागू करेगी।

अपने स्वार्थों के लिए गुप्त समझौते करना कांग्रेस की परम्परा बन चुकी है। कांग्रेस से निकले या निकाले गए लोग भी उसी का अनुकरण करते रहे हैं। कभी चौधरी चरण सिंह ने भारतीय क्रान्ति दल बनाया था। उर्दू के विषय में जब उनसे पूछा गया तो बोले- भा0 क्रा0 द0 उर्दू को दूसरीभाषा बनाने में खुशी महसूस करेगा।

अरे! सत्ता के लिए क्या-क्या पता किसने नहीं चाहा है। चौधरी साहब भी कुर्सी के लिए कम लालायित नहीं थे। जब जनता पार्टी बनी तो हेमवती नन्दन बहुगुणा ने दिल्ली की इमाम बुखारी से साठगांठ की थी। अब जनता दल के नेता और भारत के प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह पर भी यही आरोप है।

गुप्त समझौतों की परम्परा अत्यन्त घातक है। देश खतरे में है। सत्ता की कुर्सियों पर दण्ड पेलने वालों।

तुम्हें काली घटा को भी
नहीं पहचानना आया।
नशेमन से धुआं उठता है
तुम कहते हो सावन है।।

उत्तर प्रदेश की नई सरकार किसी के बहकावे या दबाव में न आवे। उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने का कोई औचित्य नहीं है। जहां तक प्रश्न उर्दू भाषा भाषियों के हित का है तो क्या मैं यह पूछ सकता हूं कि ये उर्दूभाषी कौन है? कहां है? उत्तर प्रदेश और बिहार तो सदा से हिन्दी भाषी राज्य रहे हैं। यहां उर्दू भाषी कहां से आ गए? मैं अपने पिछले लेख में लिख चुका हूं कि जिस जनगणना के आधार पर राज्य में कुछ उर्दू भाषी घोषित किए गए हैं वह जन-गणना ही जाली है। भविष्य में यदि इस प्रकार के विवादों से बचना है तो जनगणना- प्रपत्र के प्रारूप

— शेष पृष्ठ ११ पर

स्वामी श्रद्धानन्द

• पं० जवाहरलाल नेहरू

(स्वामी श्रद्धानन्द के तेइस दिसम्बर सन् उन्नीस सौ छब्बीस के बलिदान के विषय में पं० जवाहरलाल-नेहरू ने अपनी आत्म कथा- मेरी कहानी में पृष्ठ- 233-234 पर जो उल्लेखनीय भाव व्यक्त किये हैं वे यहाँ प्रस्तुत हैं।)

"साल 1926 के अखीर में हिन्दुस्तान में एक भारी दुःखद घटना से अँधेरा-सा छा गया। इस घटना से हिन्दुस्तान भर घृणा व रोष से काँप उठा। उससे पता चलता था कि जातीय वैमनस्य हमारे लोगों को कितना पीछे गिरा सकता था।

स्वामी श्रद्धानन्द को, जबकि बीमारी से चारपाई पर पड़े हुए थे, एक धर्मान्ध मुसलमान ने कत्ल कर दिया। जिस पुरुष ने गोरखों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी और उनकी गोलियों का सामना किया था उसकी कैसी मौत।

करीब-करीब आठ वर्ष पहले इसी आर्यसमाजी नेता ने दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद की वेदी पर खड़े होकर हिन्दुओं और मुसलमानों की एक बहुत बड़ी सभा को एकता का और हिन्दुस्तान की आज़ादी का उपदेश दिया था। उस विशाल भीड़ ने "हिन्दू-मुसलमानों की जय" के शोर से उनका स्वागत किया था। और मस्जिद से बाहर गलियों में उन्होंने उस ऐलान पर अपने खून की एक संयुक्त मोहर लगा दी थी। और अब अपने ही देश-भाई द्वारा मारे जाकर उनके प्राण- पखेरू उड़ गये। हत्यारा यह समझता था कि एक ऐसा अच्छा काम कर रहा है जो उसे बहिश्त को ले जायेगा।

विशुद्ध शारीरिक साहस का, किसी भी अच्छे काम में शारीरिक तकलीफ सहने और मौत तक की परवाह न करने वाली हिम्मत का मैं हमेशा से प्रशंसक रहा हूँ। मेरा ख्याल है कि हममें से ज्यादातर लोग उस तरह की हिम्मत की तारीफ करते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द में इस निडरता की मात्रा आश्चर्य-जनक थी। लम्बा कद, भव्य मूर्ति, सन्यासी के वेश में बहुत उम्र हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी चमकती हुई आँखें और चेहरे पर कभी-कभी दूसरों की कमजोरियों पर आने वाली चिड़चिड़ाहट या गुस्से की छाया का गुजरना, मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूँ। अक्सर वह मेरी आँखों के सामने आ जाती है।"

प्रस्तुतकर्ता सोती वीरेन्द्र चन्द्र
कमला कुटीर, 565, सुभाष नगर,
इलाहाबाद।

पृष्ठ ६ का शेष......

राजेन्द्र और एक और तगड़ा लड़का अर्जुन उस सी०आई०डी० मास्टर साहब के हाथ लगे। अर्जुन का नाम याद आते ही कई साल व्याकरण और गणित में फेल होने के बाद इसने आत्महत्या करली। मैं यह तो नहीं जानता कि वह अपरिपक्व छात्र असूर्य नाम के लोकों में गया या नहीं। परन्तु आज भी जब उसकी फांसी लगा हुआ, जंगल में लटका हुआ रूप याद आता है तो मन एक बार तो डर ही जाता है। जीभ निकली हुई। छाती पर टपका हुआ खून। खड़े बाल। विकराल चेहरा। चला गया अर्जुन। व्याकरण की कारिकायें, सिद्धियां और गणित के सूत्र ले गए उसकी जान। क्या यह भी कोई शिक्षा हुई। तब से अब तक शिक्षा पद्धति में परिवर्तन के लीडरशाही के नेताओं के भाषण सुनते सुनते कान पक गए पर अर्जुन का फाँसी भी शिक्षा पद्धति में कोई परिवर्तन न होने से आज 67-68 वर्ष बाद भी वैसी ही बनी हुई है। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय-तृतीय समुल्लास में वर्णित शिक्षा पद्धति ही देश का कल्याण कर सकती है। हां, तो राजेन्द्र और अर्जुन पकड़े गए। अभी पूछताछ हो रही थी तो उस गहन अन्धकार को अपने टार्च और घरेलू लालटेन के प्रकाश से दूर करते हुए, गुरुकुल के भयंकर, मरखने आचार्य-श्री पं०ईश्वरदत्त जी सिद्धान्तालंकार आ धमके। इनको हम "आचार्य जी" कहा करते थे। आचार्य जी ने आव देखा न ताव देखा और बारीबारी से "राजेन्द्र" और "अर्जुन" को लात और घूंसों से मारना शुरू किया। थोड़ी देर एक को पीटते और लालटेन तथा घंटा की बाबत पूछने पर न तो अर्जुन ने कुछ बताया और न राजेन्द्र ने। श्री ईश्वरदत्त जी ने गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ते हुए शेर से युद्ध किया था। बगीचे में परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। अचानक वनाधिपति उनके सामने आकर खड़ा हो गया। आचार्य जी ने उसे देखा। दोनों की नजरें मिलीं। आचार्य जी की आँख झपकी और शेर उन पर कूदा। बिना घबराये वे नीचे झुक गए। पीठ का कुछ मांसपंजों से ले गया और इन्होंने अपना एक डंडा उसकी पीठ पर मारा। वह दूसरी बार लपका परन्तु फिर ये झुक गए। वह तीसरी बार लपका तब तक इनके शोर और आवाज सुनकर सैकड़ों विद्यार्थी लाठी, डंडे और हाकियां लेकर आ पहुंचे। उधर शेर ने इन्हें दबोच कर जमीन पर पटक दिया और स्वयं इनको ढककर छाती से चिपटा पड़ा रहा। अन्त में एक बंदूक धारी आया और शेर के पेट से बन्दूक लगा कर उसे सदा को सुला दिया। यही श्री ईश्वरदत्त जी आज शेर बने दोनों लड़कों को मार रहे थे। मनुष्य का मन भी विचित्र होता है। बड़ा शक्तिशाली। वह डर जाय तो चूहे से काँप उठता है, यदि डट जाय तो जिसके राज्य में सूर्य नहीं छिपता उन अंग्रेजों की सेना के गोरों की संगीनें भी श्रद्धानन्द का दिल्ली की चाँदनी चौक के मैदान में कुछ न बिगाड़ सकीं। मुझे भी जोश आ गया और मैं बीच में जोर से बोल पड़ा- आचार्य जी। आप इनको बिना अपराध के मार रहे हैं। मार की भी कोई हद होती है।" मैं समझ रहा था कि मेरे यह कहते ही हमारा लीडर हरीश भी सामने आ जाएगा पर सच मानिए पिटाई के समय वह कहीं छिप गया था। उसका कुछ न पता था और अब दो की जगह तीन की खूब पिटाई हुई। पर, तीनों में किसी के एक भी आँसू नहीं आया। आज भी वह मार याद आती है तो सोचता हूँ कि जिस "लीडर" की मरम्मत होनी चाहिए थी- यदि सी०आई०डी० को भगाना अपराध था तो वह तो बच गया और मरम्मत हुई हम तीनों की। दो निर्दोष और तीसरा सी०आई०डी० को भगाने का भागी मैं। तो समझ लीजिए कि नेतागिरी का प्रत्यक्ष उदाहरण हरीश था।

"लीडरशाही" एक वैज्ञानिक कला है। धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक सभी क्षेत्रों में आजकल इसका प्रयोग किया जा रहा है। राजनैतिक क्षेत्र में तो इसका बोलबाला है ही। धार्मिक क्षेत्र में भी इसका प्रवेश हो गया है। नेतागिरी के लिए आवश्यक गुणों से युक्त एक व्यक्ति आर्यसमाज गोरखपुर में आ धमका और दो-चार दिन में उसने सुन्दर भाषा और जोरदार आवाज में उसने आर्यसमाज के अधिकारियों को प्रभावित कर लिया। हमारे नित नए नेताओं के सौभाग्य से लोगों में विवेक का हमेशा काफी अभाव रहता है। जैसे सुना बस वैसे विचार बन गए। रोज तरह-तरह के सुन्दर भाषण सुनकर रोज विचार बदलने में तो कोई मान-हानि का सवाल ही नहीं, बल्कि एक ही विचार बहुत दिनों तक टिकना बुद्धिहीनता की निशानी मानी जाने लगी है। फिर इन आर्यसमाजों में भी राजनीति की भांति कुछ ही व्यक्तियों की तूती क्यों न बोले।

नेतागिरी का फल है समाज में अनुशासन का मंत्र दिन प्रतिदिन बढ़ना। आज तो प्रत्येक व्यक्ति अपने को नेता मान रहा है। नेता का पहला लक्षण है अपनी बात को ऊपर रखना, दूसरों की बात न सुनना। नवयुवक व योवृद्धों को बेवकूफ समझते हैं और सोचते हैं कि दुनिया का सब ज्ञान और अनुभव उनको हासिल हो गया है, और उनको किसी के सलाह, मशविरे की आवश्यकता नहीं। प्रत्येक क्षेत्र में हड़ताल, तालाबन्दी, सत्याग्रह की नौबत आ गई है। आपस में द्वेष और अनादर बढ़ता जाता है। जब सभी अपने को नेता समझते हैं तो कौन किसकी सुने।

आवश्यकता है इस नेतागिरी के इलाज की। इसका एक ही रास्ता दिखाई देता है और वह है आर्यसमाज जैसी प्रगतिशील और जागृत संस्थायें लोकमत को शिक्षित बनायें। लोगों में विवेक पैदा करें। जिस समय जनता में मेधाशक्ति आ जाएगी। विवेक आ जाएगा तो इन नेतागिरी के नेताओं से छुटकारा मिल जाएगा।

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ।
अहं सूर्य इवाजनि।

-अथर्व 20-115-1

मैंने पिता प्रभु से सत्यरूपी मेधा को पा लिया है। मैं साक्षात् सूर्य हो गया हूँ।

स्वामी श्रद्धानन्द के ६३वें बलिदानदिवस पर दिल्ली में विशाल शोभा यात्रा

आर्यसमाज के तीन सूत्रीय महाभियान के क्रियान्वयन पर विशेष बल

स्वामी श्रद्धानन्द के 63वें बलिदानदिवस के अवसर पर श्रद्धानन्द बाजार से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान-स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में एक विशाल एवं भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। शोभा यात्रा बड़ी ठण्ड के बावजूद अपने निश्चित समय 10 बजे से प्रारम्भ हो गई थी। प्रातः से ही गुरुकुलों व डा0ए0वी0-स्कूलों के बच्चे बड़ी संख्या में शोभा-यात्रा में भाग लेने के लिए श्रद्धानन्द-बलिदान भवन के सामने पहुँच चुके थे। हंसराज कुलाची माडल स्कूल की ओर से अनेक सुन्दर झांकियों का प्रदर्शन किया गया। आर्य प्रादेशिकसभा के मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल शोभायात्रा कार्यक्रम का निर्देश दे रहे थे।

शोभा यात्रा में बड़ी संख्या में घोड़े, हाथी, बैंड बाजे तथा सुसज्जित झांकियां सम्मिलित थे। फूलमालाओं से सुसज्जित टैम्पूओं पर संगीत कलाकार संगीत प्रस्तुत कर रहे थे। स्कूलों तथा गुरुकुलों के बच्चे अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे थे। आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल के युवक युवतियों ने अनेक प्रकार के शारीरिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया।

श्रद्धानन्द बलिदान भवन में यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् शोभायात्रा का संचालन प्रारम्भ हुआ यह शोभायात्रा श्रद्धानन्द बाजार, नयाबांस, लालकुआं, चावड़ी बाजार, नई सड़क, चांदनीचौक आदि क्षेत्रों से होता हुई लगभग 8 किलोमीटर का मार्ग तय करते हुए लालकिला मैदान पहुँची। जब शोभायात्रा अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के विशाल प्रतिमा के सामने घण्टाघर पर पहुँची तो वहां विशाल मंच पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य जनता तथा देशवासियों को संबोधन देते हुए कहा चांदनी चौक क्रान्तिकारियों की क्रीड़ा स्थली रही है। इसी जगह स्वामी श्रद्धानन्द ने अंग्रेज सिपाहियों के संगीनों के सामने छाती खोलकर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया था। इसी चांदनी चौक में वीर वैरागी, गुरु तेगबहादुर, भाई सतीदास और भाई दयाला का बलिदान हुआ था। भाई मतीदास को यहीं आरों से चीरा गया था। इसी वीरस्थली पर रास बिहारी बोस ने कटरा धूलिया से लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीयता के प्रतीक थे। हिन्दू-मुस्लिम इतिहास में वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने प्रथम गैर-मुस्लिम नागरिक के रूप में दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद के चेम्बर से हिन्दूमुस्लिम एकता का संदेश राष्ट्रवासियों को दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना और राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। उन्होंने हिन्दी के प्रचार तथा अछूतोद्धार के लिए महान कार्य किए थे। मंच पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल और प्रो0 राजेन्द्र जिज्ञासु भी उपस्थित थे।

तीन सूत्रीय महाभियान पर विशेष बल

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने सम्बोधन में देशवासियों से अपील की कि वह अंग्रेजी के मोह तथा भ्रमजाल से मुक्त होने का प्रयत्न करें। शराब हमारे शारीरिक और मानसिक पतन का कारण है, इसलिए शराबबन्दी आवश्यक है। गाय हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की प्रतीक है। देश का आर्थिक ढांचा गोवंश की रक्षा करने से सुदृढ़ होना सुनिश्चित है। इसलिए गोहत्याबन्दी तथा गोरक्षा देशवासियों का मुख्य कर्तव्य होना चाहिए। आर्यसमाज अपने तीन सूत्रीय महाभियान के माध्यम से इन कार्यक्रमों पर विशेष बल दे रहा है। स्वामी जी ने जनसमूह के साथ नारे भी लगाए- गोवंश की रक्षा करो, अंग्रेजी छोड़ो- देशी भाषाएं लाओ और शराब बन्द करो। ◘

— पृष्ठ ५ का शेष......

अब यह तो बिलकुल साफ हो गया है कि फारुख सरकार पाकिस्तानी घुसपैठियों और आतंकवादियों पर नियंत्रण करने में सर्वथा असफल रही है। राज्य के कुछ बुद्धिजीवी अब यह भी कहने लगे हैं - "डा0 फारुख के स्वयं अलगाववादी तत्वों से निकट के सम्बन्ध हैं। वे अपने विरोधियों से निपटने के लिए पाकिस्तानी घुसपैठियों के एक गुट को स्वयं संरक्षण देते हैं।" केन्द्रीय गृहमंत्री की बेटी के दुःसाहसिक अपहरण के तथा कुख्यात आतंकवादियों को मुक्त कराने में उनकी सफलता के बाद अब केन्द्र सरकार को कश्मीर के बारे में कोई न कोई कड़ा और ठोस कदम उठाना ही होगा अन्यथा देश के मुकुट कश्मीर राज्य की एकता और अखण्डता के लिए कभी भी कोई बड़ा संकट सामने आ सकता है। डा0 रुबिया अपहरण काण्ड की सफलता से प्रोत्साहित पाकिस्तान समर्थक तत्वों ने कश्मीर घाटी तथा पाकिस्तान में खुलकर जश्न मनाया है वहीं इस घटना से कश्मीर के राष्ट्रवादी तत्वों का मनोबल निश्चित रूप से गिरा है। इस प्रकार से यह भारत सरकार के मुँह पर करारा तमाचा है। यदि केन्द्र सरकार अब भी नहीं चेती तथा पाकिस्तान समर्थक तत्वों के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाती रही तो इसका परिणाम कितना भयंकर हो सकता है, इसका अन्दाजा लगाना बहुत कठिन है। ◘

आर्यसमाज रजपुरा (बदायूँ) में वेद प्रचार

आर्यसमाज रजपुरा (बदायूँ) में 8,9,10 दिसम्बर को स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती "वेद-भिक्षु" ने ओजस्वी वाणी तथा सरल भाषा में बड़ी धूमधाम से वेद-प्रचार किया।

समस्त महिला श्रोता एवं पुरुष श्रोता विशेष रूप से प्रभावित हुए।

स्व० श्री महाना जी की स्मृति में विशाल शोक सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री कृष्णदेव महाना की स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं शोक सभा दिनांक- 8 1 90 को मध्यान्ह 30 से 4 1/2 बजे तक उनके विशाल प्रांगण में आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी की अध्यक्षता में हुई जिसमें विभिन्न प्रदेशों से उनके सम्बन्धी, मित्रों एवं हितैषियों ने हजारों की संख्या में भाग लेकर स्व0 महाना के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने श्री महाना जी के निर्मल, उदात्त चरित्र की सराहना करते हुए कहा कि आर्यसमाज ने अपना एक अमूल्य रत्न खो दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा की उनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है

आचार्य वेदव्रत अवस्थी, विश्वम्भर दयालुगुप्त श्री रूपचन्द्र दीपक वैध कुन्दन लाल आर्य, कैप्टेन सुखपाल सेन मेहता, श्री यशपाल दीवान् कुन्दन लाल आर्य कुमारी सन्तोष दत्त सरदार करमजीत सिंह, सरदार शमशेर सिंह, आचार्य ओजोमित्र शास्त्री, श्री बासुदेव सहाय अग्रवाल, श्री गुदड़ीलाल शास्त्री आदि ने उनके निश्छल, दृढ़, सर्वांगीण हितकारी जीवन की चर्चा करते हुए श्रद्धासुमन भेंट किए।

श्री मद् दयानन्द गुरुकुल बाल सदन मोती नगर, आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ की अन्तरंग दिनाक- 7 1 90 में स्व0 महाना के प्रति शोक प्रस्ताव पारित किये गये।

आर्यसमाज केसरबाग आर्यसमाज-लालबाग, आर्यसमाज सदर आर्यसमाज-श्रृंगारनगर, आर्यसमाज आदर्शनगर, आर्यसमाज चन्दननगर आर्यसमाज विकासनगर आर्यसमाज चौक श्री मद्दयानन्द बाल सदन आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ आर्यसमाज मानकनगर आदि समस्त समाजों ने अपनी अपनी समाजों में शोक प्रस्ताव पारित करके महाना परिवार को भेजे। श्री अर्जुन देव महाना महाना परिवार की ओर से सबके प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर श्रीमहाना जी के पुत्रों ने 500/- आर्यसमाज श्रृंगारनगर, 250/- आर्य प्रतिनिधि-सभा उत्तर प्रदेश 250/- आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ 250 - श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर एवं 250/-वेद प्रचार समिति आलमबाग को दान स्वरूप भेंट किए।

श्री महाना के चार पुत्र चि0 रवीन्द्र महाना, श्री सुरेन्द्र महाना श्री अशोक महाना एवं श्री राजेन्द्र महाना हैं। चारों ही महाना जी के अनुरूप ही परम आचारवान और वैदिक सिद्धान्तों के प्रति निष्ठावान हैं। प्रभु इन सब को शक्ति और सामर्थ्य दे कि ये पूज्य पिता के निर्दिष्टपथ पर चलते हुए कुल के गौरव को बढ़ायें और आर्यसमाज के कार्यकलापों में प्रगति देने के लिए भागीदार बनें।

- सम्पादक

पृष्ठ ४ का शेष.....

स्थान पर 25 करोड़ की लागत का एक भव्य मंदिर बनाने का है। इसके शिलान्यास की तिथि निश्चित कर दी गई है और दुनियाँ भर के हिन्दुओं से अनुरोध किया गया है कि वह लाखों की संख्या में ईंटें इस मंदिर के निर्माण के लिये भेजें। जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार हनुमानजी ने राम नाम अंकित कर पत्थर की शिलाओं को तैरा दिया था और लंका तक पुल का निर्माण किया था, (श्री रघुनाथ प्रताप ते सिंधु तरे पाषाण)

उसी भाँति राम राम नाम से अंकित प्रस्तर खण्ड बहुत बड़ी मात्रा में अयोध्या लाये जायेंगे। अयोध्या लाने के पहले इन राम नाम अंकित पत्थरों की विधिवत् पूजा होगी, तत्पश्चात उन्हें समारोह पूर्वक वहाँ भेजा जायेगा। क्या आर्यसमाज भी ऐसे शिलापूजन का समर्थन करेगा क्या वह भी 25 करोड़ की लागत से बनने वाले राम मंदिर को सैद्धान्तिक दृष्टि से ठीक मानता है?

जैसा कि मैं लिख चुका हूँ, आर्यसमाज के नेताओं से हम कुछ अधिक विवेक तथा तर्कयुक्त दृष्टिकोण की अपेक्षा रखते हैं। आर्यसमाज हिन्दुओं के अंधविश्वासों से भरे विशाल महासागर में डूबने के लिये अस्तित्व में नहीं आया है। उसकी अपनी एक परम्परा है,उसका प्रत्येक समस्या पर सूझ बूझ से युक्त निजी दृष्टिकोण होता है। वह न तो गतानुगति का ही अनुसरण करता है और न हिन्दुओं की प्रत्येक मूढ़ धारणा एवं अंध आस्था का ही पोषण करता है। रामजन्म भूमि के पुनरुद्धार में उसका सहयोग कैसे रहे यह तो सोचने की बात है,वह तो स्वयं अपने संस्थापक ऋषि दयानन्द के जन्मस्थान का भी उद्धार नहीं कर सका, वह स्थान भी एक जैन भाई के कब्जे में है।

हमारे हिन्दू भाइयों की भी एक खूबी है। वे किसी सार्वजनिक प्रश्न पर एक मत होना और उसके लिये संघर्ष करना तो जानते ही नहीं। हिन्दुओं में ही पं कमलापति त्रिपाठी जैसे भी हैं जो यों तो तिलक लगाते हैं, पूजा पाठ मे घण्टों खराब करते हैं,किन्तु रामजन्मभूमि विवाद में वे हिन्दुओं के आन्दोलन को कुचलने के लिये इस वृद्धावस्था में भी लंगोटा कस कर तैयार बैठे है। इन्हीं हिन्दुओं में नम्बूदरीपाद और हीरेन मुखर्जी जैसे साम्यवादी हिन्दू भी हैं जो जन्मना ब्राह्मण हैं, किन्तु अपने मार्क्सवादी मुखौटे के कारण प्रत्येक उस चीज से नफरत करते हैं। जिसके साथ हिन्दुओं की आस्था या विश्वास जुड़ा हुआ है। इन धर्म को अफीम मानने वालों के लिये न तो इस्लाम अफीम है और न ईसाईयत। अगर इन्हें किसी आस्था से परहेज है तो वह इस देश में ही जन्मी, फली फूली और बढ़ी आर्य धर्म और भारतीयता की आस्थाओं से ही है, जिन्हें देश का बहुसंख्यक वर्ग हिन्दू धर्म या हिन्दू विश्वास कह कर पुकारता है।

परन्तु क्या रामजन्म भूमि के मामले में सारा सनातनी जगत भी एक ही बोली बोल रहा है। नहीं। अभी कुछ दिन पहले एक बड़ी मजेदार खबर पढ़ने को मिली। जहा विश्वहिन्दू परिषद, ने राम मंदिर की स्थापना और उसके प्रथम चरण के रूप में शिलान्यास का आयोजन 1989 वर्ष के ही किसी आगामी मास में करना निश्चित किया तो उधर सनातन धर्म सभा के दिल्ली स्थित नेताओं ने एक वक्तव्य देकर कहा कि विश्व हिन्दू परिषद द्वारा घोषित तिथि तक तो सूर्य दक्षिणायन ही रहेंगे और कोई भी धार्मिक कृत्य सूर्य के दक्षिणायन में रहते नहीं किया जा सकता। उन्होंने तो यहाँ तक धमकी दी है कि यदि नवम्बर 1989 में शिलान्यास आदि का कोई कृत्य किया गया तो वे अपने महावीर दल की सेना को लेकर उस शिलान्यास कार्यक्रम को ही नष्ट भ्रष्ट कर देंगे। लगता है कि रावण की सेना तो जब आयेगी तब आयेगी अभी तो राम की सेना के ही कुछ बिगडे दिमाग लोगों ने इस आयोजन को नष्ट करने के मसूबे बांध लिये हैं। क्या यह सनातनी आकाश बूटासिंह की शह से तो नहीं दिखाया जा रहा है?

जो कुछ भी हो, हमें सनातनधर्म सभा या महावीर दल के इस रवैये से कोई आश्चर्य नहीं हुआ। कारण कि सनातनी हिन्दू तो सदा से ही मुहूर्त,ज्योतिष और दिशाशूल का गुलाम रहा है। उसके मान्य फलित ज्योतिष के आचार्यों ने तो जुआ खेलने ,चोरी करने, यहां तक कि वारांगना को कृतार्थ करने तक के मुहूर्त निकाल रक्खे हैं। फिर भला यदि सनातनी नेताओं ने दक्षिणायन में राम मंदिर के शिलान्यास पर आपत्ति की हो तो आश्चर्य ही क्या ? खैर, यह तो झगड़ा उनके ही घर का और वे ही इसे सुलझायेंगे। अभी तो इन विश्व हिन्दूवादियों के मान्य चारों शंकराचार्यों की भी रामजन्म भूमि के बारे में कोई स्पष्ट सम्मति सामने नहीं आई है। तब भला आर्यसमाज को ही क्या उतावली पड़ी है कि वह इसके लिये अपना सिर खपाये।

मेरे विचार से आर्यसमाज को अपनी एतद्विषयक धारणा निम्न बिन्दुओं के रूप में व्यक्त करनी चाहिए।

1 रामजन्म स्थान को एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप में स्थापित व विकसित किया जावे।

2 इसके लिये जहाँ पारस्परिक सुलह सफाई से काम लिया जाये, वहाँ अनावश्यक तुष्टिकरण को हरगिज सहन न किया जाये।

3 शिला पूजन तथा इसी प्रकार की अन्य मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों को निरुत्साहित किया जाये।

4 मुहूर्त आदि को लेकर बखेड़ा करने वाले पौराणिकों का पूरा पर्दाफाश किया जाये। ☐

पृष्ठ ३ का शेष....

जरूरत है, आज ऐसी संस्थाओं के निर्माण की आवश्यकता है, जिसमें सदाचारी, ईमानदार, देश भक्त नागरिक उत्पन्न हों। यह कार्य गुरुकुल से शिक्षा पाये व्यक्तियों से ही सम्भव है। आज हमारी सब से बड़ी आवश्यकता सच्चरित्रता की है, अंग्रेजी भाषा की नहीं/ हम अंग्रेजी स्कूल धड़ाधड़ खोलते चले जा रहे हैं। हमारे नवयुवक यह अनुभव नहीं करते कि अंग्रेजी बोलना- सीखना इतना जरूरी नहीं जितना सच्चरित्र तथा ईमानदार होना।

जिन दिनों मैं यह लेख लिख रहा हूँ उन दिनों आये- दिन समाचार-पत्रों में उच्चतम स्थिति पर बैठे व्यक्तियों के सम्बन्ध में कीचड़ उछाला जा रहा है। रोज का अखबार पढ़कर ऐसा लगता है कि अपना देश बेईमानों तथा दुराचारियों का गढ़ है। कहीं कोई अछूता नहीं दीखता। हर व्यक्ति पर कालिख पुती दीखती है। फलां ने इतना खा लिया, फलां ने इतने का गबन किया। है कोई बचा जिस पर भी कीचड़ न उछाला जा रहा हो। हम स्कूल, कालेज, यूनीवर्सिटियां खोलते जा रहे हैं। कहीं कोई नहीं कहता कि हमारा उद्देश्य युवकों को सच्चाई, ईमानदारी, सच्चरित्रता सिखाना है। अब अंग्रेजी जानने वाले और धड़ाधड़ अंग्रेजी बोलने वालों की जरूरत नहीं है, अब जरूरत है ईमानदार सच्चरित्र व्यक्तियों की। यह लक्ष्य सिर्फ गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली उद्घोषित करती है। गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का आधार ही चरित्र निर्माण करना है।

(ख) संयम का जीवन- आज के युग में मार-धाड़, लूट-खसोट, झूठ-फरेब, भ्रष्टाचार व्यभिचार मानो जीवन का अंग बन गये हैं। शिक्षा में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य को कोई स्थान नहीं। य तो सब कोई कहते है कि मार-काट, झूठ-फरेब बुरे हैं, परन्तु धर्म के इन पोजिटिव अंगों को आधार बना कर कोई शिक्षा-प्रणाली चल नहीं रही। किसी घर में जाकर देखिये। भ्रष्ट विचारों से लबालब भरे हुए सैकड़ों मैगजीन दीखेंगे। बच्चे, युवा तथा बूढ़े एक-साथ बैठे फिल्मों को देखते तथा इनमें मजा लेते मिलेंगे। सच्चरित्रता तथा संयमी- जीवन यह सब घोषित रूप से गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का ही काम है। जैसे मैकाले के समय अंग्रेजी-शिक्षा के बिना काम नहीं चल सकता था, वैसे आज के युग में गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के इन आधारभूत अंगों के बिना राज्य का चलन नहीं चल सकता। मैं सोचता हूँ कि स्वराज्य मिलने के बाद देश को अपने विकास के लिये जगह-जगह गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली को अपनाने तथा प्रगति देने का समय आ गया है, क्योंकि आज जरूरत है ऐसे युवकों की जो सदाचारी हों, संयमी हों और चरित्रवान हों, चोर-लुटेरे न हों हमें घोषित करना होगा कि हम जो शिक्षा-संस्थाएं खोलेंगे उनमें जो विषय अब हम पढ़ाते हैं, वे तो पढ़ाये ही जायेंगे, परन्तु उन संस्थाओं में चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जायेगा।

परन्तु हमारा दुर्भाग्य यह है कि भारतीय संस्कृति के जो तत्व स्वराज्य पाने से पहले हमने गुरुकुलों के रूप में पकड़े थे उन्हें हमीं छोड़ते चले आ रहे हैं। इसके बजाय कि अंग्रेजी विश्वविद्यालयों के वाइस चान्सलर तथा रजिस्ट्रार अपने को मुख्याधिष्ठाता तथा प्रस्तोता कहें, हम मुख्याधिष्ठाता तथा प्रस्तोता को वाइस-चान्सलर तथा रजिस्ट्रार कहने में गौरव अनुभव करते हैं यद्यपि अभिप्राय दोनों शब्दों का वही है। गुरुकुलों का मूर्धन्य गुरुकुल कांगड़ी रहा है। कोई समय था जब गुरुकुल कांगड़ी के सिद्धान्तों का अनुकरण कर जगह-जगह गुरुकुल की शाखायें खोली गई थीं। अब समय आ गया है कि सरकारी सहयोग से गुरुकुलीय-सिद्धान्त शिक्षा जगत में फैल जायें, उनमें घर [illegible] गुरुकुल स्वयं डूबता चला जा रहा है। अब गुरुकुल स्वयं गुरुकुल नहीं रहा, गुरुकुल में गुरुकुल की संस्कृति नहीं रही। यह एक थर्ड-क्लास कालेज का रूप धारण करता जा रहा है। वहां कोट, पतलून, नैक टाई चल पड़ी है। हम स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम भर लेते हैं, वैसे उन्हें भूल गये हैं। गुरुकुल की वर्तमान दशा को देखकर यू०जी०सी० भी सोच में पड़ गया है कि इस संस्था में जब अपनापन कुछ रहा ही नहीं, तो इस की मान्यता को क्यों न समाप्त कर दिया जाय।

आर्यसमाज की देश को अनेक देनें हैं, परन्तु मेरे विचार में सबसे बड़ी देन "गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली" है। स्कूल, कालेज तो खोलने ही चाहियें, उनमें जो विद्या-ज्ञान दिया जा रहा है, वह दिया ही जाना चाहिये, परन्तु इस सबकी नींवें सच्चरित्र, संयमी तथा भारतीय संस्कृति में रंगा मानव उत्पन्न करना होना चाहिये। ऐसे युग को लाने के उद्योग को मैं कहता हूँ कि "जमाना आ गया है- गुरुकुल का"।

□

-- ------

पृष्ठ ७ का शेष.....

को ही बदलना होगा। यह प्रारूप ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के मस्तिष्क की उपज है। इसमें से भाषा का अंश ही निकाल देना चाहिए। इसके अन्य मुद्दे भी गम्भीर विचार की अपेक्षा रखते हैं कभी पृथक् से इस पर चर्चा करेंगे।

अपने स्वार्थ के लिए साम्प्रदायिक गुटों से समझौते करना बन्द कर दो। इनकी मांगें सुरसा के मुंह की भांति फैलती जाएंगी। राजीवगांधी, विश्वनाथप्रताप-सिंह तथा अन्य लोगों की आंखें खोलने के लिए मैं एक घटना का उल्लेख करना चाहूँगा।

नेहरू जी की भांति इन्दिराजी ने भी मुस्लिम साम्प्रदायिकता के आगे घुटने टेके हैं। लेकिन इन लोगों की मांगें समाप्त नहीं हुई। इन्दिराजी छूट देते-देते थक गई, ये मांगते-मांगते नहीं थके। अपना उल्लू सीधा कर नए-नए दबाव डालते गए। इन्दिराजी परेशान हो गई। उन्होंने दुखी होकर बम्बई में कहा था-

"हमने उर्दू की उन्नति और मुसलमानों के लिए क्या-क्या नहीं किया। जिस बिहार और राजस्थान में मुस्लिम मुख्यमन्त्री की कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था, वहीं हमने मुस्लिम मुख्यमन्त्री बनाए। बार-बार यह घोषणा करने पर भी कि मुस्लिम पर्सनल ला में कभी हस्तक्षेप न किया जाएगा मेरे ऊपर मुसलमान दोषारोपण कर रहे हैं।"

उदाहरण तो और भी बहुत दिए जा सकते हैं। समझदार को इतना ही काफी है। चुनाव लड़ना है तो राजनीतिक मुद्दों पर लड़ो। वोटों के दलालों से साठगांठ मत करो। भाषा-समस्या देश के बुद्धिजीवियों के लिए छोड़ दो। इसे आपस की राजनीति में मत घसीटो। भाषा-नीति पर आम सहमति होनी चाहिए। कोई उर्दू के पक्ष में वोट मांगे और कोई विपक्ष में, यह धन्धे बाजी अब बन्द होनी चाहिए।

उत्तर प्रदेश हिन्दी भाषी है, और हिन्दी भाषी ही रहेगा। जो सरकार इस स्थिति को बिगाड़ना चाहेगी यहाँ की जनता उसे उखाड़ फेंकेगी। नईसरकार कांग्रेस की भूलों से शिक्षाग्रहण कर राज्य का अहित नहीं करेगी, ऐसी आशा है।

□

आर्यसमाज मेस्टनरोड कानपुर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मेस्टनरोड का 110 वाँ वार्षिकोत्सव शिवरात्रि दि0 22 से 25 फरवरी 1990 तक श्रद्धानन्द पार्क में मनाया जायगा। जिसमें कई विद्वान सन्यासी, भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर जिला उपसभा कानपुर देहात का निर्वाचन भी होगा। जनता से प्रार्थना है कि वह अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

"सादगी से विवाह संस्कार सम्पन्न"

आर्यसमाज सावली आदि पंचपुरी (गढ़वाल) के श्री राजेसिंह जी नेगी अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य ग्राम- लैंगत, सावली गढ़वाल, प्रधान- आ0स0 सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल के सुपुत्र चि0 स्वरूप का विवाह संस्कार आयु0 मंजु सुपुत्री श्री वीरसिंह-जी रावत के साथ दिनांक- 30·11·89 को वैदिक विधि के अनुसार दिल्ली में सादगी के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर श्री नेगी जी ने आर्यसमाज पंचपुरी को 101/-एक-सौ एक रूपये दान दिए।

"पं0 मेधावी शास्त्री का अभिनन्दन

जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के एक विशेष सम्मेलन में 24 दिसम्बर, 1989 को आर्यसमाज मन्दिर, श्रृंगारनगर में पं0 मेधावी-शास्त्री का अभिनन्दन किया गया। सम्मेलन में समस्त कार्यक्रम किशोरें एवं युवकों द्वारा प्रस्तुत किये गये। सम्मेलन के संयोजक श्री रूपचन्द्र "दीपक" रहे। श्री कृष्ण बलदेव महाना दिवगत ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

आर्यसमाज आर्यनगर भुड़ बरेली

प्रधान - श्री विद्यासागर "अलनेश"
मन्त्री - श्री द्विजेन्द्रप्रताप आर्य
कोषा0 - श्री रामकृष्ण जौहरी

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख्य पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
पञ्जीकरण स एल ३०७१/एन पी ७६
दूरभाष २४५६६३
माघ कृष्ण ३, स. २०४६ वि
१४ जनवरी १९९०

विद्वानो से नम्र निवेदन

दिनांक- ८ फरवरी 1990 को शिवरात्रि के अवसर पर आर्यमित्र का ऋषिबोध-पर्व विशेषांक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशन हो रहा है। इसमें प्रकाशनार्थ समसामयिक विषयों पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले लेख कविता/कथानक आदि सादर आमन्त्रित हैं। कृपया पृष्ठ के एक ओर सुन्दर अक्षरों में लिखकर मुझे अन्तिम जनवरी 1990 तक भेजने का कष्ट करें।

-भवदुपामनुचर
आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

अन्तिम इच्छा

फांसी का फन्दा चूमते हुए अशफाक ने कहा था-

कुछ आरज़ू नहीं है,
है आरज़ू तो केवल।
रख दे कोई ज़रा सी,
खाके वतन कफ़न में॥

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं २२४१/५७) माघ कृष्ण १० रविवार संवत् २०४६ वि०, दिनांक २१ जनवरी १९९० (घोषणा पत्र स ७/२२ २ ८५)



प्रजा की उन्नति किस प्रकार करें

आ यद्वामीम चक्षसा
मित्र वयं च सूरयः।
व्यचिष्टे बहुपाय्ये
यते महि स्वराज्ये।।

ऋग्वेद 5/66/6

हम सब विशाल दृष्टिकोण वाले और सब ज्ञानी मिलकर इस विस्तृत और बहुसम्मति से संचालित होने वाले स्वराज्य में §प्रजा की उन्नति के लिए§ यत्न करें।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य ——— रु २५१/-
वार्षिक ——— रु. 30/-
एक प्रति ——— १रु. मात्र
विदेश में ——— १५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष
अंक-3

सृष्टि में गति देने वाला ईश्वर है।
सूर्य में प्रकाश उसी का दिया हुआ है।
अन्न में ऊर्जा उसी ने दी है।
इसलिए हे मानव ! तू ईश्वर को न भूल

अहं भूमिमददामार्य्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय।
अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतमायन।।

— ऋग्वेद 4/ 6/2

अहं §मैने§ भूमिम् §यह पृथ्वी§ आयर्याय §आर्यों के लिए§ अददाम §दी है§। अहं §मैं§ मर्त्याय §मनुष्यों के लिए§ वृष्टिं §वर्षा§ दाषुसे §देने वाला§ हूं। अहं §मैं ही§ वावशाना §चाहने योग्य अर्थात अनुकूल पदार्थ§ अप §जलों, पदार्थों अथवा सूक्ष्म ऊर्जा को§ अनयम §तेरे पाए ले जाता हूं§। देवास §संसार के सभी देवता, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, वायु अग्नि आदि सभी देव§ मम §मेरे§ केतमनु §सकेंत के अनुसार §आज्ञानुसार§ आ अयन् §चल रहे हैं§।

सृष्टि में व्याप्त परमात्मा की शक्तियों और उसके उपकारों का वर्णन करते हुए वेदमन्त्र कहता है कि यह भूमि मैंने आर्यों के लिए दी है §यदि इस भूमि पर अनार्यों का अधिकार है तो यह वेदाज्ञा के विपरीत है§। परमात्मा स्वयं यज्ञरूप है। आर्यों का जीवन भी यज्ञमय होना चाहिए इसीलिए मन्त्रों के अन्त में "इदं न मम" की भावना दर्शायी गई है। यज्ञमय जीवन बिताने वाले आर्यों को यह पृथ्वी उसने इसलिए दी है कि आर्यों के रहने से पृथ्वी पर स्वार्थलिप्सा नही बढ़ेगी और समस्त निवासियों का जीवन यज्ञमय हो जायेगा। वृष्टि परोपकार की द्योतक है। परमात्मा ने वृष्टि देकर मानवमात्र को परोपकारमयी भावना को जगाया है। सृष्टि के सभी पदार्थ उसके नियम से बन्धे हैं। आँख रूप ही देखेगी, गन्ध नही सूंघ सकती। कान शब्द ही सुनेगा, रूप नहीं देख सकता। सृष्टि के कण-कण में उसके संकेत विराजमान हैं और यही उसके शाश्वत नियम हैं। हमारे लिए उसका परमपावन संकेत है इस पावन पृथ्वी पर अनार्य्यों का आधिपत्य न होने पावे।

सृष्टि के आदिकाल से लेकर महाभारत काल के कुछ पूर्वकाल तक समस्त पृथ्वी पर आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य था। दिग्दिगन्त में वेद की शिक्षाएं प्रचलित थीं। सम्पूर्ण विश्व में एक ही वैदिक धर्म प्रचलित था। वर्णाश्रम व्यवस्था गुण कर्मानुसार थी। न कोई ऊंचा था न कोई नीचा सर्वत्र समता, समानता, एकता और भ्रातृत्व के दर्शन होते थे। जहाँ कहीं अनार्यत्व की भावना बलवती होती दिखाई पड़ी उस पर आर्यत्व की विजय हुई है। इतिहास इसका साक्षी है। हम चाहें तो ऐसे समाज की रचना फिर कर सकते हैं। उक्त वेदमन्त्र हमें शिक्षा दे रहा है कि पृथ्वी एक है, पृथ्वी के निवासी एक हैं, समस्त निवासियों का धर्म और सामाजिक नियम भी एक है फिर क्यों न सम्पूर्ण मानवजाति एकता के सूत्र में बन्ध जाये।

सर्वप्रेरक परमात्मा की यह तीनों शक्तियाँ गति, प्रकाश और ऊर्जा हमें सामर्थ्य दें जिससे कि हम विश्व को उसी रूप में जैसा कि उपर्युक्त मन्त्र में वर्णित है, फिर प्रस्तुत कर सकें। ◘

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
——— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ-माघ कृष्ण १० संवत २०४६ वि
२१ जनवरी-१९९० दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

गणतन्त्र दिवस की पूर्व संध्या पर

सैकड़ो वर्षों की दुर्दमनीय दासता के पंक में आलिप्त भारत ने अनेकों बलिदान देने के उपरान्त स्वतन्त्रता की पावनधारा से **भारत माँ** का अभिषेक किया और स्वाधीन भारत को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र गणतन्त्रात्मक संविधान देकर जनकल्याण का मार्ग प्रस्तुत किया।

इन पिछले चार दशकों में हमने सदैव गणतन्त्र दिवस पर राष्ट्र की अखण्डता और एकता बनाए रखने की शपथ दोहरायी है। और आज भी जब राष्ट्र के सन्मुख अनेकों विकराल समस्याएं मुँह बाये खड़ी हैं हम फिर उस शपथ को दोहराने के लिए इस पवित्र गणतन्त्र दिवस पर सन्नद्ध होकर खड़े हुए हैं। देश दो प्रभुसत्तासम्पन्न गणतन्त्रात्मक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने का जो सपना कभी हमने रावी नदी के तट पर देखा था वह तो पूरा हो चुका है परन्तु अब हमारे राष्ट्रनिर्माण का रचनात्मक युग चल रहा है और हम चाहते हैं हमारा यह देश सभी दृष्टियों से विश्व का शिरोमणि राष्ट्र बने। इसे प्राप्त करने में अदम्य साहस एवं उग्र राष्ट्रभक्ति की आवश्यकता है। आज हम स्वाधीन हैं अपने देश में अपना राज्य है अपना तन्त्र और अपना संविधान है। अस्सी करोड़ जन आकांक्षाओं का प्रतीक हमारा संविधान हमारे सन्मुख है। प्रभु ने हमें सब कुछ दिया है, बल विद्या बुद्धि सम्पन्न मस्तिष्क, उर्वराशक्ति सम्पन्न सुन्दर विशाल देश, कल कल करती हुई धवलधारा से परिपूर्ण पावन नदियाँ। कमी है तो केवल भावात्मक एकता और प्रखर राष्ट्रभक्ति की। करोड़ों हाथ यदि एक हाथ बनकर उठ जायें तो क्या हमारा यह प्रिय देश विश्व का **"जगद्गुरु"** फिर नही बन सकता है।

आज प्रत्येक भारतवासी को हृदय पर हाथ रखकर यह सोचना है कि क्या हम विध्वन्सात्मक एवं हिंसात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय एवं साम्प्रदायिक विवादों को तूल नही दे रहे है। आज हमारा राष्ट्रीयधर्म हमसे क्या चाहता है। क्या आज हमारा प्रथम और मौलिक कर्तव्य यह नही है कि हम सब मिलकर इस मातृभूमि की एकता और अखण्डता के लिए अपने तन, मन, और धन को अर्पित कर दें।

आर्यसमाज एक गतिशील संस्था है। उसका क्षेत्र बहुआयामी एवं बहुव्यापी है। राष्ट्र की समृद्धि एवं विश्व शान्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इसने विश्व को उदात्त विचारों की एक परमपावन श्रृंखला दी है। आर्यसमाज का जीवन प्रवाहमान है। स्वच्छता वहीं होती है जहाँ प्रवाह होता है। हमने देश की स्वतन्त्रता विश्व के स्वातन्त्र्य स्वप्न को पूरा करने के एक अंग के रूप में स्वीकार की है। हमारे महर्षि ने "आर्याभिविनय" में एक मन्त्र के द्वारा प्रभु से प्रार्थना की है कि हमारा यह देश आर्यावर्त्त वरराज्य वर विद्या और वरनीति से सदैव उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर होता रहे। क्षेत्रीयतावाद और सम्प्रदायवाद के विरुद्ध उन्होंने लिखा है- "सम्प्रदायों के फैलने से अपने आर्यावर्त्त देश को बहुत हानि उठानी पड़ी है। इसलिए सब सज्जनों को श्रम उठाकर इस सम्प्रदायवाद को जड़मूल से उखाड़ डालना चाहिए"।

हम रावी के पावन तट पर आज ही के दिन ली हुई भारतमाँ के अमरसपूतों की उस प्रतिज्ञा को पुन दोहराते हुए प्रभु से यही कामना करते हैं कि **"आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो ऽति व्याधी महारथो जायताम्"** की भावना को साकार करता हुआ हमारा यह गणतन्त्र विश्व का महानतम शान्तिदायक अजेय राष्ट्र बने।

महान देशभक्त लाला लाजपतराय

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त और आर्यसमाज को अपनी माँ पुकारने वाले परम देशभक्त लाला लाजपतराय ने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज को समर्पित कर दिया था। सम्पूर्ण राष्ट्र नतमस्तक होकर उनके जन्मदिवस 28जनवरी को उन्हें कृतज्ञता भरी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। साइमन कमीशन का विरोध करते हुए ब्रिटिश कूरशाही ने उन पर भयंकर लाठीचार्ज किया था जिसके परिणाम स्वरूप वे असमय में ही कालकवलित हो गये थे। उनके अन्तिम शब्द थे- "मेरे शरीर पर पड़ी लाठी का एक एक प्रहार अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील बन जायेगा"।

आर्यसमाज अपने समर्पित अमरपुत्र लाला लाजपतराय को शत-शत श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

नब तक सूरज चान्द रहेगा

सुभाष तेरा नाम रहेगा

"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा"-- के घोष से भारत की तरुणाई को जगा देने वाला वीरवर सुभाष बोस अमर है। उसके "जयहिन्द" के उद्घोष ने भारत के गगनमण्डल को आज भी गुंजायमान कर रखा है। राष्ट्रके प्रति अपने असीम शौर्य से भरी सेवाओं के लिए कृतज्ञता पूर्वक नमन करते हुए आर्यसमाज उनके पावन जन्मदिवस 23 जनवरी को अपनी शत-शत श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

"भारत माता की पुकार"

• राजेन्द्र प्रसाद विश्वकर्मा "सरल"
ग्राम रायपुर दुन्सी (रवारी)

सिसक रही है भारत माता इसकी करुण पुकार सुनो तुम।
आज रो रही है मानवता आगे बढ़कर प्यार करो तुम।।
धधक रहा पंजाब यहाँ नित नरमुण्ड उतारे जाते हैं
माँ-बहिनों के नित्य यहाँ सुहाग उजाड़े जाते हैं
सरदार भगतसिंह और लाजपतराय की यादगार करो तुम।
आज रो रही है मानवता आगे बढ़कर प्यार करो तुम।।
आज विधर्मी नित्य यहाँ पर अपना जाल बिछाते हैं
विदेशी धन के बल पर हमारे बन्धु ही हम से छुड़ाते हैं
पेट्रो डालर से होने वाला बन्द आज व्यापार करो तुम।
आज रो रहा है मानवता आगे बढ़कर प्यार करो तुम।।
धर्म नाम पर नित्य यहाँ पर नये-नये मजहब बनते हैं।
स्वार्थी अन्धविश्वास फैलाकर अपना स्वारथ पूरा करते हैं,
वैदिक धर्म की ज्योति जलाकर आलोकित संसार करो तुम।
आज रो रही है मानवता आगे बढ़कर प्यार करो तुम।।
ऋषि-मुनियों की गो माता का बन्द अभी है नहीं संहार,
राम, कृष्ण और दयानन्द का स्वप्न नहीं हो रहा साकार,
गो माता रो रही आज इसकी अब तो चीत्कार सुनो तुम।
आज रो रही है मानवता आगे बढ़कर प्यार करो तुम।।
बंगाल और कश्मीर, असम में है दावानल सुलग रही,
देश के चारों ओर सीमा पर है चिनगारी धधक रही,
जन जाग्रति का ध्येय बनाकर आज राष्ट्र निर्माण करो·तुम।
आज रो रही है मानवता आगे बढ़कर प्यार करो तुम।।
नहीं समय है अब सोने का धर्म क्रान्ति अब लाओ,
सजग राष्ट्र प्रहरी बनकर पूरे देश पर छा जाओ,
"सरल" देश की विषम चुनौतियों को स्वीकार करो तुम।
आज रो रहा है मानवता आगे बढ़ कर प्यार करो तुम।।

गणतन्त्र दिवस एवं हमारा भारतीय गणराज्य

● डा० शकुनचन्द आर्य
विद्यावाचस्पति
प्रधान आर्य समाज
लालगंज, रायबरेली

26 जनवरी (गणतन्त्रदिवस) हमारा महान राष्ट्रीय पर्व है। यह वह पावन दिवस है जिस दिन आज से 40 वर्ष पूर्व भारतीय संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधान के अनुसार भारतीय गणराज्य की स्थापना हुई थी। डा0 राजेन्द्रप्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने थे। भारतीय संविधान लागू हुआ था। ब्रिटिशदासता का अंतिम चिन्ह गवर्नर जनरल का पद समाप्त हो गया था। दिल्ली का गवर्नर जनरल या वायसराय भवन राष्ट्रपति भवन के रूप में परिवर्तित कर दिया गया था। "जनगणमन" हमारा राष्ट्रीय गान तथा "सत्यमेव-जयते" हमारा आदर्श नारा या वाक्य बना था।

गणराज्य भारत के लिए नया है

ऐसे गणराज्य भारत के लिए नई वस्तु नहीं है। महान ग्रन्थ महाभारत, बौद्ध एवं जैन ग्रन्थों से अनेक गणराज्यों एवं गणराज्य संघों का उल्लेख मिलता है। भगवान कृष्ण स्वयं यादव, कुकुर, भोज, अंधक, वृष्णि आदि गणराज्यों के संघ के प्रमुख थे। भगवान बुद्ध का जन्म शाक्यगण नामक गणराज्य में हुआ था। उनके पिता उस गणराज्य के निर्वाचित प्रमुख थे जिन्हें राजा कहा जाता था। जैनधर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी का जन्म लिच्छिवि गणराज्य में में हुआ था जिसकी राजधानी वैशाली थी। उसकी एक सभा थी जिसमें 7777 सदस्य थे जो कि राजा कहलाते थे। वे मिलकर एक प्रमुख का चुनाव करते थे जो कि गणराज्य संघ का प्रमुख अधिकारी होता था, जिसे नायक कहते थे। परन्तु उपरोक्त गणराज्य बाद में पारस्परिक फूट, सभासदों द्वारा एक दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्तियों, कमजोर रक्षाव्यवस्था, अक्षम गुप्तचर विभाग तथा गणराज्यों की गोपनीयता बनाये रखने में असफलता के कारण नष्ट भ्रष्ट हो गये तथा पड़ोसी राज्यों के आक्रमणों के शिकार बनकर उनके अधीन हो गये।

वर्तमान भारतीय गणराज्य की विशेषताएं

परन्तु हमारा वर्तमान भारतीय गणराज्य अभूतपूर्व एवं अपने आप में अद्वितीय है। यद्यपि भारतीय इतिहास एवं साहित्य में रघु, युधिष्ठिर ऐसे सम्राटों तथा मौर्य, गुप्त आदि वंशीय चक्रवर्ती साम्राज्यों का वृतांत मिलता है परन्तु वर्तमान भारतीय गणराज्य जिसकी सीमायें उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में रामेश्वरम्, पूर्व में असम तथा पश्चिम में पंजाब को छूती है, जिसकी सरकार का गठन बालिग मताधिकार के द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों के माध्यम से होता है, ऐसा गणराज्य कभी नहीं रहा।

वर्तमान भारतीय गणराज्य

वर्तमान स्थिति

हमारे गणराज्य ने अपने 40 वर्ष के गत जीवन में अभूतपूर्व उन्नति की है। जहां हम पहले संसार के मामूली एवं पिछड़े राष्ट्र थे आज हमारी गणना विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में की जाती है। हम विश्वनिर्गुट, दक्षेस एवं राष्ट्रमण्डल संगठनों के प्रमुख सदस्य हैं। हमारी जल, थल एवं नभ सेनाएं विश्व की महानतम सेनाओं में से हैं। हमने "पृथ्वी, अग्नि एवं त्रिशुल, आदि प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण कर अपनी रक्षा व्यवस्था पर्याप्त सुदृढ़ कर ली है। उद्योगधन्धों आदि के मामलों में भी हमने सर्वतोमुखी प्रगति की है। औषधियों, रक्षाउपकरणों, मशीनों तथा रेल के सामान आदि अनेक वस्तुओं में हमने आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है तथा पेट्रोलियम पदार्थों तथा अनेक अन्य मामलों में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं। हमारा जीवनस्तर भी उठा है तथा औसत आयु भी बढ़ी है।

लेकिन स्थिति निरापद नहीं है

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सब कुछ ठीक है। हम पूरी तरह सुरक्षित हैं और हमारे सामने कोई समस्या या परेशानी नहीं है। उल्टे हमारे सामने ऐसी अनेक समस्याएं हैं जो कि हमारे लिए दुखद एवं चिन्तनीय हैं, जिनके समाधान के बिना हम न तो अपने को सुरक्षित मान सकते और न निश्चिन्त बैठ सकते हैं।

इनमें से सबसे प्रमुख समस्या देश की भावात्मक एकता को सुदृढ़ करने, इसकी सुरक्षा, अखंडता एवं सार्वभौमिकता को मजबूत बनाने की है। दुख का विषय है कि हमारी सरकार ने गत चालीस वर्षों में इस दृष्टि से जो कदम उठाये है, वे लाभप्रद कम, हानिकारक अधिक सिद्ध हुए हैं। इसका कारण उनका समस्याओं का सही निदान कर उसकी सही दवा न करना है। उदाहरण के लिए वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता थी कि देश के सीमान्त राज्यों को विशेष सुदृढ़ करने की दृष्टि से वहां राष्ट्रवादी शक्तियों को बल प्रदान किया जाता है परन्तु सरकार ने कश्मीर में अस्थाई धारा 370 कायम रख कर, पंजाब में राष्ट्रवादी हिन्दुओं की तुलना में पृथकतावादी एवं धर्मान्ध अकालियों तथा सिख आतंकवादियों के प्रति तुष्टीकरण नीति अपनाकर, पूर्वोत्तर भारत में मिजोरम, मेघालय तथा नागालैंड आदि ईसाई बहुल राज्य बनाकर तथा कुछ समय पूर्व तक केन्द्र में सत्तारूढ़ कांग्रेस (ई) दल ने बारी-बारी से तामिलनाडु में पृथकतावादी तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी विरोधी द्रुमक एवं अन्नाद्रुमक आदि दलों के साथ गठबन्धन कर, देश की एकता को मजबूत करने में समर्थ संस्कृत एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा सम्बन्धी जो कदम उठाये हैं उसके दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। कश्मीर एवं पंजाब की स्थिति सरकार के नियन्त्रण से बाहर जा रही है, वहां पृथकतावादी शक्तियां अपने खेल में सफलता की ओर बढ़ रही हैं पूर्वोत्तर सफलता की ओर बढ़ रही है, पूर्वोत्तर में ईसाई बहुल राज्य अराष्ट्रीय एवं विदेशी शक्तियों एवं मिशनरियों के केन्द्र बने हुए है, तामिलनाडु "अंग्रेजी सदैव, हिन्दी-कभी नहीं" का नारा लगाकर देश की एकता में बाधक बना हुआ है। संस्कृत एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा तथा उसका समुचित प्रचार न करने तथा अंग्रेजी भाषा पर अधिक जोर देने के कारण तथा उसकी अनिवार्यता बनाये रखने के कारण अंग्रेजी एवं अंग्रेजियत जोर पकड़ कर राष्ट्रवादी विचारधारा तथा देश की एकता को कमजोर कर रही है।

देश की दूसरी सबसे बड़ी समस्या हमारा नैतिक पतन है। जिन नैतिक आदर्शों एवं चरित्रगत विशेषताओं के कारण हम हजारों वर्षों तक तुर्क, मुगल एवं अंग्रेज आक्रमणकारियों तथा विदेशी शासकों के प्रभाव का प्रतिरोध कर अपनी संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत तथा पृथक पहिचान को बनाये रखने में पूर्णतया समर्थ रहे, उस संकटकाल में भी हमने गुरुनानक, कबीरदास, तुलसीदास, स्वामी-दयानन्द, लोकमान्यतिलक, लाला लाजपतराय, महात्मा गाँधी तथा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ऐसे महापुरुष तथा महाराणाप्रताप, शिवाजी एवं गुरु गोविन्द सिंह ऐसे वीरपुरुष एवं राष्ट्रनायक उत्पन्न किये, आज हम उन्हें भूलते रहे हैं।

तीसरी समस्या हमारे सामने देश में फैल रहे अंग्रेजी भाषा एवं अंग्रेजियत के साम्राज्य की है जो कि हमारी सांस्कृतिक दासता की परिचायक है। यद्यपि हमने राजनीतिक दासता से छुटकारा पा लिया है, आर्थिक स्वतन्त्रता की ओर भी तेजी से बढ़ रहे हैं, परन्तु जिस प्रकार कि हम सांस्कृतिक एवं भाषायी दृष्टि से अंग्रेजी भाषा एवं अंग्रेजियत की दासता में जकड़ रहे हैं, वह चिन्तनीय विषय है।

कुछ महत्वपूर्ण सुझाव एवं उपाय

ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि उपरोक्त स्थिति के निराकरण के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर कुछ ठोस उपाय किये जायें। इस दृष्टि से निम्नांकित सुझाव महत्वपूर्ण हैं:-

(1) वर्तमान स्थिति में देश की उपरोक्त स्थिति के सुधार में आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचार विशेष सहायक सिद्ध हो सकते हैं। जिस प्रकार कि उन्होंने देश की एकता के लिए स्वयं गुजराती भाषाभाषी होते हुए हिन्दी को आर्यभाषा के नाम

— शेष पृष्ठ ७ पर

पर्यावरण एवं समाज

● डॉ॰ डी॰ सी॰ तिवारी
मंत्री, आर्यसमाज, गोण्डा

जीव प्रकृति का अभिन्न अंग है। वेदों और उपनिषदों ने इसे स्पष्ट करते हुए बताया है कि सृष्टिकर्ता ने जीवों के पालन-पोषण हेतु प्रकृति की उत्पत्ति जीवों की उत्पत्ति से पूर्व की है। प्रकृति की अनुपस्थिति (अभाव) में जीवों का रहना असम्भव है। तैत्तिरीय उपनिषद् के अनुसार "तस्मद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः।।"

उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट है कि सृष्टिकर्ता ने सर्व प्रथम आकाश की उत्पत्ति की जिसमें प्रकृति तथा अन्य परमाणुओं को एकत्र किया। आकाश के पश्चात् वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी और पृथ्वी से औषधि अर्थात् वनस्पतियां तथा वनस्पतियों से अन्न, फिर अन्न से वीर्य तत्पश्चात् पुरुष अर्थात् शरीर की उत्पत्ति हुई। आदि काल में मानव जाति अपना पालन पोषण जंगलों में रहकर फलों एवं अन्य वनस्पतियों आदि और आवश्यकता पड़ने पर शिकार आदि करके पूरा करता था। सृष्टिकर्ता की यह महान अनुकम्पा थी कि उसने पृथ्वी को जीवों की रचना से पूर्व अपार वानस्पतिक एवं खनिज सम्पदाओं से परिपूर्ण कर दिया था।

पृथ्वी और मानव के सम्बन्ध की एक मर्मस्पर्शी कथा श्री मद्भागवत पुराण के चतुर्थ स्कन्ध के सप्तदशो ऽध्याय में मिलता है जहां राजा पृथु को राजा बनते ही अन्नभाव का सामना करना पड़ा। प्रजा भूख से बिलखती हुई राजा के पास पहुंच कर विनती करने लगी कि जिस प्रकार कोटर में सुलगती ज्वाला से वृक्ष जल कर भस्म हो जाता है, उसी प्रकार हम पेट की ज्वाला से जले जा रहे हैं। "जठरेण अभितप्ता यथाग्निना कोटरस्थेन वृक्षः"। आप हमारे जीवन रक्षक हैं। स्वामी। हमें इस कष्ट से मुक्ति दिलाने अर्थात् अन्न उपलब्ध कराने की कृपा करें। गहन विचारोपरान्त राजा पृथु इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पृथ्वी ने स्वयं ही अन्न एवं औषधियों आदि को अपने भीतर छिपा लिया है। अतः राजा-"इतिव्यवसितो-बुद्ध्या प्रगृहीत शरासनः, सन्दधे विशिखंभूमेः क्रुद्धस्त्रिपुरहा यथा"। ने पृथ्वी से अन्न और औषधियां आदि प्राप्त करने हेतु अपना धनुष उठाकर पृथ्वी को निशाना बनाया तथा पृथ्वी से समस्त धान्यों को प्राप्त कर प्रजा को सन्तुष्ट किया। तत्पश्चात् एक समय ऐसा आया जब धरती और उसके संसाधनों पर नियन्त्रण कर पाना मानव क्षमता के बाहर हो गया। मानव, अन्य जीव प्रजातियों की तरह ही पृथ्वी की प्राकृतिक क्रियाओं को नियन्त्रित अथवा प्रभावित किए बिना प्रकृति पर निर्भर रहने लगा। सहस्त्रों वर्षों तक मनुष्य अन्य जीवधारियों वनस्पतियों और प्रकृति के अन्य अंगों के बीच यह पारस्परिक निर्भरता चलती रही।

मनुष्य को प्रकृति का अभिन्न अंग मानने वाले उन ऋषियों मुनियों को यह भलीभांति ज्ञात था कि जड़जगत अर्थात पृथ्वी, नदियां, झरने, पर्वत आदि और चेतन जगत अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी, पौधे, वनस्पतियाँ एवं वन, इन सभी इकाइयों के पारस्परिक समानुपातिक सामंजस्य से पर्यावरण सन्तुलित रहता है। वे यह भी जानते थे कि उपरोक्त में से किसी एक इकाई को आघात पहुँचने पर परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण पर्यावरण-प्रणाली प्रभावित हो जायगी और उसका सन्तुलन बिगड़ सकता है। इसलिए हमारे ग्रन्थों तथा ऋषि मुनियों ने सदैव चराचर जगत के प्रति सदाशयता, दया तथा प्रेम की भावना का पाठ पढ़ाया है।

मनुष्य और अन्य जीवधारियों तथा वनस्पतियों के बीच इतना अन्तर्विरोध कभी नहीं रहा जितना मानव हस्तक्षेप से अन्य जीवों एवं वनस्पतियों के अस्तित्व को आज खतरा उत्पन्न हुआ है। मानव की बढ़ती- जनसंख्या एवं उसकी बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने में उसने पृथ्वी के अन्य जीवों एवं वनस्पतियों पर विजय प्राप्त करना प्रारम्भ किया। इसी क्रम से उसके, पृथ्वी, अन्य जीवों एवं वनस्पतियों से निकटता धीरे-धीरे समाप्त होने लगी और साथ ही समाप्त होने लगी जन-जीवन की सरलता एवं उच्चविचार। "सादा जीवन, उच्च विचार" की हमारी धारणा आज लगभग समाप्त हो चुकी है।

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ उसकी आवश्यकताएं बढ़ना स्वाभाविक थीं। ज्यों-ज्यों आवश्यकताएं बढ़ती गईं, आविष्कारकों ने अपने करिश्मे दिखाए। तदनुसार वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगतियां, मनुष्य को अपनी सुख-सुविधाएं शीघ्रातिशीघ्र जुटाने के लिए अनेक साधन उपलब्ध कराने लगीं। इन नये-नये वैज्ञानिक साधनों की सहायता से उसने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रकृति का अन्धाधुन्ध शोषण इस प्रकार करना प्रारम्भ किया कि प्रकृति के अंगों की पुनर्जीवन की क्षमता ही समाप्त होने लगी। इस प्रकार मानव ने प्रकृति का दोहन ही नहीं किया अपितु उसको विकृत और नष्ट करने में भी संकोच नहीं किया। मनुष्यों में विलासिता पूर्ण जीवन यापन की होड़ लग गयी। इस अन्धी दौड़ में मानव मशीनीकृत हो गया है। परिणाम स्वरूप औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा बांधों, सड़कों, नहरों आदि का अनियोजित ढंग से निर्माण हुआ, जिससे हमारा प्राकृतिक पर्यावरण बुरी तरह प्रभावित हुआ है। पर्यावरण के असंतुलन और प्रदूषण की समस्याएं भी इन्हीं कारणों की देन हैं। मोटर, गाड़ी, स्कूटर, टैम्पो तथा अन्य द्रुतगामी वाहनों की दौड़, भाड़-भाड़, शोर गुल तथा ऊँचा-ऊँचा अट्टालिकाएं हमारे नगरों में विकास को प्रदर्शित करते हैं, वहां पर जगह-जगह कूड़े-कचरों का ढेर, गन्दे पानी का भराव तथा उसमें सड़ते कूड़ों की दुर्गन्ध, गन्दी और घनी बस्तियों में जगह-जगह भिन-भिनाते मक्खियों, मच्छरों तथा अन्य प्राणघातक कीटाणुओं एवं उद्योगों के कचरों से निकलती जहरीली एवं प्राण-लेवा गैसें आदि इन महानगरों की दूसरी तस्वीरें प्रस्तुत करते हैं।

पाश्चमी देशों के अनुकरण की प्रवृत्ति आज हम में बढ़ती जा रही हैं, अपने पुराने मूल्यों से हटकर हम ऐसे मूल्यों को विकसित कर रहे हैं जिससे पारस्परिक समन्वय समाप्त होता जा रहा है और हम प्रकृति से अपना सम्बन्ध तोड़ते जा रहे हैं।

जीवन वहीं सम्भव है जहां शुद्ध "जीवन" जल तथा "प्राण" वायु है। जिन ग्रहों पर जल और वायु नहीं है वहां जीवन का अस्तित्व भी नहीं है। पृथ्वी का 3/4 भाग जल से घिरा है परन्तु इस जल समूह का अधिक भाग समुद्री अर्थात क्षारीय होने के कारण पीने योग्य नहीं है। केवल 30/ जल ही पीने योग्य है वह भी आज भयंकर रूप से प्रदूषित हो रहा है। 20% गांवों की जनसंख्या तथा लगभग 15% शहरी जन संख्या आज शुद्ध पेय जल प्राप्त कर रही है। अशुद्ध पेय जल के कारण ही प्राण घातक बीमारियाँ जैसे पीलिया, अतिसार, पोलियो, गैसोइन्ट्रीटिस, डायरिया, अमेबियासिस और कार्डोसिस आदि न्यूनाधिक पूरे प्रदेश में फैल रहा है। 8·7% बच्चे अशुद्ध जल के कारण ही अपना प्रथम वर्ष गांठ मनाने से पूर्व ही काल-कवलित हो जाते हैं। द्रुतगामी वाहनों तथा उद्योगों के चिमनियों द्वारा उत्सर्जित जहरीली गैसों में दिन प्रतिदिन अनियोजित वृद्धि से प्राण वायु बुरी तरह प्रदूषित हो रही है जिससे मानव स्वास्थ्य, खांसी दमा, ब्रान्काइटिस, न्युमोनिया, फेफड़े के कैंसर, हृदयरोग आदि जैसी बीमारियाँ अधिकाधिक प्रभावित हो रही हैं। यही नहीं वायु प्रदूषण से अन्य जीव जन्तु तथा पेड़-पौधे भी प्रभावित होते जा रहे हैं। ऐतिहासिक भवनों को भी वायु प्रदूषण पर्याप्त हानि पहुँचाती है। अपनी इस दुर्दशा के कारण हम स्वयं हैं। धीरे-धीरे हम विनाश के कगार पर पहुँच चुके हैं।

वायु प्रदूषण से बचाव का एक मात्र उपाय है वनस्पतियों तथा वनों की सुरक्षा करना। हमारे देश में वन तीव्रगति से नष्ट हो रहे हैं एक अनुमान के अनुसार देश में 15 लाख हेक्टेयर वन प्रतिवर्ष के हिसाब से नष्ट किये जा रहे हैं। वर्ष 1987 का भयंकर सूखा हमारे देश के लिए एक सामयिक चेतावनी है कि वनों को नष्ट होने से बचाया जाय। सामाजिक वानिकी योजना के अन्तर्गत हमारे देश के विभिन्न अंचलों में वृहत् वृक्षारोपड़ का कार्य तेजी से चलाया जा रहा है परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है, इस कार्य को व्यापक बनाया जाय। पर्यावरण- संरक्षण एक आन्दोलन के रूप में पश्चिमी देशों ने

— शेष पृष्ठ १० पर

वैज्ञानिक सोच के अगुआ स्वामी दयानन्द सरस्वती

● मानवेन्द्र शर्मा
अध्यक्ष युवक मंगल दल,
दोस्तपुर सुल्तानपुर

स्वामी दयानन्द सरस्वती के ग्रंथों का मनन करने से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी प्रतिभा मात्र धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र तक सीमित न होकर इनका चिन्तन राष्ट्रीय स्वतन्त्रता व आर्थिक उन्नति की दिशा में भी था।

स्वामी जी भारत भूमि को पूर्ण आस्था से प्रेम करते थे। वे इसे सनातन गौरवमय नाम "आर्यावर्त्त" तथा यहां के निवासियों को "आर्य" व सम्पर्क भाषा को आर्य भाषा {हिन्दी} के नाम से सम्बोधित कर जन साधारण में प्रचालित करते थे। उनका मन्तव्य था कि इसमें आदि सृष्टि से आर्य निवास करते हैं। वे देश की एकता को एक जाति {आर्य}, एक भाषा {आर्यभाषा हिन्दी} तथा इसके गौरवमय सनातन नाम {आर्यावर्त्त} द्वारा एक ठोस आधार प्रदान करना चाहते थे। राष्ट्रीय एकता के लिये उनकी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण देन है।

लम्बे समय से पराधीनता का जीवन व्यतीत करने से भारतीयों में हीनभावना प्रवेश कर गयी थी। उन्होंने देशवासियों को इस स्थित से उबारने के उद्देश्य से उनका ध्यान भारत के प्राचीन गौरव की ओर आकर्षित करते हुए कहा "यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके समान भूगोल में दूसरा कोई देश ऐसा नहीं है। इस लिये इस भूमि का नाम "स्वर्ण भूमि" है। आर्यावर्त्त ही सच्चा पारसमणि है। जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण {धनाढ्य} हो जाते हैं। {सत्यार्थ-प्रकाश/11} स्वामी जी राष्ट्रीय स्वाधीनता के मार्ग में जिन्हें कांटा मानते थे "अविद्या" उसमें प्रथम है। तभी उन्होंने आर्यसमाज का आठवां निमम ही बना दिया "अविद्या को नाश व विद्या की वृद्धि करनी चाहिये"। तदर्थ उन्होंने तथा आर्यसमाज ने शिक्षा के क्षेत्र में जो क्रांतिकारी कार्य किया वह अद्वितीय है। सबके लिये अनिवार्य शिक्षा का विधान करते हुए स्वामी जी ने कहा "इसमें राजनियम" व जाति-नियम होना चाहिये कि पांचवें व आठवें वर्ष से आगे के अपने लड़के व लड़कियों को घर में न रख सकें, पाठशाला में अवश्य भेज दें। जो ऐसा न करें वह दण्डनीय हों। {स0 प्र0/14} अन्धविश्वास को भी वे पराधीनता का कारण मानते थे। वे प्रत्येक चमत्कार का युक्ति व तर्क द्वारा विवेचना करते थे।

स्वामी जी के समस्त ग्रंथों में स्वदेश प्रेम व राष्ट्रीयता की भावना सर्वत्र झलकती है। वर्तमान भारत में वे "स्वराज्य" शब्द के प्रथम उद्गाता थे। उन्होंने देशवासियों को स्वराज्य प्राप्ति के लिये प्रेरित करते हुए कहा कि "हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े"। {ऋग्वेद 1/9/1} अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों। तथा हम लोग पराधीन कभी न हों। {यजुर्वेद 38/14}

अदीना श्याम शरद शतम् {यजु0 36/24} के भाष्य में लिखते है कि "हम सौ साल की आयु तक कभी पराधीन न हों तथा स्वाधीन रहें।

इस प्रकार स्वामी जी ने देशवासियों के अन्दर न केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति करने वरन् चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने की कामना का बीजारोपण "दैनिक स्तुति प्रार्थना, उपासना के माध्यम से करने का सफल प्रयत्न किया। स्वामी जी के अन्दर देश भक्ति इतनी प्रबल थी वे ब्रह्म समाज व प्रार्थना समाज की आलोचना भी राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में करते हुए कहते हैं कि "इन लोगों की स्वदेश भक्ति न्यून है। -- भला अब आर्यावर्त्त में उत्पन्न हुए तथा इसी देश का अन्न-जल खाया, पिया, अब भी खाते-पीते हैं। अपने माता-पिता, पिता-महादि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना---- बुद्धिकारक काम क्यों कर हो सकता है। {स0प्र0/11} सन् 1857 की क्रान्ति के बाद विक्टोरिया ने सभी मतों व वर्गों के साथ समान व्यवहार की घोषणा की, जिसके कारण अदूरदर्शी व्यक्ति प्रसन्न हो गये, तब स्वामी जी ने स्वराज्य की उत्कृष्टता का प्रबल प्रतिपादन करते हुए कहा, "अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य से आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है।-- कोई कितना भी करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि व उत्तम होता है। {स0प्र0/8}

गांधी जी के 1930 में "नमक-कानून तोड़ने से लगभग अर्द्धशताब्दी पूर्व ही स्वामी जी ने "सत्यार्थ प्रकाश" में लिखा है कि जो कर लिया जाता है। वह अच्छा नहीं है क्यों कि नमक बिना दरिद्र का निर्वाह नहीं--- इससे दरिद्रों को क्लेश पहुँचता है अत कर लवणादि के ऊपर नहीं लगाने चाहिये। {स0प्र0 प्रथम समुल्लास}

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश में किस प्रकार की शासन व्यवस्था होगी इसकी विवेचना स0 प्र0 के छठवें समुल्लास में {ऋग्वेद/3/38/6} के मन्त्र-
"तिणि राजाना विदथे पुरूणि परिविश्वानि भूषथ सदांसि"। के आधार पर स्पष्ट करते हैं कि-
ईश्वर उपदेश करता है, कि व प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार में सभा {विद्यार्यसभा, धर्मार्य्य सभा, राजार्य्य सभा} नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा व धनादि से अलंकृत करें।

क्या अब भी कहा जा सकता है, कि स्वामी जी मात्र आध्यात्मिक व सामाजिक व्यक्ति थे। राजनीति से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। क्या वर्तमान में उनके अनुयायी आर्य समाज को धार्मिक संस्था कहकर सत्यार्थ प्रकाश के छठवें समुल्लास में वर्णित राज-धर्म के दायित्व से अपने को मुक्त रख सकते हैं।

आचार्य डा० मुंशीराम शर्मा चिरनिद्रा में



आचार्य डा० मुंशीराम शर्मा

संस्कृत हिन्दी इंग्लिश फ्रेन्च आदि अनेकों भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित, अनेकों क्रान्तिकारियों की प्रेरणा के स्रोत अनन्य ऋषिभक्त और आजीवन आर्यसमाज की सेवा में समर्पित आचार्य डा0 मुंशीराम-शर्मा "सोम" का 89 वर्ष की अवस्था में कानपुर में दिनाक- 12 जनवरी को निधन हो गया।

आप आर्यमित्र के अत्यन्त सम्मानास्पद लेखक थे और प्राय अपने वैदिक विचारों से आर्यजगत को प्रेरणा देते रहते थे। सरस्वती के इस मूक सेवक के निधन से आर्यजगत ने एक विष्णात विद्वान् कर्मठ समाज सेवी तथा बीसवीं सदी के गुरु द्रोणाचार्य को खो दिया है। उनके द्वारा साहित्य, दर्शन एवं समाज शास्त्र आदि विषयों पर लिखित 50 से अधिक पुस्तके देशविदेश में सम्मानित है। उन्होंने चारों वेदों का हिन्दी में अनुवाद किया था और कई हजार नीतिपरक संस्कृत श्लोको की रचना की। उ0प्र0 के राज्यपाल महोदय, मुख्यमन्त्री जी एवं अनेक नेताओं, विचारकों एवं समाज सेवियों ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके निधन को आर्यजगत की अपूरणीय क्षति बताते हुए प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना की है।

आर्यसमाज सरदार पटेल मार्ग
खलासी लाइन, सहारनपुर

दिनाक 23·12·89 का "स्वामी-श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत के विद्वान् पं0 ओमप्रकाश जी ने स्वामी जी के जीवन तथा कृत्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वामी जी वाणी से जो कुछ कहते थे तदनुसार ही जीवन में आचरण करते थे। हमको भी उनके जीवन का अनुकरण करना चाहिए तथा जो कुछ हम वाणी से कहें तदनुसार ही हमारा आचरण होना चाहिए।

"क्यों सोया आर्यसमाज रे"

— श्री हरिनन्दन मिश्र शास्त्री
ऋषभ देव उदयपुर, राजस्थान

नये जागरण के प्रहरी क्यों सोया आर्यसमाज रे।
रोज हो रहे अवतारों ने लूटा देश-समाज रे।।

§1§
देख वही फिर दशा हो चली जो थी ऋषि के काल में,
तू यदि सोता रहा, जगेगा देश नहीं सौ साल में"
मियाँ मसानी पीर औलियों का उतना ही जोर है
गली गली में गूँज रहा नकली गुरुओं का शोर है।।
तूती बोल रही भारी पत्थर पूजा की आज रे- सफल जागरण के०

§2§
वेद धर्म नैतिक आदर्शों के उत्कर्ष उदास हैं,
काल कूट पीकर ऋषि ने जीते संघर्षनिराश है,
अपनी अपनी ढपली पर अपने अपने ही राग हैं,
भिन्न वाद प्रतिवादों से सोये भारत के भाग हैं।।
चेत- पनपते पाखण्डों पर तीव्र गिरा दें गाज रे-
सफल जागरण के० ।।

§3§
क्योंकर हो साकार कल्पना देव तुल्य युग दूत की
कठिन साधना राख हो गई रे। सौराष्ट सपूत की
यहाँ रात को दिन कहने की छिड़ी प्रबल प्रतियोगिता।
जो कि पश्चिमी रंग ढंग की रही उगल-उपयोगिता।।
चापलूस चमचों की चाकी में पिस रहा स्वराज रे-
सफल जागरण के० ।।

§4§
जीवित पंचशील की अर्थी फूंक रहे शमशान में,
लेकिन दम्भ भर रहे को राही मिथ्या अभियान में।।
रूढ़िवाद के दुर्ग खड़े कथनी करनी में भेद है,
खाया जिस थाली में हमने किया उसी में छेद है।।
राष्ट्र विरोधी षड्यन्त्रों के बजे बिगुल और साज रे-
सफल जागरण के०।।

§5§
ऊँची दूकानों पर दाम उठें फीके पकवान के ।
लाखों घूम रहे भक्षण करने वाले भगवान के ।।
लगी हुई है नीलामी चौराहे पर ईमान की,
रोज रेडियो चिल्लाता है जै बोलो बेईमान की।।
शिर पर पानी डोल रहा है जल्द जाग कर गाज रे-
सफल जागरण के० ।।

"भगवान का सच्चा भक्त कौन है"

• श्री जगदीश शरण 'शीतल'
(भू.पू.) प्रधान, आर्यसमाज
चांदपुर, बिजनौर

नगर के समीप महात्मा जी के आश्रम में प्रतिदिन वैदिक सत्संग होता है। एक दिन एक सज्जन ने महात्मा जी से प्रार्थना की महाराज। आज तो आप यह बतलाने की कृपा करें कि भगवान का सच्चा भक्त कौन है। महात्मा जी ने उन सज्जन से प्रश्न किया भक्त तुम क्या कार्यकरते हो। वह सज्जन अभिमानी स्वर में बोले महाराज। अब तो मैं हर समय भगवान के स्मरण का ही कार्य करता हूँ। महात्मा जी समझ गये इस व्यक्ति को अपनी भक्ति पर झूठा अभिमान है और यह हमारे ही मुख से अपने को भगवान का सच्चा भक्त कहलवाना चाहता है। महात्मा जी शान्त भाव से बोले। तुम्हारे नगर में अमुक नाम का एक कृषक रहता है। वही भगवान का सच्चा भक्त है। तुम उसकी दिनचर्या देखकर हमारे पास आओ। वह सज्जन उस कृषक की दिनचर्या देखकर महात्मा जी के पास आये और कहने लगे। महाराज मैं उसकी दिनचर्या देख आया हूँ। वह दिन भर अपने कृषि कार्य को करके प्रातः और रात्रि को दो समय ही भगवान का नाम लेता है। इस प्रकार वह भगवान का सच्चा भक्त किस प्रकार हो सकता है। मैं हर समय भगवान का स्मरण करता हूँ और फिर भी उनका सच्चा भक्त नहीं। महात्मा जी ने देखा अभी इसका भक्ति का झूठा अभिमान दूर नहीं हुआ। बोले भक्त एक काम करो यह जल से भरा पात्र हाथ में लेकर इस आश्रम का चक्कर लगाकर हमारे पास आओ। परन्तु एक शर्त है इस जल की एक बूँद भी पृथ्वी पर गिरने न पाये। वह सज्जन जल का पात्र हाथ में लेकर आश्रम का चक्कर लगाकर महात्मा जी के पास आकर बोले देखिये महाराज। कोई जल की बूँद पृथ्वी पर गिरी तो नहीं। महात्मा जी ने कहा भक्त तुम ठीक कहते हो। परन्तु अब यह बतलाओ कि इतने समय में तुमने भगवान को कितनी बार याद किया। उन सज्जन ने उत्तर दिया कि महाराज एक बार भी नहीं। क्योंकि मेरा ध्यान तो इसी बात पर केन्द्रित रहा कि जल की कोई बूँद पृथ्वी पर गिर न जाये। महात्मा जी बोले भक्त तुम थोड़ा सा परिश्रम करने पर ही भगवान को भूल गये जबकि तुम उसका हर समय स्मरण करते हो और वह किसान जो दिन भर कठिन परिश्रम करने के पश्चात् भी उसको याद करके धन्यवाद देता है अब तुम ही स्वयं निर्णय करो कि भगवान का सच्चा भक्त कौन है। उन सज्जन ने महात्मा जी से क्षमा-याचना की और निवेदन किया कि महाराज आज मेरा अज्ञान दूर हुआ। सचमुच जो व्यक्ति कठिन परिश्रम करके सच्चाई के साथ यथोचित अपने कर्तव्य का पालन करता है और फिर भी उसको नहीं भूलता वही भगवान का सच्चा भक्त है । ◻

स्वास्थ्य-सुधा

उपचार दर्पण

समस्या- "मेरी आयु 52 वर्ष है। दो वर्षों से मेरे मुख और हाथों पर सफेद दाग आ गये हैं। सुन्नपन नहीं है।"

-एक एलोपैथिक डाक्टर, बाराबंकी।

उपचार- आप ल्युकोडर्मा §फुलबहरी-सफेददाग§ से पीड़ित हैं। तीनमास से अधिक उपचार करें। कई लोग अच्छे हुये हैं। आप भी ठीक हो जायेंगे।

कीकर §विलायती बबूल§ की हरी पत्तियाँ 150 ग्राम, हरड़ 50ग्राम व सुपारी 50 ग्राम कूट पीसकर एक लीटर पानी में उबाल कर आधा करें। छानकर एक बोतल में रख लेवें। नित्य प्रातः आधा प्याला पीने के बाद प्रातराश लियाकरें। पिगमेन्टायन बटी §आर0के0क्लीनिक, नयाबाजार, पिथौरागढ़, पिन- 262501§ की एक गोली प्रातराश व रात्रिभोजन बाद चूसा करें। दूध और केला मीस कर खाना लाभकारी है। भोजन में दाल और सलाद का सेवन आवश्यक है।

0 रोगी विवरण के साथ दो डाकलिफाफे भी निम्न पता पर भेजा करें।-

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
§कच्चाहारी§
आर्यसमाज पिथौरागढ़
उ0प्र0।

पृष्ठ ३ का शेष.....

से देश की राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयास किया, देश की एकता तथा सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने के लिए संस्कृत भाषा के प्रचार एवं प्रसार व वेदादि ग्रन्थों के अध्ययन पर जोर दिया, ऊँचनीच एवं छुआछूत का उन्मूलन कर समतावादी समाज के निर्माण का समर्थन किया, "अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बुरा से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छा होता है" का नारा लगाकर स्वतन्त्रता की हिमायत की, "सभी भारतवासी चाहे वे जिस धर्म के अनुयायी हो परन्तु वे यहां के मूल निवासी आर्यों की सन्ताने हैं" विचार को प्रस्तुत कर इस देश में रहने वाले

विविध धर्मानुयायियों के बीच विद्यमान अनेकता में एकता लाने का प्रयत्न किया, निस्सन्देह उनके विचार इस समय भी देश की एकता को सुदृढ़ करने, अखंडता, सार्वभौतिकता एवं सुरक्षा को मजबूत करने, नैतिकता की पुर्नस्थापना, राष्ट्रवाद के प्रसार, क्षेत्रवाद, विघटन तथा देश द्रोहिता को रोकने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। सरकार को चाहिए कि वह स्वामी जी के विचारों को नित्यप्रति रेडियो, टेलीविजन तथा अन्य प्रचार माध्यमों द्वारा प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए ठोस कदम उठाये।

§2§ वह देश को अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजियत के प्रभाव से मुक्त करने के लिए सभी क्षेत्रों में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता समाप्त करे। हिन्दी, संस्कृत तथा भारतीय भाषाओं के प्रचार, प्रसार एवं अध्ययन पर विशेष जोर दे। सभी छात्रों के लिए हिन्दी, संस्कृत एवं एक अन्य भारतीय भाषा का ज्ञान एवं अध्ययन अनिवार्य किया जाये। अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था हो परन्तु उसकी अनिवार्यता न हो।

§3§ नैतिकता की पुर्नस्थापना हेतु विशेष कदम उठाये जाये। शिक्षासंस्थाओं में नैतिक शिक्षा अनिवार्य की जाये। सरकारी एवं गैरसरकारी क्षेत्रों में चरित्रवान व्यक्तियों को प्रोत्साहित एवं सम्मानित किया जाये तथा उन्हें बढ़ावा दिया जाये। प्रचार माध्यमों द्वारा नैतिक विचारों, आदर्शों का प्रसारण किया जाये। भ्रष्टाचारियों को दंडित किया जाये।

§4§ सरकार विघटनकारियों, देशद्रोहियों तथा देश के मानबिन्दुओं पर प्रहार करने वाले तत्वों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करके उन्हें कुचल दे न कि उनके प्रति तुष्टीकरण नीति अपनाये क्योंकि विषैले सर्प को दूध पिलाने से वह अपनी दुष्टता त्यागने के बजाय और तेजी से काटने को दौड़ता है।

§5§ सरकार आर्यसमाज, हिन्दी साहित्य सम्मेलन ऐसे स्वयंसेवी संगठनों को आर्थिक एवं अन्य प्रकार की सहायता देकर उन्हें राष्ट्रीयता, नैतिकता एवं अन्य प्रकार के देश के कल्याण से ओतप्रोत विचारों के प्रचार एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु प्रोत्साहित करें।

प्रतिज्ञा करें

26 जनवरी §गणतन्त्र दिवस§ की पुण्यबेला पर हम प्रतिज्ञा करे कि हम भारतीय गणतन्त्र को हर दृष्टि से सुदृढ़ करने तथा इसकी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए तन,मन, एवं धन से हर प्रकार के प्रयास करने में किसी प्रकार पीछे नहीं रहेंगे। तभी "गणतन्त्रदिवस" मनाने की सार्थकता है।

आर्थिक आरक्षण - लाभ एवं हानियाँ

आचार्य पं० चन्द्रभूषण तिवारी
एम.ए, पी-एच.डी, साहित्यरत्न

आर्थिक आरक्षण के पक्ष में व जातीय आरक्षण के विरोध में जन मानस आन्दोलित हो चुका है। इसके पीछे कोई राजनैतिक माँग न होकर अधिकारों की माँग है। क्या ब्राह्मण, क्षत्रिय, भूमिहार, लोहार, यादव, चौहान आदि गरीब नहीं होते हैं? क्या हरिजन गिरिवासी, आदिवासी अमीर नहीं होते हैं? यह एक जागता और उठता प्रश्न है। यदि सवर्णों में भी गरीब होते हैं और हरिजनों में भी अमीर होते हैं तो जातीय आरक्षण क्यों?

जातीय आरक्षण से वर्ग संघर्ष खड़ा हो जाता है। आज तो अभी हिन्दू मुसलमान का साम्प्रदायिक विवाद सुरसा की तरह मुँह बाये खड़ा है, पंजाब व जम्मू कश्मीर में उग्रवादियों ने अखाड़ा खोद रखा है। कोल्हापुरम, खालिस्तान, झारखण्ड व जम्मू कश्मीर में डा0 रुबिया के प्रकरण में पाकिस्तानी झण्डा फहराना व अलग राष्ट्र की माँग करना देश के लिए चुनौती है। क्या वर्तमान नेता गरीबों को जातीय प्रश्न बनाकर पूरे भारत राष्ट्र को आग से झुलसाना चाहते हैं।

जातीय आरक्षण

देश की आजादी से आजतक जातीय आरक्षण ने केवल नेताओं की कुर्सी बचाने के अतिरिक्त और क्या कर पाया है। गरीब हरिजन गरीब ही रह गया अमीर हरिजन और अमीर बन गया, क्या कभी जातीय आरक्षण के पक्षधरों ने यह सोचा कि ऐसा क्यों हो रहा है। जाति के नाम से आने वाली सभी सुविधायें मात्र अमीर लोग ही खींच लेते हैं गरीब जान ही नहीं पाता है, यदि जान भी जाय तो अधिकारियों के पास पहुँचने पर अमीरों की शह से केवल डाँट ही सुनता है और घर आकर हाथ पर हाथ रखकर पश्चाताप करता है कि क्यों मैं चला गया।

दूसरी तरफ देश की प्रतिभा कुण्ठित होती है और नवजवान सवर्ण जाति में पैदा होने का पश्चाताप करता है, उसका मनोबल गिरता है। जैसे कि सौ स्थानों में 65 स्थान आरक्षित एवं 35 सामान्य हैं और परीक्षा में 85 सामान्य छात्रों ने उत्तीर्ण किया 15 आरक्षित ने। लेकिन आरक्षण जातीय होने के नाते 15 के अतिरिक्त 50 और वरीयता के क्रम में नौकरी पाएगे तथा 85 में से वरीयता के क्रम से 35 चुने जाएंगे शेष 50 भाग्य व जन्मना सवर्ण के नाते हताश होकर ईश्वर को गाली देते हुए मौन होकर बैठ जाएगे भले ही सवर्ण 50 की तुलना में क्यों न कम हों। इस प्रकार का अनुपात व मानवाधिकार का हनन कब तक लोग सहते व देखते रहेंगे। परिणामत. संघर्ष पूरे देश की गलियों व कूचों, सड़कों व संसद भवनों में जा घुसेगा और अवर्णनीय रक्तपात होगा। इसलिए समय रहते संभल जाना उचित है अन्यथा वर्ग संघर्ष ही खड़ा होगा।

देखने व सुनने को मिलता है कि योग्यता में असक्षम कर्मचारी जातीय आधार पर पद पाकर भ्रष्टाचार का केन्द्र खोल रखा है और वह जानता है कि हम आरक्षित व्यक्ति हैं सरकार हमारा क्या कर लेगी। यदि वर्तमान सरकार भ्रष्टाचार समाप्त करना चाहती है तो उसे यह जानना चाहिये कि जातीय आरक्षण भ्रष्टाचार का सकारात्मक रूप है।

आर्थिक आरक्षण

आर्थिक आरक्षण कौन सी चिड़िया है। पहले हम आप बैठकर ठंडे मस्तिष्क से सोचें। जिसे नेता बताना नहीं चाहता है, मात्र वोट के लालच में जातिवादी वोटों का बैंकिंग करना चाहता है। भारत देश की जनता मूलत प्रजातन्त्र लायक है ही नहीं, यहाँ तो जाति और हवा पर वोट मिलते हैं विचारों पर नहीं।

आर्थिक आरक्षण का अर्थ होना है कि गाँवों व शहरों के प्रत्येक परिवार का आर्थिक आंकड़ा रखना तथा न्यून आर्थिक परिवार को क्रमश ऊपरउठाना अर्थात चकबन्दी में जैसे आपके खेतों की मालियत रखकर दूसरो को हस्तान्तरित किए जाते हैं ठीक उसी प्रकार से सम्पूर्ण मानव जाति के आर्थिक आंकड़े के आधार पर क्रमश. ऊपर उठाया जाता है। क्रमशः 1,2,3,4,5,6 परिवार हैं जिसमें 1 व 3 का आर्थिक आधार 10 पैसा, 2 व 4 का आर्थिक आधार 30 पैसा, 5 का 60 पैसा व 6 का एक रुपया है, तो सबसे पहले 1 व 3 को आर्थिक सहयोग देकर 2 व 4 के बराबर करेंगे, पुन. 1,2,3,4 को मिलाकर आर्थिक सहयोग देकर 5 के बराबर करेंगे फिर हमने देखा कि 1,2,3,4 व 5 को आर्थिक सहयोग देकर 6 के बराबर किया।

थोड़े ही समय में देखा कि 1 से 6 तक सभी परिवार आर्थिक आंकड़े मे बराबर हो गए। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। गरीब व अमीर की खाई पट गई अब विचारों की राजनीति आ जाएगी।

आर्थिक आंकड़ों के आधार पर आर्थिक सहयोग शासन करेगा तब बैंक व अधिकारी प्रतिशत मांग कर बाप का ऋण नहीं पास करेगा, दलाली व

— शेष पृष्ठ ९ पर

तीन सूत्री कार्यक्रम को आर्यो लेकर चलो

● ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
ब्रजघाट (गाजियाबाद)

माँ भारती फिर रो रही बन्धन शिथिल इसके करो।
जग में तुम्हारी धाक है फिर से विजय श्री को वरो ।।
स्वाधीन भारत में गुलामी की घटा फिर घिर रही।
निज भेष भाषा संस्कृति फिर से हमारी लुट रही।।
जिसने पढ़ाया पाठ था संसार को सद्ज्ञान का ।
उसको पढ़ाया जा रहा है पाठ अब अज्ञान का।।
दयानन्द के हम शिष्य हैं आगे कदम बढ़ जायेंगे।
अंग्रेजियत की दासता आगे न अब सह पायेंगे ।।
गोमात रोदन कर रही अश्रु धरा पर गिर रहे।
आनन्दबोध सरस्वती आह्वान फिर से कर रहे।।
सदियों पुराने घाव अब हमसे सहे नहीं जायेंगे।
हे मातृ! तुमको देख कटती हम स्वयं कट जायेंगे।।
मद्य पान की जो आदतें परतन्त्र भारत में रहीं।
उनकी यहाँ तो बाढ़ सी हर गाँव में है आ रही।।
आदर्श जीवन का बना पीना पिलाना है यहाँ।
धरने दिलाये थे बहुत गाँधी महात्मा ने यहाँ ।।
स्वाधीन भारत में हमारी यह दशा क्यों हो रही।
भारत महोत्सव में हमारी संस्कृति है रो रही।।
राजर्षि टण्डन से नहीं नेता रहे अब राष्ट्र में।
लाज तो जाती रही अब लाजपत नहीं राष्ट्र में।।
तीन सूत्री कार्यक्रम को आर्यो लेकर चलो।
झुकने न पाये ओ३म् का झण्डा यही प्रण कर चलो।।

बुलन्दशहर जिला सभा सुगठित

जनपद बुलन्दशहर की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि जनपद बुलन्दशहर में अब केवल एक ही जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा है, अन्य नहीं, कुछ दिन पूर्व जो एक जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर के नाम से श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने रजिस्टर्ड करा ली थी, जिसके संचालन में श्री प्रकट लाल व श्री प्यारे लाल, श्री बाबूलाल जी का हाथ था अब उपरोक्त तीनों व्यक्तियों ने जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर के प्रधान से भूल सुधार कर ली है। दूसरे सम्बन्धित आर्यसमाजें शिकारपुर, ईशापुर, आर्यसमाज करौरा व आर्यसमाज जहाँगीरपुर ने दि0-17-12-89 को श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा की अध्यक्षता में होने वाले निर्वाचन में भाग लिया है। इस प्रकार रजिस्टर्ड जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर का अस्तित्व स्वतः समाप्त हो गया है। अब केवल जनपद बुलन्दशहर में एक ही जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा है। जिसके प्रधान श्री लालताप्रसाद व मन्त्री श्री कुशलपाल सिंह हैं।

अब इस प्रकार आर्यसमाजों के गठन में जिला बुलन्दशहर सुसंगठित हो गया है।

- वीरेन्द्र पाल शर्मा
उपमन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0

पर्सनल लॉ खत्म करने की अपील

उज्जैन, 10 जनवरी (वार्ता)। लेखक व पत्रकार मुजफ्फर हुसैन ने पर्सनल लॉ को समाप्त करने पर जोर दिया है तथा कहा है कि देश में पृथक-पृथक भाषा, कानून और सदन के दोहरेपन के रहते एकता की बात सम्भव नहीं है।

श्री हुसैन उज्जैन जिले के तहसील मुख्यालय तराना में लायन्स इंटरनेशनल राष्ट्रीय डिस्ट्रिक्ट- 323 जी क्षेत्र की रीजनल कांफ्रेंस को मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने भारत की अखंडता की धारणा का उल्लेख करते हुए कहा कि आज विडम्बना यह है कि जब दुनिया के दूसरे देश एक होते हैं तो हम उन्हें बधाई संदेश भेजते हैं परन्तु देश में अखंड भारत की बात करने वालों को प्रतिक्रियावादी कहा जाता है।

श्री हुसैन ने कहा कि जब तक शिव, राम और कृष्ण की बात नहीं की जाती तब तक राष्ट्रीय एकता की बात समझना भी कठिन है। राष्ट्रीय एकता को समझने के लिए सम्पूर्ण भारत को समझना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यदि ईसाई मिशनरी भारत में नितान्त सेवा भावना के लिए आए हैं तो हम उनका स्वागत करेंगे। लेकिन सेवा के नाम पर धर्मान्तरण के लिए उनका भारत में रहना हमें स्वीकार नहीं है। लायन्स क्लब को भी विदेशी संस्था के रूप में जाना जाता है।

टंकारा पहुँचिये

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि में 22, 23, 24 फरवरी 1990 शिवरात्रि पर विशाल ऋषि मेला का आयोजन किया गया है। आर्य परिवारों को टंकारा ले जाने के लिये 20-2-90 को आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से स्पेशल बस चलेगी। टंकारा के साथ यात्री देखेंगे- दादद, नगरहवेली, दमन, बम्बई, खांडला, महाबालेश्वर, गोवा, वास्कोडिगामा, अजन्ता, एलोरा की गुफाओं, इन्दौर का कांच मन्दिर, आगरा का ताजमहल, मथुरा की कृष्ण जन्म भूमि- आज ही रु0-1035/- प्रतियात्री किराया देकर अपनी सीटें सुरक्षित करा लें। निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्यसमाजों में होगी। जहां ऐसा न होगा यात्री अपने व्यय से करेंगे। यह केवल किराया है।

- रामचन्द्र आर्य,
यात्रा प्रबन्धक,
466 भीमनगर, गुड़गावाँ
(हरियाणा)

समाज सेवी का निधन

आर्यसमाज पंचपुरी के कर्मठ समाज सेवी श्री पातीरामजी आर्य ग्राम-कंगार, सावली, पौड़ी गढ़वाल का दिनांक-24-12-89 को दिल्ली में अस्वस्थता के कारण निधन हो गया है वे 73 वर्ष के थे। आर्यसमाज पंचपुरी गढ़वाल के समय-समय पर अधिकारी तथा श्री-जयानन्द भारतीय कन्या विद्यालय-पंचपुरी गढ़वाल के प्रबन्धक भी रहे हैं।

बसंत का सन्त (स्वामी दयानन्द)

● रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी
नेपाल

जिस समय पूरे देश में अंधकारके बादल छाये हुए थे वैदिक धर्म लुप्त सा हो गया था। कहीं कुछ दिखायी नहीं देता था। हम क्या है? हमें क्या करना है? सब लोग भूल गये थे। विरोधी लोग अपना जाल बिछा चुके थे। मुल्ला पादरियों का विस्तार लग चुका था। पतझड़ ही पतझड़ था। जाति वाद मूर्ति पूजा का ढोंग देवी, दुर्गा, भूत-प्रेत, बलि प्रथा, सती प्रथा ने समाज में जोर पकड़ लिया था। कहीं नारी और कुमारी की हत्या हो रही थी। कहीं भी सत्य का प्रकाश नहीं था। दिन में भी अंधेरा था। दान की प्रथा बिगड़ गयी थी। नये भगवानों का भी पदार्पण हो चुका था। निराशा का बादल मँडरा रहा था। इसी समय एक दिव्य ज्योति का उदय हुआ जिसे हम शिवरात्रि कहते हैं, शिवरात नहीं उसे सत्य का प्रकाश कहा जा सकता है उसी दिन सत्य प्रकाश में आया, फिर बसंत का आगमन हुआ। सारे सूखे बगीचे फिर से खिल गए। कोयल की मधुर तान सुनायी पड़ने लगी पतझड़ समाप्त हुआ। कैसी बहार आयी हिमालय से लेकर समुद्र पार तक हरियाली छा गयी। पादरी अपना कैम्प तोड़ गये। मुल्ला अपना पाठ बन्द कर दिये। ढोंगी लोग अपना बकसा लेकर भाग गये। फिर बसन्त आ गया। आज जो भी बहार दिखायी पड़ती है उसी ऋषि की देन है उस बसन्त के संत को कोटि-कोटि नमस्कार।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें :-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अक्टूबर 1989 को समाप्त हो गया है। वी॰पी॰ भेजने में 7-50 रु॰ अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु॰ मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी॰पी॰ भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु॰ है।

अक्टूबर- 1989

483, 2968, 3240, 5055, 5354, 5980, 9289, 9299, 9551, 9620, 9632, 11335 11343, 11354, 12016, 12429 12738, 13268, 13285, 13621, 13627, 13628, 13639, 14064, 14065, 14071, 14075, 14092 14100, 14106, 14111, 14476 14484, 14486, 14493, 14845 14847, 14848, 14849, 14850 14851, 14852, 14853, 14854, 14855, 14856, 14858, 14859, 14860, 14861 14863, 14864, 14865, 14866, 14867, 14868, 14869 14870, 14871, 14872

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

"आर्यसमाज जमुनियाबाग फैजाबाद का 96 वाँ वार्षिकोत्सव 9 दिसम्बर से 12 दिसम्बर, 89 तक बड़े ही समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री पं॰ केशवदेव जी शास्त्री वानप्रस्थी, ठा॰, महावीर सिंह (मुमुक्षु) एम॰ए॰, श्रीमती शारदा देवी प्रधानाचार्या महोपदेशिका, प्रतापगढ़ तथा आर्य भजनोपदेशक श्री-ज्ञान प्रकाश शर्मा एवं ठा॰ कुंवर महिपाल-सिंह, ने अपने अमृतमय प्रवचनों एवं भजनों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया। जिसमें महिला सम्मेलन, शिक्षासम्मेलन, तथा शंका समाधान का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें नगर तथा ग्रामीण अंचलों से अधिक संख्या में आकर श्रद्धालु एवं विचारशील श्रोताओं ने भाग लिया। किम्बहुना नगर में चार दिन तक वैदिक नाद गूंजता रहा"।

शोक समाचार

श्री सदानन्द कुशवाहा की माताजी का अन्त्येष्टि संस्कार दि॰- 19 दिसम्बर 89 को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार आचार्य रामज्ञानी आर्य के पौरोहित्य में ग्राम पाण्डेपुर सलेमपुर (देवरिया) में सम्पन्न हुआ। इसी ग्राम के श्री रामसागर कुशवाहा की धर्मपत्नी स्व॰ वसन्तीदेवी का भी शान्ति यज्ञ दि॰- 20 दिसम्बर 89 को आचार्य रामज्ञानी आर्य जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

हिन्दी

— डॉ॰ गणेशदत्त सारस्वत
सीतापुर

(१)

वीरता का कभी वेश सजा रण में तलवार लिये उतरी है।
निर्गुण हो कभी हो गुण-संयुत भक्ति के अम्बर में विचरी है।
रीति-रमी विरमी कभी प्रीति में माखन-चोर के भावभरी है।
आधुनिका-सी गुणागरी हो कभी, नागरी नागरी हो उभरी है।

(२)

स्थूलता त्याग के सूक्ष्म गई बन, जीवन की अनबूझ पहेली।
पोंछने को कभी आतुर हो श्रम- सीकरों की बनी इष्ट सहेली।
मोह नवीन प्रयोग का ले कभी टूटते मानव के संग खेली।
सत्य हो चित्रित चित्र विचित्र पवित्र है हिन्दी बड़ी अलबेली।

जागो

— पूर्ण प्रकाश मित्तल
बिजनौर

जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।
भारत के कण - कण में तुम,
नवचेतना फिर ला दो।।

युग बदलो बहुत हो चुका,
खिलवाड़ देश के आंगन में।
युग बदलो बहुत हो चुका,
अन्याय भारत के प्रांगण में।।
हर ओर शान्ति का राज रहे,
तुम तस्कर सभी मिटा दो।
जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।।

सीमाओं को करो सुरक्षित,
संगठन मन्त्र तुम गाओ।
रणभेरी बजने से पहले,
लौहपुरुष बन जाओ।।
कोई शत्रु झांक सकेना,
वीरो कदम बढ़ा दो।
जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।।

माटी कहे पुकार देश की,
श्वेत श्रमसीकरों को बहाओ।
लहरायें खेत खलिहान,
जन-जन की भूख मिटाओ।।
असहाय रहे ना कोई भू पर
तुम अपने हाथ बढ़ा दो।
जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।।

प्रान्त - प्रान्त में खून बह रहा,
मानव जीवन का मूल्य नहीं,
आतंकवाद की तूती बोलती
जीवन रक्षा का मार्ग नहीं।।"
हिंसा को अहिंसा से जीतो,
मानवता के प्राण बचा दो।
जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।।

मेहनतकश की भूख मिटा दो,
हर कुटिया पर छान डाल कर।
हर आंगन का दीप जला दो,
प्रेम की बाती कर में ले कर।।
हर कली देश की खिल जाये,
तुम "पूर्ण प्रकाश" फहरा दो।
जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।।

अन्तरंग सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ॰प्र॰ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों तथा अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक- 28 जनवरी 1990, रविवार को प्रातः 11 बजे, आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ में सम्पन्न होगी। सभा नव निर्वाचित अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों से निवेदन है कि यथासमय यथास्थान पधारने की कृपा करें।

— मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

पृष्ठ ७ का शेष.....

बेईमानी भी समाप्त हो जाएगी, भ्रष्टाचार का अन्त होगा।

आन का मैदा, आन का घी,
शंख बजावें बाबा जी।।

शासन हमारा, धन हमारा, कानून बनाए नेता। पैदा हो हमारे खेत में गेहूँ मूल्य निर्धारण करें नेता। जरा से इनकी समझ में नहीं आता है कि खाद व चीनी व तेल तो फैक्ट्री व सरकार बनवाती व बनाती है, मूल्य का निर्धारण क्यों नहीं जनता को करने देते। जवाब नहीं देंगे। इसलिए मेरी इच्छा है कि और तर्कसंगत है कि जातीय आरक्षण समाप्त कर आर्थिक आरक्षण लागू कर वास्तव में जो गरीब हैं उन्हें सुख सुविधा सरकार को देनी चाहिए। इसी में देश व जनता की भलाई है और भ्रष्टाचार की सफाई है।

बाल जगत

सत्यार्थ प्रकाशिका
द्वितीय पहेली के परिणाम

प्रथम स्थान- जिनकी पूर्तियाँ सर्वशुद्ध रहीं
सर्वश्री 1- रामेश्वर राजपूत-रनगुवां (झांसी)
2- हरिओम रावत वर्ग नायक- गंगापुर (सिटी सवाई माधोपुर (राजस्थान)
3- वेद विशाल- महानगर, लखनऊ
4- कु0 ममता आर्य- राजा का ताजपुर जि0 बिजनौर
5- कु0 अलका- कल्याणी देवी, इलाहाबाद
6- रमेशचन्द्र आर्य बरदहाबाजार- बहराइच

द्वितीय स्थान- जिनकी पूर्ति में एक त्रुटि रह गई
1- दिनेशचन्द्र आर्य कुठेला- बेहटा गोकुल (हरदोई)
2- श्यामवीर सिंह- सेमरिया (हरदोई)
3- कु0 वन्दना- नाहिली (मैनपुरी)
4- तिवारी लाल आर्य- श्री- श्रद्धानन्द बाल वनिताश्रम तिलकरोड, देहरादून।
5- कु0 श्वेता अग्रवाल- गाजियाबाद
6- उमेश कुमार आर्य- सुनीयापाड़ा- कांकिंगपाड़ा चौबीस परगना- उत्तर बंगाल

तृतीय स्थान- जिनकी पूर्ति में दो त्रुटियाँ रह गई
1- ब्र0 जितेन्द्र पुरुषार्थी-वैदिक- धर्म प्रचारक महाविद्यालय- बृजघाट (गाजियाबाद)
2- आदित्य प्रताप सिंह जी0आर0पी0 कालोनी सहारनपुर (सहारनपुर)
3- बालेश्वर त्यागी आर्य, त्यागी- नगर लढौरा, सहारनपुर।
4- अमर सिंह- फदुल्लापुर (हरदोई)
5- रघुवीर सिंह आर्य गोहमनपुर (मैनपुरी)
स्वाध्याय विजय हेतु हार्दिक बधाई प्रेषित है।

सत्यार्थ प्रकाशिका, पहेली सं0 3 के परिणाम

प्रथम स्थान- पूर्ण शुद्ध पूर्ति
1- भारत आर्य- गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या।
2- ओ३म् प्रकाश आर्य, जौरी खुर्द झांसी
3- नीरज कुमार कश्यप, अर्जुनपुर (भोजपुर बिहार)
4- महेन्द्र प्रताप यादव, पहाड़पुर (वाराणसी)
5- नरेन्द्र कुमार, तिहैया (आगरा)
6- धर्मपाल आर्य, नगली- साधारण, (मेरठ)
7- सत्यवीर सिंह आर्य, लन्ढौरा- जन्नारदार (सहारनपुर)
8- अंजलि गुप्ता, काशीपुर (नैनीताल)
9- ब्रह्मानन्द आर्य, कुठेला (हरदोई)
10- वेदविशाल, सी-817 महानगर लखनऊ
11- रमेशचन्द्र आर्य, बराहाबाजार, बहराइच
12- मुकेश आर्य वैदिक, अलीपुरकलां (मुजफ्फरनगर)
13- उमेश कुमार आर्य- सुगीयोपाड़ा कोकिनडा

द्वितीय स्थान - पूर्ति में एक त्रुटि
1- ब्रजपाल सिंह आर्य, लुहारी (मेरठ)

तृतीय स्थान- पूर्ति में 2 त्रुटियाँ
1- ब्र0 जितेन्द्र, ब्रजघाट (गाजियाबाद)

संयोजिका,
कु0 प्रतिभा
द्वारा- प्रधाना महिला आर्य समाज,
आजमगढ़। □

यह गणतन्त्र हमारा प्यारा

• राधे श्याम आर्य
मुसाफिरखाना

अमर शहीदों के शोणित से,
लिखा हुआ जिसका इतिहास।
वेद ऋचाओं की गरिमा से,
सतत हुआ है नवल विकास।

भारत के जन जन को जिसने,
दिया सहज ही नव अधिकार।
सदियों के उपरान्त मिला है,
हमें मूलतः नया विचार।

प्रगति पथों का सही नियामक,
रहा हमारा है गणतन्त्र।
गरिमा मण्डित हुआ हमारा,
मंगलकारी नव जनतन्त्र।

नई चेतना, नई व्यवस्था,
को अंगड़ाई ने ललकारा।
युगों-युगों तक अमर रहेगा,
यह गणतन्त्र हमारा प्यारा।

इसकी रक्षा में हम सब हैं,
सतत जागरूक व कटिबद्ध।
देश महान् बनाएंगे हम,
दृढ़ संकल्पों से प्रतिबद्ध।

आओ। इस पावन दिन पर हम,
करें प्रतिज्ञा मिल जुल कर।
निर्माणों का सूर्य उगाएं,
तेजस्वी सा पूर्ण प्रखर।।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जमानियाँ के हरपुर का सातवाँ वार्षिकोत्सव दि0- 5 से 7 जनवरी 90 तक धूमधाम से मनाया गया। जिसमें विद्वानों के व्याख्यान व भजन और महिला सम्मेलन हुआ। पुरुषों के अतिरिक्त ग्रामीण महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

पृष्ठ ४ का शेष....

सन् 1972 से स्वीकार किया है तथा इस सम्बन्ध में तेजी से कार्य किया है। हमारे देश ने भी प्रसिद्ध पर्यावरण शास्त्री श्री सुन्दरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण आन्दोलन को पर्याप्त महत्व दिया है। इस पवित्र कार्य के सम्पादन में सरकारी तथा स्वयंसेवी संस्थाओं ने जन-जागरण का एक सफलतम प्रयास किया है। वायु प्रदूषण रोकने में तथा नैतिक व सामाजिक मूल्यों को बढ़ाने में व्यष्टि और समष्टि देवयज्ञों के महत्व को भी नकारा नहीं जा सकता। रसायनिक दृष्टिकोण से भी हवन-यज्ञों से उत्पन्न सुगंधित धुएँ से वातावरण में व्याप्त कई प्रकार के गैसों के कुप्रभावों को रोकने में सहायता मिलती है तथा चराचर जगत के प्रति सदाशयता, दया, प्रेम एवं सह अस्तित्व की भावना बढ़ाये जाने में भी हवन-यज्ञ का कार्य-क्रम सहायक सिद्ध हुआ है।

अतः पर्यावरण को संतुलित तथा संरक्षित रखने मे ही देश व समाज का कल्याण निहित है। □

शुद्धि समाचार

हरदोई- 17 दिसम्बर 89 को सौंड़ी के ग्राम चौसर में एक मुस्लिम परिवार के तीन सदस्यों ने वैदिक धर्म स्वेच्छा से स्वीकार किया। यह शुद्धि संस्कार पं0 केशवदेव शास्त्री महो0 सभा के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ आस-पास के हजारों ग्राम वासियों ने इस संस्कार में भाग लिया। इनके नाम क्रमशः श्री रामदेवी (माता) श्री मनोजकुमार श्री अनूप कुमार (दो पुत्र) रखे गए।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह

ग्राम- व्यापुर और चिटकोहरा बाजार पटना के कई स्थानों में श्री स्वामी श्रद्धानन्द- बलिदान सप्ताह के अवसर पर हवन- यज्ञ के बाद श्री रामलखन सिंह, श्री- शिवधर आर्य, श्रीमती विद्यावती देवी का भजन उपदेश हुआ। दिनांक- 16 से 23 दिसम्बर 89 तक कार्यक्रम चलता रहा जिसमें हजारों की संख्या में जनता ने उपस्थित हो कर लाभ उठाया।

स्वराज्य के सन्दर्भ में

● सोमदत्त शर्मा, एम.ए. हिन्दी
रिसर्च स्कालर ●
मिनिस्टर आफ रिलीजन, नाटिंघम, यू के

जब तक अंग्रेजों के आधीन भारत देश था,
स्वस्थ था, सुरक्षित था, साम्प्रदायिकता से रहित था,
भाषा रोग से निरोग था, हिन्दी का भक्त था।
यह ठीक है कि लोगों को स्वराज्य के दर्शन नहीं हो पाते थे,
पर उसके नाम से ही लोग तृप्त हो जाते थे,
स्वराज्य की महिमा और श्रद्धा, सभी के घरों में थी,
उससे प्यार और मोहब्बत, सभी के दिलों में थी।
स्वराज्य के नाम पर चाहे कुछ नेता स्वार्थ सिद्ध करते हों,
राजनीति में अपरिपक्व युवकों को प्रयोग कर, अपना उल्लू सीधा करते हों,
पर स्वराज्य स्वप्न तो स्वयं निर्दोष था,
यह महर्षि दयानन्द का ही जोश था,
सर्वप्रथाम स्वराज्य शब्द सत्यार्थ प्रकाश में लिख,
किया राष्ट्र-भक्तों को मदहोश था।
फिर कांग्रेस ने स्वराज्य का ढोल पीटा,
नाम पर स्वराज्य के बहुत कुछ घसीटा,
तब कहीं जाकर स्वराज्य स्वप्न साकार हुआ।

हम त्रिदोष मिटाना चाहते हैं

● अभयमुनि वानप्रस्थ
प्रधान, आर्यसमाज, नागौर (रा.)

कुछ लोग सुना है भारत में मनमानी चलाना चाहते हैं।
ऋषियों की बसाई बस्ती को सुनसान बनाना चाहते हैं।।

गोहत्या राष्ट्र की हत्या है, था बापूजी ने भी माना।
कुछ बापू के चेले ही यों, गऊ माँ को कटाना चाहते हैं{1}

हिन्दी ही राष्ट्र की भाषा है, सिद्धान्त से सबने माना है
पर मैकाले के मानस - पून अंग्रेजी चलाना चाहते हैं। {2}

है शराब सब पापों की जड़, सब मजहब यह बतलाते हैं
मनचले मिनिस्टर मय का रंग महफिल में जमाना चाहते हैं {3}

यह तीनों मिल त्रिदोष बना, जो रोग भयानक भारी है
हम देश की रक्षा की खातिर त्रिदोष मिटाना चाहते हैं {4}

त्रिसूत्री कार्य चलाने को, आर्यों ने बिगुल बजाया है
दयानन्द के सैनिक वीरों को सोते से जगाना चाहते हैं {5}
ले पावन ओ३म् ध्वजा कर में तुम "अभय" वीर आगे आओ
यह आनन्द बोध का सिंहनाद जन-जन को सुनाना चाहते हैं{6}

टकारा समाचार

---- स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में महर्षि-दयानन्द के पावन जन्मगृह में एक सभा का आयोजन श्री श्याम जी भाई आर्य की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें ब्र0 सर्वजित, ब्र0 देशराज, ब्र0 धर्मप्रकाश, ब्र0 सुधीर ने स्वामी श्रद्धानन्द के विषय में अपने-अपने विचार बहुत भावपूर्ण हृदय से व्यक्त किये। सभा का संचालन ब्र0 जगजीवन सिद्धान्ताचार्य ने किया।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिमी उ0प्र0 का निर्वाचन

प्रान्तीय संचालक	श्री बालकृष्ण आर्य
मन्त्री	श्री वेद प्रकाश गुप्त
कोषाध्यक्ष	श्री भागवती प्रसाद गुप्त
बौद्धिकाध्यक्ष	महात्मा आर्यभिक्षु
आय-व्यय निरीक्षक	श्री हरवंश लाल आर्य

●

नामकरण संस्कार

आर्यसमाज जमानियाँ के श्री राधिका नाथ-वर्मा के द्वितीय पुत्र का नामकरण संस्कार किया गया। इस अवसर पर नगर के गणमान्य जन उपस्थित होकर नवजात-शिशु को आशीर्वाद दिया एवं आर्यसमाज-मन्दिर निर्माण हेतु 501/-रु0 दान प्राप्त हुआ।

शुद्धि समाचार

- आर्यसमाज शिवगंज के मन्त्री के प्रयत्न से राजस्थान के ग्राम नेतरा में 5 ईसाइयों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया।

- आर्यसमाज पुरानी मण्डी फीरोजाबाद ने श्री छोटेलाल गुप्त के निधन पर शोक प्रकट किया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

आर्यसमाज नानपारा का वार्षिकोत्सव

दि0- 24 से 29 मार्च 90 तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। जिसमें श्री सत्यानन्द जी {बिहार}, पं0 जयप्रकाश "आर्य" {हरियाणा} पधारेंगे। स्थानीय जनता सादर आमन्त्रित है।

आवश्यक सूचना

आर्य वीर दल पूर्वी उ0प्र0 के साधारण समिति की बैठक 7जनवरी को वाराणसी में श्री अवध बिहारी-खन्ना संचालक की अध्यक्षता में हुई। जिसमें नई नियुक्ति की घोषणा की गई तथा 14-15 अप्रैल को सुल्तानपुर में "पूर्वांचल कार्यकर्ता विचारगोष्ठी" करने का निर्णय किया गया। बैठक में पूर्वांचल के 15 विभिन्न जनपदों के अधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे। सर्व सम्मति से आर्यमुनि जी वानप्रस्थ को कार्यवाहक संचालक बनाया गया।

- बेचन सिंह
सहसंचालक
पू0 उ0प्र0 आर्यवीर दल

[illegible]

आर्यसमाज महाराजपुर {म0प्र0} में दि0 23 दिसम्बर 89 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया। कई विद्वानों ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

--

पञीकरण स० एल० डब्ल्यू /एन०पी० ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
माघ कृष्णा १०
दिनांक २१ जनवरी १९९०
दूरभाष
२४५९९३

सेवा में

12946-श्री पुस्तकालय ... जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

विद्वानो से नम्र निवेदन

दिनाक 23 फरवरी 1990 को शिवरात्रि के अवसर पर आर्यमित्र का ऋषिबोध-पर्व विशेषांक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें प्रकाशनार्थ समसामयिक विषयों पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले लेख/कविता/कथानक/ व्यंग्य आदि सादर आमन्त्रित हैं। कृपया पृष्ठ के एक ही ओर सुन्दर अक्षरों में लिखकर मुझे विलम्बतम 31 जनवरी 1990 तक अवश्य भेज देने का कष्ट करें।

-त्वदुषामनुचर
आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी का ५४ वाँ वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव दिनाक- 25 से 28 दिसम्बर 89 के अवसर पर प्रसिद्ध विद्वानों और भजनोपदेशकों के प्रवचन और भजनोपदेश से स्थानीय जनता ने भरपूर लाभ उठाया। नित्य प्रात हवन के कार्यक्रम के साथ ही पाणिनी कन्या महाविद्यालय की छात्राओं का सस्वर वेदपाठ भी हुआ।

इस समारोह में आचार्य रामकृष्ण आर्य, कलकत्ता श्री राम अधार शास्त्री मिर्जापुर, डा0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी, डा0 प्रज्ञादेवी, प्राचार्या पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी के प्रवचन एव सगीताचार्य प0 रामप्रसाद पाण्डेय, वाराणसी, श्री दिनेश दत्त आर्य बिजनौर सत्य प्रकाश आर्य मिर्जापुर तथा आर्य समाज लल्लापुरा के नवयुवक कलाकार सर्व श्री रविप्रकाश, विजय कुमार एव श्री प्रकाश के मधुर प्रभावोत्पादक भजनोपदेश हुए। ■

महर्षि दयानन्द सेवा संस्थान द्वारा वस्त्र वितरण

दि0- 31 दिसम्बर 89 को उक्त सस्थान दोघट (मेरठ) के नवयुवक उपदेशक आचार्य धनकुमार आर्य के आचार्यत्व में यज्ञ हुआ। तत्पश्चात निर्धन लोगों में ऊनी वस्त्रों का वितरण श्री प0- कर्म सिह जी द्वारा किया गया। सस्थान के व्यवस्थापक श्री रामनिवास गुप्त ने 501/- सस्थान को प्रदान किया। सभी वर्गों के लोगों ने यथाशक्ति आर्थिक सहायता प्रदान की।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स २२४१/५७)   माघ शुक्ल २ रविवार सवत २०४६ वि दिनाक २८ जनवरी १६६०   (घोषणा पत्र स ७,२२ २ ८५)



महत्सधस्थ महतीबभूविय महान्वेग एजर्थुवपथुष्टे।
सा नो भूमे प्ररोचय हिरण्यस्येव सन्दृशि मा नो द्विक्षत कश्चन।।
-- अथर्ववेद

है मातृभूमि। तू महान है और हम सबका मिलकर रहने का आश्रयस्थान है। तू सदा स्वर्ण के समान चमकने वाली है तू हमें भी स्वर्ण के सदृश चमका दे। इस भूमि पर रहने वाला कोई किसी से द्वेष न करें।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम ए साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य — रू २५१
वार्षिक — रू 30/
एक प्रति — १रू मात्र
विदेश मे — १५ पौंड

प्रकाशन का ६३ वॉ वर्ष
अंक ९

मेरी माँ

के [illegible] तुम्हें [illegible]

इस दुनियाँ में आने से पहिले जब मैं तेरे गर्भ में था न मेरा कोई शत्रु था न मैं किसी का शत्रु। न मैं किसी का मित्र था न कोई मेरा मित्र। न मैं किसी से भयभीत था न कोई मुझ से भयभीत। मै दुनियाँ के कोलाहल से कही बहुत दूर शान्त एकान्त तेरी अन्त कुक्षि में पल रहा था बढ़ रहा था। भोजन तू करती थी शक्ति मुझे मिलती थी। श्वास तू लेती थी प्राण मुझे मिलते थे। खून तेरा बनता था लालिमा मेरे होठों पर आती थी। तेरे हृदय की हर धड़कन मेरी धड़कन थी। तू भी जीवित थी मैं भी जीवित था। जहाँ तू थी वहाँ मैं था। न तुझे पता था मैं कौन हूँ कहाँ से आया हूँ न मुझे पता था तू कौन है मेरा तुझसे क्या नाता है। मैं तेरी ममताभरी प्यारभरी लाडभरी कोख में पूरे नौ मास गहरी नींद सोता रहा। ऐसी गहरी नींद जो मुझे जब से मैने जन्म लिया है आज तक नसीब नहीं हुई। मैं सच कहता हूँ मुझे कोई कष्ट नहीं था बहुत आराम की नींद जी भरकर सोता रहा पलता रहा बढ़ता रहा। और एक दिन तेरी गोद में आकर मुस्कराने लगा। जब मैने दुनियाँ में पहिली बार आँख खोलकर तेरी ओर देखा तो मुझे ऐसा लगा कि तू मेरी ओर देखकर अपने भाग्य को सराह रही है।

---- मै किसी का वत्स था। उसने मेरे पैदा होते ही मेरे चारों ओर लिपटी दगी को अपनी जीभ से चाट चाटकर साफ कर दिया क्योंकि मुझे साफ करने का उसके पास और कोई साधन नहीं था। मैं उठकर खड़ा हो गया और दौड़ने लगा आज भी दौड़ रहा हूँ

-- मै इन्सान था। मैने पैदा होते ही मुहँ खोला उसने स्नेहिल स्तन लगाकर अपना सारा दूध मेरे मुँह में उडेल दिया और अपने कलेजे से लगा लिया। मै काला था कलूटा था लूला था लँगडा था पर इसका उसे कोई दुख नहीं रहा वह मेरी सेवा मे समर्पित रही, तल्लीन रही। जब कभी मैं बीमार हो जाता था तो वह रात-रात भर मेरे सिरहाने बैठकर आकाश की ओर याचनाभरी दृष्टि से किसी को देखा करती थी।

----- मैं मृगशावक था। एक बार एक अजगर ने मुझे निगलने के लिए अपना मुँह फैलाया ही था कि उसने और कोई चारा न देख उसकी भूख शान्त करने के लिए तुरन्त अपने को उसके मुख मे झोंक दिया था क्योंकि मुझे बचाने के लिए अपनी जान कुर्बान कर देने में उसे कोई हिचक नहीं थी।

जानते हो वह कौन थी। वह मेरी **माँ** थी तुम्हारी **माँ** थी ससार की **माँ** थी। लेकिन उससे भी विशाल एक मेरी माँ और है जिसकी रज मे हम सब खेल खेलकर बडे हुए है। वह है मेरी **मातृभूमि भारत माँ-- शस्य श्यामला सुजला सुफला।** क्या उसके प्रति हमारा कोई कर्तव्य नही है।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
लखनऊ- माघ शुक्ल २ .संवत् २०४६ वि.
२८,जनवरी - १९९० ,दयानन्दाब्द-१६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

पटाक्षेप

भारत के मुकुट शिरोमणि धरती के स्वर्ग कश्मीर मे जिस प्रकार से घटनाक्रम तेजी से बदलाव ले रहा है उससे स्पष्ट है कि वहाँ की स्थिति अब कोई खतरनाक मोड़ लेने ही वाली है। पाकिस्तान ने जिस प्रकार से कश्मीर और पंजाब में अपने यहाँ से प्रशिक्षित आतंकवादियों को भेज-भेजकर गत कई वर्षो से हिंसा रक्तपात और अलगाव का माहौल बनाया और इन दोनो प्रदेशों को भारत से अलग थलग कर देने का षड्यन्त्र रचा है, उसमें अब काफी उबाल आता दिखाई दे रहा है। सैकड़ों की संख्या में निर्दोष निहत्थी जनता या तो मारी गई अथवा उन प्रदेशों से भय के कारण घर-बार छोड़कर भाग रही है। जम्मू कश्मीर के दो वरिष्ठ नेताओ ने गत 10 जनवरी को भारत के गृहमन्त्री मुफ्ती मो0 सईद से भेंट करके उन्हे राज्य की गम्भीर स्थिति से अवगत कराते हुए आँकड़े देकर बताया कि किस प्रकार श्रीनगर घाटी के आस-पास डोडा, अनन्तनाग, बारामूला आदि जिलो के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले अल्पसंख्यक लोग भयभीत होकर जम्मू ऊधमपुर और दिल्ली की ओर पलायन कर रहे हैं। यही हाल पंजाब का है। सीमा से लगे हुए जिलों की जनता आतंकवादियों के भय से भाग भाग कर दिल्ली पहुँच रही है।

कश्मीर का भारत में अन्तिम रूप से विलय हो चुका है और कश्मीर की जनता ने सदैव अपनी मुहर उस पर लगाई है। विवाद तो कश्मीर के उस हिस्से को पाकिस्तान से वापस लेने का है जो अनाधिकृत और अवैधानिक ढंग से पाकिस्तान ने अपने कब्जे में ले रखा है। सम्पूर्ण कश्मीर भारत का अविच्छिन्न अंग है। उसके अलग अस्तित्व की कल्पना ही नही की जा सकती।

जम्मू कश्मीर के पूर्व सूचना राज्यमन्त्री अली मोहम्मद सागर कश्मीर को 1953 से पहिले की स्थिति में लाना चाहते हैं। उनका मत है कि कश्मीर का भारत में विलय सिर्फ रक्षा, संचार और विदेशी मामलों से सम्बन्धित रहे।

हम श्री सागर की इस भ्रान्त धारणा को दूर कराते हुए यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि सृष्टि के आदिकाल से ही कश्मीर भारत का अविच्छिन्न अंग है और बना रहेगा। संसार की कोई शक्ति उसे भारत से अलग नहीं कर सकती।

कश्मीर की स्थिति इस समय अत्यन्त विस्फोटक है। श्री जगमोहन को फिर से जम्मू कश्मीर का राज्यपाल बनाए जाने के विरोध में डा0 फारूख अब्दुल्ला मन्त्रिमण्डल ने सरकार से इस्तीफा दे दिया है। श्री अब्दुल्ला के अनुसार श्री जगमोहन की राज्यपाल के पद पर नियुक्ति उनकी इच्छा के खिलाफ हुई है और इसी कारण उन्होंने इस्तीफा दिया है जिसे स्वीकार कर लिया गया है। श्री जगमोहन पहिले भी इस प्रदेश के राज्यपाल रह चुके हैं और उनकी प्रशासनिक कुशलता, दूरदृष्टि एवं राज्य की आर्थिक सामाजिक प्रगति के लिए किए गये कार्यों की सभी बुद्धिजीवियों ने उनकी प्रशंसा की है। हमारा डाक्टर साहब से यही अनुरोध है कि ऐसे कुशल प्रशासक को, जो जम्मू कश्मीर की समस्याओं से पूरी तरह परिचित है अपना सहयोग दें और राज्य की जनता को भारत की समस्त जनता के साथ सुख शान्ति और समृद्धि की ओर बढ़ने दें।

बृजघाट में प्रशिक्षण शिवर

1 जनवरी 1990 से 5 जनवरी 1990 तक आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों का प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज मन्दिर ब्रजघाट में आयोजित किया गया। इस शिविर की अध्यक्षता आर्य जगत के सुयोग्य भजनोपदेशक श्रीयुत अभय राम जी शर्मा आकाशवाणी गायक, निवासी सहारनपुर ने की। हमारे सभी उपस्थित प्रचारकों उपदेशकों को उन्होंने सार्वदेशिक सभा द्वारा त्रिसूत्री कार्यक्रम एव सामयिक समस्याओं पर नये-नये भजन गीत प्रचारकों को सिखाये। इसी के साथ आर्य समाज और महर्षि स्वामी दयानन्द-सरस्वतीकेसम्बन्ध में भी नवीनतम भजनों से परिचिति कराया। साथ ही बोलने का क्रम स्वर एवं तर्जो से भी सभी को कई बार स्वयं गा-गाकर सिखाया। इस दृष्टि से यह शिविर अपने में अद्वितीय सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक- 4 और 5 में पूज्य स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती प्राचार्य महाविद्यालय का भी निर्देशन और आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

शुद्धि अभियान

स्वामी सेवानन्द सरस्वती के सत्प्रयत्नों से आर्यसमाज मन्दिर सीतापुर (मध्यप्रदेश) में 31-12-89 को एक वृहत यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें आस-पास के इलाकों के लगभग एकसौ आदिवासी ईसाई बने लोगों को पुनः वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। सभी शुद्ध हुए आर्य भाइयों ने अन्डा,मांस शराब न खाने की प्रतिज्ञा ली। इस अवसर पर स्वामीजी ने कपड़ा आदि वितरित किए।



गणतन्त्र दिवस

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी कुलपति
महाविद्यालय,ज्वालापुर

(1)
गणतन्त्र ! स्वागत ते,
गणतन्त्र ! स्वागत ते।
तव गौरवं पुरस्तात्,
कीर्तिं श्रियें तनोति।।गणतन्त्र।।
(2)
राष्ट्रोद्धृतावपूर्वां
शक्तिं तनोषि नित्यम्
त्वद्गानमेव ज्योतिः,
क्रान्तेश्च दाववह्निन ।।गण0।।
(3)
संस्मृत्य गौरवं ते,
वीरा गुणानुरक्ताः ।
शक्ताः स्वदेश - भक्ताः,
शूलिं मुदा श्रितास्ते।।गण0।।
(4)
त्वं देशभक्ति - भावं
समतां क्रियाऽनुरागम्।
धर्मान्धता - विरामं
तनुषे च लोकतन्त्रम्।।गण0।।
(5)
कार्ये प्रभाषणे च,
स्वातन्त्र्यमेव लेखे।
स्वत्वाधिकार - रक्षा
सृष्टं त्वयैव सत्यम्।।गण0।।
(6)
त्वा प्राप्तुमेव सत्यं
शान्तैश्च क्रान्तिशीलैः।
आत्माहुतिः प्रदत्ता
शूलिर्वृता मुदैव।।गण0।।
(7)
साम्राज्य वा दिनस्ते,
त्वां वीक्ष्य भीतभीताः ।
कृत्यैर्निजैर्जघन्यैः,
भस्मान्तमा वमाप्ताः।।गण0।।
(8)
सम्पूर्ण - शक्ति - युक्तं
लब्धं तु भारतीयैः।
गणतन्त्रमेतदेवं
क्रान्तिं तनोतु लोके।।गण0।।
(9)
गुण - गौरवाभिवृद्धिं
धन-धान्य-सौख्य-वृद्धिम्।
सद्भाव - स्नेह - वृद्धिं
सिद्धिं तनोतु सद्यः।।गण0।।
(10)
त्वद्रक्षणेऽनुरक्ताः,
भक्त्याऽर्पिताऽऽत्मदेहाः।
क्रान्तेर्दवाग्नि - दूता,
कुर्वन्तु देश-स्वर्गम्।।गण0।।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

- आर्य समाज कटारपुर का वार्षिक उत्सव दिनांक- 7,8,9- मार्च 1990 में सम्पन्न होना निश्चित हुआ है।

आत्ममंथन की खोई शक्ति की वापसी

— श्री नरेन्द्र मोहन
सम्पादक दैनिक जागरण कानपुर

विश्व हिन्दू परिषद ने रामजन्मभूमि स्थल पर राम मन्दिर निर्माण करने का संकल्प लेकर जिस प्रकार से गाँव-गाँव जाकर शिलापूजन सम्पन्न कराया है उसने सारे देश में एक विशेष प्रकार की वैचारिक उथल-पुथल दिखायी दे रही है। इस वैचारिक उथल पुथल को वैचारिक क्रांति तो नहीं ही कहा जा सकता। हाँ अधिक से अधिक इतना कहा जा सकता है कि एक नये प्रकार की जाग्रति एक नये प्रकार का उत्साह अथवा एक नये प्रकार की चर्चा सी देश में प्रारम्भ हो गयी है। लोकतन्त्र में जब सामान्य जनता किसी प्रमुख विषय पर चर्चा करने लगती है, तो उस चर्चा को एक प्रकार का आत्म मन्थन कहा जाता है। यह आत्म मन्थन हमारे देश के लिए आवश्यक था। ऐसा आत्म मन्थन पिछले सैकड़ों वर्षों से कभी नहीं हुआ। वैसे भी गुलामी के दिनों में ऐसा आत्ममन्थन सम्भव भी नहीं था क्योंकि जिन शासकों ने भारत की जनता पर राज्य किया, वे राज्य ही इसीलिए कर सके कि भारत की जनता ने आत्ममन्थन करने की अपनी शक्ति लगभग खो दी थी। जनता द्वारा किया जाने वाला वास्तविक आत्म चिन्तन और आत्ममन्थन कभी भी व्यर्थ नहीं जाता क्योंकि आत्मचिन्तन और वह भी शान्तिपूर्ण ढंग से किया गया आत्मचिन्तन नयी निर्माणकारी ऊर्जा को जन्म देता है।

गलत आधारों का चुनाव

हमारे देश में अनेक प्रकार की उपासना पद्धतियाँ प्रचलित हैं और उन सभी को शासन तथा समाज का सम्मान प्राप्त है। हिन्दू हों या मुसलमान सिख हो या ईसाई जैन हों या बौद्ध पारसी हो या यहूदी ईश्वरवादी हों या अनीश्वरवादी कोई भी हो हमारे देश का संविधान उनके साथ किसी भी किस्म का भेदभाव नहीं करता और उपासना की स्वतन्त्रता भी सभी को सम्मानपूर्वक प्रदान करता है। यही है भारतीय दर्शन की विशेषता तथा यही है हमारा वह आधार जो हमें जीवित बनाता है और जो नित हमें विश्व का [illegible] बना सकेगा। पर महत्वपूर्ण प्रश्न अब यह उठता है कि भारत के संविधान का यह जो श्रेष्ठ गुण है वह हमारा अपना है या हमने पश्चिम से प्राप्त किया है। पश्चिमी दर्शन में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उन दार्शनिक सिद्धान्तों से श्रेष्ठ हो जिनका उद्भव और विकास भारत भूमि पर हुआ है पर दुर्भाग्य की बात यह है कि आज का राजनीतिज्ञ इस सच्चाई को न तो जानता है और न समझना चाहता है। सत्ता के ऊँचे पदों पर कुछ ऐसे [illegible] अथवा नासमझ लोग पहुँच गये हैं जिन्हें न तो भारतीय संस्कृति का ज्ञान है और न भारतीय दर्शन का। इस सन्दर्भ में वे अपने ज्ञान का आधार स्रोत कुछ ऐसी पुस्तकों को मानने लगे हैं जिन्हें पश्चिम के विद्वानों ने अपनी आधी अधूरी जानकारी के आधार पर लिखा है। पश्चिम के किसी भी विद्वान ने कभी भी भारतीय दर्शन का उचित और वास्तविक मूल्यांकन नहीं किया। ऐसा करना उसके लिए सम्भव इसीलिए भी नहीं था कि भारतीय दर्शन को समझने के [illegible] जिस मेधा की जिस तप की और जिस धृति की आवश्यकता थी वैसा तप और वैसे अनुशासन का पालन पश्चिम के उन विद्वानों ने नहीं किया जिन्होंने भारतीय दर्शन पर समीक्षात्मक लेख या पुस्तकें लिखी हैं। काश भारत के जो वर्तमान कर्णधार और सत्तारूढ़ व्यक्ति हैं कम से कम वे तो भारतीय दर्शन को सही रूप में समझ पाते और अपने ज्ञान का आधार उन पुस्तकों को नहीं बनाते जिनका सृजन पश्चिम के विद्वानों ने किया है। अगर उन्हें ऐसा करना ही था तो ऐसा करने के पहले उन श्रेष्ठ पुस्तकों को [illegible] समझ लेते जो भारतीय दर्शन के सन्दर्भ में आज उपलब्ध हैं और जो अपने ही देश में रची गयी और जिनके भाष्य भी उपलब्ध हैं। मानव ज्ञान और विशेषरूप से दार्शनिक ज्ञान का जैसा अद्वितीय साहित्य भारत में उपलब्ध है वैसा तो कहीं अन्यत्र दिखायी नहीं देता।

दर्शन का अर्थ

अंग्रेजी में शब्द है 'फिलॉसफी'। हिन्दी में इस शब्द को रूपान्तरित करके कहते हैं दर्शन। पर वास्तविकता यह है फिलॉसफी और दर्शन में बड़ा भेद है। फिलॉसफी में तर्क प्रधान है और [illegible] यह कहते हैं कि जो विषय प्रस्तुत किया गया है या जिस पर चर्चा की जा रही है वह तर्क संगत है या नहीं। उस विषय की वास्तविकता [illegible] किसी की है या नहीं उसका वास्तविक [illegible] किसी ने किया है या नहीं ऐसी कोई बात फिलॉसफी ग्रन्थों में [illegible] के सन्दर्भ [illegible] नहीं [illegible] जाती [illegible] भारतीय दर्शन के मूल रचयिताओं ने सबसे पहले अपने जीवन को दार्शनिक मीमांसा [illegible] बिना [illegible] के अनुरूप [illegible] की है तथा [illegible] जो कुछ ज्ञान प्राप्त किया उसकी अनुभूति की और उस अनुभूति को उन्होंने लिपिबद्ध किया है। भारत में दर्शन शब्द का अर्थ होता है सत्य का अवबोध अर्थात जिस विचार द्वारा सत्य का प्रतिपादन और [illegible] तथा साक्षात्कार किया जा सकता हो और जो मौलिक चिन्तन परम सत्य पर प्रकाश डालता हो, [illegible] दर्शन की कोटि में [illegible] जाते हैं। भारत में दर्शन [illegible] के [illegible] नहीं [illegible] का [illegible] एक [illegible] है। पश्चिमी फिलॉसफी का [illegible] से बहुत कम लेना देना है। उसका तो कह भी [illegible] है वह केवल [illegible] प्रधान [illegible] पर आश्रित है अर्थात वह [illegible] एक प्रकार से [illegible] है और [illegible] पश्चिम के जो फिलॉसफर हैं उनके विचारों तथा उनकी समस्याओं के माध्यम से भारतीय दर्शन को समझना लगभग असम्भव है। पर हमारे देश में सत्ता में बैठा हुआ व्यक्ति यह नहीं मानता। वह तो यह मानता है कि सत्ता की कुर्सी उसके लिए सिंहासन बत्तीसी है और उस कुर्सी पर बैठने ही उसे वे सब ऐसे ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं जिनके बल पर वह सम्पूर्ण विश्व को उपदेश देने में सक्षम सर्वगुण [illegible] सर्व प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हो जाता है। काश वास्तव में ऐसा ही होता है वास्तविकता तो यह है कि ऐसा कुछ भी नहीं है। जो बौने ऊँची कुर्सियों पर बैठ गये हैं वे बौने ही हैं और आगे भी [illegible] बौने बने रहेंगे क्योंकि वह अपना बौनापन छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं।

अनेक मौलिक-सवाल

जब से रामजन्म भूमि का विवाद उठा तब से यह विषय चर्चा में आया कि हिन्दुओं के भी अपने देश में कुछ अधिकार हैं या नहीं? अन्य धर्मावलम्बियों के अधिकार हैं हम यह मानते हैं और उन्हें वे सभी अधिकार मिलने भी चाहिए। पर प्रश्न यह [illegible] है कि इस देश में जो बहुसंख्यक हैं [illegible] अल्पसंख्यकों की तुलना में कम अधिकार प्राप्त हों [illegible] क्या [illegible] अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों से अधिक अधिकार [illegible] और ऐसे अधिकार [illegible] जिससे बहुसंख्यकों के [illegible] पर [illegible] घाव बार बार रिसने लगे [illegible] विषय यह बन [illegible] कि राम [illegible] है राम एक धार्मिक [illegible] उपासना पद्धति का [illegible] है अथवा वे मर्यादा पुरुषोत्तम और प्राचीन के [illegible] तथा [illegible] ऐसा महान [illegible] है [illegible] भारतवासियों का नमन करना चाहिए [illegible] राम हमारे पूर्वज हैं तो हर वह व्यक्ति जो अपने आपको भारतीय मानता है और जो अपने आपको भारत भूमि से जोड़ता है अपने उस पूर्वज का सम्मान करे या न करे और अगर वह उसका विरोध करता है अपने पूर्वजों का अपमान करता है तो ऐसे व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार किया जाये। एक तीसरी बात [illegible] में [illegible] रही है [illegible] कौन है [illegible] अभिप्राय क्या है [illegible] कैसा और कैसे प्रयत्न में [illegible] और [illegible] किन [illegible] का प्रयोग [illegible] और भी [illegible] चर्चा में आये हैं पर [illegible] प्रश्न [illegible] एक एक प्रश्न पर न [illegible] देना [illegible]

(क्रमशः)

बुद्धिजीवी आन्दोलन और आर्य समाज

आचार्य वेदभूषण
अधिष्ठाता - अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद

वेदों में "आर्य" शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर मिलता है। जैसे- "इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः- कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" या अहं इदम् भूमिं अददाम् आर्याय" अन्तत्र विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवो। इस प्रकार के शतशः प्रयोग चारों वेदों में उपलब्ध होते हैं।

यह बात भली भाँति जान लेनी चाहिए कि आर्य शब्द वेदों में किसी जाति या समुदाय विशेष के लिए ही संज्ञा रूप में प्रयुक्त नहीं होता।

आर्य एक विशेषण है जैसे कहा है कि- "व्रतशीला आर्याः"। जो व्रतों में नियमों में बंध कर चलता है वह आर्य कहाता है। ऋ-गतौ इस धातु से आर्य शब्द की निष्पत्ति होती है। आर्य अर्थात् प्रगतिशील (उन्नतोन्मुख) इससे भी स्पष्ट है कि आर्य प्रगतिशील को कहते हैं। अंग्रेजी भाषा में आर्य शब्द के अभिप्राय को प्रकट करने के लिए दो शब्द सटीक हैं एक तो प्रोग्रेसिव (PROGRESSIVE) दूसरा एक्टिव (ACTIVE)।

इस विश्लेषण से एक बात स्पष्ट होती है कि जो आलसी, प्रमादी, निखट्टू विलासी (आराम तलब) निष्क्रिय न हों अपितु सदा सक्रिय, गतिशील, परिश्रमी, उद्यमी व श्रेष्ठ कार्यों में प्रवृत्त व्यक्ति हो उसे आर्य कहेंगे।

संसार के मनुष्यों में हम दो प्रकार की प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। कुछ लोग स्वभावतः परिश्रमी, मेहनती, उद्यमी पुरुषार्थी सर्वदा कार्यरत गतिशील प्रवृत्ति के होने हैं दूसरे आलसी, सुस्त, प्रमादी, निखट्टू निरुद्यमी होते हैं।

मनुष्येतर प्राणियों में भी हम इन दोनों प्रकार की प्रवृत्ति वाले पशु-पक्षी देखते हैं। जैसे गाय के बछड़े को लीजिए दूसरी ओर भैंस के बछड़े को या कटड़े को देखिए। ऐसे ही हिरण, वानर, घोड़ा, आदि पशु फुर्तीले व हर समय गतिशील रहने वाले हैं तो दूसरी ओर अजगर, शेर, कुत्ता आदि हर समय सुस्त ऊँघते, सोते सुस्त देखे जा सकते हैं।

जैसे दिन और रात के वातावरण में एक स्पष्ट अन्तर देखा जा सकता है। सत्व गुण की प्रधानता से गतिशीलता, स्फूर्ति, उत्साह जगता है। तमोगुण- में- आलस्य निद्रा की प्रधानता सुस्ती देखी जाती है।

मनुष्य समाज में यह गुण सामाजिक या वंशगत न होकर व्यक्तिगत होता है। अतः बहुत स्पष्ट रूप से कहा या समझा जा सकता है कि आर्य जाति वाचक संज्ञा नहीं है अपितु गुण वाचक संज्ञा या विशेषण वाचक शब्द है। जो लोग आर्य को जाति विशेष या वंश विशेष को मानते हैं वे भ्रम में भटकते देखे जा सकते हैं। यदि यह शब्द जातिवाचक होता तो फिर विभीषण को भी राक्षस और कृष्ण के मामा कंस को राक्षस न मान आर्य ही मानना, किन्तु इस प्रकार की धारणा भयंकर भूल वा भ्रान्ति होगी।

वास्तव में आर्य शब्द एक उपाधितुल्य है। योग्यता बोधक शब्द है। जैसे बी०ए० या एम०ए० आदि उपाधि बोधक शब्द हैं।

यदि कोई यह कहे कि बी०ए० या एम०ए० कहाने वाले लोग मध्य-एशिया से आये या बी०ए० एम०ए० लोग गोमांस भक्षण करते थे। यह बात जिस प्रकार हास्यास्पद होगी वैसे ही यह कहना कि- आर्य लोग मध्य-एशिया से आये या आर्य लोग गोमांस का भक्षण करते थे। यह बात कितनी अज्ञानभरी और हास्यास्पद है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने आर्यसमाज की स्थापना की तो उनका उद्देश्य किसी वर्ग विशेष या देश विशेष के लोगों की उन्नति का नहीं अपितु संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य दर्शाया।

जो अन्तर आलसी में और फुर्तीले में होता है या जो अन्तर आर्य और दस्यु में होता है ठीक ऐसा ही अन्तर धर्म और सम्प्रदाय में होता है। धर्म के नियम शाश्वत, एवं सार्वभौम व सर्व हितकारी होते हैं। इसके विपरीत सम्प्रदाय का अभिप्राय सामयिक वर्ग विशेष देश विशेष व स्वार्थ विशेष का होता है। इससे स्पष्ट है कि आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं है। आर्यसमाज के उद्देश्य सामयिक या प्रतिक्रियावादी नहीं हैं।

जैसे हिन्दू सम्प्रदाय के प्रतिक्रिया स्वरूप बौद्ध और जैन सम्प्रदाय का आविर्भाव हुआ वैसे आर्यसमाज की स्थापना सामयिक परिस्थिति व समस्याओं की ईंटों पर नहीं की गई।

किसी भी सम्प्रदाय के लिए एक आन्दोलन की आवश्यकता होती है। सारे सम्प्रदाय आरम्भ में एक आन्दोलन के रूप में उभरते हैं और फिर धीरे-धीरे काल प्रवाह में विलीन हो जाते हैं। संसार के सभी सम्प्रदायों की यही अन्तिम स्थिति है।

सम्प्रदायिकता में जीवन के शाश्वत मूल्यों का स्वाभाविक उन्नयन की प्रक्रिया का अभाव होता है। उसमें गति प्रदान करने के लिए किसी न किसी आन्दोलन का सहारा लेना होता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिन स्थायी मूल्यों पर आर्यसमाज की आधारशिला रखी है उसके यथार्थ स्वरूप को न जानकर क्षुद्राशयी लोग आर्यसमाज पर भी सम्प्रदाय का गदला आवरण चढ़ाना चाहते हैं। क्योंकि आर्यसमाज में बहुतायत से आने वाले सज्जन हिन्दू सम्प्रदाय से आते हैं। वे अपने साथ पुराने संस्कार व संकुचित दृष्टिकोण को लेकर आते हैं और आर्यसमाज में आकर भी वे अपने पूर्व के दोषों को भुला नहीं पाते। धीरे-धीरे वही जातीयवादी दृष्टिकोण और हिन्दू सम्प्रदाय का अन्धविश्वास भी न्यूनाधिक मात्रा में उनके साथ चिपटा रहता है।

यह बुराई या दोष ही आज आर्यसमाज के भीतर की सबसे बड़ी समस्या है। आर्यसमाज में यह दोष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के देहावसान के बाद ही श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी से ही आरम्भ हो गया। यद्यपि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तप-त्याग की मूर्ति थे पर चूँकि संस्कृत व वैदिक शास्त्रों के सूक्ष्म सिद्धान्तों को वे हृदयंगम नहीं कर पाए थे इसीलिए उनके जीवन में एक भटकाव आ गया था। जिसका प्रमाण उनका कांग्रेस में प्रवेश फिर कांग्रेस से त्यागपत्र फिर हिन्दू महासभा में प्रवेश आदि की घटनायें इस बात की पुष्टि में प्रस्तुत की जा सकती हैं।

इस तथ्य को प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्टीकरण भी आवश्यक है कि लेखक स्वयं स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के गुरुकुल का छात्र रहा है। अतः उनके प्रति हृदय में असीम श्रद्धा व आदरभाव होते हुए भी हम इस तथ्य को नकार नहीं सकते। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के चिन्तन का सामर्थ्य का अपना एक स्तर होता है। स्वामी जी महाराज तपस्वी, त्यागी, दृढ़ निश्चयी, एवं निर्भीक नेता थे। राष्ट्रीय नेताओं में उनका स्थान महात्मा गान्धी से ऊँचा था क्यों कि गांधी जी को महात्मा की उपाधि से स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अलंकृत कर उन्हें गान्धी से महात्मा गान्धी बनाया था।

किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के कांग्रेस में जाते ही हजारों आर्य समाजी कांग्रेस में सम्मिलित हो गये किन्तु जब स्वामी जी ने कांग्रेस से त्यागपत्र दिया तो सभी आर्यसमाजियों ने कांग्रेस को छोड़ा नहीं। स्वामी जी इस राजनीतिक कूप से तो निकल आए पर फिर वे हिन्दू महासभा की खाई में जा गिरे। अपने नेता की अस्थिरता से अनुयायियों की स्थिति किंकर्तव्यविमूढ़ की सी हो गई और आज तक आर्य समाज इस भूल के परिणामों को भोग रहा है। इस ऐतिहासिक विडम्बना पर विचार करें तो ज्ञात होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जिस कांग्रेस का परित्याग किया उनके सुपुत्र पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति उसी कांग्रेस के आजीवन सदस्य रहे।

स्वामी जी महाराज के हिन्दू महासभा में जाने का परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज हिन्दू साम्प्रदायिकता का शिकार बन गया। उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व व उसकी परिशुद्ध छवि विकृत हो गई और आज तो आर्यसमाज में ऐसे तत्व बहुतायत में घुस गए जो आर्यसमाज को हिन्दू समाज का ही एक

— शेष पृष्ठ ६ पर

आर्य समाज का प्रथम नियम

— लेखक - प्रियव्रतशास्त्री, साहित्यरत्न एम.ए.
सरधना

इस युग में अनेक महापुरुष एवं महात्मा हुए हैं। जिन्होंने अपने-अपने ढंग से समाज की बुराई को दूर करने का प्रयत्न किया। परन्तु समाज की सारी बुराईयाँ उनकी पकड़ में न आ सकी। केवल महर्षि स्वामी ही ऐसे हुए हैं जिन्हें युग पुरुष कहा जा सकता है जिन्होंने समाज की हर एक बुराई को देखा चाहे वह अस्पृश्यता हो, अविद्या अन्धकार हो, स्त्री शिक्षा हो, सती प्रथा हो दहेज का लेना देना हो, स्त्रियों का वेद पढ़ने या उपनयन की समस्या हो, विधवा विवाह की समस्या हो जन्मगत जाति के कारण ऊँच नीच के भेद की समस्या हो, साकार निराकार भेद से मूर्ति पूजन की समस्या हो यहाँ तक कि चाहे राजनैतिक समस्या आदि कोई समाजगत बुराई हो। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सभी को दूर करने का प्रयत्न किया और सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ की रचना की।

वेद के आधार पर ही अपना कार्य किया। हरिद्वार कुम्भ मेले पर वेद को आधार मानकर पाखण्ड खण्डिनी पताका लेकर अकेले ही पाखण्डों का खण्डन किया।

उनके प्रकाण्ड पाण्डित्य वेदो के वास्तविक अर्थ को प्रमाणों के आधार पर समझने तथा सारी मनुष्य जाति को समान समझते हुए उसकी प्रत्येक प्रकार की उन्नति करने आदि को उनके द्वारा रचित आर्यसमाज के दस नियम प्रदर्शित करते हैं। ये दस नियम ऐसे है जो संसार के सारे मनुष्यों के लिये हितकारक हैं चाहे वे किसी देश, प्रान्त के हों चाहे किसी जाति, रंग या वेशभूषा व भाषा के मानने वाले हों।

वे इस युग में ऋषि कहलाये। क्योंकि ऋग्वेद के अनुसार-"तमेव ऋषि तमुब्राह्णमाहुर्यजन्यं सामग्णमुक्थ शासम्" ऋषि वह होता है जो प्रतिदिन यज्ञ करता है, सामवेद का गान करता है, जो वेद मन्त्र के सत्यार्थ व उनकी मूल भावना को समझकर उनका प्रचार करता है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार "यो वै ज्ञातोऽनूचानः स ऋषिः" जो सत्यज्ञान का अध्येता और प्रचारक है वह ऋषि है। निरुक्तकार के अनुसार "ऋषयामन्त्र, द्रष्टारः" ऋषयः क्रान्तदर्शिनः" मन्त्रद्रष्टा व क्रान्त दर्शी ऋषि होते हैं। किसी भी दृष्टि से देखें, स्वामी दयानन्द वास्तव में इस युग के ऋषि ही थे। वे वास्तव में युग प्रवर्तक थे।

आर्यसमाज के दस नियम सार्वभौमिक हैं। महर्षि का प्रकाण्ड पाण्डित्य उनका वैदिक साहित्य का मर्मज्ञ होना, वेदानुकूल ही सब कुछ मानना इस प्रथम नियम से ही ज्ञात होता है। इस नियम में महर्षि ने वेद की सत्य विद्या तथा अन्य विद्या वेदों में है इस विषय का प्रतिपादन बहुत ही युक्तियुक्त सप्रमाण किया है। प्रथम नियम इस प्रकार है:-

"वेद सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है"। इस नियम से दो विषय स्पष्ट होते हैं। 1- वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। 2- जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं वे सभी वेद मे विद्यमान हैं, परन्तु दोनों का आदिमूल परमेश्वर ही है। इससे यह तो निर्विवाद है कि वेद ईश्वरीय है। वह प्रभु सर्वव्यापक सर्वज्ञ सर्वोत्पादक, सर्वनियन्ता एवं सर्वद्रष्टा, न्यायकारी व दयालु है।

यह विचारणीय है सत्य विद्या क्या है और उनसे जाने गये पदार्थ क्या हैं। इस विषय को भी महर्षि ने स्वरचित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में "वेद विषय विचार" में स्पष्ट किया है। वहाँ स्वामी जी लिखते हैं " चत्वारो वेद विषयाः सन्ति विज्ञानकर्मोपासनाज्ञान काण्ड भेदात्। तत्रयादिमो विज्ञान विषयो हि सर्वेभ्यो मुख्योऽस्तितस्य परमेश्वरादारभ्य तृणपर्यन्तपदार्थेषु साक्षाद् बोधान्यत्वात्। तत्रापीश्वरो नु भवो मुख्यो ऽस्ति। कुतः अत्रैव सर्वेषां वेदानांतात्पर्यमस्तीश्वरस्य खलु सर्वेभ्यः पदार्थेभ्य प्रधानत्वात।

अर्थात वेदों में चार विषयों का वर्णन हैः- 1-विज्ञान, अर्थात् सब पदार्थों को यथावत् जानना, 2-कर्म, 3- उपासना, 4- ज्ञान। विज्ञान उसको कहते है जो कर्म उपासना और ज्ञान इन तीनों से यथावत् उपयोग लेना। और परमेश्वर से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध का होना, उनसे यथावत् बोध का करना, इससे यह विषय इन चारों में भी प्रधान है। क्योंकि इस ही में वेदों का मुख्य तात्पर्य है। सो भी दो प्रकार का हैः- अपरा परा चेति ।

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेद. सामवेदोऽथर्व वेद. शिक्षा कल्पो, व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषामिति अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।

इस पर व्याख्या करते हुए महर्षि ने लिखा हैः-

द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म ... वर्तेते परा अपराचेति। तत्र यया पृथिवी-तृणमारभ्य पृथिवी पर्यन्तानां पदार्थानां ज्ञानेन यथावदुप कारग्रहणं क्रियते सा अपरोच्यते, यया चादृश्यादि विशेषणयुक्तं सर्वशक्तिमद् ब्रह्म विज्ञायते सा पराऽर्थादपरायाः सकाशादत्युत्कृष्टास्तीति वेद्यम्।

हिन्दी भाष्य- अर्थात् वेदो में दो विद्यायें हैं। एक परा दूसरी अपरा। इनमें से अपरा वह है कि जिससे पृथिवी और तृण से लेकर पृथिवी पर्यन्त गुणों के पदार्थो का ज्ञान प्राप्त करना और उनसे ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना होता है। दूसरी परा कि जिससे सर्वशक्ति मान ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है। यह पराविद्या अपरा से उत्तम है क्यों कि अपरा का ही उत्तम फल परा विद्या है।

वेद प्रकाश के अक्टूबर 1989 के अंक में इस सम्बन्ध में अन्य प्रमाण भी पृष्ठ सात पर दिये हैं। परा और अपरा विद्या के विषय में लिखा हैः- परा विद्या के विषय में ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव, ईश्वर जीव सम्बन्ध जीवात्मा का स्वभाव व स्वरूप एवं आध्यात्मिक विषयों का वर्णन है। अपरा विद्या में सांसारिक सुखों, सम्पत्ति, राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान, तकनीक एवं ब्राह्य जगत के वर्णन हैं। महर्षि व्यास ने महाभारत अनु0 122/4 में कहा हैः-

यानिह् ग्रामशास्त्राणियाश्चकाश्चित् • प्रवृत्तयः।
तानि वेदं पुरस्कृत्य प्रवृत्तानि यथाक्रमम्।।

विश्व में विभिन्न वस्तुओं पर जो भी पुस्तकें हैं उन सबका आदिमूल वेदों में ही है। याज्ञवल्क्य स्मृति 122।4 में लिखा है

न वेदशास्त्रादन्यत्तु किंचिच्छास्त्रं हि विद्यते।
निःसृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रात् सनातनात्।।

सभी ग्रन्थ शाश्वत वेदों से ही निकले हैं और कोई भी ग्रन्थ वेदों के समान नहीं है। आचार्य मनु ने भी इस विषय की पुष्टि इन शब्दों में की हैः-

पितृदेवमनुष्याणांवेदश्चक्षुःसनातनम्।
अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थितिः।।
मनु- 12/94

भूत भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति।
मनु- 12/97

बिभर्ति सर्व भूतानि वेदशास्त्र सनातनम्।।
मनु- 12/99

पिता, विद्वान और मनुष्यों का वेद सनातन मार्ग दर्शक है। इसे कोई मनुष्य नहीं बना सकता है। यह सब विद्याओं से युक्त है। ऐसी निश्चित मान्यता है। भूत भविष्य एवं वर्तमान की सब विद्यायें वेदों से ही प्रकट होती है। यह जो सनातन वेद शास्त्र है वही सब विद्याओं द्वारा सम्पूर्ण प्राणियों को धारण एवं सुख प्राप्त कराता है।

ऋग्वेद के ऋक् शब्द की व्याख्या करते हुए श्री सायणाचार्य लिखते हैंः- "ऋचन्ति स्तुवन्ति पदार्थानां गुणकर्म-स्वभाव बलमया सा ऋक" अर्थात् ऋग्वेद में सभी प्रकार के पदार्थों के गुण कर्म स्वभाव का मुख्यतया वर्णन है।

इस ही प्रकार यजुर्वेद के विषय में वे लिखते हैं कि "यजन्ति येन मनुष्याः संगति करणं च कुर्वन्ति शुभ विद्या गुणदानं च कुर्वन्तितन यजुः" मनुष्य ईश्वर पूजन विद्वानो का सत्कार पारस्परिक व्यवहार शुभ विद्याओं का प्रचार एवं प्रसार एवं व्यवहार कैसे करें।

सामवेद के विषय में सायणाचार्य लिखते हैं कि "स्यति कर्माणीति सामवेदः" इसमे ईश्वर स्तुति, वन्दना, उपासना एवं आध्यात्मिक साधनों का वर्णन है। निरुक्त के अनुसार अथर्ववेद ऐसा ग्रन्थ है, जिसमे सब शंकाओं की निवृत्ति होती है। व्यवहार, कला कौशल, ज्ञान-विज्ञान, व तकनीकी में विशेषता प्राप्त होती है।

— शेष पृष्ठ ८ पर

काव्य कानन

गीत

— राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

सुमन सुखों का खिले नवल,
बिखरे शशि की रश्मि धवल,
मिटे कालिमा अनाचार की-
हो चरित्र मानव का उज्ज्वल,
जगे मनुज में मानवता का-
प्रेम समन्वित विमल विवेक।

जन जन हो गरिमा से युक्त,
बन्धन से अविकल हों मुक्त,
वातावरण महीतल का हो-
स्वस्छ- सुशीतल व उन्मुक्त,
शुभ्र गुणों का वसुधा पर हो-
सतत सुमंगल सा अभिषेक।

नया गीत हो, शुभ संगीत,
नयी सुआशा हो अभिनीत,
मानवता पद-तल पर अर्पित-
मानव का समुदाय विनीत,
टूटे हुए हृदय जन जन के--
पुनः धरणि पर हों अब एक।

महाशक्तियाँ शीतल युद्ध,
धूमिल करें, हम बनें प्रबुद्ध,
अमृत-धार बहे धरती पर--
कण-कण भू के हों उद्‌बुद्ध,
क्षत-विक्षत हों भूमण्डल के-
जाति- रंग के भेद अनेक।।

तन-बसन-मन बसन्ती रंगाते चलो

शिव कुमार सिंह "रैकवार"
चुरखी (कैसरगंज) बहराइच

आर्यो। आर्य जग को बनाते चलो।
वेद की ध्वनि धरा पर गुंजाते चलो।।

कर्म पथ पर बढ़ो कर में ले ओ३म्-ध्वज
धैर्य मन में, प्रबल आत्मबल की गरज।
भावना में ऋचायें सजाते चलो।।
आर्यो। आर्य जग को बनाते चलो।।

कामना धर्ममय, वृत्ति पावन बने।
मोक्षसुख प्राप्ति में अर्थ साधन बने।
भ्रान्ति-अज्ञान, तम को मिटाते चलो।।
आर्यो। आर्य जग को बनाते चलो।।

सब बनें शिष्य ऋषिवर दयानन्द के।
मीत विमल हो कटें पाश दुःख-द्वन्द के।
ज्योति वैदिक हृदय में जलाते चलो।।
आर्यो। आर्य जग को बनाते चलो।।

तत्व का ज्ञान हो, मृत्यु का भय भगे।
बोध अमरत्व का आत्मा में जगे।
तन, बसन, मन बसन्ती रंगाते चलो।।
आर्यो। आर्य जग को बनाते चलो।।

बसन्त कौतुक

श्री भरत सिंह असवाल
मानियावाला (देहरादून)

किया बसन्त ने विहार,
आंगन घर देहली द्वार,
थल हो चाहे पहार,
कोयल की कुहू पुकार।।
सुमनों का खुला किवार,
मधुकर सुस्वर गुंजार,
नदियों की निर्मल सलिलधार,
पेड़ों का हुआ श्रृंगार।।1।।
किया बसन्त ने ----।

रवि से नव करोपहार,
वनचर चारे में सुधार,
कलियां सुन्दर सुकुमार,
हरित घास बेसुमार।।
झरनों से जल कण फुहार,
गन्धनिधि गन्धसार,
ले उड़ा पवन सुमन सार,
पतझर विटप पत्रभार।।2।।
किया बसन्त ने -----।

सुरभित भू वार-पार,
विपिन विटप की दीवार,
शीत की शेष मृदुल मार,
पति वसन पहिने नार,
हंस मानसर तैयार
हिम खतम कम वर्षाधार,
शीत भीत का संहार,
धरा को मिला तरणि तार।।3।।
किया बसन्त ने -----।

प्रसूनों पर तारों का उतार,
प्रातः सूरज ने लिया संभार,
प्रकृति का क्षिति पर दुलार,
देख उभय, नयन फार।
जीव में जीवन संचार,
सैन्य-सिंह शक्ति भार,
वीरता बीरों में निहार,
कविजन काव्य रचना में उदार।।4।।
किया बसन्त ने -----।

कालिदास का ऋतुसंहार,
रवि से रवि उपज भंडार,
मटर मसूर जौ में उभार,
अन्न भार है अपार,
प्रकृति ने खोले किंवार,
भारत का भर गया भण्डार,
जीवन अब दिन तीन-चार
कुछ तो बटोरो प्यारे यार।।5।।
किया बसन्त ने -----।
न समझ इसको कारागार,
क्षिति को क्षितीश का उपकार,
सृष्टि के हे सिरजनहार ।
नमस्ते करता "भरत" बार-बार।।

प्रदेशीय विचार्य सभा उ० प्र०

धर्म-परीक्षाएं (4-3-1990 को)

इस वर्ष धर्मरत्न धर्म प्रवेशिका, धर्मभूषण एवं धर्माधिकारी परीक्षायें 4 मार्च 1990 को होंगी। इन परीक्षाओं में क्रमशः कक्षा 5,6, 9,11 के विद्यार्थी सामान्य तया प्रविष्ट हो सकेंगे। अन्य कक्षाओं के विद्यार्थी अथवा अन्य व्यक्ति भी सीधे किसी भी परीक्षा में प्रविष्ट हो सकते हैं। कम से कम आर्य विद्यालयों के तो सभी विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन परीक्षाओं में प्रविष्ट हों। संस्थाओं के प्रधानाचार्यो, प्रबन्धकों एवं सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों से अनुरोध किया जाता है कि अपने सभी विद्यार्थियों को इन परीक्षाओं में प्रविष्ट कराने के लिये अपने पदों का सदुपयोग करें। वैदिक धर्म प्रचार के लिये ही इन परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। वैदिक धर्म में अभीष्ट रुचि की ये परीक्षायें स्पष्ट प्रमाण सिद्ध होती हैं।

परीक्षा शुल्क क्रमशः रु0- 1-50, से रु0- 2, रु0 2-50, से रु0- 3 होगा।

माधव सिंह
मन्त्री, प्रदेशीय विचार्य सभा।

प्रचार नहीं साज़िश से धर्मान्तरण

— मंजुला मोढ

पिछले कई वर्षों से मध्य प्रदेश में ईसाई मिशनरियों की बढ़ती गतिविधियां देखते हुए यह महसूस किया जा रहा है कि धर्मान्तरण की गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में पिछले कई सालों से ईसाई-मिशनरियों की गतिविधियां बढती जा रही हैं। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम की महिला संयोजिका अरुण होल समुद्र ने इन गतिविधियों को मददेनजर रखते हुए ही मांग की थी कि धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाया जाय और प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों के कल्याण के कार्यक्रमों को बेहतर ढंग से लागू किया जाए। लेकिन इस मांग को किसी ने भी गम्भीरता से नहीं लिया।

अभावों और भूख से तड़पती रेखा के बाज रहने वाले आदिवासियों को सुविधाओं का माया जाल दिखा कर उन्हें इस बात के लिए मजबूर कर देते हैं कि वह धर्मान्तरण के लिए तैयार हो जाय। इस सम्बन्ध में सुश्री होल समुद्र ने आदिवासी अंचलों का दौरा करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रदेश में राजनैतिक स्वार्थों के कारण ही ईसाई मिशनरियों द्वारा वनवासियों के बलात धर्मान्तरण की गतिविधियों पर रोक नहीं लगाई जा रही है। आदिवासी अंचलों में सरकारी योजनाओं पर भी सही ढंग से अमल नहीं किया जाता है और उनकी आड में सत्तारूढ दल के सांसद और विधायक लाभ उठा लेते हैं। वैसे यह सही है कि प्रदेश के आदिवासी इलाकों की हालत बहुत अधिक दयनीय है। वहां न तो चिकित्सा के लिए ढंग के डाक्टर हैं और न ही आदिवासियों के बच्चों के लिए अच्छे स्कूल। बस आवागमन का मार्ग भी गांवों में अच्छा नहीं है। कुल मिलाकर वहां रहने वालों के प्रति सरकार हर साल औपचारिकता पूरी कर इस बात का आश्वासन देती है कि वह आदिवासियों को शोषण की चक्की में नहीं पिसने देंगे लेकिन वास्तविकता के धरातल पर होता यह है कि उन्हें सरकार द्वारा ही पीसा जाता है। जबकि दूसरी तरफ इसके विपरीत ईसाई मिशनरियों के पास सभी तरह-तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं। वह अपने पास से आदिवासियों की हर तरह से मदद करने को तैयार रहते हैं। ऐसी स्थिति में परेशानियों और समस्याओं से तंग आकर आदिवासी उनकी शरण में जाना पसंद करते हैं। वे लोग इन लोगों को अपनी तरफ से एक सुरक्षा का वातावरण देते हैं जो राज्य-सरकार तक नहीं दे पाती है।

ईसाई मिशनरियों का दायरा बढ़ने से उसकी राजनैतिक शक्ति भी बढ़ने लगी है और वह लोग उसका दुरुपयोग भी करने लगे हैं। पिछले दिनों खरगोन जिले के मटोली क्षेत्र में मिशनरीज ने एक आदिवासी की जमीन पर कब्जा कर उस पर चर्च बना लिया है तथा उस आदिवासी को मजदूरी करने पर विवश कर दिया है। मगर जिला प्रशासन ने दोषी लोगों के खिलाफ आज तक कोई कार्यवाही नहीं की। यही स्थिति झाबुआ और बस्तर जिले की है वहां गरीब और अशिक्षित बेरोजगार आदिवासियों को प्रलोभन देकर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

इस समय 25 हजार गिरजाघर दस हजार विदेशी और 45 हजार भारतीय पादरी विभिन्न राज्यों में सक्रिय हैं। क्रिश्चयन संगठनों द्वारा 1200 अस्पताल एक हजार स्कूल 657 महाविद्यालय और 600 अनाथालय चलाए जा रहे हैं। जनसेवा के नाम से चलाए जा रहे इस पूरे तामझाम का उद्देश्य जनसेवा तो किसी भी रूप में नहीं है। इनका मुख्य लक्ष्य तो आदिवासियों को ईसाई बनाकर ईसाइयों की जनसंख्या में वृद्धि करना है और वह काफी हद तक अपने उद्देश्य में सफल भी हुए हैं। इन केंद्रों को विदेशों से पैसा इसी बात के लिए अनुदान के रूप में दिया जाता है। लेकिन सरकार ने कभी इस बात की जांच कराने की आवश्यकता को महसूस नहीं किया कि क्या ये लोग वाकई जनसेवा कर रहे हैं या जनसेवा के स्वांग को रच कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। इन लोगों के खिलाफ वनवासी कल्याण आश्रम ने अब देश में अपने संगठन के ढांचे को मजबूत कर ईसाइयों से जुड़ी मिशनरियों वाले क्षेत्रों में नए कार्यक्रम शुरू किए हैं। इसके तहत वनवासी क्षेत्रों में अभी तक 1400 केन्द्र कायम किए गए हैं। मध्य भारत क्षेत्र में 6 और महाकौशल क्षेत्र में 0 केन्द्र चल रहे हैं। हैरानी की बात तो यह है कि सिर्फ मध्य प्रदेश में ही आदिवासियों की संख्या एक करोड़ बीस लाख है और इनमें से अब तक पच्चीस प्रतिशत आदिवासी अपना धर्म परिवर्तन कर ईसाई बन चुके हैं।

आश्रम का उद्देश्य ऐसे आदिवासियों को फिर से राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने और उनके धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए प्रयास करना होगा। इस आश्रम की संयोजिका होल समुद्र का कहना था कि इस कार्यक्रम में आर्य समाज हिन्दू परिषद और रामकृष्ण मिशन के स्वामी रंगनाथ ने पांच सौ मन्दिर बनाने का संकल्प किया है।

इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत रायपुर में नागरबेल के वनवासी छात्रों का आश्रम स्थापित किया गया है। आदिवासी क्षेत्रों में परम्परागत उत्सव भी किए जाते हैं ताकि उन लोगों की संस्कृति पर कोई प्रहार नहीं कर सके और उनकी मौलिकता सुरक्षित रहे। संयोजिका के अनुसार [illegible] मेघालय और उदासा के [illegible] जिलों को आश्रम ने गोद लेकर 1.1 [illegible] लाख ईसाइयों को हिन्दू बनाने का संकल्प किया है। म प्र के सरगुजा जिले के सीतापुर क्षेत्र में पांच हजार ईसाइयों को आश्रम के प्रयासों से वापस उनकी दुनिया में लाया गया और वापस हिन्दू धर्म ग्रहण करवाया गया। यह आश्रम की पहली सफलता है जिस में उसने एक साथ इतने आदिवासियों को उनके धर्म की गरिमा का बोध कराया। लेकिन यहां पर इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि आदिवासी इलाकों में जब तक उनके रहने खाने पीने और पानी की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होगी तब तक यह कहना गलत होगा कि आश्रम अपने उद्देश्यों में पूरा तरह से सफल हो जाएगा।

आदिवासियों के सामने सबसे बड़ी समस्या है रोटी की। आदिवासी क्षेत्रों में रोजगार की अधिक सम्भावनाओं के नहीं होने से वहां के पुरुष तो अधिकतर बाहर निकल जाते हैं लेकिन घर के वृद्धजनों को वह लोग ईसाई मिशनरियों की देखरेख में छोड़ देते हैं। इससे उन्हें जहां एक तरफ चिन्ता कम होती है वहीं दूसरी तरफ पैसे भी मिलते हैं। जब तक सरकार इस में रुचि नहीं लेगी धर्मान्तरण की गतिविधियों पर अंकुश लगाना सहज नहीं होगा। अब देखना यह है कि इस प्रकरण में सरकार कौन सा रवैया अपनाती है। ▢

सभा की उप प्रधाना डॉ. आशा रानी एवं उपमन्त्री श्री वेद प्रकाश को बधाई

मेरा विश्वास है कि मेरे द्वारा नामित द्वैतवाद उप प्रधान रूपी प्रकृति की गोद में उपमन्त्री रूपी जीव बेफिक्र चाचा रूपी ईश्वर की आज्ञानुसार सभा रूपी सृष्टि के नव-सृजन तथा सत्यम शिवम और सुन्दरम के आधार पर चतुर्मुखी-सम्वरण में अपनी अभूतपूर्व भूमिका के निर्वहन में सफल सिद्ध होगा।

सभा के नवीन कार्य वर्ष में सम्पूर्ण सफलताओं की शुभ कामनाओं के साथ

युवपाल सिंह अटल
मुख्य निरीक्षक सभा।

कानपुर में आर्य वीर दल शिविर

आर्यवीर दल नोनापर कानपुर देहात का शिविर [illegible] गया प्रसाद शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें जिले भर के आर्यवीर दल शिविर लगाये गए। टेमा हाईस्कूल में 4 से 6 अक्टूबर ९९ तक (आर्यवीरों ने तथा हौसिमऊ में से नवम्बर ९ तक आर्यवीरों ने और मरीदपुर में 4 से दिसम्बर तक 18 आर्य वीरों ने रेउना में से 1 दिसम्बर तक आर्यवीर एवं । वीरांगनाओं ने शिविर में भाग लिया।

प्रयागदीन जायसवाल
मन्त्री आर्य वीर दल
पूर्वी उ प्र

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गवाँ बदायूँ का वार्षिकोत्सव [illegible] से 4 मार्च । तक धूमधाम से सम्पन्न होगा। पुस्तक विक्रेता पधारने का कष्ट करें।

बाल जगत

बसन्त पंचमी के अवसर पर

धर्मवीर हकीकत राय

● श्री ओमप्रकाश आर्य "विद्यावाचस्पति"
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, रावतभाटा, वाया कोटा राजस्थान

आओ बच्चों कथा सुनाएं वीर हकीकत राय की,
जिसकी अमरकथा गूंजेगी, धरती पर बलिदान की।

मुगलों का साम्राज्य समृद्ध था हिन्दू जनता हीन थी,
करते अत्याचार विविध थे, दशा बहुत ही दीन थी,
धर्म-संस्कृति-शिक्षा जबरन बनी हुई थी इस्लामी,
लूट रहे आदर्श नारियों की लज्जा को, थे कामी।
मुल्ला और मौलवी, काजी की बातें थीं शान की।।1।।

स्यालकोट पंजाब राज्य का कस्बा था जाना-माना,
जहाँ मुसलमानों का फैला इस्लामी ताना-बाना।
शिक्षा दी जाती थी मस्जिद में, हिन्दू हो या मुस्लिम,
सौ में पढ़ते थे हिन्दू दो-चार, कहीं जो थे उत्तम।
उर्दू, अरबी और फारसी की शिक्षा थी मान की।।2।।

बड़ी धार्मिक कौरांदेवी, बड़े धार्मिक भागमल थे,
माता-पिता हकीकत के ये ज्ञान दे रहे पल-पल थे।
था किशोर बालक मेधावी, मस्जिद में पढ़ने जाता,
धार्मिक संस्कार थे उसके, कभी नहीं वह बल खाता।
कक्षा में मौलवी दृष्टि उस पर थी बहुत सम्मान की।।3।।

पढ़ने में था तेज बहुत ही, इसी से लड़के चिढ़तेथे,
कभी-कभी तो अनायास ही, उससे जाकर भिड़ते थे।
किन्तु धैर्यशाली था, बाल हकीकत कभी न घबड़ाता,
मुस्लिम बच्चों को वह अपने शान्त स्वभाव से समझाता।
कभी नहीं करता था बातें अधर्म और अज्ञान की।।4।।

एक बार थे नहीं मौलवी, कक्षा थी सूनी-सानी।
करते रहे उपद्रव बालक, अपनी-अपनी मनमानी।
मुस्लिम बच्चों ने झूठा आरोप हकीकत पर मारा,
"देता है गाली मेरे देवी-देवताओं को सारा।"
किया शिकायत बच्चों ने मौलाना से निज आन की।।5।।

उबल गया सुनकर झूठी अफवाहों को मौलाना वह,
दिया सफाई बहुत हकीकत, एक नहीं पर माना वह।
बढ़ा चढ़ाकर यही मामला काजी को फिर बतलाया,
काजी था धर्मांध बहुत ही, उसने यह फैसला सुनाया-
"मुसलमान बन जाय हकीकत, उसे मोह यदि जान की।।6।।

गया मामला न्यायालय में हाकिम पुनर्विचार किया,
बेगुनाह बालक है तो, ऐसा कहकर छोड़ दिया।
किन्तु नहीं माना वह काजी, तब हाकिम ने यही कहा-
"अब तो जाओ बड़ी अदालत में, मेरे बस का न रहा।"
काजी फिर लाहौर गया, तो वहाँ भी उसने ठान की।।7।।

बड़ी अदालत में काजी निज इच्छा पूरी करवाया,
"मृत्यु या तो मुसलमान बनने का" निर्णय सुनवाया।
अपना निर्णय सुना हकीकत, मुसलमान बन जाने का,
ऐसा कभी नहीं हो सकता, इच्छा सिर कटवाने की।
बहुतों ने समझाया, बातें एक न मानी "मान" की।।8।।

मोह में आकर माता और पिता ने उसको समझाया,
"सत्यहेतु कट जाने की" शिक्षा का उत्तर दुहराया।
अन्त में सिर काटने हेतु तैयारी भी आरम्भ हुई।
लोगों की आँखों से अश्रुधाराएं भी प्रारम्भ हुई।
डोरी त्यागा नहीं हकीकत सत्य-धर्म-अभिमान" की।।9।।

धर्म- हेतु सिर कटवाने को वीर हकीकत मुसकाया,
देख रही थी जनता सारी, पर परवश थी सब काया।
जल्लादों ने देखा जब मासूम छोकरे को सुन्दर,
दया आ गई समझाए करके स्नेहालिंगन मन्थर।
बन जाओ तू मुसलमान ओ" बचा देह इंसान की।।10।।

जल्लादों की बातों को भी बाल हकीकत टाल दिया,
उनके सम्मुख कंचन काया, स्वाभिमान से डाल दिया।
पुन गिरी तलवार गले पर, धड़ से सिर विच्छिन्न हुआ,
माता-पिता व सारी जनता को सागर- सा खेद हुआ।
सत्य-धर्म पर अटल हकीकत लघु वय में कुर्बान की।।11।।

बसन्त पंचमी का दिन था, थे वन-उपवन सब खिले हुए,
पर इस घटना से लगने थे, आँसू में वे भिने हुए।
आज हकीकत के खूनों की लाली थी उन फूलों में,
खेद भावना दिखलाई पड़ती थी रार-शार शूलों में।
अमर रहेगा बसन्त पंचमी वीर हदी" अभिधान की।।12।।

पृष्ठ ५ का शेष.....

इतना ही नहीं देश तथा विदेश के विद्वान भी वेदों में अन्य विद्याओं का होना स्वीकार करते हैं। श्री अरविन्द यह मानते हैं कि "जिस विज्ञान का मनुष्य का पता नहीं वह भी वेदों में निहित है"। तैत्तिरीय संहिता की भूमिका में सायणाचार्य लिखते हैं कि "जो कुछ भी कल्पना या व्यवहार में अभी तक अज्ञात है वह निश्चय ही वह निश्चय ही वेद द्वारा ज्ञान होता है यही वेद का वेदत्व है।" एन0बी0 पावगी अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि वेद से सब ज्ञातव्य है"। दी वैदिक फादर्स आफ ज्याल जी लिखते हैं कि "किसी विरोधाभास भ्रम के बिना अपने पाठकों को स्मरण कराना चाहता हूँ कि "वेदों में अनेक ऐसे वैज्ञानिक सूत्र हैं कि जिनका पता लगाना शेष है क्यों कि उनमें असामप्य सम्पदा है"। व्हीलर विल काक्स लिखते हैं कि "भारत वेदों का महान देश है जिनमें न केवल जीवन के लिये धार्मिक विचार हैं बल्कि वैज्ञानिक सूक्त भी हैं जो कि विज्ञान द्वारा सत्य सिद्ध हो चुके हैं विद्युत, रेडियम, इलेक्ट्रोन, हवाई-जहाज आदि का वैदिक विद्वानों को पूर्ण ज्ञान प्रतीत होता है।"

स्वयं वेद में लिखा है कि:-

विष्णो· कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्य सखा।
ऋग- 1/22/19

समस्त सृष्टि पदार्थ तथा तद् बोधक ज्ञानराशि परमात्मा से ही प्रकट होती है। प्रभु सृष्टि रचकर उससे उपयोग लेने के लिये ज्ञान भी प्रदान करते हैं। परमात्मा रचित पदार्थों के एवं उनमें कार्य कर रहे नियमों का वह बोधक होता है। मन्त्र का पूर्वार्द्ध बड़े महत्व का है। इसमें एक संकेत किया है कि सृष्टि नियम के विरुद्ध उपदेश देने वाले ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान की पदवी के योग्य नहीं हैं। परमात्मा क्यों सृष्टि रचना आदि कार्य तथा दान करता है। इसका उत्तर यह है कि "इन्द्रस्य युज्यः सखा" क्योंकि वह जीवात्मा को सत्कर्मों में नियुक्त करने वाला मित्र है।

सत्य विद्याओं का प्रकाशक वेद ही है तथा परमेश्वर उनका आदिमूल है यह संक्षिप्त रूप से बताने तथा दर्शाने की दृष्टि से महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे वेद मन्त्र देने हुए निम्नलिखित विषयों आदि का उल्लेख किया है:-

1- विज्ञान काण्ड, 2- पृथिव्यादि लोकभ्रमण 3- आकर्षणानुकर्षण, 4-प्रकाशकप्रकाश्य 5- गणित विद्या, 6- नौ विमान आदि विद्या, 7- तार विद्या, 8- वैद्यक शास्त्र आदि आदि।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम मन्त्र "अग्निमीळे, पुरोहितं यज्ञस्यदेव मृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्" पर ऋषि के भाष्य दर्शनीय एवं विचारणीय है कि उन्होंने किस प्रकार इस मन्त्र का आध्यात्मिक तथा लौकिक विज्ञान विषयक अर्थ किया है।

इस ही उद्देश्य से उन्होंने आर्यसमाज के प्रथम नियम की रचना की। ■

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करे -

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अक्टूबर 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने मे 7 50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 1 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे है। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 है।

अक्टूबर- 1989

483, 2968, 3240, [illegible]055, 5354, 5980, [illegible], 9299, 9551, 9620, [illegible], 11[illegible]35, 11343, 11354, 12016, 12429, 12738, 13268, 13285, 13621, 13627, 13628 13639, 14064, 14065, 14071, 14075, 14092 14100, 14106, 14111, 14476 14484, 14486, 14493, 14845 14847, 14848, 14849 14850 14851, 14852, 14853, 14854, 14855, 14856, 14858, 14859, 14860, 14861 14863, 14864, 14865, 1486[illegible], 14867, 14868, 14869 14870, 14871, 14872

व्यवस्थापक

अन्डे का प्रचार अस्वास्थ्यकर

● आर॰एन॰ लारवोटिया

दूरदर्शन के माध्यम से भारतीय जनता में अन्डे के गुणों के विज्ञापन पर अपनी तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दिल्ली के श्री आर0एन0 लखोटिया ने टाइम्स आफ इन्डिया में लिखा है कि अन्डे का प्रचार अनावश्यक ही नहीं जनता के स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाने वाला प्रचार है। उन्होंने इस सम्बन्ध में टैक्सास विश्वविद्यालय अमेरिका के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा 1985 में मेडिसिन पर नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले डा0 माइकेल ब्राउन तथा जोसे गोल्डस्टाइन ने अपने अन्वेषणों द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि मानव हृदय की धड़कन को बन्द कर देने में Chalestersl कोलेस्टरोल मुख्य कारण है जो एक अन्डे में 250 से 350 मिलीग्राम तक उपलब्ध रहता है। यह हृदय को रक्त पहुँचाने वाली धमनियों में जम जाता है और हृदय की धड़कन बन्द हो जाती है। इसके अतिरिक्त अन्डे मांस में वसायुक्त एसिड भी रहती है जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। अन्डे में विटामिन "बी" कम्पलेक्स विटामिन "सी" कैलशियम तथा कार्बोहाइड्रेट्स Carbohydrates का भी अभाव है जो स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य माना जाता है । दाल अन्डे से सस्ती है और स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त मात्रा में कैलोरीज़ उपलब्ध कराती है अन्डा मांस खाने वालो को और अन्य अनेक रोग घेर लेते हैं, जबकि शाकाहारी व्यक्ति इनसे वंचित रहते हैं।

लखोटिया ने शासन से अनुरोध किया है कि भारत की करोड़ों जनता के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए अन्डे मांस का प्रचार तुरन्त बन्द कर देना चाहिए। अमेरिका तथा ब्रिटेन स्वास्थ्य अधिकारियों ने अन्डा तथा मास खाने के विरुद्ध चेतावनी दी है।

(टाइम्स आफ इन्डिया से साभार।)

पृष्ठ ४ का शेष.....

अंग मानते हैं और हिन्दू संगठन के नाम पर आर्यसमाज के सार्वभौम शुद्ध मानव वैदिक सिद्धान्तों पर अनजाने में कुठाराघात कर रहे हैं।

आन्दोलन की आवश्यकता तो सम्प्रदायों को पड़ती है क्यों कि- सम्प्रदायवादी मानव मस्तिष्क की भावना में बहाकर अपने स्वार्थों को पूरा करने में तत्पर रहते हैं।

आर्यसमाज तो एक शुद्ध पवित्र मानवीय जीवन पद्धति का प्रचारक व प्रसारक है। इसे गो हत्या बन्दी का नारा लगाकर मतदाता के वोट नहीं बटोरने हैं। उसे तो समाज में गोपालन व गो दुग्ध सेवन की प्रवृत्ति को बढ़ाना है।

उसे संस्कृत रक्षा के नारे नहीं लगाने हैं उसे संस्कृत पाठशालाओं को खोलकर संस्कृत का सारे विश्व में प्रचार करना है।

आन्दोलन शब्द का भाव है उथलपुथल, कम्पन, बलपूर्वक कार्य कराने की साहसिक वृत्ति आन्दोलन कहलाती है।

हमें आन्दोलन से नहीं जीना है। हमें अपने श्रेष्ठ जीवन मूल्यों और शुद्ध मानवीय सिद्धान्तों के आधार पर एक आदर्श पुरुष का निर्माण करना है। अवसरवादिता, सस्तीलोकप्रियता और झूठे आदर्शों का अभिनय न कर हमें शुद्ध, शान्त, न्यायप्रिय मानवीय दृष्टिकोण को जन-जन के हृदय में- प्रत्यारोपित करना है। सामयिक और अवैदिक आन्दोलनों से हम शाश्वत मानवीय मूल्यों को प्राप्त नहीं कर सकते। साम्प्रदायिकता तो क्षणिक औषधोपचार मात्र होता है पर अन्न जीवन का प्रमुख आधार होता है। आर्यसमाज शाश्वत आहार है न कि सामयिक औषधि। अतः हमें भलीभांति जानलेना चाहिए कि आर्यसमाज आन्दोलन नहीं है। भूचाल नहीं है। आर्यसमाज की गति वह स्थिर गति है जिस धुरी पर धरती को प्रतिपल प्रतिक्षण बिना विराम के अविरल गति से घूमना होता है। आर्यसमाज की गति मानवीय सृष्टि के आरम्भ से आरम्भ होकर मानव सृष्टि के प्रलय तक अबाध रूप में गतिशील रहेगी। क्योंकि हमें निष्काम कर्म आराधना का पथिक बनना है। स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से आर्यसमाज आगे नहीं बढ़ सकता। सामयिक आन्दोलन आर्यसमाज को क्षतिग्रस्त बनाते हैं।

आज मानव समाज नाना प्रकार के वर्ग-वादों में विभक्त हो चुका है। अविद्या, अन्याय, अभाव और आलस्य का सर्वत्र साम्राज्य छा रहा है। अर्थ और राजनीतिक पद दो ही ध्रुव है आज के जीवन के।

आर्यसमाज छल, कपट, स्वार्थ और जातिगत भेदभाव व अन्य विविध प्रकार की संकीर्णताओं से सर्वथा पृथक् एक पवित्र मानवीय धर्म का संदेश वाहक है।

चाहे राजनीति हो या अर्थनीति, चाहे व्यष्टि हो या समष्टि चाहे अपना हो या पराया आर्यसमाज सबका मानव मात्र का सब क्षेत्र में पथ प्रदर्शक का काम करता है। वह राजनीति के अखाड़े में उतरता नहीं पर वह शुद्ध राजनीति का पाठ विश्व को पढ़ाना चाहता है। वह न हिन्दू संगठन का समर्थन करता है न मुस्लिम संगठन का। वह तो सत्य का न्याय का समर्थक है। उसकी दृष्टि में कोई पराया नहीं। सारा मानव समुदाय उसका अपना परिवार है।

आर्य समाज न हिन्दू राष्ट्र का समर्थक है न एक देशीय भूखण्ड आर्य राष्ट्र का। समस्त भूमण्डल उसका राष्ट्र है। वह चक्रवर्ती राज्य अर्थात् विश्व सरकार का समर्थक है। आशा है विचारशील बुद्धिजीवी वर्ग आर्यसमाज को साम्प्रदायिक दलदल से उभार कर शुद्ध स्थिति में ला खड़ा करेगा। ◻

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- 'मेरी आयु लगभग 16 वर्ष है। सोते समय स्वप्न की घबराहट के कारण व्यायाम द्वारा संग्रह की हुई ताकत (वीर्य) को खो बैठता हूँ। बचपन में एक गलती हो गई थी- बुरी संगत में पड़कर (हस्तमैथुन)।"

-जनपद (बुलन्दशहर) का एक विद्यार्थी

समाधान-चिन्ता छोड़िये। नव-उत्साह से ब्रह्मचर्य की जीवनचर्या आरम्भ करें। मिर्च-लहसुन-प्याज- गरममसाला रहित भोजन के साथ फल-सलाद भी लिया करें। तेल व गरिष्ठ भोजन ठीक नहीं। रात्रिभोजन सोने से तीन घण्टे पहले लेवें। आम-इमली की खटाई से बचें। शौच प्रातः व सायं जाने से पहले पानी पिया करें। नित्य मूत्रेन्द्रिय की त्वचा पीछे करके सफेद मल को पानी से धोया करें। प्रातः एक किलोमीटर की तेज चाल या दौड़ शौच होने के बाद किया करें। स्नान के बाद भुजंगासन, पश्चिमोत्तानासन, हलासन, सर्वांगासन और एकपादांगुष्ठासन किया करें। ये सभी आसन 'विद्यार्थी जीवन रहस्य' (प्रकाशक- सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली) पुस्तक मे हैं।

प्रातराश में एक बताशा में बरगद का दूध 5 बूँद टपकाकर खाने के बाद अंकुरित चना खाकर गाय का दूध पिया करे। प्रात व रात्रि, वीर्य शोधन बटी की एक गोली दूध से 40 दिन तक लेने से धातु-दौर्बल्य व वीर्यविकार से मुक्ति मिल जायेगी। वीर्यशोधन बटी (निर्माता-श्री कृष्णगोपाल आयुर्वेद भवन, डाकघर- कालेड़ा कृष्णगोपाल, जिला- अजमेर, राजस्थान) बाजार में मिलती है।

0 रोगी विवरण के साथ दो डाकलिफाफे निम्न पता पर भेजा करें -

— स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती

(कच्चाहारी) आर्यसमाज, पिथौरागढ़

उत्तर प्रदेश

सीतापुर

आर्यसमाज बिसवाँ के निष्ठावान कार्यकर्ता श्री गुरुदारी लाल जी व आ0स0 मिश्रिख के कर्मठ कार्यकर्ता लाल्बीके लाल जी (द्वय) की माता जी का निधन 10 जनवरी 90 को हो गया उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

महात्मा चाणक्य चाहिये

• विश्वम्भर देव शास्त्री
देवनन्द
सहारनपुर

भारत को राजनैतिक स्वतन्त्रता मिले 42 वर्ष बीत गये। भौतिक दृष्टि से चाहे कर्जा लेकर जो उन्नति हुई इसको कोई झठला नहीं सकता। आज हम अन्न के विषय में इतना बड़ा जनसंख्या होने पर भी आत्म निर्भर हैं। अन्य साधनों के लिये उद्योग धन्धे बढ़ते जा रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में भारत का स्थान बड़े देशों में गिना जाने लगा। समुद्र और गगन पर हमारा अपना प्रभुत्व है। परन्तु जब नैतिक पतन देखते हैं तथा चारों ओर चारित्रिक ह्रास बढ़ता देख रहे हैं तब रोना आता है कि कहाँ जा रहा है संसार को चरित्रकी शिक्षा देने वाला प्राचीन जगत् गुरु।

राजनैतिक नेता यह कहते नहीं थकते कि दूसरे देश भारत को आगे बढ़ने में बाधक बन रहे हैं। परन्तु मैं समझता हूँ यह अपनी राजनीति की कमी रही कि इतने वर्षों में हम अपनी सीमाओं को सुरक्षित न कर सके- वाड न होने से कोई भी पशु खेत में घुसेगा ही तब खेती चाहे कितनी सम्पन्न दिखाई देती हो जंगली और पालतू जानवर उसको नष्ट ही करेंगे।

आज बाह्य दृष्टि से चाहे हम विश्वविख्यात हैं किन्तु जब अपने आंगन में झांकते हैं तब जैसे मोर जब पंखों का घेरा बनाकर नाचता है तब बड़ा प्रसन्न होता है किन्तु जब धरती की ओर झांक कर अपने खुरदरे- बेडौल पैरों को देखता है तब उसकी आंखें गीली हो जाती है- यही दशा हमारी हो रहा है।

दूसरे देशों पर अपनी दुर्बलता का बहाना उचित नहीं है। दूसरे देश मजहब प्रधान हैं उनको अपने मत का प्रचार करना है, परन्तु देश पन्थनिर्पेक्ष है, हम इसका अर्थ लगाते हैं कि हमाग प्रजातन्त्र किसी विशेषमत से सम्बन्ध नहीं रखता यहां सब बराबर हैं। बाधा तब उत्पन्न होती है जब कोई ऐसे काम करने लगे जिससे जनशान्ति भंग होती हो- दूसरे देश वाले अपने लाभ को मद्दे नजर रखते हुए हमारे धर्म निर्पेक्षता का अर्थ लगाते हैं। सावधान तो हमें होना चाहिये। छोटी छोटी बातों पर ध्यान देकर महापुरुष अपना लक्ष्य निश्चित करते हैं। एक समय था जब यूनानियों ने भारत को चारों ओर से आतंकित कर दिया था। उनको भगाने का प्रयास मन्त्री चाणक्य कर रहा था- किन्तु कुछ सूझता नहीं था कि क्या करें- दक्षिण यात्रा करते हुए एक नारी अपने पुत्र को जो बार-बार घी के लालच से खिचड़ी को बीच में हाथ डाल जलने पर हटा देता था कहते सुना बेटा खिचड़ी थाली के किनारे से खाया करते हैं तू मन्त्री चाणक्य की भांति केन्द्र की रक्षा से सारे देश की रक्षा के समान काम कर रहा है। चाणक्य को गुरुमन्त्र मिल गया और उसने चन्द्रगुप्त के राज्य की सीमाओं को पहले सम्भाला तब यूनानियों को देश से निकालने में कठिनाई नहीं हुई।

आज हमारे देश के नेता भौतिकवाद की होड़ लगा रहे हैं अपना धन विदेशों में किसी न किसी बहाने से छिपाये बैठे हैं।

समरथ को नहिं दोष गुसांई- पूंजीवालों को जनता-देश और उसकी परम्पराओं से क्या लेना-देना- वोट चाहिये जो तुष्टी करण से मिल सकता है। देश की सीमायें अस्तव्यस्त रहें इसकी क्या चिन्ता। भारतीय सेना जगत् प्रसिद्ध है- अंग्रेजों ने इसके बल पर दूसरे देशों पर विजय पाई- आजाद हिन्द सेना के बल पर अंग्रेज देश छोड़ भागे- अब लंका को बचाने हेतु शान्ति सेना के अनेकों सैनिकों ने अपना बलिदान दिया- किन्तु हम अभी सीमाओं के झंझट में हैं हमारी सीमाओं का पता नहीं कहां तक है। उनकी सुरक्षा तो पीछे है, कोई भी सीमा ले लो पूर्व उत्तर भारत में, राजस्थान की सीमा, पंजाब की सीमा- कश्मीर की सीमा कौन सी सुरक्षित कर पाये हैं- इन सीमाओं से निरन्तर अस्त्र-शस्त्र तथा आतंकवादियों का भारत में आना और स्थान-स्थान पर आतंक मचाना हत्यायें कर लूटना क्या नहीं हो रहा है इस समय। विदेशियों का हाथ है वे नहीं चाहते भारतवासी चैन से रहें अत स्थान-स्थान पर साम्प्रदायिक दंगे करना उनके बांये हाथ का काम है। सीमाओं पर भारी दलाली देकर वे हमारे देश मे घुसते हैं।

पहले 15 साल- पुन 10 और अब सीमा ही समाप्त हो गई। गान्धी जी ने कहा था- "जिस देश की राष्ट्रभाषा सम्पन्न नहीं वह देश गूंगा है। पन्थ निर्पेक्ष भारत की नीति को देखकर भारत से विदा हो गये विदेशियों ने उदारता का पूरा लाभ उठाया- इसी हेतु फरवरी 1953 में विलियम फ्रैंक ग्राहम ने जो राजनीति का आविष्कारक माना जाता है अमेरिका के निर्णय की घड़ी नामक प्रोग्राम से घोषणा की थी- अमेरिका के लोगों यदि संसार में कम्युनिज्म का सामना करना चाहते हो तो तुम्हें इसका मुकाबला सबसे पहले भारत में करना होगा क्यों कि अमरीकी और रूसी ब्लाक के मध्य भारत के हाथ में ही सन्तुलन शक्ति है। इसके लिये भारत में पादरियों की एक सेना भेजनी होगी जिसका नारा होगा भारत में बूढ़ा हिन्दू धर्म समाप्त हो और उसकी लाश पर ईसाई धर्म का झण्डा लहराये ताकि अपने चर्चों के द्वारा अमरीका भारत के राजनैतिक ढांचे पर अपना नियन्त्रण कर सके"।

पाठक खुद देखें क्या भारत में सर्वत्र यही खेल नहीं खेला जा रहा है।" वोटों की शतरंज में राष्ट्र को ही दांव पर लगाया जा रहा है। ऐसे समय में महात्मा चाणक्य याद आता है, याद आता है उसका अर्थशास्त्र जिसकी समानता कोई नहीं कर सकता। उस सन्त की घोषणा "शठे शाठय-समाचरेत" बलवान दुष्ट शत्रु के साथ कूटनीति का प्रयोग करके अपने राष्ट्र की रक्षा चाहते थे। वे साधु पुरुष के साथ कूटनीति का प्रयोग पाप समझते थे। आचार्य चाणक्य धर्मात्मा व्यक्ति था वह सम्राट निर्माता हो कर भी त्यागी-तपस्वी की भांति कुटिया में रहते चावल और सत्तू खाकर भूख मिटाते विद्यार्थियों को अपना अर्थशास्त्र पढ़ाकर राष्ट्रभक्त बनने की शिक्षा देते। एक चींटी को चावल का दाना ले जाते हुए देख प्रासाद के षड्यन्त्र को भांप लिया और सम्राट चन्द्रगुप्त को बचाया।

आज भारत की दूषित राजनीति को परिवर्तित करने हेतु- दूरदर्शी नीतिज्ञ चाणक्य की आवश्यकता है। जो भारत को पुन चरित्रवान् बना कर जगत् गुरु बना सके। तभी भारत का गौरव बचेगा। ◘

आर्यसमाज फतेहपुर

प्रधान - डा0 हर्ष वर्धन
मन्त्री - डा0 विनय अरोरा
कोषा - श्री राजनारायण रस्तोग्गी।

पूर्वान्चल आर्य महा सम्मेलन

दिनांक-3 फरवरी {शनिवार} एवं 4 फरवरी 1990 {रविवार} स्थान-डी0ए0वी0 डिग्री कालेज प्रांगण {बक्शीपुर} गोरखपुर में सम्पन्न होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के अन्तर्गत "पूर्वी प्रचार विभाग" के तत्वावधान में, आर्य सामाजिक संगठन, प्रचार, प्रसार तथा सामाजिक कार्यों के संचालन में जागृति एवं नवीन चेतना लाने और समस्याओं के समाधान हेतु सामूहिक विचार विमर्श, तथा नवीन योजनाओं, विचारों एवं प्रकल्पों के माध्यम से कार्य को नई दिशा, तीव्र गति और प्रेरणा प्रदान करने हेतु उपर्युक्त दिनांक तथा निर्धारित स्थान पर गोरखपुर नगर में पूर्वांचल आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। उक्त सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान- पू0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वतीजी महामन्त्री- श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान- मा0 पं0 इन्द्रराज जी- मन्त्री- मा0- श्री मनमोहन तिवारी जी एवं अन्य पदाधिकारी तथा विद्वज्जन पधार रहे हैं। जिससे हम सबको उनके साथ सम्मालित रूप से विचारों के आदान-प्रदान तथा मार्ग निर्देशन भी प्राप्त होगा।

अत. निम्नलिखित जिलों की सभी आर्यसमाजों के प्रधान व मन्त्री गण तथा जिला उपसभाओं के प्रधान तथा मन्त्री गण एवं समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों से अनुरोध है कि उक्त सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभान्वित हों। कृपया ध्यान दें कि प्रत्येक आर्यसमाजों का प्रतिनिधित्व इस सम्मेलन में नितान्त आवश्यक है। अपने पहुँचने की सूचना तत्काल "संयोजक-पूर्वी प्रचार विभाग" आर्यसमाज गोरखपुर {बक्शीपुर} गोरखपुर {उ0प्र0} इस पते पर प्रेषित करें। दि0- 3 फरवरी-1990 को प्रातः 8 बजे तक अथवा 2 फरवरी 1990 की रात्रि तक अवश्य पहुँचें। विस्तृत सूचना पत्र आपको प्राप्त होगा तदनुसार आप सम्मेलन में अवश्य ही भाग लें।

जिले जिनकी समस्त समाजों के प्रतिनिधि उक्त सम्मेलन में भाग लेंगे। गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, इलाहाबाद, फैजाबाद, गोण्डा तथा बहराइच। जिलों की समस्त समाजों के प्रतिनिधियों से अपेक्षा है कि वे इस सम्मेलन में अवश्य भाग लेंगे।

{डॉ0 विनय प्रताप} {मनमोहन तिवारी}
संयोजक पूर्वी प्रचार विभाग सभामन्त्री

२९वाँ स्थापना दिवस सम्पन्न

आज दिनांक 13 जनवरी, 1990 को आर्यसमाज विद्यामन्दिर, किरावली-आगरा, विद्यालय का 27वाँ स्थापना दिवस प्रबन्धक, प्रधानाध्यापक, अध्यापकों तथा छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में उत्साह व उमंग से मनाया गया, छात्र-छात्राओं द्वारा खेलकूद सतेल, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन जनता ने भी लिया शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

बसन्त

वेद मित्र हापुड़ वाले
अम्बाला छावनी

आर्य बनना ही सत्य सनातन धर्म है। जिसे सभी ने अपनाया परन्तु आर्यसमाज शब्द से चिढ़ते रहे, यह कटु सत्य है कि महात्मा गांधी जी भी ऋषि के सिद्धान्तों में विश्वास रखते थे, परन्तु ऋषि का अनुयायी कहने पर झिझकते थे। ऋषि ने हर क्षेत्र में वह कार्य किया दूसरा क्या करेगा। स्वराज्य शब्द सत्यार्थ प्रकाश में 50-55 बार आया तथा स्वदेश स्वभाषा तथा स्वलिपी शब्द भी आये। स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग सत्यार्थ प्रकाश में है इस प्रकार आर्यसमाज व आर्यों के लिये बसंत पंचमी का महत्व और भी बढ़ जाता है।

आर्यसमाज इस दिन को अज्ञानान्धकार मिटाने के त्यौहार के रूप में मनाता है जबकि भारत वर्ष में ही सरस्वती पंचमी के नाम से भी पुकारा जाता है। भारत वर्ष में 6 ऋतुयें होती है परन्तु अन्य 5 में वह उल्लास नहीं होता जो इस बसंत ऋतु में होता है। इसे ऋतुराज की भी संज्ञा दी जाती है। शीत से तंग व्यक्ति भी अपने अन्दर चेतना पाते हैं भूमि में सर्वत्र रस भर जाने से नर नारियों भी उमंग रस में भर जाती हैं।

यजुर्वेद के 13वें अध्याय के मन्त्रों में कितना सुन्दर चित्रण है:- इस बसंत में वायु मधुर सुगन्धित चलती है नदियाँ सुगन्धित पानी वाली बहती हैं। औषधियों में सर्वत्र गन्ध भरा होता है, रात और उषा काल माधुर्य बखेरते हैं और तो और पृथ्वी का कण-कण मधुरता से ओत प्रोत हो जाता है, आकाश में सर्वत्र सुगंध व्याप्त रहती है। वृक्ष लतायें जहाँ मधु से परिपूर्ण होकर मधु मक्खियों को मधु प्रदान करती हैं वहाँ सूर्य की किरणें भी वनस्पति जगत से माधुर्य उठाकर मधुभानु बन जाता है। गऊओं के दूध में मिठास आ जाता है इस प्रकार चहुँ और प्रसाद का वातावरण से मनुष्य मधुर बन जाता है।

बाल हकीकत राय का बलिदान भी इस दिन के साथ जुड़ा है। जिसने ईश्वर को साक्षी मानकर अपने कहे शब्दों को अदालत में स्वीकार किया तथा लाहौर के शालीमार बाग में वह वीर सत्य का पुजारी फाँसी पर लटका दिया गया। आज की बसंत पंचमी हिन्दुओं को चेतावनी देने वाली है तथा गुरुतेगबहादुर ने यही सबक लिया कि सिख अपने को हिन्दु कहें तथा गुरुनानक तो वैदिक तथा वेद भक्त थे, हिन्दु थे। उन्होंने हिन्दुओं के हितों के लिये कार्य किया।

आर्य वीरों। बसंत पंचमी विश्व को आर्य बनाने का पावन संदेश लाई है। अब हम धर्म सम्बन्धी कामना करनी चाहिये तथा आर्यसमाज के इस विशाल संगठन में जो शिथिलता आई है उसे दूर करने का संकल्प लें तो

हमें खुशी होगी तथा महाकवि शंकर के शब्दों में खुशी से गा सकते हैं:-

कट गये कटीले कपट जाल के फन्दे
खुल गये लोक लीला के गोरखधन्धे।
भ्रम सागर में गिर गये गपोड़ी गन्दे
परमार्थ को समझे स्वार्थ थके बन्दे।
विपरीत मनों का घोर घमण्ड घटाया
समझो समाज ने क्या कर दिखलाया
फल खाते हैं लाखों फल खाने वाले
पय पीते हैं वारुणी उड़ाने वाले
वन गये जती जंगलो में जाने वाले
छूटे छल बल से पाप कमाने वाले
शुभ समाचार का शंख निशंख बजाया है
समझो समाज ने क्या कर दिखलाया है।

शोक समाचार

- आर्यसमाज केल्यरारोड के निकट ग्रा0 बड़री निवासी श्री सुर्यबली शर्मा का देहावसान दि0- 18-12-89 को हो गया। इनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री शिवपूजन शर्मा "आर्य" के द्वारा कराया गया। दि0- 30-12-89 को शान्तियज्ञ, पूज्यनीय डा0 कस्तूरीलाल- "आर्य" {लारटाउन} द्वारा सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के युवा एवं सक्रिय कार्यकर्ता श्रद्धेय रामाज्ञा जी मिश्र "आर्यपुत्र" भागलपुर द्वारा सामाजिक प्रवचन तथा डा0 श्री-कस्तूरी लाल "आर्य" {लारटाउन} देवरिया द्वारा संस्कारों का मानव जीवन में महत्व पर संक्षिप्त व्याख्यान हुआ। ग्रामीण जनता पर मार्मिक प्रभाव पड़ा।

पजीकरण स० एल० डब्ल्यू /एन०पी० ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र का मुखपत्र

नारायण स्वामी भवन, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

माघ शुक्ल - २

दिनाक २८ जनवरी १९९०

दूरभाष
२४१८६३

सेवा मे

१८९४६-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
(हरिद्वार)

विद्वानों से नम्र निवेदन

दिनाक 23 फरवरी 1990 को शिवरात्रि के अवसर पर आर्यमित्र का ऋषिबोध-पर्व विशेषाक बडी सजधज के साथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें प्रकाशनार्थ समसामयिक विषयों पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले लेख/कविता/कथानक/ समय आदि सादर आमन्त्रित हैं। कृपया पृष्ठ के एक ही ओर सुन्दर अक्षरों में लिखकर मुझे विलम्बतम 31 जनवरी 1990 तक अवश्य भेज देने का कष्ट करें।

-विदुषामनुचर
आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए ... 5 मीराबाई मार्ग, ...
... प्रिंटिंग प्रेस लखनऊ ... मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं. २२४१/५७) माघ शुक्ल ९ रविवार-संवत् २०४६ वि., दिनांक ४ फरवरी १९९० (घोषणा पत्र स ७/२२ २ ८५)



तीन देवियाँ

इडा सरस्वती मही, तिस्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः ।।

---- ऋग्वेद

May all the three goddesses, viz. The Goddess of Motherland, The Goddess of Learning, The Goddess of Speach, are great and praiseworthy. They take seat here in our sacrifice. [राष्ट्रयज्ञ]

- डा० कपिलदेव द्विवेदी

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

•

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य — रु. २५१/-
वार्षिक — रु. 30/-
एक प्रति — १ रु. मात्र
विदेश में — १५ पौंड

प्रकाशन का ९१वाँ वर्ष
अंक - ५

विचार-मन्थन

शिव आराधना का पावनपर्व आ रहा है। इस अवसर पर करोड़ों हिन्दू जनता कल्याणकारी शिव को प्रसन्न करने के लिए न जाने कहाँ-कहाँ से जल लाकर किसी को स्नान कराती है, पत्रपुष्प चढ़ाती है, सुगन्धित पुष्पमालाओं से लाद देती है और नतमस्तक होकर "नमः शिवाय" के समवेत स्वर में गगन को गुंजायमान कर देती है। मध्ययुग में जब शैवमत का प्रभाव अपनी पराकाष्ठा पर था, उस समय वैदिक शिव के सच्चे स्वरूप को लोग भूलकर काल्पनिक शिव के अनेक रूपों की उपासना करने लगे थे। शिवपुराण की रचना इसी समय की मानी जाती है और उसमें वेद में वर्णित शिव के पावन स्वरूप को विकृत करके दिखाया गया है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश अर्थात् निर्माण, पालन और संहार, यह तीनों ही परमात्मा की क्रियान्वित होती हुई शक्तियाँ हमें दृष्टिगोचर हो रही हैं। ब्रह्मा अर्थात् वह शक्ति जिसके सहारे निर्माण की प्रक्रिया चल रही है, विष्णु अर्थात् वह शक्ति जिसके सहारे निर्मित वस्तु का पालन अथवा अनुरक्षण हो रहा है और महेश-[शिव] वह शक्ति जिसके सहारे निर्मित वस्तु का अभाव [संहार] दृष्टिगोचर हो रहा है। यह तीनों ही शक्तियाँ उस एक निराकार सत्ता के अटूट नियम हैं। वेद में इस बात को स्पष्ट रूप से कहीं-कहीं आलंकारिक रूप में वर्णित किया गया है। इन्हीं तीनों शक्तियों को उसकी तीन आँखें बताते हुए वेद में एक स्थान पर कहा गया है -

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।

हे तीन आँखों वाले देव! हम तेरी उपासना करते हैं। तू हमें मृत्यु के बन्धन से छुड़ाकर अमृत से हमेशा हमेशा के लिए नाता जोड़ दे। मानव के लिए मृत्यु सदैव ही भयप्रदायिनी रही है। निर्माण और पालन से हमारा जितना लगाव है उससे अधिक लगाव मानव का इस बात से है कि मृत्यु उसे सभी सांसारिक ऐश्वर्यों से छुड़ाकर न जाने कहाँ ले जाती है। इस मृत्यु से निवारण देने वाला देव सबसे अधिक लगाव वाला एवं उपासनीय होना स्वाभाविक है। इसी कल्पना में एक नये देव की सर्जना हुई और समस्त उत्तरी दक्षिणी भारत, पर्वतीय प्रदेश एवं नदियों के किनारे अनेक स्थानों पर शिव-आराधना के बड़े-बड़े प्रतीक बनाए गये और अद्भुत लोक संग्रह की क्षमता रखने वाले शैवों ने भारतवर्ष के बाहर भी इसी काल्पनिक शिव की प्रतिमा को "ज्योतिर्लिंग" का नाम देकर प्रचारित किया। इस देव की आराधना का मुख्यपर्व "शिवरात्रि" है जो सारे भारत में आज भी बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

------ और यही शिवरात्रि तो थी जब एक बालक तपस्वी व्रतस्वी बनकर शिवलिंग के सम्मुख रात्रिभर जागरण करता रहा। काश!, उसे इन्हीं आँखों से उसके दर्शन हो जाते। किन्तु कैसा महान आश्चर्य है। उस बालक की रात्रि तपस्या व्यर्थ नहीं जाती है और उसके निर्मल हृदय में सच्चे शिव का बोध हो ही जाता है। यह बोध मात्र उसके लिए नहीं था वह हमारे तुम्हारे समस्त संसार के लिए था और रहेगा। शिव के इस सच्चे स्वरूप की खोज के लिए मानवता उस बालक की हमेशा-हमेशा के लिए ऋणी है।

------ दुनियाँ के रहनुमाओं! आलिमों! तत्वज्ञानियों! अब क्या रुकावट है। सारी शंकाएं उस बालक ने बोध प्राप्त करके निर्मूल कर दी हैं। अब तो निस्सीम-पथ पर भटकती हुई मानवता को एक बार फिर बोधपथ मिल गया है। अब तो हमें उस पथ पर चलना है और सारे विश्व को चलाना है। यही आर्यसमाज का लक्ष्य है इतना स्पष्ट इतना सुन्दर और इतना सत्य कि संसार को अब किसी और अन्वेषण की आवश्यकता ही नहीं है। हम चाहते हैं आगामी शिवरात्रि के अवसर पर इसी विचारमन्थन को दृढ़ बनाते हुए हम [illegible]बोधपर्व मनाएं।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

लखनऊ- माघ शुक्ल ९ संवत् २०४६ वि
४ फरवरी १९९० - दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

दूरदर्शन की प्रस्तुति महाभारत में, आजकल हम, विनाशकारी विध्वन्स की पूर्वगाथाएं देख रहे हैं सुन रहे हैं। पौराणिक आख्यान के अनुसार अब शिव का तीसरा नेत्र खुलने ही वाला है और फिर हम देखेंगे धरती शवों से पटती जा रही है। वंश के वंश समाप्त होते जा रहे हैं। और फिर बचेगा एक शून्य, केवल एक शून्य- अतीत के विध्वन्स को उजागर करता हुआ, हमारी तुम्हारी बुद्धि पर अट्टहास लगाता हुआ एक शून्य जिसमें से स्यात् सभ्यता की नई पंखुड़ियाँ जन्म लेंगी और फिर उगते-उगते बढ़ते-बढ़ते दुनियाँ के हजारों साल पीछे चले जायेंगे। कौन नहीं कह सकता न उस समय हिन्दू होगा न मुसलमान केवल एक शून्य होगा अतीत की मानवबुद्धि पर तरस खाता हुआ खिलखिलाता हुआ शून्य। तुम कहते हो कौरव बुरे हैं वे कहते हैं पाण्डव बुरे हैं। जब दोनों ही बुरे हैं तो प्यारे प्रभु की इस प्यारी धरती पर दोनों को ही रहने का क्या अधिकार है। दोनों को ही मिट जाने दो। रह जाने दो एक शून्य। शायद इससे जन्मी सभ्यता संसार को एक नवीन स्वर्णिमपथ दिखा सके।

हिन्दू और मुसल्मान दोनों इस भारत माँ की दो आँखें हैं। चाहे पाकिस्तान की भूमि हो अथवा हिन्दुस्तान की। दोनों भूमियाँ एक ही हैं। दोनों भूमियों पर निवास करने वाले एक ही हैं, एक ही पूर्वजों की सन्तानें, जिन्होंने एक साथ मिलकर गुलामी की जंजीरें तोड़ी थीं। कुछ अदूरदर्शी नेताओं ने जिन्हें हम राजनैतिक गगन का उज्ज्वल नहीं कलंकभरा नक्षत्र मानते हैं- माँ के विखण्डन का समझौता किया। किस दिवास्वप्न की आशा में, हम नहीं जानते मगर हम देख रहे हैं विखण्डन के साथ ही शुरु हो गई वैमनस्यभरी उग्रवादी आतंकवादी गतिविधियाँ। और आज निर्दोष प्राणियों के खून से भारत के इतिहास को लिखे जाने का कुचक्र चल रहा है। इस सबके लिए कौन उत्तरदायी है। राजीव जी कहते हैं:- "राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार की गलत नीतियों के कारण जम्मू कश्मीर देश से अलग होने के कगार पर आ पहुँचा है"। प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंहजी कहते हैं:- "यह सब कांग्रेस की गलत नीतियों के कारण हुआ है"। लेकिन खुल है दो टूक स्पष्ट बात कोई नहीं कहना चाहता है। जनता को उस समय भी गुमराह किया गया था जब इस देश का विभाजन किया गया था। उस समय यही कहा गया था- अब इस भूभाग पर अमन और शान्ति हो जायेगी। दोनों भाई अपने-अपने मुल्कों में शान्ति और समृद्धि के साथ जीवनयापन करेंगे। हमने भी स्वप्न देखा था, तुमने अपने लिए देश मांगा था- हमने दे दिया तुम अपने यहाँ खुश रहो हम अपने यहाँ खुश। हमें आशा थी विभाजन के बाद हम समस्त भारतीयों को बिना किसी भेदभाव के सुख समृद्धि के गौरवशिखर तक पहुँचा देंगे। परन्तु आज स्थिति यह है कि हमें अपनी जनता के प्राणों की रक्षा के ही लाले पड़ रहे हैं।

यदि इस सबका मूलकारण पड़ोसी देश पाकिस्तान है तो उसके इस शत्रुतापूर्ण व्यवहार के लिए उसे सबक सिखाना होगा। बार-बार यह बात शासन के स्तर पर दोहराई जा रही है कि भारत को बरबाद करने के लिए पाकिस्तान की भूमि पर प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं, योजनाएं बनाई जा रही हैं। आतंकवादी वहाँ से हथियार और प्रशिक्षण लेकर सीमा लाँघते हुए चले आते हैं और निर्दोष प्राणियों का खून बहाकर बेधड़क वापस लौट जाते हैं। यह स्थिति कब तक सह्य होगी। क्या इस देश की धरती पर महाभारत की पुनरावृत्ति होने वाली है? ।

अब समय आ गया है भारत सरकार को स्पष्ट शब्दों में पाकिस्तान को अन्तिम चेतावनी दे देनी चाहिए कि यदि आतंकवादी गतिविधियों का संचालन उसने समाप्त नहीं किया तो उसे तोड़ दिया जायेगा। जिस अमन चैन की आशा में हमने यह भूखण्ड तुम्हें दिया था उसके पात्र तुम नहीं थे। तुमने अपने यहाँ अल्पसंख्यकों का समूल नाश करके अपने देश को समस्यारहित समझ लिया है। हम ऐसा पाप नहीं कर सकते। हमने मानवीयता को धर्म समझा है। हमने संसार को सदैव "जिओ और जीने दो" की शिक्षा दी है। हमारे देश के रहने वाले मुस्लिम भाइयों की भावनाओं को उभाड़कर आपको कुछ हासिल नहीं होगा। आपको हमारे अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। शिमला समझौते में जो भावना अन्तर्निहित है वह है कश्मीर के उस भूभाग को वापस लेने की जो ने अनधिकृत तरीके पर अपने कब्जे में ले रखा है और वहाँ से तोड़-फोड़ की कार्यवाही का संचालन किया जा रहा है। पाक अधिकृत कश्मीर के तथाकथित प्रधानमन्त्री ने पिछले दिनों ही कहा कि वह श्रीनगर में दस हजार प्रशिक्षित कमाण्डो भेज रहा है। ऐसी स्थिति में अत्यन्त कठोर रुख अपनाने की आवश्यकता है।

अन्यथा इस भूखण्ड पर गहराता हुआ मानवसंहार का प्रश्नचिन्ह शून्य की ओर बढ़ता चला जायेगा और एक दिन इतिहास हमारी बुद्धि पर आठ-आठ आँसू बहाने लगेगा। ◻



आप जैसे कर्मठ, योग्य विद्वान ने जब से "आर्यमित्र" का सम्पादन अपने हाथ में लिया है तब से आर्यमित्र का स्तर काफी ऊँचा हुआ है। आर्यमित्र की सज्जा भी पहले से बहुत ठीक है। अब पत्रिका देखते ही उसके प्रति आकर्षण सहज हो जाता है।

दलितों की समस्या पर लब्धप्रतिष्ठ विद्वान पं0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री प्राध्यापक, महोपदेशक का शोधपूर्ण लेख अति उत्तम रहा। जिस प्रकार "सती प्रथा वेद विरुद्ध है पुस्तिका के रूप में छपा है, उसी प्रकार यह भी छपना चाहिए- यह मेरी प्रार्थना आपसे, योग्य उत्साही विद्वान सादगी के मूर्ति पं0 इन्द्रराज से है। मैं समझता हूँ कि बहुत से आर्य ऐसा चाहते हैं।

-डॉ0 कस्तूरीलाल आर्य
प्रधान
आर्यसमाज लार, देवरिया।

मै आपकी साप्ताहिक पत्रिका "आर्यमित्र" का नियमित पाठक हूँ। आपकी पत्रिका मुझे नियमित रूप से प्राप्त हो रही, है। इस समय पत्रिका को नए कलेवर के रूप में पाकर और भी अधिक प्रसन्नता अनुभव हो रही है। निःसन्देह आप इसमें पाठकों के लिए काफी ठोस एव महत्वपूर्ण सामग्री पढ़ने के लिए दे रहे हैं। अत आपका यह सतत् प्रयास काफी सराहनीय है। इसके अतिरिक्त आर्यमित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को पूरा करने तथा वैदिक विचारधारा का प्रचार प्रसार करने के लिए भी कृतसंकल्प है। इस समय इस पत्रिका ने आर्यजगत की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। तथा भविष्य मे भी निरन्तर अपनी लोक प्रियता की ओर अग्रसर है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभ कामनायें'

- रामकुमार सोरायण
नजदीक जोशी चौहान
(सोनीपत) हरि0

दि0 9 से 12 फरवरी 1990 तक आर्यसमाज बाराबंकी का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया जायगा। स्थानीय जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

आत्ममंथन की खोई शक्ति की वापसी

— श्री नरेन्द्र मोहन
सम्पादक दैनिक जागरण, कानपुर

गतांक से आगे....

संक्षेप में इतनी ही बात कही जा सकती है कि आज जब ऐसे मौलिक प्रश्न एक बार पुनः धरातल पर चर्चा में आ गये हैं, तो हम उनका उत्तर खोजे बिना क्या किसी सही रास्ते पर जा सकते हैं? आज नहीं तो कल हमें इन प्रश्नों का उत्तर खोजना ही होगा। अगर हम उत्तर खोजे बिना चलते हैं, तो हम निश्चित रूप से और अधिक भटक जायेंगे। सत्य का अन्वेषण करना अपराध नहीं है। एक तत्वदर्शी के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह यह जानने की चेष्टा करे कि सत्य क्या है। फिर हमारी सरकार और हमारी राजनीति का आधार ही नहीं है, संविधान का आधार ही यही है- "सत्यमेव जयते"। यह आधार हमने कहां से प्राप्त कर लिया? जब हम इस प्रश्न का उत्तर खोजेंगे, तब उसके साथ ही साथ अपने आप हिन्दू दर्शन हिन्दू संस्कृति और अन्य तमाम बातें सामने आ जायेंगी। ऐसा हो जाने पर उनकी व्याख्या करना और उनके उद्गम स्थल की ओर देखना हमारा कर्तव्य बन जायेगा।

बात यादगार की नहीं

अब पहले प्रश्न का उत्तर खोजा जाये। निश्चित रूप से अल्पसंख्यक हों या बहुसंख्यक, दोनों के सामान अधिकार होना चाहिए यह लोकतन्त्र का सिद्धान्त है और यही भारतीय दर्शन और भारतीय संस्कृति भी कहती है। अगर कोई अल्पसंख्यक अपने आपको भारतीय संस्कृति से प्रथक मानकर यह दावा करता है कि उसे कुछ विशेष अधिकार दे दिये जायें। तभी वह अपनी रक्षा कर सकेगा या अपनी संस्कृति का संवर्धन कर सकेगा, तो यह स्थिति उचित नहीं है। यह स्वयं में अंतर्विरोधी है तथा लोकतांत्रिक मान्यताओं के विपरीत भी। जहां तक मर्यादा पुरुषोत्तम राम की बात है कोई उन्हें भगवान माने या न माने, लेकिन अगर कोई उन्हें अपना पूर्वज भी नहीं मानना चाहे तो यह स्थिति स्वीकार नहीं होगी। इस समस्या का निदान केवल इतना कहने से ही नहीं हो जाता कि "हम भी रामचन्द्र जी का आदर करते हैं और उनकी यादगार बनाने की मुखालफत नहीं करते हैं।" महत्व की बात यह नहीं है कि रामचन्द्र की यादगार बनायी जा रही है। महत्वपूर्ण यह है कि राम की जन्मभूमि कहां है और जो राम जन्मभूमि है वह पवित्र स्थल हम सब भारतीयों का तीर्थस्थल बने या न बने और ऐसा तीर्थस्थल बने न बने जो भारतीय सभ्यता और बहुसंख्यकों की भावनाओं के अनुरूप हो। यादगारें तो कहीं भी बनायी जा सकती है और बनवायी जा सकती है, लेकिन जन्मस्थल तो एक ही होगा और जन्म कहां हुआ कम से कम भगवान रामचन्द्र जी के सम्बन्ध में यह मात्र विश्वास की वस्तु है। इसके लिए न तो पुरातत्व विशेषज्ञों की आवश्यकता है और न ही किसी न्यायालय के निर्णयों की, क्योंकि जहां श्रद्धा, विश्वास, भक्ति तथा धार्मिक मान्यताओं की बात है, वे केवल कानूनों के निर्णय से हल नहीं किये जा सकते। हिन्दुओं का यह विश्वास है कि राम का जन्म एक स्थल विशेष पर हुआ है और यह एक ऐसी बात है, जिसे केवल तर्क से नहीं डिगाया जा सकता।

हिन्दू कौन

मान्यता यह है कि भारत भूमि के मूल निवासी आर्य हैं। वैसे पश्चिमी विद्वान यह कहते हैं कि आर्य उत्तरी ध्रुव या मध्य एशिया से आये, किन्तु इस बात को न तो स्वामी विवेकानन्द और न श्रेष्ठ कोटि के अन्य संन्यासियों ने ही स्वीकार किया है। आज से हजारों हजार वर्ष पहले जो भी लोग हिमालय के नीचे रहा करते थे, उन्हें आर्य कहा जाता था। भारत के पश्चिमी भाग में एक नदी बहती थी और आज भी बहती है। उसका नाम है सिन्धु इस क्षेत्र से मिला हुआ क्षेत्र ईरान (फारस) कहलाता था। ईरान में रहने वाले किसी वजह से सिन्धु शब्द का उच्चारण नहीं कर पाते थे और वे इसीलिए उसे हिन्दु कहते थे। अत सबसे पहले इन ईरानवासियों ने ही भारतवासियों को हिन्दु कहना प्रारम्भ कर दिया। और तो और जो लोग कभी ईरान से भागकर भारतवर्ष में आकर रहने लगे थे उन्हें भी ईरानवासी हिन्दू ही कहते थे फारसी नहीं। पारसी उनका मजहब था और उपासना पद्धति थी, पर ईरानवासियों की दृष्टि में वे हिन्दू थे। भारतवर्ष में रहने वाले लोगों के लिए हिन्दू शब्द का प्रयोग अरब देश में रहने वाले लोगों ने भी किया। फारसी और अरबी में हिन्दी का अर्थ होता है भारतवर्ष का निवासी। हिन्दू का अर्थ फारसी में होता है ऐसे देश के लोग जहां मूर्ति पूजा होती है। अत सच बात तो यह हुई कि हिन्दू एक फारसी शब्द है, जिसे हम भारतवासियों ने अपना लिया है, लेकिन क्या हम "हिन्दू" शब्द का यह अर्थ आज स्वीकार करने के लिए तैयार है? फारस के लोगों का मुगलों ने जब हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया तो उन्होंने अपने आपको हिन्दुओं से अर्थात हिन्दुस्तान में रहने वालों से पृथक समझा और जो हिन्दुस्तान में रहने वाले थे उन्हें हिन्दु कहा, भले ही उनका मजहब कोई रहा हो तथा जो लोग उनके साथ आये थे उन्हें कुछ दूसरा नाम प्रदान किया अर्थात इस देश का राजनीतिक रूप से जो विभाजन किया गया था, उसे मानसिक रूप से भी विभाजित कर देने की कोशिश की गयी। दुर्भाग्य से हमारा देश विदेशी आक्रान्ताओं की इस साजिश का शिकार बना और हम मानसिक रूप से बंटते चले गये। पहले जो कभी हम एक थे वे अलग-अलग फिरकों में बंट गये। पता नहीं यह बात आज का सत्तारूढ राजनीतिज्ञ या अन्य विपक्षी राजनीतिज्ञ स्वीकार करेगा भी या नहीं? पर अगर उसने इसे अस्वीकार कर दिया तो क्या वास्तविकता छुप जायेगी? किसी के यह कह देने से कि प्रात·काल में रोशनी नहीं होती सच्चाई समाप्त नहीं हो जाती।

आँखों वाले अंधे

अब प्रश्न यह उठता है कि हिन्दू दर्शन से अभिप्राय क्या है? हिन्दू दर्शन से अर्थ होता है भारतीय दर्शन। हिन्दू दर्शन और भारतीय दर्शन एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द है। हिन्दू दर्शन का अर्थ यह नहीं होता कि भारत में रहने वाले कुछ लोगों का या अधिक लोगों का दर्शन या केवल मूर्ति पूजकों का दर्शन पर इस सच्चाई को भी आज का राजनीतिज्ञ स्वीकार करने को तैयार नहीं है और वह खुलेआम कहता है कि भारत में अनेक संस्कृतियां हैं, अनेक दर्शन, अनेक जीवन पद्धतियां हैं। अब ऐसे व्यक्तियों को समझाया कैसे जाये? अगर कोई वास्तव में अंधा हो, तो उसे हाथ पकड़कर हम रास्ता दिखा सकते हैं, लेकिन जिन्हें दिखायी तो देता है परन्तु जानबूझकर अंधे बने हुए हैं और अंधा होने का ढोंग करते हैं तथा सच्चाई जानने से इंकार करते हैं उन्हें कौन सच्चाई दिखा सकता है? भारत की अपनी एक संस्कृति है- इसे आज नहीं तो कल सभी को स्वीकार करना ही होगा। आज भी जब कोई विदेश जाता है या आज भी जब कोई विदेश में भारत के सन्दर्भ में बात करता है तब वह यह कहकर अपनी पृथक पहचान नहीं बना सकता कि उसकी संस्कृति भारतीय नहीं है।

अपना पृथक अस्तित्व जताने के लिए उसे यह स्वीकार करना ही पड़ता है कि यह भारतीय संस्कृति की एक उपज है। हां, भारतीय संस्कृति के अनेक रूप हो सकते हैं, ठीक उसी प्रकार से जैसे एक विशाल वटवृक्ष की अनेक शाखाएं होती हैं, पर किसी शाखा के कारण किसी वृक्ष को अपमानित नहीं किया जा सकता और न यह कहा जा सकता है कि जो शाखा है वही वृक्ष है। जिस प्रकार कोई एक शाखा विशेष वृक्ष का पर्याय नहीं हो सकती, उसी प्रकार भारत में प्रयुक्त की जाने वाली कोई एक उपासना पद्दति भारतीय संस्कृति या भारतीय दर्शन का पर्याय नहीं बन सकती। उदाहरण स्वरूप मूर्ति पूजा भारत की एक विशेष उपासना पद्दति है। केवल इस उपासना पद्दति से

— शेष पृष्ठ ८ पर

लाला लाजपत राय

जन्म-२८ जनवरी १८६५ : बलिदान-१५ नवम्बर १९२८

■ लेखक-पवनकुमार, एम०ए० बी०टी
सिद्धान्त शास्त्री आर्यसिद्धान्तरत्न, लखनऊ

देशभक्त लाला लाजपत राय जी को केसरी की उपाधि से विभूषित किया गया है। वे केसरी (शेर) की भांति निडर और साहसी थे। उनकी आत्मा में अतुलित बल था वे जीवन भर संसार की सबसे बड़ी राज्यशाली ब्रिटिश सरकार से लड़ते रहे अन्त में उन्होंने एक युद्ध में आहत की तरह घायल होकर प्राण दे दिये। लाजपतराय भारत के यशस्वी नेता थे। भारत के बाहर भी उनका नाम बड़ी श्रद्धा से स्मरण किया जाता है।

भारतीय स्वाधीनता को मूर्तिमान करने में जिन शिल्पियों का आदरणीय योगदान रहा है उनमें लाजपत रायजी का अन्यतम स्थान है।

जनसेवा में सफलता पाने में आवश्यक गुणों का विकास करने के लिए उन्होंने कठोर साधना की उनके अप्रतिम व्यक्तित्व के चार स्तम्भ हैं, लगन, पुरुषार्थ, साहस और धैर्य।

लाजपतराय जी आत्मनिर्मित व्यक्ति थे उन्होंने अपने को उद्योग की तपस्या में तपा कर कण-कण गढ़ा था। लाला लाजपतराय का जन्म एक साधारण घर में हुआ था।

लाला लाजपतराय का जन्म अत्यन्त निर्धन वैश्य परिवार में 28-जनवरी 1865 में पंजाब के जिला-फिरोजपुर की मोंगा- तहसील के अन्तर्गत छोटे से ग्राम ढोढिके में हुआ था यह ग्राम उनका ननिहाल था। कुछ परम्परा, कुछ निर्धनता के कारण इनके पिता श्री राधाकृष्ण जी ने गर्भवती माता गुलाब देवी को उनके पिता के घर भेज दिया था।

लाला लाजपतराय जी के पिता श्री राधाकृष्ण जो इस्लाम धर्म की विचारधारा से प्रभावित हो गए उन पर मुसलमान होने की धुन सवार हो गई। एक दिन अपनी पत्नी तथा छोटे बालक लाजपत को साथ लेकर मस्जिद की ओर चल पड़े। धर्मपरायणा पत्नी ने अपना धर्म न छोड़ने के लिए बहुत समझाया और पाँव पकड़ कर रोके रखा पर पतिदेव कहाँ मानने वाले थे। इस खींचा-तानी से माँ की गोद में एक मासूम बच्चा चिल्ला कर रोने लगा और अपने पिता को अपने कोमल हाथों से खींचकर घर की ओर चलने को इशारा करने लगा। पिताजी का हृदय पिघल गया वे मस्जिद न जाकर अपने घर वापस लौट आए। यही छोटा मासूम बालक आगे चलकर आर्य संस्कृति का महान् पुजारी देशभक्त बन कर उस महान् ब्रिटिश सामान्यशाही के ब्रिटिश शासन के कफन की कील बनकर राष्ट्र की स्वतन्त्रता का संघर्ष छेड़ने वाला लाला लाजपतराय बना।

लाला लाजपतराय के पिता एक साधारण अध्यापक थे। मात्र 25 रुपये वेतन पाते थे जो अन्त में 35 रुपये मासिक हो गया। स्वावलम्बी लाजपतराय ने अपने उद्योग और परिश्रम से विद्याध्ययन किया।

शिक्षा का प्रारम्भ गाँव के विद्यालय में हुआ। 6 वर्ष तक गाँव के विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात लुधियाना के मिशन हाई-स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। बाद मे पिताजी की नियुक्ति अम्बाला में हो गई। आप अम्बाला में पढ़ने लगे। यहाँ पर सन् 1880 में आपने पंजाब विश्वविद्यालय से अच्छे अंकों में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपको छात्रवृत्ति मिलने लगी। इसके उत्साहित होकर आपको लाहौर के गवर्नमेण्ट कालेज में पढ़ने को भेज दिया। इसकालेज से परीक्षा देने के पश्चात आपने मुख्त्यारी की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

लाला लाजपतराय जी स्वभाव से लोकसेवक एवं परोपकारी व्यक्ति थे। किसी के दुख में हाथ बटाना और सहायता देना आपका स्वभाव था। इस कार्य का प्रारम्भ शिक्षाकाल में हो गया था। लाहौर में लाला लाजपतराय ने अपने दो मित्रों पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी तथा लाला हंसराज के साथ आर्यसमाज के सेवकों में अपना नाम लिखा लिया। सन 1881-82 में पंजाब में हिन्दी-उर्दू विवाद चलने पर आर्यसमाज हिन्दी को पंजाब में जनभाषा बनाने का आन्दोलन कर रहा था। श्री गुरुदत्त, श्री हंसराज और लाला लाजपतराय ने हिन्दी के पक्ष में एक प्रार्थना-पत्र पर सहस्त्रों विद्यार्थियों के हस्ताक्षर कराये। अपने दो मित्रों की प्रेरणा से लाजपतराय ने अरबी, फारसी त्याग कर संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ किया।

लाला लाजपतराय ने पंडित-गुरुदत्त विद्यार्थी की वक्तृता और वाद-विवाद से प्रभावित होकर आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्तों पर दृढ़-निश्चय किया और गुरुदत्त की प्रबल प्रेरणा से सन् 1882 के 2 दिसम्बर को लाहौर आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की।

लाहौर में स्थापित दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कालेज के कार्यकर्ता और सहयोगियों में लाला हंसराज और मुनिवर पंडित गुरुदत्त के विद्यार्थी के साथ ही लाला लाजपतराय जी का महत्वपूर्ण स्थान है। दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कालेज स्वामी दयानन्द सरस्वती के आदर्शों को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से स्वामीजी की स्मृति में बनाया गया था। यद्यपि दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कालेज के कर्णधारों में लाला साईदास तथा लाला लालचन्द्र का नाम है पर लाला लाजपतराय, लाला हंसराज और पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं कालेज की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि अंग्रेजी सरकार की सहायता के बिना इसके संचालन का निश्चय किया गया लाला लाजपतराय ने पंजाब के नगरों में घूम-घूम कर धन भी एकत्र किया, तथा अपने ओजस्वी भाषण से पंजाब की जनता को जागृत कर दिया आपके अथक परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कालेज की स्थापना हो गई। आपने 6 वर्षों तक कालेज कमेटी का मन्त्रित्व का कार्य सम्भाला। लालाजी कालेज का कार्य अवैतनिक रूप से करते रहे। आर्यसमाज के राष्ट्रीय शिक्षणालयों की स्थापना में आप निरन्तर सहयोग देते रहे। लालाजी जालन्धर के ऐंग्लो संस्कृत कालेज के मन्त्री रहे। लाला लाजपत राय की गणना भारत के शिक्षा विशेषज्ञों में होने लगी।

सन् 1902 में लार्डकर्जन द्वारा शिक्षा सम्बन्धी जाँच कमेटी का निर्माण करने पर कमेटी के सामने गवाही देने का आपको सम्मान पूर्ण निमन्त्रण दिया गया। महाराजा रणजीत सिंह के पश्चात् पंजाब केसरी की उपाधि प्राप्त करने वाले दूसरे महापुरुष लाला लाजपतरायजी थे। उन्होंने न केवल आर्यसमाज के क्षेत्र में विलक्षण कार्य किया अपितु भारतीय स्वतन्त्रता के राष्ट्रीय आन्दोलन में कुशल नेतृत्व किया था। स्वामी-श्रद्धानन्द जी के पश्चात् लाला लाजपतराय ऐसे आर्य नेता थे जिन्होंने राजनैतिक क्षेत्र में मूर्धन्य स्थान प्राप्त किया। लालाजी उग्र राष्ट्रवाद के तीन नेताओं में से एक नेता थे। लोकमान्य बाल गंगाधारतिलक, श्री विपिन चन्द्रपाल और लाला लाजपतराय पंजाब में अपने सहयोगी सरदार अजीत-सिंह के साथ कृषकों के जन आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए वे गिरफ्तार हुए। अन्त में लालाजी को माण्डले जेल में बन्दी बनाया गया। सन् 1907 में लालाजी को देशनिर्वासन का दण्ड मिला। लाला जी ने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव करने वाले सन् 1920 के कलकत्ता के विशेष अधिवेशन के सभापति थे। सन् 1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के जुलूस का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश पुलिस अधिकारी श्री स्काट के साण्डर्स द्वारा लाला जी पर लाठी प्रहार किया गया। चोटों से आहत होकर 17 नवम्बर सन 1928 में लाला लाजपतराय वीरगति को प्राप्त हो गए।

लाला लाजपतराय जी आर्यसमाज की देन हैं। उन्होंने स्वयं ही एकमात्र महर्षि दयानन्द को अपना गुरु तथा आर्यसमाज को अपनी माता तथा वैदिक धर्म को अपना पिता स्वीकार किया। लाला लाजुपतराय को आर्यसमाज की ओर प्रेरित का श्रेय मुनिवर पंडित गुरुदत्त-विद्यार्थी को है। महात्मा हंसराज उनके प्रभावी सहयोगी थे डी०ए०वी० कालेज लाहौर तथा राष्ट्रीय महाविद्यालय लाहौर के कर्णधारों में आपका महत्वपूर्ण स्थान है। राष्ट्रीय महाविद्यालय में भाई परमानन्द तथा पंडित जयचन्द्रविद्यालंकार आपके सहयोगी थे। इसी विद्यापीठ से भगवतीचरण वोहरा, सुखदेव और सरदार भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारी सेनानियों का निर्माण हुआ।

लाला लाजपतराय जी के प्रमुख सहयोगियों में स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हंसराज और भाई परमानन्द थे। उग्रराष्ट्र आन्दोलन में श्यामजी कृष्ण वर्मा उनके प्रमुख सहयोगी तथा धर्मबन्धु थे।

— शेष पृष्ठ १० पर

भारतीय गणतन्त्र को अलगाववाद की चुनौती

—श्री शिवकुमार गोयल
पिलखुआ (गाजियाबाद)

- "खालिस्तान" से कम किसी बात पर समझौता नहीं।
- पंजाब में सुरक्षा बलों के जवानों की हत्या।
- श्री नगर में "पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारों के साथ पासपोर्ट कार्यालय को आग।
- आन्ध्र मे नक्सलियों द्वारा विधायक का अपहरण।
- बाबरी मस्जिद कमेटी द्वारा गणतन्त्र-दिवस बहिष्कार की घोषणा।

समाचार पत्रों में इन शीर्षकों को पढ़कर स्पष्ट हो जाता है कि देश की एकता तथा अखण्डता के लिये आज सबसे बड़ी चुनौती अलगाववादी तत्वों से मिल रही है। यह देश का दुर्भाग्य ही है कि आज राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानने वाले तत्वों की अपेक्षा जाति, धर्म, मजहब, प्रान्त तथा निहित स्वार्थों को अधिक महत्व देने वाले अलगाववादी तत्व ज्यादा सक्रिय दिखायी दे रहे हैं।

कांग्रेस ने सत्ता में बने रहने के लिये अलगाववादी तत्वों के प्रति तुष्टीकरण की घातक नीति अपनाई थी। वोटों के लालच में ऐसे तत्वों को खुला संरक्षण दिया जाता रहा। उनकी राष्ट्रविरोधी मांगों के आगे झुककर कभी नागालैण्ड स्वीकार किया गया तो कभी खालिस्तान समर्थक तत्वों को खुलकर खेलने का मौका दिया जाता रहा। पूर्वी पाकिस्तान से असम में घुसपैठ करने वालों को इसलिये संरक्षण दिया गया जिससे वे कांग्रेस के "वोट बैंक" सिद्ध हो सकें। तुष्टीकरण की इस घातक नीति ने ही अलगाववाद की विषबेल को पनपाया था।

कांग्रेस की इस घातक नीति के कुपरिणामों से अन्य दलों को सबक लेना चाहिये था किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि जनता दल हो या कम्युनिस्ट पार्टियां सभी वोटोंके लिये अलगाववादी तत्वो के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाने से बाज नहीं आ रहे हैं।

रुबिया की रिहाई का सौदा

केन्द्रीय गृहमन्त्री मोहम्मद मुफ्ती-सईद की पुत्री रुबिया की रिहाई के बदले पाँच खूंखार पाकिस्तान समर्थक आतंकवादियों को छोड़े जाने के बाद कश्मीर घाटी में अलगाववादी तत्वो को खुलकर खेलने का मौका मिला है। उन्होंने अब खुले रूप में इसे अपनी विजय मानकर पूरी कश्मीर घाटी में आतंक पैदा करना शुरू कर दिया है। केन्द्र सरकार अभी भी यह गणित लगा रही है कि यदि उसने कश्मीर में अलगाववादी तत्वों के साथ सख्ती बरती तो जामा मस्जिद के इमाम जैसी मनोवृत्ति के लोग कहीं नई सरकार के खिलाफ जेहाद न छेड़ दें? यदि कश्मीर में पाकिस्तान समर्थकों को खुलकर खेलने की छूट दी जाती रही तो भारत के इस मुकुट के लिये भीषण खतरा पैदा हो सकता है। इसी प्रकार पंजाब के अलगावादी तत्वो को खुश करने के लिये नये नये प्रयास किये जा रहे है। पहले कांग्रेस सरकार ने अकालियों को नीचा दिखाने के लिये भिण्डरवाला जैसे उच्छृंखल तत्वों को संरक्षण देकर खड़ा किया था। अब नईसरकार भी उसी पथ पर चल रही है। तुष्टीकरण के इस प्रयास के बावजूद पंजाब के आतंकवादी तत्व अभी भी घोषणा कर रहे है कि वे खालिस्तान से कम पर कोई समझौता नहीं करेंगे। ये तत्व निर्दोषों की निरन्तर हत्यायें कर रहे हैं। सुरक्षा बलों तथा पुलिस के उच्च अधिकारियों तक का खून बहा रहे है। ऐसी स्थिति में पंजाब में ढील देकर शान्ति बनाने का दिवास्वप्न कदापि पूरा नहीं होगा।

अब तो पंजाब से निर्वाचित सांसद सुमरनजीत सिंह "मान" ने यहां तक कह दिया है कि जनरल वैद्य के हत्यारे जिन्दा को रिहा किया जाए तथा तमाम अन्य हत्यारो को मुक्त किया जाये। क्या जनता दल सरकार तुष्टीकरण की नीति का परिचय देकर ऐसा अदूरदर्शिता-पूर्ण कदम तो नहीं उठायेगी।

असम में उपेन्द्र ब्रह्मा के नेतृत्व मे अलग बोडो राज्य बनाये जाने की मांग की जा रही है। बोडो आन्दोलनकारी हिंसा का सहारा लेते रहे हैं। राजीवगाँधी की सरकार की आत्मसमर्पण की घातक नीति से ही ऐसे पृथकतावादी आन्दोलनों को प्रोत्साहन मिला है।

बिहार, असम, मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा के आदिवासी बहुल क्षेत्रो मे विदेशी-ईसाई मिश्नरी स्वाधीनता के बाद से ही लोभ, लालच तथा दबाव के बल पर अलगाववाद के बीज बोने में लगे हुए हैं। विदेशी धन के बल पर बनवासी हिन्दुओं को उनकी संस्कृति, इतिहास, परम्पराओं तथा धर्म से वंचित किया जाता रहा है। वोटो व सत्ता के लालची राजनीतिक दल इन विदेशी अलगाववादी-तत्वों को संरक्षण प्रदान करते रहे हैं।

राजीव गाँधी ने चुनाव प्रचार के दौरान घोषणा की थी कि नागालैण्ड तथा मेघालय में बाइबिल तथा चर्चों के अनुसार शासन चलाया जायेगा। इस तुष्टीकरण की नीति से हर विदेशी तत्व संरक्षण पाते हैं।

दृढ़ता से काम लेना होगा

नई सरकार यदि दृढ़ता से काम लेती तो कश्मीर में पाकिस्तान समर्थक तत्वों को जश्न मनाने का अवसर कदापि नहीं मिलता। गृहमन्त्री की बेटी रुबिया के अपहरण करने वालों से दृढ़ता के साथ यह कह दिया जाना चाहिये था कि यदि रुबिया को कुछ हो गया तो जेल में बन्द पाँचों आतंकवादियों को सरे आम फांसी पर लटका दिया जायेगा। गृहमन्त्री यह घोषणा कर सकते थे कि मेरी बेटी की जान देश से महत्वपूर्ण कदापि नहीं है। किन्तु पुत्री के मोह में पांच दुर्दान्त आतंकवादियों को रिहा कराकर हमने अपने पूरे राष्ट्र की छवि धूमिल ही नहीं कर डाली अपितु पाकिस्तान समर्थक तत्वों को खुलकर खेलने का मौका भी दे डाला है।

अब भी समय है कि जनता दल सरकार अलगाववाद तथा आतंकवाद के आगे आत्मसमर्पण करने की बजाय, उनके प्रति कड़ी नीति अपनाये। अलगाववादी हिन्दू हों या मुसलमान, सिख हों या ईसाई भारत की एकता और अखण्डता का पहला शत्रु माना जाना चाहिये। कश्मीर घाटी मे पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाने वाले तत्वों को सख्ती से कुचलना होगा तो पंजाब में निर्दोषों का खून बहाने वाले आतंकवादियों के साथ और कड़ा व्यवहार करना होगा। यदि नई सरकार भी वोटों और सत्ता में बने रहने के लिये कांग्रेस जैसी तुष्टीकरण की घातक नीति पर चलती रही तो देश को अभी और खण्डित होने की त्रासदी झेलनी ही पड़ेगी। ■

जिला सभा अलीगढ़ का अधिवेशन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा का वार्षिक वृहद अधिवेशन एवं निर्वाचन 11 फरवरी 1990, दिन रविवार को जिला सभा कार्यालय वैदिक आश्रम रामघाट-रोड, अलीगढ़ में सुबह 11 बजे से सम्पन्न होगा।

अतः जिला की समस्त आर्यसमाजें इस निर्वाचन में भाग लेकर सहयोग प्रदान करें।

विजय पाल सिंह आर्य
मन्त्री
जिला सभा, अलीगढ़।

"सत्यान्वेषी दयानन्द"

—श्री उपेन्द्र कुमार विश्वकर्मा
एम0काम0
युवराज दत्त महाविद्यालय, लखीमपुर

कौन जानता था? कि पक्षियों को उड़ते देखकर रोजर बेकन के मन में उड़ान बनाने का विचार उत्पन्न होगा। कौन जानता था? कि युद्ध भूमि में हताहतों को देखकर नृशंस अत्याचारी शासक धर्मप्रिय सम्राट अशोक बनेगा। कौन जानता था? कि मृत पुरुष को देखकर राजकुमार सिद्धार्थ धर्म संस्थापक महात्मा बुद्ध बनेगा। कौन जानता था? कि पत्नी के तीखे वचन सुनकर कामवासना में लिप्त रहने वाला रामबोला महाकवि तुलसीदास बनेगा। केतली से आप निकलते किसने नहीं देखा? लेकिन यह कौन जानता था? कि इसे देखकर जेम्सवाट को भाप में शक्ति का ज्ञान होगा। कौन जानता था? शिवलिंग पर चढ़े चूहों को देखकर बालक मूलशंकर--- महर्षि-दयानन्द बनेगा। लेकिन हमें याद रखना चाहिये कि जिन छोटी-छोटी घटनाओं को हम अर्थहीन समझकर छोड़ देते हैं वही घटनाये महापुरुषों के जीवन की प्रमुख अंग हुआ करती हैं। व्यक्ति वही महान बन सकता है। जो छोटी से लेकर बड़ी बात तक सभी पर समानरूप से अमल करता है। अर्थात् किसी बात को अर्थहीन नहीं समझता है।

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द उन्हीं व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने एक छोटी सी घटना पर विचार करके अपने अल्प जीवन काल में महर्षि पद प्राप्त कर लिया। महाशिवरात्रि का स्वामी जी पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने सच्चे शिव की खोज का संकल्प लेकर प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण करके अपने देश की दुर्दशा को देखा कि देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। यह उनसे नहीं देखा गया उन्होंने देशवासियों को स्वराज्य का सन्देश दिया। वे सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज्य का सन्देश दिया। उन्होंने कहा कि "पुत्रवत पालन करने वाले विदेशी राजा से शत्रुवत पालन करने वाला स्वदेशी राजा श्रेयस्कर है।"

स्वामी दयानन्द जैसा समाज सुधारक न हुआ है न होगा। उन्होंने समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों का अध्ययन किया। उन्होंने अवैदिक मत मतान्तरों का अपनी तर्क शक्ति से खण्डन-मण्डन किया और ब्रह्मा से लेकर जैमिन पर्यन्त तक जिस धर्म का प्रचलन था उसी का प्रचलन किया। उन्होंने कोई नये धर्म का प्रचलन नहीं किया। स्वामी जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। उनकी प्रतिभा अनोखी थी उन्होंने महीधर और मैक्समूलर के दोषपूर्ण भाष्य का खण्डन करके स्वयं भाष्य किया। उन्होंने कहा कि एक शब्द के अनेक अर्थ होने हो उनका अर्थ प्रकरण के अनुसार लगाया जाना चाहिये ऐसे तर्क शक्ति के धनी महान पुरुष जिस जाति में जन्म लेते हैं वह जाति कभी मिट नहीं सकता है।

आज स्वामी जी के सपनों को कितनी सफलता मिली है? यह हमें देखना है। और गाँव-गाँव और घर-घर में महर्षि के सन्देश को पहुँचाना है। तभी उस महापुरुष के इस कथन की सार्थकता सिद्ध होगी -

"मेरी अन्त करण से यही कामना है कि भारतवर्ष में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक आर्यसमाज की स्थापना हो। और देश में व्याप्त कुरीतियों का उन्मूलन हो जाय।"

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों, प्रचारकों, ढोलक वादकों के माह-फरवरी—१९९० के प्रचार कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशक प्रचारकों के कार्यक्रम मास फरवरी 1990

1- श्री केशवदेव जी शास्त्री,
9 से 12 बाराबंकी
17 से 20 नवाबगंज गौडा
22 से 25 बहराईच

2- श्री शिव कुमार जी शास्त्री
अवैतनिक अवकाश

3- श्री विश्वम्भर दत्त जी,
3-4-5 रामपुर
21-22-23- दिलेरगंज प्रतापगढ़
24 स 28 रठौडा मेला रामपुर

4- श्री डा0 विजय पाल सिंह जी,
19 से 25 टनकपुर, नैनीताल।

5- श्री सुकर्मानन्द जी
17 से 24 अग्रवाल मण्डीटटीरी मेरठ।

6- श्री जयन्तकुमार जी आर्य,
श्री प्रधानजी के निर्देशन में

7- श्री योगेशदत्त जी आर्य
1-2 कण्वाश्रम- गढ़वाल
7-8-9 हरफरी बदायूँ
10 से 13 अमरोहा
14 से 16 पैजनया - बिजनौर
17 से 24 पीलीभीत
25 से 28 टनकपुर

8- श्री0 गजराज सिंह जी,
7-8-9 हरफरी बदायूँ
10-11-12 लखनऊ
17 से 28 थाना भवन मुज्जफर नगर

9- श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य,
1 से 10 हरदोई जनपद
12 से 14 पाली हरदोई
17 से 24 लखीमपुर

10- श्री कमल देव जी आर्य
1 से 5 नगलाठेका पटा
7 से 10 कुंवरपुर घाटमपुर, कानपुर
21 से 25 बहराईच

11- श्री रामचन्द्र जी शर्मा,
1 से 5 घटियाघाट मेला-फर्रुखाबाद
7 से 10 गौसमपुर बस्ती

15-16 सण्डीला हरदोई
22 से 26 रामनगर फैजाबाद।

12- श्री सीताराम जी आर्य
1 से 4 कानपुर देहात
9 से 11 मौलाबीकीपुर, उन्नाव।

13- श्री नेम प्रकाश जी आर्य,
1 से 5 कुठिला हरदोई
6 से 10 भगतपुर आजमगढ़
22 से 24 दिलेरगंज प्रतापगढ़
26 से 27 लक्ष्मीपुरवा कानपुर।

14- श्री युगल किशोर जी
1 से 16 हरदोई जनपद
23 से 26 जौनपुर

15- श्री तेजपाल सिंह जी,
12 से 14 पाली हरदोई
17 से 20 नवाबगंज गौडा
22 से 24 पिलखुआ- गाजियाबाद
26 से 28 सुरजन नगर

16- श्री विक्रम देव जी आर्य,
1 - 2 कण्वाश्रम गढ़वाल
4 - 5 रामपुर
9 से 12 बाराबंकी
17 से 24 अग्रवालमडी टटीरी, मेरठ
26 से 27 लक्ष्मीपुरवा, कानपुर

17- श्री मनवीर सिंह जी आर्य
श्री प्रधान जी के निर्देशन में

18- श्री ओम पाल जी, ढोलक वादक
12 से 14 पाली हरदोई
17 से 24 लखीमपुर

19- श्री अमर लाल जी
1 से 15 हरदोई जनपद
17 से 24 अग्रवाल मंडी टटीरी, मेरठ

20- श्री आशा आर्या
12 से 14 पाली हरदोई,
17 से 20 नवाबगंज गौडा।
22 से 24 पिलखुआ, गाजियाबाद
26 से 28 सुरजननगर

21- श्री सीताराम शर्मा
24 से 28 जंगीगंज, वाराणसी

22- श्री ब्रजपाल शर्मा
23 से 28 रठौडा मेला, रामपुर

23- धर्म प्रकाश प्रेमी, सुभाष चन्द्र
24 से 28 रठौडा मेला
3 से 5 रामपुर

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता, उपदेश विभाग
अमरोहा (मुरादाबाद)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ

आर्यसमाज अजमेर

श्री दत्तात्रेय जी आर्य-	प्रधान
श्री रासासिंह जी एम0पी0-	उपप्रधान
श्री वेदरत्न जी आर्य -	मन्त्री

बागपत आर्यसमाज का रजत जयन्ती समारोह

दिनांक- 6-1-90 को बागपत आर्यसमाज के रजत जयन्ती समारोह में सभा प्रधान पं0 इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत किया गया। सभा प्रधान जी के साथ उनकी धर्म पत्नी श्रीमती शकुन्तला आर्या तथा जयन्त कुमार जी थे।

श्रीमती शकुन्तला आर्या ने स्वामी-दयानन्द तथा मानव जीवन की सार्थकता पर अपनी मधुर स्वरलहरी में सुन्दर भजन सुनाकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

श्री जयन्त कुमार जी ने अपने उदबोधन में आर्य समाजो को अपनी कार्यशैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने का सुझाव दिया। उन्होने कहा आर्य-समाजों को अपना प्रत्येक उत्सव समाज-भवन से बाहर जनता के बीच करना चाहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया प्रत्येक वर्ष एक सप्ताह का जनसम्पर्क सप्ताह भी आयोजित किया जाना चाहिए तथा इस अवधि में जनसम्पर्क द्वारा जनसाधारण को जातिवाद, छुआछूत दहेज प्रथा, सतीप्रथा और, धर्मान्तरण के दुष्परिणामो के प्रति जागरूक बनाना चाहिए।

सभा प्रधान जी ने अपने उदबोधन में सम्पूर्ण प्राणिमात्र के लिए वेदों की उपादेयता पर व्यापक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अन्य मत या मजहब केवल मनुष्य मात्र के कल्याण तक सीमित हैं परन्तु वेद इससे ऊपर उठकर सम्पूर्ण प्राणिमात्र के कल्याण की कामना करते हैं और ईश्वर द्वारा रचित सृष्टि के प्रत्येक प्राणी को "जीओ और जीने दो" का सन्देश देते हैं। प्रत्येक प्राणी को संसार में जीने के अधिकार को वेदग्रन्थ उद्घोष करते हैं। उन्होंने वेद ग्रन्थों की व्यापकता उदारता तथा सर्वकल्याणी स्वरुप का विशद वर्णन किया।

उन्होंने जयन्त कुमार जी के सुझावों का समर्थन करते हुए कहा कि आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ को जनता के बीच कार्य करना चाहिए। धर्मान्तरण से प्रभावित वर्गों तथा स्थानों में वेद तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार करके ही धर्मान्तरण को रोका जा सकता है। इसाइयों तथा मुसलमानों के द्वारा राष्ट्रघाती-कृत्यों की उन्होने भर्त्सना की।

अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मेरठ के प्रधान श्री माधव सिंह जी ने आर्यसमाजों को पुन. अपने प्रचार कार्यों में तीव्रता लाने का आग्रह किया।

आर्यसमाज बागपत के मन्त्री द्वारा धन्यवाद ज्ञापन तथा शान्ति पाठ और जयघोष से सभा का समापन हुआ।

आर्य दानवीर द्वारा कम्बल वितरण

औरेया — कुँअर लालसिंह मानसिंह ट्रस्ट बम्बई के संस्थापक कुँअर लालसिंह के सुपौत्र कुँअर कमलेश सिंह ने गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 1·1·90 को अपने पैत्रक ट्रस्ट की ओर से मैनपुरी नगर के आसपास के ग्रामो में दलितजनों को 125 कम्बल स्वयम् जाकर वितरित किये।

कुँअर कमलेश सिंह के पिता स्व0 हरनाथ सिंह ने गुरुकुल वृन्दावन के आयुर्वेद विभाग के लिये 8 शय्यायें तथा कई सहस्त्र रुपया दान दिया था। इनके बाबा रायबहादुर मोती सिंह जी ने गुरुकुल वृन्दावन की पक्की सड़क तथा आर्य स्त्री समाज मैनपुरी का भवन बनवाया था और इनके प्रपितामह स्व0-लालसिंह जी ने आर्यसमाज मन्दिर मैनपुरी के विशालकाय मन्दिर का निर्माण करवाया था। इस प्रकार यह चौथी पीढ़ी के अविराम दानवीर है।

उक्त अवसर पर क्षेत्रीय विधायक कुं0 इन्दल सिंह, पालिका अध्यक्ष डॉ0-सुमन्तकुमार गुप्ता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के मुख्याधिष्ठाता वेद प्रकाश आर्य, ग्राम सभा खरपरी के प्रधान श्री अरुणेन्द्रसिंह जिला आर्योपसभा मैनपुरी के प्रधान श्री-बृजभूषण सिंह आदि उपस्थित थे।

कुँअर कमलेश सिंह उ0प्र0 के जाने-माने आर्य नेता कुं0 ध्रुवपाल सिंह के सहोदर अनुज हैं। इस उपलक्ष्य में सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी तथा सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने दानवीर श्री कुँवर कमलेश सिंह को शत-शत बधाई दी। ◻

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में पर्यावरण प्रदूषण पर शोध गोष्ठी सम्पन्न

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम §टीकरी§ भोलाझाल मेरठ में वेदों के अद्वितीय विद्वान पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी की पुण्यतिथि के अवसर पर दि0- 3-1-90 को "आधुनिक पर्यावरण- प्रदूषण समस्या का वैदिक समाधान" विषय पर एक शोध गोष्ठी सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी में, मेरठ विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, महर्षि-दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक विश्वविद्यालय, जयपुर विश्वविद्यालय, रुहेला खण्ड विश्वविद्यालय गढ़वाल विश्वविद्यालय, कुमायूं विश्वविद्यालय, रविशंकर वि0वि0 रायपुर §म0प्र0§ के 30 वैदिक विद्वानों एवं शोध छात्रों ने भाग लिया। यह गोष्ठी प्रात 11 बजे से विद्वानों के स्वागत सत्कार के पश्चात प्रारम्भ हुई। श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं मन्त्री गुरुकुल ने सब विद्वानों का गुरुकुल की ओर स्वागत किया। यह गोष्ठी सायं 6 बजे तक चली। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री डा0 धर्मपाल जी, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने तथा संयोजन डा0 निरुपणजी विद्यालंकार §पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग मेरठ कालेज ने किया। इस गोष्ठी में भाग लेने वाले निम्नलिखित विद्वानों के नाम उल्लेखनीय है - §1§ डा0 अवनीन्द्र-कुमार, दिल्ली, §2§डा0 सत्यकाम वर्मा, दिल्ली, §3§डा0 सत्यव्रत राजेश §4§डा0 महावीर-गु0का0 विश्व0, §5§ डा0 वेद प्रकाश-शास्त्री, §6§ डा0 कृष्णकान्त शुक्ल, बरेली, §7§डा0 विजेन्द्र कुमार, बदायूं, §8§डा0 बनवारी-लाल द्विवेदी. मथु0, §9§डा0 सुभाषवेदालंकार-जयपुर, §10§डा0 जगदीश, §11§डा0 सुधाकराचार्य §12§डा0 गणेशदत्तशर्मा, §13§डा0 रामकिशोर-शर्मा, §14§डा0 दुर्गाप्रसाद मिश्र, §15§-डा0 कु0 अंशु, हरिद्वार, §16§डा0 सोमदेव-शतांशु, §17§डॉ0 श्रीवत्स §18§डा0 सत्यदेव §19§ श्रीमती कैलाशवती जी आदि-।

इस गोष्ठी में निम्नलिखित दो प्रस्ताव पारित हुए -

1- पर्यावरण प्रदूषण समस्या के समाधान हेतु गोष्ठी के निष्कर्षों को पर्यावरण मन्त्रालय को भेजा जाए।

2- पर्यावरण प्रदूषण समस्या के समाधान हेतु वेदविहित उपायों के गवेषण के लिए स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान में एक विस्तृत शोधयोजना को प्रारम्भ किया जाए। इस के संचालन हेतु 6 विद्वानों की एक उपसमिति का भी गठन किया गया। संस्थान के अध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी के समापन भाषण के साथ गोष्ठी सम्पन्न हुई। स्वामीजी ने वैदिक ज्ञान, विज्ञान एवं जीवन पद्धति को ही उक्त समस्या का एक मात्र समाधान बताया।

- संवाददाता।

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दि0- 14 जनवरी 1990 को मकरसीर संक्रान्ति के अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं नयेब्रह्मचारियों के वेदारम्भ संस्कार, से प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात श्री शोभा राम जी प्रेमी, श्री मनवीर जी, बहन प्रभात शोभा जी, श्री कर्ण सिंह जी, श्रीमती आशा, श्रीतेजपाल, श्री हर स्वरूप जी, श्री गजराज प्रेमी आदि संगीतज्ञों के भजनोपदेश हुए। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने विशिष्ट अतिथियों के स्वागत गीतिका द्वारा एवं माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। श्री इन्द्रराज जी प्रधान प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री आनन्दबोध जी प्रधान सार्वदेशिक सभा एवं केन्द्रीय पूर्व मन्त्री भारत सरकार श्री प्रो0 शेर सिंह जी प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरियाणा का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। तत्पश्चात श्री स्वामी आनन्दबोधजी ने अपने उद्बोधन में भारत के ऊपर आए हुए संकट के बादलों का जिक्र करते हुए आर्यजनों को परस्पर वैर विरोध मिटाकर देश में वैदिक विचारधारा के प्रचार प्रसार के द्वारा देश की रक्षा करने की प्रेरणा दी। उन्होंने देश में बढ़ते हुए रूढ़िवाद एवं पाखण्ड को दूर करने का संकल्प लेने की प्रेरणा की। श्री प्रो0 शेर सिंह जी ने अपने उद्बोधन में यज्ञीय भावनाओं के प्रचार प्रसार के लिए प्रयत्न करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पवित्रवेदों के सन्देश से ही संसार में शान्ति हो सकती है। श्री इन्द्रराज जी ने इन दोनों महानुभावों का धन्यवाद देते हुए भारी जनसमूह को बताया कि कोई भी देश- शिक्षा पद्धति के आधार पर ही उन्नत होता है। आज देश में गुरुकुल पद्धति को अपनाने की आवश्यकता है। जिस के द्वारा नई सन्तति चरित्र के बल पर देश को वर्तमान भीषण संकटों से बचा ले जाए। शिक्षा द्वारा ही जातिवाद, वर्गवाद और सम्प्रदायवाद जैसी समस्याओं का सद्भाव से ही समाधान किया जा सकता है। श्री बाल दिवाकर हंसजी एवं श्री धर्मपाल जी ने गुरुकुल को हर प्रकार का सहयोग करने की प्रेरणा की। अन्त में स्वामी विवेकानन्द जी ने आगन्तुक आर्यजनों को आशीर्वाद दिया। श्री इन्द्रराजजी ने सबको धन्यवाद दिया। इससे पूर्व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सफल बलप्रदर्शन में, हर प्रकार का सरिया मोड़ना, लोहे की चेन तोड़ना तथा छाती पर भारी पत्थर तुड़वाना आदि आश्चर्यजनक कर्तब दिखलाए। दानदाताओं को धन्यवाद दिया गया। गुरुकुल में खिचड़ी का प्रसाद हजारों लोगों ने ग्रहण किया।

विचार गोष्ठी

दिनांक 19-12-89, दिन-मंगलवार को प्रभात आश्रम (भोला झाल) में एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था, "शिक्षा"। भिन्न-भिन्न विचारकों ने शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अपने-अपने विचार रखे। गोष्ठी की अध्यक्षता स्वामी विवेकानन्द-सरस्वती ने की। विचारकों में मुख्यरूप से आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अध्यक्ष, पं0 इन्द्रराज, स्वामी चन्द्रदेव, प्रो0 एस0के0 राय, डॉ0 रमेश आर्य, डॉ0 अजय-जैन व पं0 जयन्त पाण्डेय थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, श्री वाचस्पति एवं श्री-योगेन्द्र ने भी अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। अन्य विचारकों में डॉ0 प्रवीण, गुप्ता, डॉ0 देवेन्द्र व श्री रवि चौधरी आदि थे। पं0 इन्द्रराज जी ने तीन प्रकार की शिक्षा पद्धतियों का वर्णन किया, जिनमें सन्दीपन ऋषि के आश्रम की शिक्षा पद्धति सर्वोत्तम मानी गयी। स्वामी चन्द्रदेव जी ने शिक्षा और विद्या की महर्षि दयानन्द के अनुसार व्याख्या की। अन्त में पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा पद्धति का निर्धारण करने पर बल देते हुए बताया कि शिक्षार्थ कुल परम्परा विकसित की जानी चाहिए। गोष्ठी का संचालन डॉ0 रमेश आर्य ने किया। मेरठ से आये हुए युवा बुद्धिजीवियों ने गुरुकुल भूमि के दर्शन का आनन्द भी प्राप्त किया। विचार-गोष्ठियों का यह कार्यक्रम 'विवेक-दयानन्द-मंच' के तत्वावधान में यत्र तत्र होता रहता है।

पृष्ठ 3 का शेष

भारतीय संस्कृति का जो रूप है वह परिलक्षित नहीं होता। इसी प्रकार से भारत के जो बौद्ध हैं वे वेदों को नहीं मानते हैं या जो अनीश्वरवादी या चारवाकवादी हैं उनका एक अलग जीवन दर्शन है, पर क्या ऐसे लोगों की बातों से हम यह कह सकते हैं कि केवल वही भारतीय दर्शन है या भारतीय संस्कृति है, निश्चय ही हम ऐसा नहीं कह सकते।

भूल गए सही कसौटी

अब प्रश्न यह उठता है कि भारतीय संस्कृति या भारतीय दर्शन का मूल क्या है? ऐसी मान्यता है कि भारतीय दर्शन का मूल वेद रहे हैं। वेद शब्द से यहां आशय क्या है? क्या इस शब्द का आशय उन पर महाग्रन्थों से है, जिनकी रचना हजारों हजार वर्षों पहले हुई थी। अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद। वेद शब्द का यहां तात्पर्य है "सत्यार्थ ज्ञान। भारतीय दर्शन में कभी भी किसी एक चिन्तन विशेष एक पुस्तक विशेष या एक विचारधारा विशेष का समर्थन और अन्तिम रूप से महत्व नहीं दिया गया। हमारे देश की यह मान्यता रही है कि सत्य की अन्तिम खोज करने का जो भी व्यक्ति दावा करता है, वह व्यक्ति अज्ञान से ग्रस्त है या फिर पाखण्डी है। अत सत्य के ज्ञान को किसी पुस्तक विशेष से न तो बांधा जा सकता है और न उसे पुस्तकों तक सीमित किया जा सकता है। यही है भारतीय दर्शन का मूल यही है कसौटी जिसका प्रयोग करना हम भूल गये या जिसका प्रयोग करने से हम कतराने लगे हैं। चूंकि हमारे पूर्वजों से यह भूल हुई कि उन्होंने सत्य के प्रति अपने आग्रह में लापरवाही दिखायी अत देश का पतन हुआ, हम गुलाम बने, हमारा विभाजन हुआ। जब तक यह कमजोरी देश में रहेगी हम कभी भी विश्व के नेता नहीं बन सकेंगे। जब हम दुराग्रही और साम्प्रदायिक बन जाते हैं तभी हम सत्य के पथ से विरत हो जाते हैं। अत सत्य के पथ पर चलते रहना हमारा अभीष्ट है और होना भी चाहिए। सवाल यह है कि भारत में रहने वाला व्यक्ति जो फारसी भाषा में हिन्दू है क्या अपनी इस वास्तविकता को समझेगा। यदि वह नहीं समझ रहा है तो कोई उसे सच्चाई समझाने की चेष्टा करेगा या नहीं?

सबसे बड़ा झूठ

फारसी से उपजे इस हिन्दू शब्द से साम्प्रदायिकता का बोध होता ही नहीं है, काश, इस बात को हम स्वीकार कर पाते। अब कुछ लोग तर्क यह देते हैं कि भले ही कभी फारसी में हिन्दू शब्द का आशय कुछ भी रहा हो, लेकिन आज हिन्दू शब्द से अभिप्राय हो गया है ऐसे व्यक्तियों का जो मूर्तिपूजा करते हों और वेदों को अपनी धार्मिक पुस्तक मानते हों। आइये, अब इस बहस को भी चलायें और कसौटी पर परख कर देख लें। यह सबसे बड़ा झूठ है कि जो मूर्तिपूजा करता है, वही हिन्दू है जो मूर्तिपूजा नहीं करता है और जो वेदों को अपनी धार्मिक पुस्तक नहीं मानता वह भी अपने को हिन्दू मानता है। इस बात की जानकारी तो इस देश में रहने वाले एक साधारण बच्चे को भी होनी चाहिए। और भी कटु सत्य तो यह है कि इस देश में इस्लाम के ये अनुयायी है, वे भी अपने आपको हिन्दू मानने लग जायें तो इस पर किसी भी सच्चे हिन्दू को आपत्ति नहीं होगी। कुरान शरीफ एक महान-धार्मिक ग्रन्थ है और भारतीय दर्शन के अनुसार उसे पूर्ण सम्मानपूर्ण श्रद्धा और पूरा-पूरा आदर मिलना ही चाहिए। जो लोग कुरान शरीफ के आधार पर अपनी जीवन पद्धति बनाना चाहते है शौक से बनायें। उसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। इस्लाम कबूल कर लेने से कोई भी व्यक्ति गैर भारतीय या गैर हिन्दू नहीं हो जाते। ठीक उसी प्रकार जैसे कोई व्यक्ति बौद्ध और जैन बन जाने के बाद भी सिर्फ इसलिए अहिन्दू नहीं हो जाता कि ये दोनों पन्थ वेदों को नहीं मानते। इसी प्रकार जिन्होंने इस्लाम को कबूल कर लिया है वे इस्लाम पन्थी भले ही कहे जाएं पर हैं भारतीय। इस्लाम को मानने वालों के भी पूर्वज राम थे और राम रहेंगे, लेकिन इस सहिष्णुतावादी तथा सद्भाववादी चिन्तन को स्थान देने के लिए आज हमारे देश में कितने लोग तैयार हैं। यदि इस सद्भावप्रधान चिन्तन को आज की राजनीति अथवा आज के सामाजिक जीवन में स्थान मिल जाये, तो जो लोग वोट बटोरते और सत्ता हथियाने के लिए तिकड़में रचते हैं उनके हाथों के तोते उड़ जायेंगे।

अरूणांचल प्रदेश में बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण

— जयन्त कुमार पाण्डेय
महामन्त्री, राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन,
उ.प्र. लखनऊ

अरूणांचल प्रदेश में प्रतिवर्ष लगभग 12,000 हजार लोगों का धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनाया जा रहा है। वैसे तो अरूणांचल प्रदेश में प्रवेश हेतु इनर लाईन पास लेना पड़ता है और बिना इनर लाईन पास के अरूणांचल प्रदेश में प्रवेश वर्जित है। लेकिन ईसाई पादरी तथा धर्म प्रचारक बेरोक-टोक अरूणांचल प्रदेश में आते जाते हैं। इसके अलावा ये पादरी तथा धर्म प्रचारक गलत नामों पर इनर लाईन पास बनवाकर अरूणांचल प्रदेश में धर्मान्तरण तथा धर्म प्रचार का कार्य करते हैं कहने को तो शासन द्वारा धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध है परन्तु खेद तथा दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह है कि देश भर में सर्वाधिक वार्षिक धर्मान्तरण अरूणांचल प्रदेश में ही होता है। मार्च-अप्रैल के ईस्टर पर्व से पूर्व तथा दिसम्बर-जनवरी के बड़े दिन के पूर्व तथा पश्चात् लगभग क्रमशः 4,000 तथा 8,000 लोगों का धर्मान्तरण कर ईसाई बनाया जाता है। इस धर्मान्तरण का संचालन कार्य आसाम स्थित विभिन्न मिशनों को सौंपा गया है। जिनमें नार्थ लखीमपुर, सिटा मिशन, हरमुत्ती कैथोलिक मिशन, शिला पत्थर मिशन, गौहाटी कैथोलिक मिशन का क्थीड्ल, डिब्रूगढ़ का क्थीड्ल तथा तेजपुर क्थोलिक मिशन का क्थीड्ल प्रमुख है। इन मिशनों के छात्रावासों में अरूणांचल प्रदेश के लड़के-लड़कियों को रखकर उन्हें ईसाई धर्म में परिक्षित करके उनका धर्मान्तरण कर दिया जाता है। उपरोक्त सभी मिशन आसाम में है तथा कुछ तो बिलकुल अरूणांचल प्रदेश की सीमा से लगे हुए हैं अतः अरूणांचल प्रदेश की सरकार इन पर कानूनी कार्यवाही नहीं कर सकती। इन मिशनों में प्रशिक्षित लड़के-लड़कियां अपने परिवारों तथा मिशनरियों के बीच सम्पर्क सूत्र का कार्य करते हैं। इन प्रशिक्षित लड़के-लड़कियां अपने परिवारों तथा मिशनरियों के बीच सम्पर्क सूत्र का कार्य करते हैं। इन प्रशिक्षित लड़के-लड़कियों के परिवार जो गरीबी, अशिक्षा तथा अभाव से त्रस्त होते हैं को आर्थिक सहायता देकर तथा इनकी अशिक्षा, अज्ञानता का लाभ उठाकर तथा खाद्य सामग्री जिनमें विदेशी दूध चावल, चीनी इत्यादि बांट कर इनका धर्मान्तरण करते हैं। विदेशों से भारी मात्रा में दूध का पाउडर, मछली का पाउडर तथा प्रचुर मात्रा मे धन आता है। इन चीजों का प्रयोग धर्मान्तरण में किया जाता है।

विदेशों से प्रचुर मात्रा मे धन गारबो को आवासिय कालोनी, विद्यालय तथा अस्पताल के नाम पर इन मिशनों को प्राप्त होता है और ग्रह मन्त्रालय तथा वित्त और विदेश मन्त्रालय इन पर कोई कार्यवाही नहीं कर पाने जबकि वास्तविकता यह है कि उपरोक्त योजनाओं योजना है। उल्लेखनीय है कि मिजोरम मे 98 प्रतिशत ईसाई हैं। की आड़ में विदेश तथा गृह मन्त्रालय की आँख में धूल झोंका जाता है और इस तरह प्राप्त 95 प्रतिशत धन का उपयोग धर्मान्तरण के लिए किया जाता है।

अरूणांचल प्रदेश में ईसाई मिशनों के सैकड़ो वेतन भोगी स्थानीय एजेन्ट कार्यरत है जो लोगो को धर्म परिवर्तन हेतु प्रेरित करके एक निर्दिष्ट स्थान पर नियत समय पर एकत्रित करते हैं यह स्थान सड़क मार्ग से करीब 20कि0मी0 दूर किसी दुर्गम स्थल पर होता है तथा यहां पर पुलिस और प्रशासकीय अधिकारियों और खुफिया विभाग के लोग पहुँचने में असमर्थ होते हैं। इन स्थानों पर धर्मान्तरण का कार्य इतने विशाल पैमाने पर होता है कि इनकी संख्या 4 हजार से 8 हजार तक होती है तथा इनमें बीसियो पादरी तथा उनके सहायक तीन-तीन दिनों तक लगातार धर्मान्तरण की प्रक्रिया को चलाते हैं। 1985 में अरूणांचल प्रदेश में ईसाईयों की संख्या केवल 10-

— शेष पृष्ठ १० पर

धर्म रक्षा महाअभियान

"धर्म रक्षा महा अभियान" के अन्तर्गत मेरठ जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में धर्मान्तरण के विरुद्ध भजन, प्रवचन तथा जनसम्पर्क के द्वारा जन-जागरण कार्य "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" द्वारा किया जा रहा है।

दिनांक- 17·1·90 को शास्त्री नगर (मेरठ) के "ए" ब्लॉक में ऐसी सभा का आयोजन किया गया। जिसमें श्रीमती शकुन्तला आर्या ने ओजस्वी गीत तथा पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि-सभा, उ0प्र0, पं0 जयन्त पाण्डेय महामन्त्री राष्ट्र सुरक्षा युवा आन्दोलन, उ0प्र0, डा0 रमेश आर्य, डा0 अजय जैन, श्री अशोक सुधाकर, श्री जितेन्द्र कुमार-आर्य ने अपने सामयिक तथा ओजस्वी विचार प्रकट किये। सभा के अन्त में कई प्रबुद्ध युवाओ ने "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" की सदस्यता ग्रहण करके धर्मान्तरण विरोध अभियान में सक्रिय सहयोग की शपथ ली। इस सभा का सभापतित्व पं0 इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने किया। संयोजकत्व राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन ने जनपदीय अध्यक्ष जितेन्द्र कुमार गुप्त ने की।

इस अवसर पर पं0 इन्द्रराजजी ने कहा कि अभिभावकों को बच्चों में प्रारम्भ से ही अच्छे संस्कार डालने चाहिए। उन्होंने कहा "हमारे बच्चों" में धार्मिक संस्कार की नितान्त कमी होती जा रही है तथा अच्छे संस्कार न होने के कारण युवावस्था में यही बच्चे सन्मार्ग से भटक कर कुमार्ग पर चल पड़ते हैं। उन्होंने बच्चों में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति आस्था तथा विश्वास पैदा करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विदेशी शक्तियां स्मैक, हेरोईन, ड्रग्स, चरस, ब्राउन शुगर, शराब आदि घातक नशीले पदार्थों को सेवन कराके युवा वर्ग की शक्ति तथा स्वास्थ्य का नाश कर रही हैं। यदि उपरोक्त नशीले पदार्थों का सेवन युवा वर्ग में इसी भाँति से बढ़ता रहा तो राष्ट्र का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। उन्होंने लोगों से अपील की कि धर्म रक्षा महा अभियान में सहयोग देकर धर्म तथा राष्ट्र की रक्षा में सहयोग दें।

पं0 जयन्तकुमारपाण्डेय ने "धर्म रक्षा महाअभियान" के उद्देश्यों पर व्यापक प्रकाश डाला तथा राष्ट्र के पुनः विखण्डन न होने देने हेतु हिन्दुओं से पुनः जाग्रत होने की अपील की। उन्होंने वेदों की सर्वोच्यता का स्पष्ट विवेचन किया।

डा0 रमेश आर्य ने जातिवाद, अस्पृष्यता तथा दहेज इत्यादि कुरीतियो को त्यागने की अपील की।

डा0 अजय जैन ने धर्म रक्षा महाअभियान की प्रशंसा की तथा इसमें हर प्रकार के सहयोग का वचन दिया।

श्री जितेन्द्र कुमार गुप्त (अभियन्ता) ने राष्ट्र की रक्षा तथा धर्म-संस्कृति की अक्षुण्ण रखने हेतु कठिन श्रम करने की शपथ ली।

अन्त में धन्यवाद ज्ञापन के साथ सभा समाप्त हुई।

- संवाददाता।

आज नेता नहीं नागरिक चाहिये

राम गोपाल आर्य
मन्त्री आर्यसमाज, पलड़ी

आज देश में बिगड़ती हुई स्थिति को देखकर शायद हिन्दुस्तान की जनता को नेताओ के स्थान पर नागरिकों की आवश्यकता पड़ रही है भारत देश ने सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद सरदार पटेल, जैसे नेता पैदा किये थे जिन्होंने अपनी जन्म भूमि एवं समस्त राष्ट्र के गौरव को बढ़ाया था जिन्होंने अपने देश के लिये अपने प्रत्येक देशवासी के लिए अपने प्राण न्यौछावर किये मगर अफसोस आज भारत व भारत की 70 करोड़ जनता का दुर्भाग्य रहा है कि आज देश के अन्दर ऐसे नेता लोग पैदा हो गये जो देश में जातिवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। गरीब जनता का शोषण कर रहे हैं उनकी चैन व अमन की रोजी-रोटी छीनी जा रही है। उनके बच्चों को बालवर्ष के होते हुए भी सब सुविधाओं से वंचित होना पड़ रहा है। वे मासूम व दुग्ध मुहे बच्चे भूखे प्यासे शर्दी की रात अपनी माँ की छाती से लिपट कर बिताते हैं। क्या आज के हमारे नेनाओं के पास उनको देने के लिए सिर्फ झूठे आश्वासन ही रह गये हैं। नेताओं के कारण देश का प्रतिष्ठा दिन प्रतिदिन गिरती जा रही है। सब लोग राजनीति में सक्रिय हैं। आज सभी नेता बनना चाहते हैं। मगर किसी ने यह भी सोचा है कि अगर सब लोग नेता बन गये तो उन नेताओ का अनुयायी कौन होगा उनके बनाये हुए रास्ते पर कौन चलेगा। उनके लिए भोजन का प्रबन्ध कौन करेगा। और सबसे बड़ी परेशानी तो यह होगी कि उनकी मोटर कौन चलायेगा। इन हालातों को देखकर पता चलता है, कि इस देश ने नेता ही पैदा किये हैं। नागरिक नहीं। जिस मनुष्य के चरित्र में धीरता नहीं उससे बड़े दायित्व के योग्यता पूर्ण निर्वाह की आशा नहीं की जा सकती आजकल आये दिन नेताओ के मुँह यह सुनने को मिलना है कि समाज बहुत ही कुरूप हो गया है। उसके सुधार में विलम्ब नही होना चाहिये। मगर दुनियाँ क्यो कुरूप है इसे सुन्दर बनाने का एक ही उपाय है वह है नेता की जगह नागरिक का स्थान जो दूसरों के जीवन के लिए अपने को समर्पित कर सके जिसके अन्दर देशप्रेम की भावना धधक रही हो जो सच्चा ईमानदार व राष्ट्र सेवी हो तभी महान बन सकता है, तभी देशवासियों को सच्चे मार्ग का दर्शन हो सकता है। और जनता का कल्याण हो सकता है।

आ.स. भगतपुर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज भगतपुर गोविन्दपुर आजमगढ़ का 13वाँ वार्षिकोत्सव दि0- 8 से 10- फरवरी 1990 को सम्पन्न होगा। आर्यजनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म-लाभ उठावें।

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- "मेरा पुत्र आनन्दप्रकाश आयु- 32 वर्ष बाल्यकाल से ही मन्दबुद्धि का था। जरा-जरा सी बात पर क्रोधित हो जाता है। एक बात की रट लगायेगा, तो बार-बार उसे ही कहेगा 15-20मिनटों तक। बार-बार यही कहता रहता है कि मेरा दिमाग औंजा रहा है। संलग्न पत्र मेरे पुत्र का है। इस पत्र की लिखावट तथा शैली से आप इसके मानसिक-स्तर का कुछ पता लगा सकते हैं।

सन् 1975 में इसे हाईस्कूल परीक्षा में सम्मिलित होना था। पढ़ने में रुचि बहुत थी। एक दिन भी अनुपस्थित नहीं रहता था। इसने हाइड्रोसील एवं ऑपरेशन कराया। तबसे अनाप-शनाप बकने लगा। इसे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अस्पताल में भी रखा। इसे काँच की बीमारी भी है। पाखाना साफ नहीं आता।

कृपया उचित उपचार बतायें तथा अन्य जो आदेश- सुझाव हों, उसे भी लिखें"।

- रूद्रदेव सिंह, आर्यसमाज- खरसरा (बलिया) उ0प्र0

समाधान- आनन्दप्रकाश जी को (Cyldine साइलडिन (अलारसिन आयुर्वेदिक) की दो गोलियाँ प्रातः- मध्याह्न- रात्रि खिलाकर अभयारिष्ट (गुरुकुल काँगड़ी- फार्मेसी) की दो ढक्कन दवा-समानजल के साथ पिलाया करें। दो मास में यदि अन्तर न पड़े, तो मेरे "गुरुकुल- आश्रम- बिठूर (कानपुर)" के आरोग्य- मन्दिर में प्रविष्ट कर देवें। काँच की बीमारी का उपचार आगे "आर्यमित्र" के अंक में पढ़ियेगा। त्वरित पत्रोत्तर हेतु दो डाक लिफाफे भेजें:-

(डॉ0) स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
(ब्रह्मचारी)
आर्यसमाज पिथौरागढ़, (उत्तर प्रदेश)

आ.स. कलकत्ता का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज कलकत्ता का 104वाँ वार्षिकोत्सव मुहम्मद अली पार्क कलकत्ता में 23 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 1989 तक सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर अथर्ववेद पारायण यज्ञ भी सम्पन्न हुआ, जिसमें हजारों नर-नारियों ने भाग लिया। गुरुकुल कण्व आश्रम के ब्रह्मचारी विश्वपाल ने योग के अद्भुत प्रदर्शन दिखाकर समस्त जनता को आश्चर्यान्वित कर दिया। 23 दिस0 को विशाल शोभायात्रा निकाली गई। देश-विदेश के अनेक प्रख्यात विद्वान, प्रचारक सन्यासियों ने अपने प्रवचन द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया वेद सम्मेलन की अध्यक्षता डा0 स्वामी सत्यप्रकाश ने की। आर्यसमाज के प्रचार से इस बंग प्रदेश में आर्य संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में महान सफलता प्राप्त हो रही है।

पृष्ठ ६ का शेष.....

हजार थी जो अब बढ़ कर 70 हजार हो गयी है। स्मरणीय है कि अरुणांचल प्रदेश की आबादी केवल पांच लाख है तथा दस वर्ष के भीतर सम्पूर्ण अरुणांचल प्रदेश का ईसाईकरण करके उसको दूसरा मिजोरम बनाने की ईसाई मिशनों की

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें :-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह नवम्बर 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 है।

नवम्बर 1989

5354,	8[illegible], 8682,	11054,	
1109,	11365,	11368,	12765,
12771,	13648,	13650,	14111,
14124,	14127,	14531,	14535,
14538,	14545,	14873,	14875,
14876,	14877,	14879,	14880,
14881,	14882,	14883,	14884,
14885,	14887,	14888,	14890,
14891,	14892,	14893,	14894,
14895,	14896,	14899,	14900,
14901,	14902,	14903,	14904,
14905,	14906,	14907,	14908,
14909,	14910,	14911,	14912,
14913,	14914,	14915,	14917,
14919,	14920,	14921,	14925

आर्यसमाज मन्दिर मैनपुरी के पुनरुद्धार हेतु दान की अपील

आज से 109 वर्ष पूर्व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने करकमलों से आर्यसमाज मन्दिर, मैनपुरी की स्थापना की थी। यह मन्दिर पुराना हो जाने के कारण अब बहुत ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है जिसके पुनरुद्धार (मरम्मत) की तुरन्त आवश्यकता है।

अतः दानी संस्थाओं, व्यक्तियो, परिवारों से निवेदन है कि बड़ी से बड़ी धनराशि भेजकर पुण्य लाभ करें। धनराशि बैंक ड्राफ्ट, चेक, मनीआर्डर अथवा नकद मन्त्री आर्यसमाज मन्दिर मैनपुरी के नाम भेजें।

-सभामन्त्री

पृष्ठ ४ का शेष.....

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतृत्व करने के साथ लाला लाजपत रायजी ने हिन्दू संगठन, दलितोद्धार, शुद्धि आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे स्वराज्य पार्टी के उपनेता रहे पश्चात सन् 1926 में नेशनलिस्ट पार्टी के नेता रहे तथा पंडित मदनमोहन मालवीयजी के प्रमुख सहयोगी रहे।

सारे देश में 28 जनवरी को लाला लाजपतराय जी का जन्म दिवस है।

उत्तर प्रदेश में इस समय श्री मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में गठित सरकार जन - विश्वास के नये युग का तिनिधित्व करती है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, चरण सिंह तथा कर्पूरी ठाकुर के आदर्शों और स्वप्नों प्रेरणा लेकर सरकार प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण समान आधार पर करने को प्रतिबद्ध है। अभी तक लिये गये निर्णय और किये ये वायदे इस प्रतिबद्धता के प्रतिबिम्ब हैं और सरकार की विचारधारा और कार्यों में परिवर्तन लाकर गरीब, उपेक्षित तथा दबे - थके र्गों के लिए नये युग का द्वार खुलने की आशा बँधाते हैं।

0 सरकार ने गरीबी, बेरोजगारी, मूल्य वृद्धि भ्रष्टाचार के विरुद्ध जेहाद छेड़ा है ताकि जनता को एक स्वच्छ, कुशल और संवेदनशील प्रशासन दिया जा सके और सभी को सामाजिक - आर्थिक न्याय सुनिश्चित किया जा सके ।

0 जिला अधिकारियों को निर्देश कि वे जनता की शिकायतों की सुनवाई तत्परता से करें।

0 किसानों और कमजोर वर्गों के लोगों को दस हजार तक के कर्जों में राहत देने का निर्णय।

0 ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को सीधा लाभ देने वाले कार्यक्रमों के लिए राज्य के बजट की पचास प्रतिशत धनराशि आवंटित ।

0 प्रदेश के 27 लाख गन्ना किसानों के लाभ के लिए गन्ना के मूल्य में वृद्धि जिसके फलस्वरूप गन्ना काश्तकारों को 232 करोड़ रुपये का अतिरिक्तानकद भुगतान।

0 प्राथमिकता के आधार पर 3376 नलकूपों की मरम्मत का कीर्तिमान

0 ग्रामीण क्षेत्रों में 14 घण्टे लगातार विद्युत आपूर्ति का निर्णय ।

0 वृद्धावस्था और विधवा पेंशन की राशि अब 100 रुपये प्रतिमास । वृद्धावस्था पेंशन 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लिए लाभकारी।

0 अधिवर्षता की आयु के नियमों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित। रोजगार के नये अवसर।

0 स्वतन्त्रता संग्राम के ख्यातिप्राप्त वयोवृद्ध, कवियों, चित्रकारों, कलाकारों तथा पत्रकारों को मान्यता।

0 राजकीय चिकित्सालयों में जनरल वार्ड के सभी रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा तथा भोजन। ग्रामीण क्षेत्रों में पंजीयन एवं प्रवेश शुल्क समाप्त तथा शहरी क्षेत्रों में घटी दर पर ।

0 लोकायुक्त के जाँच - क्षेत्र में मुख्यमन्त्री सहित शीर्ष पदों को लाने का संकल्प ।

0 वंचित गाँवों को पेयजल की सुविधा।

0 ग्रामों का विद्युतीकरण ।

0 गाँवों को सड़कों से जोड़कर उत्तम संचार सुविधा ।

0 ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों का निर्माण ।

0 शिशु एवं महिला कल्याण के लिए पुष्टाहार कार्यक्रम ।

0 अल्पसंख्यकों तथा कमजोर वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ।

0 जनता की निकटता के साथ कानून तथा व्यवस्था तंत्र को नया रूप ।

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन.पी. ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
माघ शुक्ल-९
दिनांक ४ फरवरी १९९०
दूरभाष: २४५९९३

सेवा में:
12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

— आर्यमित्र साप्ताहिक —

आतुर सभी हो रहें देखते साप्ताहिक आ-
र्यमित्र अंक आगामी कब आये रविवार।
मिलता सभी को इस में है आत्मिक भोजन
त्रसित रहोगे कैसे 'आर्यमित्र" रखवार॥
सातत्य हो पढने मे "नरेन्द्रार्य"प्रत्येक स-
प्ताह होगा लाभान्वित सारा तव परिवार।
हितैषी? ने मन मोह न लिया है क्या सभी का?
कहो इन्द्रदेव को भी धन्य शत बार॥

— नरेन्द्र आर्य मैनपुरी

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं २२४१/५७) फाल्गुनकृष्ण - 2 रविवार संवत् २०४६ वि., दिनाक ११ फरवरी १९९० (घोषणा पत्र स ७/२८ २ ८५)



यस्यामाप: परिचरा: समानीर ऽ
होरात्रे अप्रमंद क्षरन्ति ।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो
दुहामयो उक्षतु वर्चसा ।।

जिसमें सन्यासी परिव्राजक चारों ओर विचरने हैं। रात्रिदिवस समदृष्टि सलिलवत् पर प्रमाद परिहरते हैं। बहुविधि से पयपेय ग्राद की जो माता देने हारी। वही मातृभूतल प्रताप दे, हमें ज्ञान गौरवकारी।

- सूर्यदेव शर्मा एम०ए०,
डी०लिट्

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

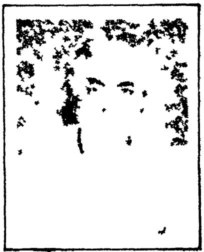
आजीवन सदस्य — रु. २५१/-
वार्षिक — रु. 30/-
एक प्रति — १रु. मात्र
विदेश में — १५ पौंड

प्रकाशन का ६३ वाँ वर्ष
अंक ६

दुनियाँ के लोगों ध्यान देकर सुन लीजिए—

काश्मीर भारत का वैसा ही अभिन्न, अविच्छिन्न और अटूट अंग है जैसा उत्तर प्रदेश या मध्य प्रदेश

— इन्द्रराज



श्री पं॰ इन्द्रराज

आर्यसमाज गणेशगजं, लखनऊ के विशाल हाल में दिनांक 28 जनवरी 1990 को एकत्रित उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों के विशाल समूह को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराजजी ने सिंहगर्जना करते हुए कहा- 'मूल विवाद तो काश्मीर के उस हिस्से को वापस लेने का है, जिसे पाकिस्तान ने अनधिकृत और अवैधानिक तरीके से अपने कब्जे में ले रखा है। शिमला-समझौते में भी यही भावना अन्तर्निहित है। आज़ादी मिलने के तुरन्त बाद ही पाकिस्तानी सेनाओं ने कबायलियों के भेष में काश्मीर पर हमला कर दिया था और सैकड़ों निर्दोष काश्मीरियों का खून बहाना शुरू कर दिया था। उस समय भारत की समस्त देशी रियासतों के शासकों को यह अधिकार था कि वे चाहें तो पाकिस्तान में चाहें तो भारत में शामिल हो सकते हैं अथवा स्वतन्त्र भी रह सकते हैं। काश्मीर भारत की एक देशी रियासत थी और उसके तत्कालीन महाराजा हरीसिंह ने वैधानिक तरीके पर भारत में विलय की प्रार्थना की थी जिसे स्वीकार कर लिया गया। यह विलय अन्तिम और अटूट है। संसार की कोई शक्ति काश्मीर को भारत से अलग नही कर सकती। आत्म निर्णय के नाम पर किसी को यह अधिकार नहीं दिया जा सकता कि वह काश्मीर को या भारत के किसी अन्य हिस्से को भारत से अलग कर दे। भारत भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक है तथा अविभाज्य है। काश्मीर का रहने वाला चाहे मुसल्मान हो या हिन्दू भारत का नागरिक है। उसे आतंकवादी गतिविधियों से भयभीत करके भारत विरोधी बनाना पड़ोसी देश पाकिस्तान का शत्रुता से भरा हुआ व्यवहार है। उसे यह गतिविधियाँ तुरन्त बन्द कर देनी चाहिए अन्यथा स्थिति खतरनाक मोड़ ले सकती है। जिसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व पाकिस्तान पर होगा।

श्री प्रधान जी की उक्त घोषणा का तुमुल ध्वनि से स्वागत करते हुए वैदिक ध्वनि के साथ हजारों हाथ एक साथ उठ गये और गगनभेदी नारों के साथ काश्मीरी भाइयों तथा अन्य स्थानों की पीड़ित जनता को कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग दिए जाने का संकल्प लिया गया (प्रस्ताव)। इसी प्रकार बोडो तथा पँजाब समस्या पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्री प्रधान जी ने कहा कि दोनों समस्याएं भारत की अन्दरूनी समस्याएं हैं जिनका समाधान देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण रखते हुए संविधान के तहत ढूँढा जा रहा है।

•

इस अवसर पर 1990 की शुभकामनाओं के साथ आर्यसमाज के कार्यकलापों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए अनेकों समितियों का गठन किया गया।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ - फाल्गुन कृष्णा -2 संवत २०४६ वि
११ फरवरी १९९० , दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

घहराते हुए युद्ध के बादल

पाकिस्तान के विदेशमन्त्री साहबजादा-याकूब खान ने सोवियत संघ और अमेरिका के राजदूतों से भेंटकर कश्मीर और पंजाब में घट रही आतंकवादी गतिविधियों में पाकिस्तान का हाथ होने से इन्कार किया है। उनका कहना है कि भारतीय नेतृत्व अपने देश में उठे हुए अन्तर्विरोध और असन्तोष को नहीं सम्भाल पा रहा है। इसके साथ ही उन्होंने भारत को चेतावनी भी दी है और कहा है कि पाकिस्तान पर दबाव डालने की भारत को किसी भी हालत में इजाज़त नही दी जायेगी। उधर इस्लामाबाद में बेनज़ीर भुट्टो की सरकार पर कश्मीर के मसले को संयुक्तराष्ट्र में ले जाने के लिए दबाव बढ़ता जा रहा है। विपक्ष के नेता इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि कश्मीर के मसले को संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा परिषद में उठाया जाय। इधर पिछले दिनों ही पाक विदेशमन्त्री की भारतयात्रा के दौरान उन्हें प्रमाणसहित यह बता दिया गया था कि पाकिस्तान में कहाँ कहाँ किस प्रकार कमान्डो प्रशिक्षित करके स्वचालित हथियारों के साथ सीमा के इस पार भेज दिए जाते हैं। सीमा पर लगाए गये कंटीले तार अप्रभावी सिद्ध हो रहे हैं। बड़ी संख्या में घुसपैठिए लोभ लालच व धार्मिक उन्माद के कारण इस पार से उस पार जाकर बड़े आराम से प्रशिक्षण और हथियार लेकर पुनःइस ओर आकर काश्मीर और पंजाब में अव्यवस्था फैला रहे हैं। आखिर यह स्वचालित ए0के0 राइफलें, बम तथा गोलाबारुद कहाँ से मिलता है। पाक अधिकृत काश्मीर के तथा कथित स्वयम्भू प्रधानमन्त्री ने अभी पिछले सप्ताह ही कहा था कि दस हजार प्रशिक्षित कमाण्डो काश्मीर में और भेजे जा रहे हैं जो वहाँ तोड़फोड़ की कार्यवाहियों में समर्पित रहेंगे। आज ईरान ने भी भारत पाक युद्ध में ईरान का सक्रिय सहयोग पाक को देने का ऐलान कर दिया है। ईरानी राष्ट्रपति के सलाहकार तथा भूतपूर्व उपविदेश मन्त्री श्री जावेद लारीजानी ने "पाकिस्तान हेरल्ड" को साक्षात्कार देते हुए बताया कि उनका देश ईरान, पाकिस्तान पर भारत को कभी भी विजय हासिल नही करने देगा। इस प्रकार स्थिति बड़ी भयंकर होती जा रही है।

पाकिस्तान मुस्लिम राष्ट्र होने के नाते विश्व के सभी मुस्लिम राष्ट्रों का युद्ध में क्रियात्मक सहयोग लेना चाहेगा। और इसे हिन्दूमुस्लिम संघर्ष का रूप देकर तथा भारतीय मुसल्मानों की धार्मिक भावनाओं को उभाड़कर युद्ध होने की दशा में भारत के अन्दर गृहयुद्ध की सी स्थिति भी पैदा करना चाहेगा। पिछले मास पाकिस्तानी सेनाओं ने अपने इतिहास का भीषणतम सैनिक युद्धाभ्यास भारत की सीमाओं के पास ही किया था और पाकिस्तानी सेना के सर्वोच्च कमान्डर जनरल असलम ने कल्पित नाम से भारत के विरुद्ध सेनाओं को आक्रमण की रूपरेखा भी बताई थी। इन सब बातों से यही स्पष्ट हो रहा है कि पाकिस्तान के इरादे युद्धोन्मुखी हैं। एक ओर कूटनीतिक स्तर पर दूसरी ओर आतंकवादी गतिविधियों द्वारा जनता का मनोबल गिराकर तथा तीसरी ओर युद्ध का हौआ दिखाकर वह काश्मीर हड़पना चाहता है। भारत एक शान्तिप्रिय देश है। जितने भी युद्ध अब तक पाकिस्तान से हुए हैं उन सभी में पहल पाकिस्तान ने ही की थी। हमने पाकिस्तान का निर्माण युद्ध के लिए नहीं अपितु दोनों देशों की जनता को अपने-अपने देश में सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत करने के लिए किया था। किन्तु बड़े दुर्भाग्य की बात है-पाकिस्तान अपने भारतविरोधी रुख से बाज़ नही आ रहा है।

हम दुनियाँ को फिर बता देना चाहते हैं काश्मीर भारत का अविच्छिन्न अगं है। उसे हमसे अलग करने की सारी कोशिशें व्यर्थ जायेंगी। हमारे जवानों ने, हमारे काश्मीरी भाइयों ने भारत के लोगों ने इस पर अपना खून बहाकर भारत माँ के मस्तक पर तिलक लगाया है। इस देश का रहने वाला बच्चा-बच्चा अपनी मातृभूमि के इस मुकुट को कभी छिनने नही देगा। समस्त आर्य जनता राष्ट्ररक्षा के इस महाभियान में काश्मीर की रक्षा के लिए अपना तन मन धन सर्वस्व अर्पित करने को तैयार खड़ी है। ◘

अमृत विचार

परहित और परोपकार करते समय अपना मानापमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है इसके बिना सुधार नहीं हो सकता है।

- • -

फूल अगर बगीचा और बाग में रहते हैं तो अधिक समय तक पवन सुगन्धित होता रहता है और सूखने पर वह फूलादि खाद के रूप में परिवर्तित होता रहता है पुष्पांजली बना कर घर में रखने से लाभ है पर मूर्तियों मन्दिरों में चढ़ाने से वे तुरन्त मसले जाते हैं तथा पानी आदि पड़ने पर वे सड़ान्ध छोड़ने लगते हैं और सड़ते हैं।

स्वास्थ्य-सुधा

उपचार दर्पण

रोगी अपना विवरण और एक रुपये पचास पैसे के डाकटिकट निम्न पता पर भेजा करें:-
डॉ0 स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज मन्दिर
पिथौरागढ़- 262501

{1} समस्या- " मेरी उम्र 17 वर्ष है। मलद्वार में कभी-कभी अत्यन्त खुजली होती है। मल में एक सेमी लम्बाई के बहुत से सफेद कीड़े निकलते हैं।"

- पूरनचन्द्र गौतम, ग्राम/डाकघर-सैन्दा, जनपद- {बुलन्दशहर}

समाधान-प्रातः खालीपेट लाल टमाटर कालीमिर्च के साथ खाया करें। कृमिकुठार रस की दो गोली प्रातराश और रात्रि भोज बाद पानी से तीन सप्ताह तक लेते रहें। नमकीन मट्ठा लेना अच्छा है।

{2} समस्या- "मेरे मित्र 48 वर्ष के हैं। मोटापा से पीड़ित है।"

- डॉ0 जी0एल0 आर्य, गरवाड़ा {आलोट}, नीमच- 458226

समाधान-प्रातराश में नींबू-शहद-पानी पिया करें। रोटी-सब्जी-मट्ठा फलाहार लाभकारी है। ओबेनिल {चरक} की दो गोली प्रत्येक भोजन बाद वांछित भार घटाने तक लेते रहें। प्रातः क्रमवार योगासन करने से मोटापा घटने लगता है- उत्तानपादासन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन, पश्चिमोत्तानासन, हलासन, और अन्त में शवासन।

- स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
कच्चाहारी
आर्यसमाज पिथौरागढ़
उ0प्र0।

योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

राजकोट- आर्यसमाज-महर्षि दयानन्द-मार्ग- राजकोट के उपलक्ष में 10 दिन का योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दर्शन योग विद्यालय के आचार्य पूज्य स्वामी श्री सत्यपति जी अध्यापक ज्ञानेश्वरजी आर्य और ब्रह्मचारी अर्जुनदेव वर्णी ने इस योग शिविर का मार्गदर्शन और संचालन किया। शिविर में शिविरार्थीयों को अष्टांग-योग का मार्गदर्शन, जीव ईश्वर प्रकृति का ज्ञान- कर्म - उपासना पद्वति और योग का प्रशिक्षण और योग में आनेवाली बाधाओं से प्रशिक्षित कराया गया।

- रणजीत सिंह परमार मन्त्री

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज

— श्री जे० पी० गोयल
अन्तरग सदस्य
आर्य समाज, मेरठ शहर

जब निसर्ग सिद्ध सुषमा से आलोकित शस्य श्यामला पावन भारत भूमि पाखण्डों कर्मकाण्डों, बाह्य आडम्बरो, रूढ़िवादिताओ से त्रस्त कट्टर पन्थियों के चंगुल में फँसी थी और जनता की चहुँमुखी प्रगति का कोई आसार नहीं था, ऐसे सामयिक युग में महर्षि दयानन्द (आदि नाम मूलशंकर) का अवतरण सौभाग्यवश भारत में हुआ। देश ब्रिटिश साम्राज्य के अधीनस्थ दासता की बेड़ियों मे विश्रृंखलता, विभाजन, कटुता, वैचारिक वैमनस्यता की अग्नि में सुलग रहा था।

जिस प्रकार परमपिता परमात्मा ने त्रेता युग में "श्रीराम" जैसा दिव्यात्मा को अपनी अनेकों दिव्य कलाओ और प्रतिभाओ से युक्त इस धरा पर, राक्षसों का संहार करने हेतु तथा ऋषि मुनियों की तपस्या व वेदवाणी को अनवरत बनाये रखने के लिये अवतरित किया, जिस प्रकार द्वापर युग मे सोलह कला से युक्त योगिराज श्री कृष्ण का आविर्भाव हुआ और कंस जैसे राक्षसो का संहार कर त्रस्त जनता को विविध कष्टों से छुटकारा दिलाया तथा अर्जुन को दिव्य संदेश देकर गीतामृत प्रदान किया था। ठीक उसी प्रकार कलियुग में परतन्त्र भारत में स्वाधीनता का बिगुल बजाने, सोयी हुई जनता को जगाने, बाह्य आडम्बरों, संकीर्णताओ और अंधविश्वासो से छुटकारा दिलाने, आदि ग्रन्थ ईश्वरवाणी वेदों की अपार महिमा को जताने, आर्यजाति को सुसंगठित करने, यज्ञ, योग, प्राणायाम, स्वाध्याय, नारी शिक्षा, प्रत्याहार, संध्या, प्रार्थना, ब्रह्मचर्य पालन, संयम, नियम, त्याग, परोपकार, प्रेम, सहयोग आदि मानवीय सद्गुणों का बीजांकुर करने के लिये परम पिता परमात्मा ने महर्षिदयानन्द को इस धरा पर अवतरित किया था।

महर्षि दयानन्द निश्चय ही श्रीराम व "श्री कृष्ण" से किसी प्रकार भी कम न थे। अन्तर केवल ईश्वर द्वारा प्रदत्त दैविक शक्तियों के गुणों की डिग्री व सीमा में हो सकता है। हम अज्ञानतावश साक्षात् भगवान का अवतार किन्हीं महान् दिव्यात्माओ को "कह दे'। परन्तु निश्चय ही ईश्वर की भेजी हुई इन सभी महान् दिव्य दृष्टि व दैविक शक्ति से सम्पन्न प्रतिभाओं और आत्माओं के अलौकिक व पारलौकिक सिद्धान्तो व जीवन व्यवहार के प्रति श्रद्धापूर्वक नतमस्तक होकर अनुयायी बने रहना भगवत्कृपा से अपने व सामाजिक जीवन को सफल व सार्थक बनाने का श्रेय प्राप्त करना है।

महर्षि दयानन्द को भी परोपकार, ईश्वर भक्ति, सत्कर्मों व वेदों तथा योग विद्या मे निपुणता के फल स्वरूप दिव्यदृष्टि प्राप्त होकर भविष्य में होने वाली शुभ व अशुभ घटनाओं का आभास होता था। एक बार स्वामी जी ने एक बड़े हाल कमरे में वेद प्रवचन करते हुए यकायक अपने आर्य बन्धु शिष्यों को तुरन्त उस कमरे से बाहर चले जाने का आदेश दिया। पीछे-पीछे स्वामीजी भी बाहर आ गये। इतनी ही देर में देखते-देखते कमरे की अच्छी खासी दीख पड़ने वाली छत नीचे आ गिरी। सभी असमंजस मे पड़ गये और स्वामी जी की भविष्य दृष्टा दिव्य स्वरूप महिमा का गुणगान करने लगे।

यह भी यहां कहना सार्थक व उल्लेखनीय होगा कि ईश्वर निराकार ब्रह्मांड में प्रसारित रोम-रोम व कण-



श्री जे पी गोयल

कण में बसा हुआ विशाल अवर्णनीय अनुपम शक्ति है जो सदैव माता के गर्भ से उत्पन्न जन्म-मरण के आवागमन के चक्कर से दूर होता है। मानव भी अपने सत्कर्मों से बैकुंठ प्राप्त कर आवागमन से छूट जाता है। हाँ, माता-पिता, गुरुजनों, ऋषि मुनियो, महात्माओं, सम्पूर्ण मानव जाति का निस्वार्थ परोपकार व सेवारत, वेद, गीता, रामायण आदि पावन ग्रन्थों के सच्चे अनुयायी ईश्वर के सच्चे उपासक व श्रद्धा के पात्र हुआ करते हैं। ऐसा व्यक्ति भी महापुरुष की श्रेणी मे आकर मरणोपरान्त आवागमन से छूट कर मोक्ष प्राप्त करता है। उसकी आत्मा चिरन्तन परमानन्द में लीन हो जाती है।

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर वचन आदि ऋषियों, महर्षियों के मुखारबिन्द से उच्चरित वेदो का विस्तृत अध्ययन कर सोयी हुई आर्यजनता को जगाकर उसमे आस्था जगायी और मानव कल्याण की सच्ची नींव डाली, स्वामी जी ने अनमोल मानव जीवन का सारा सार व चारों वेदों के प्रमुख तत्वों का व्यावहारिक जीवन में समावेश करने हेतु तथा जीवन पद्धति को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु एक सारगर्भित संक्षिप्त महान् विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" की संरचना कर आर्यजगत के लिये सत्य का प्रकाश प्रसारित किया। "सत्यार्थ प्रकाश" के सभी समुल्लासों में स्वामी जी ने वेदों की सूक्ष्मतम मीमांसा की है जिन्हें व्यवहारिक जीवन में ढाल कर जीवन कल्याणकारी बनाने का सपना संजोकर मार्ग प्रशस्त्र किया जा सकता है।

"आर्यसमाज" की स्थापना कर दस नियमों का पालन करने की प्रेरणा दी। भारत में सृष्टि की रचना के समय से ही रहने वाली विद्यमान आर्यजाति, वेद ग्रन्थ और विश्व जननी आदि ऋषियो की एक मात्र आध्यात्म भाषा "संस्कृत" के द्वारा भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने पर बल दिया। उन्होंने ऐसे आदर्श समाज की कल्पना की जो सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, समग्र, सर्वज्ञ, सर्व व्यापक, सर्वहारा व समूची मानवजाति के कल्याण व हितार्थ व्यवहारिक रूपरेखा निर्धारित कर सके। उन्होंने 'कृण्वन्तो-विश्व मार्यम" का सन्देश भजन, प्रवचन, वेद मन्त्रोच्चारण, यज्ञ, प्राणायाम, यौगिक शिक्षा, वैदिक शिक्षा, प्रत्याहार, स्वाध्याय, स्त्री सम्मान, नारी शिक्षा, अभाव, अन्याय अज्ञानता के विरुद्ध सतत संघर्ष एक निराकार ईश्वर की उपासना, सत्य, न्याय, अहिंसा, उदारता, परोपकार, मृदुभाषिता, राष्ट्र प्रेम, विश्व प्रेम आदि अन्तरात्मा से प्रादुर्भाव सद्गुणो को व्यवहारिकता से पालन करने पर बल दिया और अपने स्थापित "आर्यसमाज" की पावनता, विशालता के समर्थक सभी सम्बन्धित कार्यकर्ताओं को जीवन के अन्तिम क्षण तक उपदेश दिया ताकि हमारी जीवन यात्रा सफल, सरल, स्वावलम्बी, सम्भव, सौष्ठव व सारपूर्ण बन सके।

कहाँ तक हम महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो पर चल पा रहे हैं, निर्भर करता है हमारे आधुनिक आर्य नेताओ की जागरुकता, मार्गदर्शन व संरक्षण पर तथा उनके अनेको अनुयायियो विशेषतया युवावर्ग द्वारा कृत संकल्प लेने पर। यदि ऐसा सम्भव हो सका तो भारत का युवक मांस, मदिरा, मद्यपान, धूम्रपान, आतंकवाद, हिंसावृत्ति से कोसों दूर सच्चादेश भक्त, मानव सेवी, संस्कृत प्रेमी व संस्कृति उपासक, न्यायप्रिय व राष्ट्र कर्णधार बन सकेगा और विश्व शान्ति ला सकेगा। जिस सबकी आज के विश्रृंखल युग में महती आवश्यकता है। इसके लिये अनिवार्य रूप से संस्कृत भाषा का ज्ञान और गुरुकुल प्रणाली शिक्षा दीक्षा का प्राविधान परमावश्यक है। जहां पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन, वैदिक-शिक्षा, यौगिक क्रियाएँ, स्वाध्याय, प्राणायाम प्रत्याहार, आदि का ज्ञान व पालन आचार्यों द्वारा सम्भव है।

मेरठ जनपद में महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी आर्य संस्कृति के उपासक प० इन्द्रराज तन, मन, धन, समय, शक्ति देकर निस्वार्थ सेवाभाव से समाज कार्य में तन्मयता से जुटे हैं। इसी प्रकार धनी मानी ला० मनोहरलाल, राधेलाल सर्राफ अपनी कमाई का बड़ा भाग आर्य समाज को श्रद्धापूर्वक दान स्वरूप भेटकर इस पौधे को सींच रहे हैं। उ०प्र० आर्य प्रति० सभा के महामन्त्री श्री मन मोहन तिवारी अपने अध्यक्ष के साथ पूर्ण समर्पित सभी प्रतिनिधियों को प्रति वर्ष न केवल अपने डी०ए०वी०-कालेज लखनऊ में पूर्ण आतिथ्य सत्कार प्रदान करते हैं बल्कि 1989 के वार्षिक चुनावों में उन्होंने घाटे की प्रति० सभा को लगभग 10 लाख मुनाफे की सभा बना कर दिखा दिया जिसमें 6 लाख से अधिक एफ०डी० (निश्चित भविष्य डिपोजिट) सम्मिलित है यह उनकी कर्मठता एवं सच्ची लग्न व ईमानदारी का प्रतीक है। ▣

परिशुद्ध पर्यावरण: दीपदयानन्द

प्रो० सच्चिदानन्द आर्य
बैंगनाबाद, बिहार शरीफ़

आदि सृष्टि। अमैथुनिक सृजन। निराकार- निर्विकार - निर्लेप ध्वनि नि सृत हो रही है। ध्वनि कहाँ से किस कोने से निकल रही है- सबकुछ अज्ञात है। मृदुल-सत्वप्रधान ध्वनि धीरे-धीरे तीव्र-से-तीव्रतर हो रही है--

"ओं ऋत च सत्य चा
भीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रा यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो ऽजायत।
अहोरात्राणिविद्धद्धिश्वस्यपूर्वमकल्पयत्।
दिव चपृथिवि चान्तरिक्षमथो स्वः।।"

आदि सृष्टि। अमैथुनिक महर्षि अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, पूर्वसृष्टि के तपोपूत ज्ञानकर्मयोगी की अन्तस् चेतना उस अनादि वैदिक आलोक से अलंकृत हो रही है।

"कैसी ध्वनि ।"
"मृदुल ध्वनि। अलौकिक ध्वनि।।
दिव्य वाणी।।।"
"हाँ, निराकार ध्वनि।"
"निराकार कौन।"
"वही सर्वव्यापी ।"
"सर्वव्यापी कौन?"
"आदि गुरु।"
"आदि गुरु कौन"।

जो अनादि है- अर्थात् व्यापक अर्थ में अनादि गुरु।"
"तो कौन।"
"वही अनन्त-अनादि सर्वज्ञ परम पिता परमात्मा की ध्वनि निकल रही है।"
"ओह, वाणी- सुधा कैसी मनोहर है- मानो अन्तर्लोक की वीणा झंकृत हो रही है।"
"यह शाश्वत वाणी ऋग्वेद की है।" अग्नि महर्षि ने आत्मचिन्तन किया, "मेरा अन्तस् इससे आलोकित हो रहा है।"
" यह नित्य वाणी यजुर्वेद की है।" वायु महर्षि ने आत्मसात् किया, "मेरे अन्तर का कोना-कोना इससे प्रकाशित हो रहा है।"
"यह मधुमती वाणी सामवेद की है।" आदित्य महर्षि का अन्त करण आलोकित हो उठा, "अन्तर-अन्तर संगीतात्मकता की मधुराई में आकण्ठ आलोड़ित विलोड़ित हो रहा है।"
"यह अन्तरवासी परमात्मा की वेदवाणी है।" अंगिरा महर्षि की हृदय-गुहा में अध्यात्म-सुधा प्रवाहित हो उठी, "यह अथर्ववेदवाणी का कैसा मधुर चिन्मय आलोक है।"

आदि सृष्टि की प्रथम दिवाली यही है। महर्षि दयानन्द आजीवन इस दीपावली को सोल्लास मनाते रहे।

वैदिक ज्ञान के इस आलोक में स्वामी दयानन्द "सरस्वती" ने वेदों की अन्तः गुहा को छान मारा और वेद को आदि ज्ञान का सनातन स्रोत उद्घोषित किया।

वेद ही हमारा धर्म है, धर्म की प्राणवत्ता है, सत्यवत्ता है, गुणवत्ता है। वैदिक धर्म मानव-धर्म है। धर्म की मौलिकता का रस सिक्त-प्रवाह, प्रदेशवाद, भाई-भतीजावाद, लाठीवाद, राइफलवाद अर्थात् जंगली असभ्य शक्ति-सिद्धान्त का प्रदूषण नहीं है।

यजुर्वेद के आलोक में मानव एक जाति है, जिसमें अपने- ही समान नर-नारी के परस्पर प्रेमाकर्षण से मानवीय सर्जना करने की प्रकृतित. क्षमता है।

यजुर्वेद में गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर चतुर्वर्ण की चर्चा अलंकृत शैली में है। ब्रह्मा निराकार है। निराकार ब्रह्मा की मस्तिष्क प्रधान मेधा से ज्ञान के प्रतीक ब्राह्मण, महाशक्ति के प्रतीक उनकी बाहु से समाजरक्षक क्षत्रिय, अर्थव्यवस्था के प्रतीक उनके उदर से समाजपोषक वैश्य, समाजसेवी के प्रतीक उनके चरणकमलों से शूद्र गुणकर्मस्वभाव की उस आधारशिला पर हुए, जिनमें "जन्मना" वर्ण की रूढ़िवादी "बू" नहीं थी, गुणकर्मस्वभाव की वर्णव्यवस्था की बदलती प्रतियोगिता के चरण विकासदिशा की मंजिलों को तय करता हुआ कोई भी वर्ण कर्मफलक कसौटी पर ब्राह्मणत्व की पराकाष्ठा को प्राप्त कर लेता था।

महर्षि का दीपदयानन्द जल रहा है। कार्तिक अमावस्या की इस अमृत पुण्यसलिला तिथि दीपावली में असंख्य दीपकों को जलाकर उन्होंने परम प्रियतम की गोद में निर्वाण को प्राप्त किया था।

परम प्रियतम की गोद में आज भी वह दीपक प्रज्वलित है। 1875ई० में योगिराज दयानन्द के कृतित्व से बम्बई में सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना के एक दीपक ने सहस्रों आर्यसमाज को अमर आलोक प्रदान किया।

"भगवन्! तैने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो।" वहुश ब्रण की संघातिक पीड़ा में महर्षि की इस अलौकिक मृदुल दिव्यवाणी ने उनके परमभक्त शिष्य नास्तिक गुरुदत्त एम०ए० को आस्तिक की मांगलिक आस्था में आनन्द-विभोर कर दिया।

दीपदयानन्द जल रहा है। भूतलवासियों! देखो, यह सर्वप्रथम दीपदयानन्द है, जिसने सरोजनि नायडू और इन्दिरगांधी को क्रमशः सरोजनि नायडू और इन्दिरा बनाया। सर्वसती शिरोमणि सीता, सावित्री, अनसूया, संघमित्रा, लक्ष्मीबाई के आलोक में दकियानूसी पुजारीवाद की स्त्री-शिक्षा-विरोधिनी पोपलीला को गायत्री मन्त्र और वैदिक मन्त्रों के उनके पवित्र उच्चार में स्वाहा कर दिया। इन्तो दयासागर दयानन्द नहीं होते, तो हमारा देश, जाति और राष्ट्र विश्रृंखलता की धारा में डूबता-उतराता विनाश के कगार पर पहुँच जाता।

दीपदयानन्द की ज्योति निखिल वसुन्धरा पर ज्योतिर्मय है। उनकी वैदिक विभा ने कर्मशिला पर शूद्रत्व को ब्राह्मणत्व के उच्चासन पर समासीन कर दिया। दुनिया की मिसाल मे आप सर्वप्रथम मसीहा हैं, जिन्होंने 19वीं शताब्दी में ही चारों वेद-सिन्धु से मन्थन कर "स्वराज्य" रत्न को निकाला। दयानन्द का बीज गाँधी का वटवृक्ष बना, जिस पर स्वाधीनता स्वराज्य का सुधाप्रसु फल अवतरित हुआ।

दीपदयानन्द का आलोक विकीर्ण है। देश का दुर्भाग्य है कि हम इस पावनप्रसु दिव्यालोक से दूर- बहुत दूर होते जा रहे हैं। आज हम अपने भारत के इतिहास के बच्चों को लार्ड मैकाले की उस गलत शिक्षा को दे रहे हैं, जिसमें भारतीय संस्कृति की दबी प्रताड़ित आत्मा की "बू" की नारकीय पुनरावृत्ति है। खेदजनक स्थिति है कि आज भी इतिहास के छात्रों को यही शिक्षा मिल रही है कि आर्य मध्यएशिया से आये।

दीपदयानन्द का ज्योतिपर्व पथ बुहार रहा है। "आर्य" संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ "श्रीमान्" होता है। संस्कृत हमारे देश की आदिकालीन सर्वप्राचीन भाषा है। फिर, संस्कृतिविहीन मध्य एशिया वासियों को कैसे "आर्य" शब्द से अभिहित किया जा सकता है? यह सहज समझने की बात है कि हमें जिस भाषा का ज्ञान ही नहीं है, तो उस दूसरी भाषा में वहाँ के मध्य एशिया देशवासी का नामकरण आर्य कैसे हो सकता है?

फिर, आदिकालीन नाम की परम्परा में कर्म पहले है, नामकरण पीछे। अत "आर्य" जाति नहीं 'आर्य" सभ्य, श्रीमान् और प्रगतिनिष्ठ व्यक्ति का गुणप्रधान नाम है।

इतिहास साक्षी है कि जब सारी दुनिया दिगम्बर बनकर खानाबदोश होकर घूमती थी, भारत के ऋषि-मुनि सारे संसार के गुरु थे। सुतरां, आर्य को अपने देश के बाहर से आने की बात कहकर हम भारत की ऐतिहासिक उन्नत सभ्यता-संस्कृति की मर्यादा के मर्म-मार्ग में रोड़ों का प्रहार कर रहे हैं।

परिशुद्ध पर्यावरण है। दीपदयानन्द है। दयानन्द वैदिकी ज्योति नभमण्डल से विकीर्ण हो रही है। दीपमालिका के दीपों के जगमग-जगमग आलोक में चतुर्वेदवाणी प्रकाशित है। दीपों में सत्यार्थप्रकाश हो रहा है। "सत्यार्थप्रकाश" में हम खोज ले कि हम क्या हैं, क्या बनने जा रहे हैं।

"असतो मा सदगमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय" की ओर बढ़े चलें, चले चलें और मानवता की इस वैदिक वैजयन्ती को इस शुभ्र आलोक में फहरा दें।

आर्यों! देखो, न जाने कब-से यह आलोक तुम्हें बुला रहा है, आ जाओ, न, कल्याण रात्रि जो है, कल्याण की अजस्र शुभ्र ज्योति जाज्वल्यमान् है।

—शेष पृष्ठ ७ पर

देश के पुनरुत्थान के लिए आवश्यक हैं निम्नांकित बातें

• डा० शकुनचन्द आर्य
लालगंज, रायबरेली

निस्सन्देह इस समय देश की स्थिति दुखद एवं चिंतनीय है। हमारी प्रगति की गति जापान एवं जर्मनी आदि उन देशों की तुलना में धीमी है जो कि द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका के शिकार होकर नष्टभ्रष्ट हो गये थे तथा जिन्होंने अपने पुनर्निर्माण का कार्य उसी समय प्रारम्भ किया था जबकि सन् 1947ई० में हम अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त होकर स्वतन्त्र राष्ट्र बने थे। आज जहाँ वे प्रथमश्रेणी के विश्व के विकसित राष्ट्र हैं, हमारी गणना अभी भी विकासशील देशों में की जाती है।

हमारी उपरोक्त स्थिति का कारण हममें देशभक्ति एवं देशसेवा की भावना का निरन्तर कम होता जाना, देश के लिए मर मिटने की भावना का समाप्त हो जाना, देश के भाषाई एवं एकता के सूत्रों का धीरे-धीरे कमजोर होते जाना, नवयुवको, युवकों तथा नई पीढ़ी में नैतिकता का ह्रास हो जाना, स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा का भाव होना, साम्प्रदायिक एवं क्षेत्रीय उपराष्ट्रीयताओं का निरन्तर सबल हो जाना, शिक्षा का स्तर निरन्तर गिरते जाना तथा "खाओ, पियो एवं मौज करो" संस्कृति का जोरों से प्रसार हो जाना है।

आज आवश्यकता है कि उपरोक्त स्थिति की समाप्ति तथा देश को समतावादी, बलशाली, उन्नतिशील एवं महान राष्ट्र बनाने के लिए निम्नांकित उपाय किये जायें :-

भारत का इतिहास नये सिरे से लिखा जाये

किसी देश का इतिहास वहां के लोगों की प्रेरणा का स्रोत होता है। इतिहास साक्षी है कि मध्ययुग में मुगलों के विरुद्ध स्वराज के लिए युद्ध करने वाले महान योद्धा छत्रपति शिवाजी को देश एवं भारतीय संस्कृति के लिए मर-मिटने की प्रेरणा महाभारत एवं रामायण से मिली थी जिनकी कथाओं को शिवाजी की माता जीजाबाई उन्हें सुनाया करती थीं।

परन्तु दुःख का विषय है कि इस समय हमारे देश में जो इतिहास पढ़ाया जाता है वह अंग्रेजों द्वारा लिखा गया है, जिसमें तथ्यों को तोड़ा-मरोड़ा गया है, हमारे मानबिन्दुओं का अवमूल्यन किया गया, "आर्य" जिसका अर्थ श्रेष्ठ है, को एक जाति के रूप में चित्रित कर उसका 1500 ईसापूर्व विदेशों से आगमन दिखाया गया है। महाभारत एवं रामायण के महान इतिहास को कपोलकल्पित ठहरा दिया गया है, प्राचीन भारत के गौरवशाली इतिहास जबकि भारत ने अंको, ज्यामित, ज्योतिष, आयुर्वेद तथा अनेक विज्ञानों का आविष्कार किया था, पर पर्दा डाल दिया गया है। आशा थी कि देश के स्वतन्त्र होने के बाद हमारी नई सरकार देश के इतिहास को नये सिरे से लिखवायेगी जो कि पाश्चात्य एवं राजनीति के प्रभाव से मुक्त तथा तथ्यों पर आधारित होगा परन्तु दुःख का विषय है कि हमारी वर्तमान सरकार उसी इतिहास से चिपटी हुई है और उसमें वह यदि कोई संशोधन भी करती है तो वह राजनीति एवं अल्पसंख्यक तुष्टीकरण नीति से प्रेरित होता है।

आज आवश्यकता है कि हमारी सरकार इतिहासकारों, पुरातत्व वेत्ताओं, वैदिक एवं प्राच्यविद्या के विद्वानों की एक समिति नियुक्त करे जो कि नवीनतम खोजों के अनुसार देश का इतिहास नये सिरे से लिखवाये। ऐसे इतिहास में उन नवीनतम खोजों को प्रमुख स्थान दिया जाये जिनसे सिद्ध हो चुका है कि आर्य अथवा वेदों के अनुयायी ही इस देश के प्राचीनतम निवासी थे जिनके सरस्वती कालीन सभ्यता के चिन्ह राजस्थान आदि के पुरातात्विक खुदाईयों में प्राप्त हो चुके है, राम एवं कृष्ण ऐतिहासिक महापुरुष थे, आदि आदि।

निश्चय ही ऐसा इतिहास देशवासियों में देशभक्ति के भाव जाग्रत कर, उनमें देश के अतीत के प्रति गौरवभाव उत्पन्न कर उनमें देश के लिए मरमिटने की भावना उत्पन्न कर सकता है।

हिन्दी को राष्ट्र एवं सम्पर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया जाये

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व विचार व्यक्त किया था कि "देश की एकता के लिए परम आवश्यक है कि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्थान दिया जाये। इसीलिए उनकी मातृभाषा गुजराती होने के बावजूद उन्होंने "सत्यार्थ प्रकाश" आदि अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी को आर्यभाषा की संज्ञा देकर उसी में लिखे थे। उनके अतिरिक्त ब्रह्मसमाज के नेता बंगलाभाषी श्री केशवचन्द्र सेन, पंजाबी भाषी लाला-लाजपतराय, मराठी भाषी लोकमान्यतिलक, गुजराती भाषी महात्मागांधी आदि ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का समर्थन किया था। हमारा स्वाधीनता आन्दोलन भी तब जन-जन का आन्दोलन बना था जबकि कांग्रेस ने हिन्दी को अपने आन्दोलन की भाषा बनाया था। उपरोक्त दृष्टिकोण से प्रेरित होकर ही भारत के संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को भारत की सरकारी एवं सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया था। परन्तु खेद का विषय है कि केन्द्र में पदस्थ कर अंग्रेजीभाषा समर्थक नेताओं एवं अधिकारियों के षड्यन्त्र के कारण आजादी के इतने वर्षो बाद भी हिन्दी व्यावहारिक रूप में देश की राष्ट्रभाषा नही बन सकी। उसी का परिणाम है कि आज देश में अंग्रेजियत, अराष्ट्रीयता, क्षेत्रीयता, अलगाववाद, देशद्रोहिता एवं उपराष्ट्रीयता का बोलबाला है। हिन्दी भाषी क्षेत्रों, महाराष्ट्र, गुजरात आदि क्षेत्रों जहां हिन्दी का प्रचार प्रसार है, राष्ट्रवाद की भावनाएं प्रबल हैं वहां नागालेण्ड, तामिलनाडु आदि क्षेत्र जहां हिन्दी का विरोध है, अराष्ट्रीयता एवं अलगाववाद के गढ़ बने हुए हैं।

आज आवश्यकता है कि भारत के प्रत्येक बच्चे को अपनी मातृभाषा के साथ-साथ हिन्दी की शिक्षा प्रारम्भ से ही दी जाये तभी देश एक सुसंगठित राष्ट्र के रूप में खड़ा होकर महान, शक्तिशाली, सुखी एवं सम्पन्न बन सकता है।

संस्कृत भाषा की शिक्षा अनिवार्य की जाये

इतिहास साक्षी है कि संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। वह प्राचीनकाल से भारत की सम्पर्क भाषा के रूप में व्यवहृत होती रही है। हमारा अमूल्य, ज्ञान, विज्ञान, साहित्य उसी भाषा में है। देश के आधुनिक भारतीय साहित्य के सृजन में भी वह प्रेरणा की स्रोत रही। आधुनिक भारत के स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक तथा मदनमोहनमालवीय आदि महापुरुषों ने संस्कृत साहित्य से प्रेरणा लेकर देश को नया ज्ञान एवं नई दिशा दी। इसी से देश के स्वतन्त्र होने के बाद भारतीय संविधान के निर्माताओं ने उसे संविधान की भारतीय भाषाओं की सूची तथा शिक्षानीति के निर्धारकों ने त्रिभाषा सूत्र में उसे स्थान दे दिया था। परन्तु दुख का विषय है कि प्रधानमन्त्री श्री राजीवगांधी द्वारा बनाई गई नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत उसे त्रिभाषा सूत्र से निकाल दिया गया। परन्तु प्रसन्नता का विषय है कि सर्वोच्च न्यायालय ने एक आदेश द्वारा उसे पुन त्रिभाषा सूत्र में स्थान दे दिया है।

निस्सन्देह संस्कृत भाषा जो कि सारे देश में समान रूप से प्रचलित है, हमारी राष्ट्रीय एकता की प्रबलसूत्र है। इसी से भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माता डा0 भीमराव अम्बेदकर ने इसे देश की राष्ट्रभाषा बनाने की हिमायत की थी परन्तु दुर्भाग्यवश किन्हीं कारणों से वैसा नहीं हो सका। आज आवश्यकता है कि भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता के प्रबल सूत्र संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार की ओर समुचित ध्यान दिया जाये तथा इसकी पढ़ाई की व्यवस्था अनिवार्य रूप से देश के सभी विद्यालयों में हो।

सबको एक सी शिक्षा दी जाये

आज देश में अनेकता, फूट एव वैचारिक विभिन्नता का एक प्रमुख कारण भिन्न-भिन्न धार्मिक वर्गों को दी जाने वाली भिन्न-भिन्न शिक्षा है। निस्सन्देह इस देश के संविधान निर्माताओं ने संविधान में अल्पसंख्यक धार्मिक वर्गों के लिए अलग शिक्षा संस्थाएं चलाने का अधिकार प्रदान कर भारी भूल की। उसी का परिणाम, है कि ऐसी अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थाएं आज अराष्ट्रीय एवं अलगाववादी गतिविधियों की केन्द्र बनी हुई। आज आवश्यकता है कि संविधान के उपरोक्त प्राविधान

— शेष पृष्ठ ७ पर

यावद् धरा संस्कृतमस्तु तावत्

• धर्मवीर शास्त्री
डी आई/५१ पश्चिम विहार नई दिल्ली

(1)

वारांगनेव नृप-नीति रुदीर्यते स्म
वारांगनेव खलु सेति सुसिद्धमेतत् ।
तत्स्वत - नेतृ - चरितं ह्यवलोक्यतां भोः
सत्तेप्सया स्व जननी - हननोद्यतास्ते ।।

हिन्दी-अनुवाद

जब तक धरती है तब तक संस्कृत रहे।

राजनीति को वेश्या के समान कहा जाता है, किन्तु यह सिद्ध हो गया है कि यह वेश्या जैसी नहीं, वेश्या ही है। राजनेताओं का चरित्र देखो कि ये सत्ता के लालच में मातृवध के लिये भी उद्यत हैं।

(2)

गीर्वाणगीरियमहो, वचसां प्रसूतिः
शब्दो मनुष्य - हृदय - प्रथम - प्रकाशः ।
भाषामयं भगवतः श्वसितं च यस्यां
मातेव शास्ति सकलेऽपि च जीवने नः ।।

अहो! यह सुरभारती तो वाङ्मय का आदिम स्रोत है, मानवीय संवेदना की प्रथम शाब्दिक अभिव्यक्ति है। परमेश्वर का भाषामय निःश्वास इसी में है तथा यह ही हमारा मातृवत् शासन मृत्युपर्यन्त करती है।

(3)

याऽऽस्माकं - संस्कृति - शिरा - रुधिर - प्रवाहो
याऽस्मान् विवेक - पयसा सततं प्रमार्ष्टि ।
रक्षां करोति विपदो विधुरेऽपि काले
नाऽस्मान् जहाति नितरां समुपेक्षिताऽपि ।।

जो (यह संस्कृत) हमारी संस्कृति की शिराओं में रक्तवत संचरित है, जो ज्ञान-विज्ञान रूपी पानी से सदैव हमारा शोधन करती है। जो विपरीत परिस्थितियों में भी विपत्ति से हमारी रक्षा करती है, तथा हम मूर्खों के द्वारा निरादृत होती हुई भी हमें नहीं त्यागती।

(4)

यस्तामिमां सुरगिरं यतते निहन्तुं
या संस्कृतेः सुरतरूपवनं छिनत्ति।
ज्ञेयः स किन्न जननी-वध-कल्मषाक्तो
भूत्वा विशिष्ट - पुरुषोऽपि स बालिशोऽस्ति।।

ऐसी उस संस्कृत को जो समाप्त करने का यत्न करता है, जो संस्कृति के पारिजात-कानन को उजाड़ना चाहता है, क्या उसे मातृ वध का पाप करने वाला नहीं मानना चाहिये। ऐसा व्यक्ति चाहे जितना बड़ा हो, मूर्ख ही कहा जायगा।

(5)

नार्यो न हिन्दुरथवा न स भारतीयः
सूनुर्मनोर्न जननी - हननोद्यतत्वात् ।
कोऽसौ - न वेद्मि - किमिवास्ति स भाषणीयः
सत्तैकतत्वमिति दुष्ट - मतिः स कश्चित् ।।

ऐसे व्यक्ति को क्या कहें, क्या कहकर पुकारें। न तो वह आर्य हो सकता है न हिन्दू, यहाँ तक कि भारतीय भी नहीं। उसको कौन, क्या से परिभाषित करना कठिन है। हाँ, वह कोई ऐसा व्यक्ति है जो राजसत्ता को एक मात्र परम तत्व मानता है और येन केन प्रकारेण उसे बनाये रखने के प्रयास में निरत है।

(6)

जाल्मः स हन्ति जननीमिव देववाचं
भीतोऽस्ति किन्न हृदये विदधन्महाघम् ।
तस्मात्तु सौम्य - हृदयाः परदेशिनोऽपि
ये संस्कृतं सुकृतिनो भृशमाद्रियन्ते ।

वह नृशंस मातृतुल्य संस्कृत को मार रहा है। क्या इतना भयंकर पाप करते हुए उसे डर नहीं लगता? उसकी तुलना में तो विदेशी ही अच्छे हैं जो संस्कृत को भरपूर आदर देते हैं।

— शेष पृष्ठ ७ पर

§7§

धर्मो न कोऽपि सुनयो न च राजनेतुर
मूल्येषु तस्य प्रणयो न च नैतिकेषु ।
स्वार्थं निधाय पुरतः कुरुते स कार्यं
सिद्धं तदत्र सुरगीः प्रहृतेन नस्य ।।

सत्य यह है कि सियासी आदमी का न कोई धर्म होता है और न कोई अच्छी नीति। वह प्रत्येक कार्य में स्वार्थ को ही आगे रखता है। यह तथ्य उसके द्वारा संस्कृत पर घातक चोट करने से सिद्ध हो गया।

§8§

रे रे संस्कृत - वैरिणः स्व हृदयेष्वेतत् सुनिर्धार्यतां
लोकैरर्पित - सत्तया सुमुदिता मा भूत, सा नश्वरा ।
दिव्येयं सुरगीः सुसत्वघटिता नश्या न कालत्रये
तन्नाशोद्यत - बाहवस्तु विलयं यूयं ध्रुवं यास्यथ।।

संस्कृत के विनाश का इतिहास तो आपने भी रचा है, पर यह रावण की परम्परा का है। जिन्होंने संस्कृत की रक्षा का इतिहास रचा उनका आचरण निश्चय ही राम के तुल्य है। सीता के समान संस्कृत के लोप की चेष्टा करने वाले रावण के सगोत्र हैं जिन्होंने उसकी रक्षा का प्रयत्न किया उन्होंने रामत्व की स्थापना की।

§9§

ऐतिहयं रचितं भवद्भिरपि तत् किन्त्वस्मिन् लंकापते -
रैतिहयं रचितं च संस्कृत - जने रामस्य तन्निश्चिनम्।
सीता - संस्कृत - लुम्पनोद्यम - रना लंकेश-वंशोद्भवा -
स्त्रातुं ये च प्रयेतिरे सुरगिरं तैरद्य रामायितम् ।।

अरे संस्कृत के शत्रुओ, अच्छी तरह समझ लो कि जनता से प्राप्त शक्ति स्थायी नहीं है, यह संस्कृत तो दिव्य है, विशेष सत्व से निर्मित है, अतः त्रिकाल में भी नष्ट होने वाली नहीं, हाँ, उसे मारने के लिये भुजाए उठाये तुम लोग नहीं बचोगे।

§10§

रामे जीवति सिन्धवीति विदिते श्री चित्तले लक्ष्मणे
वीरे मारुति - मुद्गले सहगले व्यासे कपीशोपमे।
बोधे स्वामिनि वै वशिष्ठ सुगुरौ ओझा - रमैया द्वये
सूर्येन्द्वोरनुहारिणीह सुरगीः - सीना-हृतौ कः क्षमः।।

सुनो, सिन्धवी उपनाम से सुविदित राम के जीवित होते, लक्ष्मण तुल्य चितले के रहते, मुद्गलरूपी हनुमान् के होते, सुग्रीव के समान सहगल §श्री रामनाथ§ तथा व्यास §प्रो0 वेदव्यास§ के रहते, बोध §स्वा0-आनन्दबोध§ के गुरुवशिष्ठ वत् मार्ग- निर्देशन करते तथा ओझा एवं रमैया के सूर्य-चन्द्र-तुल्य न्याय का प्रकाश करते संस्कृतरूपिणी सीता के हरण में कोई समर्थ नहीं है।

§11§

कोऽयं नयो यो जनि सर्वत प्राग् या सर्वभाषैक सुसिद्ध-योनिः।
निष्कास्यते सा गृहतो गृहे च संस्थाप्यते या बलवत्प्रविष्टा।।

यह कौन-सा न्याय है कि जिसका प्रादुर्भाव सबसे पहले हुआ और जो समस्त भाषाओं की उत्पत्ति का स्रोत है उसको घर से निकाला जा रहा है और जो घर में बलात् घुस आई उसे सादर स्थापित किया जा रहा है।

§12§

सूत्रं त्रिभाषापरकं न विद्मो न राजनीतेः कपट - प्रबन्धान्।
विद्मो वयं केवलमेतदेव यावद्धरा संस्कृतमस्तु तावत्।।

हम नहीं जानते त्रिभाषा सिद्धान्त किसे कहते हैं और न हम राजनीति के छल - छिद्रों को जानते हैं। हम तो सिर्फ एक सीधी-सी बात जानते हैं कि जब तक यह धरती है तब तक संस्कृत रहे।

पृष्ठ ४ का शेष.....

दीपदयानन्दज्योति निखिल निखर रही है। सर्वत्र यज्ञहवन की समिधा-हविषा की अमृतसलिला सुवासित धारा नभमण्डल से बहती पर्यावरण को परिशुद्ध बना रही है। वेदमन्त्रों के समवेत सस्वर गायन से मानव मन व्रत सत्कर्मों की ओर "प्रचोदयात्" हो आनन्द से थिरक रहा है। हविषा की सौरभमयी ज्योति से बहिरंग आकाश को पर्यावरण अन्तरंग चिदाकाश को परिशुद्ध बना रहा है। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दीपावली सतत् सन्मार्ग दिखाती जा रही है।

विकीर्ण दिव्यदाह भी ज्योति फैलती जा रही है, फैलती जा रही है और निस्सीम नभ पर वैदिक दीपमालिका आलोकित होती हुई "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के सत्संकल्प में मन्त्र-मुग्ध-विभोर हो रह हैं। वैदिक वैजयन्ती इस शुभ्र आलोक मे फहर रही है। आज हम इसे सतत् फहराने में कृतसंकल्प हो रहे हैं।

पृष्ठ ५ का शेष....

को समाप्त कर देश के सभी बच्चों को एक सी शिक्षा दी जाये। निश्चय ही इससे देश में एकता, समानता, राष्ट्रीयता की भावनाओं में वृद्धि होगी तथा अराष्ट्रीय एवं पृथकतावादी तत्व कमजोर पड़ेंगे।

योग की एवं नैतिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाये

दुःख का विषय है कि स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद हमारा नैतिक पतन तेजी से हुआ। आज हमारे वे आदर्श मिट रहे हैं जिनकी बदौलत हम हजारों वर्षों तक विदेशी दासता के बावजूद अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने तथा स्वाधीनता की लड़ाई में सफल रहे। आज आवश्यकता है। कि विद्यालयों में नैतिक शिक्षा अनिवार्य रूप से देकर उन्हें सुसंस्कृत किया जाये। साथ ही साथ उन्हें योग की शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य से परिचित कराया जाये ताकि वे रोगों से बचकर स्वस्थ बनें।

सबके लिए समान नागरिक संहिता §सिविलकोड§ बनायी जायें।

संसार में भारत ही ऐसा देश है जहां के हिन्दू, मुसलमान एवं ईसाई धर्मावलम्बियों के अलग-अलग सिविलकोड हैं। निस्सन्देह यह हमारी एकता में बाधक तथा पृथकता को बढ़ाने वाला है। इसीलिए भारतीय संविधान के निर्माताओं ने समान सिविलकोड के पक्ष में विचार अंकित किये थे। परन्तु दुर्भाग्यवश देश के राजनेताओं ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। उन्हें चाहिए कि वे संविधान की भावना के अनुसार देश के सभी नागरिकों के लिए समान सिविलकोड बनाकर विभिन्न धार्मिक वर्गों के बीच विद्यमान खाई को पाटने के लिए कदम उठायें। निश्चय ही इससे देश में भावात्मक एकता बढ़ेगी एवं पृथकतावादी शक्तियां पराजित होंगी। कोई कारण नहीं है कि जब कि दस लाख जनसंख्या वाले लघु भारत के नाम से विख्यात मारीशस ने कामन सिविल कोड बना लिया तो भारत वैसा न कर सके।

प्रचार माध्यमों में सुधार किया जाये

निस्सन्देह इस समय फिल्मों, टेलीविजन, रेडियो के कार्यक्रमों का जनसाधारण पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। परन्तु दुख का विषय है कि उनके कार्यक्रम जनसाधारण विशेषतः बच्चों में अश्लीलता, अनुशासनहीनता, अशिष्टता एवं हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं। भारत सरकार को चाहिए कि वह उनके कार्यक्रमों में ऐसा सुधार करें, ताकि नैतिकता, अनुशासन, शिष्टाचार, देशभक्ति, परसेवा एवं कर्तव्यपरायणता को बढ़ावा एवं बल मिले।

आवश्यकता है कि भारत सरकार एवं सामाजिक संगठन उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर अपनी नीतियों एवं कार्यक्रमों का निर्धारण करें। ◘

विचार गोष्ठी

मेरठ। शुक्रवार, 12 जनवरी 1990, आर्यसमाज मन्दिर साकेत में "विवेक-दयानन्द मंच' के तत्वावधान में, स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस पर, एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ0 विजय शंकर सिंह (अध्यक्ष, जैव-रसायन विभाग, मेडिकल कालेज, मेरठ) ने की। मुख्य अतिथि प0इन्द्रराज (अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि, उ0प्र0, रहे। विभिन्न संगठनों के, कर्मठ युवा, वक्ताओं ने, स्वामी जी के जीवन एवं कार्यों से सम्बन्धित अनेक पहलुओं पर, अपने-अपने विचार व्यक्त किये। सर्व प्रथम आर्यसमाज, साकेत के पुरोहित, प0 गौतम शास्त्री ने वेद-मन्त्रों से ईश्वर-स्तुति की। कुलदीप नारायण ने अर्चना की। तत्पश्चात, "वीरेश्वर, विश्वेश्वर, विवेकानन्द वाहिनी", मेरठ के सचालक, श्री रमेशचन्द्र शर्मा जी ने स्वामी जी का परिचय दिया, तथा बताया कि स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे। उन्होंने कहा था 'यदि महान् दयानन्द ना होते, तो इतने हिन्दू ना होते"। श्री शर्माजी ने युवकों को स्वामी जी की ओर प्रेरित किया। कु0 अनीता ने स्वामी जी द्वारा रचित "सन्यासी गीत" सुनाया। कु0 रंजना ने 'सन्यासी और गृहस्थ में कौन बड़ा इस पर एक कहानी सुनायी। अनिल चौहान (मेडिकल कालेज) ने, सामाजिक विसंगतियों पर एक स्वरचित कविता पढ़ी। श्री अजय त्यागी (मेडिकलकालेज) ने स्वामी जी के मानववाद पर प्रकाश डाला। डॉ0 विजय भसीन ने स्वामीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

पं0 जयन्त पाण्डेय (महामन्त्री राष्ट्र-रक्षा युवा आन्दोलन, उ0प्र0, ने स्वामी विवेकानन्द से प्रेरणा लेकर, आर्यसमाज द्वारा संचालित कार्यों में सहयोग देने एव युवाओं से आगे आने की अपील की। उन्होंने सामाजिक विषमता को हटाकर समता पर आधारित, समाज-निर्माण की ओर युवकों का आह्वान किया। श्री रवीन्द्र जी राजौरा (संगठन मन्त्री, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्) ने विद्यार्थियों के लिए, सामाजिक पुनर्निर्माण के सन्दर्भ में, स्वामी जी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। डॉ0अजय-जैन (स्वागताध्यक्ष, विवेकानन्द जयन्ती) ने स्वामी जी के गहन वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया। डॉ0 रमेश आर्य (सयोजक, विवेक-दयानन्द मच) ने स्वामी जी के अनुसार, वेदों की सर्वोपरि महत्ता प्रतिष्ठित की। उन्होंने बताया कि वेदों के सिद्धान्त, सार्वभौम, सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक हैं। स्वामी च द्रदेव (आर्य, वेदज्ञ विद्वान) ने स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचार प्रस्तुत किये तथा स्वामी जी के अनुसार, बलवान् एव चरित्रवान बनने पर जोर देते हुए, रोचक बातें, सुनाकर श्रोताओं को आह्लादित कर दिया। आचार्य प्रभुदत्त स्वामी (सस्कृत विद्वान्)ने भारतीय सस्कृति पर चलने का उपदेश देते हुए, भाव-विभोर होकर, स्वामी जी को श्रद्धांजलि, अर्पित की। मुख्य अतिथि पं0 इन्द्रराज जी ने, महर्षि दयानन्द, स्वामी रामकृष्ण-परमहंस व नरेन्द्रनाथ के मिलन की, अपूर्व घटना सुनाकर, श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया तथा स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं को ग्रहण करने पर बल दिया। डॉ0 एस0के0 राय (पूर्व वनस्पति-विज्ञान विभागाध्यक्ष, मेरठ कालेज मेरठ) ने कार्ल मार्क्स व स्वामी विवेकानन्द के समाजवाद को बहुत सुन्दरता से स्पष्ट किया।

कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि, मेडिकल कालेज, मेरठ के हृदयरोग विशेषज्ञ प्रो0 एस0एम0एल0 श्रीवास्तव ने, परहित सेवा को ही धर्म बताया। उन्होंने कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद दिया, तथा शक्ति और निर्भयता प्राप्त करना, स्वामी जी का सन्देश बताया। अन्त में कार्यक्रम के अध्यक्ष, डॉ0 विजय शंकर सिंह, ने स्वामी जी की शिक्षाओं के प्रसार पर बल देते हुए, महापुरुषों की जयन्ती मनाने पर जोर दिया व कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम का संचालन "विवेक-दयानन्द मच" के संयोजक, डा0 रमेशआर्य (मेडिकल कालेज) ने किया। कार्यक्रम बहुत प्रशंसनीय रहा। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को, एक मंच पर लाकर, राष्ट्र-निर्माण में लगाना ही इस 'विवेक-दयानन्द मच' का मुख्योद्देश्य है।

- संवाददाता।

गणतन्त्र दिवस के पुनीत पर्व पर आर्यकुमार सभा बिजनौर द्वारा आकर्षक समारोह

गणतन्त्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व के पुनीत अवसर पर आर्यकुमारसभा, बिजनौर की ओर से 26 जनवरी को मध्यान्ह 3-00 बजे से आर्यसमाज-मन्दिर, सिविल लाइन्स बिजनौर के प्रांगण में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री अतुल कुमार गुप्ता, अध्यक्ष ने किया। संयोजक थे श्री प्रसन्न कुमार-शर्मा समारोह समिति के सचिव।

इस कार्यक्रम में आर्यकुमार सदस्यों द्वारा रोचक एव ज्ञानवर्धक क्विज (सामयिक विषयों पर प्रश्नोत्तरी) कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ जिसमें 4/4 आर्य कुमारों की चार टीमों ने भाग लिया। इस अवसर पर जिला सभा के मन्त्री श्री-पुरेन्द्र सिंह जी ने भी अपने वरद् आशीर्वाद से आर्य कुमारों को प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त रंगारंग कार्यक्रम में राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गीत, कविता एवं भाषणों का भी आयोजन किया गया। नगर के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री अनय कुमार एडवोकेट ने समारोह का उद्घाटन किया।

तरुणाई के प्रतीक आर्यकुमार आन्दोलन के प्रेरक स्तम्भ श्री जयनारायण अरुण ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रादेशिक स्तर पर शीघ्र ही एक विशाल क्विज कार्यक्रम करने की घोषणा की और विजेता टीमों को पुरस्कार वितरित किया।

- संवाददाता।

धर्मरक्षा अभियान

- दिनांक- 20-1-90 को धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधिसभा उ0प0 के प्रधान प0 इन्द्रराज जी के निर्देशन पर राष्ट्र-रक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0 के महामन्त्री जयन्त कुमार पाण्डेय अपने सहयोगियों श्री वेद प्रकाश-गुप्त, डा0 अजय जैन, डा0 रमेश आर्य तथा अन्य सहयोगियों के साथ सिख धर्मान्तरण से प्रभावित मेरठ जनपद के नंगला हरेरु तथा मवाना तहसील के विभिन्न ग्रामों का व्यापक दौरा किया तथा हरिजनों (जाटव) और सवर्णों से जन सम्पर्क कर हरिजनों द्वारा सिख बनने की प्रक्रिया रोकने का आंशिक रूप से सफल प्रयास किया।

हरिजनों के साथ वार्तालाप के द्वारा यह बात स्पष्ट हो गई कि उत्पीड़न ही धर्मान्तरण का प्रमुख कारण है। भूतपूर्व विधायक (मुसलमान) द्वारा तथा मुस्लिम समुदाय द्वारा हरिजनों पर निरन्तर अत्याचार तथा अन्याय होते रहे हैं। सवर्णहिन्दुओं ने मुसलमानों के अन्याय तथा अत्याचार का प्रतिरोध करने में हरिजनों का साथ नही दिया। हरिजनों द्वारा प्रतिरोध करने पर इनको मारा पीटा गया तथा उनके जानमाल को क्षति पहुँचाई गई। ऐसी परिस्थिति में सिखों द्वारा सुरक्षा का आश्वासन तथा आर्थिक सहायता हरिजनों के व्यापक धर्मान्तरण का कारण बन गई है।

प्रशासन द्वारा भी प्रभावशाली मुस्लिम नेताओं के संरक्षण तथा पक्षपात ने भी अपना दुष्परिणाम दिखाया है। प्रशासन द्वारा हरिजनों की मुख्य मांगो, जिनमें उनकी सुरक्षा तथा आर्थिक सहायता की मांग प्रमुख है, की उपेक्षा करना भी धर्मान्तरण का एक कारण है।

वहां के प्रधान अफजल ने बदमाश बुलाए तथा हरिजनों को तरह-तरह से आतंकित किया। सवर्णों ने मुसलमानों का पक्ष लिया तथा मुसलमानों द्वारा ९ जुलाई 88 को हरिजनों के मकान जलाए गए तथा अत्याचार किया गया। प्रशासन द्वारा इस मामले में कोई कार्यवाही न करना तथा सवर्णों द्वारा भी साथ न देना धर्मान्तरण का प्रमुख कारण है। हरिजनों द्वारा बन्दूकों के लायसेन्स भी प्रशासन द्वारा अब तक नही दिए गए। राष्ट्र-रक्षा युवा आन्दोलन 'धर्मरक्षा महाभियान' के अन्तर्गत इस धर्मान्तरण को रोकने का कठिन प्रयास कर रहा है तथा यह अभियान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री प0 इन्द्रराजजी के संरक्षण तथा निर्देशन में सचालित हो रहा है। प इन्द्रराज जी ने इस गर्मरक्षा महाभियान के सद्कार्य में सबसे सहयोग की अपील की है।

- जयन्त कुमार
महामन्त्री राष्ट्र-रक्षा युवा आन्दोलन
उ0प्र0,लखनऊ।

आर्य केन्द्रीय सभा- गाजियाबाद

प्रधान- श्री हुकमचन्द चराईपोता
मन्त्री- श्री डॉ0 वीरपाल लंकार
कोषा0- श्री शान्ति स्वरूप

अमर बेल बन आये

डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज,
बरेली- 243005

जिन्हें किया श्रम जल से रोपित,
अमरबेल बन आये।
सुखा रहे हैं पोषकजल को,
जो माली थे, उनके ग्राहक,
गीने दृग घड़ियाली।
समझा था ऋतुराज जिन्हें
पतझड़ होकर हैं छाये।
अर्पण किया जिन्हें सब कुछ,
तिलतिल कर देह मिटाई।
वही छीनते "पानी" भी,
कैसी धारा है आई।
पय का पान कराया जिनको,
गरल उगलते पाये।
सौतेलेपन की है पूजा,
पर मातृत्व उपेक्षित,
उच्च स्वर्ग से भी कहलाई,
वही शाप बन जीवित।
शरसन्धान नहीं दनुजों हित,
क्लियों पर बरसाये।
जिनके लिए "नमन" हर छोटा,
उन पर बज्र गिराते।
गति को वर्धित करने वाले,
कारा में दुख पाते।
जिनसे पाई शक्ति, उन्हें ही
कह अशक्त गदमाये।
नहीं कल्पना के इंगित पर,
स्वप्न कभी जग पाये।
पर संकल्पों के द्वारा,
पत्थर भी तो पिघलाये।
जिन्हें कहा ऐश्वर्य अमर,
करके विपन्न, हर्षाये"।

आर्यसमाज नवाबगंज (गोण्डा) का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नवाबगंज (गोण्डा) का 65वाँ वार्षिकोत्सव दि० 19 से 20 फरवरी 1990 तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। जनता से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

सभा का वर्ष

1- उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं जिला सभाओं के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि अब भविष्य में सभा का वर्ष 31 मार्च को समाप्त हुआ करेगा। अत. आर्यसमाजे एवं जिला सभायें भी अपना वर्ष सभा के वर्ष के साथ-साथ समाप्त करें।

2- आर्यसमाजे एवं जिला सभायें अपने आर्यसभासदों की सूची बनाकर 31 मई 1990 तक अपना वार्षिक निर्वाचन अवश्य कर लें। यदि किसी कारणवश न कर सकें, तो कारण अंकित करते हुए सभा से आज्ञा प्राप्त करके ही निर्वाचन सम्पन्न करें।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

जिला सभा बिजनौर-गढ़वाल का निर्वाचन - श्री अरुण सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित

आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल का वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सभा प्रधान श्री जय नारायण अरुण की अध्यक्षता में आर्यसमाज बिजनौर के वेद भवन में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अधिवेशन में बिजनौर-गढ़वाल के कोने-कोने से पधारे सैकड़ों प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि श्री श्यामसुन्दर जी जिलाधिकारी ने आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारों और सामाजिक आन्दोलन की सराहना करते हुए बताया कि आज के बदलते हुए युग में जबकि नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है और जाति-पाति, ऊँच-नीच की भावना, आतंकवाद और हिंसा की वृत्ति, प्रबल हो रही है आर्य समाज को आगे आकर काम करने की बड़ी आवश्यकता है।

जिलाधिकारी ने आर्यसमाज के कार्य की सराहना करते हुए सिद्धान्तों पर अमल करने का आह्वान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ, के प्रचार अधिष्ठाता श्री हरिश्चन्द्र आर्य की देखरेख में हुए इस निर्वाचन में सर्वसम्मति से श्री जय नारायण अरुण प्रधान श्री सुरेन्द्र सिंह राजपूत मन्त्री तथा पं0 प्रयाग दत्त कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। प्रचार अधिष्ठाता पद पर श्री राकेश आर्य को निर्वाचित किया गया।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें -

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह नवम्बर 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30/- रु0 है।

नवम्बर 1989

5354,	8[illegible],	8682,	11054,
1109,	11365,	11368,	12765,
12771,	13648,	13650,	14111,
14124,	14127,	14531,	14535,
14538,	14545,	14873,	148[illegible]5,
14876,	14877,	14879,	14880,
14881,	14882,	14883,	14884,
14885,	14887,	14888,	14890,
14891,	14892,	14893,	14894,
14895,	14896,	14899,	14900,
14901,	14902,	14903,	14904,
14905,	14906,	14907,	14908,
14909,	14910,	14911,	14912,
14913,	14914,	14915,	14917,
14919,	14920,	14921,	14925

व्यवस्थापक

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हसनगंज (पार) डालीगंज लखनऊ का वार्षिकोत्सव दि0-10 से 12 फरवरी 1990 तक धूमधाम से मनाया जायगा। इसमें आर्यजगत के विद्वान, भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

पशु बलि प्रथा के विरुद्ध प्रचार

आर्यसमाज के प्रचारक तथा पर्वतीय क्षेत्रों में पशु बलि प्रथा के विरुद्ध प्रचार करने वाले श्री गबरसिंह-तथा कलकत्ता आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर पधारे उन्होंने कालीघाट पर होने वाली पशुबलि प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

मकर संक्रान्ति पर्व सम्पन्न

वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र नजीबाबाद में श्री आशा राम जी आर्य के निवास स्थान पर मकर संक्रान्ति पर्व मनाया गया।

शोक समाचार

आर्यसमाज कायमगंज व आर्यसमाज सकरावाँ (फर्रुखाबाद) ने डा0 मुंशीराम-शर्मा "सोम" के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पास किए और परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

श्री लक्ष्मण देव वैदिक समिति (रजि0) लखनऊ के समस्त सदस्यों ने अपने अध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव महाना के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया तथा दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार के धैर्य प्रदान हेतु परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की।

आर्य पुरोहित की आवश्यकता

वैदिक प्रचार मे अटूट निष्ठा रखने वाले तथा संस्कार कराने में दक्ष एक योग्य आर्यपुरोहित की आवश्यकता है। निवास की आर्यसमाज मन्दिर में निःशुल्क व्यवस्था के साथ उचित मासिक वृत्ति भी दी जायेगी। लिखें।

- बनवारी लालगर्ग
प्रधान
आर्यसमाज खैर (अलीगढ़)

आवश्यक सूचना

ख्याति प्राप्त सफल आर्यभजनोपदेशक 49 पुस्तकों के लेखक एवं गायक व्यवहार कुशल दक्षिणा श्रद्धानुसार लेते हैं एक बार सेवा देकर कृतार्थ करें।

पता -

ओ3म्
कुंवर सुखपाल आर्य-प्रभाकर
भजनोपदेशक
335- मल्हूपुरा, सरवटरोड,
मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)

ध्वजा ओ३म् की फहरावें

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
एडवोकेट, कानपुर

अर्द - शताब्दी - समारोह का,
आया है अब शुभ अवसर ।
किया आर्य - जन ने सत्याग्रह,
जब हैदराबाद - भू पर।

थी वह मुस्लिम शासक की
तब बड़ी रियासत एक वहाँ।
"आसफजाह निजामुलमुल्क"
कर रहा शासन क्रूर जहाँ।

हिन्दू - जनता पर करता था,
नानाविधि वह अत्याचार ।
विवश हिन्दुओं को सहने ,
पड़ते थे उसके क्रूर प्रहार।

बड़ा निरंकुश उसका शासन।
सहन करें कटु अत्याचार
या फिर करें धर्म - परिवर्तन -
मुस्लिम धर्म करें स्वीकार ।

धीरे - धीरे विषम परिस्थिति
लोगों के सम्मुख आई।
सत्याग्रह का बिगुल बजा
देने की सबने ठहराई।

जब - जब हुआ धर्म पर हमला,
बढ़ कर आया आर्यसमाज ।
दीन - दुखी हिन्दू जनता - हित
लड़ने आया आर्य समाज ।

"नारायण स्वामी" जी का
नेतृत्व मिला था तब पावन ।
जिससे आया भारत भर के
आर्य - जगत में नव जीवन।

हुई घोषणा सत्याग्रह की।
उन्नीस सौ उनतालीस सन् ।
दौड़ पड़े तब सभी दिशा से
सारे आर्य वीर सज्जन ।

पहुँच हैदराबाद, वहाँ पर
सत्याग्रह करते सब लोग।
वाह - वाह। क्या जोश । वहाँ पर
जेलों को भरते सब लोग।

थी जेलें भर गई सभी।
थी कोई नहीं रही खाली।
कितनों ने ही निज प्राणों की
आहुति भी तब दे डाली।

और धर्म की विजय हुई फिर।
अत्याचारी दहल उठा।
क्रूर निरंकुश अपने बेजा
नियमों को था बदल उठा।

अर्द - शताब्दी - समारोह की
पुण्य घड़ी फिर आई है।
पुण्य - स्मृति उस धर्म - युद्ध की
जग - जीवन में लाई है।

आर्य - वीर - जन दल के दल
हैदराबाद में फिर जावें।
फूँकें अपने शंख वहाँ पर।
ध्वजा ओ३म् को फहरावें।

साम्प्रदायिकता क्या है?

• लेखक . पं. गंगाप्रसाद विद्यार्थी
एम. ए. एम. फिल. जबलपुर सिटी

यदि हिन्दू यह कहे कि मैं हिन्दू हूँ, या मुसलमान यह कहे कि मैं मुसलमान हूँ, तो क्या यह साम्प्रदायिकता है? क्या अपने मत, मज़हब, दीन या धर्म की बातों का पालन करना साम्प्रदायिकता है? क्या ईश्वर, धर्म और धर्म पुस्तक पर आस्था रखना साम्प्रदायिकता है? क्या अपनी जाति विशेष, सम्प्रदाय या धर्म वालो की सेवा करना और उसके लिए संस्था बनाना साम्प्रदायिकता है? यदि नहीं, तो फिर साम्प्रदायिकता क्या है? वस्तुतः दूसरे सम्प्रदाय या उसके लोगों को बुरा कहना या उनके खिलाफ साजिश करना साम्प्रदायिकता है। बहुमत की बात न मानकर उनके खिलाफ अल्पमत का पोषण करना साम्प्रदायिकता है।

किसी भी देश की एक निश्चित सीमा होती है और लिखित या अलिखित उसका एक निश्चित संविधान होता है। देश के किसी भूभाग या उसके कुछ लोगों को उस संविधान से बाहर रखना साम्प्रदायिकता है। देश के संविधान में स्वीकृत राजभाषा को राजकाज में प्रयुक्त न करना भाषा सम्बन्धी साम्प्रदायिकता है। एक ही प्रदेश में दो-दो राजभाषायें चलाना साम्प्रदायिकता है। यदि आवश्यक हो तो भाषा के आधार पर दो अलग-अलग राज्य क्यों नहीं बना देते। मुझे याद आता है कि जब स्वर्गीय सम्पूर्णानन्द जी उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री थे और उत्तर प्रदेश की राजभाषा हिन्दी स्वीकृत की गई थी तो उर्दू के कुछ हिमायती उनके पास पहुँचे तो उन्होंने उनसे कहा कि मुझसे चाहे जितने उर्दू के स्कूल खुलवालो, अध्यापक रखवा लो, पुस्तकें छपवालो, एकेडेमी बनवा लो परन्तु राजभाषा हिन्दी ही रहेगी, तब दस वर्ष बाद यह शिकायत लेकर न आना कि हिन्दी न जानने के कारण हमारे लड़कों को सरकारी नौकरी नहीं मिल रही है।

कहते हैं कि जब कमालपाशा तुर्की के अधिपति बने तो उसने निश्चय किया कि तुर्क देश की भाषा तुर्की होगी, अरबी नहीं रहेगी। उनके सिपहसालारों ने उन्हे सलाह दी कि यह भाषा परिवर्तन करने में लगभग चौदह साल लगेंगे। कमाल पाशा ने कहा ठीक है, परन्तु अब तुम तुरन्त यह समझ कर काम करो कि वे चौदह वर्ष इसी क्षण समाप्त हो चुके है इसे कहते हैं काम करने की लगन, नहीं तो काम न करने के बहाने अनेक हैं। इसी प्रकार जब सरदार-वल्लभभाई पटेल भारत के प्रथम गृहमन्त्री बने तो उनसे भारत के सभी अंग्रेज कर्मचारियो के एक साथ छुट्टी पर विलायतखाना कर दिया और रिटायर होने की अवधि तक उन्हें बिना कुछ काम किए इंगलैण्ड मे तनख्वाह मिलती रही। पटेल का कहना था कि भारतीय अधिकारी अभी से जिम्मेदारी सम्भालें, भले ही अनुभव न होने से वे गलतियां कर बैठें। पर वे गलतियां जानबूझ कर की गई नहीं होगा, तब अनुभव प्राप्त करने से पहिले समय क्यों गंवाया जाय।

पूरे भारत वर्ष में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या कुल जन संख्या तीन प्रतिशत से भी कम है फिर भी दूर दर्शन पर समस्त टेक्निकल कार्यक्रम और फेकस इत्यादि अंग्रेजी में ही होते हैं। अर्थात् 97 प्रतिशत अंग्रेजी न जानने वालों से उन्हें कुछ लेना देना नहीं है। उनके लिए तो बस समाचार और नाच गाने ही पर्याप्त हैं। क्या यह घोर साम्प्रदायिकता नहीं है। (ग्रॉस कम्यूनल)।

जाति या जातियों पर आधारित संरक्षण भी इसी प्रकार का है। संविधान बनाने वालो ने सोचा था कि भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारों के प्रयत्न से पिछड़ी जातियों की इतनी द्रुतगति से उन्नति की जाएगी कि दस पन्द्रह वर्षों में ही उन्हें संरक्षण की आवश्यकता न रहेगी। परन्तु पिछड़ी जातियों के शिक्षित व समृद्ध व्यक्ति यह संरक्षण जारी रखवाना चाहते हैं क्योंकि पिछड़ी जातियो के गरीब व अशिक्षित बहुमत के नाम पर उनका स्वयं का लाभ है। इसी तरह कांग्रेस के भी वे संगठित वोट बैंक रहे हैं। अतएव कांग्रेसी भी उन पिछड़ी जातियों को शीघ्र उन्नत दशा में ले जाने में दिलचस्पी नहीं रखते। वे तो चाहते हैं कि वे सदा ही पिछड़े बने रहे और सदा ही उन पर आश्रित रहें जिससे वे उनके स्थिर वोट बैंक बने रहें। इसीलिए आरक्षण को किश्तो में बढ़ाते रहते हैं।

पिछड़े वर्गों के शत प्रतिशत बच्चों को अनिवार्य और उत्तम शिक्षा दी जानी चाहिए उन्हें भोजन, वस्त्र, पुस्तके, निवास, साबुन तेल व सभी आवश्यक वस्तुएं मुफ्त मिलनी चाहिए और कुछ जेब खर्च भी। इसी प्रकार प्रौढ़ों और वृद्धों को भी शिक्षित करना चाहिए और शिक्षित हो जाने पर उन्हें उचित नौकरियां भी मिलनी चाहिए। भले ही इसके लिए अरबो रूपए खर्च हों परन्तु केवल कागज पर नहीं और दलालों की मार्फत नहीं। नहीं तो सारी मलाई दलाल लोग ही चाट जाएंगे और पिछड़ी जातियों का वास्तविक लाभ बहुत ही मन्थर गति से होगा.

देश का भला केवल नए-नए कानून बनाने, लम्बी चौड़ी बहसे करने और आंकड़े छापते रहने से नहीं होगा वह तो सम्पूर्ण संकल्प शक्ति के साथ कुछ अच्छा और उपयोगी करके दिखलाने से होगा। इसके लिए चपरासी से लेकर मन्त्री तक का चरित्र उत्तम बनाना होगा। आज देश में दिनोंदिन चरित्र दुर्बल होता जा रहा है और किसी को इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है सभी को केवल रूपए पैसो की और भौतिक सुख समृद्धि की चिन्ता है।

दुर्बल और दुष्ट चरित्र के व्यक्ति ही साम्प्रदायिक समस्यायें और झगड़े उत्पन्न कराते रहते हैं। सभी कहते हैं "बुभुक्षितः किं नकरोति पापम्"। अरे भूखा पाप करे तो सह्य है। परन्तु यहां तो लखपती से करोड़ पति बनने के लिए ही सारी खुराफातें हो रही हैं। इसलिए चाहे जैसे हो लोगों को चरित्र वान् बनाना ही होगा।

डा॰ मुंशीराम शर्मा "सोम" शान्तियज्ञ

पिथौरागढ़। डॉ0 मुंशीराम जी शर्मा-सोम 89 वर्ष की अवस्था में संसार से चल बसे। वे साधु विद्वान थे। डी-ए0 कॉलेज कानपुर के हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। वह वेद, संस्कृत व हिन्दी की सरिता में स्नान करते थे और आर्यसमाज के माध्यम से हर एक को मानवता के सन्देश देते थे। हिन्दी साहित्य की बड़ी सेवा की। सोम जी के लेख व कवितायें आर्यमित्र, सार्वदेशिक, आर्यजगत आदि में बहुधा पढ़ने को मिला करती थीं।

"गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर)" को आचार्य सोम जी का आशीर्वाद मिला करता था। आर्यसमाज मन्दिर में उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के धैर्य हेतु 21 जनवरी 1990 को शान्ति यज्ञ स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी की अध्यक्षता में सम्पन्न किया गया।

जिला सभा बिजनौर-गढ़वाल का निर्वाचन

आर्योपप्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल का वार्षिक अधिवेशन एवम् निर्वाचन सभा के प्रधान श्री जयनारायण 'अरुण' की अध्यक्षता में आर्यसमाज बिजनौर के वेद-भवन में दिनांक- 21 जनवरी 1990 को सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री श्यामसुन्दर जी आई0ए0एस0 जिलाधिकारी ने भाग लिया। मुख्य अतिथि ने बिजनौर और गढ़वाल के कोने-कोने से सैकड़ों की सख्या में पधारे प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए आर्यसमाज और उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए समाज के सुधारों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि देश की वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज को और अधिक सक्रिय होकर कार्य करने की आवश्यकता है।

उपसभा का वार्षिक निर्वाचन आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री हरिश्चन्द्रार्य के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से श्री जयनारायण जी "अरुण" प्रधान, श्री सुरेन्द्र सिंह राजपूत मन्त्री, श्री-प्रयागदत्त जी जिज्ञासु कोषाध्यक्ष तथा श्री राकेश आर्य प्रचार अधिष्ठाता निर्वाचित हुए।

अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष श्री अतुल कुमार गुप्त ने जलपान आदि की व्यवस्था और श्री सुरेन्द्र कुमार आढ़ती ने सुस्वादु भोजन की व्यवस्था की तथा किरतपुर के क्षेत्रीय प्रधान श्री दीपचन्द्र जी आर्य द्वारा फाइल, पेन व वैदिक साहित्य के साथ महर्षि दयानन्द का आकर्षक कैलेण्डर वितरित किया गया।

आर्यसमाज गुमानपुरा कोटा (राजस्थान)

प्रधान- श्री शालता प्रसाद जी अग्रवाल
मन्त्री- श्री गणपत लाल तापड़िया
कोषा0- श्री रामेश्वर प्रसाद जी विजय

सन् १९९० तदनुसार संवत् २०४६-४७ आर्य पर्वों की सूची

क्रम सं0	नाम पर्व	अ0 तिथि	चन्द्र तिथि	संवत्	वार
1-	मकर सक्रान्ति	14-1-90	माघ कृष्ण 3	2046	रविवार
2-	बसन्त पंचमी	31-1-90	माघ शुदी 5	2046	बुधवार
3-	सीताष्टमी	18-2-90	फाल्गुन कृष्णा 8	2046	रविवार
4-	दयानन्दबोध रात्रि	23-2-90	फाल्गुन कृष्णा 13	2046	शुक्रवार
5-	लेखराम तृतीया	28-2-90	फाल्गुन शुदी 3	2046	बुधवार
6-	नव सस्येष्टि	11-3-90	फाल्गुन शुदी 15	2046	रविवार
7-	आर्यसमाज स्थापना दिवस	27-3-90	चैत्र शुदी 1	2047	मंगलवार
8-	राम नवमी	3-4-90	चैत्र शुदी 9	2047	मंगलवार
9-	हरि तृतीया	24-7-90	श्रावण शुदी 3	2047	मंगलवार
10-	श्रावणी उपाकर्म	6-8-90	श्रावण शुदी 15	2047	सोमवार
11-	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	14-8-90	भाद्रपद वदी 8	2047	मंगलवार
12-	विजया दशमी	29-9-90	अश्विनि शुदी 10	2047	शनिवार
13-	गुरु विरजानन्द दिवस	2-10-90	अश्विनि शुदी 13	2047	मंगलवार
14-	महर्षि दयानन्द-निर्वाण दिवस	18-10-90	कार्तिक वदी 15	2047	गुरुवार
15-	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	23-12-90	पौष शुदी	2047	रविवार

नोट - सभी आर्य समाजें इन पर्वों को सोत्साह मनावें। देशी तिथियों में घटबढ़ के कारण पर्व दिवस में परिवर्तन हो सकता है।

- सच्चिदानन्द शास्त्री

वैदिक धर्मप्रचार

चम्पारण जिला आर्यसभा के तत्वावधान में दिसम्बर में चम्पारण में आर्यसमाज शिकारपुर एव आर्यसमाज सिकटा में वैदिक धर्म का एक सप्ताह प्रचार हुआ जिसमें आर्यजगत के विद्वान् श्रीमहेन्द्र-पाल आर्य निम फाजिल के प्रभावशाली व्याख्यानों से नवयुवकों में विशेष जागृति आई। ●

आर्यसमाज केसरिया का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज केसरिया - चम्पारण द्वारा इस वर्ष नेत्रदान शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें मोतियाबिन्द के रोगियों का सफल आप्रेशन हुआ साथ ही वार्षिकोत्सव दि0 23 से 25 दिसम्बर 89 तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें कई उच्चकोटि के विद्वानों व्याख्यान व भजन हुए। जिसका स्थानीय जनता पर अच्छा प्रभाव हुआ। ●

नेपाल में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज बहुअरि (वीरगंज, नेपाल) में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें जिला सभा चम्पारण के तथा केन्द्रीय नेपाल आर्यसमाज के अधिकारी उपस्थित थे। महायज्ञ श्री पं0 गंगाधर शास्त्री के (बिहार) आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ जिसमें कई उच्चकोटि के सन्यासी व विद्वान पधारे। ग्रामीण जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू०/एन०पी० ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
फाल्गुन कृष्ण 2 सं० २०४६ वि०
११ फरवरी १९९०
दूरभाष २४५९९३

सेवा में
१२० । ५ । पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

दो आर्य वर चाहिए

श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम ﴾रजि0﴿ की दो कन्याएं ﴾1﴿ कु0 सीता आयु-25 वर्ष लम्बाई 148 से0मी0, हाईस्कूल उत्तीर्ण तथा ﴾2﴿ कु0 मीरा आयु-20 वर्ष लम्बाई 149 से0मी0, हाईस्कूल में शिक्षारत। दोनों कन्याए सुन्दर सुशील गृहकार्य में दक्ष के लिए सुन्दर सुशील आर्य विचारों वाले वर चाहिए विवाह वैदिक रीत्यानुसार दहेज रहित होगा। इच्छुक सज्जन निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

पता- श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम ﴾रजि0﴿
6- तिलक मार्ग देहरादून-248001

केवल १ रुपये में १२ पुस्तकें

एक रुपये की 12 पुस्तकें प्रचार के लिए भेजी जाती हैं- वैदिक सन्ध्या, हवन, मन्त्र, धर्म शिक्षा, ज्ञान शिक्षा, पूजा-किसकी आर्यसमाज क्या है? सत्यपथ, ईश्वर प्रार्थना, प्रभु भक्ति देव दयानन्द, ओ३म् ... सूचा ईश्वर भक्ति, जितनी इच्छा हो सेट मगाईये।

वेद प्रचार मण्डल
आर्यसमाज करोलबाग,
दिल्ली-5

आचार्य रमेशचन्द्र अवस्थी के कनिष्ठपुत्र दिवगत

पिथौरागढ़। आर्य वैदिक विद्वान् प0आचार्य-रमेशचन्द्र अवस्थी ﴾सम्पादक "गुरुकुलयुग", गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त-बिठूर कानपुर﴿, जिन्होंने कई वर्षो तक आर्यमित्र साप्ताहिक का सम्पादन किया था, के कनिष्ठ पुत्र का दिसम्बर 1989 में देहान्त हो गया।

21 जनवरी 1990 को आर्यसमाज-मन्दिर में दिवगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के धैर्य हेतु शान्ति यज्ञ सम्पन्न किया गया। स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी ने धीर-गम्भीर आचार्य अवस्थीजी तथा परिजनों के धैर्य हेतु दुःखहर्त्ता परमात्मा से प्रार्थना की।



उत्तर प्रदेश के मुख्य विक्रेता

आयुर्वेद सेन्टर लखनऊ
2 एस एस मेहता लखनऊ
3- अलकार फार्मेसी, कानपुर
4- रामदेव मिश्रा रायबरेली
5 शिव आयुर्वेदिक औषधालय प्रतापगढ़।
6. स्वदेशी औषधालय गोण्डा
7 मिश्रा आयुर्वेदिक स्टोर, सुलतानपुर
8 विनय कुमार अरुण कुमार इलाहाबाद
9 कुलदीप चन्द्र शर्मा, आगरा
10 बैजनाथ प्रसाद एण्ड सन्स, फैजाबाद।

शाखा कार्यालय ६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं. २२४१/५७) फाल्गुन शुक्ल ८, रविवार संवत् २०४६ वि., दिनाक ४ मार्च १६६० (घोषणा पत्र स ७/२८ २ ८५)



कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।

आर्य कभी पराधीन नहीं होता, कभी पराजित नहीं होता, कभी निराश नहीं होता। शर्त सिर्फ यही है वह आर्यत्व से आपादमस्तक परिपूर्ण रहे। उसके दायें हाथ में कर्तव्य हो विजय तो उसके हाथ में रहेगा ही।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य — रु. २५१/-
वार्षिक — रु. 30/-
एक प्रति — १ रु. मात्र
विदेश में — १५ पौंड

प्रकाशन का ६३ वाँ वर्ष
अंक ६

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के [illegible]

वैदिक [illegible]

[illegible]

सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का तूफानी दौरा

वैदिक क्रान्ति का सूर्य दक्षिण में उदित हो चुका है।

सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने दक्षिण भारत के अपने 10 दिवसीय तूफानी दौरे में हैदराबाद, मद्रास, मदुरै, तिरूनाक्ली, तिनकाशी, मीनाक्षीपुरम आदि क्षेत्रों की यात्रा की।

22 जनवरी को सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन पर सायंकाल 5 बजे ज्योंही, गाडी रुकी, पं0 वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा हैदराबाद के आर्य वीर तथा आर्य जन बड़ी संख्या में वहाँ स्वागत के लिए खड़े थे। 22 जरवरी को स्वामी जी हैदराबाद में रुके और 23 को पुन मद्रास के लिए ट्रेन से प्रस्थान किया। श्री नरसिंह रेड्डी, श्री वैंकटरंगम नायडू, श्री राजवीर आर्य, श्री रामाराव तथा श्री गोविन्दराव भी हैदराबाद से स्वामी जी के साथ उनके पूरे दौरे तक साथ रहे। रास्ते में वारगल के महबूबाबाद रेलवे स्टेशान पर भारी संख्या में आर्य बन्धु स्वागत के लिए एकत्र थे। वारगल से मद्रास तक के अनेक स्टेशनों पर स्वामी जी का स्वागत बराबर होता रहा।

24 की प्रात वह मद्रास रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। वहां आर्यसमाज मद्रास के प्रधान श्री जयदेव आर्य तथा मन्त्री श्री टी0 कन्नन ने स्वामी जी का स्वागत किया। वहां से स्वामी जी आर्यसमाज मन्दिर मद्रास गए। दिन के विश्राम के बाद रात को वेगी एक्सप्रेस से उन्होंने मदुरै के लिए प्रस्थान किया। 25 जनवरी की प्रात मदुरै रेलवे स्टेशन पर स्वामी जी को लेने के लिए श्री एम0 नारायण स्वामी, आर्यसमाज के प्रधान एवं मन्त्री तथा अन्य अनेक आर्य जन उपस्थित थे। स्वामी जी वहां आर्यभवन के मालिक श्री धीरेन्द्र के आतिथ्य में रहे। मदुरै में मुख्य कार्यक्रम आर्यसमाज भवन का शिलान्यास था। आर्यसमाज भवन के लिए गत वर्ष सार्वदेशिक सभा के प्रयत्नों से 1,85000-00 रुपये में भूमि क्रय की गई थी। भवन शिलान्यास का कार्यक्रम बडे उत्साह पूर्वक आयोजित किया गया था। इस अवसर पर मदुरै के आर्य नर-नारी, बड़े बड़े विद्वान, व्यापारी आदि बड़ी संख्या में पधारे हुए थे। मदुरै के भूतपूर्व मेयर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। आर्यसमाज भवन का शिलान्यास स्वामी जी के कर-कमलों से बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। मदुरै से स्वामी जी ने मोटर से तिरूनाक्ली को प्रस्थान किया। वहाँ दयानन्द होमियोपैथिक डिस्पेन्सरी का उद्घाटन स्वामी जी ने किया। वहां के प्रसिद्ध डा0 श्री रामचन्द्रन जी ने इस डिस्पेन्सरी के लिए 50 हजार रुपये दान में दिया था।

— शेष पृष्ठ ६ पर

आय भूमि पर अरुणोदय सा
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ फाल्गुन शुक्ल ८, संवत २०४६ वि

४ मार्च १९९०(रविवार) दयानन्दाब्द १६५

सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

आखिर राष्ट्रद्रोह की परिभाषा क्या है

दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम मौलाना अहमद बुखारी ने "जागरण" के संवाददाता से बात करते हुए कहा है कि जब हिन्दुस्तान पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में अलगाववादियों की मदद करके अलग सिन्धु देश बनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, नेपाल, श्रीलंका, बांगला देश व मालदीप के आन्तरिक मामलों में दखलन्दाजी कर रहा है तो उसे कोई दर्द नहीं होता किन्तु जब पाकिस्तान काश्मीर में दखलन्दाजी करता है तो उसे इतनी पीड़ा क्यों हो रही है। आगे चलकर बुखारी साहब फरमाते हैं कि भारत को दूसरों के मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

भारत सदैव से विभिन्न विचार-धाराओं, मन्तव्यों तथा उपासना पद्धतियों और जीवन शैलियों से जुड़ा रहा है। एक समय था जब इस देश में बौद्ध धर्म अपनी चरम सीमा पर था तथा सम्राट अशोक एवं सम्राट हर्षवर्धन न इसे इस देश का राजधम घोषित कर दिया था। इसीप्रकार स्मार्त, शैव, वैष्णव, जैन, उदासीन, वाममार्गी आदि अनेकों विचारधाराएं जिनका लगाव किसी न किसी मत अथवा सम्प्रदाय से था - इस देश में पनपती रहीं, प्रसारित होती रही हैं। किन्तु जहाँ तक मातृभूमि की एकता और अखण्डता का प्रश्न है, सभी विचारधाराएं देशभक्ति से ओतप्रोत थीं। सभी इस मातृभूमि को पूज्यनीय और पुण्यभूमि मानते रहे हैं। इस देश के एक-एक इंच टुकड़े से हर देशवासी की आस्था और सम्मान जुड़ा रहा हैं।

भारत विभाजन के समय हमारा एक वर्ग जिसकी रगों में हमारे ही पूर्वजों का खून था, हमसे अलग हो गया। हमने सोचा था दोनो देशों की जनता अपने अपने देश में खुशहाली का जीवन बसर करेगी और कोई देश किसी दूसरे देश के अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा। किन्तु यह आशा निराशा में परिणित हो गई और पाकिस्तान ने भारत के आन्तरिक मामलों में न केवल हस्तक्षेप ही किया है अपितु यहाँ के भारतीय मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को उभाड़कर इस देश में आतंकवादी गतिविधियों द्वारा अव्यवस्था फैलाना प्रारम्भ कर दिया है। भारत का रहने वाला हर व्यक्ति चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या इसाई - भारतीय हैं। धर्म केवल उसे उपासना पद्धति की शैली मात्र से जोड़ता है और इस नाते वह हर दृष्टि से भारत माँ का पुत्र है और उसकी आस्था इस देश की भूमि से आपादमस्तक जुड़ी हुई है।

शाही इमाम बुखारी का यह कहना कि भारत दूसरे देशों के अन्दरूनी मामलो में हस्तक्षेप कर रहा है और इसी की प्रतिक्रिया स्वरूप पाकिस्तान भी काश्मीर तथा पंजाब में हस्तक्षेप कर रहा है - भ्रामक ही नहीं, सत्य से सर्वथा विपरीत है। भारत की वैदेशिक नीति सदैव से ही गुट निरपेक्षता के सिद्धान्त पर सह अस्तित्व की रही है। "जिओ और जीने दो" हमारी इस नीति का मूलमन्त्र है। इमाम बुखारी केवल धर्म के नाम पर एक विशेष वर्ग के हित की ही बात सोचते सोचते यह भी भूल जाते हैं कि अपनी मातृभूमि के प्रति उनका क्या दायित्व है। पड़ोसी देश पाकिस्तान द्वारा संचालित आतंकवादी गतिविधियों को समर्थन देना खुला देश द्रोह है तथा राष्ट्र का अपमान है। श्री बुखारी तथा डा० फारूख अब्दुल्ला अपने दुराग्रहों से पीड़ित होकर काश्मीर के सम्बन्ध में जो बयान आजकल दे रहे हैं, वह दुर्भाग्यपूर्ण हैं तथा सत्य से एकदम विपरीत है। ऐसे व्यक्ति इस देश की जनता में साम्प्रदायिक भावनायें उभाड़कर मात्र अपना राजनैतिक स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। भारत के मुसलमानों को परकीय देश का शुभचिन्तन एवं उसके द्वारा राष्ट्र की एकता और अखण्डता को चुनौती देने वाला कुप्रचार खुला राष्ट्रद्रोह है जो किसी भी स्थिति में क्षम्य नहीं कहा जा सकता है। हम भारतीय जनता को ऐसे कुप्रचार से सावधान करना चाहते हैं और भारत सरकार से अनुरोध करते हैं कि इसे बहुत गम्भीरता से ले।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के उपदेशविभाग द्वारा दिनांक 4 मार्च 1990 रविवार को उपदेशकों प्रचारकों का साक्षात्कार प्रात: 10 बजे सभा-कार्यालय 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ, में आयोजित किया गया है।

सम्बन्धित अभ्यार्थियों से अनुरोध है कि अपने व्यय पर इस अवसर पर पहुँचना सनिश्चत करें।

- हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ प्र.
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यमित्र साप्ताहिक के स्वामित्व के सम्बन्ध में विवरण

फार्म - ४
प्रपत्र नियम - ८

1- प्रकाशन का स्थान- भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई-मार्ग, लखनऊ।

2- प्रकाशन की आवर्तिता- साप्ताहिक, प्रति-बृहस्पतिवार व शुक्वार।

3- मुद्रक का नाम- श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त, स्वत्वाधिकारीआर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिये।

4- राष्ट्रीयता - भारतीय ।

5- प्रधान सम्पादक- श्री मनमोहन तिवारी, 9-पुरानागणेशगंज, लखनऊ
प्रबन्धसम्पादक-श्रीइन्द्रदेवपाठक, एम०ए०, साहित्याचार्य 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ ।

6- पत्र का स्वामित्व किसके पास है—
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ।

मैं विश्वम्भर दयाल गुप्त घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी में और विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सही हैं ।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
मुद्रक प्रकाशक "आर्यमित्र" साप्ताहिक
५ मीराबाई मार्ग, उ०प्र०,
लखनऊ।

दिनांक - १ मार्च १९९०

अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचना

सभा के अन्तर्गत, उपदेशक, महोपदेशक एवं प्रचारकों को आवश्यक रूप से पुन निर्देशित किया जाता है कि प्रत्येक मास की डायरी- बिल एव रसीदें समुचित ढंग से भर कर प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह के अन्दर कार्यालय को अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए, विलम्ब से प्राप्त होने पर सभा का उत्तरदायित्व नहीं होगा।

इसके साथ-साथ यह भी ध्यान दें कि रसीद बुक पहुँचने पर तुरन्त उसकी जाच स्वयं कर लें, कि पेज क्रमानुसार हैं या नही, पूर्ण सन्तुष्ट होने के पश्चात ही रसीद बुक का प्रयोग करें।

- मनमोहन तिवारी
मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०
5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

रत्न कण

युक्ति से भी परमेश्वर का अवतार कभी नहीं हो सकता, क्योंकि जो आकाशवत् सर्वत्र व्यापक, अनन्त और दृश्यादि गुण रहित है वह एक छोटे से शरीर में क्योंकर आ सकता है।

—स्वामी दयानन्द

साम्प्रदायिकता : आखिर इलाज क्या है ?

सन्तोष "कण्व", बरेली

"साम्प्रदायिकता" एक ऐसा रोग है, जिसका उपचार असाध्य तो नहीं कठिन अवश्य है। किसी नीम- हकीम के बस की बात नहीं है। कुशल वैद्य, ठीक निदान और उचित औषधि के अभाव में यह रोग महामारी का रूप लेता जा रहा है। क्या नगर क्या गाँव, सब इसकी चपेट में हैं। बस्ती हो या खेत सर्वत्र इसी का राज्य है।

अतीत में देखें तो साम्प्रदायिकता से लड़ने के तेवर तो बहुतों ने दिखाए हैं, कागज भी रंगे और गले भी फाड़े हैं, परन्तु सही दिशा में सकारात्मक प्रयास यदि किसी ने किया, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। लीक से हटकर क्रान्तिकारी चिन्तन था उनका। निस्वार्थ भाव और प्राणी मात्र के कल्याण की भावना।

यह सत्य है कि महर्षि की समालोचना में पैनापन है, परन्तु उसका उद्देश्य अत्यन्त पवित्र है। फोड़ा पक जाने पर कुशल चिकित्सक को शल्य-क्रिया करनी ही पड़ती है, अन्यथा विष सम्पूर्ण शरीर में फैलकर रोगी को चिरनिद्रा में पहुँचा सकता है। शल्य-क्रिया में पीड़ा तो होती ही है। दयानन्द कहते हैं-

"एक तो मेरा धार्मिक लक्ष्य सार्वजनिक है, उसे संकुचित नहीं किया जा सकता। दूसरे, भारत वासी लम्बी चादर तान कर ऐसी गहरी नींद सो रहे हैं कि मीठे शब्दों से आँख तक खोलने को तैयार नहीं। सुधार का तो नाम तक नहीं लेते। कुरीतियों और कुनीतियों के खण्डन रूपी कड़े कोड़े की तड़ातड़ ध्वनि से यदि ये जग जावें तो ईश्वर का कोटि-कोटि धन्यवाद करूँगा। धर्मगुरुओं और सामाजिक नेताओं की असावधानी, प्रमाद और आलस्य से भाषा भाव और भावना आदि एकता के चिह्न बदल जाते हैं।"

समस्त उन्नति का केन्द्र स्थान "ऐक्य" ही है। इसी एकता के लिए महर्षि दयानन्द आजीवन सक्रिय रहे। वे कहते हैं--

"जो मत-मतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं, उनको मैं पसन्द नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मत वालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फँसा कर परस्पर शत्रु बना दिया है।"

उनकी तो मात्र यही कामना थी--

जैसे मैं अपना और दूसरे मतमतान्तरों का दोष पक्षपात रहित होकर प्रकाशित करता हूँ, इसी प्रकार यदि सब विद्वान् लोग करें तो क्या कठिनता है कि परस्पर का विरोध छूट, मेल होकर आनन्द में एक मत हो के सत्य की प्राप्ति सिद्ध हो।"

महर्षि का यथार्थवादी चिन्तन लोगों को पसन्द नहीं आया। "अनेकता में एकता" की ऐसी रट लगी कि कोई कुछ सुनने को ही तैयार नहीं हुआ। परिणाम सामने है। दयानन्द जी का दृष्टिकोण कितना स्पष्ट और सार्थक है, यह तो उनके निम्न शब्दों से ही पता चल जाता है-

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में पाए जाते हैं, (परन्तु यदि) वे पक्षपात छोड़कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त को स्वीकार करें, जो-जो बातें सबके अनुकूल हैं और सबमें सत्य हैं, उनको ग्रहण करें और जो-जो बातें एक दूसरे के विरुद्ध पाई जाती हैं, उनको त्याग कर परस्पर प्रीति से बर्तें- बर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित हो जावेगा। विद्वानों के विरोध से ही अविद्वानों में विरोध बढ़कर विविध दुःखों की वृद्धि और सुखों की हानि होती है। यह हानि स्वार्थी मनुष्यों को प्यारी है, परन्तु इसने सब साधारण को दुःख सागर में डुबो दिया है।"

महर्षि दयानन्द ने जन्मना वर्ण व्यवस्था को शास्त्र विरुद्ध, न्याय-विरुद्ध और धर्म-विरुद्ध घोषित कर भारतीय समाज में क्रान्ति का सूत्रपात किया था। आज उसी क्रान्ति को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। "जन्मना सम्प्रदाय व्यवस्था" मानव सभ्यता के इतिहास की क्रूरतम पाशविक प्रथा है। इससे मनुष्य जाति का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है।

जो साम्प्रदायिकता से वास्तव में लड़ना चाहते हैं, उन्हें पहले स्वयं को साम्प्रदायिक अन्धविश्वासों से मुक्त करना होगा। सही अर्थों में "सत्य" का जिज्ञासु बनना होगा। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना होगा। एक सम्प्रदाय का दामन पकड़कर साम्प्रदायिकता से नहीं लड़ा जा सकता। इसके लिए तो सर्वप्रथम 'जन्मना सम्प्रदाय व्यवस्था" को तोड़ना होगा।

यदि हम वास्तव में साम्प्रदायिकता से त्रस्त हैं तो विस्तृत अध्ययन और स्वतन्त्र चिन्तन को प्रोत्साहन देना होगा। मनुष्य के विवेक को कुंठित करने से मानवता का अहित ही हुआ है। जन्म से किसी के सम्प्रदाय का निर्धारण न किया जाए। जब बुद्धि परिपक्व और नीर-क्षीर का विवेक करने में सक्षम हो तो हर व्यक्ति को अपना मत सुनिश्चित करने में स्वतन्त्र होना चाहिए।

बहुत बड़ी समस्या नामों के कारण है। हमारे मुस्लिम भाई जो नाम रखते हैं, वे इस्लामिक नहीं हैं। अरबी भाषा के हैं। कुछ फारसी के भी हैं। अच्छे भाव वाले हैं। उनसे किसी का विरोध नहीं है। रहमान, जुल्फिकार, जाहिद, आरिफ आदि नाम तो हजरत मुहम्मद के जन्म से पहले भी चलते थे। इस्लाम का उदय तो बहुत बाद में हुआ है। मुहम्मद साहब का नाम जब रखा गया था, तब वे मुसलमान नहीं थे। उनके प्रिय चचेरे भाई का नाम था- अली। चाचा थे-- अबू तालिब। हजरत मुहम्मद की पत्नी-खदीजा के पश्चात् अली ने इस्लाम स्वीकार किया। लेकिन नाम तो पहले से ही चला आ रहा था। भारत के मुसलमानों को भारतीय नाम रखने चाहिए। अनवर, तारिक, कासिम, फारूख आदि नाम रखने से न वे अधिक इस्लामिक हो जाते हैं, न रवि, प्रताप, अशोक, सुदर्शन आदि नाम रखने से कम इस्लामिक। उनकी आस्थाएँ व विश्वास अपनी जगह हैं "विजय" नाम रखकर भी मुसलमान रहा जा सकता है। भारत में भारत के नाम, रूस में रूसी नाम, चीन में चीनी नाम, जापान में जापानी और अरब में अरबी। सम्प्रदाय कोई भी क्यों न हो, नाम उसी देश का, जिस देश का व्यक्ति। नाम राष्ट्रीयता की पहचान है, नागरिकता की नहीं। यदि भारतीय मुसलमान और ईसाई भारतीय नाम रखने लगें तो उनकी बहुत सी समस्याएं स्वतः हल हो जाएं। अल्प संख्यक होने का भाव और भय भी समाप्त हो जाए।

आजकल साम्प्रदायिक असहिष्णुता और एक दूसरे के प्रति घृणा कुछ अधिक ही बढ़ती जा रही है। अब यह नारे बाजी से तो दूर होगी नहीं। इसके लिए कुछ ठोस व्यावहारिक प्रयास करने होंगे।" "मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना", भाव तो अच्छा है। गाया भी खूब जाता है, लेकिन बैर बढ़ रहा है। मजहब के नाम पर बढ़ रहा है।

सहिष्णुता, प्रेम और भाईचारा तब तक स्थापित नहीं होगा, जब तक लोग एक दूसरे को समझेंगे नहीं। सम्प्रदायों ने लोगों को बाँट रखा है। अज्ञान और स्वार्थ ने आपस की दूरी बढ़ा दी है। आवश्यकता इस बात की है कि परस्पर एक सहमति विकसित हो, और यह तभी होगी जब हम तुलनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहन दें। सम्प्रदायों की दीवारों के पीछे क्या है, यह लोगों को विदित होना चाहिए। इसे साम्प्रदायिक आचार्यों पर नहीं छोड़ा जा सकता। वे तो अपने स्वार्थ के लिए इसी प्रकार मूर्ख बनाते रहेंगे। खुद पढ़ना और समझना होगा। इस्लाम क्या है, यह मुसलमानों को भी पता होना चाहिए, और अन्य लोगों को भी। इसी प्रकार ईसाइयत, सिख, जैन, बौद्ध आदि जितने मत मतान्तर हैं, इनके विषय में सभी को जानकारी होनी चाहिए।

तुलनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहन तब मिलेगा जब इन मतमतान्तरों के मूल ग्रन्थों के जन-भाषा में अनुवाद प्रकाशित कर सर्वसाधारण के लिए सुलभ कर दिए जाएं। साम्प्रदायिक आचार्यों में एक आम प्रवृत्ति यह देखी गई है कि वे अपने-अपने ग्रन्थों को छिपा कर रखते हैं। जिससे स्वार्थ सधे, उतना अंश ही सामने लाते हैं। इससे बहुत अहित हुआ है। आज के समय की यह माँग है कि लोग स्वयं उन्हें पढ़ें, सोचें, समझें, परस्पर चर्चा करें, जहाँ-जहाँ जो-जो उपयोगी लगे उसे ग्रहण करें। शेष की उपेक्षा कर दें। यदि वास्तव में हमारा ऐसा स्वभाव बन जाए तो आप देखेंगे कि इसके परिणाम सुखद होंगे। परिस्थितियां ही आन्दोलनों व विचारकों को जन्म देती हैं। दोनों में पूर्वापर सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को समझे बिना हम अतीत के आन्दोलनों

— शेष पृष्ठ ७ पर

"बोधति आत्मना" (ऋ ५-१०-४)

(मानव अत्मना बोध प्राप्त करता है)

— हरिवंश लाल मेहता
वेदमनीषी लखनऊ

इस वर्ष पुनः **शिवरात्रि** 23-2-1990, दिन शुक्रवार को आ रही है। आर्यजगत में यह पर्व **"ऋषिबोधोत्सव"** के नाम से प्रसिद्ध है। ऋषिवर दयानन्द को शिवरात्रि के दिन ही एक साधारण नित्य प्रति घटने वाली घटना से बोध हुआ था। ऋषिवर के लिये यह घटना उनके जीवन की दिशा को बदल देने वाली एक महानतम घटना सिद्ध हुई। और हम आर्यजनों के लिए तो यह घटना सदा सर्वदा आतशय प्रेरणादायक बन गई। आओ इस अवसर पर हम अथर्ववेद के एक मन्त्र का विचार करें:-

ऋषिबोध प्रतिबोधौ अस्वप्नः यःच जागृविः।
तौ ते प्राणास्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च -
जागृताम्।। ‖अ0 5-30-10‖

बोध तथा प्रतिबोध दो ऋषि हैं। जो न सोने वाला, आलसप्रमाद रहित है, सदा जागरूक है उसके जीवन के यह दोनों ऋषि रक्षक होते हैं अतः दिन और रात यह ऋषि हमारे भीतर जागते रहें।

बोध तथा प्रतिबोध यह सदा सर्वदा साथ-साथ रहने चाहियें। नेत्र तथा प्रकाश का अटूट सम्बन्ध है। प्रकाश हो तभी नेत्र देख पाते हैं। अंधेरे में नेत्र क्या देख सकेंगे। बोध नेत्र है, प्रतिबोध प्रकाश है। बोध ज्ञान को कहते हैं परन्तु प्रतिबोध विवेक को कहते हैं। ज्ञान तो बहुतों को होता है। ऋषि दयानन्द से पूर्व ज्ञानी कोई कम नहीं थे परन्तु विवेकहीन हो रहे थे। ज्ञान का सम्बन्ध मन तथा बुद्धि से है। मनन तथा चिन्तन से मनुष्य को ज्ञान हो जाता है। यदि चित्त की वृत्तियां शुद्ध पवित्र हों तो ज्ञान शुभश्रेष्ठ कार्यों की ओर प्रवृत्त करता है यदि चित्त की वृत्तियां दूषित हों तो ज्ञान होते हुए भी मनुष्य पाप तथा अपराध में प्रवृत्त हो जाता है। विवेक तो यथार्थ ज्ञान, सम्यक् ज्ञान, वास्तविकता के बोध से, तत्वचिन्तन से, आत्मनिरीक्षण तथा आत्मस्मृति बने रहने से प्राप्त होता है। यह प्रतिबोध ऋषि है जो ऋषित्व किसी भाग्यवान साधक को ही प्राप्त होता है। आत्मा के संस्कार जन्म जन्मान्तरों की निरन्तर साधना से बनते हैं जिससे उसके अन्दर विवेक का दीप सदा सर्वदा जगमगाता रहता है। ऋषि दयानन्द एक संस्कारी जीव थे अतः चूहे को **शिवपिण्डी** पर उछल कूद तथा धृष्टता करते देखकर उनके अन्दर प्रतिबोध ‖विवेक‖ ऋषि उदित हो उठा और वह सावधान हो गए। उन्हें निरन्तर साधना से बोध का प्रतिबोध विवेक यथार्थ सम्यक ज्ञान, वास्तविक निर्भ्रान्त ज्ञान प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप मानवजाति को वे वैदिक सिद्धान्त दिये जो अकाट्य तो हैं ही मानव का ही नहीं प्राणीमात्र के हित सम्पादन करने में पूर्णतया समर्थ हैं। ऋषिवर दयानन्द ने संसार को "त्रैतवाद" का एक ऐसा अमूल्य सिद्धान्त दिया जिसे यह आर्य जाति न जाने कब से भ्रमात्मिक मान्यताओं से भूली हुई थी। हिन्दू समाज तो गीता के उस प्रसिद्ध श्लोक को न समझने के कारण "अहं ब्रह्मऽस्मि" की रटन्त में वेसुध हो रही थी।

"ममैव अंशः" जीवलोके जीवभूतः
सनातनः।

देह में सनातन जीवात्मा की सत्ता मेरा ही अंश है। जब जीवात्मा सनातन है सदा से है तो सोचिये यह परमात्मा का विभक्तांश कैसे हो सकता है। विभक्त होने से पूर्व यदि नहीं था तो सनातन कैसे हुआ। नहीं विभक्त नहीं यहां "ममैवांशो" से तात्पर्य गुणांश से है। परमात्मा सत् है, चित् है और आनन्दस्वरूप है। जीव भी सत् है, चित् भी है ‖भले ही सीमित चित् हो, जड़ तो नहीं। जड़ तो, सत् तो केवल प्रकृति है‖ सत् चित् होने से गुणांश प्रत्यक्ष ही है। यह तीनों सञ्ज्ञाएं प्रकृति, जीवात्माएं तथा परमात्मा सदा थे सदा हैं और सदा साथ-साथ रहेंगे। ऐसा न मानने से संसार कैसे बना, क्यों बना किसके लिये बना। इसका समाधान तीन काल नहीं हो सकता। जीवात्मा को अमरता का बोध हो जाने मे कौन किसी को मारे और कौन किसी से मरे। मृत्यु की जड़ ही कट जाती है। इस मान्यता के व्यापक प्रचार प्रसार से संसार में दावानल आग की तरह फैल रही हिंसा का शायद अन्त हो जावे। प्रत्येक प्राणी का शरीर प्रभु द्वारा उस प्राणी के कर्मफल भोग हेतु बनाया गया है। किसी को क्या अधिकार है जो प्रभु द्वारा निर्मित शरीर को मारता फिरे। क्या वह न्यायकारी सर्व-समर्थ परमात्मा ऐसे हत्यारों को कभी क्षमा कर सकता है। किसी की क्या हिम्मत जो प्रभु के बनाए मकान को नष्ट करता फिरे। संसार की अदालतें छोड़ सकती हैं परन्तु उस न्यायकारी के दण्ड विधान से न कोई आज तक छूट सका है न छूट सकेगा। "अनागो हत्यावै भीत्रां" अ0 10-1-29 निरपराध की हत्या निश्चय ही भयंकर परिणाम लाती है।।

संसार में बोध तथा प्रति-बोध अर्थात ज्ञान और विवेक दोनों का प्रचार प्रसार करके ही आर्यजन ऋषि ऋण से मुक्त हो सकते हैं। आईए हम इस पनीत काम में जी-जान से लगे रहने का शिवरात्रि के पावन पर्व पर पुनः व्रत लें। □

बसन्तोत्सव सम्पन्न

नगर आर्यसमाज लखनऊ द्वारा बसन्त पंचमी के अवसर पर दीवानी-न्यायालय में यज्ञ हुआ जिसमें सैकड़ों की संख्या में जजों व अधिवक्ता महोदयों ने भाग लिया। श्री रवेतीरमण एडवोकेट ने जजों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए तथा अन्य पुस्तकें भी बाँटी गयीं।

स्वास्थ्य-सुधा

(१)

समस्याः- "मेरे पेट मे बायीं ओर तथा उसी सीध में ठीक पीछे पीठ में सफेददाग 5 वर्षों से पड गया है। ये दाग एक-एक इंच के हैं। इनमें सूई या नाखून से पीड़ा होती है। मेरी उम्र 41 वर्ष है। सिर के बाल झड़ रहे हैं।"

-एक भाई, सुजानगंज ‖जौनपुर‖

समाधानः- दाग पर पिगमेन्टो ‖PIGMENTO‖ मलहम ‖चरक‖ प्रातः धूप में हल्के हाथ से एक बार लेप करें- मलें नहीं- अन्यथा छाले पड़ सकते हैं। कीकर ‖बबूल‖ की हरी पत्तियाँ 150 ग्राम, हरड़ 50 ग्राम व सुपारी 50 ग्राम पीसकर एक लीटर पानी में उबालकर आधा करें। छानकर बोतल में रखें। नित्य प्रातः आधा प्याला पीने के बाद प्रातराश लिया करें। पिगमेन्टायन बटी ‖आर0के0क्लीनिक, नयाबाजार पिथौरागढ, पिन-262501‖ की एक गोली प्रातराश व रात्रिभोजन बाद चूसा करें। दूध-केला-काला चना का सेवन लाभकारी है। चार मा५ से अधिक तक उपचार जारी रखें।

बाल झड़ने का समाधान, आर्यमित्र - 15 अक्टूबर 1989 के अंक में पढ़ें।

(2)

समस्या :- "ठण्ड और ठण्ड-खाद्यों से मुझे परेशानी हो जाती है। नाक में चुनचुनाहट के साथ पानी बहना और कान में खुजली होती है। खून जाँच में इसनोफीलिया है।"

शिवदान सिंह आर्य, मंत्री
आर्यसमाज-मूढ़ौनीजरपुर,
डाकघर-सुजावलपुर, जनपद-अलीगढ़।

समाधान :- गुर्च 2 ग्राम, मुलेठी 2 ग्राम, अदरख 2 ग्राम, तुलसी 5 पत्ती, मिर्च काली 2 दाने और मुनक्का 2 दाने पीसकर एक पाव पानी में उबालकर चौथाई काढ़ा ‖क्वाथ‖ बनायें। छानकर एक प्याला गरम दूध में मिलाकर प्रातः खाली पेट 40दिन तक पियें। सायं भोजन से तीन घंटे पहले गुरुकुल चाय पिया करें। भोजनोपरान्त 2 बार स्पांजमा सीरप ‖चरक‖ दो ढक्कन समान जल के साथ मिलाकर पिया करें।

xx रोगी अपना विवरण और पत्राचार हेतु तीन बन्द डाक लिफाफे निम्न पते पर भेजें।

गुरुकुलानन्द सरस्वती
कचाहारी
आर्यसमाज पिथौरागढ़।
उत्तर प्रदेश।

आर्यसमाज चांदपुर ‖बिजनौर

प्रधान- श्री ब्रह्मपाल सिंह
मन्त्री- श्री सत्यप्रकाश
कोषा0- श्री ओमप्रकाश

आर्यसमाज की देन

• चन्द्र प्रकाश आर्य
आर्यसमाज, उदयपुरा, इटावा

वैसे तो हम सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन करें, तो हम देखेंगे कि विश्व के विशाल प्रांगण में, सबसे मूर्धन्य, असाम्प्रदायिक और समाज-सुधारक, यदि कोई-संस्था है तो वह है एक मात्र आर्य-समाज। अथवा हम यह भी कह सकते हैं, कि आर्यसमाज प्रवर्तक, महान-विचार, मनीषी एवं बुधवर्य, महर्षि दयानन्द जी के पावन वैदिक विचार। तो आइये हम आपको महर्षि के पावन विचार-माला की ओर ले चलें और देखें कि महर्षि की प्राण-प्रिय संस्था आर्य-समाज ने विश्व को क्या दिया और क्या लियाः-

§1§ वेदोद्धार :- आर्य-समाज और उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी के पूर्व इस देश की धरती पर ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण विश्व के क्षितिज में असत-मतों की धुआँधार आँधी चल रही थी, मानव-मात्र को अन्ध परम्पराओं की श्रृंखला में आबद्ध कर लिया था। रुढ़िवादी प्रवृत्तियों का चतुर्दिक व्यापक प्रचार था, चारों ओर भयावह त्राहि-त्राहि मची हुई थी, बडे-बडे पेटपालक, महन्त और ठेकेदार अपनी-पाप-वासना की तृप्ति में तल्लीन थे, स्वार्थान्ध अपना-अपना राग अलाप रहे थे, असत-ग्रन्थों की व्यापक संरचना हो रही थी, उन्हीं को वेद पुकारा जाता था, भरपेट वेदों की निन्दा तथा मिथ्या प्रचार कर रहे थे, यहाँ तक कि वेद अब भारत में हैं ही नहीं, वेदों को तो मय-दानव पाताल लोक को ले गया, पौराणि की ईश्वर अवतार बुद्धजी ने तो यहाँ तक कह दिया कि वेद तो गडरियों के गीत हैं, इनको नहीं पढ़ना चाहिये, जबकि पौराणिक मान्यता है कि वेद-धर्म और साधुओं की रक्षा के लिये ईश्वर अवतार लेता है। इस तथ्य का महर्षि दयानंद ने गम्भीर चिन्तन किया, और असत मतों को नष्ट करने का बीड़ा उठाया, अपनी गहन गिरा एवं अकाट्यतर्क के आधारभूत विश्वमंच पर अपौरुषेय वाणी वेद को पुनः सार्थक सिद्ध कर दिया। संसार के पेटपालकों ठेकेदारों, महन्तों, पोपों, पादरियों मुल्लाओं एवं पंडों-पुजारियों को इस बात का अहसास हो गया कि वेद संसार में सर्वोत्कृष्ट ज्ञान-ग्रन्थ हैं, परिणामतः आर्य-समाज एवं ऋषि के प्रयास-स्वरूप प्राणीमात्र आर्य-समाज का ऋणी है ।

§2§ देशोद्धार :- ऋषि आगमन से पूर्व देश के अधिकांश मनचले लोग, विदेशी इतिहासकार एवं साहित्यकार अपनी पुस्तकों के सुनहरी पन्नों पर लिख रहे थे कि कोल और द्रविण आदि जातियाँ इस देश के मूल निवासी हैं आर्य लोग तो बाहर से आये हैं । इस देश के मूल निवासी नहीं हैं । ऐसा मिथ्या प्रलाप करके, विश्व शिरोमणि भारतभूमि को आर्यों का देश नहीं मानते थे ऐसे अनर्गल व्यापक प्रचार को महर्षि दयानन्द और प्राण प्रिय संस्था आर्य-समाज ने गहन अध्ययन किया और वेदादिक आर्ष ग्रन्थों के आधार पर यह सिद्ध कर दिया कि आर्य लोग ही इस देश के मूल निवासी हैं। आर्यों का हो निवास स्थान होने से इस देश का प्राचीनतम नाम आर्यवर्त्त देश है अर्थात् आर्यों द्वारा आवृत्त किया हुआ, बसाया हुआ, कैसे कष्ट का स्थल है कि इन इतिहास कारों ने हमारा नाम -धाम बदलकर आर्य से हिन्दू, आर्यवर्त्त से हिन्दुस्तान कर दिया इस प्रकार आर्य-समाज की यह दूसरी सफलता है कि उसने आर्यत्व की रक्षा करके देशोद्धार किया।

§3§ नारी-उद्धार :- आर्य-समाज अथवा महर्षि से पूर्व इस देश के महान विचार तर्क शास्त्री शंकराचार्य जैसे मनीषियों की दृढ आस्था के साथ यह व्यापक परिकल्पना थी कि नारी नरक द्वार है, आज के सम्मानीय संत तुलसीदास जी सहज अपावन नारि अवगुण आठ सदा उर रहहीं, ढोल गंवार शूद्र पशु नारी। कहने में नहीं सकुचाये। हमारे दैनिक व्यवहार में नारी पैर की जूती है एक फट गयी दूसरी बदल लो। गाडी को चांचरों, औरत को टॉटरों जितनो कुटतो रहे वाही ठीक से, आदि युक्तियाँ प्रस्तुत की जाती थीं स्त्री शूद्रो नाधीयताम का नारा देकर शिक्षा का द्वार बन्द कर रहे थे। इस भयावह नारी दशा का आर्य-समाज और महर्षि दयानन्द ने गम्भी-रता से समझा और पुरन्ध्र्योषा अजायताम् अर्थत् नारी राष्ट्रोन्नति आधार है, इमा शुद्धा, पूताः यज्ञियाः देवियां शुद्ध, पवित्र और यज्ञरूप है तथैव यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता का उद्घोष कर नारी जीवन की रक्षा की वहीं नारी को राष्ट्र की मूलाधार बतलाते हुये, वैदिक ऋचाओं की सृष्टा अपाला-घोषा जैसी ऋषिकाओं, गार्गी मैत्रेयी जैसी विदुषियाँ लीलावती और भारती जैसी पण्डिता, सीता, सावित्री, सुलोचना, अनुसु-इया गान्धारी और पद्मिनी जैसी पतिव्रता, द्रौपदी जैसी नीति विशारदा, दुर्गा और लक्ष्मी जैसी वीरांगणा आदि गौरवान्वित नारियों का पावन सन्देश देकर नारी सुरक्षा का तीसरा प्रयास आर्य-समाज की देन है।

अछूतोद्धार :- मनुस्मृति जो मानव सृष्टि के आदि में हुई है, के प्रणेता महर्षि मनु, महाराज ने वेदों के आधारभूत सम्पूर्ण मानव-समाज को गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर चार भागों में विभक्त किया, जिसको वर्ण-व्यवस्था कहते हैं, जो ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र के नाम से जानी जाने लगी है, इन वर्णों के कर्तव्यों का विधि विधान किया, सभी वर्ण जब तक अपने क्रियाकलापों की समुचित व्यवस्था देते रहे तब तक देश संसार का गुरु रहा, देश का दुर्भाग्योदय हुआ, हमारी सर्वतोमुखी वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म-स्वभाव के स्थान पर जन्मपरक हो गयी। जिससे सभी वर्गों के विकास कार्य अवरुद्ध हो गये, उच्च वर्ग शूद्रों को घृणास्पद दृष्टि से देखने लगे उनको अछूतमान लिया गया, खानपान व्यवहार नष्ट हो गये, साथ उठना -बैठना-समाप्त प्रायः हो गया पारस्परिक विद्वेष भड़कने लगा जिसके कारण समाज में दुर्बलता आ गयी स्त्री शूद्रो ना धीयताम का नारा देकर शिक्षा के द्वार बन्द कर दिये गये, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में से प्रत्येक की दो-दो भुजाएं चारों की अष्ट भुजायें ही अष्ट भुजी दुर्गा है यह अष्ट भुजी दुर्गा धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः कर्मक्षेत्र को ही धर्मक्षेत्र मानकर समाज के अज्ञान, अन्याय और अभावरूप शत्रुओं के मिटाने के लिये युद्धरत रहती है। पारस्परिक विद्वेष का परिणाम यह हुआ कि शिरमुकुट मणि भारतदेश, विदेशियों पादाक्रान्त हो गया। ईश्वर की अनुकम्पा से महर्षि दयानन्द इस भारत भूमि पर आविर्भूत हुये, जिन्होंने सूक्ष्म-चिन्तन किया और व्यवस्था दी कि अजयेष्ठासो, अकनिष्ठासों, सभ्रातरो वा वृधुः अर्थात् न कोई बड़ा है, न कोई छोटा है, सब भाई-भाई हैं और सब समान हैं, प्रति प्रतीचीर्दहतात् अरातिः, एक दूसरे के प्रति अदमनता अनुदारता या संकीर्णता, किसी राष्ट्र के लिये अभिशाप है, इमं मंत्र पत्नी पठेस का नारा देकर आर्य-समाज ने ही नारी के शिक्षा वेद और वेद पढने का अधिकार दिया इस प्रकार छुआ-छूत का भूत भगाकर, आर्य-समाज ने विश्व में अपना कीर्तिमान प्रस्तुत किया है । □

आवश्यक सूचना

श्री रामचन्द्र शर्मा संगीत विशारद मधुर गायक को जो आर्यसमाजें अपने उत्सव आदि पर बुलाना चाहें, नीचे लिखे पते पर सूचित करें। रामचन्द्र शर्मा, रुसतमपुर न्यावली, मुरादाबाद, उ0प्र0।

सभा में महोपदेशकों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तर्गत प्रचार विभाग में समर्पित आर्य महोपदेशकों की आवश्यकता है। केवल उन्हीं व्यक्तियों के प्रार्थना पत्र पर विचार किया जायेगा जो योग्य वैदिक धर्म के प्रचार मे आस्था रखने वाले सदाचारी वैदिक सिद्धान्तों पर उत्कृष्ट कोटि का प्रवचन देने की क्षमता रखते हों। प्रारम्भिक वेतन सभा द्वारा निर्धारित वेतन क्रम में देय होगा। अनिवार्य योग्यतायें निम्न प्रकार हैं।

1- न्यूनतम योग्यता बी0ए0 §संस्कृतसहित§ अथवा शास्त्री अथवा किसी मान्यता प्राप्त गुरुकुल से वाचस्पति या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण।
2- आयु 25 से 40 वर्ष के मध्य।
3- कम से कम पाँच वर्ष का इस क्षेत्र का अनुभव §प्रमाण-पत्र सहित§ तथा अपना पासपोर्ट साइज के फोटो सहित।

प्रार्थना पत्र अधोहस्ताक्षरी को 31 मार्च 1990 तक अवश्य पहुँच जाना चाहिए।

- मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

पूजा किसकी, क्यों और कैसे ?

• श्री श्याम मोहन आर्य
मंत्री वेद प्रचार
मण्डल, भरथना {इटावा}

इस भू-मण्डल के मानव प्रभु की उपासना तो करते हैं। परन्तु अवैदिक मान्यता और विश्वास में सत्य सनातन वैदिक धर्म को भुला बैठे हैं। आज आवश्यकता है समस्त मानव मात्र वैदिक मान्यता को सोचें समझें और गति प्रदान करें। सभी बन्धु प्रभु की आराधना करने से पूर्व प्रभु के बारे में निम्नलिखित मान्यता को अवलोकन अवश्य करें, ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप सर्व शक्तिमान, निराकार, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्व व्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर-अमर, अभय नित्य पवित्र और सृष्टि कर्ता है उसी प्रभु की पूजा करनी योग्य है।

वैदिक मान्यता के अनुसार परमपिता परमात्मा के समस्त मानव मात्र अमृतमय पुत्र हैं। अर्थात् ईश्वर समस्त मानवों का पिता है जबकि ईसाई मतानुसार ईसामसीह एकमात्र परमात्मा के पुत्र घोषित हैं। जो कि वैदिक सिद्धान्त के विपरीत हैं।

मुस्लिम सम्प्रदाय में मुहम्मद-साहब ईश्वर के रसूल हैं, प्रतिनिधि हैं,। वैदिक मान्यता के अनुसार ईश्वरीय सत्य सनातन वैदिक ज्ञान का जन-जन तक जो सन्देश देते हैं। वह परमपिता परमात्मा के सच्चे रसूल {प्रतिनिधि} हैं। हमारे पौराणिक बन्धुओं ने जैन धर्म के अन्धविश्वास एवं अवैदिक मान्यताओं को मानते हुए, महापुरूष राम और कृष्ण आदि सरीखे चरित्र को ईश्वर के अवतार की श्रेणी में रखकर वैदिक सिद्धान्त के विपरीत ईश्वर अजन्मा एवं निराकार है। का अपमान कर उपहास बनाया है अब समस्त मानवों का दायित्व है कि वेद वर्णित ईश्वरीय व्यवस्था को स्वीकार कर उस परमपिता परमेश्वर की पूजा {उपासना} के लिए तैयारी करें। उस परमपिता परमेश्वर की पूजा तैयारी बिना किसी अन्ध विश्वास के करनी चाहिए। अब प्रश्न पैदा होता है कि उस प्रभु की पूजा क्यों करें। इस सृष्टि की रचना प्रभु के द्वारा कर्म फल के प्राप्त करने के उद्देश्य से की है। यह मानव शरीर शुभ-अशुभ कर्मफल को प्राप्त करने के लिए प्राप्त हुआ है। और इस सृष्टि की समस्त रचना मानव के उपयोग के लिए की है। अतः समस्त मानवों का नैतिक दायित्व है कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त सुविधा का लाभ प्राप्त करते हुए सुकर्मकर उस प्रभु की पूजा करते हुए इस मानव जीवन को सफल बनाकर मोक्ष प्राप्त करें।

अब परान्त काल तक मोक्ष प्राप्त करने के लिए परमपिता परमात्मा की पूजा महर्षि पतंजलि द्वारा वर्णित विधि द्वारा करनी चाहिए। निम्न लिखित विधि ही वैदिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है।

1- यम, 2- नियम, 3- आसन, 4- प्राणायाम, 5- प्रत्याहार, 6- धारणा, 7-ध्यान, 8- समाधि।

प्रभु का सानिध्य प्राप्त करने के लिए हमारा जीवन व्यवहारिक रूप से यम में वर्णित व्यवस्था का पालन अवश्य करें।

1- यम के अन्तर्गत व्यवस्था:-
1- सत्य अर्थात सत्याचरण करना 2- अहिंसा अर्थात् निर्दोष की हिंसा न करना। 3- अस्तेय अर्थात चोरी न करना। 4- अपरिग्रह अर्थात वस्तु का संग्रह न करना। 5- शौच इन्द्रिय निग्रह अर्थात शुद्धता के साथ इन्द्रियों का संयम करना।

इस प्रकार सर्व प्रथम प्रभु की पूजा करने वाले को यम के अन्तर्गत की गयी व्यवस्था को मानना चाहिए।

2- नियम के अन्तर्गत व्यवस्था :-
1- शौच अर्थात् शुद्धता मन-कर्म- वचन से शुद्ध रहना। 2-सन्तोष प्रत्येक स्थिति में संतोष धारण करना। 3- जप, परमात्मा के मुख्य नाम ओ३म् का मनन करना। 4- तप- प्रत्येक कार्य परिश्रम से करना ही तप है। 5- ईश्वर- प्रणिधान समस्त कार्य करते हुए ईश्वर को समर्पण करना।

3- आसन :-
1- पतंजलि योग दर्शन के अनुसार सर्व प्रथम यम और नियम के अन्तर्गत जो व्यवस्था है। उसके अन्तर्गत समाज में व्यावहारिकरूप से पालन करना ही परमपिता-परमात्मा की उपासना का प्रथम मार्ग है। इसके उपरान्त मानसिक जप करते हुए सुख पूर्वक एकाग्रचित बैठने का निरन्तर अभ्यास करना ही आसन है।

4- प्राणायाम :-
आसन के अन्तर्गत सुख पूर्वक बैठने हुए निरन्तर प्राणायाम विधि पूरक, कुम्भकरेचक, क्रियाविधि के द्वारा स्वाँस क्रिया की गति को नियन्त्रित करना प्राणायम का मुख्य लक्ष्य है।

5- प्रत्याहार :-
प्रत्याहार की व्यवस्था के अनुसार साधक को सन्तुलित आहार क्रय वद साधन से लेना चाहिए। ताकि बुद्धि सात्विक प्रवृत्ति की बनी रहे, जिससे साधन में विघ्न न हो।

6- धारणा:-
नियम के अन्तर्गत दी गई व्यवस्था के अनुसार जप को मन के अन्दर स्थिति कर धारण करना एवं चंचल मन को एकाग्र मुखी बनाना धारणा का लक्ष्य है।

7- ध्यान :-
धारणा के अनुसार मन को एकाग्रमुखी बनाकर मन के अन्तर्गत चल रहे ओ३म् नाम को आत्म चक्र में केन्द्रित करना ही ध्यान है।

8- समाधि :-
सुख पूर्वक आसन की व्यवस्था के अनुसार बैठकर प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा के अन्तर्गत ध्यान लगाते हुए इस संसार को भूलकर तथा परमपिता के अलौकिक शक्तियों में विचरण करते हुए प्रभु के ध्यान में मनन रहना ही समाधि है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि परमपिता परमेश्वर का सानिध्य प्राप्त करने के लिए मानव को बाह्य एवं आन्तरिक जीवन शुद्ध एवं पवित्र बनाकर प्रभु की सृष्टि से प्यार, प्रेम करते हुए स्वजीवन यज्ञमय बनाकर ही परमपिता का सानिध्य प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार मानव को समस्त अन्ध विश्वास, कुरीतियों का त्याग करते हुए लेख में वर्णित "पूजा किसकी क्यों और कैसे" वैदिक सिद्धान्त के अनुसार जीवन में व्यावहारिक कार्य पद्धति में अपना कर जो इस मानव जीवन का लक्ष्य है, मोक्ष वह परान्त काल तक प्राप्त कर मानव जीवन को सफल बना सकता है। उपरोक्त व्यवस्था ही एक मात्र साधन है। अतः समस्त समुदाय {मानव} वैदिक ज्ञान से आत्मा को आलोकित कर जीवन सफल करें।



महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती पर निकाली गयी शोभा यात्रा का दृश्य तथा दीप प्रज्वलित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज

महर्षि दयानन्द जयंती पर शोभा यात्रा

सहारनपुर 10 फरवरी राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत युग प्रवर्तक समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती समारोह के अवसर पर खालापार आर्य समाज द्वारा एक भव्य एवं ऐतिहासिक शोभा यात्रा का आयोजन किया गया।

शोभा यात्रा खालापार आर्यसमाज से शुरू होकर बाजार मोरगंज, बड़तला दीनानाथ सर्राफा, नया शहीदगंज नेहरू मार्किट विजय टाकिज होती हुई खालापार आकर समाप्त हो गयी।

शोभा यात्रा में विभिन्न विद्यालयों आर्य समाज रामतीर्थ बाल विद्यालय, गवर्नमेंट इन्टर कालेज, आर्य कन्या पाठशाला, एच०ए०वी० इन्टर कालेज तथा चौ० भारत सिंह इन्टर कालेज झबरेडा के हजारों बालक एवं बालिका हाथ में आर्य समाज का प्रतिनिधि ध्वज के "देश का अनैतिक जीवन समाप्त करो" "युवकों दहेज लेना छोड़ो" तथा छुआछूत हटाओ' जैसे राष्ट्रभक्ति के नारे लगाते हुए पंक्तिवद तरीके से चल रहे थे।

इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के जीवन को प्रदर्शित करती हुई तथा "कुत्तों की रक्षा प्रदूषण की रक्षा" नामक भव्य झाँकियाँ भी यात्रा में शामिल की गयी थी।

शोभा यात्रा में आगे-आगे उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान इन्द्रराज जी तथा महामंत्री मनमोहन तिवारी तथा कोषाध्यक्ष यशपाल आर्य तथा वी०वी० गौतम प्रधान स्थानीय, और देहरादून, मुरादाबाद, बुलन्दशहर, हरिद्वार मुजफ्फरनगर आदि जनपदो से आये आर्य प्रतिनिधि भालाओं से लदे चल रहे थे।

शोभा यात्रा में चल रहे आर्य प्रतिनिधियों का सभी समुदाय के लोगों ने जगह-जगह रोक कर स्वागत किया तथा कई स्थान पर लोगों ने प्रसाद आदि का वितरण भी किया।

वर्षा होने के बावजूद शोभा यात्रा बैण्ड बाजों के साथ धूमधाम से मुख्य बाजारो से होती हुई खालापार वापस पहुँची।

इस शोभा यात्रा में शिव सेना के कार्यकर्त्ता भी भारी संख्या में शामिल हुये। इससे पूर्व आर्य समाज ने यज्ञ भजन तथा प्रवचन किये गये व ऋषिलंगर तथा ध्वजारोहण कर शोभा यात्रा प्रारम्भ की गयी।

शोभा यात्रा का संचालन जीतराम 'जीत" द्वारा किया गया। इस अवसर पर राधेश्याम गुप्ता, विद्यासागर, रणजीत सिंह चौहान, पं०ओमप्रकाश, सुखदेव शास्त्री जयनारायण, वीरेन्द्र पाल शर्मा, डा० ओमबीर सिंह, विक्रम सिंह, अरविन्द कुमार, हरिश्चन्द्र आर्य, माधव सिंह हंसराज वेदार्थी श्रीमती संतोष कुमारी, ललता बहन, शकुन्तला पंवार, विजय विरेन्द्र सिंह, ऋचा शास्त्री, चन्द्र कान्ता, शान्ति, शारदा आदि आर्य प्रतिनिधि उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त आर्य समाज कन्या विद्यालय की अध्यापिकाओं ने भी शोभायात्रा में सहयोग दिया।

आर्य समाज के स्थानीय प्रधान वी०वी०गौतम ने शोभायात्रा मे शामिल आर्य प्रतिनिधियों सहयोगी सदस्यों तथा पुलिस व्यवस्था का आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ 3 का शेष.

...का सही मूल्यांकन नहीं कर पाएंगे और ...ही वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता को ...भी समझ पाएंगे।

पृथक् साम्प्रदायिक पहचान के नाम ...र लोग स्वदेशी सामाजिक परम्पराओं के ...यान पर उन देशों की प्रथाओं, व वेश-...भूषा को अपनाने लगे हैं, जो उनके सम्प्रदायों ...के जन्म-देश में प्रचलित रही हैं। उदाहरण ...के लिए "बहु-पत्नी-प्रथा" को लें। हजरत ...मुहम्मद के जन्म से पहले भी अरब में ...यह प्रथा थी। एक-एक पुरुष अनेक ...स्त्रियों को अपनी बीबी बनाकर रखता था। ...इसके अतिरिक्त दर्जनों रखैलें भी रखी जाती ...थीं। मुहम्मद साहब ने इसको अच्छा ...नहीं समझा और पत्नियों की संख्या घटा कर चार पर सीमित कर दी। एक, दो, तीन, चार, आगे विराम। अरब के समाज में उस समय यही बहुत बड़ा सुधार था।

इसी प्रकार- "बुर्का"। अरब में महिलाएं "बुर्का" पहनती थीं। यह वहाँ की पोशाक थी। इस्लाम के जन्म से भी पहले बुर्के का प्रचलन था। अब इस्लाम की दुहाई देकर भारतीय भारतीय मुस्लिम महिलाओं को भी बुर्का पहना दिया जाए, जो यह सरासर अन्याय है। अरब के परिधान का भारत, पाकिस्तान, बंगला देश आदि से क्या सम्बन्ध। जिस प्रकार चार बीबियां रखना इस्लाम का अंग नहीं है, उसी प्रकार बुर्का ओढ़ना भी।

यह कुछ संकेत किए। भेड़चाल समाज में बहुत है। मनुष्य का जन्म मिला है, तो विचारशील भी होना चाहिए।

मानव के विकास के लिए अध्ययन, मनन, चिन्तन, संवाद निरन्तर होते रहना चाहिए, अन्यथा यह पशुता में पशुओं को भी मात कर देता है। इतिहास के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। वर्तमान में भी चतुर्दिक् यही दिखाई दे रहा है कि आज के मनुष्य को शिक्षा कहीं न कहीं गड़बड़ हो गई है। समय की माँग है कि इस दिशा को बदला जाए, अन्यथा साम्प्रदायिकता जैसी समस्या का कोई समाधान नहीं हो सकेगा।

संदेश सुनाएंगे

• ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति
रावतभाटा (कोटा)
राजस्थान

दयानन्द का हम पावन सन्देश सुनाएंगे,
धरती से अज्ञान, अविद्या दूर भगाएंगे।।

अन्धकार में पड़ा जहाँ, दुःख भोग रहा इन्सान,
सच्चे अर्थों में जीवन का नहीं जिसे है ज्ञान,
वेदों का उपदेश वहाँ जाकर फैलाएंगे।।

मानवता की ज्योति जहाँ, तम में डूब रही है,
धर्म-कर्म की उच्च भावना, मन से सूख रही है,
आर्यसमाज का दिव्य दीप हम वहाँ जलाएंगे।।

ऋषियों की धरती पर होता, अत्याचार जहाँ है,
राम - कृष्ण के आंगन में कटु, हाहाकार जहाँ है,
भारत की मिट रही सभ्यता उसे बचाएंगे।।

आडम्बर औ ढोंग धरा पर, कहीं न रहने पाएगा,
भूत-प्रेत-भय का राक्षस, जनमानस से मिट जाएगा,
वैदिक शिक्षा लोगों में जाकर पहुँचाएंगे।।

भारतीय संस्कृति भारत में, भटक रही भयप्रद भूली,
ज्ञान-ध्यान की सारी बातें, लगती हैं जैसे शूली,
वेदों के डंके से सोई आवाज जगाएंगे।।

ओ३म्, नमस्ते, निराकार प्रभु का फैलेगा दिव्य प्रकाश,
वैदिक धर्म की विजय पताका, लहराएगी नित्य आकाश,
दुनियां वाले उसी के नीचे शीश झुकाएंगे।।

इस धरती का बच्चा-बच्चा, दयानन्द को याद करेगा,
औ उनके बतलाये सच्चे पथ पर सीना तान चलेगा,
वही पुरातन स्वर्गिक गायन, जी भर गाएंगे।।

गणतन्त्र दिवस एवं बसन्तपंचमी पर्व

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में 26 जनवरी को राष्ट्रीय ध्वजोत्तोलन का कार्य विद्यालय की नवीन भूमि पर अत्यन्त समारोह पूर्वक किया गया। विद्यालयीय ब्रह्मचारिणियों की परेड एवं अन्य खेल के कार्यक्रम विशेष प्रशंसनीय थे। क्रीडांगन गणमान्य अतिथियों से खचाखच भरा था। ध्वजोत्तोलन का कार्य आज के मुख्य अतिथि श्री कृष्णचन्द्र जी बेरी, अध्यक्ष-हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी द्वारा सम्पन्न कराया गया जिनका प्रेरणात्मक उद्बोधन भी कार्यक्रम के अन्त में हुआ। ब्रह्मचारिणियों को विद्यालय की प्राचार्या डॉ0 प्रज्ञा देवी जी ने आर्ष पाठविधि का महत्व बताते हुए राष्ट्रभक्ति का सारगर्भित उपदेश दिया एवं समागत जन समूह के प्रति आभार व्यक्त किया।

शुद्धि समारोह

दि0 19 जनवरी 1990 को आर्यसमाज मन्दिर गाजीपुर में श्री एम0ए0-सिद्दीकी पुत्र मुहम्मद अब्दुल्ला निवासी हरदोई जनपद की स्वेच्छा से वैदिक रीति से शुद्धि की गई उनका नाम श्री शिवकुमार आर्य रखा गया। यह कार्य श्री नृसिंह तिवारी के पौरोहित्य में सभी सभासदों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

--

नवीन आर्यसमाज स्थापित

आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखीमपुर के तत्वावधान में आर्यसमाज लहौरी नगर की स्थापना 3-12-9 को हुई सभा के भजनोपदेशक श्री ब्रह्मानन्द, श्री युगुलकिशोर व श्री नेमप्रकाश आदि के प्रयत्न से यह कार्य सम्भव हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान- श्री भोलानाथ वर्मा
मन्त्री- श्री गोपी कृष्णा वर्मा
कोषा0- श्री अमर सिंह

--

यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एव वार्षिकोत्सव

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ [पुष्पावती] गाजियाबाद में दि0 23 से 25 मार्च-1990 तक यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ सम्पन्न होगा। यह गुरूकुल इसी वर्ष स्थापित हुआ है दानियों से प्रार्थना है कि वह गुरूकुल की तन,मन, धन से सहायता करें।

- धर्मपाल आचार्य
संचालक

आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन विकास फार्म में 22 से 31 मार्च 1990 तक 10दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के साथ योग, सांख्य तथा न्याय दर्शन के चुने हुए सूत्रों का अध्यापन भी किया जायेगा। शिविर शुल्क 200/- रूपये रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होंगे उनको योग्य जानकर शुल्क में छूट दी जा सकेगी। शिविरार्थी 15 मार्च से पूर्व ही अपनी योग्यता, व्यवसाय, आयु सहित आवेदन पत्र निम्न पते पर लिखकर स्वीकृति ले लेवें तथा मन्त्री, आर्यवन के पास शुल्क जमा करवा देवें।

पता- दर्शन योग विद्यालय, आर्यवनविकास-रोजड़, पो0 सागपुर, जिला-साबरकांठा [गुजरात] 383307

धन जी वाल जी पटेल [प्रधान, आर्यवन]
स्वामी सत्यपति [शिविराध्यक्ष]

पारवारिक सत्संग की वर्षगांठ

आर्यसमाज सीपरी बाजार झाँसी के तत्वावधान में सीपरी बाजार क्षेत्र के विभिन्न मुहल्लों में स्थित विभिन्न परिवारों में आयोजित किये जा रहे पारिवारिक सत्संग की प्रथम वर्षगांठ रविवार दिनांक- 14-1-90 को सायं 3 से 5 बजे तक श्री वेद प्रकाश घर के नवनिर्मित गृह पर समारोह पूर्वक मनाई गई जिसके अन्तर्गत यज्ञ, भजन तथा अनेक विद्वानों द्वारा गृहस्थ जीवन तथा मकरसंक्रान्ति पर विस्तार पूर्वक विचार व्यक्त किये गये।

- आर्यसमाज बर्राकानपुर का निर्वाचन सभा की उपप्रधाना तथा जिला सभा कानपुर की अध्यक्षा श्रीमती डा0 आशारानी-राय ने सम्पन्न कराया। जो निम्न प्रकार है -

प्रधान- डा0 जी0पी0 सिंह,
मन्त्री- श्री अरूण कुमार आर्य,
कोषा0- श्री कृष्ण कान्त ।

- महर्षि दयानन्द बाल मन्दिर केराकत जौनपुर का वार्षिकोत्सव एवं आर्य वीरदल केराकत जौनपुर का वीर पर्वोत्सव दिनांक- 31-1-90 दिन बुद्धवार को बसन्तोत्सव के शुभ अवसर पर नार्मल स्कूल केराकत जौनपुर के मैदान में उक्त दोनों उत्सव समवेत रूप से आर्यसमाज केराकत के संरक्षण में बड़े धूम धाम से मनाया गया।

पृष्ठ १ का शेष.....

कई वर्ष पूर्व मीनाक्षीपुरम में घटित सामूहिक धर्म परिवर्तन की घटना ने दक्षिण भारत को झकझोर दिया है। वहां का आर्य ‧हिन्दू समाज‧ जागृत होकर अपने धर्म की रक्षा के लिए आज कटिबद्ध है। दक्षिण भारत में आर्य समाज के प्रचार में सर्वात्मना समर्पित श्री एम0 नारायण स्वामी ने पूरे दक्षिण भारत के शहरों, कस्बों गॉव-गॉव में आर्यसमाज के प्रचार की दुन्दभी बजा दी है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू0 स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के तूफानी दौरे ने इस क्षेत्र में नवजागरण का शंख फूंका है। -सम्पादक

उद्घाटन समारोह के पश्चात् पुन: डाक्टर साहब ने 50 हजार रूपया और देने की घोषणा की। डा0 साहब संस्कृत, तमिल और अंग्रेजी के बहुत बड़े विद्वान हैं। वहां से स्वामी जी श्री सीताराम जी प्रमुख धार्मिक व्यक्ति के घर गए। वहॉं भारी जनसभा का आयोजन किया गया था। ओ3म पताका फहराने के बाद स्वामी जी ने जन समुदाय को उद्बोधन देते हुए कहा - दक्षिण भारत के धर्मप्रेमी बन्धुओं वेद प्रतिपादित मान्यताएं ही हमारी संस्कृति के मूलाधार हैं। देववाणी संस्कृत दक्षिण और उत्तर को जोड़ने वाली एक कड़ी है। हमें राष्ट्र की एकता, अखण्डता के लिए सदैव जागरूक होकर किसी भी प्रकार के त्याग व बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए। उसके पश्चात वहां ऋषिलंगर में सैकड़ों लोगों नें भोजन किया। इसकी व्यवस्था भी श्री सीताराम तथा उनकी विदुषी पत्नी की ओर से की गई थी। वहां से चलकर तिरूनाक्ली में ही स्वामी जी के द्वारा दयानन्द संस्कृत विद्यालय की स्थापना की गई। वहां पर स्वामी जी ने लड़कियों के हास्टल, दयानन्द रूरलसोशियल सर्विस सेण्टर आदि का निरीक्षण किया और ग्रामीण लोगों में अपने हाथ से मिठाई बॉटी। तिरूनाक्ली नगर के बाहर गुरूकुल के लिए ढाई एकड़ भूमि आर्य समाज को दान में मिली है। इसके साथ 500 प्लाट भी हैं। समाज के अधिकारियों ने स्वामी जी को बताया कि प्लाट बेचकर उनका धन भी गुरूकुल के कार्य में लगाया जायगा। प्लाट आर्यसमाजी लोगों को मात्र एक हजार रूपये में प्रति प्लाट दिया जायगा। वहां से स्वामी जी तिनकाशी गए। वहां श्री मुट्टू कुट्टी बी0काम0 पास एक नवजवान नवयुवक ने सवामीजी महाराज का स्वागत किया और महर्षि दयानन्द के नाम से संचालित अपनी सुन्दर गोशाला का स्वामी जी से निरीक्षण कराया। स्वामी जी गौशाला देखकर बहुत प्रसन्न हुए। इस गोशाला में इस समय एक हजार दुधारु गायें हैं। यहॉं से दूर-दूर तक गोदुग्ध सप्लाई होता है। इसके अतिरिक्त वहॉं दयानन्द नरसरी स्कूल, महिला सिलाई-कढ़ाई स्कूल भी चल रहे हैं। क्षेत्र की गरीब महिलायें तथा बच्चे इनका अच्छा लाभ उठा रहे हैं।

25 जनवरी को स्वामी जी जब मीनाक्षीपुरम पहुंचे तो वहॉं सारे गॉव में बड़ी हलचल थी। दूर-दूर से लोग वहॉं इकट्ठे हो रहे थे। पुलिस की भारी व्यवस्था थी। पूरे क्षेत्र की सड़कें साफ कराई हुई थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि मीनाक्षीपुरम सम्मेलन के पश्चात उस क्षेत्र में आर्यसमाज का व्यापक प्रभाव पड़ा था, इसीलिए स्वामीजी महाराज के वहॉं आगमन पर हर प्रकार से विशेष प्रबन्ध किये गए थे। श्री अनन्तराम सेशन तथा अन्य लोग स्वामी जी के स्वागत के लिए वहॉं प्रतीक्षारत थे।

मीनाक्षीपुरम में सभा ने 1982 में 5 हजार वर्गगज का जो प्लाट खरीदा था, उसमें यज्ञशाला तो पहले ही तैयार हो चुकी है। अब विद्यालय भवन भी बनकर तैयार हो गया है। विद्यालय का उद्घाटन स्वामीजी ने किया। उसके पश्चात् वहॉं यज्ञशाला में वृहद् यज्ञ का आयोजन पं0 राजगोपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ। आर्यसमाज के अधिकारी तथा अन्य गण्यमान लोग यज्ञ में यज्ञमान थे। वहॉं का कार्यक्रम आर्यसमाज के प्रति दक्षिण भारत के लोगों की श्रद्धा व आस्था का एक प्रतीक बन गया था। मीनाक्षीपुरम से स्वामी जी महाराज कोट्टालम गए। वहॉं आर्यजनों ने समाज मंदिर के लिए एक भूमिखण्ड खरीदा हुआ है। स्वामीजी ने इस प्लाट का भी निरीक्षण किया और स्वागत के उपरान्त उन लोगों को प्रेरणा करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। इसके बाद तिनकाशी के वाटरफाल को देखते हुए स्वामीजी तथा अन्य सभी लोग मदुरै पहुंचे। वहॉं से 28 जनवरी की प्रात मद्रास पहुंचे। स्टेशन पर श्री जयदेव जी आर्य तथा टी कनन तथा अन्य लोग स्वागतार्थ पहुँचे हुए थे। स्वामी जी वहॉं से सीधे आर्य समाज मंदिर मद्रास गए। स्नान आदि के बाद आर्यसमाज के विशाल सत्संग में उन्होंने भाग लिया।

स्वामीजी के अनुसार आर्यसमाज मद्रास का यह सत्संग प्रभावशाली तथा उच्चकोटि का था। बड़ी संख्या में विद्वान तथा आर्य नर-नारी उसमें पधारे हुए थे। स्वामी जी ने अपने संक्षिप्त भाषण में आर्यसमाज मद्रास के पदाधिकारियों और सदस्यों को धन्यवाद देते हुए कहा कि दक्षिण भारत में मीनाक्षीपुरम सम्मेलन के पश्चात आर्य समाज के लिए बड़े-बड़े दरवाजे खुल गए हैं, आर्य समाज को इन परिस्थितियों से लाभ उठाने के लिए आगे बढ़कर काम करना चाहिए।

रात्रि में मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डा0 आनन्द शर्मा की अध्यक्षता में डी0ए0वी0हा0से0 स्कूल ‧मद्रास‧ का वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। स्वामी जी महाराज ने डी0ए0वी0 स्कूल मद्रास की प्रगतियों तथा उसके कार्यकलापों की प्रशंसा करते हुए स्कूल के प्रबन्धकों, स्टाफ आदि को बधाई देते हुए बच्चों को शुभ आशीर्वाद दिया।

इसके बाद स्वामी जी ने रात्रि को तमिलनाडु एक्सप्रेस से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। मद्रास समाज के अधिकारियों ने स्वामी जी को भावभीनी बिदाई दी। □

आर्यसमाज सांताक्रुज द्वारा वेद वेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा -वेद वेदांग एंव वेदोपदेशक पुरस्तकार- बम्बई दिनांक 31 जनवरी 1990, भारतीय विद्या भवन चौपाटी बम्बई के वातानुकूलित सभागृह में हुआ।

87 वर्षीय पूजनीय पं0 हरिशरण जी सिध्दान्तालंकार को उनके द्वारा वेदों से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों एवं चारों वेदों के सरल भाषा भाष्य पर "वेद वेदांग पुरस्कार-1990" से सम्मानित किया गया। कैप्टन देव रत्न आर्य ने अभिनन्दन-पत्र पढ़ा और मुख्य अतिथि डा0 शान्तिलाल जी सोमैया ने जब उन्हें 21000 रू0 की थैली, अभिनन्दन पत्र रजत ट्राफी, श्री फल और शाल से सम्मानित किया तो जनता भाव विभोर हो उठी।

जीवनभर भजनोपदेशक के रूप में वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले माननीय श्री ओम प्रकाश जी वर्मा भजनोपदेशक को "वेदोपदेशक-पुरस्कार-1990" से सम्मानित किया। महामन्त्री श्री विमल स्वरूप सूद अभिनन्दन पत्र पढा और विशेष अतिथि पूजनीय पं0 सत्यकाम जी विद्यालंकार ने जब श्री ओम प्रकाश जी को तालियों की गडगडाहट के मध्य रू011,000/- की थैली, अभिनन्दन पत्र रजत ट्राफी श्री फल एवं शाल से सम्मानित किया तो वह भाव-विभोर हो उठे। उन्होंने कहा आज मुझे इस सम्मान से इतना साहस और आत्मबल मिला है कि मेरी आयु कई वर्ष बढ गई है और मैं जीवन के अन्तिम क्षण तक वैदिक धर्म का प्रचार करता रहूँगा। यह आश्वासन देता हूँ।

समारोह में संस्कृत के लगभग 30 विद्वानों का गुलाब के फूलों से कुमारी मनुजा आर्य नें सम्मान किया जो समारोह में उपस्थित हुए थे। समारोह को सफल बनाने के लिये डा0 सोमदेव जी शास्त्री एव श्री सन्दीप आर्य का मंच पर पुष्पगुच्छों से सम्मान किया गया। इस अवसर पर पूजनीय स्वामी विद्यानन्दजी सरस्वती द्वारा लिखित "भूमिका भास्कर" के द्वितीय खण्ड का विमोचन भी किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री ओंकार नाथ जी आर्य ने की। वेदवेदांग पुरस्कार चयन समिति के संयोजक कैप्टिन देव रत्न आर्य ने समारोह का संयोजन किया एवं महामंत्री श्री विमल स्वरूप सूद ने धन्यवाद का प्रस्ताव रखा। बम्बई महानगर की सभी संस्कृत निष्ठ एव आर्य समाज संस्थाओं ने सम्मानित विद्वानों का चंदन की माला से स्वागत किया। आर्य समाज माटुंगा द्वारा संचालित दयानन्द विद्यालय के सभी अध्यापक एवं अध्यापिकाएं इस समारोह में उपस्थित हुए। उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधिसभा की ओर से श्री पं0 इन्द्रराज प्रधान एव श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री ने सभी पुरस्कृत विद्वानों को बधाई प्रेषित की है। इसके पश्चात् शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई। □

आर्यसमाज गोरखपुर (बख्शीपुर) का ९१वाँ वार्षिकोत्सव एवं "राष्ट्र भृत महायज्ञ सम्पन्न

गोरखपुर जिले की प्रमुख तथा केन्द्रीय "आर्य समाज गोरखपुर" ‌(बख्शीपुर) का शताब्दी दशक के क्रम में 91वाँ वार्षिकोत्सव विभिन्न आकर्षक कार्यक्रमों तथा राष्ट्रीय एकता व अखण्डता और राष्ट्र के समग्र कल्याण के लिये आयोजित राष्ट्र भृत महायज्ञ' के साथ दिनांक 3 से 6 फरवरी तक सम्पन्न हुआ। 'राष्ट्र भृत महायज्ञ' के ब्रहमा, जम्मू कश्मीर के ब्रह्मचारी अखिलेश्वर व्याकरणा--चार्य ने यज्ञ में चारों वेदों से संकलित राष्ट्र भृत सूक्त के मन्त्रों से, विशाल एवं भव्य सुसज्जित यज्ञशाला में यज्ञ के समय विशिष्ट मंत्रों की व्याख्या करते हुये आदर्श वैदिक राष्ट्र, आदर्श राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय चरित्र की विवेचना की तथा वर्तमान परिपेक्ष्य में सामाजिक राष्ट्रीय तथा राजनैतिक समस्याओं का वेद सम्मत समाधान प्रस्तुत किया। कार्यक्रमों का मुख्य आकर्षण कन्या गुरुकुल हाथरस की ब्रह्म चारिणियाँ रहीं। जिन्होंने अपने सुमधुर वेदपाठ, भजन व्याख्यान, सांकेतिक गान, योग, आसन तथा प्राणायाम् एवं शारीरिक बल प्रदर्शन द्वारा जनता का मनमोह लिया। दिनांक 5 तथा 6 फरवरी को श्री सोममित्र शास्त्री (आधुनिक अर्जुन) का धनुष बाण प्रदर्शन एवं ब्रह्मचारी विश्व पाल जयन्त (आधुनिक भीम) के ब्रहमचर्य बल प्रदर्शन की नगर की जनता ने भूरि-भूरि सराहना की। दिनांक 6 फरवरी 2 बजे से 5 बजे तक विदृयालयों के बच्चों की सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता के अन्तर्गत बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रमों के माध्यम से आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों एवं कृतियों की झाँकी प्रस्तुत की। उक्त प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में सरस्वती शिशु मन्दिर हायर सेकेन्ड्री स्कूल सूर्य कुण्ड ने प्रथम स्थान प्राप्त कर चल वैजयन्ती जीता तथा आर्य कन्या इण्टर कौलेज ने (द्वितीय) तथा सरस्वती शिशु मन्दिर पू0मा0विदृयालय (प्रेमचन्द्र नगर) ने (तृतीय) स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में दयानन्द शिशु सदन (प्रथम) स्वामी वृजानन्द बाल सदन हजारीपुर (द्वितीय) तथा सरस्वती शिशु मन्दिर प्रेमचन्द्र नगर (तृतीय) सम्मान से विभूषित हुआ।

कार्यक्रम के प्रथम दिन पूर्वी उत्तर प्रदेश के 21 जिलों तथा बिहार के दूरस्थ चम्पारण एव पटना तक से पधारे 300 पूर्वान्चलीय प्रतिनिधियों का विशाल आर्य सम्मेलन तथा भव्य शोभा यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरी। जिसमें घोष प्रचलन प्रतियोगिता में स्वामी वृजानन्द बाल सदन हजारीपुर (प्रथम) सरस्वती शिशु मन्दिर हा0से0 स्कूल सूर्यकुण्ड (द्वितीय) तथा सरस्वती शिशु मन्दिर (प्रेमचन्द्र नगर) तृतीय रहा। जिलों से पधारे समस्त प्रतिनिधियों का सभा प्रधान पं० इन्द्रराज जी तथा उपप्रधाना माननीया डॉ0 आशारानी राय एवं राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन के संयोजक श्री जयंत कुमार पाण्डे से क्रमशः परिचय हुआ। सभा प्रधानजी तथा उपप्रधाना मा0 डॉ0 आशारानी राय ने उपस्थित प्रतिनिधियों की बातों को सुना तथा उनका समाधान प्रस्तुत करते हुये कार्यों में आवश्यक सुधार का आश्वासन दिया तथा संगठन प्रचार व प्रसार तथा रचनात्मक प्रकल्पों एवं नवीन योजनाओं को कार्यान्वित करने पर बल दिया। डा0 आशारानी राय ने दैनिक एवं साप्ताहिक यज्ञ सत्संग एवं संस्कार जागृत करने का आह्वाहन किया। श्री जयन्त कुमर पाण्डे ने धर्म परिवर्तन को रोकने तथा एतदर्थ सभा की योजनाओं से परिचित कराया। कार्यक्रम का संचालन सभा उपमंत्री एवं संयोजक पूर्वी प्रचार विभाग डा0 विजय प्रताप जी ने किया।

सायंकालीन व्याख्यान तथा प्रवचनों के कार्यक्रम में, राष्ट्रीय युवा जागृति सम्मेलन में ब्रह्मचारी आर्य नरेश ने युवकों में चरित्र निर्माण, शराब, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू तथा दुर्व्यसनों से निवृत्ति तथा दहेज रहित विवाह का आह्वाहन किया। हजारों नवयुवकों ने हाथ उठाकर हर्ष ध्वनि सहित वचन दिया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के उपकुलपति पं0 रामप्रसाद वेदालंकार ने मातृ शक्ति सम्मेलन में आदर्श वैदिक नारी तथा आदर्श वैदिक परिवार की वयाख्या करते हुये राष्ट्र निर्माण में नारियों की भूमिका की चर्चा करते हुये कहा कि आदर्श नारियाँ ही आदर्श राष्ट्र की निर्माता होती हैं। अतः जिस राष्ट्र की नारी शक्ति आदर्श तथा चारित्रय सम्पन्न होगी वह राष्ट्र ही आदर्श राष्ट्र होगा।

चतुर्दिवसीय इस वार्षिकोत्सव के क्रम में "आर्य कवि सम्मेलन" का भी आयोजन हुआ। जिसमें निर्भय हाथरसी, प्रो0 राजवीर सिंह क्रान्तिकारी, जयनारायण 'अरुण', हुक्का बिजनौरी, संजीव एकल, आरिफ गाँधी, भुल्ला सिंह रावत, महेश शांख्यधर, रवि चतुर्वेदी सदृश अनेक कवियों ने राष्ट्रीय, धार्मिक एवं सामाजिक चेतना तथा सांस्कृतिक जागृति हेतु सुमधुर काव्य पाठ एवं हास्य व्यंग द्वारा जनता को आकर्षित कर लिया। कार्यक्रम के समापन दिवस पर एक स्वस्थ्य परम्परा का निर्वाह करते हुये नगर के वरिष्ठ तथा सम्माननीय आर्य समाजा कार्य कर्त्ता श्री मुन्ना लाल जी पत्रकार एवं श्री कृष्ण जी पेशकार को ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी ने उत्तरीय एव पुष्पांजलि द्वारा सम्मानित किया।

इस प्रकार आर्य समाज गोरखपुर ने अभूतपूर्व एवं भव्य रूप से नवीन कार्यक्रमों, योजनाओं तथा रचनात्मक विकास तथा प्रचार और प्रसार के नवीन प्रावधानों एवं प्रकल्पों के साथ अपने शताब्दी दशक में प्रवेश किया। □

विनम्र अनुरोध

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों/जिला-उपसभाओं को सूचित किया जाता है कि वे अपना वार्षिक निर्वाचन (आर्यसमाजें जिला उपसभाओं द्वारा तथा जिला उपसभाएं सभा के मान्य अधिकारी द्वारा) प्रमाणित कराके ही प्रकाशनार्थ आर्यमित्र में भेजें।

— प्रबन्ध सम्पादक।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज अमरोहा की अन्तरंग-सभा दिनांक 31-1-90 आर्य प्रतिनिधि-सभा, उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव महाना के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख प्रकट करती है। उनके दिवंगत हो जाने से आर्य-समाज ने अपना एक अमूल्य रत्न खो दिया।

प्रभु से प्रार्थना है कि वह शोकाकुल परिवार को धैर्य एवं दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

ज्ञानदर्पण

(१)

अर्चना आर्य (प्रियदर्शिनी छात्रावास, विश्वविद्यालय-इलाहाबाद।)

ऋग्वेद में कुल मन्त्रों की संख्या 10589 है।

संविधान के अनुसार भारत की मान्य भाषायें 16 हैं:

हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, बंगला, गुजराती, कश्मीरी, मलयालम, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी, असमिया और कोंकणी।

हरी सब्जी भूनने के बाद, उसमें नमकीन गुनगुन पानी डालने से उसका रंग पुनः पहले जैसा हो जाता है।

दही अच्छा-गाढ़ा जमाने हेतु बरतन में थोड़ा फिटकरी का चूर्ण लगाना चाहिये।

बेसन में थोड़ा खानेवाला सोडा मिलाने से नमकीन पदार्थ खस्ती व कुरकुरी बनेंगी।

शुद्ध घी की सुगन्ध व अच्छाई अनुरक्षित रखने हेतु उसमें सेंधा नमक की एक डली डाल देनी चाहिये।

(२)

श्रीनिवास आर्य (आर्य पुस्तक भण्डार, भरवारी, इलाहाबाद।)

बड़ों का सम्मान कर अपने को बड़ा बनायें। एक दिन तुम भी बड़े होगे, और वही सम्मान पाओगे, जो अपने बड़ों को दोगे।

× शवयात्रा में चलते समय लोकरीति के अनुसार लोग कहते रहते हैं- "रामनाम (ओ3म् नाम) सत्य है। सत्य बोलो मुक्ति है।"

सत्य की ओर बढ़ने हेतु, झूठ बोलने की आदत छोड़नी चाहिये। सत्य अन्तरात्मा की आवाज है। सत्य अपनाने से मनुष्य दुख से मुक्त रहता है।

× ईश्वर द्वारा दिया गया हमारा शरीर कैसा है? जितना काम करो, उतना ही मजबूत शरीर। एक सेठ उत्तम भोजन करता है परन्तु शरीर कमजोर। मजदूर निम्न कोटि का भोजन करता है परन्तु शरीर मजबूत। हर आश्रम में शरीर व श्रम का अपना स्थान है।

× मन्दिर में पुजारी मिष्ठान प्रसाद बाँटते हैं। खुले मैदान में ब्राह्मुहूर्त में परमात्मा प्राणदायिनी वायु का प्रसाद बाँटते हैं। ब्राह्ममुहूर्त सूर्योदय से चार घड़ी पहले प्रारम्भ होता है तथा ऊषाकाल (सूर्योदय से पूर्व आकाश की लाली) तक रहता है। एक घड़ी चौबीस मिनट की होती है।

हर रात के पिछले पहर में,
इक दौलत लुटती रहती है
जो जागते हैं वे पाते हैं,
जो सोते हैं, वे खोते हैं।

स्वामी ……लानन्द सरस्वती
……

आर्यमित्र कार्यालय में लेखकपद पर कार्यरत श्री महेशचन्द्र रस्तोगी सुपुत्र श्री बैजनाथ रस्तोगी अशर्फाबाद, लखनऊ का शुभ विवाह आयुष्मती मोहिनी सुपुत्री श्री विजयचन्द्र रस्तोगी, शाहजहाँपुर के साथ लखनऊ में दिनांक- 4 फरवरी 1990 को पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अनेको गण्यमान्य सज्जनों के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि-सभा उ0प्र0 के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, सम्पादक श्री आचार्य इन्द्रदेव पाठक तथा सभा कार्यालय के सभी स्टाफ उपस्थित होकर चि0 वरवधू को अपना मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया।

आर्यमित्र एवं सभा कार्यालय परिवार की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं ।

--

चि0 आलोक सक्सेना सुपुत्र श्री बलराम गोविन्दजी सक्सेना, गोन्डा एवं आयुष्मती वन्दना सुपुत्री श्री सूरज प्रसाद सक्सेना, प्रवक्ता गाँधी इण्टर कालेज, बहराइच का शुभ पाणिग्रहण संस्कार दिनांक 4 फरवरी को आचार्य श्री पं0 इन्द्रदेव पाठक, प्रबन्ध सम्पादक, आर्यमित्र, लखनऊ ने पूर्ण वैदिक ऋचाओं के उद्बोधन एवं दाम्पत्य जीवन का मधुरग्राही सार समझाते हुए सम्पन्न कराया। इस अवसर परनगर तथा बाहर के अनेक गण्यमान्य पुरुषों ने उपस्थित होकर चि0 वर वधू को अपना मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया।

सभाप्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मंत्रीश्री मनमोहन तिवारी ने चि0 वरवधू को अपनी हार्दिक बधाई प्रेषित की हैं।

शोक समाचार

● आर्यसमाज जौनपुर ने अपने उपप्रधान श्री रामनाथ जी के निधन पर एक शोक प्रस्ताव पारित करके परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

--

● आर्यसमाज बरबीघा के कर्मठ कार्यकर्त्ता पं० विष्णुदयाल जी का 19 जनवरी-1990 को 5 बजे प्रातः हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

--

श्रीमती कलारानी मिश्रा दिवंगत

आर्य प्रतिनिधिसभा, उ0प्र0 के संस्थापकों में हरदोई के स्व0 भगवानदीन-मिश्र का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है। उनके पौत्र श्री पं0 योगेन्द्रनाथ-मिश्र की धर्मपत्नी श्रीमती कलारानी मिश्रा, भूतपूर्व विधायिका, उ0प्र0 विधानसभा का गत 11 फरवरी को रात्रि में लखनऊ मेडिकल कालेज में अल्पसमय की बीमारी के पश्चात् आकस्मिक निधन हो गया। उनके पार्थिव शरीर को हरदोई लाकर महेश गली स्थित उनके मकान पर रखा गया जहाँ अनेकों सम्भ्रान्त नागरिकों ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

उनके आकस्मिक निधन पर सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने हार्दिक शोक प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की है।

- सच्चिदानन्द शास्त्री।

आर्यसमाज उन्नाव का 92वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज उन्नाव का 92वाँ वार्षिकोत्सव 26 से 28 फरवरी 1990 को आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में आयोजित किया गया।

आर्यसमाज विद्युत गृह कासिमपुर अलीगढ़ उ0प्र0 का 22वाँ वार्षिकोत्सव दि0 19 से 21 फरवरी 90 तक ससमारोह मनाया गया।

--

- दि0- 28 फरवरी से 2 मार्च 90 तक आर्यसमाज राजा का रामपुर का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

--

- आर्यसमाज खुशरूपुर (पटना) का 87वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 24 से 29 दिसम्बर 89 तक सोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

--

आर्यसमाज कालपी (जालौन)

प्रधान- श्री ओंकारनाथ आर्य
मन्त्री- श्री श्री प्रकाश जैतली
कोषा0- श्री ज्ञानेन्द्र कुमार आर्य

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष २४५९९३
पंजीकरण स० एल०डब्ल्यू/एन पी ७६
फाल्गुन शुक्ल ८
४ मार्च रविवार १९९०

सेवा में
12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करे

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह दिसम्बर १९८९ को समाप्त हो गया है। वी०पी० भेजने मे 7-50 रु० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दे। रुपया प्राप्त न होने की दशा मे हम वी०पी० भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर ले, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जन० 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु० है।

दिसम्बर 1989

624 853, 2110, 2656,
2987 3351, 3027 5416,
5995 6008, 8160, 8450,
8690, 9342, 9770, 9772,
10027, 11087, 11088, 11783,
12490, 12530, 12781, 13358,
13660, 13661, 14133, 1414-,
14553, 14564, 14571, 14575,
14926, 14927, 14928, 14929,
14930, 14931, 14932, 14933,
14934, 14935, 14936, 14937,
14938, 14939, 14940, 14941,
14942, 14943, 14944, 14945,
14946, 14947, 14948, 14949,
14950, 14951, 14952,
14954, 14955, 14956, 14957,
14958, 14959, 14960, 14961,
14962, 14963, 14964, 14965
14966, 14967, 14968, 14969
14970, 14971, 14972, 14973
14974, 14976 ।

—व्यवस्थापक

सभा का वर्ष

1- उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एव जिला सभाओं के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि अब भविष्य में सभा का वर्ष 31 मार्च को समाप्त हुआ करेगा। अत आर्यसमाजे एव जिला सभायें भी अपना वर्ष सभा के वर्ष के साथ साथ समाप्त करें।

2 आर्यसमाजे एव जिला सभायें अपने आर्यसभासदों की सूची बनाकर 31 मई 1990 तक अपना वार्षिक निर्वाचन अवश्य कर लें यदि किसी कारणवश न कर सकें, तो कारण अंकित करते हुए सभा से आज्ञा प्राप्त करके ही निर्वाचन सम्पन्न करें।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि.सं. २२४१/५७ फाल्गुन शुक्ल-१५, रविवार-संवत् २०४६ वि., दिनांक ११ मार्च १९९० (घोषणा पत्र सं ७/२८-२-८५)





सादर प्रणाम

मेरा सादर प्रणाम हो, उस महान् गुरु दयानन्द को जिसकी दृष्टि ने विश्व के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जो सर्वांगीण क्रान्तियों का उद्गाता था और जिसका त्याग एवं बलिदान हमें अनन्तकाल तक प्रेरणा देने वाला है।

- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य ——— रु. २५१/-
वार्षिक ——— रु. 30/-
एक प्रति ——— १ रु. मात्र
विदेश में ——— १५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष
अंक-१०

कश्मीर-पंजाब समस्या पर-

माननीय श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी, प्रधानमंत्री भारत सरकार को खुला पत्र

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा

सादर नमस्ते।

आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आपको प्रधानमंत्री बनने की बधाई देते हुये परमात्मा से कामना करता हूं कि इस पद पर रहते हुए आप भारत वर्ष की प्रगति तथा उन्नति के लिए अधिक योगदान कर सकें।

जैसा कि आप जानते हैं कि 50 वर्ष पूर्व हैदराबाद में निजाम को सत्ता मुक्त करने के लिए आर्य समाज ने 1939 में सत्याग्रह किया था। गत 29,30 और 31 दिसम्बर 1989 को उसी आर्य सत्याग्रह की याद में स्वर्ण जयन्ती समारोह हैदराबाद मे आयोजित किया गया था। इस समारोह के अंतर्गत पंजाब और कश्मीर की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुये समस्त आर्य जनता ने यह प्रस्ताव पारित किया कि सरकार से इन दोनों राज्यों में शान्ति कायम करने के लिए अनुरोध किया जाए और जब तक स्थिति नियंत्रण में न आ जाए, इन दोनों राज्यों में विधान सभा के चुनाव न कराए जाएं।

उपरोक्त निर्णयों के संदर्भ में आपके समक्ष और विचार प्रस्तुत करना अपना दायित्व समझता हूं। जैसा कि आप जानते है कि वर्तमान लोकसभा में मान गुट के 9 सदस्य चुने गए हैं। इनके चुनाव के तरीकों से आप अवश्य ही जानकार होंगे। यह भी भली प्रकार से स्पष्ट है कि यदि उग्रवाद की सहायता से ये लोग चुनाव न जीतते तो इनमे से कुछ को फांसी की सजा और कुछ को उम्र कैद की सजा मिलनी निश्चित थी,परन्तु इन्हें जेलों से रिहा किया गया और सभी मुकदमें भी वापस ले लिए गए। इससे उग्रवादियों का उत्साह बढ़ा और सारी सुरक्षा व्यवस्था के मनोबल को ठेस पहुँची। आज उग्रवादी अपने आपको पंजाब का स्वामी मानते हैं। जिस तरह वे आदेश जारी करते हैं, उस तरह तो राज्यपाल भी नहीं करते। अधिकारियों को धमकियां दी जा रही हैं, व्यापारियों और डाक्टरों से लाखों रुपये वसूल किए जा रहे हैं, पुलिस अफसरों की सूचियां प्रकाशित की जा रही हैं जिन्हें दण्ड देने का इरादा है। सिमरनजीत सिंह मान कानून के अनुसार काम करने वाले बड़े-बड़े अफसरों को हिटलर बता रहे हैं, और उनके विरुद्ध उसी तरह कार्यवाई करने की धमकी दे रहे हैं, जैसे दूसरे महायुद्ध के बाद नाज़ियों के खिलाफ की गयी थी। पुलिस थानों पर हमले हो रहे है। अर्द्धसैनिक बलों को निशाना बनाकर मौत के घाट उतारा जा रहा है। एक-एक सप्ताह में कई-कई लाख की फिरौतियां वसूल की जा रही हैं।

मैं नहीं समझता कि आप सुरक्षा कर्मियों की मन स्थिति का अन्दाजा नहीं लगा सकते कि जिस प्रकार अपने परिवार व अपनी जान की परवाह किए बिना देश के वीर पुलिस अफसर उग्रवादियों से टक्कर लेते हैं और सरकार उन्हीं में से कुछ उग्रवादी नेताओं को अकारण रिहा कर देती है और इसके विपरीत पुलिस अधिकारियों से जबाव तलबी होती है। पिछले एक महीने में लगभग 50 सुरक्षा सैनिक उग्रवादियों के साथ मुठभेड में मारे गए हैं। क्या इन मुठभेड़ों को भी झूठी मुठभेड का नाम दिया जा सकता है।

आज तक की परिस्थितियों पर यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाए तो स्पष्ट होगा कि यदि पंजाब में विधान सभा चुनाव करवा दिए गए तो कोई हैरानी नहीं होनी चाहिये कि बड़ा भारी अनर्थ होगा, यदि 117 में से लगभग 80 सीटें मानगुट के उन उग्रवादियों उनके रिश्तेदारों इत्यादि को इनाम में मिलेंगी (जिन्होंने देश की बडी से बड़ी हस्ती के खून से अपनी प्यास बुझाई थी) तो आप इसका भी भलीभांति अंदाजा लगा सकते हैं कि इस प्रकार के लोगों की सरकार पंजाब में क्या-क्या गुल खिलाएगी। ऐसी सरकार पर नियंत्रण तो दूर सहयोग की अपेक्षा भी केन्द्र सरकार को एक पूरा न होने वाला स्वप्न लगेगा। ऐसी सरकार सत्ता संभालते ही विधान सभा में प्रथम प्रस्ताव खालिस्तान का पास कराएगी, जिससे आपके लिए एक नया संवैधानिक संकट पैदा हो जायगा।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज! आर्य समाज!!
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- फाल्गुन शुक्ल १५ संवत् २०४६ वि.
११ मार्च १९९० - दयानन्दाब्द-१६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

नवसस्येष्टि का संदेश भारतीय एकता

आज हमारे देश में एकता की समस्या प्रमुखरूप में भारतीय जनमानस को झकझोर रही है। हमारे राष्ट्रोन्नति के सारे प्रयास और कार्यक्रम एकता के अभाव में निरर्थक सिद्ध होते जा रहे हैं। इस समस्या पर विचारगोष्ठियाँ तो बहुत हुईं और राष्ट्रीय स्तर पर अनेक निर्णय भी लिए गये परन्तु समस्या का अपेक्षित समाधान अभी तक नहीं हुआ है। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज का अपना दृष्टिकोण है जो वेदसम्मत शाश्वत होने के साथ ही समस्त मानवजाति को एकता के सूत्र में बान्धने का सन्देश देने वाला है। स्वामी दयानन्द-सरस्वती ने लिखा है कि राष्ट्रीय एकता के लिए एक भाषा और एक लिपि तथा एक सत्यधर्म का होना अनिवार्य है। आज हमारी राष्ट्रीय एकता के मार्ग में मुख्य बाधा धर्म, भाषा, प्रान्त और जातिवाद है।

धर्म की समस्या बड़ी गम्भीर है। हमने अपने संविधान में धर्मनिरपेक्ष शासन की गारन्टी दी है परन्तु व्यवहार में अनेक कठिनाइयाँ हमारे सम्मुख उपस्थित हो रही हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या अपने-अपने धर्म (मत) और अपनी-अपनी उपासना पद्धति का तरीका अपनाते हुए सम्पूर्ण भारतवासी भावात्मक एकता के सूत्र में आबद्ध हो सकते हैं। आज का प्रशासन धर्म को व्यक्तिगत चीज मानता है, राष्ट्रीयता का आधार नहीं मानता। कुछ लोग धर्म को ही राष्ट्रीयता का आधार मानते हैं ऐसी स्थिति में धर्म में परस्पर विरोधी विचार निहित होने के कारण विचारों के टकराव को शासन किस प्रकार रोक सकता है- यह विचारणीय है। इस सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द का यह मन्तव्य कितना युक्तियुक्त तथा मान्य है - इस पर सभी बुद्धिजीवी पुरुषों को विचार करना चाहिए। स्वामीजी ने कहा है- जो जो बातें सभी धर्मों अथवा मतों में सत्य, अविरुद्ध तथा सभी को निष्पक्ष रूप में मान्य हों उन्हें ही स्वीकार कर लेना चाहिए और उसे ही प्रचलित करके मानव का कल्याणपथ प्रशस्त करना चाहिए। इस सम्बन्ध में हमारा सुझाव है कि:-

(1) भारतीय जनता में धर्म के नाम पर घृणा विद्वेष और हिंसा का प्रचार करने वाले तथाकथित धर्मग्रन्थों पर अविलम्ब रोक लगाई जाये और इस प्रकार का प्रचार करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही की जाये।
(2) कोई भी धर्म - परिवर्तन बिना शासन अथवा जिलाधीश की पूर्वानुमति के न हो। यह अनुमति तभी दी जावे जब यह सन्तुष्टि हो जाय कि धर्म-परिवर्तन सिद्धान्तों के कारण हो रहा है। किसी लोभ के वशीभूत नहीं।
(3) सभी प्रकार के प्रार्थनागृह प्रत्येक भारतीय के लिए खुले रहें जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने विश्वासों के अनुसार उपासना करने की छूट हो।

भाषा के सम्बन्ध में सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सम्पर्कसूत्र में आबद्ध करने वाली राष्ट्रीय भाषा हिन्दी (देवनागरीलिपि में लिखित) को विकसित करके उसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की भाषा बनाया जाये। प्रदेशीय भाषाओं के समुचित विकास की व्यवस्था के साथ ही आसेतु हिमाचल राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को मान्य रखा जाये। भाषा की भिन्नता के कारण अन्तः प्रान्तीय समस्याएं भी कभी कभी उठ खड़ी होती हैं और यह विवाद यदाकदा उग्ररूप भी ले लेता है। इस समस्या को केन्द्रीय शासन के सहयोग से धीरे-धीरे आसानी के साथ सुलझाया जा सकता है। मौलिक दृष्टि से भाषा, प्रान्त और जातिगत समस्याओं को एक साथ सुलझाने के लिए शासन को क्रान्तिकारी कदम उठाने पड़ेंगे और इसमें सामाजिक संगठनों का भी सहयोग लिया जा सकता है। सरकारी सेवाओं में भरती 21 से 30 वर्ष तक आयुवर्ग की होती है। हमारा सुझाव है कि इस अवस्था में अधिकतर व्यक्ति अविवाहित होते हैं। इसलिए नियम बनाया जा सकता है कि सरकारी सेवाओं में वे ही व्यक्ति लिए जायेंगे जो अन्तर्जातीय व अन्तर्प्रान्तीय विवाह करेंगे। अखिल-भारतीय सेवाओं में प्रवेश लेने वाले अधिकारी को अन्तः प्रान्तीय विवाह का नियम अनिवार्यतः लागू होना चाहिए।

हमारा समाज पुरानी रूढ़ियों में आज भी ग्रस्त है। हिन्दू हो या मुसल्मान, ईसाई हो या सिख अपने-अपने धर्म की उन बातों से और चमत्कारों से, जो आज के युग में अवैज्ञानिक तथा अमान्य सिद्ध हो चुकी हैं, बुरी तरह चिपका हुआ है। इसलिए सुधार के लिए कठोर और क्रान्तिकारी पग उठाने ही होंगे। धर्म आज भी मनुष्य को प्रभावित करने वाला सबसे अधिक सशक्त माध्यम है।

अतः धर्म की अवधारणाओं को भारतीयता के अनुकूल बनाकर उसे भारतीय जनमानस के आध्यात्मिक कण्ठ का हार बनाना होगा। यही नवसस्येष्टि यज्ञ (होलिका) का परमपावन सन्देश है और इसी में भारतीय एकता एवं राष्ट्र की अखण्डता का मूलमन्त्र छिपा हुआ है। □

कश्मीर से २५ हजार हिन्दू पलायन कर गए - साहनी

मंदसौर, 23 फरवरी
मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री केदारनाथ साहनी ने कश्मीर घाटी से पिछले छह हफ्ते में करीब 25 हजार हिन्दुओं के पलायन किए जाने का अरोप लगाया है। श्री साहनी ने आज यहाँ कहा कि कश्मीर में हिंसा के डर से हिन्दू परिवार जम्मू उधमपुर, कठुआ, दिल्ली आदि शहरों में पड़े हैं।

श्री साहनी ने कहा कि भाजपा को छोड़कर कोई राजनैतिक पार्टी इस दिशा में कोई आवाज नहीं उठा रही है। भाजपा को छोड़कर कोई उनके हाल तक पूछने नहीं गया है। श्री साहनी ने कहा कि इस बारे में उन्होंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखा है।

श्री साहनी ने कहा कि सभी राजनैतिक पार्टियां हिन्दुओं के मामले पर चुप रहती हैं। कश्मीर और पंजाब की समस्या के बारे में श्री साहनी ने राजीव गाँधी की सरकार को दोषी ठहराया। उन्होंने कहा कि इंका सरकार की गलतनीतियों के कारण ही ये समस्याएं पैदा हुई हैं। उन्होंने कहा कि धारा 370 को जितनी जल्दी हटाया जाएगा उतना अच्छा होगा।

रुबिया अपहरण कांड के बारे में श्री साहनी ने कहा कि हम सरकार से नाखुश हैं। सरकार को इस मामले में बहुत मजबूती दिखानी थी। राज्यपाल की नियुक्ति के बारे में श्री साहनी ने कहा कि सरकारिया रिपोर्ट के आधार पर नियुक्ति होनी चाहिये। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने जिन राज्यपालों की नियुक्ति की है वे कांग्रेस की तुलना में अच्छे हैं।

(जनसत्ता से साभार)

अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचना

सभा के अन्तर्गत, उपदेशक, महोपदेशक एवं प्रचारकों को अन्तिम रूप से पुनः निर्देशित किया जाता है कि प्रत्येक मास की डायरी- बिल एवं रसीदें समुचित ढंग से भर कर प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह के अन्दर कार्यालय को अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए, विलम्ब से प्राप्त होने पर सभा का उत्तरदायित्व नहीं होगा।

इसके साथ-साथ यह भी ध्यान दें कि रसीद बुक पहुँचने पर तुरन्त उसकी जांच स्वयं कर लें, कि पेज क्रमानुसार हैं या नहीं, पूर्ण सन्तुष्ट होने के पश्चात् ही रसीद बुक का प्रयोग करें।

- मनमोहन तिवारी
मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

हिन्दी भाषा को एक गुरू चाहिये

—श्री सोती वीरेन्द्र चन्द्र जी
इलाहाबाद

हिन्दी भाषा को, विशेष रूप से खडी बोली गद्य को, सर्वप्रथम एकरूपता प्रदान करने का श्रेय यशस्वी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को है। अतएव उन्हें भावावेश मे आधुनिक हिन्दी का जन्मदाता कहा जाता है।

उनके बाद आचार्य प्रवर महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी भाषा को व्याकरण संयत किया। सरस्वती का सम्पादक होने के नाते जो रचनाए उन्हें प्राप्त होती थीं, उन्हें पहले वह अविश्रात परिश्रम कर व्याकरण आदि की दृष्टि से शुद्ध करते फिर प्रकाशनार्थ भेजते। उन्होंने सरस्वती द्वारा लेखकों का लगातार ध्यान भाषागत एवं व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों की ओर आकर्षित किया एव शब्दों के मनमाने प्रयोग पर रोक लगाई। यह ही नही वह अपने समकालीन साहित्य साधना में रत कवियो एवं लेखको के शब्द प्रयोग, वाक्यो की संरचना और पूरी भाषिक बुनावट का परीक्षण करते थे। वह लेखकों को यह सचेत करते अघाते नही थे कि उनसे किसप्रकार की भाषा प्रयोग करने की अपेक्षा की जाती है। इससे लेखक भाषा के प्रयोग करने में सावधान रहने लगे। फलतः स्तरहीन रचनाओं की संभावना कम हुई ही साथ ही भाषा सौष्ठव में अभिवृद्धि हुई। हिन्दी भाषा अधिक सुसंगठित एव सुव्यवस्थित बनी। इस तरह हिन्दी भाषा को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने का गौरव निःसन्देह द्विवेदी जी को है।

इसीप्रकार हिन्दी के पारिपनी पंडित किशोरीदास बाजपेयी ने जो व्याकरण के महारथी एवं प्रवीण प्रणेता थे, अपने ग्रन्थ 'हिन्दी शब्दानुशासन द्वारा हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप से लिखने तथा प्रांजल भाषा का प्रयोग करने के सम्बन्ध में अत्यधिक बल दिया। उन्हीं के साथ व्याकरण-वेत्ता एवं भाषा-शास्त्री पंडित कामता प्रसाद गुरु का भी अनुदान एवं योगदान हिन्दी भाषा के लिए सराहनीय है।

परन्तु आज इन हिन्दी निर्माताओ जैसा प्रभावशाली, सर्वमान्य और सक्षम व्यक्ति हिन्दी जगत मे कोई नहीं है जो उनकी तरह हिन्दी भाषा के प्रति जागरूक हो और हिन्दी भाषा-भाषियों के मार्ग-प्रदर्शन का नेतृत्व कर सके। फलस्वरूप सर्वत्र स्वच्छन्दता छाई हुई है। जो जैसी भाषा चाहे लिख मारता है। भाषागत इन त्रुटियों को नकारा नहीं जा सकता। यथार्थ

वह को वे लिखने की परिपाटी चल पड़ी है। कोई गए लिखना है जबकि अन्य गये लिखते है। यही समस्या गयी और गई शब्द की है।

संस्कृत की तत्सम शब्दावली के साथ अरबी-फारसी के शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग आजकल रिवाज हो गया है। इस अरबी-फारसी मिश्रित-भाषा के प्रयोग के कारण हिन्दी की असली अस्मिता को तथा उसके वास्तविक रंगरूप को प्रदूषित किया जा रहा है।

किसी भी भाषा को जीवित प्राणवान एवं प्रगतिशील बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उसके शब्द-कोश में अन्यान्य भाषाओं के उन शब्दों को, जो सामान्यतः बहुप्रचलित एवं व्यवहृत हों, निःसंकोच अपना लिया जाय। उन शब्दों का प्रयुक्त करना नितांत सार्थक तथा अपनी भाषा के हित में होगा। उससे हिन्दी भाषा समर्थ, सजीव एवं समृद्दशाली बनेगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न भारतीय भाषाओं की शब्द संपदा से शब्द अपना कर हिन्दी भाषा का शब्द-भण्डार और समृद्ध है, होगा। उसकी अभिव्यक्ति शक्ति एवं संप्रेषणता में भी संवर्धन होगा। भाषा का स्तर भी ऊपर उठेगा। अन्य भव्य भाषाओं के सतत् संसर्ग से वह और भी अधिक विकसित होगी। इस दृष्टिकोण से फारसी एवं अरबी शब्दों का प्रयोग करने में कोई आपत्ति नहीं है। उनका पुट देने से हिन्दी भाषा में चुटीलापन एवं रोचकता बढ़ेगी। उसे लचीला बना उन शब्दों को अपने में आत्मसात करने की सामर्थ्य देगी।

मगर मूल मुद्दा यह है कि कुछ साहित्य-सृजक अपने सृजन-कर्म के प्रति विवेक का ठीक प्रकार प्रयोग नहीं करते। वे अपनी कृतियों में तत्सम शब्दों से युक्त वाक्य में अथवा संस्कृत के शब्दों से सटाकर ही अरबी-फारसी के शब्द लिख देते हैं। उदाहरणार्थ कुछ वाक्य देखिये:-

बहुत आजिज़ी से कहा,---
जयंती आ रही है,
आप उसका उद्घाटन कर दें।

भाषा में वे सब कुव्वतें तो हैं ही जो बिल्कुल अनन्य अतिरिक्त और हिन्दी पाठकों के लिए विलक्षण हैं। पं० नेहरू का ऐसा प्रभावशाली एवं तेजस्वी व्यक्तित्व था कि उनके सामने किसी को मुँह खोलने की जुर्रत नहीं होती थी। नतीजतन वातावरण में तनाव है।

आपका यह बेजोड़ प्रयोग बड़ा अटपटा लगता है और उस स्थान पर वह विवेक-संगत एवं उपयुक्त उपयोग प्रतीत नहीं होता। यह आधा तीतर-आधा बटेर की कहावत चरितार्थ करता है। इस प्रकार की बनावट की प्रस्तुति भाषा पर पकड़ होने की द्योतक नहीं और न ही वह भाषा की गुणवत्ता प्रकट करता है। हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान डा० धीरेन्द्र वर्मा ने जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक एवं अध्यक्ष थे, मुझसे एक बार कहा था कि इस प्रकार के बेमेल शब्दों का प्रयोग ऐसा ही लगता है जैसे कोई सूट पहने हो, टाईलगाए हो परन्तु उसके सिर के ऊपर कलाबत्तू से कढ़ी कामदार गोल टोपी उढ़ा दी जाय। इस प्रकार के प्रयास बड़े ही अनर्गल हैं। यह एक प्रबल प्रकरण है। वास्तव में आवश्यकता है, आडंबरहीन और अनगढ़ भाषा की। ●

पहले सी कहाँ अब होली रही ?

•डॉ॰ अनन्त राम मिश्र "अनन्त"
महोपदेशक,
आ॰ प्र॰ सभा,
उत्तर प्रदेश

आँसू बहायें दृगों से निरन्तर
या रंगों की पिचकारी चलायें?
होली-धमार को गायें कि भूखे-
पड़े दुखी शैशव को समझायें?
बाहर धूम मचायें बिचारे कि
पेट की होली में आग लगायें?
जो धनहीन हैं दीन-मलीन, वे-
कैसे भला मधुपर्व मनायें?

व्यथाभार से पीड़ित मानवता-
अभी रो रही, व्यर्थ धमार न गाओ।
सब ओर समाज में छाये हुए -
विकराल अनर्थ, धमार न गाओ।
फुटपाथों की रामकहानी लिये-
करुणाभरे अर्थ, धमार न गाओ।
गयी नैतिकता है रसातल में,
हुए पाप समर्थ, धमार न गाओ।

जलते प्रह्लाद हैं पुण्य के, अक्षत-
पाप अमाप की टोली रही।
मन डूब गया छल-छद्म के पंक में,
भावना बंक, न भोली रही।
लटकाये हुए मुँह हैं कलियाँ,
अलियों की न रंच ठिठोली रही।
मंहगाई ने रंग उतार दिये,
पहले-सी कहाँ अब होली रही?

यज्ञ और होली

•लाखन सिंह आर्य
ग्राम-हैमपुर, पोस्ट भुसाया (बदायूं)

यज्ञ शब्द यज धातु से बनता है, यज धातु का अर्थ देव पूजा, संगतिकरण और दान है। अपने से जो बडे हैं वे देव समान हैं, उनकी पूजा करना यज्ञ है। बराबर वालों के साथ संगति करना और छोटों को कुछ देना भी यज्ञ ही है।

यह छोटाई-बड़ाई केवल मनुष्य में ही नहीं समझना चाहिये प्रत्युत संसार का चाहे जो पदार्थ हो, चाहे जो शक्ति हो और चाहे जो गुण हो, यदि वह बड़ा है तो पूज्यनीय है। यदि वह बराबर वाला है तो मिलने के योग्य है और यदि छोटा है तो पाने का अधिकारी है जिस प्रकार उक्त तीनों व्यक्ति हमसे पूजा संगति और दान पाने के अधिकारी हैं§ उसी तरह हम भी दूसरों के व्दारा योग्यतानुसार पूजा मेल, दान पाने के अधिकारी हैं।

इस प्रकार से समस्त जड़ चेतनजगको परस्पर एक दूसरे से लाभ पहुंचाना ही यज्ञ है। सतपथ ब्राह्मण 1/7/45 में लिखा है कि यज्ञों व श्रेष्ठतमं कर्मम्, अर्थात यज्ञ श्रेष्ठ कर्म कहा गया है। इसका अभिप्राय यही है कि जितने श्रेष्ठतम कर्म हैं सब यज्ञ ही हैं।

इन यज्ञों के 3 भाग हैं। कर्म यज्ञ, ज्ञान यज्ञ और उपासना यज्ञ। सोलह संस्कार, विवाह, संतान, शिक्षा, आहार, वस्त्र गृह, समाज, कृषि, पशुपालन, संगीत, गणित,, भूगोल, ज्योतिष, वैधक, रसायन, भवन, यंत्र, शस्त्र, वाहन और युद्ध आदि पदार्थ और विदयायें, कर्म यज्ञ से संबंध रखती हैं। और ज्ञान यज्ञ के विषय में ईश्वर, जीव, पुर्नजन्म-कर्म-फल सृष्टि प्रलय वर्ण आश्रम और स्वाध्याय आदि ज्ञान यज्ञ से संबंध रखते हैं। और उपासना विषय में है कि- सदाचार-दया-प्रेम दर्शन भक्ति वैराग्य योग समाधि आदि क्रियाओं उपासना यज्ञ से संबंध रखती हैं।

इन्हीं तीनों प्रकार के यज्ञों में वेद का लौकिक- और पारलौकिक ज्ञान चरितार्थ होता है । इस ज्ञान के वेद के विद्वान§ऋषियों§ ने अपनी-अपनी पुस्तकों में विस्तार से लिखा है किन्तु बीज रूप से वेद में ही है। वेद में आवश्यकतानुसार भगवानने बहुत प्रकार के यज्ञों का वर्णन किया है। हम केवल एक ही यज्ञ का वर्णन दिग्दर्शन रूप में करेंगे।

चतुर्होतार आप्रिश्चातुर्मास्यानि ऋतभिः सह। उच्छिष्टे यज्ञा होत्राः पशुबन्धास्तादेष्टयः

पदार्थ-§चतुर्होतारः§ चार ।। §अथर्व-11/7/19§ ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र चार वर्णों § से ग्राह्य व्यवहार§ चातुर्मास्यानि§चार महीनों में सिद्ध होने वाले कर्म §अप्रियः§ सर्वथाप्रीति उत्पन्न करने वाली विदयायें निविदाः§ निश्चित विदयायें §यज्ञाः§ यज्ञ §श्रेष्ठ व्यवहार § §होत्राः§ देने लेने योग्य§वेद वाचायें§§पशुबन्धाः§ प्राणियों के प्रबंध §तत§ तथा §इष्टयाः§ इष्ट क्रियायें§उच्छिष्टे§ शेष §उत्पत्ति ओर प्रलय से बचे हुए अनन्त परमेश्वर §में§ संसार के नाम और रूप हैं।

ईश्वर का उक्त उपदेश है कि ऋतु अनुसार सामग्री से हर चौथे मास यज्ञ करें। ऋतुअनुसार सामग्री से अभिप्राय है कि रोग उत्पन्न होने का कारण कम कीटाणु हैं। कीटाणु ऋतु अनुसार उत्पन्न होते हैं आगे आने वाली ऋतु के यज्ञ के व्दारा गर्मी सर्दी को सम कियाजाता है जिससे वे कीटाणू उत्पन्न नहीं हों जिनसे आगे आने वाली ऋतु में रोग उत्पन्न न हों इस कारण ही यज्ञ में तेज पत्रज वंशलोचन, गूगल इत्यादि ऋतु अनुसार औषधियों को डाला जाता है जिससे यज्ञ लाभ पहुंचाते हैं अन्यथा कूड़ा करकट रूपी सामग्री फूंकने में क्या लाभ।

यहाँ एक बात यह भी है कि पूर्व काल के वेदज्ञ लोगों ने इस चातुर्मास्य यज्ञ को करने के लिए वर्ष के तीन समय निश्चय कर लिये थे। एक आषाढ़ मास दूसरा कार्तिक§दीपावली§ और तीसरा समय फाल्गुन §होली§।

यज्ञ में मिष्ठान, पकवान, घृत, मेवा डाली जाती है। यह सर्व वस्तुऐं अग्नि देव को सौंप देत हैं। अग्निदेव वस्तुओं को जलाकर सूक्ष्म तत्व बनाकर वायुदेव को पकड़ा देती है। वायु आकाश मण्डल में विचर ही रहा है और आकाश में वे आत्मा जो एक शरीर से दूसरे शरीर में सूक्ष्म रूप से जा रही हैं और जगत पिता जगदीश्वर निराकार रूप से संसार में व्यापक ही है। यज्ञ का सूक्ष्म तत्व भोजन बनाकर उन आत्माओं और ईश्वर को प्राप्त हो जाता है। यज्ञ के विषय में एक बात यह ही है कि मनुष्य जानता है कि मेरे निकट जो वस्तु-पदार्थ है वह ईश्वर का दिया हुआ है जंगल में अथवा खेतों में जो पका या अधपका अन्न दृष्टिगोचर हो रहा हैवह सब ईश्वर की देन है। यह वन उपवन-वाटिकायें-स्वादिष्ट, सुगन्धित पौष्टिक, ऋतु अनुकूल, फल हमको प्रभु ने ही तो दिया है। इस अन्न फलों से हम अपनी क्षुधा निवृत्ति तभी करेंगे जब एक बार हम उक्त अन्नादि से उस निराकार शक्ति§ईश्वर§ को जिसने हमें उक्त पदार्थ दिये हैं उसे भोजन करा दें।

उक्त भाव चारों ही वर्णों को उत्पन्न होते थे। फाल्गुन और चैत्र मास के बीच की पूर्णिमा का जो यज्ञ होता वह भी चातुर्मास्य ही है। उस दिन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सब वर्णों के योग्य एवं विद्वान पुरुष मज्ज नादिसे निवृत्त हो पवित्र और कामुकता रहित वस्त्र धारण कर प्रेमपूर्वक यज्ञ करते जाते और कहते थे कि इदन्नमम अर्थात् हे प्रभु इस शाकल्य§सामग्री§ में हमारा कुछ नहीं है सब कुछ आपही का है। इसमें से एक बात और है कि मनु महाराज ने धर्म विधान में लिखा है कि अतिथि के आने पर अतिथि को तुरन्त ही हाथ मुंह धोने और पीने को जल दें। इस प्रकार ही पके अन्न को कृषक प्रथम बार घर के मध्य में रखता है, तब उस घर की §देवियाँ§नारियाँ तुरंत ही अपने आँगन में जल छोड़कर नये अन्न का आदर करती हैं। और उस नये अन्नको कूट पीस कर भोजन बनाकर तुरन्त ही अग्निदेव को चूल्हे में छोड़तो हैं। या गौ या कन्यायें भोजन करती हैं। अर्थात् अपने से बड़ों को नये अन्न से प्रथम बार भोजन कराकर तब स्वयम् भोजन कर ईश्वर को धन्यवाद देती हैं। कि हे ईश्वर तुमने हमें नये अन्न के दर्शन कराये। इस प्रकार ही फाल्गुनी चातुर्मास्य §होली§ नामक यज्ञ में नये अन्न से यज्ञ कर परमात्मा और आत्माओं को भोजन कराते थे। हिंसा किसी मानव को नहीं करनी चाहिये। किन्तु साग बनाने मसाला बटने, आटा गूंथने, कृषि कार्य करने आदि में इच्छा नहीं होते हुये भी असंख्य हत्यायें कर प्राणियों को शरीर रहित कर देते हैं। यह आपद्धर्म अर्थात् मुसीबत का धर्म है। पूर्वाचार्यों ने इससे छुटकारा पाने के हेतु ही परमात्मा के दिए हुये नये अन्न और फलों से इस चातुर्मास्य होली नामक यज्ञ §त्योहार§ में आहुति देकर उन आत्माओं को कि जिनके घर रूपी शरीर को आपत्ति काल में नष्ट कर दिया है उन्हें भोजन कराते हैं।

एक बात और है कि पके नये अन्नों को जिस अग्नि में डाला जाता है उसे होली कहते हैं आज भी लोग जंगल में जाकर हरे पके चना, गेहूँ जौ भून-भून कर लाते हैं तो कहते है कि हम होला ले आये हैं। इस प्रकार ही नये अन्न से यज्ञ करने के कारण उस यज्ञ को होली कहते हैं।

नवा ग्रयणापूजमिरभ्यर्च्य पितृदेवताः
कृताग्रयणकाः काले सन्तो विगतकल्मषा

अर्थः- इस समय सज्जन मनुष्य नवान्न से देवता और पितरों का पूजन कर §अपने से बड़ों का आदर कर§ नवसस्य निमित्य यज्ञ करते हुये निष्पाप हुए हैं। §वाल्मीकि रामायण अरण्य काण्ड सर्ग 16 इ 6§ वेद के इस चातुर्मास्य यज्ञ के वर्णन में प्रथम ही आ गया है कि चातुर्होतो अर्थात ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य शूद्र चारों ही यज्ञ के होता एवं आहुति दें। सामग्री स्वयं घृत छोड़ें। महान लेखक पंडित रघुनन्दन शर्मा अपनी पुस्तक वैदिक सम्पत्ति के पृष्ठ 280 में कहते हैं §फाल्गुन्या पौर्णमास्यां चातुर्मास्यानि प्रयुञ्जीत-मुखं वा एतत सम्वत्सरस्य यत फाल्गुनी पौर्णमासी। अर्थः- फाल्गुणी पौर्णमासी आषाढी पौर्णमासी और कार्तिक की पौर्णमासी को जो यज्ञ किये जाते हैं, वे चातुर्मास्य कहलाते हैं। आग्रहाण वा नवसस्योष्टि।

अर्थः- उत्तरायणं दक्षिणायन के आरम्भ में जो यज्ञ होते हैं वे आग्राहयण या नवसस्येष्टि कहलाते हैं किन्तु धर्म के

शेष पृष्ठ ११ पर

दयानन्द बोध उत्सव पर विशाल शोभायात्रा



लखनऊ 23 फरवरीः महर्षि दयानन्द के 153 वें बोधोत्सव के अवसर पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान में एक विशाल और भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी।

दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर से शुरू हुई इस शोभायात्रा में आर्य समाजों के 250 कार्यकर्त्ता, मूर्धन्य आर्य विद्वान सन्यासी श्रीमद् दयानन्द बाल सदन, दयानन्द विद्या मन्दिर दयानन्द बाल विद्या मन्दिर, बालिका विद्यालय मोतीनगर, डी०ए०वी० कालेज शांति ज्योति बालिका विद्यालय, बाल विवेक स्कूल, सरस्वती कन्या इ०का०, बालिका विद्यालय मोतीनगर, डी०ए०वी०-इन्टर कालेज, दयानन्द शिशुमन्दिर आदि के छात्र-छात्राओं, अध्यापक अध्यापिकाओं और भारी संख्या में आर्य वीर दल और आर्य कुमार सभा के कार्यकर्त्ताओं ने सोल्लास भाग लिया।

शोभा यात्रा में चल रहे छात्र-छात्राएं गुरुकुल के पारंपरिक बसंती रंग के वस्त्र तथा महिलाओं ने केसरिया साड़ियां धारण की हुई थीं। शोभा-यात्रा में सजे हुए ट्रकों, कारों और स्कूटर मोटर साईकिलों पर आर्य वीर-युवकों एवं कन्याओं की टोलियां चल रही थी, जो वेदों का युग लाने को ऋषि दयानन्द आये थे, "भारत स्वाधीन कराने को- ऋषि दयानन्द आये थे," छुआ-छूत मिटाने को ऋषि दयानन्द आये थे," नारी सम्मान दिलाने को ऋषि दयानन्द आये थे" आदि नारो से वातावरण गुंजा रहे थे। शोभा यात्रा के आगे हाथी और बैंड वालों की टोलियां चल रही थीं, जो आर्य धुन बजा रही थीं।

इस अवसर पर शोभा यात्रा के पूरे मार्ग में अनेक तोरण द्वार बनाये गये थे। शोभा यात्रा के स्वागत में पूरे रास्ते भर सड़कों के दोनों ओर खड़ी जनता ने आर्य जनो पर फूलों से वर्षा की, मिठाई चने, फल इत्यादि खिलाये।

शोभा यात्रा मे शामिल होने वाले आर्य जनों में उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि-सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान वेदव्रत अवस्थी, मंत्री चन्द्र कुमार छाबड़ा, आर्य मित्र के सम्पादक आचार्य-इन्द्रदेव पाठक, स्वामी गुरुकुलानन्द, स्वामी सत्यप्रिय, नगर आर्यसमाज के प्रधान कुंवर शांति प्रकाश, मंत्री रेवती रमण रस्तोगी, आर्य कुमार सभा के चौधरी ओम् प्रकाश सिंह प्रमुख थे।

शोभा यात्रा दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर से गणेशगंज, अमीनाबाद व महिला कालेज के सामने से होती हुई नगर आर्यसमाज रकाबगंज में जाकर एक सभा में बदल गयी जहां आर्यसमाज के जाने माने विद्वानों ने अपने प्रवचनों में महर्षि दयानन्द के जीवन व आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला व उन्हें व्यवहार में जीवन में उतारने का आह्वान किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष......

कश्मीर

इसी प्रकार कश्मीर में भी पाकिस्तानी उग्रवादियों की गतिविधियां तेज होती जा रही हैं। पिछले एक महीने से तो कश्मीर में कोई ऐसा एक भी दिन नहीं निकला जब घरों, दुकानों, स्कूलों को जलाया न गया हो, मन्दिरों को तबाह न किया गया हो। पथराव, आगजनी, लूटपाट तो नित्य प्रति की घटनायें बन चुकी हैं। भारत के ध्वजों को जलाना और पाकिस्तानी झण्डे फहराना तो सामान्य सी बात हो गई है। सैकड़ों परिवार जिनमें सभी समुदाय के लोग हैं, कश्मीर से पलायन कर चुके हैं और देश के अन्य हिस्सों में असहाय और बेघर पड़े है। ऐसी अवस्था में राज्य सरकार को बरखास्त करके राष्ट्रपति शासन ही एक मात्र उपाय है, जिसे फिलहाल स्थिति पर नियंत्रण किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त आपको यह भी लिखना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि ऐसा ही एक ज्ञापन मैंने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को प्रस्तुत किया था, जिसमें उन्हें निजी सलाह दी गई थी कि यदि देश से आतंकवाद का निशान पूरी तरह मिटाना चाहते हों तो पंजाब और कश्मीर को 10 वर्ष के लिए सेना के हवाले करके पूरी सीमा पर एक कड़ी सुरक्षा पट्टी बनाई जाय, जहाँ पर सेवा निवृत्त परिवारों को बसाकर उन्हें मताधिकार दिए जाएं। केवल इसी एक उपाय से आतंकवाद का प्रभाव और उन्हें पाकिस्तान से मिलने वाली सहायता पूरी तरह समाप्त की जा सकती है। इस प्रकार से ही स्थिति का समाधान हो सकता है।

ईमानदारी और सच्ची शुभकामनाओं के साथ मेरी आपको भी यही राय है कि इन सुझावो पर गंभीरता पूर्वक विचार करके शीघ्र ही सख्ती के साथ स्थिति पर नियंत्रण करने के लिए कदम उठावें। ईश्वर आपको पूर्ण शक्ति प्रदान करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित-

भवदीय,

(स्वामी आनन्दबोध सरस्वती)
प्रधान,
भू०पू० संसद सदस्य।

मानस का हंस उड़ गया

लखनऊ- उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि-सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने पद्मभूषण श्री अमृत लाल नागर के असामयिक देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए कहा है कि सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी-श्री नागर के देहावसान से हिन्दी साहित्यगगन का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र अस्त हो गया है। वे साहित्य और संस्कृति के विविध आयामों से जुड़े हुए अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। वे सुप्रसिद्ध उपन्यासकार ही नहीं थे अपितु जीवन एवं समाज के विविध-अंगों को अपनी लेखनी द्वारा चतुरचितेरे की भान्ति प्रतिबिम्बित करने वाले अद्भुत साहित्यशिल्पी थे। उनका साहित्य हृदयस्पर्शी था। उनके निधन से निःसन्देह हिन्दी जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

आर्यमित्र के यशस्वी सम्पादक आचार्य इन्द्रदेव पाठक तथा सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने दिवंगत आत्मा की अन्तिम श्मशान यात्रा में सम्मिलित होकर प्रदेश की आर्यजनता की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

दयानन्द जन्म दिवस

सनातन वैदिक धर्म प्रचार समिति लखनऊ की ओर से सरस्वती शिशु मन्दिर सिधौली सीतापुर में फाल्गुन कृष्ण दशमी दिनांक 20-2-90 को महर्षि दयानन्द जन्म दिवस मनाया गया। दिनांक 21-2-90 को महर्षि दयानन्द के संबंध में बौद्धिक गोष्ठी आयोजित की गई। प्रमुखवक्ता श्री पवन कुमार सिद्धान्त शास्त्री ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर तथा उनकी विचारधारा पर प्रभाव डाला।

शुद्धि समाचार

गत 2-2-90 को आर्य समाज कासगंज के तत्वावधान में एक मुस्लिम महिला "सामस" को स्वेच्छा से वैदिक धर्म में दीक्षित करने का कार्य श्री महीपाल सिंह जी शास्त्री, जिलोप सभा प्रधान के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रधान श्री स्वामी विरजानंद जो तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री मुन्नालाल आर्य तथा अन्य आर्यजन तथा आर्याएं उपस्थित थीं। श्री शास्त्रीजी ने इसका नाम "श्री देवी" रखा।

तारीख 11-2-90 को इस महिला का विवाह श्री मटरुलाल नामक व्यक्ति से समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री महीपाल सिंह शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

स्वास्थ्य-सुधा

आरोग्य दर्पण :

(१)

रोगी अपने विवरण के साथ दो बन्द लिफाफे भी निम्न पते पर भेजा करें:-

डॉ0स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चा हारो) आर्य समाज पिथौरागढ़ (उ0प्र0)- पिन-262501

समस्याः- "मेरे शरीर में गाँठ और गिल्टियाँ हो गई हैं। इनमें न दर्द है न खुजली है। लेकिन शरीर पर बुरी लगती हैं"

संजीव कुमार, इमलीबाजार-अनूप शहर (बुलन्दशहर) पिन-202390

समाधानः- कृमिहरी वटिका (वैधनाथ) की दो गोली प्रातः, मध्याह्न व रात्रि में लेकर तीक्ष्णमिन सीरप (चरक) दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। दो मास तक उपचार करें। कृपया अपना रंगीन फोटो (खुले शरीर का) मेरे पास भेजें।

------(२)

(1) समस्या- "मेरी माताश्री की आयु-64 वर्ष है। उनकी गाँठों में दर्द रहता है।" - केदारनाथ आर्य, मालबाजार (लखनऊ।)

समाधान- आर0 कम्पाउन्ड की दो गोली प्रत्येक भोजन बाद पानी से लिया करें। गाँठों पर महानारायण तेल की मालिश करें। एक मास तक उपचार जारी रखें।

(2) समस्या- "मेरे दोनों हाथ-पैरों के जोड़ों में दर्द व सूजन बनी रहती है।"

- प्यारेलाल किराना मर्चेन्ट, मालबाजार लखनऊ।

समाधान- राइमसिल (चरक) की दो-गोली दिन में तीन बार लेकर प्युरित्ला सीरप दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। गाँठों पर प्रातः व सायं महानारायण तेल की मालिश किया करें। एक मास के बाद पुनः परामर्श लेवें।

(3) समस्या- "हम पति-पत्नी दोनों को वायु का रोग है। दर्द कभी बगल के ऊपर जोड़ पर, तो कोहनी में व कभी पूरे हाथ में ही रहता है।"

- त्रिलोकचन्द्र आर्य, मन्त्री-आर्यसमाज आवासविकास, काशीपुर (नैनीताल)

समाधान- मस्कल्ट (एमिल आयुर्वेदिक) की दो गोली दिन में तीन बार लेकर जाइमेन्ट सीरप दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। एक मास बाद पुनः परामर्श लेवें।

आ पहुँची है होली

• चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
२६१, फैथफुलगंज, कैन्ट कानपुर

देखो, प्रेम-सन्देशा लेकर आ पहुँची है होली।
हँसी-खुशी की, राग-रंग की लिये हुए है झोली।
राम-श्याम, राधा-रजिया,
अनवर - पीटर आओ।
गुरुमुख सिंह भी रंग ले आवे,
उसको पास बुलाओ।
चलो, हम सभी घर-घर चल कर
प्रेम - रंग बरसावें।
बैर - विरोध दूर करके हम
अब सबको गले लगावें।
देखो अब फगुनो हवाएँ अग - जग में हैं डोली।
प्रेम - सन्देशा लेकर देखो, आ पहुँची है होली।
होली का त्योहार निराला
बैर - विरोध मिटाता।
सबको प्रेम - रंग में रँगता,
सबका मन हरषाता।
देखो, अपने भारत पर
अब शत्रु न आँख दिखावे।
पैर तोड़ दो दुश्मन के
यदि आगे कदम बढ़ावे।
हमने सदा शत्रु - दल पर हैं अग्नि - शिखाएँ खोली।
देखो प्रेम - सन्देशा लेकर आ पहुँची है होली।
वैसे तो हम शान्ति चाहते,
नहीं किसी से लड़ते।
पर जो हमसे लड़ने आता,
उससे बढ़ कर लड़ते।
अगर काल भी हो सम्मुख,
तो उससे भी लड़ जाते।
सदा दुश्मनों को अपने
हम सुरपुर हैं पहुँचाते।
हमें न सीधा - सादा समझे भ्रमवश दुनिया भोली।
हम हैं शिव - हमने दुश्मन पर अग्नि - दृष्टि है खोली।

होली है पावन त्यौहार

• राधेश्याम आर्य
सुल्तानपुर

आज धरा की दानवता को,
होली के संग चलो जलाएं।
निर्भय होकर वृत्ति आसुरी,
महिमण्डल की आज भगाएं।
हम प्रहलाद सदृश दृढ़ बनकर
सत्य-धर्म का करें प्रचार।
होली है पावन त्यौहार।।

अनाचार अन्याय अनय का
जगती पर हो पूर्ण समापन।
फिर से फैले बसुन्धरा पर
जन जन में मधुरिम अपनापन।
एक दूसरे से सारे जन -
करें परस्पर मृदु व्यवहार।
होली है पावन त्यौहार।।

इसके स्वागत में करता है,
नर्तन नव ऋतुराज बसन्त।
हुआ प्रफुल्लित-प्रमुदित सारा
इस धरती का दिग्दिगन्त।
गले लगाएं आज सभी को-
बांटें हम, सब जन को प्यार
होली है पावन त्यौहार।।

विनम्र अनुरोध

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों/जिला-उपसभाओं को सूचित किया जाता है कि वे अपना वार्षिक निर्वाचन (आर्यसमाजें जिला उपसभाओं द्वारा तथा जिला उपसभाएं सभा के मान्य अधिकारी द्वारा) प्रमाणित कराके ही प्रकाशनार्थ आर्यमित्र में भेजें।
- प्रबन्ध सम्पादक।

पृष्ठ ४ का शेष.....

ठेकेदारों ने स्वार्थ का कृत्रिम एवं मिथ्या कल्पनायें वर-शाप के माध्यम से अनेकों प्रकार की रचनायें कर डाली और उपरोक्त वैदिक हवन यज्ञ से हमको वंचित कर दिया जैसे कि:- विद्यात समृध्देषु हुतं विप्रमुखाग्निषु । निस्तारयति दुर्गाच्च महतश्चैव किल्बिषात्।
अर्थ:-विद्या और तप के तेज से परिपूर्ण ब्राह्मणों की मुखाग्नि में प्रक्षिप्त हव्य-कव्य अनेक प्रकार के संकटों से और महान पाप से बचाता है।

ब्राह्मणानां मुखं राधे देवानां मुखमुख्यकम्। विप्रभुक्तम् च यदद्रव्यं पाप्नुवन्त्येनं देवता:।।
अर्थ:- हे राधा ब्राह्मणों का मुख ही देवताओं का मुख्य मुख है। जो द्रव्य ब्राह्मण लोग खाते है वही देवताओं को पहुंचता है।

ब्रह्म् वैवर्त्त पुराण, एक सरल समीक्षा से पृष्ठ-50/-

अग्नि होत्र वैदिक काल का प्रधान कर्म था वह ब्राह्मण काल में इस प्रकार से परिवर्तित हुआ कि उत्तम पदार्थों का अग्नि में जलाना वृथा है। ब्राह्मण के मुख में अग्नि का वास है और हृदय में ईश्वर निवास करते हैं और जहां ईश्वर का वास है वहीं सब देवता भी बसते हैं। इस लिए उत्तम पदार्थ ब्राह्मण को खिलाने से अग्निहोत्र भी हो जाता है और उससे बढ़कर ईश्वर और सब देवता भी तृप्त हो जाते

इस व्यवस्था के प्रचलित होने पर भारत से अग्निहोत्र उठ गया।

(हरनाम सिहं चौहान,भारत राजवंशी इतिहास पृष्ठ-37 से)

अब उपरोक्त चातुर्मास्य एव होली के यज्ञ को धर्म के ठेकेदारो ने निम्न रुप देकर हमें भी पापी बना दिया है। जो तिथि चातुर्मास्य एव नवसेस्य यज्ञ की है उस तिथि से महीना पूर्व एक व्यक्ति तीव्र वाणी से नगर ग्राम में घोषणा करता है कि आज होली रखी जायेगी ग्रामवासी जन इस सूचना के सुनते ही अपने-अपने घर से उपले (कन्डे निश्चित स्थान पर जमा कर देते हैं। और प्रतिदिन उन उपलों पर थोड़ा बहुत कूड़ा करकट डालते रहते हैं। और उस कूड़े में एक मा स बाद जिस दिन कि चातुर्मास्य यज्ञ होते हैं उस दिन आग लगा देत हैं। आग लगाने वाला आगे चलता है उसके पीछे ग्रामवासी जलते हुए कूड़े की कई-कई परिक्रमा लगाकर कृति को समाप्त कर लेते हैं।

एक मास पूर्व इस होली नामक कूड़े में अनेक जाति के असंख्यात कृमि कीटाणु जो निर्भय और सुखपूर्वक बैठे हैं इन कृमियों को यह पता नहीं है कि हम निरपराधियों को रामशरण में पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

इस कूड़े करकट में आग लगाने वाले को लोग ब्राह्मण कहकर पुकारते हैं यह लोगों की बडी भरी भूल है कि ब्राह्मण तत्व से यह व्यक्ति कोसों दूर है। इस प्रकार कि आग लगाकर हत्या करने वाले को मनु महाराज ने मनुस्मृति अ08 श्लो0 350 में आततायी बताया है और जिया लाल वर्मा ने अपनी किताब वेदशास्त्र तालिका के पृष्ठ 120 में आततायी के 6 प्रकार के लक्षण लिखे हैं कि।:- आग से किसी का स्थान जलाने वाला। 2:- विष देने वाला 3:- मारने का शस्त्र हाथ में लिये दोडा आने वाला 4:- धन छीनने वाला 5:- खेत का हरने वाला 6:-स्त्री को हरने वाला। महाभारत में पांडु पुत्रों के भवन में दुर्योधनादि ने आग लगायी थी इस कारण से अर्जुन ने धृतराष्ट्र के पुत्रों को आततायी बताया है। देखो श्रीमद् भागवत गीता अं01/श्लो 36। ऐसे आततायी के साथ में क्या-क्या व्यवहार करना चाहिए। इस बात को धर्मग्रन्थों में अच्छे प्रकार से बता दिया है किन्तु हम यहां नहीं लिखेंगे हां यह तो हम लिखेंगे कि इस कूडे नामक होली की परिक्रमा करके हम पापी बन रहे हैं।

सोचो महान पर्व चातुर्मास्य के समय क्यों इस कूड़े करकट वाली हत्यारी होली को त्यागकर जीवों की रक्षा नहीं करते हो किन्तु विदवानों ने यज्ञ में डाले हुए पदार्थों की प्रशंसा की है। हम उन्हें यहां लिखकर इस विषय को समाप्त कर रहे हैं। ईश्वर और आत्माओं को भोजन कराने वाले यज्ञ से से वंचित करा दिया।

महान लेखक पं0रघुनन्दन शर्मा वैदिक सम्पत्ति के पृष्ठ-320 पर कहते हैं कि धुएं के लाभ दिखलाते हुएफ्रांस के विज्ञान वेत्ता अध्यापक ट्रिल वर्ट कहते है कि जलती हुई शक्कर में वायू शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है। उन्होंने इसके प्रयोग भी दिखलाये हैं वे कहते हैं कि इससे छय: चेचक,हैजा आदि बीमारियां तुरन्त नष्ट हो जाती हैं। इसी तरह डा0 एम0ट्रल्ट ने मुनक्का,किशमिश आदि फलों को (जिन में शक्कर अधिक होती है। जलाकर देखा है उनको मालूम हुआ है कि इनके धुएं से टाइफाइड रोग कीट 30 मिनट में और दूसरे रोग के कीट घन्टे दो घन्टें में नष्ट हो जाते हैं।

मद्रास के सैनेट्री कमिश्नर डा0कर्नल किंग आई0एम0एस0 ने कालेज के विद्यार्थियों को उपदेश किया है कि घी और चावल में केशर मिलाकर जलाने से रोग जन्तुओं का नाश हो जाता है वैदिक सम्पत्ति पृष्ठ 306 में आप कहते हैं कि वेद के यज्ञ सबको एक समान लाभ पहुंचाने के लिए किये जाते हैं।

सर्व सम्मेलन यज्ञ ही हमारी धार्मिक शक्ति है यही शक्ति हमको उन्नति और सुख एवं एकता की ओर ले जायेगी। ◻

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन०पी० ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

फाल्गुन शुक्ल १५, संवत २०४६ वि.
दिनांक ११ मार्च १९९०

दूरभाषः २४५९९३

सेवा में:

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें .-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह जनवरी १९९० को समाप्त हो गया है। वी०पी० भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी०पी० भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जन 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 है।

जनवरी 1990

336, 818, 145., 2968, 6322, 6337, 6694, 8183, 8496, 8700, 8709, 8713, 9086, 9390, 9792, 10063, 10067, 11444, 11462, 11464, 11477, 11817, 12090, 12292, 12816, 13035, 13370, 13400 13416, 13679, 13680, 13682, 13687, 13694, 14157, 14166 14167, 14171, 14584, 14585. 14593, 14598, 14599, 14604, 14606, 14608, 14609, 14910 14613, 14976, 14978, 14979, 14980, 14981, 14982, 14983, 14984, 14985, 14986, 14987, 14988, 14989, 14990, 14991, 14992, 14993, 14994, 14995 14996, 14997, 14998, 14999, 15000, 15001, 15004, 15005, 15006, 15007, 15008, 15010 15011, 15012, 15013, 15014, 15015, 15016, 15017, 15018, 15019, 15021, 15022, 15023 15026, 15027, 15028, 15029, 15030, 15031, 15032, 15033, 15034, 15035, 15036, 15037, 15039, 15042, 15043, 15044, 15046 ।

— व्यवस्थापक

आवश्यक सूचना

होली के पर्व के उपलक्ष्य में कार्यालय में अवकाश के कारण आर्यमित्र का दिनांक 18 मार्च 1990 का अंक बन्द रहेगा। अगला अंक 25 मार्च को प्रकाशित होगा। कृपया एजेन्ट व पाठक नोट कर लें।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
मुद्रक व प्रकाशक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवान्दीन आर्यभास्कर प्रेस ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं. २२४१/५७) चैत्र कृष्ण-१३ रविवार-संवत् २०४६ वि., दिनांक २५, मार्च १९९० (घोषणा पत्र सं ७/२२ २-८५)



अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।।

हमारे आध्यात्मिक, आधिदैविक, और आधिभौतिक- तीनों तापों के नाशक, मुमुक्षओं के मार्गदर्शक, सर्वप्रेरक और जीवन-उत्कर्षक, मोक्ष-सुख और मत्र सम्पत्तियों के दाता, वेदद्वारा उत्तम उपदेश करने वाले- सर्वज्ञाननिधि, शोभन प्रज्ञा और कुशलकर्मा होने के कारण हमारे जीवन-यज्ञ का उत्तम रूप से संचालन करने वाले परमात्मा का हम वरण करते हैं ---

- वेद प्रकाश।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. 30/-
एक प्रति	१रू. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक ११

पवित्र वेदमाता का आह्वान

जनप्रतिनिधित्व करने वाली हमारी परिषदें, सभाएं, संसदें आप्त वैज्ञानिक, वेदों के निष्णात और निर्लोभी सभासदों से आपूरित हों।

आज हमारी जनप्रतिनिधि सभाओं, संस्थाओं, परिषदों, विधान-सभाओं, संसद आदि में पहुँचने की प्रतिस्पर्धा के कारण राजनीति में अपराधीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है जिसका परिणाम है स्वच्छ छवि वाले राजनीति-मर्मज्ञ, राष्ट्रचिन्तन में अहर्निश विचारशील योग्य पुरुष पीछे हटते जा रहे हैं और शक्ति, धन, एवं आतंक के बल पर राजनीति का मुखौटा पहिने स्वार्थलोलुप व्यक्ति समासीन पदासीन होते जा रहे हैं। विगत लोकसभा, विधानसभा, जिला परिषद आदि चुनावों में मत की पवित्रता को नष्ट करते हुए हिंसा, आतंक, भय और ताकत के बल पर चुनाव में सफलता प्राप्त करने के अनेकों उदाहरण देखने को मिले। यह प्रवृत्ति राष्ट्र के लिए चिन्ताजनक है। ऐसे व्यक्ति "स्व" के लिए राष्ट्र को भी दाँव पर लगा सकते हैं और राष्ट्र का भविष्य खतरे में डाल सकते हैं। यद्यपि राष्ट्रसेवा या समाजसेवा का अवसर प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध है। हम कहीं भी हों, संसद में या बाहर हमारा चतुर्दिक् घिरा हुआ समाज, हमारी चतुर्दिक राष्ट्रभूमि हमारी कार्यस्थली, पुण्यस्थली एवं सेवास्थली है। सत्ता का अंग बनकर निःसन्देह हमें शक्ति और सेवा के सुलभ अवसर एवं साधन प्राप्त हो जाते हैं और हम चाहें तो इन अवसरों, साधनों और शक्ति का उपयोग करके राष्ट्र को महान् से महान् बनाने में अपना अपूर्व योगदान दे सकते हैं परन्तु यह तभी सम्भव है जब हमारे हृदय में राष्ट्रप्रेम की भावना ओतप्रोत हो, मन सुसंस्कृत हो और जीवन तपःपूत हो। यह संस्कार महान् निष्काम कर्मयोगी बनकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

ऐसी निःस्पृह करनी एवं सशक्त वाणी, आर्यसमाज की धधकती हुई स्वर्णमयी भट्टी में पीढ़ियों तक तपने वाले किसी परिवार के तरुण सपूत की ही हो सकती है। वेदमाता ने ऐसे सपूतों के कण्ठों को अपनी वरमाला विजयमाला से विभूषित किया है-

"ये यद् राजानो विभजन्त इष्टापूर्तस्य षोडशं यमस्यामी सभासदः"

- अथर्व0 3/29/1

परिषदों और राजसभाओं में विराजमान ऐसा कर्मठ सभासद यमों का स्वामी होता है क्योंकि वह राष्ट्र का प्रहरी एवं आर्यसंस्कृति का उद्घोषक है।

क्या आर्यजगत के ऐसे उदीयमान नक्षत्र जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से जनता भलीभांति परिचित है, श्री मनमोहन तिवारी को विधान परिषद में भेजकर आर्यजनता का गौरव नहीं बढ़ेगा ?

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ चैत्र कृष्ण-१४, संवत् २०४६ वि.
२५ मार्च १९९० - दयानन्दाब्द-१६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

गृहमन्त्री को साधुवाद

पराधीनता की श्रृंखला में जकड़ी हुई भारत माँ को बन्धनमुक्त करके समस्त भारतीयों को स्वातन्त्र्य जीवन व्यतीत करने के लिए न जाने कितने भारतीयों ने अपना बलिदान दिया था। इन बलिदानियों में हिन्दू भी थे मुस्लिम भी थे सिख भी थे। सभी को इस मातृभूमि से अपार प्यार था तभी तो **शहीद भगतसिंह शहीद अशफाक उल्लाह शहीद चन्द्रशेखर** जैसे तरुणाई भरे सपूतों ने भारत माँ को बन्धनमुक्त करने के लिए हँसते-हँसते फाँसी का फन्दा चूम लिया था। इनके बलिदानों के परिणामस्वरूप ही हमारा देश आजाद हुआ। मगर अंग्रेज जाते-जाते ऐसे विषबीज बो गया जो आज वृक्ष का रूप धारण करके भाई-भाई के खून का प्यासा बना रहा है। भारत विभाजन के समय हमने जिस शान्ति और सौहार्द की कल्पना की थी वह दिवास्वप्न की भान्ति तिरोहित होती जा रही है। कश्मीर और पंजाब में बढ़ती हुई आतंकवादी गतिविधियाँ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा वैधानिक दृष्टि से पंजाब हो या कश्मीर मध्यप्रदेश हो या उत्तर प्रदेश, भारत वर्ष का अभिन्न तथा अविच्छेद्य आन्तरिक अंग है। किसी को भी आत्म निर्णय का राग अलापकर या किसी एक वर्ग की साम्प्रदायिक भावनाओं को उभाड़कर भारत की एक इंच भूमि को भी भारत से अलग करने का कोई अधिकार नहीं है। भारत के समस्त निवासी भारतीय नागरिक हैं। भारत उनका देश है उन्हें इसी भारतभू पर जीना है और यहीं की मिन्टी में समा जाना है। इस देश की मिट्टी से सदियों से जुड़े हुए इस भावात्मक तथा रागात्मक सम्बन्ध को आत्मनिर्णय का राग अलापकर अन्यथा नहीं किया जा सकता।

पाकिस्तान बनने के कुछ समय [illegible]

के भेष में कश्मीर पर हमला कर दिया था और सैकड़ों निर्दोष कश्मीरी पुरुषों, स्त्रियों और बच्चो को मौत के घाट उतार दिया था। उस समय, तत्कालीन महाराजा कश्मीर ने वैधानिक तरीके से भारतविलय की प्रार्थना की थी जिसे स्वीकार कर लिया गया था जो वैधानिक तथा अन्य सभी दृष्टियों से अन्तिम तथा अटूट है। पं0 जवाहरलाल नेहरु एक उदारमना सन्त राजनीतिज्ञ थे। वे मुस्कराहट के नीचे छिपे हुए विष को नहीं भांप सके और उन्होंने युद्धविराम की घोषणा कर दी। तभी से पाकिस्तानी सेना कश्मीर के एक बहुत बड़े भूभाग पर अनधिकृत तरीके से अपना कब्जा जमाये हुए है और जहाँ से कश्मीरी युवकों को घातक ट्रेनिंग देकर सीमा के इस पार भेज दिया जाता है और वे कश्मीर घाटी में खून की नदियाँ बहा देते हैं। पाकिस्तानी अधिकृत कश्मीर के हिस्से से श्रीनगर घाटी में आने वाले कश्मीरियों का सिलसिला बहुत पहिले से चला आ रहा है और रंगरूप तथा बोलचाल में फर्क न होने के कारण तथा घाटी में रहने वाले परिवारों में घुलमिल जाने के कारण आज यह पता लगाना मुश्किल है कि कश्मीर में कितने घुसपैठिए जमे हुए हैं और कहाँ कहाँ किस-किस स्थान में छिपे रहकर आतंकवादी कार्यवाहियों को संचालित कर रहे हैं और कश्मीर के भोले-भाले लोगों में साम्प्रदायिक उन्माद फैला रहे हैं। यदि नेहरुजी उस समय केवल 24 घन्टे का और समय दे देते तो सम्पूर्ण कश्मीर विदेशी सेना से हमारी सेना खाली करा लेती और आज जो यह भयानक समस्या हमारे सामने उपस्थित है वह नहीं होती।

विगत पहिली मार्च को मुजफ्फरनगर से 24 कि0मी0 दूर मोरना सर्किट हाऊस में केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री मुफ्ती-मोहम्मद सईद ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा है कि भारत पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के अपने भाग को मुक्त कराने पर विचार कर रहा है ताकि पाकिस्तान के अनधिकृत कब्जे को समाप्त किया जा सके। वास्तव में मूल समस्या भी यही है और यही शिमला समझौते में अन्तर्निहित भावना है कि पाकिस्तान शान्ति से हमारे उस हिस्से को वापस कर दे जो उसने अनधिकृत तौर पर अपने कब्जे में ले रखा है और जहाँ से भारतविरोधी गतिविधियों का संचालन कर रहा है। यदि शान्ति से हमारा वह हिस्सा उसने हमें वापस नहीं किया तो भारत के पास इसके अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है कि वह जो भी तरीका उचित समझे, इस्तेमाल करके अपने उस हिस्से को वापस ले ले, चाहे इसके लिए हमें कितनी ही कुर्बानी क्यों न देनी पड़े।

हम गृहमन्त्री के इस वक्तव्य का हृदय से स्वागत करते हैं और उन्हें विश्वास दिलाते हैं उनकी इस घोषणा के पीछे भारत की अस्सी करोड़ जनता का सशक्त समर्थन उनके साथ है। लौहपुरुष सरदार पटेल ने पं0 नेहरु की ढीलाढ़वाली बलाए ताक रखकर जिस [illegible]

तथा अन्य देशी रियासतो का मसला सुलझा लिया था उसी प्रकार दृढ़ इच्छाशक्ति से वर्तमान गृहमन्त्री अपने कार्यकाल में कश्मीर के इस [illegible]

कृष्ण की तरह पूजे जायेंगे और राष्ट्र सदा-सदा के लिए उनका कृतज्ञ रहेगा। ◘

अभिनन्दन नव वर्ष

राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

कण-कण में आए नव जीवन,
जन-जन में छाए अपनापन,
नई चेतना से आह्लादित,
गाँव-नगर हो, वन उपवन,
निर्माणों की दीप-शिखा का-
निष्कलंक हो नव - उत्कर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष।।
दनुज वृत्तियों का हो अन्त,
बिखरे मानव वृति अनन्त,
वसुधा के अंचल में आए -
विपुल सुखों का मधुर बसन्त,
धरती पर छा जाए पावन-
अतुलित नूतनतम् साहर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष।।
कर्तव्यों पर सभी सजग हों,
मानव - मानव से न अलग हो,
राष्ट्र प्रेम व मानवता के-
दीप सदा जाग्रत जगमग हों,
सुखी तथा समृद्ध शील हो-
ऋषियों का यह भारतवर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष।।

23 मार्च भगतसिंह जन्म दिवस

बलिदानों का पथ अपनाया

—"आर्य"

क्रान्ति पथिक बन, जिस योद्धा ने,
जगा दिया युग की तरुणायी।
जिसके शोणित से भारत की-
गर्वित हुई अमर अरुणायी।
दिया तिलांजलि भौतिक सुखको-
बलिदानों का पथ अपनाया।
निर्भय हो फांसी का फन्दा,
जिसने हर्षित हो चूमा।
अपराजेय सिंह सदृश जो,
पश्चिम से पूरब तक घूमा।
फेंका बम फिर असेम्बली में-
स्वतन्त्रता की अलख जगाया।
जिसके कार्य - कलापों से,
उड़ गई नींद अंग्रेजों की।
जिसके कारण बढ़ी सुमहिमा-
फिर से कण्टक सेजों की।
कर नेतृत्व क्रान्ति वीरों का-
बलिवेदी पर शीश चढ़ाया।
जिसके उर था राष्ट्र भक्ति का,
गरिमा मण्डित भाव प्रवर।
बना जवानों का प्रेरक जो,
बलिदानों का सूर्य प्रखर।
"भगतसिंह" वह लाल-दुलारा-
भारत माँ का मान बढ़ाया।।

संस्कृत-शिक्षा और संस्कृति को चुनौती तथा समकालीन दयानन्द

— डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री
एम० ए०, पी-एच० डी०
प्राध्यापक- स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
रणवीर रणञ्जय महाविद्यालय अमेठी
- 227405 (उ०प्र०)

नई शिक्षा का सूत्रपात

भारतीय नवयुग के प्रारम्भ में नई शिक्षा (अंग्रेजी शिक्षा) का कर्तृत्व बड़ा महत्वपूर्ण है। 18वीं शदी के मध्य में जब बंगाल पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हुआ तब शिक्षा के केन्द्र मदरसे एवं पाठशालाएँ थीं। बहुत दिनों तक अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा-प्रणाली को परिवर्तित करने का विचार नहीं किया। पर ईसाई मिशनरियों का विचार था कि भारत में ईसाइयत के प्रचार में अंग्रेजी-शिक्षा बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है। अन्ततः ईसाई मिशनरियों एवं राजा राममोहन राय के प्रयत्न से भारत में नवीन शिक्षा का सूत्रपात हुआ, उसके अन्तर्गत स्कूल कॉलेज खोले गये। इन कॉलेजों में अंग्रेजी भाषा को विशिष्ट स्थान दिया गया। नये ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से दी जाने लगी।

वैज्ञानिक विषयों का माध्यम-अंग्रेजी

निस्सन्देह भारतीयों को नई वैज्ञानिक शिक्षा अवश्य प्राप्त करनी चाहिए थी, जिसका विकास उस काल में पाश्चात्य जगत् में हो रहा था। पर इसके लिए अंग्रेजी भाषा को पढ़ाने और उसे ही शिक्षा का माध्यम बनाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। भारतीय भाषाओं के माध्यम से भी नये ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दी जा सकती थी। वस्तुतः अंग्रेजी भाषा में वह अन्तरिक क्षमता न थी कि वह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा कहलाई जा सके। उसको इतना मान अंग्रेजों के उत्साह व परिश्रम से ही मिल सका। हिन्दी में अंग्रेजी की अपेक्षा अधिक क्षमता है, इसकी लिपि अधिक वैज्ञानिक है। उस समय हिन्दी के पीछे पड़ जाने का एकमात्र कारण हिन्दी बोलने वालों की दासता थी। अब स्वतन्त्र भारत में भी हिन्दी वालों की मानसिक दासता और अदूरदर्शिता बरकरार है।

पश्चिम की औद्योगिक और वैज्ञानिक क्रान्ति के साथ ज्ञान-विज्ञान के क्षितीज का विस्तार हुआ। उन विज्ञान के विषयों को अंग्रेजी के अतिरिक्त फ्रेंच, जर्मन, आदि अन्य यूरोपीय भाषाओं द्वारा भी पढ़ा और सीखा जा सकता था। और कोई भी देश अपनी भाषा में उस ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दे सकता था। जापान ने नये ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा के लिए जापानी भाषा का ही प्रयोग किया। पूर्वी यूरोप के विभिन्न देशों ने अपनी भाषाओं में ही पश्चिमी यूरोपीय ज्ञान- विज्ञान का अध्ययन-अध्यापन किया, जिसे उसने पश्चिमी यूरोप के देशों से सीखा था।

भारत में अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य

भारत में अंग्रेजी शिक्षा का सूत्रपात करने वाले अंग्रेजों का यह उद्देश्य था, कि यहाँ ऐसे शिक्षित लोगों की एक श्रेणी उत्पन्न हो जाए जो रंग से तो काले हों, पर भाषा, विचार, चिन्तन वेशभूषा व रहन-सहन में अंग्रेजों के सदृश हों। वे भारतीयों को मानसिक दृष्टि से गुलाम बना देना चाहते थे। अपने इस उद्देश्य में अंग्रेजों को सफलता भी प्राप्त हुई। भारत के प्राचीन आर्यधर्म और आर्यसंस्कृति पर यह अत्यन्त प्रबल आक्रमण था।

इस देश की प्राचीन परम्परा के अनुसार भारतीयों ने ज्ञान को कहीं से भी प्राप्त करने में कभी संकोच नहीं किया था। जब ग्रीक लोगों ने ज्योतिष में बहुत उन्नति कर ली थी, तब भारतीय आचार्यों ने ग्रीस के इस ज्योतिष-ज्ञान की प्राप्ति के लिए ग्रीक आचार्यों को अपना गुरु माना और विनय पूर्वक यह लिखा कि यद्यपि ग्रीक (यवन) म्लेच्छ हैं पर वे ऋषियों के समान पूज्य हैं। 18वीं शती में पाश्चात्य यूरोप में जिस नये ज्ञान-विज्ञान का विकास प्रारम्भ हुआ था, भारतीय लोग उसे भी उसी भावना से ग्रहण कर सकते थे। पर उसके लिए अंग्रेजी को माध्यम बनाने की आवश्यकता नहीं थी और न इसका समर्थन किया जा सकता है।

अंग्रेजी-संस्कृत, मैकाले और ईसाइयत-

1835-36 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 23 सरकारी स्कूल खोले थे। 1855 में ऐसे स्कूलों की संख्या 1151 हो गई। कलकत्ता में 1857 में पहला अंग्रेजी विश्वविद्यालय खोला गया और उस वर्ष के अन्त तक मद्रास और बम्बई में भी अंग्रेजी विश्वविद्यालय खोले गये 1887 तक भारत में पाँच विश्वविद्यालय स्थापित हो चुके थे और अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 25 लाख से भी ऊपर पहुँच गई थी।

ईसाई पादरियों ने भी अनेक स्कूल और कॉलेज खोले थे जिनमें उच्चवर्गों के बालक शिक्षा के लिए प्रविष्ट होते थे। इन शिक्षणालयों के अध्यापक और प्राचार्य प्रधान तया गौरांग होते थे और वे अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान किया करते थे। इनका वातावरण पाश्चात्य संस्कृति का होता था। इनमें शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा में योग्यता को ही विद्वत्ता का मानदण्ड समझने लगते थे, पाश्चात्य रहन-सहन आचार-विचार और संस्कृति को अपनाने में वे गौरव अनुभव करते थे और अंग्रेजों की तुलना में अपने को हीन भी समझने लगते थे। पाश्चात्य विद्वान यह प्रतिपादित करने में तत्पर थे कि- विधाता का ही यह विधान है कि गोरे लोग विश्व पर शासन करें और अन्य लोग उनकी अधीनता में रहते हुए उनसे सभ्यता सीखें। इसी प्रकार के विचार थे, जो ईसाई मिशनरियों तथा अंग्रेज शासकों द्वारा स्थापित शिक्षणालयों में घर किये हुए थे। इसी का यह परिणाम हुआ कि बहुत से सुशिक्षित तथा उच्च वर्गों के व्यक्ति भी ईसाई धर्म के प्रति आकृष्ट होने लगे और इस देश में ईसाइयों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती गई। 1815 ईस्वी में भारत में ईसाई धर्म के अनुयायियों की संख्या 2 लाख के लगभग थी और इसमें निरन्तर वृद्धि होती जा रही थी। 20वीं शदी के प्रारम्भिक वर्षों में ही यह संख्या 60लाख से ऊपर पहुँच गई। अर्थात् तेजी से भारतीय ईसाई धर्म को अपना रहे थे। इसके मूल में भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रारम्भ होना था।

भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रवर्तक लार्ड मैकाले संस्कृत शिक्षा, भारतीय साहित्य और संस्कृति के प्रति प्रबल घृणा के भाव रखते थे। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा विषयक अपना प्रसिद्ध नोट- 2 फरवरी 1835 को लिखा था। इसमें उसने अंग्रेजी की तुलना में संस्कृत, अरबी आदि प्राच्य भाषाओं के साहित्य को हीनतर सिद्ध किया था। उसके शब्द थे- "A single shelf of a good European library was worth the whole native literature of India and Arbia".
अर्थात्- "यूरोप के एक अच्छे पुस्तकालय की आलमारी का एक खाना भारत तथा अरब के सम्पूर्ण साहित्य से श्रेष्ठ है"। इसी प्रसंग में उसने आगे लिखा- "संस्कृत भाषा में लिखी गई समस्त पुस्तकों से संगृहीत इतिहास विषयक जानकारी इंग्लैण्ड की प्राथमिक पाठशालाओं में प्रयुक्त होने वाली इतिहास विषयक एक साधारण संक्षिप्तीकृत पुस्तक से भी न्यून महत्व की होती है।"
इसी मैकाले ने कलकत्ता में प्रो० विल्सन के प्रयत्न से 1824 में स्थापित संस्कृत कॉलेज में नियुक्त भारतीय संस्कृत प्राध्यापकों के साथ दुर्व्यवहार करना प्रारम्भ किया। मैकाले की कोपदृष्टि का भाजन संस्कृत भाषा बनी, जिसके परिणाम स्वरूप संस्कृत के विद्वान् मर्माहत हुए। संस्कृत कॉलेज के अध्यापकों ने अपनी वेदना से प्रो० विल्सन को पत्र द्वारा (संस्कृत-श्लोकों में लिखकर) अवगत कराया। विल्सन खिन्न हुए, उन्होंने भी संस्कृत के श्लोकों में ही उत्तर दिया। पर वे कुछ कर नहीं सकते थे। क्योंकि भारत में शिक्षा नीति की नकेल लार्ड-मैकाले के अधीन थी।

संस्कृत और संस्कृति के लिए संघर्षशील स्वामी दयानन्द

उन्नीसवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण के प्रारम्भ 1875 में प्रसिद्ध धार्मिक आन्दोलन "आर्यसमाज" के संस्थापक, प्रखर समाज सुधारक और अप्रतिम वैदिक विद्वान् स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ईसाई पादरियों और अंग्रेज शासकों के इस दुरभिसन्धि को अच्छी तरह समझ लिया था। उन्होंने लिखा-

— क्रमशः

निर्माण और आर्यसमाज

• डा० प्रशान्त वेदालंकार
स्वरूप नगर, दिल्ली

आर्यसमाज का उद्देश्य: मानव-निर्माण

मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। पर मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने के लिए एक महान् प्रयत्न की आवश्यकता है। ऋग्वेद में मनुर्भव कहकर मनुष्य को मनुष्य बनाने की प्रेरणा दी गयी है। यदि मानव-निर्माण का प्रयत्न न किया जाय तो मनुष्य निरा पशु रह जाय। महर्षि-दयानन्द सरस्वती ने इसी कारण आर्यसमाज का लक्ष्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (ऋग्वेद) निर्धारित करके विश्व के प्रत्येक मानव को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाने का संकल्प किया था। आर्यसमाज के प्रथम अट्ठाईस नियमों का पहला नियम था- सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है, आर्यसमाज का उद्देश्य सब मनुष्यों का हित करना है। महर्षि-दयानन्द मनुष्य का हित उसे धार्मिक बनाकर उसे सच्चा मनुष्य बनाने में ही मानते थे। वर्तमान 10 नियमों में छठा नियम है- संसार (मनुष्यमात्र) का उपकार करना (उसे सच्चा मनुष्य बनाना) इस समाज का मुख्य उद्देश्य है और दयानन्द समाज का उपकार व्यक्ति को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति में मानते हैं। इतिहास साक्षी है कि महर्षि दयानन्द और उन द्वारा स्थापित संस्था आर्यसमाज ने मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने का ही प्रयत्न किया। महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त विचार पर अपनी टिप्पणी करते हुए डा0 विश्वनाथ प्रसाद वर्मा ने लिखा- अर्थात् मनुष्य की यह व्याख्या परोक्ष रूप से सामाजिक तथा राजनीतिक बुराई से लड़ाई की तैयारी है (देखिए मार्डन इण्डियन पुलिटिकल पार्ट, पृ026)

मानव-निर्माण के तत्व

महर्षि दयानन्द ने अनेक स्थानों पर मानव निर्माण के तत्वों पर प्रकाश डाला है। स्वमन्तव्या-मन्तव्य-प्रकाश में उन्होंने लिखा है- मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं को चाहे वह महाअनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हो, उनकी रक्षा उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी है, तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो चाहे प्राण भले ही जावें, परन्तु मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे। इसमें श्रीमान् - महाराजा भर्तृहरि जी आदि ने श्लोक कहे हैं, उनका लिखना उपयुक्त समझकर लिखता हूं --

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम।।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।
(नीतिशतक)

इसी प्रकार मनुष्य को धीर बनकर न्याय-पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। साथ ही महर्षि ने काम और लोभ को छोड़कर धर्माचरण करने वाले को मानव कहा है। इसी प्रकार "सत्यमेव जयते", अहिंसापरमो धर्मः" आदि वचनों को उद्धृत करके महर्षि ने सत्य और अहिंसा को मानव-निर्माण के लिए अनिवार्य ठहराया है।

आर्योद्देश्यरत्नमाला में मनुष्य की परिभाषा करते हुए महर्षि ने लिखा- जो विचार के बिना किसी काम को न करे, उसका नाम मनुष्य है। इसप्रकार मानव निर्माण के लिए मनुष्य का विचारशील बनना आवश्यक है।

महर्षि दयानन्द साम्प्रदायिक-विद्वेष को भी मानव-निर्माण में एक घातक कारण समझते हैं। उन्होंने सभी सम्प्रदायों की मिथ्या बातों का खण्डन कर उनके सर्वमान्य तत्वों का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा-

- मनुष्य के जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिए है, न कि वाद-विवाद, विरोध करने के लिए, जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्यामत मतान्तरों का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योन्य का आनन्द न होगा। यदि हम मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है।

- जो बात सबके सामने माननीय है उसको मानता हूं अर्थात् जैसे सत्य बोलना अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है- ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हूं और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं, उनको त्यागकर परस्पर प्रीति से बर्तें।

- हम किसी से संसार भर में विरोध करना नहीं चाहते सिवाय उनके कि जो अधर्म अन्याययुक्त आचरण करें।

- सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए (आर्यसमाज का सातवां नियम)

इसी प्रकार महर्षि के अनुसार अन्याय का विरोध, साहस, धैर्य, परोपकार, विचार-शीलता, सत्य, धर्म, पक्षपात रहित बुद्धि, सबसे धर्मानुसार व्यवहार आदि गुण मानवनिर्माण के अनिवार्य तत्व हैं। इनके बिना मनुष्य-मनुष्य नहीं बनता।

मानव-निर्माण के उपाय

मानव का सर्वांगीण (शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक) विकास करके ही व्यक्ति में उक्त गुण उत्पन्न किये जा सकते हैं। इसके लिए महर्षि ने निम्नलिखित उपाय निर्दिष्ट किये हैं- (क) संस्कार और यज्ञ
(ख) आश्रम-व्यवस्था व शिक्षा प्रणाली
(ग) वर्ण-व्यवस्था तथा सुदृढ़ राज्य व दण्ड नीति। यहां हम इनके द्वारा मानव निर्माण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालेंगे।

(क) संस्कार और यज्ञ- मानव-जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य को आरम्भ करने के लिए वैदिक ऋषियों ने 16 संस्कारों की योजना की और महर्षि ने उनके द्वारा मानव-निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है। प्रथम गर्भाधान-संस्कार है, जिसमें गर्भधारण करने का उचित समय व भावी जननी को स्वस्थ रखने के निर्देश हैं। पुंसवन संस्कार में संतान को आरोग्य और गर्भिणी को निर्विघ्न प्रसव के उपाय बताये हैं। वर्षभर पुरुषों को ब्रह्मचर्य रखना चाहिए, ऐसा भी निर्बन्ध कहा हुआ। सीमन्तोन्नयन में स्त्रियों को अकाल गर्भपात के भय से रक्षित करने की योजना है। जातकर्म में निर्विघ्न प्रसाव होने व प्रसूत और प्रसूता को सुखी रखने का विधान है। नामकरण संस्कार में सुन्दर नाम रखने की विधि है। निष्क्रमण में उचित समय पर बच्चे को बाहर ले जाने तथा अन्नप्राशन में अन्न देने का उल्लेख है। चूड़ाकर्म में स्वास्थ्य के लिए मुण्डन को आवश्यक ठहराया है। उपनयन में बच्चे को गुरु के पास ले जाने, वेदारम्भ विद्या पढ़ने तथा समावर्तन "सत्यवेद, धर्मचर" (तैत्तिरीय उपनिषद्) आदि शिक्षा के उद्देश्यों को बताकर दीक्षान्त का विधान है। विवाह संस्कार में ठीक समय पर समान स्तर की कन्या से स्वयंवर तथा गार्हपत्य में गृहस्थी द्वारा पंच महायज्ञों के करने की प्रेरणा है। वानप्रस्थ व सन्यास में मनुष्य को आध्यात्मिक उन्नति करने का निर्देश है। अन्त्येष्टि में उसके आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना है। इस प्रकार प्रत्येक संस्कार के नाम से भी स्पष्ट है कि ये संस्कार मनुष्य की शारीरिक, बौद्धिक उन्नति की कामना व उसके लिए अनेक निर्देश हैं।

यज्ञ के तीन अर्थ हैं- देवपूजा, संगतिकरण और दान। परमात्मा और विद्वान् की पूजा करना देवयज्ञ है। विद्वानों का संग ही संगतिकरण है। दान से अभिप्राय विद्यादान से है। ब्रह्मचारी को ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ और गृहस्थी को पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ (पांचों) करने का विधान है। पितृयज्ञ में अपने गुरु (माता-पिता और आचार्य) की अतिथि-यज्ञ से विद्वान अभ्यागत पुरुष की तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ से पशु पक्षियों की सेवा करके व्यक्ति परोपकार में लीन रहता है। इसी प्रकार यज्ञ परोपकार की क्रियात्मक शिक्षा है।

—क्रमशः

वैदिक वाड्.मय में धर्म का स्वरूप

—— प्राचार्या डा० आशारानी राय
उप प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम", वेद धर्म के मूल आधार हैं। वेद शब्द विद ज्ञाने, विद सत्तायाम्, विद्लृ लाभे, विद विचारणे से निर्मित है अर्थात जिनके पठन से ज्ञान प्राप्त होता है, विद्वता बढ़ती है क्षमता उत्पन्न होती है। संसार के श्रेष्ठ तथा ऋत ज्ञान के आदि स्त्रोत वेद हैं। वेदों का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में असीम से निकलकर चार ऋषियों को प्राप्त हुआ। अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु को यजुर्वेद, आदित्य को सामवेद, अंगिरा को अथर्ववेद। निरुक्तकार ने ऋषि की व्याख्या की ऋषियोः मन्त्रदृष्टारः अर्थात ऋषि मंत्रों का सृजन करने वाले नहीं है, अपितु साक्षात्कार करने वाले हैं। वेद देववाणी में स्थित स्वतः प्रमाण हैं। अन्य ग्रन्थों में प्रक्षिप्त श्लोक अथवा मिलावट हो सकती है किन्तु वेदों में नहीं क्योंकि वेदों के सस्वर- पाठ भी विधि क्रम एवं विलोम से आज भी यहीं हैं जो शताब्दियों पहले थी जिसमें किसी भी त्रुटि की संभावनानहीं रहती है, यह विकृतियां आठ हैं:-

जटा माला शिखा .रखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टो विकृतयः प्रोक्ता क्रमपूर्वा महर्षियः।

वैदिक ग्रन्थ अथवा आर्य ग्रन्थ निम्नलिखित हैं जिनका वेदों से सम्बन्ध है, चारों वेदों के चार उपवेद है- आयुर्वेद {ऋगवेद}, धनुर्वेद {यजुर्वेद}, गन्धर्ववेद {सामवेद}, अर्थवेद {अथर्ववेद} ब्रह्म नाम वेद व ईश्वर का है, "ब्राह्मण ग्रन्थ" भी चारों वेदों से सम्बन्धित है:-

ऐतरेय {ऋग्वेद}, शतपथ {यजुर्वेद}, सामविधान {सामवेद} गोपथ {अथर्ववेद}।

आरण्यक ग्रन्थ संभवतः इनकी रचना जंगल में की गई थी।

उपनिषद अर्थात् उप् नि सद्, गुरु के चरणों में बैठकर जो विद्या प्राप्त की जाए वह उपनिषद् है ये ।। है:-

ईशकेनक प्रश्न मुण्डकमाण्डुक्य
ऐतेरेयतैत्रिरीमबृहदारण्यकछान्दोग्य तैत्तरीय श्वेतो श्वतरो

षड दर्शन- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा एवं वेदान्त

स्मृति- मनुस्मृति

इस प्रकार वेद भारतीय जनमानस के हृदय स्थल पर अमिट प्रभाव छोड़ने वाले अमर ग्रन्थ हैं, प्रज्वलित दिनकर के समान हैं, जिनके उदय होते ही संसार से अविद्या रूपी अन्धकार को समूल वेधन करने में सक्षम है। वेद-ज्ञान संसार में मानव मात्र के लिए है। मनुस्मृति में कहा गया है:-

वेद शास्त्र तत्व मंत्र कुलाश्रमें वसन्।
इहैव लोके तिष्ठन् स ब्रह्मभूयाय कल्पते।
मनु0 12/182

जो व्यक्ति वेद-ज्ञान के जानने में अपना समय लगाता है वह वस्तुतः मननं करोति इति मानव है वह संसार के प्रत्येक ज्ञान से भिज्ञ होगा, अन्यतः जो वेदों को त्याग कर अन्य अनार्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन में अपना समय लगाता है वह संसार रूपी सागर में सदैव भटकता रहेगा उसे ऋतु ज्ञान अर्थात सार्वभौमिक ज्ञान जो देश काल की परिधि में नहीं आता हो वह न प्राप्त हो सकेगा। अतः मनुस्मृति में सुष्टु ही कहा है--

योऽनधीत्य द्विजो वेद मन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जी वन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।
मनुस्मृति 2/168

इस प्रकार हमारी सभ्यता, संस्कृति, आचार. व्यवहार, समाज, जीवनमूल्य एवं धर्म सबके सम्यक ज्ञान हेतु वेद की ओर ही दृष्टि करनी पड़ती है। धर्म का स्वरूप जानने के लिए वेद ही प्रमाण है मनुस्मृति में कहा है---

"धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाण परमं श्रुतिः "। वेद ही धर्म की कसौटी है, धारणाद् धर्ममित्याहुः जो शुभ गुण जीवन में धारण किए जाएं वह धर्म है। वेद में कहा है ---

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधते।
तयो र्यत्सत्यं यतरदृजी यस्तदित्सोमो ऽवति हन्त्यसत्।।
ऋग्वेद7/184/121

श्रेष्ठ ज्ञान को जानने की इच्छा वाले व्यक्ति के समीप सत्य व असत्य एक साथ आते हैं, ज्ञानशील व्यक्ति सत्य का ग्रहण करता है और असत्य को मार देता है अर्थात उसकी वर्जना करना है अतएव कहा है ---

"ओजश्च तेजश्च सत्यश्च बलं च वाक् चेन्द्रियं व श्री श्च "अथर्ववेद 12/517 अर्थात धर्माचरण से युक्त शौर्य, तेज, सुखः दुख, लाभ-हानि, मान-अपमान को समान रूप से सहन करना, ब्रह्मचर्य आदि नियमों से शरीर व बुद्धि को बलयुक्त बनाना, मधुर वाणी बोलना, इन्द्रियों को सद्कर्म की ओर प्रवृत्त करना, वैभव को प्राप्त करना, वेदोक्त प्रकार से सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग, परोपकार आदि धर्म है ।

मुण्डकोपनिषद् में सत्य धर्म की महिमा वर्णित है-

"सत्यमेव जयते नानृतम्" अर्थात सत्य पर चलता हुआ मानव सुख व विजय प्राप्त करता है असत्य पर चलकर नहीं।

मानव धर्म का ही दूसरा नाम वैदिक धर्म है। मानव के ही सम्बन्ध में कर्त्तव्य--अकर्त्तव्य, पापपुण्य, सुख-दुख, धर्म-अधर्म का प्रश्न उठता है क्योंकि यह ही कर्म प्रधान योनि है। नीतिशतकम् में कहा गया है-

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यम् पशुर्भिनराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषे धर्मेण हीनाः पशुर्भिः समानाः।।

अर्थात् आहार, निन्द्रा, भय और मैथुन में मानव व पशु समान है, धर्म ही उसमें भेद के तत्व हैं। मानव योनि में ही ज्ञानी-अज्ञानी, मूर्ख-पण्डित, अमीर-गरीब, देवता-दानव भेद हैं। पशुओं में नहीं। शेर को हिंसक प्रवृत्ति के कारण तथा अन्य पशु को पुण्यात्मा नहीं कह सकते हैं। इस प्रकार घड़ी दिन भर चलती है परन्तु उसकी क्रिया न तो सकाम है न ही निष्काम। मानव का यह सौभाग्य है कि यदि वह शुभ कर्मों से धर्माचरण करें तो ऋषि महर्षि बन सकता है। यदि पतित हो जाए तो दानव -असुर।

प्राचीन काल में सर्वत्र केवल एक ही धर्म था, वैदिक धर्म। रामायण काल तक भी दक्षिण के कुछ भागों को छोड़कर जहाँ रावण आदि दस्युओं का साम्राज्य था सर्वत्र वैदिक धर्म का बोलबाला था लंका में विजय के पश्चात राम ने आर्य विचारधाराओं से युक्त विभीषण को राज्य दिलाया किन्तु आज भारत देश में ही चतुर्दिक टिमटिमाते हुए अनेक मतावलम्बी भ्रमण कर रहे हैं। जो समाज को भ्रमित व दिशा शून्य कर रहे हैं। वैदिक धर्म ह्रास से मानव, धर्म के स्वरूप से भी अपरिचित हो गए हैं, आज धर्म का जो स्वरूप हम मान रहे है वही संसार का सबसे बड़ा झूठ है, पाप को शरण देता है, बड़े-बड़े हत्यारे क्रूर डाकू भी इसी धर्म की आड़ लेकर बच जाते हैं, साधुओं के पवित्र देश में स्वच्छन्द घूमते हैं। धर्म के नाम पर ही करोड़ों अछूत कीड़े मकोड़ों की तरह जीवन जीने पर मजबूर हैं उनकी पुकार भी अछूत बन कर रह गई है। इसका स्पष्ट उदाहरण हम मीनाक्षी पुरम की घटना से ले सकते हैं जहाँ कई हरिजनों को धर्म परिवर्तन कराके राजनैतिक स्वार्थों का नग्न ताण्डव खेला गया। हमारे इतिहास के पृष्ठ विकृत धर्म के स्वरूप से रंगे हुए हैं। स्वर्ण चिड़िया कहलाने वाले भारत का सोमनाथ मन्दिर तथा अन्य मन्दिरों से हीरे जवाहरात तथा अपार धनराशि को लूटने वाले महमूद गजनवी का प्रतिकार भी धर्म की दुहाई देकर अकर्मण्यता वशात् नहीं किया गया। भारत में ही नहीं विदेशों में धर्म के विकृत रूप के कारण जनता को छला गया। गुयाना में जिम जोन्स के नेतृत्व में 800 व्यक्तियों को सामूहिक हत्या के लिए प्रेरित किया गया। यह कैसा धर्म है? जो मानव को मानव से पृथक करता है सच्चा धर्म तो-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया.।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखभाग् भवेत्।।

--- क्रमशः

तू-तू मैं-मैं

—विजेन्द्र शर्मा, साहित्य अलंकार
६, हैण्डली क्लोज़, लीमिंग, पश्चिम आस्ट्रेलिया

जब मैं किसी भी आर्य समाज में "तू-तू मैं-मैं" का समाचार सुनता हूँ तो मुझे बड़ा दुख होता है, मेरी आत्मा ग्लानि से भर उठती है। आर्य समाज के सदस्यों, सभासदों में मतभेद हो, विचारों में भेद हों, यह स्वाभाविक है, परन्तु मतभेद को लेकर आर्यसमाजों में दलबन्दी हो, यह हानिकारक और अनुचित है "यह नहीं होना चाहिये" मैं किसी एक समाज को लक्ष्य में रखकर यह नहीं लिख रहा हूँ परन्तु मैं कई विदेशों के आर्यसमाजों में तू-तू मैं-मैं का हानिकारक सम्वाद देख सुन चुका हूँ।

एकबार बहुमत जो निश्चय कर ले बस उसी को मान्यता देकर अपने मतभेद को सुलगने न दें। बहुमत द्वारा पारित उद्देश्य को पूरा करने में सब एक साथ होकर कन्धे से कन्धा मिलाकर, संगठित होकर कदम से कदम मिलाते हुए आगे बढ़ना हर एक आर्यसमाज के सदस्यों, सभासदों का कर्त्तव्य है। आर्यसमाज के किसी भी सदस्य या पदाधिकारी को अपना स्वार्थ नहीं अपितु आर्य समाज के हितों को ध्यान में रखकर ही कुछ करना चाहिए। अपने स्वार्थ, अपने नाम के लिए, अपने परिवार, अपने मित्र, अपनी प्रशंसा का लोभ हर एक आर्य को त्याग कर आर्यसमाज का हित सोचना चाहिए। जो आर्य अपनी प्रशंसा, अपने नाम, अपने हित, अपने परिवार या मित्र के लिए लाभ, अपने स्वार्थ की इच्छा न रखकर समाज के मामलों में समाज को प्रधानता देते हैं वे सच्चे आर्यसमाजी कहलाने योग्य होते हैं।

जो लोग अपने स्वार्थ के लिए अपनी प्रशंसा, अपनी मान मर्यादा के लिए, अपने "बड़प्पन" के लिए आर्यसमाजों में घुसते हैं, उनसे आर्यसमाजों को बचाए रखिए। ऐसे ही लोग समाजों में अधिकतर "तू-तू मैं-मैं" मचाने वाले होते हैं। ऐसे लोगों से ही आर्यसमाज को हानियां, मतभेद, दलबन्दी आदि उठानी पड़ती हैं।

कुछ ऐसे भी लोग हो सकते हैं जो आर्यसमाज के लिए, वैदिक सिद्धान्त के लिए कुछ करते धरते हैं नहीं परन्तु पदों के लिए लालच रखते हों और धन-सम्पदा के कारण लोग उन्हें कुर्सियों पर बिठा देते हैं। पद अथवा कुर्सी काम के लिए है। समाज की कुर्सियों पर बैठने वालों को समाज को गति देना उनका कर्त्तव्य है। यह सही है कि आर्य समाजों को धन की आवश्यकता पड़ती हैपरन्तु आर्य समाजों को निःस्वार्थ सेवा करने वाले कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि स्वार्थ और नाम की आशा को त्याग कर आर्यसमाजों के लिए काम करने वाले आवश्यक धन संग्रह कर ही लेंगे और अन्य तरह से भी समाज को लाभ पहुँचाकर गति दे सकेंगे। निर्भीक होकर स्वार्थहीन आर्यदेवियां और आर्यसज्जन आर्यसमाज के लिए अधिक परिश्रम कर सकें।

ईसाई मिशन वालों में जो व्यक्ति अपने मिशन के लिए सबसे अधिक परिश्रम करते हैं उन्हें प्रधान चुनते हैं। इसीतरह मन्त्री और सभासद भी चुने जाते हैं। इस तरह चुने जाने वाले पदाधिकारी और कार्यकर्त्ता अपने मिशन के लिए और अधिक उत्साह से कार्यक्षेत्र में सक्रिय हो उठते हैं फिर ये लोग कुर्सियों से चिपके रहना भी नहीं चाहते। अगर कोई अन्य व्यक्ति अधिक उत्साह दिखलाता है तब उसको और दूसरों को उत्साहित करने के लिए दूसरों को भी अवसर प्रदान करते हैं। उनमें किए जाने वाले कार्यों का सम्मान होता है न कि उच्च वर्ग और धन सम्पदा वालों का।

मैंने यह भी देखा सुना है कि अपने आपको उच्चवर्ग का समझने मानने वाला व्यक्ति अगर कुर्सी पर बिठाया नहीं गया, पद पर चुना नहीं गया तब वह विरोध में होकर आर्यसमाज के कार्यों में अवरुद्ध, रोड़े और बाधायें डालने तक तत्पर हो जाता है और समाज में "तू तू मैं मैं" मचाने लगता है। ऐसे लोग सभी स्थानों में, सभी देशों में हो सकते हैं। ऐसे लोगों से भी समाज वालों को सावधान रहना चाहिये ।

कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो सभी से "हाँ" को मनवाने के लिये भी "मैं मैं तू तू" मचाने लगते हैं। वे कभी भी "भी" को मानने के लिए तैयार नहीं होते। मेरी "ही" सुनी जाए, मेरी ही मानी जाए, मेरी "ही" कही की जाए। अरे भाई, तुम्हारी"भी" सुनी जाए और दूसरों की "भी" सुनी जाए। अगर दूसरों का मत अधिक उपयुक्त हो तो उनकी मानी जाए, उनकी कही की जाए। अगर आप की नहीं मानी गई तो इस पर आपके स्वाभिमान पर कोई ठेस पहुंचने की कोई बात नहीं दूसरों की बातों से, सम्मति से, विचारों से समाज को अधिक लाभ हो तो दूसरों की "ही" माननी चाहिए।

इसी "तू तू मैं मैं" ने ही तो भारत को नष्ट कर दिया था। पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द्र की "तू तू" "मैं" "मैं" ने मुसलमानों को भारत में बुलाया और भारत को तीन सौ वर्षों तक मुसलमानों का गुलाम बनाए रखा, परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े रखा। महाराणा प्रताप सिंह के समय में मानसिंह स्वजातीय से विद्रोह कर विधर्मी यवनों का पक्ष लेकर "तू तू मैं मैं" मचाए रखा और महाराणा असफल रहे, शिवाजी के काल में कुछ राजपूत राजे विधर्मियों से मिले हुए "तू तू मैं मैं" मचाए रखा। बन्दा बैरागी भी इसी "तू तू मैं मैं" के कारण बन्दी बना लिया गया था और यावनों ने गर्म लाल लाल चीमटों से उसके शरीर के माँस को खींच खींच कर मार डाला। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में भी कुछ सिख राजों ने "तू तू मैं मैं" में उलझ कर अंग्रेजों का साथ दिया और उस स्वतन्त्रता संग्राम को असफल होने में सहायता पहुँचाई। वर्तमान काल में भी कुछ उग्रवादी सिखों ने पंजाब में "मैं मैं तू तू" मचा रखा है। कश्मीर में भी यही स्थिति उत्पन्न है। उत्तर पूरब में भी यही " तू तू मैं मैं" का बखेड़ा है। भारत की तुष्टीकरण और धर्मनिरपेक्षता की असंगत नीति के कारण भी बहुत से लोग स्वार्थ और लाभ उठाने के लिए " तू तू मैं मैं" मचाते रहते हैं। इन सब " तू तू मैं मैं" के बखेड़ों का अन्त करने के लिए आर्यसमाजों को पूरी शक्ति लगानी होगी।

परन्तु अगर आर्यसमाजों में ही "मैं मैं तू तू " का बखेड़ा होता है तो इससे अधिक दुखदाई और कौन सी बात होगी। आर्यसमाजों में यह नहीं होना चाहिए। आर्य सभासदों, इस बखेड़े से बचो और अपने समाजों को इससे बचाए रखो। स्वामी दयानन्द के आर्य समाज में कभी भी तू तू मैं मैं का बखेड़ा उठ ही नहीं सकता। ऐसा मेरा विश्वास है। अगर किसी समाज में " तू तू मैं मैं" का बखेड़ा उठ खड़ा होता है तब वह समाज नहीं, नहीं, उस समाज के सदस्य, अथवा पदाधिकारी सही, पथ से भटक जाते होंगे तभी तू तू मैं मैं" मचता है। आर्य समाजों में एकता बनी रहे, आर्य समाजों का बगीचा गुलजार रहे, चमन में बहार आए और दयानन्द की खेती लहराती रहे। ▫

सोवियत पत्रकार का स्वागत

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर यहाँ 30 जनवरी को आयोजित "युवा संगोष्ठी" कार्यक्रम के अन्तर्गत सोवियत पत्रकार श्री आनेन्द्रीय प्रोन्की "प्रबन्ध सम्पादक-युवक दर्पण (सोवियत दूतावास दिल्ली) का अभिनन्दन किया गया। अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री प्रोनकी ने बताया कि हमारे देश में भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा है। उन्होंने बताया कि मैं स्वंय भी संस्कृत का अध्ययन करता हूँ तथा मुझे इस पर अत्यधिक हर्ष है कि संस्कृत के अग्नि, प्रणय, विद्या आदि शब्द सोवियत भाषा से मिलते हैं। भारत सोवियत मैत्री को मद्देनजर रखते हुए बताया कि सोवियत में बदलाव आ रहा है आज जिस प्रकार भारत में जाति समस्या जैसी कुप्रथाएं हैं वैसी ही समस्याओं से रूस जूझ रहा है। श्री प्रोनकी ने हर्ष व्यक्त किया कि वर्तमान दशक में भारत सोवियत के राजनैतिक व्यापारिक धार्मिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध मजबूत हुए हैं। ▫

दर्शनानन्द जयन्ती सम्पन्न

रुड़की आर्य समाज द्वारा 21 जनवरी 90 को स्वामी दर्शनानन्द जयन्ती मनायी गयी

संवाददाता



महिला मण्डल

नारी जागृति और आर्य समाज

• श्रीमती दर्शन भारद्वाज
आजमगढ़

वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणादि ने कहा "यतो S भ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिः सधर्मः अर्थात् जिससे व्यावहारिक सिद्धि, लौकिक प्रगति अमृतत्वया मोक्ष की सिद्धि होती है वह धर्म है। धर्म क्या है "यं क्रियमाणंतु आर्याः प्रशंसन्ति सः धर्मः" अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जिस कार्य की प्रशंसा करें वही धर्म है। यह दोनों आप्त वाक्य इंगित करते हैं कि हमें भौतिक उपलब्धियों से लेकर मोक्ष तक की प्राप्ति अपने ऐसे कर्मों के माध्यम से करनी है, जिनकी श्रेष्ठ पुरुष प्रशंसा करें। इतने परम पुनीत लक्ष्य को प्राप्त करने वाले व्यक्ति क्या किसी जीव मात्र की उपेक्षा कर सकेंगे, फिर नारियों की उपेक्षा का तो प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता है, जो पुरुषों के उत्तम अर्द्ध अंग केरूप में मान्य हैं। स्त्री-पुरुष युगल ही दम्पत्ति है। इन्हीं दम्पत्तियों से कुल, कुलों से नगर-ग्राम और इन्हीं ग्रामों से मिलकर राष्ट्र के स्वरूप का चित्र परिपूरित होता है। इसीलिये तो हमारे वेद-शास्त्रों में स्थान स्थान पर नारियों की महत्ता का दिग्दर्शन कराया गया है। देखिये वेद में नारी का उत्साह कैसे प्रकट होता है :-

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो में दुहिता विराट् ।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः ।।

मेरे पुत्र आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं का नाश करने वाले हैं। मेरी पुत्री अपने उत्तम गुणों के कारण खूब दीप्तिमय तेजवती है। मैं शास्त्रार्थ और रणभूमि में भी जय प्राप्त करने वाली हैं। मेरे कारण मेरे पति में उत्तम यश रहता है और उनकी प्रशंसा होती है। यह एक मंत्र ही क्या वेद में तो पद पद पर नारी की महिमा को प्रकाशित किया गया है। इसी प्रकार गृह सूत्र-उप-निषद् आदि सद् ग्रन्थों में भी स्त्रियों का भरपूर गुणगान किया गया है। महर्षि मनु ने नारी जाति के प्रति अपनी जो श्रद्धा प्रकट की है वह अनुपमेय है :-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।।

जहाँ नारियों की पूजा अर्थात सत्कार होता है वहाँ देवता रमण करते हैं। और जहाँ स्त्रियोंकी पूजा नहीं होती है, वहाँ की सभी क्रियायें निष्फल जाती हैं। नारियों की पूजा क्यों न हो। वे पुरुष से किसी कार्य में पीछे नहीं थीं। धर्म-कर्म सभी क्षेत्रों में वे पुरुषों के साथ अग्रसर रही हैं। कैकेयी ने तो युद्ध में साथ रहकर दशरथ की सहायता भी की थी। कवि कालिदास ने अपने ग्रन्थ में नारी पात्रों का वर्णन करते समय उन्हें यज्ञोपवीत धारिणी बताया है। बाल्मीकि रामायण में स्त्रियों को धर्मानुष्ठान में पुरुषों की भाँति ही तत्पर बताया गया है:-

सा क्षौम वसना हृष्टा नित्य व्रत परायणा।
अग्निं जुहोति स्म तदा मन्त्र वत् कृत मंगला ।।

अर्थात् वह कौशल्या रेशमी वस्त्र धारण किए हुए व्रत परायणा प्रसन्न मन सहित अग्निहोत्र करती थीं। आइए महाभारत की एक झाँकी लें- इसके श्लोकों में स्त्रियों को समाज का श्रेष्ठ अर्द्धांग प्रतिपादित किया गया है।

अर्धभार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमा सखा ।

भार्या मूलम् त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः।।
नास्ति भार्यासमो बन्धुर्नास्ति भार्या समागतिः ।
नास्ति भार्यासमों लोके सहायो धर्म संग्रहे ।।
सखायः प्रविविक्तेषु भवन्त्येताः प्रियंवदाः।
पितरो धर्मकार्येषु भवन्त्यार्तस्य मातरः।।

"अर्थात् मानव का आधा भाग उसकी स्त्री है। मानव का सबसे श्रेष्ठ मित्र उसकी पत्नी है। धर्म-अर्थ-काम रूपी त्रिवर्ग की सिद्धि में भार्या मूल कारण है, संसार रूपी सागर में तैरने वालों के लिए आनन्द का मूल भार्या है। "" पत्नी के समान कोई बन्धु नहीं है, और न पत्नी जैसा कोई कर्तव्य प्रेरक है और न इस संसार में पत्नी के समान धर्म सम्पादन में अन्य कोई सहायक है। ""ये प्रिय बोलने वाली पत्नियाँ ही निर्जन स्थानों में मित्र होती हैं, धर्म के कार्यों में पिता के रूप में और पीड़ित अवस्था में माता के रूप में हो जाती हैं। महाभारत के इन विविध वाक्यों का महान नीतिकार चाणक्य ने भी समर्थन किया है :-

शूराश्च कृत विद्याश्च रूप वत्यश्च याः स्त्रियः ।
यत्र तत्र गमिष्यन्ति तत्र तत्र कृतादराः॥

अर्थात् वीरता सम्पन्न विदुषी और रूपवती स्त्रियाँ जहाँ जहाँ जायेंगी, वहाँ वहाँ उनका आदर होगा। इतना ही नहीं गोस्वामी तुलसीदास ने भी स्त्रियों की प्रशंसा और स्तुति में कोई कमी नहीं छोड़ी है, यह बात पृथक है कि वे उनकी निन्दा में इससे भी और आगे बढ़ गये हैं। पार्वती का शिव को प्राप्त करने का त्याग तपस्या पूर्ण दृढ़ संकल्प "जन्म कोटि लग रगर हमारी। बरउँ संभु न त रहउँ कुआँरी।।" एक नारी की गौरव गाथा का प्रतीक है। इसी प्रकार राम के बनवास की घोर संकटपूर्ण घड़ी में, वन के भंयकर दुःखों को चित्रित करते हुए रामके मना करने पर भी सीता ने राजमहल के भोग वैभव को ठुकरा दिया और कह दिया :

भोग रोग सम भूषन भारू। जम जातना सरिस संसारू ।।
प्राननाथ तुम्ह बिनु जगमाही। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ।।
जिय बिनु देह नदी बिनुबारी। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ।।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। सरद विमल विधु बदन निहारे।।

सीता जी की खोज में गए हनुमान जी की सहायता एक तपस्वनी नारी ने ही की थी। तुलसीदास के शब्दों में वर्णन देखिये:-

दीख जाइ उपवन वर सर विगसित बहुकंज।
मन्दिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुंज।।

जो नारियाँ पार्वती और सीता के समान पुरुषों की सहधर्मिणी बनकर उनको विजय दिलाने में समर्थ हों- वे भला पूज्यनीय क्यों न होंगी। वे-मनुस्मृति महाभारत रामायण और चाणक्य जैसे विचारकों के मन्तव्यों का चरितार्थ करने वाली स्त्रियों के इतिहास स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित हैं। याज्ञवल्क्य की सहधर्मिणी मैत्रेयी ने अपने पति के विरक्त होने पर स्वयं वैराग्य को स्वीकार किया। सती सावित्री ने युक्ति पूर्वक अपने पति सत्यभानु की यम से रक्षा की। अरुन्धती तथा अनुसुइया ने अपने ऋषि पति वशिष्ठ एवं अत्रि के साथ न केवल आश्रम वास किया अपितु अपनी साधना के द्वारा पतियों के ध्येय को धन्य किया। मण्डन मिश्र की पत्नी ने अपनी विद्वता के बल पर शास्त्रार्थ किए थे और शास्त्रार्थ, का निर्णय भी किया था।

वैदिक युग से महाभारत काल तक स्त्रियों की ये मान प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रही किन्तु महाभारत काल के उपरान्त अंधकार के काले मेघ धीरे-धीरे मँडराने लगे। महाराज शान्तनु की गंगा देवी पत्नी ने महाबली देवव्रत जैसे पुत्ररत्न को जन्म दिया, जो ब्रह्मचर्यव्रत की भीषण प्रतिज्ञा के कारण भीष्म पितामह कहलाया। गंगा देवी की मृत्यु के बाद पत्नी विहीन शान्तनु नदी किनारे एक केवल की कन्या सत्यवती को देखकर मुग्ध हो गए, किन्तु मन को नियन्त्रित करने के उपरान्त भी उदास रहने लगें। देवव्रत ने रहस्य ज्ञातकर उनका विवाह उस सत्यवती से सम्पन्न करा दिया और स्वयं आजीवन अविवाहित ब्रह्मचारी रहने का व्रत ले लिया। गुण कर्म स्वभाव की समानता के धरातल से हीन इस विवाह ने पीढ़ी दर पीढ़ी विनाश के बीज बो दिए, परिणामस्वरूप विकराल युद्ध में सर्वनाश होकर भारत का चक्रवर्ती राज्य विश्व में छिन्न-भिन्न हो गया। छिन्न भिन्न होकर भारत के भीतर छोटे छोटे राजे- महाराजे परस्पर लड़ने लगे, और भारत से बाहर की जातियाँ पृथक होकर भारत पर आक्रमण करने लगीं। भारत पहले यवनों का फिर अंग्रेजों का दास बन गया। वेद और वैदिक साहित्य नष्ट हो गया और हम अपने सही धर्म से भटक गए। उन्नीसवीं शताब्दी आते आते भारतीय सभ्यता और संस्कृति समाप्त प्राय हो गई।

हमारे पुरातन इतिहास में भाँति भाँति के परिवर्तन करके उसे विकृत कर दिया। मन्दिरों में पण्डे-पुजारियों की तूती बोलती थी। पाखण्ड और आडम्बर उच्च शिखर पर होने लगा था। मन्दिरों में देवदासियाँ रहने लगीं जिससे उनको घोर व्यभिचार का अड्डा बना दिया गया। इस प्रकार वाम मार्ग प्रकट हो गया। कालीतंत्रादि और महानिर्वाण तन्त्र में लिखा जाने लगा:-

— क्रमशः

"आर्यसमाज"

डॉ० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी
बरेली

निरूपम कर्म समन्वित संस्था,
वेद पन्थमय आर्यसमाज।

निगम पन्थगामी, संस्थापक,
देव दयानन्द विश्वललाम्।
ऐक्य, संगठन, धर्मभाव के
अमर प्रसारक और अभिराम् ।
उनके सैनिक दल का प्रतिपल,
विस्तारक है आर्यसमाज।
गुप्त चेतना को जागृत-कर,
किया सतत् आर्यत्व प्रसार।
पराधीनता दूर भगाने
करता रहा शक्ति-संचार।
पाखण्डों को दलने वाला
स्वस्तिपन्थमय आर्यसमाज।
हित प्रसारिणी प्रथमा संस्कृति,
जिसकी गुणगरिमा का गान।
किया प्रसारित जिसे विश्व में,
दर्शाया स्थान महान्।
निशि में वेदालोक संजोये,
मंगल पूरित आर्यसमाज।
नारी जीवन की महिमा-का,
जो शतमुख करता उच्चार।
धर्म कर्म में नर समान-जब,
नारी सब उन्नति आधार।
उसके अधिकारों का रक्षक
जग में केवल आर्यसमाज।
आर्य जाति की देख क्षीणता,
शुद्धि-चक्र से चालक वीर।
भय पूरित जिससे अनार्यजन,
रत्न सौंपता सागरक्षीर।
सत्यग्रहण को प्रेरित करता,
प्रणव, भद्रमय आर्यसमाज
वर्ण व्यवस्था कर्ममयी है,
जातिवाद अवनति का मूल।
शूलों में भी सुरभि संजोये,
विकसित है जिसके चहुँ-शूल।
धर्म और दर्शन व्याख्याता,
हित द्युतिमय प्रिय आर्यसमाज।
क्रान्ति समन्वित नवयुवकों का,
करता रहा सदा निर्माण।
दलितों और पीड़ितों का,
केवल जिससे है सम्भव त्राण।
भूल रहे क्यों आज भ्रान्त बन,
प्रहरी जागृत आर्यसमाज।

शिविर आर्यवीर दल सम्पन्न हुये

हाईस्कूल डोमा - 24,25,26 अक्टूबर89
हाईस्कूल हसिमऊ- 6,7,8 नवम्बर89
हाईस्कूल मुरीदपुर- 4 से 6 दिसम्बर89
हाईस्कूल रेहना- 7 से 10 दिसम्बर तक89
इण्टरकालेज नानापुर - 23 से 25 जनवरी 90

उक्त शिवरों में 1042 आर्यवीरों एवं 210 वीरांगनाओं ने भाग लिया।

गयाप्रसाद शास्त्री
अधिष्ठाता
आर्यवीर दल-कानपुर
(देहात)

नया वर्ष

नया वर्ष ।
जीवन में चहुँ ओर
लाये हर्ष ।
सुरभित हो सुरभि से -
सुख की, समृद्धि की
जीवन का हर कोना।
पायें बुलन्दियों को।
संघर्षों जीवन की
पार कर चुनौतियों को ।
बाट जोहता खड़ा हो
पहुँचे जिस राह पर भी
परिचरवत् आ वर्ष।
नवोत्कर्ष ।

स्वामी नाथू शर्मा
जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी
शाहजहाँपुर

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस

अमरोहा के दयानन्द बाल मन्दिर की ओर से महर्षि दयानन्द जन्म दिवस 12 फरवरी 90 को उत्साहपूर्वक मनाया गया जिसमें अध्यापिकाओं छात्र-छात्राओं ने महर्षि के विषय में गुणगान किया। भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। प्रधानाचार्या जी ने अभिभावकों को धन्यवाद किया।

हरिद्वार भगवानदास महाविद्यालय के विशाल लायब्रेरी रूम में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जिला हरिद्वार शाखा द्वारा आयोजित हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में आरक्षण वर्तमान में युक्तियुक्त है सिद्ध करके आर्यमित्र संवाददाता तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्र ब्र0 यतीन्द्र कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा विपक्ष वक्ता के रूप में महाविद्यालय के ही ब्र0 रामावतार पाण्डेय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

- अर्जुन सिंह चावला ।

हकीकतराय बलिदान-समारोह

देहरादून, जनपद में बसन्तोत्सव तथा धर्मवीर हकीकतराय बलिदान-समारोह का आयोजन आर्य उप प्रतिनिधि सभा, देहरादून के तत्वावधान में नगर के विभिन्न मोहल्लों तथा निकटस्थ ग्रामों में आर्यसमाज देहरादून के सहयोग से किया गया जो दो सप्ताहतक चला। इस आयोजन के संयोजक जिला उपसभा के उपप्रधान एवं स्वतन्त्रता-सेनानी मास्टर दलीप सिंह रहे। पुरुषोत्तमदास-टण्डन मार्ग, आर्यसमाज मन्दिर, (धामांवाला) दीप लोक, डी0एल0 रोड, गाँव नालापानी, गाँव अजबपुर कलां, महेन्द्र विहार, चुक्खूवाला मोहल्ला, गाँव कौलागढ़ आदि में सभाएँ आयोजित की गईं तथा असहाय लोगों को कम्बल वितरित किए गए। कार्यक्रम सफल रहा।

स्वास्थ्य-सुधा

आरोग्य दर्पण

दो डाक लिफाफे आने पर, रोगी को घर बैठे पत्रोत्तर मिलता है:-

समस्या:- "कूल्हा की चक्की घूमती नहीं है। घुटना भी नहीं मुड़ता है, कुछ पतला हो गया है। दाहिना कूल्हा पर एक बार सुई लिया था। तभी से कुछ सुन्नता का आभास होता है। मेरी जन्मतिथि 5 दिसम्बर "1961 है।"

-सरोजकुमार ओझा, ग्राम-करजा, डाकघर-उमरावगंज (भोजपुर) बिहार।

समाधान: - प्रातराश के बाद मनॉल (चरक) दो चम्मच दूध में मिला कर पियें। आर0कम्पाउण्ड (अलारसिन आयुर्वेदिक) दो गोली प्रत्येक भोजन बाद पानी से लिया करें। सरसों तैल से या सूखी मालिश करने के बाद स्नान किया करें। दो मास बाद पुनः पत्राचार करें।

समस्या- "पेट में कभी-कभी दर्द और हाइपरएसिडिटी से परेशानी होती है। दूध पीने से पेट की जलन शान्त हो जाती है।"

-सतीशचन्द्र गुप्त, लालाबाजार-अल्मोड़ा।

समाधान- दूध पिया करें। भोजन में अदरक-लाल मिर्च-गरममसाले आदि का सेवन न करें। सप्ताह में एक समय भरपेट पपीता खायें। अल्सारेक्स की दो गोली प्रातराश, मध्याह्न भोजन व रात्रि भोजन बाद लेकर लीवोगिन सीरप दो ढक्कन समानजल के साथ पिया करें। दो मास तक उपचार करें।

- स्वामी गुरुकुलानंद सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ़, उ0प्र0

आर्यसमाज चौक, प्रयाग। 114वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज चौक, प्रयाग का 114वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 8 फरवरी से 11 फरवरी तक स्वरूपरानी पार्क, जीरोरोड में बड़े धूमधाम से मनाया गया। 8 फरवरी को अपराह्न 3 बजे विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

अम्बाला कैन्ट में बोधपर्व

वैदिक प्रचार मंडल के अन्तर्गत मंडल को प्राप्त दान वाले प्लाट पर ऋषिबोध पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

विनम्र अनुरोध

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों/जिला-उपसभाओं को सूचित किया जाता है कि वे अपना वार्षिक निर्वाचन (आर्यसमाजें जिला उपसभाओं द्वारा तथा जिला उपसभाएं सभा के मान्य अधिकारी द्वारा) प्रमाणित कराके ही प्रकाशनार्थ आर्यमित्र में भेजें।

प्रबन्ध सम्पादक।

लेखराम की पुण्यतिथि मनाई गयी

लखनऊ, सोमवार। आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ ने आर्य समाज के महान प्रचारक आर्य पथिक पंडित लेखराम की पुण्यतिथि को "शहीद दिवस" के रूप में मनाया।

सभा भवन में आयोजित समारोह में वक्ताओं ने राष्ट्र और समाज की उन्नति के लिए उनके बताये हुए रास्ते पर चलने का संकल्प किया।

आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि पंडित लेखराम आजीवन भाषण और लेखन में व्यस्त रहे, और आर्यों को इन दोनो माध्यमों से आर्य समाज के प्रचार का सन्देश दिया उन्होंने अनेकों परिवारों को विधर्मी होने से अपने प्राणों की बाजी लगाकर बचाया।

इस अवसर पर अपने सन्देश में उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री मनमोहन तिवारी ने समस्त आर्यजनों का आवाहन किया कि वह आर्य समाज में पढ़ने-पढ़ाने सुनने-सुनाने, लिखने का काम निर्बाध गति से करेंगे।

उ.प्र. विधान परिषद के सभापति श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित दिवंगत

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के उपाध्यक्ष भारतीय लोकसभा एवं राज्यसभा के पूर्व सांसद एवं प्रदेश के भू0पूर्व श्रममन्त्री तथा उ0प्र0 विधान परिषद के वर्तमान सभापति श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित का 7 मार्च को दिन में एक बजे श्वासनलिका में अवरोध हो जाने के कारण बलरामपुर अस्पताल लखनऊ में अचानक स्वर्गवास हो गया।

श्री दीक्षित जी प्रदेश के जाने-माने श्रमिक नेता थे। उनका सारा जीवन मजदूरों और गरीबों की सेवा में समर्पित रहा। वे ऋषिदयानन्द के अनन्यभक्त एवं कर्मठ समाजसेवी थे। उन्होंने उ0प्र0 विधान परिषद का विगत लगभग 100 वर्षों का इतिहास अपनी लेखनी से सृजित किया। आर्यसमाज के कार्यों में उनकी गहन आस्था थी। आर्यमित्र में उनके सुविचार प्रायः प्रकाशित होते रहते थे।

उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ तथा पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके निधन को आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति बताते हुए प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना की है।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज हाथरस की सभा आर्यसमाज के कर्मठ सदस्य श्री पं0चम्पाराम आर्य के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। उनकी आर्यसमाज के प्रति की गई जीवन पर्यन्त सेवाओं का स्मरण करते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करे। सभा मंत्रीजी ने भी परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना की है।

आर्यसमाज गर्वां ने एक प्रस्ताव द्वारा श्री मुंशी राम "सोम" के निधन पर शोक व्यक्त करता है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति दे तथा शोकाकुल परिवार को, धैर्य्य तथा शान्ति प्रदान करे।

शोक-समाचार

जरवल टाउन (गोण्डा) निवासी श्री बालकराम आर्य का देहावसान दिनांक 10 फरवरी 90 को हो गया वे आर्यसमाज जरवल के मंत्री थे, हजारों लोगों ने अन्त्येष्टि में भाग लिया तथा परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सदगति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

नव संवत्सरोत्सव चैत्र सुदी प्रतिपदा

रघुवीर शरण विश्वसेवक
नारायण टोला, बहजोई

ओ३म् संवत्सरोऽसि ------ ध्रुवःसीद।।
यजु0 अ0 27 मन्त्र 45

हे विद्वान पुरुष। तू संवत्सर के तुल्य नियम में वर्त्तमान है-- तू उस उत्तम गुणयुक्त समय रूप देवता के साथ सुत्रात्मा प्राणवायु के समान कर्त्तव्य में सुदृढ़ हो।

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।
ऋ0 म0 10 सू0 19 मन्त्र 2

अन्तरिक्षस्थ समुद्र के प्रकट होने के पश्चात् विश्व के वशीकर्ता विश्वेश्वर ने अहोरात्रों को करते हुए संवत्सर को जन्म दिया।

सास्मिन्पूर्णमासीति
वृत्ति-प्रथमासमर्थात्पौर्णमासी विशेष वाचिनः शब्दात् अस्मिन्निति सप्तम्यर्थे यथाविहितः प्रत्ययों भवति। अष्टाध्यायी व्याकरण

पौर्णमासी विशेष वाची शब्द से सप्तम्यर्थ में यथा विहित प्रत्यय हो।
यथा चित्रा नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी चैत्री, सा चैत्री पौर्णमासी "यस्मिन्ऽस चैत्रो मासः। अर्थात् जिस पौर्णमासी को चित्रा नक्षत्र हो वह चैत्र मास होगा।
उपर्युक्त विवेचनानुसार ही यह इतिहास बन गया कि सृष्टि का आरम्भ चैत्र के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा को हुआ था, क्यों कि सृष्टि का प्रथम मास वैदिक संज्ञानानुसार मधु कहलाता था जो ज्योतिष में चान्द्र काल गणनानुसार चैत्र कहलाने लगा।

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा,संसर्ज प्रथमऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।
हिमाद्रि ग्रन्थ

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथमदिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की।
इसी आधार पर ब्राह्म दिन, सृष्टि सम्वत् वैव-स्वतादि मन्वन्तरारम्भ, सतयुगादि युगारम्भ कलि सम्वत् वैक्रम संवत् चैत्र सुदी प्रतिपदा को ही आरम्भ होता है।

आर्य जन आदि सृष्टि से ही नवसंवत्सर का पर्व धूमधाम से मनाते रहे हैं। मुगल सम्राट औरंगजेब ने अपने ज्येष्ठ पुत्र मोअज्जम को लिखा था-
नौरोज--- विक्रमाजीत---तारीख ए-हिन्दु।

यह दिन हिन्दुओं के विश्वासानुसार विक्रमाजीत की राज्याभिषेक तिथि है और भारतवर्ष का नव संवत्सरारम्भ दिवस है।
चान्द्र संवत्सरारम्भ चैत्री शुक्ल प्रतिपदा को और संवत्सरारम्भ मेष संक्रान्ति के दिन होता है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के स्थापनार्थ इस उत्सव में भाग लेना प्रत्येक भारतीय नागरिक का पवित्र कर्तव्य है।

आर्यसमाज बैंकोक (थाइलैण्ड)

प्रधान	-	श्री रामपलट पाण्डेयजी
उपप्रधान	-	श्री प्रसिद्ध नारायण तिवारी
मन्त्री	-	श्री लालबहादुर सिंहजी
उपमन्त्री	-	श्री जगदम्बिका शाही
पुस्तकाध्यक्ष	-	श्री वीरबहादुर चन्दजी
कोषाध्यक्ष	-	श्री नरसिंह शाही

पब्लिक स्कूल

("प्रणव" शास्त्री एम0ए0 शास्त्रीसदन, रामनगर कटरा, आगरा-6)

यह पब्लिक स्कूल है
पब्लिक का तो नाम काम तो पूंजीपति का मूल है ।। ।।

प्रबन्ध कारिणी समिति नहीं है पूरा मैनिजमैण्ट है
धोती कुर्ता और पजामा नहीं शर्ट पर पैण्ट है
साधु सन्त का नाम मिटाया यहाँ सैण्ट परसैण्ट·है
यहाँ न गंगा जमुना धारा टेम्स नदी का कुल·है।।2।।

हिन्दी संस्कृत और मातृ भाषा का काम नहीं है
अपनी संस्कृति और सभ्यता का भी नाम नहीं है
नम्र नमस्ते, नमस्कार या प्यार प्रणाम नहीं है
गुड मार्निंग, लव,वेस्टर्न-कलचर के अनुकूल है।।3।।

शिखा सूत्र का सफाचट्ट है, गले लटकती टाई
यहाँ गुरु जी के सर में तो सर ने लात जमाई
मम्मी, सिस्टर, डैडी-मेडम, और आंटी छाई
माता, बापू, बहिन, श्रीमती, चाची ऊल-जलूल·है।।4।।

अन्तःस्थल में घुसा हुआ है, वही लार्ड मैकाले
काली चमड़ी वालों को जो अंग्रेजी में ढाले
सन्ध्या, पूजा-पाठ, हवन में प्रीति न रखने वाले
अंग्रेजी गायन में प्रेयर करना ही अनुकूल है।।5।।

यहाँ विटामिन अण्डे में या आमलेट में लेटा
दूध, दही, सब्जी का खाना काम बड़ा है हेटा
केक ब्रेड बिसकुट डबल में होवे बटर लपेटा
ब्रेक फास्ट या डिनर खड़े हो खाना ही माकूल·है।।6।।

वेद व्यास तज महाभारत को राडर बाँच रहे हैं
दयानन्द के नाम काम पर नंगे नाच रहे हैं
रोल्ड गोल्ड को सचमुच सोना कह कर बेच रहे·हैं
"विश्वमार्यम् कृण्वन्तः" की आशा के प्रतिकूल·है।।7।।

रत्न-राशि में खेल सिंह की गर्जन भी है,ढोली-
विजयपाल ने द्वारपाल को भंगभून से पीली
यहाँ डाक्टर ने रोगी की स्वयं दवाई पीली
कुएँ में ही भंग पड़ी तो किसको चुभता शूल है।।8।।

होली का हुरदंग कर रहे हम तो आज ठिठोली
दयानन्द की दिव्य दिशा को मिलकर मारो गोली
मस्त मौज की छान शान से सभी मनाओ होली
"प्रणव" आज ही करना करलो कल पर डालो·धूल·है
।।9।।

आर्य वीर दल विचार गोष्ठी

१४ व १५ अप्रैल १९९०

पूर्वी उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल की ओर से दिनांक 14 व 15 अप्रैल 90 को दयानन्द जुब्बाई स्कूल शास्त्रीनगर सुलतानपुर में आर्य नवयुवकों में जागृति व नवीन चेतना लाने और समस्याओं के समाधान हेतु सामूहिक विचार विमर्श तथा नवीन भावी योजनाओं को तीव्र गति देने हेतु "पूर्वांचल आर्य वीर दल कार्यकर्त्ता विचार गोष्ठी" का आयोजन किया गया है। उक्त विचार गोष्ठी में पं0 बाल दिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सभा आर्य वीर दल नई दिल्ली, पं0इन्द्रराज जी प्रधान व श्री मनमोहन तिवारी जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 तथा आर्य वीरदल उ0प्र0 के सभी अधिकारी व कार्यकर्ता गण भाग ले रहे हैं जिसमें हम सबको उनके साथ विचारों के आदान प्रदान का अवसर तथा मार्ग दर्शन भी प्राप्त हो।

अतः पूर्वांचल के समस्त जिले के आर्य वीरदल व जिला आर्य उपसभा के मंत्री,प्रधान,अधिकारी व कार्यकर्तागणों से अनुरोध है कि उक्त विचार गोष्ठी में पधारकर लाभान्वित हों तथा आर्यवीर दल के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा निश्चित करें।

-बेचन सिंह, संयोजक

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि श्री महावीर जी शास्त्री गाजीपुर उपदेशक सभा को दिनांक 30 जून89 से तथा श्री खेमचन्द जी भजनोपदेशक सभा लखनऊ को दि0 31 दिसम्बर 89 से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपनी सेवाओं से पृथक कर दिया है।

अतः प्रदेश की आर्य समाजें उन्हें किसी प्रकार का धन न दें।

मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा,उ0प्र0

महाविद्यालय ज्वालापुर का उत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का वार्षिक महोत्सव 11 अप्रैल से 13 अप्रैल 1990 तक कुलभूमि में धूमधाम से मनाने का निश्चय किया या है। इस अवसर पर वेद,आयुर्वेद, शिक्षा,आर्य आदि सम्मेलनों के साथ साथ गुरुकुलीय ब्रह्मचारियों का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन तथा भव्य कविसम्मेलन भी आयोजित किया गया है। महोत्सव का विशेष आकर्षण "दीक्षान्त समारोह" होगा। इस अवसर पर नवस्नातकों को उपाधियों से विभूषित किया जायेगा।

माँ की पुकार

• जगदीश प्रसाद वैदिक
अध्यक्ष अ॰ भा॰ अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन

मेरे देश के नौ निहालों तुम्हारी जैसी छोटी-छोटी उम्र के नौ निहालों ने मुझे अंग्रेजों की गुलामी से स्वतन्त्र कराने के लिये जेल की घोर यातनाऐं सहन करते हुए हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चमते हुए प्राणों की आहुती देकर मुझे स्वतन्त्र करा दिया।

इन सपूत बलिदानियों ने संसार के इतिहास में अपना और जन्म देने वाले माता-पिता का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखवा दिया। उन सपूतों के बलिदान से उनकी और तुम्हारी भूमि भारत माता गौरवान्वित हो गई। संसार में मेरा मस्तक हिमालय के समान ऊँचा हो गया। मैं तुम्हारी भारत माता गौरव के साथ सिर उठाकर कहती हूँ कि मेरे सपूत नौ निहालो ने अपना बलिदान देकर भारत माता को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करा दया।

लेकिन मेरे नौ निहालों 42 वर्ष की स्वतन्त्रता के पश्चात् अभी भी मेरी भाषा हिन्दी और मेरी बहनें सस्कृत, मराठी, बगला, पंजाबी, सिंधी, काश्मीरी, गुजराती, उडिया, असमिया, उर्दू, कन्नड, तेलगु, तमिल मलयालम उस शोषण करने वाली, वर्ग भेद पैदा करने वाली, सामंतवाद को बनाये रखने वाली विदेशी भाषा अंग्रेजी की गुलाम है।

मेरी भाषा हिन्दी और उसकी समस्त बहने इस गुलामी के जीवन सेदुखो रोकर रोजाना आँसू बहाती रहती है। और राज नेताओं के सामने दीन-हीन बनकर गिडगिडानी रहती है कि मेरे नौ निहालों को अपनी राष्ट्र भाषा व मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं देकर उनकी उन्नति को रोक रखा है। और उन बालकों पर जबरदस्ती अंग्रेजी लाद रखी है।

इसलिये मेरी भाषा को अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त कराने के लिए तुम्हारे बलिदान की आवश्यकता है।

रणभेरी बज उठी है

स्वतन्त्रता के अमर सेनानी लोकमान्य गगाधरजी तिलक की पण्यतिथि के दिन राजबाडा जनता चौक इन्दौर मे अंग्रेजी का पुतला जलाकर उस विदेशी भाषा गुलामी की निशानी अंग्रेजी को भगाने के लिए आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया है।

अत मेरे सपूतो छात्र-छात्राओ मैं रुदन करते हुए तुम्हारे से पुकार करनी हूँ कि तुम्हारी राष्ट्रभाषा व मातृभाषा को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने की प्रतिज्ञा करो।

अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन समस्त छात्र-छात्राओ को आह्वान करता है कि अविलम्ब अंग्रेजी हटाने के लिए बलिदान के लिए तैयार हो जाओ।

(1) अपनी मातृभाषा को अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त कराओ।
(2) अंग्रेजों को भगाया, अंग्रेजी को भगाओ।
(3) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
(4) अंग्रेजी हटाओ, देश बचाओ।
(5) अपना देश अपनी भाषा। □

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन०पी० ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

चैत्र कृष्ण १३, संवत २०४६ वि
दिनांक २५ मार्च १९९०

दूरभाष. २४५६६३

सेवा में. श्रीमान पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार 1-7

नगर आर्य समाज, लखनऊ

प्रधान- कुँवर शान्ति प्रकाश एडवोकेट
महामंत्री-अशोक कुमार निगम एडवोकेट
मंत्री-रेवती रमन रस्तोगी एडवोकेट
कोषाध्यक्ष-जगत नरायन जी सक्सेना

आर्य समाज-सेजुरी (बलिया)

प्रधान-श्री रामायण प्रसाद
मंत्री-श्री रामप्रसाद

आर्य समाज दौलताबाद मझपुर (फर्रुखाबाद)

प्रधान- श्री दयानन्द आर्य
मंत्री- श्री रमेशचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री राधाकृष्ण आर्य

आर्य समाज मनियर (बलिया)

प्रधान-श्री अवध बिहारी पाण्डेय
मंत्री- श्री कुंजबिहारी लाल
कोषाध्यक्ष-श्री भृगुनाथ प्रसाद

आर्य समाज मथुरा
अध्यक्ष-मेजर डॉ धर्मेन्द्र नाथ सक्सेना

मंत्री-डॉ0 ब्रह्मानन्द शर्मा
कोषाध्यक्ष-श्री बलराम अग्रवाल

आर्य समाज-कालपी

प्रधान-श्री ओंकार नाथ आर्य
मंत्री- श्री श्रीप्रकाश जैतली
कोषाध्यक्ष-श्री ज्ञानेन्द्र कुमार आर्य

वेद प्रचार मंडल, अम्बाला कैंट

संरक्षक प0 देवदत्त शर्मा
प्रधान- श्री सोमदत्त आर्य
मंत्री- वेदमित्र हापुड़ वाले
कोषाध्यक्ष-श्री कृष्ण कुमार

आर्य समाज लालापार, सहारनपुर

प्रधान-वी0वी0 गौतम
मंत्री- विद्या सागर
कोषाध्यक्ष-राधे श्याम गुप्ता

सभा का वर्ष

1- उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं जिला सभाओं के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि अब भविष्य में सभा का वर्ष 31 मार्च को समाप्त हुआ करेगा। अतः आर्यसमाजें एवं जिला सभायें भी अपना वर्ष सभा के वर्ष के साथ साथ समाप्त करें।

2- आर्यसमाजें एवं जिला सभायें अपने सर्वसभासदों की सूची बनाकर 31 मई 1990 तक अपना वार्षिक निर्वाचन अवश्य कर लें, यदि किसी कारणवश न कर सकें, तो कारण सूचित करते हुए सभा से आज्ञा प्राप्त करके ही निर्वाचन सम्पन्न करें।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवान्दीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं. २२४१/५७) चैत्र शुक्ल-६ रविवार-संवत् २०४७ वि., दिनांक, १ अप्रैल १९९० (घोषणा पत्र सं ७/२२-२-८५)



हे राष्ट्रमाता

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो,
यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।

गम्भीर सागर सिन्धु सब,
गोदी में तेरी खेलते,
हैं कृषक सुन्दर अन्न से,
जन जनम जौहर हेरते।
. . . .
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं
लोकं न कृणोतु ।।

त्रयकाल सबकी रक्षिका,
विख्यात अरूशुभगुणप्रदा,
हे मातु मेरे राष्ट्र को
विस्तारमय कर दो सदा।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य ___ रू. २५१/-
वार्षिक ___ रू. 30/-
एक प्रति ___ १रू. मात्र
विदेश में ___ १५ पौंड

प्रकाशन का ६३ वाँ वर्ष
अंक १२

अंग्रेजी विदेशी दासता की प्रतीक है
— महात्मा गांधी

राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन द्वारा-"अंग्रेजी हटाओ" आन्दोलन-प्रारम्भ करने का ऐतिहासिक निर्णय।

स्वाधीनता के चार दशक बीत जाने के बाद भी भारतीय प्रशासन तथा नौकरशाही में आकण्ठ लिप्त एक वर्ग द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी की निरन्तर उपेक्षा और अंग्रेजी के व्यामोह ने भारतीय जनमानस को क्षुब्ध कर दिया है। आज भारत में भारतीयता शनैः शनैः विलुप्त होती दिखाई दे रही है। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज जो सदैव भारतीय संस्कृति का प्रहरी रहा है — कैसे इसे सहन कर सकता है। इन्हीं सब परिस्थितियों पर विचार करते हुए **राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन** बोर्ड की परीक्षाओं के बाद आगामी जुलाई से प्रदेश व्यापी **"अंग्रेजी हटाओ" आन्दोलन** छेड़ेगा। इस आन्दोलन के अन्तर्गत जुलूस, स्कूल-कालेजों की कक्षाओं का बहिष्कार, रास्ता जाम, प्रदेश व्यापी बन्द, धरना तथा भूख-हड़ताल और जेल भरो कार्यक्रम पर व्यापक रूप से अमल किया जायेगा। इस आन्दोलन को देश के दूसरे प्रान्तों में भी करने हेतु कार्यक्रम संयुक्त रूप से बनाए जा रहे हैं। इस आन्दोलन को तब तक जारी रखा जाएगा जब तक निम्नलिखित मांगे नहीं मान ली जातीं।

१- सभी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में हिन्दी भाषा के माध्यम से पढ़ाई हो।
२- प्रत्येक सरकारी आदेश तथा काम-काज हिन्दी में हो।
३- प्रत्येक वाहन का क्रम संख्या हिन्दी में लिखना अनिवार्य कर दिया जाय।
४- लोक सेवा आयोग तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं को हिन्दी माध्यम से किया जाय।
५- प्रत्येक शिक्षण संस्था में अंग्रेजी केवल ऐच्छिक विषय हो।
६- हिन्दी की उपेक्षा करने वाले अधिकारियों को दंडित किया जाय।
७- संख्या बताने हेतु हिन्दी अंकों का प्रयोग किया जाय।

इन्द्रराज	मनमोहन तिवारी	जयन्त कुमार पाण्डेय
प्रधान	मन्त्री	महामन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा	आर्य प्रतिनिधिसभा	राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।	उत्तर प्रदेश, लखनऊ।	उ0प्र0 ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ चैत्र शुक्ल-६, संवत् २०४७ वि.
१ अप्रैल १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

धारा ३७० समाप्त की जाय

कश्मीर की मौजूदा भयावह स्थिति के लिए केन्द्र तथा कश्मीर में सत्तारूढ़ पूर्व सरकारों की तुष्टीकरण की नीति ही मुख्यतः जिम्मेवार है। सन्तहृदय राजनीतिज्ञ श्री पं० जवाहरलाल नेहरू के अदूरदर्शिता से भरे हुए युद्धविराम के निर्णय के कारण हमारे कश्मीर के एक बहुत बड़े भूभाग पर पाकिस्तान ने अनधिकृत कब्जा कर रखा है। पाकिस्तानी अधिकृत क्षेत्र में रहने वाले कश्मीरी और कश्मीर घाटी में रहने वाले कश्मीरी रूपरंग तथा भाषा में एक जैसे होने के कारण बड़े सुनियोजित ढंग से उधर से इधर और इधर से उधर आते जाते रहे हैं। अधिकृत कश्मीर के कश्मीरी बहुत बड़ी संख्या में कश्मीर घाटी में आकर बस गये हैं। उधर अधिकृत कश्मीर के कश्मीरियों को पाकिस्तान ने जो भरकर भारत विरोधी बना दिया है। उन्हें ट्रेनिंग देकर हथियारों के जखीरे के साथ बड़े आराम से कश्मीर घाटी में बसे हुए कश्मीरी परिवारों में घुला मिला दिया है। इन 42 वर्षों में किस कश्मीरी का जन्म घाटी में हुआ है अथवा पाकिस्तानी अधिकृत क्षेत्र में- यह पता चलाना बहुत मुश्किल है। यह भी सम्भव प्रतीत होता है कि घाटी के कश्मीरियों का बहुत बड़ा प्रतिशत पाकिस्तानी अधिकृत क्षेत्र के कश्मीरियों से बदल लिया गया हो।

दुर्भाग्य से भारतीय नेतृत्व की मानसिकता अब तक यही रही है कि मुसल्मानों की आर्थिक समस्याओं के प्रति सरकार की उदासीनता के कारण ही कश्मीर के लोग असन्तुष्ट हैं और आन्दोलनरत हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए शासन की ओर से कश्मीरियों के आर्थिक उत्थान आदि की अनेकों योजनाएं बनाई गई और भारत की गरीब जनता की गाढ़ी कमाई उनकी सेवा शुश्रूषा में प्रस्तुत की जाती रही। हमने संविधान में 370 धारा जोड़कर कश्मीर को विशेष अधिकार प्रदान किया। न वहाँ कोई भारतीय जाकर स्थायीरूप से बस सकता है और न वहाँ जमीन-जायदाद खरीद सकता है। यह उनके हितों की सुरक्षा की दृष्टि से तथा उनके आर्थिक उत्थान को ध्यान में रखकर किया गया था। किन्तु अब स्थिति यह है कि घाटी में हिन्दुओं का समूलनाश करने हेतु सुनियोजित ढंग से कार्यवाही चल रही है। लगभग 19 हजार हिन्दू तथा सिख घाटी से भागकर जम्मू के शरणार्थी कैम्पों में विस्थापित बने पड़े हैं। लखनऊ, दिल्ली, कानपुर में आये हुए कश्मीरी परिवार अलग हैं। इस प्रकार यदि आकलन किया जाये तो घाटी हिन्दूविहीन होती जा रही है। वहाँ से हिन्दुओं को बोरिया-बिस्तर समेटकर भाग जाने के लिए कहा जा रहा है उनके घरों पर के०एल०एफ० के चिन्ह लगाकर आतंकवादियों को उन पर हमला करने का इशारा कर दिया गया है।

दूसरी ओर शासन सातसूत्रीय कार्यक्रम को लागूकर यह समझता है कि कश्मीरियों को आर्थिक दृष्टि से टाटा बिड़ला बनाकर सम्भवतः उन्हें भारत की मुख्य राष्ट्रीयधारा में जोड़ा रखा जा सकता है। परन्तु यह विचार सर्वथा भ्रामक है। जिन्होंने मुस्लिम इतिहास का गहराई से अध्ययन किया है वे यह जानते हैं कि मुस्लिम मानसिकता केवल क़ुरआन में लिखी आज्ञाओं से प्रभावित होती है जहाँ बुतपरस्त "काफ़िर" को समूलनष्ट करके ही सच्चे मुसलमान का फ़तवा दिया गया है। एक दो नहीं, बीसियों ऐसी आयतें हैं जिनमें काफ़िरों को अत्यधिक हेय, घृणास्पद, अविश्वसनीय एवं मौत के घाट उतार देने के योग्य माना गया है। मुसल्मान जब इस पुस्तक को पढ़ता है और धर्म के नाम पर इन आज्ञाओं के अनुसार अपना कर्त्तव्य निर्धारित करता है तो फिर आप उसे कितना ही आर्थिक दृष्टि से उठाइए, खुशामद कीजिए, भाईचारा जताइए, वह अपना विश्वास वही रखेगा जो क़ुरआन में लिखा हुआ है। कुछ मुसल्मान राष्ट्रीय विचारधारा के अवश्य हैं और इस भावना के अपवाद भी हैं परन्तु उनकी संख्या नगण्यवत् है।

उ०प्र० विधान परिषद् में परिषद के सदस्य श्री बलराज मिश्र ने, पिछले सप्ताह, कार्यस्थगन प्रस्ताव की सूचना देते हुए बताया कि पाकपरस्तों आतंकवादियों के जुल्मों से सर्वथा भयभीत, असुरक्षित एवं आतंकित कश्मीरघाटी के हिन्दू व सिख बड़ी संख्या में देश के विभिन्न भागों में आश्रय की तलाश में भागे चले आ रहे हैं। उ०प्र० के मेरठ, मुरादाबाद, कानपुर, वाराणसी, लखनऊ में बड़ी संख्या में विस्थापित परिवार आये हुए हैं। कश्मीर घाटी के इन विस्थापितों की दयनीय दशा देखकर भारत का जनमानस द्रवित है। कैसा दुर्भाग्य है हमारे देश में हमारे ही देश का नागरिक शरणार्थी बना हुआ आश्रय की तलाश में इधर-उधर भटक रहा है।

श्री राजीव गाँधी कहते हैं कश्मीर के इस खराब माहौल की जिम्मेदारी वर्तमान शासन की है। वर्तमान सरकार कहती है पूर्व सरकार ने हालात बिगाड़े हैं। मगर कश्मीर से भागकर आ रहे विस्थापित क्या कहते हैं- यह कोई नहीं सुनना चाहता। जो धारा 370 कश्मीरियों की धनसम्पत्ति और हितों की सुरक्षा के लिए लगाई गई थी वही आज हमारे गले की फाँस बन गई है। जो चल अचल सम्पत्ति कश्मीर घाटी में हिन्दू सिख छोड़कर आ रहे हैं वह कोई भारतीय हिन्दू सिख (गैरकश्मीरी) खरीद नहीं सकता तो प्रश्न यह है यह सम्पत्ति आखिर किसके हाथों पहुँचेगी।

ऐसी स्थिति में धारा 370 के लगे रहने का कोई औचित्य नहीं है। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। वह सम्पूर्ण राष्ट्र की निधि है। जो भारतीय होकर भारत से कश्मीर को अलग कराना चाहता है वह राष्ट्रद्रोही है। उसे इस देश में रहने का कोई अधिकार नहीं है। जनमत यदि लेना है तो यह जनमत पूरे राष्ट्र का लेना होगा क्योंकि कश्मीर केवल कश्मीरियों का नहीं है वह समस्त राष्ट्र का है। इसलिए इस समस्या को धर्म के आधार पर सुलझाने का कोई प्रश्न ही नहीं है। यदि धार्मिक आधार पर समस्याओं का समाधान होने लगा तब तो इस देश में लगभग 15/20 धर्म और मत वाले लोग रहते हैं। सभी की बात मानी जाये तब तो भारत भारत ही नहीं रहेगा इसके बीस टुकड़े करने होंगे। भारतीयता नाम की संस्कृति और सभ्यता अतीत के इतिहास के पन्नों की चीज़ बनकर रह जायेगी।

अतः धारा 370 समाप्त करके पाकिस्तान द्वारा अवैधानिक तरीके से कब्जे में लिए हुए कश्मीर के हिस्से को वापस लीजिए। यही समस्या है आदि से अन्त तक।

— इन्द्रराज
सभा प्रधान

विनम्र निवेदन

चैत्र प्रतिपदा। संवत् 2047 तदनुसार 27 मार्च 1990 से भारतीय नवसंवत्सर प्रारम्भ हो गया है। यह आर्यसमाज का स्थापना दिवस भी है। हमारी समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि इस दिवस को सुविधानुसार किसी भी दिन अन्य पर्वों की भान्ति हर्षोल्लास के साथ मनाये। अपने दैनिक व्यवहार, पत्राचार, आमन्त्रण-पत्र तथा अन्य सभी लिखित-मौखिक व्यवहारों में नवसंवत्सर तथा भारतीय तिथियों का ही प्रयोग करें। नव वर्ष के बधाई पत्रों का परस्पर इन्हीं भारतीय तिथियों का विवरण देकर आदान-प्रदान करें।

हमारा विश्वास है इस प्रकार के प्रचलन से भारतीयता का प्रचार होगा और भारतीय संस्कृति की ओर लोगों की अभिरुचि जागृत होगी।

इन्द्रराज
सभा प्रधान

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

विनम्र अनुरोध

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों/जिला-उपसभाओं को सूचित किया जाता है कि वे अपना वार्षिक निर्वाचन (आर्यसमाजें जिला उपसभाओं द्वारा तथा जिला उपसभाएं सभा के मान्य अधिकारी द्वारा) प्रमाणित कराके ही प्रकाशनार्थ आर्यमित्र में भेजें।

प्रबन्ध सम्पादक।

संस्कृत-शिक्षा और संस्कृति को चुनौती तथा समकालीन दयानन्द

— डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री
एम० ए०, पी-एच० डी०

प्राध्यापक- स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
रणवीर रणञ्जयमहाविद्यालय अमेठी
- 227405 (उ0प्र0)

' गतांक से आगे.....

"इससे यह मेरा विज्ञापन है आर्यावर्त्त देश का राजा इंगरेज बहादुर से, कि संस्कृत विद्या की ऋषि मुनियों की रीति से प्रवृत्ति कराये। इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख लाभ होगा। और जितने आर्यावर्त्तवासी सज्जन लोग हैं, उनसे भी मेरा यही कहना है कि इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें। जो यह संस्कृत विद्या लोप हो जाएगी, तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी इसमें कोई सन्देह नहीं।"

स्वामी जी विज्ञापन प्रसारित करके ही सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने अपने जीवनकाल में काशी, फर्रुखाबाद, मिर्जापुर, छलेसर आदि स्थानों पर संस्कृत पाठशालाएँ खोलीं। संस्कृत पठन-पाठन के लिए 14 भागों में "वेदांग प्रकाश" प्रकाशित किया। सन्धि, नामक, आख्यानिक, संस्कृत वाक्य प्रबोध जैसे महत्वपूर्ण संस्कृत शिक्षण के ग्रन्थ स्वामी जी ने लिखे जो बहुत ही प्रसिद्ध और प्रचलित हुए। आर्यभाषा (हिन्दी) के माध्यम से संस्कृत-प्रचार-प्रसार और संस्कृत शिक्षा का बहुविध विस्तार का श्रेय स्वामी जी को प्राप्त है। स्वामी जी ने संस्कृत शिक्षण और वेदाध्ययन की पूरी योजना भारतीयों के सामने रखी और इसका विस्तृत और सम्पूर्ण पाठ्यक्रम "सत्यार्थ प्रकाश" और "संस्कारविधि" जैसे ख्यातनामा ग्रन्थों में प्रस्तुत किया। "आर्यसमाज" (1875) को स्थापना करके निरन्तर आठ वर्षों तक वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया, सैकड़ों शास्त्रार्थ किये और अनगिनतप्रवचन। 4 दर्जन छोटी बड़ी किताबें लिखीं, अनुपम वेदभाष्य किया। इन सबसे सोई हुई भारतीय जनता में जागृति आई, अपनी प्राचीन परम्परा का गौरवबोध हुआ। अन्धविश्वासों, कुरीतियों, पाखण्डों के प्रति अरुचि और घृणा के भाव उत्पन्न हुए। स्वदेश प्रेम और वैदिक धर्म के प्रति स्वाभिमान जागा। पाश्चात्य संस्कृति और उसके पोषक गौरांग महाप्रभुओं के प्रति हीनतर भाव भारतीयों के अन्दर उत्पन्न हुए। स्वामी जी के आग्नेय व्यक्तित्व, निर्मल चरित्र, अनुपम वैदुष्य और हृदय में पैठने वाली उनकी तर्कभरी वाणी ने लाखों भारतीयों के हृदय में वेद और आर्य धर्म के प्रति प्रेम तथा संस्कृत भाषा के प्रति प्रबल आकर्षण उत्पन्न किया। जिसका सुपरिणाम यह हुआ कि पं0 गुरुदत्त महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द जैसे उनके मनीषी शिष्यों ने संस्कृत पठन-पाठन के क्षेत्र में डी0ए0वी0 कॉलेज गुरुकुल कांगड़ी जैसी संस्थाओं का जाल बिछा दिया। उत्तरी भारत में भारी संख्या में स्थापित डी0ए0वी0 कॉलेजों और गुरुकुलों ने संस्कृत-अध्ययन तथा संस्कृति-उन्नयन के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये। हजारों की संख्या में डी0ए0वी0 कॉलेज और गुरुकुलों के स्नातक निकले जो संस्कृत भाषानुरागी, विविध विषयों के विद्वान्, प्रथम श्रेणी के लेखक और पत्रकार बनें। आर्य समाज के इन शिक्षण संस्थानों की विशेषता यह थी कि इनमें सभी वर्णों और जातियों के लोग संस्कृत और वेद भी पढ़ते थे। संस्कृत और वेदाध्ययन के क्षेत्र में यह एक बड़ी भारी क्रान्ति थी। सैकड़ों-हजारों वर्षों से संस्कृत एक वर्ग विशेष की भाषा बनी हुई थी। उसको सर्वजनसुलभ बनाकर सर्वाधिकार का प्रायोगिक उदाहरण स्वनामधन्य स्वामी-दयानन्द ने प्रस्तुत किया। फ्रैन्च लेखक-रोमा रोलाँ ने लिखा है:-

"It was in truth an epochmaking Date for India when a Brahman not only acknowledged that all human beings have the right to know the vedas, whose study had been previusly prohibited by orthodox Brahmins, but insisted that their study and propaganda was the duty of every Arya." (Life of Ram Krishna. By Roman Rolland P.59)

अर्थात्- वस्तुतः भारत में यह एक नवयुग निर्माता दिन था, जब एक ब्राह्मण ने (स्वामी दयानन्द सरस्वती ने) न केवल यह स्वीकार किया कि सब मनुष्यों को वेद के अध्ययन का जिसे कट्टरपन्थी ब्राह्मणों ने निषिद्ध कर रखा था, अधिकार है प्रत्युत साथ ही इस पर उसने बल दिया कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

स्वामी दयानन्द के निर्वाण (1883)के 106 वर्षों बाद और अंग्रेजी शिक्षा के प्रवर्त्तक लार्ड मैकाले द्वारा नईशिक्षा की शुरुआत (2 फरवरी 1835) को 155 वर्षों बाद हम भारतीयों को यह सोचना है कि हम मैकाले की आशाओं के अनुरूप बन रहे हैं या स्वामी दयानन्द की आकांक्षाओं के अनुकूल। 1985ई0 से प्रारम्भ नई शिक्षा में "त्रिभाषा सूत्र" के अन्तर्गत अनिवार्यरूप: अंग्रेजी का स्थापन तथा संस्कृत का निष्कासन हमें लार्ड-मैकाले और उनके युग का स्मरण कराता है। परिणाम सामने है। धारावाही महाभारत तक में (जिस युग में संस्कृत लोकभाषा थी) माताओं के लिए "सीते" की तर्ज पर "माते" का सम्बोधन, स्त्रियों को आशीर्वचन देते समय "आयुष्मान्भव" का कथन और दुर्गा स्तुति में अर्जुन द्वारा "दुर्गाय नमः" का जप हमारी व्याकरणविहीन, भाषिक विकृति की ओर संकेत करता है।

हे गौरांग महाप्रभु मैकाले। तुम तो चले गये और तुम अपने-सपने को सर्वांश में पूर्ण भी नहीं कर पाये। परन्तु चिन्ता मत करो। तुम्हारे जाने के बाद भी तुम्हारे मानस पुत्र यहाँ मौजूद हैं, और जो काम बाप नहीं कर सका, उसे बेटे पूरा करके दिखायेंगे। ▣

मेरठ में धर्मसभा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा संचालित "धर्म रक्षा महाभियान" के अन्तर्गत रजबन बाजार (मेरठ) में एक धर्म सभा का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न आर्य सभासदों के अतिरिक्त स्थानीय नागरिक तथा सभा प्रधान पं0 इन्द्रराज जी और "धर्म रक्षा महाभियान के प्रान्तीय संयोजक जयन्त कुमार जी ने भाग लिया। उल्लेखनीय है कि रजबन बाजार क्षेत्र हरिजन तथा बाल्मीकि बस्तियों से घिरा हुआ है। यहाँ ईसाई तथा सिख मिशन के कार्यकर्ता धर्मान्तरण का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं।

इस धर्म सभा में मुख्य वक्ता के रूप में अपने उद्बोधन में सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि आर्य समाजों में अपेक्षित सक्रियता धर्मान्तरण रोकने में सहायक होगी। उन्होंने हरिजन तथा बाल्मीकि बस्तियों में सत्संग, धर्म सभा इत्यादि के आयोजन लगातार करते रहने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जहाँ ईसाई मिशनरियां करोड़ों रुपया खर्च करके धर्मान्तरण कर रही हैं वहीं हम अस्पृश्यता तथा जातिवाद के विष को गले लगाये बैठे हैं। हरिजनों तथा बाल्मीकि भाइयों के होने वाले अन्याय उन्हें धर्मान्तरण करने को विवश कर रहे है। उन्होंने जातिवाद के जहर को समूलनष्ट करने हेतु "धर्मरक्षा महाभियान" द्वारा जन जागरण की आवश्यकता बताई।

श्रीमती मेला देवी प्रधाना स्त्री समाज थापर नगर ने मनुष्योपयोगी वेदमन्त्रों की सुन्दर व्याख्या की तथा "धर्म रक्षा महाभियान द्वारा किए जा रहे धर्म प्रचार की मुक्त कंठ से सराहना की। इस धर्म सभा का संयोजन तथा संचालन जयन्त कुमार जी ने किया।

- संवाददाता

गुरुकुल कांगड़ी के नाम में परिवर्तन की मांग

हरिद्वार। यहाँ के छात्र संगठनों व अन्य सामाजिक दलों ने माँग की है गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का नाम स्वामी श्रद्धानन्द ग्रामीण विश्वविद्यालय किया जाना चाहिये।

मानव निर्माण और आर्यसमाज

गतांक से आगे....

• डा० प्रशान्त वेदालंकार
स्वरूप नगर, दिल्ली

यज्ञ अथवा हवन करते हुए प्रत्येक वेदमन्त्र के अन्त में "इदन्नमम, की आवृत्ति व्यक्ति को त्यागमय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देती है। "शत हस्त समाहर- सहस्र हस्त संकिर- सौ हाथों से कमा और हजार हाथों से उसका वितरण कर, यह दिव्य संदेश उसके जीवन का ध्येय बनता है। इसी प्रसंग में महर्षि दयानन्द ने यह भी प्रतिपादित किया है कि जड़मूर्ति पूजा के स्थान पर किसी सशरीर पुरुष- विद्वान् गुरु, अतिथि आदि की सेवा में मनुष्य जीवन अधिक सार्थक है। यज्ञाग्नि में घृत एवं सामग्री वायु को स्वास्थ्य-वर्द्धक बनाती है। इस प्रकार यज्ञ वायु तथा जल प्रदूषण से बचने का उपाय है।

यज्ञ में जिस प्रकार घृत एवं सामग्री आदि आहुति पड़कर नष्ट नहीं होती, वरन् अग्नि उस घृत एवं सामग्री को सुगन्धि से सम्पूर्ण वायुमण्डल को स्वास्थ्यवर्द्धक बनाती है, और वह स्वास्थ्यवर्द्धक वायु मनुष्य मात्र- गरीब, अमीर, दलित, ब्राह्मण सभी के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होती है, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपना जीवन परोपकार में लगा देना चाहिए यज्ञ केवल धार्मिक कृत्य ही नहीं हैं, वरन् परोपकार का एक उपाय है। जो मनुष्य यज्ञ करके शोषण और निष्ठुर रहते हैं, वे महा-अज्ञानी और पापी हैं।

(ख) आश्रम-व्यवस्था व शिक्षा-प्रणाली- आश्रम-व्यवस्था मानव-निर्माण का अत्यन्त उपादेय उपाय है। आश्रम चार हैं- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास। ब्रह्मचर्य-आश्रम में ही शिक्षाप्रणाली भी अन्तर्भूत हो जाती है।

मानव-निर्माण की दृष्टि से आश्रमों में ब्रह्मचर्य का महत्व सबसे अधिक है क्योंकि इसी काल में व्यक्ति का समग्र-शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक-विकास होता है। महर्षि शिक्षा का आरम्भ गर्भावस्था से मानते हैं। गुरु के आश्रम में जाने से पूर्व माँ और पिता पर बच्चे को स्वस्थ्य रखने के साथ ज्ञान व व्यवहार की शिक्षा देनी आवश्यक है। माँ पर गर्भस्थ बालक को स्वस्थ रखने व उसमें विनम्रता, धैर्य, शौर्य आदि गुणों के संस्कार डालने का दायित्व है। सन्तान उत्पन्न होने पर उसे स्वस्थ रखने तथा उसके थोड़ा बड़ा होने पर उसे अक्षराभ्यास व लिपिज्ञान कराने तथा व्यावहारिक विषयों की शिक्षा के लिए विविध सुभाषित स्मरण कराने का दायित्व भी माँ पर है। बच्चे को अन्धविश्वास से बचाने के लिए विविध संस्कार बचपन में ही डालने उचित समझ कर माँ को निर्देश दिया है कि वह उसे भूतप्रेत आदि काल्पनिक व चमत्कारपूर्ण मिथ्या बातों से सावधान रखे। महर्षि की यह धारणा है कि केवल विज्ञान सम्मत व तर्क संगत बातों को ही सत्य मानना चाहिए। 5-8 वर्ष की आयु तक बच्चे के विकास का दायित्व पिता पर है।

जब बच्चे 8 वर्ष के हों तभी लड़कों को तथा लड़कियों को पाठशाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरुष व स्त्री दुष्टाचारी हों उनसे शिक्षा न दिलावें, किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं। इसके लिए महर्षि ने गुरुकुल अथवा आश्रम-प्रणाली को पुनरुज्जीवित करने का परामर्श दिया है। उनके मत में बालक को 8 वर्ष की आयु से 25-26 (हो सके तो 38 या 48) वर्षों की आयु तक अपने घर से दूर किसी पर्वत की उपत्यका में या नदी के तट स्थित आश्रम में भेज दिया जाय, जहां के स्वच्छ व सात्विक वातावरण में रखकर वह अपना सर्वांगीण विकासकर सके। नगर के दूषित वातावरण में इसका विकास असम्भव है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी का अपने गुरु व शिक्षा संस्था से कुछ ही घण्टों का सम्पर्क रहता है। शेष समय में वह अपने पारिवारिक समस्याओं व समाज के दूषित (अश्लील व उच्छृंखल) वातावरण में सांस लेता है। परिणामतः उसका पूर्ण विकास नहीं हो पाता। आश्रम-व्यवस्था में वह एक छोटे परिवार से निकल कर बड़े परिवार में आ जाता है। जहां सहपाठी उसके बन्धु और अन्य कर्मचारी उसके सम्बन्धी होते हैं। गुरु पिता तथा शिक्षा-संस्था उसकी माता होती है:-

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः (अथर्व0 11/5/3

आचार्य द्वारा शिष्य को अपने गर्भ में रखने का यह रूपक सचमुच आश्रम प्रणाली के महत्व को अद्भुत रूप में प्रकट कर देता है ।

आचार्य का शिष्य को यह कहना कितना मार्मिक है:-

मम व्रते हृदय ते दधामि, ममचित्तमनुचित्ते अस्तु।
ममवाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।
(पार गृ0सू0का02 सू0 16)

वस्तुतः शिष्य गुरु का पुत्र है-- अंगादंगात् सम्भवसि हृदयादधि जायसे आत्मा वे पुत्र नामासि।

आश्रम प्रणाली में तथा "ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति" (अथर्व 11/5/17) आर्षवचनोंद्वारा तप पर बल दिया गया है। शरीर-विज्ञानके अनुसार सात्त्विक वातावरण में 25-26 वर्षों की आयु तक व्यक्ति संयम से रह सकता है आज का विद्यार्थी आरम्भ से हो उत्तेजक वातावरण में रहता है जो कि उसके शरीर वृद्धि के लिए घातक सिद्ध होता है। वह कच्ची आयु में ही भोगों में लिप्त हो जाता है। परिणामतः गृहस्थाश्रम में उसे भोगों से पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता।

महर्षि दयानन्द का मत है कि आश्रम में सबको तुल्य वस्तु, खान-पान, आसन दिये जाएं, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान हो। पर आज की शिक्षा पद्धति में ऐसा नहीं है असमान वातावरण में पले बालक बड़े होकर भी परस्पर असमानता व द्वेष का व्यवहार करते हैं। जब एक निर्धन छात्र किसी धनी की सन्तान को नये वस्त्र पहनकर कार पर बैठकर किसी भव्य इमारत में चल रहे पब्लिक स्कूल में जाते देखता है तो उसके मन में अपने स्कूल एवं अपने वस्त्रों के प्रति और अन्ततः अपनी स्थिति के प्रति घृणा जागरित हो जाती है। परिणामतः उसका मन अध्ययन में नहीं लग पाता। वह हीन भवना से ग्रस्त हो जाता है। दूसरी ओर तथाकथित उच्चवर्ग के छात्रों में अहंकार का उदय होता है। इस प्रकार घृणा की खाई व अहंकार के पर्वत से दोनों वर्गों की दूरी और अधिक हो जाती है। महर्षि ने आर्य समाज के नवम नियम में यह कहकर कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए-- सबकी उन्नति का समान अवसर देने पर बल दिया है।

ब्रह्मचर्यकाल में समग्र-ज्ञान विज्ञान को प्राप्त करना छात्र का मुख्य उद्देश्य है महर्षि के मत में जिससे ईश्वर से ले के पृथ्वी पर्यन्त पदार्थों का सत्य-विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम विद्या है। जो विद्या विपरीत है, भ्रम, अन्धकार और अज्ञान रूप है। इसलिये इसको अविद्या कहते हैं। महर्षि दयानन्द आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार के ज्ञान को विद्या मानते हैं।और इन दोनों ही ज्ञानों से व्यक्ति को निष्णात बना मानव के वास्तविक निर्माण के इच्छुक हैं। आज भौतिक ज्ञानों के शिक्षण पर बल दिया जाता है। उसी की अभिवृद्धि आज के जगत का लक्ष्य है। किन्तु कोरा भौतिक ज्ञान पड़ता है, भोग व दुःख का जनक है। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों के समन्वित ज्ञान में ही व्यक्ति सुख और शान्ति उपलब्ध कर सकता है। इन दोनों प्रकार के ज्ञानों को प्राप्त करने का एक अर्थ यह भी है कि व्यक्ति शरीर से पुष्ट आत्मा से उदार बने, तभी मानव निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण होती है ।

महर्षि ने शिक्षा की परिभाषा में अज्ञान को दग्ध करने के साथ उपलब्ध ज्ञान के अनुसार आचरण करने पर बल दिया है। जिसे विद्या, सभ्यताधर्मात्मा, जितेन्द्रियता की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें। उसी को शिक्षा कहते हैं। साथ उन्होंने व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया है। आचार्य को कहा है कि वह भोजन, छादन, बैठने, उठने, बोलने-चालने, बड़े छोटे से यथायोग्य व्यवहार करने का उपदेश करें। उनका कहना है कि बड़े बड़े पाठन्तर करने से ही केवल विद्या उत्पन्न नहीं होती। ज्ञान और कर्म के समन्वय के लिए उन्होंने विद्यांचाविद्यां च, (यजु040/14) मन्त्र उद्धृत किया है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में महर्षि लिखते हैं कि विद्वानों के दो मार्ग होते हैं-- एक देवयान और दूसरा पितृयान अर्थात् जो विद्या-मार्ग है वह देवयान और जो कर्मोपासना मार्ग है वह पितृयान कहाता है। सब लोग इन दोनों प्रकार के पुरुषार्थकर्म को सदा करते रहें। क्रमशः

श्रीनगर से ४० हजार हिन्दू व सिखों का पलायन

श्रीनगर को भारत से काटने का षड्यन्त्र

श्रीनगर घाटी पर कब्जा करने के पाक षड्यन्त्र के चार पड़ाव

जालन्धर, 8 फरवरी। उग्रवाद से पीड़ित श्रीनगर के तीन कश्मीरी शरणार्थी पलायन करके यहां आये। उनके मुँह से रोंगटे खड़े करने वाली दर्दनाक दास्तान सुनकर कलेजा फटने लगता है। विश्वास नहीं होता है कि श्रीनगर घाटी भारत का हिस्सा है या इसे काटकर पाकिस्तान के हवाले कर दिया गया है। श्रीनगर घाटी में अल्पसंख्यक डेढ लाख हिन्दू सिख आबाद है जिनमें से 40-50 हजार कश्मीरी अपने घर छोड़कर अन्य शहरों में या जम्मू में आ बसे हैं। इन पयालनकर्त्ताओं ने अपना नाम पता गुप्त रखने का वादा लेकर कश्मीर के बिगड़ते हालातों का ब्यौरा दिया।

श्रीनगर घाटी में हिन्दू सिखों की हालत दयनीय है और उन पर बहुत जुल्म हो रहे हैं। जिसका प्रमाण अल्पसंख्यक समुदाय के गली बाजारों में जाकर देखकर प्रमाण मिल सकता है। फिरकापरस्त मुसलमान छोटी-छोटी बात पर जुलूस निकालते हैं और उन निम्नलिखित क्षेत्रों के नाम हैं:-

(1) हब्बा कदल (2) टेकी पुरा, (3) करणनगर, (4) चौटा बाजार, (5) छता बल, (6) माई सुमा, (7) धनपत बाग, (8) वरबल शाह आदि। शरणार्थियों ने बताया कि जितनी खराब हालत इस समय श्रीनगर में है कभी नहीं हुई। फिरकापरस्त कश्मीरी मुसलमान हिन्दू सिखों को कहते हैं कि हमारे साथ जुलूस में शामिल हो और नमाज पढ़ो इन्कार करने पर धमकियाँ दी जाती हैं कि तुम सभी को खत्म कर दिया जायेगा। परिणामस्वरूप 40-50 हजार हिन्दू सिख यहाँ पलायन कर गये हैं। अनन्तनाग से 400 परिवार बारामुला में से 200 परिवार निकल चुके हैं। दिसम्बर माह में उग्रवादियों ने अल्पसंख्यक समुदाय की 2 लड़कियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया परन्तु किसी भी समाचार-पत्र में यह समाचार डर के कारण प्रकाशित नहीं हुआ। घाटी में लूटमार और आगजनी की घटनाएँ पंजाब से कहीं अधिक हैं। लोग सरेआम पाकिस्तान सरकार के पक्ष में नारे लगाते हैं। एक प्रश्न के उत्तर में कि जगमोहन के गर्वनर बनने के बाद स्थिति में कितना सुधार हुआ है, उन्होंने कहा कि जगमोहन चाहे हालात से पूरी तरह वाकिफ हैं परन्तु वह भी बेबस है। जगमोहन को हालात पर काबू पाने के लिये अपनी शख्सियत और राजनैतिक पहलू को अलग रखना पड़ेगा। केवल प्रबन्धक बनकर यह सफल हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि गर्वनर जगमोहन ने चार्ज लेते ही श्रीनगर के कर्फ्यू व मुस्लिम क्षेत्रों का सहयोग और हमदर्दी प्राप्त करने के लिए दूध और सब्जियों के भरे ट्रक मुसलमानों में बाँटने के लिए भेजे। पर कश्मीरी मुसलमान जनता का धर्म के साथ इतना गहरा स्नेह है कि उन्होंने दूध और सब्जियाँ लेने से इन्कार कर दिया। दूसरी तरफ गवर्नर ने यही ट्रक हिन्दू सिख क्षेत्रों में बाँटने के लिए भेजे परन्तु जमायते इस्लामी ने हिन्दुओं को धमकी दी कि अगर यह चीजें स्वीकार कीं तो बदला लिया जाएगा। अल्पसंख्यक समुदाय ने भय के कारण यह चीजें अस्वीकार कर दीं।

एक कश्मीरी शरणार्थी ने बताया कि जमायत इस्लामी आदि फिरकापरस्त संस्थाओं ने गरीब कश्मीरी मुसलमानों के दिल जीतने के लिए, जकात बाँटने का ढंग अपनाया है, जिससे वह कश्मीर सरकार और कश्मीरी जनता में फर्क हालत में कामयाब हो गये हैं। जकात इकट्ठी करने और बाँटने का केन्द्र राईटवे शूज नामी बूटी के एक बड़े व्यापारी दुकान है। जिसकी कई शाखायें है। प्रश्न के उत्तर में उन्होने बताया कि कश्मीर में फिरकापरस्त मुसलमान और उग्रवादी संस्थाओं के एक दर्जन से ज्यादा हैं। जिनमें जमायते इस्लामी, जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट, अला टाईगर, पीपल्स लीग, कलासलकोफ राईफल्ज, आप्रेशन बालाकोट, हजब इस्लामी आदि संस्थायें सरगर्म हैं। जिनके पास आधुनिक हथियारों की कोई कमी नहीं। कश्मीर और पंजाब के उग्रवादियों में यह फर्क है कि सिख उग्रवादियों को हथियार चलाने और गुरिल्ला जंग की सिखलाई पाकिस्तान में दी जाती है जबकि काश्मीर में यह सिखलाई घाटी के पहाडी क्षेत्रों में दी जाती है। कुछ साल पहले काश्मीरियों को कमजोर और बुजदिल कहा जाता था। पर राजीव और अब्दुल्ला सरकार ने उनको हथियारों की सिखलाई देने की तरफ से आँखे बन्द रखीं और पाक सरकार ने चुपचाप हजारों कश्मीरी मुसलमानों को मुजफ्फराबाद में गुरिल्ला जंग और हथियार चलाने में माहिर बना दिया। अब यही कश्मीरी श्रीनगर की वादी के पहाड़ों में दूसरे हजारों नौजवानों को हथियारों की सप्लाई और ट्रेनिंग दे रहे हैं। उनको पाकिस्तान से सिर्फ हथियार और निर्देश आते हैं।

अगर भारत सरकार और जगमोहन ने समय से कोई सख्त कदम न उठायेतो श्रीनगर घाटी बिना पाकिस्तानी हमले के खानाजंगी और गुरिल्ला लड़ाई का केन्द्र बन जायेगी। सच्चाई यह है कि कश्मीरी उग्रवादी संस्थायें कश्मीरी लोगों के घर-घर जाकर इस्लामी जेहाद का वास्ता देकर कहते हैं कि अपना एक बेटा इस्लामी जेहाद के लिए हमें दो। जिससे कश्मीरी उग्रवादियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। हिदवां कुपवाड़ा और पुणकर आदि गाँवों में उग्रवादियों के खुले आम ट्रेनिंग कैम्प लगते हैं। कश्मीरी पुलिस का पाकिस्तानी हिमायती मुसलमान पुलिस अफसरों का जुबानी हुक्म है कि वह ऐसे ट्रेनिंग कैम्पों को चलने दें। गुप्तचर विभाग केन्द्र सरकार और कश्मीर सरकार दोनों को यह रिपोर्ट भेजते रहें। परन्तु राजीव गाँधी और फारूख अब्दुल्ला आँखें बन्द करके बैठे रहे। परिणाम आज सारा देश भोग रहा है।

कश्मीर घाटी में वर्तमान गड़बड़ सम्बन्धी कश्मीरी सूत्रों ने बताया कि पढ़े लिखे कश्मीरी जानते हैं कि कश्मीर तेजी से खानाजंगी की तरफ बढ़ रहा है। पाकिस्तान और उसके कश्मीरी एजेन्टों ने इसके चार पड़ाव निश्चित किये हुये हैं। जिन पर आजकल अमल हो रहा है।

(1) धार्मिक इस्लामी कट्टरपन (2) अल्पसंख्यकों का कश्मीर से पलायन (3) जरब-ए-मोमिन (4) आप्रेशन बालाकोट कश्मीरी उग्रवादी पहले तीन पड़ाव पार कर चुके हैं। आप्रेशन बालाकोट का चौथा, पड़ाव पूरा करना है जिसका उददेश्य श्रीनगर घाटी में खानाजंगी और अफगान फौजियों से हमला करवाना है ताकि घाटी के किसी हिस्से पर कब्जा करके आजाद कश्मीर सरकार की स्थापना की जा सके।

केन्द्र की भूतपूर्व कॉंग्रेस सरकार के 40 वर्षों के राज, में जम्मू-कश्मीर में अनगिनत रकम खर्च करके भी कश्मीरी मुसलमानों को मुख्य राष्ट्रीय धारा में नही ला सकी। जिसका लाभ पाकिस्तानी हितैषी मौलवियों ने लाभ उठाया और रातदिन मेहनत करके कश्मीरी मुसलमानों को कट्टर बना दिया। परिणाम-स्वरूप वह पाकिस्तान को अपना धार्मिक और रूहानी केन्द्र मानते हैं। जिसका पाकिस्तान भरपूर फायदा उठा रहा है। कश्मीर घाटी में 45000 अल्पसंख्यक हिन्दू सिखों के पलायन से पड़ाव का दूसरा हिस्सा शुरू हो गया। इसी षडयन्त्र का तीसरा पडाव जरब-ए-मोमिन है। जिसके अधीन पाकिस्तान का सबसे बडे फौजी मश्क करने के लिए जम्मू-कश्मीर और पंजाब की सीमा क्यों चुनी गई। एक कश्मीरी शरणार्थी ने इससे पर्दे हटाते हुए कहा कि पाकिस्तान जरब-ए-मोमिन जैसी बड़ी मश्क राजस्थान, रणकछ और गुजरात आदि सीमा पर कर सकते थे। परन्तु पाकिस्तान सेना के कमांडर इन चीफ जनरल असलम बेग ने जम्मू-कश्मीर और पंजाब मे लगनी सीमा को इसलिए चुना ताकि जम्मू-कश्मीर में सरगर्म उग्रवादियों का साहस बढाया जा सके और इसकी आड में कश्मीरी मुजाहिदों को हथियारों की स्मगलिंग की जा सके। जिसमें पाक सफल रहा। इन विश्वसनीय सूत्रों ने बताया कि अब कश्मीरी उग्रवादियों के तीन उद्देश्य हैं -

(1) अल्पसंख्यकों का कत्लेआम (2) सरकार के विरुद्ध सिवल नाफुरमानी की लहर (3) पुलों बिजलघरों इमारतों में धमाके करना ताकि कश्मीर में गिरते हालतों को यू0एन0ओ0 में पेश करने में पाकिस्तान का पक्ष मजबूत किया जा सके। ◻



महिला मण्डल

नारी जागृति और आर्य समाज

• श्रीमती दर्शन भारद्वाज
आजमगढ़

गतांक से आगे

मद्य मांस च मीन च मुद्रा मैथुनमेव च।
एते पञ्च मकारा स्युर्मोक्षदा हि युगे युगे ।।
पीत्वा पीत्वा पुन पीत्वा यावत्पतति भूतले ।
पुनरुत्थाय वै पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

इन वाममार्गियों के लिए मद्य-मांस,मीन मुद्रा व मैथुन पञ्च मकार मोक्ष के साधन बन गए और मदिरा का इतना पान करें पियें-पियें फिर न पियें तब तक पियें जब तक भूमि पर गिर न जाएं। गिर जायें तो उठकर फिर पियें, क्यों कि इसी प्रकार पुनर्जन्म से बचेंगे। इस कलुषित काल में सर्वाधिक कुठाराघात स्त्रियों पर किया गया। वेद-शास्त्रों में जो गौरवमयी छवि स्त्रियों की थी, उसको मटियामेट कर दिया गया। रुद्रयामलतन्त्र जैसी रचनाओं ने मानव को नितान्त लज्जाजनक स्थिति में रख दिया।

रजस्वला पुष्कर तीर्थं चाण्डाली तु स्वयं काशी ।
चर्मकारी प्रयाग स्याद्रजकी मथुरामता
अयोध्या पुक्कसी प्रोक्ता ।।

इन शब्दों के अर्थ अनर्थ के सूचक हैं-अस्तु संकेत ही पर्याप्त हैं। इस प्रकार समाज का रूप विकृत हो उठा था। कहीं विधवाओं का करुण क्रन्दन था तो कहीं बाल विवाह और अनमेल विवाह जोर पकड़ रहे थे। स्त्री जाति को अनाहत, अपमानित तथा पददलित कर दिया था। पति की मृत्यु पर उसकी पत्नी को चिता के साथ सती कर दिया जाता था। द्वार किमेक नरकस्य, नारी नरक का एक मात्र द्वार क्या है -- नारी कहकर शंकराचार्य जैसे सन्तों ने उसकी प्रतिष्ठा को चूर चूर कर दिया था। स्त्री शूद्रौ नाधीयताम -स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। कहकर उन्हें वेदाध्ययन और शिक्षा से वंचित कर दिया गया था। किमत्र हेयम-कनक च कान्ता अर्थात्- 'संसार में त्याज्य क्या है- कांचन और कामिनी का शृंखला प्राणभृताहि -नारी- अर्थात-प्राणियों के लिए सांकल कौन है- नारी,विश्वासपात्र न किमस्ति-नारी,विश्वास के योग्य कौन नहीं है- नारी, 'कि तदविष भांति सुधोपम-नारी, वह कौन सा विष जो अमृत सा जान पड़ता है- नारी इतना ही नहीं आदि शंकराचार्य यह सब लिखते-लिखते उसे पिशाचिनी भी लिख दिया -

विज्ञानमहाविज्ञमोऽस्ति को वा।
नार्या पिशाच्या न-च वंचितो य ।।

अर्थात् समझदारों में सर्वश्रेष्ठ समझदार कौन है- जो स्त्री पिशाचिनी से ठगा नहीं गया। पार्वती,कौशल्या,सुमित्रा और सीता का उत्कृष्ट उदात्त वर्णन करने वाले गोस्वामी तुलसीदास भी इस दौड़ में भला पीछे क्यों रहते -

ढोल गवार शूद्र पशु नारी ।
ये सब ताडन के अधिकारी।।
विधिहु न नारि हृदय गतिजानी।
सकल कपट अघ अवगुण खानी ।।

इतना ही नहीं गोस्वामी जी ने हमारी वन्दनीय मातृशक्ति को सहज अपावन नारि, अवगुण अष्ठसदा उर रहहीं तथा अधम ते अधम अति नारी तक चित्रित किया। नारी तो नारी है। हिन्दूधर्म या अन्य कोई मत या मजहब हो सभी ने नारी को अपमानित करके हेय बनाने मे बढ़ चढ़ कर प्रतियोगिता की थी। इस्लाम ने तो इस परिप्रेक्ष्य में पराकाष्ठा ही कर दी। ख्वाजा हसन निजामी द्वारा प्रकाशित हिन्दी कुरआन में अंकित है -

निस्साउकुम हर्स सुल्लक फात हर्सकुम उन्नाशिवायतुम ।

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियों हैं। अपनी खेती में जिस प्रकार चाहो जाओ। तफसीर कादरी में संकेत है निकाह कर लो जो खुश आये तुम्हें औरतों से दो-दो तीन-तीन चार-चार, निकाह करने वालों को इख्त्यार है कि इन हदों में से जितने चाहें निकाह कर लें । रसूलिल्लाह ने फर्माया औरतें शैतान का जाल हैं। इन्ना कैदा कुन्ना अजीम कहकर इस्लाम ने स्त्रियों को शैतान से भी अधिक मक्कार बताया है। ये स्त्रियों को पैरों की जूतियों की संज्ञा देने में संकोच नहीं करते हैं। मुसलमान पुरुष को इतना अधिकार है कि वह कारण अथवा अकारण अपनी इच्छा से केवल तीन बार तलाक शब्द कह कर पत्नी से छुटकारा प्राप्त कर ले।

एक समय ईसाइल ने तो नारी को जडता की कोटि में ही ले जाकर खड़ा कर दिया था। कालान्तर में ईसा के अनुयायियों में कई ऐसे सम्प्रदाय उत्पन्न हो गए थे, जो स्त्री में आत्मा के अस्तित्व को भी नकारने लगे थे। ईसाई मतानुसार 'मातृयोनि पापयोनि है- विशेष कर यदि शिशु बालिका हो। इनके विचार से स्त्री सदा पुरुष के अधीन रहे क्यों कि हव्वा धोखा खा गयी थी। स्त्री को पकड़कर बलात्कार के पश्चात द्वार से बाहर धकेला जा सकता है। ईसायत की धारणानुसार नारियों को गिरजाघरों में अपनी जीभ बन्द रखनी चाहिये, क्योंकि उन्हें बोलने की आज्ञा नहीं है।

इस प्रकार जिस पुरुष की जन्मदात्री नारी थी-उसी ने उस अपनी मातृ नारी को घृणा और अपमान की दृष्टि से देखना प्रारम्भ कर दिया। एक ओर मन्दिरों में अनेक देवियों के नाम से उनकी मूर्तियाँ गढ़ी थीं और उनके सम्मुख पशुओं की बलि चढ़ाने लगा, दूसरी ओर अपने घर की सच्ची देवी को दलित और पीड़ित करने लगा। मुस्लिम और ईसाई मतों का चित्रण जो यहाँ किया है- उन्होंने हिन्दूमत की निर्धन-निरीह एव दीन हुई जनता को प्रलोभन या भ्रम से अपने मतों में धर्मान्तरित करना प्रारम्भ कर दिया। भारत में व्याप्त छुआछूत -ऊँच नीच की भावना ने इन विधर्मियों को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया औ अदूरदर्शी धार्मिक नेता उनके इस षड्यन्त्र को मूकदर्शक की भाँति आतिप्रभाव से देखते रहे और आज इन विधर्मी तत्वों ने देश को विघटन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

परमात्मा न्यायकारी है तो दयालु भी है। पारस्परिक विद्वेष और वैमनस्यवश हमारी अधोगति होते होते उन्नीसवीं शती में हम पतन के गहन गर्त में जा गिरे थे तभी गुजरात प्रान्तान्तर्गत मौरवी राज्य के टंकारा ग्राम में औदीच्य ब्राह्मण पिता कर्षण जी तिवारी माता यशोदाबाई की गोद में मूल शंकर शिशु ने जन्म लिया। विद्याभ्यास, वेदाध्ययन, और शिक्षा प्राप्त की। आठ वर्ष की वय में यज्ञोपवीत हुआ। वैदिक संस्कारों से विकसितचौदह वर्ष की आयु में मूलशंकर ने महाशिवरात्रि पर्व पर व्रत धारण किया। उनके हृदय में एक धमाका हो गया कि यह पिण्डी नहीं सच्चा शिव कोई और है। सोलह वर्ष के मूलशंकर की अपनी भगिनी के मृत्यु का मौन सन्ताप उनके उन्नीस वर्ष की आयु में प्यारे चाचा की मृत्यु के समय हृदय की पीड़ा का विस्फोट बनकर अश्रुवर्षा के रूप में प्रकट हुआ। सच्चे ईश्वर की खोज और मृत्यु पर विजय की भावना के साथ बाईस वर्ष की आयु में मनोरम साज-सज्जा और धूम धाम से होने वाली अपने विवाह की तैयारियों के मध्य मूलशंकर ने गृह त्याग कर दिया और अन्तत वे स्वामी दयानन्द सरस्वती हो गए। मूलशंकर को अपनी भगिनी जो एक नारी थी, और अपने चाचा जो एक पुरुष थे- दोनों की मृत्यु में पूर्ण समान शोक की अनुभूति हुई उसी प्रकार दयानन्द ने भी विश्व की नारी-मानवी मात्र की पीड़ा को भली भाँति समझा। उन्होंने जहाँ एक ओर अन्याय अन्धकार और अधर्म का विनाश कर न्याय, ज्योति और धर्म को स्थापित किया वहीं दूसरी ओर नारी उद्धार का बीड़ा भी उठाया। उन्होंने ही नारी के तिरस्कार का परिष्कार किया, और उसको स्वाभिमान सम्मान पूर्वक रहने का मार्ग प्रशस्त किया। महर्षि दयानन्द ने स्त्री जाति की दयनीय दशा पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने नारी को गौरव, श्रद्धा स्नेह एव ममता की साकार प्रतिमा माना और कहा-- ऋषियों-महात्माओं-विद्वानों और वीर महारथियों की जन्मदात्री नारी जाति सदैव सम्मान की पात्र है। ऋषि ने कहा कि वेद सब स्त्री-पुरुष को समान रूप से विद्याध्ययन का अधिकार देता है। यदि स्त्री अनपढ़ होगी तो महर्षि के शिक्षा दर्शन के अनुसार बालकों की शिक्षा भी अधूरी रह जायेगी। 'मातृमान पितृमान आचार्यमान पुरुषो वेद शतपथ ब्राह्मण का यह वाक्य प्रथम माता द्वितीय पिता तृतीय शिक्षक आचार्य को बतलाता है। यदि माता अशिक्षित है तो बालक की शिक्षा का प्रथम स्तम्भ ही दुर्बल हो जायेगा। महर्षि दयानन्द ने अपने पुनीत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में मनु को उद्धृत करते हुए कन्याना सम्प्रदान च कुमाराणा च रक्षणम कहा

—— शेष पृष्ठ ११ पर

धर्म रक्षा महाभियान समिति द्वारा महत्वपूर्ण निर्णय

भारत की भोली-भाली गरीब जनता को विदेशों से प्राप्त धन के बल पर प्रलोभन देकर बड़े पैमाने पर ईसाई तथा मुसल्मान बनाने का सुनियोजित षडयन्त्र चल रहा है। इस धर्मान्तरण की आड़ में जिस प्रकार भारत तथा भारतीयता विरोधी प्रचार किया जा रहा है उससे भारतीय जनता को राष्ट्र की मुख्यधारा से हटाकर राष्ट्रविरोधी बनाया जा रहा है। यदि यही स्थिति रही तो हमारे राष्ट्र का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है।

इन्हीं सब परिस्थितियों पर विचार करने हेतु आर्य प्रतिनिधि उ0प्र0 के अन्तर्गत संचालित "धर्मरक्षा महाभियान" समिति की एक बैठक दिनांक-15·3·90 को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के कार्यालय में सभाप्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री, श्री जय नारायण "अरुण" उपप्रधान, चौ0 माधव सिंह जी मन्त्री विद्यार्यसभा, डा0 विनयप्रताप उपमन्त्री एवं संयोजक श्री जयन्तकुमार पाण्डे तथा समिति के अन्य सदस्य उपस्थित थे। सर्वसम्मति से निम्न निर्णय लिए गये-

§1§ समस्त जिला सभाओं को सभा की तरफ से निर्देश दिया जाय कि वे अपने जनपद से 2 युवा कार्यकर्ता जिनकी आयु 16 वर्ष से 25 वर्ष हो को "ग्रीष्म कालीन युवा प्रशिक्षण शिविर" में भाग लेने के लिए सभा द्वारा निर्धारित स्थान पर भेजें। इन युवाओं को वर्तमान परिपेक्ष्य के अनुसार प्रचार जनसम्पर्क का प्रशिक्षण वैदिक धर्म की जानकारी, योग इत्यादि का श्रेष्ठ प्रशिक्षण दिया जायगा।

§2§ शुद्दि धर्मान्तरण प्रतिरोधी अभियान तथा धर्म रक्षा महाभियान में तीव्र गति से कार्य करने हेतु युवा शक्ति का उपयोग किया जाय इसके लिए "राष्ट्र-रक्षा युवा आन्दोलन" को माध्यम् बनाया जाय।

§3§ प्रत्येक जनपद में "धर्म रक्षा समितियों का गठन किया जाय जो धर्मान्तरण या धर्मान्तरण के किसी भी विधर्मी प्रयास का मुकाबला करें तथा इसकी सूचना तुरन्त प्रान्तीय समिति को दें।

§4§ शुद्दि तथा "धर्म रक्षा महाभियान" को समाचार पत्रों इत्यादि में प्रकाशित करने से बचा जाय क्यों कि इससे विधर्मी शक्तियाँ सतर्क हो जाती हैं तथा शुद्दि और धर्म रक्षा कार्य में अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाती।

§5§ प्रदेश की समस्त जिला सभाओं को "धर्म रक्षा महाभियान" में सक्रिय किया जाय।

§6§ समस्त जिला सभाओं को निर्देश दिया जाय कि उनके जनपद में किसी भी प्रकार के धर्मान्तरण के गतिविधि की सूचना अविलम्ब वे "धर्म रक्षा महाभियान" के प्रान्तीय संयोजक को दें जिससे प्रभावी कार्यवाही की जा सके।

§7§ धर्म रक्षा महाभियान के निर्देशन में प्रान्तीय समिति के मनोनीत व्यक्तियों का एक दल धर्मान्तरण से प्रभावित पर्वतांचल तथा सुदूर क्षेत्रों का निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट दो माह के अन्दर दे दें।

§8§ सभा के सुयोग्य तम भजनोपदेशकों की सेवाएं धर्मप्रचार हेतु प्राप्त की जायं।

§9§ प्रत्येक मण्डल में एक उपसमिति का गठन संयोजक प्रान्तीय समिति करें तथा इन उपसमितियों §मण्डलीय§ से अनवरत सम्पर्क रखा जाय।

§10§ संयोजक §धर्म रक्षा महाभियान-प्रान्तीय समिति§ स्वयं जनपदों तथा मण्डलीय स्तर के सदस्यों का चयन गुण, दोष, कर्म, तथा उनकी सेवा क्षमताओं के आधार पर करें।

§11§ समिति की दो बैठकों में लगातार दो बार अनुपस्थित रहने पर सदस्य को सदस्यता से मुक्त करने का अधिकार प्रान्तीय संयोजक को दिया गया। इस बैठक में उपस्थित न होने वाले सदस्यों को अगली बैठक में उपस्थित होने को पत्र लिखा जाय।

§12§ अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन को मूर्त रूप देने हेतु प्रदेश स्तर की प्रतिनिधियों §अन्तरंग§ की शीघ्र ही बैठक बुलाया जाय। यह बैठक 3 अप्रैल मंगलवार के दिन बुलाई गई है।

§13§ सभी जिला सभाओं को निर्देश दिया जाय कि वे अपने स्तर पर जुलूस तथा सभाएं अंग्रेजी के वर्चस्व तथा व्यवहार के विरुद्ध आयोजित करे तथा प्रत्येक जनपद के जिलाधीश को जुलूस के साथ जाकर अंग्रेजी के प्रयोग तथा अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के विरुद्ध ज्ञापन दें।

§14§ सभी जिला सभाएं सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर मुख्यमन्त्री उत्तर प्रदेश के अंग्रेजी के विरुद्ध दिए गए वक्तव्य के प्रति समर्थन तथा सहयोग व्यक्त करें।

§15§ छात्रों, शिक्षकों तथा सरकारी कार्यालयों को अंग्रेजी के प्रयोग न करने की चेतावनी दी जाय। अप्रभावी होने पर धरना, भूख हड़ताल इत्यादि किया जाय।

§16§ वाहनों के नम्बर निश्चित अवधि के अन्दर हिन्दी में करने की चेतावनी दी जाय।

§17§ प्रत्येक जिले में अंग्रेजी के विरुद्ध जेल भरो आन्दोल किया जाय/इसे तहसील स्तर पर भी संचालित किया जाय।

§18§ राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" की अंग्रेजी हटाओ अंग्रेजियत-मिटाओ" आन्दोलन में हर स्तर पर सक्रिय समर्थन दिया जाय। प्रत्येक जिलासभा इस कार्य हेतु पाँच व्यक्तियों का चयन करें।

§19§ राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन के माध्यम से महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों के छात्रों को अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन में सक्रिय किया जाय।

§20§ सभा तथा राष्ट्र रक्षा युवा-आन्दोलन शीघ्रातिशीघ्र अंग्रेजी हटाओ अन्दोलन की रूपरेखा समस्त-प्रदेश में प्रचारित तथा प्रसारित कराएं तथा इस महत्वपूर्ण आन्दोलन आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य विभिन्न संगठनों का भी सहयोग प्राप्त करें।

उपरोक्त दोनों बैठकों में सभाप्रधान जी तथा सभामन्त्री जी की उपस्थिति इस बात का प्रमाण थी कि सभा राष्ट्र, धर्म, संस्कृति, तथा राष्ट्र-भाषा के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक है। अन्त में "धर्म रक्षा महाभियान" के प्रान्तीय संयोजक तथा राष्ट्र रक्षा-युवा आन्दोलन के महामन्त्री जयन्तकुमार ने प्रदेश के सुदूर पूर्व तथा पर्वतांचल और विभिन्न मण्डलों से पधारे प्रान्तीय "धर्म रक्षा महाभियान" समिति के सम्मानित सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभा प्रधान पं0 इन्द्रराजजी, सभामन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी, उपप्रधान श्री जयनारायण अरुण तथा विद्यार्य सभा के मन्त्री श्री माधव-सिंह जी को अनवरत रूप से बैठक में उपस्थित रहकर उसे सफल बनाने में सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापन किया। शान्ति पाठ के साथ बैठक का समापन हुआ।

(संवाददाता)

आदर्श होली यज्ञ

दि0- 10 मार्च 90 को आर्यसमाज बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर की ओर से सायं 7 से 9 बजे तक शर्मा स्मारक मैदान में एक आदर्श होली यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में निम्नलिखित पांच यजमान थे.-

§1§ सर्वश्री वेद प्रकाश जी सर्राफ सपत्नीक §2§ सर्वश्री अशोक कुमारजी सपत्नीक§3§ सर्वश्री सुशीलकुमार जी सपत्नीक §4§ सर्वश्री नरेन्द्रजी पाठक सपत्नीक §5§ सर्वश्री अजय कपूर जी सपत्नीक

श्री पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि-सभा, उत्तर प्रदेश ने सब यजमानों को आशीर्वाद देते हुए होली के महत्व का प्रतिपादन करते हुए शरद् ऋतु के अन्न का विशेष यज्ञ बताया। पर्यावरण की शुद्धि के लिए तथा नए अन्न को प्रयोग से पूर्व देवताओं को अर्पित करने के लिए सार्वजनिक स्थलों पर बड़े-बड़े यज्ञ होते थे। इसमें बाल भून कर खाया तथा सब को खिलाया जाता था। होलक अधपके अन्न को कहते हैं जिसके प्रयोग से वायु और कफ का शमन होता था। प्रकृति जब इस ऋतु में बदलती थी व्यक्ति भी इस हर्षोत्पादक परिवर्तन में सम्मिलित हो जाता था। श्री प्रधान जी ने बनाया कि होली समता का पर्व है। इस अवसर पर परस्पर भेदभाव भुलाकर सबलोग गले मिलते हैं। हमने इस पर्व का महत्व न समझ कर छूआछूत के द्वारा करोड़ों अपने भाईयों को पृथक कर दिया। आज पुन अपने उन्हीं भाईयों को गले लगाना बहुत आवश्यक है। देश की सुरक्षा-एकता, अखण्डता और प्रभु सत्ता के लिए एक मात्र मानवजाति को मानते हुए छुआछूत ऊँचनीच भेद-भाव, परस्पर घृणा को निर्मूल करते हुए इन सब भाईयों को गले लगाने ही की इस पर्व की प्रेरणा है। तत्पश्चात् श्री बलदेवराज जी तथा श्री हीरालाल जी ने अपने मधुर संगीत के द्वारा वातावरण को पवित्रता से प्रभावित कर दिया। श्रीमती विनोद-बाला जी मन्त्राणी स्त्री आर्यसमाज एवं श्रीमती मनोरमा सुधाकर जी ने बहुत सुन्दर काव्य द्वारा आर्यसमाज को वैदिक होली को जनता जनार्दन के समक्ष प्रस्तुत किया। श्री अशोक कुमार जी श्री स्वगज्य [illegible] ने चुटकुले सुना कर मनोरञ्जन किया। अन्त में [illegible] श्री इन्द्रराज जी ने मधुर संगीत प्रस्तुत किया। श्री सुबोध-कुमार जी विनोद सम्पादक दैनिक प्रभात मेरठ ने अपने पूज्य पिता श्री विश्वम्भर सहाय जी विनोद के एक मधुर संस्मरण को सुनाते हुए एक बहुत मार्मिक चुटकुला सुनाकर सभा में हंसी का वातावरण उत्पन्न कर दिया। श्री ओमप्रकाश-जी जौहरी ने बीच-बीच में चुटकुले और शेर सुनाकर बड़ी कुशलता से सभा का संयोजन किया। अन्त में श्री मनोहर लाल जी प्रधान ने भी तकदीर और तदबीर पर बहुत अच्छा चुटकुला सुनाया एवं सब भाईयों को कल आर्यसमाज मन्दिर में होली जलपान के लिए निमन्त्रित किया। शान्तिपाठ के पश्चात प्रसाद वितरण आर्यसमाज मेरठ शहर की ओर से किया गया।

होली मिलन एवं जलपान

दि0- 11-3-90 को दोपहर बाद 3 से 4 1/2 बजे तक आर्यसमाज मन्दिर मेरठ शहर में होली मिलन एवं जलपान का कार्यक्रम यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। श्री मनोहर लाल जी की प्रधानता एवं श्री-ओम प्रकाश जी के संयोजकत्व में होली मिलन के उपलक्ष में मधुर संगीत से कार्यक्रम यज्ञ से आरम्भ हुआ। श्री सरदार-पूर्ण सिंह जी के छोटे सुपुत्र एवं श्री हीरालाल जी का मधुर संगीत हुआ। तत्पश्चात् कुछ भाइयों ने होली पर्व की विशेषता पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात श्री राधेश्याम जी सभासद ने होली की बधाई देते हुए संगठन पर बल दिया।- तत्पश्चात् श्री स्वराज्य चन्द्र जी ने काश्मीर की बिगड़ती हुई दशा पर प्रकाश डालते हुए धारा 370 को हटाये जाने की बड़े सशक्त शब्दों में मांग की। इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए श्री जयन्त कुमारजी पाण्डे ने कहा कि हमें देश को विघटन से बचाने के लिए संगठनात्मक पग उठाने होंगे तभी हम देश को बचा पायेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने काश्मीर में इससमय हो रहे विघटनात्मक एवं हिंसक प्रयत्नों का विस्तार से वर्णन करते हुए बताया कि वहाँ के आतंकवादियों ने हिन्दुओं को 48 घण्टे के अन्दर-अन्दर काश्मीर घाटी को खाली कर देने की चेतावनी दी। काश्मीर के हजारों हिन्दू परिवार उधमपुर, जम्मू तथा दिल्ली में अपना सब कुछ छोड़कर आ गये हैं। इधर होली के पर्व को जब हर्षोल्लास से मनाने की बात आती है तब काश्मीर और पंजाब का खूनी ताण्डव नृत्य सामने आ रहे हैं। आज अपने पर्वों की भावनाओं को समझते और समझाते हुए हम सबको इतना [illegible] बनना है ताकि कोई भी विदेशी शक्ति अथवा देश में विघटनकारी तत्व हमारे देश को तोड़ न सके। अन्त में सभा-प्रधान जी ने निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किया। जिसका सबने अनुमोदन किया।

प्रस्ताव

होली मिलने के अवसर पर यह सभा कश्मीर को विदेशियों और विघटनकारी तत्वों द्वारा भारत से पृथक करने के षड्यन्त्र की घोर निन्दा करती है। काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और रहेगा। यह सभा यह अनुभव करती है कि केन्द्रीय सरकार को धारा 370 को एक दम समाप्त करना चाहिए। इस धारा के अन्तर्गत किसी भी भारतीय को काश्मीर में सम्पत्ति क्रय करने, स्थाई रूप से निवास और व्यापार करने का अधिकार नहीं है। परिणाम स्वरूप पाकिस्तान की षडयन्त्र कारी कार्यवाहियों से काश्मीर में विघटनात्मक संगठनों को बहुत बल मिला है जिसका आज यह दुष्परिणाम है कि आतंकवादी खुले आम हत्याएं कर रहे है और राष्ट्रवादी शक्तियों को भयभीत कर काश्मीर से भगा रहे हैं। इसलिए धारा 370 को समाप्त कर काश्मीर को सामान्य भारतीयों के लिए खोला जाये ताकि कोई भी भारतीय वहाँ अपना निवास और व्यापार कर सके। यह सभा केन्द्रीय सरकार से यह भी पुरजोर मांग करती है कि-पाकिस्तान से मिलने वाली सीमाओं पर भूतपूर्व सैनिकों को बसाया जाए और उन्हे आग्नेय अस्त्रो के लाइसेंस दिए जाएं ताकि पाकिस्तान की ओर से होने वाले हिंसक प्रयासों का वे मुँहतोड़ उत्तर दे सकें। वर्तमान में भारत सरकार को, काश्मीर को सेना के हवाले करना चाहिए ताकि काश्मीर में विघटनकारी शक्तियों को तुरन्त कुचला जा सके। तत्पश्चात् आर्यसमाज मेरठ शहर की ओर से भव्य जलपान दिया गया जिसमें नगर के सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने उत्साह से भाग लिया। नगर विधायक लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, सभासद राधेश्याम रस्तोगी, एवं सभासद जगदीश चौधरी का भी हार्दिक स्वागत किया गया।

- संवाददाता

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ द्वारा पारित प्रस्ताव

दिनांक- 4-3-90 को आर्य उपप्रतिनिधि सभा जनपद मेरठ की अन्तरंग सभा ने माननीय मुख्यमन्त्री जी के उस बयान का स्वागत किया जिसमें उन्होंने हिन्दी भाषा के प्रति अपना दृढ़ समर्थन व्यक्त किया है।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जनपद मेरठ की अन्तरंग सभा ने माननीय मुख्यमन्त्री जी से निवेदन किया कि शीघ्र ही अंग्रेजी माध्यम स्कूलों को बन्द करने का आदेश दें तथा सरकारी कार्यालयों में कामकाज की भाषा केवल हिन्दी करने हेतु कदम उठाएं। प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में हिन्दी ही माध्यम होना आवश्यक है।

जनपद मेरठ की समस्त आर्यसमाजे उनके उपरोक्त कदम §अंग्रेजी का वर्चस्व समाप्त करने हेतु§ के प्रति अपना दृढ़ समर्थन व्यक्त करती हैं। (इन्द्रराज)

मन्त्री

आर्यउपप्रतिनिधि सभा, मेरठ।

समता दिवस

दिनांक 14-1-90 दिन रविवार को आ0स0आँवला ने विश्वहिन्दू परिषद एवं रा0स्व0 से0 संघ के सहयोग से स्थानीय शिशु मन्दिर प्रागण में मकरसक्रान्ति पर्व, "समता-दिवस" के रूप में मनाया।, सर्वप्रथम आ0स0 मन्त्री श्री रामजी शरण 'अकिञ्चन" के पौरोहित्य में तथा श्री चोखे राम जी सपत्नीक यजमान के द्वारा सामूहिक वैदिक यज्ञ हुआ। तत्पश्चात् एक सभा का आयोजन हुआ।

निरीक्षण सम्पन्न

दि0- 4·2·90 । आर्यसमाज बदायूँ एवं आर्यसमाज आसफपुर जिला बदायूँ।

दि0- 11·2·90 । आर्यसमाज नया शहर इटावा।

दि0- 18·2·90 । आर्य समाज अलीगंज एवं डी0ए0वी0 इन्टर कालेज अलीगंज, जिला- एटा।

दि0- 25·2·90 । आर्य समाज बकेबर एवं आर्य कन्या विद्यालय बकेबर, जिला - इटावा ।

दि0- 27·2·90 । आर्य उपप्रतिनिधिसभा, जिला - कानुपर-नगर ।

- कुँ0 ध्रुव पाल सिंह"अटल"

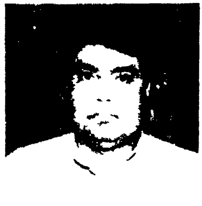
मुख्य निरीक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र

श्री मनमोहन तिवारी का साहसिक क़दम

माध्यमिक शिक्षकों की विगत ३५ दिवसीय हड़ताल-अवधि की रोकी गई वेतन सम्बन्धी याचिका वापस।

– मैं शिक्षकों/कर्मचारियों तथा समाज के कमज़ोर वर्गों के हित के लिए जीवन भर संघर्ष करता रहूँगा।

—— मनमोहन तिवारी



(1) माध्यमिक शिक्षकों की 35 दिनों की हड़ताल अवधि के रोके गये वेतन की याचिका नं0- 1797 वर्ष 1984 श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री, उ0प्र0 विद्यालय प्रबन्धक महासभा ने वापस लेते हुए एक प्रेस वक्तव्य में कहा है कि सन् 1984 में उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ के आह्वान पर प्रदेश के शिक्षक 35 दिनों की हड़ताल पर रहे। इस अवधि के वेतन भुगतान के सम्बन्ध में विद्यालय प्रबन्धक महासभा ने एक याचिका उच्च न्यायालय में दायर की। वेतन भुगतान रोक दिया गया। शासन ने इतनी लम्बी अवधि में कोई उत्तर न देकर अपनी उदासीनता दिखलाई, जिससे अब तक वेतन भुगतान न हो सका। श्री तिवारी ने अथक एवम् साहसिक कदम उठाते हुए उक्त याचिका को वापस लेकर शिक्षकों को बकाया वेतन भुगतान का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। साथ ही साथ शिक्षको को उत्पीड़न से बचाने हेतु उन्होंने शासन से अनुरोध किया है कि वह अपने पूर्व निर्णयानुसार याचिका वापस होने पर शिक्षकों का बकाया वेतन भुगतान कराने के आदेश निर्गत करे।

(2) इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक पहलुओं पर भी श्री तिवारी ने अपना विचार व्यक्त करते हुए शासकीय तथा अशासकीय कर्मचारियों को समान कार्य के आधार पर समानवेतन भत्ते आदि दिये जाने की अनिवार्यता की ओर शासन का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि प्रशासनिक ढाँचे में परिवर्तन के साथ एक राष्ट्रीय वेतन नीति निर्धारित की जाये।

(3) श्री तिवारी का अभिमत है कि शिक्षक चाहे किसी भी श्रेणी में कार्यरत हो उसे योग्यता के आधार पर वेतन भुगतान किया जावे, वर्तमान असमान वेतन निर्धारण नीति समाप्त की जावे। इस नीति का परिणाम होगा कि शिक्षक कुंठाग्रस्त न रहकर राष्ट्र के सच्चे नागरिक बनाने का दायित्व सहर्ष स्वीकार करेंगे।

(4) शिक्षा के व्यापक प्रसार एवं जनसंख्या की उत्तरोत्तर वृद्धि को दृष्टिगत रखते हुए श्री तिवारी का मत है कि प्रदेश के समस्त डिग्री कालेजों में सभी विषयों की स्नातकोत्तर कक्षाओं को खोले जाने की अविलम्ब शासन अनुमति प्रदान करे।

(5) श्री तिवारी ने आगे कहा कि स्वतन्त्र भारत में जन-जन को शिक्षित करने के लिए बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुरूप शिक्षा के बहुआयामी उद्देश्यों को पूरा करने के लिये ग्रामों में विद्यालयों/महाविद्यालयों की स्थापना तथा उनमें सभी विषयों की स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढ़ाने की व्यवस्था करनी होगी जिससे ग्रामीण नवयुवकों का शिक्षा के उद्देश्य से नगर की ओर पलायन भी रुकेगा, तभी हमारे समाज के प्रत्येक वर्ग के बच्चे शिक्षा से लाभान्वित हो सकेंगे तथा ग्राम एवं नगरीय सन्तुलन कायम रहेगा।

(6) श्री तिवारी ने बेरोजगार युवको एवम् युवतियों को कुंठा मुक्त करने के लिये शासन से अपील की कि बेरोजगारी भत्ते का अपना वायदा पूरा करने का प्रयास करे।

(7) शिक्षा जनतन्त्र का मूल आधार है इस सम्बन्ध में श्री तिवारी का सुझाव है कि राष्ट्र के प्रत्येक बालक-बालिका को माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा देने का भार शासन वहन करे।

(8) आज प्रदेश में जो निगम घाटे के कारण तोड़े जा रहे हैं उससे बेरोजगारी बढ़ेगी। अतः श्री तिवारी का मत है कि इन निगमों को सम्बन्धित तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा संचालित कराया जाय जिससे शासन को नुक्सान और युवकों को बेरोजगारी से बचाया जा सके।

अन्त में श्री तिवारी ने जोर देकर कहा कि उनका परिवार कई पीढ़ियों से शिक्षा, समाजसेवा एवम् कर्मचारी समस्याओं के समाधान से जुड़ा रहा है, अतः वे विधान परिषद के भीतर और बाहर सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु सदैव संघर्षरत रहेंगे।

"सत्ता परिवर्तन हमारा पहला मोर्चा था, जिस पर अपार जन सहयोग से हमें सफलता मिली। अब हमारा दूसरा मोर्चा है, सभी प्रदेश वासियों को आर्थिक-सामाजिक न्याय देने का, गरीब तथा कमजोर लोगों को ऊपर उठाने का।"

— मुलायम सिंह यादव

- स्वच्छ प्रशासन देने की अपनी घोषित नीति के अनुपालन स्वरूप अक्षम और भ्रष्ट 3865 कर्मचारी तथा अधिकारी दण्डित।
- मुख्यमन्त्री के पद को लोकायुक्त की जाँच परिधि में लाने का निर्णय ।
- वर्ष 1990-91 के लिये रु0 3370 करोड़ का परिव्यय योजना आयोग द्वारा स्वीकृत। गत वर्ष की तुलना में 13·7 प्रतिशत अधिक निर्धारित।
- संसाधन जुटाने के उपाय सुझाने के लिये आठ सदस्यीय सलाहकार समिति गठित।
- राजस्व बकायों की वसूली के लिये सघन अभियान। नयी नीलामी नीति के फलस्वरूप आबकारी राजस्व में 100 करोड़ रुपये की वृद्धि ।
- 27 लाख गन्ना किसानों को सर्वाधिक मूल्य 41 रुपये तथा 38 रुपये प्रति कुन्तल का लाभ।
- प्रदेश में औद्योगिक विकास की गति तेज करने के विशेष प्रयास। [illegible] योजना में तीन लघु इकाइयों की स्थापना प्रस्तावित।
- ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य के लिये 14 घण्टे विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित ।
- किसानों, बुनकरों, ग्रामीण दस्तकारों के 10 हजार तक के ऋणों की वसूली स्थगित। ऋण माफी के लिये आवश्यक कदम ।
- वृद्धों, विकलांगों तथा विधवाओं की पेंशन को उदार बनाने का निर्णय।
- स्वतन्त्रता संग्राम में अपने लेखन के द्वारा योगदान करने वाले पत्रकारों को सम्मानित करने का निर्णय।
- सरकारी अस्पतालों में सामान्य वार्ड के रोगियों का मुफ्त इलाज तथा भोजन ।
- जिलाधिकारियों को जनता की शिकायतें तत्परता से निवारण करने के निर्देश।
- मुख्य नगरों में निर्बल वर्गों के लिये रैन-बसेरों के निर्माण का निर्णय।
- ब्लाक स्तर पर सार्वजनिक वितरण प्रणाली के केन्द्रों की स्थापना ।
- उपभोक्ताओं की शिकायतों की सुनवाई के लिये सभी जिलों में उपभोक्ता संरक्षण फोरम गठित।
- ऊसर, बीहड़ तथा बंजर भूमि के सुधार के लिये पहली बार भूमि सेना गठित करने का निर्णय।
- प्राथमिक विद्यालयों के लिये प्राथमिकता के आधार पर भवनों के निर्माण का निर्णय।
- पहली बार ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों के निर्माण का निर्णय ।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ० प्र० द्वारा प्रसारित ।

पृष्ठ ९ का शेष....

है कि राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पाँचवें तथा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़कों और लड़कियों को घर में रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजें वह दण्डनीय हों। पिता-माता व अध्यापक अपने लड़का लड़कियों को अर्थ सहित गायत्री मंत्र का उपदेश करें।

महर्षि दयानन्द से "स्त्री शूद्रो नाधीयातामिति श्रुतेः अर्थात स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है" कहकर प्रश्न किया गया कि क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढ़ें। तो उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया कि स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र कोपढ़ने का अधिकार है। उन्होंने उपरोक्त श्रुति किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की न बताकर कपोल कल्पना मात्र बताया था। साथ ही उन्होंने यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय के दूसरे मंत्र को प्रस्तुत करके सब मनुष्यों के वेदादिशास्त्र पढ़ने-सुनने के अधिकार को प्रमाणित किया था:-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।।

क्रमशः

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
चैत्र शुक्ल ६, संवत २०४७ वि
दिनांक १ अप्रैल १९९०
दूरभाष: २४५९९३

नव संवत्सर

वीरेन्द्र "वीर"
निरीक्षक सभा, बरेली

नव सम्वत्सर वर्ष, हर्ष का, साज सजाने आया।
हर जन जन के मन - मानस में, प्यार बसाने आया ।।
वैर द्वेष कटुता क्लेश को, तजें परस्पर प्यार करें।
ऊँच नीच और छूत छात का, मन से दूर विचार करें।।
सब समान हैं सभी मित्र हैं, सभी हमारे अपने हैं।
स्वार्थ मयी संकीर्ण भाव सब, अपने मन से तजने हैं।।
आर्य - धर्म, पर-सेवा व्रत में, निजसर्वस्व लगाना है।
आर्य बनकर मानवता का, सच्चा रूप दिखाना है।।
उठो आर्यो लक्ष्य-साध्य हित, यह सन्देशा लाया।
नव सम्वत्सर वर्ष, हर्ष का, साज सजाने आया ।।1।।
सब के सुख - दुःख में भागी हों, यह संकल्प हमारा है।
सुख से जीवें औ जीने दें, ऐसा शुभ व्रत धारा है।।
प्राणि मात्र के सेवक रक्षक, बन कर हम दिखलायेंगे।
मानवता का "वीर" सभी को, पावन पाठ पढ़ायेंगे।।
नव प्रभात की पावन बेला, मंगल मोद बढ़ायेगी।
हर्ष मयी औ शान्ति दायनी, सुख - सम्पन्न बनायेगी।।
संगठन, एकता, प्रेम, शान्ति की, ज्योति जलाने आया।
नव सम्वत्सर वर्ष, हर्ष का, साज सजाने आया ।।2।।

आवश्यक सूचना

● आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि श्री महावीर जी शास्त्री गाजीपुर उपदेशक सभा को दिनांक 30 जून89 से तथा श्री खेमचन्द्र जी भजनोपदेशक सभा लखनऊ को दि0 31 दिसम्बर 89 से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपनी सेवाओं से पृथक कर दिया है।

अतः प्रदेश की आर्य समाजें उन्हें किसी प्रकार का धन न दें।

● इस वर्ष सभा ने श्री उमेशचन्द्रजी, स्नातक, जिनका निवास- आचार्यनगर-दिबियापुर जिला- इटावा है, को भूसम्पत्ति विभाग का अधिष्ठाता निर्वाचित किया गया है। आर्यसमाजें उपरोक्त पते पर पत्राचार कर सकती हैं।

मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि स २२४१/५७) चैत्र शुक्ल १४ रविवार सवत २०४७ वि. दिनाक ८ अप्रेल १९९० (घोषणा पत्र स ७/२७ २ ८५)



महर्षि दयानन्द सरस्वती वचनामृत

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन का सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड असत्य में झुक जाता है।

सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति का उन्नति का कारण नहीं है।

(सत्यार्थ प्रकाश)

--

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य — रू २५१/
वार्षिक — रू 30/
एक प्रति — १रू मात्र
विदेश में — १५ पौंड

प्रकाशन का ६३ वॉ वर्ष
अंक १३

पवित्र वेदमाता का आह्वान

परिषद में पहुँचने वाले आप्त पुरुष कैसे हों।

इहैवाधि माप च्योष्ठा पर्वत इवाविचाचलत्।

इन्द्रेवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमुधारय ।।

— अथर्ववेद

तू (इह एव अधि) इस परिषद में विजयी बनकर आजा और सत्तावान बनकर अधिष्ठित हो जा (मा अप च्योष्ठा) तू कभी च्युत न होना, कर्तव्य से विमुख न होना (पर्वत इव अविचाचलत्) पर्वत के समान दृढ रहकर, निर्भीक वाणी, दो टूक निर्णय, स्पष्ट नीति एव दलगत राजनीति से ऊपर रहकर सदैव राष्ट्रहित को सम्मुख रखते हुए (इन्द्र इव) सूर्य के समान (ध्रुव) दृढ निश्चयात्मक बुद्धि से (इह तिष्ठ) इस पद पर चमकना और (राष्ट्रम उधारय) राष्ट्र का कल्याण करना। यही तेरा पुरुषार्थ है और यही तेरी विजय है और यही मेरा आशीर्वाद है।

स्वय ही महसूस होता है यहाँ सच्चाइयाँ
जलती रहीं पराहित सदा जो पीढियाँ दर पीढियाँ

मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह को साधुवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री प0 इन्द्रराज एव मन्त्री ------- श्री मन मोहन तिवारी ने प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिह यादव द्वारा प्रदेश के राज्यकार्यों में अनिवार्यत हिन्दी प्रयोग के आदेश निर्गत किए जाने पर समस्त आर्य जनता की ओर से बधाई प्रेषित करते हुए उन्हें अपूर्वदृढ इच्छा शक्ति सम्पन्न दृढनिश्चयी प्रशासक कहा है। आज राष्ट्र को तथा प्रदेश को ऐसे ही दृढव्यक्तित्व वाले लौहपुरूष की आवश्यकता है जो शासकीय निर्णयों के अनुपालन में कठोर से कठोर पग उठाने में जरा भी विचलित न हो।

उत्तर प्रदेश राज्य भाषा अधिनियम 1951 के अन्तर्गत समस्त सरकारी कार्यों में हिन्दी भाषा का प्रयोग अनिवार्य किए जाने की अधिसूचना 30 अक्टूबर 1952 को जारी की गई थी किन्तु लालफीता शाही तथा पूर्ववर्ती सरकारों की ढिलाई के कारण इन आदेशों का उल्लघन भी होता रहा और अंग्रेजी का वर्चस्व यथावत कायम रहा। जनतादल की सरकार बधाई की पात्र है कि उसने विगत 20 मार्च को आदेश जारी करके राज्य के सभी सरकारी विभागों सार्वजनिक निगमों तथा परिषदों में अंग्रेजी के प्रयोग पर तात्कालिक प्रभाव से प्रतिबन्ध लगाते हुए अनिवार्यत देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा के प्रयोग को सुनिश्चित करने का आदेश निर्गत कर दिया है।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ चैत्र शुक्ला १४, संवत २०४७ वि.
८ अप्रैल १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

[illegible]

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने त्रेता में धनुषबाण उठाकर प्रतिज्ञा की थी इस पृथ्वी को निश्चर विहीन कर दूंगा, रावणत्व विहोन कर दूंगा। और ऐसे राम सबके हैं, शबरी के हैं, कौशल्या के हैं, सीता के हैं, हनुमान के हैं, दशरथ के हैं, निषाद के हैं सभी के मुख से उनकी जयजयकार हुई है, दुन्दुभी बजी है। आज भी यह हिन्दू जाति उनका नाम लेकर अपने को धन्य एवं पवित्र समझती है। हम आर्यों के वे पूर्वज हैं, ऐसे पूर्वज जो इतिहास में अद्वितीय हैं, अनुपमेय हैं। मर्यादापालन में जिनकी समता नहीं है- **"तो सो एक तू ही, और दूसरो न राजा राम"** ऐसा कोई राजा अब तक नहीं हुआ, ऐसा कोई पुत्र नहीं हुआ, ऐसा कोई पति नहीं हुआ, ऐसा कोई भाई नहीं हुआ और ऐसा कोई प्रजावत्सल नहीं हुआ। आज प्रजातन्त्र में जनता का बहुमत परखा जाता है, त्रेता में केवल एक रजक के कहने से, नहीं, नहीं उलाहने मात्र से परमप्रिया प्राणरूपा परित्यक्ता हो गई- हृदय से नहीं केवल प्रजातन्त्र का मान रखने के लिए। इतिहास यदि ऐसा कोई व्यक्तित्व प्रस्तुत कर सकता है तो करे, रोका किसने है। पर लाइयेगा कहीं से ऐसा व्यक्तित्व तो वेद की मर्यादाएं उत्पन्न करती हैं और कहीं उसका निर्माण सम्भव ही नहीं है- यही हम आर्यों की डंके की चोट घोषणा है।

हमारा राम अमर है अजर है, सब जगह मौजूद है **"रमन्ते योगिनो ऽस्मिन्निति रामः"**। उसकी पूजा अयोध्या में नहीं हर मानसमन्दिर में हो रही है। बड़ा विचित्र है यह राम, हर घर में झूलते हुए पालने में आपको मिल जायेगा, हर गुरुकुल में वेदपाठी बना हुआ गुरुचरणों में बैठा हुआ मिल जायेगा। अन्याय और अत्याचार से लड़ता हुआ हर युग में मिल जायेगा कभी महात्मा के रूप में कभी वीरवर क्षत्रियों के रूप में, कभी शिवा और प्रताप के रूप में तो कभी अहिंसा और सत्य का आग्रह लिए असहयोगी के रूप में। यही तो राम के रूप हैं जो हर जगह हर काल में मिलते रहे हैं, मिलते रहेंगे। केवल वेद की मर्यादाएं जीवित रखिए- राम कभी नहीं मर सकता, वह अमर है, सृष्टि के अन्त तक अमर रहेगा। हर सृष्टि में उसका उदय होगा। उसने प्रतिज्ञा की थी- **निसिचर हीन करउं महि-** और अभी निश्चरविहीन मही हुई कहां है?

आज हिन्दूजाति अयोध्या मे मन्दिरनिर्माण के लिए कितना धन और शक्ति व्यय कर रही है। काश ! इसका अंशमात्र रामत्व की रक्षा के लिए करे, राम के सपूतों को बचाने के लिए करे। अपहरण की जाती हुई सीताओं की रक्षा के लिए करे। रावणत्व का विनाश करने के लिए करे। आज इस प्यारी कौम को न जाने कितनी ललनाएं चान्द के समान अपने उजले मुख को कलंकभरे काले कपड़ों से ढंके हुए खून के आंसू बहा रही हैं। चीत्कारना चाहती है पर चीख नहीं सकती मुंह बन्धा हुआ है। अब उनसे गोरक्षक नही गोभक्षक पैदा हो रहे हैं।

राम के मन्दिर में पूजा का थाल तो ये ही सजाएंगी अगर यही नहीं रहीं तो मन्दिर में पूजा कौन करेगा। मन्दिरों का महत्व क्या रहेगा- क्या केवल नक्काशी किए पत्थर का टुकड़ामात्र-- आने वाले इतिहास का पुरातत्व----- । रोमन साम्राज्य के ध्वन्सावशेष प्रमाण हैं। लाहौर का डी0ए0वी0 कालेज दूर नहीं है जहाँ बनी हुई यज्ञशाला अब गोवधशाला बनी हुई हमारी जड़बुद्धि की जड़ता पर आठ-आठ आंसू बहा रही है। इसलिए राम के भक्तो! विश्व हिन्दू परिषद के कर्णधारो !! आर्यजाति के शुभचिन्तको!!! आर्यसमाज की आवाज सुनिए- करोड़ों रुपयों में भव्य मन्दिर के निर्माण के साथ-साथ इस धन का बड़ा अंश हिन्दूजाति की इन जीवित मूर्तियों को बचाने में लगाइए। शुद्धि के अभियान में हमारा साथ दीजिए और मरती हुई कौम को बचाइए। यही राम ने कहा था और यही युग की पुकार है। ◘

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

- आर्यमित्र का इस वर्ष का "ऋषिबोध पर्व विशेषांक" देखने को मिला। इस विशेषांक की पूर्ण सफलता हेतु बधाई स्वीकार करें।

आपकी "बुध्येम शरदः शतम" सम्पादकीय बहुत प्रभावशाली, गम्भीर तथा सामयिक है। अंक की शेष सामग्री वस्तुतः अत्यन्त चिन्तनीय, पठनीय एवं संग्रह योग्य है। पूरे पत्र को पढ़ जाने पर ऐसा प्रतीत होता है कि आपने विद्वानों के लेखों, कविताओं को संग्रहकर इसे "अध्यात्म-प्रधान" अंक बना दिया। इसका प्रत्येक लेख संध्या-यज्ञ के पश्चात् "स्वाध्याय" हेतु भी पढ़ा जा सकता है। यदि आप पक्षपात के आक्षेप से मुक्त करें, तो मुझे ब्रह्मचारी विवेक भूषण दर्शनाचार्य (रोजड़, गुजरात) का "योगदर्शन के अनुसार चार प्रकार के दुःख" बहुत प्रिय एवं पठनीय लगा। यों तो सभी लेख अपने आप में विशिष्ट गुण लिये हुए हैं, परन्तु मुझे तो आपकी सम्पादकीय एवं ब्रह्मचारी जी का लेख बहुतप्रिय लगे। बधाई स्वीकार करें।

- मनुदेव "अभय"
विद्यावाचस्पति
सम्पादक "युग प्रभात"
इन्दौर

विशेषांक संग्रहणीय रहा

आर्यमित्र का ऋषिबोध विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। महर्षि-दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

राम कुमार आर्य,
मन्त्री, आर्य युवक परिषद गोहाना (सोनीपत)

--

- आर्यमित्र का ऋषिबोध पर्व विशेषांक बहुत ही उत्तम सम्पादित और मुद्रित था। मेरी बधाई स्वीकार करें। मैं दाएं हाथ की हड्डी टूट जाने से स्वयं लिखने में असमर्थ हूँ। आर्यमित्र के अंक बराबर मिल रहे है।

- ब्रह्मदत्त स्नातक
सी-4 बी 332 जनकपुरी- नईदिल्ली

माननीय तिवारी जी,

सादर नमस्कार,

कृपया 18 फरवरी 1990 का अंक "आर्यमित्र" सधन्यवाद प्राप्त हुआ। अंक में प्रकाशित सामग्री अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं शिक्षाप्रद है आज समाज को ऐसी ही पत्रिकाओं की आवश्यकता है जो भटके हुए समाज को मार्गदर्शन करा सकें। इसके लिए मैं "आर्यमित्र" परिवार को धन्यवाद सहित बधाई देता हूँ।

- नन्द कुमार अवस्थी, पत्रकार
केन्सा, (रायबरेली)

- आपका "आर्यमित्र" बहुत रोचक और सुन्दरढंग से निकलता है। इसके अन्दर वेद सम्बन्धी, राष्ट्र सम्बन्धी व सम्पादकीय लेख आदि काफी रोचक व मनभावक होने के साथ मार्ग दर्शक भी हैं वेद प्रचार के क्षेत्र में इस पत्र का अपूर्व योगदान है।

अतः आपको कोटि-कोटि धन्यवाद
- अरुण कुमार आर्य (मन्त्री)
आर्यसमाज बरा कानपुर-14

निर्वाचन

महिला आर्यसमाज स्टेशनरोड, मुरादाबाद

प्रधान - श्रीमती प्रभा आर्या
मन्त्री - श्रीमती रक्षा आर्या
कोषाध्यक्षा - श्रीमती आशा जैमिनी

पंजाब और काश्मीर को १० वर्ष के लिए सेना के हवाले किया जाए :

— स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

छाता, 9 मार्च सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी-आनन्दबोध सरस्वती ने कहा है कि पंजाब और कश्मीर को दस वर्षो के लिए सेना के हवाले किया जाए।

तहसील प्रांगण में स्थानीय आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में बोलते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार की कमजोर नीतियों के कारण आज पंजाब, काश्मीर में विघटनकारियों के हौसले बढ़े हुए हैं। इस नई सरकार के शासनकाल में उक्त दोनों स्थानों की स्थिति और ज्यादा खराब हो गई है।

स्वामी जी ने आगे काश्मीर की चर्चा करते हुए कहा कि कश्मीर से कश्मीरी पंडित पलायन कर रहे हैं। और कश्मीर में पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लग रहे हैं। अखबारों में सही व पूरे समाचार नहीं आ रहे। उन्होंने पंजाब की स्थिति पर भी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज पंजाब में भी पहले से ज्यादा खून की होली खेली जा रही है। मगर सरकारें चाहे वह राजीव की हो या वी0पी0सिंह की, सब वोट की राजनीति कर रही हैं।

उन्होंने वोट की राजनीति करने वाले नेताओं को सलाह दी यदि उनकी बस की बात नहीं है तो वह पंजाब एवं कश्मीर को सेना के हवाले कर दें तथा इजाजत दे दें तो सेना बारह घण्टे के अन्दर ही पाकिस्तानी गुणगान करने वालों को खत्म कर देगी।

उन्होंने कहा कि आज जो हमारे देश को खतरा बना हुआ है उसके लिए हमें एक होना पडेगा। उन्होंने कहा इस आजाद हिन्दुस्तान में 85 प्रतिशत हिन्दू है और 15प्रतिशत सिख, मुसलमान, ईसाई हैं। मगर आज हिन्दुओं में एकता की कमी है इस कमी को खत्म करने के लिए आर्यसमाज कार्य करेगा।

स्वामी आनन्दबोध ने हरियाणा के मेहम विधानसभा उपचुनाव की हिंसात्मक घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि उपप्रधानमन्त्री चौ0 देवीलाल के बेटे व हरियाणा के मुख्यमन्त्री ओमप्रकाश-चौटाला ने पूरे के पूरे हरियाणा का बेड़ा गर्क कर दिया और जिस तेजी से इस परिवार में विवाद उठ खड़ा हुआ है उसके लिए अब देवी लाल परिवार तैयार हो जाए। जनता आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री एन0टी0रामाराव की तरह हरियाणा से चौटाला व देवीलाल को उखाड़ फेंकेगी। उन्होंने कहा कि मेहम में सैकड़ों माताओं की गोद व सुहागिनों का सुहाग सूना हो गया।

आर्य समाज के सम्मेलन में वी0पी0 सिंह पर प्रहार करते हुए उन्होंने कहा वी0पी0 सिंह ने प्रधानमन्त्री बनते ही जामा मस्जिद के इमाम के आगे झुकना शुरू कर दिया जबकि हिन्दू लोगों से मिलने को समय नहीं है, भारतीय जनता पार्टी द्वारा कश्मीर से धारा 370 वापस लेने व गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग का स्वागत करते हुए स्वामी जी ने कहा यह पार्टी इस चुनाव में व्यापक समर्थन के बाद जनता की भावनाओं की कद्र करेगी।

अन्त में स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती ने राजनीति करने वालों को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि वह सीधे रास्ते पर नहीं चले तो आर्यसमाज जनता को जागृत करने के लिए नहीं चूकेगा। □

"ज्योति का वन्दन हो"

— डा० गणेशदत्त सारस्वत, सीतापुर

§1§

सात्विक जीवन हो, जन - जीवन, शुभ्र सुवासित चन्दन हो।
अन्तर अन्तर में न रहे, समता का स्वचालित स्पन्दन हो।
मानव दानव हो न कहीं, धरती पै न क्रूरता क्रन्दन हो।
दिव्य प्रकाश से दीप्त अनन्त दिगन्त में "ज्योति" का वन्दन हो।

§2§

छिन्न - विछिन्न हों द्वेष के मेघ, विवेक का ऐसा समीर चले।
एकता - बोध अनेकता में रहे, अन्तर आत्म - प्रबोध पले।
स्वार्थ से आवृत बुद्धि न हो, शुभ कर्म करे परमार्थ - ढले।
भक्ति -प्रतीति - प्रदीप्त शिखालिये, प्राण - प्रदेश में "दीप" जले ।

धारा ३७० हटाई जाय

—मनमोहन तिवारी

काश्मीर की वर्तमान भयावह स्थिति पर अपनी गहन चिन्ता व्यक्त करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मन्त्री एवं उ0प्र0विधान परिषद् के लिए लखनऊ स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से उम्मीदवार श्री मनमोहन तिवारी ने कहा है कि हमने संविधान में धारा 370 का प्राविधान काश्मीरियों के अधिकारों की सुरक्षा एवं उनके विशेष आर्थिक हितों के उत्थान को दृष्टि में रखते हुए किया था। किन्तु वर्तमान स्थिति में अब इस धारा के बने रहने का कोई औचित्य ही नहीं है। अतः अविलम्ब संविधान में संशोधन कर इस धारा को समाप्त किया जाये तथा पाकिस्तानी सीमा से लगी काश्मीर पट्टी को खाली कराकर उसमें भूतपूर्व सैनिकों को बसाया जाय। पाकिस्तान में प्रशिक्षण प्राप्त उग्रवादियों ने आज काश्मीर में जो भयावह स्थिति पैदा कर दी है उसे देखते हुए फिलहाल यही एक मात्र उपाय है कि सम्पूर्ण काश्मीर घाटी को सम्प्रति पाँच वर्ष के लिए सेना के हवाले कर दिया जाये

आज वहाँ राष्ट्रविरोधी तत्व इतने उग्र होकर हमला कर रहे है कि वहाँ से आये हुए विस्थापित पुनः वहाँ जाने को तब तक तैयार नहीं हैं जब तक कि उनके जान माल के रक्षा की पूरी गारण्टी न हो । जब शासन विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा करने में ही असफल हो रहा है तो साधारण नागरिक की सुरक्षा की क्या गारण्टी हो सकती है। इसके साथ ही हमारे काश्मीर का जो हिस्सा पाकिस्तान ने अनधिकृत रूप से अपने कब्जे में ले रखा है उसे अविलम्ब वापस लेकर काश्मीर के प्राचीन स्वरूप और गरिमा को पुनः स्थापित किया जाय।

श्री आर्यमुनि वानप्रस्थ अस्वस्थ

भागलपुर- देवरिया, आर्यवीर दल पू0 उ0प्र0 के कार्यवाहक संचालक श्री आर्यमुनि जी वानप्रस्थ को टंकारा यात्रा से लौटते वक्त अहमदाबाद स्टेशन पर पैर फिसल जाने से गम्भीर चोट आयी है। अस्वस्थता की स्थिति में श्री आर्यमुनि जी अपने पारिवारिक आवास केराकत §जौनपुर§ में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

क्षेत्रीय नागरिकों व आर्यवीरों की एक बैठक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान - श्री डॉ0 कस्तूरीलाल जी आर्य की अध्यक्षता में की गयी जिसमें परमपिता परमेश्वर से श्री आर्यमुनि जी के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की गयी।

बरेली मण्डल में निरीक्षण कार्य

जिला शाहजहाँपुर रामपुर, बदायूँ, पीलीभीत और बरेली के आर्यसमाजों का निरीक्षण करने हेतु बरेली निवासी श्री वीरेन्द्र जी वीर को नियुक्त किया गया है। श्री वीर जी के पहुँचने पर उनके आवास की व्यवस्था करें तथा आर्यसमाज का निरीक्षण कराने में हर सम्भव सहयोग प्रदान करें।

सभा प्राप्तव्यधन दशांश, वेदकोट, "आर्यमित्र", मार्गव्यय आदि देकर सभा की रसीद प्राप्त करें।

- सभामन्त्री।

मानव निर्माण और आर्यसमाज

गतांक से आगे....

• डा० प्रशान्त वेदालंकार
स्वरूप नगर, दिल्ली

महर्षि ने "आच.रः परमो धर्मः" (मनु) आदि की व्याख्या में स्पष्ट कहा है कि कहने, सुनने, सुनाने, पढ़ने, पढ़ाने का फल यही है कि जो वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित धर्म का आचरण करना, इसलिए धर्माचार में सदा युक्त रहे क्योंकि जो धर्माचरण से रहित है वह वेद प्रतिपादित धर्मजन्य सुखरूप फल को प्राप्त नहीं हो सकता। और जो विद्या पढ़ के धर्माचरण करता है वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त हो सकता है।

आचारः परमोधर्मः श्रुत्युक्तःस्मार्त·एव·च
तस्मादस्मिन्सदायुक्तोनित्यंस्यादात्मवान्·द्विजः।

आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत।।
- मनु० ।।।08०।09

सदाचार के लिए महर्षि ने यम-अहिंसा,सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा नियम-शौच, संतोषतप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान-- इन दोनों का सेवन करने का उपदेश दिया है। इनमें धर्म के प्रायः सभी लक्षण समाविष्ट हो जाते हैं। इसी प्रसंग में महर्षि ने इन्द्रिय संयम पर विशेष बल दिया है।

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छन्त्यसंशयम्।
सन्नियम्य तु तान्येव ततः सिद्धि·नियच्छति।
मनु० 2/93

अर्थात जोवात्मा इन्द्रियों के वश होके बड़े-बड़े दोषों को प्राप्त होता है और जब इन्द्रियों को अपने वश में कर लेता है तभी सिद्धि को प्राप्त होता है।

आचरण विषयक तत्वों को शिक्षा का अंग मानकर इनको जोवन में सिद्ध करने के लिए महर्षि आचार्य को कहते हैं कि गायत्री, संध्योपासन, स्नान प्राणायाम आदि सिखलावें। देह, मन, आत्मा और बुद्धि सभी को पवित्रता व विकास के लिए उन्होंने मनु का निम्नलिखित श्लोक उद्धृत किया है--

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।
मनु० 5/109

जल से शरीर के बाहर के अवयव, सत्याचरण से मन, विद्या और तप अर्थात सब प्रकार के कष्ट भी सह के धर्म ही के अनुष्ठान करने से जोवात्मा, ज्ञान, अर्थात पृथ्वी से ले के परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के विवेक से बुद्धि दृढ़ निश्चय व पवित्र होती है। प्राणायाम के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं। प्राणायामादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिरा-विवेकख्यातेः (योगसूत्र) अर्थात् जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश हो जाता है।

इस प्रकार महर्षि द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली (ब्रह्मचर्याश्रम) में मनुष्य का शरीर पुष्ट मस्तिष्क उर्वर तथा आत्मा विशाल बनाता है।

शिक्षा की समाप्ति पर गुरु अपने शिष्यों की रुचि और योग्यता के आधार पर उनका वर्ण नियत करते हैं। व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बनकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं। किसी भी समाज अथवा राष्ट्र का आधार ज्ञान, शक्ति और सम्पत्ति होती है। उक्त वर्ण राष्ट्र में इन तीनों का पूर्ण विकास करते हैं। साथ ही वे इस काल में आदर्श सन्तान की उत्पत्ति व उनका समुचित पालन पोषण करते हैं। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते समय हमारे देश में अनेक प्रकार की कुरीतियां (बाल, वृद्ध-विवाह आदि) उत्पन्न हुई हैं। जिसका कारण मनुष्य-जोवन पशुवत रहा है। महर्षि ने उन सभी कुरीतियों पर कठोर प्रहार किये। उन्होंने स्त्री-शिक्षा के साथ युवक युवतियों को स्वयंवर का अधिकार देना, बाल-अनमेल-वृद्ध और बहु-विवाह दहेज आदि का विरोध तथा विधवा-विवाह का समर्थन आदि सामाजिक कार्यों से व्यक्ति निर्माण में ही योग किया।

आश्रम व्यवस्था का आर्थिक पहलू भी महत्वपूर्ण है। अधिकांश राष्ट्र आर्थिक विपदा के शिकार हैं और नवयुवक बेकारी का दण्ड भोग रहे हैं। इसका कारण धन अर्जित करने व उसके भोग पर किसी समय की सीमा का अभाव है। वर्तमान युग में व्यक्ति 18-20 वर्षों की आयु से कई तो इससे भी पूर्व धनार्जन में व्यक्ति गृहस्थी होने पर ही अर्थात 25-26 वर्षों की आयु से 50-60वर्ष की आयु तक ही धन कमाते हैं। फिर वानप्रस्थ ले लेते हैं। उच्च पदों पर आसीन व राज्याधिकारी भी इसी समय तक पद या सत्ता का उपभोग कर सकते हैं। आज का व्यक्ति वार्द्धक्य में भी भोगों में लिप्त रहता है। आश्रम व्यवस्था उसकी इस भोग वृत्ति पर भी अंकुश लगाती है। अर्थ की चिन्ताओं व भोगों में विरक्त व्यक्ति अपने शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक विकास में लग जाता है। सभी दृष्टियों से अशक्त हो जाता है। इसके विपरीत आश्रम व्यवस्था में वह सांसारिकताओं से मुक्त होकर अपना सर्वांगीण विकास करता है।

आज का व्यक्ति वृद्धत्व को अभिशाप मानता है, पर आश्रम-व्यवस्था के अनुसार वे वानप्रस्थी बनकर अपने ज्ञान का विस्तार करते हैं तथा शिक्षा के प्रसार में योग देते हैं। यहां तक कि 75 वर्ष की आयु में संन्यासाश्रम में प्रवेश करके भी लोकोपकारी कार्य करने में वे सक्रिय रहते हैं।

इस प्रकार आश्रम प्रणाली में व्यक्ति के जोवन में भोग और त्याग का अद्भुत विधान है। व्यक्ति ब्रह्मचर्यकाल में धर्म (जिसका एक अंग विद्या है) गृहस्थ में अर्थ और काम तथा वानप्रस्थ और संन्यास में मोक्ष के लिये प्रवृत्त होना है। तभी मानव-निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण होती है।

(ग) वर्ण व्यवस्था तथा सुदृढ़ राज्य व दण्डनीति- महर्षि ने वर्ण-व्यवस्था को जन्मानुसार न मान गुणकर्मानुसार मानकर उस पर लगे आरोपों को नष्ट किया है। महर्षि द्वारा प्रतिपादित वर्ण-व्यवस्था में यह अनिवार्य है कि सभी बच्चों को शिक्षा आदि की सुविधाएं समान मिलें, वे लगभग 20 वर्षों तक शिक्षा-संस्थाओं में रहकर अपना विकास करें। और तब उन्हें अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार वर्णों के चयन का अधिकार हो। इस पद्धति से शूद्र-सन्तान भी उच्च वर्णस्थ हो जाती है। ब्राह्मण राष्ट्र में अज्ञान को, क्षत्रिय अन्याय को तथा वैश्य आर्थिक अभाव को नष्ट करने का व्रत लेते हैं। शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर मिलने पर भी जो पढ़ न सके वही शूद्र होता है। महर्षि के अनुसार शूद्र की संतान शूद्र नहीं, वरन् जो विद्याहीन, जिसको पढ़ने में भी शिक्षा न आ सके, शरीर से पुष्ट सेवा में कुशल है : वह शूद्र है (संस्कारविधि) पढ़ाई का अवसर मिलने पर भी जो न पढ़ सके, ऐसे लोग निश्चय ही कम होंगे। वे शूद्र भी समाज के लिए उपयोगी हैं। अन्य वर्णों की भोजन-निर्माण आदि कार्यों में सहायता कर वे भी प्रकारान्तर से ज्ञान, न्याय व अर्थ की वृद्धि करते हैं। महर्षि के अनुसार इनके साथ सामाजिक व्यवहार में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए।

वर्ण-व्यवस्था में जो वर्ण अपने कर्तव्य का पालन नहीं करना, यदि ब्राह्मण विद्यादान, क्षत्रिय प्रजा की रक्षा और वैश्य धनोत्पादन कर उसका राष्ट्र के लिए उपयोग नहीं करता राजा उसे दण्ड देता है और उससे उसका कर्तव्य करवाता है।

प्रजातन्त्र पर आधारित सुदृढ़ राज्य व दण्ड नीति भी मानव-निर्माण के लिए आवश्यक है। शिक्षा व चरित्र के लिए विद्यार्य, रक्षा व अर्थ के लिए राजार्य तथा न्याय और समाजोन्नति के लिए धर्मार्य सभा बना कर सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया है। ग्रामराज्य व पंचायत व्यवस्था का भी उन्होंने परामर्श दिया। "दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः" (मनु) सिद्धान्त के अनुसार दण्डव्यवस्था से व्यक्ति को कर्तव्यों के प्रति सजग किया है पर दण्ड तभी फलदायी होता है, जब व्यक्ति को मालूम हो कि शासन हमारे पिता के समान हितैषी है। उन्होंने सुदृढ़ रक्षा व न्याय व्यवस्था से प्रत्येक मानव के मनोबल को ऊँचा उठाया है।

क्रमशः

वैदिक विवाह सम्पन्नः-

तपी प्रसाद हाईस्कूल भी ढोया (सिवान) के प्रांगण में प्राचार्य श्री दिनेशचन्द्र सिंह कामरेड (मार्क्सवादी) की सुपुत्री का विवाह 4 फरवरी की रात्रि में नालन्दा के वैदिक विद्वान डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ वामपंथी लोगों के बीच में वैदिक विवाह की व्याख्या बड़ी ही प्रभावशाली रही । लोगों ने अपने सन्तान का विवाह इसी पद्धति से कराने की इच्छा प्रकट की।



महिला मण्डल

नारी जागृति और आर्य समाज

• श्रीमती दर्शन भारद्वाज
आजमगढ़

गतांक से आगे....

अर्थात् परमेश्वर कहता है कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारो ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश करता हूँ वैसे तुम भी किया करो। देखो वेद में कन्याओं के पढ़ने का प्रमाण:-

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्
-अथर्व0 कां0 11/प्र024/अ03/म0 18

जैसे लड़के ब्रह्मचर्य-सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवती, विदुषी अपने अनुकूल प्रिय सदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं, वैसे कुमारी वृह्मचर्य सेवन सेवेदादि शास्त्रों को पढ़ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होके पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश प्रिय विद्वान पूर्ण युवावस्था युक्त पुरुष को प्राप्त होवे। इसलिए स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिए। ऋषि से प्रश्न किया गया कि क्या स्त्री लोग भी वेद पढ़े। उन्होंने उत्तर दिया अवश्य, देखो श्रौतसूत्रादि में "इमं मन्त्र पत्नी पठेत" अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े।" जो वेदादि शास्त्रों को पढ़ी होवें तो यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सकें। भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि वेदादिशास्त्रों को पढ़ के पूर्ण विदुषी हुई थीं- यह शत पथ ब्राह्मण ने स्पष्ट लिखा है। देखो आर्यावर्त के राजपुरुषों की स्त्रियों धनुर्वेद अर्थात् युद्ध विद्या भी अच्छे प्रकार जानती थीं, क्योंकि जो न जानती होतीं तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकतीं और युद्ध कर सकतीं।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में भी मनु को उल्लिखित करते हुए कहा है.-

सन्तुष्टो: भार्यया भर्त्ता भर्त्रा आर्या तथैव च
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्
स्त्रियां तु रोचमानायां सर्व तद्रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोच ते।।

अर्थात् जिस कुल में भार्या से भर्त्ता और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती हैं, उसी कुल में सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। जहाँ कलह होता है वहाँ दौर्भाग्य और दारिद्रय स्थिर होता है। जिस स्त्री की प्रसन्नता में सब कुल प्रसन्न होता है उसकी अप्रसन्नता में सब अप्रसन्न अर्थात् दु:ख दायक हो जाता है उन्होने और आगे मनु की बात को बढ़ाते हुए व्यक्त किया -

स्त्रियों रत्नान्यथो विद्या सत्यं शौचं सुभाषितम्।
विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वत:।।

अर्थात् उत्तम स्त्री नाना प्रकार के रत्न, विद्या, सत्य पवित्रता, श्रेष्ठभाषण और नाना प्रकार की शिल्प विद्या- कारीगरी सब देश तथा सब मनुष्यों से ग्रहण करे। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने अपने दूसरे अमर ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में स्त्रियों की पुरुषों से समानता को प्रतिपादित किया है। इसमें भी वेद के प्रमाण द्वारा सब-स्त्री पुरुषों को वेदादि शास्त्रों के अध्ययन का अधिकारी बताया है। स्त्री लोग भी राज्य पालन के लिए विद्या की शिक्षा सन्तानों को करती रहें- यही सन्देश ऋषि ने इस ग्रन्थ में दिया है। ऋषि दयानन्द ने जहाँ स्त्री-पुरुष दोनों के समान विकास और विद्याग्रहण पर ध्यान दिया है, वहाँ उन्होंने इनकी पारस्परिक पवित्रता पर विशेष बल दिया है। उन्होंने लड़के-लड़कियों के गुरुकुल नगर से बाहर एक दूसरे से दूर रखने का निर्देश देते हुए कहा कि लड़कों की पाठशाला में पाँच वर्ष की कन्या भी न जाये और कन्याओं की पाठशाला में पांचवर्ष का लड़का भी न जाये, जिससे ये दोनों अपने निर्दिष्ट उद्देश्य विद्या की पूर्ति में निरन्तर निरत रहें।

महर्षि दयानन्द तथा उनके अनुयायी आर्यसमाज ने वेद और ऋषि के उत्तम उपदेशों को क्रियात्मक स्वरूप भी प्रदान किया। सर्वप्रथम अपनी कन्याओं को विद्यालयों में भेजा। कन्याओं के लिए विद्यालय बनाये। इनकी अन्यों के द्वारा आलोचना की गई, किन्तु कालान्तर में अन्य व्यक्ति भी अपनी कन्याओं को इन विद्यालयों में प्रवेश हेतु आगे लाये। इस प्रकार आर्यसमाज के निरन्तर नारी उद्धार सूचक प्रचार से प्रभावित होकर आत्म विश्वास के साथ कन्याओं ने घर की चार दीवारी से बाहर आकर विद्या ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया। धीरे-धीरे न केवल भारत में अपितु विश्व में नारी को उचित मान्यता स्थापित हो गई। नारियाँ सती-साध्वी ही नहीं विदुषी, शिक्षिका, उदघोषिका, डाक्टर, अभियन्ता, आरक्षी-सैनिक, विमान कार्मिक, तथा अन्यान्य पदों पर कार्यारूढ़ हो गईं। राज नेता ही नहीं अनेक देशोंकी शासनाध्यक्षा, प्रधानमन्त्री के गरिमामय उच्चपदों पर भी आसीन हो गईं। यदि महर्षि-दयानन्द ने यह मार्ग प्रशस्त न किया होता, नारी ज्ञान-सम्मान की यह चिनगारी न जलाई होती तो भला स्त्री-प्रतिष्ठा का यह ज्योति पुंज कैसे प्रकाशमान होता।

महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी आर्यसमाज द्वारा घोषित नारी जागृति की नीति को तीन श्रेणियों में संसार ने स्वीकार किया है। प्रथम श्रेणी तो वह है जिसने वेद-दयानन्द और आर्यसमाज की बात को ज्यों का त्यों मान लिया और उसका पालन किया। द्वितीय श्रेणी वह है जिसने ज्यों का त्यों तो नहीं माना, प्रत्युत ऊपरी ताना अपने ढंग का ही रखा, और भीतरी बाना वेद के सन्देश से बुन लिया। इसी लिए उन्होंने अपने धर्म ग्रन्थ यथा बाइबिल, कुरआन, पुराण, रामायण आदि के स्त्री कथ्य अंशों की शब्द रचना में कोई भी परिवर्तन किये बिना उसके रूढ़ अर्थों को रूपान्तरित करना आरम्भ कर दिया। तृतीय श्रेणी वह है जिसने या तो माना नही या फिर जागरूक नारी के भय से या लोक-लाज से ऊपरी ढंग से तो मान लिया, पर मन से घृणा व द्वेष को दूर नही किया ।

एक उदाहरण प्रस्तुत है। अभी कुछ अवधि पूर्व नई दिल्ली के लक्ष्मीनारायण मन्दिर में देश के प्रतिष्ठित धनपति ने महान दार्शनिक स्वामी अखंडानन्द-सरस्वती को आमन्त्रित कर सुन्दर आध्यात्मिक प्रवचन पूरे एक पक्ष तक कराये। दिन प्रतिदिन ईश्वर, आत्मा व मोक्ष की चर्चा वेदानुसार हुई, किन्तु अन्तिम प्रवचन के समय विज्ञ श्रोता ने स्वामी जी से प्रश्न कर दिया-- गायत्री मन्त्र का महत्व बतायें और यह भी बतायें कि ये मन्त्र स्त्रियों के लिए वर्जित क्यों है। स्वामी जी ने उत्तर दिया उसमें गायत्री मन्त्र की अच्छी महत्ता बताई, किन्तु स्त्रियों को यह वर्जित क्यों है, इसके उत्तर को घुमा दिया। उन्होंने मानस की एक चौपाई की अर्धाली "राम-सकल नामन ते अधिका" प्रस्तुत करते हुए कह दिया कि राम नाम सभी रोगों की औषधि है उसे तो करते नहीं, और जिस पर रोक टोक है उसको करना चाहते हैं। यह ऋषि दयानन्द का बनाया वातावरण ही था, जिससे स्वामी जी चाहते हुए भी नारी को गायत्रीमन्त्र से वर्जित नहीं कह पाये।

इसी प्रकार दयानन्द की यह क्रान्ति मुस्लिम सम्प्रदाय में भी प्रवेश कर गई। अनेक दशाब्दियों तक साथ-साथ वैवाहिक जीवन व्यतीत करते हुए कई वयस्क सन्तानों वाले एक पुरुष ने अपनी पत्नी शाहबानों को तलाक दे दिया और भरण-पोषण के लिए यथोचित साधन की व्यवस्था भी नहीं की। अन्ततोगत्वा ऋषि के दिये साहस के बल पर वह महिला न्यायालय पहुँच गई, जिसने उसके लिए जीवन निर्वाह राशि को स्वीकार किया। फलस्वरूप इस्लाम मतावलम्बियों ने अपनी शरीयत का नारा बुलन्द करके आन्दोलन छेड़ दिया। उधर अनेक मुस्लिम महिलाओं ने भी अपना संगठन बना कर इस शरीयत के अन्यायी प्रावधान का विरोध किया। विश्व में अब भी अनेक ऐसे देश हैं जो नारियों को पूर्ण मताधिकार प्रदान नहीं करते हैं, उनकी साक्षी को स्वीकार नहीं करते हैं, किन्तु इनकी संख्या निरन्तर न्यून होती जा रही है, और सभी शनै:-शनै: नारी मुक्ति और जागृति की ज्योति के नीचे आते जा रहे हैं।

ऋषि दयानन्द ने वेद की ध्वनि प्रतिध्वनित कर नारी की प्रतिष्ठा स्थापित की, किन्तु यह इतिश्री नही है। जिस प्रकार भागीरथ अपनी अखण्ड तपस्या साधना व पुरुषार्थ से गंगा के अवतरण में सफल हुए, तो क्या उनका कर्तव्य पूर्ण हो गया, अपितु कर्तव्य तो अब प्रारम्भ हुआ है। गंगा की अजस्र

शेष पृष्ठ ११ पर

"अँग्रेजी हटाओ, अँग्रेजियत मिटाओ"

ईसाई मिशनों द्वारा धार्मान्तरण का व्यापक जाल बिछा दिया गया है। मैंने हमेशा इस बड़े पैमाने पर होने वाले राष्ट्रघाती धर्मान्तरण को रोकने के लिए समस्त हिन्दू संगठनों से अपील की है परन्तु हिन्दू संगठनों में व्याप्त निष्क्रियता तथा स्वार्थपरता के कारण इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य में अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 का मौखिक, नैतिक तथा सक्रिय समर्थन अवश्य प्राप्त होता रहा है तथा पूर्ण विश्वास है कि उनका नैतिक, आर्थिक तथा सक्रिय समर्थन मुझे भविष्य में भी प्राप्त रहेगा। उनके अमूल्य सहयोग के लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। वस्तुत यह रक्षा अभियान मेरा व्यक्तिगत कार्य नहीं है बल्कि यह एक राष्ट्रीय, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विरासतों की रक्षा का पुनीत अभियान है जिसमें प्रत्येक राष्ट्रवादी तथा धर्म प्रेमी नागरिक की समान भागीदारी है। अपने राष्ट्र तथा धर्म की रक्षा का जितना दायित्व मेरा है उतना ही दायित्व आप सबका है। हमारे देश की अनेकता में एकता का कारण हमारा (सम्पूर्ण राष्ट्र का) एक ही आध्यात्मिक-सांस्कृतिक विरासत का होना है। आज राष्ट्र-द्रोही शक्तियों के द्वारा इसी आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक विरासत को नष्ट करने का व्यापक पैमाने पर अभियान चलाया जा रहा है। यदि हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक श्रेष्ठता के गौरवमय इतिहास को विकृत तथा धूमिल करने के कुप्रयासों का समुचित रूप से मुकाबला नहीं किया गया तो भारत की एकता तथा अखण्डता के अक्षुण्ण रहने की बात दिवा स्वप्न बनकर रह जायेगी।

आज के युवा वर्ग के भटकाव का कारण उनमें अपने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा गौरवमय इतिहास के प्रति अनभिज्ञता का होना है। भारतीय अध्यात्म में (वेदों में) उपनिषदों में वर्णित **"संतोष"** का स्थान पाश्चात्य आध्यात्मिकता से पनपी **"तृष्णा"** ने ले लिया है। अपने सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विरासत पर **"गर्व करने"** का स्थान **"हीन भावना"** ने लिया है। प्राचीन काल में शोषण, अत्याचार तथा सामाजिक अन्याय आज से कहीं अधिक था परन्तु अपनी धर्म-संस्कृति के प्रति लोगों में श्रद्धा तथा गौरव की भावना थी और इसी कारण जब उन्हें धर्मान्तरण या मृत्यु में से किसी एक को चुनना होता था तो वे धर्मान्तरण को नहीं बल्कि मृत्यु को चुनते थे। सात सौ वर्षों के मुसलमान साम्राज्य की अधीनता ने जहां तलवार के बल पर व्यापक धर्मान्तरण किया वहीं 175 वर्षों के ब्रिटिश आधिपत्य ने हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को घिनौने रूप में प्रस्तुत कर उन्हें पाश्चात्य आध्यात्मिकता की खोखली चमक-दमक द्वारा मुस्लिम साम्राज्य से घायल, आहत हमारी आध्यात्मिक निधि को और आहत कर उसके प्रति "हीन भावना" का संचार किया।

ब्रिटिश आधिपत्य के दौरान अंग्रेजी तथा ईसाइयत को ग्रहण करने वालों को प्रशासनिक सेवाओं में वरीयता दी गई तथा सामाजिक रूप से उन्हें कुछ ऊँचा स्तर (हिन्दुओं की अपेक्षा) प्रदान किया गया। सैकड़ों साल की गुलामी के कारण हीन भावना से ग्रसित लोगों (हिन्दुओं ने) बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण कर ईसाइयत को अपना लिया।

दूसरी तरफ हिन्दुओं में एक आभिजात्य वर्ग का उदय होना प्रारम्भ हुआ जो अंग्रेजी, अंग्रेजियत तथा पाश्चात्य सभ्यता और वेशभूषा को अपना कर शासन तथा अंग्रेजों की जो हुजूरी करने में अपने को भाग्यशाली तथा गौरवान्वित अनुभव करने लगा। इसी आभिजात्य वर्ग (काले साहबों) ने अंग्रेजों को प्रसन्न करने तथा स्वतन्त्रता आन्दोलन को कुचलने के लिए स्वतन्त्रता आन्दोलन तथा क्रान्तिकारियों पर कहर ढाए। इस आभिजात्य वर्ग (काले साहबों) को अपने राष्ट्र-धर्म-संस्कृति की अपेक्षा अंग्रेजों की चापलूसी तथा गुलामी प्रिय थी। इस वर्ग ने ब्रिटिश साम्राज्य में पद और सम्मान पाने के लिए अपने ही भाइयों का खुलकर खून बहाया।

स्वतन्त्रता के बाद भी इसी आभिजात्य वर्ग (काले अंग्रेजों) का प्रशासन तथा धार्मिक, राजनीतिक और शैक्षणिक संस्थाओं पर वर्चस्व है। यह लोग, पाश्चात्य सभ्यता तथा पाश्चात्य संस्कृति के पोषक तथा प्रसारक हैं। गुलामी की मानसिकता के शिकार हैं और ये सम्पूर्ण राष्ट्र को गुलामी की मानसिकता का शिकार बनाने का दुष्चक्र कर रहे हैं।

जब तक अंग्रेजी और अंग्रेजियत से ग्रस्त लोगों का सामाजिक बहिष्कार नहीं किया जाता तथा अंग्रेजी और अंग्रेजियत के विरुद्ध एक व्यापक प्रभावशाली आन्दोलन नहीं किया जाता तब तक राष्ट्र की स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं है। हमने राजनीतिक स्वतन्त्रता पाई है परन्तु अभी तक अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत के हम गुलाम हैं। हमारी राजनीतिक स्वतन्त्रता अधूरी है। जब तक हम अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत की गुलामी से मुक्त नहीं होते हमारी आजादी निरर्थक है।

मैं छात्रों, छात्र नेताओं, शिक्षकों, अभिभावकों, युवक, युवतियों तथा माताओं, बहनों से अपील करता हूँ कि आप सब अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत के विरुद्ध हमारे संघर्ष में सम्मिलित होकर "अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत समाप्त करो" जैसे पुनीत आन्दोलन में हमारा सहयोग कर पाश्चात्य भाषा और संस्कृति को समाप्त करने के लिए सरकार, प्रशासन तथा समाज में अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत के गुलाम एजेन्टों को पराजित कर अधूरी स्वतन्त्रता को पूर्ण स्वतन्त्रता में बदल दें।

आन्दोलन कैसे करें?

1- अपनी दुकानों तथा मकानों के साइन बोर्ड और नाम पट्टिका को हिन्दी में लिखा करें।

2- अपने कारों, स्कूटरों तथा अन्य भारी और हल्के वाहनों के नम्बर हिन्दी में लिखें या लिखवाएं।

3- सरकारी कार्यालयों तथा शिक्षक संस्थाओं से पत्र-व्यवहार केवल हिन्दी में करें।

4- अपने हस्ताक्षर केवल हिन्दी में करें।

5- विवाह, जन्मदिवस, गृह प्रवेश इत्यादि के निमन्त्रण पत्र केवल हिन्दी में छपवायें।

6- सरकारी कार्यालयों, बैंकों शिक्षण संस्थाओं तथा अन्य प्रतिष्ठानों में जहाँ कहीं भी साइन बोर्ड इत्यादि अंग्रेजी में लिखे हों उस पर तारकोल (कालिख) पोत दें प्रशासन द्वारा प्रतिरोध करने पर शान्तिपूर्ण आन्दोलन (जुलूस, रास्ता जाम तथा असहयोग आन्दोलन) करें।

7- अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत के विरुद्ध सभायें, जुलूस, जनसम्पर्क तथा नुक्कड़ सभायें करें तथा लोगों में गुलामी की प्रतीक अंग्रेजियत के विरुद्ध जन-जागरण करें।

8- अंग्रेजी माध्यम स्कूलों को समाप्त करने हेतु सशक्त तथा प्रभावशाली आन्दोलन करें।

कोई भी राष्ट्र तथा उसकी स्वतन्त्रता की पहचान उसकी अपनी भाषा और संस्कृति से होती है। अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य संस्कृति हमारी पहचान नहीं है। हमारी पहचान हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति है। हमारे पूर्वजों ने अपने बलिदानों द्वारा हमें राजनीतिक स्वतन्त्रता दिलाई और हम अपना बलिदान देकर अपनी मातृभूमि को उसकी पहचान (हिन्दी भाषा) तथा आत्मा (भारतीय-संस्कृति) दिलायेंगे।

जय भारत माता। जय राष्ट्र भाषा।

—जयन्त कुमार आर्य

कार्यालय
आर्यसमाज मन्दिर,
बुढ़ाना द्वार, मेरठ

महामन्त्री,
राष्ट्र रक्षा - युवा आन्दोलन
उ0प्र0, लखनऊ।

सम्पर्क स्थान -
1245, गौरीपुरा, मेरठ।

शोक समाचार

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा आजमगढ़ के प्रधान श्री पं0 सीताराम शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति देवी का दिनांक 5 जनवरी 90 को निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। शान्ति यज्ञ में 500 हरिजनों और दलितों को सहभोज में आमन्त्रित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज आजमगढ़ को यजुर्वेद भाष्य दान में दिया।

सभा मंत्रीजी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

नव वर्षाभिनन्दन

चैत्र शुक्ल १ सम्वत् २०४७ विक्रमी

— डॉ० कुँवर आनन्द सुमन सिंह
वैदिक प्रवक्ता

कालस्य चक्रं परिवर्तमानं ध्रुवास्यनाभि धर्मो वरेण्यः ।
सूर्यो भ्रमन् धार्मिक एक निष्ठो रात्रिं दिनं वर्ष-युगानि चक्रे ।।1।।

काल का महाचक्र परिवर्तनशील है किन्तु उसका नाभि
केन्द्र वरणीय धर्म नियम अटल है, उसका प्रतिनिधि सूर्य
एक निष्ठ धर्म प्राणयात्री की तरह राशियों पर भ्रमण
करता हुआ दिन, रात, वर्ष और युगों का निर्माण करता है।

●

शिवलिंगमेकं वरमन्दिरेण , चक्रे पुरायो मेदिनोस्थम्,
स विक्रमादित्यजयी नरेन्द्रो, भुवि विक्रमाब्दं कृतवान् जयांकम् ।।2।।

प्राचीन काल में जिस वीर विजयी राजा विक्रमादित्य ने
मख-मेदिनी (मक्का-मदीना) में एक शिवलिंग तथा भव्य
मन्दिर की स्थापना की थी, उन्हीं विश्व विजयी
विक्रमादित्य ने अपने विजय चिन्ह के रूप में विक्रमीय
संवत् की स्थापना की।

●

राष्ट्र कुतो ? राजत एव राज्ञा सत्संस्कृते र्दिव्य प्रकाशवाही।
अयं समाजो बहुधा विवाचो विकासमीयान्नव विक्रमाब्दे ।।3।।

सम्प्रभुता सम्पन्न राज नियन्त्रण में सुन्दर संस्कृति
के प्रकाश से दीप्ति मान भू-भाग ही हमारा राष्ट्र है।
विविध भाषा भाषियों से युक्त यह समाज इस नवीन
विक्रमाब्द में पूर्ण विकास को प्राप्त हो ।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

आर्य समाज बदायूँ के सौजन्य से

राम का नाम "मैथेवक" अपर्याप्त है, क ? करने हैं जैसे किये राम ने ।
राम का नाम अभिवादनों में लिया, राम का नाम स्वागत विदा में लिया।।
अपने नामों को उनसे रहे जोड़ते, उनकी मर्यादा से मुँह मगर मोड़ते ।
भाल होता समुन्नत सकल विश्व में, उनके आदर्श जीवन में गर ढालते।।1।।

राम वेदज्ञ थे, हम तो पढ़ते नहीं, निज चरित्रों का हम ध्यान धरते नहीं।
रामने कब कहा था कि कायर बनो, क्यों अनाचार से आज भिड़ते नहीं।।
राम होते कहीं जो हमारी तरह, घर से जाने नहीं ना असुर मारते।।2।।

राम ने पूर्वजों का बढ़ाया था यश, वह समझते थे परद्रव्य को लोष्टवत ।
उनकी यश कीर्नि के हम ही घातक बने, घर की बधुएं जलाते रहे द्रव्य हित।।
राम निर्लोभ थे, जीतकर भी कभी, स्वर्ण लंका को देखा नहीं राम ने।।3।।

राम ने राज निज दे दिया भ्रात को, वाद पितृदाय के हमने दायर किये।
सूपर्णखा डिगा न सकी राम को, फाइव स्टार संस्कृति में हम गिर गये।।
पाठ रामायणों के ही होते रहे, अर्थ समझे नहीं तो यह किस काम के ।।4।।

राम का यज्ञमय सारा जीवन बना, यज्ञ रक्षा को वन-वन मारे फिरे।
उनकी सन्तति मजारों में सिजदे करे, बुद्धि बल से रहित होकर कितने गिरे।।
आर्य सन्तति रही नींद में यूँ मग्न, नाश भारत का निश्चित ही है सामने।।5।।

राम ने निर्धनों को दिया प्यार था, बेर शबरी के खाये परम प्रीति से ।
जाति वानर के हृदयों को ही जीतकर, राम लौटे थे लंका से रण जीत के।।
बिछुड़े भाई न हमने लगाये गले, तो गले न बचेंगे रहे याद ये।।6।।

राम थे शुद्ध और सात्विकी वृत्ति के, उच्च आदर्श हमको गये सिखा।
नयन से अश्रुधारा नहीं तब रुकी, भक्त द्वारे पै मधुशाला के दिखा ।
मांस - मदिरा तजो, वेद मारग गहो, ऐसे कारज करो जिससे बिगड़ी बने।।7।।

दुग्ध सरिता बही राम के राज में, आज गौ मास निर्यात में लिप्त हम।
मत्स्य, कुक्कट, औ शूकर हमें याद है, आज खलता नहीं गाय माँ का रुदन।।
राम का राज होगा इसी आस में, वीर पुरुषों हंस-हंस के तन तज दिये।।8।।

राम के पूजको! राम के सेवको! वक्त बीता हुआ हाथ आता नहीं।
राम से आचरण ना तुम्हारे हुए, राम से कुछ तुम्हारा भी नाता नहीं।।
साथ श्रद्धा के सुमिरन करो राम का, राम आदर्श थे शक्ति के धाम थे।।
बक्र-दृष्टिमला किसकी हम पर उठे पर करें आचरण जो किये राम ने ।।9।।

राम-भक्तों से

श्री अखिलेश सिंह "आर्य"

राम ने तजा था राज पितृ के वचन साथ
तुम भ्रात, तात के वचन न निभाते हो,।
राम ने निषाद,बनचारी को लगाया गले
तुम का दलित, घृणित घाव ढाते हो।
राम,वैदेही,देही हितार्थ युद्ध किये,
तुम प्यारे बनिता की लाज लुटवाते हो।
राम ने यजन-रक्षार्थ गुरुधाम गहे,
तुम गुरुकुल में जाने से इतराते हो,।
एक भी न काम,रामसम देखे "आर्य"
किस विधि अपने को रामभक्त कहलाते हो।

राम प्रियवान,घृतिमान,दिव्यज्ञानी अस,
असुरसधारी, सुविचारी सुखकारी थे।
भ्रात, तात, मात, नात, संग सुभग रीति,
बनिता वियोग, कर्मयोग यजनकारी थे।
आर्य-कुलकान्त, कुलशील, शालील कृद,
दिव्य व दिनेश, महेश विधुकारी थे।
सभ्य थे, सुशील थे, सुभग-पथ-मीत ही थे,
रक्षक विनोद, प्रिय, विपुल-विहारी थे।

आर्यमित्र की प्यास

लक्ष्मी नारायण शास्त्री
साहित्यरत्न,
आर्यसमाज लौकहवा-गोण्डा

आर्यमित्र सन्देश वेद का,
प्रति सप्ताह सुनाता है।

आर्यजनों के मानस में,
राष्ट्र जागरण फूँकता है।

भूले भटके अनाथ जन को,
वैदिक पथ पे लाता है।

भोगवाद से ऊबे जन को,
वेद का पान कराता है।।

जब तक मित्र नहीं आता है,
तब तक मन व्याकुल रहता है।

इधर-उधर भटका व्याकुल मन,
शान्ति नहीं तब तक पाता है।
जब आ जाता आर्यमित्र है,
तब मन हर्षित हो जाता है।

कर वेदामृत पान मित्र का,
फिर प्यासा मन रह जाता है।।

विश्व पुस्तक मेला सम्पन्न

विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर,वाराणसी ने विश्व पुस्तक मेला में वैदिक साहित्य से संबंधित पुस्तकें प्रदर्शित कीं। विश्व पुस्तक मेला हाल ही में प्रगति मैदान नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस मेले में देश-विदेश के लगभग 800 प्रकाशकों ने भाग लिया। मेला प्रति दो वर्ष में भारत में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया जाता है। विश्वभारती की स्टाल पर पधारने वाले डा0वेद प्रताप वैदिक अध्यक्ष भाषा न्यूज एजेन्सी, श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री वन्देमातरम् श्री शेर सिंह, लेखक श्री महीप सिंह, नेहरू पुरस्कार विजेता श्री वारानिकोह प्रमुख थे। मेले में 5 लाख पुस्तकें प्रदर्शित की गईं।

धर्म रक्षा सभा

दिनांक- 22·3·90 को लोला-हांडा कालेज, कंकर खेड़ा {मेरठ} के प्रांगण में आर्य समाज कंकर खेड़ा के तत्वावधान में धर्म रक्षा महाभियान के प्रचार अभियान के अन्तर्गत धर्म रक्षा सभा का आयोजन किया गया। इस धर्म रक्षा सभा के मुख्य अतिथि "आर्य प्रतिनिधि सभा" उ0प्र0 के प्रधान पं0 इन्द्रराज, मुख्य वक्ता जयन्त पाण्डेय महामन्त्री 'राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0' विश्व हिन्दु परिषद के अध्यक्ष श्री आर0डी0-मिश्र, श्री देव राज जी सभासद, स्वामी-चन्द्रदेव, डा0 रमेश चन्द्र आर्य, श्रीश्याम-बिहारी जी, श्री ओंकार दत्त जी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए तथा श्री मनवीर सिंह जी के सुन्दर भजनोपदेश के अतिरिक्त श्रीमती शकुन्तला आर्य के सुन्दर भजन हुए।

इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा-युवा आन्दोलन उ0प्र0 के महामन्त्री तथा धर्म रक्षा महाभियान के प्रान्तीय संयोजक जयन्त पाण्डेय ने 'धर्म रक्षा-महाभियान" की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि युवा वर्ग के भटकाव का कारण उनमें अपने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा गौरवपूर्ण इतिहास के प्रति अनभिज्ञता का होना है। उन्होंने कहा कि हिन्दू संगठनों में व्याप्त निष्क्रियता तथा स्वार्थपरता के कारण धर्म परिवर्तन में वृद्धि हुई है। उन्होंने राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता का आधार भारतीय संस्कृति तथा आध्यात्म की एक रूपता बताया। उन्होंने कहा कि इसी आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक एक रूपता को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

उन्होंने अंग्रेजों के वर्चस्व को देश की मानसिकता को हीन भावना से ग्रसित होने का प्रमुख कारण बताया तथा अंग्रेजो को समूल नष्ट करने हेतु समस्त नागरिकों से अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन में सहयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि अपने प्राणों की कीमत चुकाकर भी हम धर्मान्तरण को रोकने तथा अंग्रेजो का समूल नाश करने हेतु कार्य करेंगे।

अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथिपद से बोलते हुए पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा स्वतन्त्रता पर किए जा रहे प्रहारों का कड़ा मुकाबला करने की अपील की। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं मिल रहे हैं अत उनसे अपने राष्ट्र, संस्कृति तथा धर्म के प्रति निष्ठा में कमी आई है परिणाम स्वरूप नशा खोरी, यौनअपराध, देशाहीनता तथा आत्म हत्याओं में वृद्धि हुई है। यह स्थिति राष्ट्र के भविष्य के अच्छे लक्षण प्रकट नहीं करती, उन्होंने शिक्षा, चिकित्सा तथा सेवा के माध्यम से किए जा रहे व्यापक धर्म परिवर्तन पर चिन्ता प्रकट करते हुए इसका समुचित उत्तर देने को समस्त हिन्दू समाज से अपनी कमजोरियों के त्यागने की अपील की। उन्होंने कहा कि धर्म सापेक्ष भारत ही अपने राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकता है।

इस अवसर पर विश्व हिन्दु परिषद के अध्यक्ष श्री आर0डी0 मिश्र ने धर्म रक्षा महाभियान की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा इस पुनीत कार्य में हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। धर्म परिवर्तन की समस्या का संयुक्त मुकाबला करने के विचार का उन्होंने दृढ़ समर्थन किया। डा0 रमेश आर्य ने जातिवाद को समाप्त कर अस्पृश्यता का समूल नाश करने की अपील की।

स्वामी चन्द्रदेव ने भी धर्म रक्षा हेतु इस धर्म रक्षा महाभियान में समस्त हिन्दुओं से तन, मन, धन से सहयोग करने की अपील की।

श्री देवराज सभासद मेरठ महानगर ने धर्म परिवर्तन पर अपनी पीड़ा तथा चिन्ता व्यक्त की।

श्री श्याम बिहारी जी ने भूटान में किए जा रहे हिन्दुओं पर अत्याचार पर अपना क्षोभ प्रकट किया।

श्री ओंकार दत्त जी ने भूटान पर तैयार अपने प्रस्ताव को पढ़ा जिसमें सरकार से अपील की गई है कि वह हिन्दुओं के धर्म तथा जानमाल की भूटान में सुरक्षा करे।

माता शकुन्तला जी का सुन्दर भजन श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर गया। अन्त में सभाध्यक्ष श्री टी0सी0-सेठिया ने सबका आभार व्यक्त किया तथा शान्तिपाठ के पश्चात धर्म सभा का समापन हुआ। इस आयोजन में आर्यसमाज कंकरखेड़ा के अधिकारियों ने अथक तथा स्तुत्य कार्य किया। उनका कार्य अन्य आर्यसमाजों के अधिकारियों के लिए प्रेरणादायक है।

- इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

भूटान में हिन्दुओं पर अत्याचार
—प्रस्ताव

दिनांक- 22 3·90 को धर्म-रक्षा सम्मेलन कंकरखेड़ा मेरठ में भूटान में हिन्दुओं के मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात के प्रसंग को लेकर रोश प्रकट किया गया। सम्मेलन में यह जानकर बहुत ही कष्ट हुआ कि हिन्दुओं को चल और अचल सम्पत्ति से वंचित किया जा रहा है। हिन्दुओं को दूरदर्शन पर महाभारत देखने पर भी प्रतिबन्ध है। संस्कृत के पठन-पाठन पर रोक है। इन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने पर आन्दोलन कारियों को गिरफ्तार कर जेलो में भेजा जा रहा है। इस दमन के परिणाम स्वरूप हिन्दुओं का पलायन प्रारम्भ हो गया है। भारत से भेजे गए अर्द्धसैनिक बल भी हिन्दू आन्दोलन कार्यकर्ताओं को सख्ती से दबा रहे हैं।

अत यह धर्म रक्षा सम्मेलन हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों की तीव्र भर्त्सना करता है यह सम्मेलन भारत सरकार से पुरजोर मांग करता है कि भारत सरकार तुरन्त अपने अर्द्धसैनिक बलों को वापिस बुला ले तथा हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को तुरन्त रोकने का आदेश दे।

- इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

कसाइयों के चंगुल से गायों को छुड़ाया

औरैया {इटावा} में गायों को काटने हेतु कसाई खाने लिये जा रहे गो-हत्यारे कसाइयो से गुरुकुल एकाकटरा {इटावा} के ब्रह्मचारियों ने कई गायों को मुक्त करा दिया।

गुरुकुल एका-कटरा के प्रबन्धक स्वामी देवानन्द सरस्वती ने एक भेंट में बताया कि विगत दिवस कुछ कसाई गायों को काटने की खातिर कसाई-खाने लिये जा रहे थे, जिनको गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने घेरकर कई गायों को उनसे मुक्त करा लिया एवम् कसाइयों को पुलिस के हवाले कर दिया।

- वेदप्रकाश आर्य

● गुरुकुल सिराथू {इलाहाबाद} का 31वाँ वार्षिकोत्सव दि0 23 व 24 मार्च को समारोहपूर्वक मनाया गया।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली का 121 वाँ वार्षिक उत्सव दि0 2 से 8 अप्रैल 90 तक समारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

वैदिक वाङ्मय में धर्म का स्वरूप

—प्राचार्या डा० आशारानी राय
उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

वैदिक धर्म अर्थात मानव धर्म न भारतीय, यूरोपीय, प्राच्य पाश्चात्य, न कलयुगी सत्युग न दूत पैगम्बर तथा अवतार के नाम पर है। जातियों के नाम पर तो सम्प्रदाय चलते हैं धर्म नहीं। महात्मा बुद्ध, महावीर के समय से सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ। ईसामसीह, मूसा व मुहम्मद साहब के समान व्यक्तियों को लोगों ने अपना पैगम्बर बनाया। विष्णु शिव व ब्रह्मा के नाम पर वैष्णव, शैव, शाक्त सम्प्रदायों का आविर्भाव हुआ। भागवत सम्प्रदाय ने घोषणा की यज्ञ, योग एवं उपासना की वैदिक विधियाँ सत्युग के लिए थीं, कलयुग में तो श्रीमद् भागवत कीर्तन, हरिनाम ही मुक्ति साधन है। यहाँ तक कि राम- कृष्ण आदि महापुरुषों के कीर्तन के साथ ही चिन्मयानन्द स्पई बाबा, सन्तोषी माता एवं भूतनाथ आदि का भी कीर्तन आरम्भ हो गया है। जो सभी स्वयं को भगवान घोषित कर रहे हैं। क्या यह सनातन , पुरातन व वैदिक धर्म है? यह मात्र धर्म का विकृत रूप, विद्रूपण, साम्प्रदायिक-ता धर्म के नाम पर आडम्बर व ढकोसला तथा अविद्या है। महर्षि पातन्जलि ने स्पष्ट कहा कि सत् को असत् अधनिस्थ को नित्य, सप्तम को अनात्म एंव अनात्म को आत्म मानना अविद्या है। ऋषि श्रेष्ठ दयानन्द ने वेदों को आलस्य रूपी असुर के पंजों से छुडाकर विद्वत समाज के समक्ष रखा। अविद्या के समूल उच्छेदन हेतु धर्म के नाम पर फैले स्वार्थी सम्प्रदायों की निन्दा, अनाचार व अज्ञान के पोषण के विरुद्ध पाखण्ड खण्डिनी पताका लेकर ढोंगियों एवं पाखण्डियों से शास्त्रार्थ किए, विरोधियों के सामूहिक प्रतिकार से विचलित नहीं हुए। संसार में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं जो यह कहकर अपराधी को क्षमा कर दें- कि ईश्वर यह नहीं जानता कि इसने क्या किया, इसे क्षमा किया जाए किन्तु वाह रे धर्म का डंका बजाने वाला दयानन्द, धन्य है तेरी धर्म के प्रति ' आस्था, जो विषदान करने वाले पाचक जगन्नाथ को क्षमा के साथ-साथ रुपये की थैली भी दी जिससे शासन के आक्रोश से बचकर सुरक्षित स्थान पर शरण ले ले।

महर्षि कणाद ने अपने दर्शन में धर्म की परिभाषा बतायी:-

यतोऽभ्युदय निश्रेयस सिद्धि: स: धर्मः

अर्थात जिसमें अभ्युदय अर्थात आज {इहलोक} सुख मिले एवम् नि:श्रेयस अर्थात् कल {परलोक} भी सुख प्राप्त हो, वह धर्म है। यह मानव शरीर अथवा जीवन प्रथम यह अंतिम नहीं है। अपितु शाश्वत है, जन्म व मृत्यु का चक्र भी शाश्वत है। ईश्वर स्वंयभू है तथैव आत्मा भी स्वंयभू है। हम सब कभी वृद्ध अथवा मुक्त रूप में अनन्त मार्ग के पथिक हैं। ईश्वर ही जन्म बन्धन से रहित है। अनन्त मार्ग से चलता हुआ जीव दुख से सुख- सुख से दुख की और यात्रा करता रहता है। धर्म वह है जो दुख से सुख की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, अविद्या से विद्या की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है--

असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतम् गमयेति।

धर्म प्रतिपादित करने वाले शास्त्रों ने कर्तव्य-अकर्तव्य का वर्गीकरण विभिन्न रूपों में किया, जिन्हें हम यम कहते हैं, ये वे कर्त्तव्य हैं जो मानव के लिए आवश्यक हैं ये अहिंसा, सत्य कर्तव्य व्यक्ति के निजी हैं जिन्हें नियम कहते हैं जैसे शौच; संतोष, तपम, स्वाध्याय एवं ईश्वर पणिधान। यम- नियमों का पालन प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्तव्य है। इसके अतिरिक्त मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं:-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।

अर्थात् किसी कार्य में तत्पर रहने पर उसमें कष्ट व बाधा होते हुए भी न रुकता । समर्थ होते हुए भी क्षमा करना क्षमा। गतिमान मन को नियन्त्रण में रखना दम, सब प्रकार पवित्रता शौच, शरीर की पवित्रता जल से मन की सत्य तथा आत्मा की ज्ञान से स्वामी की आज्ञा बिना कुछ ग्रहण न करना अस्तेय, इन्द्रियाँनिसग-त: विषयों की ओर अग्रसर रहती हैं उन्हें असत् विषयों से रोकना है इन्द्रिय निग्रह है। कठोपनिषद में आत्मा के स्वरूप की चर्चा करते हुए इन्द्रियों की गतिशीलता का चित्रण अन्यत्र मञ्जुल ढंग से किया है--

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीर रथमेव
बुद्धिं सारथिं विद्धिमन: प्रग्रहमव तु
इन्द्रियाणि हयानुमाहु: विषयास्तेषुगोचरान्
आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तो भोक्ते त्याहु र्मनीषिण:

अर्थात् आत्मारथी है, रथ शरीर है, बुद्धि सारथि है मन लगाम है, इन्द्रियाँ घोडे हैं जो विषय रूपी संमार्ग पर दौड़ा करते, शरीर, इन्द्रिय व मन से युक्त जीव उत्तम रथी बुद्धि रूपी सारथि से मन रूपी लगाम से इन्द्रिय रूपी घोड़ों को सुमार्ग की ओर प्रेरित करें। इन्द्रियाँ तो चल है वे सदैव कुमार्ग की ओर प्रेरित रहेगी अत: इन्द्रियों को श्रेष्ठ मार्ग की ओर ले जाना इन्द्रिय नियम है, पृथ्वी से लेकर परमेश्वर तक पदार्थों का जानना ही विद्या है:-

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेय
स्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीत:।
तयो: श्रेय आददानस्य साधु
भवति हीयते ह्यार्थि उ प्रेयो वृणीते।

कठोपनिषद। /2/

अर्थात् श्रेय {विद्या} प्रेय {अविद्या} दोनों पुरुष को बाँधते हैं किन्तु जो भौतिक सुख की कामना करता है सांसारिक बन्धनों व लोभ में लिप्त रहता है, वह प्रेय का आश्रय लेता है। सुख, "स" अर्थात् अच्छा "ख" अर्थात् इन्द्रियाँ, इस प्रकार इन्द्रियों को जो अच्छा लगे, वह सुख. किन्तु आँख. नाक. कान. त्वचा जिह्वा पाँचों इन्द्रियों का सुख-भोग प्राप्त हो रहा हो तो यह ज्ञान हो कि व्यक्ति का पुत्र मर गया।

क्रमश:

रामगढ़ में

राष्ट्र रक्षा युवा प्रशिक्षण शिविर

आर्य युवकों में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना जागृति हेतु

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के तत्वावधान में दिनांक- 5 जून से 12 जून 1990 तक महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ जिला नैनीताल में "राष्ट्र रक्षा- युवा प्रशिक्षण शिविर" का आयोजन किया जा रहा है। प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों जिला आर्य उपप्रतिनिधि- सभाओं से अनुरोध किया जाता है कि वे इस प्रशिक्षण में भाग लेने हेतु अपने जनपद से कम से कम दो आर्य युवक "आयु 20 से 25 वर्ष" अवश्य भेजें। प्रशिक्षणार्थियों के रामगढ़ पहुँचने तथा वापसी का मार्गव्यय जिला उपसभाएं आर्यसमाज वहन करेंगी तथा वहाँ निवास एवं भोजनादि का समस्त व्यय भार आर्यप्रतिनिधि सभा वहन करेगी। विस्तृत सूचना अलग से प्रेषित की जा रही है।

इन्द्रराज — मनमोहन तिवारी,
प्रधान — मन्त्री

लखनऊ में जिला सभा सम्मेलन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ का आर्यसमाज स्थापना दिवस तथा नव संवत्सरोत्सव दिनांक- 1 अप्रैल, 1990 को आर्यसमाज गणेशगंज में बड़े धूमधाम से मनाया गया

--

वेद रथ

मैनपुरी। इस जनपद की आर्य उप सभा की ओर से, उसके शिरोमणि नेता म0 विद्याभिक्षु जी के संरक्षण, प्रधान डा0 ब्रजभूषण सिंहजी के निर्देशन तथा पं0 मूलचन्द जी के संयोजन में, दि0- 5-4-90 से 4-5-90 तक जनपद के, धर्मान्तरण की दृष्टि से सम्वेदनशील क्षेत्रों में वेद- रथ के द्वारा प्रचार की योजना है। यह वेद-रथ दि0- 5-4-90 को, आर्यसमाज मन्दिर सिरसागंज से, अपना भ्रमण कार्यक्रम प्रारम्भ करेगा।

कुं0 ध्रुव पाल सिंह "अटल"
मुख्यनिरीक्षक, सभा।

डा० आशारानी राय द्वारा प्रचार कार्य

डा0 आशारानी राय उपप्रधान आर्य- प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने निम्न आर्यसमाजों में प्रचार किया।

आर्यसमाज मऊ {आजमगढ़} में दि0 25 फरवरी को वार्षिकोत्सव पर सारगर्भित व्याख्यान दिया तथा उसी दिन महिला सम्मेलन को सम्बोधित किया। डी0ए0वी0 इण्टर कालेज तथा डी0ए0वी0 कन्या इण्टर कालेज के छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया तथा पुरस्कार भी वितरित किया साथ ही उनके अभिभावकों को भी सम्मानित किया। और आर्य वीर दल के आर्य वीरों में कर्तव्य परायणता की प्रेरणा दी।

जम्मू काश्मीर सुरक्षा प्रस्ताव

दिनांक- 20·3·90 को आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मेरठ के अन्तर्गत जिला मेरठ की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की आर्यसमाज मवाना (मेरठ) में हुई बैठक में मवाना में समय-समय पर होने वाले धर्म परिवर्तन पर चिन्ता व्यक्त की गई। समिति में यह विचार व्यक्त किया गया कि बिना दूसरे सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को जाने धर्म परिवर्तन एव राजनैतिक कुचक्र है जिसका दूरगामी परिणाम कभी भी अच्छा नहीं होगा। इसी सन्दर्भ में इस समय काश्मीर घाटी से 20 हजार हिन्दू एवं सिख परिवारों का पलायन देश की एकता के लिए भयंकर खतरा है। विदेशी शक्ति पाकिस्तान के माध्यम से हमारे देश को तोड़ना चाहती है।

बैठक में सर्व सम्मति से केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया गया कि जम्मू-काश्मीर के गवर्नर श्री जगमोहन जी को विस्तृत अधिकार दिए जाएं तथा काश्मीर को सेना के हवाले किया जाए ताकि विघटनकारी तत्वों को सख्ती से कुचल कर देश की सुरक्षा अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा की जा सके।

इन्द्रराज
मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला मेरठ

अंग्रेजी के सम्बन्ध में माननीय मुख्यमन्त्री उ0प्र0 के विचारों का स्वागत

अंग्रेजी माध्यम उन्मूलन प्रस्ताव

दिनांक- 20·3·90 को मेरठ मण्डल वेद प्रचार समिति ने आर्यसमाज मन्दिर बुढ़ाना द्वार में अपनी एक बैठक में माननीय मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव जी के द्वारा देहरादून में अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों से हटाए जाने सम्बन्धी वक्तव्य का हार्दिक स्वागत किया। समिति का यह दृढ़ मत है कि राष्ट्रभाषा एवं राज्य भाषा हिन्दी का माध्यम ही देहात की प्रतिभा को प्रदेश और देश की सेवा के लिए आगे ला सकता है। अंग्रेजी माध्यम तो परतन्त्रता का प्रतीक है। पिछले 40 वर्षों में इस ओर किसी ने दृष्टिपात ही नहीं किया। यह समिति माननीय मुख्यमन्त्री के विचारों का समर्थन करती हुई सरकार से मांग करती है कि यथाशीघ्र अंग्रेजी माध्यम को पब्लिक स्कूलों से तथा प्रशासनिक सेवाओं से तुरन्त हटाया जाए ताकि किसान और मजदूर का प्रतिभाशाली बालक देश की सेवाओं के लिए आगे आ सके और गरीब प्रतिभा भी भारी व्यय के बोझ से बचकर राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित हो सके।

-इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उ0प्र0, लखनऊ।

वार्षिकोत्सव

दिनांक- 21, 22 व 23 फरवरी से आर्यसमाज नेकपुर डा0 गण्डीधनौरा (मुरादाबाद) का वार्षिक उत्सव मनाया गया।

ऋषिबोध पर्व सम्पन्न·

आर्यसमाज जौनपुर की ओर से ऋषिबोध पर्व 23 फरवरी 90 को धूमधाम से मनाया गया जिसमें अनेक व्यक्तियों के व्याख्यान हुए दिनांक 17 से 22 फरवरी 90 तक नित्य प्रात· शोभायात्रा निकाली गई।

●

आर्यसमाज सिलीगुडी का 26वाँ वार्षिकोत्सव आर्यसमाज गुरुंग बस्ती में दिनांक 23 से 25 फरवरी 90 तक धूमधाम से मनाया गया।

●

आर्यसमाज [illegible]पुर (कानपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक 7 से 9 फरवरी 90 तक धूमधाम से मनाया गया जिसमें 1000/- रु0 दान में प्राप्त हुआ। श्री कल्पना देवी के महर्षि के जीवन से संबंधित गीत पर 109/- पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। उत्सव का सारा व्यय प्रज्ञाचक्षु श्री मन्नीलाल जी ने किया।

●

आर्यसमाज सकरावा फर्रुखाबाद का वार्षिकोत्सव दिनांक 1 से 3 मार्च 90 तक ससमारोह मनाया गया।

●

आर्य समाज [illegible]लापार (सहारनपुर) में ऋषिबोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया जिसमें अनेक वक्ताओं ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डाला तथा उससे प्रेरणा लेने का संकल्प लिया।

●

आर्यसमाज बाँसी (सिद्धार्थनगर) का वार्षिकोत्सव दिनांक 26 से 28 फरवरी 90 तक धूमधाम से मनाया गया।

●

सूचना

आर्यसमाज लौंदा का वार्षिकोत्सव दिनांक 24 से 27 फरवरी तक सम्पन्न हुआ।

●

"वैदिक धर्म प्रचार [illegible] युग'

मीरजापुर जनपद के कुपात परगने में आर्य समाज हाँसीपुर, पचराव, पाहों, बगहाँ व छीतकपुर का वार्षिकोत्सव क्रमश· 1 से 6 फरवरी तक बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया।

जिसमें पं0 सत्यदेव शास्त्री कु0 महिपाल सिंह व श्रीविश्राम सिंह के उपदेश व भजन का जनता पर विशेष प्रभाव पडा।

-केचन सिंह

●

- शोहरतगढ सिद्धार्थनगर का वार्षिकोत्सव 30-31 मार्च एवं 1 अप्रैल 1990 को सम्पन्न होगा। जिसमें श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी सरस्वती, श्री ठाकुर महिपाल सिंह गडवार, एवं श्री महेन्द्र पाल जी आर्य कलकत्ता तथा अन्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

●

दयानन्द विद्या मंदिर टनकपुर (नैनीताल) का वार्षिकोत्सव दिनांक 21 से 23 फरवरी तक धूमधाम से मनाया गया।

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आर्य समाज सण्डीला जनपद हरदोई में दिनांक 14-2-90 से 22-2-90 तक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा सेवा शिविर का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के युवा नेता श्री विमल कुमार एडवोकेट की देखदेख में सम्पन्न हुआ। क्षेत्रीय स्वास्थ्य निर्देशक द्वारा भेजे गये योग्य शल्यक डा0 वी0के0 श्रीवास्तव एवं डा0 नीलम केद्वारा मरीजों के नेत्र परीक्षण किए गये। जिसमें कुल 63 आप्रेशन हुए तथा चश्मे मुफ्त प्रदान किए गये। वाह्य रोगी परीक्षण की संख्या-343 रही जिनको औषधियाँ और चश्में निःशुल्क बाँटे गये। इस कार्य में डा0 वीरेन्द्र कुमार मिश्र नेत्र सर्जन बलरामपुर चिकित्सालय लखनऊ का विशेष योगदान रहा। आर्य समाज सण्डीला सहयोगी जनो को धन्यवाद ज्ञापित करता है।

●

तपोवन का महोत्सव

देहरादून- वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का 41 वाँ वार्षिक महोत्सव दि0- 25 से 29 अप्रैल तक मनाया जायगा। जिसमें कई उच्चकोटि के विद्वान वक्ता पधारेंगे। जनता से निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावे।

● आर्य उप प्रतिनिधि सभा बरेली का वार्षिक उत्सव आर्यसमाज माडल टाउन में दि0 29 अप्रैल 90 को ससमारोह मनाया जायेगा।

पृष्ठ ५ का शेष

धार से धरती भौर धरतो पुत्रों की प्यास बुझाने का काम तो अब प्रारम्भ करना है, इस लिए गगा के प्रवाह को नित्य नया बनाये रखना है। ऋषि दयानन्द ने वेद ज्ञान की गगा हमें दी है- इससे दिन प्रतिदिन हमें मानवता को पवित्रता प्रदान करनी है। नारी को हमने परदे से बाहर निकाला तो है, हमें उसे वेपरदगी से भी बचाना है। आज जो विज्ञापन में उसका प्रदर्शन किया जा रहा है- आज जो दहेज के नाम पर उसकी बलि चढाई जा रही है, और भाज जो उसको किंचित भी अपमानित किया जा रहा है, हमें उसका भी पूर्ण परिष्कार करना है। पति और पत्नी को मिला कर दम्पति बनता है। पति को धर्म-पति नही कहते हैं, प्रत्युत पत्नी को हम धर्म पत्नी कहते हैं, क्योंकि पति के धर्म पक्ष की वही अध्यक्षा है। कोई भी यज्ञ संस्कार या अनुष्ठान अर्द्धांगिनी के साथ ही पूर्ण और सफल काम होता है। ईश्वर हमें शक्ति दे कि हम वेद-शास्त्र ऋषि मुनियों के मार्ग पर चलते हुए नारी के सम्मान एव जागरण में सदैव तत्पर रहें।

मुजफ्फर नगर मे प्रचार कार्य

राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन के महामन्त्री, तथा धर्म रक्षा महाभियान के सयोजक श्री जयन्त कुमार जी ने मुजफ्फरनगर में आर्य समाज नई मण्डी के माध्यम से दिनाक 8-3-90 से 11-3-90 तक प्रचार किया।

श्री जयन्त कुमार जी ने अपने भाषणों तथा प्रवचनों में आर्य समाजों को पुन गतिशील बनाकर धर्मान्तरण के विरुद्ध आर्यसमाज को सक्रिय करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आपस के मत-भेदों को भुलाकर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करना ही उनके प्रति सच्ची निष्ठा का प्रमाण है। उन्होंने धर्मान्तरण के मूलभूत कारणों पर बहुत ही सुन्दर ढग से प्रकाश डाला।

अपने 11-3-90 के प्रात - 10 बजे के मुख्य भाषण में मुजफ्फरनगर के विभिन्न आर्य समाजों के आर्य सभासदों को सम्बोधित करते हुए उन्हें सभा द्वारा धर्मान्तरण के विरुद्ध किए जा रहे कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने धर्मान्तरण के बढ़ते क्रम को राष्ट्र तथा सम्पूर्ण हिन्दू जाति के लिए आत्मघाती बताया। उन्होंने कहा अपने संस्कृति, धर्म तथा राष्ट्र की रक्षा करनी है तो धर्मान्तरण को रोकना ही होगा। श्री जयन्त कुमार जी से विभिन्न हिन्दू सगठनों के नेताओं ने भेंट की तथा उन्हें धर्मान्तरण प्रतिरोधी अभियान तथा धर्मरक्षा अभियान में अपना सक्रिय योगदान देने की पेशकश की। श्री जयन्तकुमार जी ने विभिन्न सगठनों के प्रतिनिधियों के साथ मिल कर धर्मान्तरण की समस्या का संयुक्त रूप से मुकाबला करने के कार्यक्रम पर विचार किया उनके भाषणों, प्रवचनों तथा सम्पर्क से मुजफ्फरनगर में एक नवीन आशा तथा सक्रियता का संचार हुआ।

चुनाव

आर्यसमाज छपरोली (मेरठ)

प्रधान - श्री कँवल सिंह
मन्त्री - श्री भूपाल सिंह
कोषा० - श्री कृष्णपाल पहलवान

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन०पी० ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
चैत्र शुक्ल १४, सवत २०४७ वि
दिनाक ८ अप्रैल १९९०

सेवा में:

निर्वाचन

आर्यसमाज विष्णुगढ़ {फर्रुखाबाद}

प्रधान - श्री बालकराम आर्य, एम०ए०
मन्त्री - श्री गंगाराम आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री कृष्ण जी आर्य

आर्यसमाज शमशेरगढ़ {देहरादून}

प्रधान - श्री जगत सिंह
मन्त्री - श्री प्रकाश चन्द
कोषाध्यक्ष - श्री कल्याण सिंह

आर्य उप प्रतिनिधि सभा बलिया

प्रधान - श्री सुदर्शन सिंह जी
मन्त्री - श्री इन्द्रदेव सिंह जी
कोषाध्यक्ष- श्री राधा कृष्ण जी

आर्य उपप्रतिनिधि सभा अलीगढ़

प्रधान - श्री पूरन सिंह ब्रह्मचारी
मन्त्री - श्री डॉ० विजय पालसिंह आर्य
कोषा - श्री सोमदेव गुप्ता

आर्यसमाज रुद्रपुर {नैनीताल}

प्रधान - श्री रामकुमार आर्य
मन्त्री - श्री सतीश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री महावीर प्रसाद आर्य

आर्यसमाज गोरखपुर {बक्शीपुर}

प्रधन- श्री डा०विनय प्रताप
मंत्री- श्री विजय बहादुर
कोषाध्यक्ष-श्री रामचन्द्र जी

आर्यसमाज बहेड़ी {बरेली}

प्रधान - श्री सुरेन्द्र सिंह
मन्त्री - श्री रामपाल सिंह
कोषा० - श्री प्रेमपाल सिंह

आर्यसमाज अडींग {मथुरा}

प्रधान - श्री त्रिभुवन नाथ शर्मा
मन्त्री - श्री महावीर आर्य
कोषा० - श्री रामबाबू आर्य

जिलोप सभा- मुजफ्फरनगर

प्रधान - श्री सलेक चन्द्र जी
मन्त्री - श्री अरविन्द कुमार जी
कोषा० - श्री हरिदत्त जी

आर्यसमाज केराकत {जौनपुर}

प्रधान - श्री रमाशंकर आर्य
मन्त्री - श्री उमाशंकर आर्य
कोषा० - श्री ज्ञानप्रकाश आर्य

आर्यसमाज शास्त्रीनगर मेरठ

प्रधान - श्री हरिश्चन्द्र
मन्त्री - श्री हरवीर सिंह
कोषा० - श्री ओंकार सिंह

आर्यसमाज सिरसी जनपद-मुरादाबाद,

सरक्षक- यशपाल सरन आर्य
प्रधान- डा० शिव सरूप
कोषाध्यक्ष- राजेन्द्र पाल

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन भार्गव मुद्रक प्रय ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से प्रीमियर प्रेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स २२४१/५७) वैशाख कृष्ण ६ रविवार सवत २०४७ वि०, दिनाक १५ अप्रेल १९९० (घोषणा पत्र स ७/२२ २ ८५)



श्री मनमोहन तिवारी द्वारा लखनऊ स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से उ.प्र. विधान परिषद की सदस्यता हेतु नामांकन पत्र प्रस्तुत

शतश सहस्रश कण्ठध्वनियों से गुनायमान जयजयकार के गगनभेदी नारों के बीच तरुणाई के प्रतीक जन-जन की सेवा में दीवाने बनकर अहर्निश घूमने वाले **श्री मनमोहन तिवारी** ने दिनाक- ४ अप्रैल 1990 को लखनऊ कलेक्टरेट में सक्षम अधिकारी के समक्ष भारत के सविधान के प्रति सत्यनिष्ठा की शपथ लेते हुए लखनऊ स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से उत्तर प्रदेशीय विधान परिषद के लिए अपना नामांकन पत्र प्रस्तुत कर दिया है।

नामाकन पत्र प्रस्तुति का दृश्य बड़ा ही मनोरम एव अपूर्व था। चारों ओर **"मनमोहन तिवारी की जय हो"** हमारा नेता **"मनमोहन तिवारी"** के गगनभेदी नारों से लखनऊ कलेक्टरेट का प्रागण गूँज रहा था

सर्वप्रथम प्रात 10 बजे गणेशगज स्थित उनके निवास पर आर्यमित्र के यशस्वी सम्पादक आचार्य श्री पं0 इन्द्रदेव पाठक ने वेदमन्त्रों की ध्वनि से उनके विजय की मगलकामना करते हुए कुंकुम और तिलक लगाकर उनका अभिषेक किया। तत्पश्चात पूज्यपुरुषों और माताओं का आशीर्वाद लेकर जब श्री तिवारी अपना नामांकन पत्र भरने के लिए लखनऊ कलेक्टरेट रवाना हुए तो अपार जनसमूह उनके पीछे-पीछे उनका विजयगान करते हुए उमड पड़ा। सभी के हृदय में उल्लास था और अपने प्रिय प्रत्याशी के विजय की कामना थी।

इस अवसर पर लखनऊ तथा क्षेत्रीय जनपदों से सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली जनता बडी सख्या में उनके पीछे-पीछे चल रही थी। अति दूरस्थ जनपदों यथा दिल्ली से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा0 सच्चिदानन्द शास्त्री, देहरादून के आर्यनेता श्री यशपाल जी आर्य, गोरखपुर से डा0 विनय प्रताप, बड़ावद (मेरठ) के जनप्रिय नेता चौ0 धर्मपाल सिह, बुलन्दशहर की अनेकों शिक्षण सस्थाओं से जुडे हुए श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा, अमरोहा से श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य आदि अनेको गण्यमान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने इस प्रिय प्रत्याशी को आशीर्वाद देने हेतु उपस्थित थे। शिक्षक तथा युवावर्ग बहुत बड़ी सख्या में श्री तिवारी की विजयकामना लिए हुए उमडा हुआ था।

ऐसे जनप्रिय, युवाहृदय प्रत्याशी की विजय के लिए प्रदेश की आर्यजनता एव आर्यमित्र की शत शत शुभकामनाए।

-विदेशीजन ...
-हे ... कामना ...

आप्त वचन

यदि सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति का मूल्य मेरे जीवन भर की कमाई हो तो भी मैं उसे देकर उसे खरीदता। मै जिधर देखता हूँ उधर ही **"सत्यार्थप्रकाश"** में वह विद्या की बातें भरी हुई पाता हूँ कि जिनका वर्णन करते हुए मनुष्य की बुद्धि चकित हो जाती है। मैंने 17 बार सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा है और जब जब उसे पढता हूँ तब-तब नये-नये अर्थों का भाव मेरे मन में आता है।

-गुरुदत्त विद्यार्थी

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम ए साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु २५१/
वार्षिक	रु 30/
एक प्रति	१रु मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३ वाँ वर्ष
अंक ..

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा
उठा उठ्ण तू सानातन साज।
आर्य समाज आर्य समाज।।
—राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ वैशाख कृष्ण ५ संवत २०४७वि
१५ अप्रैल १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

अभिनन्दन अभिनन्दनीय का

आर्यसमाज के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करके जीवनदान देने वाले अनेकों ऐसे महानपुरुष, महान सन्यासी, घर-घर अलख जगाने वाले ऋषि के दीवाने जिन्होंने आर्यसमाज को स्वर्णयुग तक पहुँचाया था- आज हमारी स्मृति-पटल से लगभग ओझल होते जा रहे हैं। किसी संस्था को सूर्य और चन्द्रमा के समान चमका कर गौरव के उच्चशिखर तक पहुँचाने वाले उसके समर्पित कार्यकर्ता ही होते हैं। आर्यसमाज के सिद्धान्तों का जो इतना व्यापक विश्वप्रचार हुआ है उसके मूल में इन्हीं महान् आत्माओं का त्याग और बलिदानभरा कर्मठ जीवन रहा है। यह हमारी इस पवित्र संस्था का सौभाग्य रहा है कि उसे प्रारम्भ से ही ऋषि के मन्तव्यों का प्रचार एवं प्रसार करने के लिए ऐसे ध्येयनिष्ठ साधु सन्यासी, त्यागी तपस्वी कार्यकर्ताओं का सहयोग मिलता रहा है जिनका अनुसरण आप्तवाक्य के सदृश आदर्श माना जाता था। विरोधी से विरोधी भी चाहे न्यायालय हो अथवा अन्य कोई क्षेत्र एक आर्य की सत्यनिष्ठा पर पूर्ण विश्वास करता था। न्यायालयों के निर्णय हमारी साक्षी पर निर्णीत हो जाते थे।

उसी महान पीढ़ी और परम्परा के वयोवृद्ध आर्यनेता श्री पं० धर्मपाल-विद्यालंकार आज हमारे बीच में उपस्थित हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने विगत 3 अप्रैल को ऐसे महान पुरुष का स्वागत अभिनन्दन करके वास्तव में स्वयं को ही गौरवान्वित किया है। उनके स्वागत में प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए आर्यसमाजों, जिला आर्य-उपप्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधि अधिकारियों तथा विशिष्ट आर्यजनों द्वारा भावभीना स्वागत किया गया तथा उन्हें मानपत्र भेंट किया गया। पूज्य पं० जी ने अपने जीवन के 96 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। सभा की ओर से 2501/-रु० की अल्पराशि, ऊनीशाल, आदि से सम्मानित करते हुए सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज, मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें आर्यसमाज की अमूल्यनिधि बताया है। आर्यसमाज के प्राण स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या करने वाले अब्दुलरशीद को भागते हुए आपने ही पकड़कर दबोच लिया था। उस समय पं० जी को जान से मार डालने की अनेकों धमकियाँ मिली थीं किन्तु इस वीरवर ने उसकी तनिक भी परवाह न करते हुए अपराधी को उसके पाप का दण्ड दिलवाया था। इस प्रकार पंडित जी का नाम स्वामी-श्रद्धानन्द जी के साथ ही सदा-सदा के लिए आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिख दिया गया है। आज भी 96 वर्ष की अवस्था में आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के लिए वे अहर्निश चिन्तनशील रहते हैं।

इस अवसर पर पंडितजी ने अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि वे जब बालक थे और गुरुकुल कांगड़ी में प्रथम विद्यार्थी के रूप में पढ़ने गये तो स्वामी जी ने बुलाकर उनसे कहा था- 'किसी संस्था में जाना, रहना पर आर्यसमाज को कभी विस्मृत न करना यह हमारी मातृसंस्था है'। स्वामी जी के यह शब्द उन्हें सदा प्रेरणादायक रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश, गुरुकुल वृन्दावन, आर्यसमाज बदायूँ, गुरुकुल कांगड़ी आदि अनेकों संस्थाओं के उच्चपदों पर रहकर उन्होंने निष्काम कर्मयोगी की भाँति अठारह-अठारह घन्टे काम करके इन संस्थाओं के गौरव को उन्नति के शिखर तक पहुँचाया। आपके सम्पादन में आर्यमित्र ने सराहनीय उन्नति की थी। आर्यसमाज ऐसे अपने महान सपूत पर गर्व करता है और उनके शताधिक वर्षों की आयुष्कामना करता है। आर्यसमाज के ऐसे महान रत्नों को हम कभी विस्मृत न करें उन्हें ढूंढ-ढूंढ कर उनका सम्मान करें उनका आशीर्वाद लें, इसी कामना के साथ-

शतशत अभिनन्दन शतशत नमन्।

कश्मीर, मामले में जमायते इस्लामी अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करे।

पिछले वर्ष जमायते इस्लामी ने देशभर में सम्प्रदाय सौहार्दय सप्ताह मनाया था/ मेरठ में भी इस्माईल इण्टर कालेज में उसकी एक बैठक हुई थी। उसमें राष्ट्र रक्षा तथा सब सम्प्रदायों में सद्भाव की बात कही गयी थी। आज कश्मीर में देशद्रोह का बिगुल बजा हुआ है। संस्थाओं ने कश्मीर को भारत से पृथक करने का आतंकवादी संघर्ष छेड रखा है। आंतकवाद का इतना जोर है कि हिन्दुओं के 2000 परिवार कश्मीर से भाग कर उधमपुर में जैसे तैसे किराये के मकानो में, टेण्टों में मन्दिरों में और अपने सम्बन्धियों के यहां रह रहे है। 4000 हिन्दू परिवार कश्मीर वैली से भागकर इसी प्रकार से जम्मू में आकर रुके हुए है। पाकिस्तानी उग्रवादियों ने हिंसा का इतना भयंकर ताण्डव नृत्य कर रखा है कि हिन्दू अपने जान और माल को असुरक्षित समझ कर भाग रहा है।

इस हिंसा, उग्रवाद, कश्मीर को भारत से पृथक करने के प्रयासों में और पाकिस्तान के पक्ष में नारे लगाने मे जमायते इस्लामी का मुख्य हाथ है।

भारत में जमायते इसलामी का जाल फैला हुआ है। भारत में देशभक्ति का दम भरने वाली इस संस्था के लिए यह समय है कि वह कश्मीर के विषय में अपनी स्थिति स्पष्ट करे। और अपनी देशभक्ति को स्पष्ट करने के लिए कश्मीर में देश द्रोही शक्तियों के विरोध में आवाज उठावे और अपने सदस्यों को देशद्रोह करने से रोके।

अन्यथा सरकार को चाहिए कि ऐसे सगठनों पर भारत में प्रतिबंध लगाए जिनका देश की एकता प्रमुखता और अखण्डता में विश्वास नहीं है।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश,
लखनऊ

तेवरी

फिर हुआ कहीं कत्ल यारों,
फिर कहीं अगार है,
पढ़ लीजिये, पढ़ लीजिये,
यह आज का अखबार है।
दर्द का है, सिलसिला,
पर आँख नम होती नहीं,
शब्द से टूटा हुआ, यह शब्द का परिवार है।

भूख मुजरा कर रही है,
रोटियों की शर्त पर
लुट रही हैं आस्थायें,
शर्म का व्यापार है।
लोरिया देकर मुझे, महला रही हैं सिसकियां,
सभ्यता का देखिये, उजड़ा हुआ घरबार है।

कर्तव्य भी अब तो हमारे
खुदकुशी करने लगे,
फर्ज के चेहरे पे देखो, बेकसी की मार है।

गीत का अनुवाद करती,
कलम यूँ कहने लगी,
जिन्दगी के वास्ते अब
जिन्दगी लाचार है।

—विजय प्रेमी (कलमकार)
383, सदरकबाड़ी बाजार।
मेरठ

होली मिलन समारोह

बिसौली (बदायूँ) में आर्यसमाज तथा स्त्री आर्यसमाज के सहयोग से दि० 13 मार्च को "ज्ञान देवी आर्य बालविद्या-मन्दिर" में होली मिलन समारोह उत्साह के साथ मनाया गया। जिसमें कई वक्ताओं ने होली के वैदिक स्वरूप पर प्रकाश डाला।

- आर्यसमाज हसनपुर (मुरादाबाद) में (1) श्री क्षमाकान्त/विरमादेवी (2) श्री राजाराम/शीलादेवी के अन्तर्जातीय बिना देहेज के सम्पन्न हुए विवाह पर जनता का अच्छा प्रभाव पड़ा।

--

● आर्य समाज केराकत (जौनपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक 9 से 10 अप्रैल 90 तक धूमधाम से मनाया गया। जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

मानव निर्माण और आर्यसमाज

गतांक से आगे....

• डा० प्रशान्त वेदालंकार
स्वरूपनगर, दिल्ली

आर्यसमाज का सम्पूर्ण प्रयत्न मनुष्यों के सुधार तथा श्रेष्ठ मानवों का निर्माण करना रहा है। गत सौ वर्षों से आर्यसमाज ने मानव निर्माण के लिए जो प्रयत्न किये हैं, उनका यहां सिंहावलोकन आवश्यक है।

(क) शिक्षा द्वारा मानव निर्माण का प्रयत्न- हम प्रतिपादित कर चुके हैं। शिक्षा मानव निर्माण का आधार है। पहले महर्षि के अभिप्राय को समझकर महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द ने और फिर उनके अनुकरण पर अनेक आर्यपुरुषों ने शिक्षा द्वारा मानव निर्माण का कार्य किया।

इस समय 60 से अधिक लडके और लडकियो के गुरुकुल हैं, जहां सबको समान रूप से शिक्षा देने की व्यवस्था है। 300 के लगभग सस्कृत विद्यालय तथा 400 के लगभग दलित जातियों की उन्नात के लिए पाठशालाएं है। 600 के लगभग महाविद्यालय और माध्यमिक विद्यालय हैं, 3000 प्राथमिक और निम्न माध्यमिक विद्यालय हैं, जो व्यक्ति के अज्ञान को दूर कर उनका बौद्धिक विकास कर रहो हैं। 12 से अधिक तकनोकी संस्थाएं देश में शिल्प की शिक्षा प्राप्त कर रहो हैं, जिन पर प्रतिवर्ष 20 करोड़ रुपये व्यय हो रहा है। शिक्षा के प्रसार का जितना कार्य अकेले आर्यसमाज ने किया है, उतना कोई संस्था नहीं कर सको।

(ख) कन्याओं व स्त्रियों को उन्नति का प्रयत्न- कन्याओं के लिए स्थापित शिक्षा संस्थाओं के अतिरिक्त 200 के लगभग वानताश्रम, दोनहोन नारियों को सम्मान पूर्वक जीवन व्यतोत करने में संलग्न है।

(ग) अन्य प्रयत्न- इस समय 5000 आर्यसमाज हैं, जिनमें से 500 लगभग विदेशों में हैं 200 प्रान्तीय व जिला उपसभाएं हैं, 500 आर्य वीरदल की शाखाएं है। 200 आर्यकुमार सभाएं हैं अनेक अनाथाश्रम 300 छोटो बडो पत्र-पत्रिकाएं--आर्यसमाज के लक्ष्य सबको श्रेष्ठ बनाओ-- को पूरा करने के प्रयत्न में लगो हैं।

आर्यसमाज के प्रयत्नों का ही यह परिणाम है कि श्याम जी कृष्ण वर्मा गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम आर्य मुसाफिर, पूज्य नारायण स्वामी, स्वामी दयानन्द, लाला लाजपतराय, आचार्य रामदेव पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति जैसे महापुरुषों तथा भाई परमानंद, सरदार अजीत सिंह, श्री मदनलाल ढींगरा, रामप्रसाद बिस्मिल सरदार भगतसिंह, श्री हरविलास शारदा आदि क्रान्तिकारी नेताओं निर्माण किया। वस्तुत यह सूची और भी लम्बी है।

मानव निर्माण के लिए अब आर्यसमाज क्या करे-

निस्सन्देह मानव निर्माण के लिए किये गये प्रयत्न आर्यसमाज के लिए गौरव की बात है। किन्तु यह स्वीकार करने में हमें थोडी भी दुविधा नहीं कि हमारे इन प्रयत्नों से जिस प्रकार के मनुष्यों का जितनी मात्रा में निर्माण होना चाहिए था वह नहीं हो सका है। उसका कारण यह है कि आज समग्र विश्व में भौतिकता और नास्तिकता की आंधी उड रही है, उसमें आर्यसमाज के सिद्धान्त तो अडिग हैं, पर उसके व्यवहारिक रूप में कुछ कठिनाइयां उत्पन्न हुई हैं और उस कारण जहां हमारे प्रयत्नों में कुछ शिथिलता आई है, वहां ईमानदारी से किये प्रयत्न भी पूर्णत: सफल नहीं रहे। अत: हमें इस दिशा मे अपने संकल्प और प्रयत्न और अधिक तीव्र करने होंगे। जब तक देश में एक भी व्यक्ति अज्ञान, अभाव और रोग से ग्रस्त है, तब तक आर्यसमाज को प्रयत्न करना होगा। ऐतरेय ब्राह्मण के परिमितं वैभूतं अपरिमितं भव्यम्-- वाक्य के अनुसार अभी हमें बहुत कुछ करना है। इस संबंध में निम्नलिखित प्रयत्न अपेक्षित है--

(क) जब तक जंगलों और नदी के तटों पर आश्रम प्रणाली का पूर्ण विकास नहीं हो जाता तब तक जितने भी आर्यसमाज मन्दिर हैं, उन सब में निर्धन छात्रों की शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। अभी तक आर्यसमाजों का उपयोग कुछ ही लोगों -- वे भी वानप्रस्थाश्रम की आयु के साप्ताहिक सत्संग के लिए होना है। शेष सम्पूर्ण समय में भवन खाली पड़े रहते हैं। उनका उपयोग होना चाहिए। अन्यथा इन पर भी वही आरोप आएगा जो महर्षि ने अन्य मन्दिरों व मठों पर लगाया था। प्रत्येक आर्यसमाज में जितना स्थान हो, उसके हिसाब से वहां कुछ छात्रवानप्रस्थी विद्वानों के संरक्षण में स्थायी रूप से निवास करें। विशेष रूप से वहां हमें बालकों को संस्कारित करने की योजना बनानी चाहिए। वर्ण-व्यवस्था गुणकर्मानुसार तभी होगी जब सभी हरिजन बच्चों को शुद्ध वातावरण में शिक्षा के पूर्ण अवसर मिलेंगे।

(ख) आज विश्व में 5000 आर्यसमाज हैं। यदि प्रत्येक आर्यसमाज औसत रूप में 10 बालकों को महर्षि के सिद्धान्तों के अनुसार निर्माण करना आरम्भ कर दे तो आगामी 15-16 वर्षों में 50 हजार आर्य युवक-युवतियों का एक दल तैयार हो जाएगा। इस प्रकार आर्यसमाज नई पीढी को आकृष्ट कर सकेगा। शिक्षा-सस्था स्थापित न भी कर सके तो इन्हें छात्रावासों के रूप में संचालित कर छात्र की शारीरिक व आत्मिक उन्नति पर बल दें। छात्रावास के रूप में जो आर्यसमाज का उपयोग करने में असमर्थ हों तो व्यायामशालाए आदि खोलकर युवकों की मांसपेशियां सुदृढ करनी चाहिये। इस प्रकार उन्हें सम्पर्क में लाकर उन्हें संस्कारित भी करना चाहिए।

(ग) हम अपने को महर्षि का अनुयायी कहते अवश्य हैं, पर महर्षि के आदेशों का पालन करते नहीं है। न जाने कितने अनेक सेवानिवृत आर्यसमाजी अभी तक घर का मोह नहीं छोड सके। कुछ वानप्रस्थी होकर भी घर नहीं छोड सके। उन्हें घर छोडकर किसी आश्रम की स्थापना करके आत्मविकास के साथ शिक्षा के विकास का कार्य करना चाहिए। जो वानप्रस्थाश्रम खुले हुए हैं, वहां वानप्रस्थी परस्पर कलह करते हैं। वहां भी नेतृत्व का प्रश्न उठ खड़ा होता है। वस्तुत एक ही विद्वान वानप्रस्थी के अधीन सबको आत्मविकास तथा साथ ही शिक्षा के विकास का कार्य करना चाहिए। जो उनकी अधीनता में कार्य कर सके व पृथक आश्रम की स्थापना करके शिक्षा-विकास का कार्य करें। महर्षि के मत में वानप्रस्थाश्रम वृद्ध गृहों के समकक्ष नहीं हैं।

आज हमारे देश में जो गुरुकुल हैं, उन्होंने कुछ वर्षों तक सफलतापूर्वक कार्य किया। पर उसके बाद अधिकांश में कुछ दोष उत्पन्न हो गये। दोषों के उत्पन्न होने का एक कारण यह है कि वहां आचार्य के रूप में वानप्रस्थियों के स्थान पर गृहस्थियो को नियुक्त किया गया है। हमारा यह सुझाव है कि प्रत्येक आर्यसमाज को नगर से कुछ दूरी पर गुरुकुल के संचालन का दायित्व अपने ऊपर लेना चाहिए। वहां दूर स्थानों से कुछ शिक्षा का कार्य करने के लिए विद्वान वानप्रस्थी बुलाकर आचार्य बनें। इन शिक्षा संस्थाओं में निःशुल्क शिक्षा हो और छात्र व अध्यापक मिलकर उत्पादन में भाग लें। कृषि व वस्त्र निर्माण करें। शिक्षा संस्था आत्मनिर्भर हो।

(घ) आज धर्म निरपेक्षता का धर्म विरोध करके सबको धर्म से विमुख किया जा रहा है। हमें आर्यसमाज से सम्बद्ध शिक्षा-संस्थाओं में ईमानदारी से धर्मशिक्षा आरम्भ करना चाहिए। साथ ही व्यापक स्तर पर देश की सभी शिक्षा संस्थाओं में भी धर्म के उन तत्वों को पाठ्यक्रम का अंग बनाने पर बल देना चाहिए। जिनमें किसी भी सम्प्रदाय का विरोध नहीं है। धर्मों की पूर्ण जानकारी न होने के कारण अपने धर्म की दार्शनिक गहराई को न समझकर व्यक्ति केवल उसके कर्मकाण्ड परक रूप को ही जान पाता है। उसका यह अधकचरा ज्ञान उस साम्प्रदायिक विद्वेष को बढाता है। उच्च स्तर पर सभी धर्मों (सम्प्रदायों) के अध्ययन की व्यवस्था भी होनी चाहिए। इसके लिए हमें व्यापक स्तर पर प्रचार करना होगा।

(ङ) भौतिकता व नास्तिकता की तीव्र आंधी का मुकाबला करने के लिए हमें विभिन्न धर्मिक सम्प्रदायों--सनातन धर्म, सिख, बौद्ध, जैन आदि को मिला कर कुछ कार्यक्रम लेने होंगें। आर्यसमाज सर्व-धर्म सम्मेलन करता रहा है। उनमें धर्म के सर्वमान्य तत्वों पर विचार होता रहा है। आज अवश्यकता इस बात की है कि उन समान तत्वों के प्रचार की कोई सीधी योजना क्रियान्वित करनी होगी। इसकी पहल आर्यसमाज ही कर सकता। उसका मंच उदार है।

(च) मनुष्य में अनेक अनुदारवृत्तियां हैं। जिस कारण दहेज, विधवा, बाल विवाह, जाति भेद आदि समस्यायें संपूर्ण समाज को दानव बना रही है। आज भी स्त्री पर अनेक अत्याचार हो रहे है। इन सबके विरोध के लिए हमें क्रान्ति की मशाल जलानी होगी। आर्यसमाज को इन सबके विरुद्ध अपने आन्दोलन तीव्र करने होंगे। शुद्ध घी और दूध की समस्या के कारण अधिकांश लोग स्वयं

— शेष पृष्ठ ११ पर

उत्तम शिक्षा-उत्तम समाज

• श्री नन्दकुमार अवस्थी
पत्रकार
रायबरेली

जिस देश व समाज की शिक्षा-व्यवस्था दूषित व भ्रष्टाचार में लिप्त तथा राजनैतिक प्रेरित होगी उस देश व समाज का नैतिक पतन सबसे पहले हो जाता है वही हाल आज हमारे देश का है क्योंकि देश की आजादी के बाद से आज तक सत्ता के व्यक्तिगत स्वार्थी तत्वों ने भारतीय समाज को गुमराह ही नहीं किया, बल्कि उसे दिशाहीन भी बना कर रख दिया जिसके कारण आज भारतीय समाज में भ्रष्टाचार व शोषण, शिष्टाचार का पर्याय बन चुका है। सारे समाज का नैतिक पतन हो जाने के कारण अशान्तिमय वातावरण बन गया है।

इसीलिए अगर यह कहा जाय कि इस समय देश में यदि सर्वाधिक अव्यवस्था है, तो वह है, देश की शिक्षा प्रणाली। जिसके माध्यम से भारतीय समाज को मार्ग दर्शन कराया जा रहा है। इसीलिए कहा गया है कि जिस देश की जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी उस देश का समाज व नागरिक भी उसी प्रकार का होगा "उत्तम शिक्षा उत्तमसमाज" की बात तभी लागू होती है जब हमारी शिक्षा व्यवस्था भ्रष्टाचार से दूर तथा राजनैतिक हस्तक्षेप से मुक्त हो क्योंकि आज शिक्षण संस्थाओं को सम्पूर्ण राजनैतिक केन्द्र बनाकर सत्ता की कुर्सी पर जमने का प्रमुख साधन बना लिया गया है। जो देश के उज्जवल भविष्य के लिए एक दुर्भाग्यपूर्ण विषय है।

उत्तम शिक्षा राष्ट्र को तभी प्राप्त हो सकती है जब उसे जाति-धर्म-राजनीति आदि से अलग रखा जाय और समान रूप से व्यवहारिक साधनों के साथ सुलभ हो जिससे धनी निर्धन सभी एक सी शिक्षा प्राप्त करने के अधिकारी हों। साथ ही साथ शिक्षा में नैतिक शिक्षा का समावेश शिक्षा पद्धति का अनिवार्य अंग व व्यवहारिक रूप दिया जाना चाहिए ताकि भारतीय समाज का वातावरण विश्व में एक आदर्श शिक्षा के रूप में माना जाय। इसके लिए ठोस और स्वार्थ हित कदम उठाने की आवश्यकता है। शिक्षा पद्धति में बदलाव तथा सुधार के लिए घोषणाओं की आवश्यकता नहीं है बल्कि प्रभावी कार्यवाही की जरूरत है ताकि राष्ट्र के दूषित वातावरण में सुधार हो सके।

वैसे सत्ता की कुर्सी ने अपने स्वार्थ में, शिक्षा को शिक्षा न रखकर, व्यापारिक प्रतिष्ठान बना दिये जाने से एक तो मंहगी शिक्षा हो गयी दूसरे राजनीति के अखाड़े बन गये। जिसका कुप्रभाव भारतीय समाज पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आज सत्ता के लोलुपता वाले राजनीतिज्ञ व्यवहारिक एवं नैतिक कर्तव्यों से हटकर शिक्षण संस्थाओं का प्रयोग हिंसा एवं तोड़फोड़ आदि जैसी स्थिति एवं वातावरण बनाने में खुलकर करने लगे हैं। शिक्षकों को सारी सुविधाएँ दिए जाने के उपरान्त उन पर राज्य कर्मियों जैसे प्रतिबन्ध होने के बजाय निहित स्वार्थ हेतु राजनीति में घसीटा गया जो राष्ट्र के उज्जवल भविष्य के लिए प्रत्येक दृष्टिकोण से अनुचित है क्योंकि जब शिक्षक वर्ग राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेगा तो फिर वह बच्चों को कब और कैसी शिक्षा देगा यह एक विचारणीय प्रश्न है?

इसी प्रकार शिक्षण सामग्री यानी हमारी पाठ्य पुस्तकें भी राजनीति से अछूती नहीं रहीं, उनमें भी राजनीतिक दुर्गंध भर दी गई है ताकि देश की जनता का ध्यान देश की आजादी का कुर्बानी पर एक व्यक्ति अथवा परिवार पर ही बना रहे, अर्थात् पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से बच्चों को यह बताने का घिनौना प्रयास किया गया है कि भारत की आजादी नेहरू व गाँधी के ही द्वारा प्राप्त हुई है आजादी के प्रमुख यही लोग हैं इन्हें भूलने की न जरूरत है और न इस परिवार के ऋण से भारतवासी कभी उद्धार हो सकते हैं।

इसका उदाहरण उत्तर प्रदेश में हाईस्कूल कक्षाओं में अनिवार्य विषय के रूप में पढाई जाने वाला पाठ्य-पुस्तक सामाजिक विज्ञान भाग एक के अध्याय 11 के पृष्ठ संख्या 279 व 280 पर "स्वतन्त्रता के लिए भारत का संघर्ष" नामक पाठ में देखा जा सकता है। जिसमें तत्कालीन सरकार ने देश की आजादी के लिए लड़ने वाले उन शहीद वीरों को आज के आजाद भारत में आतंकवादी एवं "उग्रवादी" लिखा है। इससे बढ़कर दूषित शिक्षा व्यवस्था का प्रमाण और क्या हो सकती है?

इतना ही नहीं इस सम्बन्ध में अनेक पत्रकारों द्वारा बार-बार लिखे जाने, विधान सभा तथा विधान परिषद में सरकार द्वारा स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के सम्मान के विरुद्ध किए गये घृणित सम्बोधन के प्रति आवाज उठाये जाने के फलस्वरूप आज तक इन पाठ्य पुस्तकों में आतंकवादी' शब्द विद्यमान है जिसे अक्षम्य अपराध माना जाना चाहिए।

श्री बाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रवादी नेता जिन्होंने अंग्रेजी हकूमत के समय भारत की आजादी हेतु आन्दोलन प्रारम्भ करके कहा था कि "अंग्रेजो-भारत छोड़ो- स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" को उग्रवादी तथा प्रफुल्लचन्द्र, खुशीराम अरविन्द घोष, विनायक दामोदर, श्याम जी, श्री कृष्ण वर्मा, मदनलाल-ढींगरा हृदयलाल व सुशील सेन आदि जैसे राष्ट्र भक्तों को "आतंकवादी" लिखा गया है। पृष्ठ संख्या 280 पर कुछ समाचार पत्रों के बारे में भी प्रतिकूल टिप्पणी दी गई है। जिन्हें देश का कोई भी व्यक्ति देख सकता है।

जिस देश व प्रदेश में इस प्रकार की शिक्षा दी जायगी तो उस देश का भविष्य क्या होगा यह सोचने की बात है। वैसे वर्तमान सरकार के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव ने उपर्युक्त विषय में जाँच के आदेश दिये हैं जो बधाई के पात्र हैं। मुख्यमन्त्री को चाहिए कि इस सम्बन्ध में उन लोगों को दण्डित करें जो इस पाठ्य-पुस्तक के लेखक, प्रकाशक व समिति के सदस्य हैं साथ ही ऐसे लेख को पाठ्य-पुस्तक से हटाकर संशोधन किया जाये ताकि स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों एवं वीर शहीदों के प्रति हमारी श्रद्धा बनी रहे जिन्होंने भारत माँ की आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

इसके अतिरिक्त प्रदेश सरकार को चाहिए कि शिक्षा व्यवस्था में भारी परिवर्तन करके शिक्षकों तथा शिक्षण संस्थाओं को राजनीति से एकदम दूर रखें और शिक्षकों को राजनीति में प्रवेश पर प्रतिबन्ध होना चाहिए तभी सम्भव है कि शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाना। इसके अतिरिक्त शिक्षा में नैतिक शिक्षा कम से कम हाईस्कूल तक अनिवार्यरूप से लागू की जाय जिसकी नितांत आवश्यकता है। तभी देश में अनुशासन बना रह सकता है। कानून और व्यवस्था मजबूत होगी। आशा है कि 'वर्तमान प्रदेश-सरकार इस ओर सर्वप्रथम कठोर कदम उठाकर शिक्षा व्यवस्था में पर्याप्त सुधार लाएगी। ◘

श्री लाखन सिंह आर्य की दुर्घटना में मृत्यु

श्री लाखन सिंह आर्य, प्रधान ग्राम सभा प्रहलादपुर (शूकरक्षेत्र) एटा को दिनांक 16-2-90 ई0 को कासगंज से गाँव जाते समय मामौ गाँव के पास कुछ अज्ञात व्यक्तियों द्वारा गोलियों से भून दिया गया। श्री सिंह की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी। दिनांक 19-2-90 को श्री मददया नन्दार्थ गुरुकुल नगला कटीला कासगंज (एटा) पर एक शोक सभा आयोजित की गयी। इस सभा में ब्रह्मचर्यनंत्र एवं समस्त ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों तथा आचार्यो ने भाग लिया। वैदिक रीति से यज्ञ किया गया। शोक सभा ने परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि श्री सिंह की आत्मा को शान्ति एवं शोकातुर परिवारजनों को इस महान दुख सहन करने की पूर्ण शक्ति प्रदान करें। श्री आर्य ने अपने पीछे दो पुत्र एवं तीन पुत्रियों को छोड़ा है।

शोक समाचार

आर्यसमाज बरबीघा (मुंगेर) के कर्मठ तथा दानी सदस्य श्री शंकर आर्य वानप्रस्थ का दि0 12 मार्च को निधन हो गया। उनका अन्त्येष्ठि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त-परिवार को धैर्य प्रदान करें।

गरीबी हटाओ

• आचार्य धर्म विज्ञानमुनि
आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

वेद कथा

आपृणीयान्नाचमानाय तव्यान्,
द्राघीयांसमनुपश्येत मार्गम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्राः,
अन्योऽन्यमनुगच्छन्ति रायः ।।
- ऋग्वेद।

अर्थ- सम्पन्न, धनी व्यक्तियों को चाहिए कि वे गरीबों को भरपूर दें। और उनकी दरिद्रता दूर करने के लिये दीर्घकालीन उपाय करें। रथ के चक्र के समान सम्पत्ति का स्वभाव होता है। जैसे पहिया एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है, उसके ओर ऊपर-नीचे-ऊपर गति करते हैं। वैसे ही सम्पत्तियां एक स्थान से दूसरे स्थान का अनुगमन करती हैं।

वेद की पवित्र वाणी द्वारा परमेश्वर का निर्देश है कि सम्पन्न व्यक्तिः निर्धन एवं असहाय लोगों की सहायता करें। सहायता मामूली न करें, भरपूर सहायता करें। ऐसी सहायता करें कि निर्धन व्यक्ति निर्धन न रहे। स्वावलम्बी बन जाये। इस हेतु उनके लिए दीर्घकालीन योजना बनाएं।

किसी असहाय, निर्बल एवं निर्धन व्यक्ति को साधारणतया थोड़ा-सा देकर उसकी सहायता करना हम भारतीय अपना परम पवित्र कर्तव्य समझते हैं। यह भारतीय संस्कृति की विशेषता है। दो/चार दिन भोजन खिला देना या कुछ कपड़े दे देना या कुछ रुपये दे देना को अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं। इससे तात्कालिक आवश्यकता तो दूर हो जाती है। परन्तु भूख तो रोज लगती है। कपड़े भी कुछ दिन ही चलते हैं। इसके अतिरिक्त एक ही मनुष्य को प्रतिदिन भोजन देना अच्छा नहीं लगता। कह ही देते हैं- "महाराज, आज दूसरा द्वार देखिए"। फिर उसके साथ एक छोटा सा परिवार भी होता है। इन सभी समस्याओं को निपटाने के लिए कुछ गम्भीरता से विचार करना चाहिए। ऐसा काम उसे मिले कि वह प्रतिदिन भीख न मांगे। उसकी अपनी और अपने परिवार की भी दैनिक आवश्यकताएं पूरी हो सकें। प्रतिदिन एक ही व्यक्ति को भोजनादि नहीं दिया जा सकता। और भिन्न-भिन्न मनुष्यों को भी प्रतिदिन देना, एक गृहस्थ के वश की बात नहीं। इसलिये कोई योजना बनानी चाहिए।

इसलिये असहाय एवं निर्धन लोगों के लिए कुटीर उद्योग खुलवा देने चाहिएं। गाय-पालन, फर्नीचर निर्माण, छोटे-छोटे कल - पुर्जे बनाना आदि ऐसे कम लागत के काम हैं, जिनसे मनुष्य स्वावलम्बी बन सकता है। इन कार्यों के लिए मात्र रुपया देने से काम पूरा नहीं होता। ऐसे काम आरम्भ करवाने चाहिएं। रुपये मिलने के बाद, काम आरम्भ करने में अनेकों अन्य प्रकार की भी बाधाएं होती हैं। उनको दूर किए बिना काम आरम्भ नहीं हो पाता। अगर आरम्भ हो जाए तो चल नहीं पाता। चल जाय तो बेचना भी कठिन है, तैयार माल का। अतः 2 रुपया देने के साथ, उन सभी कार्यों को भी कराना होगा, जिससे कि कुटीर उद्योग चल सके।

दीर्घकालीन योजना में बड़े कारखाने लगाना, दूसरा उपाय है। यह कारखाना {फैक्ट्री} असहायों की सहायता के लिए है। अतः इसका लाभ, मजदूरों को भरपूर मजदूरी मिलना है। अथवा इसे "हानि-लाभ-रहित" {
} के सिद्धान्त पर चलाना होगा। इससे श्रमिकों को भरपूर मजदूरी और उपभोक्ताओं को कम कीमत पर तैयार माल मिलेगा। इस कारखाने में अथवा कुटीर उद्योग में लगाई गई पूंजी पर व्याज देय नहीं होगा।

इसके साथ ही वह पूंजी वापिस देय भी न हो, तो बहुत उत्तम है। तभी यह "दान" माना जायगा। यह देखना अत्यन्त आवश्यक है कि यह पूंजी उसी काम में लगे, जिस काम के लिए दी गई है। यह पूंजी वापिस लेना इस मन्त्र की भावना के अनुकूल नहीं। इस पर व्याज लेना तो बिलकुल अभीष्ट नहीं।

इस पवित्र मन्त्र के उत्तरार्ध में सम्पत्ति के चंचल स्वभाव को समझाया गया है। सम्पत्ति की तुलना रथ के पहिये से की है।

पहिये अर्थात् चक्र दो प्रकार के होते हैं। एक तो रथ के पहिए हैं, जो जब घूमते हैं तो स्थान बदलते हैं और आगे बढ़ते हैं। दूसरे वे हैं जो जब चलते हैं तो स्थान नहीं बदलते, वहीं जमे रहते हैं, जैसे- कुएं से पानी निकालने के लिए लगाई गई गरारी। रस्सी ऊपर-नीचे जाती है। चक्र घूमता है, पर स्थिर है। सम्पत्ति के पहिये के समान है। उसे चलाओगे तो समाज चलेगा। सम्पत्ति की वृद्धि, समाज की उन्नति और व्यक्ति की समृद्धि होगी।

नहीं चलाओगे तो उसका नाश अवश्यम्भावी है। "पंचतन्त्र" नीतिकथा विषयक ग्रन्थ के प्रणेता आचार्य विष्णुमित्र-शर्मा कहते हैं:-

दानं भोगो नाशः तिस्रः -
गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति, न भुंक्ते,
तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

सम्पत्ति की तीन गतियां हैं। प्रथम उपभोग करें। दूसरी दान करिए। तीसरी- जब न तो भोग करें, न दान, तो उसका, पड़े-पड़े, नाश हो जायगा।

इस प्रकार कल्याणकारी मन्त्र बता रहा है- हे सम्पन्न मनुष्य! तू निर्धन, एवं असहायों को भरपूर दे। दीर्घकालीन योजना बना, कि उनको रोज-रोज न देना पड़े। उनकी गरीबी सदा के लिए दूर कर। नहीं तो समझ ले, यह सम्पत्ति, धन-दौलत टिककर तुम्हारे पास नहीं ठहरती। अगर अपनी इच्छा से इसे अपने से अलग नहीं करेगा, तो यह स्वयं चली जाएगी। रथ के पहिए के समान यह अपना आधार स्थल बदलती रहती है। अपनी इच्छा से देने पर प्रसन्नता होती है। जब अपनी इच्छा के विरुद्ध, कोई जबरदस्ती छीन ले या अपनी आँखों के सामने नष्ट हो जाय और तुम बेबस हो उसे बचा न सको, तब बहुत कष्ट होता है। अतः हे मानव! दे और भरपूर दे। यथाशक्ति बहुत दे। जितना अधिक से अधिक दे सकता है, उतना इन असहायों को अवश्य दे। देना असहाय को है। □

निरीक्षण सम्पन्न

विरजानन्द अन्ध कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, राजेन्द्र नगर, शंकर रोड, नई दिल्ली में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा०धर्मपाल और वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती निरीक्षण करने के लिए गए। इस विद्यालय में लगभग 235 अंधी बच्चियां हैं तथा लगभग 35 अध्यापिकाएं हैं। विद्यालय में बच्चियों के लिए निःशुल्क आवास, भोजन तथा वस्त्रादि की समुचित व्यवस्था है। दैनन्दिन कार्य यज्ञ प्रार्थना से प्रारम्भ होता है।

वैदिक वाङ्मय में धर्म का स्वरूप

प्राचार्या डा. आशारानी राय
उपप्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

(गतांक से आगे)

इस समय सब सुख नश्वर लगते हैं, शान्ति जो मन का विषय है, वह भी समाप्त हो जाती है, किन्तु इन दोनों से महत्वपूर्ण वस्तु है, आनन्द यह आत्मा का विषय है। आनन्द का अनुभव तभी होगा, जब श्रेय ज्ञान का प्रयास किया जायेगा जब इस भौतिक संसार से मन हटाकर ईश्वर के चिन्तन में लगकर धार्मिक व आप्त लोगों का सम्पर्क होगा। अपने ज्ञान के अनुकूल परहित चिन्तन सार्वभौमिक नियमों का पालन ही सत्य है। स्वहानि होने पर किसी पर क्रोध नहीं करना, यह का अक्रोध है।

महर्षि दयानन्द ने इन्हीं लक्षणों को आर्य-समाज के नियमों में स्थान दिया, अतएव किसी भी मानव को धर्म का त्याग कदापि नहीं करना चाहिये क्योंकि यह भी शाश्वत सत्य है:-

न जातु कामान्न भयान्नलोभादधर्म
जह्यात्जीवितस्यापि हेतोः ।
नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः।।

महाभारत (उद्योगपर्व)4 /13

अर्थात् किसी कामना रत भय से लोभ से धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए चाहे जीवन का अन्त क्यों न हो जाए, सुख- दुख व भौतिक शरीर तो अनित्य है केवल जीवात्मा ही नित्य है अतः नित्यकी प्राप्ति हेतु प्रयास करने चाहिए।

हमारे देश की सभ्यता व संस्कृति गौरव से युक्त है। सभ्यता अर्थात् सभायांभव सभा में कब किससे क्या व्यवहार करना है एवं संस्कृति अर्थात् सम्यक् कृति वे शाश्वत नियम स्मृतियाँ आदि जो सार्वभौमिक सार्वकालिक व सर्वदेशीय हों, इस प्रकार सभ्यता व संस्कृति पर पूर्ण आचरण करता हुआ मानव मानो धर्माचरण करता है। मनुस्मृति में कहा गया है --

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत् ।।

मनुस्मृति 8/15

अर्थात् मारा हुआ धर्म मारता है रक्षा किया हुआ रक्षा करता है, अतः धर्म को नहीं मारना चाहिए, जिससे धर्म हमें न मार दें अर्थात् जब जब समाज में सद्धर्म का ह्रास होगा, तब ही समाज व देश का नाश होगा ।

अतः स्पष्ट है कि वेद शाश्वत पुरातन ज्ञान पुन्ज है जिनकी आज्ञा वेद देता है, वही धर्म है महर्षि जैमिनी मीमांसा दर्शन में इसकी चर्चा करते है:-

चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः अर्थात् जिसकी वेद प्रेरणा है, वह धर्म है जो वेदों के विपरीत है, वह अधर्म है, वैदिक धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है, यहाँ धर्म व विज्ञान साथ-साथ हाथ में हाथ लेकर चलते हैं। अतः सबको इस धर्म पर चलकर समान विचार व हृदय से युक्त होना चाहिए। जैसा कि वेद में कहा गया है -

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।

ऋग्वेद-8/8/49/4

हे मानवों, तुम्हारे पुरुषार्थ समस्त प्राणियों हेतु सदा हों, धर्म का त्याग कभी न करना सदैव इसी प्रयास में रत रहना जिससे सबके मन परस्पर प्रेम युक्त हों, जिससे सबका व्यवहार सम हो।

आज संसार में जा अशान्ति, हाहाकार व अव्यवस्था का बोलबाला है, उसका कारण है कि लोगों का सत्य वैदिक धर्म का स्वरूप न जानना, अतः आवश्यकता है लोग सत्य व असत्य को समझें, किसी भी बात का अन्धानुसरण न करें। परमात्मा ने अमूल्य निधिरूप सुमेधा प्रदान की है, उससे भली प्रकार विचारें, यदि बुद्धि व तर्क की कसौटी पर ठीक हो तो मानें अथवा न मानें। यजुर्वेद में तो स्पष्ट वर्णित है--

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

यजुर्वेद 19/77

अर्थात् परमपिता परमेश्वर ने सत्य व असत्य दोनों रूपों को जानकर पृथक कर दिया । असत्य में अश्रद्धा की रखा तो सत्य में श्रद्धा को। तात्पर्य यह है कि जो सत्य हो, उसमें श्रद्धा होनी चाहिए किन्तु जो असत्य हो, उसमें कदापि श्रद्धा न होनी चाहिए चाहे वह पूज्य इष्ट जन द्वारा ही क्यों न कहीं जा रही हो।

इस प्रकार आज भौतिकता की दौड़ में मानसिक अशान्ति व यातनाओं से बोझिल संसार के सभी मानवों के मानसिक व आत्मिक शान्ति हेतु वैदिक धर्म व ज्ञान के प्रचार प्रसार की महती आवश्यकता है अतः प्रत्येक को इस ओर प्रेरणा देनी चाहिए तभी----

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम"

यह बसेरा घोष पूर्ण होगा।

आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

पीपलीनायक (रामपुर) में दि०-10 से 13 मार्च तक उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ऋषिबोध, शिक्षा, महिला, राष्ट्रीय एकता संस्कृति रक्षा, युवा सम्मेलनों का आयोजन किया गया। ब्र0 विश्वपाल-जयन्त "आधुनिक भीम" ने शारीरिक प्रदर्शन दिखाये तथा गुरुकुल कण्वाश्रम के ब्रह्मचारियों ने शारीरिक व्यायाम योगासन व अग्नि चक्र में छलांगें मार कर अपार जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। स्वाधीनता सेनानियों अभिनन्दन किया गया। ब्र0 कड़कदेव, रामलाल आर्य, अमरसिंह, विक्रमदेव सीताराम आर्य, प्रहलादस्वरूप आर्य, पं0 जयप्रकाश आर्य, पं0 विश्वम्भरदत्त शास्त्री ने अपने उपदेशों व भजनों से जनता में वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा जागृत की।

94वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पं0 बंगाल के वर्दमान जिला स्थित आर्य समाज कुल्टी का 94वां वार्षिकोत्सव 15 से 19 मार्च 1990 को सम्पन्न हुआ। डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्द वेद एवं कुरान के तुलनामूलक व्याख्याता पं0 महेन्द्र पाल आर्य कलकत्ता, पं0 इन्द्रदेव सिंह "इन्द्र" छपरा, श्रीमती विद्यावती आर्या पटना के प्रोगाम होते रहे। हजारो की संख्या में स्त्री-पुरुषो ने भाग लिया।

आनंद ट्रेडर्स द्वारा कलेण्डर वितरण

आनंद ट्रेडर्स (सेनेट्री एण्ड हार्डवेयर गुड्स) हैदरगंज चौराहा, ताल कटोरा रोड लखनऊ- ऋषि चित्र का कलेण्डर 2000/- प्रतियों में छपवाकर ऋषिचित्र घर-घर पहुँचाने का संकल्प पूरा किया है। जो विगत 10 साल से कर रहे है।

-आर्या अनुराधा सिंह
आर्यसमाज छीतपुर, मिर्जापुर।

जामा मस्जिद दिल्ली की मरम्मत के लिये पचास लाख रूपये का अनुदान तुष्टीकरण का अंग है।

— स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सरकार द्वारा जामा मस्जिद दिल्ली की मरम्मत के लिए पचास लाख रुपये का अनुदान दिये जाने पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा है कि शासन धर्म निरपेक्षता के नाम पर आज चार दशकों से भारत की बहुसंख्यक जाति की गाढ़ी कमाई का धन मुस्लिम तुष्टीकरण में बहा रहा है। भारत के सभी भागों में विशेषकर काश्मीर में जहाँ मुसलमानों की संख्या 90 प्रतिशत से भी अधिक है। सहायता अनुदान और उनकी आर्थिक स्थिति के उन्नयन के लिये बहुसंख्यक जनता की गाढ़ी कमाई पानी की तरह बहाई गई और जिसका नतीजा आज यह है कि काश्मीर से हिन्दुओं को खदेड़ा जा रहा है। उनका खून बहाया जा रहा है। स्वामी जी ने लोकसभा में गृहमंत्री मोहम्मद सईद द्वारा दिए गए भाषण पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उनसे पूछा कि आयोध्या में रामजन्मभूमि मन्दिर के खुलने के समय कश्मीर में मुस्लिम कट्टर पन्थियों द्वारा हिन्दू मन्दिरों के तोड़े जाने और उन्हें अपवित्र किए जाने को वे क्या कहेंगे? मन्दिरों को नष्ट किए जाने के अतिरिक्त वहां बड़े पैमाने पर हिन्दुओं की सम्पत्ति को लूटा और जलाया गया। यह दूसरी बात है कि केन्द्र में तत्कालीन राजीव गाँधी की सरकार ने स्वामीजी के आग्रह पर हिन्दुओं की सुरक्षा और मन्दिरों का पुनर्निर्माण कराया। स्वामीजी का श्री मुफ्ती से दूसरा प्रश्न है कि कश्मीर घाटी से हिन्दुओं और सिखों का भाग कर जम्मू तथा अन्य जगहों पर शरण लेने का क्या कारण है? क्या राज्य के मुस्लिम कट्टर पन्थियों द्वारा फैलाये गए आतंकवाद की इसमें कोई भूमिका नहीं है?

लोक सभा में श्री मुफ्ती का यह वक्तव्य उनकी अपनी घोर साम्प्रदायिक मनोवृत्ति पर लगाया हुआ धर्म निरपेक्षता का एक मुखौटा मात्र ही है। श्री मुफ्ती ने अपने बयान में पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो के उस कथन की भी चर्चा की है जिसमें उन्होंने कश्मीर विद्रोहियों को दस करोड़-रुपया देने की बात कही थी। परोक्षरूप से इस पैसे का उपयोग भारत के विरूद्ध तोड़-फोड़ की कार्यवाही में ही किया जायेगा। स्वामी जी का प्रश्न है पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री द्वारा आतंकवादियों को दी जाने वाली यह आर्थिक सहायता क्या भारत के विरुद्ध अघोषित युद्ध का प्रस्ताव नहीं है?

स्वामी जी का कहना है कि कश्मीर समस्या को एक साम्प्रदायिक समस्या मानकर ही उसका हल निकाला जा सकता है। सम्पूर्ण जम्मू कश्मीर राज्य को उस समय तक सेना के अधिकार में दे दिया जाय जब तक कि वहां पूर्ण शांति स्थापित न हो जाय। आम जनता की भी आज यही मांग है। ▣

पं. धर्मपाल जी विद्यालंकार का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

मैनपुरी, 27-3-90 आज, आर्यसमाज के 116वें स्थापना-दिवस पर, अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्दजी के हत्यारे को घटनास्थल पर ही पकड़ कर, न्यायालय में प्रत्यक्ष-साक्षी के रूप में उपस्थित होकर उसे फाँसी की सजा कराने वाले 96 वर्षीय आर्यवीर पं0 धर्मपाल जी विद्यालंकार का इस जनपद की आर्य उप-प्रतिनिधि सभा एवं स्थानीय आर्यसमाज और आर्य स्त्री समाज के द्वारा उसके लाल सिंह मानसिंह हाल में, समारोह पूर्वक हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर इस जनपद तथा जनपद के सीमावर्ती जनपदों के आर्यजनों ने पधार कर अपने वयोवृद्ध नेता का, प्रशस्ति पूर्वक, माल्यार्पण करते हुए, अभिनन्दन किया।

- कुँ0 ध्रुवपाल सिंह "अटल"
मुख्य निरीक्षक, सभा।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पिलखुआ का वार्षिकोत्सव दि0- 16 से 19 मार्च 1990 तक धूमधाम से मनाया गया दि0- 16 को शोभायात्रा निकाली गई जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

--

कानपुर मण्डल के पदाधिकारी सम्मानित किये गये।

जिला आर्योप सभा की बैठक दिनांक- 18-3-90 में आर्य प्रतिनिधिसभा उ0प्र0 के कानपुर मण्डल के समस्त पदाधिकारियों को आर्यसमाज नयाशहर इटावा में गुलाब की मालाओं एवम् एक-एक कीमती दुशाला भेंटकर सम्मानित किया।

ज्ञातव्य हो कि वर्ष 1990 के निर्वाचन में उपप्रधाना पद पर डा0 आशारनी राय कानपुर उपमन्त्री-पद पर भी वेदप्रकाश आर्य औरैया एवम् मुख्याधिष्ठाता पद पर भी उमेशचन्द्रजी-आर्य दिबियापुर को चुना गया था।

इसके अतिरिक्त माननीय प्रधानजी एवम् माननीय मन्त्री जी, आर्य प्रतिनिधिसभा उ0प्र0 को भी एक-एक दुशाला भेंटकर सम्मानित किया गया। जिला आर्योप सभा कार्यालय हेतु एक ब्रीफकेश भी भेंट किया गया है।

उक्त सम्मान जिला सभा बैठक में एक सादे समारोह में सम्पन्न किया गया।

आर्यसमाज मन्दिर लखीमपुर में प्रतिपदा को आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नव संवत् वर्ष हजारों की उपस्थिति में मनाया गया।

--

निरीक्षण सम्पन्न

दिनांक- 4-3-1990
आर्यसमाज व दयानन्द कालेज जाजूमई, जिला- फिरोजाबाद।

दिनांक- 18-3-1990
बैठक, आर्य उप-प्रतिनिधिसभा, आ0स0 नया शहर इटावा।

दिनांक- 19-3-1990
आर्यसमाज रानी मण्डी व चौक तथा आर्यकन्या डिग्री व इन्टर एवं दयानन्द मान्टेसरी स्कूल, इलाहाबाद।

दिनांक- 20-3-1990
कार्यालय, आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

दिनांक- 25-3-1990
मेरठ, माननीय प्रधान जी, सभा के साथ आर्यसमाज सदर तथा वैदिक साहित्य प्रचारकेन्द्र, मेला- नौचन्दी का भ्रमण और सभा- सम्बन्धी कार्य।

- कुँ0 ध्रुव पाल सिंह "अटल"
मुख्यनिरीक्षक, सभा।

अनुकरणीय विद्यालय
दयानन्द बाल मन्दिर टनकपुर (नैनीताल) में आयोजित धर्म प्रशिक्षण शिविर

- दिनांक- 19, 20 फरवरी 1990 को उपरोक्त विद्यालय में धर्म प्रशिक्षण शिविर का आयोजन वहां के प्रबन्धक महोदय श्री रामदेव आर्य के निमन्त्रण पर आयोजित किया गया जिसमें 45 शिक्षिकाओं एवं कुछ धर्म प्रेमी महिलाओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्य में श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री नांगल (बिजनौर) का प्रशंसनीय योगदान रहा पीलीभीत के स्वामी योगानन्द जी ने योग एवं योगासन प्रशिक्षण में सहयोग दिया। इन दोनों महानुभावों की कृपा के लिए सभा आभार प्रकट करती है।

सभा विशेषतया जी रामदेववर्मा के प्रति आभार प्रकट करती है कि उन्होने प्रशिक्षण का पूरा व्ययभार वहन किया यह आयोजन विद्यालय के वार्षिक उत्सव के अवसर पर किया गया जिसकी विशेषता यह रही कि विद्यालय की ओर से आस-पास के ग्रामीण क्षेत्र में उत्सवोपरान्त प्रचार, एवं आर्यसमाज की स्थापना का कार्य किया गया यह उल्लेख एवं अनुकरणीय तथ्य है कि यह एक मात्र विद्यालय है जिसमें व्यवहार भानु, वर्णोच्चारण शिक्षा एवं महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित मन्तव्य एवं सिद्धान्त विधिवत पढ़ाये जाते हैं सभा से सम्बद्ध न होते हुए भी यह विद्यालय अपने नाम को प्रशंसनीय रूप से सार्थक कर रहा है।

- माधव सिंह
मन्त्री, प्रदेशीय विद्यार्य
सभा उ0प्र0

आचार्य श्री द्वारा सन्यासाश्रम में प्रवेश

बरेली- आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास ने शिवरात्रि के अवसर पर दिनांक 23 फरवरी 1990 को सन्यासाश्रम में प्रवेश किया। अब उनका परिवर्तित नाम "वेदर्षि व्यास योगी" हो गया है।

दिल्ली में ऋषिबोधोत्सव

कोटला फिरोजशाह मैदान में दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में ऋषिबोधोत्सव का आयोजन समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा0धर्मपाल आर्य ने की। "आज राष्ट्र को आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार के शत्रुओं से सावधान रहने की आवश्यकता है, तभी ऋषि बोधोत्सव की प्रासंगिकता पूर्ण होगी।" यह शब्द सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी महाराज ने उक्त अवसर पर सम्बोधित किये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी ने इस अवसर पर ऋषि बोध को आत्म बोध एवं राष्ट्र बोध मनाने का आग्रह किया। श्री वेदप्रताप वैदिक ने पश्चिमी यूरोप, एशिया एवं सारी दुनिया के देशों के सामने जो समस्याएं हैं, उनका एकमात्र हल ऋषि दयानन्द की विचारधारा को बताया।

११०वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज परेड गेट ,कानपुर का 110वाँ वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर वृहस्पतिवार 22 फरवरी से रविवार 25 फरवरी 1990 तक समारोहपूर्वक श्रद्धानन्द पार्क में मनाया गया।

इस अवसर पर 22 फरवरी को प्रातः 7 बजे से गायत्री महायज्ञ एवं यजुर्वेद पारायणयज्ञ प्रारम्भ हुआ एवं सायं 4 बजे से विशाल शोभा यात्रा नगर के भिन्न-भिन्न मार्गों से निकाली गई।

ऋषि बोधोत्सव

देववन्द आर्यसमाज की ओर से ऋषिबोधोत्सव का प्रारम्भ प्रातः प्रभात फेरी से हुआ।

यज्ञोपरान्त बोध विषयक भाषण-भजन तथा छात्रों द्वारा विविध झाँकियाँ प्रदर्शित की गईं। वक्ताओं में- विश्वम्भरदेव शास्त्री मास्टर जनेश्वर प्रसाद, विश्वनाथ प्रधान तथा गायत्री देवी आदि थे। प्रसाद वितरण तथा स्वामी दयानन्द के चित्र वितरित किये गये।

● आर्यवीर दल का सम्मेलन सम्पन्न। विगत 25 फरवरी को मऊनाथभंजन आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में आर्यवीर दल का सम्मेलन श्री अवधबिहारी खन्ना जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें सैकड़ों आर्यवीरों ने सोल्लास भाग लिया।

सम्मेलन में जहाँ आर्यवीरों ने अपने आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किये वहाँ अनेकों विद्वानों ने उनका मार्गदर्शन भी किया।

युवा मन की गहराइयों का अपने क्रांतिकारी व प्रेरक व्याख्यान से आर्यवीर दल पूर्वी उ0प्र0 के युवा बौद्धिकाध्यक्ष श्री रामाज्ञा जी "आर्यपुत्र" ने स्पष्ट करते हुए उन्हें चरित्र निर्माण की दिशा में सदैव आगे बढ़ते हुए सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करने की प्रेरणा दी। ●

अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न

दिनांक 13-2-90 को आर्य समाज महुआखेड़ागंज के उपप्रधान श्री प्यारेलाल वर्मा की सुपुत्री सौ0 सरला का पाणिग्रहण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री श्रीकृष्ण निरीक्षक सभा व श्री प्रवीणमुनि वानप्रस्थी के पौरोहित्य में चि0 चन्द्रपाल सुपुत्र श्री जौराम सिंह निवासी धामपुर के साथ सम्पन्न हुआ।

वैदिक रीत्यानुसार विवाह

बलिया आर्यसमाज के सदस्य श्री रामनाथ आर्य की सुपुत्री सरोज का विवाह गत 27 फरवरी को बलिया नगर में पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार जिला उपसभा के प्रधान श्री सुदर्शन सिंह आर्य द्वारा समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

● श्री सुनील कुमार पुत्र श्री विश्वमोहन देव अस्थाना बर्रा-4,कानपुर महानगर का शुभ विवाह श्री सुरेन्द्र प्रसाद अस्थाना निवासी बर्रा-2 कानपुर महानगर की पुत्री आयु0 कविता के साथ पूर्ण वैदिक रीति से दि0 26 फरवरी को आर्यसमाज बर्रा कानपुर 14 में सम्पन्न हुआ। नवदम्पति को शुभाशीर्वाद एवं बधाई।

रजत जयन्ती सम्पन्न

-आर्य समाज ओबरा सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) की रजत जयन्ती 23, ,25 एवं 26 फरवरी 90 को बड़े ही धूमधाम से मनायी गयी। इस शुभ अवसर पर वैदिक प्रवक्ता स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती, मथुरा, डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा तथा वैदिक गीतों के सुमधुर गायक अहर्निश वैदिक धर्म प्रचारक श्री वीरेन्द्र जी आर्य गाजीपुर के शिक्षाप्रद, प्रवचन व्याख्यान एवं भजनोपदेश होते रहे।

● महा शिवरात्रि (ऋषिबोधोत्सव) के पावन पर्व पर आर्य समाज मन्दिर बड़ा बाजार जलेसर में सामूहिक यज्ञ किया गया तथा सत्यपाल सिंह शास्त्री ने महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र पर अपना प्रवचन किया।

● आर्य समाज मसेना मिर्जापुर,चहोड़ारोड रामनगर फैजाबाद का वार्षिकोत्सव 25,26 तथा 27 फरवरी सन् 1990 को श्री राम अवध पाण्डेय की अध्यक्षता में बड़े धूमधाम से मनाया गया।

जिसमें आर्यजगत के कई विद्वानों ने अपने ओजस्वी भाषण तथा भजनों के माध्यम से आर्य समाज के सिद्धान्तों विचारों और राष्ट्रीय एकता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

● -आर्यसमाज कोसी कलाँ द्वारा ऋषि बोध पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। रात्रि 8 बजे से आर्य समाज मन्दिर में ऋषि जीवन प्रकाश एवं विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ।

स्वामी ओमानन्द जी जयपुर द्वारा अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द के जीवन की प्रमुख घटनाओं का जिक्र किया।

स्वास्थ्य-सुधा

आरोग्य दर्पण

(1)

रोगी अपना विवरण और दो डाक-लिफाफे निम्नपता पर भेजें:-

पता-
(डॉ0) स्वामी गुरुकुलानन्द-
कच्चाहारी आर्यसमाज-पिथौरागढ़
(उत्तर प्रदेश)

विनोदकुमार, विनोदस्टूडियो, श्रीविजयनगर, (श्रीगंगानगर) राजस्थान। -5 या 6 वर्ष पूर्व मेरे सिर के कोई-कोई बाल सफेद थे। अब मेरे सिर के सफेद बालों के साथ-साथ मूँछ के बाल भी सफेद होने लग गये हैं। आप इसका शीघ्र होने वाला उपचार लिखें।

:: आपकी ही जैसी समस्या फूलदेव यादव की भी है। सविस्तार उपचार, "आर्यमित्र" के उपचार-दर्पण में पढ़ें।

(2)

:: फूलदेव यादव, मुख्य डाकघर-पिथौरागढ़।

- मेरे सिर के बाल झड़ रहे हैं। बाल भी सफेद हो रहे हैं। आयु तो अभी 34 वर्ष है। कृपया उपचार लिखियेगा।

:: 30 ग्राम कलमीशोरा, दस कागजी-नीबू के रस में खरल कर किसी शीशी में रखें। इस मिश्रण को गंज-स्थान पर लेप करें। दो घण्टे बाद स्नानकर भृंगराज केश तेल लगाया करें। सिर में साबुन का प्रयोग न करें। एक लीटर पानी में चार आँवले उबालकर आधा करें। इस पानी में दही मिलाकर सप्ताह में एक बार तो अवश्य सिर के बाल धोया करें।

प्रातः खालीपेट "सर्वांगासन" किया करें। भोजन के साथ फल और सलाद लेना मत भूलें। एक मास बाद गंजापन नष्ट होने लगेगा। ■

आवश्यकता

"क" वर्गीय गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर में व्याकरण सहायक विभागाध्यक्ष पद हेतु एक आचार्य की आवश्यकता है। शैक्षिक अर्हता- व्याकरण विषय में आचार्य एवं शोध उपाधि। वेतनक्रम 540 से 910 शासन द्वारा निर्धारित अन्य मंहगाई आदि देय है। अधिकतम योग्य, अनुभवी, गुरुकुलीय स्नातक/स्नातिकाओं को वरीयता।

विशेष- व्याकरण, दर्शन आदि विषयों के अध्यापन कार्य में सक्षम सेवा निवृत्त विद्वान भी आवेदन कर सकते हैं। उन्हें संस्था की ओर से भोजन आवास के अतिरिक्त सम्मानित दक्षिणा देय होगी।

- प्रबन्धक,
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर
तिलहर, शाहजहाँपुर

डॉ. आशारानी द्वारा प्रचारकार्य

- दि0- 26 से 28 फरवरी-90 को आर्यसमाज अकबरपुर (कानपुर देहात) के वार्षिकोत्सव पर आर्य जनता को सम्बोधित किया तथा 80 वर्ष के श्री-बुलाकीराम व श्री भद्रजीत जी को ताम्रपत्र भेंट किया।

जि० सभा लखीमपुर का अधिवेशन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखीमपुर के समस्त जिले के सदस्यों अधिकारियों से निवेदन है कि दि0-29 अप्रैल को सभा का नैमित्तिक अधिवेशन आर्यसमाज मन्दिर गोला गोकरननाथ में सम्पन्न होगा। सभी सदस्य अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित हो निर्वाचन सम्पन्न कराकर आगे के कार्यक्रम का निश्चय करें।

● आर्य उप प्रतिनिधि सभा, प्रयाग के तत्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह 27 मार्च, 1990 को बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर जनपदीय स्तर पर सामूहिक यज्ञ यज्ञोपरान्त विशाल शोभायात्रा निकली जो इलाहाबाद नगर से मुख्य सडकों से होती हुई आर्यसमाज, चौक में समाप्त हुई।

--

आ० स० बलरामपुर का उत्सव

आ0स0 बलरामपुर जनपद गोण्डा का उत्सव स्थानीय रमना पार्क में 9 से 12 फरवरी तक बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। स्वामी ज्ञानानन्द जी, उत्तमचन्द्र शरर, श्रीमती-सावित्री देवी शर्मा, कुंवर महिपालसिंह के प्रवचन तथा भजनों का जनता पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा। जिला सभा के मन्त्री श्री आनन्द उपमन्यु ने सचालन किया। उत्सव को सफल बनाने में उनका प्रयास सराहनीय रहा।

● आर्यसमाज जौनपुर ने ऋषिबोध पर्व दिनांक 23 फरवरी को धूमधाम से मनाया गया तथा प्रभातफेरी निकाली गई कई वक्ताओं ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

● भागलपुर-देवरिया सार्व० आर्यवीर दल शाखा लार बाजार के सैनिकों की एक प्रतियोगिता विगत 20 मार्च को श्री गोरख प्रसाद आर्य, आर्य समाज जोडासाकू (कलकत्ता) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें कक्षा षष्ठ का 11 वर्षीय विद्यार्थी चि0 बबलू आर्य सुपुत्र श्री सलामत अली अंसारी ने विभिन्न अवसरों पर प्रयोग किये जाने वाले अनेक वेद-मन्त्रों का सस्वर पाठ करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। शेष सभी आर्य वीरों को दूसरा, तीसरा व प्रोत्साहन पुरस्कार मंडल संचालक डा0 श्री कस्तूरीलाल जी के सौजन्य से अध्यक्ष जी द्वारा दिया गया। मुख्य वक्ता के रूप में श्री रामाज्ञा "आर्यपुत्र" बौद्धिकाध्यक्ष पूर्वी, उ0प्र0 ने प्रखर आर्यवीरों को आजीवन व्रती कार्यकर्त्ता के रूप में आगे आने का आहवान किया जिससे कि कार्य की गति को तूफानी बनाया जा सके।

● -- जमानियां के श्री मुरलीधर आर्य के पौत्र एवं आनंद कुमार के प्रथम पुत्र का नामकरण संस्कार दिनांक 23 मार्च 90 को किया गया नगर के गण्यमान्य लोगों ने बच्चे को आशीर्वाद दिया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गंगोह (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दिनाक 1 से 3 अप्रैल 90 तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज स्थापना दिवस व नव सवत्सर भी उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

● नालन्दा जिले के अन्तर्गत मुसाढी आर्य समाज का 33वाँ वार्षिकोत्सव सानन्द सफल हुआ। इस अवसर पर श्री आशाराम जी हरियाणा स्वामी मोक्षानन्द जी मथुरा, डा0 देवेन्द्र सत्यार्थी नालन्दा श्री महावीर सिंह, पटना के पुरोगम होते रहे। यह उत्सव 9, 10, 11 फरवरी को आयोजित हुआ।

● -आर्य समाज बदायूं के तत्वाधान में वीर लेखराम तृतीयापर्व पर यज्ञ, विद्वानों के व्याख्यान हुए।

- नवसस्येष्टि पर्व (होली) के उपलक्ष मे आर्यसमाज बदायूं द्वारा आर्य समाज मन्दिर मे आर्यसमाज चौक, सुभाष चौक, शास्त्री चौक, पनवाडी चौक, शिव चौक ब्राह्मपुर शिवाजीपुरम् में यज्ञ आयोजित किये गये। होली मिलन समारोह मे आर्यसमाज बदायूं द्वारा शिविर लगाया गया।

● कबीरपंथी सम्मेलन में वेद प्रवचन 6 फरवरी, पूर्णिया कोर्ट स्टेशन के समीप स्थित महात्मा धर्म स्वरूप जी द्वारा स्थापित जीवन ज्योति केन्द्र में महान कबीर पंथी सम्मेलन के मंच से आर्य समाज के विद्वान डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के द्वारा वेद मंत्रों द्वारा प्रवचन किया गया हजारो उपस्थित संत समुदाय ने इस प्रवचन की बडी सराहना की।

वार्षिकोत्सव

-आर्यसमाज भीकमपुर जैनी जनपद बदायूं का 10वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 11 से 13 मई को समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान भजनोपदेशक पधार रहे हैं जनता अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

● -आर्यसमाज शाहगंज (जौनपुर) का 63वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 3 से 6 अप्रैल 1990 तक धूमधाम से मनाया गया।

--

● - दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम दयानन्द नगर गाजियाबाद का 33वाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 10 से 15 अप्रैल 90 तक धूमधाम से मनाया गया जनता में वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा उत्पन्न हुई।

--

● - आर्यसमाज हापुड़ का 81वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 3 से 6 अप्रैल 90 तक धूमधाम से मनाया गया, स्थानीय जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

--

हरदोई में वैदिक धर्म प्रचार

जिला आर्य उपसभा हरदोई के अन्तर्गत दिनांक 16 जनवरी से 15 फरवरी तक सभा प्रचारक पं0 ब्रह्मानन्द आर्य वानप्रस्थी, श्री नेम प्रकाश धनुर्धर श्री युगुलकिशोर आर्य प्रचारक, श्री अवध किशोर आर्य भजनोपदेशक, श्री गिरिवर देव वानप्रस्थी, श्री अमरलाल ढोलक वादक ने आर्यसमाज यासीनपुर निजामपुर, सैदपुर, टोडरपुर, बिजगवां, साधिनावां मानपुर सेरिया, अमिरता, फैजुल्लापुर, पाली, कुठिला में प्रचार किया। लोगों ने अण्डा, मांस, शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की। एक नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गयी।

--

● बिलौली आर्य समाज तथा महिला आर्य समाज के तत्वाधान में महर्षि दयानन्द बोध पर्व सोल्लास मनाया गया, इस अवसर पर सामूहिक यज्ञोपरान्त सर्वश्री-देवपाल वेद प्रकाशन वैद्य लाखन सिंह श्रीमती शशी आर्या ने अपने -अपने विचार रखे तथा महर्षि के प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित की। ज्ञान देवी आर्य बाल विद्यामन्दिर के होनहार बच्चों की महर्षि के प्रति भाषण प्रतियोगिता बैन्ड वादन, तथा मंत्र पाठ हुए।

● कछौना (हरदोई) के ठा0 औसान सिंह के यहाँ दिनांक 19 मार्च 90 को होली मिलन समारोह मे कई विद्वानों को बुलाकर वैदिक धर्म का प्रचार कराया जिसमें छुआछूत को हटाकर सब एक दूसरे से गले मिले। श्री सीताराम आर्य भजनोपदेशक सभा का मनमोहक भजन हुआ।

लखनऊ मे सामवेद पारायण यज्ञ

महिला आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ द्वारा दिनांक 2 स 9 अप्रैल तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ। जिसमे बड़ी संख्या में श्रद्धालु नर-नारियों ने भाग लिया। जनता में यज्ञ तथा वैदिक धर्म के प्रति आस्था बढी।

शुभ विवाह

बांगरमऊ 'उन्नाव' के श्री नारायण गुप्त के सुपुत्र चि0 श्रीकान्त का शुभ विवाह दि0 28 फरवरी 90 को समरिया (लखीमपुर खीरी) से पं0 शिवकुमार शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ जिसमें पं0 नेमप्रकाश, पं0 युगुल किशोर आर्य के भजनोपदेश हुए। स्थानीय जनता सुनकर मंत्रमुग्ध हो गई। कई लोगो ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

●

● नैनी (इलाहाबाद) के श्री सगमलाल गुप्त के पुत्र चि0 गौरीशंकर का विवाह मिर्जापुर निवासी श्री कैलाश नाथ की सुपुत्री आयु0 राजलक्ष्मी के साथ तथा मीरापुर (इलाहाबाद) निवासी श्री माधोसाह के पुत्र चि0 त्रिलोकीनाथ का विवाह संस्कार नैनी (इलाहाबाद) निवासी श्री शम्भूनाथ की सुपुत्री के साथ दिनांक 28 मार्च 90 को श्री सुदर्शन राय के पौरोहित्य मे वैदिक रीति से सम्पन्न हुए। उपस्थित लोगो ने दोनो वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान किया।

निर्वाचन

आर्यसमाज पुरानी मण्डी, फीरोजाबाद

अध्यक्ष -श्री शंकरलाल जी शर्मा
मंत्री -श्री ओंकार दत्त आर्य सि0 शास्त्री
कोषाध्यक्ष -श्री भूपेन्द्र शर्मा

•

आर्यसमाज जसवन्तनगर, इटावा

प्रधान - श्री कुँवर लाल आर्य
मन्त्री - श्री तिलकसिंह यादवेन्दु
कोषाध्यक्ष - श्री हाकिमसिंह पाल

•

आर्यसमाज जीतपुर, मेरठ

प्रधान - श्री ओमप्रकाश शर्मा
मंत्री - श्री पदमसेन जी
कोषाध्यक्ष - श्री श्रीनिवास शर्मा

•

आ0स0 सिकन्दराबाद {बुलन्दशहर}

प्रधान - श्री राम स्वरूप आर्य
मन्त्री - श्री जगदीशप्रसाद कौशल
कोषा0 - श्री दुर्गाप्रसाद

•

आ0स0 वीरगांव टिटोटा {बुलन्दशहर}

प्रधान - श्री रणजीत सिंह
मन्त्री - श्री कुशलपाल सिंह
कोषा0 - श्री डा0 लोकेन्दु सिंह

आर्यसमाज हाथरस

प्रधान - श्री प्रेमचन्द शर्मा
मन्त्री - श्री देवदत्त शर्मा
कोषा0 - श्री बालमुकन्द दीक्षित

•--

आर्यसमाज ठाकुर द्वारा {मुरादाबाद}

प्रधान - श्री म0 उदय राज कुमारजी
मन्त्री - छज्जू मल
कोषा0 - श्री गुलाब सिंह जी

--

आर्यसमाज सिरसी, मुरादाबाद

प्रधान - डा0 शिवस्वरूप रस्तोगी
मंत्री - श्री आदित्यवीर रस्तोगी
कोषाध्यक्ष - श्री गजेन्द्रपाल रस्तोगी

आर्यसमाज आगरानगर, फ्रीगंज, आगरा

प्रधान - श्री रामचरण चूड़ामणि
मंत्री - श्री मदनलाल द्विवेदी
कोषाध्यक्ष - श्री वासुदेव गुप्त

× × × × ×

आर्यसमाज सिकन्दरपुर, बलिया

प्रधान - श्री देवव्रत जी
मंत्री - श्री पारसनाथ जी
कोषाध्यक्ष - श्री रामध्यान जी

आर्यसमाज खेडा अफगान {सहारनपुर} का वार्षिकोत्सव 6 से 8 अप्रैल 1990 को बडे हर्ष और उत्साह के साथ मनाया गया।

× × × × ×

आर्यसमाज दरदहा बाजार {बहराइच} में ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया जिसमें कई विद्वानों ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

प्रभाताश्रम का ब्रह्मचारी विजयी

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र में आयोजित अखिल भारतीय भाषण प्रतियोगिता व अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता व अखिल भारतीय श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता में गुरूकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री जयेन्द्र कुमार शास्त्री के गु0 का0 वि0 वि0 हरिद्वार का प्रतिनिधित्व करते हुए तीनों प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पदक प्राप्तकर गुरूकुल प्रभात आश्रम का गौरव बढ़ाया। सभामंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने बधाई प्रेषित की है।

● - आर्य विरक्त वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर {हरिद्वार} का 60वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 15 से 18 अप्रैल तक हर्षोल्लास से मनाया जायेगा। जिसमें उच्चकोटि के सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। उत्सव में सामवेद पारायण यज्ञ होगा। जनता से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी बलिदान शताब्दी समारोह

नई दिल्ली, 18 मार्च: विलक्षण के धनी आर्यसमाज के मनीषी पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी का बलिदान शताब्दी समारोह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 18 मार्च को आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल, दिल्ली में अत्यन्त धूमधाम से संपन्न हुआ।

आर्य जगत के संपादक पं0 क्षितीश वेदालंकार ने पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जी ने अपने जीवन की आहूति देकर आर्यसमाज को एक नई दिशा दी। उन्होंने आगे कहा कि पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी एक महान चिन्तन व वैज्ञानिक थे और उन्होंने वेदो में वैज्ञानिक तत्वों की व्याख्या कर जनसाधारण के सामने रख एक अनुपम कार्य किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा0 धर्मपाल ने कहा कि पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं अद्वितीय विद्वान थे। पं0 गुरुदत्त संपादित टर्मिनोलोजी आफ वेदाज नाम पुस्तक आक्सफोर्ड एवं जर्मन विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों के लिए स्वीकृत हुई थी और इसी से उनकी विद्वता का परिचय मिलता है।

प्रो0 शेर सिंह ने कहा कि पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन का एक-एक क्षण आर्यसमाज के लिए समर्पित रहा। वैदिक विद्वान पं0 यशपाल सुधांशु व श्री विश्वंभर नाथ भाटिया ने पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी द्वारा समाज व राष्ट्र के प्रति की गयी बहुमूल्य सेवाओं का स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य विद्वान सम्मानित

पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी बलिदान शताब्दी के उपलक्ष में आयोजित एक समारोह में आर्य जगत के प्रख्यात पत्रकार पं0 क्षितीश वेदालंकार, सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं0 यशपाल सुधांशु एवं आर्य सन्देश के सम्पादक श्री मूलचंद गुप्ता को सम्मानित किया गया।

धर्मवीर पंडित लेखराम बलिदान दिवस

सनातन वैदिक धर्मप्रचार समिति सिधौली जिला सीतापुर की ओर से धर्मवीर पंडित लेखराम आर्य पथिक का बलिदान दिवस दिनांक- 28 फरवरी-1990 को मनाया गया। श्री पवनकुमार सिद्धान्त शास्त्री ने अमर हुतात्मा धर्मवीर पंडित लेखराम के जीवन और कार्यो पर प्रकाश डाला।

"वार्षिकोत्सव एवं भव्य मेला प्रचार"

आर्यसमाज महावीरगंज {अलीगंज} लखनऊ-20 का वार्षिकोत्सव आगामी 13, 14, 15 मई, 1990 को आयोजित है। 15 मई को इस क्षेत्र में प्रदेश व जनपद का प्रख्यात महावीर मेला होगा। इसमे वृहतस्तर पर वैदिक प्रचार, वैदिक साहित्य विक्रय-वितरण की व्यवस्था होगी।

- ज्ञानकृष्ण संयोजक

--

शोक समाचार

फैजाबाद की स्त्री आर्यसमाज की भूतपूर्व मंत्राणी श्रीमती विज्ञानवती भटनागर का दिनांक 8 मार्च को निधन हो गया वह मधुर भजन गाइका थी उनके संबंध में समाज में शोक प्रस्ताव पास कर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एव शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

आर्य नेता श्री सत्यपाल आर्य का हृदयगति रुक जाने से देहवसान हो गया। वे 68 वर्ष के थे। आर्य समाज ज्वालापुर के विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया।

सभा प्रधान जी एवं मंत्रीजी ने उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुये दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

आर्यसमाज परसरामपुरी {जलालाबाद} के कर्मठ कार्यकर्ता श्री डा0 चेतराम आर्य महुआ डाडी वाले का दिनांक 5 मार्च 1990 को निधन हो गया। वह कुशल चिकित्सक थे। अपनी साइकिल पर रोगियों की चिकित्सा करते तथा ग्राम-ग्राम में वैदिक धर्म का प्रचार भी करते थे। उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ तथा परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

आर्यसमाज दरदहाबाजार {बहराइच} के प्रधान श्री रामलखन जी के चाचा श्री बेचन लाल आर्य का दिनांक 9 मार्च को निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से किया गया तथा दिनांक 12 मार्च 90 को शान्ति यज्ञ किया गया जिसमें परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

पृष्ठ ३ का शेष.....

है। आर्यसमाज गोशाला एवं औषधालय आदि खोलकर मानव जाति को जीवन को भी आवश्यकता है कि शरीर निर्माण में योगदान दे सकते हैं। इस प्रकार के अन्य कार्यों की योजना प्रत्येक आर्यसमाज अपने विवेक से कर सकता है।

इन सब कार्यों के लिए अनेक कार्यकर्ता व प्रचारक खड़े करने होंगे। इसके लिए हमें कुछ व्यवहारिक कदम उठाने होंगे। आज हमें आर्यसमाज में प्रतिभा सम्पन्न कर्मठ प्रचारकों की कमी खटकती है। उसका एक कारण यह है कि पुरोहितों का जो सम्मान व प्रतिष्ठा होनी चाहिए वह उनको यहां अनुपलब्ध है यदि हमें गृहस्थी प्रचारक रखने हैं तो उन्हें अच्छा वेतन देना होगा। घूमने फिरने का काम युवा-व्यक्ति ही कर सकते हैं, वानप्रस्थियों से उसकी आशा न करनी चाहिए। गृहस्थी प्रचारक व पुरोहित को आत्मनिर्भरता के लिए उसे प्रत्येक प्रकार की सुविधा देना आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा, आर्यसमाज तथा आर्यप्रतिनिधि सभाओं का कर्तव्य है। कुछ समर्थ आर्यसमाजें भी इस दिशा में स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकती हैं।

भारत में इस समय विदेशी मिशनरियों व पेट्रोडालर के कारण महर्षि दयानन्द अथवा वैदिक विचारधारा के अनुसार सच्चे मानव का निर्माण कठिन सिद्ध हो रहा है। आर्य को इस चुनौती को स्वीकार करके एक व्यापक योजना तैयार करनी होगी।

हमारे देश में वनवासी, गिरिजन व हरिजन के नाम से जो कलंक है, उसे मिटाने का दायित्व आर्यसमाज का ही है। जब तक इस देश में अशिक्षा, व्याधि व भूख आदि रोग व्याप्त है, तब तक आर्यसमाज को अपने काम में सक्रिय रहने की आवश्यकता है।

हमें विश्वास है कि आर्यसमाज अपने मानव-निर्माण के वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति में सतत सक्रिय रहेगा। ◻

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन.पी. ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
वैशाख कृष्ण ५ संवत २०४७ वि
दिनांक १५ अप्रैल १९९०
दूरभाष २४५६६३

सेवा में,
12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि जिन आर्यसमाजों में भू-सम्पत्ति सम्बन्धी कोई कठिनाई विवाद या अन्य कोई समस्या हो तो वे अविलम्ब मुझसे निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें। यदि कहीं पर मेरा आना आवश्यक समझें तो लिखें मैं यथासम्भव पहुँचकर आपका सहयोग कर सकूँ। कष्ट के एवं सहयोग के लिए धन्यवाद।

उमेशचन्द्र स्नातक
मुख्याधिष्ठाता भू सम्पत्ति विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0,
लखनऊ
आचार्यनगर दिवियापुर इटावा

आर्यसमाज स्थापना दिवस

लखनऊ - गणेशगंज आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा एवं आर्य कुमार सभा ने देश में बढ़ती हुई हिंसा साम्प्रदायिकता व वैमनस्यता व देश के आन्तरिक एवं बाहरी शत्रुओं की बढ़ती गतिविधियों से सचेत रहने की आवश्यकता पर बल देते हुए समस्त आर्य जनों से देश की रक्षा के लिए समर्पित रहने का आह्वान किया। गणेश गंज के आर्य समाज सभागार में आयोजित 'आज के परिवेश में आर्य समाज की आवश्यकता' विषयक विचारगोष्ठी में वक्ताओं ने यह आह्वान किया। [illegible] कहा कि जब देश की विकृत व्यवस्था थी तब [illegible] ने आर्य समाज की स्थापना की थी। अपने अध्यक्षीय [illegible] में उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री मन[illegible] तिवारी ने राष्ट्र की आन्तरिक तथा बाहरी शत्रुओं से सावधान रहने पर बल दिया और राष्ट्र की सांस्कृतिक सामाजिक एवं राजनीतिक धरोहर को सुरक्षित रखने वाले आर्य समाज को सचेत। [illegible] कठिन परिस्थिति में जागरूक रहने की आवश्यकता है

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं. २२४१/५७) वैशाख कृष्ण-१२ रविवार-संवत् २०४७ वि., दिनांक २२ अप्रैल १९९० (घोषणा पत्र सं ७/२८-२-८५)



दरिद्र नारायण को नमन

टूटो फूटो झोंपड़ो में रहने वाले हे नम्रता के सागर, इस सुन्दर देश में हम तेरा दर्शन सर्वत्र कर रहे हैं। अपनो नम्रता और निरहंकारेता के कारण नू भारतवर्ष को जनता के साथ एकरूप हो गया है। हम जिसे सदियों से ढूंढते आये हैं- उसका वास तो तेरी कुटिया में ही निकला-

मैं ढूढ़ता उसे था
जब कुंज और वन में
वह खोजता मुझे था
तब दीन के वतन में।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

•

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य ____ रू. २५१/-
वार्षिक ____ रू. 30/-
एक प्रति ____ १रू. मात्र
विदेश में ____ १५ पौंड

प्रकाशन का ९३ वाँ वर्ष
अंक-१५

समाज में व्याप्त विकृतियों एवं शिक्षित बेरोजगारों की समस्या को दूर करने पर सर्वप्रथम ध्यान दूंगा।

जो राष्ट्र अपनी बौद्धिक शक्ति का उचित उपयोग नहीं कर सकता उस राष्ट्र का भविष्य निराशाजनक है।

— मनमोहन तिवारी

उत्तर प्रदेशीय विधान परिषद् की सदस्यता के लिए लखनऊ स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से खड़े हुए जनप्रिय प्रत्याशो **श्री मनमोहन तिवारी** ने इस संवाददाता से एक भेंट में बताया कि आज हमारा समाज अनेक प्रकार की विकृतियों का शिकार होना जा रहा है। भ्रष्टाचार और महँगाई चरमसोमा पर है। शिक्षावृद्धि के साथ सरकार शिक्षितों को रोजगार अथवा नौकरी दिला पाने में असमर्थ हो रही है। युवावर्ग, विशेषकर विश्वविद्यालयों/कालेजों से निकलने वाला स्नातक कुण्ठाग्रस्त होता जा रहा है। आज देश की यह हालत है कि प्रतिवर्ष अपने प्रदेश में ही एक दर्जन से अधिक विश्वविद्यालयों और पचासों स्नातक तथा स्नातकोत्तर विद्यालयों से, हमारे युवा विद्यार्थी स्नातक डिग्रियाँ लेकर निकलते हैं और उन्हें लेकर नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटकते हैं। समय और धन के अपव्यय के साथ ही राष्ट्र की यह उदीयमान शक्ति कुण्ठा और हताशा में डूबती जा रही है।

श्री तिवारी ने जापान, ब्रिटेन, जर्मन आदि कई देशों का उदाहरण देते हुए बताया कि वहाँ विश्वविद्यालयों अथवा कालेजों से निकलने वाला स्नातक नौकरी को बहुत हेय समझता है। रोजगारपरक शिक्षा होने के कारण स्नातक होते ही वह किसी न किसी व्यवसाय में खपा लिया जाता है। श्री तिवारी ने आगे बताया- "कि मेरा परिषद में पहुँचकर सर्वप्रथम प्रयास यही होगा कि प्रदेश में शिक्षा के व्यवसायीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर जोर देकर शासन को इस बात के लिए बाध्य करूँ कि वह आज के परिवेश में स्थितियों पर विचार करके शिक्षा को तुरन्त व्यवसायपरक बनाए और ऐसी योजनाएं प्रस्तुत करे जिससे हमारे विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों से निकलने वाले स्नातक बिना किसी प्रयास के रोजगार में खपा लिए जाये। यह उत्तरदायित्व शिक्षण देने वाली संस्थाओं तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर अनिवार्यतः लागू कर दिया जाय। इससे शिक्षितों में बढ़ रही बेरोजगारी तो दूर होगी ही, श्रम के प्रति उनकी निष्ठा भी बढ़ेगी तथा जो बौद्धिक प्रतिभा हमारे देश से पलायन कर रही है वह भी रुक जायेगी।

श्री तिवारी अपने जनसम्पर्क अभियान में जहाँ-जहाँ भी पहुँच रहे हैं जनता का भरपूर समर्थन उन्हें मिल रहा है। शिक्षकों, सेवारत कर्मचारियों, अधिवक्ताओं, विद्यालयों/विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों, श्रमजीवियों एवं समाज के सभी बुद्धिजीवीवर्ग के अनेकों संगठनों ने एक स्वर से श्री तिवारी को अपना समर्थन देकर उन्हें विजयी बनाने को अपील की है। देश के अनेक प्रख्यात साहित्यकारों, समाजसेवी जननेताओं तथा राष्ट्रनेताओं ने श्री तिवारी को विजयकामना करते हुए उन्हें अपना शुभाशीर्वाद प्रेषित किया है।

--

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ · वैशाख कृष्ण-१२, संवत् २०४७ वि.
२२ अप्रैल - १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

••••••••••••••••••••••

ओ३म् सम्पादकीय

राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारियों, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के प्रधानों तथा प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए विशिष्ट आर्यजनों की एक समवेत बैठक दिनांक- 3 अप्रैल 1990 को सभाभवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। विचारणीय विषय थे- §1§ अंग्रेजी हटाओ §2§ कश्मीर-तथा पंजाब §3§ धर्मान्तरण §4§ गोरक्षा §5§ आर्यसमाज के प्रचार को गतिशील बनाना आदि।

सर्वप्रथम प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव को इस बात के लिए धन्यवाद दिया गया कि उन्होंने प्रदेश के समस्त राजकीय कार्यालयों/सार्वजनिक-निगमों/स्वायत्तशासी संस्थाओं आदि में तात्कालिक प्रभाव से देवनागरी लिपि मे लिखित हिन्दी को समस्त सरकारी कामकाज का माध्यम बना दिया है। इस प्रकार आर्यसमाज के "अंग्रेजी-हटाओ-अभियान को शासन की सहायता से प्रदेश में एक महान उपलब्धि प्राप्त हुई है।

कश्मीर तथा पंजाब समस्या पर गहन विचार-विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव द्वारा केन्द्र सरकार से यह अनुरोध किया गया कि अब कश्मीर सम्बन्धी धारा 370 के संविधान में बने रहने का कोई औचित्य नहीं है। अतः इसे समाप्त करके पाकिस्तान द्वारा अनधिकृत रूप से कब्जे में लिए हुए कश्मीर के भूभाग को खाली कराया जाय। पाकिस्तान का रवैय्या घोर शत्रुतापूर्ण है उसने हमारे देश की सीमाओं का खुला उल्लंघन करके अपने यहाँ से प्रशिक्षित आतंकवादी और हथियार भेज भेजकर पंजाब और कश्मीर में अस्थिरता उत्पन्न करने का प्रयास किया है। इसका समुचित उत्तर देने के लिए शासन द्वारा कठोर कार्यवाही किए जाने का तुरन्त निर्णय लिया जाये। पूरा राष्ट्र एवं आर्यसमाज शासन के इस कार्य में अपना पूर्ण सहयोग देगा।

धर्मान्तरण की समस्या पर आर्यसमाज सदैव ही गहन चिन्तामग्न रहा है। उसका मत है कि धर्मान्तरण की आड़ में राष्ट्र के एक बहुत बड़े हिस्से को मुख्य राष्ट्रीय धारा से अलग करने का कुत्सित षड्यन्त्र विदेशी शक्तियाँ विदेशों से प्राप्त धनबल पर कर रही हैं। यह एक गम्भीर राष्ट्रीय समस्या है इस पर यदि तुरन्त ध्यान न दिया गया तो एक दिन भारत और भारतीयता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। अतः सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि धर्मान्तरण पर कानून बनाकर तुरन्त रोक लगा दी जाय और विदेशों से इस निमित्त आने वाली धन की बाढ़ को रोका जाय।

सभा में उपस्थित अनेकों वक्ताओं ने गाय की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्र की समृद्धि के लिए उसकी रक्षा और सम्वर्धन को परम अनिवार्य बताते हुए शासन से सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा अनुरोध किया कि सम्पूर्ण देश में तात्कालिक प्रभाव से "गोवधबन्दी" कानून पारित करके लागू किया जाये।

अन्त में आर्यसमाज के कार्यों को गतिशील बनाने के लिए एक बृहद् रूपरेखा भी तैयार करने का निश्चय लिया गया। इस अवसर पर कई वक्ताओं ने आर्यसमाज के प्रचार को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए और यह निश्चय हुआ कि आर्यसमाज को जन आन्दोलन का रूप देने के लिए इसके समर्पित कार्यकर्ता बड़ी संख्या में ग्रामीण तथा शहर के कोने-कोने में पहुँचकर वैदिक धर्म के प्रचार में जुट जायें।

इस अवसर पर आर्यसमाज के मूर्धन्य वयोवृद्ध नेता श्री पं0 धर्मपाल-विद्यालंकार का सभा की ओर से भावभीना अभिनन्दन किया गया।

आर्यसमाज के दो महानरत्न
-मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी

मानवता की सेवा में अपना समस्त जीवन समर्पित कर देने वाले, अनन्य ऋषि-भक्त, आर्यसमाज को ज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में गगनचुम्बी प्रतिष्ठा दिलाने वाले पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला हंसराज को आर्यसमाज कभी भुला नहीं सकता है। पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी एक अद्भुत प्रतिभा-सम्पन्न कुशाग्रबुद्धि छात्र थे। वह सदा परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ करते थे। एम0ए0 की परीक्षा में विश्वविद्यालय में सर्वोच्च अंक पाकर सर्वप्रथम रहे। विज्ञान उनका प्रिय विषय था और जैसा कि समझा जाता है एक वैज्ञानिक अपने विश्लेषण द्वारा तथ्य को जब तक पूर्णतया हृदयंगम न कर ले वास्तविकता पर विश्वास नहीं कर सकता। तत्कालीन प्रचलित धर्मों के पाखण्डवाद और उनमें भरी हुई अवैज्ञानिक कपोलकल्पनाओं को देखकर उनका मन आस्तिकता से विमुख हो गया था।

अजमेर में ऋषि दयानन्द के प्राणान्त के समय के दृश्य ने उनके जीवन में एक महान मोड़ दे दिया। जिस समय ऋषिदयानन्द प्राणायाम द्वारा अपने प्राणों को त्याग रहे थे-तो उनके शान्त एवं सौम्य मुख से निकले हुए यह शब्द- "हे दयामय।। हे सर्वशक्तिमान ईश्वर।। तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। आहा।। तैने अच्छी लीला की"- भावुक हृदय गुरुदत्त पर जादू का सा असर कर गये। उन्हें ऐसा लगा मानो ऋषि किसी से सचमुच साक्षात्कार करते हुए वार्तालाप कर रहे हैं। जो चीज़ गुरुदत्त को डार्विन, न्यूटन, बेकन आदि न दे सके वह वस्तु उन्हें एक ऋषि जाते-जाते दे गया। इस घटना ने उन्हें पूर्ण ईश्वर विश्वासी सच्चा आर्य एवं मानवता का महान सेवक बना दिया।

ऋषि के पश्चात् उनकी विद्वत्ता ने उन्हें आर्यसमाज के शिरोमणि विद्वानों की श्रेणी में रख दिया है। उनके तर्क और मीमांसा से भरे हुए ग्रन्थ इसके प्रमाण हैं। आर्यसमाज के वे जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। उनकी शताब्दी के इस पावन अवसर पर आर्यमित्र उनके प्रति अपनी शत शत श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महात्मा हंसराज

आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक उन्नति की है। पूरे राष्ट्र में खुले हुए डी0ए0वी0 कालेजों, गुरुकुलों, कन्या विद्यालयों की लम्बी श्रृंखला इसका जीता जागता उदाहरण है। कन्याओं की शिक्षाके क्षेत्र में तो आर्यसमाज ने जो सराहनीय सेवाएं की हैं वे अविस्मरणीय हैं। आर्यसमाज के इस कार्य को मूर्त्तरूप देकर शिक्षण संस्थाओं का पूरे देश में जाल फैला देने वाले त्याग और सरलता की मूर्त्ति महात्मा हंसराज ही थे।

उनका जन्म दिवस प्रतिवर्ष 19 अप्रैल को आर्यसमाज मनाता है। महात्मा हंसराज जी ने पूरे देश विशेषकर पंजाब में अपने ओजस्वी भाषणों से आर्यसमाज के सिद्धान्तों की धूम मचा दी थी। पंजाब में आर्यसमाज का जो इतना व्यापक प्रचार एवं प्रसार हुआ है उसके मूल में महात्मा हंसराज का प्रचार और उनकी ओजस्वी वाणी थी जिसे सुनकर हजारों व्यक्तियों ने वैदिक धर्म की सेवा में आजीवन व्रती रहने का व्रत धारण किया था। आर्यसमाज के प्रचार के लिए वह दीवाने बनकर घूमते रहते थे। आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों में उस समय हजारों लोग इकट्ठे हुआ करते थे। उत्सवों की परिपाटी उन्होंने ही डाली थी। वे स्वयं आयोजनों में नगरकीर्तन, हवन से लेकर प्रत्येक कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ करते थे। प्रत्येक रविवार को नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थित रहना उनके जीवन का अनिवार्य अंग था।

ऐसे महामानवों की कुशलता, कर्मठता और प्रचार के कारण ही आर्यसमाज अपने स्वर्णकाल में पहुँचा है। इन महापुरुषों का नाम आर्यसमाज के इतिहास में सदा सदा के लिए स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आर्यमित्र उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आर्यों से उनके जीवन का अनुकरण करने की कामना करता है।

हिन्दू नहीं आर्य

• श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ.प्र

जिस प्रकार हमारे देश का नाम आर्यावर्त से भारतवर्ष तथा भारतवर्ष से हिन्दुस्तान और अन्त में हिन्दुस्तान से इण्डिया तक पहुँचा है, ठीक इसी प्रकार हमारा नाम भी आर्य से हिन्दु तथा हिन्दु से "काला आदमी" तक पहुँचा है। यद्यपि हमें काले आदमी के नाम से पुकारने वाली रक्तवर्ण धारी जाति यहां से जा चुकी है और उसके जाने के पश्चात् यह शब्द एक प्रकार से शब्द मात्र ही रह गया है। किन्तु इसी प्रकार बलात् हमारे ऊपर लादा जाने वाला हिन्दु शब्द अभी यहां उपस्थित है तथा हमें इस प्रकार से चिपट चुका है कि कालान्तर में यदि इस शब्द के छूट जाने की कोई आशा हो भी तो भी हम स्वयं इसे छोड़ने के लिए किसी प्रकार तैयार नहीं।

जबसे महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्थापित आर्यसमाज ने यह प्रचार किया कि हम लोग हिन्दू नहीं आर्य हैं। हम आर्यों की सन्तान हैं और हमारे देश का नाम आर्यावर्त है, तभी से आर्यसमाज विरोधी विचार धाराओं को आन्दोलित करने के लिए सनातन धर्म सभाओं आदि की स्थापना करके "हम हिन्दु है" इत्यादि बातों की पुष्टि के लिए भाँति-भाँति के प्रयत्न किये जा रहे हैं, तथा यह युक्ति दी जाने लगी है कि हम इसलिए हिन्दु है क्योंकि हिन्दुओं की सन्तान हैं अर्थात् हमारे पिता-पितामह भी हिन्दू थे। यह विचार कदापि नहीं किया जाता कि जब हमारे ऊपर यह शब्द लादा गया था, तब हमारे देश में अविद्या का प्रकोप था। अतः हम वास्तविकता को न खोज सके यदि किन्हीं महानुभावों ने ऐसा प्रयत्न किया भी हो तो वह अपनी अशक्तता के कारण इस स्थापना का निवारण न कर सके। फलतः हमें इस विदेशी देन को आभूषण समझ कर धारण किये रहना पड़ा। परन्तु वर्तमान समय में जबकि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द तथा उनके द्वारा संस्थापित आर्यसमाज ने इस रहस्य का उद्घाटन कर ही दिया तो हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम वास्तविकता को खोज करें और अपने स्वरूप को पहचानें।

जिस समय विदेशियों ने हिन्दू शब्द को हमारे ऊपर थोपा था, उस समय हम में न तो इतना साहस ही था और न योग्यता थी कि इस प्रस्थापना का विरोध करते, फलतः इस विदेशी देन को हमने अपना सौभाग्य या दुर्भाग्य समझ कर ग्रहण कर लिया तथा कुछ पीढ़ियों के पश्चात् हम अपने सही नाम को भूल गये। परन्तु अब जबकि हम स्वतन्त्र हैं, हमारा देश स्वतन्त्र है और हमारी बुद्धियां स्वतन्त्र हैं तो हमें स्वतन्त्रता पूर्वक तथ्य की खोज करना तथा सत्य को मानना चाहिये। हमारी सम्मति में तो सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा ही उद्यत रहना चाहिये।

हिन्दु शब्द के पक्षपातियों का कहना है कि हम लोगों को विदेशियों ने सिन्धु नदी के निकट रहने के कारण हिन्दु नाम से पुकारना प्रारम्भ कर दिया, क्योंकि उनकी भाषा में "स" के स्थान पर "ह" का प्रयोग होता था। हमारा कहना है कि यदि "स" को "ह" होकर कोई परिवर्तन होना था तो सिन्धु नदी को हिन्दु नदी होना चाहिये था और सिन्धु प्रान्त को हिन्दु प्रान्त होना चाहिये था। यह सब तो हुआ नहीं- हम हिन्दु हो गये, जब कि हमारे नाम आर्य में "स" है ही नहीं, जिसे उपर्युक्त सिद्धान्त के अनुसार "ह" का रूप हो जाना था। यह तो ठीक वही बात हुई कि "मूल" तो रहा आम का और लगने लगे "बबूल" अर्थात् सिन्धु नदी सिन्धु नदी ही रही और सिन्धु प्रान्त सिन्धु प्रान्त ही रहा। सिद्धान्तानुसार "स" का "ह" दोनों में से किसी भी शब्द में नहीं हुआ अपितु आर्य का हिन्दु हो गया और इस युक्ति को जो बालु की दीवार है, लौह दुर्ग समझकर प्रस्तुत किया जाता है। पता नहीं भाषा शास्त्र के किस सूत्र के आधार पर यह भाषा विज्ञान का सिद्धान्त निश्चय किया गया है। ऐसी बातें वही व्यक्ति कर सकता है, जिसे बुद्धि तथा ज्ञान का अजीर्ण हो गया है।

यदि हम सिन्धु नदी के तट पर रहने से हिन्दु कहलाये तो उससे पहले क्या कहलाते थे। यह एक ऐसा प्रश्न है, जिस पर विचार न करना सर्वथा मूर्खता होगी। यदि उससे पहले हम आर्य कहलाते थे तो भी हमें इस पराये लबादे को उतार कर अपनी ही वस्तु को अपनाना शोभा देता है, क्योंकि वह अपनी वस्तु इसकी तुलना में अत्यन्त मूल्यवान् है अतः हिन्दु शब्द के पक्ष में दी जाने वाली युक्ति सर्वथा निस्सार है।

दूसरी युक्ति जो हिन्दु शब्द के पक्ष में दी जाती है, वह यह है कि हिं-- हिंसा तथा दु-दूर अर्थात जो हिंसा से दूर हो, वह हिन्दु। परन्तु यह शब्दार्थ भी मनगढ़न्त है, इसकी सत्यता के लिए कोई प्रमाण नहीं। इसका खण्डन भी इस प्रकार सहज ही में हो जाता है कि हिं-हिंसा तथा दु-दूसरों को अर्थात् जो दूसरों की हिंसा करे, वह हिन्दु। अब बताईये कि यदि उपर्युक्त अर्थ ठीक है तो हमारा किया अर्थ ठीक क्यों नहीं? यदि यह अशुद्ध है तो वह भी अशुद्ध। एतदर्थ यह युक्ति भी सार हीन ही है।

तीसरी युक्ति है कि हिमालय से इन्दु (कुमारी) अन्तरीप तक जितना प्रदेश है, उसके रहने वाले हिन्दु। हिमालय का "हि" तथा इन्दु का "न्दु" लेकर हाथी का सिर और मनुष्य के शरीर द्वारा जिस प्रकार गणेश की उत्पत्ति बतलायी जाती है, ठीक उसी प्रकार यहां भी कलम चढ़ाने का प्रयत्न किया गया है। भला कौन बुद्धिमान् इन बातों को मानेगा? यह तो वही बात हुई "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा"।

एक चौथी युक्ति इसके पक्ष में श्री प० दीनानाथ जी शास्त्री द्वारा वैदिक धर्म जौलाई 1951 ई० के अंक में प्रस्तुत की गई थी और वह थी ऋग्वेद 1/64/27 व अथर्व 9/10/5 का मन्त्र जिसके दो भागों में से प्रत्येक का पहला शब्द लेकर हिन्दु शब्द बनता है अर्थात् प्रथम पाद का "हिं" तथा द्वितीय पाद का "दू"। परन्तु कम से कम हमारी समझ में यह नहीं आता कि शास्त्री जी के कथनानुसार यदि इस प्रकार हिन्दु शब्द बन जाता है तो मन्त्र के शेष भाग का क्या उपयोग रहा तथा इतनी बड़ी रचना क्यों रची गयी? यदि उक्त मन्त्र से केवल हिन्दु शब्द की प्रस्थापना ही अभिप्रेत थी तो या तो दोनों पादों के प्रथम शब्दों "हिं" तथा "दू" पर ही बस कर देना था या फिर सम्पूर्ण मन्त्र का अर्थ हिन्दु शब्द का समर्थक और परिभाषा प्रस्तुत करने वाला होना चाहिए था। बात ऐसी है नहीं अपितु यह मन्त्र एक विशेष अर्थ रखता है, स्थानाभाव के कारण जिसे यहां नहीं दिया जा सकता अतएव यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि इस मन्त्र से हिन्दु शब्द की सिद्धि नहीं होती।

उपर्युक्त युक्तियों के खण्डन के पश्चात् हमें आशा करनी चाहिए कि पाठक किसी भी प्रकार अपने को हिन्दु मानने को तैयार न होंगे। अब यदि कुछ शेष रहता है तो वह यह कि हम जब इतने लम्बे समय से हिन्दु कहलाते आये हैं तो अब नाम परिवर्तन से क्या लाभ? इसके लिये इतना ही उत्तर पर्याप्त है कि मार्ग भूला हुआ कोई व्यक्ति यदि ठीक मार्ग जाने के लिए कहे कि जब इतनी देर से इसी मार्ग पर आ रहा हूँ तो अब उस मार्ग पर जाने से क्या लाभ? तो थोड़ी बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी ऐसे व्यक्ति को मूर्ख के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहेगा, परिणामतः "जहां नेत्र खुले वहीं दिन निकला" की लोकोक्ति के अनुसार ठीक मार्ग पर आजाना ही श्रेयस्कर है।

इतने लेख के पश्चात् अब पाठकों के विचारार्थ आर्य शब्द की पुष्टि में भी कुछ लिखना अनिवार्य हो जाता है। आर्य शब्द के अर्थ "ऋ गतौ" धातु से निष्पन्न होने के कारण गतिशील, प्रगतिशील, श्रेष्ठ, सज्जन, सदाचारी आदि होते हैं। वेद तथा वेदानुकूल साहित्य से हमें जो कुछ उपलब्ध हुआ है, उसमें से थोड़ा सा पाठकों की जानकारी के लिये नीचे दिया जाता है।

यथाः- विजानी ह्यार्यान्ये-च दस्यवः (ऋ 1/51/8) तथा आर्यावृता विसृजन्तो अधिक्षमि (ऋ 10/65/11) आदि वेद वाक्यों में सत्य, अहिंसा, पवित्रतादि उत्तम व्रतों का धारण करने वालों को आर्य कहा गया है तथा निरुक्त में भी "आर्यः ईश्वर पुत्रः" है आर्य

— शेष पृष्ठ ११ पर

सभी हिन्दी प्रदेश अंग्रेजी हटाने का फैसला करें

• श्री लक्ष्मीकांत वर्मा

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री ने एक बार फिर बडी दृढ़ता के साथ प्रदेश के सार्वजनिक कामों में अंग्रेजी के प्रयोग का विरोध किया है। शिक्षा के माध्यमों के विषय में भी अंग्रेजी के प्रयोग को समाप्त करने और अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों की निन्दा की है। इससे अंग्रेजी समर्थकों और अंग्रेजी से जुड़े निहित स्वार्थ वालों में एक प्रकार की बौखलाहट आ गई है। कई अंग्रेजी अखबारों में खबरें ऐसी छपी हैं जैसे मुलायम सिंह ने अंग्रेजी प्रेमियों के खिलाफ कोई जंग छेड़ दी है। जहाँ अंग्रेजी अखबारों की यह शरारत जारी है वहीं पब्लिक स्कूलों के ईसाई समर्थकों ने भी खतरे की घंटी बजा दी है।

भाषा के इस अहम सवाल पर जब भी कुछ करने की कोशिश की गई है तब अंग्रेजी प्रेमी और ईसाई धर्म के नाम पर देश में गुलाम मानसिकता को निरन्तर जीवित रखने वाले लोग सामने आ जाते हैं। संविधान के मौलिक अधिकारों से लेकर धर्मनिरपेक्षता, अल्पसंख्यकों के अधिकार की दुहाई दी जाने लगती है। ईसाई मिशनरी स्कूलों के पादरी भी एकजुट हो जाते हैं और उनकी हाँ में हाँ मिलाने वाले वे अंग्रेजी के प्रेमी भी उनके साथ हो लेते हैं।

ईसाई संस्थाएं अंग्रेजी साम्राज्यवाद की पोषक

भारतीय संस्कृति की पहचान ईसाई संस्थाएँ अंग्रेजी साम्राज्यवाद की पोषक भारतीय भाषाओं में हैं क्योंकि मनुष्य अपनी मातृभाषाओं से ही संस्कारित होता है। विदेशी भाषा के माध्यम से वह अपनी पहचान कभी भी स्थापित नहीं कर पाएगा क्योंकि जहाँ मातृभाषा के साथ मिट्टी, जातीय स्मृति, क्षेत्र, कुल की परम्परा का गहरा संबंध होता है वहीं इन समस्त तत्वों के अभाव में विदेशी भाषा देशी मानस से जुड़ने में असमर्थ होती है। इस दृष्टि से चाहे ईसाई धर्म हो या साम्यवाद हो- इस देश में कभी पनप नहीं सकते जब तक कि इस देश की मातृ-भाषा और देश की मिट्टी से जुड़ कर पुनः संस्कारित न हों। ऐसा नहीं है कि यह बात ईसाई धर्म के प्रचारक पादरी लोग जानते न हों। सम्पूर्ण स्थिति का व्यंग्य यह है कि भारत में ईसाई धर्म साम्राज्यवाद के धर्म के रूप में स्थापित हुआ था। ब्रिटिश साम्राज्य समाप्त होने के बाद भी ईसाई संस्थाओं से वह साम्राज्यवादी तत्व गया नहीं और आज भी ये संस्थाएं ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हितों के संवर्धन में लगी हुई हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि हमारे देश के प्रशासक मात्र धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इनके कार्य-कलापों में हस्तक्षेप करने का साहस नहीं करते।

अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल पूर्व फोर्ट विलियम कालेज में स्थापित परम्पराओं का निर्वाह करते हैं। इन स्कूलों का संबंध न तो ईसाई धर्म से है और न ईसाई संस्कृति से। ये केवल अंग्रेज और अंग्रेजी के हितों की रक्षा करते हैं। इन स्कूलों के संचालक भारतीय पादरी आज भी यह समझते हैं कि यह देश कभी न कभी फिर से अंग्रेजी की छत्रछाया में आएगा और और यह तभी सम्भव होगा जब पूरा देश धीरे-धीरे करके संस्कार हीन होकर ईसाई धर्म और ईसाई धर्म के प्रभाव में आएगा। आज उन्होंने अपनी ऐसी स्थिति बना ली है कि देश के प्रशासन तक को यह साहस ही नहीं होता कि वे इन संस्थाओं को छू सकेगा। जब कभी किसी ने भी साहस किया धर्म निरपेक्षता और अल्पसंख्यकों के हितों के नाम पर ऐसा आन्दोलन खड़ा कर दिया कि कोई भी कार्यवाही इन संस्थाओं के विरुद्ध सम्भव नहीं हो पाई। आज यदि मुलायम सिंह यादव उत्तर प्रदेश में हिन्दी लाना चाहते हैं तो इन पब्लिक स्कूलों के विरुद्ध सख्त कदम उठाने पड़ेंगे। बिना ऐसा किए हिन्दी को प्रतिष्ठित कर पाना असम्भव होगा।

लादी गयी भाषा

पूरे देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या मुश्किल से एक प्रतिशत है। उस एक प्रतिशत में से मुश्किल से दस-पाँच व्यक्ति ऐसे होंगे जिनको अंग्रेजी की भाषा प्रकृति का ज्ञान होगा। इसे जानने वालों में से कुछ ऐसे होंगे जिनको अंग्रेजी प्रेमी कहा जा सकता है। लेकिन हमारे देश के अंग्रेजी अखबार जब कभी भी भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने का प्रश्न उठा है, अंग्रेजी प्रेमियों की दुहाई देने लगते हैं और हमारी सरकारें अभी तक इन दुहाई देने वालों के षड्यंत्रों के कारण भारतीय भाषाओं को उचित स्थान नहीं दे पाती। अंग्रेजी भाषा के समर्थकों में एक बहुत बड़ा वर्ग उन नौकरशाहों का है जिनकी रोजी-रोटी अंग्रेजी से जुड़ी है। यही कारण है जब कभी भी भारतीय भाषाओं को उनका उचित स्थान दिलाने का आंदोलन होता है तो ये तथाकथित अंग्रेजी प्रेमी और नौकरशाह एकजुट होकर तरह-तरह की बाधाएं उपस्थित करते हैं। यदि ईसाई पादरी अल्पसंख्यक होने की दुहाई देते हैं तो अंग्रेजी प्रेमी विश्व मानवता की बात करने लगते है और नौकरशाह राष्ट्रीय एकता की दुहाई देने लगते हैं। आज आजादी के चालीस वर्ष बाद भी यह हालत चल रही है।

आज आवश्यकता है कि सख्ती के साथ हिन्दी के कार्यक्रम को कार्यान्वित किया जाए। डा० लोहिया का कहना था कि यदि सरकार चाहे तो अंग्रेजी भाषा एक दिन में समूचे भारत वर्ष से निष्कासित की जा सकती है। उनके इस तर्क के पीछे केवल एक ही अवधारणा थी कि सरकार की ओर से जो भाषा संबंधी आदेश हों उनका सख्ती के साथ कार्यान्वयन कराया जाए। जब कभी भी किसी कार्यक्रम को नहीं करना होता है तो उस पर केवल बहस की जाती है। और बहस का इतना लंबा सिलसिला बढ़ाया जाता है कि इसमें कर्म पीछे पड़ जाता है। और गलत प्रकार के सैद्धान्तिक विकार सामने आ जाते हैं। यही स्थिति जवाहरलाल नेहरू ने संविधान बनाते समय पैदा की थी और 1966 में संसद में जब अंग्रेजी को हटाकर हिन्दी को, राष्ट्रीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने की बात होती थी तो निहित स्वार्थ वालों ने विवाद को आगे कर दिया था और कर्म को पीछे धकेल दिया था

क्रमशः

जनपद मुरादाबाद की आर्यसमाजों को निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से जनपद मुरादाबाद की आर्य समाजों के आय-व्यय निरीक्षण हेतु- श्री0 रघुवीर सरन जी सक्सेना सेवानिवृत्त तहसील निवासी 84 लाजपतनगर मुरादाबाद को आय व्यय निरीक्षक नियुक्त किया गया है। उनके पहुँचने पर निरीक्षण करायें तथा सभा का गत वर्षों का दशांश सुद कोटि- आर्यमित्र का चन्दा उन्हें प्रदान कर रसीद प्राप्त करलें 25/- मार्ग व्यय उन्हें अतिरिक्त प्रदान करें।

- मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

--

आ.स. देवबन्द का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज देवबन्द का वार्षिकउत्सव आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसम्वत्सर के साथ बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर निकली शोभायात्रा जिसमें जनपद की आर्यसमाजों ने विशेषकर क्षेत्रीय आर्यसमाजों ने बड़ा उत्साह प्रदर्शित किया। आर्यवीर दल के वीरों ने अपना प्रदर्शन दिखा कर सबको प्रभावित किया। आर्य विद्यालय की मण्डली, शिशुमन्दिर की सेवी एवं स्त्री आर्यसमाज ने बड़ा उत्साह दिखाया। देववन्द के नागरिकों ने स्थान-स्थान पर भव्य स्वागत किया। गुरुनानक सभा जैनवीर सभा मण्डी समिति सबने शोभा यात्रा को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती- मामचन्द आर्य- ब्रह्मानन्द एवं जनपद के वरिष्ठ पत्रकार स्वतन्त्रता सेनानी पद्मश्री अलंकृत कन्हैयालाल प्रभाकर का अभिनन्दन किया गया।

विश्वम्भर देव शास्त्री।

आर्यसमाज चन्दौसी मुरादाबाद

प्रधान - श्री ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री - श्री हरिओम आर्य
कोषा0 - श्री विनय प्रकाश गोयल

आर्यसमाज बालोतरा

प्रधान - श्री रामस्वरूप जी आर्य,
मन्त्री- श्री ब्रजमनोहर पियानी
कोषा0 - श्री भगवानदास जी चौहान

--

कर्तव्यनिष्ठ दृढ़व्रती श्री राम नाथ सहगल

जिला सरगोधा के राझियावाला ग्राम (अब पाकिस्तान) में 13 मार्च, 1926 को जन्मे श्री रामनाथ सहगल के पिता ग्राम को कृषि छोड़कर भैरा में आकर व्यवसाय करने लगे थे। 5 वर्ष को आयु में श्री सहगल कृपाराम ऐंग्लो संस्कृत हाई स्कूल भैरा में प्रविष्ट हुए और दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने तक वहीं पढ़ते रहे। कालान्तर में उन्हें पंजाब नैशनल बैंक रावलपिण्डी में नौकरी मिल गई तो वे वहीं आकर रहने लगे। रावलपिण्डी में श्री सहगल किसी प्रकार श्री पिशोरी लाल प्रेम, जो भारत विभाजन के उपरान्त ददाहू (रेणुका) सिरमौर में स्थापित हो गये, के सम्पर्क में आए। वे उन्हें रावलपिण्डी आर्यसमाज में ले गये। श्री प्रेम की सरलता, सच्चरित्रता, सत्यवादिता, स्वाध्याय शीलता एवं निष्ठा से श्री सहगल बहुत प्रभावित हुए। श्री प्रेम की प्रेरणा से श्री सहगल आर्य वीर दल में जाने लगे और कुछ दिनों बाद ही उन्हें "नगर नायक" और समय समय पर गुरुकुल रावलपिण्डी में लगने वाले आर्य वीर दल के शिविरों का संयोजक बना दिया गया। रावलपिण्डी आर्यसमाज में स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के उपदेशों का उन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। कालान्तर में वे आर्य समाज रावलपिण्डी के मन्त्री बना दिये गये।

श्री रामनाथ सहगल आर्यसमाज क्षेत्र के कुशल, साहसी तथा समर्पित जीवन वाले उत्तम कार्यकर्ता हैं। आर्यसमाज का कार्य उनकी रग रग में समाया हुआ है। आर्यसमाज के सब क्षेत्रों में उनकी गति तथा विकास है। बड़े से बड़े महासम्मेलनों से लेकर छोटे से छोटे सामाजिक कार्य में भी उनकी कार्यकुशलता व कर्मठता के दर्शन होते हैं। ऐसे निष्काम कार्यकर्ता आर्यसमाज के क्षेत्र में बहुत कम मिलेंगे जो प्रत्येक समय सामाजिक कल्याण की भावना से ही कार्य करते हों। वे आर्य समाज की सेवा से शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से जुड़े हुए हैं। आर्यसमाज का कोई प्रशिक्षण शिविर हो, योग शिविर हो या फिर सेवा केन्द्र हो, सभी स्थानों पर उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता है। अपने इन विशिष्ट गुणों के कारण ही वे आर्यसमाज व डी०ए०वी० शैक्षणिक जगत की अनेक संस्थाओं के आधार स्तम्भ हैं।

जब कभी भी किसी डी०ए०वी० शैक्षणिक संस्था को किसी सामाजिक संस्था को किसी भी प्रकार की विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है तो श्री सहगल उसे उबारने के लिये अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। कौन सा ऐसा सामाजिक कार्य है जिसमें उनका प्रतिबिम्ब न उभरता हो। अपनी इस सूझ-बूझ, अनुभव, कार्यकुशलता तथा श्रद्धापूर्वक काम करने की नीति के द्वारा ही वे बड़े से बड़े सम्मेलनों को भी बड़ी सरलता से उनकी सफलता तक पहुँचा देते हैं। अपने मिलनसार व्यक्तित्व, व्यवहार कुशलता,



कुसुमस्तबकस्येव द्वे वृत्ती तु मनस्विनः
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्येत वनेऽथवा

आर्य जगत की अमूल्य निधि, कर्मठ जीवन की साक्षात् सगुण प्रतिमा, सदाचार और शालीनता के आगार श्री रामनाथ-सहगल के 65वें जन्मदिवस पर आर्यमित्र परिवार उनका शत-शत अभिनन्दन करता है।

उनके आदर्श जीवन की संक्षिप्त झांकी प्रस्तुत है।

\- सम्पादक।

वाक्पटुता, सरल हृदयता, हसमुख स्वभाव व नियमबद्धता के द्वारा वे और भी अधिक सुचारु रूप से सम्पूर्ण सामाजिक क्षेत्र को गति व सामर्थ्य प्रदान करते रहते हैं।

अनोखी सूझ-बूझ के धनी श्री सहगल कुशल संगठनकर्ता हैं। कोई भी समस्या कितनी ही जटिल क्यों न हो, वे उसका समाधान प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त हैं। यही कारण है कि आरम्भ में एक साधारण क्लर्क के रूप में पंजाब-नैशनल बैंक में प्रविष्ट होने वाले सहगल जी, वहीं से प्रबन्धक के पद से कार्य मुक्त हुए। उन्होंने चालीस वर्ष तक बैंक की सेवा में रहते हुए न केवल बैंक की अपितु बैंक कर्मचारियों की भी अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। आरम्भ में वे बैंक कर्मचारियों के संगठन में सक्रिय रहे और कर्मचारियों को अनेक प्रकार से लाभान्वित किया। तदन्तर वे पंजाब नेशनल बैंक अधिकारी वर्ग के संगठन के संस्थापक अध्यक्ष और प्रगति में सहायक बने। बैंक में कार्यरत रहते हुए भी वे अनेक सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे।

उन्होंने 1973-75 में मेरठ, अम्बाला, कानपुर और दिल्ली में आर्यसमाज शताब्दी समारोहों का संयोजन किया। इसके अतिरिक्त 1983 में अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का भी कुशल संयोजन इन्हीं के बस का था इस सम्मेलन की अध्यक्षता तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने की थी। इसमें लगभग पांच लाख ऋषि भक्तों ने भाग लिया था। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० राधा कृष्णनन ने आर्यसमाज के विभिन्न समारोहों में उपस्थित होकर उनकी कार्य कुशलता की सराहना की। सन् 1973 में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधिसभा वाराणसी शताब्दी समारोह के अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद तथा उपराष्ट्रपति श्री बी०डी० जत्ती ने भी उनकी सराहना की। परोपकारिणी सभा के प्रधान ने श्री सहगल को आर्यसमाज के क्षेत्र में की गई उनकी सेवाओं के लिये पदक प्रदान किया। डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के शताब्दी समारोहों में रक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द पन्त ने उनको सम्मानित किया।

श्री सहगल ने 1978 में नैरोबी में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में तथा 1980 में लन्दन में सम्पन्न सार्वभौम आर्य महासम्मेलन में भारत से जाने वाले एक सौ प्रतिनिधियों का नेतृत्व किया। अप्रैल 1989 में चण्डीगढ़ की डी०ए०वी० संस्थाओं की ओर से चमनलाल डी०ए०वी० सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, पंचकुला के वार्षिक समारोह में उन्हें स्थानीय डी०ए०वी० के प्रसिद्ध नेता जस्टिस पी०सी० पंडित द्वारा स्वर्णपदक देकर सम्मानित किया गया। श्री सहगल ने पिछले 45 वर्षों में जो आर्यसमाज का कार्य किया है, उसके लिये श्री जस्टिस पी०सी० पंडित ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नईदिल्ली तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा संचालित अनेक विद्यालयों के अवैतनिक प्रबन्धक के रूप में वे कई वर्षों से कार्यरत हैं। बैंक की सेवा से मार्च 1986 में कार्य मुक्त होने के उपरान्त वे सम्प्रति निम्न संस्थाओं को अवैतनिक रूप से अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं -

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के मन्त्री, श्री महर्षि दयानन्द-स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मन्त्री, डी०ए०वी०-कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के मन्त्री, आर्यसमाज "अनारकली" के मन्त्री, भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा ट्रस्ट, नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष, वेद प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के संयोजक, अन्तर्राष्ट्रीय आर्यन लीग की परिषद के सदस्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के सदस्य, श्रीमती परोपकारिणी सभा के ट्रस्टी, 'आर्य जगत' साप्ताहिक के मुद्रक प्रकाशक, "शुद्धि समाचार" मासिक के मुद्रक प्रकाशक, डी०ए०वी०-पब्लिक स्कूल, मस्जिद मोठ, आर०के०पुरम, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, एन०आई०टी० फरीदाबाद, दयानन्द मॉडल स्कूल, एवं दयानन्द मॉडल सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली आदि के प्रबन्धक तथा डी०ए०वी० खेखड़ा के प्रधान हैं।

उनका अपना वैयक्तिक जीवन बड़ा सादा और सरल है। प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में निद्रा त्यागने से लेकर रात्रि में निद्रा की गोद में जाने तक उनका प्रत्येक क्षण समयबद्ध कार्यक्रम में संचालित रहता है उनकी जीवन संगिनी श्रीमती कमलेश सहगल, सुपुत्र-श्री अजय सहगल तथा पुत्रवधू- श्रीमती-रीटा आदि उनके कार्य में सदा सहायक रहते हैं। जिन जिन संस्थाओं से वे सम्बद्ध हैं उनके कार्यकर्ताओं से भी स्नेह पूर्वक कार्य लेने की कला उन्हें आती है। ◘

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी - आर्यसमाज के जाज्वल्यमान नक्षत्र

• डा० धर्मपाल
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

मानवता की सेवा के लिए, मानवमूल्यों की स्थापना के लिए सत्य के प्रचार के लिए तथा असत्य के विनाश के लिए इस पृथ्वी पर अनेक महापुरुषों ने सत्यकार्य किया। यह नियम है जब जब सामाजिक जीवन में विकृति आ जाती है, उसकी निष्कृति के लिए सदात्मा पुरुष के मन में हूक सी उठती है और वह मैदान में कूद पड़ता है। यह नियम सृष्टि के आदि से है। प्रारम्भिक युग के ऋषियों मुनियों ने सांसारिक सुख भोगों को त्यागकर, निरन्तर तपस्या के बल पर ऐसी शक्ति अर्जित की जिससे वे संसार के सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य कर सके। ऐसे महापुरुषों को अपने जीवन में अभावों का सामना करना पड़ा, विरोध भी सहने पड़े, जीवित रहते डण्डे भी सहने पड़े और कभी कभी तो किसी आततायी के हाथों बलिदान भी होना पड़ा। परन्तु उन लोगों की वाणी कभी नहीं मरती, जो केवल अपने लिए जीवित नहीं रहते, बल्कि दूसरों के लिए जीते हैं, जो लोग केवल अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहते, अपितु दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति मानते हैं। ऐसे महापुरुषों की गणना करने लगें तो अनेक पृष्ठ लिखे जाएंगे।

यहां पर एक ऐसे महामना महानुभाव के कृतित्व का विश्लेषण अपेक्षित है जो मात्र छब्बीस वर्ष की आयु में ऐसे महत्कार्य कर गया, जिन्हें कोई विलक्षण मेधा का व्यक्ति ही कर सकता है। बीस-इक्कीस वर्ष की आयु तो अल्हड़ता तथा अबोधता की आयु ही मानी जाती है। इस महापुरुष को मात्र पांच-छः या अधिकतम सात वर्ष ही तो मिले, काम करने के लिए। इन स्वल्प वर्षों में ही, वह अपने जीवन को पूर्णता की कोटि तक समुन्नत कर गया। एक "लिली" का फूल केवल एक दिन के लिए खिलता है तथा उसी दिन मुरझा जाता है, परन्तु दुनिया उसे याद करती है। दूसरी ओर "ओक" का वृक्ष तीन सौ वर्ष तक रहता है, पर क्या कोई उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखता है। वह तो मात्र ईंधन या अधिक हुआ तो इमारती लकड़ी के रूप में ही प्रयोग में लाया जाता है। मनुष्य के जीवन की पूर्णता का आंकलन भी इसी प्रकार दिनों की संख्या से नहीं, अपितु उसके जीवन लक्ष्यों तथा उपलब्धियों से किया जाता है।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी मात्र 19 वर्ष की आयु में आर्यसमाज वच्छोंवाली लाहौर के प्रतिनिधि बनकर लाला जीवनदास के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती के पास उन दिनों गए थे, जब वे मृत्यु शैया पर थे। उनका सारा शरीर फफोलों से सूजा था, पर फिर भी उनका मुखमण्डल शान्त एवं प्रसन्न मुद्रा में था। उस समय का गुरुदत्त के ऊपर जो प्रभाव पड़ा, बस वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। विज्ञान का तार्किक छात्र गुरुदत्त उस दिन अविचल ईश्वर भक्त बन गया। वह प्रभुनिष्ठ हो गया। वह प्रभुमय हो गया। ऋषिवर दयानन्द के अन्तिम शब्द- "हे दयामय! हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा: तूने अच्छी लीला की।" आजीवन उस भक्त गुरुदत्त के कानों में गूंजती रही।

गुरुदत्त ने अजमेर से लौटकर लाहौर में डी०ए०वी० स्कूल की स्थापना में प्राणपन से योगदान किया। उनकी इच्छा वेद, वैदिक साहित्य और संस्कृत साहित्य को शिक्षा प्रणाली में सदैव वरीयता देने की रही थी। पर वह ऋषिवर दयानन्द का शिष्य, वैदिक धर्म का अनुयायी यहीं तक न रुका। उसने अपनी सारी शक्ति वेदप्रचार, आर्ष पद्धति से संस्कृत शिक्षण तथा वेद के वैज्ञानिक अर्थ करने पर केन्द्रित कर दी। वे कहा करते थे कि मैं ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र लिख रहा हूँ। जब कुछ मित्र पूछते कि कहां लिख रहे हो, तो उन्हें उत्तर मिलता- "अपने जीवन में उसे क्रियात्मक रूप में लिख रहा हूं।" सचमुच वैदिक धर्म के प्रचार और ऋषिऋण से मुक्त होने के लिए वाणी और लेखनी से अनवरत परिश्रम करना उसने प्रारम्भ कर दिया था। जिन लोगों ने उस ज्ञानी आत्मा का सान्निध्य प्राप्त किया है, उनका कहना है कि जब वे "वैदिक मैगजीन" को लिखाने बैठते थे तो कई-कई दिन तक वे घर से बाहर भी न निकलते थे। जब वे पढ़ने लगते तो बिना विश्राम किए, बिना सोए कई-कई दिन पढ़ते रहते थे।

पंडित जी ने वैदिक शब्दों की जो वैज्ञानिक व्याख्या का कोष तैयार किया था उसे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित किए जाने का गौरव मिला था। टर्मिनोलोजी ऑफ वेदाज़ ने ब्रिटेन और जर्मनी के भाष्यकारों को चकित कर दिया था। दो उपनिषदों का उन्होंने ऐसा मार्मिक अनुवाद किया था, जिसे उनकी मृत्यु के बाद विश्वधर्म सम्मेलन में पढ़ा गया। "वैदिक संज्ञा विज्ञान" शीर्षक लेख आर्य पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था, जो बाद में पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का समर्पण वाक्य द्रष्टव्य है- "अपने समय के अद्वितीय विद्वान स्वामी दयानन्द सरस्वती की स्मृति में उनके एक सच्चे तथा श्रद्धानन्द प्रशंसक गुरुदत्त विद्यार्थी द्वारा समर्पित।" यह समर्पण भाव उनके दयानन्द निष्ठ होने का कितना सुन्दर उदाहरण है।

पंडित जी ने सामान्य जीवन के नियमों का अतिक्रमण किया और उन्हें क्षयरोग ने दबोच लिया। इस प्रकार के अतिक्रमणों से लोहे का शरीर भी अस्तव्यस्त हो सकता है। जवानी में पंडित जी का शरीर सुडौल व पुष्ट था, परन्तु ईश्वरीय नियमों के उल्लघन ने उसे शिथिल कर दिया। गुरु के बिना प्राणायाम का जो शरीर पर प्रभाव पड़ता है, वही उनके साथ भी हुआ। आर्यसमाज की आशाओं का केन्द्र, वह होनहार नवयुवक ऋषि दयानन्द का सच्चा अनुयायी छब्बीस वर्ष की स्वल्पायु में इस लोक से प्रयाण कर गया।

वह वीर बालक वैदिक धर्म के लिए, वैदिक मान्यताओं के लिए अपने को बलिदान कर गया। उसके बलिदान शताब्दी दिवस पर हमारा कर्तव्य है कि वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए हम अपने को इसी प्रकार समर्पित करने का व्रत लें। ■

संस्कृत शिक्षक सम्मेलन

लखनऊ-दिनांक 25 मार्च को हिन्दी भवन में एक संस्कृत शिक्षक सम्मलन श्री वसुमित्र शास्त्री कुलपति गुरुकुल अयोध्या के सभापतित्व में आयोजित किया गया। जिसमें अनेक जनपदों के संस्कृत विद्वानों द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए सुझाव प्रस्तुत किये गये। श्री ओजोमित्र शास्त्री द्वारा दश सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जो सर्वसम्पत्ति से स्वीकार किया गया।

● आर्यसमाज पाता {इटावा} का वार्षिकोत्सव दिनांक 25 से 29 फरवरी 90 तक धूमधाम से मनाया गया।

● आर्यसमाज टेल्को, बिरलानगर जमशेदपुर का वार्षिकोत्सव 27,28 एवं 29 मार्च को सोल्लास सम्पन्न हुआ।

समाज सुधारकों में-
महर्षि दयानन्द का स्थान

• कु॰ रश्मि चौहान
कक्षा-12 "अ"
कु॰ रामचन्द्र सिंह लाल सिंह
कन्या इण्टर कालेज, मैनपुरी।

> आर्यसमाज के 116 वें स्थापना दिवस (27-3-90) पर, आर्यसमाज मैनपुरी द्वारा जिला स्तर पर आयोजित अन्तर्महाविद्यालयी निबन्ध प्रतियोगिता में, उक्त निबन्ध को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। निबन्ध-लेखिका-छात्रा इस सभा के मुख्य निरीक्षक श्री ध्रुवपाल सिंह जी "अटल" की सुयोग्य पुत्री है। आर्यमित्र परिवार लेखिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।
>
> \- सम्पादक।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत के भाग्य ने एक नया मोड़ लिया था जिसके फलस्वरूप शताब्दियों से सुप्त पड़ी इस देश की चेतना, अव्यक्त से व्यक्त, सुषुप्ति से जागृत और जड़ता से प्रगतिशील हुई थी। इस नव जागृत-चेतना का श्रेय राजाराम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, महर्षि दयानन्द, केशवचन्द्र सेन, महादेव राना डे और स्वामी विवेकानन्द प्रभृति भारत की महान विभूतियों को है जो इस देश के नव निर्माण का उद्देश्य लेकर उसके सदियों के संकटों को काटने के लिए प्रकट हुई थीं।

यद्यपि महान पुरुषों की तुलना कर पाना प्रायः असम्भव सा होता है। तथापि निर्धारित विषय के अनुसार आज मुझे इन महान समाज सुधारकों में ऋषि-दयानन्द का स्थान निश्चित करना है। इन सुधारकों में जो सुधारक ऋषि दयानन्द से पूर्ववर्ती हैं आज मैं उनके साथ ही ऋषि दयानन्द की तुलना करूँगी। क्योंकि मेरे विचार में ऋषि दयानन्द के परवर्ती सुधारकों ने ऋषि दयानन्द तक हुए समाज सुधार के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया है।

राजा राम मोहन राय:-

यद्यपि राजा राम मोहन राय प्रारम्भ में अंग्रेजी सत्ता के घोर प्रशंसक और समर्थक थे किन्तु- यतः अंग्रेजों ने भारत में, पहले पहल बंगाल में ही शिक्षा का सूत्रपात किया था अतः व्यक्ति के स्वतन्त्र व्यक्तित्व की भावना इस देश में सबसे पहले बंगाल में ही जागृत हुई और जिसके सुपरिणाम स्वरूप इस सामाजिक चेतना की जागृति के प्रतिनिधि के रूप में राजाराम मोहनराय उभर कर सामने आए। इनके समय में प्रचलित सामाजिक कुप्रथाओं में सतीप्रथा का प्रचलन बहुत जोर-तोर पर था। विधवा को अपने मृतक पति के साथ ही चिता में बलपूर्वक जीवित जलाया जाता था। राजा राम मोहनराय की भाभी के साथ भी ऐसा ही हुआ। तब उन्होंने इस कुप्रथा को समाप्त करने का प्रण किया और एक दिन सरकार ने उनके ही सफल प्रयास से रेगुलेशन 17 के अन्तर्गत सतीप्रथा को अवैधानिक घोषित कर दिया जिससे इस कुप्रथा की समाप्ति होने में भारी सफलता मिली।

प्रारम्भ में राजा राम मोहन राय के हृदय में वेदों के प्रति श्रद्धा जागृत हुई थी परन्तु वेदों के सम्बन्ध में प्रचलित असमाजिक और अप्राकृतिक मान्यताओं के कारण, बाद में उनकी वेदों के प्रति आस्था उठ गई और उन्होंने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानना छोड़ दिया।

इस प्रकार राजाराम मोहनराय का सामाजिक सुधारमात्र एक सूत्रीय बनकर ही रह गया।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर-

सतीप्रथा के समाप्त हो जाने के फलस्वरूप, समाज में, विधवाओं की संख्या बढ़ने लगी और अब उन्हें समाज में हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। उनका सिर मुड़ा दिया जाता था और वे एक दासी की भाँति जीवन व्यतीत करती थीं। किसी भी शुभ कार्य में उनका होना अपशकुन माना जाता था। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने विधवाओं की इस दयनीय दशा को देखकर, विधवा-विवाह को पाराशर-स्मृति के आधार पर वैध घोषित किया और उदाहरण स्वरूप अपना विवाह एक विधवा के साथ करके विधवा-विवाह को वैधता को साकार रूप दिया। ईश्वरचन्द्र ने विधवा-विवाह के पक्ष में पांच हजार हस्ताक्षर कराकर 25-आवेदन-पत्र सरकार को भेजे परन्तु इनके विरोधियों ने विधवा विवाह के विरूद्ध 60 हजार हस्ताक्षर कराकर 40 प्रार्थना-पत्र भेजे। परन्तु अन्ततोगत्वा ईश्वरचन्द्र जी को अपने उद्देश्य में सफलता मिली और विधवा-विवाह को वैधानिक मान्यता प्राप्त हुई। कालान्तर में उन्होंने अपने पुत्र का विवाह भी एक विधवा से ही किया। परन्तु इस वैचारिक क्रान्ति और वैधानिक मान्यता से विधवाओं की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया और इस प्रकार इनका भी यह सामाजिक सुधार कार्यक्रम मात्र एक सूत्रीय बनकर रह गया और आगे उनके किसी भी उत्तराधिकारी ने इस पर कोई भी कार्य नहीं किया।

ऋषि दयानन्द -

ऋषि दयानन्द का अवतरण जब इस देश में हुआ तब उन्हें चारों ओर चुनौतियों पर चुनौतियों की ललकार ही ललकार सुनाई दी। देश परतन्त्र था। देश की मातृशक्ति शूद्र के समान समझी जाती थी। स्त्री और शूद्रों में शिक्षा का सर्वथा अभाव था। वेदज्ञान विलुप्त हो चुका था। धार्मिक आडम्बर और पाखण्ड प्राणिमात्र को खाये जा रहे थे, सामाजिक कुरीतियाँ अपनी पराकाष्ठा पर थीं। ईसाई और मुसलमान हमारी संस्कृति को नष्ट कर रहे थे, वर्णाश्रम-व्यवस्था भंग हो चुकी थी। गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का कोई चिन्ह शेष नहीं था। दलितों, अनाथों गऊओं और विधवाओं का घोर चीत्कार था, ऐसी दयनीय और वीभत्स अवस्था में महर्षि दयानन्द ने उपर्युक्त सभी चुनौतियों को स्वीकार करके उनके समाधान हेतु समग्र सूत्रीय सामाजिक क्रान्ति का बीज वपन किया।

राजा राम मोहनराय के प्रयासों से बन्द हुई सतीप्रथा के कारण विधवाओं की बढ़ती हुई जनसंख्या को देखकर महर्षि दयानन्द ने वैधव्यता का मूल कारण बाल-विवाह को समझा और उसके विरोध में प्रबल प्रचार किया जिससे बाल-विवाहों में कमी आने से विधवाओं की संख्या में भी धीरे-धीरे कमी आने लगी। ऋषि दयानन्द के बाद उनके अनन्य भक्त हर विलास जी शारदा ने बाल-विवाह के विरूद्ध शारदा एक्ट बनवा कर ऋषि दयानन्द की इस सुधारवादी योजना को रूप दिया। स्त्री की शिक्षा के लिए उन्होंने सबसे पहला कन्या विद्यालय-जालन्धर में खोला। जिसके सुपरिणाम स्वरूप आज गाँव-गाँव में कन्या विद्यालय स्थापित है। गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली पुनः जीवित करने के लिए उन्होंने स्थान-स्थान पर संस्कृत पाठशालाएं खोलीं और कालान्तर में उनके अनन्यभक्त महात्मा मुंशीराम जी आदि ने गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का साकार रूप प्रस्तुत किया। ऋषि दयानन्द संस्कृत और आर्यभाषा के साथ-साथ अन्य देशी-विदेशी भाषाओं की शिक्षा के भी पक्षपाती थे। उनके इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनके एक अनन्य भक्त महात्मा हंसराज ने ऐंग्लो वैदिक-शिक्षा-प्रणाली का सूत्रपात किया जो आज देशभर में प्रचलित है। ऋषि दयानन्द के दलितोद्धार कार्यक्रम को आगे चलकर महात्मागाँधी ने हरिजनोद्धार के रूप में साकार किया। ऋषिदयानन्द ने वेद संहिताओं को जर्मन से मंगाकर और यहाँ उनका मुद्रण कराकर उनका पठन पाठन प्रारम्भ किया जो आज देश में ही नहीं विदेशों तक में चल रहा है। ऋषि दयानन्द ने यज्ञों में पशुबलि का घोर विरोध किया जो आज इतना सफल हुआ कि अब प्रायः कहीं पर भी यज्ञों में पशुओं की बलि नहीं दिखाई देती है। इस प्रकार मैं यह देखती हूँ कि ऋषि दयानन्द ने जहाँ समाज में व्याप्त सभी बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने का सफल प्रयास किया वहाँ उनके अन्य पूर्ववर्ती और परवर्ती सुधारकों ने केवल एक-एक या दो-दो बुराइयों को ही लेकर उनमें सुधार किया है। अतः मैं अपने दृष्टिकोण से इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि समाज सुधारकों में महर्षि दयानन्द का स्थान सर्वोपरि है।

आइये! आज इस धुरन्धर समाज सुधारक द्वारा स्थापित आर्यसमाज के 116 वें स्थापना-दिवस पर सिद्धान्तों का अनुशीलन कर, हम सब अपनी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के पथ को प्रसस्त करके अपने जीवन को सार्थक करें।

विनम्र अनुरोध

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों/जिला-उपसभाओं को सूचित किया जाता है कि वे अपना वार्षिक निर्वाचन (आर्यसमाजें जिला उपसभाओं द्वारा तथा जिला उपसभाएं सभा के मान्य अधिकारी द्वारा) प्रमाणित कराके ही प्रकाशनार्थ आर्यमित्र में भेजें।

प्रबन्ध सम्पादक।

साम्प्रदायिक ताकतें भारत को खोखला करने में जुटी हैं - इन्द्रराज

प्रधान आ. प्र. सभा उ.प्र.

अमरोहा {मुरादाबाद}, 28मार्च। राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए भावनात्मक एकना आवश्यक है जो पारस्परिक सहानुभूति से उत्पन्न होती है। सहानुभूति प्रेम और सेवा से उत्पन्न होती है। जबकि प्रेम और सेवा की प्रवृत्ति पारस्परिक ऊँच-नीच के भेदभाव को समाप्त करके ही आ सकती है।

यह विचार स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में आर्यसमाज स्थापना दिवस के संबंध में बोलते हुए आर्य प्रतिनिधि-सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पं0 इन्द्रराज ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि वैदिक संस्कृति अरबों वर्ष पुरानी है। ईश्वरीय ग्रन्थ वेद भी उतने ही प्राचीन हैं। वेद की संस्कृति ही वैदिक संस्कृति है। मानवता मात्र यही संस्कृति आपराधिक प्रवृत्ति से छुटकारा दिला सकता है। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में शुभ तथा अशुभ दोनों ही फलों को बराबर भोगने का प्रावधान है।

पंडित जी ने आगे कहा कि जब यह संस्कार हमारे चित्तवृत्तियों पर पड़ते हैं तो निश्चितरूप से हमारी प्रवृत्ति शुभ कर्मों की ओर अग्रसर होती है। उन्होंने उन सम्प्रदायों की ओर संकेत करते हुए कहा कि जो कर्मों के फल को भी अपनी महिमा से समाप्त करने का दावा करते हैं, वही विश्व को आपराधिक प्रवृत्ति की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

मनुस्मृति में अपराधी को कठोर दण्ड के विधान की ओर संकेत करते हुए आर्य विद्वान ने कहा कि अपराधी को उचित दण्ड न मिलने से अपराधों में वृद्धि होती है।

उन्होंने कहा कि आज साम्प्रदायिक ताकतें आतंकवाद के जरिये राष्ट्र को खोखला करने में जुटी हैं। यही शक्तियां रात-दिन लकड़ी में घुन की तरह हमारी राष्ट्रीय रीढ़ को कमजोर बना रही हैं।

उन्होंने उपस्थित जनसमूह को सचेत किया कि यदि हम देश की एकता एवं अखण्डता की रक्षा के लिए प्राणपन से नहीं जुटे तो बिना किसी क्रान्ति के ही हमारे अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग सकता है।

दहेज की समस्या को सबसे गम्भीर बताते हुए कहा कि कुरीति से नारी की मांसलता का वह रूप प्रदर्शित हो रहा है जो विनाश की ओर ले जाने वाला है। पंडित जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने युगों से तिरस्कृत और उपेक्षित नारी वर्ग को समानता का अधिकार दिलाया था परन्तु वही नारी आज अपने स्वरूप में पुनः विकसित हो गई है कि पूर्ण पाश्चात्य होने का दावा करने लगी है। नव सम्वतसर के अवसर पर अपने वैदिक संदेश में कहा कि हमें सामाजिक कुरीतियों को नष्ट करके एक स्वस्थ समाज की नींव डालनी चाहियें। जिससे राष्ट्रीय एकता का संवर्धन हो सके तथा आपराधिक प्रवृत्ति में कमी आये तभी हम शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

इसी संदर्भ में आज राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज का योगदान विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 18 प्रतियोगियों ने भाग लिया। जूनियर वर्ग में घनश्याम दास-टण्डन सरस्वती विद्या मन्दिर कैलसा के छात्र योगेन्द्र सिंह चाहल ने प्रथम, दयानन्द बाल विद्या मन्दिर की छात्रा पारूल ने द्वितीय तथा कुमारी मोनू शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सीनियर वर्ग में रमा रस्तोगी ने प्रथम, सावित्री त्यागी ने द्वितीय तथा श्रीमती संतोष ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। प्रो0 अशोक कुमार रस्तोगी, प्रो0 कामता कमलेश, डा0 सत्यप्रिय-शास्त्री ने राष्ट्रीय स्वरूप की व्याख्या करते हुए आर्यसमाज के महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा की।

प्रतियोगिता का संचालन सीनाराम-शर्मा बंधु तथा समारोह का सुरेन्द्रनाथ-मित्तल ने किया। पं0 इन्द्रराज ने प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरित किये।

--

महात्मा हंसराज

श्री पवन कुमार एम ए
लखनऊ

19 अप्रैल तपत्याग मूर्ति महात्मा-हंसराज का जन्म दिवस है । सन् 1864 को 19 अप्रैल को स्वनामधन्य इस महात्मा का जन्म पंजाब राज्य के होशियारपुर जनपद के बजवाड़ा ग्राम में हुआ था। निर्धनता के वातावरण में सादगी में रहते हुए प्रतिदिन पैदल चलकर नदीपार कर कष्ट सहते हुए प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। मिशन विद्यालय में अंग्रेज, अध्यापक द्वारा भारतीय संस्कृति तथा आर्य पूर्वजों का अपमान सहन नहीं हुआ। विरोध करने पर विद्यालय से निष्कासित कर दिए गए। राजकीय महाविद्यालय लाहौर में कक्षा 11 में प्रविष्ट हुए। पंडित-गुरुदत्त तथा लाला लाजपतराय जी इनके सहयोगी थे। फ्री डिबेटिंग सोसायटी के सदस्य बने। पंडित गुरुदत्त से विचार-विमर्श होता रहता था लाला-साईदास और गुरुदत्त जी की प्रेरणा और प्रोत्साहन से हंसराज जी आर्यसमाज लाहौर के सभासद बने। उन्होंने बी0ए0 की परीक्षा में सारे पंजाब में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सन 1883 में महर्षि दयानन्द जी के शैक्षिक स्मारक के ऋषि दयानन्द ऐंग्लो वैदिक शिक्षण संस्था स्थापित होने पर

को अपना निःशुल्क जीवन दान दिया तथा सेवायें समर्पित कीं। सन् 1886 के डी0ए0वी0 विद्यालय की स्थापना होने पर मुख्याध्यापक रूप के पश्चात कालेज बनने पर प्राचार्यरूप में कार्य किया हंसराज जी आदर्श प्राचार्य थे। अनुशासन प्रिय तप त्याग की मूर्ति थे। सन् 1911 में प्राचार्य पद से त्याग पत्र दे दिया। दयानन्द-ऐंग्लो वैदिक कालेज प्रबन्ध समिति के प्रधान पद पर निर्लिप्त भाव से काम करते रहे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा गठित होने पर वे उसके प्रधान बनाए गए। उनके नेतृत्व में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में धर्म प्रचारका महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ शुद्धि और संगठन का कार्य भी संचालित किया गया। आर्यसमाज वैदिक धर्म तथा दयानन्द शिक्षण संस्था की निःस्वार्थभाव से सेवा करते हुए हंसराज जी का लाहौर में देहान्त हो गया। वे डी0ए0वी0-आन्दोलन के कर्णधार तथा प्रेरणा स्रोत थे डी0ए0वी0 आन्दोलन के वे संचालक थे। उनकी अध्यक्षता में पंजाब तथा पंजाब के बाहर भी डी0ए0वी0 शिक्षण संस्थायें स्थापित हुईं। उनके तप त्यागमय जीवन से अनेक प्राचार्यों तथा शिक्षकों ने प्रेरणाएं प्राप्त कीं। यदि महात्मा हंसराज जी दयानन्द ऐंग्लो वैदिक शिक्षण आन्दोलन को अपना जीवनदान न करके सर्वस्व त्याग का आदर्श न प्रस्तुत करते तो यह आन्दोलन कभी सफल न होताा।

महात्मा हंसराज जी सच्चे समाज सेवक तथा रचनात्मक कार्यकर्ता थे। विपत्ति में अविचलित धैर्य धारण, शूलों को फूल के समान सहन कर कर्तव्यपथ पर आगे बढ़ते थे। मान और अपमान को समानभाव से सहन करते थे। समदृष्टि रखकर वे न्याय सत्य और धर्म के मार्ग से विचलित नहीं हुए। ◘

प्रवेश सूचना

आर्य गुरुकुल पेरवाकटरा इटावा में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश 1 मई 90 से प्रारम्भ हो रहा है। यह विद्यालय महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है, इस विद्यालय में अच्छे सुयोग्य मेधावी छात्रों का ही प्रवेश होता है। इच्छुक अभ्यर्थी 5/- मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर नियमावली आदि प्राप्त कर सकते है। गुरुकुल में आधुनिक एवं प्राचीन समस्त विषयों के अध्ययन एवं अध्यापन की समुचित व्यवस्था है। शीघ्रता करें।

प्रधानाचार्य
आर्य गुरुकुल पेरवाकटरा
इटावा {206252}

● आर्यसमाज मन्दिर नेमदारगंज {नवादा} के तत्वावधान में मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्म जयन्ती मनाई गई, निकटवर्ती ग्राम राजापुर इन्दौल एवं बरेव में पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया जिसमे तीन बच्चों का नामकरण "अंग्रज" "सुव्रत" एवं "धनंजय" रखा गया पश्चात् चूड़ाकर्म संस्कार सम्पन्न हुआ। अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने बच्चों को अपना आशीर्वाद दिया।

वेदादि बोध की माला

• देव नारायण भारद्वाज
आगरा

वेदादि बोध की माला,
सब ज्ञान तुम्हें दे डाला।
कितना कानों में डाला,
कितना हाथों से पाला।।

अग्नि वायु आदित्य अंगिरा
पुण्य आत्मा पुत्र हमारे।
ऋग्वेद सुनाया यजुर्वेद
प्रिय साम अथर्व सुनाया रे।
फिर तपः पूत ब्रह्मा जी को
चारों ने निज शिष्य बनाया।
वेदों का ज्ञान इन्होंने ही
था ब्रह्मा जी को समझाया।

ब्रह्मा ने खूब सम्भाला,
श्रुति प्रकाश मन्त्रों वाला।
कितना कानों में डाला,
कितना हाथों से पाला।।

ब्रह्मा जी ने जो गान किया
पीढ़ी दर पीढ़ी आया है।
वैज्ञानिक भाष्य विवेचन कर
ऋषियों ने क्रमिक बढ़ाया है।
आयुर्वेद दिया धनुर्वेद
गान्धर्ववेद या अथर्ववेद
चारों वेदों के दिये तुम्हें
क्रमशः चारों ये उपवेद।

उपवेद वेद की माला,
कितना तुमने पढ़ डाला।
कितना कानों में डाला,
कितना हाथों से पाला।।

ऐतरय शतपथ मे और
गोपथ के ब्राह्मण ग्रन्थ दिये।
शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त
ज्योतिष वेदांग ग्रन्थ दिए।
श्रेष्ठ न्याय, वैशेषिक के
श्री सांख्य, योग वेदान्त दिए
मीमांसा और मिलाकर के
छः सुन्दर शास्त्र उपांग दिए।

अवतरण ज्ञान क्रम वाला,
फिर भी भ्रम विकरण पाला।
कितना कानों में डाला,
कितना हाथों से पाला।।

गौतम ने दिया न्याय दर्शन
कणाद ने वैशेषिक दर्शन
दर्शन योग पतंजलि का है,
सांख्य कपिल का उत्तम दर्शन।
जैमिन ने मीमांसा दर्शन
वेदान्त व्यास का है दर्शन

किया समन्वय दयानन्द ने
ऋषियों से लेकर षट् दर्शन

दर्शन आकर्षण वाला,
अपकर्षण क्यों कर डाला।
कितना कानों में डाला,
कितना हाथों से पाला।।

ईश, केन, कठ, प्रश्न उपनिषद
माण्डूक्य और मुण्डक माला।
बृहदारण्यक छान्दोग्य दिया

तैत्तिरीय, ऐतरेय दे डाला।
जीवन की विविध अवस्थायें
सुख वैभव या व्याधि व्यथायें।
उपनिषदों में उपदेश किया
ऋषियों ने [illegible] बोध कथाएँ।

छोड़ उपनिषद उजियाला,
क्यों उपन्यास को पाला।
कितना कानों में डाला,
कितना हाथों से पाला।।

जलियांवाला काण्ड पर वन्दन

• राधेश्याम आर्य
सुल्तानपुर

शोणित से है लिखा हुआ,
जिसका स्वर्णिम इतिहास।
"जलियां वाला बाग" हमारा
लिए शहीदों का विश्वास।

अमर सपूतों के बलिदानों
की जो अमिट कहानी।
जिसका कण-कण गौरव अन्वित
जो मानी, अभिमानी।

स्वतन्त्रता के पुण्य पर्व का,
जो निर्भय निर्माता है।
भारत माँ का अनुपमेय -
निश्चय सौभाग्य विधाता है।

मातृभूमि हित मर मिटने का
जो देता पावन संदेश
जिसके बलिदानों से अपना
धन्य हुआ प्यारा स्वदेश।

ऊधम सिंह जैसे सेनानी -
जिसकी लाज बचाते हैं।
अरि से ले प्रतिशोध सदा -
भूमण्डल को दहलाते हैं।

वही हमारा "जलियां वाला"
भारत का अभिमान है।
महिमण्डल में जिसकी गरिमा-
रहती सतत महान है।

अपगनेय शहीदों का है,
छिपा जहां अतुलित गौरव।
शौर्य-पराक्रम त्याग भरा है-
बलिदानी वीरों का वैभव।

ब्रिटिश गोलियों से निर्भय हो।
बिना शस्त्र के ही सत्वर।
सीनातान दिया आगे बढ़ बन
साहस की मूर्ति प्रखर।

माँ के अमर सपूतों को इन
युग युग का वन्दन अभिनन्दन
जिसमें मिटता रहा युगों से
क्रूर गुलामी का कटु-क्रन्दन।।

श्री विक्रम सिंह आर्य अस्वस्थ

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के प्रधान श्री विक्रम सिंहजो गत फरवरी मास में अचानक हृदयरोग से ग्रस्त हो गये थे। अब वह अस्पताल से अपने निवास स्थान मो० ठेर सम्भल आ गये हैं और पूर्ण विश्राम के साथ स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

प्रभु उन्हें शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्यलाभ प्रदान करें। जिससे वे पुन हमारे बीच उसी कर्मठता और लगन से उपस्थित होकर वैदिक धर्म के प्रचारकार्य में लग जायें।

इन्द्रराज — मन मोहन तिवारी
प्रधान — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

सभा के उपदेशकों प्रचारकों को निर्देश

1- उपदेशकों प्रचारकों से अनुरोध है कि सभा मध्ये प्राप्त राशि धनादेश द्वारा प्राप्त मार्ग व्यय या दस्ती रूप में प्राप्त मार्ग व्यय की रसीद तुरन्त काट दिया करें।

2- कार्यक्रमों से प्राप्त राशि में दक्षिणा तथा मार्ग व्यय उसी रसीद में पृथक-पृथक अंकित किया करें।

3- कार्य की प्रगति से संबंधित मुद्रित अन्तर्देशीय पत्र आपूर्ति कर प्रति सप्ताह अमरोहा कार्यालय को भेजना सुनिश्चित करें।

4- मास जनवरी 1090 से जून 1990 तक वेदप्रचार निधि की शुद्ध आय के आधार पर प्रथम एवं द्वितीय आने वाले उपदेशकों प्रचारकों को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश उपदेश विभाग की ओर से सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जायेगा।

5- कार्यक्रम अभाव, अप्राप्ति या स्थगित होने की दशा में आप तार द्वारा तुरन्त सूचित प्रचार कार्यालय अमरोहा को किया करें।

6- आपके पास जो भी कार्यक्रम स्वतन्त्र रूप से प्राप्त हों उनकी तुरन्त स्वीकृति कार्यालय से प्राप्त कर लिया करें।

मनमोहन तिवारी — हरिश्चन्द्र आर्य
मन्त्री — अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

● आर्यसमाज, गोण्डानगर के वरिष्ठ कर्मठ सदस्य श्री विश्वम्भर-शरण जी, सेवानिवृत्त डिप्टी कलेक्टर निवासी "श्याम-कुटी" मो० राधाकुण्ड, गोण्डा का, दि० 11 मार्च 1990 को आनन्दोल्लास पूर्वक होली-मिलन करके रात्रि में 11 बजे अचानक हृदयगति बन्द हो जाने से आकस्मिक निधन हो गया।

उनकी अन्त्येष्टि अयोध्या घाट पर पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न कर 16 मार्च को उनके निवास स्थान पर वृहद् शान्ति यज्ञ किया गया।

ईसाई धर्मान्तरण द्वारा देश की अखण्डता को खतरा

• श्री राममूर्ति गोस्वामी, लखीमपुर

हमारे देश की अति प्राचीन परम्परा रही है कि यहाँ हर व्यक्ति स्वेच्छा से अपनी उपासना-पद्धति (रिलीजन) चुनता है। उसके प्रचार की भी उसको पूरी सुविधा व स्वतन्त्रता रहती है। किन्तु यहाँ किसी को उसकी उपासना-पद्धति बदलने के लिए कहना उसकी वैयक्तिक स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप करना समझा जाता है, इसीलिए इस देश में धर्मान्तरण का प्रयास करना असभ्यता का सूचक व निन्दनीय माना जाता है।

धर्म मानव-सम्पत्ति है। मनुस्मृति में लिखा है :-

"धर्म एवं हतोहन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः"

अर्थात् धर्म के नष्ट होने पर मनुष्य स्वयं नष्ट हो जाता है तथा धर्म की रक्षा करने से मनुष्य की रक्षा होती है। अतः कहा जा सकता है कि स्वधर्म रक्षणीय है।

आजकल इस देश में धर्मान्तरण दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। विशेषकर ईसाइयों के द्वारा धर्मान्तरण करवाने का प्रयास किया जा रहा है। जगह-जगह पर "इंडिया एवरी होम क्रूसेड" आदि संस्थाओं की शाखाएं खुली हैं। उनके पादरी धर्म प्रचार के नाम पर धर्मान्तरण का प्रयास करके, और वह भी धोखा-धडी, लालच और आतंकवाद के सहारे न केवल इस देश की श्रेष्ठ परम्पराओं व संस्कृति का उल्लघंन करते हैं अपितु इस देश के संविधान के साथ भी छल कर रहे हैं। संविधान धर्मान्तरण की अनुमति नहीं देता है क्योंकि देश के सर्वोच्च न्यायालय ने इस संबंध में फैसला देते हुए कहा है:-

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि अनुच्छेद 25(1) में "प्रचार" शब्द का उपयोग हुआ है लेकिन यह अनुच्छेद किसी व्यक्ति द्वारा किसी को अपने धर्म में परिवर्तित करने की अनुमति नहीं देता।"

धर्मान्तरण एक अनैतिक कार्य भी है क्योंकि विश्व वन्द्य पूज्य महात्मा गाँधी जो "सर्वधर्म-समभाव" के अनन्य उपासक थे, ने ईसाइयों के अनुयायियों द्वारा किए जा रहे धर्मान्तरण-कार्य की घोर निन्दा करते हुये कहा था:-

"कोई भी स्त्री या पुरुष ईसाई अनुयायी नहीं बनना चाहता। ये पादरी माल विक्रेता के रूप में वहाँ जाते हैं। उनके पास आत्मज्ञान जैसी कोई चीज तो होती नहीं। हाँ, उनके पास माल-मत्ता अवश्य होता है जिन्हें वे उन लोगों को देने का वचन देते हैं जो उनके सम्पर्क में आयें।"

इतिहास साक्षी है कि जिन क्षेत्रों में धर्मान्तरित व्यक्तियों की संख्या बढी है वे क्षेत्र किसी न किसी समय भारत से अलग हो गये हैं। बंगलादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण स्वाभाविक ही जाता है। स्वातन्त्र्य-वीर सावरकर के शब्दों में "धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण होता है।"

ईसाइयों के द्वारा चलाये जा रहे संगठन देश में हरिजन-सवर्ण संघर्ष अंग्रेजी व स्वदेशी भाषाओं के टकराव, साम्प्रदायिक उपद्रव और वर्ग व जाति विद्वेष भड़काने का योजनाबद्ध षड्यन्त्र चला रहे हैं। इन संगठनों के माध्यम से ईसाई लोग भारत की स्वतन्त्रता अखण्डता, एकता और संस्कृति को नष्ट करने पर तुले हुये हैं। अतः देश की सरकार द्वारा विचारणीय है कि धर्मान्तरण से देश का भविष्य अन्धकारमय हो सकता है। महात्मा गाँधी ने कहा था:-

"मेरा मत है कि सेवा-परोपकार के बाने में किया गया धर्मान्तरण बडी नीचता है"

देश की स्वतन्त्रता हमारा सर्वस्व है, अखण्डता हमारी श्रद्धा है, एकता हमारी शक्ति है, तथा संस्कृति एवं परम्परा हमारी अमूल्य धरोहर है। जान देगें किन्तु आँच नहीं आने देंगे।

हम हैं भारतीय स्वाभिमान की मशाल

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- पूज्यस्वामीजी, चरणस्पर्श।

निवेदन है कि पुत्ररत्नप्राप्ति हेतु "गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर) में पुत्रायन कैपसूल दिये जाते हैं। कैपसूल पाने के लिए जानकारी देने की कृपा करें।"

- श्यामसुन्दर गुप्त, स्थान/डाकघर- कठौना, जनपद-(हरदोई) उ0प्र0

समाधानः- एक मास की गर्भावस्था में एक पुत्रायन कैपसूल प्रातः खालीपेट गुनगुने मीठेदूध से तीन दिन तक सेवन करना है। निर्माणाधीन गुरुकुल आश्रम को दान देने का मन में संकल्प लेवें। संकल्पितदान का अंशदान मेरे पास भेजकर तीन पुत्रायन कैपसूल प्राप्त करें। शेषदान पुत्र के नामकरण संस्कार के अवसर पर देवें। संस्कारविधि पुस्तक के अनुसार गर्भाधान संस्कार सम्पन्न करने से सुसन्तान मिलती है।

:: अपनी समस्या और तीन बन्दडाकलिफाफे निम्न पते पर भेजें:-

-स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती कच्चाहारी. आ0स0 पिथौरागढ, उ0प्र0

गुरुकुल सिराथू का उत्सव सम्पन्न

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू-इलाहाबाद का 31वाँ वार्षिकोत्सव दि0-23 मार्च से 24 मार्च तक गुरुकुल प्रांगण में सोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर पी0टी0 योगासन एवं धनुर्विद्या प्रदर्शन विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश (उपदेश विभाग) प्रस्तुत करता है

प्रचार योजना

सस्ती उत्तम योजना- 500 रु0 दक्षिणा वेद प्रचार निधि में, इस योजना के अन्तर्गत द्वि दिवसीय उत्सव हेतु सभा की ओर से एक उपदेशक एवं दो सुयोग्य भजन मण्डली प्रदान की जायेंगी। पण्डाल ध्वनि विस्तारक यन्त्र मार्ग व्यय इत्यादि की समस्त व्यवस्था सम्बन्धित आर्यसमाज को करनी होगी।

प्रभावशाली प्रचार योजना- 200रु0 दक्षिणा वेद प्रचार निधि में। इस योजना के अन्तर्गत द्विदिवसीय प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत सभा की ओर से एक उपदेशक एवं एक भजनोपदेशक प्रदान किये जायेगें। शेष व्यय भार सम्बन्धित आर्य समाज को वहन करना होगा।

मिशनरी प्रचार योजना- (आप बुलायें हम आयें) इस योजना के अन्तर्गत एक भजन मण्डली सभा की ओर से प्रदान की जायेगी। आपको केवल मार्ग व्यय भार वहन करना होगा, यह योजना धर्मान्तरण एवं अराष्ट्रीय गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों में लागू की जायेगी।

आप के निमन्त्रण की प्रतीक्षा में

आज ही लिखें या मिलें।

हरिश्चन्द्रार्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग,
प्रचार कार्यालय अमरोहा
जनपद-मुरादाबाद।

लखनऊ दूरभाष सभा-45993
अमरोहा दूरभाष-554

सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी-शान्तियज्ञ

पिथौरागढ़। आर्यसमाज मन्दिर में सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी की दिवंगत आत्मा हेतु 12 मार्च, 1990 को शान्तियज्ञ सम्पन्न किया गया। उक्त अवसर पर स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने ब्रह्मचारी जी के एक सौ वर्ष से अधिक जीवनरहस्य, समाजकल्याण, स्वतन्त्रता संग्राम तथा आध्यात्मिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज, काशीपुर (नैनीताल) के समस्त सदस्यगण एवं महिला आर्यसमाज, काशीपुर (नैनीताल) की समस्त सदस्यायें दिनांक- 25-3-90 दिन रविवार को स्थानीय विकास छवि गृह में की गई कायरता एवं निर्दयता की प्रतीक बम विस्फोटक कार्यवाही की भर्त्सना एवं घोर निन्दा करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें तथा सम्बन्धित परिवारजनों को इस अपार क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

प्रष्ठ ३ का शेष
ईश्वर पुत्र को कहते हैं, ऐसा पाया जाता है। गीता में ------

> कुतस्त्वा कश्मलमिद को विषमे समुपस्थितम्।
> अनार्यजुष्टम स्वर्यमको र्तिकरमर्जुन
> ।। अ02/2।।

इस श्लोक द्वारा युद्ध के समय कायरता को प्राप्त हुए अर्जुन को वृत्ति को अनार्यों को वृत्ति कहा है, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि आर्य उत्तम वृत्ति वाले अर्थात् श्रेष्ठ लोग कहलाते हैं। विदुर नीति के ----

> आर्य कर्माणि रज्यन्ते भूमि कर्माणि कुर्वते
> हित च नाभ्यसूयन्ति पण्डिता भरतवर्षभ ।। 1/30 ।।

इस उदाहरण में अत्यन्त धार्मिक मनुष्य को आर्य कहा गया है तथा चाणक्य नीति में भी----

> अभ्यासादधार्यते विद्या कुलं शीलेन-धार्यते।
> गुणेन ज्ञायते त्वार्य कोपो नेत्रेण-गम्यते ।।

अभ्यास से विद्या, सुशीलता से कुल, गुण से आर्य और नेत्र से क्रोध का ज्ञान होता है।

इसके अतिरिक्त महाभारत, कौटिल्य अर्थशास्त्र, अमर कोष तथा बौद्ध दर्शनों इत्यादि में से अनेकानेक प्रमाण देकर आर्य शब्द की महानता सिद्ध की जा सकती है, किन्तु हिन्दु शब्द की महानता के लिए कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं। भले ही पक्षपात से खींचतान कोई कितनी ही कर ले। (क्रमशः)

मोरिशस आर्य शिष्ट मण्डल का स्वागत

लघु भारत के नाम से प्रसिद्ध मोरिशस से श्री राम रूप रामसाहा, प्रधान पुरोहित मण्डल, मोरिशस के नेतृत्व में भारत आए 50 आर्य विद्वानों व विदुषियों के शिष्ट मडल का 18 मार्च को आर्यसमाज मंदिर दीवान हाल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित समारोह में भव्य स्वागत किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश एवं राजधानी की अनेक आर्यसमाजों एवं शिक्षण सस्थाओं के अधिकारियों एवं विद्वानों ने पुष्प मालाओं से शिष्ट मंडल के सदस्यों का अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर शिष्ट मण्डल को वैदिक साहित्य, गीत व भजनों को केसट आदि भेंट किये गये।

श्री राम रूप रामसाहा ने अपने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 10 लाख 600 की आबादी वाले देश मोरिशस में लगभग 500 आर्यसमाज मन्दिर हैं और वहाँ आर्यसमाज का कार्य व प्रचार बहुत उत्साह पूर्वक होता है। उन्होंने यह भी कहा कि अद्वितीय विद्वान गुरुदत्त की बलिदान शताब्दी से हमें प्रेरणा लेकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाना चाहिए। इस अवसर पर श्रीमती धनवन्ती रामचन्द्रन, प्रधाना आर्य सभा महिला मण्डलमोरिशस ने भी प्रेरक विचार प्रस्तुत किये।

आवश्यक सूचना

- श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित भगवती प्रकाशन ट्रस्ट से त्यागपत्र दे दिया है। इस ट्रस्ट की अध्यक्षता तो वे कई वर्ष -पूर्व छोड़ चुके थे, जिन लोगों ने महर्षि-दयानन्द सरस्वती के भाष्यसहित यजुर्वेद लेने के लिए अगाऊ धन दिया था, वे इस विषय में सीधे स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती से सम्पर्क करें। -विद्यानन्द सरस्वती

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन.पी. ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
वैशाख कृष्ण-१२ संवत २०४७ वि
दिनांक २२ अप्रैल १९९०
दूरभाष. २४५९९३

सेवा

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रुप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि.सं. २२४१/५७) वैशाख शुक्ल-१२ रविवार संवत् २०४७ वि., दिनांक ६ मई १९९० (घोषणा पत्र स ७/२८ २ ८५)



पुरसि पुर्व पूर्कन्तं
पूर्व तं योऽस्मान्पूर्वति
तं पूर्व यं वयं पूर्वाम: ।

यजुर्वेद 1/8

हे परमात्मन! तू हिंसकों, अत्याचारियों का नाश करने वाला है। इस राष्ट्र में पनप रहे हिंसकों, अत्याचारियों, राष्ट्रद्रोहियों का नाश कर क्योंकि यह हमारे राष्ट्र के विघातक हैं। जो हमारा नाश करने पर उतारू हैं उनका तू नाश कर, उन्हें नष्ट करने की हमें प्रेरणा और शक्ति दे। जिनका हम नाश करना चाहते हैं उनको भी नष्ट कर जिससे हमारे सभी राष्ट्रवासी सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत कर सकें।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

•

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य —— रु २५१/-
वार्षिक —— रु 30/
एक प्रति —— १रु. मात्र
विदेश में —— १५ पौंड

प्रकाशन का ९३ वाँ वर्ष
अंक- ५३

उत्तर प्रदेशीय सभान्तर्गत समस्त आर्य सभाओं/आर्य उप प्रतिनिधि-सभाओं/आर्य कुमार सभाओं/आर्य वीर दल तथा शिक्षण संस्थाओं के माननीय अधिकारियों की सेवा में :-

जैसा कि आप जानते हैं हमारा राष्ट्र आज आन्तरिक तथा बाह्य संकटों में भयंकर रूप से ग्रस्त हो गया है। स्थिति निरन्तर चिन्ताजनक बनी हुई हैं। ऐसे समय में राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करने के लिए सभा की एक आवश्यक बैठक लखनऊ में दिनांक- 3·4 90 को सभा प्रधान श्री प0 इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें गहन विचार विमर्श के पश्चात् निम्न निर्णय सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा लिए गए।

आर्यसमाज राष्ट्र का एक सशक्त प्रहरी है हमारा आपसे साग्रह-सानुरोध निवेदन है कि आप कृपया निम्न प्रस्तावों में निहित भावना को क्रियात्मकरूप देते हुए अपने सशक्त प्रचार माध्यमों द्वारा दिनांक-13 मई, 1990 को सामूहिक रूप से किसी भी सार्वजनिक स्थान पर "काश्मीर बचाओ" तथा "अंग्रेजी हटाओ" के प्रस्तावों को मूर्तरूप दें और प्रस्तावों की प्रतिलिपियां महामहिम राष्ट्रपति, राज्यपाल, प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री के अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा दिल्ली एवं इस सभा कार्यालय को भेजने का कष्ट करें।

"काश्मीर बचाओ"

§1§ काश्मीर घाटी धधक रही है। उसे सुनियोजित तरीके से हिन्दूविहीन बनाया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आर्यप्रतिनिधिसभा उ0प्र0 अपना सर्वसम्मत मत व्यक्त करती है कि

§1§ सीमापट्टी को दस वर्ष के लिए सेना को सौंप दिया जाये।
§2§ अवकाश प्राप्त सैनिकों तथा उनके परिवारों को सीमा के पास बसाया जाय।
§3§ धारा 370 तुरन्त समाप्त की जाय।
§4§ राष्ट्र द्रोही तत्वों के समूलोच्छेदन हेतु तुरन्त सशक्त प्रभावी प्रक्रिया अमल में लाई जाएं।
§5§ मई 1[illegible], 1990 से जनसम्पर्क अभियान द्वारा जनमत का काश्मीर तथा देश के अन्य भागों में घटित हो रही, राष्ट्रद्रोही गतिविधियों के विरुद्ध सचेत किया जाये।

"अंग्रेजी हटाओ"

आर्यसमाज अपने जीवनकाल के प्रारम्भ से ही राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार में समर्पित रहा है।

§1§ उ0प्र0 शासन ने परिपत्र जारी करके प्रदेश के समस्त कार्यालयों/सार्वजनिक उपक्रमों में हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य कर दिया है। इसके लिए माननीय मुख्यमन्त्री-श्री मुलायम सिंह यादव को धन्यवाद प्रेषित करते हुए इस आदेश पर सख्ती से पालन कराए जाने का अनुरोध किया जाये।

§2§ जनपदीय स्तर पर एक उपसमिति जिला सभा के प्रधान की अध्यक्षता में गठित की जाये जो यह सुनिश्चित करे कि स्थानीय प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का आदेशानुसार पालन हो रहा है अथवा नहीं।

§3§ न होने की दशा में सम्बन्धित जिलाधिकारी का ध्यान आकर्षित करते हुए मुख्यमत्री को लिखा जाये।

§4§ हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए जन-सम्पर्क अभियान चलाया जाये तथा शिक्षणसंस्थाओं में केवल हिन्दी माध्यम द्वारा ही शिक्षा दिए जाने की व्यवस्था कराने का प्रयास किया जाये।

विश्वास है आप इन प्रस्तावों को मूर्तरूप देकर इन कार्यक्रमों से [illegible]

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र [illegible]

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
—— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
साप्ताहिक आर्य मित्र
लखनऊ वैशाख शुक्ल,१२ संवत् २०४७ वि.
६ मई १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

नान्यः पन्था विद्यते

शताब्दियों, सहस्राब्दियों से सत्यपथ पर समवेत होकर अनुगमन करने वाले राही। सत्य के लिए मर मिटने वाले दीवाने।। राम का धनुष उठाकर "निस्क्षत्रीन मही" की प्रतिज्ञा करने वाले क्षत्रियवर।। "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" कहकर विश्व को वेदों के सन्देश से गुंजायमान करने वाले विप्रबटुक।।। समस्त संचित धन को मातृभूमि की रक्षा के लिए किसी के चरणों में सहर्ष उड़ेल देने वाले प्यारे भामाशाह।।। अपने प्यारे राम को टूटी-फूटी नाव पर चढ़ाकर गंगापार उतारने वाले निषादराज।। झूठे बेर परोसने वाली प्रेमदीवानी शबरी।।। आज तुम सब सो क्यों रहे हो। क्या तुम्हें उस नन्हीं बच्ची की याद नहीं आ रही है जिसके हाथों से घास की रोटी छीनकर भागने वाले बिल्ले को देखकर कोई रो गया था और अकबर की गुलामी स्वीकार करने के लिए सन्धिपत्र लिखने बैठ गया था पर उस नन्ही बच्ची ने सन्धिपत्र फाड़ते हुए कहा था- "पिता जी" यह नहीं हो सकता----नहीं हो सकता"। कैसी नि:सीम देशभक्ति----- धन्य है भारत की प्यारी बेटी, प्रताप के साथ तू भी सदा-सदा के लिए अमर हो गई है।

यह आर्य जाति आज इतनी हताश और मृतप्राय क्यों है- क्या इस पर कभी विचार किया है हमने? क्या हमने कभी अपने अन्तरतम को टटोल कर देखा है किसने हमें इतना खोखला और कमजोर बना दिया है। अभी कुछ ही सौ साल पहले की तो बात है-- रानी पद्मावती, इसी माटी की प्यारी बेटी, अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए, चौदह हजार बेटियों के साथ धू-धू करके जल उठी और धर्म की बलिवेदी पर अपने को हँसते-हँसते बलिदान कर दिया। यौन-सम्बन्ध की पवित्रता का ऐसा अनुपम उदाहरण-- इतिहास ने दान्तों तले उगंली दबाई है, चीख चीखकर कहा है यह भारत की नारी है। आज उसी नारी का अपमान हो रहा है। कश्मीर की पंडिताइनों को म्लेच्छ अपने हवाले करने को कह रहे हैं। उनके दरवाजे थपथपाए जा रहे हैं। कश्मीर छोड़कर भाग जाने को कहा जा रहा है। यह सब क्यों है इसलिए कि तुमने आत्मसंस्कृति और आत्मगौरव को भुला दिया है। स्वार्थ ने तुम्हें अन्धा कर दिया है। अपनी अपनी सोचने में लगे हुए हो समष्टि की भावना हृदय से विलुप्त होती जा रही है।

धर्मनिरपेक्षता की आड़ में एक समुदाय तो अपने धर्म के लिए कट्टर बनता गया पर दूसरा समुदाय जो सौभाग्य या दुर्भाग्य से अभी बहुसंख्यक है, सभी सुविधाओं से वंचित होता गया, अपनी उदारता और महानता में खुद मिटता गया और आज यह हालत है कि अपने ही देश में हमें शरणार्थी बनकर शरण के लिए दर-दर भटकना पड़ रहा है।

वर्तमान या पूर्ववर्ती शासन ने भारतीय मानसिकता को वेदों की तुला पर तौलने का कभी प्रयास ही नहीं किया। वे तो कार्लमार्क्स के मानसपुत्र हैं केवल अर्थ और अर्थ ही उनका चरमलक्ष्य है। धर्म की क्या महत्ता है इसे न तो जानने की कभी कोशिश की गई न कभी आर्यसमाज से पूछा ही गया। परिणाम यह है कि आज हमारे बच्चे शिक्षणालयों से शिक्षा लेकर घोर अनीश्वरवादी, भौतिकवादी बनकर निकल रहे हैं। मगर दूसरा समाज आज भी अनेक ऊहापोहों के बीच अपने उसी मध्ययुगीन धार्मिक खूंटों से बन्धा हुआ है।

यह बात स्मरण रखना चाहिए कि भारत का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप तभी तक है जब तक इस देश में हिन्दू बहुसंख्यक है। इसलिए भारत और भारतीयता के लिए हिन्दुओं को बहुसंख्यक बने ही रहना होगा। यह उसी प्रकार अनिवार्य है जैसे किसी व्यक्ति को जीवित रखने के लिए उसमें प्राणों का संचार होना। और यह सब तभी सम्भव है जब मानवीयता के मानबिन्दु जीवित रहेंगे। इन मानबिन्दुओं को जीवित रखने के लिए हमें वेदों का आश्रय लेना होगा और वेदों का आश्रय लेने के लिए हमें आर्यसमाज का आश्रय लेना होगा। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग है ही नहीं--

नान्यः पन्था विद्यते ।

कविता

भारत माता की करुण पुकार

• श्री चन्द्र प्रकाश आर्य
आ.स. उदयपुरा-इटावा

जागो मेरे वीर सपूतो,परित्याग करो अंगड़ाई का।
माथे का सिन्दूर बचाने,समर करो तरुणाई का।
भँवर पड़ी मम जीवन नौका,नाविक बन-उद्धार करो

बड़े चाव से पाला-पोषा,पचि पचि दूध पिलाया था,
अनुराग भरी थपकी दे दे,बेटा तुम्हें सुलाया था।
वीर-सपूतों की गाथा से,तेरा जी भरमाया था,
इसी दिवस के हेतु लाड़ले,लोरी दे समझाया था।

सदियों से मम वक्ष पटल पर, क्रूर विधर्मी छाया है
अपनी भाषा नीति-रीति का,चोंगा मुझको पहनाया है
लार्डमैकाले की कलुषित छवि,हृदय पटल पर छायी है।
मम द्रोही गद्दारों को प्रिय,पाश्चात्य चुंदरिया भाई है

मम मर्यादा मान बचाने,राणा की तलवार चली,
हल्दीघाटी के रनस्थल में,शोणित धारा बह निकली।
बर्छी-भाले और बघनखा,चेतक की यहाँ टाप चली,
वीर सपूता माताओं की,जौहर की यहाँ ज्वाल जली।

शिवा सपूतों से वीरों की,यहाँ चली थी गोलियाँ,
पुत्र विहीन हुई थी कितनी,माताओं की झोलियाँ।
वीर भगत अरु बिस्मिलने भी,खेली खून की होलियाँ
मम रक्षाहित मर मिटने को,वीरों की निकली टोलियाँ

मम प्रिय लाल दयानन्द ने यहाँ,मेरे चरण पखारे थे
मम लिपि अरु भाषा में ही,सारे ग्रन्थ प्रसारे थे
उठो। लाल अब अवसर आया,पय प्रतिकार चुकानेका
नहीं समय है वीर वरो अब,सोने और लुभाने का।

मम मृदु भाषा हिन्दी के प्रति,अब तलवार उठाने का
मम वक्ष-स्थल से प्यारे वीरो,अँग्रेजियत हटाने की।
मैकाले की कूटनीति को,मिट्टी में उसे मिलाने का,
हिन्दी मेरी भाषा को पुनि-उसका अधिकार दिलाने का

कर्तव्य करो प्रण पूरा करके,मेरे दूध का बदला दो
केवल प्रश्न एक है मेरा-सुहागभरी चूड़ी पहना दो
मेरे अतीत के गौरव को सुत,पुन धरा पर लाओ तुम
गौरवमयी प्रतिष्ठा फिर से,जगती में दुहराओ तुम।।

कटिबद्ध तनय तुम सत्वर हो,जीवन का मूल्य चुकाने को,
मेरी भाषा मेरा आवरण,मुझको पुनि पहनाने को
कृतकृत्य अभी अपने मगमें,जब सुखमय शीतल रातें हों,
मेरे हृदय पटल पर फिर से,सानुराग मधुमय बातें हों।

श्री छोटू सिंह एडवोकेट और श्री पं. बालदिवाकर हंस का लन्दन प्रस्थान

नई दिल्ली 17 अप्रैल आर्य समाज के दो कर्मठ सेनानी श्री छोटूसिंह एडवोकेट अलवर (राज0) उप-प्रधान सार्वदेशिक सभा और श्री पं0 बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, वैदिक धर्म की पावन विजय वैजयन्ती फहराने संयुक्त अरब अमीरात के वायुयान से 17 अप्रैल को प्रात: 5 बजे नई दिल्ली हवाई अड्डे से प्रस्थान कर लन्दन पहुंच गये हैं।

ये दोनो महानुभाव आर्य समाज मन्दिर वन्देमातरम् भवन लन्दन में ठहरेंगे और आर्य समाज लन्दन के सुयोग्य प्रधान श्री सुरेन्द्रनाथ जो भारद्वाज द्वारा निर्धारित कार्यक्रमानुसार यू0के0 की विभिन्न आर्यसमाजों के निरीक्षण के साथ-साथ उनके द्वारा आयोजित जन सभाओं को संबोधित करेगें और लन्दन स्थित आर्य परिवारों से भी सम्पर्क स्थापित करके उन्हें "सर्वे भद्राणि पश्यन्तु" का संदेश देंगे।

श्री हंस जो विशेषत: श्री भारद्वाज जी और संबंधित आर्य सभासदों से मिलकर यह भी पता लगायेंगे कि लन्दन में और उसके आसपास की आर्य समाजों में आर्य वीर दल शाखाओं का संचालन और विस्तार कैसे किया जा सकता है। जिससे "अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु" का उद्देश्य प्राप्त करना संभव हो सके।

सार्वदेशिक सभा परिवार के सभी सदस्यों और अन्यान्य मित्रों ने दोनों नेताओं को भाव भीनी विदाई दी।

संवाददाता

उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत-विभाजन के घावों पर नमक छिड़का !

उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाना अमर शहीदों का अपमान और करोड़ों भारतीयों की भावनाओं से खिलवाड़

• सन्तोष "कण्व" बरेली

देश के समस्त बुद्धिजीवियों के परामर्श, मनीषियों के अकाट्य तर्क आर्यसमाज की स्पष्ट चेतावनी और प्रबल जन-विरोध की घोर उपेक्षा करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने उर्दू को राज्य की दूसरी राजभाषा बनाने का संकल्प अन्ततः कर ही लिया। अध्यादेश लाने का साहस तो जुटा नहीं सके, विधेयक लाया गया था।

सदन में हाथ 'उठाने वालों की कोई कमी नहीं है। दाब-धौंस से जो चाहे पारित करा सकते हैं। अध्यादेश लाते तो न्यायालय में उसकी वैधता सिद्ध करनी पड़ती, जो इस सरकार की सामर्थ्य की बात नहीं। कथित लोकतन्त्र में सत्तारूढ़ दल के विधायकों को अनुशासन के नाम पर सत्ता की सुविधाओं का प्रलोभन देकर जो अदूरदर्शितापूर्ण पग उठाए जाते हैं, उनके अन्तिम परिणाम कभी भी सुखदाई नहीं होते। उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाया जाना भी ऐसा ही एक प्रयास है।

फिर उर्दू ही क्यों, कांग्रेस पार्टी और सरकार का अब तक का इतिहास ही यह बताता है कि राष्ट्रहित की कोई बात उसने कभी नहीं सुनी और राष्ट्रविरोधी हर माँग के आगे देर-सबेर घुटने टेके हैं। साथ ही अपनी असफलताओं का दोष दूसरों पर मढ़ा है। अतीत से शिक्षा लेना तो सम्भवत उसकी परम्परा में ही नहीं है।

थोड़ा स्पष्ट कहें तो ह्यूम द्वारा संस्थापित कांग्रेस ने आज तक अपने संस्थापकों (ब्रिटिश साम्राज्यवादियों) तथा उनके उत्तराधिकारियों (आंग्ल-अमरीकी गुटबन्दों) के मूल उद्देश्यों को ही प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूप में पूर्ण किया है। अभी भी उसी दिशा में अग्रसर है।

उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने में जिस हठधर्मिता, अदूरदर्शिता व विवेक हीनता का परिचय दिया गया है, उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

हमारे लम्बे स्वाधीनता संग्राम की चरम परिणति सन् 1947 में "भारत विभाजन" के रूप में सामने आई थी, जब अनेक बलिदानों के बाद भी हम अपनी मातृभूमि को खण्डित होने से नहीं बचा सके। भीषण रक्त-पात के बीच हमारी धरती का एक भाग कट कर अलग हो गया। उन्मादी बच्चों ने अपनी माँ को ही बाँट लिया।

एक तो माँ को माँ ही नहीं मानते थे "अगले दिन" जो थे। 'वन्देमातरम्' में कुफ्र देखते थे। उन्हें राष्ट्र की क्या चिन्ता।

अगर मुल्क हाथों से जाता है,जाए।
तू अहकाम-ए-हक से न कर बेवफाई।

(इकबाल)

और यह "अहकाम-ए-हक" उन्हें इस भूमि को अपनी मानने ही नहीं देता। उनके लिए तो यह "दारूल हरब" थी। इसे "दारूल इस्लाम" बनाना

सत्य प्राय कड़वा होता है। फिर भी उसे स्वीकार करना पड़ता है। इतिहास साक्षी है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्यसमाज ने हर खतरनाक मोड़ पर राष्ट्र का नेतृत्व करने वालों को सदैव सचेत किया है। परिस्थिति कैसी भी क्यों न रही हो, हमने हमेशा सच कहने का साहस जुटाया है।

समस्त यथार्थों को झुठलाते हुए आज उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाया जा रहा है। आर्य समाज का कहना है कि उर्दू जैसे अत्यन्त संवेदनशील विषय को इतने हल्के ढंग से नहीं लेना चाहिए। इससे निश्चित ही करोड़ों देशभक्तों की भावनाओं को ठेस पहुँची है। यह एक अदूरदर्शितापूर्ण निर्णय है। प्रस्तुत है- आर्यजगत के प्रसिद्ध लेखक संतोष कण्व का सटीक विश्लेषण।

सम्पादक--

ही उनकी आस्थाओं के "खुदा" का उनके लिए आदेश था।

दूसरे इतने दम्भी थे कि धरती को "माँ" कहने में शर्माते थे। "माता-भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्य " में उन्हें प्रतिगामिता दिखाई देती थी। वे शिक्षा से अंग्रेज संस्कृति से मुसलमान और अकस्मात् (एक्सीडेंटली) हिन्दू (भारतीय) थे। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध युद्ध का नाटक करते-करते बूढ़ा गए थे। अपने जीवनकाल में ही जैसे-तैसे सत्ता पाना चाहते थे।

दोनों ने मिलकर मेरी "माँ" को काट दिया। क्या दृश्य था। एक ओर सत्ता के भूखे भेड़िये दीपमाला जला रहे थे, तो दूसरी ओर माँ के अभागे लाड़ले क्षत-विक्षत माँ की गोद में फफक-फफक कर रो रहे थे।

कहने को आज चार दशक हो गए, लेकिन घाव इतने गहरे हैं कि समय का मरहम उन्हें भर नहीं पा रहा है। एक-एक कर सभी दृश्य सामने आ जाते हैं। ऐसा लगता है, जैसे सब कुछ कल ही घटा हो।

विभाजन के साथ ही उर्दू का प्रश्न सदा के लिए हल हो गया था। "पाकिस्तान अलग राष्ट्र है", यह एक वास्तविकता है। "उर्दू उसकी राष्ट्रभाषा है"। यह एक सच्चाई है। "शेष भारत में उर्दू अब मात्र विदेशी भाषा है", यह भी एक यथार्थ है।

आज उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाकर इस सत्य को झूठलाया गया है। अमर शहीदों के बलिदान और विभाजन के समय बहे निर्दोष जनों के रक्त को अपमानित किया गया है। माँ-बहनों के लुटे सतीत्व पर यह क्रूरतम अट्टहास है। करोड़ों भारतीयों की भावनाओं से खिलवाड़ हुआ है। उनको जो आघात पहुँचा है, उसे शब्दों में व्यक्त कर पाना इस लेखनी की सामर्थ्य से बाहर है।

घायल की गति घायल जाने,
और न जाने कोय।

उर्दू के गुण-दोष उसके साथ हैं। हमें उनसे कुछ लेना-देना नहीं। हम किसी भाषा का अपमान नहीं करते। सबके प्रति यथायोग्य व्यवहार करते हैं। उर्दू से न हमें कोई प्रेम है, न कोई द्वेष। पाकिस्तान में वह फले-फूले, हमें कोई आपत्ति नहीं है। हम उसका विकास चाहते हैं, लेकिन पाकिस्तान में, भारत में नहीं। यहाँ उसे सर पर नहीं बिठाया जा सकता। भारत में उसका वही स्थान होना चाहिए, जो किसी देश में विदेशी भाषा का हो सकता है।

हम पर संकीर्णता और साम्प्रदायिकता का आरोप भी लगता है। उर्दू के द्वितीय राजभाषा बनाए जाने का विरोध करते समय हमारा दृष्टिकोण संकुचित नहीं, प्रत्युत विस्तृत एवं यथार्थ परक होता है। अतीत और अनागत की विभाजन रेखा पर खड़े होकर जब हम खण्डित भारत में उर्दू के औचित्य पर विचार करते हैं, तो उसके पक्ष में एक भी तर्क नहीं मिलता।

कुछ लोग हमें "उर्दू विरोधी" भी कहते हैं, जबकि वस्तुस्थिति इसके बिलकुल विपरीत है। जो लोग स्वयं "हिन्दी-विरोधी" हैं, वे अपने मन की कलुषता को छिपाने के लिए बड़ी सहजता से हम पर उर्दू विरोधी होने का आरोप लगा देते हैं।

उर्दू तो क्यों, हम किसी भाषा का विरोध नहीं करते, जैसा कि उर्दू वाले हिन्दी के साथ करते रहे हैं। अभी भी कर रहे हैं। हमने जिस उदारता से उर्दू को अपनाया अपनी ही उदारता (?) से उर्दू वालों ने हिन्दी से परहेज किया, क्योंकि उनकी आस्थाओं के अनुसार हिन्दी काफिरों की भाषा है।

उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की माँग किसी देशभक्त की नहीं है। यह उनकी माँग है, जिन्हें देश की कोई चिन्ता नहीं है। भारतीय मसलमानों को प्रेरित करते हुये कभी उर्दू के शायर इकबाल ने कहा था---

" ऐ मुसलमान ! तू अपने दामन को वतन की मिट्टी से झाड़कर रख, तभी तू उन्नति कर सकेगा।"

-शेष पृष्ठ ४ पर

महर्षि शायद यही चाहते थे

• लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"
भोजपुरा मैनपुरी

मानव-चेतना और मानवीय आचरण के क्षरणकाल में जन्मने वाला, मनुष्यता के ह्रास-त्रास से खिन्न उद्विग्न मानवता को उबारने में अपनी श्वास-श्वास होमने में, सतत् निरत, विरक्त किन्तु मानवता और राष्ट्र-कल्याण में अनुरक्त, देश, समाज और संस्कृति का पुनरुद्धारक महान योगी यती प्रचण्ड विद्रोही, क्रान्तिधर्मा ऋषि, चारित्र्य और मानव-संस्कृति के अकाल-दुकाल में उद्भूत हो वन-वन भटक कर, सच्चे शिव की खोज करने वाला, जब समस्त विश्व में ऋषि दृष्टि और देवत्व के आचरण का सूखा पड़ा था, परतन्त्र भारत का ही नहीं, अपितु अखिल विश्व, और जीवनमात्र के कल्याण-त्राण के लिये, गुरु आदेश को शिरोधार्य कर, मात्र कोपीनधारण कर जो निकल पड़ा था और जो वेद-शास्त्र के सत्य ज्ञान से पूर्ण निष्णात हो वेदों की ओर लौटने का आह्वान कर, अपने को होम गया है, वह महर्षि दयानन्द थे।

महर्षि दयानन्द चाहते थे कि असुर निकन्दन जन मन रंजक, शील, शक्ति और सौन्दर्य के आदर्श रूप मर्यादा पुरुषराम, भारत के घर-घर में फिर जन्म लें।

भवभय भंजक, जन मन मोहक, आलोक प्रदायक, गोपालक, गीता गायक, चक्रधर कृष्ण का पाप विनाशक पराक्रम, जन-जन में जन्मी, हर देव की वसुदेव की गोद में क्रीड़ा, करें। बाद में भले ही उनके वास्तविक रूप को विस्मृत कर उनके चित्रपूजक भक्त, नाचते गाते हुए चोर जार शिखामणि बता दें और इसी तरह मर्यादा पुरुषोत्तम राम की महान चारित्र्य की दिव्यता से आँख मूँद, भुजा उठाकर पृथ्वी को निश्चरहीन करने वाले दशरथ राम का कीर्तन कर उनकी छैल छबीली बाराती झाँकी निकाल कर सन्तुष्ट होते रहें। राम के वंशज और अनन्य भक्त कहलाने का स्वांग करते नजर आयें किन्तु एक बार इस "स्वर्गादपि गरीयसी" धरती का गौरव, आकाश को छुये। कुदृष्टि से आँख उठाकर हमारी ओर देखने का कोई दुस्साहस न कर सके। महर्षि चाहते थे भारत के अन्न, जल और यहाँ के आत्मबोधक संस्कारों में पले मानव सारे संसार को भाई मानकर "वसुधैव कुटुम्बकम्" को चरितार्थ कर सकें। दयानन्द के सम्पूर्ण जीवन का महातप इसी दिशा में जागकर, लगा था। शायद वह यही देखने को अपने आपको तिलतिल होमने में लगे थे। उनकी क्रान्त दर्शी ऋषि दृष्टि यही देखना चाहती थी। वह अपने काल से बहुत आगे का सुनहरा स्वप्न देख रही थी। समय से बहुत पहले जागने का सबसे बड़ा अपराध यही था। तभी कविवर "सौमित्र" ने उनके लिए कहा है -

कितना बड़ा स्वप्न देखा था,
कितने बड़े सत्य के दृग से।
इस जग की संकीर्ण परिधि में,
समा सका कब स्वप्न तुम्हारा।
समाधिस्थ होकर शिवत्व मे,
जो तुमने नव स्वप्ननिहारा
इसका ही प्रतिदान, गरल के
प्याले पाये तुमने जग से।
कितना बड़ा स्वप्न देखा था,
कितने बड़े सत्य के दृग से।

इसी से उन्हें एक बार नहीं चौदह चौदह बार काल कूट के घूँट कंठ से नीचे उतारने पड़े थे, फिर भी वे सतत आगे बढ़े थे। भारत उन्हीं की तपस्या का अंश लेकर, आज जाग्रत हैं और आगे भी जागे, ऐसा काल को आर-पार देखने वाली, दृष्टि देख रही थी। हम परतन्त्रता की सड़ी-गुदड़ी में लिपटे हुए थे, तभी उनकी समय को आर-पार देखने वाली दृष्टि ने "यते महे स्वराज्ये" का प्रथम शंखनाद किया था, जिसका महामन्त्र लेकर, महात्मा तिलक ने "स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" की घोषणा की थी। महर्षि की दृष्टि के साथ हम न देख सके इसी से आज तक हम निरीह आहत क्रन्दन करने में संलग्न हैं, जिसे कोई सुनने को तैयार नहीं। हमारी हर बात दीनता हीनता का अर्थ हीन आर्तनाद अरण्य रोदन बनकर रह गयी है।

महर्षि की दूरगामी दृष्टि, अगली विश्व मानवता का नूतन भोर . एवं भास्वर भविष्य देख रही थी। वह जानती थी कि अगला सवेरा मेधाप्रज्ञा युक्त सच्चे धर्म और समझदारी का आयेगा, जब सत्य को स्वीकारने में कल्याण होगा। वे समाज में व्याप्त, अज्ञान अभाव और अन्याय-अराजकता को मिटाकर श्रेष्ठ सुन्दर मानव व्यवस्था और ऊर्ध्वप्राण मानव कल्याणकारी, वर्ण व्यवस्था को, गुण कर्म और स्वभाव के अनुरूप देखना चाहते थे तभी वे जन्म मूलक जाति-पाँति, मूर्तिपूजा, बाल विवाह, अनमेल विवाह नारी जाति के प्रति होने वाले अत्याचार अनाचार के विरुद्ध जड़मूल से उखाड़ने के लिए शंखनाद कर रहे थे। व्यक्ति-समाज में व्याप्त विषमता को ज्ञान दृष्टि देकर समाप्त करना चाहते थे। वे गुण-कर्म, स्वभाव और शुभ संस्कार से गढ़े गये मनुष्य को वर्ण व्यवस्था के माध्यम से आगे बढ़ने वाली यात्रा को अवरुद्ध होने से बचाते हुए मुक्ति गामी बनाये रखना चाहते थे। वे सत्य ज्ञान के दृष्टा और प्रयोक्ता थे। वे प्रभु की अपौरुषेय वाणी वेद की अमृत वर्षा करने आये थे। वेद ज्ञान का अज्ञान निर्झर उनकी अखण्ड तपस्या से भारतीय संस्कृति के हिम-शिखर से पुनः प्रवाहित कर गये हैं। प्यासा मानव समाज, जब उसकी आवश्यकता अनिवार्यता को स्वीकारेगा तभी उसकी जन्म-जन्म की तृषा शान्त होगी।

मानव, मर्त्यलोक में, ही अमृतपान करेगा, उनका 14 बार का विषपान व्यर्थ न जा सकेगा, वह क्रान्त दृष्टि का देखा हुआ सपना है, जो साकार होकर रहेगा। हमें अपने पर तो सन्देह हो सकता है, पर उसकी अमृत दृष्टि पर सन्देह नहीं ।

आओ दया और आनन्द का बोध प्रत्येक आर्य (भारतीय) अपने भीतर जगाकर आत्म निरीक्षण करे और फिर सत्य का अमृत आचमन करें, तब हमारी वेदना वेद ज्ञान के अमृत सरोवर में उतरे, अभ्युदय और निःश्रेयस को प्राप्त कर आत्मवान काया, आप्तकाम की आभा से दीप्तिमान हो, तभी ऋषि का बलिदान और उनके महाप्रयाण की सार्थकता सिद्ध होगी। ■

पृष्ठ ३ का शेष...

एक बात मैं भारत के मुसलमानों से भी कहना चाहूँगा। उन्हें अपने मस्तिष्क इस भ्रम को सदा के लिए निकाल देना चाहिये कि वे उन लुटेरों के वंशज हैं, जो अरब, ईरान, टर्की आदि देशों से इस देश को लूटने आये थे। हो सकता है कि कुछ एक परिवार शेष रह गये हो, अधिकांश तो भारतीय मूल के ही है। जब तक भारतीय मुसलमान स्वयं को उन लुटेरों का वंशज मानते रहेंगे, तब तक उन्हें उपहास का पात्र बनना ही पड़ेगा। भारत विरोधी शक्तियाँ इस्लाम और उर्दू के नाम पर उन्हें हमेशा भड़काती रहेंगी। जो आज काश्मीर और पंजाब में पाकिस्तान कर रहा है।

भारत के मुसलमानों को नागरी और हिन्दी पर गर्व करना चाहिये। यह काफिरों की नहीं, खुद उनकी अपनी भाषा है। काफिर और मोमिन का भेद उन्हें अपने मस्तिष्क से हमेशा के लिए निकालना होगा। मानवमात्र को प्यार करने की आदत डालनी ही होगी।

भारत जैसे उदार देश में संयम से रहना सीखो। उर्दू के नाम पर भड़को मत। इस्लाम के नाम पर गुमराह मत होओ। "वतन" तो वतन ही होता है। दारुल-हरब या दारुल-इस्लाम नहीं होता। लोगों के बहकावे में मत आओ। फिरका परस्ती भूलकर वतन परस्ती सीखो।

उर्दू से किसी का भी भला नहीं होगा। यह बीते कल की भाषा है। भविष्य को ध्यान में रखकर वर्तमान को सम्भालना होगा। मैं समझता हूँ कि जिस व्यक्ति में रत्ती भर भी अक्ल होगी वह उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने का कभी भी समर्थन नहीं करेगा।

सत्ता के नशे में चूर भारतीय राजनीति के अनाड़ी खिलाड़ियों से मेरा यही कहना है- कुर्सी के लिए गिरना ही चाहते हो तो गिरो, लेकिन इतना नही कि शर्म भी शर्मा जाये। ■

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में 15 से 22 मई तक महात्मा जगदीश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में लग रहा है योग के प्रेमियों को सादर निमन्त्रण है। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर शिविर को सफल बनावें।

- सोमानन्द सरस्वती
वेद प्रचारक मण्डल दिल्ली-5

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं. २२४१/५७), माघ कृष्ण- ६ रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक ६ जनवरी १९९० (घोषणापत्र सं. ७/२२-२-२५)



आर्यों की विजय रथ-यात्रा

अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं
मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रमयुतो
मे प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो
मे व्यानो ऽ युतो ह सर्व·

-- अथर्ववेद

हम अमृतलोक के वासी, आर्यजन, अनन्त शक्ति सम्पन्न हैं। हमारी आत्मा, प्राण, इन्द्रियाँ सब सबल हैं। हमारी रथयात्रा संसार को सच्चा ज्ञान, प्रेम और शान्ति का सन्देश देने के लिए निकली है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९४वाँ वर्ष
अंक - १

ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न

आर्य जनता ने राष्ट्ररक्षा एवं विश्वशान्ति के लिए कटिबद्ध होकर संकल्प को चरितार्थ करने का व्रत लिया

महर्षि दयानन्द द्वारा दिखाए मार्ग पर चलकर ही विश्वशान्ति एवं राष्ट्ररक्षा सम्भव

——प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर

नई दिल्ली, 24 दिसम्बर- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली में मनाए जा रहे ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत के प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि आज समाज में चारों ओर विश्रृंखलता छायी हुई है। धर्म के नाम पर भाई-भाई के खून का प्यासा हो रहा है। आज सबसे विकट समस्या समाज में एकता और सद्भावना पैदा करने की है। यह कार्य मानवधर्म की एकता और शान्ति के मूलतत्वों को मानव के हृदय में पूर्णतया आत्मसात् करके ही किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने मानवसमाज से अन्धविश्वास, जातपान्त की कुरीतियों आदि को दूर करने के लिए संघर्ष छेड़ा था। उन्होंने वेदाधारित मानवीय मूलतत्वों को धर्म का सार्वदेशिक सार्वकालिक आयाम बताते हुए एक महान आर्यराष्ट्र की कल्पना की थी जिसे विश्व के आर्यों को साकार करना है। उन्होंने समता, समानता, एकता, बन्धुता और विश्वशान्ति की जो परिभाषा दी है वह शाश्वत और सत्य है। इसी को अपनाकर मानवसमाज अपना ऐहिलौकिक एवं पारलौकिक कल्याण कर सकने में समर्थ है।

पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी ने सम्मेलन में उपस्थित विशाल आर्यजनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि देश टूटने वाला है। समाज के बीच दरारें पड़ गई हैं। एक समय था जब हमारा भारत जगद्गुरु कहलाता था किन्तु आज भारत की दशा दयनीय होती जा रही है और उसे कोई पूछने को तैयार नहीं है। ऐसे समय में आर्यसमाज ही एक ऐसी रोशनी है जो अन्धकार को दूर करके राष्ट्र की एकता को अखण्ड रखते हुए देश को टूटने से बचा सकती है।

आर्यमहासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने कहा कि अपने आस-पास के अन्धेरे को देखकर ऐसा लगता है कि कहीं हम अन्धकार में विलीन तो नहीं होते जा रहे हैं। राजसत्ता एवं कुर्सी के मोह में देशहित तक को आज अनदेखा किया जा रहा है। आज हमें हर कीमत पर मातृभूमि की रक्षा का संकल्प लेना है।

महासम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने घोषणपत्र पढ़कर सुनाया जिसमें कहा गया है कि संविधान में संशोधन करके "आर्यावर्त" को देश का मूल नाम देते हुए एक अनुच्छेद सम्मिलित किया जाय। घोषणापत्र में बताया गया है कि धर्म का अभिप्राय आचारसंहिता से है। स्वामी दयानन्द-सरस्वती धर्म के इसी दृष्टिकोण पर सभी धर्म के समुदायों के उच्च धर्माधिकारियों से आपसी विचारविमर्श करके समान मानव-आचार-संहिता बनाने के इच्छुक थे।

सम्मेलन में देश विदेश के प्रख्यात आर्यनेतागण, मनीषी विद्वन्मण्डली, समाजसुधारक एवं लाखों की संख्या में आर्यजन सम्मिलित हो रहे हैं। आर्यों के इस महापर्व की सफलता के लिए देश विदेश से अगणित शुभकामनाएं प्राप्त हो रही हैं।

(विस्तृत विवरण अगले अंक में)

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा अरुण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ माघ कृष्ण- ६ संवत २०४७ वि.
दिनांक ६ जनवरी १९९१ दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

आत्म निर्णय की मांग सिद्धान्ततः गलत

प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने संकट-ग्रस्त पंजाब समस्या के समाधान के लिए अकालीदल के श्री सिमरनजीत-सिंह मान के साथ बातचीत प्रारम्भ कर दी है और आशा व्यक्त की है कि पंजाब की समस्या का समाधान सौहार्दपूर्ण माहौल में संविधान के ढाँचे के तहत ही निकाल लिया जायेगा। बातचीत के दौरान श्री मान ने अकालीदल की ओर से जो ज्ञापन प्रस्तुत किया है उसका पूरा विवरण तो अभी उपलब्ध नहीं हो सका है किन्तु श्री मानके प्रेस वक्तव्य से यह बात उभरकर सामने आई है कि:-

§1§ सिखों को आत्मनिर्णय का अधिकार मिलना चाहिए।
§2§ सिखों के लिए एक अलग स्वतन्त्र सत्तासम्पन्न राज्य का विशेष दर्जा मिलना चाहिए।
§3§ बातचीत में आतंकवादियों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त और क्या-क्या शर्तें श्री मान नें रखी हैं उनका अभी खुलासा नहीं हुआ है किन्तु उपर्युक्त तीनों मांगों में जहाँ तक आतंकवादियों से वार्ता करने का प्रश्न है, उचित माहौल में वार्ता के लिए शासन का द्वार हमेशा खुला रहना चाहिए। मूल प्रश्न आत्मनिर्णय के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए एक अलग विशेषाधिकार प्राप्त स्वतन्त्र राज्य की स्थापना से है।

भारत विभाजन से पूर्व महात्मा-गाँधी और तत्कालीन अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मि० मोहम्मद अली जिन्नाह के मध्य बम्बई में कई दिनों तक एक लम्बी वार्ता का दौर चला था। मि० जिन्नाह मुसल्मानों को आत्मनिर्णय का अधिकार दिए जाने पर अड़े हुए थे और उनका स्पष्ट मत था कि हिन्दू तथा मुसल्मान दोनों अलग राष्ट्र हैं। मुसल्मानों को आत्मनिर्णय का अधिकार मिलना चाहिए और यदि वे अपने लिए अलग स्वतन्त्र राज्य की स्थापना चाहते हैं तो उसे स्वीकार करना चाहिए। महात्मा-गाँधी द्विराष्ट्रवाद सिद्धान्त के घोरविरोधी थे और अन्त तक यही कहते रहे कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा किन्तु अन्ततः इसी आत्मनिर्णय के सिद्धान्त को स्वीकारते हुए कांग्रेस ने भारतविभाजन करा दिया।

इसी प्रकार कश्मीर को संविधान में धारा-370 जोड़कर विशेष दर्जा दिया गया और यह माना गया कि इससे कश्मीर की जनता भारतीय राष्ट्रीय विचारधारा में आत्मसात हो जायेगी किन्तु दोनों ही प्रयोग असफल एवं भारत के लिए आत्मघाती सिद्ध हो रहे हैं। आज भारत जिस संकटमय स्थिति से गुजर रहा है उसका मूल कारण यही है।

विभाजन के समय वीर सावरकर ने आत्मनिर्णय के सिद्धान्त के विरुद्ध चेतावनी देते हुए कहा था कि यह देश हिन्दुओं का है एक है और भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से अखण्ड है। अन्य जातियाँ भी यहाँ रह सकती हैं उन्हें समस्त नागरिक अधिकार एवं सुविधाएं भी दी जा सकती हैं जैसाकि ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों में होता है किन्तु आत्मनिर्णय के अधिकार' के नाम पर देश को बाँटा नहीं जा सकता।

जहाँ तक संवैधानिक दायरे के अन्तर्गत सिखों की शिकायतें दूर करने अथवा उन्हें सुविधाएं दिए जाने का प्रश्न है, इससे किसी को मत भेद नहीं हो सकता है। सिख भाइयों के उत्थान के लिए जो कुछ भी सम्भव है अवश्य किया जाना चाहिए। परन्तु "आत्मनिर्णय" के नाम पर उनके लिए स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करना या कश्मीर जैसा कोई विशेष दर्जा दिया जाना भारत के लिए आत्मघात के समान होगा।

भारतीय राजनैतिक मनीषियों ने आत्मनिर्णय के आधार पर देश का विभाजन करके हिमालय जैसी भूल की थी। अब उस भूल को किसी भी कीमत पर दोहराया न जाय। सिख हमारे भाई हैं मूलतः इस देश के निवासी हिन्दू ही हैं। महान गुरुओं ने हिन्दुओं की रक्षा के लिए ही खालसापन्थ का संगठन किया था। सारा देश उनका है सारे देश की अस्मिता उनकी अस्मिता है। उन्हें देश को तोड़ना नहीं जोड़ना है यही भारत [illegible] की पुकार है।

छोड़ राही चल दिये यदि

डॉ० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज
बरेली।

छोड़ राही चल दिये यदि,
व्यर्थ उनका ध्यान करते।
तुम स्वयं सामर्थ्यपूरित,
है स्वयं को ही भुलाया।
सीम से आरूढ़ होकर,
कह अचल, निज को रुलाया,
राह का नूतन सृजन हो,
देख बाधा, व्यर्थ रुकते।

विश्व अवसरवादिता का,
बन गया मोहक नमूना।
कल मृदुता छिपाये,
दंश होगा, यह न छूना।
द्वेष की ज्वाला जलाये,
क्यों उन्हीं के पास चलते ?

कर्म का संसार व्यापक,
स्वप्न है कितने संजोये।
दे सके आकृति मधुरतम,
धन्य वे कब भ्रान्त सोये।
साधुवेशी वे कलेवर,
लूटते, दिनरात छलते।

साधना अविराम सुखमय,
किन्तु माया नें नचाया ।
बोतलों का बन्द पानी,
कब तृषा को है जगाया ?
जो गरल है, शर्करामय,
वह सुधी घट में न भरते।

देश के सैनिकों के नाम संदेश

• आर्य दयाशंकर [illegible]

सुनो ऐ राम भक्त परिवार,
तुमको करना है संहार।।

रावण के अभिमानों का,
कंस के संतानों का।
दुर्जन और बेईमानों का,
शासन के शैतानों का।।

आओ वन के पवन कुमार,
तुमको करना है संहार।।

ऐ भारत के वीर सैनिकों,
गर्व है तुम पर भारत माँ को।
माँ की लाज बचानी तुमको,
धर्म की रक्षा करनी तुमको।।

तू है हिन्दू का पतवार,
तुमको करना है संहार।।

मत भूल करो दीवानों का,
श्री राम भक्त हनुमानों का।
राणा के बलिदानों का,
हिन्दू के स्वाभिमानों का।।

तुम हो राणा के अवतार,
तुमको करना है संहार।।

तुम लहू पियो गद्दारों का,
श्री राम भक्त "हत्यारों का।
तुम लहू पियो मक्कारों का,
धर्म शत्रु सरकारों का।।

मिटाओ भारत से व्यभिचार,
तुमको करना है संहार।।

आया है यह शुभ अवसर,
जन्मभूमि पर मरना शंकर।
खून से रंग दो अपना खंजर,
बेहतर हो अथवा अकबर।।

तुम हो राणा की तलवार,
तुमको करना है संहार।।

मेरठ में पुनः साम्प्रदायिक दंगा भड़का

—इन्द्रराज, प्रधान
आ० प्र० नि० सभा, उ० प्र०

1 नवम्बर 90 को गोविन्दपुरी-मोदीनगर (गाजियाबाद) स्व0 निर्मला मेहता जी के शान्तियज्ञ में आर्यसमाज मोदीनगर पहुँचा। वहा 31-10-90 को पूरे मोदीनगर में कर्फ्यू लग चुका था। कर्फ्यू में ही हम पहुँचे थे। श्री आश्चर्य लाल बजाज पैट्रोल पम्प वालों से मिला। मिल्ट्री की गाड़ियां फ्लैग मार्च कर रही थीं। वहां से लौटने पर पता चला कि ब्रह्मपुरी थाने पर बुलाया गया है। मैं तथा श्री सतीश शर्मा थाने पर पहुँचे। बहुत लोग वहां एकत्र थे। सद्भावना फैलाने का ही प्रशासन का प्रयास था। वहां मैं ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था कि हमें अपने नगर को स्वस्थ वातावरण देने के लिए परस्पर मिल कर रहना चाहिए ताकि हम अपने नगर को शान्त रख सकें। उस बैठक से ही पता चला कि नगर का वातावरण ठीक नहीं है और प्रशासन उससे बहुत परेशान है।

राम मन्दिर-बाबरी मस्जिद में कारसेवकों की बड़े जोशों खरोश से विदाई, मोदीनगर, हापुड़, मुजफ्फरनगर, किठौर में कर्फ्यू का लगना। एक प्रकार से नगर का चारों तरफ से सील होना। तथा 30/10/90 को कारसेवकों का राममन्दिर-बाबरी मस्जिद में बहादुरी और निर्भयतापूर्वक प्रवेश का समाचार मिलने पर नगर में बहुत अधिक मात्रा में पटाखेबाजी का होना तथा बिजनौर में बड़े पैमाने पर हिंसा का होना। ये सब कारण बने यहां के वातावरण को बिगाड़ने के।

दिनाक- 2 नवम्बर 90 को सर्राफा बाजार में एक स्वर्णकार के रिक्शा पर जाते समय एक दंगाई द्वारा उसके पेट में छुरा मारने से दंगा भड़क उठा। एक साथ सर्राफा बाजार घंटाघर, कोटला जली कोठी में डफरिन हस्पताल पर आक्रमण, छतरी वाले पीर पर हिंसा लाला के बाजार में दो समूहों का आमने-सामने खड़े हो कर नारे बाजी, गदरोड, गोला कुआं, ब्रह्मपुरी, खत्तारोड एवं बागपत रोड पर एक घंटे के भीतर ही छुरेबाजी की कई घटनाएं हो गईं। जिसमें लगभग 12 व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी। स्थिति को नियन्त्रण करने के लिये प्रशासन ने तुरन्त देहली गेट, कोतवाली, निसाड़ी गेट, सिविल लाइन से थाना क्षेत्र के हाशिमपुरा सुभाषनगर और जी0टी0रोड पर अनिश्चित कालीन कर्फ्यू लगा दिया। श्री एस0एस0पी0-बाबूलाल यादव जी ने प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि कोटला और वैलीबाजार में तुरन्त तलाशी लेने पर घरों से तेज धार वाले हथियार बरामद हुए तथा 25 व्यक्तियों को तुरन्त गिरफ्तार भी कर लिया गया। पी0एल0-शर्मा हस्पताल के निकट अहमदरोड पर एक साथ पाँच वारदातें हो गईं। वे पाँचों लोग तत्काल मर गए। दो ने प्यारे लाल शर्मा हस्पताल में तथा तीन ने मेडिकल कालेज में दम तोड़ा। रात्रि को खत्ता रोड आदि क्षेत्र में नारेबाजी एवं गोली चलने और विस्फोटों की आवाजें आती रहीं।

यह भी उल्लेखनीय है कि 1 नवम्बर 90 की रात्रि को महानगर के पश्चिमी भाग में विस्फोटों और गोलीचलने की आवाज आती रही तथा दिन में जली कोठी न्यादर-अलीबिल्डिंग की तरफ दो सम्प्रदायों ने आमने-सामने खड़े होकर नारेबाजी और पत्थर बाजी भी की।

इस बार मेरठ बहुत ठीक चल रहा था। परन्तु एकदम माहौल के बिगड़ने पर तथा एक साथ लूटपाट और हिंसा की घटनाओं के देखते हुए सेना को एवं अर्द्धबलों को देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिये गये। अपने मुहल्ला गौरी पुरा में आज दिनांक- 3·11·90 दोपहर-3 बजे पुलिस को हरिजन लड़कों द्वारा परेशान करने पर अपने ही घर के पास आकर रबड़ की गोली चलानी पड़ी। लड़के भाग गए। वस्तुओं का अभाव अपनी गोशाला के रसद में कमी के कारण चिन्ता बनी रही।

3·11·90 की रात्रि को मुहल्ला में सख्त पहरा दिया गया क्योंकि यह अफवाह गलत फैल गई कि सम्भवतः मुसलमानों के साथ हरिजन भाई भी मुहल्ले पर आक्रमण कर सकते हैं परन्तु यह अफवाह गलत थी। केवल सन्देहों पर आधारित थी परन्तु पहरा दिया गया। मुहल्ले की सुरक्षा पूरी थी।

दिनांक- 3·11·90 को भी कर्फ्यू में ढील नहीं दी गई। क्योंकि मेरठ परिक्षेत्र में गड़बड़ जारी रही। कंकरखेड़ा क्षेत्र में आज राज गोविन्दपुरी में एक व्यक्ति की धारदार हथियारों से हत्या कर दी गई। उसके सिर में वार किया गया था। उसे पहचाना नही जा सका।

सोतीगंज चोपले में एक रेडीमेड गार्मेन्ट्स की दुकान में उग्रवादियों ने जाली तोड़कर आग लगा दी। धुआं निकलता देख लोगों ने फायरब्रिगेड को सूचना दी तथा शटर तोड़कर आग बुझायी गई। पर्याप्त सामान जल गया था।

टी0पी0 नगर में शरारती तत्वों ने एक खोखे को आग लगा दी।

गदु रोड पर आज प्रातः बस अड्डे के सामने एक वर्कशाप को आग लगा दी गई। जिसमें एक एम्बेसडर कार पूरी तरह से जल गई। अग्निशमनदल जब आग बुझाने पहुँचा उस पर पथराव किया गया। तत्पश्चात पुलिस ने वहाँ पहुँच कर रबर की गोलियाँ चलाकर दंगाईयों को तितर-बितर किया।

मैडिकल कालेज में आज दो और व्यक्तियों के मर जाने के कारण तथा दो और शव मिलने के कारण मरने वालों की संख्या 19 हो गई। जबकि अधिकारी 13 की संख्या बताते हैं। मरने वालों में से 5 का अन्त्येष्टि संस्कार सूर्य कुण्ड पर पुलिस की निगरानी में किया गया।

एस0के0 रोड पर एक खेल की दुकान को आग लगाने पर फायरब्रिगेड के समय पर पहुँच जाने के कारण नुकसान होने से बचा लिया गया।

एक स्थल पर पुलिस दल भी उपद्रवियों द्वारा गोली चलाने पर एक सिपाही घायल हुआ।

बीती रात जैदी फार्म, शास्त्रीनगर पिलोखड़ी रोड और श्यामनगर में हिन्दु मुसलमानों में जम कर नारेबाजी के बीच ही एक छुरेबाजी की वारदात हुई जिसका शव शास्त्रीनगर सेक्टर·8 में स्थित कब्रस्तान में मिला। जो पहचाना नही गया। पुलिस ने मौके पर पहुँच कर वहाँ से दोनों पक्षों को फायरिंग कर खदेड़ दिया।

कोटला क्षेत्र में रिसर्च में घर-घर तलाशी लेने पर जहाँ हथियार मिले वहाँ पर एक शव भी मिला जिसकी अधिकारिक रूप से पुष्टि नहीं की गई।

ब्रह्मपुरी थाने के अन्तर्गत ईश्वर पुरी में कुछ लोग एक युवक पर कातलाना हमला कर रहे थे। उसको बचाने के लिए श्री सुरेश घटनास्थल की ओर भागा अन्य पुलिस कर्मी उसके पीछे भागे। युवक बच गया तथा पुलिस ने मारने वालों की गिरफ्तारियां कीं। उस व्यक्ति को छुड़ाने के लिये मुहल्ले वालों ने पुलिस पर पथराव किया तथा गोलियां चलाई जवाब में पुलिस ने भी गोलियां चलाईं। इस गोलीबारी में एक गोली पुलिस कर्मी सुरेश के हाथ में लगी। पुलिस के दो व्यक्तियों को पकड़ कर ले जाने के बाद महिलाओं ने थाना ब्रह्मपुरी पर प्रदर्शन किया। छोड़ देने के आश्वासन पर ही महिलाएं वापिस आईं।

रेलवे रोड क्षेत्र में भी एक युवक को गोली मार कर घायल कर दिया गया उसे पी0एल0 शर्मा हस्पताल में भर्ती कराया गया।

नौचन्दी क्षेत्र में उपद्रवियों ने एक कबाडी की जीप को आग लगा दी। पुलस ने राइट गन फायर ब्रिगेड करके उन उपद्रवियों को वहा से भगा दिया।

कोतवाली के पीछे पहले तो पची बाड़ा में भी सायकाल एक मकान को आग लगाई गई। फायर ब्रिगेड ने आग बुझाई परन्तु उसके आने से पहले बहुत नुकसान हो चुका था।

रात्रि को ट्रांसपोर्ट थाना के अन्तर्गत क्षेत्र में अजन्ता पेट्रोल पम्प के निकट एक दुकान में आग लगा दी गई।

पिछले 48 घंटों में प्रशासन द्वारा 159 लोगों को गिरफ्तार किया गया जिनमें 78 केवल कोटला के ही थे।

कोटला में घर घर तलाशी लेने पर गन और धारदार हथियार

— शेष पृष्ठ ८ पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवा

—डॉ० धर्मपाल
वरिष्ठ प्राध्यापक,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम केवल भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु देश-देशान्तर में व्याप्त है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में उन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों के साथ-साथ राष्ट्रीय जागरण की शंखध्वनि की थी। उन्होंने अपने युग की धारा को अच्छी तरह पहचाना था। वे जानते थे कि किसी भी देश की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रभाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। लार्ड मैकाले का दु स्वप्न भारतवर्ष में पूर्ण हुआ। अंग्रेजी के पठन-पाठन से शिक्षित भारतवासियों में एक बड़ी संख्या वेशभूषा और भाषा प्रयोग मे अंग्रेज बन गई। इसमें सन्देह नहीं कि यदि स्वामी दयानन्द जैसा क्रान्तिकारी और मेधावी पुरुष सामाजिक और धार्मिक अन्धविश्वास में सुधार और समस्त देश में एक राष्ट्रभाषा के प्रचलन का आन्दोलन न करता तो देश की राष्ट्रीय जागृति न जाने कितना पिछड़ गयी होती। वास्तव में राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्थान में स्वामी दयानन्द का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी भाषा और साहित्य के उन्नयन के लिए महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने अथक परिश्रम एव लगन और निष्ठा से कार्य किया है। इस लेख में केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती के ही साहित्य और उनकी हिन्दी भाषा के प्रति व्यग्रता का विवरण दिया जा रहा है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित साहित्य सुविशाल एवं महत्वपूर्ण है। संस्कृत तथा हिन्दी {जिसे वे आर्य भाषा कहते थे} दोनों भाषाओं को ही उन्होंने अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। जिन ग्रन्थों को संस्कृत में लिखा गया उनमें निहित विचारों को भी अधिकाधिक पाठकों तक पहुँचाने की दृष्टि से उनका हिन्दी भाषा में अनुवाद कराने की भी उन्होंने व्यवस्था की। उनका संस्कृत भाषा पर असाधारण अधिकार था। संस्कृत में वे धारा प्रवाह बोलते और लिखते थे, परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि स्वामी जी की वे रचनाएं जो मूलत हिन्दी में लिखी गई, उनमें किसी प्रकार की प्रभावोत्पादकता अथवा शैली की कोई कमी है। वास्तव में स्वामीजी का हिन्दी वाङ्गमय भी विषय प्रतिपादन तथा शैली की दृष्टि से उतना ही महत्वपूर्ण है जितने कि उनके संस्कृत ग्रन्थ।

अध्ययन-सौकर्य की दृष्टि से महर्षि दयानन्द के साहित्य को हम पाँच भागों में विभाजित कर सकते हैं-

1- बृहत् त्रयी- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका
सत्यार्थ प्रकाश
संस्कार विधि
2- ऋग्वेद तथा यजुर्वेद भाष्य
3- खण्डन मण्डन के ग्रन्थ-भागवत्-खण्डनम्, वेदविरुद्धमत खण्डन, शिक्षा पत्री ध्वान्त, निवारण, वेदान्ति- ध्वान्त निवारण, चतुर्वेदविषय सूची, पंच महायज्ञविधि, भ्रमोच्छेदन, शास्त्रार्थ ग्रंथ-काशी, हुगली, चांदपुर सत्यासत्य विवेक शास्त्रार्थ, बरेली के कुछ अन्य शास्त्रार्थ विवरण। 24-9-1877 को जालन्धर में मौलवी अहमद हसन से शास्त्रार्थ।
4- वेदांग प्रकाश तथा व्याकरण ग्रन्थ
5- स्फुट ग्रंथ

अन्य ग्रन्थ

वेदाङ्ग प्रकाश- संस्कृत व्याकरण का सरल, सुबोध, रीति से ज्ञान कराने की दृष्टि से स्वामी दयानन्द ने चौदह, भागों में "वेदाङ्ग प्रकाश" शीर्षक ग्रंथमाला का प्रकाशन किया। इनमें प्रथम चार स्वामी जी ने स्वयं लिखे और बाद में दस भाग पं० युधिष्ठिर मीमांसक के अनुसार उनके निर्देशन में लिखे गए। सहवर्ती पंडित थे- भीमसेन, ज्वालादत्त तथा दिनेशराम।

संस्कृत वाक्य प्रबोध

अष्टाध्यायी भाष्य, आर्याभिविनय- भक्ति प्रतिपादक ग्रन्थ, आर्योद्देश्यरत्नमाला व्यवहार भानु, गोकरुणानिधि, स्वामी- दयानन्द की आत्मकथा, उपदेश मंजरी ॥-

दयानन्द के आर्थिक दृष्टिकोण का प्रथम प्रकाशन और आर्य लेखक सम्मेलन

—वेदप्रिय शास्त्री
राजस्थान

अब तक प्राय संसार में महर्षि दयानन्द को एक समाज सुधारक धर्माचार्य के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है। स्यात् कोई जानता हो कि वे एक अच्छे अर्थशास्त्री भी थे। उन्हें इतना अवसर नहीं मिला कि वे अर्थ-व्यवस्था पर पृथक से कोई ग्रन्थ लिखते। फिर भी उन्होंने अपने ग्रन्थों में संक्षेप म समाज और राष्ट्र की समस्त ज्वलन्त समस्याओं के निराकरण प्रस्तुत किये हैं। इसी क्रम में "अर्थ" के विषय में उनके ग्रन्थों में बिखरे विचारों और अर्थ से सम्बन्धित सभी समस्याओं के निराकरणों को एकत्र कर उन्हें क्रमबद्ध कर पहली बार महर्षि दयानन्द का आर्थिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

यह अभूतपूर्व शोध कार्य किया है कोटा के डा0 रामकृष्ण आर्य ने जो कि श्रीराम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स, कोटा में कार्यरत एक श्रमिक हैं। डा0 आर्य ग्यारहवीं कक्षा पास श्रमिक थे परन्तु महर्षि दयानन्द पर अगाध श्रद्धा, उनके निष्ठावान, अनुयायी और आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता होने के कारण उन्होंने निरन्तर श्रम और अध्यवसाय से प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विषय में एम0ए0 किया और उसके पश्चात् आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध शोध विद्वान डा0 भवानीलाल भारतीय के निर्देशन में "महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में प्रतिपादित आर्थिक विचार धारा" शीर्षक यह शोध ग्रन्थ लिखकर पंजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ़ की दयानन्द शोध पीठ से हाल ही में पी-एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की है।

आर्य लेखक सम्मेलन की आवश्यकता

नि सन्देह महर्षि दयानन्द प्रतिपादित वैदिक विचारसरणी की सार्वभौमिकता, सार्वकालिकता और सार्वदेशिकता पर गर्व किया जा सकता है कि इसके पास भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की सामयिक समस्याओं के हल खोजने के सूत्र हैं।

महर्षि दयानन्द ने वेदज्ञान के ठोस सत्य पर आधारित वैदिक तर्क और आर्य युक्ति की ऐसी कुन्जी अपने अनुयायी शिष्यों-आर्य लेखकों को दे दी है कि जिसके द्वारा आने वाले युगों-युगों तक समस्याओं के हल खोजे जा सकेंगे। यही कारण था कि धर्मवीर लेखराम शहीद होते समय यही सन्देश दे गये थे कि शास्त्रार्थ और लेखन का काम बन्द नहीं होना चाहिए। पर इस विषयक आर्य लेखकों की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। महर्षि दयानन्द का दिया हुआ उनके पास सब कुछ है पर आर्य लेखक उस पर सुदृढ़ नहीं है अपितु इधर-उधर की विचारधाराओं में भटक रहे हैं। इसका एक मात्र कारण यह है कि आर्य लेखकों का ऐसा कोई राष्ट्रीय संगठन नहीं है जिसके साथ सब जुड़कर, मिलबैठ कर किसी विषय पर विचार विमर्श कर किसी निश्चित परिणाम पर पहुँच सकें।

देश में कम्युनिस्ट लेखकों का राष्ट्रीय ही नहीं विश्व स्तर का जनवादी लेखक संघ है। समाज वादी लेखकों का भी लेखक संघ है। उसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अथवा पुराण समर्थित धार्मिक मान्यताओं और विचारधाराओं को मानने वाले हिन्दू लेखकों का भी अखिल भारतीय संगठन है जिसे अब विश्व हिन्दू परिषद के साथ जोड़कर विश्व स्तर पर संगठित करने के प्रयास हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त सैकड़ों की संख्या में स्वतन्त्र लेखक संघ भी अस्तित्व में है। पर देश में आर्य लेखक का ऐसा कोई *संयुक्त* संगठन नहीं है जिसके साथ छोटे से छोटे आर्य लेखक से लगाकर आर्यशोध लेखक तक के सब लेखकों को जोड़ा जा सके। इसलिए आर्य लेखकों के संगठन की इस समय महति आवश्यकता है। □

★ आर्यसमाज श्रृंगारनगर लखनऊ का निर्वाचन

प्रधान - आचार्य वेदव्रत अवस्थी
मन्त्री - श्री रूपचन्द्र "दीपक"
कोषाध्यक्ष- श्री अशोक माहना ।

आरक्षण कहीं राष्ट्र को जातिगत वर्गीकरण को जन्म न दे ?"

- मनमोहन तिवारी, नई दिल्ली

विश्व कूटनीतिक राजनीति के प्रकान्ड योद्धा मिखाईल गोर्वाच्योव के बाद एशियाई कूटनीति राजनीति के साथ-साथ भारतीय कूटनीतिक राजनीति में श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को भारतीय जनता एक जबर्दस्त कूटनीतिक राजनीतिक मानने लगी है और हकीकत में यह कहीं हद तक सत्य भी है। लेकिन 7-अगस्त को वी0पी0 सिंह ने आरक्षण बाबत एलान किया उसके दूसरे दिन से इसको लेकर हो रही सुगबुगाहट लावा बनकर फैलने लगी। सरकार की पिछड़ों के लिए 27-फीसदी आरक्षण की योजना ने सवर्ण नव युवकों को गुस्से और कुंठा से भर दिया है।

मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू करने के लगभग राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के फैसले का किसी राजनीतिक दल ने संसद में भले ही विरोध न किया हो, लेकिन इस फैसले से सरकार के सहयोगी समर्थक दल बेहद ही नाराज हैं। उन्हें यह भी शिकायत है कि प्रधानमन्त्री ने उनसे इस मामले पर उनसे अन्य मामलों की तरह सलाह-मशविरा नहीं किया। आज सभी पार्टियों के साथ-साथ जनतादल के लगभग 80-सांसद जिनमें कई अनुसूचित जातियों के भी शामिल हैं, आर्थिक आधार पर आरक्षण की वकालत करते रहे हैं। यहाँ तक कि पूर्व उप-प्रधानमन्त्री चौधरी देवीलाल ने भी आरक्षण "आर्थिक आधार पर हो" की वकालत की है। मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू होने का राजनीतिक फायदा तो सीधे जनता दल को ही मिलेगा। पिछड़ी जातियाँ इस पार्टी के समक्ष पहले से ही थीं। वी0पी0 सिंह के इस फैसले से इन जातियों में पार्टी का आधार व्यापक और मजबूत होगा। इसके बावजूद पार्टी का एक बुद्धिजीवी वर्ग काफी चिंतित है। उसे लग रहा है कि आरक्षण विरोधी आन्दोलन जितना उग्र होगा, उसका फायदा कांग्रेस उठायेगी। सवर्ण बनाम पिछड़ों का संघर्ष जितना तेज होगा, उससे जनता दल को ही घाटा होगा। बुद्धिजीवियों का मानना है कि यों तो पिछड़ी जातियाँ कांग्रेस का वोट बैंक नहीं रही हैं, फिर भी वह इसका नाजायज फायदा उठाने से नहीं चूकेगी। डा0 राममनोहर लोहिया ने कांग्रेस के खिलाफ इनको गोलबन्द करने की शुरुआत की थी, पिछड़ों और सवर्णों का संघर्ष सवर्णों को कांग्रेस की ओर धकेलेगा। सवर्णों के दिमाग में यह बात पहले से ही है कि कांग्रेस पिछले चार-दशकों से रोके हुए थी। मण्डल आयोग की रपट तो 1980 में ही आ गई थी, परन्तु दस साल तक कांग्रेस ने इसे लागू नहीं किया। इस प्रस्ता से वी0पी0सिंह सत्ता के शिखर पर तो जा सकते हैं। लेकिन इसके दुष्परिणाम भी इन पिछड़ी जातियों को ही भुगतने पड़ेंगे। पार्टी की आपसी गुटबाजी और सरकार की डांवाडोल कुर्सी को इस आरक्षण ने न केवल थामा है बल्कि विरोधी आन्दोलन तो इस कुर्सी को और भी अधिक स्थिर बनाने में कारगर सिद्ध होंगे।

आरक्षण के साथ आर्थिक आधार को जोड़ देने की पुरजोर वकालत प्रायः सभी पार्टियों के सांसदों ने इसलिए की है कि इसका पूर्ण लाभ घूमफिर कर कुछ चन्द सम्पन्न लोगों को ही मिलता रहता है। जबकि गरीब पिछड़े वर्ग के लोग जिनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है ज्यों के त्यों ही रह जाते हैं और यही बादमें हो-हल्ला करते फिरते हैं। आरक्षण एक विशेषाधिकार है, जिसको प्रयोग करने का अधिकार एक परिवार को सिर्फ एक बार ही दिया जाना चाहिए यानि आरक्षण कोटे का लाभ प्राप्त करने वाले परिवार को पिछड़ा वर्ग से बाहर कर दिया जाना चाहिये, किन्तु जो वर्तमान में हो रहा है वह ठीक इसके विपरीत ही हो रहा है। एक ही परिवार के लोग बार-बार इसका लाभ बटोर कर एक दूसरे जरूरतमंद लोगों को आगे बढ़ने से रोक रहे हैं। प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा इस बात पर खेद प्रकट करना स्वाभाविक ही है कि इतने संवेदनशील मामले पर सरकार ने अपने मनमाने ढंग से अपना फैसला दिया और उस पर अपने समर्थक दलों से विचार-विमर्श तक करना उचित नहीं समझा।

सरकार को मण्डल आयोग की रिपोर्ट को क्रियान्वित करने से पूर्व इस प्रश्न पर व्यापक रूप में बहस करनी चाहिए कि पिछड़ी जाति वालों को सही मायनों में अब तक आरक्षण का लाभ क्यों नहीं मिला। सरकार को इनके कारणों की सतहों पर जाना चाहिए था इसके बाद ही किन्हीं ठोस उपायों/निर्णयों की घोषणा की जानी चाहिए थी, लेकिन सरकार ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। 40-वर्षों से आज तक आरक्षण को सभी दलों ने अपना राजनीतिक हथकंडा बनाकर रखा। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों को आरक्षण का खिलौना देकर बहलाया जाता रहा है और उसके वोट हथियाये जाते रहे हैं। आरक्षण के नाम पर सुविधाओं और लाभ कोई और उठाते रहे हैं। इस बात की सरकार के पास क्या गारंटी है कि आगे भी भविष्य में यही लोग लाभ नहीं उठा पायेंगे। किन्तु जब यह कहा जाता है कि आरक्षण का लाभ उन लोगों को नहीं मिला जिन्हें हकीकत में मिलना चाहिए था तो प्रश्न उठता है कि क्या सरकार यह जानने का प्रयत्न करेगी कि यह लाभ किन लोगों को मिला? या मिल रहा है? और जिन लोगों ने दूसरों का जायज हक छीनकर यह लाभ उठाया है या भविष्य में उठायेंगे, तो क्या सरकार उन्हें कोई दण्ड देगी?

डाक्टर राममनोहर लोहिया भी कहा करते थे- "गरीबी कोई बाँटने की चीज नहीं है" लेकिन हमारे नेताओं ने और खासतौर से कांग्रेसाध्यक्ष श्री-राजीव गाँधी तो गरीबी बाँटने की कला में निपुण हो चुके हैं। आजादी के चालीस वर्षों बाद यह याद आ रहा है कि बीच की जातियों को भी आरक्षण की सुविधा मिलनी ही चाहिए। मण्डल आयोग की रिपोर्ट 1990 में आने के बाद उस वक्त चौधरी चरण सिंह प्रधानमन्त्री थे, उनके शासनकाल के दौरान भी मण्डल आयोग की रिपोर्ट ठंडे बस्ते में पड़ी रही थी। आज देवीलाल आरक्षण के वर्तमान रवैये के विरोध में हैं तथा वे तो पहले से भी इस रवैये का विरोध करते रहे हैं वे आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग करते रहे हैं। टिकैत आरक्षण के पक्ष में जाने को तैयार हैं ही नहीं, भाजपाध्यक्ष श्री-लालकृष्ण आडवाणी भी आर्थिक आधार पर आरक्षण की वकालत कर चुके हैं इनकी बात का समर्थन जनता दल के वरिष्ठ नेता श्री चन्द्रशेखर भी कर चुके हैं।

देखा जाय तो आरक्षण नीति में बहुत सी ईमानदारी भी थी, लेकिन इसके क्रियान्वयन में खोट है। ये ठीक है कि बराबर का मौका देने से बराबरी नहीं आती है किन्तु कमजोर तथा पिछड़े वर्ग को मजबूत बनाकर समकक्ष लाया जा सकता है। * आरक्षण की नीति का विरोध आज से नहीं है। संविधान सभा में जब अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने का मामला उठा था तो सरदार वल्लभभाई पटेल ने इसका जबर्दस्त विरोध किया और कहा कि "ऊँचे दर्जे की नौकरियों के लिए आरक्षण करने से प्रशासन का स्तर गिरेगा" और यही बात आज लागू हो रही है। जिधर वी0पी0 सिंह विभिन्न जातियों, समुदायों और वर्गों के बीच में समानता तथा भाई चारे की बात कहते हैं, उधर आरक्षण के मामले को लेकर इन सभी के बीच असमानता ही बढ़ रही है।

जहाँ तक आज हरिजन तथा आदिवासियों का संबंध है, उनके वोट बटोरने के लिए राजा साहब पूर्व में ही कई कदम उठा चुके हैं। इन सभी वर्गों के लिए आरक्षण की अवधि 10- वर्ष तक और बढ़ाई जा चुकी है, डाक्टर भीमराव अम्बेडकर का तैल-चित्र संसद के केन्द्रीय कक्ष में लगाया ही जा चुका है, उनकी स्मृति में डाक टिकट भी जारी हो चुकी है, और उन्हें "भारत-रत्न" की उपाधि से भी सम्मानित किया जा चुका है, उनकी जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश की घोषणा भी हो चुकी है, सरकारी नौकरियों में खाली पड़े 40- हजार पदों को भरने के लिए हरिजनों और कई पिछड़े वर्गों की भर्ती का अभियान भी शुरू हो चुका है, नव बौद्धों को आरक्षण में भागीदार बनाया ही जा रहा है, ईसाईयों को भी आरक्षण की सुविधा देने की तैयारियाँ हैं फिर यह आरक्षण-आरक्षण-आरक्षण का बोलबाला और क्यों? □

हिन्दू संगठनः राष्ट्रीय आवश्यकता है

-अमनदास अग्रवाल

आज देश के सभी लोग इस बात से सहमत हैं कि देश की स्वाधीनता, एकता और अखण्डता सर्वोपरि है और उसे हर कीमत पर बनाए रखना है। साथ ही राष्ट्रीय आदर्शो लोकतन्त्र, समता (समाजवाद), पंथनिरपेक्षता या असाम्प्रदायिकता (सेक्यूलरिज्म) को भी अक्षुण्ण रखना है। हिन्दू समाज जब तक बहुसंख्यक, संगठित और शक्तिशाली रहेगा, तभी तक देश की स्वाधीनता, एकता और अखण्डता भी बनी रहेगी और तभी तक लोकतन्त्र समता और पंथनिरपेक्षता भी रहेगी। जिस दिन हिन्दू समाज अल्पसंख्यक और कमजोर हो जाएगा, उस दिन इस देश की स्वाधीनता और अखण्डता ही नहीं समाप्त हो जाएगी, लोकतन्त्र समता और पंथनिरपेक्षता भी समाप्त हो जाएगी और उसके साथ हिन्दू संस्कृति और सभ्यता भी नष्ट हो जाएगी, जैसा कि पाकिस्तान और बंगलादेश में हुआ और अब कश्मीर, मिजोरम, नागालैण्ड, मेघालय आदि में हो रहा है, जहां धर्मान्तरण के कारण हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए हैं।

आज राजनेताओं द्वारा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की बातें तो बहुत की जाती हैं, लेकिन यह कैसे प्राप्त होगी, उन्हें समझ में नहीं आता और वे अनाप-शनाप बातें बोल कर जनता को भ्रमित करते हैं। राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य है, मुख्य रूप से हिन्दू समाज में एकता जो देश की कुल जनसंख्या का 86 प्रतिशत है। हिन्दू समाज ही भारत का मूल समाज है, राष्ट्रीय समाज है। साढ़े ग्यारह प्रतिशत मुस्लिम तथा ढाई प्रतिशत ईसाई हिन्दू समाज से ही निकले हैं, बाहर से नहीं आए हैं। हिन्दू समाज में एकता होगी, संगठन होगा तो यह 14 प्रतिशत मुस्लिम एवं ईसाई समाज भी हिन्दू समाज के निकट आकर राष्ट्रधारा में मिलेगा। गांधी जी ने "यंगइण्डिया" (पत्रिका) में 29 मई, 1924 को लिखा था-- "यदि हिन्दू अपने घरको व्यवस्थित कर लें तो मुझे जरा भी संदेह नहीं कि तब इस्लाम भी उदारता पूर्वक प्रतिक्रिया करेगा।"

लेकिन इन राजनेताओं को हिन्दू समाज की एकता और संगठन का कार्य साम्प्रदायिक दीखता है। बात यह है कि ये राजनेतागण सत्ता में बने रहने के लिए जाति और पंथ (मजहब) यानि साम्प्रदायिक राजनीति करने में इतने डूब चुके हैं कि उनकी राष्ट्रीय दृष्टि से चिन्तन करने की क्षमता ही समाप्त हो गई है और उन्हें हर जगह साम्प्रदायिकता ही नजर आती है।

अतः हिन्दू समाज में एकता लाना, उन्हें संगठित करना राष्ट्रीय आवश्यकता है। 70 करोड़ के विराट हिन्दू समाज में जाति, पंथ और भाषा की बहुत विविधता है, विशाल क्षेत्र में फैले होने के कारण उनमें रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, आचार-विचार, रीति-रिवाज आदि की भी विभिन्नताएं हैं। इन विविधताओं और भिन्नताओं से युक्त समाज का एक सूत्र में ग्रथित कर एकात्म और संगठित करना एक दुष्कर किन्तु महान राष्ट्रीय कार्य है। यदि ऐसा न किया गया तो सारा देश बिखर जाएगा, टूट जाएगा। हिन्दुत्व का सूत्र ही इन सबको हजारों वर्षों से जोड़े हुए है और आज भी जोड़े रखने में सक्षम है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद आदि संगठन हिन्दू समाज को इसी सूत्र के द्वारा जोड़े रखकर संगठित करने के महान कार्य में लगे हैं, लेकिन साम्प्रदायिक रंग में रंगे इन राजनेताओं को उनका कार्य भी साम्प्रदायिक ही दीखता है। वास्तव में हिन्दुत्व का सूत्र ही सबको जोड़ हुए है। हिन्दुत्व ही इस देश की आत्मा है, रीढ़ है, प्रकृति है। देश के जिस क्षेत्र में हिन्दुत्व का यह सूत्र कमजोर हुआ, उस क्षेत्र में हिन्दू अल्प संख्यक हुए और उनके अल्पसंख्यक होने से देश का वह भाग देश से अलग हो गया, टूट गया, बिछुड़ गया। अफगानिस्तान (गांधार प्रदेश), पाकिस्तान, बंगलादेश आदि इसके उदाहरण हैं। आज कश्मीर, मिजोरम, नागालैण्ड, मेघालय आदि प्रदेशों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए हैं, जिसके फलस्वरूप इन प्रदेशों में भी पृथकता की प्रवृत्ति पनप रही है और वहाँ स्वतन्त्र इस्लामी तथा ईसाई राज्य बनाकर भारत से अलग करने का षड्यन्त्र चल रहा है। हिन्दू क्यों अल्पसंख्यक हुए? सैकड़ों वर्षों से इस देश में हिन्दुओं का धर्मान्तरण किया जा रहा है। विदेशी मुस्लिम एवं अंग्रेज शासकों ने धर्मान्तरण को प्रोत्साहित किया और संरक्षण दिया और आज स्वतन्त्र भारत की सरकार भी वैसा ही कर रही है। आज भारत में प्रति वर्ष अरबों रुपया मुस्लिम एवं ईसाई देशों से हिन्दुओं को ईसाई और मुसलमान बनाने के लिए आ रहा है, लेकिन सरकार उसे रोकती नहीं है। विगत 15 वर्षों में, बंगलादेश और पाकिस्तान से कई करोड़ मुस्लिम घुसपैठिए भी भारत में आकर अवैधरूप से बस गए हैं तथा बसते जा रहे हैं। इसका भी उद्देश्य भारत में हिन्दू समाज को अल्पसंख्यक तथा मुस्लिम समाज को बहुसंख्यक बनाना ही है। प्रसिद्ध पत्रकार (अब लन्दन में भारत के उच्चायुक्त) कुलदीप नैयर ने 1982 में "डेली" नामक अंग्रेजी पत्र में लिखा था कि सउदी अरेबिया की तीन संस्थाओं ने लन्दन में एकत्र होकर घोषणा किया था कि हम भारत को मुस्लिम बहुल देश (दारुल इस्लाम) बनाना चाहते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई संगठनों की भी योजना है कि भारत के उत्तरपूर्व में अरुणांचल प्रदेश से लेकर आसाम, मिजोरम, नागालैण्ड, मेघालय, बंगाल, उड़ीसा, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र होते गुजरात तक भारत के 30 प्रतिशत भूभाग को ईसाई बहुल बनाकर स्वतन्त्र ईसाईस्तान बनाया जाए। धर्मान्तरण की इन दूरगामी योजनाओं के फलस्वरूप न केवल हिन्दू समाज, हिन्दू धर्म संस्कृति समाप्त हो जाएगी बल्कि भारत की अखण्डता भी समाप्त हो जाएगी। फिर भारत नहीं रहेगा। अतः देश की अखण्डता के लिए देश के हर प्रदेश में हिन्दुओं का बहु-संख्यक होना राष्ट्रीय आवश्यकता है। इसके लिए हिन्दुओं के धर्मान्तरण पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए तथा मुस्लिम घुसपैठियों का निकाल बाहर करना चाहिए।

86 प्रतिशत हिन्दू समाज के संगठित होने से राष्ट्र शक्तिशाली होगा, अजेय होगा तथा देश की अखण्डता बनी रहेगी। शेष 14 प्रतिशत मुस्लिम एवं ईसाइयों को देश को खण्डित करने का साहस नहीं होगा। यदि वे ऐसा करेंगे तो सफल नहीं होंगे। हिन्दू समाज के संगठित होने से हिन्दुओं की चेतना जागेगी, उनका स्वाभिमान जागेगा, उनकी अस्मिता जागेगी, उनके हिन्दू संस्कार जागेंगे और तब सर्वत्र सब क्षेत्रों में- राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक- स्वच्छ, सदाचारी, परस्परानुकूल एवं परस्परपूरक व्यवस्था स्थापित होगी और देश परम वैभव की ओर अग्रसर होगा। भारत अपनी प्राचीन संस्कृति तथा आधुनिकता को मिलाकर हर क्षेत्र में प्रगति करेगा और भारतीय जनता का जीवन समृद्ध और सुख-शान्तिमय होगा।

हिन्दू समाज सदा से असाम्प्रदायिक, सहिष्णु और उदार रहा है और सभी पंथों एवं मतों के लोगों को आदर समानता, सुरक्षा एवं न्याय प्रदान करने वाला रहा है। अतः हिन्दू समाज के संगठित और शक्तिशाली होने से अन्य सम्प्रदायों के लोग भी समृद्ध होंगे और सुख शान्ति प्राप्त करेंगे। हिन्दू संगठन की आवश्यकता पर बल देते हुए डा0 राम-मनोहर लोहिया ने 1966 में वीर-सावरकर की मृत्यु पर दिल्ली में आयोजित शोक सभा में कहा था- "मुझे वीर सावरकर के एक आदर्श के प्रति सबसे अधिक श्रद्धा है, जिसकी प्राप्ति सबसे पहले की जानी चाहिए और वह है हिन्दू संगठन। मेरा विचार है कि इस देश के हिन्दुओं को सर्वाधिक शक्तिशाली होने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा मैं मुस्लिमों के हितों के दृष्टिकोण से भी कह रहा हूँ। हमारे देश के लिए यह अत्यावश्यक है कि हिन्दू अजेय हो।" श्री चरण सिंह (पूर्व प्रधानमन्त्री) ने 2 मई, 1984 को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक जन सभा में भाषण करते हुए कहा था-"जब जब हिन्दुत्व का ह्रास हुआ है, तब तब भारत की स्वाधीनता और गौरव नष्ट हुआ है। इसलिए भारत की सभी बुराइयों का एक मात्र इलाज है संगठित और सशक्त हिन्दू समाज। इस तरह के समाज से अन्य समुदायों को किसी प्रकार का खतरा नहीं है।"

— शेष पृष्ठ ८ पर

सीमा पर जाने वाले कश्मीरी युवकों द्वारा पाक का भांडा फूटा

जो कश्मीरी युवक पाकिस्तान में हथियारों की ट्रेनिंग लेने के लिए गए थे उन्हें वहां के ट्रेनिंग कैम्पों में जिस प्रकार की असहनीय यातनाएं दी गई और जो अमानवीय व्यवहार उनके साथ किया गया उसकी कहानियां निश्चित ही रौंगटे खड़े कर देने वाली हैं।

पिछले दिनों ऐसे तीन युवक जो पांच महीने पहले पाकिस्तानी कैम्पों में ट्रेनिंग लेने के लिए गए थे, वापस लौटते हुए गिरफ्तार किए गए। उनका कहना है कि जब वे पाकिस्तान में घटिया खाना सप्लाई किए जाने की शिकायत करते थे तो उन्हें लाठियों से पीटा जाता था।

जिला कुपवाड़ा के गांव लोलाब के एक गुज्जर लड़के, मोहम्मद खुर्शीद तांतरी का कहना है कि जब पाक-अधिकृत कश्मीर के कैम्पों में लगभग 300 युवकों ने खाने के लिए चावल मांगे तो उन्हें बुरी तरह से पीटा गया। उसने बताया कि हम लोगों को वहां बड़ी घृणा के साथ देखा जाता था, हमारे पठान प्रशिक्षक हम पर बड़े गन्दे-गन्दे फिकरे कसते थे और कहा करते थे कि हम {पठान} कश्मीर को आजाद कराएंगे और कश्मीरी औरतों से शादियां करेंगे।

पत्रकारों का एक दल जब इन पकड़े गए युवकों से जेल में मिलने के लिए गया तो इन लोगों ने बताया कि कुछ उग्रवादियों ने हमें जबरदस्ती सीमा पार करके पाक अधिकृत कश्मीर में ट्रेनिंग लेने के लिए भेजा। इनमें से एक मोहम्मद खुर्शीद तांतरी का कहना था कि हमें धमकी दी गई कि अगर हमने उन्हें {उग्रवादियों-को} उनका मिशन पूरा करने में सहायता नही दी तो हमें जान से मार दिया जाएगा। तांतरी को, जो पेशे से एक मजदूर है, उग्रवादियों के एक टोले ने उसके घर से ही उठा लिया था।

तांतरी ने पत्रकारों को यह भी बताया कि शुरू-शुरू में उसने पाकिस्तान जाने से इंकार किया था लेकिन उग्रवादियों के एक टोले के नेता ने उसे धमकी दी कि "तुम गुज्जर लोग हमारी मदद नहीं कर रहे हो और तुम सरकार के एजेंट हो- अत. मजबूर होकर उसे उग्रवादियों की बात माननी पड़ी।

तांतरी ने पत्रकारों से यह भी कहा कि पिछले मार्च में पाक अधिकृत कश्मीर में जाने के लिए सीमा पार करने से पहले उसे और सात अन्य कश्मीरी युवकों को उग्रवादियों ने घाटी के विभिन्न मार्गों से उठाया था। उसका कहना है कि हमारे गाइडों ने हम से यह कहा था कि पाकिस्तान के ट्रेनिंग कैम्पों में प्रत्येक युवक को दस हजार रुपए दिए जाएंगे मगर जिन 45 दिनों में ये युवक ट्रेनिंग कैम्पों में रहे उन्हें सूखी दाल रोटी के अलावा और कुछ भी नहीं मिला। दस दिन एक कैम्प में रखने के बाद उन्हें दूसरे कैम्प में ले जाया गया, जहां उन्हें हथगोलों और क्लाशिनकोव राइफलों के इस्तेमाल की ट्रेनिंग दी गई।

तांतरी ने यह भी आरोप लगाया है कि पाकिस्तान में पठान कश्मीरी युवकों को अपनी काम वासना की तृप्ति के लिए भी इस्तेमाल करते थे। जब उससे पूछा गया कि तुम्हें वहां से रुपया कितना मिला तो उसका जवाब था, "तमाम वायदे झूठे और खोखले थे"।

बारामूला जिले में सोपोर के युवक 'इरशाद अहमद मीर का कहना था कि उसे जबरदस्ती ट्रक में डालकर सीमावर्ती जिले कुपवाड़ा में ले जाया गया, जहां उसे कुछ बन्दूकधारियों के हवाले कर दिया गया। उसने बताया कि उसे यह धमकी दी गई कि अगर वह हथियारों की ट्रेनिंग लेने के लिए पाकिस्तान नहीं जाएगा तो उसे गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

इन युवकों ने पत्रकारों को यह भी बताया कि पाकिस्तान से लौटते समय उन्हें एक-एक "बैक किट" दिया गया, जिसमें एक-एक क्लाशिनकोव, एक-एक पिस्तौल और कुछ गोलाबारूद था। इन युवकों को ट्रेनिंग देने वाले व्यक्ति ने यह हिदायत दी थी कि वे ये किट कश्मीर में एक गाइड के पास जमा करा दें मगर जब ये कुपवाड़ा जिले में घुसने की कोशिश कर रहे थे तभी वास्तविक नियन्त्रण रेखा के नजदीक सेना ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों दूरदर्शन से भी पकड़े गए युवकों के इंटरव्यू प्रसारित किए गए थे, और उस समय भी उन्होंने यही बताया था कि उन्हें खत्म कर डालने की धमकी देकर जबरदस्ती हथियारों की ट्रेनिंग लेने के लिए पाकिस्तान भेजा गया, जहां उन्हें तरह-तरह की यातनाएं झेलनी पड़ीं और अंतत वापस लौटते हुए गिरफ्तार कर लिए गए। इन युवकों का यह भी कहना था कि वे आतंकवादी गतिविधियों से मुक्ति पाकर अच्छे नागरिकों जैसा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं।

इस सन्दर्भ में यह लिखना भी असंगत नहीं होगा कि इससे पहले भी समय-समय पर पकड़े गए युवक इसी प्रकार के रहस्योद्घाटन करते रहे हैं और इन सब बातों के बाद यह बात एक साधारण बुद्धि का व्यक्ति भी बड़ी आसानी से समझ सकता है कि यह सारा खेल पाकिस्तान की शह, सहायता, सहयोग, समर्थन और संरक्षण के बल पर ही खेला जा रहा है और कठपुतलियों का यह खेल तभी खत्म हो सकता है, जब इनके तार हिलाने वाले हाथ सख्ती के साथ रोके जाएं और सीमा पार करने के सभी रास्ते पक्के तौर पर सील किए जाएं।

गत दिनों प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने कहा था कि अगर पंजाब और कश्मीर के नौजवान हथियार डाल दें तो सरकार उनसे बातचीत के लिए तैयार है, मगर हमारी राय में इस गलतफहमी में उन्हें हरगिज नहीं रहना चाहिए कि ये लोग आसानी से हथियार डाल देंगे क्योंकि एक बार जब हथियारों के बल पर मनचाही करवाने का खून किसी के मुंह को लग जाए तो वह आसानी से छूटा नहीं करता। अत जरूरत इस बात की है कि देश को तोड़ने के लिए जो अघोषित और कम खर्चीली लड़ाई पाकिस्तान उग्रवादियों के माध्यम से लड़ रहा है उसे उसी ढंग से लड़ा और जीता जाना चाहिए जिस तरह देश के विरुद्ध किसी घोषित लड़ाई को लड़ा और जीता जाता है- यदि सीमित समय और सीमित कार्य के लिए सेना की सेवाएं भी लेनी पड़ें तो ली जानी चाहिएं।

इस लड़ाई को देश के विरुद्ध छेड़ी गई लड़ाई की तरह लड़ने में बरती गई ढील के कारण ही परिस्थितियां इतनी विस्फोटक हो गई हैं कि कश्मीर से जहां पहले अल्पसंख्यक हिन्दुओं का व्यापक स्तर पर पलायन हुआ वहां अब बहुसंख्यक मुसलमान भी भारी संख्या में घाटी से भाग रहे हैं- अत अब अगर थोड़ी-सी भी लापरवाही और बरती गई तो स्थिति अनियंत्रित हो जाएगी और उसके विनाशकारी परिणाम एक लम्बे अर्से तक इस देश को भुगतने पड़ेंगे।

-पंजाब केसरी से साभार

उत्तम कुमार उपाध्याय पुरस्कृत



दयानन्द विद्यामन्दिर लखनऊ के कक्षा 8 के उदीयमान छात्र उत्तम-कुमार उपाध्याय ने दिनांक 2 अक्टूबर को 'गांधीजयन्ती" के अवसर पर गांधीभवन लखनऊ में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त फिलीटेलिक (Philatalic) द्वारा आयोजित "छठी उत्तर प्रदेश-डाक टिकट प्रदर्शनी"-1990 में भी भाग लिया तथा वहाँ पर उसे सम्मानित किया गया।

विद्यामन्दिर की प्रधानाचार्या, एवं प्रबन्धक महोदय ने अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए इस उदीयमान छात्र की उन्नति की प्रभु से कामना की है।

मत जनता को बहकाओ तुम

• पं० ब्रह्मलाल निर्भय
हरियाणा

अय कुर्सी के दीवानों
मत जनता को बहकाओ तुम।
मानव चोला है अनमोला
मत इसको व्यर्थ गंवाओ तुम।।

वे महर्षि दयानन्द योगी
मानवता के दीवाने।
वेदों के थे विद्वान महा वे
देशभक्त थे मर्दाने ।।
निर्भीक, सत्य-पथगामी थे,
ऋषि ईश भक्त थे मस्ताने।
वे राज-विधार्थी हिला गये,
गागर स्वतन्त्रता के गाने।।
यदि भला आप चाहो अपना,
ऋषि के सद्‌गुण अपनाओ तुम।
मानव चोला है अनमोला,
मत इसको व्यर्थ गंवाओ तुम।।।।।

इस दुनिया में पाखण्डवाद,
दिन रात रहा है बढ़ भारी।
अज्ञान अविधा की कीचड़,
में फँसे हुए हैं नर-नारी
ईश्वर को भूल बहुत ज्यादा है
दुःखी आज दुनियां सारी।
रावण के वंशज पनप गये
ना रहे राम से बलधारी।।
सत्ता के लालच में आकर
मत घातक कदम उठाओ तुम।
मानव चोला है अनमोला,
मत इसको व्यर्थ गंवाओ तुम।।2।।

इस भारत की भोली जनता ने
तुम पर था विश्वास किया।
तन-मन-धन से की मदद बड़ी,
सब तरह तुम्हारा साथ दिया।।
सम्मान दिया तुमको पूरा,
बदले में कुछ भी नहीं लिया।
तुम धोखा देते रहे हमें,
हमने है कड़वा घूंट पिया।।
विश्वासघात करना छोड़ो,
सच्चे मानव बन जाओ तुम।
मानव चोला है अनमोला,
मत इसको व्यर्थ गंवाओ तुम।।

अरब की खाड़ी और भारत

• लक्ष्मीनारायण शास्त्री
गोण्डा

अरब की खाड़ी में है अशान्ति ।
सैन्य दल वहां पड़ा है आज ।
बना डिक्टेटर है सद्दाम ।
कुवैत को हड़प लियों है आज।
बंध गई घिग्घी उसकी आज।
घेर ली उसको बुश ने आज।
भयंकर टैंक अस्त्र से आज,
जहाजी बेड़े से बुश आज ।
कुवैत में डेरा डाले आज,
कुचलने वहां बैठा ईराक ।
इधर भारत में देखो आज,
लड़ रहे हिन्दू-मुस्लिम आज।
सिक्ख भी मारे हिन्दू आज,
लड़ाते नेता सबको आज।
अहिंसा-त्याग नहीं है आज,
बने फिरते हैं नेता आज।।

नवीन आर्यसमाजों की स्थापना

1- ग्राम उदोतपुर (उन्नाव) में दि0- 2 से 4 दिसम्बर तक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई।

2- ग्राम रसूलपुर बकिया (उन्नाव) में दि0- 15 से 17दिसम्बर तक उत्सव सम्पन्न हुआ तथा 10 बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार भी सम्पन्न हुआ। नवीन समाज की स्थापना भी की गई जिसके निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए। प्रधान- श्री राजकुमारसिंह, मन्त्री श्री हरनामसिंह, कोषाध्यक्ष- श्री रामगुलाम सिंह।

पुरोहित की आवश्यकता है

आर्यसमाज, बड़ा बाजार, पानीपत, हरियाणा प्रान्त के पुराने समाज संगठनों में एक अग्रणी स्थान रखता है। इसके आर्यसमाज मन्दिर में, एक सुयोग्य, निपुण तथा विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है। दक्षिणा यथा-योग्य तथा यथोचित दी जायेगी। इच्छुक सज्जन अपने जीवन परिचय तथा प्रार्थना पत्र को डाक द्वारा भेज कर सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

- राममोहन राय, एडवोकेट,
मन्त्री, आर्यसमाज,बड़ाबाजार
पानीपत(हरियाणा)

पृष्ठ ३ का शेष....

बड़ी मात्रा में मिले। तत्पश्चात लाला के बाजार में भी घर घर तलाशी ली गई।

3·11·90 की रात्रि को महानगर के पश्चिम में ही लगभग 1·30 बजे रात्रि को एक विस्फोट हुआ। जिसके कारण दहशत फैल गयी। मुहल्ले में पहरा पूर्व की अपेक्षा से बहुत कमजोर रहा।

4-11-90 को दोपहर में ईश्वर पुरी एवं इसके सामने गौरीपुरा की घर घर तलाशी हुई। हमारे घरों की भी होनी थी मुहल्ले वाले घबराये हुए थे परन्तु मैं निश्चन्त था क्योंकि यहां कोई दुर्घटना नहीं हुई थी साथ ही हमारे घर में भी कुछ नहीं था इस कारण कोई चिन्ता नहीं थी। अनिश्चित कर्फ्यू निरन्तर जारी। समाचार पत्रों से पता चला कि गढरोड सम्राट होटल के पीछे नाले से 2-शव और मिले। अधिकृत तौर पर मरने वालों की संख्या -15 हो गई। वैसे 26 व्यक्ति मारे गये। सुना गया है कि नाले से 5 शव निकाले गये। कंकड़ खेड़ा में फाटक के पास 6 दुकानें जला दी गयीं। ये लकड़ी के खोखे थे।

सब्जी के =4, मॉस का=1, कुम्हार का=1, । कुम्हार का परिवार खोखे के पीछे घर में सोया हुआ था। चीख पुकार होने पर पुलिस द्वारा परिवार बचा लिया गया।

- जिला सभा उन्नाव के तत्वावधान में दि0- 14 से 16 दिसम्बर तक मेला तकिया में वैदिक धर्म का धूमधाम से प्रचार किया गया। जिससे जनता में जागृति उत्पन्न हुई।

आर्यसमाज और वेद के प्रचार के लिए वैदिक साहित्य जन-जन तक पहुँचाइये

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक कृतः-

(1) मुक्ति के अधिकारी	100/-रु0 सैकड़ा	
(2) एक ही रास्ता	100/-	"
(3) पत्ते पर तेरा निवास	100/-	"
(4) मृग तृष्णा	100/-	"
(5) आर्यों का आदि देश भारत	100/-	"
(6) वर्ण जन्म से नहीं अपितु गुण कर्म से	100/-	"
(7) आर्यसमाज तब,अब, और आगे	100/-	"
(8) मेरठ के साम्प्रदायिक दंगे-कारण और निदान	100/-	"
(9) मनुष्य बन	100/-	"
(10) माता-पिताओं से	200/-	"
(11) तीन प्रकार के बन्धन	200/-	"
(12) हवन यज्ञ और विज्ञान	200/-	"
(13) पथरीली नदी	200/-	"

(श्रीमती अर्चना गोयल कृत)

(14) ऋषि दयानन्द की मान्यताएँ	200/-	"
(श्री डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार कृत)	200/-	"
(15) सत्यार्थ प्रकाश सर्वांग पूर्ण धर्म-शास्त्र	200/-	"

कम से कम दो सौ रुपये की पुस्तकों पर 20 प्रतिशत और कम से कम तीन सौ रुपये की पुस्तकों पर 30 प्रतिशत की छूट ।

मँगाने का पता- वैदिक संस्थान,नजीबाबाद, जनपद-बिजनौर(उ0प्र0) - 246763

पृष्ठ ६ का शेष....

हिन्दू समाज का संगठित और शक्तिशाली होना न केवल राष्ट्रीय आवश्यकता है, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकता भी है। हिन्दू समाज के संगठित और शक्तिशाली होने के सनातन धर्म यानि हिन्दू धर्म (हिन्दुओं ने सनातन धर्म का अन्वेषण, निरूपण एवं अनुरक्षण किया, इसलिए इसे लोग हिन्दू धर्म भी कहते हैं) हिन्दू दर्शन, हिन्दू तत्वज्ञान एवं साधना पद्धति, हिन्दू जीवन मूल्य एवं हिन्दू जीवन पद्धति, जीवन दर्शन आदि की रक्षा एवं अभिवृद्धि होगी, जो विश्व की अमूल्य धरोहर है, जो विश्व का हजारों वर्षों से मार्गदर्शन करती आई है और जो आज भी भौतिकता से संत्रस्त विश्व को अहिंसा, प्रेम और शान्ति का संदेश दे रही है। दूसरे शब्दों में, हिन्दुत्व ही विश्व का मार्गदर्शन कर सकता है, क्योंकि इसके सिद्धान्त शाश्वत,सनातन और कल्याणकारी हैं। □

पिछड़ों को आरक्षण

सामाजिक न्याय की पूर्व पीठिका

— वीरेन्द्र

डा० लोहिया के चिन्तन से प्रेरणा लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव ने सामाजिक न्याय तथा आर्थिक विकास के लिए जो अनेक कदम उठाये हैं उनमें एक प्रमुख कदम है सरकारी सेवाओं में पिछड़ों को 27 प्रतिशत आरक्षण देने का फैसला। मण्डल आयोग की सिफारिशों को यथावत लागू करते हुए मुख्यमन्त्री श्री यादव ने यह भी कहा है कि शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा में भी आरक्षण व्यवस्था लागू करने का सकल्प है। इसके साथ ही प्रदेश सरकार का यह भी सकल्प है कि पर्वतीय क्षेत्र के लोगों तथा ऊँची जाति के निर्धन लोगों को भी आरक्षण सुविधा का लाभ दिया जाय। आरक्षण पिछले कुछ दिनों से बहस का मुद्दा बना हुआ है। इसलिए इसके बारे में एक तटस्थ विवेचन बहुत जरूरी है।

भारतीय समाज में सामाजिक न्याय एव बदलाव की कोई सार्थक पहल हमारी सरचना की जटिल बुनावट की अनदेखी नहीं कर सकती। संविधान के निर्माताओं ने भारतीय समाज की इस जटिल बनावट को पहचानते हुए ही संविधान की धारा 15 (संशोधित), धारा-16 की उपधारा (4) एवं धारा 340 के अन्तर्गत सामाजिक एव शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की आवश्यकता को महत्व दिया। भारतीय समाज की पड़ताल करते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पहले ही अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में लिखा था 'किसी भी समूह के पिछड़ेपन या अधोगति का कारण स्वत निर्मित न होकर सिद्धान्तत उचित अवसरों का अभाव तथा दूसरे समूहों द्वारा लम्बे समय तक शोषण होना है।------ इसलिए सभी को मान-सम्मान अवसर ही नहीं दिये जाने चाहिए बल्कि पिछड़े समूहों को शैक्षणिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास की विशेष सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे अपने से आगे बढ़े हुए लोगों की बराबरी कर सकें। डा० अम्बेडकर और डा० लोहिया की सामाजिक न्याय की अवधारणा का तो केन्द्र बिन्दु ही दलितों और पिछड़ों को विशेष अवसर प्रदान कर समतावादी समाज का निर्माण करना था।

समतामूलक समाज एव सामाजिक न्याय की इसी सकेच्छा का परिणाम है। मण्डल आयोग की सिफारिशें, जो नौकरियों तथा शिक्षण सस्थाओं में पिछड़े वर्गों के लिए सत्ताईस प्रतिशत आरक्षण की सस्तुति करती हैं। यह कुछ जातियों को मात्र नौकरियाँ देने का सवाल न होकर व्यापक सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में भारत की आधी से अधिक दलित पिछड़ी जनता की सम्यक भागीदारी का सवाल है। यह सयोग मात्र नहीं है कि जो जातियाँ मण्डल आयोग के दायरे में आती हैं उनमें नब्बे प्रतिशत से अधिक लोग आर्थिक रूप से भी पिछड़े हैं। मण्डल आयोग ने सामाजिक एव शैक्षणिक पिछड़ेपन के अलावा आर्थिक पिछड़ेपन को भी पिछड़ी जातियों के निर्धारण का आधार बनाया। आर्थिक पिछड़ेपन के मूल्याकन के लिए इन ... समूहों में शारीरिक श्रम पर निर्भरता, विवाह की आयु, काम में महिलाओं की साझेदारी, पाठशाला में बच्चों की उपस्थिति स्कूली स्तर से पढाई छोड़ने की दर, मैट्रिकुलेट शिक्षा प्राप्त लोगों की सख्या, पारिवारिक सम्पत्ति का मूल्य कच्चे मकानों में रिहाइश, पीने के पानी के निजी स्रोत या उनकी दूरी तथा कर्जे का उपभोग आदि सम्बन्धी तथ्यों को दृष्टिगत रखा गया। यदि शैक्षणिक, सामाजिक एव आर्थिक रूप से पिछड़े लोग नीची जातियों से भी सम्बन्धित हैं तो यह उनका दोष नहीं। यह परिणाम है सम्पन्न एव सुविधा प्राप्त उच्चवर्गों तथा जातियों द्वारा सदियों से उनके शोषण उत्पीड़न एव वंचित रखे जाने का। सच तो यह है कि इस पिछड़ेपन के मूल में उनका जाति विशेष से जुड़ा होना ही है। कारण यह कि समाज के सामन्तवादी दौर में जातिगत स्थिति पेशे एव सामाजिक हैसियत का भी निर्धारण करती थी। इसी के चलते दलित एव पिछड़ी जाति के लोगों को बेगार करने से लेकर अपने उत्पादन का बड़ा हिस्सा जमींदार एव सवर्ण भूस्वामियों को देना पड़ता था। जन्म से निर्धारित इस जातिगत स्थिति के परिणामस्वरूप इन जातियों के लोगों का शैक्षणिक एव सांस्कृतिक रूप से पिछड़ना स्वाभाविक ही था।

मण्डल आयोग के दायरे में शामिल अधिकांश पिछड़ी जातियों के नामों से उनके पेशे का भी बोध होता है उदाहरणस्वरूप ग्वाला बढ़ई लोहार, सुनार, ठठेर गड़रिया, तेली बारी, भड़भूजा हलवाई कहार केवट, मल्लाह, कुम्हार, मुराऊ, तमोली, नाऊ, नट आदि। मण्डल आयोग द्वारा निर्दिष्ट मुस्लिम पिछड़ी जातियों से भी उनके पेशे का बोध होता है- अन्सारी (जुलाहा) बाजीगर चिकवा डफली दर्जी रजक (धोबी) धुनिया फकीर गद्दी, कसाई कसगर, कुंजड़ा, मनिहार अन्सा बजारा, हज्जाम आदि। जाति निर्धारित इन पेशों में से अधिकांश पेशे आधुनिक समाज की आवश्यकताओं को देखते हुए अनुत्पादक तथा अलाभकारी सिद्ध हो चुके हैं।

आजादी के बाद उत्पादन सबधों में बदलाव आने से जातिगत पेशे काफी सीमा तक टूटे लेकिन इन पेशों से जुड़े लोग अपने पारपरिक शोषण तथा सामाजिक एव शैक्षणिक पिछड़ेपन के कारण रोजगार के नये अवसरों तथा औद्योगिक विकास का पर्याप्त लाभ न उठा सकें। वशानुगत पेशों के अनुत्पादक होने के कारण जहाँ गाँवों में इन पेशों से जुड़े लोगों का जीवनयापन दूभर होता गया, वहीं शहरों में नयी तकनीक तथा पूजीगत आवश्यकताओं के चलते ये पेशे अन्य सम्पन्न वर्गों के हाथों में चले गये। परिणाम यह हुआ कि पिछड़े वर्गों में आने वाली अधिसख्य जनता भारतीय समाज की विकास यात्रा में हाशिये पर रह गयी। उपलब्ध आकड़े बताते हैं कि भारत की कुल जनसख्या में पिछड़ों का अनुपात बावन प्रतिशत है, लेकिन केन्द्रीय सरकार एव सार्वजनिक उपक्रमों की प्रथम श्रेणी की नौकरियों में पिछड़े वर्ग के सिर्फ पाँच प्रतिशत और तृतीय एव चतुर्थ श्रेणी में तेरह प्रतिशत लोगों की हिस्सेदारी है। उच्च नौकरियों में पिछड़े वर्गों एव दलितों का उचित प्रतिनिधित्व न होने के कारण नौकरशाही का एक ऐसा कुलीनतन्त्र बन गया है जो देश की तीन चौथाई से अधिक जनता की जरूरतों के प्रति असवेदनशील होता जा रहा है। परिणामस्वरूप सरकार की विभिन्न विकास योजनाओं तथा पिछड़ेपन व गरीबी हटाने के कार्यक्रमों के वांछित परिणाम नहीं मिल रहे हैं। यह तभी सम्भव है जब नौकरशाही का कुलीनतन्त्र समाप्त करके उसका जनतन्त्रीकरण किया जाय। जिस तरह वयस्क मताधिकार का प्राविधान करके भारतीय संविधान ने राजनीतिक जनतन्त्र सुनिश्चित किया है, उसी तरह मण्डल आयोग के अपनी आरक्षण सबधी सिफारिशों द्वारा नौकरशाही के जनतन्त्रीकरण का प्रयास किया है।

जिस तरह वयस्क मताधिकार की माग के विरुद्ध शिक्षा एव सपत्ति के तर्क दिये जाते थे, कुछ उसी तरह आज आरक्षण के विरुद्ध योग्यता एव कार्य कुशलता के तर्क दिये जा रहे हैं। आरक्षण के विरुद्ध योग्यता एव कार्यकुशलता के तर्क पूरी तरह खरे नहीं उतरते क्योंकि दक्षिण भारत में आरक्षण के प्रयोग के परिणाम हमारे सामने हैं। दक्षिण भारत में आरक्षण पचास से सत्तर प्रतिशत होने के बावजूद वहां का प्रशासन उत्तरी भारत के उन राज्यों से कहीं बेहतर है जहाँ आरक्षण की पूरी सुविधाएं अभी पूरी तरह से नहीं प्रदान की गई हैं। भ्रष्टाचार की समस्या भी जितनी उग्रतर उत्तर भारत के राज्यों में है उतनी दक्षिण भारतीय प्रदेशों में नहीं। दरअसल नौकरशाही में योग्यता एव कार्यकुशलता जैसे शब्द निरपेक्ष न होकर सापेक्ष होते हैं। उचित सवेदनशीलता नैतिकता एव प्रतिबद्धता का अभाव जहां योग्य एव कार्यकुशल उच्चाधिकारियों को काष्ठवत एव भ्रष्ट बना सकता है वहीं अपेक्षाकृत कम योग्य एव कम कार्यकुशल अधिकारियों की सवेदनशीलता नैतिकता एव प्रतिबद्धता उन्हें समाज के लिए अधिक कारगर एव उपयोगी बनाती है। यहां हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सरकार की अधिकांश विकासमूलक योजनाएं छोटे किसानों सब्जी उत्पादकों पशुपालन से जुड़े पेशों, जुलाहों टोकरी बिनने वालों मछुवारों तथा छोटे कारीगरों से सबंधित हैं। इनमें से अधिकांश पेशे पिछड़ी जातियों से पारम्परिक रूप से जुड़े रहे हैं। दो राय नहीं कि यदि इन जातियों के लोगों का सरकारी नौकरियों में प्रतिनिधित्व होगा तो वे इन पेशों से जुड़ी हुई समस्याओं को बेहतर ढग से समझकर उसका निदान कर सकेंगे और सहानुभूतिपूर्वक रवैया अपनायेंगे। कहने की आवश्यकता नहीं कि वे इन क्षेत्रों में अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक योग्य एव कार्यकुशल सिद्ध होंगे।

यदि सपूर्णता में देखा जाय तो आरक्षण का सिद्धान्त कुछ जातियों को नौकरी सबधी रियायतें देने का न होकर सत्ता तन्त्र में जनतांत्रिक हिस्सेदारी तथा कालान्तर में दलित एव वंचित जातियों के प्रति हुए अन्याय का प्रतिकार करना है। आरक्षण का विरोध सुविधा सम्पन्न वर्गों द्वारा अपने वर्चस्व को बनाये रखने के लिए न्याय एव समतामूलक समाज के लक्ष्य की दिशा में रोड़ा पहुँचाना है। राजनीतिक जनतन्त्र बहुत दिनों तक आर्थिक जनतन्त्र से मुह नहीं चुरा सकता। उसकी अनिवार्य परिणति समता मूलक समाज में ही होती है। हमारे संविधान निर्माताओं ने इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए ही दलितों एव पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण के माध्यम से सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने का प्रयत्न किया है। भारतीय समाज की गहरी समझ न रखने वाले एव औद्योगिक रूप से विकसित देशों की सामाजिक न्याय की प्रणाली को आदर्श समझने वाले पाश्चात्य बुद्धिजीवियों को आरक्षण में जातिवाद की गध आ सकती है। लेकिन जो समाज सदियों से वर्ण एव जाति का बंदी रहा हो वहां जाति के अस्तित्व को नकार कर सामाजिक न्याय की कोई भी अवधारणा सफल नहीं हो सकती। जाति के नाम पर हुए भेदभाव तथा शोषण के कारण जो लोग सामाजिक मर्यादा, एव प्रतिष्ठा में पिछड़ गये हैं उस जातीय भेदभाव को पहचान कर उन्हें आरक्षण का सहारा देकर ही एक स्वस्थ समतामूलक जातिविहीन समाज की स्थापना की जा सकती है।

मण्डल आयोग ने पिछड़ी जातियों के लिए नौकरियों के साथ साथ शिक्षण सस्थानों में भी आरक्षण की सस्तुति की है। उत्तर प्रदेश सरकार ने मण्डल आयोग की सिफारिशों को सम्पूर्णता में स्वीकार करके सामाजिक न्याय की प्रक्रिया को तेज करने का जो सकल्प लिया है, समतामूलक समाज की स्थापना की दिशा में उसके दूरगामी परिणाम होंगे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री मुलायम सिंह यादव पिछड़ों के स्वाभाविक नेता हैं पिछड़े वर्गों के दस वर्षों से वे सहयात्री एव सहभागी रहे हैं। उनसे सहज ही उम्मीद की जा सकती है कि वे दलितों एव पिछड़े वर्गों के लिए सामाजिक न्याय तथा सत्ता तन्त्र में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे। आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए सिद्धान्त रूप में आरक्षण स्वीकार करके उन्होंने सामाजिक न्याय के सिद्धान्त की जो व्यापकता प्रदान की है, वह सही दिशा में सही कदम है। इससे आर्थिक रूप से निर्बल ऊँची जातियों के लोगों को भी उन्नति एव विकास के समान अवसर मिल सकेंगे और आरक्षण सही अर्थों में भेदभाव का नहीं बल्कि समता एव सामाजिक न्याय का एक कारगर हथियार बन सकेगा। □

संवेदना से उपजे संकल्प

अभिमन्यु सिंह परमार

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। कुल जनसंख्या के लगभग पचासी प्रतिशत लोग गांवों में रहते हैं। किसान हैं। ग्रामोत्थान से ही राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि जुड़ी है। कुछ ऐसे ही कारण आजादी के आन्दोलन की धार को तेज करने में सहायक हुए थे। गांव-गांव में विदेशियों और देशी सामन्तों के शोषण से मुक्त होने का बिगुल बजा था। किसान आन्दोलन से स्वतन्त्रता संग्राम को गति मिली, अन्तत सफलता मिली।

गांवों की गरीबी और उनके हर तरह के शोषण की पीड़ा को गहराई से गांधी जी ने अनुभव किया था। बिहार में चम्पारण के नील की खेती करने वाले किसानों पर होने वाले अत्याचार को गाँधी जी ने स्वयं जाकर स्वयं देखा। ग्रामीण कारीगरों विशेषत. बुनकरों को जिस क्रूरता से पंगु बनाया गया था उसे देखकर महात्मा गाँधी एक सार्वजनिक सभा में बोलते हुए धार-धार रो पड़े थे। गाँव के दुख-दर्द की संवेदना से उपजे संकल्प का ही प्रतिफल माना जायेगा कि आजादी की लड़ाई में किसी भी प्रकार के अत्याचार का विरोध करने का अनूठा अस्त्र सत्याग्रह अपनाया गया। दरिद्रनारायण की सेवा और श्रम का प्रतीक, चरखा कातना गाँधी विचारधारा के प्रमुख अंग बने। आजादी के पहले लड़ाई का मुख्य लक्ष्य विदेशी शासकों और देशी सामन्तों के शोषण को समाप्त करना था। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में दरिद्रनारायण की शक्ति से सफलता। दरिद्रनारायण के परिभाषित दायरे में गांव के गरीब किसान, शिल्पकार, मजदूर और असंख्य पीड़ित शोषित वर्ग के लोग थे।

आजादी के बाद भी गाँवों में भारत की आत्मा बसने की बात और किसान को अन्नदाता कहने और ग्रामोत्थान की चर्चा बराबर होती रही है। सभी विकास योजनाओं में इन बिन्दुओं को प्राथमिकता से इंगित किया गया। अनेक दिशा में आर्थिक विकास को गति मिली। गाँवों के स्वरूप में भी बदलाव आया। कृषि में हरित क्रांति से निश्चय ही गांव की दशा में सुधार हुआ। फिर भी जिन्दगी की बुनियादी सुख-सुविधाओं की दृष्टि से गांव और शहर में दूरी बढ़ती गई है।

गाँव से कस्बे, कस्बा से नगर और नगर से महानगर बनते हैं। नगरों की अपनी समस्यायें होती हैं। अपनी समस्याओं को मुखरित करने की नगरों के पास सशक्त आवाज है उनका निराकरण करने-कराने की संगठित ताकत भी है। जिनको नागरिक सुविधायें कहा जाता है। वे नगरवासियों को मिलना चाहिए, मिलती भी हैं। यही बुनियादी सुविधायें ग्रामवासियों के लिए भी उतनी ही आवश्यक हैं। किन्तु गाँवों की इन जरूरतों को पूरा करने की दिशा में हमारे बुनियादी सोच में सोचनीय खोट है। इसीलिए देश निर्माण की सभी पंचवर्षीय योजनाओं में ग्रामोत्थान की चर्चा रेखांकित की गई, संकल्प लिए जाते रहे, किन्तु गांव की पीड़ा के प्रति अपेक्षित संवेदना के अभाव से यह संकल्प शक्तिहीन और दिशाहीन होते गए। एक के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजनायें बीतती गईं, गाँव की जिन्दगी अपने पुराने संस्कार पर रोते-गाते चलती रही।

मेड़ की दूबघास की तरह बार-बार पैरों तले कुचली जाने पर भी सूखकर फिर हरीभरी होना गाँवों की जिन्दगी का रहस्य है। दुख-दर्द को भूलने के लिए उल्लास और आनन्द हजार तरह से बिखेरना गाँव का संस्कारगत चलन है। गाँव की लोक-कला में हम इसे देखते हैं, लोग गीतों की करुण-मधुर स्वर में इसे हम सुनते हैं। नवविवाहिता के पति को रोजी-रोटी के लिए परदेश जाने की विवशता से विरहा और विदेशिया लोक गीतों की रचना हुई। विरह-वेदना को भुलाने के लिए भोर में चक्की पीसते हुए ग्रामीण नववधू के गीतों की स्वर-लहरी फूट पड़ती है- रेलिया न वैरी, जहजवा न बैरी, पैसवा बैरी हो पिया देसवा-देसवा भरमावे।

आजादी के पहले उत्तर प्रदेश और बिहार के अनगिनत गिरमिटिया मजदूर सात समन्दर पार अंग्रेजी साम्राज्य के दूरस्थ उपनिवेश जैसे मारिशस को जाने पर मजबूर हुए। अपने पसीने से उन भारतीय ग्रामीण मजदूरों ने उन देशों की समृद्धि को शिखर पर पहुँचाया और उन उपनिवेशों के स्वतन्त्र होने पर जगन्नाथ और शिवसागर राम गुलाम जैसे उत्तर प्रदेश के मूल वासियों के वंशज सत्ता के शिखर पर पहुँचे। हैरानी की बात है कि आज भी उत्तर प्रदेश और बिहार के अनगिनत ग्रामीण रोजी-रोटी की तलाश में कलकत्ता, बम्बई और पंजाब जाने के लिए विवश हैं।

गाँव में प्रत्येक फसल और मौसम की अपनी अलग बहार है हरेक तीज-त्यौहार पर रोमांचक रंग बिखेरना ग्रामीण जीवन की कला है। प्राकृतिक आपदा, पारिवारिक दुख-दर्द और रहन-सहन की दैनिक कठिनाई को भी लुभावने परिवेश से जीना गांव जानते हैं। यही उनकी जीवनी शक्ति है। पीने के पानी की समस्या को यदि ग्रामीण समस्या मानते तो उनका जीना दूभर हो जाता। कितनी ही दूरी पार करके नित्य सिर पर पानी के घड़े भरकर लाना सरल नहीं है। ग्रामीण महिलाओं ने इस थकाने वाले उबाऊ कार्य को भी पनघट की बतकही, आपसी हास्य-विनोद से सरस बनाया और गाँवों में पनघट की अपनी विशिष्ट संस्कृति का विकास हुआ। पनघट महिलाओं के मिलनकेन्द्र के रूप में विकसित हुए। इसी प्रकार नित्य सांझ-सबेरे समूह में शौच के लिए ग्रामीण बस्ती से दूर जाने की मजबूरी को ग्रामीण महिलाये आपसी बातचीत और एक दूसरे के दुखदर्द के कहने-सुनने में भुलाती रही हैं। गाँव की छत विहीन पाठशाला में झाड़ू बुहारु करना, बैठने के लिए बोरी का टुकड़ा घर से लाना ग्रामीण बच्चे खेल खेल में करते हैं। इस शर्मनाक स्थिति को स्वीकृति देना नितान्त संवेदनहीनता है। लोकजीवन के लुभावने मुहावरे से जिन्दगी की मौलिक जरूरतों को नहीं भुलाया जा सकता। गाँव में पीने के पानी की व्यवस्था, पाठशाला और निजी शौचालय का निर्माण, गरीब बेसहारा को मदद पाने के अधिकार की संवेदना से उपजे संकल्प से ही गाँव की भलाई की जा सकती है। यह संवेदना सुख सुविधा सम्पन्न व्यक्ति में भी हो सकती है। किन्तु जिसने गाँवों की इस स्थिति को नजदीक से देखा भाला है उसमें निश्चय ही गाँव की मूलभूत कठिनाई के प्रति गहरी संवेदना होगी। इन कठिनाइयों को दूर करने के संकल्प भी उसमें उतना ही उत्कृष्ट और सुदृढ होगा।

मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण पाठशालाओं के भवनों का निर्माण और गाँव में निजी शौचालय की व्यवस्था और निर्धन बेसहारा वृद्धों की पेंशन वृद्धि की योजना को लागू किया गया। इन योजनाओं को लागू करने में गाँवों के प्रति संवेदनशीलता की सोच का विशेष महत्व है।

मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार के वर्ष 1990-91 के वार्षिक बजट में पहली बार गाँवों के विकास के लिए कुल बजट का आधे से अधिक 51·3 प्रतिशत व्यय का प्रावधान किया गया। ग्रामीण अंचल की प्रारम्भिक पाठशालाओं के 15 हजार भवन निर्माण और दो लाख निजी शौचालय गाँवों में बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। वृद्धावस्था पेंशन की राशि 60 रुपये प्रतिमाह से बढ़ाकर 100 रुपये प्रतिमाह कर दी गई और पेंशन के लिए पात्रता आयु 65 वर्ष से घटाकर 60 वर्ष कर दी गई। इसके अतिरिक्त किसानों, बुनकरों, शिल्पकारों, तथा भूमिहीन कृषि मजदूरों के दस हजार रुपये तक सहकारी ऋणों को माफ किया गया।

गाँव की भलाई की इन योजनाओं को समय बद्धता से पूरा करने में निश्चय ही बाधा पड़ी है। राज्य सरकार को इस वर्ष अप्रत्याशित राजनैतिक घटनाओं तथा कानून व्यवस्था की समस्या का सामना करना पड़ा है। इन कारणों से गाँवों की भलाई के लिए उपरोक्त योजनाओं के निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने में अपेक्षित उपलब्धि नहीं हो सकी है। फिर भी यह उपलब्धि अधिक महत्वपूर्ण है कि अनगिनत वर्षों से हमारे गाँव जिस निरन्तर पीड़ा को सहते रहे हैं उस दुख दर्द की संवेदना से उपजे संकल्प लिए गये। उनको पूरा करने की शुरुआत हुई। निष्ठा और सद्भावना से लिए गये संकल्प पूरे होते हैं, आस्थावान ग्रामीण का विश्वासी मन इसे मानकर चलता है। निश्चय ही गाँवों की भलाई की दिशा में राज्य सरकार के संकल्प पूर्ण होंगे। ◻

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमान चन्द्रशेखर जी प्रधानमन्त्री
भारत सरकार,
सादर नमस्ते,

आपकी सुख शान्ति और शतायु के लिए परमदेव परमात्मा से हम यज्ञ वेदी पर प्रार्थना कर रहे हैं। आप अयोध्या के श्रीराम मन्दिर को, काशी विश्वनाथ मन्दिर को, मथुरा के श्री कृष्ण मन्दिर को जिन मन्दिरों को मुसलमानों ने तोड़ा था उन मन्दिरों को आप 25-25करोड़ रुपयों की लागत से सरकारी खर्चे से बनवाकर आप स्वतन्त्र भारत के स्वर्ण इतिहास में अपना शुभ नाम अमर करें। मुस्लिम लीग जैसी देशद्रोही संस्था के अधिकारियों से आप सावधान रहें। भारत में रहने वाले मुसलमान समूचे भारतवर्ष को इस्लामी राष्ट्र बनाना चाहते हैं।

अब्दुला बोखारी, सैयद शहाबुद्दीन जैसे मुसलमान हिन्दुओं की हत्या देशभर में करा रहे हैं अतः इन देश द्रोहियों को आप मौत की सजा देने में एक पल का भी विलम्ब न करें। मुसलमान भविष्य में हिन्दू नेताओं की हत्या करके भारत पर पाकिस्तान का झंडा लहरायेंगे यदि मुसलमानों की नागरिकता आपकी सरकार ने समाप्त नहीं किया तो मुसलमान पुनः हिन्दुओं के रक्त की नदी बहा कर हिन्दू जाति का सर्वनाश आपके आँखों के सामने करेंगे। मुसलमानों का विश्वास करने वाले हिन्दू नेता सभी मूर्ख हैं और देशद्रोही हैं।

श्रीराम भक्तों के खून को अयोध्या में बहाने वाला हिन्दू कुल घातक मुलायम सिंह यादव है जिसको आप ने अपना समर्थन देकर हिन्दुओं के सर्वनाश के लिए मुख्यमन्त्री बनाया है। राजनीति के स्वार्थ के हमाम में आप और राजीव गाँधी भी और उनके चमचे जीहजूरियों तथा आपके चापलूस सभी नंगे हो गये हैं।

इन पार्टीबाज दगाबाज देशद्रोही नेताओं से भारतमाता की हत्या का खतरा है। भारत का भविष्य और भारत का चमन खतरे में है। हजरत मुहम्मद ने कुरान में गैर मुसलमानों को काफिर लिखा है। काफिरों को कत्ल करना लिखा है अत कुरान को आप जप्त करायें। उस संसार में जब तक इस्लाम और कुरान रहेगा तब तक विश्व शान्ति का होना असम्भव है।

आपका शुभ चिन्तक
वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी
स्वतन्त्रता सेनानी, क्रान्तिकारी
साहित्यकार
राष्ट्रपति जी से सम्मानित

—·—

देश भक्ति को देश निकाला

सम्पादक महोदय,

भारत की राजधानी दिल्ली में केन्द्रिय सरकार की ठीक नाक के नीचे कश्मीरी आतंकवादियों के शरण स्थल बने हुए हैं। जिम्मेवार लोग चिल्ला चिल्ला कर बता रहे हैं कि दिल्ली की जिस जामा मस्जिद को वी0पी0 सिंह ने पचास लाख रुपये दिये उस मस्जिद में तथा मस्जिद के तहखानों में 100 से अधिक कश्मीरी [illegible] रह रहे हैं। केन्द्र द्वारा दिये गये 50 लाख रुपयों से जामा मस्जिद के नीचे से लाल किले तक एक पुरानी बन्द पड़ी सुरंग कश्मीरी आतंकवादियों के उपयोग के लिए खोदी जा रही है। इस कार्य के लिए शाही इमाम को अरब देशों ने 20 करोड़ की सहायता भी दी है। परन्तु इमाम अब्दुल्ला बुखारी साहेब के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जा रही।

वास्तव में भारत सरकार पर इमाम साहेब का बहुत प्रभाव है। इमाम साहेब के कारण भारत के गृह मन्त्री पद पर मुफ्ती मोहम्मद सैयद को बिठा दिया गया जो कि मुस्लिम कट्टरवाद के लिए विख्यात हैं। कश्मीर का बच्चा बच्चा मुफ्ती की फिरका परस्ती से परिचित है मुफ्ती साहेब ने कश्मीर के अनन्तनाग शहर का नाम इस्लामाबाद कर दिया। 1986 की फरवरी में मुफ्ती साहेब के द्वारा कश्मीर घाटी में साम्प्रदायिक दंगे भड़काये गये। जिन में 63 से अधिक मन्दिर ध्वस्त किये गये हिन्दुओं की दुकानों और घरों को लूटा गया फिर उन्हें आग लगा दी गई। घाटी के हिन्दु भय से कांपने लगे। अपनी बहू बेटियों की इज्जत बचानी उनके लिए समस्या बन गई।

मुफ्ती साहेब से यह आशा नहीं की जा सकती कि वे दिल्ली की जामा मस्जिद के नीचे बन रहे पाकिस्तानी अड्डे को समाप्त करेंगे।

कैसी हालत हो गई है कि देशद्रोह को पुरस्कृत किया जाने लगा है और देश भक्ति को देश निकाला।

हम सीमाओं की रक्षा क्या करेंगे जब घर में ही शत्रु की घुसपैठ का सफाया नहीं कर सकते। क्या हमारे नेता सैक्युलरिज्म की वेदी पर भारत की बलि चढ़ा देना चाहते हैं।

-डा0 कैलाश चन्द्र
संकट मोचन आश्रम
आर0के0पुरम
नई दिल्ली-22

ललकार

• पूर्ण प्रकाश मित्तल
बिजनौर

हठधर्मी छोड़ो, हिन्दू को गले लगालो,
यह भारत देश बचालो।
जयचन्द ना बनो, तुष्टीकरण छोड़ो,
यह आर्य देश बचालो।।
दुश्मन ने घायल कर दिया,
तुम केवल रोष दिखाते हो।
भारत में दुश्मन घुस पड़ा,
तुम उसको दूध पिलाते हो।।
सबको साथ लें चलने वाले,
देश में देशभक्त ही पालो।
यह भारत देश बचालो।।
अब भी आँखे खुली नहीं क्यों,
गिड़-गिड़ाने पर लगे पड़े।
थप्पड़ मार रहा करारे शत्रु,
उसे मुख्य धारा से जोड़े पड़े।।
अरे अक्ल के दुश्मन,
तड़फन सुनो हमारी।
युग-युग कभी नहीं भूलेगा,
अन्धी भूल तुम्हारी।।
नाम से हिन्दू दीखने वाले,
वेदों का देश बचालो।
यह भारत देश बचालो।।
फूट की नीति तुमने अपनाई,
हिन्दू को टुकड़ों में बाँट दिया।
आरक्षण का देकर लालच,
भाई-भाई को लड़ा दिया।।
आतंकवाद, अलगाववाद पनपाया,
दुलमुल नीति अपना कर।
हिन्दू बेबस बना दिया,
साम्प्रदायिक उसे ठहरा कर।।
परमवीर चक्र पाने वाले हिन्दू थे
हिन्दू को अपना लो।
यह भारत देश बचालो ।।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्यकुमार सभाओं, आर्यवीरदल, आर्य महिला समाजों एवं आर्य शिक्षणसंस्थाओं के समस्त अधिकारीगण एवं समस्त आर्यजनता को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने सर्वश्री कैलाशनाथ सिंह वाराणसी, राजपाल आर्य मुजफ्फरनगर, धर्मेन्द्र सिंह आर्य देहरादून, चन्द्रकिरणशर्मा गाजियाबाद, खेम सिंह आर्य लखनऊ तथा रमा शंकर आर्य केराकत को आ0स0 की सदस्यता से निष्कासित कर दिया है। यह निष्कासित व्यक्ति सभा विरोधी भ्रामक प्रचार समय-समय पर करते रहते हैं- उससे आर्य जनता भ्रमित न हो और न ही उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी इन्हें आमन्त्रित न करें। विशेष जानकारी सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त की जा सकती है।

- कार्यालय सचिव

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७९

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
माघ कृष्ण- ६ संवत २०४७ वि०
दिनांक-६ जनवरी १९९१
दूरभाष २४५९९३

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
(हरिद्वार)

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें:-

आर्यमित्र के जिन सदस्यों का शुल्क मास अगस्त १९-९० को समाप्त हो गया है। वी०पी० भेजने में 7-50 रु०अधिक पोस्टेज लगते हैं। इसलिये सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी०पी० भेजने के लिये विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु० [illegible] गया है।

566, 5265, 5301, 6193, 6201, 6838, 8428, 8610, 9490, 9498, 9969, 11013, 11694, 11701, 11973, 11978, 12363, 12376, 12689, 12712, 12718, 12946, 13181, 13195, 13518, 13542, 13551, 13558, 13560, 13563, 13565, 13570, 13574, 13578, 13585, 13953, 13959, 13969, 14327, 14338, 14791, 14796, 14801, 14806, 14809, 14810, 14840, 14843, 15444, 15445, 15448, 15451, 15452, 15454, 15455, 15456, 15457, 15458, 15459, 15460, 15461, 15462, 15463, 15464, 15465, 15466, 15467, 15468, 15469, 15470, 15471, 15472, 15473, 15474, 15475, 15476, [illegible], 15479, 15481, 15482, [illegible], 15484, 15485, 15486, [illegible], 15488, 15489, 15490, [illegible], 15492, 15493, 15494, [illegible], 15496, 15497 -व्यवस्थापक

श्रीमती अक्षय कुमारी जी दिवंगत

अत्यन्त खेद के साथ सूचित किया जाता है कि हमारी पूज्यमाता श्रीमती अक्षयकुमारी जी शास्त्री, मुख्याधिष्ठात्री, कन्या गुरुकुल, हाथरस का निधन दिनांक- 14 दिसम्बर 1990 को हो गया। शान्ति यज्ञ 17 दिसम्बर 1990 को प्रात 10 बजे तथा शुद्धि यज्ञ दिनांक- 24 दिसम्बर 1990 को प्रात 10 बजे कन्या गुरुकुल, हाथरस में हुआ।

सभाप्रधान श्री पं० इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने हार्दिक शोक प्रकट करते हुए मृतात्मा की शान्ति तथा पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की है।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

महर्षि दयानन्द का उत्कृष्टतम बोध :

स्वा० ब्रह्मानन्द "वेदभिक्षु"
मुरादाबाद

स्वामी रामतीर्थ जिन दिनों अमेरिका गए हुए थे, उन्हीं दिनों की एक घटना का वर्णन मिलता है। वे एक दिन सन्ध्या समय किसी स्थान विशेष पर टहल रहे थे तभी अमरीकी छात्रों का एक वर्ग आकर स्वामीजी से कुछ प्रश्नोत्तर करने लग गए। स्वामी जी उत्तर देते जाते थे। कुछ प्रश्नों में से उन छात्रों ने निम्न तीन प्रश्न भी पूछे:- यथा "Is your God a Mister ? ﴾क्या आपका ईश्वर श्रीमान-पुरुष है?﴿ Is your God a Mistress ? ﴾क्या आपका परमात्मा श्रीमती-स्त्री है?﴿ Is your God a Miss ? ?﴿ क्या आपका भगवान कुमारी है?﴿" स्वामीजी ने प्रश्नों के उत्तर में उन्हें नहीं﴾ No ﴿ में उत्तर दिया। पुनः उनके पूछने पर कि आपका ईश्वर क्या है ﴾What is your God? ?﴿ तब स्वामी जी ने नम्रता व अधिकार के साथ उन्हें उत्तर दिया कि- "He is a Mystrey " ﴾वह मेरा ईश्वर रहस्य है।﴿ प्रश्नकर्त्ता चुपचाप खिसक गए थे और स्वामी जी चिन्तन में खो गए। "विष्णुर्भुत्वा विष्णुर्भजेत्" ﴾श्रुति﴿ विष्णु सर्वव्यापक व पालक उस रहस्यमय शक्ति को पाना चाहते हो तो स्वयं पहले अपने में सद्गुण धारण करो। शताब्दियों से लुप्त प्राय· यह रहस्य-रहस्य ही बना रहा और इसके नाम पर धूर्त, प्रपंची, ठग तथा अविद्वान सामान्य जनता का शोषण करते रहे। धर्म और ईश्वर के नाम पर अनेकों पाखण्ड और पापाचारों को देखकर, वेद विद्या से शून्य पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त जनों में नास्तिकता पनप गई, वे तथाकथित धर्म व ईश्वर को तिलांजलि देकर नास्तिकता के प्रचार में जुट गए। जो कुछ वैज्ञानिक सत्यान्वेषी हुए और उन्होंने कुछ सत्य प्रतिपादित तथ्यों को जन-साधारण लोगों के समक्ष रखा, तो उन्हें धर्म के ठेकेदारों ने मार ही डाला- ऐसे कई उदाहरण हैं। बोध तो बुद्ध का भी महान था, वह भी सत्य को समझने को ही निकले थे, लेकिन वेद तक पहुँच न होने से- पाखण्ड खण्डन तक ही रह गए। कुमारिल भट्ट, शंकर आदि प्रभृति आचार्य जनों ने भी वैदिक सत्य को प्रतिपादित करने का भरसक प्रयत्न किया और वे भी एक नवीन मत तक रहकर सिमट गए थे। भौतिक जगत में न्यूटन, जेम्सवाट और एडिसन जैसे वैज्ञानिकों का भी तप और त्याग चिर-स्मरणीय रहेगा। विश्व इन महानुभावों का ऋणी है। गैलेलियो व सुकरात के भी बोध पूर्वक बलिदान अमर हैं। विश्व के सभी मौलिक बोध कर्त्ता व चिन्तक वन्दनीय हैं। हम उनको सश्रद्ध स्मरण करते हैं। और करना भी चाहिए। लेकिन स्वामी रामतीर्थ का "Mystrey " ﴾रहस्य﴿ रहस्य ही बना रह जाता, यदि, टंकारा﴾गुजरात﴿ की पुण्यधरा पर, जीर्ण-शीर्ण एक मन्दिर के कोने पर बैठे चौदह वर्षीय मासूम कुमार को शिवरात्रि को तमिस्रा में बोध न हुआ होता तो उसका बोध एक दम निराला ही बोध था। वह बुद्ध से लेकर सभी भौतिक वैज्ञानिकों के बोधों से उत्कृष्टतम था। समय को जिसकी महान आवश्यकता थी। मानव-मानव के खून का प्यासा बना हुआ था। धर्म व ईश्वर के नाम पर अनेक कोरी कल्पनाओं के रंगो में रंगा साम्प्रदायिकता का काला नाग फुफकारें भर रहा था। मूलशंकर का बोध बढ़ गया और वह गृह त्याग कर महर्षि दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध हो गए। उनके उस रहस्य के बोध ने विश्वभर के सारे बुद्धिजीवी जन समुदाय को झकझोर कर रख दिया और वैदिक सत्य को समझने के लिए विवश कर डाला।

वेदज्ञान की शाश्वत राशि है, मानवीय दृष्टि में सर्वोत्कृष्ट ज्ञान का कोष वेद ही है। वेद में घृणा, द्वेष और जाति-वर्ग विशेष के लिए कोई स्थान नहीं है। संसार में जो कुछ भी सत्य का प्रकाश है, उसका उत्स मात्र वेद ही है। प्रत्येक सत्य विद्या का आधार वेद ही है। महर्षि का आधार वेद था। वेदोक्त ईश्वर, वह शक्ति है, जो सर्वत्र व्यापक और निराकार है। उस पर -म शक्ति रहस्य﴿ Mystrey ﴿ का मानव को किसी वस्तु की चाह नहीं है, वह निष्काम, निर्लेप व निर्लिप्त है। महर्षि दयानन्द का ईश्वर तर्क और विज्ञान की कसौटी पर सत्यसार है। बड़े से बड़े नास्तिकों का मान-मर्दन भी अन्तिम क्षणों में होता-देखा गया है। ये भी उस Mystrey रहस्य के समक्ष नत हो गए-जैसे, लाप्लास और सिकन्दर यही सच्चा बोध था। ऋषिवर दयानन्द ने ईश्वर को एक स्थानीय न मानकर सर्वत्र बताया और वेद के प्रमाण प्रस्तुत किए, "ईशावास्यमिदम्-सर्वम्" पूर्ण विश्व ईश्वर से आच्छादित है। पाप करने का संसार में कोई स्थान नहीं है।

आइए-एक वेद मंत्र का अध्ययन करते चलें-

मन्त्रः- ओम्। तमु ष्टुहि यो अन्तः सिन्धौ सूनुः। सत्यस्य युवानम द्रोघवाचं सुशेवम्।। अथर्व0, 6-1-2 ।।

अर्थः- ﴾तम्·+उ﴿ उस एक को ही, ﴾ष्टुहि=स्तुहि﴿ स्तुति करो, ﴾यो=यः﴿ जो ﴾अन्तः﴿ भीतर ﴾सिन्धौ﴿ सिन्धु के= जलराशि के, ﴾सूनुः﴿ प्रेरक है। ﴾सत्यस्य﴿ सत्य के, ﴾युवानम﴿ एक रस, सदा अपरिवर्तित शक्ति को﴾अद्रोघ वाचं﴿ द्रोह= द्वेष भाव त्याग रूप वाणी से ﴾सुशेवम्﴿= सर्वदा सुख दाता की। ﴾स्तुति करो﴿ मन्त्र का भाव है कि ऐ मानव तू उसकी स्तुति कर जो- सिन्धु के भीतर भी विराजमान है। प्रकृति के जल, वायु, अग्नि आदि तत्वों में ईश्वरीय शक्ति का बोध व प्रत्यक्ष भान होता है। हिमाच्छादित पर्वतों के ऊँचे शिखर, बादलों के क्षण-क्षण में परिवर्तित रूपों और सूर्य का उदय-अस्त-का मनमोहक सौन्दर्य छवि, सागर की अगाधता और अन्तहीन-फैलाव- आदि ये सब प्राकृतिक नाटक के जलमय दृश्य नाटककर्त्ता के स्वरूप को प्रत्यक्ष कर देते हैं।

वेद ने कहा-﴾1﴿ ईश्वर सत्य प्रेरक है। उसी की पूजा-स्तुति करो। ईश्वर वेद द्वारा सत्य की प्रेरणा करता है।
﴾2﴿ ईश्वर तीनो कालों में अपरिवर्तनीय है। उसे बाल्य, जरा आदि अवस्थाएं छूती तक नहीं।
﴾3﴿ ईश्वर की वाणी ﴾वेदज्ञान﴿ में द्रोह= द्वेषभाव नहीं हैं, वह सब प्राणी मात्र का शुभेच्छु है।
﴾4﴿- वह सर्वदा और सर्वथा आनन्ददाता है। ऐसे सुखदाता की ही स्तुति करें।

काश्मीर के विस्थापितों की सहायतार्थ सभा में विशेष कोष की स्थापना

काश्मीर से बड़ी संख्या में राष्ट्रवादी हिन्दू-नेता विस्थापित होकर देश के विभिन्न शहरों में शरण ले रहे हैं। यह हमारी आर्य जाति के अंग हैं। इनकी दयनीय दशा अत्यन्त करूणाजनक है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने इन भाइयों की सहायता के लिए एक विशेष कोष की स्थापना की है। कृपया अन्न वस्त्र और धन भेजकर अपने विस्थापित भाइयों की मदद कीजिये। यही सबसे बड़ा पुण्य कार्य है। कृपया धन मनीआर्डर, चैक, ड्राफ्ट द्वारा "आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग लखनऊ" के पते पर भेजें।

इन्द्रराज
प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0

सैनिक विधवाओं को आर्यसमाज की ओर से स्टील के बर्तनों के ५० सेट भेंट

दिनांक 15-4-90 को दोपहर 12 बजे मेला नौचन्दी मेरठ के पटेलमण्डप दरबार हाल में सोल्जर बोर्ड की ओर से सैनिक पुनर्मिलन समारोह का अयोजन किया गया। इस अवसर पर सेवा निवृत्त सैनिकों, सैनिक विधवाओं एवं अपंग सैनिकों की समस्याओं पर विचार किया गया। अधिकारी वर्ग ने समस्या को सुना और उसका समाधान बताया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने स्टील के बर्तनों के 50 सेट भेंट करते हुए सैनिकों की सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि जब नागरिक अपने घर में आराम से रहता है तब सैनिक बर्फ में 24 घन्टे खड़ा होकर देश की सीमाओं की रक्षा करता है। साथ ही विदेशी आक्रमण होने पर अपने रक्त को बहाकर देश की रक्षा करता है। धन का त्याग कोई बड़ा त्याग नहीं है। एक और जीवन का बलिदान बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसे समारोह नागरिकों के और सैनिकों के मिले जुले होने चाहिये ताकि देश के नागरिक, रक्त देने वाले और देश पर बलिदान होने वाले सैनिकों के प्रति आदर समर्पित कर सकें और उनके सम्मान के साथ-साथ उनकी आवश्यकताओं के समाधान में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। आर्यसमाज मेरठ प्रतिवर्ष पत्र-पुष्प के रूप में कुछ भेंट समर्पित कर सैनिकों के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा और निष्ठा की अभिव्यक्ति करता है।

—— विशेष संवाददाता द्वारा

स्वतन्त्रता के प्रथम पुरोधा महर्षि दयानंद

डॉ० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी
बरेली

स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में, आमलोग गाँधी, मोतीलाल नेहरू जवाहरलाल नेहरू व अन्य सेनानियों का नाम गर्व से लेते हैं, किन्तु उस समय वैचारिक क्रान्ति के जन्मदाता देव दयानन्द को बिल्कुल भूल जाते हैं, कि भारतीय स्वाधीनता के मूल प्रेरक युगपुरुष महर्षि दयानन्द ही थे। जिस समय देश विदेशी दासता में जकड़ा हुआ था, समाज में सर्वत्र पाखंड अन्धविश्वास अज्ञान, व अन्याय का साम्राज्य था, ऐसे विषम समय में, भारतीय चेतना को जागृत करने हेतु, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1931 को बम्बई के गिरगाँव मुहल्ले के डाक्टर माणिक चन्द्र जी की वाटिका में स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। अपने प्रारम्भिक दशकों में आर्यसमाज ने अपने संस्थापक के क्रान्तिकारी विचारों के अनुरूप ही कार्य किया।

"आर्यसमाज" वस्तुतः कोई सम्प्रदाय नहीं, अपितु एक क्रान्तिकारी संस्था है, जिसका आधार सार्वभौम वैदिक धर्म है। "आर्य" का अर्थ जातिवाचक नहीं अपितु गुणवाचक है। जो आचरण से श्रेष्ठ है, वही आर्य है, तथा श्रेष्ठों का समाज ही आर्यसमाज है, जिसका उद्घोष है "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात विश्व को हम श्रेष्ठ बनायें, संसार में मजहब, व मतों के नाम पर परस्पर लोग बँटते जाते हैं। यदि सब श्रेष्ठ मानव धर्म को स्वीकार कर लें तो सभी एकता के सूत्र में बँध सकते हैः-

"सबका होगा जब एक धर्म
सब भेदभाव मिट जायेगा।"

भारत के स्वतनत्रता संग्राम में "आर्यसमाज" का योगदान स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित रहेगा।

कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले पट्टाभिसीता रमैया ने उल्लिखित किया है कि स्वतन्त्रता के लिए जेल जाने वालों में पिचासी प्रतिशत लोग आर्यसमाजी विचारधारा से ओतप्रोत थे। तत्कालिक परिस्थितियों में, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षणिक और राष्ट्रीय जागरण के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया। क्रान्तिकारियों के शिरोमणि श्याम जी कृष्ण वर्मा को देव दयानन्द ने अपनी योजना से इंग्लैण्ड में, अध्ययनार्थ प्रेषित किया था। लाला लाजपतराय, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, पं० रामप्रसाद बिस्मिल व अन्य क्रान्तिकारी देव दयानन्द की विचारधारा से ही प्रभावित थे, जिस समय सन सत्तावन के गदर के बाद महारानी विक्टोरिया ने विज्ञप्ति निकलवाई कि कम्पनी से शासन हमने अपने हाथ में ले लिया है, तथा अब शासन माता-पिता के समान हितकारी होगा। तब हिन्दू और मुसलमान, दोनों ही प्रसन्नता से झूम उठे। उस समय इस विज्ञप्ति का विरोध करने वाला, तथा नर्मदा के किनारे विचरण करने वाला एक ही व्यक्ति था वह था दयानन्द जिसने प्रबलतम शब्दों में उस विज्ञप्ति का विरोध करते हुए कहा था कि "माता पिता के समान हितकारी शासन केवल स्वदेशी ही हो सकता है।" {सत्यार्थ-प्रकाश}

स्वतन्त्रता की चेतना जनमानस में जागृत करने वाले महर्षि दयानन्द ही थे, वही स्वतन्त्रता के मूल प्रेरक हैं। इतिहास इस तथ्य का स्वयं साक्षी है, बाद में गाँधी और नेहरू ने भी इन्हीं क्रान्तिकारी विचारों का अनुगमन किया। जागृति के स्वरों को फूँकने में आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द अग्रणी रहे हैं- "लोग कहते हैं जमाना बदलता है अक्सर"

मर्द वे हैं जो जमाने को बदल देते हैं।

महर्षि दयानन्द युगनिर्माता हैं जिन्होंने सर्वप्रथम भारतीयों के जनमानस में प्रसुप्त राष्ट्रीय भावना को जागृत किया था।

वे मात्र एक धर्म संस्थापक एवं समाज सुधारक ही नहीं, अपितु वे मूलतः प्रबल राष्ट्रवादी और क्रान्तिकारी थे। किन्तु मतवादी सामान्य जन उनको व समझकर, उन्हें केवल अपना शत्रु समझते रहे। संसार के प्रायः सभी महानपुरुषों के साथ ऐसा होता चला आया है। आज भी कुछ अज्ञानी जन दयानन्द को पहचानने में भूल करते हैं, किन्तु देव दयानन्द तो मानव मात्र के हितैषी थे। उनका जीवन सत्य पर आधारित था। दयानन्द ने सभी मत मतान्तरों के ग्रन्थ पढ डाले, किन्तु "सत्य" फिर भी उनके हाथ न लगा, तब उन्होंने आर्षग्रन्थों को पढा, जहाँ उन्हें सत्य मिल गया एवं दयानन्द ने घोषणा कर दी- "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है तथा वेद का पढ़ना-पढ़ाना-सुनना, सुनाना, सभी आर्यों का परमधर्म है।" शास्त्रार्थ समर में महर्षि दयानंद को कोई न हरा सका ना ही उनके सिद्धान्तों का कोई प्रतिवाद कर सका। देव दयानन्द की पाखण्ड खण्डिनी पताका का लक्ष्य इसी सत्य का उद्घोष करना था। पाखण्ड खण्डन के विरोध की परवाह किये बिना उन्होंने घोषणा की- "विरोध की आँच से सत्य की क्रान्ति चौगुनी होती है। दयानन्द को यदि तोप के मुँह के आगे रखकर भी पूछा जायेगा कि सत्य क्या है, तब भी उसके मुख से वेदों की ध्वनि निकलेगी।" युगप्रवर्तक एवं स्वतन्त्रता के प्रथम पुरोधा महर्षि दयानन्द ने सर्वत्र "सदाचार" पर बल दिया है, तथा उनकी शास्त्र सम्मत मान्यता रही है कि दुष्टाचार से राष्ट्र तथा राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। कविवर प्रकाश ने देव दयानन्द के विषय में ठीक ही कहा है --

"यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में।
कोई गुरुदेव दयानंद सा देखा न सुना।"

● श्री श्याम सुन्दर प्र0 आर्य की अध्यक्षता में आर्यसमाज गुरुआ {गया} का वार्षिकोत्सव 5 से 7 अप्रैल, 90 तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हो गया।

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी जौनपुर में

दिनांक 6-4-90 को आर्यसमाज जौनपुर के 90वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर जौनपुर पधारने पर श्री इन्द्रराज जी, सभा प्रधान का हार्दिक स्वागत किया गया। पूर्वांचल के इस जनपद में सभा प्रधान जी के आगमन से आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं के उत्साह में वृद्धि हुई। सभा प्रधान जी के साथ धर्म रक्षा महाभियान के संयोजक तथा राष्ट्ररक्षा युवा आन्दोलन के महामंत्री श्री जयन्त कुमार जी पाण्डेय भी थे।

जौनपुर के टाउन हाल में रात्रि सभा को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान जी ने आर्य समाज के अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को उनके सफल प्रभावशाली आयोजन के लिए अपना साधुवाद दिया।

उन्होंने अपने भाषण में कहा कि वर्तमान पर्यप्रेक्ष्य में आर्यसमाज का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है। देश में धर्मपरिवर्तन की बाढ़, विघटनकारी शक्तियों का बढता आतंक, पाश्चात्य सभ्यता एवं अंग्रेजी भाषा का बढ़ता वर्चस्व हमारे देश व संस्कृति के लिए बहुत बड़ा खतरा है। आर्य जाति में सतीप्रथा, अन्धविश्वास, जातिवाद, भ्रष्टाचार एवं भोजन प्रदूषण आदि से देश को बहुत खतरा है। कश्मीर, आसाम और पंजाब में आतंकवादी शक्तियां देश को छिन्न भिन्न कर देना चाहती हैं। आर्यसमाज की माँग है कि भारत सरकार बड़ी कड़ाई से पाकिस्तान के विरुद्ध दण्डात्मक कार्यवाही करके चोर की माँ को समाप्त कर दें। अन्त में श्री प्रधान जी ने कश्मीर एवं देश के अन्य भागों में हिन्दू उत्पीड़न के कारण हिन्दुओं के पलायन पर घोर चिन्ता व्यक्त करते हुए उन भाइयों की कपड़ा, भोजन, आवास एवं रोजगार के द्वारा जनता से सहायता की अपील की।

दिनांक 8-4-90 के प्रातःकाल के सत्संग में सभा प्रधान जी ने वैदिक आध्यात्मवाद पर प्रवचन किया तथा अपने भावपूर्ण सुमधुर भक्ति संगीत के द्वारा श्रोताओं को आध्यात्मिक रस से सराबोर कर दिया। मध्यान्होत्तर 12 बजे सभा प्रधान जी मेरठ के लिए प्रस्थान कर गए।

प्रस्तोता: जयन्त कुमार पाण्डेय

आवश्यक सूचना

आर्यसमाज स्थापना दिवस एव नववर्ष प्रतिपदा पर मैंने वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार का निश्चय किया है। इच्छुक महानुभाव एव समाजें सम्पर्क निम्न पते पर करें।

श्याम मोहन आर्य,
भरथना (इटावा)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

राजपुर मण्डी {नेपाल} का उत्सव दि0- 6 से 18 अप्रैल तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। सभा प्रचारक पं0 तेजपाल सिंह एवं श्रीमती आशा आर्या ने अपने मधुर भजनों द्वारा 5000 जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। सौ व्यक्तियों ने जनेऊ धारण किया बहुतों ने मांस शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

राजनैतिक क्षेत्र - घोर पतन

राजार्य सभा की महती आवश्यकता

• रामाज्ञा मिश्र "आर्यपुत्र" मंत्री
आ०स० आमलपुर, देवरिया

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने राजार्य सभा के गठन पर बल देते हुए सिंह घोषणा की थी, कि राजाओं के सुधार के बिना देश का सुधार सम्भव ही नहीं है। दूरदर्शी ऋषि ने राजघरानों के सुधार के लिये अथक परिश्रम ही नहीं वरन् अन्तिम बलिदान तक किया। स्वामीजी के इस विचार को क्रिया रूप देना तो दूर हम आर्यसमाजी दिशाविहीन, किंकर्तव्यविमूढ़ होकर अनेकानेक राजनैतिक दलों की दैनिक यात्रायें कर रहे हैं। जिस "मनुस्मृति" की राज-व्यवस्था को स्वामी जी लागू करना चाहते थे, उसी "मनुस्मृति" जैसे पावन ग्रन्थ को स्वाध्याय से दूर, आहार भ्रष्ट तथाकथित सांसदों ने कई बार संसद के अन्दर घसीटा और कई पृष्ठों को बगैर अर्थ समझे आपत्तिजनक कहकर फाड़ा किन्तु हम संसद के अन्दर या बाहर प्रबल विरोध भी नहीं कर सके। अपवादों की बात नहीं कही जा सकती। आज की राजनैतिक गिरावट में तो हमारा दायित्व और भी बढ़ गया है क्योंकि हम ऋषि की वसीयत हैं।

कुछ वर्ष पूर्व हुए मास्को युवा महोत्सव में गये भारतीय युवकों को जो विशेषरूप से राजनैतिक (विभिन्न) दलों से संबद्ध थे, खोज के अन्तर्गत वहाँ की घनी झाड़ियों में विदेशी मांसल युवतियों के साथ आपत्तिजनक अवस्था में पाये गये। आश्चर्य की बात तो यह की छानबीन का कार्य प्रशिक्षित कुत्तों द्वारा सम्पन्न हुआ।

दूसरी तरफ विगत वर्षों में आंध्रप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री रामारावजी आदिक "इटली" की विदेश यात्रा पर गये। विमान परिचारिकाओं द्वारा उन पर विमान में शराब पीकर शील-भंग करने का आरोप लगाया गया, साथ ही साथ उन्होंने इटली एअरपोर्ट पर शराब के नशे में घूमते हुए एक विदेशी युवती को टक्कर भी दी जिससे उन्होंने चप्पलों के प्रहार के साथ-साथ अग्रिम पंक्ति का एक दाँत भी गँवाना पड़ा। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व जब ऋषि ने मेवाड़ की राजधानी चितौड़गढ़ की पावन धरा के उत्तुंग शिखर पर खड़े होकर राणा के वंशजों की घोर पतितावस्था को देखा तो फूट-फूट कर रोते हुए भी निराशा की जगह आशावादी दृष्टिकोण अपनाया और इन नरेशों के सुधार का बीड़ा उठाया। ऋषि को आशातीत सफलता के साथ-साथ चतुर्दिक वेदों सहित आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार भी भारी सफलता प्राप्त हुई। सहस्रों वर्षों से सुप्त राजाओं को अपने कर्तव्य का बोध हुआ और सोयी आर्य जाति पुनः नयी उमंग के साथ उठ खड़ी हुई। यह बात अलग है कि हम इस कार्य को आगे के दिनों में वह गति नहीं दे सके जिसकी परिणति उपर्युक्त दोनों उदाहरण हैं।

मद्यनिषेध, गोरक्षा, देशरक्षा, मांसाहार निषेध, आर्यसमाज भाषा के सम्मान इत्यादि अनेकानेक प्रश्नों पर हमें राजार्य सभा के माध्यम से संघर्ष का बिगुल बजाने हेतु लोकसभा और विधान सभाओं के प्रवेश करना ही पड़ेगा। इसी माध्यम से भाषायी, जातिय एवं क्षेत्रीय समस्याओं को बल, बुद्धि, विवेक पूर्वक हल कर सकेंगे। यदि ऐसा नहीं हो सका तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि हम आन्दोलन करें और शासन द्वारा उसे सख्ती से दबा दिया जाय। विश्व के सभी विचारों के लोग अपनी संख्या वृद्धि पर तुले हुए हैं, किन्तु डेढ़ शतकों में भी आर्यों की संख्या बढ़ने की बजाए अत्यन्त न्यून हुई है। यदि वेदानुकूल विचारों वाले अल्पसंख्यक हुए तो स्वदेश में ही हमें आगे आने वाले दिनों में अनार्यों के संरक्षण में रहने को बाध्य होना पड़ेगा। आशा है, हम सभी आर्य जन इस संक्रमण काल में गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

शैक्षिक क्षेत्र-सह शिक्षा-

महर्षि का विचार शैक्षिक जगत के लिये विश्व की अद्भुत देन है। अशुद्ध आहार द्वारा बढ़ते विकार और कामुकता को जागृत करने वाले कुसाहित्यों एवं अश्लील चित्रों के बढ़ते प्रभाव के कारण वर्तमान में सहशिक्षा, शिक्षा-मंदिरों की पावनता को नष्ट करने पर तुली हुई हैं। शिक्षक एवं छात्रों-छात्राओं के पिता एवं पुत्र- पुत्री सादृश संबंध कमजोर पड़ते जा रहे हैं। कितने ही स्नातकोत्तर विद्यालयों के अध्यापकगण अपनी ही शिष्याओं के साथ अब तक परिणय-सूत्र में बंध चुके हैं, यह कड़वी सच्चाई है। क्या इस स्थिति में ऐसे संस्कारहीन स्त्री-पुरुषों की सन्तान के रूप में राणा, शिवा, दयानन्द, कभी पैदा हो सकेंगे? कदापि नहीं। विगत वर्षों मे कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में बच्चियों के शील-भंग की घटनाएं अध्यापकों द्वारा हुई हैं जिसका देशव्यापी विरोध भी हुआ। जिन आर्य-पुत्रियों ने कुछ निशिचर तुल्य तथाकथित अध्यापकों की कामुकता शान्त करने हेतु आगे आने की बजाएं विरोध में जनमत जागृत करने की कोशिश की, उनका विद्यालय से निष्कासन त्वरित प्रभाव से किया गया। आज के अंधे अभिभावकों द्वारा युवा पुत्रियों का अतिरिक्त शिक्षक जब कोई युवक रखा जाता है तो ज्ञान देने की जगह अधिकतर काम-क्रीड़ाओं से जुड़ी दर्दभरी घटनाएं ही प्रकाश में आती हैं और आर्य राष्ट्र की मर्यादा को नष्ट करती है।

सर्वाधिक कष्ट की बात तो अपनी आर्य संस्थाओं द्वारा वर्तमान में सह-शिक्षा को समर्थन देना ही है। स्वामी जी द्वारा स्वतः स्थापित एवं गुरुकुल जब कुछ समय बाद आचार्यों द्वारा वेदानुकूल न चलाया जा सका तो तुरन्त स्वयमेव बंद करने की घोषणा कर दी। यदि आज स्वामी जी होते तो निश्चित ही अपने नाम से प्रारम्भ डी०ए०वी० सहित समस्त ऐसी संस्थाओं को जो सह-शिक्षा से चलती हैं, बन्द करा देते। यदि कोई ऐसा नहीं करता तो बलपूर्वक भी उसका मुकाबला करते। आज हर सच्चा आर्य अत्यन्त चिन्तित है। ऋषि की सह-शिक्षा के कुपरिणामों की वर्षों पूर्व दी गयी चेतावनी की अवहेलना ही हमारी युवा-पीढ़ी के पतन का प्रमुख कारण है।

दिवस पर विद्यार्य सभा को उत्तम ढंग से पुन. संचालित करते हुए- स्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।

आज सम्पूर्ण विश्व भौतिकवाद और उसी मे पैदा हुए भोगवाद की पराकाष्ठा पर पहुँच चुका है, किन्तु सर्वप्रथम तो हमें अपने आर्यावर्त का ही विचार करना है क्योंकि--

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवाः
((मनुस्मृति))

प्राचीन काल का विश्व-गुरु यह देश अपने ही अनार्यपन के कारण खण्ड-2 होते हुए अपनी संस्कृति से अत्यन्त दूर जा चुका है। पाश्चात्य अंधानुकरण, अनाचार, अत्याचार, मातृशक्ति का विज्ञापनों एवं सिनेमा जगत मे दिखाया जा रहा नग्न प्रदर्शन अत्यन्त अल्प वय के बच्चे-बच्चियों के साथ हो रहे घिनौने कर्म जो समूह से शिक्षा-मंदिरों तक पहुँच चुका है, सुरक्षा कर्मचारियों सहित ऊपर-नीचे चतुर्दिक आई गिरावट ही अपना मस्तक शर्म से नीचे कर लेने के लिये पर्याप्त है। ऐसी घटनाओं को लिखते लेखनी काँपती है।

अन्त में प्रबुद्ध पाठकों से इस निवेदन के साथ ही बातें कहीं कड़वी हो गयी हों किन्तु सच्ची हो तो स्वीकार करेंगे और यदि थोड़ा बहुत आवश्यक समझेंगे तो अपने विचारों से मुझे अवगत भी करा सकेंगे जिससे कि भविष्य में लम्बी बहस कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर चलाते हुए जागृति का वेदानुकूल वातावरण तैयार किया जा सके। □

"पाणिनि कन्या महाविद्यालय- वाराणसी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय का 19 वाँ वार्षिकोत्सव गत 7, 8, व 9 अप्रैल 90 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के वयोवृद्ध वैदिक विद्वान, महावैयाकरण श्री- पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक (सोनीपत) प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० शान्तिप्रकाश-जी (जयपुर) साप्ताहिक "आर्यजगत्" के सम्पादक यशस्वी साहित्यकार श्री पं०- क्षितीश जी वेदालंकार (दिल्ली) भू०पू० उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी के भू०पू० अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी रस्तोगी (लखनऊ) एवं मुरलीमनोहर डिग्री कालेज बलिया के प्राध्यापक डॉ० सुषुम्नाचार्य जी ने अपने उपदेशों व प्रवचनों से मार्गदर्शन दिया, तथा विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

- कु० माधुरी।

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी के निवास पर पारिवारिक सत्संग

दिनांक 18-4-90 को स्त्री आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ के द्वारा श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान के निवास पर एक सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान जी की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला जी आर्या ने अन्य महिला समाजों से पधारने वाली आर्य महिलाओं का स्वागत किया। श्री पं0 नरेन्द्र जी आचार्य आ0स0मेरठ, श्री देवशर्मा जी आचार्य, श्री वागीश्वर शास्त्री आचार्य आ0स0 थापरनगर,मेरठ ने बड़े प्रभावशाली ढंग से यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर श्रीमती सावित्री कथूरिया जी मंत्रिणी स्त्री समाज ब्रह्मपुरी, कु0 अर्चना कथा-। पौत्री सभा प्रधान श्रीमती सुमनवालाश्रीमती शकुन्तला जी आर्या के सुमधुर भजनों के उपरान्त सभा प्रधान जी का सत्संग महिमा पर प्रवचन हुआ। उन्होंने बताया कि हमें अपने परिवार को आदर्श परिवार बनाना चाहिये। जिस परिवार में सब सदस्य परस्पर प्रेम और प्यार से रहते हैं। वहाँ स्वर्ग है। ईर्ष्या द्वेष रहित मन के द्वारा ही परमपिता परमात्मा की उपासना हो सकती है। अतः परिवारों में यज्ञ और सत्संग ही परिवारों में सुख समृद्धि को उत्पन्न करता है। इसी संसार में और परिवार में रहते-रहते अपने-अपने कर्तव्यों का पालन कर व्यक्ति ईश्वर की कृपा का पात्र हो सकता है। अन्त में सभा प्रधान जी ने समस्त आगन्तुकों को धन्यवाद दिया और स्त्री आर्य समाज ब्रह्मपुरी मेरठ को इस प्रकार के यज्ञों को आयोजित करने की प्रशंसा की।

(विशेष संवाददाता द्वारा)

नौचन्दी मेले में वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र का सराहनीय कार्य

दिनांक 16-4-90 को उत्तर भारत का प्रसिद्ध नौचन्दी मेले का समापन हो गया। यह मेला दिनांक 18-3-90 को प्रारम्भ हो गया था। प्रतिवर्ष आर्य समाज मेरठ की ओर से वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र का एक स्टाल लगाया जाता है तथा वैदिक साहित्य विक्रय किया जाता है। इस वर्ष भी एक आकर्षक स्टाल लगाया गया। सारे मेले में प्रचार की दृष्टि से सत्यार्थ प्रकाश आधी कीमत पर बेचा गया। मेले में लाउडस्पीकर पर भी प्रचार की व्यवस्था की गयी। श्रीमद् भगवतगीता (समर्पण भाष्य, यज्ञ पर्वसुधा एवं देवयज्ञ की भी पर्याप्त मात्रा में बिक्री हुई। प्रचार की दृष्टि से कुछ अन्य साहित्य बिना मूल्य के भी बाँटा गया। यह स्टाल मुख्यता आर्य समाज मेरठ शहर द्वारा संचालित होता है तथा सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी के निर्देशन में चलता है। अन्य आर्य समाजें और आर्यबन्धु भी इस की सफलता के लिए सहयोग प्रदान करते हैं।

विशेष संवाददाता द्वारा

आर्य समाज आर्य नगर (मेरठ) में धर्मरक्षा महाभियान की सभा

दिनांक 13-4-90 वैसाखी पर्व पर प्रेमनगर आदि ईसाईयों एवं अन्य सम्प्रदायों द्वारा घिरे हुये आर्यनगर में एक महत्वपूर्ण धर्म सभा का आयोजन सायं 4 बजे किया गया। श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों सहित वहाँ पहुँचकर यज्ञ का बड़े प्रभावशाली ढंग से सम्पादन किया। आर्यनगर में वेदमन्त्रों की ध्वनि गूँज उठी। श्री कर्ण सिंह एवं एक अन्य बहन के मधुर भजन के पश्चात् श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने वैसाखी के पवित्र पर्व पर प्रकाश डालते हुए जनता को बताया कि यह पर्व पंजाब में बड़े उत्साह से मनाया जाता था परन्तु आज पंजाब में उग्रवादी हिंसा फैलाते हुए निर्दोष लोगों का रक्त बहा रहे हैं। यह निरन्तर विशाल पैमाने पर धर्म परिवर्तन का ही परिणाम है कि इस समय कश्मीर से राष्ट्रवादी हिन्दुओं के 20 हजार परिवारों को आतंक

-वादियों ने भगा दिया है। श्री सभा प्रधान जी ने बताया कि वर्तमान समय में भी धर्म परिवर्तन विशाल पैमाने पर हो रहा है। यदि इसे रोका न गया तो देश के अन्य भागों में भी आतंकवादी गतिविधियाँ जारी हो जाएँगी। सभा प्रधान जी ने आर्य समाज को संगठित होकर प्रभावशाली ढंग से कार्य करने की प्रेरणा की तथा सरकार से अनुरोध किया कि वह परिस्थिति की गम्भीरता को देखते हुए कश्मीर में अलगाववादी शक्तियों को सख्ती से कुचल दें।

संवाददाता द्वारा

तीन माह की वेदप्रचार यात्रा

राष्ट्रीय संस्कृति व युवाशक्ति के उत्थान हेतु उद्गीथ साधना स्थली रजि0 चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक आचार्य आर्य नरेश जी द्वारा गत तीन मासों जनवरी,फरवरी, मार्च में निम्नलिखित स्थानों में पुस्तकों,चित्रों,कैसेट व स्टिकरों की सहायता से प्रचार किया गया जिसमें उत्तर प्रदेश के आर्यसमाज देहरादून,नाला-पानी तपोवन, आर्यसमाज करणपुरगुरुकुल राजपुररोड, आर्यसमाज शाहजहाँपुर, आर्यसमाज बाँगरमऊ, आर्यसमाज गोरखपुर बरेली, आर्यसमाज गढ़ ग्रामजभीरन (हरिद्वार) जल निगम कालोनी (रुड़की), आर्यसमाज विकासनगर, सरस्वती शिशु मन्दिर मसूरी, उत्सव लाक्षागृह गुरुकुल ।

- सिंहगढ मार्ग पुणे, पुणे कैम्प, दिल्ली पुणे रेल यात्रा (महाराष्ट्र) ।
- आनन्द निकेतन मोतीबाग, मानसरोवर मार्ग, शाहदरा (दिल्ली) ।
- आर्यसमाज माडलटाऊन, लुधियाना न्यूमाडलटाऊन, सराबानगरणजीतसिंह नग गीता मन्दिर । (पंजाब)

इस प्रचार यात्रा में अनेकों लोगों ने दैनिक यज्ञ करने, बिना दहेज विवाह करने व व्यायाम तथा संध्या करने का संकल्प किया। कुछ युवकों ने चाय छोड़ने का संकल्प किया।

श्री कामेश्वर नाथ चतुर्वेदी
सर्वे आफ इण्डिया।

स्वास्थ्य-सुधा

आरोग्य दर्पण

समस्याः- "मैं आर्यमित्र का नियमित पाठक हूँ। स्वास्थ्य सुधा पढ़कर प्रसन्नता होती है। मेरी आयु 24 वर्ष है। मेरे दाँतों से खून निकलता है।"

-डॉ0 नरेन्द्रकुमार आर्य,आर्यपुरा-बिरौरा (बुलंदशहर)

समाधानः- मसूढ़ों से खून निकलना, पायरिया की पूर्वस्थिति है। शौच जाने से पहले मसूढ़ों पर नमक-पिसी हल्दी-सरसों तैल मला करें। ये तीनों पदार्थ एक बड़े मुँह की शीशी में एक माह भर के लिये लेप बना कर रख लेवें। हल्दी की मात्रा नमक का दसवाँ भाग रहेगी। शौच के बाद दातून या कोई टूथपेस्ट किया करें। भोजन के साथ फल-सलाद में एक नींबू का सेवन अवश्यमेव करें। रात्रि भोजन बाद टूथपेस्ट करें। सोने से पहले गुरुकुल काँगड़ी का पायोकिल मंजन मसूढ़ों पर मल लिया करें। प्रत्येक भोजन के बाद चूने का दो चम्मच पानी एक प्याला सादापानी में मिला कर पिया करें। अमरूद तो दाँतों के लिये अमृत फल है।

0 उपचार पत्र की कार्बनप्रतिलिपि पाने हेतु दो डाक लिफाफे भेजें -

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चाहारी)
आर्यसमाज पिथौरागढ (उत्तर प्रदेश)

ज्ञान-दर्पण

0 -पं0 आनन्दराज शर्मा (व्यवस्थापक,
गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर)

× यजुर्वेद में कुल मन्त्रों की संख्या 1975 है।

× पश्चिमी जरमनी में 45 किमी प्रति घण्टा की गति से सौरऊर्जा द्वारा चालित साइकिल का आविष्कार 1939 में हो चुका है।

× अंग्रेजों ने सबसे पहली हिन्दुस्तानी पलटन 1757 ई0 में बनाई। लाल वर्दी के कारण इस पलटन को लालकुर्ती वाली पलटन कहा जाता था। आज भी शहरों में लालकुर्ती के मुहल्ले हैं जो इस पलटन के सिपाहियों के बाजार होते थे।

× गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त- बिठूर (कानपुर) की संस्थापना कार्तिक पूर्णिमा" 1984 ई0 को गंगातट पर स्वामी गुरुकुलानन्द-सरस्वती (कच्चाहारी) द्वारा की गई थी। इस गुरुकुल में हर वर्ष 15 जून को परीक्षाधार पर कक्षा 6 में ब्रह्मचारी प्रविष्ट किये जाते हैं। कक्षा 6 से 10 तक प्रविष्ट ब्रह्मचारियों हेतु दुग्ध भोजन निःशुल्क है। केवल वस्त्र-पुस्तक- वर्तनादि का व्ययभार अभिभावक पर होता है।

× भारत में लगभग 7200 रेलवेस्टेशन हैं तथा प्रतिदिन लगभग 1100 रेलगाड़ियाँ चलती हैं।

सूचना

नगर आर्यसमाज रकाबगंज लखनऊ के तत्वावधान में शहर की समस्त आर्यसमाजों व अन्य प्रमुख संस्थाओं द्वारा काश्मीर समस्या पर विचार प्रस्तुत हुआ सभी सदस्यों ने एक स्वर से कहा कि काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तथा सरकार से मांग की गई कि यहां के आतंकवादियों को कुचल देना चाहिए इसी आशय का एक प्रस्ताव पास कर महामहिम राष्ट्रपति को भेज गया।

-रेवतीरमण रस्तोगी मन्त्री

--

आदर्श विवाह सम्पन्न

डा0 धीर सिंह जी ने एम0ए0परीक्षा उत्तीर्ण करके होम्योपैथिक चिकित्सक डिप्लोमा की उपाधि प्राप्त है और साहबाद मोहम्मदपुर में अपनी प्रैक्टिस कर रहे हैं। डा0 साहब बागपत कस्बे के चौहान राजपूत परिवार के हैं।

कुमारी तृप्ती देवी जो कि बी0ए0-बी0एड0 करके एक शिक्षा संस्थान में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य कर रही हैं पंजाब प्रान्त के तरन-तारन क्षेत्र के खत्री परिवार से हैं जो कि आजकल आतंकित क्षेत्र है। कुमारी तृप्ती देवी के पिता की आतंकवादियों ने हत्या करके घर का सारा सामान लूट लिया। इस समय इनकी माता अपने शेष परिवार के साथ दिल्ली के सहायता शिविर में रह रही हैं।

यह विवाह बड़े ही साधारण ढंग से बिना दहेज एवं पांच आदमियों की बारात से सम्पन्न हुआ और किसी भी प्रकार का अनावश्यक खर्च नहीं किया गया।

डा0 धीरसिंह जी एक होनहार नवयुवक एवं आर्यविचार धाराओं से ओतप्रोत हैं। इनका यह दृढ़ संकल्प था कि वह आर्य विचारों वाली सुयोग्य कन्या से ही विवाह करेंगे।

यह शुभ अन्तर्जातीय विवाह श्री धर्म सिंह जी आर्य (प्रधान) एवं श्री मोहनलाल जी वर्मा (सचिव) की उपस्थिति में आर्यसमाज मन्दिर सागरपुर नई दिल्ली 110046 द्वारा सम्पन्न हुआ।

--

वैदिक धर्म का ग्रामीण प्रचार

दिनांक- 11 से 16 अप्रैल 1990 तक गोण्डा जनपद के तरबगंज तहसील में ग्राम-सेमरी, सिधौटी, परास और अमदही में सभा के भजनोपदेशक श्री-पं0 ब्रह्मानन्द जी एवम् श्री ठा0 गजराजसिंह राघव, श्री ओम लाल जी ढोलकवादक और श्री सुन्दर लाल जो आर्य द्वारा उच्चकोटि का वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। सेमरी गांव में श्री भगवान दीनसिंह, सिधौटी गांव में श्री मातावदल सिंह तथा परास गांव में श्रीबृज भूषण सिंह के यजमानत्व में बृहद्‌यज्ञ भी सम्पन्न हुए प्रचुर मात्रा में वैदिक साहित्य एवं स्वामीजी के चित्र, गायत्री के स्टीकर भी वितरित किए गये। वहां की जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा और लोगों ने नवीन आर्यसमाज स्थापित करने का संकल्प लिया है।

- आचार्य चन्द्र भूषण शास्त्री

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का काश्मीर सहायता केन्द्र

प्रधानमन्त्री के प्रोत्साहन एवं प्रेरणा पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी0ए0वी0 के तत्वाधान में आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में "कश्मीर सहायता केन्द्र" एक मास से कार्यरत है। इस केन्द्र के माध्यम से कश्मीर के विस्थापितों को खाद्य, सामग्री, वस्त्र एवं आर्थिक सहायता के अतिरिक्त उनके बच्चों को डी0ए0वी0 स्कूलों में प्रवेश देने के साथ-साथ नितान्त निर्धन छात्रों को पुस्तकें तथा यूनिफार्म भी दी गई हैं एवं अनेक छात्रों की एक वर्ष की फीस माफ कर दी गई है। साथ ही उन्हें स्टोव तथा बर्तन, ओढ़ने, बिछाने के लिये दरी, चादरें, कम्बल भी प्रभूत संख्या में वितरित किये जा चुके हैं। तथा लगभग 50 के आसपास युवकों को नौकरी दिलाई जा चुकी है। अन्य जनों के लिये प्रयत्न जारी है।

मिल, फैक्टरी, कारखाना, कार्यालय, व्यवसाय आदि के स्वामियों एवं प्रबन्धकों से हमारा निवेदन है कि उनके संस्थानों में जितने स्थान रिक्त हों अथवा अधिकाधिक जितने जरूरतमन्दों को वे नौकरी पर रख सकते हैं, उनका विवरण हमारे पास भिजवाने की कृपा करें। हमारे पास डाक्टरों, इंजीनियरों, अध्यापकों, क्लर्कों, कारीगरों आदि सभी प्रकार के लोगों का विवरण विद्यमान है। हम तदनुसार विश्वस्त व्यक्तियों को आपके पास भेज सकते हैं।

इसी प्रकार नौकरी पाने के इच्छुक कश्मीरी विस्थापितों से हमारा आग्रह है कि वे यथाशीघ्र अपना पूर्ण विवरण हमें लिखकर भेजें जिससे कि उन्हें यथोचित स्थान दिलाया जा सके। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे यथाशक्ति अधिकाधिक धनराशि, खाद्यसामग्री, वस्त्र, दरी, चादरें, और चारपाई तथा बर्तन आदि आवश्यक वस्तुएं प्रदान कर संकट की इस घड़ी में अपने देश बन्धुओं की सहायता करके पुण्य के भागी बनें। आपसे प्रार्थना है कि आप उपरोक्त सहायता "आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नईदिल्ली के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज गंजडुण्डवारा के प्रधान श्री हरिश्चन्द्र जी गुप्ता की भगिनी का देहावसान प्रधान जी के ही निवास स्थान पर हो गया। वैदिक मति मण्डल ने अपने शोक प्रस्ताव में परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सामवेद-पारायण बृहद-यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज मैनपुरी के निष्ठावान सभासद ठा0 महावीर सिंह जी ने, दिनांक 7-4-90 से 10-4-90 तक, अपने ग्राम-खरपरी में सामवेद पारायण बृहद यज्ञ किया।

इस बृहद-यज्ञ में, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित स्वामी, देवानन्द जी, आचार्य पं0 रामदेव जी, डॉ0 ज्ञानप्रकाश जी, डॉ0 रामप्रकाश जी के साथ-साथ आर्य नेता पं0 रामप्रकाश जी अन्त0 सभासद, सभा, ठा0बृजभूषण सिंह जी प्रधान, आर्योप सभा, पं0 नरेन्द्रार्य प्रधान, आर्यसमाज तथा पं0 मूलचन्द्र आदि ने भाग लिया। वेद-पाठ गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारियों ने किया।

कुं0ध्रुवपाल सिंह "अटल"
मुख्य निरीक्षक, सभा।

शराबबन्दी के पक्ष में हस्ताक्षर अभियान

भग्थना, नगर के मुहल्ला आजादरोड में शराब के ठेका खुलने की सूचना पर जो आर्य श्यामा बालिका इण्टर कालेज के पास ही है। उसके विरोध में श्री महेशचन्द्र होम सिंह, अनिल श्री श्याममोहन आर्य के निर्देशन में समस्त पुरुषों और स्त्रियों, बालकों ने हस्ताक्षर कर मा0 परगनाधिकारी महोदय को ज्ञापन दिया। आवश्यक कार्यवाही न होने की दशा में धरना प्रदर्शन के निश्चय का संकल्प किया है।

आर्य स्वतन्त्रता सैनानी ठा0 पृथ्वीनाथ सिंह दिवंगत

आर्यसमाज मैनपुरी में "आर्य सहोदर निधि" के संस्थापक, महर्षि दयानन्द की "यतेमहि स्वराज्यये" की वैदिक प्रेरणा से बने स्वराज्य संग्राम के सैनिक तथा अधोहस्ताक्षरी के ज्येष्ठ पिताश्री ठा0 पृथ्वीनाथ सिंह की दिनांक 10-4-90 को अपने ज्येष्ठ पुत्र ई0नरेन्द्र नाथ सिंह के लखनऊ-निवास पर, मृत्यु हो गई। वे 86 वर्ष के थे। उनका पार्थिव शरीर उनके जन्म स्थान ग्राम खरपरी में लाया गया, जहाँ पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ वैदिक रीत्यनुसार दिनांक 11-4-90 को उनका अन्त्येष्टि-संस्कार किया गया। ठा0 साहब ने स्वतन्त्रता संग्राम के समय अनेक बार तथा अनेक वर्षों तक जेल यात्राएं कीं। वह एटा के स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों के, जिला स्तरीय संगठन के, अध्यक्ष थे। वे अपने पीछे विधवा पत्नी तथा पुत्र पौत्रों व प्रपौत्रों से युक्त भरा-पूरा परिवार छोड गए हैं। उनके शोक में, अनेक प्रतिष्ठान, संगठन तथा शिक्षण संस्थायें बन्द रहीं।

कुं0ध्रुव पाल सिंह "अटल"
मुख्य निरीक्षक, सभा।

प्रधानाध्यापक की आवश्यकता

आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर द्वारा संचालित विरजानन्द सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए एक प्रधानाध्यापक योग्यता- एम0ए0, बी0एड0 एवं पांच वर्ष तक सैकण्ड्री स्कूल के प्रधानाध्यापक का अनुभव अथवा पाच वर्ष तक हायर सैकेन्ड्री कक्षाओं को पढ़ाने का अनुभव आवश्यक। वेतन-श्रृंखला- 2200-4000 में प्रारम्भिक वेतन रु0 2948/-। आर्य समाज से संबंधित प्रार्थी को प्राथमिकता। आवेदन मन्त्री के नाम 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करें।

धर्म परिवर्तन धर्मान्तरण की राष्ट्रव्यापी योजना के समूलोच्छेदन के लिए

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
§5- मीराबाई मार्ग,लखनऊ-226001§

द्वारा

गंगा के रमणीय तट आर्यसमाज मन्दिर ब्रजघाट में स्थापित वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट गाजियाबाद :-----

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने वैदिक धर्मी उपदेशकों-प्रचारकों-पुरोहितों तथा धर्मशिक्षकों का निर्माण करने के लिए पं0 प्रकाशवीर शास्त्री भवन, आर्यसमाज मन्दिर ब्रजघाट जनपद गाजियाबाद में उक्त महाविद्यालय की स्थापना की हुई है।

:: सूचनाएं:::

§क§ पाठ्यक्रम अवधि 2 वर्ष §2§नि:शुल्क-प्रशिक्षण §ग§सफल उत्तीर्ण छात्र की उपदेशक वेतनमान पर नियुक्ति का आश्वासन §घ§-संख्या सीमित §15§ रहेगी।

:: प्रवेश नियम ::

प्रवेशार्थी- §1§ इण्टर तथा उसके समकक्ष साहित्य विशारद पूर्व मध्यमा परीक्षा आदि उत्तीर्ण।

§2§ अधिकतम आयु-25 वर्ष।

§3§ वैदिक धर्म प्रेमी- सत्यनिष्ठ-सदाचारी।

§4§ साक्षात्कार के उपरान्त प्रवेश स्वीकृति ।

§5§ 250 रु0 अग्रिम धनराशि जमा करनी होगी।

प्रवेश प्रार्थना पत्र दिनांक- 10जून, 1990 तक प्राचार्य वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय आर्यसमाज मन्दिर ब्रजघाट जनपद गाजियाबाद के पते पर भेजें।

साक्षात्कार 17 जून, 1990 दिन रविवार मिति आषाढ कृ0 4 सं0 2047 को प्रातः 10 बजे विद्यालय भवन में होगा।

1 जुलाई, 1990 से प्रशिक्षण प्रारम्भ हो जायेगा।

नोट:- भजनोपदेशक पद प्रशिक्षार्थी के लिए संगीत का आरम्भिक ज्ञान §स्वर आदि§ होना अनिवार्य है।

इन्द्रराज प्रधान — प्राचार्य महाविद्यालय — मनमोहन तिवारी मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0,लखनऊ।

आर्यसमाज लालगंज जि0-रायबरेली
प्रधान- डा0 शकुनचन्द आर्य
मंत्री- श्री गजराज आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री राकेश कुमार गुप्त

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश उपदेश विभाग के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों, प्रचारकों एवं ढोलक वादकों के कार्यक्रम

मिति वैशाख शुदी ७ सं. २०४७वि से ज्येष्ठ शु. ८ सं. २०४७ वि. तक मास मई १९९०

उपदेशक

1- श्री पं0 केशवदेव जी शास्त्री
4-लखनऊ/8 से 31 मई रामपुर जनपद ।

2- श्री शिवकुमार जी शास्त्री
अवैतनिक अवकाश

3- श्री विश्वम्भर दत्त शर्मा, विद्यावाचस्पति
1 से 31 मई महाविद्यालय ब्रजघाट जनपद गाजियाबाद।

4- श्री डा0 विजयपाल सिंह
5 से 31 मई आ0स0 हरिद्वार।

5- श्री सुकर्मानन्द जी महराज
1 से 31 मई कानपुर देहात।

6- श्री जयन्त कुमार आर्य
श्री प्रधान जी ,के निर्देशन में

7- श्री योगेश दत्त आर्य
अवैतनिक अवकाश

प्रचारक

8- श्री गजराज सिंह जी
1 से 7 अवकाश। 16 से 31 विलसन्डा जनपद पीलीभीत।

9- श्री ब्रह्मानन्दार्य जी
7 से 8 ककुहापुर खीरी। 19से 21 अमरैया सीतापुर। 25-26 बिजगंवा हरदोई।

10- श्री कमलदेव जी आर्य
मथुरा-एटा जनपद

11- श्री रामचन्द जी शर्मा
3 से 7 रुद्रपुर नैनीताल। 15-16 हरदोई। 24 से 31 भूपाल म0प्र0

12- श्री सीता राम जी आर्य §हरदोई§ जनपद हरदोई-उन्नाव-कानपुर

13- श्री सीताराम जी शर्मा
5 से 30 तक मीरानपुर कटरा जनपद शाहजहाँपुर

14- श्री नेमप्रकाश आर्य
1 से 3 ईशानगर सीतापुर 17·8 ककुहापुर खीरी। 19 से 21 सीतापुर

15- श्री युगल किशोर आर्य
1 से 2 कुल कानपुर। 3 से 23 कानपुर देहात। 24-25 चकरारित जौनपुर

16- श्री श्री शिवपाल सिंह आर्य
5 से 31 तक जनपद हरिद्वार

17- श्री विक्रम देव आर्य
1 से 10 आ0स0 रामपुर सफेद जनपद मुरादाबाद।
15 से 30 औरेया इटावा।

18- श्री ब्रजपाल जी शर्मा
8 से 31 तक जनपद रामपुर §बाजा सहित§

19- श्री धर्मवीर सिंह आर्य
श्री प्रधान जी के निर्देशन में।

20- श्री धर्म प्रकाश प्रेमी
5 से 30 मई मीरानपुर कटरा-शाहजहाँपुर

21- श्री खासि राम आर्य
महाविद्यालय ब्रजघाट

22- श्री सीताराम जी आर्य सहारनपुर §मण्डली सहित§ ढोलक वादक
1 से 10 रामपुर सफेद ।
15 से 30 औरैया जनपद इटावा ।

23- श्री हीमलाल जी आर्य
7,8 ककुहापुर। 19 से 21 अमरैया सीतापुर। 25-26 बिजगंवा ।

24- श्री अमरलाल जी आर्य
1 से 30 कानपुर देहात श्री-युगल किशोर जी के साथ।

25- श्री सुभाषचन्द जी आर्य
5 से 30 मई आ0स0 मीरानपुर कटरा जनपद शाहजहाँपुर श्री धर्मप्रकाश प्रेमी के साथ।

26- श्री कश्मीरी लाल आर्य
15 से 30 औरैया जनपद-इटावा ।

27- श्रीमती आशा आर्या
5 से 31 मई हरिद्वार
§श्री तेजपाल सिंह ,जी के साथ§

सभी उपदेशकों, प्रचारकों से निवेदन है कि कार्यक्रमानुसार वैदिक धर्म प्रचार करें। कार्यक्रम अभाव अप्राप्ति एवं स्थगित होने की दशा में प्रचार कार्यालय अमरोहा को तुरन्त सूचित करें।

मनमोहन तिवारी मंत्री — हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

वार्षिकोत्सव व स्थापना दिवस सम्पन्न

महर्षि द्वारा सर्वप्रथम स्थापित आर्यसमाज काकड़वाड़ी §बम्बई§ तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा बम्बई द्वारा सम्मिलित स्थापना दिवस उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया तथा भविष्य में आर्य समाज को गतिशील बनाने के लिए निश्चय किया गया। इसी समय आर्यसमाज काकड़वाड़ी का वार्षिकोत्सव दिनांक 24 से 29 मार्च,90 तक सोत्साह सम्पन्न हुआ जिसमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रो0 उत्तमचन्द "शरर", डा0 वागीश जी शर्मा के प्रभावपूर्ण व्याख्यान हुए उपस्थित जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

सम्भवत आर्यसमाज में आर्यसमाज स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया।

— आर्यसमाज पनवाड़ी सिविल लाइन्स बदायूँ का वार्षिकोत्सव दिनांक 8 से 10 जून तक धूमधाम से मनाया जायेगा जिसमें राष्ट्र रक्षा व आर्य§हिन्दू§ सम्मेलन होगा। ओमिलंपर का भी आयोजन है। जनता से अधिकाधिक संख्या में पधारने की प्रार्थना है।

आर्य समाज पलड़ी (मेरठ)

संरक्षक - मा0 जुगल किशोर आर्य
प्रधान - आजाद सिंह
मन्त्री - ब्रजवीर सिंह
कोषाध्यक्ष- दिलावर सिंह

वैशाखी समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी द्वारा

दिनांक 14-4-90 को आर्य भवन धापरनगर मेरठ शहर में वैशाखी पर्व का आयोजन सायं 7 बजे किया गया। जिसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने की। कविताओं, शायरी तथा बच्चों के रोचक कार्यक्रम के पश्चात् सभा प्रधान जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में काश्मीर से निष्कासित हिन्दू और सिख परिवारों की करुणिक एवं रोमांचक अवस्था का वर्णन करते हुए हिन्दुओं की सहायता करने की अपील की। साथ ही भारत सरकार से माँग की कि जब कश्मीर में नित्य प्रति पाकिस्तान के पक्ष में नारेबाजी होती है और हिन्दुओं को वहाँ से भगा दिया गया है ऐसे में धारा 370 को जारी रखने का क्या औचित्य है। सभा प्रधान ने भारत सरकार से धारा 370 को हटाने की पुरजोर माँग की। सभा के पश्चात् सहभोज का भी अयोजन था जिसमें लगभग 400 सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने भाग लिया।

{विशेष संवाददाता द्वारा}

श्री गुरु विरजानंद गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश प्रारम्भ - कोई मासिक शुल्क नहीं।

श्री गुरु विरजानंद गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर {गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय परिवार से स्थायी मान्यता प्राप्त} में नये छात्रों का प्रवेश एक जून-90 से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, समाजशास्त्र, आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्मशिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी, माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था, शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिये गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताएं हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कम से कम कक्षा पाँच तथा प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री के पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कम से कम कक्षा 10 उत्तीर्ण होना आवश्यक है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

आचार्य,
श्री गुरु विरजानंद गुरुकुल-
करतारपुर, जिला-जालन्धर
144801 {पंजाब}

जिला आर्योप सभा के उपप्रधान पुरस्कृत

भरथना, जिला आर्योपसभा इटावा के उपप्रधान श्री रजनेश जी आर्य जो पूर्ति कार्यालय इटावा में लिपिक पद पर कार्यरत हैं। शासन की योजना के अनुसार अच्छे एवं त्वरित कार्यप्रणाली पर शासकीय प्रशस्ति पत्र एवं नगद धनराशि से श्री आर्य को शासन ने पुरस्कृत कर सम्मानित किया। उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. (पंजीकृत) अधिकारिक विज्ञप्ति

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यजनों/आर्य प्रतिनिधियों/आर्यसमाजों/आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों के सूचनार्थ

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0-लखनऊ ऐक्ट 21, सन् 1860 के अन्तर्गत एक पंजीकृत संस्था है, जिसका प्रधान कार्यालय 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ है। रजिस्ट्रार फर्म्स सोसाइटीज तथा चिट्स उ0प्र0, लखनऊ द्वारा अधिकृत सर्वमान्यता प्राप्त इस संस्था का वर्तमान समय में मन्त्री मैं, अधोहस्ताक्षरी "मनमोहन तिवारी" स्वयं तथा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज हैं।

आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का मुखपत्र "आर्यमित्र" है जिसके माध्यम से सभा से सम्बन्धित समस्त आवश्यक सूचनाएं समय-समय पर प्रकाशित की जाती हैं। विदित हुआ है कि सभा के चुनाव के सम्बन्ध में कुछ लोग भ्रान्तियाँ फैला रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनता को सूचित किया जाता है कि चुनाव के सम्बन्ध में "आर्यमित्र" द्वारा, प्रकाशित समाचार को ही विश्वसनीय एवं सत्य समझें और किसी भ्रान्ति से भ्रमित न हों।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

रुड़की आर्यसमाज द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस पूर्ण हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता के स्थान से बोलते हुये महात्मा आर्य भिक्षु ने स्वामी दयानन्द व वेदों पर प्रकाश डाला व नव संवत्सर पर आर्य जनों को शुभ संदेश दिया।

आर्य वीरदल का शिविर

आर्यसमामज पनवाडी {बदायूं} की ओर से 1 जून से 10 जून, 90 तक आर्य वीर दल का शिविर लगेगा। इच्छुक साधक निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

श्रीरामचन्द्र आर्य,
संयोजक शिविर
आर्यसमाज पनवाडी "आर्यसदन"
बदायूं {उ0प्र0}

● इटाढ़ी {बिहार} ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना डा0 ओमदत्त शर्मा {मेरठ} के द्वारा सम्पन्न हुआ। तथा आर्यसमाज के पदाधिकारी का चुनाव राजेश्वरी प्र0केशरी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ निम्नलिखित अधिकारी चुने गये।

संरक्षक - डा0 अयोध्या प्रसाद गुप्ता
प्रधान - श्री कन्हैया प्रसाद केशरी
मन्त्री - श्री शिव मुनी आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री सरजू प्रसाद केशरी

शिविरों का आयोजन

इस वर्ष लगभग चार शिविर आर्यवीरों को प्रशिक्षित करने को अलीगढ़ बदायूं, बुलंदशहर, मथुरा के निश्चित हो चुके हैं। मेरे द्वारा 72 वर्ष की आयु में भी और उत्तर प्रदेश के अन्य प्रान्तों में भी गतवर्षों से और अधिक शिविर लगेंगे। अन्य जिलों के लिए भी प्रयत्नशील हूं। आर्य प्रतिनिधि सभा व समाजों के अनुशासन में रहकर एक लक्ष्य ही बनाना चाहिये।

जयनारायण आर्य।
उप सञ्चालक पश्चिमी, उ. प्र.

आवश्यकता

"गुप्ता {माहौर वैश्य} 22/154 से0मी एम0ए0, बी0 एड0 एवं एम0ए0 {अंग्रेजी} द्वितीय वर्ष अध्ययनरत रंग गेहुँआ सुन्दर आकर्षक गृह कार्य में दक्ष, कन्या हेतु राजकीय कार्यरत अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, उच्चतम व्यापार सुशील शाकाहारी वर चाहिए। उत्तम पारिवारिक आर्य संस्कार वाले निम्न पते पर पत्राचार करें। प्रत्येक प्रकार के बनिये स्वीकार्य" मंत्री आर्यसमाज गज डुण्डावारा {जि0-एटा} उ0प्र0 पिन-207242

आर्यसमाज हींग की मण्डी आगरा

प्रधान- श्री किशनलाल जी
मंत्री- श्री पूर्णचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री सन्तोषचन्द गुप्त

पजीकरण स० एल० डबल्यू /एन०पी० ७२

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र का मुख्य पत्र
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

वैशाख शुक्ल १२ सवत २०४७ वि
दिनांक ६ मई १९९०

दूरभाष
२४५९९३

सेवा मे

आवश्यक सूचना

कृपया शुल्क अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह मार्च १९९० को समाप्त हो गया है। वी०पी० भेजने मे 7-50 रु० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनय प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी०पी० भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर ले नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जन 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु० है।

मार्च १९९०

1944, 2154, 2670, 4355,4430, 6043, 6941, 8238, 8913,9111, 9859,11148,12129,12130,12143, 12611,12627,12630,12844,12845, 12859,13065,13729,13739,13747, 14208,14218,14227,14654,14658, 15169,15170,15171,15172,15173, 15174,15175,15176,15177,15178, 15179,15180,15181,15183,15184, 15185,15188,15189,15190,15191, 15192,15193,15194,15195,15196, 15197,15198,15199,15200,15201, 15202,15203,15304,15305,15306, 15307,15308,15309,15310, 15311, 15312,15313,15314,15315,15316, 15220,15221,15224,15225,15226, 15227,15228,15229,15230,15231, 15232,15233,15234,15235,15236, 15238, प, 15239,15239,15240, 15241,15242,15243,15244,15245, 15246,15247,15250,15251 15252, 15253 ।

अप्रैल 1990

405, 459, 811, 2818,3651, 4407,5556,5561,6103,6102, 6118,8021,8248,8346,8542, 8760, 8784,8928,9153,9437,9440,9648, 9861,11193,11586,11893,11896, 12157,13076,13440,13441,13761, 13782,14241,14249,14250,14674, 14676,14687,14692,14693,14694, 14698,15255,15256,15257,15258, 15259,15260,15261,15262,15263, 15264,15265,15266,15267,15268, 15269,15270,15271,15272,15273, 15274 15275 15276 15277,15282, 15283,15285,15286,15288,15289, 15290,15291,15292,15293,15294, 15298,15299,15300,15301,15302, 15303,15304,15305,15306,15308, 15309,15310,15311,15312,15313 15314,15315,15316,15317, 15318, 15319,15320,15321,15322,15323, 14324,15325,15326,15327,15328, 15329,15331,15332,15335,15336

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं. २२४१/५७) ज्येष्ठ कृष्णा-३ रविवार-संवत् २०४७ वि., दिनांक १३ मई १९९० (घोषणा पत्र सं ७/२२-२ ८५)



सतीत्व धर्म का पालन

वेद की शिक्षाओं के विस्मृतप्राय उस युग में भी जिसे हम पौराणिक युग कहते हैं, आर्यमहिलाओं ने सतीत्व धर्म का जो पालन किया है उसी के प्रताप से यह भारतभूमि रसातल को नहीं पहुँची है और उसमें पुनरुत्थान की शक्ति आज भी विद्यमान है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का उत्कर्ष उसी समय होगा जब बलिदान और त्याग का अनुपम आदर्श प्रस्तुत करने वाली भारतीय नारी पूज्यास्पद आसन पर बिठाई जायेगी।

स्वामी दयानन्द

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. 30/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३ वाँ वर्ष
अंक-१८

वैदिक स्वराज्य

ऋग्वेद में "स्वराज्य" की महत्ता प्रदर्शित करते हुए अनेक प्रेरक मन्त्रों द्वारा "स्वराज्य" को "सु-राज्य" अथवा कल्याणकारी राज्य बनाए जाने का सुन्दर प्रावधान है। इन मन्त्रों में निर्दिष्ट शिक्षा भूमण्डल के किसी भी भूभाग पर समानरूप से चरितार्थ होती है। इन शिक्षाओं पर आचरण करने से ही कोई भी राष्ट्र सुखी व समृद्ध हो सकता है। आज की परिस्थिति में भारत के शासक वेदप्रतिपादित इन निर्देशों के पालन का यदि हृदय पूर्वक संकल्प लें तो कोई आश्चर्य नहीं कि हमारा राष्ट्र अत्यल्प समय में ही स्वराज्य से सु-राज्य में परिणित हो सकता है।

राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाला राष्ट्र का अधिपति कैसा हो?

(1) इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् ।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निःशशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् ।।

राष्ट्र के अधिपति अथवा नायक को बलशाली, शस्त्रास्त्र विद्या से सम्पन्न, सूर्य की भाँति देदीप्यमान तथा चारों वेदों का ज्ञाता होना चाहिए। उसे अपने पराक्रम से निरन्तर स्वराज्य को ऐश्वर्ययुक्त करने, अन्याय आदि कुत्सित कृत्यों को दूर भगाने तथा अनुकूल आनन्द की वृद्धि करने में सदा यत्नशील रहना चाहिए।

(2) स त्वामदद् वृषा मदः सोमः श्येनाभृतः सुतः ।
येना वृत्रं निरद्भ्यो जघन्थ वज्रिन्नोजसार्चन्ननु स्वराज्यम् ।।

राजा को अपनी नीतियों और निर्णयों को परिपालन कराने में वज्रतुल्य होना चाहिए। शस्त्रास्त्र विद्या से सुसम्पन्न तथा मेघों को विदीर्ण करने वाले सूर्य की तरह उसे अपने अपूर्व पराक्रम से प्रजा पर आने वाले संकटों और शत्रु के आतंकों को छिन्नभिन्न कर अपनी प्रजा का परिपालन करना चाहिए।

(3) इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम् ।
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ।।

राजा को स्वराज्य की प्रतिष्ठा के लिए कूटनीति का अवलम्बन लेना चाहिए। राष्ट्र में मायावी, कपटी तथा छद्मवेशी व्यक्ति भी होते हैं। ये राष्ट्र की शक्ति को भीतर ही भीतर क्षीण करते रहते हैं। इन दुष्ट शक्तियों को समाप्त करने के लिए राजा को दण्ड ग्रहण करना चाहिए, जिससे ये विपरीत आचरण में प्रवृत्त न हो सकें। निर्धारित राज्य-नियमों का स्वयं पालन करते हुए प्रजा से कर आदि का उचित रूप में दान लेना राजा का कर्तव्य है।

(4) नमो ब्रह्मणे, ब्रह्मण एव तत्क्षत्रं वशमेति, तद्यत्र वै ब्राह्मणः ।
क्षत्रं वशमेति, तद्राष्ट्रं समृद्धं तद्वीरवदाह अस्मिन् वीरो जायते ।।

ऐतरेय

वेद में निर्दिष्ट शिक्षाओं पर अनुगमन करने वाला धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, सत्यवादी, लोकहितचिन्तक विद्वान् जिस राष्ट्र का मार्गनिर्देशन करते हैं उसी राष्ट्र में सच्चे वीर पुरुष जन्म लेते हैं।

आज हमारे राष्ट्र की बागडोर ऐसे ही वीरवर क्षत्रिय के हाथ में है। परमात्मा उसे राम का शौर्य कृष्ण की कूटनीति और अर्जुन का गाण्डीव प्रदान करें जिससे हमारी मातृभूमि की सीमाएं सदा-सदा के लिए सुरक्षित रहें।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥

—— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

—— कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ · ज्येष्ठ कृष्ण-३ संवत् २०४७ वि.

१३ मई १९९० दयानन्दाब्द-१६६

सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

ओ३म् सम्पादकीय

राष्ट्रीय एकता का मूल- "अंग्रेजी हटाओ"

किसी भी देश की आत्मा, वहाँ की संस्कृति होती है। संस्कृतिविहीन राष्ट्र निष्प्राण है। संस्कृति का आधार वे संस्कार होते हैं जिनका प्रचार एवं प्रसार किसी भाषा के माध्यम से होता है और जिसमें पल्लवित पुष्पित होकर उस राष्ट्र की संस्कृति देश के कण-कण में सदा सदा के लिए समाहित हो जाती है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता विश्व की मानवीय आदि संस्कृति है जिसका प्रेरणा के स्रोत हमें वेदों में प्राप्त होते हैं। वेदों की रचना जिस भाषा में हुई थी वह वैदिक भाषा थी। संस्कृत उसी की देन है जिसे समय-समय पर संस्कृत के मनीषियों, वैयाकरणिकों ने अपने नियमों में ढालकर व्याकरण सम्मत विश्व की सर्वोत्तम स्थिर भाषा के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया। एक समय था जब संस्कृत भारत की ही नहीं अपितु विश्व की एक मात्र बोली जाने वाली, पढ़ी लिखी जाने वाली, साहित्य सर्जना करने वाली मानवभाषा थी। भारत की तो वह जनभाषा राष्ट्रभाषा ही थी। साधारण लकड़हारा भी "भारं न बाधते राजन् यथा बाधति बाधते" कहकर राजा भोज की सभा को सम्बोधित करता था। मन्डन मिश्र के द्वार पर शुकशुकी संवाद को संस्कृत भाषा में सुनकर यही आभास होता है कि संस्कृत यहाँ किसी समय जड़चेतन और पशुपक्षियों तक समाई हुई थी। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक आर्यजाति के समस्त संस्कार आज भी संस्कृत में ही होते हैं और इसे समस्त देश में पूज्यनीय भाषा के रूप में स्वीकारा जाता है। इस भाषा ने विश्व को अपने साहित्य द्वारा अगणित मानवकल्याणकारी उपदेश दिए हैं जो मानवीय इतिहास की अनमोल धरोहर हैं।

कालान्तर में बोलचाल, वातावरण की भिन्नता तथा आर्यों के आलस्य एवं प्रमाद के कारण "भारोपीय" समुदाय में भिन्न भिन्न भाषाएं विश्व में विकसित होने लगीं और उनके अनेक समूह बन गये। आज रोमन लिपि में लिखी जाने वाली पाश्चात्य देशों की अनेकों भाषाओं तथा पूर्वी मध्य तथा दक्षिण एशिया के भूभागों में बोली जाने वाली समस्त भाषाओं का उद्गम संस्कृत ही है। इन भाषाओं में विद्यमान अनेक तत्सम और तद्भव शब्द इसके प्रमाण हैं।

हमारा लक्ष्य अन्ततः इसी भाषा को उसके पूर्वगौरव के सम्माननीय पद पर आसीन कराना है किन्तु इसे प्राप्त करने के लिए हमें अभी बहुत समय और बलिदान की आवश्यकता पड़ेगी। आज तो निश्चितरूप से कहा जा सकता है कि संस्कृत के बाद सारे राष्ट्र को एकसूत्र में बाँधने का कार्य हिन्दी भाषा ने ही किया है। यह भाषा राष्ट्र की समादृत राष्ट्रभाषा बन चुकी है और अपनी वैज्ञानिक वर्णमाला के कारण एशिया तथा विश्व के अन्य भूभागों में लोकप्रिय होती जा रही है। स्वामी दयानन्द इस बात को जानते थे इसी लिए उन्होंने संस्कृत में भाषण, वार्तालाप को छोड़कर हिन्दी को माध्यम बनाया और सत्यार्थप्रकाश आदि अनेकों ग्रन्थों की रचना हिन्दी में की।

भारत ने पराधीनता के काल में जहाँ वैदेशिक संस्कृति के चिन्हस्वरूप अनेकों परिवेशों को ग्रहण किया वहीं उसने दासता की प्रतीक अंग्रेजी को भी अपने मानसपटल पर बहुत प्यार से चिपकाए रखा है। शायद अंग्रेजी परिवेश में ऐसा भारतीय, अंग्रेजी बोलकर अपने को बहुत गौरवान्वित समझता है परन्तु वास्तविकता यही है कि वह अपनी दास मनोवृत्ति को उजागर कर रहा है। आर्यसमाज किसी भाषा का विरोधी नहीं है किन्तु वह भारतीय जनमानस को यह अवश्य हृदयगंम करा देना चाहता है कि हमारी अपनी हिन्दी भाषा में वह सब कुछ है जिसे तुम अंग्रेजी में ढूँढते हो। उसकी गहराई में जाने पर तुम्हें वह सब कुछ मिल जायेगा जो अंग्रेजी में ढूँढने पर भी नहीं मिल सकता। जिस प्रकार आध्यात्मिक पक्ष में हमारी प्रभु से यही प्रार्थना रहती है कि पहिले "दुरितानि परासुव" दुर्गुणों को दूर कीजिए तब "यद् भद्रं तन्न आसुव" जो कल्याणकारी है उसे प्राप्त कराइए इसी प्रकार भाषा के क्षेत्र में भी हमारा यह आह्वान है कि अंग्रेजी का मोह हटाए बिना हिन्दी का प्रवेश नगण्यवत् ही रहेगा।

अतः आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के "अंग्रेजी हटाओ" अभियान को उसी प्रकार दृढ़ता से "परासुव" करने में अपनी शक्ति लगाइए तभी हिन्दी का सम्मान बढ़ेगा और यदि हिन्दी का सम्मान बढ़ता रहा तो हम एक दिन अपने अन्तिम लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। ◻

● आर्यसमाज खुटार (शाहजहाँपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक 20 से 23 मार्च तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। स्थानीय जनता में वैदिक धर्म के प्रति जागृति उत्पन्न हुई।

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश की सार्वदेशिक [illegible] सभा के खिलाफ याचिका रद्द।

श्री रामचन्द्र राव कल्याणी ने आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान की हैसियत से दिनांक 25-8-89 को सिविल कोर्ट हैदराबाद में यह अस्थाई स्थगन आदेश प्राप्त किया था कि उनकी सभा को भंग करके तदर्थ समिति बनाने से सार्वदेशिक सभा को रोका जाए। उन्होंने सार्वदेशिक सभा और सभाप्रधान श्री स्वामी-आनन्दबोध सरस्वती को प्रतिवादी बनाया।

इस केस में माननीय न्यायाधीश श्री विनोद कुमार देश पाण्डेय ने दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों को गम्भीरता पूर्वक सुनने के बाद सत्यासत्य की घोषणा करते हुए 30 मार्च 1990 के अपने आदेश में इस स्थगन आदेश को रद्द करते हुए तथा याचिका को खारिज करते हुए कुछ मुख्य टिप्पणियां इस प्रकार कीं:-

1- दोनों पक्षों के तथ्यों से ऐसा लगता है कि वादी आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के प्रधान तथा प्रतिवादी नं0-2 "स्वामी आनंद बोध सरस्वती" के बीच मुकाबले की भावना है। जबकि ऐसा कोई भी तथ्य सामने नहीं आया जिससे यह साबित होता हो कि प्रतिवादी नं0-2 "स्वामी आनन्दबोध सरस्वती" सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए योग्य नहीं हैं।

2- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सभी राज्य स्तरी प्रतिनिधि संस्थाओं की नियंत्रक संस्था है, जिसमें निःसन्देह वादी अर्थात् आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश भी शामिल है।

3- आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र-प्रदेश को भंग करके तदर्थ समिति बनाने संबंधी स्वामी जी के अनुमानित दौरे का जिक्र करते हुए माननीय न्यायाधीश ने कहा कि रिकार्ड में कोई भी ऐसा तथ्य यह साबित नहीं करता कि प्रतिवादी सार्वदेशिक सभा वादी के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने वाली है। भविष्यत खतरों के केवल अनुमान के आधार पर किसी प्रकार का स्थगन आदेश किसी व्यक्ति को नहीं मिलना चाहिए।

4- विशेष रूप से जहां संस्था के हितों की बात आती है। माननीय न्यायाधीश ने टिप्पणी करते हुए कहा कि संस्था के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए, अपने निजी हितों को नहीं।

5

सार्वदेशिक सभा की केन्द्रीय कानूनी समिति श्री नन्दकिशोर सिंह एडवोकेट आन्ध्र-प्रदेश का हार्दिक धन्यवाद करती है जिन्होंने अदालत में इस मुकदमें की पैरवी की।

नागालैंड में पूर्ण शराबबन्दी

• प्रो० शेरसिंह प्रधान,—
आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

पूर्वोत्तर अंचल में छोटा सा प्रदेश है नागालैण्ड। इस प्रदेश के अधिकतर लोग ईसाई बन गए हैं। इस प्रदेश में अंग्रेजों के जाने के थोड़े समय बाद ही अशांति आरम्भ हो गई थी और फीजो के नेतृत्व में नागालोगों के एक गिरोह की ओर से बगावत चलती रही। फीजो लन्दन में बैठे हुए बगावत चलाते रहे और शांति स्थापना के लिए वहां हमारी सेना तैनात रही। भूमिगत बागी गिरोह एक-एक करके मुख्य धारा में आए और चुनावों की प्रक्रिया में शामिल होते रहे। आज भी हिंसक वारदातें हो जाती हैं, परन्तु काफी नियंत्रण में हैं।

नागालैण्ड के पास ही इस से भी छोटा प्रदेश है मिजोरम। मिजोरम में भी भूमिगत रहकर कुछ विद्रोह करते रहे, उनको नियंत्रित करने तथा वहां की जनता को देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिये सेना ने महत्वपूर्ण भूमिका (दा) की। यहां से विद्रोही नेता लालडेंगा अपने साथियों समेत मुख्य धारा में आ गए और मुख्यमंत्री भी बन गए। परन्तु दूसरे चुनाव में हार गए और हार का एक कारण यह भी था कि वे चर्च का अनुशासन और प्रभुत्व पूरी तरह मानने को तैयार नहीं हुए।

ईसाई मिशनरियों और चर्च की गतिविधियां आज भी संदेह के घेरे से बाहर नहीं निकल पाई हैं और अलगाववादी गतिविधियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समर्थन वे करते रहे हैं और आज भी अपने ढंग से कर रहे हैं। परन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि वे गरीब जनता की समस्याओं का समाधान करने के लिये साधन भी जुटाते हैं और नम्रता से सेवा भी करते हैं। पश्चिम के देशों से बड़ी मात्रा में साधन प्राप्त करके उनके द्वारा गरीब बच्चों की शिक्षा और गरीब जनता की चिकित्सा का समुचित प्रबंध वे करते हैं और फिर धर्म परिवर्तन भी कर डालते हैं। पूर्वोत्तर अंचल में बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन करके लाखों गरीब लोगों को ईसाई बनाया है और बनाते चले जा रहे हैं। अरुणाचल प्रदेश में धर्म परिवर्तन को रोकने के लिये वहां की सरकार ने कुछ कदम उठाये हैं परन्तु वहां भी मिशनरी किसी न किसी कार्यक्रम को लेकर घुसने का रास्ता निकाल रहे हैं।

शराब और नशीले पदार्थों के नित्यप्रति बढ़ने हुये सेवन के कारण लोगों का स्वास्थ्य तथा चलन बिगड़ता जा रहा है। शराब और दूसरे नशीले पदार्थों का सेवन अब इतना बढ़ चुका है कि उसके कारण बच्चों और महिलाओं का ही नहीं पूरे परिवारों का जीवन नरक के समान हो गया है। काम करने की शक्ति का ह्रास होने से कमाई तो घटता जाती है और घटी हुई आमदनी का अधिक से अधिक भाग शराब और नशीले पदार्थों की नजर हो जाता है। ऐसी अवस्था में बच्चों के लालन-पालन और पढ़ाई आदि के लिये कुछ बचता ही नहीं और वे भूख और बीमारियों का शिकार बन जाते हैं। महिलाएं कुपोषण का शिकार बनती है उनकी भी कमाने की शक्ति क्षीण हो जाती है और उनको अपना और बच्चों का पेट भरने के लिए सब मर्यादाएं तोड़कर नारकीय जीवन भुगतना पड़ता है। बच्चों को भी जीवित रहने के लिए समाज विरोधी तत्वों की छत्रछाया में सब प्रकार के अपराध करने के लिए विवश होना पड़ता है। आज हमारा समाज नशाखोरी का शिकार होकर बुरी तरह त्रस्त है और इस दुर्दशा से निकलने के लिए बेताब है। निकलें कैसे, जब सरकारें राजस्व बटोरने के लिए उन से भी ज्यादा बेताब हो चुका है। नशीले पदार्थों का उत्पादन करने वाले और उनका वैध और अवैध व्यापार और धन्धा करने वाले लोग सरकारों पर हावी हो चुके हैं।

पिछले दिनों मादक द्रव्यों से विश्व की पथभ्रष्ट जनता को बचाने के लिए राष्ट्रसंघ का 4 दिन का विशेष अधिवेशन न्यूयार्क में बुलाया गया जिसमें 150 से अधिक देश शामिल हुए। वहां पता चला कि सबसे अधिक पैसा तो हथियारों पर खर्च होता है जिसकी मात्रा 600 अरब-डालर (10 हजार अरब रुपए) है और दूसरे नम्बर पर मादक द्रव्यों की खपत पर जो 500 अरब डालर (8500-अरब रुपए) बनता है। यह तो तब है जब शराब को इसमें शामिल नहीं किया गया है। पश्चिम देश ही क्या भारत भी आज शराब को मादक द्रव्यों की सूची में से निकाल चुका है। दूसरे मादक द्रव्यों के व्यापार और सेवन पर तो कड़ी बन्दिश लगाने के लिए सख्त कानून बनाया गया है परन्तु शराब के सेवन पर कोई बन्दिश नहीं, क्योंकि इस से राजस्व कमाया जा रहा है। महात्मा गांधी का नाम लेकर राज करने वाले भारत के सभी राजनैतिक दल आज गांधी जी को तो भुला ही बैठे हैं, साथ ही संविधान के नीतिनिर्देशन के सिद्धान्तों को भी।

ईसाई मिशनरियों ने जनता की नब्ज को पकड़ लिया है। वे शिक्षा और चिकित्सा के माध्यम बनाकर गरीब जनता के दिलों को जीत कर उनका धर्म परिवर्तन करते रहे हैं। अब उन्होंने यह समझ लिया है कि यदि मद्यनिषेध नहीं किया गया तो उनकी शिक्षा और चिकित्सा के माध्यम से की हुई सेवा शराब के समुद्र में बह जाएगी। इसलिए उन्होंने मिजोरम और नागालैण्ड में शराबबन्दी के कार्यक्रम को प्राथमिकता दी है। यह प्रसन्नता की बात है कि उनके प्रयास के फलस्वरूप नागालैण्ड में पूर्ण शराबबन्दी लागू कर दी है। मिजोरम में वे ऐसा ही करवा देंगे और शायद दूसरे प्रदेशों में भी जहां उनका प्रभाव है। इतना ही नहीं कश्मीर से उजड़कर आए हुए नवयुवकों ने अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति न होने की हालत में ईसाई धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की है। ताकि उनकी वे आवश्यकताएं पूरी हो सकें, क्योंकि उनकी नजर सेवापरायण ईसाई मिशनरियों पर ही गई हैं।

प्रश्न उठता है कि तथाकथित हिन्दू धर्म को बचाने का दावा करने वाली और "गर्व से कहो कि हम हिन्दू हैं" का नारा लगाने वाली संस्थाओं की तरफ कश्मीर के उजड़े हुए नवयुवकों की नजर क्यों नहीं गई? उत्तर बहुत सरल है। हिन्दू हैरान तो दे सकता है, किसी को गले नहीं लगा सकता, तिरस्कार तो वह सबका कर सकता है, आदर सत्कार करके अपना नहीं सकता। अपने सिद्धान्तों का बखान तो बड़ी सुन्दर भाषा में कर सकता है परन्तु उस पर अमल नहीं कर सकता, इसलिए अपने ही लोगों में उसकी विश्वसनीयता कम होती जा रही है।

कट्टरपन्थी कहलाने वाले ईसाई और मुसलमान कहते हैं तो कुछ करते भी हैं। पाकिस्तान समेत अनेक मुस्लिम राष्ट्रों ने शराब को हराम कहने वाले इस्लाम धर्म के अनुयायी होने के नाते शराब बन्द कर रखी है। कट्टरपन्थी मुस्लिम संगठन शराबबन्दी और दूसरी मर्यादाओं के पालन पर जोर देते हैं। हिन्दुओं के अन्दर ही सिख गुरुओं पर विश्वास करने वाले कुछ कट्टरपंथी नवयुवक चाहे और बुरी तरह भटके हुए हैं परन्तु शराबबन्दी और दूसरी सामाजिक मर्यादाओं के पालन करने पर जोर दे रहे हैं। परन्तु अपना समाज अपने बच्चे अपनी बहु-बेटियां और अपने परिवारों की बर्बादी देखकर भी हिन्दुओं के तथाकथित धर्माचार्य ऊट-पटांग बातें बोलकर समाज को ऊँच-नीच में बांटने और कुप्रथाओं को जीवित रखने की बात तो खूब बोलते हैं परन्तु क्या मजाल कि एक शब्द भी शराबबन्दी के लिए बोलें। क्या छुआछूत और जन्म के आधार पर जात-पात की तरह शराब पीना भी उन्होंने हिन्दू धर्म का अंग मान लिया है? यदि नहीं तो कट्टरपंथी ईसाई और मुसलमान धर्माचार्यों की तरह वे भी शराबबन्दी के विरुद्ध जहाद क्यों नहीं छेड़ते?

आर्यसमाज ने इस कार्यक्रम को अपने तीन सूत्री कार्यक्रम में महत्व तो दिया है, परन्तु वह अभी तक देश के स्तर पर केवल प्रस्तावों तक ही सीमित है।

क्या आर्यसमाजी नागालैण्ड के निर्णय से प्रेरणा लेकर इस आन्दोलन को देशव्यापी बनाकर मैदान में नहीं उतरेंगे? समय आ गया है जब आर्यसमाजी लोकशक्ति को जगाकर राष्ट्र को शराब के समुद्र में डूबने से बचाएं। मैं समुद्र इसलिए कह रहा हूं कि जहां पीने का पानी लोगों को उपलब्ध नहीं, शराब वहां भी पहुँची हुई है। ◻

वातावरण का प्रभाव: हमारा कर्तव्य

• आ० प्रफुलचन्द आर्य प्रधान,
आ० स० लालगंज रायबरेली

व्यक्ति जिस वातावरण में पलता है जैसे उसके साथी संगती होते हैं वैसा ही वह बन जाता है। यही कारण है कि हमारे देश में बढ़ईगीरी सोनारी, लोहारी, एवं चित्रकारी आदि सिखाने के लिए आज की भाँति प्राचीनकाल में कोई विद्यालय या कालेज नहीं होते थे परन्तु कलाकौशल की दृष्टि से हमारा देश सर्वोच्च स्तर पर था। कौन इतिहास का विद्यार्थी नहीं जानता है कि प्राचीनकाल में हमारे देश के व्यापारी लोहे, कपड़े, सोने, लकड़ी एवं रसायन आदि की बनी वस्तुओं को जलयानों में लादकर सुदूर रोम तक ले जाया करते थे और बदले में वहीं से सोना, जवाहरात तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुयें लाकर भारत को मालामाल कर देते थे। इसी से भारत विश्व में "सोने की चिड़िया" के नाम से विख्यात था। इसका कारण यह था कि उस समय हमारे घरों में ऐसा वातावरण होता था कि बालक अपनी पैतृक कला को नित्यप्रति देखते-देखते तत्पश्चात अभ्यास करते-करते स्वतः उसमें प्रवीण हो जाता था। इसी से पीढ़ीदर—पीढ़ी अच्छे सोनार का लड़का अच्छा सोनार, अच्छे बढ़ई का लड़का अच्छा बढ़ई, अच्छे लोहार का लड़का अच्छा लोहार तथा अच्छे चित्रकार का लड़का अच्छा चित्रकार होता था। इतना ही नहीं एक अच्छे पंडित का लड़का अच्छा पंडित तथा एक वीर क्षत्री का लड़का एक वीर क्षत्रिय होता था। इसके विपरीत ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जबकि घर में अथवा साथी संगतियों के पास पैतृक वातावरण न मिलने के कारण व्यक्ति अपने पैतृक कला, कौशल अथवा गुण से वंचित होकर अन्य क्षेत्रों में प्रवेश कर वहाँ के वातावरण के अनुसार ढल जाता है। उदाहरण के लिए परशुराम, द्रोणाचार्य, अश्वस्थामा ब्राह्मणों के पुत्र थे परन्तु ब्राह्मणोचित वातावरण में न पलने के कारण वे महान पंडित नहीं बन सके परन्तु क्षत्रियोचित वातावरण में पलने के कारण महान योद्धा बनने में सफल रहे।

इसी प्रकार भगवान कृष्ण का जन्म यद्यपि क्षत्रिय माता-पिता से हुआ था परन्तु बाल्यकाल में उनका पालनपोषण ग्वालों के यहां होने के कारण गोपाल के रूप में भी विख्यात हुए और उनमें क्षत्रियोचित गुण तभी विकसित हुए जबकि वे मथुरा के यादवों के सम्पर्क में आये।

वर्तमानकाल का एक उदाहरण

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में मेरे पास अपनी आँखों का देखा एक बड़ा रोचक उदाहरण है। एक सज्जन एक मेडिकलस्टोर्स में लगभग पच्चीस वर्ष से सेवारत हैं। उनके अठ्ठारह, चौदह तथा दस वर्ष के तीन पुत्र हैं। उनका नियम था कि जब वे काम पर आते थे तो किसी न किसी बच्चे को वे मेडिकलस्टोर्स में अवश्य लाते थे। परिणाम हुआ कि उनके सभी बच्चों को बिना किसी प्रशिक्षण के दवाईयों तथा उसके व्यापार के संबंध में बड़ा अच्छा ज्ञान हो गया। जिससे अच्छे से अच्छे स्नातक उन बच्चों की योग्यता पर आश्चर्य करते हैं।

मेरा अपना निजी उदाहरण

आज मैं जो स्वामी दयानन्द-सरस्वती का अनुयायी तथा आर्यसमाज का आर्यसभासद तथा सक्रिय कार्यकर्ता हूँ वह भी वातावरण तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं तथा उनके विद्वानों के सत्संगों में भाग लेने का परिणाम है। मेरे पिता जी एक कट्टर पौराणिक थे। वह नित्यप्रति दोनों पहर स्नानादि करके पूजा किया करते थे। वैष्णव होने के कारण भगवान राम की मूर्ति की पूजा, करताल बजाकर उनका कीर्तन करना, हनुमानचालीसा का पाठ उनकी पूजा की क्रियायें थी। इनके अतिरिक्त हर पूर्णमासी को गंगास्नान, हर एकादशी को व्रत, अनेक तीर्थों की यात्राएं, नित्यप्रति मन्दिरों के दर्शन, भगवान का भोग लगाकर भोजन करना तथा व्यावहारिक जीवन में छुआछूत, तन्त्रमन्त्र, जादूटोना, श्राद्धतर्पण आदि में आस्था उनके कट्टर पौराणिक होने के प्रमाण थे। परन्तु उनके पौराणिक जीवन का मेरे ऊपर उनका प्रभाव नहीं पड़ा जिसका कारण उनका उस समय परदेश में रहना था जबकि मेरी बाल्यावस्था थी।

बल्कि उनके स्थान पर मेरे ऊपर मेरे चाचा का अधिक प्रभाव पड़ा जिनके संरक्षण में मैं पालापोसा गया। वे कट्टर आर्यसमाजी, स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री तथा सुधारवादी विचारों के व्यक्ति थे। वे मेरी बाल्यावस्था में प्रायः मुझे आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों तथा वार्षिकोत्सवों में लेजाया करते थे, घर के वातावरण तथा नैत्यिक कार्यों पर भी उनके विचारों की छाप रहती थी, उस समय वो भजनों पदेशकों पंडित श्याम शर्मा तथा विनायकराव तथा महोपदेशक पं० कालीचरन आलिमफाजिल कानपुर वालों के विचार मुझे बहुत प्रभावित करते थे। विनायकराव फतेहपुर जिले के रहनेवाले थे जो कि करताल बजा-बजा कर व्यंग्यात्मक शैली में कुरीतियों पर प्रहार करते थे तथा आर्यसमाजी विचारों तथा स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं को प्रभावशाली शैली में प्रचार करते थे। पंडित श्याम शर्मा पंडित प्रकाशचन्द्र तथा पं० नन्दलाल ऐसे अखिलभारतीय स्तर के श्रेष्ठ भजनोपदेशक थे जिनकी वाणी तथा संगीत में जादू था, जब वे कार्यक्रम प्रस्तुत करते थे तो समा बांध देते थे और श्रोतागण उनकी ओर एकटक देखा करते थे। 1947 के पहले का उनका यह गीत "चाहे पाकिस्तान भले बन जाये पर पाकिस्तान नहीं होगा" अभी भी मेरे कानों में गूंजता है। प० कालीचरन उच्चकोटि के विद्वान, फारसी एवं अरबी के प्रकाण्ड पंडित थे, कुरान के विषय में उनका विशेष ज्ञान था तथा वे सुप्रसिद्ध तर्कशास्त्री थे। इसलिए वे शंकासमाधान कार्यक्रम में भाग लेने के लिए विशेषरूप से बुलाये जाते थे। मौलवियों के साथ उनका कार्यक्रम विशेष रोचक होता था जिसके शास्त्रार्थ को सुनने के लिए भारी भीड़ एकत्र होती थी तथा कोई भी मौलवी उनके सामने नहीं टिक पाता था।

तात्पर्य यह है कि मैं जो आज आर्यसमाजी हूँ वह उपरोक्त मेरे बाल्यकाल के वातावरण का ही प्रभाव है। उस समय मेरे मन में आर्यसमाजी विचारों के जो अंकुर जम गये थे उनका ही प्रभाव है कि आज मैं एक कट्टर आर्यसमाजी तथा स्थानीय आर्यसमाज का प्रधान हूँ। मैंने अपने प्रयास से न केवल यहां के आर्यसमाज के मन्दिर का जीर्णोद्वार ही कराया अपितु आर्यसमाज के संगठन को इस स्थिति में ला दिया कि उसके साप्ताहिक अधिवेशन, पर्वों के कार्यक्रम तथा वार्षिकोत्सव नियमित रूप से होते हैं।

हमारा कर्तव्य

आज आर्यसमाज के विचारों एवं कार्यक्रमों का उतनी तेजी से प्रचार नहीं हो रहा है जितना कि आजादी के पूर्व था। इसका कारण यही है कि हम नई पीढ़ी को तथा छोटे-छोटे बच्चों को अपने कार्यक्रमों की ओर आकर्षित करने में असफल सिद्ध हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि आर्यसमाज के पदाधिकारी, कार्यकर्ता, अनुयायी तथा प्रचारक आदि आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों तथा वार्षिकोत्सवों को नियमित रूप से कराने तथा अन्य कार्यक्रमों को आवश्यकतानुसार आयोजित कराने की ओर ध्यान देकर उनमें अपने घर तथा पड़ोसियों के बच्चों को लाने का हरसम्भव प्रयास करें। यदि हम उन्हें इनमें लाकर उनके कच्चे मस्तिष्कों पर आर्यसमाजी विचारों की छाप डालने में सफल हुए तो निश्चय ही आर्यसमाज को सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने में सफलता मिलेगी क्योंकि उपरोक्त प्रस्तुत विचार इस बात के प्रमाण हैं कि बच्चा जिस वातावरण में रखा जाता है वैसा ही बन जाता है।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गोसाईंगंज (फैजाबाद) नगर आर्यसमाज आर्यवानप्रस्थ सन्यास आश्रम वैदिक गुरुकुल का 21वाँ वार्षिकोत्सव दि0- 27 से 29 मई 1990 तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। इस अवसर पर अनेक विद्वान सन्यासी उपदेशक भजनोपदेशक पधार रहे हैं उत्सव में सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठावें।

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में 15 से 22 मई तक महात्मा जगदीश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में लग रहा है योग के प्रेमियों को सादर निमन्त्रण है। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर शिविर को सफल बनावें।

— सोमानन्द सरस्वती
वेद प्रचारक मण्डल दिल्ली-5

अंतिम हिन्दू

श्री पुरुषोत्तम सिंह योग,
लखनऊ

एक समय भयंकर बाढ आई। लोग जान बचाने के लिए ऊँची जगहों पर पेड़ों पर, और मकान की छतों पर जा बैठे। फिर उन लोगों को बाढ़ से निकालने का कार्य प्रारम्भ हुआ। कुछ साहसी लोग तैर-तैर कर उन बाढग्रस्त लोगों के पास जाते और उन्हें सहारा देकर बाहर निकाल ले जाने ।

स्थानीय गिरजाघर के पादरी भी चर्च की गगन चुम्बी मीनार पर चढ़े बैठे थे। कुछ लोग तैर कर उनके पास पहुँचे और उन्हें बाहर निकालने का प्रस्ताव किया। "मुझे अपने परमेश्वर पर विश्वास है" पादरी ने कहा। "वह मुझे बचायेगा"। वह लोग चले गये

पानी और बढ गया तो नावें लाई गई। नाव लेकर एक नाविक पादरी के पास पहुँचा। "सम्मानित पिता। पानी बढ रहा है। नदी की धारा भी तेज होती जा रही है। आप नाव में उतर आइये। अभी समय है। सब लोग निकाले जा चुके हैं। आप ही शेष हैं,"। उसने पादरी को आवाज लगाई। पादरी ने चिल्लाकर कहा 'क्या तुझे प्रभु में भरोसा नहीं है? मुझे उसका पूरा भरोसा है। वह मुझे मरने नहीं देगा।" नाविक चला गया ।

पानी और बढ गया। धारा तेज हो गयी। अब नाव का जाना भी दुष्कर हो गया। पादरी मीनार पर शांति पूर्वक बैठा प्रभु का स्मरण कर रहा था। शासन को पता चला तो तुरन्त एक हेलीकाप्टर पादरी को निकाल लाने के लिये भेजा गया। हेलीकाप्टर चालक ने एक रस्सी पादरी की ओर गिराई और चिल्ला कर कहा "पिता। रस्सी कस कर पकड लो। मैं आपको ऊपर खींच लेता हूँ। रात होने वाली है। सूर्योदय से पहले अब दूसरा कोई साधन उपलब्ध न हो सकेगा।" पादरी को उन लोगों के अविश्वास पर बहुत क्रोध आया। उसने कहा "कैसा मूर्ख है तू? तू मुझे क्या बचायेगा? मेरा परमेश्वर क्या मुझे नष्ट हो जाने देगा। मैंने जीवन भर उसका स्मरण किया है। मुझे उसमें पूर्ण विश्वास है।" हेलीकाप्टर वापिस चला गया।

रात्रि में नदी की तेज धारा ने उस मीनार को धराशायी कर दिया। पादरी मर कर परमात्मा के सामने पहुँचा। उसने दोनों हाथ उठाकर कहा, "पिता मैंने सदा तेरा स्मरण किया। कोई पाप नहीं किया। तुझ पर पूर्ण विश्वास किया और तूने मुझे नदी में डूब जाने दिया। संसार में कैसी बदनामी होगी तेरी ? सब कहेंगे भगवान ने उसकी रक्षा नहीं की। जिसने केवल उसी में विश्वास रखा।"

परमेश्वर हँसा और कहा, "पुत्र। मेरी बदनामी की चिंता मत कर। मैंने तुझे बचाने को तैराक और गोतेखोर भेजे। फिर नाव भेजी फिर एक हेलीकाप्टर भेजा। बता मैं और क्या करता? आप हँसेंगे और कहेंगे पादरी मूर्ख था। उसे बचाने को तीन सहायक तो भेजे गये। परमात्मा और क्या करता? यह तो मात्र गल्प कथा है। किन्तु इससे भी विस्मयकारी एक सत्यकथा और भी है। यह एक पादरी की कहानी नहीं है यह हमारी आपकी कहानी है। यह करोड़ों लोगों के एक समाज की कहानी है। हिन्दू समाज की।

जब संसार का अंतिम हिन्दू भगवान के सामने पहुँचा तो पादरी की तरह उसने भी दोनों हाथ उठाकर आरोप लगाया 'पिता। मेरी जाति ने तेरे लिये विशाल मंदिर बनाये। तेरी सोने हीरों की मूर्तियाँ स्थापित कीं। करोड़ों रुपये के सोने और अलंकारों से तुझे ढक दिया। करोड़ों रुपये के प्रसाद के भोग तुझे लगा दिये। रात दिन तेरे नाम के धर्म-ग्रन्थों के अखण्ड पाठ किये। तूने विश्राम करने के लिये हमें रात्रि दी थी। हमने उसमें भी जाग-जाग कर निरंतर तेरे कीर्तन किये। न स्वयं सोये न पडोसियों को सोने दिया। कैसा अद्भुत प्रचार किया तेरे नाम का? मेरी जाति के करोड़ों मनुष्यों ने तेरी भक्ति में शरीर सुखा डाले। भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक तपती गर्मी में कँपकँपाती बर्फीली ठंड पृथ्वी पर लेट-लेट कर तेरे धामों की तीर्थ यात्रा की। और तूने पहले मेरी जाति को 1200 वर्ष तक विधर्मियों का गुलाम बनाया। और अंत में मेरी जाति का नामों निशान ही पृथ्वी से मिटा दिया। तूने ऐसा क्यों किया? तूने विधर्मी विदेशी आततायियों का और आक्रान्ताओं का साथ दिया और अपने भक्तों की रक्षा नहीं की? कहाँ गया तेरा वह प्रण कि मेरे भक्त का नाश कभी नहीं होता।

परमेश्वर उस हिन्दू का आरोप सुनकर मंद-मंद मुस्कुराते रहे। फिर बोले, 'पुत्र मैं अपने भक्तों की रक्षा उनके शत्रुओं से तो कर सकता हूँ किन्तु यदि वह स्वयं ही अपने शत्रु बनकर अपना विनाश करने लगे तो मैं क्या करूँ। कृष्णवंशी यादवों को किसी ने नष्ट नहीं किया था। वह आपस में लडकर ही नष्ट हो गये थे। सुनोगे हिन्दुओं की रक्षा के कितने उपाय मैंने किये कितने साधन उन्हें उपलब्ध कराये?

"सुनो। मैंने तुम लोगों को पूरे संसार का अनुपम भू-भाग दिया। किसी भी किसी सम्पदा का नाम लो जो उस देश की धरती के नीचे, पहाड़ों अथवा समुद्र में न मिलती हो। ऐसी उपजाऊ भूमि दी जिसमें सभी वनस्पतियाँ वृक्ष, फल, ईंधन और श्रेष्ठ इमारती लकड़ी पैदा होती है। नदियों में और भूगर्भ में इतना जल दिया कि जिसको देखकर मनुष्य क्या देवता भी ईर्ष्या करें । इतना ही नहीं मैंने उसे सहज सुरक्षित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। संसार का सब से ऊँचा और विशाल पर्वत उत्तर में और तीन ओर से समुद्र उसकी रक्षा करता है। बोलो इससे अधिक भौतिक सम्पदा मैं तुम्हें क्या देता?"

भगवान कहते गये' अब सुनो ज्ञान विज्ञान और नीति की बातें। मैंने तुम्हें वेदों के रूप में अपनी कल्याणमयी वाणी दी और तुम्हें सावधान किया "पुत्रों। यह मेरी कल्याणमयी वाणी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र भृत्य, स्त्रियों तथा अति शूद्रादि जनों के लिये भी है। इससे किसी को भी वंचित मत करना। सभी को इसका ज्ञान कराना।' किन्तु तुमने इसका उल्टा किया। अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिये इसके अर्थों का अनर्थ किया, स्त्री, शूद्र एवम् अंत्यजों को तो इससे पूर्ण वंचित ही कर दिया, स्त्रियाँ इस बात के अभाव में मूढ हो गई। स्त्रियाँ ही माता होती हैं। वही तो संतान की प्रथम गुरु होती हैं। जब वह मूढ हो गई तो तुम्हारी भावी संतति भी पीढ़ी दर पीढ़ी मूढ़ होती गयी। दूसरा कोई समाज है जो लगातार 1200 वर्ष तक गुलाम रहा हो? यह ऐसी मूढता का फल था। इसमें मेरा क्या दोष है। इस ज्ञान, विज्ञान के अभाव में आर्य अनार्य हो गये। स्वयं भारत में धर्म की निराली-निराली व्याख्यायें की गई। धर्म के नाम पर अधर्म का, ज्ञान के नाम पर अज्ञान का बोलबाला हो गया। फिर बताओ तुम किस मापदंड के आधार पर मेरे भक्त रह गये ।

स्वभाववश मुझे तुम पर दया आई। मैंने मनु जैसे स्मृति कार को भेजा उसने तुम्हें राज्य व्यवस्था के नियम बताये। उसने तुम्हें बताया था कि जब सब सोते हैं तब दंड जागता है। इसलिये दुष्टों को दंड देना ही राजधर्म है। जब तक तुम्हारे शासक दुष्टों को निर्मूल करते रहे तुम सुरक्षित रहे। उसने तुम्हें यह भी सावधान किया था कि सभा में प्रवेश करो तो वहाँ तुम्हारे लिए किसी भी मूल्य पर सत्य द्वारा झूठ को उजागर करना सभासद का कर्तव्य तथा धर्म है। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो पापी है। क्या तुमने इस पर आचरण किया? किन्तु तुमने उसके उपदेशों को भी प्रदूषित करने से नहीं छोड़ा। स्वार्थपूर्ति के लिये अपनी ओर से उसमें सैकड़ों श्लोक ऐसे मिला दिये जिसके कारण उससे लाभ होने के स्थान पर स्वयं तुम्हारी जाति को संकट उत्पन्न हो गया।

फिर मैंने सोचा कि कदाचित धर्म और राजनीति की गूढ बातें शिक्षा के अभाव में तुम्हारी जाति की समझ में न आ सकें। मैंने तुम्हारे लिये बाल्मीकि और व्यास जैसे कथाकार भेजे जो इतिहास की घटनाओं को काव्य एवं कथा का रूप देकर तुम्हें स्वरक्षा का मंत्र दे सकें। राम और कृष्ण, भीष्म और विदुर जैसे महापुरुषों को पात्र बनाकर भेजा। किन्तु तुमने उस इतिहास में भी सहस्रों श्लोक मिलाकर मनमानी की। इतिहास को गल्प कथाओं जैसा बनाकर रख दिया।

तब तक कलियुग आ गया। मेरे नाम पर तुम्हारी जाति ने मूक जीवों की हत्या करना प्रारम्भ कर दिया। नारियों को मेरे नाम पर वेश्या बना डाला था। अपने ही समाज के एक बड़े वर्ग को पशुओं से भी बदतर जीवन जीने को मजबूर कर दिया था।

क्रमशः

सुझाव सम्मति
देश को आर्यावर्त्त बनाएँ

० श्री भोलानाथ दिलावरी,
पूर्व प्रधान केन्द्रीय आर्यसभा, अमृतसर

आर्य सन्तान (हिन्दु) की वर्तमान संख्या 70-75 करोड़ है। बहुसंख्यक हैं। परन्तु मत-मतान्तरों में बुरी तरह बंटे होने से दीन-हीन-मृत प्रायः से बने हुए हैं। अल्पसंख्यकों ने इनका जीना दूभर कर रखा है। यहां तक कि इनकी मान्यताओं को पैरों तले रौंद रहे हैं। गो-वध जारी है। हमारे पूज्य श्री राम-श्रीकृष्णजी के जन्म स्थानों पर अधिकार जमा रखा है और छोड़ने को तैयार नहीं। इनके हौसले इतने बढ़े हुए हैं कि वह अब देश को खण्ड-खण्ड करने के लिए जोर-शोर से प्रयत्नशील हैं। एक बार तो बँटवारा भी कर चुके हैं। कारण स्पष्ट है कि आर्य सन्तान- हिन्दु संगठित नहीं। इनकी एक सच्चे "आर्य" धर्म पर आस्था नहीं, फिर एक भाषा और भावनात्मक एकता कैसे हो।

आज से करीब डेढ़ सौ वर्ष पूर्व महर्षि ने इनके इस रोग का निदान कर इनमें एकात्मता लाने का प्रयत्न आरम्भ किया था। और मृत्यु पर्यन्त इस महान् कार्य में जुटे रहे। महर्षि एक थे परन्तु अब तो हम उनकी मानस सन्तान "आर्य" डेढ़-दो करोड़ हैं। हमारी अनेक वृहद संस्थाएं भी हैं। यदि हम आलस्य प्रमाद छोड़ उनके कार्य को दिलो जान से, लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए अग्रसर हो जावें तो कोई कारण नहीं कि कुछ ही काल में सफल मनोरथन हों। महर्षि ने आर्य सन्तान में एकात्मता लाने के लिए स्पष्ट शब्दों में कहा था "पण्डयाजी, जब तक आर्य सन्तान (हिन्दु) एक धर्म, एक भाषा, एक भावना में बंध नहीं जाते अर्थात् हर दृष्टि से आर्य नहीं बन जाते, तब तक इस देश का पूर्ण कल्याण न हो पावेगा"। मानना होगा यह ऋषि वाक्य एक ध्रुव सत्य है। आर्यो! आओ एक जुट हो-दिलोजान से अपने सब साधन एकत्रित कर समस्त आर्य सन्तान-हिन्दु मात्र में एकात्मता लाने का संकल्प ले, क्रियाशील हो जावें।

यदि हम आर्य मिलजुल संगठित हो जायें तो कोई कारण नहीं कि केवल पांच वर्ष के अल्पकाल में ही समस्त आर्य सन्तान हिन्दु मात्र में आर्यत्व का बीजरोपण न कर पावें। इससे इनमें निश्चय ही भावनात्मक एकरूपता आ जावेगी। देश सच्चे अर्थों में 'आर्यावर्त" बन जावेगा। फिर आर्य-राज्य बनने में क्या देर लगेगी।

एकात्मता लाने के लिए शिक्षा और प्रचार दो बड़े साधन हैं।

1- शिक्षा के लिए हमें भावी पीढ़ी में अपनी शैक्षिक संस्थाओं-स्कूलों आदि में धार्मिक शिक्षा का समुचित सतत प्रबन्ध करना होगा। इस विषय में डी0ए0वी0 संस्थाएं कुछ ध्यान दे रही हैं उसे और प्रभावी बनाना होगा। एवं अन्य हिन्दु स्कूलों में प्रचलित करना होगा।

2- दूसरा बड़ा साधन "व्यापकप्रचार" का है। वास्तव में इसके द्वारा ही केवल पांच वर्ष के अल्पकाल में ही समस्त हिन्दु मात्र में "आर्यत्व" लाया जा सकता है।

(क) समस्त हिन्दू मात्र में आर्य चेतना लानी-

पूर्व में आर्यसमाज का प्रचार प्रायः उपदेशकों द्वारा ही हुआ करता था, उस समय दूसरा विकल्प भी नहीं था। अब स्थिति बदल गई है: प्रथम तो उपदेशक प्रायः समाप्त हैं। आगे कोई बनना भी नहीं चाहता। यदि कोई बनेगा भी तो वह बड़ा बोझल सिद्ध होगा।

उपदेशकों के विकल्परूप में हम वीडियो (वी0सी0आर0) प्रणाली को बड़े प्रभावशाली रूप में कार्य में ले सकते हैं। इसके द्वारा अच्छे-अच्छे सुन्दर-सुन्दर प्रोग्राम तैयार करवा और उनके कैसेट तैयार करवा एक ही समय में अनेक स्थानों पर लाखों व्यक्तियों में प्रचारित कर सकते हैं। इस प्रणाली द्वारा आर्य-महापुरुषों की जीवन झांकियां, नाटक, वैदिकधर्म संस्कृति सम्बन्धी अनेकों कार्यक्रमों को तैयार कर इनके कैसेटों को बहुत कम खर्च पर स्थान-स्थान पर पहुँचाया जा सकता है. इन्हें आर्यसमाजों स्कूलों, कालेजों, गली मोहल्लों, गांव-गांव में हिन्दुओं की अन्य संस्थाओं द्वारा भी प्रचारित किया जा सकता है। मजे की बात यह है कि ऐसे प्रोग्रामों को देखने के लिए बाल-वृद्ध, स्त्री पुरुष स्वयंमेव खींचे चले आयेंगे। केवल जनता में सूचना खूब प्रभावी ढंग से देनी होगी।

(ख) बहुत कम खर्च पर यह कार्य हो सकता है-

आर्यसमाज में बड़े-बड़े त्यागी, विद्वान्, शिक्षा-शास्त्री, लेखक, कवि, कलाकार, चित्रपट अनुभवी विद्यमान हैं। आर्य स्कूलों, कालेजों के अध्यापक, कलाकार, लड़के-लड़कियां इस कार्य में विशेष रुचि से कार्य करेंगे। इस प्रकार हर प्रकार के कलाकार बिना खर्च उपलब्ध हो जायेंगे।

धन.- इस प्रकार एक योजना बनाकर 10-15 लाख की धनराशि एकत्रित करनी ही होगी। मैं इस कार्य में एक लाख रुपया तो स्वयं कर दूंगा और भी 5-6 लाख एकत्रित कर दूंगा। सब प्रान्तीय आर्यसभायें, आर्यसमाज इस कार्य में योगदान देंगी। बड़ी-बड़ी व्यापारिक संस्थाओं से पर्याप्त धन मिल सकता है। इस उद्योग के लिए जो संस्था बने, उसकी ओर से 20 रु0, 50 रु0, 100 रु0 की रसीदें छपवा आर्यसमाजों को अपने-अपने क्षेत्र में धनसंग्रह के लिए दी जावें।

(ग) हमारे प्रचार के माध्यम:-

हमारे पास 5000 हजार तो आर्यसमाजें हैं। 500 के लगभग डी0ए0वी0 शिक्षा संस्थायें हैं। 1000/- के करीब हिन्दू आर्य स्कूल होंगे। लगभग एक सौ गुरुकुल होंगे। इनके माध्यम से इनके ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों में प्रचार हो सकता है। सनातन धर्म संस्थाओं, विश्व हिन्दु परिषदों, आर0एस0एस0 की हजारों शाखाओं द्वारा सारे हिन्दू क्षेत्रों में प्रचार किया जा सकता है। ध्यान रहे हमारे पास सन्यासियों का एक यतिमण्डल भी है। इसमें 70-80 सन्यासी हैं, जिन्हें स्थान-स्थान पर भेज प्रचार-कार्य में सहयोग लिया जा सकता है और भी अनेकों प्रचार माध्यम सोचे जा सकते हैं।

- कोई भी "आर्य-सभा" इस कार्य को स्वतन्त्ररूप में अपने हाथ ले सकती है।

डी0ए0वी0 संस्था तो इसे बड़ी सुगमता से करने में सक्षम हो सकती है। कुछेक आर्य-सज्जन इस समय फिल्म उद्योग में बहुत ऊँचे चढ़े हुए हैं, उनसे हर प्रकार का सहयोग लिया जा सकना है। सार्वदेशिक सभा इस प्रकार की योजना को क्रियान्वित करने का दायित्व अपने हाथ में ले। □



सुलतानपुर में आयोजित मण्डलीय आर्यसम्मेलन में विशिष्ट आर्य बन्धुओं को बैच लगाकर सम्मानित करते हुए समारोह अध्यक्ष-डा0 एस0 प्रसाद {निदेशक के0एन0आई0टी0}



सुलतानपुर में आयोजित मण्डलीय आर्य-सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अध्यक्ष श्री इन्द्रराज जी को जिला-आर्य उपप्रतिनिधि सभा की ओर से 5 हजार की थैली भेंट करते हुए श्री रामकिशोर त्रिपाठी

सुलतानपुर में मण्डलीय आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न

सुलतानपुर अप्रैल । हम सब पहले आर्य {श्रेष्ठ} हैं, राजनैतिक बाद में जैसा कि पूर्व समय में विद्वानवक्ता श्री प्रकाशवीर शास्त्री {सासद}, राजर्षिरणंजय सिंह थे, वे राजनीति में भी आर्यसमाज के सिद्धान्तों को प्रस्थापित करने हेतु सदैव प्रयासरत रहे। उपरोक्त विचार आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रदेशीय अध्यक्ष एव मुख्य अतिथि श्री इन्द्रराज जी ने आर्यसमाज मन्दिर सुलतानपुर में आयोजित मण्डलीय आर्य सम्मेलन के प्रथम सत्र में व्यक्त किये।

श्री इन्द्रराज ने आगे कहा कि आज देश में आर्यसमाज के सिद्धान्तों की अब महती आवश्यकता है। उन्होंने मुख्यमन्त्री उ0प्र0 श्री मुलायम सिंह यादव के हिन्दी में काम करने के साहसिक निर्णय की सराहना की और कहा कि पिछली सरकार के मुख्यमन्त्री श्री नारायणदत्त-तिवारी ने हिन्दी दिवस पर उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा के रूप में प्रदेश में लादने का प्रयास किया। इसी प्रकार पूर्व शिक्षामन्त्री श्री कैलाशनाथ-सिंह यादव के आर्यसमाजी होने के बावजूद भी इसके पूर्व उर्दू का प्रोत्साहन मिला था।

उन्होंने कश्मीर से आये विस्थापितों की दशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उनकी हर प्रकार से सहायता करने की घोषणा की और धारा 370 को समाप्त करने पर बल दिया और कहा कि भारत के किसी भी क्षेत्र के नागरिक को कश्मीर में रहने का अधिकार दिलाया जाय। उन्होंने विदेशी पैसों पर गरीबों के धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनाये जाने पर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए, गरीबों, हरिजनों गिरिवासियों के बीच स्कूल, चिकित्सालय और अन्य सहयोगी कार्य खड़ा करने का भी आग्रह किया।

अन्त में उन्होंने दयानन्द बाल-विद्या मन्दिरों के लिए एक पाठयक्रम, एक नियमावली तथा एक व्यवस्था पूरे प्रदेश में बनाने का आश्वासन दिया।

भारत की आत्मा वैदिक संस्कृति

कार्यक्रम अध्यक्ष एव कमला नेहरू-प्रौद्योगिकी संस्थान निदेशक डा0 एस0प्रसाद ने इस अवसर पर भावभीने शब्दों में कहा कि जो भी अपना मूल बिन्दु छोड देता है, वही आगे चलकर गिरता है आज वेद, शास्त्र, उपनिषद के बारे में विशिष्ट जानकारी की कौन कहे, साधारण जानकारी भी हमें नहीं है। समस्त भाषाओं की आदि स्रोत संस्कृत की भारत में उपेक्षा अत्यन्त विचारणीय है। आर्य समाज इन्हीं मूल बातों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है, जिन्हें हम भूलते जा रहे हैं। भारत की वैदिक संस्कृति ही, भारत की आत्मा है। जबतक वह भारत में शेष है, तभी तक भारत वास्तविक भारत है, हमें सब प्रकार से इस वैदिकसंस्कृति के उन्नयन के लिए बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

आर्यसमाज गैर राजनैतिक सगठन

विशेष अतिथि एव संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित डा0 ज्वलन्तकुमार शास्त्री ने इस अवसर पर घोषणा की कि आर्यसमाज एक विशुद्ध गैरराजनैतिक सगठन है, और न ही किसी राजनैतिक दल का पिछलग्गू है। अतएव आर्यसमाज के नेताओं को राजनैतिक दल के अगुआ बनने से अलग रहना चाहिए। जिन्हें राजनैतिक सपने आते हों, वे आर्यसमाज के आध्यात्मिक मच का उपयोग न कर राजनीति में ही उन्हें रहना चाहिए।

श्री शास्त्री ने आर्यसमाज के कार्य को मण्डलीय स्तर पर सगठित करने के साथ-साथ आर्य समाज विहीन स्थानों पर भी आर्य सगठन को आगे बढ़ाने पर बल दिया। कश्मीर की समस्या आर्थिक न होकर साम्प्रदायिक है। इसी दृष्टि से इसका निदान भी करना होगा। श्री शास्त्री ने अन्त में आर्यों का आह्वान किया कि गृहस्थ लोग वानप्रस्थ का समय आने पर उसे आगे बढ़ायें

नई पीढ़ी पर बल

आर्य कुमार सभा के प्रदेश नेता प0 दीनानाथ सिंह ने शिक्षा एव सामाजिक क्षेत्र में आर्यसमाज द्वारा किये गये बहुविधि यशस्वी कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि यदि आर्यसमाज को आगे बढ़ाना है तो नई पीढ़ी को आगे लाना होगा। आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय न होकर एक महान वैज्ञानिक जीवनदर्शन है। आर्यसमाज राष्ट्र से भी आगे बढ़कर पृथ्वी को प्रणाम कर अपने को उसका पुत्र कहता है।

पूर्व उ0प्र0 आर्यवीरदल के मन्त्री श्री प्रयागदीन जायसवाल ने आर्य समाज द्वारा सचालित विद्यालयों का परिचय देते हुए, आर्यसमाज के समान पूरे प्रदेश में विद्यालयों में एकरूपता लाने हेतु आग्रह किया।

कार्यक्रम के सयोजक प0 राम अभिलाष त्रिपाठी ने सुलतानपुर आर्यसमाज के सस्थापकों का परिचय दिया, और प0 रामकिशोर त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए जिला आर्य उपप्रतिनिधि-सभा की ओर से प्रदेश अध्यक्ष श्री-इन्द्रराज जी को लखनऊ में निर्माणाधीन श्रद्धानन्द अतिथिशाला हेतु 5 हजार-रूपये की थैली भेंट की।

विशिष्ट आर्य बन्धु सम्मानित

इस अवसर पर समारोह अध्यक्ष डा0 एस0प्रसाद ने मण्डल के विशिष्ट आर्य बन्धुओं एव बहिनों- स्वातन्त्रसेनानी-श्री केदारनाथ एव रामप्रताप त्रिपाठी, श्रीमती बीनागुप्ता, श्रीमती चन्द्रकला{बस्ती}, डा0 कु0 माया शबनम, डा0 मदनलाल-कोछड़, भगवानदीन जायसवाल, रामनरायन-गुप्त, समरजीत सिंह, प्रो0 बाल किशोर झा, बालकृष्ण मौर्य, स्वर्मित्र आचार्य, ओंकारनाथ आर्य, शोभनाथ त्रिपाठी, माता प्रसाद त्रिपाठी {फैजाबाद}, त्रिभुवन-सिंह {मायग}, राधेश्याम आर्य, धुरेन्द्रसिंह, गोमती प्रसाद दूबे, प्रयागदीन जायसवाल प0 रामकिशोर त्रिपाठी, राम कृष्णजायसवाल, प0 दीनानाथ सिंह, प्रो0 ज्वलन्त कुमार-शास्त्री ज्ञानेन्द्र सिंह अमर बहादुर सिंह, आदि को 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के सुनहले बैच एव माल्यार्पण द्वारा सम्मानित किया।

कार्यक्रम का सचालन आर्य उपप्रतिनिधि सभा के जिला अध्यक्ष श्री रामकृष्ण जायसवाल एव धन्यवाद ज्ञापन जिलामन्त्री श्री राधेश्याम आर्य ने किया।

समारोह के पूर्व श्री स्वर्मित्र आचार्य के निर्देशन में एक भव्य यज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें मुख्य यजमान प्रदेश अध्यक्ष श्री इन्द्रराज थे।

बस्ती मे आई श्रीमती चन्द्रकला का भजन आनन्द स्रोत बह रहा तू उदास है को सभी ने सराहा।

शेष पृष्ठ ११ पर

महाभारत प्रदर्शन कितना सत्य?

• स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

महाभारत धारावाहिक के निर्देशक का कथन है कि गीता प्रेस से प्रकाशित महाभारत को आधार बना करके ही मैंने यह कथा चित्रित की है किन्तु दूरदर्शन पर देखने से यह सिद्ध होता है कि निर्देशक ने सर्वथा असत्य एवं अमर्यादित कथाओं को जोड़ दिया है- जैसे भीष्म वध का उपाय पूछने के लिये केवल युधिष्ठिर और अर्जुन का भीष्म के पास जाना। यह उक्त महाभारत से सर्वथा विरुद्ध है क्योंकि इस महाभारत में तो स्पष्ट लिखा है कि वे सभी भाई वासुदेव कृष्ण के साथ भीष्मपितामह के पास गये थे।

एवमामन्त्र्य ते वीरा पाण्डवाः पाण्डुपूर्वजम् ।
जग्मुस्ते सहिताः सर्वे वासुदेवश्च वीर्यवान् ।।
{भीष्म वधपर्व, अध्याय 107, श्लोक56}

इस प्रकार परामर्श कर वे वीर पाण्डव भीष्म पितामह के पास गये और उनके साथ श्री कृष्ण भी थे।

दूसरा स्थल है कि श्री कृष्ण-शिखण्डी के बारे में बताते हैं कि वह स्त्री था और उसको, आगे करके अर्जुन लड़े जबकि यह बात स्वयं ही भीष्म-पितामह ने पाण्डवों और श्री कृष्ण को बताई और उसी को आगे करके लड़ने के लिये कहा--

शिखण्डी समरामर्षी शूरश्च समितिंजयः।
यथाभवच्च स्त्री पूर्व पश्चात् पुस्त्वं समागतः ।।
----- ---- -----
अर्जुनः समरे शूरः पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ।
मामेव विशिखैस्तीक्ष्णैरभि द्रवतु दंशितः।।
{भीष्म वध पर्व, अध्याय 107, श्लोक 81-82}

तीसरा, भीष्म को रथ से उतारकर नाटकीय ढंग से भीष्म पर बाण चलवाना तथा भीष्म के द्वारा अभिनय पूर्वक उन बाणों से छटपटाना सर्वथा अमर्यादित है क्योंकि भीष्म तो रथ पर ही बैठे थे और वहीं अर्जुन ने उनके शरीर को बेध डाला था और ऐसी अवस्था में ही वे रथ से गिरे।

एवंभूतस्तव पिता शरैर्विशक की कृतः ।
पितामहः फाल्गुने नाजौ प्राकशिराः प्रापतद्रथात् ।।
{भीष्म वध पर्व 107, अध्याय श्लोक 87}

अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त विद्ध हो कर पूर्वदिशा की ओर शिर किये रथ से गिर गये।

पतमाने रथाद् भीष्मे बभूव सुमहास्वनः।
{वही}

भीष्म के रथ से गिरते समय हाहाकार मच गया।

द्रोपदी से युद्ध में रथ पर बैठने का कथन प्रस्तुत कराना तथा युद्ध करने की बात करना तो सर्वथा आधारहीन एवं अभद्र है क्योंकि इससे युद्ध में पाण्डवों का अपमान एवं दौर्बल्य प्रकट होता है।

इतिहास विकृत करना उचित नहीं।

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या-"मेरे एक मित्र के ओठ पर तीन वर्षों से सफेददाग हो गया है। हाथ की अंगुलियों पर दाग खुजलाता भी है।" -रामकुमार सिंह, राबर्टगंज {सोनभद्र}

समाधानः - कीकर {बबूल} की हरी पत्तियाँ 150 ग्राम ग्राम, बड़ी हरड़ 50 ग्राम और सुपारी चूर्ण 50 ग्राम पीसकर एक लीटर पानी में उबालकर आधा करें। छानकर बोतल में रखें। नित्य प्रातराश से पहले आधा प्याला पिया करें। पिगमेन्टो {चरक} की दो गोली प्रातः मध्याह्न- रात्रि लेकर प्युरिल्ला सीरप {चरक} दो ढक्कन समान जल में मिला कर पिया करें। अंगुलियों के खाज-त्वचा पर दिन में एक बार मरिचादि तैल {वैद्यनाथ} मला करें ।

2- समस्या-"21 मार्च"1989 का प्रेमप्रकाश बालक के हाथ में चोट लग गई थी। हाथ की नस पर हड्डी चढ़ गई है। हड्डी किस प्रकार अपनी जगह पर आयेगी? "

भोलादास, 10/11 चौबटिया-रानीखेत, {अल्मोड़ा}

समाधान- मुझे या सकिसी अस्थि विशेषज्ञ डाक्टर को हाथ-हड्डी को दिखायें। हड्डी की चोट-दर्द में लाक्षादिगुग्गुलु {वैद्यनाथ} की दो गोली प्रातः और साय चबाकर दूध पीना चाहिये। प्रत्येक भोजन बाद 3 चम्मच चूना के पानी में समान जल मिला कर पीना चाहिये। लगभग 3 सप्ताह में लाभ मिल जाता है। गुनगुन नमकीन पानी से सेक भी करते रहें। 0- रोगी, विवरण के साथ पत्रोत्तर हेतु दो डाक लिफाफे निम्न पता पर भेजा करें -

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
{कच्चाहुरा}
आर्यसमाज पिथौरागढ {उ0प्र0}

पांडुलिपि विज्ञान प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, यहाँ मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार के सहयोग से दिनांक 8 मार्च से 28 मार्च तक पांडुलिपि विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसमें सैकड़ों छात्रों ने पांडुलिपि विज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में विभिन्न-विभिन्न विद्वानों ने पांडुलिपि विज्ञान पर प्रकाश डाला तथा सिद्ध किया सम्प्रति संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक तम लिपि एक मात्रलिपि देवनागरी है।

धरती माँ

• श्रीमती अनिता कथूरिया
सहारनपुर

अपनी प्यारी धरती है,
कितनी पावन धनवान।
आज भी इसकी जग में है,
पहले जैसी शान।
अपनी जान से प्यारा है,
इसको अपना मान।
नित-दिन अब भी भजती है,
राम-कृष्ण का नाम।
हर पल गाती रहती है,
परिश्रम का मान।
सब ऋतुओं का करती है,
इक जैसा सम्मान।
अपनी ही संतान मगर,
इसे न पायी जान।
सुरबाला को करा दिया,
मानव लहू से स्नान।
खेतों में इसके उगा दिया,
दुख नफरत का धान।
दीपावली की फुलझड़ी,
बनी मौत आह्वान।
काट रहे टुकड़ों में माँ को,
निज बेटे अन्जान।
कल जिसको स्वतन्त्र किया,
दे असीम बलिदान।
गैरों की बातों में फंस,
जो लेंगे माँ के प्राण
किस गोदी में बैठेंगे,
थक कर बालक नादान।

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

आर्यमित्र का "ऋषिबोध पर्व-विशेषांक" प्राप्त हुआ। विशेषांक के अन्दर स्वामी जी के सम्बन्ध में अत्यधिक जानकारी प्राप्त हुई अतएव विशेषांक की उत्कृष्टता सराहनीय है। इसमें प्रकाशित लेख विद्वान लेखकों द्वारा प्रतिपादित किये गये हैं।

अतः देहात जगत की माताएं बहनें भी आर्यमित्र के अंकों तथा विशेषांकों का स्वाध्याय करने में गौरवान्वित होती हैं। तथा आर्यसमाज के विचारों से प्रभावित होती हैं। इस प्रकार से आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार देहातों में भी निरन्तर हो रहा है। ग्रामीण नवयुवकों में भी आर्यसमाज के प्रति आस्था जगते देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा लक्ष्य "कृण्वन्तो विश्व मार्यम्" की साकारता सिद्ध हो सकेगा। विशेषांक की उत्कृष्टता के लिए आप को कोटिशः धन्यवाद।

- लालमणि शर्मा
राजकोट
गुजरात।

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

- आज दिनांक 30·3·90 को आर्यसमाज लाहौरी नगर की बैठक हुई. जिसमें सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान - श्री विजय कुमार श्रीवास्तव
मन्त्री - श्री गोपी कृष्ण वर्मा
कोषाध्यक्ष - श्री सगर सिंह।

अभी राष्ट्र बलिदान और चाहता है

• हरिनन्दन मिश्र

शास्त्री आयुर्वेदाचार्य ऋषभदेव
उदयपुर- राजस्थान।

अधूरी है स्वाधीनता की कहानी अभी राष्ट्र बलिदान और चाहता है।
बहुत दूर है कारवाँ मंजिलों से महाकाल अभियान और चाहता है।।

§1§

युगोदय की क्या कल्पनाएं संजोई हुए- ध्वस्त विश्वास जन-जागरण के,
सिन्दूरी उषा परधिरा घोर कुहरा उठे प्रश्न फिर आज जीवन-मरण के।।
हमें छल लिया कुछ प्रवंचक भ्रमों ने समझ बैठे मझधार को ही किनारा।
महा सिन्धु में नाव कैसे बढ़ेगी खड़ा सोचता त्रस्त माझी विचारा।।
गई टूट पतवार उमड़ा प्रभंजन प्रबल ज्वार पहचान और चाहता है अधूरी है।

§2§

प्रजातन्त्र के नाम पर व्यक्तिवादी विदेशी विचारों की जय बोलते हैं,
कभी ज्ञान तकनीक की दे दुहाई स्वदेशी बहारों में विष घोलते हैं।।
उपेक्षित पड़ी भारती एक युग से हुई भस्म जीवित सभी साधनाएं।
जहाँ था वहीं देश अब भी खड़ा है प्रगति की सजी खोखली योजनाएं।।
रुदन कर रहे आचरण को संभालो धवल-ध्येय अभिमान और चाहता है अधूरी है।

§3§

मेरे आन्तरिक क्षोभ का एक कारण नई पीढ़ियाँ भूल बैठीं दिशाएं।
नये रक्त के जोश शीतल हुए हैं खड़ी सामने क्रूर कालीनिशाएं।।
दिनों दिन बढ़ी जा रही व्यक्ति पूजा बड़े ढोंग के ध्वज उठा फिर रहे हैं।
बना देश शतरंज का एक मुहरा पराजय के लक्षण स्वयं लिख रहे हैं।।
गिरा दो खड़े दुर्ग दृढ़-दम्भियों के सजग शौर्य प्रतिदान और चाहता है अधूरी है।

§4§

दिखावा किया धर्म निरपेक्षता का मगर धर्म के शंख बज ही रहे हैं।
छला खूब सबको सजे भाषणों से हरे-बाग कागज पे लग ही रहे हैं।।
नहीं शक्ति ढलती शिथिल नीतियों में नहीं राष्ट्र बनते हैं उद्घाटनों से।
कहीं पर सृजन कर सके नाच गाने लड़े युद्ध कब जीर्ण-संसाधनों से।।
जगा प्राण दो सुप्त तरुणाईयों में समय रक्त-अनुदान और चाहता है अधूरी है।

§5§

ऋणी व्यक्ति को कब मिली है प्रतिष्ठा भिखारी की धरती पे क्या जिन्दगी है।
न हो राज्य अपना न हो नीति अपनी गुलामों की दुनियाँ में क्या बन्दगी है।।
रखी राष्ट्र की अस्मिता मित्र गिरवी पराये इशारों पे हम नाचते हैं।
नकलची प्रगति पर चढ़ा अर्चनाएं पुरातन को कुछ हीनतम मानते हैं।।
गया गर्व सचमुच रसातल में अपना विकल धैर्य परित्राण और चाहता है अधूरी है।

§6§

नशा चढ़ रहा सिर्फ सम्मेलनों का थिरकने लगे मीठे आश्वासनों से।
बहकते क्षणों में भुला दी हकीकत बहारें विदा हो रही मधुवनों से।।
लगे क्रीतदासों के मजमें रंगीले खुली नग्नता का प्रदर्शन हुआ है।
नये तन्त्र की भ्रष्ट भागीरथी में भवन सभ्यता का विसर्जन हुआ है।।
महाक्रान्ति के स्वर जगाओ दुबारा विजय पर्व रण गान और चाहता है-
आधूरी है स्वाधीनता की कहानी अभी राष्ट्र बलिदान और चाहता है।।

लघु-साहित्य प्रकाशन

" आज की ज्वलन्त समस्या के सम्बन्ध में लघु साहित्य का आर्य जगत में अभाव है। आप आर्य जगत के उदीयमान लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान हैं। लघु साहित्य के सर्जन के लिए मैं सभा की ओर से निम्नलिखित उपसमिति गठित करता हूँ। यह समिति सामयिक समस्याओं पर छोटे-छोटे ट्रैक्ट लिखेगी जिसको सभा प्रकाशित करवा कर वितरित करेगी।

उपसमिति

1- श्री ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री
   संयोजक
2- श्री डा0 निरुपण जी विद्यालंकार
3- श्रीमती आशा रानी राय जी

आशा है कि आप तीनों महानुभाव सभा को अपनी-अपनी स्वीकृति से सूचित करने की कृपा करेंगे। - इन्द्रराज प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, लखनऊ।

काश्मीर के विस्थापितों की सहायतार्थ सभा में विशेष कोष की स्थापना

काश्मीर से बड़ी संख्या में राष्ट्रवादी हिन्दू-सिख विस्थापित होकर देश के विभिन्न शहरों में शरण ले रहे हैं। यह हमारी आर्य जाति के अंग हैं। इनकी दयनीय दशा अत्यन्त करुणाजनक है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने इन भाइयों की सहायता के लिए एक विशेष कोष की स्थापना की है। कृपया अन्न वस्त्र और धन भेजकर अपने विस्थापित भाइयों की मदद कीजिये। यही सबसे बड़ा पुण्य कार्य है। कृपया धन मनीआर्डर, चैक, ड्राफ्ट द्वारा "आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग लखनऊ" के पते पर भेजें।

इन्द्रराज
प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओं का परिणाम घोषित

आर्य वान प्रस्थाश्रम ज्वालापुर में सैकड़ों सत्यार्थ परिक्षार्थीयों को विजयी होने पर पुरस्कार वितरण हुआ, यह मधुर कार्य माता दयावती के पुण्य हाथों द्वारा हुआ ।

आयुर्वेद भास्कर को मान्यता दो

आयुर्वेद छात्र संघर्ष समिति ने उ0प्र0 सरकार से माँग की है कि आयुर्वेद भास्कर §गु0म0वि0§ पाठ्यक्रम को तुरंत मान्यता दो। अन्यथा विधान भवन पर अनशन किया जायेगा। समिति प्रवक्ता अजीत सिंह गुर्जर ने बताया कि हम इस बारे में 9 मार्च, 90 को लखनऊ में प्रदर्शन भी कर चुके हैं ।

-संवाददाता

सामूहिक यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज ओहदपुर §हरदोई§ में हरिजनों के यहाँ आर्यसमाज के अधिकारियों व सवर्णों द्वारा सामूहिक यज्ञ किया गया जिसका हरिजन जनता पर अत्यधिक उत्साह देखा गया। यज्ञ के अन्त में श्री सुरेन्द्र सिंह सोमवंशी ने सबको धन्यवाद दिया।

वार्षिकोत्सव

सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थी मंडल वेदमन्दिर ज्वालापुर §हरिद्वार§ का सातवां वार्षिकोत्सव दिनांक 18 अप्रैल से 22 अप्रैल 90 तक मनाया गया। साथ ही आर्यसमाज आर्यनगर ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव 21 से 22 अप्रैल तक मनाया गया।

संवाददाता

महायज्ञ सम्पन्न

- वैशाली जिला अर्न्तगत चाँदपुर में शाइली महायज्ञ 3 से 6·4·90 तक सम्पन्न हुआ। पं0 शदानन्दशास्त्री धैरगनीया रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी §नेपाल§ दयानन्द सन्यार्थी पटना। ता0 9·4·90 को वैदिक विवाह नेपाल के तराई क्षेत्र भौहियारी में सम्पन्न हुआ।

16·4·90 को बेतिया प० चम्पारण में विवाह कार्य सम्पन्न हुआ। दोनों विवाह रामचन्द्र सिंह क्रा0 §नेपाल§ वाले ने कराया।

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

दिनांक 29 मार्च स्थापना दिवस के दिन येद्दुमेलारम §आर्डनैंस फैक्टरी§ नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए-
प्रधान- श्री विज्ञानशंकर
मंत्री- श्री परशुराम राय
कोषाध्यक्ष- श्री दुबे

आ0स0खलीलाबाद §बस्ती§

प्रधान- श्री हरिश्चन्द्रार्य
मंत्री-श्री वैद्य राजाराम आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री भोलानाथ आर्य

शिक्षा का विकासोन्मुखी होना आवश्यक

● रामनाथ सहगल
मंत्री प्रादेशिक आ० प्र० सभा दिल्ली

नई दिल्ली में आयोजित हंसराज दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए भारत के प्रधानमन्त्री-श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहा कि शिक्षा वह है जो मनुष्य के जीवन को उचित दिशा की ओर मोड़ दे। स्कूल कालेजों में पढ़ी शिक्षा को लोग भूल जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने शिक्षा के सम्बन्ध में जो विचार प्रस्तुत किये और महात्मा हंसराज आदि ने जिस शिक्षा को देने का संकल्प लेकर अपना जीवन शिक्षा जगत् को समर्पित किया वही वास्तव में शिक्षा कहलाती है। शिक्षा से मर्यादा की स्थापना होती है। मर्यादा ही किसी देश और जाति की नींव होती है। प्राचीनकाल में आश्रम प्रणाली की शिक्षा मानव को मानव बनाती थी जबकि भारत में प्रचलित मैकाले की शिक्षा मानव को मशीन बना रही है। आज का विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर उपाधि को हाथ में लेकर नौकरी की तलाश में निकल पड़ता है। शिक्षा का संबंध रोजगार की ओर से मोड़ना होगा। डी०ए०वी० और आर्यसमाज यह कार्य कर सकता है। व्यवहारिकता को सफलता की कुंजी न मानकर ज्ञानार्जन को माना जाये। अध्यापक को चाहिये कि वह छात्रों के सम्मुख आदर्श प्रस्तुत करें क्योंकि छात्र पुस्तकों को कम पढ़ते हैं। झोंपड़ी और महल के भेदभाव को मिटाना आज की नितान्त आवश्यकता है। नवीन आविष्कार केवल मनुष्य की काया परिवर्तित अथवा परिस्कृत कर सकते हैं। किन्तु मन मस्तिष्क को जो परिस्कृत करे वास्तव में वही आविष्कार और शिक्षा है। यदि इस ओर ध्यान न दिया गया तो मानवता का विनाश सन्निकट है। महर्षि दयानन्द और महात्मा-हंसराज ने मानवता के विकास की दिशा निर्धारित की थी और डी०ए०वी० आज उसी कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प पूर्ण करने में सफल हो यही मेरी कामना है।

प्रधानमन्त्री का स्वागत करते हुए प्रसिद्ध न्यायविद श्री लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने प्रधानमन्त्री को वास्तविक जनसत्ता का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमन्त्री के नाम का प्रथम "विश्व" को वे चरितार्थ करते हैं। उनकी दृष्टि विश्वदृष्टि है।

सांसद श्री कैलाश नाथ सिंह ने उन्नीसवीं सदी में स्वामी दयानन्द को प्रकाश किरण सिद्ध करते हुए प्रधानमन्त्री से आग्रह किया कि जिस प्रकार उन्होंने लोकसभा के कक्ष में डॉ० अम्बेडकर के चित्र को प्रतिस्थापित किया है उसी प्रकार महर्षि दयानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द के चित्रों को भी प्रतिस्थापित करने का यत्न करें।

सांसद श्री मदन लाल खुराना ने महात्मा हंसराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि महात्मा हंसराज जो त्याग, तपस्या और समर्पण की मूर्ति थे और डी०ए०वी० को परामर्श दिया कि उनके स्कूल, कालेजों में नैतिक एवं राष्ट्र प्रेम की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

● सांसद आचार्य रामसिंह ने कहा कि जीवित जातियां ही अपने महापुरुषों का स्मरण करती हैं।

संसद सदस्या एवं साध्वी कुमारी-उमा भारती ने कहा कि महात्मा हंसराज सदृश महापुरुषों ने देश जाति को प्रेरित किया है। आर्यसमाज के सम्पर्क में आने पर मेरे विचारों में क्रान्ति आई। हमें जीवन मूल्यों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध आर्य सन्यासी डॉ० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने की। इस अवसर पर अनेक युवकों और छात्रों को सम्मानित तथा पुरस्कृत किया गया। अन्त में डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल विकासपुरी के छात्रों ने मनोरंजक, शिक्षाप्रद रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

आर्यवीर दल कार्यकर्ता विचार गोष्ठी सम्पन्न

सुलतानपुर, 15 अप्रैल। गत दिवस दो दिवसीय पूर्वांचल आर्य वीरदल कार्यकर्ता विचार गोष्ठी का आयोजन आर्यसमाज मन्दिर सुलतानपुर में श्री रामकिशोर त्रिपाठी स्वागताध्यक्ष एवं मन्त्री श्री प्रयागदीन जायसवाल के निर्देशन में उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

बाहर से आये हुए अतिथियों में प्रधान संचालक आर्यवीर दल पूर्वी उ०प्र० श्री अवध बिहारी खन्ना, अधिष्ठाता आर्य वीर दल उ०प्र० श्री देवन सिंह, सह संचालक आर्यमुनि वानप्रस्थी, हरिचन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष श्री सन्त प्रसाद जी, ने आर्य वीरदल के संगठन को सुदृढ़ करने, आर्य वीर दल की भावी रूपरेखा, दैनिक एवं साप्ताहिक शाखा का स्वरूप, आर्यवीर दल के शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था तथा स्वाध्याय के सम्बन्ध में अपने विचार मुख्य रूप से रखे।

समापन अवसर पर प्रधान संचालक श्री अवध बिहारी खन्ना ने आर्यसमाज एवं आर्यवीर दल के संबंधों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यदि आर्य समाज माता है तो आर्यवीरदल उसका पुत्र है, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने आर्यसमाज के अतिरिक्त आर्यों में पराक्रम की भावना एवं व्यावहारिक रूप से सेवा कार्य करने हेतु आर्य वीरदल तथा छात्रों में कार्य हेतु आर्यकुमार सभा को मान्यता दी है।

श्री खन्ना ने वर्तमान समय में दीन-दुखियों की चिकित्सा, शिविरों के माध्यम से सेवा, मेला आदि में भूले भटके यात्रियों की सहायता आदि करना आर्यसमाज द्वारा आयोजित सम्मेलन में सहायता आदि सेवा को प्राथमिकता मिलना चाहिए। किन्तु यह ध्यान रहे कि चरित्र एवं अनुशासन, मर्यादा के अन्तर्गत ही सब कार्य होने चाहिए। उन्होंने हिन्दी प्रचार, दहेज उन्मूलन, सदस्यता अभियान, मई, जून में 6 शिविरों का आयोजन, संरक्षक सदस्य संख्या में वृद्धि, गोहत्या, शराबबन्दी आदि के सम्बन्ध में कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ने का आह्वान किया।

इस अवसर पर अनेक कार्यकर्ताओं डा० शम्भूनाथ शास्त्री मुख्य शिक्षक अभेदमुनि डा० श्री प्रकाश जी, ओम प्रकाश आर्य, युग नारायण, विजय कुमार, राजेन्द्र कुमार पाण्डेय आदि ने अपना अधिक समय देकर आर्य वीरदल के बढ़ते हुए यशस्वी कार्य को और तेजस्वी बनाने का संकल्प लिया।

- प्रयागदीन जायसवाल
मन्त्री, आर्यवीरदल पूर्वी उ०प्र०
सुलतानपुर।

आर्य वीरदल का विशाल सम्मेलन सम्पन्न

भागलपुर-देवरिया, आर्यवीरदल का एक विशाल सम्मेलन स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती {आजमगढ़} की अध्यक्षता में 8 अप्रैल को किया गया, जिसमें उ०प्र० के देवरिया, बलिया मऊ जनपदों सहित पड़ोसी प्रान्त बिहार के सीवान जिले के भी नवयुवकों ने उत्साह से भाग लिया।

आर्य युवकों व कुमारों को शाखा पद्धति सहित अनेक क्रियात्मक प्रशिक्षण वैदिक गुरुकुल मिशनरी के 15 वर्षीय ब्र० वीरेन्द्र जी द्वारा दिया गया।

सार्वजनिक समारोह में श्री ब्र०-वीरेन्द्र जी द्वारा अनेकानेक योग-कौशल प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन गोरखपुर परिमण्डल के संचालक श्री-ब्र० नरेन्द्र लाल आर्य उपाध्य श्री धर्मेन्द्र-जिज्ञासु, बस्ती जनपद ने किया।

वक्ताओं में श्री शिवधन शास्त्री, डॉ० कस्तूरीलाल आर्य श्री ओमप्रकाश-आर्य श्री दिलीप सिंह सहित रामाज्ञा "आर्यपुत्र प्रमुख थे। साथ ही साथ आर्यवीरों के अनेकानेक प्रेरक कार्यक्रमों ने उपस्थित जनसमूह को भावविभोर कर दिया।

- रामाज्ञा आर्यपुत्र
बौद्धिकाध्यक्ष पू०उ०प्र०
{आर्यवीर दल}

शुभ विवाह

चि० देवराज सिंह सुपुत्र चौ० हरज्ञान-सिंह सदस्य आर्यसमाज मडुआखेड़ागंज {नैनीताल} का विवाह सौ० विनीता सुपुत्री स्व० तेजपाल सिंह निवासी-ग्राम-संदरपुर {मुरादाबाद} के साथ पूर्णतया वैदिक रीति से 18-4-90 को सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज वार्षिकोत्सव पर ज्ञान यज्ञ

फैजाबाद। आर्यसमाज सुभाषनगर के वार्षिकोत्सव पर ज्ञान यज्ञ में हरियाणा से आये हुए सत्तासी वर्षीय वेद वक्ता श्री शांति प्रकाश ने कहा कि वैदिक दर्शन परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति तीन तत्वों में विश्वास करता है। इन्हीं तीनों तत्वों से सृष्टि का विकास होता है। एक आत्मी परिवार नहीं बना सकता है।

उन्होंने कहा कि परमात्मा गुनाह क्षमा नहीं करता है। भारत ने अनेक झझावातों को सहन किया फिर भी वेद जीवित है और दुनिया के सभी मत मतान्तर उसके आभारी है। वेद में जो विशेषतायें हैं, वे अन्यत्र नहीं है।

उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा कि जब तक भारत में सभी नागरिकों के लिये एक कानून नहीं होगा, एक स्पष्ट राष्ट्रभाषा नहीं होगी, संस्कृति और राष्ट्रीयता के प्रति सबकी आस्था नहीं होगी, तब तक भारत की एकता और अखण्डता खतरे में ही रहेगी।

ईसाई धर्म से लौटे हुए जयन्तजी ने कहा कि जाति व्यवस्था, ऊँच-नीच तथा चारित्रिक पतन के कारण हमारे अनेक भाई ईसाई बन जाते हैं। उनका कहना है कि सोमनाथ मन्दिर का विनाश जातिवाद, ऊँच-नीच की भावना और मूर्ति पूजकों के अन्धविश्वास के कारण हुआ। पंडितों द्वारा प्रताड़ित एक हरिजन महमूद गजनवी के पास गया और कालान्तर में वही सेनापति बनकर मूर्तिभन्जक बना। यही दशा राणा सांगा और बाबर के युद्ध में दिखायी पड़ती है।

पं० इन्द्रराज, प्रधान आ०प्र०स०उ०प्र० ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम जीवन निर्माण के स्रोत हैं। विश्व के सभी प्रश्नों के वही एक उत्तर हैं। उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी के पूर्ण विकास और क्रियान्वयन पर भी बल दिया। उनका विश्वास है कि राष्ट्रभाषा से ही देश की अस्मिता, मर्यादा, स्वाभिमान और उन्नति संभव है।

इस अवसर पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया

मान्यवर,

आज हम आर्य समाज फैजाबाद के आर्यजन अपने बीच अपने ही भाई माननीय पं० इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को पाकर अत्यन्त आत्मिक आह्लाद का अनुभव कर रहे हैं। वस्तुतः एक आर्य जगत के कर्मयोगी एवं शिक्षाविद का सम्मान करते हुए हम जिस गौरव, आत्मीयता एवं हर्षातिरेक का अनुभव कर रहे हैं, वह सर्वथा स्वाभाविक ही है। एतदर्थ हम अपनी अभिनन्दनोन्मुखी, आत्मीयतामय भाव लहरियों को बिना व्यक्त किये नहीं रह सकते।

आदर्श शिक्षाविद्,

सन 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की सूत्रपात स्थली मेरठ को अपनी कार्यस्थली बनाने का आपको सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक सम्भ्रात आर्य परिवार में पले जीवन के शैशव काल से ही सृजन स्वावलम्बन एवं स्वाध्याय में आस्था रखने के कारण आप उच्च कोटि की शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दक्षता प्राप्त कर सके। आपका आदर्श विद्यार्थी जीवन एक आदर्श आर्य कर्मयोगी के रूप में आर्य जगत के सम्मुख उपस्थित हुआ।

कुशल समाजसेवी

आप एक सहृदय, विचारशील एवं सत्यप्रिय, समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं कुशल प्रशासक हैं। समाज के अनेक क्षेत्रों में तत्परता पूर्वक कार्य करने के कारण आपका अनुभव इतना वृहद हो गया है कि हर परिस्थिति में आप समायोजन करने में सक्षम रहते हैं। गम्भीर से गम्भीर विषय को अपनी प्रत्युत्पन्न-मति से तत्काल बिना किसी उलझन के निपटा देना आपकी प्रशासकीय विशेषता है।

हमें आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि संयम एवं साधना उदारता एवं सहिष्णुता, कर्मठता एवं कलात्मकता से संयुक्त आपका महान व्यक्तित्व जो प्रदेश की आर्य समाजों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रहा है, वहीं आदर्श व्यक्तित्व हम सभी आर्यजनों को प्रेरणा देकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य की ओर हमारी विकास यात्रा का मार्ग प्रशस्त करेगा।

- हम हैं आपके बन्धु

सदस्यगण, आर्यसमाज, फैजाबाद।

पृष्ठ ७ का शेष

द्वितीय सत्र का समापन

सम्मेलन के द्वितीय सत्र में अनेक वक्ताओं सर्वश्री जितेन्द्र श्रीवास्तव, बालकृष्ण मौर्य स्वर्णमित्र आचार्य त्रिभुवन सिंह, कामता प्रसाद कर्मठ (फैजाबाद) डॉ० पी०डी० गुप्ता, केशव प्रसाद उपाध्याय, आदि ने सुझाव दिया कि आर्य समाज के कार्य को व्यापक में जन आन्दोलन बनाने हेतु क्रान्तिकारी कदम उठाये जाय, और सीमित सदस्यता न रखकर व्यापक स्तर पर सदस्यता अभियान चलाया जाय तथा अनेक विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण आर्यबन्धुओं की क्षमतानुसार अलग अलग काम देकर आधुनिक परिपेक्ष्य में आर्यसमाज के कार्य को गति प्रदान की जाय। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ के साथ श्री इन्द्रराजजी ने किया।

इस अवसर पर भारी संख्या में अधिकारी, इन्जीनियर, डाक्टर, व्यापारी, वकील कर्मचारी एवं किसानों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। दर्शकों में यह आम चर्चा थी, कि इस प्रकार का ऐतिहासिक आर्य सम्मेलन कई दशकियों बाद सम्पन्न हुआ।

उत्सव सम्पन्न

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का 91वाँ वार्षिक महोत्सव 12,13,14 अप्रैल को मनाया गया।

योग प्रशिक्षण शिविर

(देहरादून में एक वर्षीय, 16 मई 1990 से 15 मई 1991 तक)

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर के प्रारम्भ में स्वामी सत्यपति जी व दर्शनाचार्य ब्र० अर्जुन देवजी 16मई से 15 जून 1990 (एक मास) तक रहेंगे और बाकी समय में शिविर का संचालन दर्शनाचार्य ब्र० आनन्द प्रकाशजी करेंगे।

इस शिविर में योगदर्शन एवं अन्य दर्शनों का अध्ययन कराया जाएगा इसके साथ संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान भी कराया जाएगा। इसमें स्त्री-पुरुष सभी भाग ले सकते हैं।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन
डाकघर तपोवन देहरादून- 248008 (उ०प्र०)

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती अस्वस्थ

अस्वस्थता के कारण मैं आगामी तीन-मास तक किसी प्रकार की सामाजिक-गतिविधियों में भाग नहीं ले सकूगा।

- विद्यानन्द सरस्वती
दिल्ली।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

भागलपुर-देवरिया, 18 अप्रैल

आर्यवीर दल का एक प्रशिक्षण शिविर 3 से 10 जून तक आर्यसमाज मन्दिर मऊ के प्रांगण में लगने जा रहा है। इसके पूर्व गोरखपुर परिमंडल के आर्यवीरों का एक विशाल सम्मेलन आगामी 20 मई को कोपागंज, आजमगढ़ में होगा।

युवा आर्यवीर व पू०उ०प्र० के बौद्धिकाध्यक्ष श्री रामावध जी आर्य पुत्र ने इन कार्यक्रमों में अधिक से अधिक आर्यवीरों से भाग लेने की अपील की है। शिविर का कोई शुल्क नहीं रखा गया है।

वैदिक धर्म का विदेश में प्रचार

लखनऊ में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की बैठक में सेनानियों को सम्बोधित करते हुए श्री वेदपथिक उर्मवीर आर्य झण्डाधारी ने कहा कि हम लोगों को भारत की सीमाओं पर गम्भीर संकट है जिसका डटकर मुकाबला करना है। कश्मीर से आये विस्थापितों की तन, मन धन से सहायता करने की अपील की।

इससे पहले श्री झण्डाधारी जी काठमाण्डो (नेपाल) मास्को विश्वहिन्दू सम्मेलन में लन्दन गए थे जहाँ मैनचेस्टर आदि में घूम घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार किया।

आर्यसमाज प्रेमनगर देहरादून

प्रधान डा० आदर्श कुमार बमन
मंत्री- श्री रघुनन्दन लाल
कोषाध्यक्ष-श्री वेदानन्द त्यागी।

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७२
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष २४११६१
ज्येष्ठ कृष्ण ३ संवत २०४७ वि
दिनांक १३ मई १९९०

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

आवश्यक सूचना

कृपया शुल्क अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें -

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह मार्च ९० को समाप्त हो गया है। वी०पी० भेजने में 7-50 रु० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी०पी० भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जन 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु० है।

मार्च

1944, 2154, 2670, 4355, 4430, 6043, 6941, 8238, 8913, 9111, 9859, 11148, 12129, 12130, 12143, 12611, 12627, 12630, 12844, 12845, 12859, 13065, 13729, 13739, 13747, 14208, 14218, 14227, 14654, 14658, 15169, 15170, 15171, 15172, 15173, 15174, 15175, 15176, 15177, 15178, 15179, 15180, 15181, 15183, 15184, 15185, 15188, 15189, 15190, 15191, 15192, 15193, 15194, 15195, 15196, 15197, 15198, 15199, 15200, 15201, 15202, 15203, 15304, 15305, 15306, 15307, 15308, 15309, 15310, 15311, 15312, 15313, 15314, 1531[illegible], 15316, 15220, 15221, 15224, 15225, 15226 15227, 15228, 15229, 15230, 15231, 15232, 15233, 15234, 15235, 15236, 15238, ए, 15239, 15239, 15240, 15241, 15242, 15243, 15244, 15245, 15246, 15247, 15250, 15251, 15252, 15253 ।

अप्रैल 1990

405, 459, 811, 2818, 3651, 4407, 5556, 5561, 6103, 6102, 6118, 8021, 8248, 8346, 8542, 8760, 8784, 8928, 9153, 9437, 9440, 9648, 9861, 11493, 11586, 11893, 11896, 12157, 13076, 13440, 13441, 13761, 13782, 14241, 14249, 14250, 14674, 14676, 14687, 14692, 14693, 14694, 14698, 15255, 15256, 15257, 15258, 15259, 15260, 15261, 15262, 15263, 15264, 15265, 15266, 15267, 15268, 15269, 15270, 15271, 15272, 15273, 15274 15275, 15276 15277, 15282, 15283, 15285 15286, 15288, 15289 15290, 15291, 15292, 15293, 15294, 15298, 15299, 15300, 15301, 15302 15303 15304, 15305, 15306, 15308, 15309, 15310, 15311, 15312, 15313, 15314, 15315, 15316, 15317, 15318, 15319, 15320, 15321, 15322, 15323, 14324, 15325, 15326, 15327, 15328, 15329, 15331, 15332, 15335, 15336

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं ३२४१/५७) ज्येष्ठ कृष्णा-१० रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक २० मई १९९० (घोषणापत्र सं.७/२७-२-७५)



मधुर वाणी

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्।

मेरी जिह्वा के अग्रभाग में मधु हो, जिह्वा के मूल में उससे भी अधिक मधु हो। हे मधु! तू मेरे प्रत्येक कार्य में विद्यमान रह और मेरे अन्तःकरण में पहुँचकर मुझे आपादमस्तक मधुरिम बना दे।

कागा का को लेत है
कोयल काको देय।
मीठे वचन सुनाय के
जग बस में करि लेय।।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३ वाँ वर्ष
अंक - १९

गृहमन्त्री श्री सईद इस्तीफ़ा दें-

—— मनमोहन तिवारी

काश्मीर तथा पंजाब में हिन्दुओं के जानमाल की रक्षा करने में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की असफलता तथा काश्मीर से बड़ी संख्या में अपना घरबार छोडकर देश के विभिन्न भागों में बड़ी संख्या में पहुँच रहे विस्थापितों की दयनीय दशा पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने एक वक्तव्य में भारत सरकार के गृहमन्त्री श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद के इस्तीफे की माँग करते हुए कहा है कि काश्मीर और पंजाब में तोड़फोड़ और अलगाववाद की बढ़ती हुई घटनाएं पाकिस्तान के पूर्वनियोजित षड्यन्त्र का एक अंग हैं। काश्मीर घाटी को हिन्दू विहीन बनाकर प्रच्छन्नरूप से पाकिस्तानी शासन स्थापित कर दिया गया है। वहाँ की दुकानों/प्रतिष्ठानों/सरकारी कार्यालयों/ बैंको के बोर्डों को हरे रंग मे पोत दिया गया है। कहीं भी इण्डिया या भारत लिखा हुआ देखने को नहीं मिलेगा। पाकिस्तानी सिक्का आपसी लेनदेन में चलाया जा रहा है। हिन्दुओं के घरों को रात में धमकाया जाता है। उनसे कहा जाता है पंडिताइनों को हमारे हवाले करके हिन्दुस्तान भाग जाओ अन्यथा कत्ल कर दिए जाओगे।

श्री तिवारी ने आगे कहा कि काश्मीर घाटी लगभग हिन्दू सिख विहीन हो गई है। अब वहाँ पाकिस्तान परस्तों का एकछत्र राज्य है। यही कारण है कि इस वर्ष एक भी सैलानी काश्मीर घाटी नहीं पहुँचा है। ऐसी स्थिति में गृहमन्त्री का यह कहना कि काश्मीर के मुसलमानो की आर्थिक परेशानियाँ इसका कारण हैं, और काश्मीर के शरणार्थियों का दायित्व काश्मीर सरकार का है- एकदम सत्य तथा वास्तविकता के विपरीत है। काश्मीर से भागकर आने वाले हिन्दू या सिख भारतीय नागरिक हैं। यह भारत सरकार तथा प्रदेशीय सरकारों का दायित्व है कि उनके पुनर्वास एवं उनकी रोजी-रोटी का समुचित प्रबन्ध करें। श्री तिवारी ने सुझाव दिया है कि -

(1) गृहमन्त्री श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद को अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए और राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को इस गरिमामय पद पर सरदार पटेल जैसे किसी लौहपुरुष वाले व्यक्तित्व को पदासीन करना चाहिए जिसने हैदराबाद में क़ासिम-रिज़वी द्वारा उत्पन्न की हुई इसी प्रकार की परिस्थितियों को आनन-फानन में छिन्न-भिन्न करके हैदराबाद को राष्ट्र का अभिन्न अंग बना दिया।

(2) काश्मीर सरकार अथवा प्रतिष्ठानों/बैंको आदि की सर्विस छोड़ भागकर आने वाले विस्थापितों को केन्द्रीय एवं प्रदेशीय सरकारें अपने यहाँ स्थानान्तरित कराके समानान्तर पदों पर उन्हे ले लें और उनकी वरिष्ठता आदि सभी उपलब्धियाँ यथावत बनी रहने की घोषणा करे।

(3) विस्थापितों के आर्थिक पुनर्वास के लिए उन्हें केन्द्रीय तथा प्रदेशीय सरकारों द्वारा ब्याजमुक्त ऋण दिया जाए और अन्तरिम राहत के रूप में पर्याप्त अनुदान दिया जाय।

(4) धारा 370 तुरन्त समाप्त की जाय तथा काश्मीर और पंजाब को 5 वर्षों के लिये सेना के हवाले कर दिया जाय।

(5) भारतीय संविधान और राष्ट्र का अपमान करने वालों को स्पष्टरूप से बता दिया जाय कि यदि उनकी राष्ट्रविरोधी गतिविधियाँ इसी प्रकार जारी रहीं तो उन्हे इन सीमान्त प्रदेशों को खाली करना होगा क्योंकि इससे हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र की सुरक्षा का प्रश्न जुड़ा हुआ है।

श्री तिवारी ने आगे कहा कि केवल आश्वासनों और वक्तव्यों पर भरोसा करके भारतीय जनता अब चुप नहीं बैठ सकती है।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ ज्येष्ठ कृष्ण १० संवत् २०४७ वि.
२० मई १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

सत्यमेव जयते

१२ मई ९० को तथाकथित चुनाव नहीं हो सका सभा द्वारा निष्कासित तथा सभा विरोधी व्यक्तियों की दुबारा बैरंग वापसी

दिनांक- 11 मई, 1990— उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ के माननीय न्यायमूर्ति श्री एस0 सगीर-अहमद तथा माननीय श्री एस0एच0-ए0 रज़ा ने आज अपरान्ह न्यायालय में उभयपक्ष के तर्कों को सुनने के पश्चात् सहायक रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटीज़ एण्ड चिट्स मेरठ (उ0प्र0) के नोटिस दिनांक 21-4-90 केतहत प्रस्तावित आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 लखनऊ के तथाकथित निर्वाचन को, जो लखनऊ में दिनांक- 12-5-90 को सम्पन्न होना प्रस्तावित था, तात्कालिक प्रभावी आदेश द्वारा स्थगित कर दिया है।

उपरोक्त आदेश माननीय खण्डपीठ ने सरकारी स्थायी अधिवक्ता श्री पी0के0-सिन्हा एवं श्री पी0के0 पान्डे सहायक रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटीज एण्ड चिट्स मेरठ, तथा श्री कैलाशनाथ सिंह यादव सांसद एवं उनके अधिवक्ता की उपस्थिति में पारित किया। उक्त आदेश की लिखित सूचना सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने दिनांक- 11-5-90 को ही रजिस्ट्रार महोदय को उपलब्ध करा दी। इस प्रकार सहायक रजिस्ट्रार द्वारा प्रस्तावित 12-5-90 को इस तथाकथित अवैधानिक चुनावी नाटक का पटाक्षेप हो गया है और वह मा0-न्यायालय के उक्त आदेश के तहत सम्पन्न नही हुआ है।

इस अवसर पर सभामन्त्री श्री-मनमोहन तिवारी ने प्रदेश के समस्त आर्यजनों को एकजुट होकर आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 को सशक्त बनाने एवं देश की वर्तमान स्थिति में कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करने की अपील की है। श्री तिवारी ने कहा कि आज हमारा राष्ट्र संक्रमणकाल से गुज़र रहा है। अराष्ट्रीय और आतंकवादी प्रवृत्तियाँ ज़ोर पकड़ती जा रही हैं एवं राष्ट्र को छिन्नभिन्न करने पर उतारू हैं। ऐसे समय में आर्यसमाज का जो राष्ट्र का सतत् एवं सजग प्रहरी रहा है, आपसी विवादों में उलझना बहुत ही अशोभनीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। जहाँ तक आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के चुनाव का प्रश्न है, यह चुनाव सभा द्वारा स्वीकृत नियमावली के तहत प्रतिवर्ष होता आ रहा है और हम आज भी निष्पक्ष मध्यस्थता के अधीन 1990 की मतदाता सूची के आधार पर कभी भी चुनाव कराने को तैयार हैं। हमारा तो केवल एक ही उद्देश्य है आर्य प्रतिनिधि सभा को सशक्त और उन्नत करना। हमारा यह विश्वास है आज आर्य प्रतिनिधि सभा को सर्वाधिक सुगठित एवं सशक्त बनाने की आवश्यकता है और इसी में राष्ट्र का एवं हमारे समाज का हित है। प्रदेश के इस महान आर्यसंगठन को उस की गरिमा के अनुरूप सशक्त बनाकर राष्ट्रसेवा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने की अपील करते हुए श्री तिवारी ने अपनी ओर से सभी सम्भव सहयोग दिए जाने का पूर्ण आश्वासन पुनः दोहराया है तथा प्रदेश की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि सभा विरोधी तथा सभा से निष्कासित व्यक्तियों से सावधान रहे। उनके किसी भी प्रकार के प्रचार पर ध्यान न दे तथा जो भी जानकारी चाहिए सभा कार्यालय से प्राप्त करें।

ज्ञान दर्पण

- पं0 दयाराम ब्रह्मचारी, सैनिक चिकित्सालय- कसौली (हिमांचल प्रदेश)

(1) ओ दुनियाँ वालो। युद्ध मानवता के लिये हितकारी नहीं होता। कोई भी प्राणी धनवैभव न तो साथ लाया, और न ले जायेगा। यह जीवन क्षणभंगुर है। इसलिये संघर्ष का मार्ग छोड़कर प्रेम से हिल-मिलकर जीने का अभ्यास करो। युद्ध सामग्री पर व्यय होने वाली धनराशि को मानव जीवन को सुखमय बनाने हेतु व्यय करो।

(2) गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावत-बिठूर (कानपुर) में गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार के पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाई होती है। छात्रों की भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। प्रवेश हर 15 जून को परीक्षाधार पर कक्षा-6 में किया जाता है।

(3) "जो नर शरीर से चोरी, व्यभिचार, श्रेष्ठों को मारने आदि दुष्ट कर्म करता है, उसको वृक्षादि स्थावर का जन्म, वाणी से किये पापकर्मों से पक्षी और मृगादि तथा मन से किये दुष्टकर्मों से चाण्डाल आदि का शरीर मिलता है।"

- सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला सभाओं के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकठ्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अतः आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुनः धन इकठ्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनों से अनुरोध है इन की बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

- कार्यालय सचिव।

सभा का वर्ष

हर्ष का विषय है कि सभा का वर्ष 31 मार्च 1990 को समाप्त हो गया है। अतः अधिकारियों, अंतरंग सदस्यों एवं निरीक्षकों को सूचित किया जाता है कि वह अपनी कटी हुई रसीदें हिसाब और अवशेष धन 15 जून 90 तक अवश्य भेजने की कृपा करें, ताकि सभा का प्राप्तव्य धन संबंधी नियम प्रतिनिधि स्वीकारी में बाधक न बने।

2-जिला उपसभाओं से भी अनुरोध है कि वह अपनी जिला सभा का वार्षिक विवरण सभा की वार्षिक रिपोर्ट में सम्मिलित करने हेतु 30 जून सन 1990 तक अवश्य भेजने की कृपा करे। बाद मेंआये विवरण प्रकाशित न हो सकेंगे।

—मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

विद्वद्वरेण्य मनीषियों/सन्यासियों तथा मान्य लेखकों की सेवा में नम्र निवेदन--

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध नेता, लोकसभा में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण को निर्भीकता से प्रस्तुत करने वाले, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्राण स्व0 पं0 प्रकाशवीर शास्त्री की पुण्यस्मृति में हम आगामी दिस0 1990 में एक विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं। यह विशेषांक शास्त्री जी के संस्मरणों एवं विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाला अनूठा अंक होगा।

विनम्र निवेदन है कि शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागर करने वाले अपने संक्षिप्त विचार/कविता/संस्मरण आदि मुझे भेजने की कृपा करें। आर्यमित्र इन्हें प्रकाशित कर अपने को गौरवान्वित समझेगा।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक
आर्यमित्र, लखनऊ

जयन्ति ते सुकृतिनः

आर्यसमाज के लिए आजीवन समर्पित भाव से सेवारत अनन्य ऋषिभक्त श्री पं० धर्मपाल विद्यालंकार का गत 3 अप्रैल 1990 को सभाभवन के विशाल प्रांगण में प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए आर्यनेताओं ने स्वागत - अभिनन्दन किया।

प्रस्तुत हैं कतिपय दृश्यावलियाँ इस भावभीने स्वागत-समारोह की ———————

(कृपया 15 अप्रैल 1990 के आर्यमित्र का सम्पादकीय भी देखें)



सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी माल्यार्पण करते हुए।



सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी श्री पं० जी का शाल पहिनाकर स्वागत कर रहे हैं।



सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी रु० 2501/- की अल्पराशि सम्मान के प्रतीक के रूप में श्री पं० जी के करकमलों में अर्पित करते हुए।



आर्य मित्र के सम्पादक आचार्य इन्द्रदेव पाठक अभिनन्दन पत्र समर्पित करते हुए।



सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी उपस्थित जन समूह के सन्मुख श्री पं० जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए।

अंतिम हिन्दू

• श्री पुरुषोत्तम सिंह योग
लखनऊ

गतांक से आगे.....

मुझे तुम पर दया आई। मैंने गौतम बुद्ध को भेजा। उन्होने अहिंसा एवम् कर्म-फल-चक्र की शिक्षा दी। भारत-वासियों ने उस शिक्षा को भी तोड़ मरोड़ डाला। बुद्ध ने अहिंसा के अर्थ यह कब किये थे कि आततायियों और आक्रमणकारियों से भी युद्ध मत करो? किन्तु भारत के बौद्धों ने यही किया। सिन्ध के अरब आक्रमण के समय बौद्धों ने अहिंसा के नाम पर आक्रमणकारियों से सहयोग किया। गौतम बुद्ध की मूर्तियों से तो देश को पाट दिया। किन्तु उनके उपदेशों की अवहेलना की। उनके प्रेम करुणा और त्यागमय जीवन का अनुकरण नहीं किया। उनके कर्म-फल-चक्र की उपेक्षा की। जापान, चीन इत्यादि देशों ने जिस बौद्ध धर्म के बल पर संगठन का और शक्ति का संग्रह किया वह तुम्हारी गुलामी का कारण बना।

"तुमने ठीक कहा है। तुम ने मेरी करोड़ों रुपये की कल्पित मूर्तियाँ बना-बना कर करोड़ों रुपया उनके मन्दिर, आभूषण और भोग पर खर्च कर डाले। क्या तुमने कभी सोचा कि यही तुम्हारे पतन और अन्त में नष्ट हो जाने का कारण है।

"तुम यह मन्दिर और मूर्ति बनाते रहे। आततायी उन्हें ध्वस्त करते रहे। लूटते रहे। किन्तु मूर्तियाँ बना-बना कर स्थापित करने, मन्दिर बनाने तथा वहाँ सोना, जवाहरात संचित करने का तुम्हारा मोह भंग नहीं हुआ। अबुल बिन कासिम अकेले मुल्तान के सूर्य मन्दिर से 13500 मन सोना लूट ले गया। महमूद गजनवी ने सोमनाथ मन्दिर की लूट से इतना सोना और हीरे लूटे कि गजनी के लोगों की आँखें फटी रह गईं। अलाउद्दीन खिलजी दक्षिण के मन्दिरों से 96000 मन सोना लूट लाया। इन लुटेरों ने मन्दिरों की इस सम्पत्ति का उपयोग सेना की भरती और फिर तुम्हारे समाज को नष्ट करने में किया। अब्दाली को लूट का सामान ढोने के लिये अपनी तोपें छोड़ देनी पड़ीं जिससे सेना के हर चौपाये दुपाये का उपयोग सोना, रत्न इत्यादि ढोने में किया जा सके। इतिहास कार लिखते हैं कि दिल्ली के आस-पास किसी नागरिक के पास उसने एक गधा तक न छोड़ा।

स्वतन्त्र भारत में भी तुमने विशाल मन्दिर तो बनाये किन्तु अपनी संस्कृति और समाज की रक्षा के लिये क्या कोई शिक्षा संस्थान भी खोले? मैं पूछता हूँ एक सहस्र वर्ष तक तुम्हें यह क्यों नहीं सूझा कि उस द्रव्य से तुम सेना और हथियार इकट्ठे करते। संगठन के लिये गाँव-गाँव में अखाड़े तथा शस्त्र शिक्षा का प्रबन्ध करते। ऐसी पाठशालायें खोलते जिनमें शस्त्र विद्या एवम् युद्ध कौशल सीखे अर्जुन जैसे धर्नुधर, कर्ण जैसे दानी, भीम जैसे मल्ल, कृष्ण जैसे धर्म की स्थापना करने वाले उसके मर्म के ज्ञाता कौटिल्य जैसे कूटनीतिज्ञ सहस्रों की संख्या में निर्मित होते।

"मुसलमान और ईसाइयों ने देश में अपनी संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिये हजारों मदरसे तथा स्कूल खोल डाले। जहाँ हिन्दू संस्कृति के मर्म पर चोट पहुँचाने की शिक्षा पा पाकर सहस्रों भारतीय बच्चे प्रतिवर्ष युवा बनकर देश भर में फैलते रहे। तुमने अपनी भावी पीढ़ी में इन दोनों संस्कृतियों से श्रेष्ठ हिन्दू संस्कृति की छाप जमाने के लिये क्या किया? क्या तुमने उसकी शिक्षा का भार विदेशियों निरकुंश तथा अहिन्दू लोगों के हाथ में नहीं छोड़ दिया?

"कितना महत्वपूर्ण अन्तर था तुम्हारे पूर्वजों द्वारा अर्जित ज्ञान में और तुम्हारे विधर्मी आक्रमणकारियों में। उनके धर्म का सारा भवन टिका था मेरे द्वारा निर्मित एक मनुष्य के ऊपर। वह समझते थे कि मेरी कृपा प्राप्त करने के लिये उन में से किसी एक धर्म गुरु की शरण जाना आवश्यक है। फिर उनके सभी दुष्कर्मों को, पापों को मैं उनके पैगम्बरों की मध्यस्थता के कारण क्षमा कर दूँगा। और तुम्हें बताया गया था "कि कर्म तो अच्छे हों या बुरे भोगने ही पड़ेंगे। मेरे तुम्हारे बीच में कोई मध्यस्थ नहीं है। मैं भी अपने नियमों से बँधा हूँ।"

"मैं तो सत्‌चित आनन्द हूँ। तुम मेरे गीत गाओ अथवा मुझे गाली दो मन्दिर बनाओ या तोड़ो उससे न मैं प्रसन्न होता हूँ न क्रुद्ध। यह दूसरी बात है कि मेरे गुण-गान कर मेरे शाश्वत गुण तुम अपने अन्दर उत्पन्न करो। तुम्हें तो तुम्हारे कर्मों का फल ही प्राप्त होगा। तुम जड़ की पूजा करोगे तो जड़ता की ओर चैतन्य की पूजा करोगे तो चैतन्य की ओर बढ़ते जाओगे। ऐसा कर्म फल सिद्धान्त तुम्हारे पास था किन्तु तुमने उसके विरुद्ध जड़ पदार्थों की पूजा, मृत पुरुषों की कब्रों समाधियों और लक्ष्मी की पूजा की। फलस्वरूप मृत्यु जड़ता एवम् धन ही तुम्हारे पल्ले पड़ा।

तुम्हारे समाज को तो बता दिया गया था कि जो समाज अपूज्यों की पूजा करता है और पूज्यों का अनादर करता है वह नष्ट हो जाता है। विचार करो क्या तुम अपूज्यों की पूजा नहीं करते रहे उनका आदर और पूज्यों का निरादर नहीं करते रहे। फिर तम्हारे समाज को तो नष्ट होना ही था।

"मैंने तुम्हें विद्याध्ययन और स्वाध्याय के लिये आदेश दिया था इसमें प्रमाद न करने को कहा था। तुमने सरस्वती की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी आराधना करना प्रारम्भ कर दिया। शक्ति की उपासना की जगह उसकी भी पत्थर की कपोलकल्पित मूर्ति बनाकर पूजा करना ही ध्येय बना लिया। और तो और गायत्री छंद में दिये गये एक ज्ञानमय मन्त्र के अर्थों पर आचरण न कर उसकी भी मूर्ति बना डाली। पुत्र! पत्थर की गउएँ दूध नहीं देती। पत्थर के सिंह एक चूहा भी नहीं मार सकते। यह बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आई।

"मुस्लिम काल आया। उन्होंने तुम्हारे शास्त्रों का तुम्हारे चरित्र का गहन अध्ययन किया। तुम्हारी पुस्तकों के फारसी अनुवाद कराये तुम्हारी कमजोरियों से लाभ उठाया। तुम्हारी पाठशालायें इसलिये ध्वस्त कर दीं कि कहीं तुम अपने सच्चे धर्म पर चल कर उनकी शक्ति को खतरा न बन जाओ। तुम ने उनके धर्म और इतिहास का उनके संगठन का उनकी युद्ध और सैन्य प्रणाली का कोई अध्ययन नहीं किया। तुम एक दूसरे के साथ विश्वासघात करते रहे। वह एक-एक कर तुम्हें परास्त करते रहे। मैंने तुम्हें जो संगठन सूत्र दिया था उस पर तुमने कितना आचरण किया? करोड़ों लोग मुसलमान बनाये गये। यदि उन्होंने अपने धर्म में वापिस आने की गुहार भी की तो वह अस्वीकार कर दी गई।

"तुम्हारी निरन्तर पराजय से उत्पन्न हताश दशा को देख कर मैंने प्रताप, दुर्गादास, शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह जैसा योद्धा रास बिहारी बोस, जितेन्द्रनाथ, शचीन्द्र सान्याल, भगतसिंह पिंगले, सावरकर, मदनलाल धींगरा जैसे सैकड़ों क्रान्तिकारी युवक भेजे। एक बार को लगा कि तुम भारत में फिर से धर्म पर आधारित, संसार के लिए आदर्श, राज्य स्थापित करोगे। किन्तु तुम आपस में मिलकर न बैठ सके। यह भूल गये कि वसुन्धरा वीर भोग्या है। कायर भोग्या नहीं। तुमने अहिंसा का मर्म न समझ कर अहिंसा के नाम पर फिर कायरता को वरण किया। समाज को शौर्य और प्रतिघात की क्रान्तिकारी शिक्षा नहीं दी।

"फिर मुसलमान निर्बल हो गये तो अंग्रेजों ने उन्हें परास्त कर तुम दोनों पर राज्य किया। उन्होंने भी तुम्हारी पुस्तकों का गहन अध्ययन किया। जिन धर्म पुस्तकों को तुमने अंधेरी कोठरियों में बाँध-बाँध कर रख दिया था उनको पैसे दे दे कर उन्होंने खरीदा। उनका अंग्रेजी अनुवाद करवाया। उनमें दिये गये ज्ञान से लाभ उठाया। तुम्हारी कमजोरियों को समझा और तुम्हारे कमजोर स्थलों पर चोट की। उन्होंने भी करोड़ों लोगों को ईसाई बनाया। तुम्हारे सहस्र वर्षों से प्रताड़ित धर्म-बन्धु मुसलमान ईसाई बन कर तुम्हारी जड़ खोदने लगे। 1200 वर्ष पहले भी इन तथाकथित धर्मों की वास्तविकता को समझे बिना ही स्वयं तुम्हारे शासकों ने भारत में मस्जिदें तथा गिर्जाघर सरकारी धन से निर्माण कराये थे। मुस्लिम देशों से व्यापारिक लाभ उठाने के लिए स्वयं इस्लाम धर्म स्वीकार किया तथा अपने नाविकों को भी कराया। विदेशी नाविकों को हिन्दू स्त्रियाँ दे देकर भारत में बसाया। उन्हीं की संतानों (मोपलाओं) ने आगे चलकर तुम पर कहर ढाये। बल पूर्वक और छल बल धर्मान्तरण किये। किन्तु इन 1200 वर्षों में क्या तुम्हारे विद्वानों ने कभी भी इन दो विदेशी धर्मों का गहन अध्ययन किया? उनके स्वार्थों को समझा?

— क्रमशः

महर्षि दयानन्द सरस्वती

• राधेश्याम मोहिल
मन्त्री, आर्यसमाज, धूरी

गुजरात भारत का एक ऐसा सौभाग्यशाली प्रान्त है जिसने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का प्रतिनिधित्व किया है। यद्यपि भारतीय स्वतन्त्रता के नायक महात्मा गांधीजी थे तो स्वतन्त्रता के प्रेरणादायक इसी प्रान्त के टंकारा ग्राम से अवतरित हुए महर्षि. दयानन्द सरस्वती जी थे। महर्षि दयनन्द जिन्होंने भारतीय संस्कृति में क्रान्ति पैदा कर दी तथा भारतीयों की अपने आप को पहचानने पर मजबूर कर दिया, उस महापुरुष का बचपन का नाम मूलशंकर था तो आईये उस महापुरुष के जीवन पर आज के दिन दृष्टिपात करें। क्योंकि दीपावली की पावन संन्ध्या में महर्षिदयानन्द सरस्वती जी ने एक अमर-ज्योति जला कर स्वयं निर्वाण (शरीरत्याग) किया था।

मोर्वी, काठियावाड़ का एक छोटा सा राज्य था और यहाँ का राजा बड़ौदा के गायकवाड़ और जूनागढ़ के नवाब को टेक्स देता था। इसी मोर्वीराज्य में एक गांव "टंकारा" आता था। इसी टंकारा ग्राम में 12 फरवरी 1825 ईस्वी यानि फाल्गुनवदी दसमी सवंत। 1881 में श्री कर्शन जी के घर बालक मूलशंकर का जन्म हुआ। कर्शन जी एक विद्वान त्रिवेदी ब्राह्मण तथा शिव उपासक थे अतः उन्होंने अपने संस्कार जन्म से ही उन्हें देना शुरु कर दिये। 5 वर्ष की आयु में वर्ण शिक्षा तत्पश्चात वेद मन्त्रों (चुने हुए) कण्ठस्थ करा दिये। मूलशंकर जी का यज्ञोपवीत संस्कार 8वर्ष की आयु में हुआ। 14 वर्ष की आयु तक उन्होंने व्याकरण, यजुर्वेद तथा दूसरे वेदों के काफी भाग कण्ठस्थ कर लिये। यहां तक अध्ययन कर शिक्षा समाप्त कर दी गई लेकिन मूलशंकर को इस शिक्षा से सन्तुष्टि न हुई। फिर उन्हें प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र काशी में पढ़ने की इच्छा हुई लेकिन माता ने मोहवश पुत्र को दूर न जाने दिया और वहीं एक विद्वान पण्डित से शिक्षा प्राप्त करने लगे।

बालक मूलशंकर के हृदय पर कैलाशपति शंकर की वीरता उदारता, कल्याणकारी महिमा का प्रभाव था। लेकिन शिवरात्रि वाले दिन पिता के आदेश पर रात्रि को बालक मूलशंकर उपवास रखे एक टक लगाये शिवलिंग को देख रहे थे तो चूहों ने शिवलिंग पर पड़ी मिठाई पर धावा बोल दिया। इस दृष्य में मूलशंकर ने महाशक्तिशाली शिव के विवश और असमर्थ पाया तो उन्हें यह शिव नकली सा लगा। असली क्या है? इसी सोच में अब बालक मूलशंकर खोये खोये से रहने लगे। यह वैराग्य का बीज था। इसी दौरान उनकी 14 वर्षीय प्रिय बहन का केवल 4 घंटे में ही देहान्त हो गया। मौत शब्द भयंकर सा लगा तभी उनके प्यारे चाचा जी की भी मौत हो गई। इस प्रकार अचानक मनुष्य की "मृत्यु" हो जाना, समाप्त हो जाना पर सोचते रहने का आदि बना दिया और जीवन की गम्भीरता और बढ़ गई। हर समय खोये खोये व चिन्तामय रहने पर परिवारजनों ने संसारिक बंधनों में बांधने के लिये एक सुशील कन्या देखकर विवाह नियत कर दिया। मूलशंकर ने अपनी विवशता देखकर और समय पाकर "घर त्याग" दिया। यह ऐतिहासिक घटना सन् 1846 की है।

मृत्यु पर विजय तथा सच्चे शिव प्राप्ती की लालसा व जिज्ञासा लिये वह विभिन्न योगियों से मिले। इस दौरान उन्हें पाखण्डी साधु भी मिले जिन्होंने उनके कीमती कपड़े व गहने आदि उतरवा लिये। मूलशंकर ने महसूस किया कि वैरागी बन कर ही यह कार्य हो सकता है अतः उन्होंने गेरुए कपड़े धारण कर लिये तब इनका नाम "शुद्ध चैतन्य" पड़ा।

सिद्धपुर में कार्तिक मास में एक बहुत बड़ा मेला लगता था। वहां पर बहुत साधु सन्यासी पहुँचते थे। उनसे मिलने, ज्ञानप्राप्ति के उद्देश्य से "शुद्ध-चैतन्य" यानि मूलशंकर जी वहां पहुँचे। तभी उनके पिता अन्य दरबारी गणों को लेकर वहां मूलशंकर को पकड़ लिया लेकिन भला वैरागी, मतवाला, मस्त महामानव दुनियां की पकड़ में कैसे आ सकता था। रात्रि को सबको सोते देखकर खिसक गये। ये उनकी पिता के साथ आखिरी मुलाकात थी।

शुद्ध चैतन्य कुम्भ मेले पर हरिद्वार पहुँचे वहाँ उन्होंने पास के सभी तीर्थस्थलों की यात्रा की। इन दिनों मूलशंकर जी का केवलमात्र ध्येय ज्ञानप्राप्ति था और इसमें बाधक थी रहने, खाने, पीने आदि की व्यवस्था। तभी वे एक विद्वान सन्यासी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी से मिले। दृढ़ संकल्पी और जिज्ञासु ब्रह्मचारी के पूर्ण आग्रह के कारण स्वामी पूर्णानन्द जी ने उन्हें सन्यास की दीक्षा दे दी और तभी मूलशंकर से बने शुद्ध चैतन्य अब फिर "दयानन्द सरस्वती" जी बन गये। इस दौरान उन्होंने बहुत सारे ग्रन्थ पढ़े लेकिन मानसिक संतुष्टि न हुई। योग का इस साधना में उपयोगी मानकर स्वामी दयानन्द जी ने दक्षता प्राप्त कर ली। गंगातट पर एक लाश को बहते हुए देखा तो जिज्ञासावश निकल कर चीरफाड़ की और पुस्तकों के अनुरुपन पाकर वापस पुस्तकों सहित गंगा में ही बहा दिया। यानि स्वामी जी यथार्थवादी थे और सत्य को खोजते थे।

पवित्र स्थल मथुरा में गंगा किनारे स्वामी वृजानन्द सरस्वती जी की कुटिया थी। वहां पर वेदपाठ का पठन की सर्वत्र चर्चा थी। स्वामी दयानन्द जी भी कुटियां पर पहुँचे। दरवाजा खटखटाया। अन्दर से आवाज आई कौन है? उत्तर स्वामी जी का था- यही तो जानने आया हूँ गुरुवर। बस हीरा तो एक शब्द से ही परखा गया। प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी ने दरवाजा खोला- फिर अपने जीवन की सारी विद्या सम्पत्ति श्री दयानन्द जी को ही सौंप दी। शिक्षा उपरान्त दीक्षा में देश और धर्म के लिये श्री दयानन्द जी से उनका जीवन ही मांग लिया। यह विश्व में एक मात्र उदाहरण है कि स्वामी दयानन्द जी ने सारी जिन्दगी भर निभाया। उस समय उनकी आयु 39 वर्ष थी।

स्वामी दयानन्द फिर प्रचार के क्षेत्र में तपस्याबल प्राप्त करके कूद पड़े। उस समय देश का ढांचा पूर्णतः जीर्ण शीर्ण था। चाहे वह धार्मिक, सामाजिक या राजनैतिक क्षेत्र था। नैतिकता समाप्त थी। उस समय एक विशुद्ध प्रबल शक्ति की जरूरत थी और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सारा जीवन ही न्यौछावर कर दिया।

धार्मिक क्षेत्रः- सारी जनता विभिन्न मत, सम्प्रदायों में बंटी झगड़ती थी। वेद जो भारतीय संस्कृति के आधार थे लुप्त थे। अन्ध विश्वास और पाखण्ड का बोलबाला था तभी महर्षि-दयानन्द जी ने आकर पहले वेदों का ज्ञान कराया और महत्व समझाया फिर पाखण्ड पर वार किया। भगवानों की पोल खोली। अन्धविश्वास का पर्दाफास किया और एक ईश्वर की आराधना का उपदेश दिया।

विदेशी सम्प्रदायों ने यहां के भोलेभाले लोगों को लालच या विवशता और अन्धविश्वास का लाभ उठाकर उनको भारंतीय संस्कृति से विमुख करने में लगे थे। महर्षि ने उनसे लोहा लिया और संस्कृति को बचा लिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पूर्णतः सच्चाई को मानते थे और सच्चाई के आधार पर सभी सम्प्रदायों के सतपुरुषों का सम्मान करते थे। तभी अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में सभी सम्प्रदायों के सतपुरुषों का आपस में बैठकर सत्य असत्य का निर्णय लेने का अनुरोध किया है स्वामी दयानन्द जी ने ।

साम्माजिक क्षेत्रः- यहां छुआछूत का बोलबाला था इससे इस आर्यजाति को विधर्मी लोग काट्-काट अपने में मिला रहे थे। महिलाओं पर अत्याचार था उनको दलित समझा जाता था। जातिवाद का भूत सवार था। महर्षि दयानन्द जी ने अछूतों को इसी जाति का महत्वपूर्ण अंग बताया और विशेष ध्यान देने की बात की महिलाओं को पुरुषों के समानाधिकार का नारा लगाया। साथ ही सतीप्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह का विरोध किया तथा विधवा विवाह पुण्य कार्य बताकर नारी का उद्धार किया। शिक्षा नारी जागृति के लिये आवश्यक बतायी।

गऊ हमारी संस्कृति की प्रतीक है। महर्षि दयानन्द ही विश्व में एक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने गऊ कल्याण के लिये रचनात्मक कार्य किया। उन्होंने गऊ करूणानिधि पुस्तक लिखी जिसमें धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक दृष्टिकोण से गऊ को उपयोगी सिद्ध किया गया है। महर्षि जी ने गऊ रक्षा के लिये गऊ रक्षिणी समिति स्थापित की थी तथा सबसे पहले रिवाड़ी के अन्दर "गऊशाला"

— शेष पृष्ठ ६ पर

षोडश संस्कार क्यों?

श्री चन्द्रभूषण शास्त्री
गणेशगंज, लखनऊ

संस्कारों का हमारे जीवन में बहुत ही महत्व है, संस्कारों के अभाव में बच्चों के शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति में बाधा पड़ती है। क्योंकि अयोग्य वस्तु भी योग्य को पाकर योग्य बन जाती है तथा योग्य वस्तु भी अयोग्य को पाकर अयोग्य बन जाती है जैसा नीतिशास्त्र में घोडा, शास्त्र, शस्त्र, वीणा नर और नारी सात वस्तुओं को बताया गया है:-

अश्वः शास्त्रं शस्त्रं वीणा वाणी नरश्च नारीश्च।
पुरुष विशेषो प्राप्ता भवति योगाश्च योगाश्च।।

संस्कार का अर्थ ही है किसी कार्य को ठीक प्रकार से करना संस्कारों के द्वारा खराब वस्तु भी अच्छी बना ली जाती है :-

आज ऊसर भूमि को भी संस्कारित करके खेती के योग्य बना लिया जा रहा है, संखिया और पारा जिसे विष कहा जाता है वैद्य लोग संखिया को सोधकर भस्म बनाकर कोढियों को खिलाकर ठीक कर देते हैं, पारे को राख करके चन्द्रोदय औषधि बनाकर मरणासन्न व्यक्ति को खिलाकर गले का कफ हटाकर कई मिनट तक बातें करा देते हैं।

जहाँ बीघे में बीस सेर अनाज नहीं होता था वहां संस्कार करके 20 मन से अधिक पैदावार कीजाती है जो आलू आधा पाव का नहीं होता था, बढ़ई लकड़ी से बढ़िया आलमारी तथा मूर्ति बना देता है, कुम्हार मिट्टी से सुन्दर मूर्ति बना देता हैं, लोहे के साधारण तार को संस्कार द्वारा जब वीणा का तार बना देते हैं तो उसका मूल्य बढ़ जाता है, अयोग्य घोड़ा भी योग्य सवार के हाथ में पड़ने से मूल्यवान बन जाता है, तोता-मैना भी संस्कारित होकर कीमती बन जाते हैं।

संस्कार का ही तो असर है कि विद्वान अंग्रेज भी तुम को टुम बोलता है, बी०ए० पास होकर शिक्षक विद्वान होकर भी बहुत लोग माता को बुआ कहना नहीं छोड़ते, पूर्णतया समय लेने पर विद्वान होने पर भी भूतप्रेत का भय नहीं उतरता, मुसलमान शुद्ध होकर हिन्दू बन जाने पर भी खुदा कहना नहीं छोड़ता है। बीसों बार शास्त्रार्थ में मूर्ति पूजक निरुत्तर हो जाने पर भी मूर्ति पूजा नहीं छोड़ते। कहते हैं संध्या में मन नहीं लगता है इसका कारण है कि बचपन से संध्या करने का संस्कार नहीं है। अतः 16 संस्कारों को करके बच्चों को योग्य बनाओ तभी वह नौशेवा की तरह ईमानदार होकर मुट्ठी भर नमक भी मुफ्त का नहीं चाहेंगे, कर्तव्याकर्तव्य का बोध उन्हें तभी होगा:-

कर्तव्यमाचरन् काम कर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे स वै आर्य स्मृतः

जो करने योग्य उत्तम कार्य को करे, न करने योग्य बुरे काम को न करे जिसमें यह स्वाभाविक गुण हो वह आर्य है। जिसमें यह गुण नहीं उसे अपने को आर्य कहने में शर्म आनी चाहिए, गुणरहित पिता को पिता कहने में जबकि लोग शर्माते है। किसी महापुरुष का वचन है:- गुणियों की गणना में जिसकी गणना नहीं ऐसे पुत्रवती माता को बन्ध्या ही होना ठीक है।

स्पार्टा देश वाले बच्चे को पैदा होते ही दिन भर के लिए शीतोष्ण की शक्ति अनुभव कराने के लिए पहाड़ पर शक्ति अनुभव कराने के लिए पहाड़ पर रख आते है आठ पहर बाद यदि जीवित मिला तो उसका पालन करते हैं, वह निर्बल बच्चे का मर जाना अच्छा मानते हैं। विलायत में 16 वर्ष से पूर्व कोई बच्चा सिगरेट,, तम्बाकू आदि नहीं पी सकता हैं।

अभिमन्यु को चक्रव्यूह तोड़ने की शिक्षा गर्भ में ही मिली थी, नेपोलियन जब गर्भ में था तो उसकी माँ सैनिकों की परेड देखा करती थी तभी तो अभिमन्यु और नेपोलियन को संसार में ख्याति मिली, राम को विश्वामित्र ने कृष्ण को संदीपन गुरु ने संस्कार देकर इस योग्य बना दिया कि वे संसार में भगवान बनकर पूजित हो गये।

अतः समस्त माता-पिताओं से प्रार्थना है कि बच्चों में संस्कार भरकर उन्हें योग्य बनाये तभी महर्षि दयानन्द के स्वप्न को सार्थक किया जा सकता है।

सोलह संस्कारों के नाम क्रमशः इस प्रकार है (1) गर्भाधान (आरम्भ में) (2) पुंसवन- गर्भ को पुष्ट करने के लिए तीसरे महीने में किया जाता है। (3) सीमन्तोन्नयन- सीमन्त (मस्तक) बुद्धि का स्थान है छठे महीने के बाद बुद्धि वृद्धि होती है तभी इसे करते हैं। (4) जातकर्म- बच्चे का जन्म होने पर जीभ पर ओ३म् लिखा जाता है। (5) नामकरण- जन्म से ग्यारहें दिन या 101 दिन पर किया जाता है। ध्यान रखें ऐसा नाम हो जिसका अर्थ सुन्दर हो नाम कहने में सरल हो क्योंकि यथा नाम तथा गुण सार्थक हो सके।

(6) निष्क्रमण- चौथे महीने बच्चे को घर से बाहर घुमाना। (7) अन्नप्राशन- इसका अर्थ ही है अन्नखाना। अन्न पचाने की क्षमता अर्थात् जब बच्चा छः महीने का हो तभी यह संस्कार करें। (8) चूड़ाकर्म- मुण्डन संस्कार या तीसरे वर्ष में करें। (9) कर्णवेध- तीसरे वर्ष में नासिका तथा कान छेदन करना इसके करने से बच्चे के अनेकों रोग चले जाते हैं। (10) उपनयन-5 वर्ष के बाद बच्चे को यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। (11) वेदारम्भ- जब बच्चे को प्रथम विद्यालय भेजे तो यह संस्कार विद्या आरम्भ करने का है। (12) समावर्त्तन- विद्या की समाप्ति पर होना चाहिए। (13) विवाह- यदि लड़का हो तो 25 वर्ष लड़की हो तो 16 वर्ष के पश्चात् गुण स्वभाव का मिलान करके करना चाहिए। (14) वानप्रस्थ- जब पुत्र का पुत्र हो जाये तो वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश होना चाहिए। (15) सन्यास- पुत्र तथा पत्नी वैभव, संसार का मोह छोड़कर सन्यास आश्रम में प्रवेश लेना चाहिए। (16) अन्त्येष्टि:- प्राणान्त हो जाने पर अंतिम संस्कार में अधिक से अधिक स्वसामर्थ्यानुसार शुद्ध सामग्री घी चंदन आदि का शव के साथ जलाना चाहिए जिससे दुर्गन्धि न होने पावे। महर्षिकृत्त संस्कार विधि में इन्हीं संस्कारों का वर्णन है। इसके पश्चात् कुछ करना शेष नहीं रह जाता है।

पृष्ठ ५ का शेष.....

की स्थापना करके विश्व में कीर्ति स्थापित की तथा उदाहरणीय कार्य किया।

महर्षि दयानन्द जी के इतने विलक्षण गुण विरोधियों को चुभते भी थे। उन्होंने बहुत बार जहर दिया महर्षि को मार डालने की धमकी व षड्यन्त्र भी रचें। ईंटे और पत्थर भी बरसाये पर ईश्वर का सच्चा दूत अपने कर्तव्य का पूरा पालन करता रहा और अन्तः में शहीद भी इसी षड्यन्त्र के तहत हुए।

आज आर्यसमाज और इसके अधीन चलने वाली संस्था में विश्वभर में ऋषिवर के कार्य को कर रही हैं। आईये हम सब भी इस पुण्यकार्य में शामिल होकर सच्ची श्रद्धांजली अर्पित करें।

आर्य समाज लखीमपुर

प्रधान - सुशील कुमार जी
मन्त्री - विकाशचन्द्र जी
कोषाध्यक्ष-श्री सुधीरकान्त जी

आर्यसमाज गंगापुर सिटी (राजस्थान)

प्रधान- श्री रामजी लाल महरवाल
मंत्री- श्री नन्दकिशोर सोनी
कोषाध्यक्ष-श्री कंछियालाल बजाज

दीप जलाते आये- देकर दीवाली चले गये

• देवनारायण भारद्वाज
आज़मगढ़

माता-पिता परिजन उसके मुख को देखकर अपने मन में रोज नये दीपक जलाते रहे- जिनमें उनकी आशाओं-कल्पनाओं का तेल वर्तिका रहता था, कि मेरा मूलशंकर बड़ा हो कर विद्वान और श्रीमान बनेगा। आठवें वर्ष में फिर एक नये उत्साह का तेल लेकर दीपक ज्योतित हो गया- मूलशंकर में जब उसका उपनयन संस्कार हुआ। गायत्री, शिवसाहित्य और यजुर्वेद मूलशंकर को कण्ठस्थ कराया गया। पिता शैव मतानुयाई थे- वे पुत्र को भी परम शिवभक्त बनाना चाहते थे। इसीलिए कथा-वार्ता-धार्मिक अनुष्ठानों में मूलशंकर को लगाये रखते थे।

मूलशंकर की 14 वर्ष की आयु में एक दीपक और जल गया। ग्राम के शिवमन्दिर में शिवरात्रि के व्रत को धारण कर शिव के दर्शन की लालसा में वे रात्रि भर जगते रहे और कभी मन्दिर के दीपक की लौ को देखते कभी शिव पिण्डी को देखते रहे। पिता आदि व्रतधारी सभी सो गये थे। अकेला मूलशंकर उस जलते दीपक की लौ को अपने हृदय में समेटता रहा और इसी रात्रि में मूषकों की क्रीडाओं ने उसे बता दिया था कि यह पत्थर शिव नहीं है- वह तो कोई और है।

योगानुष्ठान और प्रभु मिलन के उसके परीक्षण चलते रहे। यह दयानन्द का दीपक अब लौ को लिए-लिए कहीं नहीं भटका- उसमें प्रभु की ज्योति मिलाने के लिए। वह ज्योति उसे मिली 36 वर्ष की वय में एक प्रज्ञाचक्षु महात्मा विरजानन्द से, जब उस नेत्रहीन कृशकाय महात्मा को दयानन्द के रूप में दृष्टि मिली। उनके मन का बुझा हुआ दीपक जल उठा। इधर गुरु के ज्ञान से दयानन्द का दीपक भी प्रदीप्त हो उठा। गुरु दक्षिणा में भेंट की गई लौंग से भरी थाल गुरु ने ग्रहण करने में कोई रुचि न दिखाकर आज दयानन्द से वह दीप ही मांग लिया- जिसकी ज्योति अब उजाला के साथ-साथ ज्वाला भी बन चुकी थी। अपने लिए नहीं- संसार के कल्याण के लिए- वेदों के प्रकाश के लिए। प्रभु इच्छा- गुरु इच्छा और वेद इच्छा की पूर्ति हेतु दयानन्द निकल पड़े- उसने अपने दीपक को कभी दीप ही रहने दिया - कभी उसे दिनकर बना लिया। तभी तो वह कुटी से ले कर कोठी तक प्रकाश कर सका।

सृष्टि के अरबाधिक वर्षों में एक वर्ष सं0 1881 वि0 पौषमास के एक शनिवार को, करोड़ो परिवारों में से एक परिवार-कर्षन जी तिवारी का, और भारत के लाखों ग्रामों में से एक ग्राम टंकारा- जहाँ एक शिशु ने जन्म लिया। मात-पिता-बाबा सम्बन्धी सबके हृदय में हर्ष का दीपक जल गया। वह उनका कुल दीपक जो था। जातकर्म संस्कार तथा अन्य उपयुक्त स्वागत की गतिविधियों में ग्राम, सुख से आच्छादित हो गया। समारोह के साथ ग्याहरवें दिन उसका नामकरण संस्कार हुआ। नाम रक्खा गया- मूलशंकर।

दम्भी स्वार्थी सशक्त शत्रुओं ने- दयानन्द के शत्रु नहीं- मानवता के शत्रु- दयानन्द अपने लिए क्या कर रहा था- वह तो जगत कल्याण के लिए सभी कुछ कर रहा था- तो शत्रुओ ने दयानन्द पर कीचड़ उछाला, दोष लगाये, शस्त्र चलाये, तलवार से प्रहार किया और एक नहीं सत्तरह बार विष दिया। दयानन्द का दीपक-उसे तो जलना ही जलना था, चाहे कोई उसे अमृत पिलाये या कालकूट। इन सभी विषमताओं से निष्प्रभावी इस दीपक की ज्योति भारतवर्ष क्या सम्पूर्ण विश्व में फैलने लगी। सभी भद्र विचारक दयानन्द से जुड़ना चाहते थे। थियोसोफिकल सोसाइटी दयानन्द के आर्यसमाज का अंग बनने को आतुर थी। सभी दस नियम उसे मान्य थे, किन्तु एक बिन्दु- तीसरे नियम का वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है- का 'सत्य" शब्द हटाने भर से वे सभी आर्य समाज में आ जायेंगे। अमेरिका से उनके दो सर्वोच्च विद्वान दयानन्द से इस विषय पर समझौता करने आये। दयानन्द इस "सत्य" को हटाने के लिए कदापि सहमत नहीं हुए। उनके दीपक में इस सत्य की ही तो ज्योति थी।

दयानन्द ने देखा था कि साधारण-सम्पन्न जनता वर्ग आर्यसमाज को अपनाता जा रहा है। यदि राजे रजवाड़े के उच्च शासक वर्ग- भी आर्यसमाज को अपना ले तो दीन-दुखियों दलितों की रक्षा भी हो जाये और राजागण भी वेद शिक्षा प्राप्त कर ले। एक दिन इन दोनो की सम्मिलित शक्ति से देश फिर स्वतन्त्र हो जाये और यहाँ पर वैदिक साम्राज्य या राम राज्य आ जाये। इसीलिए वे इन रजवाड़ों के नियन्त्रण पर वहाँ अवश्य पहुँचे। उदयपुर नरेश, शाहपुराधीश ने भरपूर स्वागत किया दयानन्द का। उनके दीपक से अपनी ज्योति जलाई। आर्यसमाज को अपनाया। राजमहलों में यज्ञशालाएँ बनाईं। दरबार में जनकल्याण के कार्य आरम्भ किए। अपनी दुष्प्रवृत्तियो पर अंकुश लगाया। तभी जोधपुर राजवर्ग का निमन्त्रण भी आ गया। दयानन्द ने वहाँ जाने का मन बनाया। लोगों ने बताया कि वहाँ के लोग अधिक व्यसनी और विपरीतगामी हैं और आप पाखण्ड को खण्ड-खण्ड करे बिना रहने वाले नहीं, सो आपको वहाँ पूर्ण सतर्कता रखनी पड़ेगी? यह सुनकर दयानन्द का दीपक देदीप्य हो उठा। वे बोल पड़े यदि दयानन्द की अंगुलियों को बत्ती बनाकर जला दिया जाये, तो भी दयानन्द सत्य का प्रचार बन्द नहीं कर सकता। उदयपुर नरेश और शाहपुराधीश राजाओं ने प्रचुर धनराशि एवं शाल-दुशाले भेंट कर बड़े सम्मान पूर्वक दयानन्द को विदा किया था।

आज अन्तिम दिन दयानन्द के दीपक में विशेष ओज तेज था, जो उनके मृत्यु दृश्य से सीधे गुरुदत्त में चला गया। पुराने बड़े दीपक ने अपनी ज्योति नये नन्हें दीपक गुरुदत्त में बढ़ा दी थी। इस गुरुदत्त के दीपक से जल गए उसके साथी लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज के दीपक। दयानन्द तो अपने जीवन में जहाँ गए- दीपक जलाते चले गये। मुंशीराम- स्वामी श्रद्धानन्द ने तो बहुत पहले ही बरेली में देवदयानन्द से ज्योति पाकर अपने दीपक को सुदीप्य कर लिया था। ऐसे ही एक-एक करके अनेक असख्य दीप जलकर, आर्यसमाज की दीपावली जगमगा उठी थी। वैसे भी भारत में आज दीपमालिका का पर्व था। महर्षि दयानन्द के महादीप के जाने से अमा की तिमिर मयी रजनी तो आई, किन्तु इस दीवाली के हरदीप में दयानन्द के दीपक की ज्योति जग रही थी, जो आज भी आर्यसमाज के रूप में हमारा मार्ग दर्शन कर रही है। उस देवदयानन्द को कोटिश: श्रद्धांजलि। जो दीप जलाते आये, देकर दीवाली चले गए। ◘

"वैदिक विचारों का रत्नकोष"

वेद पथिक पं. धर्मवीर आर्य
झण्डारानी
दिल्ली

1- वैदिक विचारों के रत्न कोष की तुलना विश्व के रत्न कोष से करना सर्वथा असंभव है।

2- वैदिक विचारधारा की संजीवनी बूटी से विश्व को बना लो यह वेद भगवान का उपदेश है।

3- वैदिक विचारों के धन से धनवान बनो।

4- वैदिक विचारों के बिना मनुष्य में और पशु पक्षियों में लेशमात्र भी अंतर नहीं है।

5- वैदिक विचारों के रत्न कोष के बिना मोक्ष सुख का परम आनन्द मनुष्य को प्राप्त नही होता।

6- वैदिक विचारों के बिना मन पर विजय प्राप्त करना सर्वथा असंभव है।

7- वैदिक विचारों के हीरा मोतियों को प्राप्त किए बिना मनुष्य 84 लाख योनियों के महाचक्र में भटकता है।

8- वैदिक विचारों से ही ब्रह्म सत्ता की महत्ता का ज्ञान प्राप्त होता है।

9- वैदिक विचारों के धन से धनवान बन जाने पर मनुष्य देवसंज्ञा का अधिकारी बन जाता है।

10- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य ने विश्व के नील गगन में सूर्य और चन्द्रमा के समान ज्ञान की प्रतिमा के पावन पराग से चमक जाता है।

11- वैदिक विचारों के हीरे मोतियों की ज्योतियों से अपने आपको अलंकृत करो, यह वेद भगवान का उपदेश है।

12- वैदिक विचारों की पूँजी से अपने आप को समृद्ध बनाओ।

13- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्त कर लेने पर सृष्टि के आदि काल के शाश्वत शब्दों को जो आकाश में गूँज रहे है वह समाधि अवस्था में योगीजन सुना करते हैं। अपने हृदय आकाश में।

14- वैदिक विचारों के रत्नकोष के बिना मनुष्य कोढी तीन-तीन है।

15- वैदिक विचारों की त्रिवेणी के संगम में गोता लगा लेने पर सब संशय फूल बन जाते हैं।

16- वैदिक विचार ही तो कामधेनू और कल्पतरू है।

17- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य अपनी आत्मा के सिंहनाद को सुनने लग जाता है।

18- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य कष्टों में भी कभी अधीर नहीं होता।

19- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य मृत्यु के भय से विमुख हो जाता है।

20- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने के लिए अपना जीवन यज्ञ मय बनाओ।

21- वैदिक विचारों को प्राप्त कर विश्व हित मे जीना व मरना सीखो।

22- वैदिक विचारों के धर्म के बिना चक्रवर्ती सम्राट भी कंगाल है।

23- वैदिक विचारों का रत्नकोष प्राप्त कर लेने पर मनुष्य को संतोष रूपी पारस मणि प्राप्त होती है।

24- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर महर्षि महात्मा जन और योगीजन त्रिकाल दर्शी बन जाते हैं।

25- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य की मुखाकृति को देखकर महर्षि जन मनुष्य की गुप्त भावनाओं को देख कर बता देते है।

26- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्त करने के लिए ओ३म नाम का जप परम सहायक है।

27- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य चिंताओं की चिता से सुगमता से बच जाता है।

28- वैदिक विचारों के धन के बिना सब धन धूल समान है।

29- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्त कर लेने के लिए गायत्री महामंत्र का जप परम सहायक है यह मेरा निजी अनुभव है।

30- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्त करने के लिए अपनी पवित्र कमाई के अन्न को ग्रहण करो।

31- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्त करने के लिए सत्संग में नित्य जाया करो।

32- वैदिक विचारधारा को प्राप्त करने के लिए वेदों शास्त्रो उपनिषदों, सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय गीता रामायण का पाठ नित्य करो।

33- वैदिक विचारों की थाती को प्राप्त करने के लिए धन पर और पराई नारी पर आसक्त होना त्याग दो।

34- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्त करने के लिए अपनी आँखों को, कानों को, मन को, और वाणी को पवित्र बना लो।

35- वैदिक विचारों की गंगा में गोता लगा लेने पर मन का मैल धुल जाता है।

36- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर यत्र तत्र सर्वत्र महात्मा जन भगवान का दिव्य दर्शन करने लग जाते हैं।

37- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य प्रतिपल प्रमुदित रहने लग जाता है।

38- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य की काया में कुन्दन सम आभा की प्रतिमा का पावन पराग आ जाता है।

39- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्त करो यह वेद भगवान का मानव मात्र के लिए उपदेश है।

40- वैदिक विचारों के धन से धनवान बनने के लिए शुभकर्मों को ही नित्य प्रतिपल किया करो।

41- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्त करने के लिए विश्वहित ही जीना और मरना सीखो।

42- वैदिक विचारों को प्राप्त करके अमर पद प्राप्त करो।

43- वैदिक विचारों से सभी पाप ताप भस्मसात हो जाते हैं।

44- वैदिक विचारों के रतनकोष के बिना मनुष्य का जीवन नागफनी और बबूल के काँटों के समान दुःखदायी हो जाता है।

45- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर विश्व की प्रतिभा का स्वामी महर्षि जन बन जाते हैं।

46- वैदिक विचारों के रत्नकोष को प्राप्तकर मालोमाल बनो।

47- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य को प्रतिपल लोक सेवा सौभाग्य प्राप्त हो जाता है।

48- हे विश्व के नर तन धारियो उठो, जागो, अपने आपको पहचान कर वैदिक विचारों की गंगा में गोता लगाकर अपरमित ज्योतियों की मोतियों को प्राप्त करो।

49- वैदिक विचारों के रतनकोष से मनुष्य समाधी अवस्था का परम आनन्द प्राप्त करने लग जाता है।

50- वैदिक विचारों को प्राप्त कर लेने पर अडिग समाधी लगने लग जाती है।

51- वैदिक विचारों के रतनकोष को बाँटने में मोक्ष सुख का परम आनन्द महर्षियों को प्राप्त होता है।

52- वैदिक विचारों के रतनकोष को प्राप्त कर लेने पर दैवी सम्पदाओं का स्वामी मनुष्य बन जाता है।

सूचना

जिला सभा की बैठक दिनांक- 27-5-90 को समय 12·00 दिन स्थान आर्यसमाज मन्दिर गोला गोकरन नाथ के आहूत की गई है। जिला सभा लखीमपुर के अधिकारियों एवं समाज मन्त्री जी से अनुरोध है कि बैठक में पधार कर कार्यवाही बैठक सफल बनायें।

- मन्त्री
जिलासभा लखीमपुर,उ0प्र0

सार्वदेशिक व्यायाम शिक्षक शिविर

10 जून से 24 जून रविवार 1990 तक

गुरुकुल झज्जर रोहतक हरयाणा

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का उप व्यायाम शिक्षक व्यायाम शिक्षक शिविर डा0 देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता में दिनांक 10 जून से 24 जून 1990 तक लगाया जा रहा है। जिसमें आर्यवीर प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण का ही प्रवेश होगा। प्रवेश शुल्क- 50/- रुपये/ परीक्षा व परिचय पत्र शुल्क- 5/- रुपये होगा। आर्यवीर अपना पासपोर्ट साईज का फोटो साथ में गणवेश, लाठी, भोजन के पात्र नोट बुक आदि अवश्य लायें।

पंडित गुरुदत्त जी जयन्ती

आर्यसमाज हसनगंज पार लखनऊ के साप्ताहिक सत्संग दिनांक- 22·4·90 को मुनिवर पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्मदिवस मनाया गया। वक्ता श्री पवन-कुमार सिद्धान्त शास्त्री श्री ब्रजेन्द्र निगम तथा डा0 वीरेन्द्र बहादुर सिंह ने श्री गुरुदत्त जी के जीवन चरित्र तथा सद्गुणों पर प्रकाश डाला। उसीदिन आर्यसमाज निरालानगर लखनऊ में गुरुदत्त जयन्ती मनाई गई श्री पवन कुमार सिद्धान्त शास्त्री ने मुनिवर पंडित गुरुदत्त की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला।

सनातन वैदिक धर्म प्रचार समिति सिधौली (सीतापुर) की ओर से दिनांक- 26-4-90 को मुनिवर पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म दिवस सायंकाल 4बजे मनाया गया। प्रमुख वक्ता श्री पवनकुमार सिद्धान्तशास्त्री ने मुनिवर के जीवन परिचय तथा चारित्रिक गुणों पर प्रकाश डालते हुए उनकी वैदिक धर्म की सेवाओं की जानकारी दी। सभा का प्रारम्भ विश्वानिदेव" मन्त्र से हुआ तथा शान्ति पाठ के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

आर्यसमाज बाहमपुर पो0-सुखौरा जिला बदायूँ

प्रधान- श्री देवदत्त जी अध्यापक
मंत्री- प्रेमपाल सिंह
कोषाध्यक्ष- श्रीमती जयदेवी जी

निर्वाचन आ0स0 इस्लामनगर बदायूँ

प्रधान - श्री रामकुमार आर्य
मन्त्री - श्री शिव ओ मृ आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री हरिओ मृ प्रकाश आर्य

अमरोहा (मुरादाबाद) में अन्न वितरण समारोह

क्षेत्रीय सांसद चौधरी हरगोविन्द सिंह ने कहा कि समाज के उच्च वर्गों ने कमजोर तथा आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को नारकीय जीवन में धकेला है। इसलिए बदलते परिवेश में सामाजिक तथा आर्थिक समानता लाने का उत्तरदायित्व भी इसी वर्ग का है।

स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में आयोजित अन्न वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने कहा कि समाज में वर्गों का बंटवारा आर्थिक आधार पर किया गया। जिसकी वजह से गरीब तथा कमजोर वर्ग विपन्नता के रसातल में धंसता चला गया तथा अमीर पर अमीरी बढ़ने लगी। सांसद ने कहा कि वर्ण व्यवस्था ईश्वर ने नहीं समाज ने पैदा की है। इसलिए वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने से कमजोर लोगों की तन,मन,धन से मदद करें। इसी से मनुष्य को आत्मिक शान्ति मिलती है।

उन्होंने कहा कि सरकार पिछड़े तथा कमजोर वर्ग के लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए अपने स्तर से प्रयास कर रही है, जो सीमित साधनों की वजह से पर्याप्त नहीं है। इसलिए धार्मिक तथा सामाजिक संगठनों का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह समाज के सभी वर्गों में समानता लाने के लिए आर्यसमाज के आदर्शों का अनुकरण करते हुए निःसहाय तथा गरीब लोगों की अपनी शक्ति के मुताबिक मदद करें। उन्होंने आर्यसमाज के कार्यों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि मनुष्य को वस्त्र से पहले भोजन की आवश्यकता होती है। आर्यसमाज ने मनुष्य की इस प्रबल आवश्यकता का स्पर्श कर-के जो बीड़ा उठाया है वह सराहनीय है।

इससे पूर्व आर्यसमाज के प्रधान वीरेन्द्र कुमार आर्य ने सांसद का माल्यार्पण कर स्वागत किया और कहा कि आर्यसमाज वर्ण व्यवस्था को जन्म से नहीं कर्म से मानती है। यदि समाज ऋषि दयानन्द के इस सिद्धान्त को स्वीकार कर ले तो समाज में किसी प्रकार की विषमता न रहे। वयोवृद्ध समाज सेवी महाशय सत्य प्रकाश आर्य ने वेदमन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि जो व्यक्ति संसार का जितना उपकार करेगा, उसे ईश्वर की व्यवस्था से उतना ही अधिक सुख प्राप्त होगा। इस अटल सत्य को संसार की कोई शक्ति धूमिल नहीं कर सकती। समारोह में सांसद ने डा0 एस0एन0गुप्ता एण्ड सन मुरादाबाद के सौजन्य से 50 निर्धन व्यक्तियों को 10-10 किलोग्राम आटे के बैग वितरित किये।

इस कार्यक्रम में संयोजक सत्य प्रकाश आर्य ने बताया कि अन्न वितरण समारोह का अगला कार्यक्रम 5 जून को होगा। अन्त में आर्य जी ने आगन्तुक स्त्री पुरुषों के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

- मनोहर लाल आर्य
मन्त्री
आर्यसमाज अमरोहा

सम्पादक के नाम पत्र

विदेशी पादरियों का भारत में षड्यन्त्र

महोदय,

अंग्रेजों के राज्य में ईसाई पादरियों ने लाखों भोले भाले पिछड़े वर्ग के हिन्दुओं को ईसाई बनाया था। अंग्रेजों का भारत पर अपना शासन सुदृढ़ करने के लिए हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कराना हितकर था। किन्तु भारत स्वतन्त्र होने पर भी भारत सरकार ने ईसाई पादरियों को जस का तस बनाये रखा। उन्हें पहिले जैसी सुविधाएं भी दी गई। इसी कारण धीरे-धीरे ईसाइयों ने असम के नागा क्षेत्र में नागा जाति के भारतीयों को ईसाई बनाकर भारत विरोधी बना डाला। जो नागा लोग भारत भक्त थे और अपने को भीम के पुत्र घटोत्कच के वंशज मानते थे। अनेक देवी देवताओं की पूजा करते थे। वे भारत भक्त नागा ईसाई बनने के पश्चात् विदेशी पादरियों द्वारा भड़काये जाने पर भारत के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने लगे। यही स्थिति मिजोरम में भी बन गई।

अब नागालेण्ड और मिजोरम पूर्णरूप से ईसाई राज्य बन चुके हैं। बल्कि कहना चाहिए कि यह दोनों राज्य ईसाई धर्म के ऐसे सुदृढ़ दुर्ग बन गए हैं कि अब वहाँ से असम के कई क्षेत्रों में अलगाववाद भड़काने के लिए षड्यन्त्र चलाए जाते हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि नागालेण्ड और मिजोरम कहने मात्र के लिए भारतीय राज्य हैं। वास्तव में तो दोनों राज्यों में यूरोपीय ईसाई चर्च का ही साम्राज्य है। जिनके पीछे यूरोप की बड़ी शक्तियां कार्य कर रही हैं। इन शक्तियों के प्रभाव का लाभ उठाकर बंगलादेश और वर्मा के क्षेत्रों में ऐसे अड्डे बनाए गए हैं जहाँ असम तथा अन्य क्षेत्रों के ईसाई प्रेरित उग्रवादी संगठनों को प्रशिक्षण एवं हथियार प्राप्त कराये जाते हैं। मणिपुर, त्रिपुरा के विद्रोही गुटों को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित किया जाता है। शस्त्रों का प्रशिक्षण दिलवाया जाता है। इन्हीं केन्द्रों में बोडो विद्रोहियों को और उल्फा विद्रोहियों को प्रशिक्षण आदि दिया जाता है।

नागालेण्ड में एक शक्तिशाली सैनिक संगठन बनाया जा चुका है, जिसका नाम है "नेशनल सोशलिस्ट कौंसिल ऑफ नागालैण्ड " वास्तव में यह चर्च की सेना है जिसे अत्याधुनिक शस्त्रास्त्रों से लैस किया गया है। पिछले वर्ष इस सैनिक संगठन ने असम की सीमा में घुसकर एक हिन्दू ग्राम पर आक्रमण किया था। असम के उल्फा विद्रोहियों को शस्त्र इसी संगठन ने दिए।

यह संस्था भारत भर में विद्रोह की आग फैला रही है। झारखण्ड के 21 जिलों के बहुत बड़े क्षेत्र को भी ईसाई राज्य बनाने के प्रयत्न पिछले 40 वर्षों से चल रहे हैं।

दुर्भाग्य से भारत की केन्द्र सरकार ने विदेशी ईसाई पादरियों द्वारा किए जा रहे इन भारत विरोधी कार्यों को समाप्त करने का कभी प्रयास नहीं किया। अतः यह बहुत आवश्यक है कि हिन्दू समाज के हजारों युवक युवतियां अपने देश हिन्दुस्थान और हिन्दू समाज की रक्षा के लिए अपना जीवन लगायें।

डा0 कैलाशचन्द्र
विश्व हिन्दू परिषद,
संकट मोचन श्री हनुमान मन्दिर,सेक्टर-6
रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110 022

पद्मभूषण डा० दुःखनराम अब नहीं रहे



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्रप्रसाद के नेत्र चिकित्सक डा0 दु:खनराम जी का लम्बी बीमारी के पश्चात् 91 वर्षकीआयु में हृदयगति रुक जाने से 26 अप्रैल को पटना में देहान्त हो गया है।

उनके निधन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गहरा दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि डा0 दु:खनराम जी आर्यसमाज के वरिष्ठ और अनुभवी नेता थे। वह लगभग 4 साल तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे और बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के तो वर्षों तक प्रधान रहे थे। वह नेत्र चिकित्सक ही नहीं अपितु प्रबल समाज सुधारक भी थे। उनके प्रति पूरे बिहार में बड़ी श्रद्धा व आदर लोगों में था। वह अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध थे। आप पटना विश्व विद्यालय के उपकुलपति रहे।

डाक्टर साहब के निधन पर शोक प्रकट करते हुए आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने इसे राष्ट्र की अपूरणीय क्षति बतलाया है। और प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा पारिवारिक जनों के धैर्य के लिए प्रार्थना की है।

शोक समाचार

गत् 2 अप्रैल 1990 को, आर्य सन्यासी एवं स्वतन्त्रता सेनानी पूज्य अनन्त स्वामी, §पूर्व नाम श्री यदुनाथ-सिंह बल्लिया नरेश§ का लखनऊ-बलरामपुर अस्पताल में निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि राजकीय सम्मान के साथ पूर्ण वैदिक रीति से लखनऊ में ही की गई।

तदुपरान्त जलालाबाद §शाहजहाँपुर में 17 अप्रैल 1990 को शोक श्रद्धांजलि सभा, श्री भगवान सहाय शुक्ल के निवास, शुक्ल भवन पर, आयोजित की गई, जिसमें जनपद तथा अन्य दूरस्थ स्थानों से आये स्वतन्त्रता सेनानियों, महात्माओं,

आर्यजनों ने अपनी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की, श्री वीरेन्द्र "वीर" निरीक्षक सभा §बरेली मण्डल§ मुख्य अतिथि थे।

- वीरेन्द्र "वीर"

महर्षि के अनुयायियों से

• श्री श्याम मोहन आर्य
भरथना, इटावा

आज हम विचार करें कि वैदिक सिद्धान्तों का हो रहा प्रचार पर्याप्त है। यदि उत्तर हाँ में है तो कुछ कहने की आवश्यकता नही है। यदि नहीं तो अवश्य प्रचार को गति प्रदान करनी है कोई भी प्रतिनिधि सभा यह घोषणा नही कर सकती कि हमारे अन्तर्गत आने वाले कार्य क्षेत्र में प्रत्येक न्याय पंचायत स्तर पर आर्यसमाज स्थापित है। अत: प्रचार कार्य को गतिशीलता प्रदान करनी है। प्रचार कार्य करने से पूर्व हमें अपने मतभेदों को भुलाकर कार्य करना है। आज हम लोगों के सैकड़ों वाद-विवाद न्यायालय में न्याय की प्रतीक्षा में हैं। हजारों रुपया उन वकीलों को देना पड़ रहा है। जो कि विद्वानों की सेवा और प्रचार कार्य में लगना चाहिए और वह विवाद उन पक्षकारों के मध्य में जो आर्यसमाज के नियम 3 के पालन की शपथग्रहण करते हैं। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।"

उपरोक्त नियम के परिपालन करने से आपसी विवाद स्वमेव समाप्त हो जाते हैं। और यदि फिर भी विवाद का निस्तारण न हो तो उभय पक्ष आम सहमति से विद्वानों को नियुक्त कर निर्णय स्वीकार कर धन के आय-व्यय को रोके।

आपस में विश्वास पैदा करने के लिए स्वार्थ की नीति को त्याग कर त्याग की नीति का अनुसरण करने पर कुछ प्राप्त कर सकेंगे। समस्त आर्य सभासद वैदिक सिद्धान्त के तो जानकार हैं और मंचों पर यदाकदा उपदेश भी कर लेते हैं। लेकिन कभी यह विचार किया है कि मेरे द्वारा दिये गये उपदेश को जनमानस क्यों स्वीकार नहीं कर रहा है क्या वैदिक सिद्धान्त सार्वभौमिक नहीं है या फिर मेरे प्रचार की गति दोष पूर्ण है वाणी में वह ओज और तेज है जो आर्यो के मुख मण्डल पर होना चाहिए। यदि नहीं तो आत्म निरीक्षण करे, और पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त व्यवहारिक कार्य उस ज्ञान के अनुरूप ही कर रहे हैं। जो कि जन साधारण से करने की आशा करते हैं।

तो आइये हम सभी महर्षि के अनुयायी आर्यसमाज स्थापना दिवस के पुनीत पावन पर्व पर आत्म निरीक्षण करें। और अपने दोषों को स्वीकार कर त्याग करें और आपस में बैठकर विवादों को समाप्त कर समस्त देशों में प्रचार कार्य को गति प्रदान करने के लिए वेदप्रचार रथों का निर्माण कर प्रचार को और उपदेशकों के द्वारा प्रचार प्रारम्भ करने पर अवैदिक पन्थों और नये पैदा हुए सम्प्रदायों का पर्दाफाश कर वैदिक ज्ञान से जन साधारण से अवगत कराकर महर्षि को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।

माँग पत्र

• स्व० ब्र० आनन्द राष्ट्रे
शाहजहाँपुर

§1§

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, समस्त आर्यसमाजें एवं आर्य समाज से आबद्ध अखिल संगठन पारस्परिक विचार वैभिन्य एवं रागद्वेष को मिटाकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों को प्रसारित करने हेतु एकीभूत हों। तदर्थ आर्यो में जातिवाद के आधार पर व्याप्त गुटबन्दी को अविलम्ब उन्मूलित किया जाये।

§2§

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश स्वकीय निष्क्रिय प्रकाशन व्यवस्था को सजीव सुव्यवस्थित करे तथा प्रत्येक नगर व ग्राम आर्यसमाजों में आधुनिक ध्वनि विस्तारक संयन्त्रों के माध्यम से, जनमानस की सुप्त धार्मिक भावनाओं को जागृत करने का ठोस कार्यक्रम बनाया जाये।

§3§

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, आदर्श आर्य नेताओं निरीह जनता की नृशंस हत्या एवं कुयोजना, दुरभिसन्धि करने वाले साम्प्रदायिक व्यक्तियों संगठनों के कृत्यों के प्रतिरोध के लिये अदम्य साहसी सन्यासियों आर्योपदेशकों वक्ताओं, समाज सेवियों राष्ट्रनायकों, प्रतिनिधियों, समस्त आर्यों §हिन्दुओं§ का अविलम्ब आह्वान करें, प्रतिक्रिया स्वरूप तथा राष्ट्र एकता के लिये शुभस्य शीघ्रम् के न्याय से महान व्यापक जन आन्दोलन का शीघ्र सूत्रपात किया जाय।

§4§

धारणाद् धर्ममित्याहु:त्यातु'- के आधार पर राष्ट्र विघटनकारी,तस्कर,स्वैर, स्वैरिणी, जीवापहारक,-शून्य, शान्त, धर्मशासन व्यवस्थार्थ राजार्य सभा की स्थापना तथा घोषणा, अविलम्ब की जाये ।

§5§

प्रत्येक आर्यसमाज में यह उदार व्यवस्था की जाये कि आर्यसमाज मन्दिरद्वार से कोई निराश्रित क्षुधार्त न जाये एतदर्थ मन्दिर द्वार उद्घाटित रहें और मन्दिर मन्दिर ही रहे ऐसा अनिवार्य नियम बनाकर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा समस्त समाजों को आदेशित किया जाये।

§6§

समस्त जिला प्रतिनिधि सभायें स्वेच्छया किसी कार्यक्रम में प्रवृत्त न हों अपितु प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं से निर्देशित हों और प्रान्तीय सभायें, सार्वदेशिक सभा को अपना प्रेरणा स्रोत मानें।

सूचना

श्री रामप्रकाश शर्मा"सरस" एम0ए0, आचार्य, सुयोग्य, संस्कृतज्ञ विद्वान वक्ता हैं। आर्यसमाजें इनके प्रवचनों से लाभ उठा सकती हैं।

पता- श्री रामप्रकाश शर्मा"सरस"
एम0ए0, आचार्य एम-22 राजनगर, सेक्टर-23, गाजियाबाद।

वेद कथा

वोट का अधिकारी कौन

त्वमगं प्रशंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति,मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥

ऋ0 1-84-19

अर्थ -

अंग	-	हे मित्र,
शविष्ठ	-	परमबलयुक्त,
त्वम् देवः	-	तू विद्वान् प्रकाशक है,
मर्त्यम्	-	प्राणिमात्र को
प्रशंसिषः	-	प्रशंसित कर। (सन्तुष्ट कर)
मघवन्	-	हे उत्तम धन के दाता।
इन्द्र	-	दुःखों के नाशक।
त्वदन्यो	-	तुझ से भिन्न दूसरा कोई भी।
मर्डिता	-	सुखदायक
नास्ति	-	नहीं है।
ते	-	तेरे लिए
वचः	-	धर्मयुक्त वचनों का

अर्थात्
1 धर्मानुकूल उपदेश
2 नियमानुकूल मत धर्मवीर बोलता है।

ब्रवीमि	-	उपदेश करता हूँ।

- महर्षि दयानन्द

भावार्थ-

१ राष्ट्र में पदाधिकारियों की निम्न योग्यताएं अभीष्ट हैं अर्थात् उन्हें ही मत(वोट) देना उचित है:-

1- मित्र हो- अर्थात् आपत्ति में जनता का सहायक हो,
2- बलवान हो- शारीरिक,मानसिक और आत्मिक दृष्टि से।
3- विद्वान् हो- बुद्धिमान् और शिक्षित हो।
4- दाता हो- अपना स्वकीय(न कि राजकोष) धन अभावग्रस्त दुःखी मनुष्यों में बांटता हो।
5- मघवन् - मनुष्यों के अतिरिक्त अन्य प्राणियों के सुख सुविधाओं की चिन्ता करता हो।
6- प्राणिमात्र के दुःखों को दूर करने वाला हो।
7- उसके समान अन्य दूसरा कोई नहीं हो।
8- जिसकी सभी प्रशंसा करते हैं, तथा जो सबसे प्रिय वचन बोलता है।

-धर्म विज्ञान मुनि
आर्य वानप्रस्थ आश्रम,
2/29 ज्वालापुर(249407)

निर्वाचन रांची जिला आर्यसभा

प्रधान - श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा (पुरुला)
मन्त्री - श्री विश्वनाथ भगत (रांची)
कोषाध्यक्ष- श्री भोलाराम सैनी (रांची)

प्रवेश सूचना

(सत्र १९९०-९१)

डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
अन्तर्गत - आर्य विद्या सभा
डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति

पद धर्म शिक्षक

प्रवेश योग्यता- एम०ए०/आचार्य, हिन्दी संस्कृत में अंग्रेजी भाषा तथा वैदिक सिद्धान्तों तथा कर्मकाण्ड का ज्ञान आवश्यक।

प्रशिक्षण अवधि- एक वर्ष,

सुविधाएं- निःशुल्क शिक्षा, विशाल पुस्तकालय उपलब्ध छात्रावासियों को आवास, पानी बिजली सर्वथा निःशुल्क, भोजन व्यय स्वयं वहन करना होगा।

प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद उत्तीर्ण अभ्यार्थियों को डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओं में धर्मशिक्षक पद पर नियुक्त किया जाएगा।

गत चार वर्षों में उत्तीर्ण सभी छात्रों को सर्विस मिल चुकी है। केवल निष्ठावान् आर्यसमाजी पूर्ण विवरण (नाम-आयु, शैक्षिणक योग्यता- अनुभव आदि) सहित आवेदन पत्र 15 जून 1990 तक निम्न पते पर भेजें:-

प्राचार्य-डी०ए०वी० नैतिक
शिक्षा संस्थान,
आर्यसमाज मन्दिर मार्ग,
नई दिल्ली- 110001

काश्मीर के विस्थापितों की सहायतार्थ सभा में विशेष कोष की स्थापना

काश्मीर से बड़ी संख्या में राष्ट्रवादी हिन्दू-सिख विस्थापित होकर देश के विभिन्न शहरों में शरण ले रहे हैं। यह हमारे भार्य जोन के अंग हैं। इनकी दयनीय दशा अत्यन्त करुणाजनक है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने इन भाइयों की सहायता के लिए एक विशेष कोष की स्थापना की है। कृपया अन्न वस्त्र और धन भेजकर अपने विस्थापित भाइयों की मदद कीजिये। यही सबसे बड़ा पुण्य कार्य है। कृपया धन मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट द्वारा "आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग लखनऊ" के पते पर भेजें।

इन्द्रराज
प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0

--

नवीन आर्यसमाज स्थापित

आर्यसमाज सैंहगो नसीनपुर (रायबरेली) में नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान- श्री शिवराज सिंह
मन्त्री- श्री समरेश सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री छेदालाल जी

स्वास्थ्य-सुधा



आरोग्य दर्पण (1)

दो डाकटिकट भेजकर, घर-बैठे उत्तर लीजिये

डॉ0 स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
(फलाहारी)
आर्यसमाज मन्दिर,पिथौरागढ़-26250 1

समस्या- "आयु 35 वर्ष, सन्तान नहीं है। चार वर्ष से कब्ज है, शौच 2-3 दिन बाद आता है। थोड़ा भी कार्य करने पर सांस फूलने लगता है। हृदय बहुत धड़कता है। शरीर के जोड़ों में दर्द रहता है। हल्की खाँसी बनी रहती है। पेट में अम्ल भी काफी बनता है।"

- नरेन्द्रपाल सिंह आर्य, यूकेलिप्टस-नरा, डाकघर-मन्सूरपुर(मुजफ्फरनगर)

समाधान- प्रातराश में 1 चम्मच च्यवनप्राश के साथ दूध पिया करें। मध्याह्न व रात्रि भोजन बाद अल्सारेक्स (चरक) की दो गोली लेकर मनोल (चरक) 2 चम्मच पानी में घोल कर पिया करें। रात्रिभोजन के आधा घण्टा बाद दस ग्राम हरड़ चूर्ण पानी से लिया करें। एक मास बाद पुनः पत्राचार करें। सन्तान न होने सम्बन्धी जाँच के पत्रजात भी भेजें।

समस्या-"मेरा एक वर्ष का लड़का, जो अभी पेट के बल सरकने का प्रयास करता है तब बायें पैर से आगे बढ़ता है- किन्तु दायें पैर से संचरण में सन्योग नहीं करता है।"

- डॉ0 जी0एल0 आर्य,गरवाड़ा-458226

समाधान- बच्चे की मालिश नित्य सरसों के तेल से करें। "पीडरीटोन" (चरक) दो ग्राम चूर्ण प्रातः व सायं दूध में घोल कर 3 मास तक पिलाते रहें।

प्रवेश सूचना

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज की जन्मभूमि एवं बोध स्थली में गत 25 वर्षों से श्री महर्षि दयानन्द-सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय चल रहा है, जिसमें नए सत्र हेतु छात्रों का प्रवेश 1 जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। छात्रों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा-निवास-वस्त्र-भोजन-पाठ्य पुस्तकें व लेखन सामग्री आदि सभी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। भोजन में दूध एवं घी की उत्तम व्यवस्था है। प्रवेश के इच्छुक 16 से 20 वर्ष आयु के अविवाहित, मैट्रिक अथवा समकक्ष, निर्व्यसनी छात्र विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेशपत्र(निःशुल्क) निम्न पते पर पत्र व्यवहार करके मंगवा सकते हैं।

विद्याभास्कर ओमप्रकाश शास्त्री एम०ए०,
प्राचार्य
अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय,
टंकारा जि0 राजकोट (गुजरात)
पिन - 363650

पजीकरण सं० एल० डब्ल्यू / एन०पी० ७२
कृण्वन्तो विश्वमार्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
ज्येष्ठ कृष्ण १० सवत २०४७ वि
दिनांक: 20 मई १९९०
दूरभाष
२४५९९१

वैदिक धर्म प्रचार कार्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर के अतर्गत ।मार्च से ।5 अप्रैल तक जौनपुर जनपद में स्वामी सुकर्मानन्द श्री युगुल किशोर द्वारा मछलीशहर तहसील के ।3 स्थानों में प्रचार किया । जनता पर अत्यधिक प्रभाव पडा।

-आर्यमुनि वानप्रस्थ

शोक समाचार

आर्यसमाज भरथना के श्री श्याममुनि आर्य के द्वितीय युवा पुत्र श्री प्रेमचन्द आर्य का रेल दुर्घटना में दिनाक ।4 अप्रैल को असामयिक निधन हो गया है। उनका अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति एव शोक सतप्त पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान शताब्दी

जयपुर मे राजस्थान आर्यप्रतिनिधि सभा का शताब्दी समापन समारोह राष्ट्रीयस्तर पर 18 से 20 मई तक आयोजित हो रहा है। राजस्थान महर्षि-दयानन्द की प्रमुख कर्मभूमि एव निर्वाणस्थली रही है। देश के प्रख्यात सन्यासी आर्यनेता एव उपदेशक तथा प्रचारक इस अवसर पर पधार रहे है।

इस अवसर पर शुद्धि अभियान, वेदप्रचार सम्मेलन, महिला जागरण, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा सामाजिक क्रान्ति के अनेक आयोजन सम्पन्न हो रहे है। इस अवसर पर राष्ट्र के प्रति समर्पित ऐसे 5000 प्रदेशीय युवको का एक सशक्त सगठन तैयार किया जायेगा जो राष्ट्ररक्षा के लिए अपना बलिदान देने को तैयार हो। जनता पूर्ण सहयोग देकर इसे सफल बनावे।

- -

शोक समाचार

चन्दौसी- वयोवृद्ध आर्यसमाजी, आर्यसमाज के वरिष्ठ एव कर्मठ कार्यकर्ता एव भूतपूर्व प्रधान, आर्यसमाज चन्दौसी के वरिष्ठ सदस्य श्री शान्ती स्वरुप जी अग्रवाल का निधन । अप्रैल 1990 को हो गया। वह नगर के प्रमुख उद्योगपति थे एवं किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा के समय किसी भी प्रकार की सहायता एव दान के लिये तत्पर रहते थे आप रामप्यारी आर्य कन्या इन्टर-कालेज के भी ट्रस्टी थे।

आर्यसमाज चन्दौसी के दूसरे वरिष्ठ सदस्य श्री वेदप्रकाश अग्रवाल का आकस्मिक निधन दिनाक 3-4-990 को हो गया।

श्री वेद प्रकाश जी रामप्यारी आर्य कन्या इन्टर कालेज के सस्थापक ट्रस्टी एव वर्तमान में प्रबन्धक थे एव आर्य समाज चन्दौसी के अनेक वर्षों तक प्रधान एव मन्त्री रहे थे।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रुप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स २२४१/५७) ज्येष्ठ शुक्ल ११ रविवार सवत २०४७,वि. दिनाक ३ जून १९९० (घोषणापत्र स ७/२२-२-२५)



संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।
-- ऋग्वेद

हे मनुष्यो। तुम सब परस्पर मिलकर चलो, परस्पर मिलकर सभाषण और विचारविनिमय करो, तुम्हारे मन सम्यक विचारो से भरे हो, जैसे उत्तमज्ञानी पूर्व पुरुष अपने कर्त्तव्यो का पालन करते आये हैं उसी प्रकार तुम भी करो इसी मे मनुष्यमात्र का कल्याण है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू ३०/
एक प्रति	१रू मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष
अंक- २१

कल्याण का मार्ग

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ।।

हम **[सूर्याचन्द्रमसाविव]** सूर्य और चन्द्रमा की तरह **[स्वस्ति]** कल्याण के **[पन्थाम्]** मार्ग पर **[अनुचरेम]** चलते रहें **[पुन]** और **[ददता]** दान करने वाले **[अघ्नता]** अहिंसक स्वभाव वाले **[जानता]** ज्ञानी पुरुषो की **[सगमेमहि]** सगति करते रहें।

इस वेदमन्त्र में परमात्मा का उपदेश है कि हम सूर्य और चन्द्रमा की तरह कल्याण के मार्ग पर चलते रहें। सूर्य चन्द्रमा कल्याण के मार्ग पर चलते हैं, हमें भी उन्ही की भान्ति कल्याण के मार्ग पर चलना चाहिए। सूर्य और चन्द्र का मार्ग कल्याण का मार्ग किस कारण बन जाता है इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि सूर्य चन्द्र की गति नियमित है। इतनी नियमित कि गणितज्योतिष के अनुसार वर्षों पहले सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण का पता लग जाता है। सूर्य चन्द्रादि पिण्ड यदि नियमित गति से न चले तो परस्पर टकराकर समस्त ब्रह्माण्ड नष्ट-भ्रष्ट हो जाय। इनकी नियमित गति ही के कारण वर्ष में ऋतु परिवर्तन बनता है और सृष्टि मे जीवन दर्शन होता है। पृथ्वी सूर्य चन्द्र आदि पिण्ड अपने अपने गुरुत्वाकर्षण के कारण ही अपनी-अपनी परिधि में गति करते रहते हैं और इन सबका परिणाम लोककल्याण ही है। प्रत्येक ऋतु के विशेष-विशेष फल और लाभ ससार को प्राप्त होते रहते है। वनस्पतियाँ अन्न, फल, फूल आदि विशेष ऋतु मे विशेष प्रकार से प्राणिजगत के लिए उपलब्ध होते रहते है। सूर्य चन्द्र का प्रकाश, गरमी और उनका आकर्षण विकर्षण सब ससार के कल्याण के ही लिए है।

हमें भी सूर्य चन्द्र की तरह स्वस्ति के कल्याण के मार्ग पर चलना चाहिए। हमारा जीवन नियमित हो; हममें समय पर सभी कार्य करने की क्षमता हो और हमारी सभी शक्तियाँ ससार का कल्याण करने वाली हो। पर हमारे अन्दर यह शक्ति आये कैसे, जिसे हम सूर्य चन्द्र की भाँति ससार के कल्याण मे व्यय कर सके। इसका उत्तर मन्त्र के उत्तरार्ध मे है। हमें अपने अन्दर योग्यता हासिल करने के लिए ऐसे पुरुषो का सग करना चाहिए जो दानी हो- अपनी शक्तियो को उपकार मे लगाते हो, जो अहिंसाशील हो- संसार के प्राणियो के दुख दर्द मिटाने की भावना से धर्मरत हो जो ज्ञानी हो तरह-तरह की विद्याओं का तत्व उपदेश देने वाले हो। ऐसे लोगों की सगति मे पड़ने से हमें शक्ति प्राप्त होगी जिसे हम सूर्य चन्द्र की तरह लोककल्याण मे व्यय कर सकते है। इसी से मानवजीवन स्वस्ति **[सु+अस्ति]** अर्थात उत्तम पथ का पथिक बन सकेगा और यही कल्याण का मार्ग है।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!

— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ ज्येष्ठ शुक्ल ११ संवत् २०४७ वि.
३ जून १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

लोकतन्त्र की आदर्श परम्परा

मेहम उपचुनाव की पूर्व संध्या पर निर्दलीय प्रत्याशी श्री अमीर सिंह की जघन्य हत्या कर दिए जाने के कारण चुनाव आयोग ने अपने नियमों के तहत चुनाव के स्थगित कर देने की घोषणा कर दी है। इस जघन्य घटना पर जहाँ समूचा राष्ट्र क्षुब्ध है वहीं लोकतन्त्रीय प्रणाली में एक प्रश्नचिन्ह उभरकर सामने नजर आता जा रहा है- क्या हमारे जनतन्त्र में इसी प्रकार अपराधीकरण तथा हिंसा का ताण्डव प्रश्रय पाता रहेगा। जान-माल की रक्षा के लिए उत्तरदायिनी जनतन्त्रीय प्रणाली क्या वास्तव में जनरक्षक न होकर जनभक्षक बन जायगी। प्रधानमन्त्री श्री वी०पी० सिंह ने इस घटना की जाँच सी०बी०आई० द्वारा कराए जाने तथा दोषी पाए गये व्यक्तियों को चाहे वे किसी भी स्तर के क्यों न हों, कानून के हवाले कर देने की घोषणा करके जनता दल की छवि को धूमिल होने से बचा लिया है। पार्टी के नये अध्यक्ष श्री एस०आर० बोम्मई ने संसद की बैठक प्रारम्भ होने के कुछ समय पूर्व ही हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री ओमप्रकाश-चौटाला द्वारा मुख्यमन्त्री पद से इस्तीफा दिए जाने एवं उसके राज्यपाल द्वारा स्वीकृत कर लिए जाने की घोषणा कर दी है।

इस राजनैतिक पटाक्षेप के साथ ही जनतादल में इस विषय पर "युद्ध-क्षेत्र सी खिंची हुई रेखाएं" लगभग मिट गई हैं और एक नई आदर्श परम्परा का पुनर्जन्म हुआ है। पं० नेहरू के शासनकाल में स्व० लालबहादुर शास्त्री रेलमन्त्री थे उस समय देश के दक्षिणी भाग में एक बहुत बड़ी रेल दुर्घटना हो गई थी जिसमें अनेकों नागरिक मारे गये थे। श्री शास्त्री जी को जैसे ही यह खबर मिली उन्होंने उस स्थान का निरीक्षण करने के तुरन्त बाद बिना किसी से सलाह मशविरा किए इस दुर्घटना का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हुए रेलमन्त्री पद से इस्तीफा दे दिया था, जो स्वीकार कर लिया गया।

चुनाव से कुछ समय पूर्व एक प्रत्याशी की हत्या केवल चुनाव स्थगित कराने के उद्देश्य से किया जाना लोकतन्त्र पर एक काला धब्बा है। भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे संविधान निर्माताओं ने जनतन्त्रीय प्रणाली को सर्वोत्तम मानते हुए इसे संविधान में स्थान दिया था। उद्देश्य यह था कि इससे हमारे भारतीय समाज में समता, समानता, एकता और बन्धुत्व के साथ ही सुख-शान्ति और समृद्धि का मार्ग जनसहयोग से प्रशस्त होगा। व्यक्ति की गरिमा उच्च से उच्चतर होगी और उसे अपने मत को बिना किसी भय या दबाव के व्यक्त करने का पूर्ण स्वातन्त्र्य होगा परन्तु आज राजनीति किंवा प्रत्येक क्षेत्र में अपराधीकरण की बढ़ती हुई प्रवृत्तियों से यह आशा निर्मूल सी सिद्ध होती जा रही है।

जनता दल के केन्द्रीय नेतृत्व ने सामयिक कदम उठाकर तथा श्री चौटाला ने स्वेच्छा से त्याग पत्र देकर जनतन्त्रीय परम्पराओं का आदर किया है। हम विश्वास करते हैं मताधिकार का प्रयोग करने वाला तथा मताधिकार से जनप्रतिनिधि बनकर असेम्बली अथवा लोकसभा में चुने जाने वाला व्यक्ति मत की संवैधानिक पवित्रता और गरिमा को सर्वोच्च प्राथमिकता एवं सम्मान देगा। हमारे देश में लोकतान्त्रिक प्रणाली से आगे बढ़ने का यही सफल उपाय है।

स्वामी रामेश्वरानन्द को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली -

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आर्यसमाज दीवान हाल में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में आर्यसमाज के मूर्धन्य संन्यासी व पूर्व सांसद स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। सभा की अध्यक्षता आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस अवसर पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी रामेश्वरानन्द एक निर्भीक संन्यासी थे जिन्होंने आर्यसमाज की श्रेष्ठ परम्परा के अनुसार देश की एकता व अखण्डता को बरकरार रखने के लिए पंजाबी सूबे के विरोध में दीवान हाल में अनशन किया था। कुछ शरारती तत्वों ने उन पर बम्ब फेंका परन्तु इससे आर्य जगत् का मनोबल ही ऊँचा हो गया था। स्वामी जी ने आगे कहा कि आर्यसमाज का जब आगे का इतिहास लिखा जायेगा, तो स्वामी रामेश्वरानन्द को एक चमकते सितारे के रूप में याद किया जायेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने स्वामी रामेश्वरानंद को एक भव्य विराट व्यक्तित्व का संन्यासी बताया, जिन्होंने कि देश व समाज की अनुपम सेवा की थी। सभा मन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि स्वामी रामेश्वरानंद के निधन से आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है।

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियाँ

● श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद

कहते है कि आपत्ति कभी अकेली नहीं आती अपितु अपने साथ अन्य अनेक आपत्तियों को लेकर आती है किन्तु अनुभव यह बतलाता है कि सौभाग्य के साथ भी कुछ दुर्भाग्य आपत्तियाँ चली आती हैं। ऐसा ही हुआ भारत में सन् 1947 के पन्द्रह अगस्त को।

उस दिन विदेशी सत्ता यहाँ से गयी और देश की बागडोर देशवासियों के हाथ में आयी किन्तु स्वाधीनता का वह सौभाग्योदय अपने साथ दुर्भाग्य के कुछ ऐसे तत्व भी ले आया जो भारत के नेताओं और उनकी राजनीतिक व शासकीय अयोग्यताओं के कारण भारत राष्ट्र को अभिशाप रूप में प्राप्त हुए। उन अभिशापों को भारत तब से लेकर अब तक भोग रहा है और पता नहीं भविष्य में कब तक भोगता रहेगा?

इस समय स्थिति यह है कि महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गाँधी की जय बोलते रहो, उनकी प्रशंसा करते रहो और वर्तमान नेताओं की उन प्रशंसाओं और जयकारों की ओट में जी भर कर कोसते रहो। परन्तु वास्तविकता यह है कि उन्हीं महात्मा जी की कृपा के फल भारत राष्ट्र को भोगने पड़ रहे हैं। जिस मार्ग पर वह चलते रहे जिस प्रकार की गतिविधियां वह अपनाते रहे, वही मार्ग अपनाया उनके शिष्यों ने बड़ी गतिविधियाँ अपनायी उनके उत्तराधिकारियों ने। भले ही उन्होंने उन्हें अनिच्छापूर्वक न चाहते हुए या उन के दूरगामी परिणामों को न समझते हुए अपनाया हो। हमारा अभिप्राय यह है कि चाहे राजनीतिक और प्रशासनिक अयोग्यता और अदूरदर्शिता के कारण अपनाया हो या उनकी ओट में अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा अर्थात् लोकेषणा और सांसारिक भोग विलास की प्राप्ति के लिये अपनाया हो। इस समय स्थिति यह है कि प्रत्येक चुनाव के बाद केवल आकृतियं बदलती है, व्यक्तित्व बदलते हैं किन्तु दृष्टिकोण नहीं बदलता अपितु और प्रत्येक बाद में सत्ता में आने वाला व्यक्ति गाँधीवाद के भूत को अपने से पहले सत्ताधारी से बढ़चढ़ कर प्रस्तुत करने और लागू करने का प्रयत्न करता है जिससे वह अधिकाधिक समय तक सत्ता में रहकर अपनी मनोवांछित लोकेषणा और भोगविलास की प्राप्ति कर सके।

गाँधीजी ने अपनी सन्तपन की धुन में सबसे बड़ी भूल हुयी मुस्लिम तुष्टिकरण की, जिसके दूरगामी दुखद परिणामों की ओर तो उन्होंने कभी दृष्टिपात भी नहीं किया। वकील होने के कारण उनसे जो आशा की जा सकती थी उनकी गतिविधियों का विश्लेषण करके देखा जाय तो वह आशा पूरी हुयी नहीं पायी जाती।

बंगाल में मुस्लिम लीगी सरकार बनी और उसके मुख्यमन्त्री बने सोहरावर्दी। सोहरावर्दी ने बंगाल को पाकिस्तान में मिलाने की माँग को लेकर "डायरेक्ट ऐक्शन" अर्थात् "सीधी कार्यवाही" की धमकी दी और उसे सत्य भी कर दिखाया। खुलकर हिन्दुओं की हत्यायें की गयी, हिन्दू नारियों को अपमानित तथा भ्रष्ट किया गया। इस काण्ड में अकेले कलकत्ता नगर में सोलह सहस्र हिन्दू मौत के घाट उतार दिये गये। गाँधीजी से कलकत्ता जाने के लिये कहा गया तो उन्होंने यह कहकर कि अभी मेरे भगवान की प्रेरणा नहीं है, जब भगवान की प्रेरणा होगी, तब जाऊँगा, जाना अस्वीकार कर दिया। हिन्दू कब तक लुटता-पिटता रहता? अन्त में, "मरता क्या न करता" के अनुसार हिन्दू भी अपनी सी करने पर उतर आये और हिन्दू के हथियार उठाने के बाद जितने समय में मुसलमानों ने केवल पाँच सौ हिन्दुओं की हत्या की, इतने समय में हिन्दुओं ने चार सहस्त्र से अधिक मुसलमानों को मौत की नींद सुला दिया तो गाँधी जी को उनके भगवान की प्रेरणा हो गयी और इस इल्हाम के होते ही गाँधी जी कलकत्ता जा पहुँचे। गाँधी जी की दृष्टि में उनकी वकालत और सन्तपन के माप से हत्या करना अपराध नहीं था और हत्यारा अपराधी नहीं था। हाँ, आत्म रक्षार्थ शस्त्र उठाना वह अवश्य अपराध और आत्म रक्षार्थ शस्त्र उठाने वालों को अपराधी मानते थे। यह हमारा निर्णय नहीं अपितु गाँधीजी की स्वीकारोक्ति है। उन्होंने ऐसे ही एक अवसर पर हिन्दुओं को स्पष्ट शब्दों में यह सम्मति दी थी कि यदि वह {मुसलमान} तुमसे झगड़ा करते है तो भी तुम उनसे मत लड़ो, यह तुम्हें मारते हैं तो तुम उनके हाथ से मर जाओ। पाठक ही निर्णय कर लें कि यह कानून की कौन सी धारा पर न्याय सिद्ध होता है और कहाँ का सन्तपन है? भारतीय दृष्टिकोण का सन्तपन तो 'शठे शाठ्य समाचरेत' अर्थात् "जैसे के साथ तैसा" तथा "यथा-योग्य व्यवहार" की शिक्षा देता है। गाँधीजी ने कलकत्ता जाकर अपनी न्याय-कारिता तथा सन्तपन का परिचय पीड़ितों को न्याय दिलाने और उनके घावों पर मरहम लगाने में नहीं किया अपितु उस भीषण हत्याकाण्ड और अत्याचार के जनक और मुखिया उस महाहत्यारे पापी सोहरावर्दी को शहीद की उपाधि से सम्मानित करने में किया। सोहरावर्दी से उसे हसन शहीद सोहरावर्दी बना दिया।

यह गाँधी जी भी जानते थे और उनके शिष्य भी तथा भारत की सम्पूर्ण हिन्दू जनता के साथ-साथ संसार के अन्य देशों के निवासी भी भली-भाँति जानते हैं कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग की मुसलमानों के लिए पृथक-पृथक गृह-राष्ट्र की मांग की पूर्ति के लिये बनाया गया है तो फिर न्याय यह है कि समस्त मुसलमानों को पाकिस्तान चले जाना चाहिए था। भारत में उन्हें रहने का न तो नैतिक अधिकार प्राप्त है और न वैधानिक और यह तथ्य है कि मोहम्मद अली जिन्ना ने सेना और पुलिस के बंटवारे से पहले जनसंख्या परिवर्तन की बात कही थी। कहना न्याययुक्त होगा कि वह गाँधीजी और उनके सर्वाधिक प्रिय शिष्य जवाहरलाल नेहरू की अपेक्षा अधिक न्यायबुद्धि और सूझबूझ रखता था और श्री डा0 अम्बेडकर ने भी जिन्ना के इस सुझाव का समर्थन किया था किन्तु उस समय तो गाँधी जी की आँधी चल रही थी और पृथिवी पर पैर न रखकर वायुमण्डल में विचरण करने वाले गाँधी-नेहरू ने जिन्ना का यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। जबकि यह दोनों भी यह भी भली-भाँति जानते थे कि सत्तानवें प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान के पक्ष में मतदान किया था। उनका यह मत पाकिस्तान की मांग करने वाली मुस्लिम लीग को मिला था। मुसलमानों का शेष तीन प्रतिशत मत भी कांग्रेस को नहीं मिला था। उस तीन प्रतिशत में वह मत भी था, जो खान अब्दुल गफ्फार खाँ की माँग पर उस चुनाव में प्रयुक्त नहीं हुआ था तो केवल एक या आधा प्रतिशत मत के आधार पर द्विराष्ट्र सिद्धान्त को स्वीकार कर अर्थात् मुसलमानों को पृथक राष्ट्र मान लेने के पश्चात् भी भारत में ही रोके और बसाये रखना कदापि न्यायसंगत नहीं है किन्तु गाँधी जी का सन्तपन और उनके शिष्यों की उनके प्रति अन्ध भक्ति ने यह अभिशाप भी सदा-सर्वदा के लिये भारत के सर पर मढ़ दिया।

फिर, उसके बाद ------
होना यह चाहिये था कि भारत को "हिन्दू-राष्ट्र' घोषित कर दिया जाता। कारण अतीव स्पष्ट है कि द्विराष्ट्र सिद्धान्त के आधार पर भारत का बटवारा किया गया और मुसलमानों ने अपने लिये "गृह राष्ट्र' के रूप में पाकिस्तान ले लिया तो शेष भाग तो द्विराष्ट्र सिद्धान्तानुसार हिन्दुओं का ही "गृह राष्ट्र" अर्थात् "हिन्दू-राष्ट्र" रह गया और ऐसी स्थिति में प्रथम तो मुसलमानों को यहां रहने का न तो वैधानिक अधिकार है और न नैतिक और इतने पर भी यदि उन्हें रखा गया या वह यहां रहे तो उनके लिये जनसंख्या के आधार पर उतना भूभाग पाकिस्तान बनने वाले क्षेत्र में से लिया जाना चाहिये था तथा उन्हें यहां नागरिक अधिकार नहीं दिये जाने चाहिये थे। वह तो यहां विदेशी या दूसरी श्रेणी के नागरिक बनकर रहने के अधिकारी हैं किन्तु उन्हें दिये जा रहे हैं अल्पसंख्यक होने के नाम पर विशेषाधिकार। यह भारत राष्ट्र और यहां के वास्तविक नागरिकों हिन्दुओं के साथ घोर अन्याय है और इसकी परिणति हिन्दू विनाश के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो सकती।

क्रमशः

आर्यसमाजें इस सारस्वत यज्ञ में सहयोग करें

आर्य लेखक कोष : एक महत्वाकांक्षी योजना

● प्रो० भवानीलाल भारतीय, चंडीगढ़

पं० लेखराम ने अपनी मृत्यु शैया से आर्य जाति को जो अपना अन्तिम सन्देश दिया था वह इस प्रकार था — आर्यसमाज में तकरीर और तहरीर का काम कभी बन्द नहीं होना चाहिए। तकरीर का अर्थ है व्याख्यान और तहरीर का अर्थ लेखन कार्य से लिया जाता है। यह कौन नहीं जानता कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द स्वयं एक लेखक तथा सफल साहित्यकार थे। उन्होंने अपने स्वल्प जीवनकाल में छोटे और बड़े 32 ग्रन्थ लिखे तथा पाण्डुलिपियों का एक बड़ा भण्डार अप्रकाशित ही छोड़ गये। ऋषि दयानन्द के इस लेखन कार्य का अनुकरण उनके परवर्ती आर्य विद्वानों और लेखकों ने भी किया। आर्यसमाज के 115 वर्ष के जीवनकाल में हजारों लेखकों ने अपनी अनुपम विद्वतापूर्ण कृतियों के द्वारा साहित्य की अभिवृद्धि की है। आर्यसमाज का यह साहित्य शास्त्रीय भी है और लौकिक भी है। उसमें उपदेशात्मकता भी है और पाठक को रसबोध कराने की शक्ति भी है।

ऋषि दयानन्द के परवर्ती जिन लेखकों ने आर्य साहित्य की अभिवृद्धि में अपना योगदान किया है उनमें सर्वश्री-पं० भीमसेन शर्मा, पं० तुलसीराम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द, पं० लेखराम, पं० गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० राजाराम, पं० आर्यमुनि, महात्मा नारायण स्वामी, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि ऐसे अनेक नाम लिए जा सकते हैं। वर्तमान काल के जीवित आर्य लेखकों की संख्या भी बहुत बड़ी है। सबके नामों को गिनाना भी सम्भव नहीं है।

आर्य लेखक कोश की योजना-

कई वर्ष पूर्व मेरे मन में आर्यसमाज से जुड़े लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों तथा शोधकर्मियों का जीवनवृत तथा कार्यवृत्त एकत्र करने का विचार आया। मैंने आर्यसमाज के साहित्य का अध्ययन तो विगत आधी शती के दीर्घकाल में इतने मनोयोगपूर्वक किया है कि अत्यन्त विनम्रता के साथ मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि आर्यलेखकों, उनके जीवनवृत्त तथा उनकी कृतियों की जितनी जानकारी मुझे है, उतनी शायद ही किसी को हो। गत 20 वर्षों से तो मैं निरन्तर आर्यसमाजी लेखकों का परिचय तथा उनके ग्रन्थों का विवरण एकत्र करता रहा और उसे व्यवस्थित करता रहा। अन्ततः मैंने इन सारे लेखकों के इतिवृत्त को जब अकारादि क्रम से व्यवस्थित किया तो यह लेखक सूची लगभग 1500 तक पहुँच गई। पहले तो मेरे मन में विचार आया कि आज आर्यसमाज में अध्ययन और स्वाध्याय की प्रवृत्ति समाप्त प्रायः है। आज के आर्यसमाजी पं० लेखराम, पं० गुरुदत्त पं० तुलसीराम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द आदि साहित्यकारों के नाम तक से अपरिचित हैं, उनके साहित्य से परिचित होना तो सर्वथा अकल्पनीय ही है। अतः इस स्थिति में मेरे द्वारा तैयार किये गये इस आर्यलेखक कोश का क्या महत्व है और इसे छपाने में भी किसको रुचि होगी। प्रायः भवभूति के शब्दों में यही सोचकर मन को सन्तोष देता था कि-

उत्पत्स्यते मम कोऽपि समानधर्मा,
कालोह्ययम् निरवधि विपुला च पृथ्वी।।

मेरे जीवनकाल में न सही बाद में तो मेरा कोई समानधर्मा, आर्यसमाज के साहित्यिक इतिहास में रुचि लेने वाला उत्पन्न होगा ही, क्योंकि काल अनन्त है और माता धरित्री भी पर्याप्त विस्तृत है। मेरे द्वारा संचित दुर्लभ पुस्तकों की भांति लेखक कोश की मेरी यह पाण्डुलिपि भी पड़ी रहेगी और यदि कभी किसी ने उसकी उपयोगिता को समझा, तो वह उसे प्रकाशित भी करायेगा।

किन्तु मेरे मन में एक आशा का भाव भी अचानक जागृत हुआ। मैंने 8 वर्षों तक दयानन्द शोधपीठ पंजाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर कार्य करने के पश्चात् 30 अप्रैल-1988 को इस महत्वपूर्ण पद से अवकाश ले लिया। ध्यातव्य है कि समस्त भारत के 150 विश्वविद्यालयों में अकेला पंजाब विश्वविद्यालय ही एक मात्र ऐसा विद्यापीठ है जहाँ 1976 से दयानन्द शोध पीठ Dayanand-Chair for Vedic Studies स्वतन्त्र रूप से ऋषि दयानन्द और उनके वैदिक सिद्धान्तों पर उच्चस्तरीय शोधकार्य करा रही है। मेरे आठ वर्ष के अल्पकालीन अध्यक्षकाल में लगभग 20 शोधार्थियों ने दयानन्द और वैदिक विचारधारा को शोधकार्य के लिए चुनकर पी०एच०डी० की उपाधि ग्रहण की है। शोधविषयक परामर्श लेने वालों की तो यह स्थिति है कि भारत ही नहीं, अन्य देशों के शोध विद्वान् भी प्रत्यक्ष या पत्राचार द्वारा मुझसे परामर्श लेते हैं। (दयानन्दपीठ-तो कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में भी है, किन्तु वहां की स्थिति यह है कि आज दो वर्ष से इस पीठ के प्रोफेसर का पद रिक्त पड़ा है और इसे भरा नहीं जा रहा है। एक बार तो स्थिति यहाँ तक आ गई थी कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दयानन्द प्रोफेसर के पद को सर्वथा समाप्त ही कर दिया गया, किन्तु जब मैंने आर्यसमाजी पत्रों में इसका विरोध किया और नवभारत टाइम्स के चण्डीगढ़ स्थित संवाददाता ने राधेश्याम शर्मा को हरयाणा के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल से टेलीफोन पर सम्पर्क कर इस पद को समाप्त करने के होने वाले परिणाम और प्रतिक्रिया की जानकारी देने का आग्रह किया तो मुख्यमन्त्री जी द्वारा इस पद को यथावत् रखा गया। तथापि इस पद का रिक्त रखा जाना, चिन्तनीय है। आर्यसमाज के उन नेताओं को तो इस स्थिति का ज्ञान भी नहीं है जबकि हरयाणा में ही आर्यसमाज को सर्वाधिक प्रभावपूर्ण माना जाता है।)

यह सब लिखने का प्रयोजन यह बताना है कि पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोधपीठ आज देश का एकमात्र ऐसा प्रमुख शोधसंस्थान है जहाँ विश्वविद्यालय स्तर पर ऋषि दयानन्द विषयक शोधकार्य होता है। कहने को तो गुरुकुल कांगड़ी भी आर्यसमाज का विश्वविद्यालय है, किन्तु वहां के बारे में जितना कम कहा जाय उतना ही अच्छा है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तो केवल एम०डी० यूनिवर्सिटी ही है, क्योंकि इस विश्वविद्यालय के तो केवल नाम में ही "महर्षि दयानन्द" (यह भी नहीं केवल एम०डी०) शब्द जुड़े हैं।

मैं पुनः प्रकृत विषय पर आता हूँ। 60 वर्ष की आयु पूरी होने पर मैंने उक्त पद से विधिवत् अवकाश तो ले लिया किन्तु मुझे पुनः स्वल्प वेतन पर 3 वर्ष के लिये प्रोफेसर पद पर नियुक्त कर लिया गया। यह अवधि भी अगले वर्ष 30 अप्रैल को समाप्त हो जायेगी। अब मुझे विश्वविद्यालय ने निवास की सुविधा भी नहीं दी है। अस्तु। गत वर्ष मेरे मन में विचार आया कि यदि परमात्मा ने कुछ जीवन और दिया है तो क्यों नहीं आर्य लेखक कोश को छपाने का उद्योग किया जाय। जब वैदिक यंत्रालय के प्रबंधक से इस ग्रन्थ की छपाई पर आने वाली लागत पूछी तो पता चला कि 700 पृष्ठों का यह ग्रन्थ पचास हजार में छप सकता है। मेरे जैसे मसिजीवि के लिये इतनी बड़ी राशि उपलब्ध करना भी एक समस्या थी।

प्रकाशन समस्या का समाधान कैसे हो?

अन्ततः मैंने निश्चय किया कि क्यों न इस ग्रन्थ के अग्रिम ग्राहक बनाये जायें और प्रत्येक से 100 रु० अग्रिम मूल्य के रूप में लिये जायें। यदि 500 व्यक्ति भी 100 रु० की राशि दे दें तो ग्रन्थ का छपना शक्य हो जायेगा। ईश्वर की कृपा से आर्यसमाज में मेरा परिचय का दायरा भी बहुत विस्तृत है। जम्मू से लेकर मद्रास और पोरबंदर से लेकर कलकत्ता तक के आर्य बंधु मेरे प्रति सम्मान भाव रखते हैं। फिर एक बात यह भी ध्यान में आई कि मेरे इस ग्रन्थ में दिवंगत लेखकों के साथ-साथ जीवित, समकालीन लेखकों का भी विवरण दिया गया है। अतः ऐसा हर लेखक तो इस ग्रन्थ को लेना पसन्द करेगा ही। इस विचार से मैंने अपने साथी लेखकों को एक मुद्रित विज्ञप्ति भेजी और उनसे अनुरोध किया कि वे 100 रु० अग्रिम भेजकर इस कार्य में मेरा सहयोग करें। ग्रन्थ छपते ही मात्र 100 रु० में ही यह उन्हें भेज दिया जायेगा। यदि आज के पुस्तक प्रकाशन की स्थिति को ध्यान में रखा जाय तो इस ग्रन्थ का 500 रुपया मूल्य भी रखा जा सकता है। किन्तु यह तो ऐसा प्रकाशन ही कर सकता है जो स्वयं अपनी पूंजी इसमें लगाये

— शेष पृष्ठ ९ पर

योग सिद्धियों के विषय में योगी दयानन्द के विचार

● डॉ० रामनाथ वेदालंकार

योग के चमत्कारों, योग की विभूतियों अथवा योग की सिद्धियों के विषय में परम योगी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के क्या विचार थे, इस सम्बन्ध में आर्य विद्वानों में मतभेद पाया जाता है। यहाँ वस्तुस्थिति स्पष्ट करने के लिए स्वामी जी के विचार उन्हीं के शब्दों में उद्धृत किये जा रहे हैं।

बाबू माधोप्रसाद को लिखे एक पत्र में स्वामी जी लिखते हैं- "देखो, पूर्वकाल में हमारे ऋषि-मुनियों को कैसी पदार्थविद्या आती थी कि जिससे आत्मा के बल से सबके अन्तःकरण के भेद को शीघ्र ही जान लिया करते थे। जैसे बाहर की पदार्थविद्या से सिद्ध किये हुए रेल, तारादि विद्या को मूर्ख लोग जादू समझते हैं, वैसे ही भीतर के पदार्थों के योग से योगी लोग अनेक अद्भुत कर्म कर सकते हैं, इसमें कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि मनुष्य लोग जितनी विद्या बाहर के पदार्थों से सिद्ध करते हैं उससे कई गुणी अधिक भीतर के पदार्थों से सिद्ध कर सकते हैं" (द्रष्टव्यः ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन, भगवद्दत्त, सन् 1955, पृष्ठ- 144-45)।

बम्बई में दिये गये प्रवचन में स्वामी जी ने कहा था- "भीतर के पदार्थ बहुत महान् और गुप्त हैं, और इस स्थूल जगत् में जो गुण और चमत्कार देखने में आते हैं, उससे करोड़ों गुणे गुण और चमत्कार भीतर विद्यमान हैं। बाहर के चमत्कार इन्द्रियों से ग्रहण करे जा सकते हैं, परन्तु मनुष्य स्थिर होकर शोध करे तो उससे बहुत अधिक चमत्कार भीतर के उसे देखने में आयेंगे।" (द्रष्टव्य- ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, 1988, पृष्ठ- 517-18)।

यजुर्वेद 17/67 के भाष्य में स्वामी जी ने आकाश-गमन की सिद्धि का निम्न प्रकार वर्णन किया है-

पृथिव्या अहमुदन्तरिक्षमारुहम्
अन्तरिक्षाद् दिवमारुहम्।
दिवो नाकस्य पृष्ठात्
स्वर्ज्योतिरगामहम् ।।

पदार्थ- हे मनुष्यो, जैसे किये हुए योग के अंगों के अनुष्ठान और संयम से सिद्ध अर्थात् धारणा, ध्यान और समाधि में परिपूर्ण (अहम्) मैं (पृथिव्याः) पृथिवी के बीच (अन्तरिक्षम्) आकाश को (उद् आ अरुहम्) उठ जाऊँ, वा (अन्तरिक्षात्) आकाश से (दिवम्) प्रकाशमान सूर्यलोक को (आ-अरुहम्) चढ़ जाऊँ, वा (नाकस्य) सुख कराने हारे (दिवः) प्रकाशमान उस सूर्यलोक के (पृष्ठात्) समीप से (स्वः) अत्यन्त सुख और (ज्योतिः) ज्ञान के प्रकाश को (अहम्) मैं (अगाम्) प्राप्त होऊँ, वैसा तुम भी आचरण करो।

भावार्थ- जब मनुष्य अपने आत्मा के साथ परमात्मा के योग को प्राप्त होता है तब अणिमादि सिद्धि उत्पन्न होती हैं, उसके पीछे कहीं से न रुकने वाली गति से अभीष्ट स्थानों को जा सकता है, अन्यथा नहीं।।

यजुर्वेद के इसी अध्याय के 71 वें मन्त्र के भाष्य में योगी अनेक प्राणियों के शरीर में प्रविष्ट होकर उनकी नेत्रादि इन्द्रियों से देखने आदि व्यापारों को कर सकता है, ऐसा वर्णन है। इस मन्त्र के भाष्य के भावार्थ का कुछ अंश इस प्रकार है-

"योगी पुरुष तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान आदि योग के साधनों से योग (धारणा, ध्यान, समाधि रूप संयम) के बल को प्राप्त हो अनेक प्राणियों के शरीरों में प्रवेश करके अनेक शिर, नेत्र आदि अंगों से देखने आदि कार्यों को कर सकता है।"

यजुर्वेद 19/91 के भाष्य के भावार्थ में लिखा है कि- "निवृत्तिमार्ग में परमयोगी योगबल से सब सिद्धियों को प्राप्त होता है।" 19/74 के भाष्य से स्वामी जी का यह अभिप्राय भी विदित होता है कि मोक्षप्राप्ति के लिए योगी को योग सिद्धियाँ पाकर भी उनके अभिमान को छोड़ देना चाहिए। उक्त मन्त्र के भावार्थ के शब्द इस प्रकार हैं- "जो युक्ताहार विहार करने हारे वेदों को पढ़, योगाभ्यास कर, अविद्यादि क्लेशों को छुड़ा, योग सिद्धियों को प्राप्त हो और उनके अभिमान को भी छोड़ के कैवल्य को प्राप्त होते हैं वे ब्रह्मानन्द का भोग करते हैं।"

अणिमा आदि सिद्धियों को स्वामी जी मानस मानते हैं, ऐसा पूनाप्रवचन के प्रवचन-संख्या 11 से ज्ञात होता है। उन्होंने अपने भाषण में कहा था- "योगी विभूति को सिद्ध करता है ऐसा योगशास्त्र में लिखा है। अणिमा, लघिमा, गरिमा इत्यादि विभूतियाँ हैं। ये धर्म योगी के चित्त में पैदा होते हैं। सांसारिक लोग "ये योगी के शरीर में पैदा होते हैं" ऐसा मानते हैं। वह बराबर नहीं है। अणिमा अर्थात् अतिसूक्ष्म पदार्थों से भी मन सूक्ष्म होकर पदार्थों का परिमाण करता है। इसी प्रकार अति स्थूल पदार्थों से भी बड़ा होकर उसका ज्ञान मन से होता है, उसे गरिमा कहते हैं। ये मन के धर्म हैं, शरीर में इनका सामर्थ्य नहीं है।" (द्रष्टव्य ऋषि दयानन्द सरस्वती के शास्त्रार्थ और प्रवचन, पृ0 395)।

उपरिलिखित योगसिद्धिविषयक स्वामी जी के विचारों की तुलना पाठकों को भी स्वामी जी के साथ हुई कर्नल अल्काट तथा मैडम ब्लेवेट्स्की की वार्ता में वर्णित स्वामी जी के योग सम्बन्धी विचारों के साथ भी करनी चाहिए। उस वार्ता से ज्ञात होता है कि स्वामी जी मानते थे कि पतंजलि ने जिन योग- विभूतियों का वर्णन किया है वे सब योगी द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं। योगी दूर स्थित अपने योगी भ्राताओं से विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है, दूसरे के भावों को जान सकता है, बिना ही बाह्य साधनों के रेलवे के इन्जन से भी अधिक तीव्र गति के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक गति कर सकता है, पानी पर चल सकता है, धरती के आधार को छोड़कर हवा में रह सकता है, अपनी आत्मा को अपने शरीर से पृथक् कर थोड़ी अवधि के लिए या अनेक वर्षों तक अन्य व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करके रह सकता है, अपनी आयु को चार सौ वर्ष तक बढ़ा सकता है। (द्रष्टव्यः वेदवाणी पत्रिका के जनवरी 1986 के दयानन्द विशेषांक में स्वामी दयानन्द और योग शीर्षक से प्रकाशित कर्नल अल्काट की पुस्तक का डा0 भवानीलाल भारतीय द्वारा अनूदित अंश)। ◘

आर्य गुरुकुल शिक्षा संस्थान का गठन

ग्राम करवा (भरथना) में आगामी रक्षाबन्धन से गुरुकुल की स्थापना का निश्चय किया गया। जिसमें निम्न महानुभावों की समिति का गठन किया गया।

प्रधान - श्री इन्द्रेश नारायण तिवारी
मन्त्री - श्री श्याममोहन आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री कन्हैयालाल पाल

आर्यसमाज रामपुर (उ0प्र0)

प्रधान - श्री सहदेव शरण जी आर्य
मन्त्री - श्री ओमप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री वेदप्रकाश आर्य

--
--

शोक समाचार

आर्य वीरदल शाहजहाँपुर उ0प्र0 के संचालक के सुपुत्र श्री कृष्णवीर गुप्त नगर शारदा नायक का निधन 12·5·90 को प्रातः हो गया है। शोकाकुल परिवार में एक पत्नी एक पुत्र व पुत्री हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ती प्रदान करें व शोकाकुल परिवार को इस महान दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

--

● आर्यसमाज शाहजहाँपुर (रजि0) का वार्षिक उत्सव दिनांक 1,2 एवं 3 जून 1990 को आर्यसमाज प्रांगण में मनाया गया।

पिछड़ा वर्ग क्षेत्र में यज्ञ सम्पन्न

भरथना में दिनांक 29 अप्रैल को स्वामी दिव्यानन्द के सहयोग से इस क्षेत्र में एक वृहत यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें श्री श्याम बिहारी तथा श्री श्याममोहन आर्य ने वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला साथ ही श्री आर्य ने जन समुदाय में निःशुल्क वैदिक साहित्य का वितरण किया।

अण्डमान जेल में शुद्धि अभियान

• शिव कुमार गोयल
पत्रकार
पिलखुवा

वीर विनायक दामोदर सावरकर स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी तो थे ही उन्होंने हिन्दू समाज को ऊँच नीच, अस्पृष्यता तथा अन्य रूढ़ियों से मुक्त करने की दिशा में भी अनेक क्रान्तिकारी कदम उठाये थे। अण्डमान {कालापानी} की जेल में यातनायें सहन करते हुए उन्होंने हिन्दू बन्दियों को अस्पृष्यता जैसी रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित किया था।

सन् 1911 में अण्डमान की सैल्यूलर जेल में सावरकर जी ने अनुभव किया कि अंग्रेज यहाँ भी "बाँटो और राज्य करो" की नीति के तहत पठानों, बलूचियों तथा अन्य खूँखार बन्दियों को भड़काकर हिन्दू बन्दियों का दमन करते हैं। पठानों को वार्डर जैसे पद पर रखकर बन्दियों का खुला उत्पीड़न कराया जाता है। ये पठान वार्डन बन्दियों का पहले तो उत्पीड़न करते थे, बाद में उन्हें धर्मान्तरित करने को मजबूर करते थे। पचासों बन्दियों का धर्म परिवर्तन कर उन्हें मुसलमान बना लिया गया था।

सावरकर जी के साथ ही अण्डमान जेल में उनके बड़े भ्राता गणेश सावरकर, आशुतोष लाहिड़ी, पंजाब के महान क्रान्तिकारी तथा आर्यसमाजी नेता देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी आदि देशभक्त भी बन्दी थे। इन सभी ने जब जेल में हिन्दुओं का उत्पीड़न तथा धर्मान्तरण देखा तो उन्हें भारी कष्ट हुआ।

हिन्दुओं का उत्पीड़न होता था

सावरकर जी ने अण्डमान जेल की कहानी "मेरा आजीवन कारावास" मे वर्णन करते हुए लिखा है कि "हिन्दू बन्दी अस्पृष्यता, ऊँच नीच की भावना तथा जातिगत अहंकारों से ग्रस्त थे। मुसलमान पठान वार्डर उन्हें आपस में लड़ाकर रखते थे। तरह-तरह के लालच देकर कोल्हू में जुतकर तेल पेरने जैसे अमानवीय कार्य से मुक्ति का लोभ देकर उन्हें मुसलमान बनने को बाध्य कर लेते थे।

सावरकर जी आगे लिखते हैं- "जेल में मुसलमान वार्डर तथा बन्दी "कुरान शरीफ" को अपने धार्मिक ग्रन्थ के रूप में रखते थे जबकि हिन्दुओं को अपने धर्मग्रन्थ रखने या पढ़ने की मनाही थी। छुट्टी के दिन भी यदि दस पाँच हिन्दू बन्दी मिलकर "रामायण" पढ़ना चाहते तो मुसलमान वार्डर या मिर्जा खान उनके साथ मारपीट कर उन्हें कोठरी में बन्द कर देते थे। पठान, बलूची, सिन्धी या पंजाबी मुसलमान वार्डर या जमादार रामायण या अन्य ग्रन्थों में छपे चित्रों को देखकर मजाक उड़ाते तथा बुत परस्त कहकर चिढ़ाते थे।

"हमने यह दृष्य देखा तो विरोध शुरू कर दिया। हिन्दुओं को धार्मिक स्वाधीनता दिलाने के लिए हमने अधिकारियों से बातें कीं। संघर्ष के बाद उन्हें भी "रामायण" आदि पढ़ने की छूट मिल पाई।

"इसी प्रकार हिन्दुओं को त्यौहार मनाने में बाधा डाली जाती थी। हमने हिन्दू बन्दियों को एक जुट कर होली, दीवाली, शिवरात्रि, गुरु गोविन्दसिंह-जयन्ती जैसे त्यौहार मनाने की स्वीकृति देने की मांग की। एक जुटता के सामने अधिकारियों को हिन्दू त्यौहार मनाने पर छूट देनी पड़ी।

जेल में इस्लामीकरण का जेहाद

अण्मान जेल में मुसलमान पठानों ने तरह-तरह के हथकण्डे अपनाकर "इस्लामीकरण" का जेहाद शुरू किया। वे हिन्दू बन्दियों को कठोर कामों से मुक्ति का लोभ देकर मुसलमान बनने को बाध्य करते थे। हिन्दुओं के पानी को छूकर घोषणा कर देते थे कि जो इसे पियेगा वही मुसलमान बन जायेगा। हिन्दू बन्दियों के लिये भुने हुए चनों के बोरों को छूकर कह देते थे- "ये चने तो मुसलमान बन गये हैं।"

सावरकर जी ने यह देखा तो हिन्दू बन्दियों को इसका जवाब देने के लिये तैयार कर लिया। इन्होंने मुसलमानों के लिये रखे चने भरे बोरों में हाथ डालकर घोषणा कर दी--- "देखो आज ये चने हिन्दू बन गये हैं।"

सावरकर जी ने लिखा है- "इस प्रकार के मेरे प्रयासों से हिन्दुओं ने अस्पृश्यास्पृश्य की घातक रूढ़ियां त्यागनी शुरु कर दीं/ इसका परिणाम यह निकला कि हिन्दूधर्म से हाथ धो बैठे बहुत से धर्मान्तरित हुए हिन्दू पुनः हिन्दूधर्म में लौट आए। बहुत से ईसाई बने लोग भी पुनः हिन्दू बन गये। हाथ का खाना खा लेने या पानी पी लेने के माध्यम से किये जाने वाला "भ्रष्टीकरण" का कार्य बन्द हो गया।"

"आन्ध्र निवासी एक 40 वर्षीय तेलगू ब्राह्मण वार्डर था। कभी उसके बाप-दादों ने ईसाई मत ग्रहण कर लिया होगा। इसके बावजूद जेल में वह तेलगू भाषा की रामायण बड़ी श्रद्धा से पढ़ता था। मेरे सम्पर्क में आया तो मैंने उसे वैदिक हिन्दूधर्म तथा संस्कृति के महत्व से परिचित कराया। उसने प्रभावित होकर स्वेच्छा से पुनः हिन्दूधर्म में दीक्षित होने का प्रार्थना पत्र दिया। हमने उसे शुद्ध कर लिया। उसने माथे पर तिलक लगाना शुरुकर दिया, मन्दिर में जाकर पूजा पाठ करने लगा। ईसाई पादरी ने उसे धमकी दिलवाई कि "वार्डर" पद छीन लिया जायेगा, किन्तु उसने कोई चिन्ता नहीं की।

बाबा सावरकर पर हमला

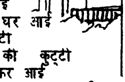
सन् 1920 की बात है। एक मुसलमान ने एक गुजराती हिन्दू युवक को अपने जाल में फंसा लिया तथा उसे मुसलमान बनाने की तैयारी शुरू कर दी। मेरे ज्येष्ठ बन्धु {गणेश-सावरकर} को जब इस कुचक्र का पता चला तो उन्होंने मुंशी से मिलकर गुजराती युवक को अलग बैरक में रखवा दिया। वह मजहबी उन्मादी इस बात से चिढ़गया तथा ज्येष्ठ बन्धु पर हमला कर बैठा। भ्राता जी नाक पर घूंसा लगने से बेहोश होकर गिर पड़े। बाद में उस मजहबी उन्मादी की अनेक बार पिटाई हुई तो वह माफी मांगने आया।

जेल से बाहर अण्डमान की स्वतन्त्र बस्तियों में भी हमारा शुद्धिकरण चलने लगा। वहां के व्यापारी, अधिकारी, तथा आर्यसमाज से प्रभावित लोगों ने इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय अभियान में सक्रिय सहयोग दिया। लोभ लालच तथा दबाव से धर्मान्तरित किये गये अनेक व्यक्ति पुनः हिन्दूधर्म में लौट आये। अण्डमान के हिन्दूमन्दिरों में शुरू हुए हिन्दुओं को बेरोकटोक प्रवेश मिलने लगा। दीवाली, दशहरा सत्यनारायण की कथा आदि पर्वों में भी वे शुद्ध हुए हिन्दू सम्मान के साथ शामिल होने लगे। रामायण पाठ तथा सहभोजों में भी अब उनके शामिल होने पर कोई आपत्ति नहीं करता था।"

अण्डमान जेल तथा बाहरी बस्ती में चलाये गये इस शुद्धि अभियान में आर्यसमाज के विचारों वाले लोगों से सावरकर जी को सक्रिय योगदान मिलता था। ◻

बाल कविता

देखो गर्मी फिर घर आई



ऋतु पीत की हुई विदाई
देखो गर्मी फिर घर आई
ऊनी कोट-पैंट की छुट्टी
टोपी, सूटर ने की कुट्टी
चहल-पहल की ऋतु फिर आई
देखो गर्मी फिर घर आई
सूरज फिर से हुआ जवान
देखा कैसा हँसता आन
सब से अपनी प्रीति बढ़ाई
देखो गर्मी फिर घर आई।।

अखिलेश कुमार "आर्य"
कटरा, इलाहाबाद

आर्य उपप्रतिनिधि सभा फैजाबाद

- प्रधान - श्री हरीनारायण आर्य
  मन्त्री - श्री विश्वामित्र शास्त्री
  कोषाध्यक्ष- श्री राम प्रकाश आर्य

- आर्यसमाज सूरजकुण्ड रोड, मेरठ

  प्रधान - श्री बनवारीलाल भारती
  मन्त्री - श्री सत्यपाल सिंघल
  कोषाध्यक्ष- श्री हरिश्चन्द्र गुप्ता

पुरुषार्थ : निष्काम कर्तव्य

• श्री "अग्निमित्र" रजनेश
भरथना, इटावा

पुरुष होकर पुरुषार्थ से बचना चाहते हो। क्यों? यह बचने की आदत बहुत ही बुरी है फिर भी जानकर बचना चाहते हो। कभी विचार किया है कि इससे बच नहीं सकते। यदि पुरुषार्थ ही हमने नहीं किया तो पुरुष कहलाने के योग्य कैसे रह सकते हैं? अत निष्कर्ष उत्तम है कि हम सौ वर्षों तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करें और ये कर्म भी कौन से हों? ये कर्म निष्काम भाव से किये जाये क्यों कि निष्काम कर्म में मनुष्य लिप्त नहीं होता। सकाम कर्म मनुष्य को अपने में लिप्त कर लेते हैं मनुष्य उससे मुक्त नहीं हो पाता। इस लिए पुरुषार्थ करे ये पुरुषार्थ किस लक्ष्य को निर्धारित रख कर किये जाएँ वे हैं- धर्म अर्थ काम मोक्ष।

मनुष्य चूंकि सामाजिक प्राणी है अत निष्काम कर्म से ही भौतिक सुख और आत्मा के आनन्द को प्राप्त करता है। भौतिक सुख, शारीरिक इन्द्रियक, और मन की प्यास को बुझाने वाले हैं जब कि अध्यात्मक आनन्द मोक्ष की ओर प्रेरित करता रहता है परमात्मा का सानिध्य प्राप्ति में सहयोग करता है।

अब विचारणीय यह है कि हम या तो जानते नहीं कि हमारा अन्तिम और प्रारम्भिक लक्ष्य क्या है या हम जान-बूझ कर उल्टे मार्ग पर चले जा रहे हैं। आप किसी से भी किसी विषय पर प्रश्न करके उत्तर माँगे तो उसका बताया हुआ उत्तर ही उसे अच्छा लगता है दूसरे की बात को वह मानने को तब तक तैयार नहीं होता जब तक कि उसे तर्क बुद्धि से सप्रमाण उसे समझाया नहीं जाता (1) तो निष्कर्ष सीधा सा मिला कि वह उत्तर देने वाला व्यक्ति विज्ञ (जानकार) नहीं है जिसने उसे तर्क से समझा दिया वह विज्ञ था। विज्ञ भी कहीं तक जानकार है इसका उत्तर उससे भी विज्ञ पुरुष द्वारा दिया जा सकता है। अपनी - अपनी बुद्धि से इसी प्रकार सबके द्वारा किया गया कार्य सबको उत्तम प्रतीत होता है जबकि यथार्थ में ऐसा नहीं होता है। इसी लिये पुरुषार्थ करने से पूर्व हमें विज्ञ होना अनिवार्य है अन्यथा सारे बल व्यर्थ हो जाते हैं सारे बल निष्काम के स्थान पर सकाम कर्म में लग जाते हैं।

(2) अब प्रश्न होता है कि हम विज्ञ कैसे बनें? जबकि आज ऐसी विकट समस्यायें हैं जिनका निराकरण परमात्मा की कृपा के बिना होना असम्भव है। तो सबसे पहले हम अपने दुर्गुण कुव्यसन दुर्मति दूर करें तब समाज की दुर्गति दूर करने के व्रत पूर्वक प्रयास करें। सबसे प्रथम मन शुद्ध करें। शुद्ध करने का अर्थ बुराइयाँ दूर हो अच्छाइयाँ आवें। एक मन में दोनों बातें नहीं रह सकती है अत मन में से पहले बुराइयाँ हटावें तदुपरान्त अच्छाइयाँ लाने का प्रयास करें। बुराइयों के रहते अच्छाइयाँ आ नहीं सकती। यह एक बहुत ही कटु सत्य है। इसीलिए वैदिक सन्ध्या में ईश्वरोपासना का प्रथम मन्त्र- विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्न आ सुव।। यजु0 30/3 अर्थात हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्ध स्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर। आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण दुर्व्यसन और दुखों को दूर कीजिये जो कल्याण कारक गुण कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कराइये।

अब प्रश्न यह उठता है कि आज मानव की जो दुर्गति है और यदि सुधार न हुआ तो आगे भविष्य में ऐसा ही होगा इसको कैसे सुधारा जाये। इसके उत्तर में आज के मानव को अपने कर्तव्यों पर ध्यान देकर उन्हे आचरण में समाहित करना पड़ेगा उसके बाद अधिकारों की बात अपने आप समझ में आ जायेगी।

कर्तव्य - (1) व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक व सम्बद्ध अंग हैं व्यक्ति एक इकाई है तो समाज उसका संगठित स्वरूप। व्यक्ति की उन्नति का मूलमन्त्र उसका चरित्र का विकास है।

(2) सामाजिक व्यवस्था में चारों वर्णों में से चाहे जिस वर्ण को व्यक्ति चुने उसके निम्न कर्तव्य स्थायीरूप में निर्धारित है इसके लिए उसे उत्तरदायी भी ठहराया गया है- (1) धार्मिककर्तव्य- धार्मिक भावना के जागरण से मानव में आस्तिकता, सच्चरित्रता, मानसिक प्रसन्नता और आत्मिक आनन्द की अनुभूति होती है। इसी जागृत भावना से किसी के धन का लालच न करते हुए त्यागभाव से संसार के भोग यथा आवश्यकता के अनुकूल संसार में जीवन जीने की इच्छा जागृत रहती है इस तथ्य में स्पष्ट यह करना है कि इस संसार में जितने भी चेतन प्राणी हैं वे सब परमपिता एक ही परमात्मा की सन्तान हैं। और एक पिता की सन्तान होने के कारण हम सब आपसी भाई-भाई हैं। वे चाहे जिस मत मजहब के मानने वाले होवें। सब मत मजहबी पुस्तकों तथा वेद में भी एक ही पिता की सन्तान होने का सन्दर्भ बार-बार आता है। भाषाई भेद के कारण अल्लाह, ईश्वर, परमात्मा इत्यादि नामों से जाना जाता है परन्तु सबका है एक ही ईश्वर। अब धार्मिक कर्तव्य स्वाध्याय, चिन्तन आचरण, सत्संग, उपदेशों से स्वत व्यक्ति में आने लगते हैं चारित्रिक विकास में मनुष्यता के गुणों का विकास करना पड़ता है। बिना चरित्र के व्यक्ति का जीवन पशु के समान है। अत धार्मिक कर्तव्य पालन सभी मनुष्य जाति को अनिवार्यत सिद्ध है। धार्मिक कर्तव्यों के अन्तर्गत- ईश्वरोपासना, सन्ध्या पञ्चयज्ञ-(भौतिक, मानसिक, आत्मिक) स्वाध्याय व्रत श्रद्धा, इत्यादि कर्म हैं। व्यक्ति और समाज के चारित्रिक विकास में मनुष्यता के गुणों को धारण करना आचरण करना मनुष्य का धर्म है। संसार को आज जो यह दुर्गति है इसके मूल में यही सत्य छिपा है कि मनुष्य में मनुष्यता के गुण, आस्तिकता का अभाव होना ही है। इसीलिए मनुष्य सब प्राणियों सहित अपने भाई के खून का ऐसा प्यासा है कि उसकी प्यास खून पीकर भी शान्त नहीं है। उसकी प्यास निरन्तर बढ रही है। अन्तत प्रत्येक मनुष्य को मनुष्यता, आस्तिकता, श्रद्धा, व्रत पंचमहायज्ञ, करना अनिवार्य धार्मिक कर्तव्य निर्धारित है। इसी से सबका कल्याण, चिरशान्ति, विश्वबन्धुत्व की भावना, इन्सानियत का पैदा होना आयेगा। अन्यथा सारे कर्तव्य व्यर्थ हो जायेंगे।

पारिवारिक कर्तव्य - परिवार में सुख, ऐश्वर्य, सम्पन्नता एक दूसरे में विश्वास, आज्ञापालन इत्यादि सभी उच्च भावनाओं के मूल में एक ही सत्य छिपा है। वह है आपसी प्रेम और विश्वास। बिना इसके परिवार में सदैव कलह अशान्ति बना रहती है। प्रेम से सद्भाव सद्भाव से सहयोग, सहयोग से संगठित होकर परिवार को सुख समृद्धि-धन-धान्य की बहुलता, चिर शान्ति और परिवार का आदर्शता आती है। अत सभी पारिवारिक सदस्यों का कर्तव्य है कि वे आपस में प्रेम से रहें। एक दूसरे के समक्ष त्याग का आदर्श प्रस्तुत करें।

पंच महायज्ञ में पितृयज्ञ अर्थात माता, पिता, चाचा, ताऊ आदि वृद्धों की सेवा करें। भाई-भाई में प्रेम, सहयोग व त्याग की भावना रहे। पुत्र आज्ञाकारी बने। पति पत्नी में समता आपसी प्रेम श्रद्धा, सहयोग की भावना रहे, एक दूसरे के प्रति समर्पण भाव से सम्माननीय आचरण रहे।

सामाजिक कर्तव्य- प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य है कि वह दूसरे प्राणी सहित मानवों की रक्षा करे। यह रक्षा का कार्य परस्पर सहयोग की भावना, त्याग की भावना से पूर्ण होना है। समाज को संगठित करने का प्रमुख साधन है सहभोज और सहजलपान इसके द्वारा पारस्परिक स्नेह सद्भाव की वृद्धि होती है। इसके लिये ज्ञान शक्ति, जन शक्ति, धन शक्ति और सेवा शक्ति परमावश्यक है। ऊँच नीच, जाति-पाँति, छोटा-बड़ा, गरीब-अमीर जैसी भावनाएँ सर्वथा त्याज्य हैं। सब एक परमात्मा की सन्तान होने के कारण भाई-भाई है। समाज में ब्रह्मशक्ति के मार्ग निर्देशन पर क्षात्र शक्ति द्वारा धन बल से सेवाभावी होकर समाज को संगठित कर एक दूसरे की रक्षा की जाती रही है। परन्तु खेद का विषय है कि वर्तमान में ऐसा नहीं है इसीलिये इस ओर ध्यानाकर्षित किया है। समाजसेवा एक पवित्र व्रत है। ऐसे व्यक्तियों को लोककृत और पथिकृत वेदों में कहा गया है। ऐसे समाज सेवियों

— शेष पृष्ठ १० पर

"बरसाती अमावस"

जगदीश शरण "शीतल"

(भू॰ पू॰ प्रधान) आ॰ स॰ चांदपुर (बिजनौर)

यह भारत का प्राचीन त्यौहार है। इसको बरसाती अमावस तथा वरमावस भी कहते हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि का समस्त कार्य इसी पर निर्भर है। ज्येष्ठ बदि अमावस से वर्षाकाल आरम्भ होकर असौजबदि अमावस को समाप्त होता है। इसी कारण इसको चातुर्मास कहते हैं। इस बरसाती अमावस के दिन यहाँ का कृषक समाज अपने घरों में यज्ञ करके उत्तम वर्षा के लिये भगवान से प्रार्थना तथा भाँति-भाँति के स्वादिष्ट पकवान बनाकर परस्पर इनका आदान-प्रदान करता। यह तो बरसाती अमावस के सम्बन्ध में संक्षेप में कुछ निवेदन किया। अब वरमावस को लीजिये। प्राचीन काल में जब आने-जाने के इतने सुलभ और सरल साधन न थे जितने कि आज। जो व्यापारी व्यापार के लिये एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तथा विदेश में व्यापार करने जाते वह इसी बरसाती अमावस तक अपने-अपने घरों के वापिस आते। नहीं तो उन्हें फिर लम्बे समय तक वहीं रहना पड़ता। सारे मार्ग वर्षा के कारण अविरुद्ध हो जाते तथा नदियों के पुल टूट जाते, जिसके कारण आवागमन बिल्कुल ठप्प हो जाता। अब जिस स्त्री का वर अर्थात् पति इतने अधिक समय के पश्चात् अपने घर सकुशल वापिस आया है। उसके लिये इससे अधिक और क्या प्रसन्नता की बात हो सकती है। इसी प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिये भाँति-भाँति के स्वादिष्ट पकवान बनाकर अपने पतियों का स्वागत तथा सम्मान किया जाता था। घर में सास-ससुर तथा अन्य पितरों को भी इस पकवान से तृप्त करके अपने सुहाग के लिये, आशीर्वाद प्राप्त करती थीं। कालान्तर मे एक कथा सत्यवान सावित्री की भी इस त्यौहार के साथ जुड़ गई। इसी बरसाती अमावस के दिन प्रतिदिन की भाँति जब सत्यवान और सावित्री वन में लकड़ी काटने गये तो वहाँ सत्यवान के शिर में अत्यन्त भयंकर पीड़ा होने लगी और वह इस पीड़ा के कारण अचेत हो गया। सावित्री अत्यन्त शोकाकुल होकर भगवान से प्रार्थना करने लगी- "हे प्रभु मेरे पति के प्राणों की रक्षा करो और मुझे सुहाग का अचल दान दो। कुछ ही देर में सत्यवान सचेत हो गया और वह दोनों प्रसन्नता पूर्वक अपने स्थान पर वापस आ गये। क्योंकि यह घटना वट के वृक्ष के नीचे घटी थी इसी कारण स्त्रियाँ वट की टहनी मंगाकर इसकी पूजा करती हैं। हरे वृक्ष को नष्ट करना महा पाप तथा टहनी को पूजना अवैदिक पौराणिक पाखण्ड है। अतः मातृशक्ति से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि वह अपने समस्त त्यौहार वैदिक पद्धति के अनुसार मनाकर पौराणिक पाखण्ड से दूर रहें। इस दिन अपने घरों में यज्ञ करके उत्तम वर्षा के लिये भगवान से प्रार्थना तथा स्वादिष्ट पौष्टिक पकवान बनाकर परस्पर आदान-प्रदान कर बड़ों से आशीर्वाद प्राप्त करें। ■

दयानन्द बाल मन्दिर, टनकपुर (नैनीताल) में अध्यापक धर्म प्रशिक्षण शिविर

दिनांक- 19 व 20 फरवरी 1990 को विद्यालय के प्रबन्धक महोदय - श्री रामदेव आर्य के अनुरोध पर आयोजित किया गया। प्रदेशीय विद्यार्य सभा के मन्त्री श्री माधव सिंह ने स्वयं शिविर संचालन का कार्य किया। शिविर आशा से अधिक सफल रहा। इसका विशेष श्रेय श्री वेद प्रकाश शास्त्री, नांगल (बिजनौर) को है। उनके विद्वतापूर्ण प्रवचनों एवं उनकी आकर्षक भाषण शैली से शिक्षिकायें बहुत प्रभावित हुईं। 15 शिक्षिकाओं के अतिरिक्त 30 आर्य देवियाँ एवं कन्यायें भी शिविर में उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुईं। स्वामी योगानन्द जी पीलीभीत वालों का योग, पंच महायज्ञ आदि संबंधी क्रियात्मक योगदान भी उल्लेखनीय रहा।

विद्यार्य सभा के मन्त्रीजी विद्यालय के संचालन से अत्यन्त प्रभावित हुए। जिन उद्देश्यों को लेकर दयानन्द बाल मन्दिरों की स्थापना की गई थी उनकी पूर्ति के लिये जितना सराहनीय कार्य यह विद्यालय कर रहा है उतना शायद ही कोई दूसरा कर रहा हो। इसकी निम्नांकित विशेषतायें अनुकरणीय हैं-

(क) नित्य सन्ध्या, ईश्वर भक्ति के भजन, वैदिक राष्ट्रीय गान, आर्यसमाज के नियमों का पाठ।

(ख) प्रथम वादन धर्मशिक्षा एवं नैतिकशिक्षा को समर्पित ।

(ग) सप्ताह में एक बार हवन।

(घ) सभी प्रमुख आर्य पर्वों पर विशेष कार्यक्रम।

(ङ) महर्षि दयानन्द कृत वर्णोच्चारण शिक्षा कक्षा-2 के, व्यवहारभानु कक्षा-3 के, गो करुणानिधि कक्षाये-4 के, आर्योद्देश्य रत्नमाला कक्षा-5 के पाठ्यक्रम में सम्मिलित है। यह यहाँ की विशेषता है।

(च) मासिक वैदिक विचारगोष्ठी किसी विद्वान द्वारा संपादित की जाती है।

(छ) वार्षिक महोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर आर्य महोत्सव के रूप में मनाया जाता है जिसके सांस्कृतिक कार्यक्रम भी वैदिक विचारधारा पर आधारित होते हैं।

उपरोक्त विशेषताओं के कारण ही विद्यालय में अपने बच्चों को प्रविष्ठ कराने के लिये स्थानीय जनता लालायित रहती है।

वर्तमान छात्र संख्या 450 है।

क्या ही अच्छा हो हमारे सभी दयानन्द-बाल मन्दिर इस विद्यालय का अनुकरण करते हुए स्वर्गीय प्रकाशवीर शास्त्री जी के सपनों को साकार करें जिन्होंने 1975 में वाराणसी के आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर दयानन्द बाल मन्दिरों की स्थापना के कार्यक्रम को अपनाने के लिये आर्य जनता का आवाहन किया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा- उत्तर प्रदेश (उपदेश विभाग) प्रस्तुत करता है

प्रचार योजना

सस्ती उत्सव योजना- 500 रु0 दक्षिणा वेद प्रचार निधि में,
इस योजना के अन्तर्गत त्रि-दिवसीय उत्सव हेतु सभा की ओर से एक उपदेशक एवं दो सुयोग्य भजन मण्डली प्रदान की जायेंगी। पण्डाल ध्वनि विस्तारक यन्त्र मार्ग व्यय इत्यादि की समस्त व्यवस्था सम्बन्धित आर्यसमाज को करनी होगी।

प्रभावशाली प्रचार योजना- 200रु0 दक्षिणा वेद प्रचार निधि में। इस योजना के अन्तर्गत द्विदिवसीय प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत सभा की ओर से एक उपदेशक एवं एक भजनोपदेशक प्रदान किये जायेगें। शेष व्यय भार सम्बन्धित आर्य समाज को वहन करना होगा।

मिशनरी प्रचार योजना- (आप बुलायें हम आयें)
इस योजना के अन्तर्गत एक भजन मण्डली सभा की ओर से प्रदान की जायेगी। आपको केवल मार्ग व्यय भार वहन करना होगा, यह योजना धर्मान्तरण एवं अराष्ट्रीय गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों में लागू की जायेगी।

आप के निमन्त्रण की प्रतीक्षा में

आज ही लिखें या मिलें।

हरिश्चन्द्रार्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग,
प्रचार कार्यालय अमरोहा
जनपद-मुरादाबाद।

लखनऊ दूरभाष सभा- 45293
अमरोहा दूरभाष-554

प्रवेश प्रारम्भ

मानव निर्माण हेतु गुरुकुल सिराथू में प्रवेश न भूलें। आदर्श एवं सुयोग्य सन्तान तथा उज्जवल भविष्य के लिए प्रथम श्रेणी मान्यता प्राप्त गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, सिराथू (मैनी) इलाहाबाद (उ0प्र0) में । जुलाई से 15 अगस्त 90 तक प्रवेश का स्वर्णिम अवसर गुरुकुल में कक्षा 5 से प्रवेश होता है और सोलहवीं कक्षा (प्रथमा से आचार्य) तक अध्ययन हेतु छात्रावास की समुचित व्यवस्था है।

वेद, दर्शन, व्याकरण, साहित्य, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल नागरिकशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयों के साथ-साथ संगीतभाषण सैनिक-नैतिक शिक्षा पी0टी0 योगासन एवं धनुर्विद्या आदि के प्रशिक्षण का विशेष प्रबंध है।

मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है। प्रवेश शुल्क 350/- भोजन शुल्क 125/- प्रतिमाह देय होगा ।

नोटः- विशेष जानकारी के लिए नियमावली मँगावें ।

डॉ0 रमामित्र शास्त्री
प्राचार्य ।

सभा का वर्ष

हर्ष का विषय है कि सभा का वर्ष 31 मार्च 1990 को समाप्त हो गया है। अतः अधिकारियों, अंतरंग सदस्यों एवं निरीक्षकों को सूचित किया जाता है कि वह अपनी कटी हुई रसीदें हिसाब और अवशेष धन 15 जून 90 तक अवश्य भेजने की कृपा करें, ताकि सभा का प्राप्तव्य धन संबंधी नियम प्रतिनिधि स्वीकारी में बाधक न बने।

2-जिला उपसभाओं से भी अनुरोध है कि वह अपनी जिला सभा का वार्षिक विवरण सभा की वार्षिक रिपोर्ट में सम्मिलित करने हेतु 30 जून सन् 1990 तक अवश्य भेजने की कृपा करें। बाद में आये विवरण प्रकाशित न हो सकेंगें।

—मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

शुभ विवाह

दिनांक 3-5-90 दिन गुरुवार को स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में कृष्ण कुमार उर्फ बब्बू गोला (खीरी) का शुभ पाणिग्रहण संस्कार मिथलेश कुमारी जि0 सीतापुर के मध्य श्री पं0 हर प्रसाद वैद्य के पौरोहित्य में वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। जिसमें उपस्थित आर्यजनों ने वर कन्या को आशीर्वाद प्रदान कर मंगलमय जीवन की कामना की ।

पृष्ठ ४ का शेष.....

और 400-500 प्रतियाँ ही बेचकर लाखों के वारे-न्यारे कर ले। इस ग्रन्थ से धनोपार्जन मेरा लक्ष्य नहीं है, मेरी इच्छा तो ग्रन्थ को प्रकाशित करने की ही है ।

मेरी आर्थिक सहयोग के लिए अपील और उसकी प्रतिक्रिया-

मैंने ग्रन्थ हेतु अग्रिम राशि भेजने के लिए व्यक्तियों की ही भाँति संस्थाओं से भी आग्रह किया। मेरा विचार था कि यदि देश की लगभग 5 हजार आर्यसमाजों में से पचास आर्यसमाजें भी मुझे 1000 रुपया दे दें तो इस प्रकार 50 हजार की राशि सहजतया एकत्र हो जायगी। और व्यक्तियों से मात्र 100-100 रुपये लेने की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यह लिखते हुए खेद होता है कि अनेक आर्यसमाजों को पृथक्शः लिखने पर भी मुझे कोई आशाजनक सहयोग नहीं मिला। इसके विपरीत दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष, यतिमण्डल के प्रधान वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुण्य कार्य में 2हजार की राशि भेंट की। मैंने पं0 युधिष्ठिरजी मीमांसक से तो मात्र 100 रु0 भेजने के लिए ही निवेदन किया था, किन्तु एक लेखक की पीड़ा को लेखक ही समझता है। उन्होंने तत्काल एक हजार रुपये भेज दिये। दिल्ली प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्दजी से मैंने 100 रु0 माँगे तो उन्होंने 250 रु0 भेजे।

मेरा निवेदन

1- देश की यदि 50 आर्यसमाजें भी प्रत्येक 1000 रुपये भेज दें तो मेरा कार्य अत्यन्त सहज हो जायगा। यह राशि दान रूप में न होकर अग्रिम मूल्य के रूप में ही है। क्योंकि ग्रन्थ छपने पर इतने ही मूल्य की प्रतियाँ मैं उन समाजों को भेज दूँगा।

2- मैंने जिन-जिन आर्य लेखकों तथा स्वपरिचित आर्यबन्धुओं को 100रुपये भेजने के लिये लिखा है, वे बिना विलम्ब किये यह राशि भेज दें। बूंद-बूंद एकत्र करने से समुद्र भरता है। इसी न्याय से पर्याप्त लोगों की राशियाँ आई हैं और आ रही हैं। आर्य लेखकों से विशेष निवेदन है, क्योंकि छपने पर सम्भवतः ग्रन्थ का मूल्य बढ सकता है।

3- मैंने स्वयं निश्चय किया है कि कुल लागत मूल्य में जितनी राशि कम पड़ेगी उसे मैं स्वयं येन केन प्रकारेण पूरा करूंगा, क्योंकि जब ग्रन्थ छापने का निश्चय कर ही लिया तो उसे पूरा होना ही है। मेरा यह संकल्प है कि आगे मुझे आर्यसमाजों के उत्सवों में जो भेंट, दक्षिणा आदि मिलेगी, वह भी इसी कार्य में लगाऊँगा।

अतः निवेदन है कि आर्यसमाज की सभी संस्थायें इस पवित्र सारस्वत यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें। पुस्तक का केवल 1000 का ही संस्करण छपेगा। जो पहले अग्रिम मूल्य दे देंगे उन्हें तो अवश्य ही मिल जायेगा। इसके द्वितीय संस्करण छपने की तो कोई आशा ही नहीं है। सहायता राशि इस पते पर भेजें -

श्री भवानी लाल भारतीय
कोठी नं. 41-सेक्टर,15-A, चन्डीगढ़

स्वास्थ्य-सुधा



आरोग्य दर्पण (1)

समस्या-"आजकल मधुमेह का रोग अधिक प्रचलित है। अपनी सूझबूझ और अनुभव के आधार पर औषधि बताने की कृपा करें।"

-एस0पी0गुप्ता, 6/11-59 हैदरगंज चौराहा, फैजाबाद- 224001

समाधान- मूत्र के साथ शकर जाना या रक्त में शकर की मात्रा बढ़ना मधुमेह है। निम्नांकित "नीबिजाबेगु-मधुमेहान्तक चूर्ण" का प्रभाव अग्न्याशय और यकृत पर इतना सटीक है कि मधुमेहरोग की जड़ ही उजड़ जाती है:-

(1)	नीम की सूखी पत्तियाँ	10 ग्राम,
(2)	बिनौले की मींगी	20 ग्राम,
(3)	जामुन की गुठली	30 ग्राम,
(4)	बेल की सूखी पत्तियाँ	30 ग्राम,
(5)	गुड़मार	40 ग्राम,

पाँचों पदार्थों को कूटपीस-छानकर शीशी में रखें। प्रातः व सायं लगभग तीन ग्राम चूर्ण फाँक कर जल पियें। चूर्ण फाँकने के बाद बसन्तकुसुमाकर रस एक रत्ती मलाई-दूध से चाटें। मधुमेह ठीक हो जाने पर भी, बसन्तकुसुमाकर रस का सेवन कम से कम 40 दिन तक अवश्य जारी रखें।

--

समस्या- "मेरी माताश्री 61 वर्ष की हैं। वह श्वासरोग तथा श्वेतप्रदर से पीड़ित हैं। जब श्वास का प्रकोप होता है, तो दो-दो घण्टे नाड़ी नहीं मिलती। श्वासकष्ट की कोई अचूक औषधि हो, तो कृपया लिखें। मैं और माँ-बस दो ही घर में हैं।".

- पं0 दयाराम ब्रह्मचारी, सैनिक चिकित्सालय-कसौली- 173204 (हिमांचल प्रदेश)

समाधान- श्वासकास सीरप (चरक) दो ढक्कन और अस्थोगॉन सीरप (एमिल आयुर्वैदिक) दो ढक्कन समानजल के साथ प्रातः- मध्याह्न - रात्रि में पियें। दमा श्वास की गोलियाँ स्वयं बना लेवें:- पुराना गुड़ दस ग्राम, स्वर्णक्षीरी (कटसैला) के दूध में सात बार भिगो-भिगो कर छाया में सुखावें। मटर जैसी गोली बनाकर- हर गोली में मूँग के बराबर राल का टुकड़ा रखें। गोली पर चाँदी-वर्क लपेटें। एक गोली प्रातः खालीपेट एक प्याला मूँग की गुनगुन दाल से एक सप्ताह तक लेवें। एक सप्ताह के बाद पुनः दोहरावें। ऐसा तीन-चार कोर्स करने से दमा से मुक्ति मिल जायेगी।

श्वेत-प्रदर हेतु फेमीप्लेक्स (चरक) की दो गोलियाँ दिन में तीन बार पानी से दो मास तक लेवें।

:: रोगविवरण के साथ पत्राचार हेतु तीन बन्द डाक लिफाफे निम्न पता पर भेजे:-

-गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ़ (कचहारी)
उत्तर प्रदेश

--

पृष्ठ ७ का शेष...

का सम्मान यथोचित है। हम सबका यह सामाजिक कर्तव्य है कि हम दूसरों का रक्त न पियें बल्कि उनकी रक्षा करें।

राष्ट्रीय कर्तव्य - इसके अन्तर्गत वे सभी कर्तव्य आ जाते हैं जो राष्ट्र की प्रभुसत्ता, सम्पन्नता, एकता, सुरक्षा, विदेशी सहयोग, विश्व बन्धुत्वता, स्वतन्त्रता, वर्चस्वता, कल्याण कारकता इत्यादि के प्रति समर्पित निष्काम, त्यागभाव और बलिदान देकर भी कर्म पूरे किये जाते हैं। राष्ट्र प्रेम ही सबके मूल में छिपा रहता है। राष्ट्र हित सर्वोपरि है। राष्ट्र वह संज्ञा है जिसमें पुत्र की भाँति जन्म लेकर माता के प्रति जो सेवा व सुरक्षा के कर्तव्य हैं व्यक्ति को प्राणों की आहुति चुका कर भी पूर्ण करना पड़ता है तभी हम उस राष्ट्र के सच्चे पुत्र सिद्ध हो सकते हैं। इन कार्यों

इन कार्यों में भाषा भेद, प्रजाति भेद, क्षेत्रीय भेद, रीति नीति भेद होने के बाद भी राष्ट्र के नाम पर मतभेद नहीं होता। यदि होता है तो वह राष्ट्र टूट जाता है जैसा कि पाकिस्तान बांगलादेश लंका, वर्मा, सिंगापुर, भूटान, नेपाल जो पूर्व के भारत वर्ष थे इसी कारण अलग-अलग हो गये। समान विचार, समान चिन्तन, समान रूप से ऐश्वर्य प्राप्त करना, समानता से मिलकर रहना "संगठन ही शक्ति" समझकर एकता रखना है।

जहाँ पैदा हुए जिस वातावरण में इतने बड़े हुए जिस भूमि में सारा जीवन सुख से व्यतीत करते हैं वहाँ की सुरक्षा समृद्धि चाहना प्रत्येक राष्ट्रवासी का सबसे बड़ा धर्म है और इस कर्तव्य को सदैव याद रखकर ही कोई कार्य करें। हम सदैव यही कामना करें-

§1§ हमारे राष्ट्र में शिक्षा, राष्ट्रीय भाषा, राष्ट्रीय सम्पत्ति-समृद्धि का सदैव विकास होता रहे। §2§ राष्ट्रीय संस्कृति की सुरक्षा व संरक्षा हो §3§ वन्य जीवधारी, सामाजिक प्राणियो सहित हमारे राष्ट्र में क्षत्रिय शूर वीर, धनुर्धर, तेजस्वी बन राष्ट्र रक्षा में संलग्न रहें अर्थात् राष्ट्र रक्षा के साधन नये-नये विकास, राष्ट्र बल की वृद्धि सदैव होती रहे। §4§स्त्रियाँ कुटुम्ब भरण व राष्ट्र बल की वृद्धि में दक्ष होवें। §5§ हमारे पुत्र वीर, धीर, सभ्य, एवं आज्ञाकारी बने रहें जो कि राष्ट्र रक्षा में काम आयें। §6§ यज्ञों द्वारा वर्षा को नियमित व यथायोग्य बरसने की कामना करके सदैव यज्ञ करें। §7§ हमारा स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, स्वराज्य का योग क्षेत्र, सदैव बना रहे। §8§राष्ट्र-द्रोही का सर्वनाश करते रहें §9§ परस्पर समानता से हमारे राष्ट्र की वर्चस्वता विश्व में कायम हो सके §10§ विश्वबन्धुत्व की ओर सदैव प्रयत्नरत रहें §11§भाषाभेद, दलगत जातिपाँति ऊँचनीच, चोरी, व्यसन, बुराइयों, से बचकर राष्ट्र के लिए पैदा करें उसीके लिए जीवें और उसी के लिए मरें।

भारत की एकता, सुरक्षा, समृद्धि, सुखशान्ति के प्रति सदैव सचेत, जागृत रहें। आज राष्ट्र संकटग्रस्त है। हमारे शासकों के लिए राष्ट्रीय एकता व राष्ट्र की रक्षा करने के प्रति आज सबसे बड़ी चुनौती है। क्या वे इस ओर कोई ठोस कदम उठायेंगे। राजा सो गया या विलासता में फँस गया या गुमराह हो गया तो उसका परिणाम देश का विभाजन होना, ये कटु सत्य सभी ने स्वीकारा है।

अन्त में यही पर्याप्त है कि हमारा पुरुषार्थ त्यागभाव से, बलिदान भाव से प्रेरित होकर हम सबको उन्नति का कारण बने। वे जातियाँ नष्ट हो गयी जो अपने उपरोक्त कर्मों के प्रति सचेत नहीं थीं हमारा इतिहास बतलाता है कि हम सचेत तो सदैव रहे परन्तु वैदिक शिक्षा के अभाव में हमने हर तरह की गुलामी भोगी और आगे भी भोगते रहेंगे। जब तक ऋत और सत्य का यथार्थ वातावरण बनाने की शालायें §पाठशाला, व्यायामशाला अर्थात् गुरुकुल§ नहीं होंगी तब तक हमारी आत्मिक, मानसिक शारीरिक, इन्द्रियक दासता समाप्त नहीं हो सकती। आइये आज यही व्रत लेकर पुरुषार्थ करें वह भी निष्काम होकर लिप्त होकर नहीं। ◻

मारीशस की सम्वेदना

आर्यनेता डा० दुखन राम जी के निधन से हम मारीशस वासी भी उतने ही दुखी हैं जितना कि भारतवासी दुखित हैं। सन् 1963 में मारीशस में आर्य सभा तथा देहली के सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया गया था जो सम्मेलन मारीशस की राजधानी पोर्ट लुई में किया गया था। उसी महान ऐतिहासिक कार्य में हमें शुभाशीर्वाद देने के निमित्त डाक्टर जी ने इस टापू की यात्रा की थी यहाँ के सभी कार्यक्रमों में आप सक्रिय रहे, जो एक सप्ताह आप का यहाँ पर आना था वह यादगार रही, हमारे लिए। इस यादगार को ताजा करने के लिए सन 1975 में जब हम रामलीला मैदान, नई दिल्ली में होने वाले आर्य सम्मेलन में गये तो, तत्पश्चात हम पटना गये दूसरी बार संसार के इस महान आर्य समाजी नेता से भेंट की।

झोला खो गया-

दिनांक 16-4-90 को बनारस से देहरादून जाते समय §दून एक्सप्रेस ट्रेन में§ मेरे ए०आई०एस०एम०ई०, इन्टर बी०एस सी, एम० एस सी व ड्राइविंग लाईसेन्स गुम हो गये हैं। यदि किसी को मिलें तो निम्न पते पर भेज दें। भेजने वाले को पारितोषिक रु० 100/- दिये जायेंगे।

पता-सजल, पत्र श्री वी०के०गुप्ता,
वैज्ञानिक, टी०एम०शाखा,
एफ०आर०आई०, देहरादून-248001

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला सभाओं के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकठ्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अत. आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दे सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुन धन इकठ्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अत समस्त आर्यजनों से अनुरोध है इन की बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

- कार्यालय सचिव।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कल्याणी देवी प्रयाग का 14वाँ वार्षिकोत्सव दि०- 23 से 27मई तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें अनेक विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान हुए। इस अवसर पर एक चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया।

श्यामलाल स्मारक शिक्षण संस्था, उदगीर

द्वारा संचालित

श्यामलाल अभियांत्रिकी महाविद्यालय, उदगीर

(मराठवाडा विश्वविद्यालय से संलग्न)

तथा

श्यामलाल तंत्रनिकेतन, उदगीर

तंत्र शिक्षण निदेशालय से संलग्न तथा महाराष्ट्र शासन द्वारा मान्यता प्राप्त

उदगीर- 413 517 (महाराष्ट्र)

दक्षिण भारत में आर्य समाज द्वारा संचालित एकमेव तंत्रशिक्षण संस्था

: प्रवेश सूचना :

श्यामलाल अभियांत्रिकी तथा श्यामलाल तंत्रनिकेतन में सन् 1990-91 के लिए प्रवेश जून 1990 से दिया जा रहा है। अभियांत्रिकी एवम् तंत्रनिकेतन में अनुक्रमे चार वर्षीय स्नातकीय तथा तीन वर्षीय पदविका अभ्यासक्रम में निम्न शाखाओं में प्रवेश दिया जाएगा।

:: अभियांत्रिकी महाविद्यालय

(चार वर्षीय स्नातकीय अभ्यासक्रम)

= स्थापत्य अभियांत्रिकी.
= उत्पादन अभियांत्रिकी
= इलेक्ट्रोनिक्स अभियांत्रिकी

:: तंत्रनिकेतन

(तीन वर्षीय पदविका अभ्यासक्रम)

= स्थापत्य
= उत्पादन
= यांत्रिकी
= खाद्य

:: शैक्षणिक पात्रता (अभियांत्रिकी)

एच0एस0सी0 (10 2) पास एक ही बैठक में (महाराष्ट्र अथवा समकक्ष) 50 टक्के प्रतिशत अंक प्राप्त (इंजिनियरींग ग्रुप में (फिजीक्स, केमेस्ट्री, मैथस) 45 टक्के (एससी/एसटी/ओबीसी के लिए)

:: शैक्षणिक पात्रता (तंत्रनिकेतन)

एस0एस0सी0 महाराष्ट्र अथवा समकक्ष पास किमान 50 टक्के प्रतिशत कुल अंक प्राप्त 45 टक्के प्रतिशत एससी/एसटी/ओबीसी केवल महाराष्ट्रीयन के लिये।

प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण पदविका धारको (Diploma holder) (सम्बन्धित शाखा अभियांत्रिकी में सीधा द्वितीय वर्ष प्रवेश दिया जाता है। (महाराष्ट्र राज्य का रहिवासी प्रमाण पत्र आवश्यक है।)

12 वी (विज्ञान) अथवा (समकक्ष परीक्षा किमान 50 टक्के प्रतिशत कुल अंक मे उत्तीर्ण विद्यार्थीयों को योग्य शाखा पदविका (Diploma) में सीधा प्रवेश दिया) जाता है।

:: प्रमुख विशेषताएं ::

- उच्च अर्हताप्राप्त एवम् अनुभवी शिक्षकगण
- साधन सम्पन्न कार्यशाला एवम् प्रयोगशालाएं
- सम्पन्न ग्रन्थालय
- छात्रवास सुविधाएं
- खेल कूद की सुविधाएं
- प्रत्येक छात्र/छात्रा का व्यक्तिगत ध्यान
- चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान
- परिसर में ही चिकित्सा सुविधा
- आर्यसमाज से सम्बन्धित जनों को विशेष प्राथमिकता
- महाराष्ट्र के मराठवाडा की एक अतिप्रतिष्ठित संस्था।

प्रवेश आवेदन पत्र तथा माहिती पुस्तीका द्वारा पोस्ट प्राप्त करने निम्नलिखित पते पर डी0डी0 अथवा आई0पी0ओ0 से रु0 60/- भेजें अथवा प्रत्यक्ष महाविद्यालय के नेखाविभाग में रु0 50/- अदायगी पर प्राप्त किये जा सकते हैं।

"उदगीर" ये महाराष्ट्र राज्य में लातूर जिले में तालुका शहर है। यह हैदराबाद- परली रेल लाईन से जुड़ा हुआ है। उदगीर से हैदराबाद, बिदर, गुलबर्गा, सोलापूर, लातूर, औरंगाबाद से सीधा महाराष्ट्र परिवहन की बसेस से सीधा सम्पर्क है।

पता:-

मा0 प्राचार्य
श्यामलाल अभियांत्रिकी महाविद्यालय,
रेलवे स्टेशन रोड,
उदगीर - 413 517 (महाराष्ट्र)

मा0 प्राचार्य
श्यामलाल तंत्रनिकेतन,
रेलवे स्टेशन रोड,
उदगीर- 413 517 (महाराष्ट्र)

पजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन.पी. ७२
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
ज्येष्ठ शुक्ल ११ संवत २०४७ वि०
दिनांक ३ जून १९९०
दूरभाष
२४५९९४

सेवा में
12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
{ हरिद्वार }

शोक समाचार

● आर्यसमाज गवाँ {बदायूं} दिनांक 13 मई को अपने साप्ताहिक अधिवेशन में सार्वदेशिक सभा के भू0पू0प्रधान डा0 दुखनराम तथा स्वामी रामेश्वरानन्द के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया है। दोनों दिवगत आत्माओं की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की ।

● कलकत्ता- आर्यसमाज, बड़ाबाजार के प्रांगण में आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के तत्वावधान में सभा के भू0पू0प्रधान श्री रघुवीर प्रसाद गुप्त के निधन पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया। श्री गुप्त जो निर्भीक व कर्मठ कार्यकर्त्ता थे समस्त सदस्यों ने परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवगत आत्मा को सद्गति व पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करे ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि.सं. २२४१/५७ आषाढ कृष्ण-2 रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक १० जून १९९० (घोषणापत्र सं. ७/२२-२-२५)



यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते,
निघर्षणच्छेदन ताप ताडनैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते,
त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा।।

जिस प्रकार सुवर्ण की पहिचान चार प्रकार से होती है उसी प्रकार मनुष्य की पहिचान त्याग, शील, गुण और कर्म से होती है।

पुरुषशिरोमणि संकटग्रस्त होने पर भी अपूर्व उदारभाव को लेकर चमकता है। चन्दन चारों ओर से आग में पड़ने पर भी लोकोत्तर सुगन्ध को ही फैलाता है।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष

अंक - २२

इतिहास के एक पन्ने से -

गूंजती हुई चेतावनी

----- और अफजल खाँ ने बातचीत के लिए शिवा को अपने डेरे पर बुला ही लिया। बड़े प्रेमभरे सन्देश में उसने कहलाया- "मैं निहत्था हूँ, आसपास कोई सैनिक नहीं रहेगा। मेरे डेरे के चारों ओर के सैनिक बिल्कुल निहत्थे शान्ति और अहिंसा के दूत बनकर पहरा दे रहे होंगे, आप आइए- अकेले निहत्थे मेरी तरह- बातचीत की जाय, आखिर समस्याएँ तो सौहार्दपूर्ण वातावरण में ही आपसी बातचीत से सुलझती हैं। आपके स्वागत में पलक पाँवड़े बिछे हुए हैं--- मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

पर वह वीरवर केवल वीर ही नहीं था, बड़ा दूरदर्शी चाणक्य था। मुस्कराहट के बीच छिपे हुए विष को उसने भाँप लिया था-- सन्देश भिजवा दिया- मैं आ रहा हूँ, निहत्था, अकेला, आखिर हम दोनों भाई-भाई हैं, एक ही माँ की सन्तान। मैं भी आपसे गले मिलने के लिए बड़ा आतुर हूँ-----।

एक छोटी सी पहाड़ी-- चारो ओर सन्नाटा है। कुछ सैनिक पहरा देते हुए इधर-उधर टहलते दिखाई देते हैं- प्रकटतया कोई शस्त्र उनके हाथ में दिखाई नहीं पड़ता। शिवा ने पहुँचकर बहुत प्यार से अभिवादन करते हुए पुकारा- अफजल ! मैं आ गया हूँ।

तम्बू के अन्दर से लम्बा चौड़ा विशालकाय अफजल खाँ मुस्कराता हुआ निकला और दैत्याकार अट्टहास के साथ गले मिलने का दृश्य दिखाते हुए अँगरखे के अन्दर से तलवार निकालकर बोला- आज बहुत दिनों में दिखाई पड़ा है शिवा!, याद कर ले परवरदिगार को----- आज तुझे कोई नहीं बचा सकता----- तलवार उठी और इससे पहिले कि शिवा का सर कलम हो---- एक भयंकर चीख निकली------ या ---- , छिपे हुए बघनख ने अंतड़ियाँ निकालकर बाहर रख दी थीं। कटे हुए वृक्ष की तरह अफजल खाँ भूलुण्ठित था------ । वीर शिवा की जय, माँ भवानी की जय के नारों से पहाड़ी गूँज उठी- सैनिक सैनिकों से भिड़ गये, तलवारें खनखना उठीं।

भगवान भुवनभास्कर अस्तांचल की यात्रा की तैयारी कर रहे थे और इधर शस्यश्यामला दूर्वादलयुक्ता पहाड़ी पर केसरिया लहरा रहा था। कह रहा था--

शठे शाठ्यं समाचरेत्

प्रस्तुति : आचार्य इन्द्र

—

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
लखनऊ आषाढ कृष्णा-2 संवत् २०४७ वि.
१० जून १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

लौह आवरण

कश्मीर में राज्यपाल के पद पर श्री जगमोहन की नियुक्ति का कांग्रेसी तथा वामपन्थी विचारधारा के लोग प्रारम्भ से ही विरोध कर रहे थे। श्री जगमोहन द्वारा पदभार सँभालने के तुरन्त बाद राजीव गाँधी के इशारे पर, काश्मीर के तत्कालीन मुख्यमन्त्री डा0 फारूख अब्दुल्ला ने विरोधस्वरूप त्यागपत्र दे दिया था जिसे श्री जगमोहन ने तुरन्त स्वीकार कर लिया था फिर एक कुशल प्रशासक की भाँति कश्मीर प्रशासन का शल्यछेदन करना प्रारम्भ कर दिया।

आज़ादी के चार दशक से अधिक समय तक कश्मीर में कांग्रेस समर्थित व्यक्तियों का ही एक छत्र राज्य रहा। इतनी लम्बी अवधि में लौह आवरण के पीछे क्या-क्या षड्यन्त्र रचे जाते रहे? इसका पता शेष भारत को लगभग नही के बराबर ही था। प्रधानमन्त्री-श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का यह कहना सही है कि पंजाब तथा कश्मीर में आतंकवाद की समस्या कांग्रेसी शासन की देन है। श्री जगमोहन ने त्यागपत्र दे दिया है जो स्वीकार कर लिया गया है। उनका कार्यकाल पाँच माह का रहा। इस काल में लौह आवरण के पीछे वर्षों से चले आ रहे अनेकों षड्यन्त्र प्रशासन की शवपरीक्षा करने पर इस कुशल प्रशासक ने हमारे सामने उजागर किए हैं, जो अनेक तथ्यों के विश्लेषण से प्रत्यक्ष हो जायेगा। भारत विरोधी यह छिपी हुई आग कश्मीर में बहुत दिनों से सुलग रही थी। यह कोई बुद्धिमान व्यक्ति विश्वास नहीं कर सकता कि वहाँ का प्रशासन इससे पूर्णतया अनभिज्ञ रहा। घटनाएं इस बात का संकेत देती हैं कि वहाँ के प्रशासन में पाकिस्तान परस्तों का बोलबाला है तभी तो सैकड़ों सरकारी कर्मचारी पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में चले जाते थे और महीनों प्रशिक्षण लेने के बाद घातक हथियार लेकर घाटी में वापस आ जाते थे और भोले-भाले कश्मीरियों में भारत के खिलाफ बगावत का झण्डा बुलन्द करते थे। ऐसे गद्दार कर्मचारियों की खोज करके उन्हें सर्विस से बर्खास्त करना जगमोहन जैसे कुशल प्रशासक का सू...क्ष परिचायक है।

इसी प्रकार कई भूतपूर्व मन्त्रियों (जो शेख अब्दुल्ला तथा परवर्ती काल में अनेकों विभागों के मन्त्री रहे) के गहरे सम्बन्ध आतंकवादियों से थे- इसका पता लगाना एक दुष्कर प्रशासनिक कार्य है और उन्हें गिरफ्तार करना तो और दुष्कर कार्य। इसी प्रकार गहरी छानबीन द्वारा पता चला कि कश्मीर के हजारों परिवारों से सैकड़ों नवयुवक लापता हैं जो पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त पाकिस्तानी मुल्लाओं की ज़हर से भरी हुई स्पीचों के कैसेट लाखों की संख्या में कश्मीर घाटी में घर-घर मुफ्त बाँटे गये जिनमें घाटी को हिन्दूविहीन कर देने के अनेकों उपक्रम बताए गये हैं। जगमोहन ने एक भेंटवार्ता के दौरान यह स्वीकार किया था कि खोजबीन से यह तथ्य उजागर हुआ है कि घाटी के हर हिन्दू को खत्म कर देने की एक व्यापक योजना पाकिस्तान के सहयोग से काश्मीर के आतंकवादियों ने बनाई है।

लौह आवरण के पीछे घटने वाली इन घटनाओं का विवरण यदा-कदा प्रेस में प्रकाशित हो जाया करता था। इसी को मद्देनज़र रखते हुए पिछले वर्ष काश्मीर की जनसरकार ने "कश्मीर प्रेस विधेयक" लाकर ऐसे समाचारों को प्रेस में जाने पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास किया था परन्तु जनरोष को देखकर डा0 फारूख अब्दुल्ला ने उक्त प्रेस विधेयक वापस ले लिया।

यह एक इत्तफाक की बात है कि भारतीय प्रशासन में एक ऐसा कुशल प्रशासक कश्मीर को मिल गया जिसने निःसन्देह इतने अल्प समय में अपने दृढ़ कर्त्तव्य पालन एवं कठोर रुख से काश्मीर को बहुत हद तक ठीक कर दिया। उसकी भूमिका वही थी जो गत विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री मि0 चर्चिल ने अपनी कुशल सूझबूझ से इंग्लैण्ड को युद्ध की विभीषिका से बचाकर किया था। परन्तु बढ़ते हुए दबाव तथा वामपन्थी विचारधारा की अदूरदर्शी कूटनीति के आगे प्रधानमन्त्री-श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को झुकना पड़ा और अब फिर इस बात का भय है कि काश्मीर की स्थिति कहीं और न बिगड़ती चली जाय। □

वैदिक प्रचार यात्रा

राष्ट्र संस्कृति व युवा शक्ति के उत्थान हेतु उद्गीथ साधना स्थली ओम् वन हिमाचल के संस्थापक आचार्य आर्य नरेश वैदिक वक्ता के द्वारा अप्रैल में हिमाचल, पंजाब, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश में घूमघूम कर वैदिक धर्म का प्रचार किया।

तूफान पीड़ितों की सहायता हेतु अपील

आन्ध्र प्रदेश में आये समुद्री तूफान से समुद्र के निकटवर्ती क्षेत्र में लगभग 510 मौतें हो गईं तथा अपार सम्पत्ति की क्षति पहुँची है।

तूफान पीड़ित जनों की दशा देखकर आर्यसमाज आज भी पीछे नहीं रही है। लाखों आदमी इस समय बेघर हो गये हैं, 13 वर्ष पूर्व भी आर्यसमाज ने "दिवी" तालुका में कैम्प डालकर कई ट्रक माल दीन दुखियों के सहायतार्थ सहायता कार्य चलाया था और भारत की समाजों ने उदार हृदय से वस्तुएँ तथा धनराशि, आर्यप्रतिनिधि-सभा के माध्यम से वितरण किया गया, उसी प्रकार आज भी भारत की सभी समाजें कर्तव्य समझकर वस्तुएँ तथा धनराशि सीधे आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के नाम पर भेज कर यश के भागी बनें।

आजकल देश में अनेक संस्थायें इस दिशा में कार्य करती हैं किन्तु देखा गया है कि धर्मानुसार लक्ष्य किसी का नहीं है, इस लिए प्रत्येक व्यक्तियों को आर्यसमाज सावधान करता है कि इस ओर ध्यान देकर केवल मात्र आर्य-प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 लखनऊ, अथवा मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश सुल्तानपुर बाजार, हैदराबाद (आं0प्र0) को ही बैंक ड्राफ्ट व चेक तथा वस्तुएँ भेजी जानी चाहिए। □

प्रवेश परीक्षा

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश हेतु 21 जून 1990 को प्रवेश परीक्षा का आयोजन हो रहा है।

यह परीक्षा 9 बजे से 12 1/2 बजे तक लिखित तथा 2 बजे से 4 1/2 बजे तक मौखिक इन दो चरणों में पूर्ण होगी।

इस परीक्षा में पंचम कक्षा उत्तीर्ण 10 से 11 वर्षीय प्रतिभाशाली छात्र ही भाग ले सकेंगे। जिसमें 50% प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण मेधावी छात्र ही वरीयता क्रम से गुरुकुल में प्रवेश पा सकेंगे।

आचार्य,
गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोलाझाल मेरठ
उ0प्र0-250501

सूचना

(1) आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर 3 जून से 9 जून तक।
(2) आर्यवीर दल सम्मेलन आर्यसमाज कोपागंज (मऊ) में 10,11 जून।
(3) 12 जून को आर्यवीर दल द्वारा बोझी बाजार (मऊ) में जन-जागरण।
(4) 24 जून से 30 जून तक शिक्षक शिविर (आर्यवीर दल) आजमगढ़ में।

यह समय अन्तर्निरीक्षण का है दोष-दर्शन का नहीं

लेखक-पद्मश्री क्षेमचन्द 'सुमन'
दिलशाद कालोनी दिल्ली ९५

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी द्वारा पंजाब सभा के मुख पत्र साप्ताहिक आर्य मर्यादा में प्रकाशित उनका सार्वदेशिक सभा की परीक्षा की घड़ी शीर्षक जो लेख 24 सितम्बर 1999 के अंक में प्रकाशित हुआ है उसमें उन्होंने सार्वदेशिक सभा के उन निर्णयों के प्रति अपनी असहमति प्रकट की है जो गोहत्याबन्दी शराबबन्दी और अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को लाने के सम्बन्ध में किए गए थे। अपने इसी लेख में उन्होंने यह भी संकेत किया है कि देश के सामने इन समस्याओं के अतिरिक्त बहुत से अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनकी ओर सार्वदेशिक सभा को ध्यान देना चाहिये। उनका यह विचार है कि सार्वदेशिक सभा निर्णय तो कर लेती है किन्तु उसका कार्यान्वयन समुचित रीति से नहीं हो पाता। उन्होंने अपने उक्त लेख में यह पीड़ा भी व्यक्त की है कि हम हिन्दी को अंग्रेजी के स्थान पर लागू करना चाहते हैं परन्तु आज आर्य समाज के ही अपनी संस्थाओं में अंग्रेजी को अधिक महत्व दिया जा रहा है। इसने छुआ-छूत समाप्त करने के लिए अपनी ओर से पूरा जोर लगा दिया था, परन्तु फिर भी आज हरिजन अपने को हिन्दू स्वीकार नहीं करते। जहां तक हमारी सरकार का सम्बन्ध है वह आर्य समाज को कोई महत्व नहीं देती।

इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि श्री वीरेन्द्र जी जरा ठण्डे दिल से सोचें और आर्य समाज के अतीतकालीन इतिहास पर दृष्टि डालें तो उन्हें यह निःसंकोच स्वीकार करना पड़ेगा कि आर्य समाज ने केवल अपने बल बूते पर राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए अनेक लोकोपकारी योजनाएं बनाई और उनका क्रियान्वयन भी किया था। उसने कभी भी शासन की ओर नहीं देखा बल्कि उसकी आलोचना ही की। शासन की नीति तो तुष्टीकरण की ही होती है। आर्य समाज सदैव मार्ग दर्शक रहा है किसी भी शासन का अनुचर नहीं। ऐसी स्थिति में वह सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से यह आशा कैसे करते हैं कि वे शासन के मुखापेक्षी हैं उन्होंने तो स्वतः ही अपना मार्ग बनाना है। और मैं समझता हूं कि इस दिशा में सार्वदेशिक सभा ने जब जब भी समय आया तब तब ही शासकों और समाज दोनों को इस सम्बन्ध में चेतावनी दी है।

बात यहां तक ही नहीं है। श्री वीरेन्द्र जी ने वर्ष 22 अंक 4-5 और 6 के आर्य मर्यादा में प्रकाशित अपने इस घर को आग लग गई घर के चिराग से शीर्षक लम्बे धारावाहिक लेख में अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनंद बोध सरस्वती से त्यागपत्र देने की मांग करते हुए यह विचार भी प्रकट किया है कि हमारा वैदिक यतिमण्डल सार्वदेशिक सभा के कार्यभार को क्यों नहीं सम्भाल लेता है? उन्होंने लिखा है उनकी स्थिति उस व्यक्ति की सी है जिसकी आंखों के सामने उसका घर जल रहा हो और वह बैठा तमाशा देख रहा हो। क्या हमारे सन्यासी देख नहीं रहे हैं कि आर्य समाज की क्या स्थिति हो रही है? क्या इसमें उनका कोई कर्तव्य नहीं है? मैं जानता हूं कि यतिमण्डल के अध्यक्ष श्रद्धेय पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अनुभव इस विषय में बहुत कटु है, जब उनके अपने ही शिष्य ने हाथ में त्याग पत्र लेकर बाद में उसकी अवहेलना कर दी तो अब सम्भवत स्वामी जी समझते हैं कि वह किसी और से क्या कहें।

इसलिये मैं वैदिक यतिमण्डल के अध्यक्ष व दूसरे सन्यासी महात्माओं से नम्र निवेदन करना चाहता हूं कि अभी भी समय है कि वह आर्य समाज को बचावें।

मैं आर्य समाज का एक अकिंचन सा सेवक हूं मेरे जीवन का अधिकांश समय आर्यसमाज की गतिविधियों को जानने और समझने और उनसे प्रभावित होने में ही व्यतीत हुआ है। इतने पर भी मैं किसी समाज का सक्रिय सदस्य नहीं हूं न मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की राजनीति से कोई लेना देना है मैं तो देश और समाज के हित में आर्य समाज के अस्तित्व और उसके द्वारा समय समय पर चलाए जाने वाले आंदोलनों का नितान्त अनिवार्य और आवश्यक मानता हूं। मेरी यह भी मान्यता है कि आर्यसमाज ही देश में ऐसी संस्था है जिसकी क्रान्तिकारी विचारधारा और उसके द्वारा प्रसारित विभिन्न कार्यकलापों के कारण ही अतीत काल में देश में जागृति हुई और आज भी इसका संगठन देश की किसी भी सांस्कृतिक संस्था के मुकाबले इक्कीस ही ठहरता है उन्नीस नहीं। इतिहास इसका साक्षी है जब जब आर्य समाज के मंच से देश को विभिन्न क्रान्तियों में योग देने की पुकार हुई तब तब आर्य समाज पीछे नहीं रहा।

श्री वीरेन्द्र जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अध्यक्ष और उनके द्वारा किये जा रहे विभिन्न लोकोपकारी कार्यों में क्या कमी अनुभव किया जिसके कारण उन्हें यह सब लिखने को विवश होना पड़ा। मैं आर्य समाज के विभिन्न वैचारिक आंदोलनों को दूर से बड़ी तटस्थ दृष्टि से देखता रहा हूं और मैंने यह अनुभव किया है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कभी भी किसी भी समय कोई ऐसा कार्य नहीं किया जिस पर अंगुली उठाई जा सके। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पिछले 3-4 वर्षों के विवरण मेरे इस कथन के ज्वलन्त साक्षी हैं। यदि वीरेन्द्र जी भी अपने धारावाहिक लेख को लिखने से पूर्व इन विवरणों को गम्भीरता से पारायण कर लेते तो उन्हें विदित हो जाता कि सार्वदेशिक सभा क्या क्या कार्य कर रही है। जहां तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के त्यागपत्र का प्रश्न है उस सम्बन्ध में पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेश पर उन्होंने तत्काल त्यागपत्र दिया था। किन्तु इस त्यागपत्र के उपरान्त स्वामी सर्वानन्द जी ने अपने 23-3 88 के पत्र में स्वामी आनन्दबोध जी को यह आदेश दिया था कि आर्य समाज के हित का ध्यान रखते हुए आप अपना कार्य पूर्ववत करते रहें। स्वामी जी का उक्त पत्र सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित हुआ था, श्री वीरेन्द्र जी ने भी उसे अवश्य देखा होगा।

जहां तक सार्वदेशिक सभा के कार्यों का प्रश्न है उनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण दे रहा हूं इससे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और उनके सहयोगी सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ताओं की कर्मठता और कार्य कुशलता का सम्यक परिचय मिल सके

1-धर्मरक्षा महाभियान एक महान उपलब्धि है, आर्य समाज के इस महाभियान ने देश में नई विचारधारा को प्रोत्साहन दिया और अनेक मौलवी और पादरी वैदिक धर्म में प्रविष्ट हुए।

2-देश में इस्लामीकरण की लहर के रोकने के लिए मीनाक्षीपुरम का सम्मेलन दक्षिण भारत में आर्य समाज के मार्ग का मुख्य द्वार ही नहीं बना अपितु इस सम्मेलन ने पूरे भारत में हरिजनों को अपने अधिकार का अहसास कराया

3-देश में ईसाईकरण की लहर को रोकने के लिए आर्य समाज द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में वनवासी सम्मेलनों के जो लगातार आयोजन हो रहे हैं वह सार्वदेशिक सभा और उसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कार्यों की महत्वपूर्ण देन है इन सम्मेलनों द्वारा कई हजार ईसाई शुद्ध हुए हैं।

4-कुछ वर्ष पूर्व पोपपाल की भारत यात्रा में एक लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाने की योजना को विफल ही नहीं अपितु स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कालाहाण्डी में उसी दिन 1,00 ईसाइयों को शुद्ध करके पोपपाल को उत्तर दे दिया।

5-राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के प्रस्ताव पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी ने राष्ट्रपति भवन में पांच गज जमीन पर मस्जिद बनाने की अनुमति दे दी थी उससे भी आर्य नेता रामगोपाल सालवाले ने रुकवाया था।

शेष पृष्ठ ८ पर

गतांक से आगे

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियाँ

• श्री वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद

धर्मनिरपेक्षताः-

भारत के राजनीतिक नेताओं का कहना है कि हम धर्मनिरपेक्ष है, भारत धर्मनिरपेक्ष है, यह नितान्त मिथ्या कथन है। न तो भारत के नेता ही धर्मनिरपेक्ष हैं और न इन लोगों की परिभाषानुसार भारत ही धर्मनिरपेक्ष है। भारत तो वर्तमान स्थिति में नितान्त "मुस्लिम राष्ट्र" है या कम से कम वह भूभाग तो अवश्यमेव है, जिसे भारत के यह तथाकथित धर्म-निरपेक्ष नेता अपनी धर्मनिरपेक्षता की चादर में लिपटकर अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिये यहां रह रहे मुसलमानों के साथ मिलकर दारूल इस्लाम में परिवर्तित कर देने के लिये प्रयत्नशील है। कारण स्पष्ट है कि हिन्दुओं को मूर्ख बनाने के लिये यह लोग संसार में अपनी उदारता का ढोल पीटने के लिये स्वयं को और भारत को धर्मनिरपेक्ष भले ही कहते हैं किन्तु पक्ष प्रत्येक मूल्य पर मुसलमानों का ही लेते हैं।

गांधी जी तो भारत में बसे मुसलमानों को ही नहीं अपितु पाकिस्तान को प्रसन्न करने के लिये भी भारत की अस्मिता को न केवल स्वयं ठुकराते रहे अपितु अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक पाकिस्तान के चरणों में डालते रहे और इसका प्रमाण है अरबों रुपया भारत का बटवारे के समय का पाकिस्तान पर शेष रहते भी आमरण अनशन करके पचपन करोड़ राशि का ड्राफ्ट भारत से पाकिस्तान को और दिला दिया। इन्हीं महात्मा जी की अदूरदर्शिता के परिणामस्वरूप पाकिस्तान में लाखों हिन्दुओं की हत्या हुई। पता नहीं कितने शिशुओं और महिलाओं को बलात मुसलमान बना लिया गया और कितनी महिलाओं के सतीत्व भंग हुए और अकेले पाकिस्तान के रावलपिण्डी नगर की सड़कों पर ही तेरह सहस्त्र हिन्दू महिलाओं को निर्वस्त्र करके उनका प्रदर्शन निकाला गया, परन्तु धर्मनिरपेक्षता के इन पुजारियों को लेश भी लज्जा न आयी। न महात्मा जी आमरण अनशन करने रावलपिण्डी गये और न एक दिन की भी भूख-हड़ताल करके उन्होंने अपनी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर पश्चाताप के आंसू बहाये

फिर उसके बाद---

पहले तो गांधी जी के मुख्य और परमशिष्य श्री जवाहरलाल नेहरू कश्मीर के भारत में विलय को तैयार नहीं थे तथा विलय की कश्मीर के तात्कालिक महाराजा हरिसिंह द्वारा प्रेषित दस्तावेज को लेकर आये कश्मीर राज्य के तात्कालिक प्रधानमन्त्री {दीवान} श्री मेहरचन्द महाजन को अपमानित कर अपने निवास से बाहर निकाल दिया था जब श्री महाजन यह कह चल दिये कि "कश्मीर का विलय भारत में नहीं तो पाकिस्तान में होगा, अब मेरा हेलीकाप्टर दिल्ली से श्रीनगर नहीं, करांची {पाकिस्तान} की तात्कालिक राजधानी} जायेगा। मैं श्रीनगर पर बम्बार्डमेण्ट होकर उसे बरबाद नहीं होने दूँगा। तब शेख अब्दुल्ला के

कहने पर--- जो उस समय वहां उपस्थित था-- नेहरू जी विलय को तैयार हुए। अब्दुल्ला ने ही दौड़कर महाजन को रोका था। और फिर उसके बाद---

कश्मीर का विलय भारत में किया तो किन्तु धारा 370 जोड़कर कश्मीर की विशेष स्थिति बनाकर शेख अब्दुल्ला को मुख्यमन्त्री नहीं, प्रधानमंत्री बनाकर उसका भारत से पृथक ध्वज, पृथक विधान और पृथक प्रधान {सद्र-ए-रियासत बनाकर तथा महाराजा हरिसिंह को उनकी राष्ट्रभक्ति भारत में कश्मीर के विलय की निष्ठा के दण्ड स्वरूप उनके कश्मीर जाने पर प्रतिबंध लगाकर। भारत की सेनाओं ने पाकिस्तानी सेनाओं को जब मारकर भगा दिया और अन्तिम मोर्चा गिलगित का क्षेत्र शेष था, तब कश्मीर का प्रश्न संयुक्त राष्ट्र परिषद में ले जाकर तुरन्त युद्धबन्दी के आदेश कर कश्मीर के तिहाई भाग को पाकिस्तान के हाथों सौंप दिया, कश्मीर का विलय भारत में हो चुका था, फिर उसे संयुक्त राष्ट्र परिषद में ले जाने की क्या आवश्यकता थी? यदि युद्धबन्दी की घोषणा शीघ्रता में न की गयी होती तो कश्मीर के जिस भाग पर अब तक पाकिस्तान का अधिकार है, वह भी तभी पाकिस्तानियों से ठीक करा लिया जाता।

इस समय कश्मीर में जो कुछ हो रहा है, वह न होता यदि कश्मीर का पृथक स्थिति बनाये रखने के लिये धारा-370 संविधान में न जोड़ दी गयी होती। उसी धारा-370 के परिणाम-स्वरूप बने नागालैण्ड और मिजोरम पंजाब समस्या भी इसी धारा की देन है; भारत में कभी झारखण्ड की मांग उठती है तो कहीं गोरखालैण्ड की। कहीं बोडो आन्दोलन खड़ा हो रहा है तो कहीं उत्तराखण्ड ------ यह सब इसी धारा के अस्तित्व का परिणाम है, सच तो यह है कि यह धारा पृथक्करण की जननी है किन्तु भारत के एक के बाद एक आने वाले सभी राजनीतिक नेता इसे अवश्य बनाये रखना चाहते हैं। क्या नहीं इससे राष्ट्र की किस समस्या का हल करना चाहते हैं? इससे तो भारतीय शासनारूढ़ नेताओं की मूर्खता ही प्रमाणित होती है। यह नेता अपने पास तो इतनी बुद्धि रखते नहीं किन्तु दुराग्रही स्वभाव के कारण अन्य किसी की मानने को तैयार भी नहीं होते, तथ्य यह है कि यह लोग राजनीतिक तथा प्रशासनिक रूप से तो नितान्त अयोग्य है, साथ ही अपने अहंकारी स्वभाव के कारण दुराग्रह-पूर्वक इस धारा को संविधान से नहीं हटा रहे। भारत के इन नेताओं को भारत की लेश भी चिन्ता नहीं। यह लोग घड़ियाली आँसू बहाते हैं और अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की नमाज के दो सजदे लोकैषणा तथा भोगविलास पूरे करने में लगे हैं।

पाठकगण ध्यान दें कि भारत में कश्मीर का निष्ठापूर्वक विलय करने वाले महाराजा हरिसिंह को तो कश्मीर से बाहर बम्बई में ही अपना जीवन बिताने और समाप्त करने को बाध्य कर दिया किन्तु हैदराबाद के तात्कालिक निरंकुश शासक उसमानअली की जिसने खुलकर देशद्रोह का अवलम्बन किया और शस्त्र-सज्जा के साथ अपने रजाकार सैनिकों को भारतीय सेना से युद्ध के लिये मैदान में उतारा, जिसने तीन बार जमकर भारतीय सैन्य से लड़ाई

लड़ी, उसी को हैदराबाद का राजप्रमुख बनाया। जिसे आजीवन जेल के सींखचों में बन्द रखा जाना चाहिए था उसे राजप्रमुख के पद पर शोभायमान कर पुरस्कृत किया और जिस महाराजा हरिसिंह को भारत का सम्मानित राष्ट्रपति पद देना चाहिये था, उसे उसकी जन्मभूमि कश्मीर के दर्शनों तक के लिये तरसते हुए तड़प-तड़प कर बम्बई में प्राण छोड़ने को बाध्य कर दिया।

चाहे जवाहरलाल नेहरू हों या उनकी पुत्री इन्दिरा गाँधी अथवा अन्य कोई --- हैं सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे। न्याय नैतिकता को दूर फेंककर और धर्मनिरपेक्षता की शपथ ले-लेकर अपनी मुस्लिम तुष्टिकरण की घोर साम्प्रदायिक तथा राष्ट्रघातिनी पगडण्डी पर ही यह सब चलने हैं। मुस्लिम लीग से बार-बार समझौते करना और प्रत्येक पग पर राष्ट्रद्रोही मुसलमानों को महत्व प्रदान कर पूरे मुसलमान समुदाय को राष्ट्रद्रोह के लिये प्रोत्साहन करना इन नेताओं का मुख्य कर्तव्य बना हुआ है। नेहरू जी के दौहित्र और इन्द्रा जी के पुत्र श्री राजीव जो प्रधानमन्त्री बने तो विदेशों में जाकर "जिस दिन भारत के मुसलमान बगावत पर उतारू होकर सड़कों पर निकल आयेंगे, भारत की सेनायें उनका मुकाबला नहीं कर सकतीं।' शहाबुद्दीन का विदेशों में दिया गया यह बयान माँ के दूध की भाँति गटागट पी गये, यदि कोई राष्ट्रभक्त वीर पुरुष उस समय प्रधानमंत्री होता तो सैयद शहाबुद्दीन का त्यागपत्र स्वीकार करा उसे तुरन्त स्वदेश बुलाकर जेल के सींखचों में बन्द करता और उस पर देशद्रोह का अभियोग चलाकर उसे जीवन भर के लिए कारागार वासी बना देता।

दूसरा राष्ट्रद्रोही मौलाना ओबदुल्ला खाँ आजिमी---जिसने कहा था कि-"इस्लाम किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं। हाईकोर्ट तो दूर की बात है, सुप्रीम कोर्ट भी अगर 'मुस्लिम पर्सनल लॉ" को चैलेन्ज करेगी तो हम सुप्रीम कोर्ट का भी हर फैसला जूते की नोक पर रखेंगे।" भारत के तात्कालिक प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने अपनी साम्प्रदायिक और राष्ट्रघातिनी मनोवृत्ति का परिचय उस दिन दिया, जब भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपने पूर्ण बहुमत के बल पर संसद में निश्चय करा के राष्ट्र के स्वाभिमान को एक राष्ट्रद्रोही के जूते की नोक पर रखकर उड़वा दिया। जबकि ओबेदुल्ला खाँ को उसके इस राष्ट्रीय अपमान से भरे और राष्ट्रद्रोह पूर्ण बयान पर जेल की हवा खिलानी चाहिये थी। ◻

महिला मण्डल

नारी ऋषिका और प्रेरिका

श्रीमती दर्शनदेवी भारद्वाज
आजमगढ़

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।। यजुर्वेद 34/40

पदार्थः- हे पढ़ाने और उपदेश करने वाली पण्डिता स्त्रियों । तुम (उषसः) प्रभात वेला सी शोभती हुई (अश्वावतीः) जिनके समीप बड़े-बड़े पदार्थ विद्यमान (गोमतीः) व किरणें विद्यमान (वीरवती) व वीर विद्यमान (भद्रा) जो कल्याण करने वाली (प्रपीता) उत्तमता से बढ़ाने और सब ओर से (घृतम) जल को (दुहानाः) पूरा करती हुई आप (न) हमारे (सदम) स्थान को (उच्छन्तु) से वो वह (यूयम) तुम (स्वस्तिभिः) सुखों से (नः) हम लोगों की (सदा) सर्वदेव (पात) रक्षा कीजिए।

भावार्थः- जैसे प्रभात बेला सब निद्रा में ठहरे हुए,मरे हुए जैसों को चैतन्य करा कर्मों में युक्त कराती है, वैसे ही उपदेश करने वाली विदुषी स्त्रियाँ सब अविद्या निद्रास्थ स्त्रियों को पढ़ाने और उपदेश करने से अच्छे काम में प्रवृत्त करायें।

कितना सुन्दर वेद मन्त्र है। मन्त्र में स्पष्ट आदेश है कि विदुषी स्त्रियाँ उपदेश करें। स्त्रियाँ उपदेश कब करेंगी, जब विदुषी होंगी विदुषी कब होंगी जब निरन्तर स्वाध्याय,चिन्तन मनन करती रहेंगी। बाल्यकाल से ही बालिकाओं को शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबन्ध होना चाहिए तभी तो आगे चलकर ये बालिकाएँ हा विदुषी नारी बन कर, वेद का प्रचार करके अविद्या अन्धकार को दूर करने वाली बनेंगी। इस पुण्य भारत भूमि पर अनेक ऋषि-ऋषिकायें हुई हैं। जो ब्रह्मचर्य से रहती हुई वेदों का स्वाध्याय प्रकृति और आत्मा पर अनुसन्धान करती थीं। अध्यात्म और भौतिक, दोनों पदार्थों का समन्वय कर जगत का व आत्मा का उत्थान करने वाली हैं, उन्हीं को ऋषिका के पद से विभूषित किया जाता है। वे सत्य तथा ब्रह्मचर्य से तपी हुई आत्मायें होती हैं, इसलिये उनकी वाणी में रूढ़्वादिता नहीं होती वरन् उनके विचार सार्वभौम होते हैं। प्राकृतिक आवेशों (काम,क्रोध,लोभ,मोह,अहंकार) में फँसे हुए मनुष्यों के अनुकूल न होने पर भी उनके विचार विश्व कल्याण के लिए होते हैं और श्रेष्ठ जनों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले होते हैं। महान आत्मायें तभी जन्म लेती हैं या इस भू-भाग पर अवतरित होती हैं जब माता-पिता महान सात्विक हों। इस वसुधा पर ऋषि ही नहीं अनेकों ऋषिकायें भी हुई हैं। वैदिक काल में पुत्र-पुत्री में भेद नहीं किया जाता था। दोनों की ही शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाता था। पुत्रियाँ भी वेदों का स्वाध्याय,चिन्तन,मनन व अनुसन्धान करती थीं। बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक नारियाँ हुई हैं इस भारत भूमि पर। हिरण्यकश्यप की बहिन होलिका ने एक ऐसे वस्त्र का निर्माण किया था जो अग्नि से सुरक्षा प्रदान करता था परन्तु साथ ही उसमें एक गुण यह भी था कि यदि किसी दूसरे व्यक्ति को गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश किया जायेगा तो सुरक्षा के ये परमाणु दूसरे व्यक्ति में चले जायेंगे, इसी कारण होलिका जल गई और प्रहलाद बच गया था। अभी कुछ दिन पहले की बात है भाई-बहन उच्च कक्षा में पढ़ते थे। पिता ने इंजीनियर बनने के लिए पुत्र को कम्पटीशन में बैठाया तो पुत्री ने भी कम्पटीशन में बैठने का आग्रह किया। पहले तो पिता ने बहुत मना किया फिर सोचा यह लड़की है, क्या कम्पटीशन में पास होगी। बैठ जाने दिया। दोनों भाई-बहिन चुन लिये गये। पिता ने सोचा लड़की तो पराये घर चली जायेगी और लड़के को ही इंजीनियरिंग पढ़ने को भेजा। लाचार लड़की को विवश होकर एम0एस0सी0 में पढ़ना पड़ा। यह है हमारे यहां के बुद्धिजीवी लोगों का नजरिया। पर वेद में नारियों कि महिमा पुरुषों से कम नहीं, अधिक ही है। "स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ" वह राष्ट्र यज्ञ की ब्रह्मा है। "पुरन्धिर्योषा आजायताम" वैदिक सूक्तियों में यही सत्य तो प्रकट हो रहा है। पावन वेदों में जीवन रस का अक्षय स्रोत नारी को कहा है। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान स्त्री के बिना चाहे वह पत्नी रूप में हो, माँ के रूप में हो या बहिन के रूप में हो, सम्पूर्ण नहीं होते हैं। श्रीराम चन्द्र का अश्वमेध यज्ञ भी सीता की स्वर्णमयी प्रतिमा के बनवाने से ही पूर्ण हो सका था। वैदिक विवाह संस्कार गृह्य सूत्र 14/2 में नारी महिमा की यह छवि कितनी गरिमा मयी है-

यस्यां भूतं समभवत् यस्यां विश्वमिदं जगत्।
तामद्य गाथां गास्यामि स्त्रीणां मुक्तमयशः ।।

यह परम सत्य है कि भूत और भविष्यत के जन्म का कारण स्त्री है। उसके उत्तम यश सकी गाथा वैदिक वांगमय में हो यह स्वाभाविक ही है। उसकी कुक्षि से जहाँ अनेकों ऋषि-मुनियों ने जन्म लिया है वहीं से अनेकों ऋषिकायें भी उत्पन्न हुई हैं। मण्डन मिश्र की पत्नी भारती को कौन नहीं जानता है? अर्थात सभी लोग जानते हैं कि पहले उन्होंने शास्त्रार्थ की मध्यस्थता की और बाद में पति के हार जाने पर शंकराचार्य से शास्त्रार्थ किया था। अपाला, विश्ववारा ब्रह्मवादिनी वाक सूर्या, रोमशा,उशिज,घोषा ब्रह्मवादिनी गार्गी आदि, कुछ उन विदुषी ऋषिकाओं के नाम हैं, जिन्होंने नारी जाति को उच्चता के शिखर तक पहुँचाया है। भारत का वह स्वर्णिम काल था जिस काल में इतनी विदुषी नारियाँ होती थीं। ब्रह्म वादिनी गार्गी ने याज्ञवल्क्य जैसे धुरन्धर ऋषि से शास्त्रार्थ किया था। काल चक्र के गर्त में उनका साहित्य लोप हो गया है। गार्गी माता बड़ी विदुषी थीं व आजीवन ब्रह्म की आभा में रमण करती रहीं।

माँ अपाला अत्रि महर्षि की पुत्री थीं। शरीर के श्वेत दागों से खिन्न हो इनके पति कृशाश्व ने इन्हें त्याग दिया था। तपस्या के द्वारा इन्होंने अपने कुष्ट रोग पर विजय प्राप्त करके पति को प्रसन्न किया था। बाद में पति ने इनसे क्षमा माग ली। अपाला ने भी सारी पुरानी बातें भुला दीं और प्रसन्न होकर पति के साथ रहने लगी। ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के 91वें सूक्त की 1 से 7 तक की ऋचाएँ इन्हीं की संकलित की हुई हैं। अपाला की ही भाँति अत्रि के कुल में उत्पन्न विश्ववारा ने ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल के द्वितीय अनुवाक के अट्ठाइसवें सूत्र की रचना कर ऋषि पद प्राप्त किया था। वाक अम्भृण ऋषि की कन्या थी। ब्रह्मज्ञानिनी वाक ने ऋग्वेद के दशम-मण्डल के 125 वें सूक्त के आठ मन्त्रों की साधना की, "वे देवी सूक्त" नाम से प्रसिद्ध हैं। ऋग्वेद की दशम मण्डल की 85वें सूक्त की 47 ऋचाओं की साधना सूर्या ने की जो विवाह संबंधी हैं:-

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वाम्भव।
ननन्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।

ब्रह्म वादिनी रोमशा बृहस्पति ऋषि की पुत्री थीं और भावभव्य की धर्मपत्नी ऋग्वेद संहिता के प्रथम मण्डल के 126 वें सूक्त की सात ऋचाओं का संकलन किया। जो बातें स्त्रियों की बुद्धि बढ़ाने में सहायक हों उन्हीं का प्रचार व प्रसार करती थीं। इसीलिये यह रोमशा नाम से प्रसिद्ध हुईं। ब्रह्मवादिनी ममता दीर्घतमा ऋषि की माता थीं। यह अति विदुषी व ब्रह्म ज्ञान सम्पन्न थीं। अग्नि के उद्देश्य से किया हुआ स्तुति पाठ ऋग्वेद संहिता के प्रथम मण्डल के दशम सूत्र की ऋचा में मिलता है जिसका अर्थ है :-

"हे दीप्तमान! असंख्य चोटियों वाले और देवताओं को बुलाने वाले अग्नि! दूसरे अग्नि की सहायता से प्रकाशित होकर आप इस मानव स्तोत्र को सुनिए। श्रोता गण ममता के सदृश ही अग्नि के उद्देश्य से इस मनोहर स्तोत्र को पवित्र घृत की भाँति अर्पण करते हैं।

ममता के पुत्र दीर्घतमा ऋषि की पत्नी, प्रसिद्ध महर्षि कक्षीवान की माँ का नाम उशिज था। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 116 से 121 तक मन्त्र इन्हीं के द्वारा संकलित हैं। ब्रह्मवादिनी घोषा इन्हीं की पौत्री थीं। ब्रह्मचारिणी अवस्था में ही ब्रह्मचारिणी कन्या के समस्त कर्तव्यों का उल्लेख दो सूक्तों में किया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के फलस्वरूप वर्तमान में बालिकाओं की शिक्षा का पूर्ण रूपेण प्रबन्ध है। आज बालिकाएँ बड़ी-बड़ी डाक्टर, इंजीनियर, विमान चालिका अध्यापिका अर्थात जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करती हुई मिल जायेंगी। अनेकों देवियाँ देश तथा विदेश में शासनाध्यक्ष के उच्च पद तक पहुँची हैं। परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है महिलाओं को वैदिक आचरण से शुद्ध सात्विक ऋषित्व का पद प्राप्त करके घर, परिवार व संसार में शान्ति का साम्राज्य स्थापित करना चाहिए। आज भी नारियाँ यदि त्याग, तप, कर्तव्यनिष्ठ और वेदों का स्वाध्याय करने वाली बन जायें तो पुनः अपना पुराना गौरव प्राप्त कर सकती हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि नारियों में सद्बुद्धि उत्पन्न हो, जिससे विश्व का कल्याण हो। □

राष्ट्र भाषा

•श्री विश्वम्भर देव शास्त्री
जनकपुरी, देवबन्द

विश्व में कोई भी राष्ट्र ऐसा नहीं जिसकी अपनी राष्ट्रभाषा न हो। केवल भारत ही ऐसा देश है जिसके संविधान में राष्ट्र-भाषा का उल्लेख तो है, किन्तु प्रयोग में नहीं। गाँधी जी ने कहा था। राष्ट्र-भाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। यही दशा है हमारी। टर्की जब स्वतन्त्र हुआ तब वहाँ भी टर्की को राष्ट्र-भाषा बनाने में विचार करते -करते उसकी सीमा 10,8,5 वर्ष तक अवधि कही गई। बादशाह ने सबकी सुनी और अपने हाथ में कलम ली और एक पंक्ति लिख दी अभी से सारे कार्य टर्की भाषा में होंगे। बस उसी समय से सारा काम होने लगा टर्की में। सब विवाद समाप्त। यह आत्म विश्वास ही तो था। जहां आत्म विश्वास में कमी रहती है वहाँ विकृत दशा बन जाती है। इसी कारण भारत की राष्ट्रभाषा का अभिषेक 15 वर्ष पुनः 10 वर्ष और उसके पश्चात तो गाँधी जी की जय बोलने वालों ने इस प्रश्न को ऐसा उड़ा दिया जैसे गधे के सिर से सींग।

इसका मुख्य कारण अंग्रेजी की दासता जिसने कर्णधारों की मानसिकता को विकसित नहीं होने दिया। अब तक शोभा यात्रा तो हिन्दी की किन्तु पालकी में बैठी अंग्रेजी। जिन देशों में अंग्रेजी का प्रभुत्व नहीं था वे अपनी राष्ट्रभाषा में सब काम कर रहे हैं। भारत की सभी प्रान्तीय भाषाओं की प्रगति में बाधक बनी है अंग्रेजी। प्रथम प्रधान मन्त्री की इस भावना ने कि जब तक एक भी राज्य हिन्दी न चाहे- उस पर हिन्दी न थोपी जाय। होना चाहिये था कि प्रान्तीय भाषाओं के साथ हिन्दी की उन्नति होनी और अंग्रेजी थोपी न जाती। इस थोपी भावना ने राष्ट्रभाषा के गौरव को गिरा दिया इसकी उपेक्षा से राष्ट्र वस्तुतः गूँगा है।

इससे प्रतीत होता है कि केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता ही मिली है, मानसिक दासता बनी हुई है। 43 वर्षों तक तुष्टीकरण और वोट की दूषित वातचक्र में भ्रमित मुख्यमन्त्रियों के साहस ही न हो पाया कि हिन्दी प्रान्तों में तो हिन्दी का उचित स्थान दे दें।

एक साहसी, निर्भीक, राष्ट्रप्रेमी जननायक, उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह ने साधुवाद का काम किया जो अपने राज्य में सभी राजकार्य हिन्दी में करने की दृढ़ता से घोषणा की है। कुछ ने इसका विरोध भी किया। भारतीयों ! सोचो तो सही जिस भाषा के माध्यम से स्वतन्त्रता आन्दोलन जीता गया स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् वही उपेक्षित कर दी यह साधारण जन का दुर्भाग्य रहा ।

यह परिवर्तन का युग है। भाषा का परिवर्तन भी जनता के साथ ही होता रहता है। भारत में आर्य राज काल में संस्कृत राजभाषा और जनभाषा बनी रही। आक्रमणकारी आये और नालन्दा विश्वविद्यालय का बड़ा पुस्तकालय भी आग लगाकर भस्म कर दिया। मुगलशासकों ने फारसी को राजभाषा बनाया, अंग्रेजों ने अंग्रेजी को राजभाषा बनाया परन्त दोनों भाषायें जनभाषा न बन सकी। नौकरी चाहने वाले धनी वर्ग इनको अपनाते थे। अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों का एक पृथक ही समुदाय बनने लगा। अंग्रेजों की विदाई के पश्चात् जनभाषा ही बहुजन हिताय हो सकती है। प्रायः सभी प्रान्तों के लोग हिन्दी को समझ लेते हैं। अपनी प्रान्तीय भाषाओं और हिन्दी का आदान-प्रदान बड़ी सरलता से हो सकता है। यह एक उन्माद है कि हिन्दी नहीं जानते। प्रायः राष्ट्रभाषा हिन्दी का विरोध वे ही लोग करते हैं जिनको इस राष्ट्र से प्रेम नहीं । हम जरा सोचें तो जब भारतीयों ने विदेशी भाषाओं को सीख कर राज्य कार्य किये तो अपनी भाषा में काम करने में गौरव अनुभव होना चाहिये।

हिन्दी राष्ट्रभाषा और जनभाषा भी है। स्वतन्त्रता के लिये कितनों ने बलिदान दिये यदि ऐसा न होता तो अंग्रेज कभी जाने वाले न थे। भाषा राष्ट्र का अंग है इसके लिये भावों और दासत्व का त्याग आवश्यकीय है। अपने को भारतवासी बनाने के लिये राष्ट्र-भाषा सीखनी होगी इसका विरोध राष्ट्र विरोध ही समझा जायेगा। अन्य मुख्यमन्त्रियों ने भी बहुजन हिताय राज्यकार्य हिन्दी में करने की प्रतिज्ञा की है। स्वतन्त्रता होने पर भी अंग्रेजी के मोह ने भारतीय भावी नागरिकों को राष्ट्रीयधारा से ही भिन्न कर दिया। नगर तो है ही गाँव में आज अंग्रेजी स्कूलों की इतनी बाढ़ आ गई है कि अन्य स्कूल खाली होते जा रहे हैं। ये कमाई की अच्छी दुकानें हैं। इनमें बच्चा न मातृभाषा पढ़ पाता है न अंग्रेजी ही।

जो भी गद्दी पर बैठा बस यही घोषणा सुनते आ रहे हैं गरीबी मिटाओ परन्तु राजकार्यों में गरीबों की भाषा को स्थान न दो- वे कैसे नौकरियों में जा सकते हैं, नौकरी पैसे वाले की ही है। शिक्षा पद्धति इतनी दूषित है कि अमीरों और गरीबों में भिन्नता बढ़ा रही है। राष्ट्रीय हित को देखते हुए सबके लिये समान शिक्षा पद्धति होनी चाहिए। मेधावी बच्चे केवल अमीरों के ही नहीं समझे जावें गरीब बच्चों को अवसर दिया जाय अपनी मेधाबुद्धि को विकसित करने का। दो गली नीति भिन्नता बढ़ाती है।

दूषित राजनीति में अब तक भेदभाव की भावना को प्रोत्साहन दिया। इसमें एक अल्प संख्यक नीति ने राष्ट्र की नौका को डगमगा दिया है। राष्ट्र भाषा के विकास में अल्पसंख्यक सामने आये। यदि वे अपने को भारतीय मानते हैं तो इनको गंगा की बड़ी धार में मिल जाना चाहिये। उससे अलग न रहें। हिन्दी को राजकार्यों की भाषा घोषित किया है। इससे दूसरी भाषाओं को समाप्त तो नहीं किया। सभी भाषाओं का विकास हो किन्तु प्रमुख राष्ट्रभाषा ही रहे।

मेरे विचार से अल्पसंख्यक शब्द संविधान से निकाल देना चाहिये। जब सभी भारतीय हैं। तब सब के अधिकार भी समान हैं। राष्ट्र उन्नति के लिये जो भी नियम बनाया जाय वह सबके हित में हो। वोट की नीति राष्ट्रभाषा पर न थोपी जाय। पिछला चुनाव अल्पसंख्यकों को भाषा का लालच देकर लड़ा गया। उत्तर प्रदेश में उर्दू और पूर्वोत्तर दक्षिण भाग में अंग्रेजी की जय-जयकार की गई। यह एक पवित्रता का मार्ग नहीं।
भाषा नीति ने भारत को बाँटा-बटवारा हो गया तो आगे विवाद क्यों?

—शेष पृष्ठ ६ पर

काश्मीर के विस्थापितों की सहायतार्थ सभा में विशेष कोष की स्थापना

काश्मीर से बड़ी संख्या में राष्ट्रवादी हिन्दू-सिख विस्थापित होकर देश के विभिन्न शहरों में शरण ले रहे हैं। यह हमारे राष्ट्र जीवन के अंग हैं। इनकी दयनीय दशा अत्यन्त करुणाजनक है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने इन भाइयों की सहायता के लिए एक विशेष कोष की स्थापना की है। कृपया तन मन और धन भेजकर अपने विस्थापित भाइयों की मदद कीजिये। यही सबसे बड़ा धर्म है। कृपया धन मनीआर्डर, ड्राफ्ट द्वारा "आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, 5-मीराबाई मार्ग लखनऊ" के पते पर भेजें।
इन्द्रराज
प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र०

साहित्य समीक्षण

पुस्तक का नाम- **अनुपम भगवद् गीता**
लेखक एवं प्रकाशक का नाम -
आचार्य चन्द्र भूषण शास्त्री
पुस्तक प्राप्ति स्थान- आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ।
मूल्यः- प्रचारार्थ चार रुपयामात्र

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक सर्वव्यापक उस परब्रह्म परमात्मा के अनन्त गुणों का वर्णन मानव लेखनी से तो सर्वथा असम्भव ही है। वेदों में जो ज्ञान है उसका अंशमात्र हमें गीता में भी उपलब्ध होता है। "महाभारत" का युद्ध आर्यजाति के पतनकाल के प्रारम्भ से जुड़ा हुआ है और इसका मुख्य कारण वेदों की शिक्षाओं को धीरे-धीरे विस्मृत कर देना है। यद्यपि कहीं-कहीं वेदों की शिक्षाएं पूर्णरूप में या विकृतप्रायरूप में परवर्ती धार्मिक ग्रन्थों में हमें देखने को मिलती हैं। परन्तु उनके विशुद्ध ज्ञान, निष्काम कर्म, आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, क्षत्रियोचित कर्तव्य आदि वैदिक सिद्धान्तों के आर्ष दर्शन हमें गीता में उपलब्ध होते हैं।

आज के युद्ध विरासत में हमें भीषण मँहगाई, नये-नये रोग एवं मानवीय अव्यवस्था की एक लम्बी श्रृंखला दे जाते हैं। परन्तु द्वापर के अन्त में कुरुक्षेत्र के मैदान में लड़ा गया महाभारत का युद्ध हमें "गीता" जैसा ज्ञान का अमूल्य भण्डार देकर गया जिसके उद्गाता योगिराज कृष्ण थे।

लेखक ने बाली द्वीप से प्राप्त आर्ष गीता तथा गीता के अन्य अध्यायों का जनरुचि के अनुरूप सुन्दर दोहा एवं चौपाई वाली शैली में भाव भरा अनूठा वर्णन किया है, जो पठनीय एवं संग्रहणीय है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद के एक मन्त्र मे वर्णित परमात्मा के अनेक नामों की व्याख्या भी की है। पुस्तक की भाषा का अल्पज्ञान रखने वाले भी पढ़कर भाव विभोर हो सकते हैं। पुस्तक की छपाई सफाई तथा गेटप आकर्षक है।

— इन्द्रदेव पाठक
एम. ए. साहित्याचार्य

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद फरीदाबाद शाखा के तत्वाधान में आज सेक्टर-15 के मध्य में एक भाषण प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया जिसमें हजारों आर्य नरनारी विशाल पण्डाल के अन्दर उपस्थित थे। इस पूरे कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य श्री धर्मपाल जी गुरुकुल तातारपुर थे। साथ ही एक गीत संगीत प्रतियोगिता भी हुई जिसमें विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। विजयी प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार एवं सान्त्वना पुरस्कार दिए गए।

आर्यसमाज मकूर (उन्नाव)

प्रधान - श्री कृष्णपाल सिंह
मन्त्री - श्री रामशंकर आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री मुन्नीलाल आर्य

रायगढ़ व सरगुजा में पादरियों की "समानांतर सरकार" चलती है।

रायपुर। छत्तीसगढ़ अंचल में बढ़ती ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों का अंदाजा लगाया जा सकता है कि यहाँ के दो पिछड़े जिले सरगुजा और रायगढ़ में जितना विदेशी धन आता है, उतना राज्य के अन्य किसी जिले में नहीं आता। रायगढ़ जिले के जशपुर तहसील की आबादीमात्र ढ़ाई लाख है, जिसमें कि 10 हजार आदिवासी ईसाई बन चुके हैं। कुनकुरी तहसील में एशिया का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा चर्च है। बल्लभ भवन से लेकर बी0डी0ओ0 कार्यालय तक अपनी घुसपैठ रखने वाले इन चर्चों के पादरियों ने इन दोनों जिलों में एक "समानांतर सरकार" बना रखी है, जो किसानों को खाद, बीज, ऋण देने से लेकर के सारे काम करती है जो सरकार की योजनाओं के तहत होने चाहिए।

वनवासियों के धर्मांतरण से लेकर क्षेत्र में अपना "प्रभाव" स्थापित करने तक के मुद्दों में इन मिशनरियों को पूर्व की इंका सरकार में अर्जुन सिंह और अजीत जोगी का किस तरह खुला संरक्षण मिला यह किसी से छिपा नहीं। और यह इसी संरक्षण का परिणाम है कि झारखण्ड आन्दोलन में राज्य के जिन दो जिलों को अलग करने की माँग उठ रही है वे रायगढ़ व सरगुजा ही हैं।

इन मिशनरियों के पादरी साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति अपनाकर इतने "ताकतवर" हो चुके हैं कि जिला प्रशासन के आला-अफसर भी इनके किसी "आदेश" को "सचिवालय" के आदेश के बराबर ही मानते हैं। जिला प्रशासन से भोपाल, और भोपाल से दिल्ली तक इंका शासन में इन पादरियों के इस तरह "कनेक्शन" थे कि किसी आला-अफसर का कैरियर " इस बात पर निर्भर करता था कि पादरी उसके "ग्रीन बल्ब" का स्विच "आन" करते हैं या "रेड बल्ब" का।

ब्लासियस एक्का को मिले अर्जुन सिंह के संरक्षण का तो जिकर करने की अब कोई जरूरत नहीं रही। "ग्राम विकास की तरफदार मध्यप्रदेश सरकार का नारा देने वाली सरकार ने ग्राम विकास का सही मायने में कितना ध्यान दिया इसका विश्लेषण करने की जरूरत नहीं, सिर्फ इतना बता देना काफी है कि ग्रामीण युवकों से रोजगार देने के नाम पर 7 करोड़ रुपए ठगने वाले एक्का को गत विधानसभा चुनाव में इंका ने अपना अधिकृत प्रत्याशी बनाया।

इंका के शासनकाल में इन मिशनरियों के "विकास" पर अगर नजर डालें तो आंकड़े चौकाने वाले हैं। तीन वर्ष पहले तक अकेले रायगढ़ जिले में 33 चर्च, 60 पादरी, 74 सिमेनरियन 15 धर्म समाज, 41 ब्रदर, 13 हायर सेकेन्डरी स्कूल, 19 गृहणी प्रशिक्षण केन्द्र, 212 बालबाड़ी, 22 ईसाई किसान संघ, 21 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और 21 कुष्ठ उपचार केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त प्रचारक केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र आदि का पूरा ताना-बाना है। और लगभग ऐसी ही स्थिति सरगुजा जिले में भी है।

पिछली इंका सरकार ने सारी व्यवस्था व कार्यपालिका को किस तरह इन मिशनरियों की दहलीज में बाँध दिया था इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देखने को मिला। सन् 1985 में जब सरगुजा के जिला पुलिस अधीक्षक ने सात पादरियों के देश निकाला के आदेश जारी कर दिए लेकिन उन पर अमल नहीं हुआ। इन पादरियों पर धन का लालच देकर वनवासियों का धर्मान्तरण कराने का आरोप था। सन् 85 तक ये पादरी भारत में 41 वर्षों से रह रहे थे। ये पादरी है लक्वेरस्ट्रेटी (67), लुईस डी रेदर, (76), जाक सोमर्स (69), बाई गेटर (65) तथा श्रीमती एस0जे0गेटर (64), तथा दो अन्य। इन पादरियों के देश निकाले के आदेश का क्या हुआ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है वे आज भी भारत में ही हैं। हाँ, लेकिन यह आदेश जारी करने वाले पुलिस कप्तान का क्या हुआ उन्हें इंका की कोप भाजन बन स्थानान्तरण सहित अनेक विभागीय त्रासदियों के दौर से गुजरना पड़ा।

इन पादरियों को अर्जुन सिंह का कितना समर्थन था इसका एक और उदाहरण दे देना जरूरी है कि अर्जुन सिंह समर्थित इंका नेता श्रीमती इन्दिरा आयंगार ने मध्यप्रदेश क्रिश्चियन एसोसिएशन के बेनर तले इस देश निकाले के आदेश का कड़ा विरोध किया था। ये वही इन्दिरा अयंगार हैं जिन्होंने अमरीकी अरिजोना विश्वविद्यालय के जरिए यूनियन कार्बाईड से पैसा लिया था, और इसका भण्डाफोड़ होने पर भोपाल के गैस पीड़ित के बीच चलाए जा रहे अपने कार्यक्रम को बन्द कर दिया था।

(स्वदेश पत्र 5 मई से साभार)

बिगड़ा "काश्मीर" का हाल

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

§1§
बम-विस्फोट और हत्याएँ,
आतंकवादी वहाँ मचाएँ।
खून - खराबा, आफत ढाएँ।
आज स्वर्ग को नरक बनाएँ।

§2§
बिगड़ा "काश्मीर" का हाल।
जनता चलती टेढ़ी चाल।
सीधे लोग - बने विकराल।
फैला पाकिस्तानी जाल।

§3§
पाकिस्तान उन्हें भड़काता।
तोड़ - फोड़ का पाठ पढ़ाता।
आतंकवादी उन्हें बनाता।
है हथियार उन्हें दिलवाता।

§4§
उनसे हत्याएं करवाता।
निर्दोषों का खून बहाता।
वहाँ विनाश-तबाही लाता।
भारत से विद्रोह कराता।

§5§
देव-भूमि पर आफत आई।
असुरों ने माया फैलाई।
वहाँ विनाश-तबाही लाई।
बस्ती की बस्ती जलवाई।

§6§
मानवता रोती-चिल्लाती।
देख दुर्दशा, अश्रु बहाती।
फटती सज्जनता की छाती।
हिंसा गीत खुशी के गाती।

§7§
मारे-काटे जाते सज्जन।
पण्डित-जन का हुआ पलायन
त्राता बन आये जगमोहन।
उनसे घबराये हैं दुर्जन।

§8§
अब चिल्लाते-उन्हें हटाएँ।
आजादी फिर हमें दिलाएँ।
करें खूब जम कर हत्याएँ।
"काश्मीर" को अलग कराएँ।

§9§
"जगमोहन जो" का अभिनन्दन।
बड़ा योग्य कर रहे प्रदर्शन ।
दबा रहे आतंकवाद को
अलगाववाद का तीव्र दमन।

§10§
जगमोहन को गया बुलाया?
त्याग-पत्र है गया दिलाया।
देखो-फिर अब क्या होता है?
घटनाक्रम कैसा होता है?

--

पृष्ठ 3 का शेष

6- 1938-39 के आर्य सत्याग्रह आंदोलन को सरकार द्वारा स्वतन्त्रता आंदोलन घोषित कराकर उसके सेनानियों को सम्मान पेंशन दिलाने का श्रेय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती तथा सार्वदेशिक सभा को ही है ।

7- मदुराई में दो लाख रुपये में भूमि क्रय करके आर्य समाज का प्रचार केन्द्र सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापित करना कोई साधारण काम नहीं है।

8- आसाम, नागालैण्ड, राजस्थान और मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में दयानन्द सेवाश्रमों के माध्यम से सेवा सहायता कार्य हो रहे हैं।

9- दिल्ली में गोशाला की स्थापना करने के लिए कई एकड़ भूमि प्राप्त करना और उसके निर्माण की योजना का कार्यान्वयन बहुत बड़ा कार्य है।

10- वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु सार्वदेशिक सभा द्वारा नए-नए साहित्य का प्रकाशन । चारों वेदों की हजारों प्रतियों का वितरण ।

11- देश की अन्य सामाजिक संस्थाएं व्यक्ति विशेष की थैलियों तक ही सीमित हैं किन्तु सार्वदेशिक सभा का सबल संगठन शताब्दी की ओर बढ़ रहा है।

12- देश विदेश में पिछले कुछ वर्षों में अनेक आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा के तत्वाधान में हुए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा उप प्रधान पं० वन्देमातरम स्वयं विश्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने जर्मनी गए थे।

13- अभी जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी को गिरफ्तार किया गया था, सार्वदेशिक सभा के प्रधान की चेतावनी के बाद सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया।

इस प्रकार के कार्यों की तालिका लम्बी है। सार्वदेशिक सभा, स्वामी आनन्द-बोध और सभा के अधिकारियों ने बहुत सारे लोकोपकारी कार्य किए हैं, जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता है। आर्य समाज का कोई व्यक्ति यदि अवैदिक कार्य करता है अथवा किसी मजार पर चादर चढ़ा सकता है तो आर्य समाज के प्रति उसकी सैद्धान्तिक निष्ठा की एक पलड़े पर कैसे तौला जा सकता है।

यह अत्यन्त हर्ष और सौभाग्य की बात है कि आज देश जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है और चारों ओर अराजकता का भीषण नर तांडव हो रहा है, उसके प्रति भी सार्वदेशिक सभा के अधिकारी अत्यन्त जागरूकता से उसके समाधान के प्रति भी सतत प्रयत्नशील हैं और समय समय पर शासन को भी सावधान करते रहते हैं।

मेरी सम्मति में यह समय दोष दर्शन का नहीं, आत्म निरीक्षण का है। जो अपील श्री वीरेन्द्र जी ने समस्त आर्य जगत् से की है, यदि उसके प्रति वह स्वयं भी आत्म निरीक्षण करें तो इसका उत्तर वह स्वयं पा लेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का त्रिशासन उनकी प्रेरणा और उपस्थिति में हुआ किन्तु आज तक त्रिशासन के आदेशों के अनुसार चल अचल सम्पत्तियों का बंटवारा वह नहीं कर पाए और अब तो वह त्रिशासन के आदेशों को भी भूल रहे हैं। उन्हें स्वयं इसके आदेशों के अनुसार कार्यान्वयन की पहल करनी चाहिए, जहां कोई मतभेद हों, उन्हें बैठकर पारस्परिक विचार विनिमय के द्वारा दूर करने का प्रयास करना चाहिये।

जो अपेक्षा वह सार्वदेशिक सभा से करते हैं क्या वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा उसका शुभारम्भ नहीं करा सकते? सार्वदेशिक सभा ने अतीतकाल में आर्य समाज के बहुत से आंतरिक झगड़ों को सुलझाया था और जब जब भी आवश्यकता हुई देश के हित में वह कैसा भी आंदोलन छेड़ने से पीछे नहीं रही। यह सार्वदेशिक सभा के सतत प्रयास का ही फल है कि गुरुकुल कांगड़ी जैसी राष्ट्रीय संस्था को अराजकवादी तत्वों से मुक्त कराया (जिसके लिए स्वामी आनन्दबोध ने आमरण अनशन भी किया था)। आज वह संस्था अपने पूर्व गौरव प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर है। इस सबके पीछे किसी एक व्यक्ति का नहीं अपितु समस्त आर्य जगत की सद्भावनाएं एवं शुभकामनाएं तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विवेकी अधिकारियों का सतर्कतापूर्ण निर्देश ही महत्वपूर्ण रहा है ।

मैं जानता हूँ कि श्री वीरेन्द्र जी के परिवार का आर्य समाज के प्रति अटूट प्रेम है, दृढ़ आस्था है, और कदाचित इसीलिए उन्होंने यह लेखमाला लिखी है। यह समय खण्डन का नहीं मण्डन का है, दोष दर्शन का नहीं अपितु आत्म निरीक्षण का है। जबकि देश की प्यारी संस्थायें पारस्परिक मतभेदों के कारण विनाश के कगार पर खड़ी हैं, तब क्या कम आश्चर्य की बात नहीं है। कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विभिन्न राजनैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए जन जागरण अभियान कराने के साथ-साथ समय-समय पर शासन से भी लोहा लेती रहती है।

मेरा बन्धुवर वीरेन्द्र जी से यह अनुरोध है कि जिस आर्य समाज और गुरुकुल के निर्माण तथा विस्तार में उनके स्वनामधन्य पिता महाशय कृष्ण ने अतीतकाल में अपना अमूल्य योगदान दिया था, उस गौरव की रक्षा के निमित्त वह आत्म निरीक्षण करें और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आलोचना करने की अपेक्षा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उस अतीतकालीन गौरव की पुर्नस्थापना करें जिसके लिए उनके पिता, सदा सर्वदा तैयार रहते थे। ■

निर्वाचन

आर्यसमाज एटा

प्रधान- श्री गौरीशंकर वैद्याचार्य
मन्त्री - श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री
कोषाध्यक्ष- श्री विजयकुमार गुप्त

--

अपनों से अपनी बात

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं आर्य उप प्रतिनिधि समाजों के प्रधान एवं मंत्री तथा सभा में कार्यरत उपदेशक प्रचारक महोदयों की सेवा में।

परम पिता परमेश्वर की असीम कृपा आप सभी के सक्रिय सहयोग एवं सभा में कार्यरत उपदेशकों प्रचारकों, कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों से उपदेश विभाग में कार्य सम्भव हो सका है। मैं चाहता हूं कि पूरे प्रदेश में योजना बद्ध प्रचार कार्यक्रम से वैदिक धर्म की दुन्दुभी बज जाये। उसमें निम्न बिन्दुओं पर आपका पूर्ण सहयोग अपेक्षित है।

1- मास जून एक प्रकार से अवकाश काल है। और इस समय में सस्ती उत्सव योजना प्रभावशाली प्रचारक योजना, मिशनरी प्रचार योजना एवं आर्य करणप्रचार योजना, के माध्यम से अपने क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन करें।

2- शास्त्री श्रेणी के प्रभावी वक्ता जो कर्मकाण्ड में भी दक्ष हों, और मिशनरी भावना से प्रचार कार्य कर सकें उपदेश विभाग में उपदेशक पद पर कार्य करने हेतु उनके प्रार्थना पत्र अपनी संस्तुति सहित कार्यालय को भिजवायें।

3- अवकाश प्राप्त जो व्यक्ति आर्य समाज की अवैतनिक सेवा करना चाहें उनके प्रार्थना- पत्र योग्यता अनुभव सहित भिजवायें। उनके मार्ग व्यय भोजन आदि का भार सभा वहन करेगी।

4 वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय [illegible] जनपद गाजियाबाद के लिये इण्टर तथा उसके समकक्ष साहित्य विशारद पूर्व माध्यमा परीक्षा आदि उत्तीर्ण छात्रों के प्रार्थना पत्र प्राचार्य वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय [illegible] जनपद गाजियाबादके पते पर दस जून 1990 तक भिजवायें। साक्षात्कार [illegible] [illegible] क्र09 सं0 047 विक्रमी दिनांक 17 जून 1990 रविवार को विद्यालय भवन में प्रातः 9 बजे होगा।

पाठ्यक्रम अवधि दो वर्ष निःशुल्क भोजन शिक्षा तथा आवास।
उत्तीर्ण छात्र को उपदेशक वेतनमान पर नियुक्ति का आश्वासन है।
[illegible] मई के आर्यमित्र में पूर्ण विज्ञापन [illegible] है।
[illegible]- आप अपने निकटस्थ तथा प्रभावी [illegible] में आयोजित उत्सवों पर उपदेशक विभाग में कार्यरत उपदेशकों प्रचारकों को अवश्य आमन्त्रित किया करें या करने में सहयोग दें।

आपकी प्रगति एवं पत्रोत्तर की उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा में,

आपका भ्राता — हरिश्चन्द्र आर्य
हरिश्चन्द्र आर्य, — अधिष्ठाता उपदेश विभाग,
अमरोहा — आ0प्र0स0, उ0प्र0, लखनऊ।
मुरादाबाद

पृष्ठ ६ का शेष..

अल्पसंख्यकों को भय दिखाकर उनके अन्दर असुरक्षा की भावना उत्पन्न कर दी और मजेदार बात तो यह है कि प्रत्येक दल उनकी सुरक्षा का उत्तरदायित्व लेकर वोट छीनने का प्रयास करते देखे गये। सांस्कृतिक एकता सरलता से हो सकती है परन्तु दल बाधक होते हैं।

अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिये विदेशों से अन्धाधुंध पैसा और जन आने लगे - अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यक बनाने के षड्यन्त्र चलने लगे। हमारा देश ही तो ऐसा है जो धर्मनिर्पेक्ष है अन्य लोग तो इस बात को नहीं मानते पुन क्यों न अशान्ति फैले। हमारी सीमायें दुर्बल होने लगीं। पंजाब में पहले भाषा-विवाद छिड़ा और बाद में आतंकवाद । इसके कारण पंजाब-कश्मीर और पूर्वोत्तर प्रान्त जल रहे हैं भारत ऐसा प्रजातन्त्र राज है जहाँ मानव मानव से प्रेम करना सिखाता रहा बातों से नहीं वसुधैव कुटुम्बकम

के प्रसार द्वारा। हिन्दी भाषा में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं- इसको जैसे लिखो- वैसे ही पढ़ो। इसमें चार प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता है। तत्सम, तद्भव, देशीय और विदेशीय। राज कार्यों में हिन्दी के प्रयोग से जन साधारण को ऊपर उठकर सम्पन्न होने का अवसर मिलेगा प्रयोग करने पर स्वयं सरल बन जाती है।

भारत सभी भारतवासियों का देश है। युगों तक विदेशियों ने इसको सताया। [illegible] बलिदानों के पश्चात सभी विदेशियों से छुटकारा मिला। [illegible] [illegible] [illegible] दिखाई [illegible] [illegible] सब भारतीय पूर्वजों की सन्तान। [illegible] भूमि के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] चक्र में [illegible] [illegible]।

हिंसा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एकता होगी सद्भाव। [illegible] [illegible] में इसके बना स्वतन्त्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समस्या बनी है। यह समस्या [illegible] [illegible] [illegible] के समय के [illegible] [illegible] नीतियों के [illegible] [illegible] [illegible] हुई। [illegible] देश के [illegible] [illegible] [illegible] पाकिस्तान को दे रहे है। यदि पाकिस्तान के [illegible] उदारता न दिखाई होती तो उसकी कुभावना इस प्रकार न बढ़ती। [illegible] विदेशियों से सांठ-गांठ करके भारत को हड़पने का प्रयास किया। [illegible] [illegible] अब भी उनका [illegible] [illegible] है। इतना धन जन अस्त्र-शस्त्र [illegible] [illegible] [illegible] है। उग्रवाद व आतंकवाद जिससे भारत का कोई भी नगर सुरक्षित नहीं [illegible]

बढ़ने दिया सीमाओं से। इसी उपेक्षा से [illegible] घिर रहा है चारों ओर से। दल और सरकार की तुष्टीकरण नीति जब तक रहेगी तब तक बिगाड़ होता रहेगा। लातों के देवता बातों से नहीं मानते। शत्रु पर दया कैसे उससे समझौता कैसे। उत्तर-पूर्वी भाग एक ओर जल रहा है। पंजाब कश्मीर दाव पर लगे हैं। शत्रु को दबाने का एक ही ढंग है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को तुरन्त अधिकृत किया जाय।

किसी भी राज्य को विशेष दर्जा देने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार कश्मीर से 370 की धारा समाप्त की जाय। दुर्बलता में पराजय है।

अत राष्ट्र और राष्ट्रभाषा का अटूट सम्बन्ध होने से अन्दर और बाह्य सुरक्षा आवश्यकीय है। आर्य समाज को देश की बिगड़ती स्थितिके लिये कुछ विचारना चाहिये। विचारशील लोगों का नेतृत्व होना चाहिये

प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल का शिविर 15 से 22 मई तक बड़े उत्साह से मनाया गया जिसमें भारत के नगरों से आये साधक साधना, योग, प्राणायाम करने के लिये डाक्टर, इन्जीनियर, वकील वानप्रस्थी सन्यासी आये भजनानन्द जी ने आसन प्राणायाम सिखाया और वेदमुनि जी ने यज्ञ की व्यवस्था कराई सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री तेजपाल सिंह श्रीमती आशा आर्या के मधुर भजनों से साधकों को मोहित कर दिया।

सोमानन्द सरस्वती-

डा० आशा रानी राय का उद्बोधन

आज देश में विघटनकारी शक्तियाँ अपना पंजा फैलाए हुए हैं जिससे पूरा राष्ट्र प्रभावित है। अतः आवश्यकता है नव जागृति की जिसमें राष्ट्र की प्रथम इकाई परिवार को महत्वपूर्ण स्थान है अतः परिवार में संस्कारवान, चरित्रवान, मेधावान व सुज्ञान से पूर्ण बच्चे का निर्माण माँ का कर्तव्य है। इसके अतिरिक्त अपनी संस्कृति, अपनी मातृभाषा व मातृभूमि की रक्षा व सम्मान करना प्रत्येक नर नारी का कर्तव्य है उक्त उद्बोधन व विचारों की रसधार से विशाल जनसमूह को मान्या डा० आशा रानी राय, प्राचार्या, कानपुर विद्या-मन्दिर महिला महाविद्यालय व उपप्रधान, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, उ०प्र० ने अवगाहित कराया। आपने मधुर व ओजस्वी वाणी में अप्रैल माह में आर्यसमाज बुलभुल व आर्यसमाज शास्त्रीनगर ... नगर में दिनांक- ... मई से ... मई तक आर्यसमाज, हरजेन्द्रनगर व दिनांक- 18 से 20 मई तक आर्यसमाज ...पुर स्टेट में जन-जन को प्रेरित किया।

संवाददाता।

चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा, फैजाबाद
प्रधान श्री ... प्रसाद त्रिपाठी
मंत्री श्री स्वामी ...नन्द सरस्वती
कोषाध्यक्ष—श्री त्रिवेणी प्रसाद

उक्त चुनाव आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा स्वीकृत तथा मान्य है।

दिनांक 3 जून 1990 के आर्यमित्र के पृष्ठ ... पर प्रकाशित उक्त उपसभा का चुनाव निरस्त किया जाता है।

—सभामंत्री—

सराहनीय कार्य

आर्यसमाज, पेस्टनरोड, कानपुर में अन्तर्जातीय विवाह संस्कार-3 अन्य साधारण विवाह-... अन्त्येष्टि संस्कार ... यज्ञोपवीत 7, नामकरण ..., मुण्डन संस्कार-2 ... इस प्रकार मईमास में संस्कार सम्पन्न हुये। —मो० ...शास्त्री

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 24 से 26 मई आर्यसमाज मसवासी (रामपुर) का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

आवश्यकता

आर्य कन्या हेतु आयु 31 वर्ष 153 से०मी० एम०ए०, पी०एच०डी०) ... कार्य में ... साहित्यिक अभिरुचि वाली रस्तोगी कन्या हेतु सुयोग्य वर तथा ... वर्ष 165 से०मी० आय 5000 इन्जीनियर हेतु सुन्दर सुशिक्षित सुयोग्य वधु की आवश्यकता है आर्य परिवार को वरीयता जाति बंधन नहीं। निम्न पते पर सम्पर्क करें।

डा० वेदप्रकाश रस्तोगी
मो० मण्डी चौब
अमरोहा, जि० मुरादाबाद-244221

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

आदरणीय तिवारी जी
सादर सस्नेह नमस्ते।

आर्यमित्र बराबर मिलता है, यह मेरा सौभाग्य है, मैंने भी अपने विद्यार्थी जीवन से आर्यमित्र में स्थान पाने और प० हरिशंकर शर्मा जैसे महान आर्य साहित्यकार के सम्पादकत्व में प्रेरणा, प्रोत्साहन पाने का अवसर पाया है। उसका प्रतिफल आपके ... कुशल और विचारपूर्ण सम्पादन में 'आर्यमित्र' निरन्तर प्रगति करता हुआ उन्नत गतिवान है। यह महर्षि का महाप्राण प्रदायक ... वाहक आर्ष साहित्य का प्रचार प्रसार व जन जन तक पहुँचाने में सतत निरत है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

लाखन सिंह भदौरिया सौमित्र
भोगांव (मैनपुरी)

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) में 18 जून से 24 जून तक योग शिविर आयोजन किया गया है। इसमें महात्मा विद्वान आ रहे हैं। साधक आने की सूचना आश्रम में भेज दें। भोजन व निवास का प्रबन्ध है। साथ में कम्बल भी लायें।

स्वामी योगेन्द्रानन्द
महात्मा नारायण स्वामी
आश्रम रामगढ़ (नैनीताल)

आचार्य उदयवीर शास्त्री अस्वस्थ

लिखते समय से आचार्य जी अस्वस्थ हैं। पहले उन्हें अजमेर के नेहरू चिकित्सालय में प्रविष्ट कराया गया था फिर परीक्षण करने पर पेट में बड़ी आँतों में ट्यूमर का पता चला अब उनकी घर पर ही चिकित्सा हो रही है। सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज एवं मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रभु से उनके शीघ्र स्वास्थ्य की कामना की है

शोक प्रस्ताव पारित

भारत समाज सेवा दल कादरी आगरा के तत्वावधान में आज दिनांक- 14 5 90 को एक शोक प्रस्ताव पारित हुआ। विश्व आर्यसमाज के वरिष्ठ ख्यातिप्राप्त आर्य नेता डा० दुखन राम जी के आकस्मिक निधन पर गहन शोक व्यक्त करते हुए सदस्यों ने अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की

डा० दुखनराम आर्यसमाज के एक वरिष्ठ अनुभवी नेता तथा संगठक थे। आप सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा आर्य वीर दलों के मुख्य संचालक रह चुके थे। डा० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति भारत सरकार के नेत्र चिकित्सक भी रह चुके थे। तथा पटना विश्वविद्यालय के कुलपति मनोनीत हुए थे।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला सभाओं के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से ... चुनाव के नाम पर धन इकट्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अतः आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुनः धन इकट्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनों से अनुरोध है इन की बातों में न आयें और न ही ... व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र भी ... सही और प्रमाणित है।

— कार्यालय सचिव।

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश (उपदेश विभाग) प्रस्तुत करता है

प्रचार योजना

सस्ती उत्तम योजना- 500 रु० दक्षिणा वेद प्रचार निधि में

इस योजना के अन्तर्गत द्विदिवसीय उत्सव हेतु सभा की ओर से एक उपदेशक एवं या सुयोग्य भजन मण्डली प्रदान की जायेगी ... किरायें ... की समस्त ... आर्यसमाज को करनी होगी

प्रभावशाली प्रचार योजना- ...रु० दक्षिणा वेद प्रचार निधि में इस योजना के अन्तर्गत ...दिवसीय प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत सभा की ओर से एक उपदेशक एवं ... प्रदान किये जायेंगे। ... सम्बन्धित आर्य समाज को ... करना होगा।

मिशनरी प्रचार योजना- (आप बनायें हम आयें)

इस योजना के अन्तर्गत एक भजन मण्डली सभा की ओर से प्रदान की जायेगी। आपको ... मार्ग व्यय ... वहन करना होगा यह योजना धर्मान्तरण एवं अराष्ट्रीय गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों में लागू की जायेगी।

आप के निमन्त्रण की प्रतीक्षा में

आज ही लिखें या मिलें।

हरिश्चन्द्रार्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग,
प्रचार कार्यालय अमरोहा
जनपद-मुरादाबाद।

लखनऊ दूरभाष सभा- 45993
अमरोहा दूरभाष-554

प्राचीन तथा वर्तमान भारत वर्ष

● यशवीर सिंह आर्य विद्यावाचस्पति
आ० स० सीतापुर

जिस देश को सारा संसार गुरु मानता आया था। जिस देश के लिए मनु महाराज ने हिमालय की सबसे ऊँची चोटी पर खड़े होकर संसार के लोगों को सम्बोधित करते हुए बड़े ही ओजस्वी शब्दों में कहा था--

एतद्देश प्रसूतस्य स --काशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

हे संसार के लोगों यदि तुम्हें अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करनी है तो भारतीय ऋषियों के चरणों में बैठकर अपने-अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करो।

जिस भारतवर्ष के बारे में अनेकों विद्वानों ने भारतवर्षकी महानता तथा प्रशंसा अपने-अपने शब्दों में प्रकट की है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं- फ्रेन्चलेखक जेकालियट महोदय लिखते हैं अपनी पुस्तक बाईबिल इन इन्डिया में प्राचीन सभ्यता के हिंडोल तुझे नमस्कार पूज्यमातृभूमि तुझे शताब्दियों तक होने वाले असंख्य पाशविक एवं बर्बर आक्रमण भी विस्मृति के गढ़े में दबाने में असमर्थ रहे हैं। अतः तुझे प्रणाम।

एल्फिस्टन महोदय भारतवर्ष की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं-

इस भारत की प्राकृतिक छटा एक दम आँखों में बैठ जाती है और फिर सदा के लिए अपनी अमिट स्मृति हृदय में बैठ जाती है।
मुस्लिम लेखक अपने इतिहास ग्रन्थ तारीखे बरसाफ में लिखता है:-
"सभी इतिहास वेत्ता यह मानते आये हैं कि भारतवर्ष भूमण्डल का एक अतीव विस्मरणीय और चित्ताकर्षक देश है इस की पावन पुनीत मिट्टी के कण वायु से भी हल्के है। पवित्र और इसकी वायु की पवित्रता स्वयं पवित्रता से भी अधिक पवित्र है। इसके मैदान स्वर्ग की स्मृति को जगाने वाले हैं" वह पुनः लिखता है कि यदि मैं यह दावा करूँ कि स्वर्ग भारत में ही है तू आश्चर्य मत कर क्योंकि स्वयं स्वर्ग भी भारत की समानता नहीं कर सकता है।

अगर भारतवर्ष का गौरव देखना हो तो उपनिषद् काल में केकय देश में अश्वपति नाम के राजा राज्य करते थे जिन्हें प्रजा अपने हृदय मन्दिर का देवता समझती थी एक बार इनके यहाँ महर्षियों की टोली आ गयी इनके स्वागतार्थ महाराजा स्वयं ही अगवानी करने आये महर्षियों को महल में ले जाकर राजा ने भोज के लिए प्रार्थना की परन्तु महर्षियों ने राजा का अन्न खाने से मना कर दिया। तब राजा अश्वपति कहते हैं।क्यं मेधाव्रत के शब्दों में।

न कुम्भिलो नो कृपणो न मद्यपी न
यज्ञहीनाग बुधे तरोनरः।
न मेऽस्ति राज्ये व्यभिचारिनर्षयः कुतस्तदा स्त्री व्यभिचारिणी भवेत्।।

अर्थात्- हे ऋषियों मेरे देश में चोर, कृपण मद्यपी, यज्ञहीन, मूर्ख, व्यभिचारी पुरुष ही नहीं हैं, तो स्त्रियाँ व्यभिचारिणी कहाँ से होंगी। ये था मेरे देश का प्राचीन चरित्र।

न केवल भारत वर्ष ही महान था। किन्तु इसके निवासी भी महान थे। भारत वासियों के उज्जवल एवं धवल चरित्र के तो गीत विदेशों में भी गाये जाते थे। मैगस्थनीज जब भारत में आया और यहाँ भ्रमण किया और देखा कि यहाँ के लोग धन-धान्य से सम्पन्न थे सोने-चाँदी के आभूषण अपने पास रखते थे इतना होते हुए भी घरों में ताले नहीं लगाते थे। शायद ताले के लिए संस्कृत भाषा में कोई शब्द न हो। जिस देश के निवासियों का आदर्श--

मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

रहा हो वे दूसरों के धन पर दृष्टि कैसे डाल सकते थे। यहाँ बच्चे-बच्चे के हृदय में बाल्यकाल से ही भावना भरी जाती थी--

परद्रव्येषु लोष्ठवत्।

दूसरे के धन को ढेले के समान समझो।

यह था भारत वर्ष के निवासियों का आदर्श।

क्या आज विश्व में किसी भी देश का प्रधानमन्त्री राजा अश्वपति की तरह घोषणा कर सकता है, कदापि नहीं।

आज चारो ओर हाहाकार मचा हुआ है राज नेताओं का चरित्र दूषित हो गया है, कहते कुछ हैं करते कुछ हैं आज के इस युग में कहीं पर भी जान-माल सुरक्षित नहीं है जिस न्यायाधीश को ईश्वर के स्थान पर रखा है वह भी स्वार्थ के वशीभूत होकर बेकसूरों को सजा देता है आज समाचार पत्र हत्या, चोरी, डाके, बलात्कार, दहेज के काण्डों से भरे पड़े हैं आज चारों ओर से देश की एकता, अखण्डता को खतरा हो रहा है पंजाब लहू से लथपथ है तथा कश्मीर, असम, मिजोरम जल रहे हैं चारों ओर मानव कराह रहा है मानवता चीत्कार कर रही है इन सभी घटनाओं का वर्णन करने में लेखनी असमर्थ है।

क्या इन समस्याओं का कोई भी समाधान नहीं है। आओ विचार करें कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों पर-

हम कौन थे क्या हो गये
क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्याएं सभी।।

किसी कवि ने यहाँ तक लिखा है।

बदतमीजी कर रहे हैं
जो इस भवरे चमन में।
साथियों आँधी उठाने का
जमाना आ गया है।।
वक्त की तकदीर स्याही से
लिखी जाती नहीं।
खून में कलमे डूबाने का
जमाना आ गया है।।

मैं अह्वान करता हूँ देश के नव युवकों को बहुत सो चुके हो उठो सोने का वक्त गया अब करने का वक्त आया।

उठो नौ जवानो,
आग लगा दो पानी में।
दुश्मन सीमा पर चढ़ आये हैं
क्यों सोये हो जवानी में।।

□

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन

श्री मद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर लखनऊ के विशाल प्रांगण में दि०-27 मई 90 को उत्तर प्रदेशीय आर्य-प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन-तिवारी की अध्यक्षता में बड़े ही उत्साह एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में जिला सभा लखनऊ का निर्वाचन सम्पन्न हुआ। निष्ठा, लगन और परिश्रम के लिए सर्वात्मना समर्पित आचार्य वेदव्रत अवस्थी युवा आकांक्षाओं एवं तरुणाई के प्रतीक श्री चन्द्रकुमार छाबड़ा तुमुल • हर्षध्वनि के बीच आगामी वर्ष के लिए क्रमशः प्रधान एवं मन्त्री पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। कोषाध्यक्ष श्री-शिवनाथ जी भी सर्व सम्मति से चुने गए।

इस अवसर पर वृद्धजनों के प्रतिनिधि श्री वैद्य कुन्दन लाल जी युवाओं के प्रतिनिधि श्री मनमोहन तिवारी ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों को आर्शीवचन एवं शुभकामनाएं देते हुए आर्यसंस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में उनके साफल्य की कामना की है।

सभा का वर्ष

हर्ष का विषय है कि सभा का वर्ष 31 मार्च 1990 को समाप्त हो गया है। अतः अधिकारियों, अंतरंग सदस्यों एवं निरीक्षकों को सूचित किया जाता है कि वह अपनी कटी हुई रसीदें हिसाब और अवशेष धन 15 जून 90 तक अवश्य भेजने की कृपा करें, ताकि सभा का प्राप्तव्य धन संबंधी नियम प्रतिनिधि स्वीकारी में बाधक न बने।

2-जिला उपसभाओं से भी अनुरोध है कि वह अपनी जिला सभा का वार्षिक विवरण सभा की वार्षिक रिपोर्ट में सम्मिलित करने हेतु 30 जून सन 1990 तक अवश्य भेजने की कृपा करें। बाद मेंआये विवरण प्रकाशित न हो सकेंगें।

—मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

पंजीकरण सं. एल. डब्ल्यू./एन.पी. ७२
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
आषाढ़ कृष्ण-२ संवत २०४७ वि.
दिनांक १० जून १९९०
दूरभाष: २४५९९३

सेवा में..

वैदिक धर्म की रक्षार्थ एक प्रस्ताव "ग्रामीण अंचल आर्य समाज"

आर्य समाज में एक क्रान्तिकारी शक्ति संभावित। आर्य पुरुषों। भारत की जो दुर्दशा आपके समक्ष है सो देख ही रहे हैं, यह बताना आवश्यक नहीं। पर एक कटु सत्य मैं आपके सामने लाना चाहता हूँ कि हमारे पूर्वज सम्भवत. हमारी ही भूलों के कारण सन् 47 में भारत में एक पाकिस्तान इस्लामाबाद और ढाका में बन ही गया है जब पन्द्रह बीस वर्षों के भीतर ही भारत में दूसरा पाकिस्तान बनवाने के लिये हम लोगों को विवश होना पड़ेगा। भारत में मुस्लिम संख्या 10 करोड़ के लगभग हो चुकी है बंगला देश के मुस्लिम भी भारत में घुसपैठ लाखों की संख्या में कर चुके हैं तथा कर रहे हैं। भारत में नसबंदी, गर्भपात केवल हिन्दुओं के ही होते हैं, मुस्लिमों को नसबन्दी गर्भपात की आज्ञा कुरान नहीं देता है। यह अकाट्य सत्य है कि भारत में दूसरा पाकिस्तान बनने वाला है इस महासंकट से बचने का प्रयास हम हिन्दुओं को अभी से करना चाहिये। आग लगने पर कुंआ खोदना बुद्धिमानी न होगी। दूसरे भारतीय पाकिस्तान की जड़ें भारत के ग्रामों में फैली हुई है। और ग्रामीण अंचल में अल्प संख्या में हैं। भारत में बनने वाले दूसरे पाकिस्तान को रोकने का एकमेव उपाय मुस्लिमों को हिन्दू बनाना है। भारतीय मुस्लिम समस्या को हल करने का उपाय सन् 1922 ई० में आर्य नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जानकर "भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा" की स्थापना करके पाँच लाख मुस्लिम मलकानों को शुद्धकर हिन्दू बनाया। और सन् 26 में इस पुण्य कार्य में अपनी बलि दे दी। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के पश्चात अन्य आर्य नेता शुद्धि कार्य को तीव्रगति करने को आगे नहीं आये उस शुद्धि कार्य को किये बिना वैदिक हिन्दू धर्म का अस्तित्व भी बचा रहना असंभव है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने इस योजना को सफल बनाने में हमें पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया है वे धन्यवाद के पात्र हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द मनस्वी
गुन्नौर (बदायूँ)



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं.२२४१/५७ आषाढ़ कृष्ण-६ रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक १७ जून १९९० (घोषणापत्र सं.७/२२-२-२५)



मामूली अन्तर से ही —

अगर तुम रात्रि के दस बजे सोकर सुबह सात बजे उठते हो, तो एक बार जरा पाँच बजे भी उठकर देखो। चालीस वर्ष की उम्र तक भी अगर तुम सात बजे के स्थान पर पाँच बजे उठते रहे तो यकीन मानो, दो घण्टे के इस मामूली फर्क से ही तुम्हारी उम्र दस साल और बढ़ जायेगी।

—सुश्रुत

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक-२३

धर्मान्तरण के बाद मिलने वाली सुविधाएं जारी रखना धर्मान्तरण को बढ़ावा देना है

—मनमोहन तिवारी

संसद में केन्द्रीय सरकार द्वारा लाए जाने वाले विधेयक जिसमें धर्मान्तरण के बाद भी निम्न वर्ग को मिलने वाली सुविधाएं यथावत बनी रहने का प्राविधान है, का घोर विरोध करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने समस्त आर्य (हिन्दू) जनता को सचेत करते हुए कहा है- कि धर्मान्तरण राष्ट्रान्तरण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, आर्यसमाज अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी इस राष्ट्रविरोधी विधेयक को कभी कार्यान्वित नहीं होने देगा---- ।

संविधान ने हरिजनों, पिछड़े वर्ग तथा अनुसूचित वर्ग के लोगों को यह सुविधाएं उनके आर्थिक उत्थान द्वारा हिन्दू समाज के साथ पूर्णाकार एकाकार हो जाने के लिए दी थीं। इस भावना को न समझने के कारण उक्त विधेयक में धर्मान्तरण द्वारा उनके राष्ट्रीय मुख्यधारा से अलग हो जाने के बाद भी उन्हें यह सुविधाएं जारी रखना भारत की राष्ट्रीय अस्मिता को समूल नष्ट करने का एक भीषण विदेशी षड्यन्त्र है, जो सफल हो जायेगा। स्वतन्त्रता के पश्चात् गत चार दशकों से इस देश की धरती पर धर्मान्तरण खूब पनप रहा है, फलफूल रहा है। निम्न वर्ग के लोग धड़ाधड़ धर्म परिवर्तन करके राष्ट्र की मुख्य धारा से अलग होते जा रहे हैं और देश में समस्याएं बढ़ती जा रही हैं- पंजाब, कश्मीर, बोडोसमस्याएं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। भारत की अखण्डता और अस्मिता पर प्रश्नचिन्ह लगते जा रहे हैं। यदि यही स्थिति रही तो हिन्दू जाति को कोई नहीं बचा सकता और इस देश में यदि हिन्दू विलुप्त हो गया तो भारत की भारतीयता और अखण्डता अतीत की कहानी बनकर रह जायेगी। इसलिए आर्य समाज इसे राष्ट्र के जीवन और मरण का प्रश्न समझता है।

श्री तिवारी ने अपने वक्तव्य में भारत सरकार एवं समस्त हिन्दू जनता को सचेत करते हुए कहा है कि अब भी समय है। विदेशी ताकतें लोभ और लालच देकर बड़े पैमाने पर गरीब भोले-भाले निम्नवर्ग के हिन्दुओं को ईसाई मुसलमान बनाने में लगी हुई हैं। विदेशों से आया हुआ अपार धन पानी की तरह इस कार्य में बहाया जा रहा है। यह धर्मान्तरण निश्चित रूप से किसी धर्म के प्रति आस्था के कारण नहीं है। अपितु धर्मान्तरण की आड़ में राष्ट्रान्तरण करके भारतीय अस्मिता को सदा-सदा के लिए विनष्ट कर देने का गहरा विदेशी कुचक्र है। इसलिए इस विधेयक को केन्द्रीय सरकार को वापस लेना चाहिये।

आर्यसमाज इस देश का प्रहरी है। वह अपने को मिटा सकता है परन्तु देश को मिटते हुए नहीं देख सकता। असम, पंजाब और कश्मीर की समस्याएं आज से शताब्दियों पूर्व से होते आ रहे धर्मान्तरण का परिणाम हैं। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ने सीने पर गोली खाते हुए कहा था- "ऐ हिन्दू जाति? तेरे लाल दूसरे की गोद में न चले जावें नहीं तो भारत मिट जायेगा। और आज सरकार वही करने जा रही है जो विदेशी षड्यन्त्रकारी चाहते हैं जो कि देश के विघटन में एक घातक कदम होगा। यदि समय रहते माननीय-प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी ने उस साहस का प्रदर्शन नहीं किया जो उनसे अपेक्षित है, और यदि उन्होंने इस बिल को वापस नहीं लिया तो भावी इतिहास उनको क्षमा नहीं करेगा।

अन्त में समस्त हिन्दू जाति से एकजुट होकर इस विधेयक का विरोध करने की अपील की गई है और कहा गया है कि ऐसा प्रबल विरोध होना चाहिए कि शासन को विवश होकर यह विधेयक वापस लेना पड़े। इसके लिए प्रस्तावों/पत्रों/वक्तव्यों/घोषणापत्रों/व्याख्यानों तथा प्रचार के अन्य तरीकों द्वारा सत्ता पर बैठे हुए नेताओं को झकझोरना है उन्हें होश में लाना है और यदि इतने पर भी नहीं मानते तो जीवन रक्षा के लिए जो कुछ भी किया जा सकता है- करना है। निराश होने की आवश्यकता नहीं है, आर्य समाज को सहयोग दीजिए हम अपना बलिदान देकर भी अपने प्यारे देश के अस्तित्व को अक्षुण्ण रखने में फिर सफल होंगे।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ आषाढ कृष्ण ९ संवत् २०४७ वि.
१७ जून १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

कटु सत्य

भारत कई सौ वर्षों पर्यन्त मुग़ल शासन के अधीन रहा- यह एक ऐतिहासिक सत्य है भले ही वह कटु हो। यह सही है कि मुग़लसाम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिए राजस्थान, महाराष्ट्र तथा भारत के उत्तर दक्षिण तथा पश्चिम में अनेकों हिन्दू राजा उठ खड़े हुए और इस देश में कई सौ वर्षों तक भयंकर लड़ाईयाँ चलती रही। उस समय की लगभग सभी लड़ाइयाँ अपने-अपने राज्य को मुग़ल शासन से स्वतन्त्र कराने तथा अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए होती रहीं और आसेतु हिमाचल सभी भारतीय राजाओं ने सम्मिलित रूप से मुग़ल शासन को इस देश से बाहर करने का प्रयत्न कभी नहीं किया। इसके दो कारण थे (1) भारत का कोई केन्द्रीय ऐडमिनिस्ट्रेशन अथवा संविधान नहीं था। भारत अनेक देशी रियासतों में विभक्त था और वहाँ का राजा अपने राज्य को ही सर्वस्व मानता था। मुसलमानों ने जब इस देश पर प्रथम आक्रमण सिन्ध पर किया था उस समय भी सिन्ध के अतिरिक्त और किसी राज्य से किसी राजा ने उसे मदद नहीं की और अन्ततः वह हार गया और धीरे-धीरे एक के बाद एक राज्य मुग़लिया सल्तनत के अधीन आने चले गये। (2) यह देश उस समय सामाजिक और राजनैतिक दोनों दृष्टियों से बहुत पिछड़ा हुआ था। महाभारत काल के पश्चात प्रारम्भ हुई अवनति निरन्तर बढ़ती जा रहीं थी और सम्पूर्ण भारतीय समाज, जिसे उस समय हिन्दूसमाज का नाम दिया जा चुका था, समष्टिगत भावना को अपने में आत्मसात नहीं कर पाया था। कुरीतियों, अन्धविश्वासों, रूढ़ियों और पाखण्डों ने समाज को जर्जर कर दिया था, जाति-पाँति ऊँचनीच की जड़े काफी गहरी हो चुकी थीं।

मुसल्मानो के आने के पहिले हमारे समाज में महात्मा बुद्ध और भगवान महावीर के सिद्धान्तों का व्यापक प्रभाव अपना असर दिखाने लगा था। सम्राट अशोक ने बौद्धधर्म स्वीकार कर लिया था और हथियार डाल दिए थे। उसके पश्चात् सन् 606 ईस्वी में, कन्नौज का सम्राट हर्षवर्धन बौद्ध हो गया और सन्यासी भेष धारण करके धर्मप्रचार में लग गया। अहिंसा का बोलबाला था, प्राणियों की हिंसामात्र से विरति थी चाहे वे प्राणी दुष्ट दस्यु अथवा धर्मविनाशक ही क्यों न हों। इस काल में इस देश की सैन्यशक्ति कमजोर होती चली गई। जो क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाले थे वे गेरुआ वस्त्र पहिनकर "अहिंसा परमो धर्मः" के प्रचारक बनकर देश देशान्तरों में घूमने लगे। बौद्ध धर्म का खूब प्रचार हुआ। चीन, जापान, जावा, सुमात्रा, श्री लंका, तिब्बत तथा पश्चिमी एशिया के अनेक देश बौद्ध बन गये।

इस समय भारत में कोई केन्द्रीय संविधान अथवा केन्द्रीय प्रशासन न होने के कारण सभी रजवाड़े अपनी-अपनी ढफली अपना अपना राग बजाने में लगे हुए थे। अहिंसा में सराबोर इस जाति ने अत्याचार सहन को अपना धर्म समझ लिया था। लेकिन उसी समानान्तरकाल में अरब में एक कम पढ़ा लिखा मामूली व्यक्ति धर्म के नाम पर तलवार लेकर खड़ा हो गया। दूरदर्शी इतना था कि जिन सामाजिक बुराइयों के कारण हिन्दूसमाज जर्जर हो रहा था उन सबको अपने तथाकथित इस्लाम धर्म से दूर रखते हुए धर्म का एक बहुत ही सस्ता-नुस्खा लेकर आग की तरह पश्चिम एशिया में फैल गया और फिर इस अहिंसावादी देश में बड़े आराम से पग बढ़ाता हुआ चला आया। हमारी जाति में बड़े बड़े शूरवीर राजपूत, मरहठे, सिख, क्षत्रिय योद्धा थे मगर परिणाम यह निकला कि 800 वर्ष तक युद्ध तो होते रहे परन्तु मुग़लिया शासन का अन्त नहीं कर पाए।

मुग़लिया शासन का अन्त करने वाला अंग्रेज था जिसने अपने कूटनीतिक चातुर्य एवं सैन्यबल से इस देश में अपना राज्य कायम कर लिया और यह भोली-भाली हिन्दू जनता फिर खाई से निकलकर कुएँ में गिर पड़ी और 200 वर्ष तक फिर पिसती रही।

आज सौभाग्य से हम सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हैं। अब विजय पराजय के आयाम बदल गये हैं। यद्यपि युद्धों का अपना स्थान है परन्तु मानसिक दृष्टि से गुलाम बनाए रखने के इस वैज्ञानिक युग में कई तरीके ईजाद हो गये हैं जिनमें धर्मान्तरण प्रमुख है। हिन्दुओं को ईसाई मुसल्मान बना लो कालान्तर में राष्ट्रान्तरण अपने आप हो जायेगा। विदेशी साम्राज्य की पुनः स्थापना बिना किसी युद्ध के ही हो जायेगी। कितना सस्ता नुस्खा है, इसलिए (आर्य) हिन्दुओं यदि इस पृथ्वी पर हिन्दू रहकर जीना चाहते हो तो उसका केवल एक ही उपाय है शुद्धि--- शुद्धि---- शुद्धि ----। आर्यसमाज इसी अभियान में समर्पित है इस अभियान को सफल बनाइए अपना सर्वस्व अर्पित करके भी----।

आवश्यक सूचना

दयानन्द संघ के अवैतनिक महोपदेशक, उपदेशक तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट लिखी जा रही है, अतः अपने-अपने कार्य का विवरण साफ-साफ 1 जनवरी 1989 से 31 मार्च, 1990 तक का बनाकर, 10 जुलाई 1990 तक सभा कार्यालय में भेज दें, इसके पश्चात् आने पर सभा का उत्तरदायित्व नहीं होगा।

-मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

श्रीमान् सम्पादक जी,

महोदय,

अत्यन्त प्रसन्नता है कि आपका "आर्यमित्र" पढ़ने में आपके सम्पादकीय लेख तो एक वृद्ध को जवान बना देने में सक्षम हैं। जैसे कि "परिणाम अदूरदर्शी नीतियों का, नान्यः पन्था विद्यते, आदि बड़े ही सत्य और प्रभावी हैं जो कि एक पाठक के हृदय में अपना स्थान कर लेने की कुशलता रखते हैं, और पाठकों को आगामी अंक की प्रतीक्षा करना बड़ा ही असह्य हो जाता है।

-अरुण कुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज बर्रा
कानपुर- 14

वार्षिक चित्र

उ0प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय से प्रत्येक आर्यसमाज को वार्षिक चित्र भेजे जा रहे हैं। जिन्हें प्राप्त न हों, वह सभा कार्यालय से पत्र लिखकर मँगाने की कृपा करें।

प्रत्येक जिला सभा को पहले ही चित्र सं0-3 भेजा जा चुका है। यदि प्राप्त न हुआ हो, तो पुनः पत्र लिखकर मँगा लें।

(मनमोहन तिवारी)
सभामंत्री

आर्यसमाज के निर्वाचन

सभा से संबंधित प्रत्येक आर्यसमाज को विगत वर्षों से यह आदेश बराबर दिया जा रहा है कि अपने आर्यसमाज का निर्वाचन अपनी जिला सभा से सत्यापित कराके भेजा करें। खेद है कि समाज के अधिकारी इस पर ध्यान देने की कृपा नहीं करते हैं और बिना सत्यापित कराये भेज देते हैं।

कृपया इस पर विशेष ध्यान दिया जाये और जिला सभा से सत्यापित कराके ही निर्वाचन भेजने का कष्ट करें।

— सम्पादक

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियाँ

• श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

गतांक से आगे —

इससे पहले सन् 1977 में जनता पार्टी की सरकार बनी, जिसके प्रमुख थे श्री मुरारजी देसाई। उन्होंने अपने प्रधानमंत्रित्व में अल्पसंख्यक आयोग बनाया। प्रश्न होता है, इस आयोग की क्या आवश्यकता थी? सरकारी नेताओं का उत्तर है, अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिये। अल्पसंख्यकों के कौन से अधिकारों का हनन हो रहा है? और कौन हनन कर रहा है? हाँ, यह बात अवश्य है कि उन्हें राष्ट्र की विधि-व्यवस्था पर वरीयता देनी है, उन्हें विधि व्यवस्था से मुक्त करना है, उन्हें राष्ट्र हित पर कुठाराघात करने राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करने और राष्ट्रद्रोह करने और ऐसा सब कुछ करके भी गर्वपूर्वक दनदनाने की छूट देनी है। क्यों? क्योंकि अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की नमाज के दो सज्दे उन्हें चाहिये-- उनकी लोकैषणा की कामना और भोग विलास की इच्छा पूर्ति।

ध्यान रखिये अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक की गणना धार्मिक मान्यताओं के आधार पर ही की गयी है। धार्मिक मान्यताओं को आधार मानकर आरक्षण और सुविधायें प्रदान करना धर्मनिरपेक्षता नहीं अपितु निश्चित और सुनिश्चित रूप से धर्मसापेक्षता, धार्मिक पक्षपात तथा साम्प्रदायिकता है। इस प्रकार का साम्प्रदायिक और मजहबी सरकार से कभी भी न्याय, नैतिकता और राष्ट्रीयता के आचरण की आशा, नहीं की जा सकती।

सन 1980 में जब भारत की प्रधानमंत्री इन्द्रा जी थीं। दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी ने बयान दिया कि 'मुसलमान भारत का वफादार नहीं हो सकता, वह केवल एक देश अरब का वफादार है क्योंकि वह इस्लाम के पवित्र पैगम्बर हजरत मोहम्मद का जन्म देश है।" मैंने तभी इन्द्रा जी को पत्र लिखा। प्रधानमंत्री कार्यालय से मेरी डाक प्राप्ति की सूचना का पत्र भेजा गया। इससे आगे सरकार की जब कोई अन्य प्रतिक्रिया नहीं प्रकट हुयी तो मैंने कम से कम दस समाचार-पत्रों को वह पत्र भेजा। बड़े-बड़े राष्ट्र-भक्त और हिन्दू राष्ट्र के रक्षक होने का दम भरने वाले पत्रों ने भी उसे प्रकाशित नहीं किया। संसद में बैठे हुए मुसलमानों में से एक ने भी बुखारी के उस बयान का प्रतिवाद नहीं किया। मुसलमानों की तो बात छोड़िये, हिन्दु राष्ट्रवाद के गीत गाने वाले किसी एक सांसद ने भी भारत के गृहमंत्री से उस बयान के विषय में न तो कोई प्रश्न किया और न "ध्यान दिलाओ" प्रस्ताव प्रस्तुत कर सरकार से इस विषय में उसकी प्रतिक्रिया ही जाननी चाही।

इस सब के बाद अब---

अब तो भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी सबसे पहले मुसलमानों की भारत के साथ गैर वफादारी की घोषणा करने वाले इमाम अब्दुल्ला बुखारी के दरबार में उन्हें सलाम करने पहुँचे। आप इमाम साहब के दरबार में खड़े रहे और बुखारी साहब सिंहासनरूढ़ बैठे रहे। इन्होंने तो भारत के सम्माननीय संवैधानिक तथा सरकार प्रमुख के पद की गरिमा तक सुरक्षित नहीं रखी और इस प्रकार भारत राष्ट्र और उसकी राष्ट्रीय दस्तावेजी धरोहर उसके संविधान की अस्मिता को भारत यहीं पर रहते हुए भारत का खाकर भारत-द्रोह करने को प्रत्येक समय तैयार रहने वाले व्यक्ति के चरणों में डाल दिया। इन्हें यह तो ध्यान रहना चाहिये कि यह अब केवल विश्वनाथ प्रताप नाम व्यक्ति नहीं अपितु एक सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र के प्रधानमन्त्री भी हैं। प्रिय पाठकगण! क्या प्रधानमंत्री के पद की गरिमा को इन्होंने इस कृत्य द्वारा अपमानित नहीं किया है इन्हीं बुखारी ने कुछ वर्ष पहले कहा था-- 'पाकिस्तान को भारत के मुसलमानों के विषय में बोलने का हक है।" प्रधानमंत्री महोदय कहते हैं कि-- "पाकिस्तान को भारत के घरेलू मामले में बोलने का कोई अधिकार नहीं है।" कोई विश्वनाथ प्रताप सिंह से पूछे कि "प्रधानमंत्री जी, जब आपके धर्मगुरु बुखारी साहब पाकिस्तान को भारत के मुसलमानों के बारे में बोलने का अधिकार मानते है तो फिर आपके इस झुठलाने का क्या अर्थ? आपको इन्हीं बुखारी जी ने तो सैयद शहाबुद्दीन और ओबेदुल्ला खाँ को राज्य सभा का सदस्य बनाने को कहा था और आपने भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को जूते की नोक पर उड़ाकर भारत राष्ट्र का घोर अपमान करने वाले इस देशद्रोही को राज्य सभा का सदस्य बनाया। इन्हीं बुखारी साहब की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही तो आपने पचास लाख रूपये जामा मस्जिद की मरम्मत के लिये प्रदान किये हैं।

दूसरी ओर कश्मीर में आपके कृपापात्र गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद क्या खेल खेल रहे हैं? क्या आप इस विषय में सावधान हैं? क्या खुलम-खुल्ला गृहमन्त्री जी पर उग्रवादियों से उनके सम्बंधों के आरोप नहीं लग रहे हैं और क्या आपके पास तक यह सूचनायें नहीं पहुँच रहीं? यह क्या आप नहीं जानते कि गृहमन्त्री ने अपनी लड़की को बचाने के लिये तीन उग्रवादियों को जेल से मुक्त करा दिया और तीन उच्चाधिकारियों को मुक्त न करा सके उनका मारा जाना पसन्द किया किन्तु उनके बदले उग्रवादी मुक्त नहीं किये। क्या कश्मीर घाटी में आधी रात को हिन्दुओं का दरवाजा पीटते हुये यह नहीं कहा जाता कि--"पण्डिताइनों को हमारे हवाले कर खुद हिन्दुस्तान भाग जाओ। बच्चों की चिन्ता मत करो, हम इनका खतना कर अपने में मिला लेंगे। तुम अपने पैसे जम्मू एण्ड कश्मीर बैंक" में जमा कर रफू हो जाओ।" क्या आपको यह पता नहीं कि कश्मीर घाटी के हिन्दु युवकों को "जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट के झण्डे तले आने को कहा जा रहा है? और हिन्दू युवतियों को देखकर आवाज लगायी जाती है कि "किसी गुलाम कादर की, किसी मोहम्मद रसूल की हो जाओ?" क्या आपको यह पता है कि कश्मीरी पण्डिताइनों के सुहाग चिन्ह "डेमुर" को पहन कर निकलने वाली युवती का सिर कलम कर देने वाले आतंकवादी को पच्चीस सहस्त्र रुपये पुरस्कार की घोषणा "जम्मू कश्मीर" लिबरेशन फ्रन्ट ने की हुई है।

क्या आपको यह पता है कि लखनऊ पहुँचे श्री बी०लाल-- जिनकी दुकान कश्मीर घाटी में बम से उड़ा दी गयी--- उनका कहना है कि हम महीना भर इन्तजार करेंगे। भारत सरकार ने न बसाया, न मदद की तो वापस कश्मीर जाकर जे०के०एल०एफ० के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे और जैसा वह कहेंगे- हम करेंगे।" क्या इसका यह अर्थ नहीं है कि वापस जाकर जीवित रहने के लिये इन्हें इस्लाम ग्रहण करना पड़ेगा? और कम से कम मैं ऐसा मानने को तैयार नहीं हूँ कि आप ऐसा ही चाहते भी हैं या हिन्दुओं को मुसलमान बनवाकर भारत को दारूल इस्लाम में परिवर्तित कराने की आपकी योजना या कम से कम ऐसी इच्छा है। परन्तु अभी तक की आपकी रीति-नीति यह अवश्य सिद्ध करता है कि आप गाँधी जी के मुस्लिम तुष्टीकरण के तो प्रबल पोषक हैं ही, जिसकी परिणति हिन्दू विनाश के अतिरिक्त अन्य कुछ हो ही नहीं सकती और हिन्दू विनाश का अर्थ है, भारत-भारतीयता का सर्वनाश।

— शेष पृष्ठ १० पर

— सभा का वर्ष —

हर्ष का विषय है कि सभा का वर्ष 31 मार्च 1990 को समाप्त हो गया है। अतः अधिकारियों, अंतरंग सदस्यों एवं निरीक्षकों को सूचित किया जाता है कि वह अपनी कटी हुई रसीदें हिसाब और अवशेष धन 15 जून 90 तक अवश्य भेजने की कृपा करें, ताकि सभा का प्राप्तव्य धन संबंधी नियम प्रतिनिधि स्वीकारी में बाधक न रहे।

2-जिला उपसभाओं से भी अनुरोध है कि वह अपनी जिला सभा का वार्षिक विवरण सभा की वार्षिक रिपोर्ट में सम्मिलित करने हेतु 30 जून सन 1990 तक अवश्य भेजने की कृपा करें। बाद में आये विवरण प्रकाशित न हो सकेंगे।

—मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

महिला मण्डल

संस्कृत धर्म-शास्त्रीय मान्यताएँ एवं स्त्रियों के विशेषाधिकार

• डॉ॰ आशा रानी राय
उप प्रधान आ॰प्र॰ सभा कानपुर उत्तर प्रदेश

"स्त्रीशूद्रो नाऽधीयताम्" अर्थात् स्त्रियों व शूद्रों को अध्ययन का अधिकार नहीं है, कथित स्वार्थी जनों के वचनों ने स्त्रियों को अज्ञानवश जीवित जलने तक के लिए {सतीप्रथा} बाध्य तथा देवदासी ["जय सोमनाथ" लेखक के॰एम॰ मुन्शी] बनने के लिए विवश किया। वैदिक साहित्य व गृह्यसूत्रों आदि में कहीं ऐसे प्रमाण नहीं हैं, वरन् वेदों में तो स्त्रियों के सर्वविद्या से विभूषित होने के प्रमाण हैं। यजुर्वेद के 10/26/27 के मन्त्र, जिसके देवता राजपत्नी है, में बताया है कि राजाओं की स्त्रियाँ न्याय, विद्या व राजनीति की शिक्षा दूसरों को दें, जिस प्रकार चक्रवर्ती राजा न्याय करता है, उसी प्रकार राजपत्नी स्त्रियों का न्याय यथोचित करें।

[स्योना ऽसि सुषदा ऽसि क्षत्रस्य योनिरसि। स्योनामासीद सुषदामासीद क्षत्रस्य योनिमासीद।। निषसाद धृतव्रतो वरुण॰ पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः।।] ऋग्वेद 4/22/7 में भी कहा है कि स्त्रियों का न्याय स्त्रियाँ करें, ऐसा करने पर राजधर्म दृढ़ होता है। [अत्राह ते हरिवस्ता उ देवीरवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसार॰। यत् सीमनु प्रमुचो बद्बधाना दीर्घामनु प्रसितिं स्यन्दयध्यै।।] यजुर्वेद 12/64 में नारी दुष्टों को भयभीत करने वाली कहा। ऋग्वेद 6/6/13 एवं ऋग्वेद 7/31/2 में कहा कि स्त्रियाँ भूगर्भादि विद्यादि को जानने वाली होवें। यजुर्वेद 30/15 में कहा कि स्त्री को काल गणना के सूक्ष्म अवयवों को भली प्रकार जानने वाली होना चाहिए। ऋग्वेद 10/114/3 में स्त्री को "चतुष्कपर्दा" कहा गया है, जिसका अर्थ है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी जीवन के चार तत्वों को जानने वाली अथवा चतुष्कोण वेदी की निर्माण प्रक्रिया को जानने वाली कहा है। ऋग्वेद 10 146 सूक्त का देवता ही "अरण्यानी' है, जिसका अर्थ है सन्यास आश्रम को प्राप्त होने वाली विदुषी नारी। उक्त उदाहरणों व प्रमाणों से स्पष्ट है कि ऐसी कोई भी विद्या या ज्ञान नहीं है जो स्त्रियों के लिए गोप्य या वर्ज्य हो, जिसके कारण स्त्री समाज में निम्न या अधिकारों के लिए कातर हो अपितु स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अथवा कहीं-कहीं पुरुषों से अधिक अधिकार प्राप्त थे।

आज कुछ विद्वान जन स्त्रियों के उपनयन संस्कार अथवा यज्ञोपवीत धारण करने को उपहास में लेते हैं। स्मृतिचन्द्रिका में उद्धृत हारीत धर्मसूत्र में वर्णित है कि स्त्रियों के दो प्रकार के {1} ब्रह्मवादिनी {2} सद्योवधू। इनमें ब्रह्मवादिनी को उपनयन करना, अग्निहोत्र करना, वेदाध्ययन करना तथा अपने घर में ही भिक्षाटन करना पड़ता था, किन्तु सद्योवधुओं का विवाह के समय उपनयन कर दिया जाता था। गोभिलगृह्य सूत्र {1} प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीमभ्युदानयन् जपेत सोमो ददद गन्धर्वायेति।। 2/1/19 के अनुसार लड़कियों को उपनयन के प्रतीक रूप में यज्ञोपवीत धारण करना पड़ता था। महाभारत के वनपर्व {2} "ततस्ताम-नवद्याङ्गी ग्राहयामास स द्विज। मन्त्रग्रामं तदा राजन्नथर्वशिरसि "श्रुतम्"। वनपर्व 305/20 में आया है कि एक ब्राह्मण ने पाण्डवों की माता को अथर्वशीर्ष के मन्त्र पढ़ाए थे। यम ने भी लिखा है कि प्राचीन काल में मुञ्ज की मेखला बाँधना नारियों के लिए भी एक नियम था, उन्हें वेद पढ़ाया जाता था, वे गायत्री मन्त्र का उच्चारण करती थीं, उन्हें उनके पिता, चाचा या भाई पढ़ा सकते थे, उन्हें मृग चर्म वल्कल वस्त्र नहीं पहनना पड़ता था, न वे जटायें रखती थीं। [यमोपि। पुराकल्पे कुमारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते। अध्यापनं च वेदाना सावित्रीवाचनं तथा। पिता पितृव्यो भ्राता वा नैनामध्यापयेत्परः। स्वगृहे चैव कन्याया भैक्षचर्या विधीयते। वर्जयेदजिनं चीरं जटाधारणमेव। संस्कार प्रकाश-पृष्ठ 402-403, स्मृतिचन्द्रिका {भाग-1 पृष्ठ- 24}

मध्य एवं वर्तमान युग की अपेक्षा प्राचीन काल में स्त्रियों की शिक्षा संबंधी व्यवस्था अत्यन्त उच्चकोटि की थी। अपितु विश्वतारा, अपाला, घोषा आदि विदुषियाँ ऋषिकाएं थीं, जिन्होंने वेदों के मंत्रों का साक्षात्कार किया था। आश्वलायन गृह्यसूत्र 3/4 में गार्गी वाचक्नवी, वडवा प्रातिथेयी, एवं सुलभा मैत्रेयी नामक तीन नारी शिक्षिकाओं के नाम आते हैं। पाणिनी {4-1-59 एवं 3/3/21} की काशिका वृत्ति में आचार्या एवं उपाध्याया नामक शब्दों के साधनार्थ व्युत्पत्ति की है। पातञ्जलि के महाभाष्य {भाग-2 पृष्ठ-205, पाणिनी के 4/1/14 के वार्तिक 3 पर} में बताया कि क्यों व कैसे ब्राह्मण नारी "आपिशला" {जो आपिशलि का व्याकरण पढ़ती है} एवं क्यों "काश-कृत्स्ना" {जो काशकृत्स्न का मीमांसा ग्रन्थ पढ़ती हैं} कही जाती है। उन्होंने औदमेघा उपाधि की व्युत्पत्ति की है, जिसका तात्पर्य है, "औदमध्या नामक स्त्री शिक्षिका के शिष्य"। गोभिल- गृह्यसूत्र {2 1/19-20} एवं काठकगृह्यसूत्र {25 -23} से पता चलता है कि वधुएं पढ़ी लिखी होती थीं क्योंकि उन्हें मन्त्रों का उच्चारण करना पड़ता था। स्पष्ट है कि सूत्रकाल में स्त्रियाँ वेद मंत्रों का उच्चारण करती थीं। वात्स्यायन के कामसूत्र 1/2/1-3 में आया है कि लड़कियों को अपने पिता के घर में कामसूत्र एवं अन्य सहायक अंग यथा 64 कलाएँ {गान, नृत्य, चित्रकला आदि} सीखने चाहिए एवं विवाहोपरान्त पति की आज्ञा से इन्हें करना चाहिए। 64 कलाओं में प्रहेलिकाएँ पुस्तकवाचन काव्य समस्या, पूरण पिंगल व अलंकार ज्ञान भी सम्मिलित थे। राजशेखर आदि के काव्य संग्रहों से विज्जा, सीता आदि ऐसी प्रसिद्ध कवयित्रियों के बारे में पता चलता है।

न केवल शैक्षिक पृष्ठभूमि अपितु सामाजिक रूप से भी एवं परिवार में स्त्रियों को सम्मान प्राप्त था। याज्ञवल्क्य {1-105} के अनुसार बच्चों पुत्रियों, बहनों, जिनका विवाह हो गया हो, किन्तु अभी अपने माता-पिता व भाइयों के साथ हों, गर्भवती स्त्रियों, अविवाहित पुत्रियों अतिथियों व नौकरों को घर के मालिक मालकिन से पहले भोजन खिलाना चाहिये। मनु {4/114} विष्णुधर्म सूत्र {67-39} के अनुसार "कुल की नवविवाहित लड़कियों अविवाहित पुत्रियों व गर्भवती नारियों को अतिथियों से भी पहले खिलाना चाहिये।"

आश्रम परम्परा में भी स्त्रियाँ चारों आश्रमों का भली प्रकार सेवन करती थीं, यहाँ तक स्त्रियाँ सन्यास धारण करती थीं। पातञ्जलि ने अपने महाभाष्य में शंकरा नामक परिव्राजिका का उल्लेख किया है। कालिदास ने अपने नाटक मालविकाग्निमित्रम् में पण्डिता कौशिकी को सन्यासी के वेश में दर्शाया है {1/14}।

मनुस्मृति में मनु ने कन्याओं को सम्पत्ति पर समानरूप से पुत्र के समान अधिकारी बताया--

अविशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मतः।
मिथुनानां विसर्गादौ मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत्।।

इसी प्रकार प्राचीन ग्रन्थों ने कहीं बाल विवाह को पोषण नहीं किया गया अपितु अथर्ववेद में "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिं" अर्थात् पूर्ण युवावस्था को प्राप्त कन्या पति का वरण करे, इसी प्रकार ऋग्वेद 21/35/31 में भी युवावस्था में विवाह का विधान है। श्रौतसूत्रादि में "इयं मन्त्रं पत्नी पठेत्" से भी कन्या का समान अधिकार व विदुषी होने का प्रमाण है, विवाह के अवसर पर दोनों पक्षों के पुरोहित मन्त्रो-उच्चारण नहीं करते थे, अपितु कन्या व वर से करवाते थे। ऋग्वेद के 10/85/5 में विधवा-विवाह का प्रमाण है। मनुस्मृति के अनुसार कन्या को उपहार में दिए गए धन को यदि वर पक्ष के लोग ले लेते हैं तो वे पाप के भागी होंगे-
स्त्री धनानि तु ये मोहादुपजीवन्ति बान्धवाः।
नारीयानानि वस्त्रं वा ते पापा यान्त्यधोगतिम्।

जो पति पक्ष के बान्धव स्त्रीधन को लोभ से ले लेते हैं, वे पापी अधोगति को जाते हैं, यहाँ तक कि प्राचीन काल में विवाह अवसर पर कहे गए वचन भी स्त्री धन के अन्तर्गत आते थे।

ऋग्वेद 10/85/33 में लोगों को विवाह के समय कन्या की ओर देखने को कहा है- यह कन्या मंगलमयी है, एकत्र होवो व इसे देखो, इसे आशीष देकर ही तुम लोग अपने घर जा सकते हो"। आश्वलायन गृह्यसूत्र {1/8/7} के अनुसार वधू को घर ले जाते समय वर को चाहिए कि वह प्रत्येक निवेश स्थान {रुकने के स्थान} पर दर्शकों को ऋग्वेद 10/85/33 के उपर्युक्त मन्त्र के साथ दिखाये, इससे स्पष्ट है कि उन दिनों वधुओं द्वारा अवगुण्ठन {घूँघट} नहीं धारण किया जाता था। रामायण {युद्धकाण्ड 116/28}" विपत्ति के समय, युद्धों में स्वयंवर में, यज्ञ व विवाह

— शेष पृष्ठ ६ पर

तिरंगा झण्डा और कम्यूनिज्म

□ व्याख्यानदाता: पं० बुद्धदेव विद्यालंकार
□ प्रस्तोता: डा० मदन मोहन जावलिया
भीलवाड़ा (राजस्थान)

हमारा राष्ट्रीय झण्डा तिरगा है, न, केवल आधुनिक कांग्रेसी सत्ता के अधीन राष्ट्र का ही, वरन् प्राचीन वैदिक राष्ट्र का भी। किन्तु वैदिक तिरंगे ध्वज में चार रंग हैं। आधुनिक तिरगे में श्वेत पीत एवं हरा रंग है। किन्तु यह हरा रंग दो रंगों से बना है, नीले एवं लाल से। इस तरह इसमें भी चार रंग हुए। हरा कोई रंग नहीं है। वह तो मिश्रण है, वैसे ही जैसे तांबा, एवम् जस्ता से मिलकर पीतल बनता है, यह सर्वविदित है।

हमारे वर्ण भी चार हैं। ब्राह्मण श्वेत वर्ण का प्रतिनिधि है, वह सरस्वती पुत्र है क्योंकि सरस्वती भी "कुन्देन्दु तुषारहार धवला" है। ब्राह्मण भी शुद्ध सात्विक आत्मा वाला है, शान्ति का। प्रतीक है और यों भी शब्द स्पर्श रूप, रसगंध की सभी ज्ञानेन्द्रियाँ क्रमश कान, त्वचा आँख, जिह्वा, नासिका एवं उनके संचालक बुद्धि, चित्त एवं आत्मा का मूल निवास स्थान मुखमंडल में ही है। ब्राह्मण "ब्रह्मा" के मुख से उत्पन्न हुआ का अलंकार भी यही बनाता है। क्षत्रिय का रंग लाल है। वह शौर्य का, वीरत्व का, अन्याय-निवारण के लिए रक्त की होली खेलने का सूचक है। वैश्य पीले रंग का, सोने का [ ] का प्रतिनिधि है। कृषक एवं वणिक का काम धन उत्पादन है जिसे वह चाहे अपने देश की धरती से उत्पन्न करे या अन्य देश से व्यापार द्वारा। शूद्र नीले रंग का प्रतिनिधि है। शूद्र का अर्थ है। जिसे अवसर दिया गया। या जन्मना जायते शूद्रः 'जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं किन्तु फिर अपने-अपने वर्ण का चुनाव करना पड़ता है। और द्विज बनना पड़ता है। किन्तु उस अवसर से लाभ उठाकर किसी वर्ण के उपयुक्त नहीं हो सकता वह शूद्र ही रह जाता है। शूद्र हेय दृष्टि से देखन योग्य नहीं है। उपर्युक्त तीनों वर्ण जिस तरह समाज-व्यवस्था में अपना-अपना कर्तव्य करते हैं, उसी तरह शूद्र भी अपना कार्य इन वर्णों की सेवा करता है, श्रम करता है। शूद्र धर्म तो सब उन्नतियों का मूल है। नीला रंग स्पर्द्धा का प्रतिनिधि है। इसमें जलन नहीं, जलन उत्पन्न होने पर यही धर्म कम्यूनिज्म बन जाता है। शूद्र धर्म में अन्य वर्णों के प्रतिस्पर्द्धा का भाव रहता है। वह आगे बढ़ना चाहता है, परन्तु दूसरों को नीचे नहीं गिराना चाहता। जबकि कम्यूनिज्म इन प्रासादों, अट्टालिकाओं पर कोधकर इन्हें कुटिया के समान बनाना चाहता है। अपनी कुटिया को भी प्रासाद बनाने की बात उसे स्वीकार नहीं।

परन्तु कम्यूनिज्म में एक गुण भी है। वह है उसकी अत्याचार, अन्याय के प्रति रोष की भावना और तदर्थ क्षात्रत्व धारण। इसलिये कम्यूनिस्टों के ध्वज का रंग लाल ही लाल है। उसमें श्वेत, नीला, पीला भी, किन्तु लाल नहीं उनमें क्षात्रत्व नहीं, अहिंसा ही अहिंसा है। अन्याय निवारण के लिये, तीसरी श्रेणी वाले व्यक्तियों के लिए कि जो प्रेम के बदले में शत्रुता बढ़ाने वाले हैं। कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं, कि जिससे उसकी चिकित्सा की जा सके। झगड़ा केवल "भी" और "ही" का है। वैदिक ध्वज में श्वेत भी है, लाल भी है, पीला भी है नीला भी है। किन्तु कम्यूनिज्म वाले झण्डे में लाल ही है। कांग्रेसी राष्ट्रीय झण्डे में सफेद भी है, पीला भी है। और नीला भी है किन्तु लाल नहीं।

सबसे बड़ी समस्या है समाज में सम्पत्ति के वितरण की। इसके लिए तीन वाद प्रचलित हैं। जन्माधिकारवाद, श्रमाधिकारवाद और वैदिक सदुपयोगवाद। जन्माधिकारवाद में भय और उत्साह का अभाव है। धनवान् को तो भय नहीं कि उसका पैसा उसके पास से छिन सकता है। इसलिये वह आलसी हो जाता है, अत्याचारी हो जाता है, निर्बुद्धि रह जाता है, समाज के कोई काम नहीं आ सका। केवल धनी बाप का पुत्र होने से आनन्द भोगता है और कहता यह है कि अपने 2 कर्मों का फल है। सत्कर्मों के कारण धनी पिता के घर जन्म लिया-निर्धन ने निर्धन के घर जन्म लिया।

इस वाद के अनुसार निर्धन में कोई उत्साह उत्पन्न हो नहीं सकता, अपने स्थिति सुधारने का। कारण ईश्वर निर्मित व्यवस्था में उसका कोई वश चल नहीं सकता। इसलिये उसमें उत्साह का अभाव रहता है। इस तरह समाज में आलस्य एवं निष्कर्मण्यता, अन्याय आदि का साम्राज्य फैल जाता है। अत जन्माधिकारवाद संसार का परम शत्रु है।

श्रमाधिकारवाद अधिकार पर अधिक बल देता है जबकि वैदिक व्यवस्था कर्तव्य पर। हमारे श्रमार्जित धन पर हमारा पूर्ण अधिकार है। हम उसका जो जी चाहे कर सकते हैं। एक श्रमिक का 5000/- रु0 अपनी कमाई से बचाये। वह अपने मित्र को चाय पिलाना चाहता है अपने प्रेम के कारण और ईंधन के स्थान पर नोट डालता है। क्या उसे अधिकार है इस तरह धन के नाश का? झट इस वाद वाले कह देंगे। हाँ उसे अधिकार है जबकि वैदिक वाद कहेगा नहीं। उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं। उसी तरह एक विधवा स्त्री के किसी पुरुष से अनैतिक संबंध के कारण उत्पन्न सन्तान का वध यदि वह स्त्री करती है और उसे रोकने वालों को वह यह उत्तर देती कि "तुमको क्यों?" यह तो मेरे कारखाने का माल है। मैं इसे नष्ट कर सकती हूँ। अब बताइये यह सामाजिक एवं वैधानिक अपराध है या नहीं? वास्तव में यह सरासर अपराध है। इस तरह से कम्यूनिज्म की यह श्रमाधिकार वाली अट्टालिका भी ढह जाती है।

वैदिक सदुपयोगवाद का संचालन ज्ञान एवं संयम से होता है। दोनों की विद्यमानता अनिवार्य है। एक पालतू बन्दर ने अपने स्वामी के नाक, कान, मुख पर उड़-उड़ कर बैठने वाली मक्खी का मारने के उद्देश्य से गर्दन पर प्रहार किया और अपने उत्तम उद्देश्य के होते हुए भी ज्ञान के अभाव में यह दुष्कर्म कर दिया।

संयम का अभाव भी हानिकारक है। एक मजिस्ट्रेट एक वैद्यजी से जुकाम की औषधि लाये। उन्हें वैद्यजी ने यह निर्देशन भी दे दिया था कि घी तेल तथा अन्य ठंडे पदार्थ न खाना। उन्होंने पूर्ण प्रतिज्ञा कर ली पर घर के सामने नित्य पानी बतासे वाले के उस दिन भी बार-बार आग्रह करने तथा पहले की अपेक्षा अधिक स्वादिष्ट बना लाने का विश्वास दिलाने पर उन्होंने भरपेट खाये और जुकाम ने जोर पकड़ा।

वैद्यजी ने दूसरे दिन इस तीव्रता का कारण पूछा तो लज्जित हो गए। इसलिये सदुपयोग दोनों गुणों के होने पर ही हो सकता है। बिना ज्ञान के संयम किस काम का और बिना संयम ज्ञान निरर्थक है।

घुड़दौड़ में प्रारम्भ में तो साम्य हो सकता है। होना ही चाहिये। पर अन्त में परिणाम में भी साम्यवाद हुआ तब तो घुड़दौड़ हो ली। उसी तरह परीक्षारंभ में तो समानतया साम्य आवश्यक है पर परिणाम में साम्य होगा तब तो दिवाला ही निकल गया न। बा[ ] का और देश की प्रगति का? साम्यवादि[ ] की रटट लगाया करत[ ] जिसका जनाजा उपर्युक्त युक्तियों से निक[ ] ही चुका है। हमारा [ ] नारा तो उनके प्रारम्भिक [ ] अक्षर को हटाक[र] बोलता है अर्थात् [ ], गुण, योग्य[ता] गुण अथवा योग्यता के अनुसार समा[ज] में स्थान होना चाहिए। आधुनिक सभ्यत[ा] के सिद्धान्तानुसार साम्यवादियों ने अपूज्य[ों] की पूजा करना तो न सीखा, यह त[ो] ठीक है, किन्तु पूज्यों की पूजा या आद[र] जो कि आवश्यक है, वह भी तो न[हीं] सीखा जो कि वैदिक साम्यवाद या सदुपयोग वाद का मूल है जिसका उपदेश ही य[ह] है कि केवल अपने लिये ही न कमाओ[ ] दान करना प्रथम आदेश है, दान [ ] चार तरह से होता है। श्रद्धया देयं अश्रद्धया देयं, ह्रिया देयं, भिया देयं रहीम खानखाना दान देते समय नी[ची] दृष्टि रखते थे। गंग कवि ने उनसे दे[ ] में पूछा:-

कहा ते सीखी, बान जू ऐसी देनी देन
ज्यों-ज्यों कर ऊँचो उठे, त्यों-त्यों नी[चे] नैन।।

तब रहीम ने गंग कवि का उत्तर दिया:
देन वाला देत है, जो देता दिन रैन
लोग भरम मेरो धरे, याते नीचे नैन।

श्रद्धया देयं का अर्थ है प[र] श्रद्धा नहीं, फिर सत्संग से श्रद्धा हो[ ] दे दे। जैसे एक सभा में किसी विद[्वान]

— शेष पृष्ठ ११ पर

ईसाई और मुसलमानों को विशेष अधिकार का प्रावधान

• श्री गोविन्द सिंह
मंत्री, आर्यसमाज, अजमेर

राज्य सभा में नव बौद्धों को हरिजन अर्थात् अनुसूचित जाति को दिये गये विशेषाधिकार सम्बन्धी एक बिल पास किया गया है। अंग्रेजी पत्रों में प्रकाशित राज्य सभा की कार्यवाही सम्बन्धी समाचार में भी इस बात का उल्लेख है कि ईसाई और मुसलमानों को भी इसी प्रकार के विशेषाधिकार देने सम्बन्धी जो संशोधन पेश किया गया है, अधिकांश सदस्य उसके पक्ष में थे, किन्तु इस आश्वासन के बाद कि स्वयं सरकार ईसाई और मुसलमानों को भी नव बौद्धों के समान विशेष अधिकार दिये जाने के पक्ष में शीघ्र कानून प्रस्तावित करेगी, यह संशोधन वापस ले लिये गये।

जांत-पांत का कलंक-

ऐसा लगता है कि वर्तमान सरकार ने तथा राज्य सभा के सदस्यों ने इस प्रकार के प्रावधान के दूरगामी परिणामों पर विचार नहीं किया। यदि इस प्रकार का कोई कानून बनता है तो उसके कितने दूरगामी और हानिकारक परिणाम होंगे, यह हरिजनों को दिये गये वर्तमान विशेषाधिकारों के इतिहास से स्पष्ट होगा। अंग्रेजों ने न केवल हिन्दू मुसलमानों के मनभेदों का अपना शासन बनाये रखने के लिए सदैव उपयोग किया, अपितु उन्होंने हरिजनों को भी हिन्दुओं से पृथक करने का प्रयत्न किया। जांत-पांत और छुआछूत हिन्दू धर्म और समाज का एक ऐसा कलंक है, जिसकी जितनी निन्दा की जाय कम है। इस कलंक को दूर करने के लिये ऋषि दयानन्द जैसे धार्मिक और सामाजिक सुधारकों के अतिरिक्त महात्मा गाँधी जैसे राजनैतिक नेताओं ने अनेक प्रयत्न किये।

गाँधी जी का अनशन-

किन्तु हिन्दू समाज और स्वयं तथाकथित अछूतों की अपनी जाति प्रथा के कारण इस कलंक का निराकरण नहीं हो सका और इस निराशाजनक स्थिति के विरुद्ध डाक्टर अम्बेडकर जैसे स्वाभिमानी हरिजन नेता ने भी दलितों द्वारा हिन्दू धर्म त्यागने की घोषणा कर दी, जिसका लाभ उठाकर न केवल ईसाई और मुसलमान धर्म प्रचारकों ने उन्हें अपना-अपना धर्म स्वीकार करने का निमन्त्रण दिया अपितु ब्रिटिश सरकार ने भी कम्युनल अवार्ड की घोषणा कर उन्हें हिन्दुओं से पृथक विशेष राजनैतिक अधिकार दिये जाने की घोषणा कर दी, जिसके विरुद्ध महात्मा गाँधी जैसे हरिजनों के समर्थकों को आमरण अनशन करना पड़ा, और परिणामस्वरूप डॉ0 अम्बेडकर के साथ हुए समझौते के अनुसार दलितों को हिन्दू धर्म त्यागे बिना राजनीति तथा नौकरियों आदि में सुरक्षित स्थान दिये गये।

विरोधी आन्दोलन-

गत चालीस वर्षों मे इस विशेषाधिकारों के व्यवहार में क्या लाभ और हानियां सामने आयी हैं, इनका कुछ आभास इन आरक्षणों के विरुद्ध हुए देशव्यापी आन्दोलनों से सर्वविदित है। और यदि ईसाई और मुसलमानों को इसी प्रकार विशेष अधिकार दिये गये तो उसके विरुद्ध और भी अधिक देशव्यापी आन्दोलन की सम्भावना है।

हरिजन छुआछूत की समस्या का कारगर और अन्तिम उपाय तो यही हो सकता है कि हिन्दू समाज में कोई व्यक्ति अपनी जन्मजाति के कारण ऊँच-नीच या छूत-अछूत न रहे, जैसा स्वामी दयानन्द चाहते थे, किन्तु सदियों से प्रचलित यह समस्या इतनी आसानी से हल होने की सम्भावना नहीं है और अंग्रेजी राज्य में तथा उसके बाद स्वाधीन भारत में जात-पांत और छुआछूत का राजनैतिक लाभ इतना आकर्षित सिद्ध हो रहा है कि इस कलंक को मिटाने के स्थान में उसे लाभप्रद और उपयोगी बनाकर चिरस्थायी करने का प्रयत्न किया जा रहा है, किन्तु यहाँ आरक्षण के गुण दोषों पर विवेचन करना अभिप्रेत नहीं है। प्रश्न केवल उस प्रस्तावित बिल की समीक्षा करने का है, जिसके द्वारा जो हिन्दू ईसाई और मुसलमान बन या बनाये गये। उन्हें भी दलितों के समान विशेषाधिकार दिये जाने का सुझाव है।

छुआछूत ईसाई और मुस्लिम धर्म में नहीं-

इस्लाम और ईसाई धर्म का कोई भी निष्ठावान अनुयायी यह नहीं कह सकता कि उसे धर्म में जांत-पांत या छुआछूत के भेदभाव के लिये कोई स्थान है। इसलिये जो दलित या अछूत इन धर्मों में सम्मिलित हुए हैं वह वहां जाते ही अछूत या दलित नहीं रहे।

डॉ0 अम्बेडकर की मान्यता-

डॉ0 अम्बेडकर ने जब उनके धर्मान्तरण की बात कही तो उसका भी यही अर्थ था कि तभी तक यह अछूत या दलित हैं, जब तक वे हिन्दू हैं। दूसरा प्रश्न यह है कि स्वयं डॉ0 अम्बेडकर ने अपने तथा अपने दलित अनुयायियों के लिये ईसाई मिशनरियों और मुसलमान मौलवियों का निमन्त्रण स्वीकार कर उनमें से किसी एक धर्म को क्यों नहीं चुना? इसका उत्तर स्वयं अम्बेडकर ने यह कहकर दिया कि दलितों के कल्याण के लिये हिन्दू धर्म त्यागना आवश्यक होने पर भी वह भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता का त्याग नहीं करना चाहते। बौद्ध यद्यपि सनातनीय पौराणिक धर्म के अंग नहीं हैं, किन्तु वह सांस्कृतिक और राष्ट्रीय दृष्टि से शुद्ध भारतीय हैं। इतना नहीं स्वयं अनेक हिन्दू धर्माचार्य बुद्ध को अवतार मानकर हिन्दू धर्म की व्यापक परिभाषा में उन्हें सम्मिलित करते हैं इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वयं डॉ0 अम्बेडकर यह अनुभव करते थे कि दलितों का हिन्दुओं से पृथक होकर ईसाई या मुसलमान धर्म स्वीकार करना न स्वयं दलितों के हित में है और न ही देश के व्यापक हित में। दुर्भाग्य से बौद्ध और यहां तक कि सिखों में भी उनकी धार्मिक मान्यताओं के विपरीत जांत-पांत और छूआछूत विद्यमान है।

राजनैतिक उद्देश्य-

पंजाब में सिखों को सरदार पटेल ने केवल विशिष्ठ राजनैतिक कारणों से विशेष अधिकार देना स्वीकार किया था। यद्यपि उन्होंने स्पष्ट किया था कि दलितों को दिये गये विशेष अधिकार तभी तक लागू रह सकते जब तक वे हिन्दू बने हुए हैं। स्पष्ट है कि वर्तमान जनतादल की सरकार ने नव बौद्धों को भी केवल इसी प्रकार के राजनैतिक लाभ की आशा से यह अधिकार दिये हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं, किन्तु यदि ईसाई और मुसलमान होने पर भी इसी प्रकार के विशेषाधिकार उन्हें प्राप्त हों तो इससे हिन्दुओं की धार्मिक दृष्टि से ही नहीं

—शेष पृष्ठ ११ पर

स्वास्थ्य-सुधा

पत्रांश- "स्वामी, चरणस्पर्श। श्रीमती करेशनी देवी आयु 45 वर्ष के पेट में गुर्दे के स्थान पर पिछले 25 वर्षों से दर्द रहता है। दो वर्ष से पेट में दर्द का गोला घूमता महसूस होता है। अंग्रेजी दवाइयों से ऊबकर एवं निराश होकर आपको पत्र लिख रहा है।"

-रामकिशोर लेखालिपिक, लार्डकृष्णा टैक्सटाइल मिल, सहारनपुर।

समाधान- करेशनी देवी जी हेतु आयुर्वेदिक-उपचार लिख रहा हूँ। परमात्मा-कृपा से स्वास्थ्य-लाभ मिलेगा। सप्ताह में कम से कम एक दिन केवल-पपीता खायें।

गारोलल (चरक) दो गोली और नीरी (एमिल) एक गोली- प्रातराश, मध्याह्न और रात्रि भोजन बाद लेकर, अमाइकार्डियल (एमिल) दो ढक्कन समानजल के साथ पिया करें। दो मास बाद पुन परामर्श लेवें।

समस्या-"मैं कई वर्षों से जुखाम से पीड़ित रहता हूँ। मेरी आयु 63 वर्ष है। जाड़ों में दही-चावल-उड़द के खाते ही जुखाम बहने लगता है। नयन ज्योति कमजोर हो गई है। आँखों में चिपचिपापन बना रहता है।"

- एक भाई, न्यू शुक्ला, उद्योग, शाहाबाद (हरदोई)।

समाधान - सेप्टिकॉफासेन (अलारसिन) दो गोली प्रात-मध्याह्न-सायं लेकर स्पास्मा सीरप (चरक) दो ढक्कन समानजल के साथ पिया करें। रात्रि सोते समय षड्बिन्दुतैल (गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी) एक बूँद नाक के अन्दर लेवें। नेत्रकुला 30 आँख में दो बूँद डाला करें। नयनज्योति ठीक करने हेतु आर्यमित्र 29 अप्रैल, 1990 पढ़ें।

0-समस्या के साथ पचहत्तर पैसे वाले दो डाक लिफाफे भेजना आवश्यक है।

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (फलाहारी)
आर्य समाज पिथौरागढ़।

प्रवेश परीक्षा

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश हेतु 2। जून 1990 को प्रवेश परीक्षा का आयोजन हो रहा है।

यह परीक्षा 9 बजे से 12 1/2 बजे तक लिखित तथा 2 बजे से 4 1/2 बजे तक मौखिक इन दो चरणों में पूर्ण होगा।

इस परीक्षा में पंचम कक्षा उत्तीर्ण 10 से 11 वर्षीय प्रतिभाशाली छात्र ही भाग ले सकेंगे। जिसमें 50/ प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण मेधावी छात्र ही वरीयता क्रम से गुरुकुल में प्रवेश पा सकेंगे।

आचार्य,
गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोलाझाल मेरठ
उ०प्र०-250501

आर्यसमाज की नींव के पत्थर

○ श्री यशवीर सिंह, विद्यावाचस्पति
सीतापुर

जिस संस्था व राष्ट्र के अन्दर तप त्याग की भावना होती है वह संस्था व राष्ट्र दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर ही अग्रसर होते हैं। जब तक आर्य समाज के अन्दर तप-त्याग की भावना रही है कोई भी संस्था इसका मुकाबला नहीं कर सकी। जब आर्यसमाज का सूर्य अपने पूरे यौवन पर था तो कोई व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसकी जुबान पर आर्य समाज के तप त्याग की बात न आती हो। आर्य समाज किन महापुरुषों के बल से ऊपर उठा है जिन्होंने तन, मन, धन, से तथा अपने-अपने घरों को तोड़कर आर्य समाज बनाये हैं। उन वीरों के महापुरुषों के उदाहरण उद्धृत करते हैं आपके सामने---

1- पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जो स्वामी दयानन्द की मृत्यु को देखकर आस्तिक बने थे। आर्य समाज के प्रचार के लिए पाँच नियम पीछे लटका लेते थे जहां भी जाते थे वहीं आर्य समाज का प्रचार करते थे क्या रंग चढ़ा था उस समय आर्य समाज के ऊपर क्या अनोखा तरीका बनाया था उन्होंने आर्य समाज का प्रचार करने के लिए।

2- पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय अपने घर का निर्माण करा रहे थे कि अचानक पता नहीं क्या सूझा मकान का निरीक्षण करने लगे और मकान का निर्माण रुकवा दिया आर्य समाज का निर्माण शुरू करा दिया इस तरह उन महापुरुषों ने घर तोड़कर आर्य समाज बनायें हैं और आर्य समाज का प्रचार किया और करवाया है।

3- वह पं० लेखराम जिसने आर्य समाज के प्रचार के लिए अपने घर को छोड़ा तथा प्राण हथेली पर रखकर ट्रेन से कूदे थे, छुरी से पेट फड़वाया था।

4- स्वामी श्रद्धानन्द जी अपनी डायरी के अन्दर लिखते हैं कि जालन्धर से लौटते हुए नकोदर में प्रचार हुआ उसमें सबसे बड़ा विज्ञापन मेरा चिरन्जीव लाल था जहां भी मैं भाषण देना चाहता था मुझे उस स्थान पर खड़ा करके स्वयं बाजार चला जाता था और भीड़ को एकत्र करके मेरे सामने लाया करता था। किस-किस तरह के अनोखे तरीके अपनाये उन महापुरुषों ने आर्य समाज के लिए एक बार स्वामी श्रद्धानन्द जी की लड़की वेद कुमारी स्कूल से घर आकर एक भजन बोला करती थी जो उनकी मैडम ने सिखाया था भजन के बोल थे कि-

ईसा ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा मेरा राम रमैया ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।।

जब ये भजन के बोल स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सुने तो अपनी बेटी से बोले यह भजन तुझे किसने सिखाया तो वह बोली यह हमारी मैडम ने सिखाया। इस तरह ईसायत के प्रचार को बढ़ते देखकर स्वामी जी ने जालन्धर आर्य समाज में आर्य समाज के सदस्यों की एक बैठक बुलायी और उसमें प्रस्ताव पास किया कि आर्य समाज का भी कोई कन्या विद्यालय होना चाहिए और जालन्धर के अन्दर सबसे पहले आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की इस तरह उन लोगों ने आर्य समाज का प्रचार किया और आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाया था। आर्य समाज के गौरव के गीत तो अनेकों विद्वानों ने गाये हैं।

अगर आज राष्ट्र पर भी कोई आपत्ति आती है चाहे वह धर्म संकट मामला या अन्य कोई भी मामला हो सबसे पहले सर पर कफन बांधकर आर्य समाज ने ही परिस्थितियों का मुकाबला किया है। करता है और करता रहेगा। जिसके अनेकों उदाहरण हमें देखने को मिले हैं। पट्टाभि सीता रमैया कांग्रेस का इतिहास लिखते हुए कहते हैं कि स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान देने वाले वीरों मे 80 प्रतिशत वीर आर्य समाजी थे। अमर शहीद लाला लाजपत राय स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी ने तो यहां तक कहा था कि आर्य समाज मेरी माता है और स्वामी दयानन्द सरस्वती मेरे पिता हैं। स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान देने वाले अमर शहीद राम-प्रसाद बिस्मिल के पिताजी को पता चला कि ये आर्य समाज में जाते हैं तो पिताजी ने क्रोध में आकर कहा कि या तो आर्य समाज छोड़ दो या घर छोड़ दो। उन्होंने घर को छोड़ना स्वीकार किया है आर्यसमाज को नहीं छोड़ा।

कितने महान थे वे लोग जिन्होने घर छोड़ने कबूल किये हैं आर्य समाज नहीं। दक्षिण हैदराबाद को निजाम के चुगुंल से छुड़ाने में आर्य समाज का महान योगदान रहा है। आर्य समाज के अनेकों महान कार्यों के आगे आज भी विश्व नतमस्तक है।

इस तरह ये लोग आर्य समाज की नींव के पत्थर बने हैं आज हम उनके अनुयायी तो कहते हैं क्या वास्तव में हम उनके अनुयायी बनने के अधिकारी हैं हम भूल चुके हैं कि उन महापुरुषों को उनके तप त्याग को उनके कर्तव्यों को उनके बताये हुए मार्ग को हम उनके अनुयायी बनने के अधिकारी तब होंगे जब उनके जीवन से प्रेरणा लेंगे तथा उनके बताये हुए मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ संकल्प होंगे तथा आर्य समाज के स्वामी दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का संकल्प करेंगे तथा काका कवि हाथरसी ने तो यहां तक लिखा है कि--

गोरे भारत नहीं छोड़ते राजी राजी।
यदि योग न देते देश के आर्य समाजी।। ◻

क्या सरकार कर गई भूल ?

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
एम०ए०एल-एल बी०
एडवोकेट व गवर्नमेंट नोटरी, कानपुर

§1§
जगमोहन जी को बुलवाकर
क्या सरकार कर गई भूल?
क्या भविष्य में इस करनी के
उसे चुभेंगे दुखकर शूल? ।

§2§
इसका क्या परिणाम दिखेगा-
यह भविष्य बतलायेगा।
इसका शुभ या अशुभ नतीजा
शीघ्र सामने आयेगा।

§3§
जिन लोगों ने, जिन दल वालों
ने उनको बुलवाया है।
कितने देशभक्त जनकी
छाती पर चोट लगाया है।

§4§
कश्मीर का बुरा हाल
फारुक अब्दुल्ला के कारण।
अनुशासन सब खत्म हो गया,
जब था अब्दुल्ला-शासन।

§5§
यदि आतंकवाद बढ़ता-
अलगाववाद यदि फूलेगा।
जगमोहन जी का शासन तब
देश न हरगिज भूलेगा।

§6§
खूब बढ़ा आतंकवाद था।
फूला-फला वहाँ इस्लाम।
हिन्दू-जनता पर होते थे,
दिन-दिन अत्याचार तमाम।

§7§
वहाँ बलात कराया जाता,
हाय! धर्म का परिवर्तन!
वहाँ सताये जाते निशिदिन
नानाविधि नित हिन्दू-जन।

§8§
उन पर अत्याचार न होते,
जो अपना लेते इस्लाम!
वैसे लूट-पाट, हत्याएँ
सहनी पड़तीं उन्हें तमाम।।

§9§
पाकिस्तानी वहाँ खेलते
थे आतंकवाद का खेल।
थे अलगाववाद के नारे
वहाँ लग रहे रेलमपेल।

§10§
तब जगमोहन गये वहाँ पर
अत्याचारी घबराये।
था आतंकवाद सहमा!
अलगाववादी थे थर्राये।

§11§
तब आवाजें उठीं- कि उनको
जल्दी वापस बुलवाओ।
कश्मीर में राज्यपाल-
दूसरा शीघ्र ही भिजवाओ।

§12§
श्री राजीव गाँधी ने भी
ऐसी आवाज उठाई थी।
"जगमोहन वापस बुलवाओ-"
की रटना लगवाई थी।

§13§
विवश हुई सरकार और
जगमोहन जी को बुलवाया।
कितनों ने यह दुख से देखा,
मन ही मन में दुख पाया।

§14§
है भविष्य क्या दिखलाता।
यह देखेगा अब सारा देश।
"भारत का "कश्मीर" सदा से"-
जाने इसे हमारा देश ।

"मेरे कदमों की जाँच कराएं"

—जगमोहन

नयी दिल्ली, 30 मई, जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल जगमोहन ने मांग की है कि घाटी में उग्रवाद से निपटने के लिए उनके द्वारा की गयी कार्यवाही की जाँच के लिए सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) के न्यायाधीश का एक स्वतन्त्र पैनल गठित किया जाये।

श्री जगमोहन ने आज यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि यह पैनल घाटी में उग्रवाद के वास्तविक कारणों तथा इसके लिये दोषी व्यक्तियों का भी पता लगाये ताकि समस्या का समाधान ढूढा जा सके। श्री जगमोहन ने गत 25 मई को राज्यपाल पद से इस्तीफा दे दिया था। पूर्व राज्यपाल ने कहा कि देश की जनता को कश्मीर घाटी के वास्तविक हालत जानने का अधिकार है ।

श्री जगमोहन ने राज्यपाल के रूप में 5 माह के कार्यकाल के दौरान उठाये गये अपने कदमों को उचित बताया और कहा कि उन्होंने पूर्ण रूप से बेकाबू हो चुकी उग्रवाद की समस्या पर अंकुश लगाने में कामयाबी हासिल की। उन्होंने कहा कि चार माह पूर्व जब उन्होंने राज्यपाल का पद ग्रहण किया था तब घाटी में उग्रवाद तथा अलगाववाद चरम सीमा पर था तथा पूरी की पूरी प्रशासनिक व्यवस्था चरमरा गयी थी। राज्य में उग्रवादियों को सरकारी अधिकारियों और बड़े बड़े व्यापारियों का संरक्षण प्राप्त था। इसके बावजूद उन्होंने स्थिति को काबू में किया।

श्री जगमोहन ने कहा कि सच हमेशा कड़वा होता है और यही कारण है कि उन लोगों ने उन्हें संसद में बोलने की अनुमति नहीं दी जिन्हें डर था कि इससे उनकी कलई खुल जाएगी।

श्री जगमोहन ने कहा कि भारत को बाहरी दुश्मनों से नहीं बल्कि भीतरी दुश्मनों से भी खतरा है और यह कश्मीर के लिये भी सच है। उन्होंने आगे बताया कि यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है किन्तु वास्तविकता है कि मैंने कश्मीर को पाकिस्तान जाने से बचा लिया।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला सभाओं के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकट्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अतः आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुनः धन इकट्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनों से अनुरोध है इन की बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

- कार्यालय सचिव।

आ० स० वीरभद्र की नई व्यवस्था

देहरादून, आर्यसमाज, वीरभद्र (देहरादून) में कुछ काल से संगठनात्मक विवाद चला आ रहा था जिसकी व्यवस्था करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश, लखनऊ ने श्री देवदत्त बाली, प्रधान, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून को कार्य-भार सौंपा था।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा की प्रेस-विज्ञप्ति में सूचना दी गई है कि उक्त आर्यसमाज का विधिवत् चुनाव श्री बाली जी की देख-रेख में कराए जाने तक आर्यसमाज तथा उसके अधीन चलाए जा रहे विद्यालय का प्रबन्ध करने के लिए एक तदर्थ समिति का गठन श्री बाली जी ने कर दिया है जिसमें आपके अतिरिक्त वीरभद्र के सर्वश्री भरतसिंह, एम०एम० अग्रवाल, शिवचरण और मंगलसिंह सदस्य बनाए गए हैं। इस समिति के गठन के साथ ही आर्यसमाज वीरभद्र की अन्तरंग सभा भंग कर दी गई है और सभी पदाधिकारी निरस्त कर दिए गए हैं।

-देवदत्त बाली
प्रधान
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून।

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) में 18 जून से 24 जून तक योग शिविर आयोजन किया गया है। इसमें महात्मा विद्वान आ रहे हैं। साधक आने की सूचना आश्रम में भेज दें। भोजन व निवास का प्रबंध है। साथ में कम्बल भी लायें।

स्वामी सोमानन्द
महात्मा नारायण स्वामी
आश्रम रामगढ़ (नैनीताल)

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग
प्रधान-श्री गुलाब चन्द्र जी बंसल
मंत्री-श्री पुन्नीलाल जी आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री राजाराम जी नामदेव

तीन मुक्तक

• लाखन सिंह भदौरिया
मैनपुरी उ.प्र.

§1§

र जीवन अपनी एक कहानी रखता है।
र मूक प्राण,पीड़ा अनजानी रखता है।
केवल मनुष्य के पास न सबसे अधिक पीर -
त्थर का ठोस हृदय भी पानी रखता है।

§2§

 बहुत ऊँची बड़ी मीनार लेकिन-
आदमी मीनार से फिर भी बड़ा है।
बल सका है वह कहाँ भूपर पगों से-
शीश के बल, भूमि के ऊपर खड़ा है।

§3§

आग, चन्दन को जला सकती है लेकिन,
गन्ध चन्दन की रचा सकती नहीं है।
रात, सूरज निगल सकती है लेकिन,
रात, सूरज को पचा सकती है नहीं है।

विजय को वरण करो

• रामलाल "रसिक"
जगतपुर (मैनपुरी)

आज कुछ आगे चरण धरो।
विजय को वरवश वरण करो,
स्वर्ग संकल्प नहीं गढ़ते
न मिलती सिद्ध मन्त्र पढ़ते
वही बस पूजे जाते हैं जो
गरजते सिंहों पर चढ़ते
दैव-दुर्लभ तन वाले ओ,
उच्च श्रृंगों पर उगें भरो।
सुमन महके रे तपे प्रचण्ड
प्रज्वलित नभ के ज्योतिर्पिण्ड
प्राण की आहुति देकर तेज-
नित्य बिखराता है मार्तण्ड
अमरता के अभिलाषी ओ--
काल के फल निर्भीक छरो
विजय को वरबस वरण करो।

आर्यसमाज मुजफ्फरपुर §बिहार§
प्रधान- श्री पन्नालाल आर्य
मंत्री- श्री ओमप्रकाश ब्रह्मचारी
कोषाध्यक्ष- श्री कुलभूषण वोहरा

पृष्ठ ८ का शेष . .

ी स्त्री का बाहर जनता में आना अपराध नहीं है"। सभापर्व §69 9§ में द्रौपदी कहती है, "हमने सुना है कि प्राचीन काल में लोग विवाहित स्त्रियों को जनसाधारण की सभा या समूह में नहीं ले जाते थे, चिर काल की प्राचीन प्रथा को कौरवों ने तोड दिया"। इससे स्पष्ट है कि अवगुण्ठन प्रथा तत्कालीन समय में नहीं थी। इस प्रकार वैदिक साहित्य एवं धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में स्त्रियों के अधिकारों के सहस्रों उदाहरण उपलब्ध हैं। जिनके आधार पर स्त्रियों का स्थान समाज में सर्वोच्च था, उसे माता, जननी आदि सम्बोधन दिए गए हैं, इन्हीं दिव्य गुणों से सम्पन्न होने के कारण राष्ट्र को भारत-माता का सम्बोधन दिया गया है।

आर्यसमाज बगही-मीरजापुर
प्रधान- श्री भिक्खूराम सिंह
मंत्री- श्री नगेन्द्र सिंह
कोषाध्यक्ष-श्री रवीन्द्र प्रताप

समाज की सच्ची सेवा प्रकृति से प्रेम का दूसरा रूप

आर्य समाज नैनीताल के वार्षिकोत्सव पर महामहिम सत्यनारायण रेड्डी राज्यपाल उत्तर प्रदेश के उद्‌गारे।

नैनीताल 27 मई। प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता महान है तथा ऊँच-नीच का कोई भेदभाव नहीं है। समाज की सच्ची सेवा ईश्वर द्वारा बताई गई प्रकृति से प्रेम का दूसरा रूप है।

ये विचार प्रदेश के राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेड्डी ने आर्य समाज, नैनीताल के वार्षिकोत्सव को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का चरित्र उज्जवल एवं महान है। इसने हमेशा समाज को जोड़ने का कार्य किया है। मानव उदार मानव कल्याण शान्ति देश की एकता एवं मजबूती के लिए आर्य समाज ने बहुत से महान कार्य किये हैं। देश की स्वतन्त्रता के लिये भी सर्वप्रथम आन्दोलन आर्यसमाज ने ही किया था।

राज्यपाल श्री रेड्डी ने बताया कि उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र "मुकुल" में सर्वप्रथम लेख स्वामी दयानन्द पर ही लिखा था। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज की विचारधारा समाज में फैली कुरीतियों एवं बुराइयों को हटाने में पूर्णत सक्षम है। उन्होंने कहा कि दयानन्द जैसे महा-पुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें समाज सेवा एवं देश सेवा के कार्य में जुट जाना चाहिये

आर्यसमाज के सरक्षक श्री बंशीलाल बसल ने कहा कि आर्यसमाज ने राष्ट्र को नई चेतना दी है तथा शान्ति एवं प्रेम का नया रास्ता दिखाया है। जिसका पूरा विश्व अनुसरण कर रहा है। उन्होंने कहा कि नैनीताल में आर्य समाज की स्थापना 1883 में हुई थी और तबसे अब तक निरन्तर यह समाज एवं देश की सेवा में लगा हुआ है।

उत्सव में आचार्य जैमिनी शास्त्री, ओम प्रकाश, आबिद अली §हैदराबाद§ ने भी अपने विचार व्यक्त किये। राज्यपाल ने समारोह के प्रारम्भ में हवन में भी भाग लिया।

सूचना

दिनाक 22-5-90 को अमम आ0प्र0सभा के प्रधान डा0 नारायण दास आश्रम पधारे और गुरुकुल प्रभाताश्रम के ब्र0 पुनीत द्वारा 600 श्लोकों युक्त गीता का कण्ठस्थीकरण सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और 151 रु0 का पुरस्कार ब्रह्मचारी के उत्साहवर्धनार्थ प्रदान किया। आश्रम की कुल परम्परा का यह द्वितीय ब्र0 है जिसने सम्पूर्ण गीता को स्मरण किया है।

स्नातक मण्डल।
गुरुकुल प्रभाताश्रम
टीकरी §मेरठ§

आर्यसमाज का ७६ वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज फतेहपुर का 4 दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 18 मई से 21 मई तक बड़े उत्साह से मनाया गया समस्त कार्यक्रमों की अध्यक्षता प्रधान डा0हर्षवर्द्धन ने की। प्रथम दिन नगर में आर्य समाज फतेहपुर की भव्य शोभायात्रा निकाली जिसमें भारत के कोने कोने से आये हुए विद्वान उपदेशक, जिले के विभिन्न भागों से आए हुए आर्य समाजियों ने भाग लिया। शोभायात्रा की भव्यता में हाथी घोड़े व विभिन्न प्रकार के बैण्ड भी शामिल थे। दूसरे दिन प्रातःकाल यजुर्वेद पारायणयज्ञ के पश्चात आर्य युवा सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य जगत के विद्वानों ने प्रमुख रूप से डा0 देवेन्द्र सत्यार्थी, जय प्रकाश आर्य रामपुर,स्वामी वेदमुनि परिव्राजक बिजनौर, आदि ने युवकों को राष्ट्रीय स्तर पर समाज में व्याप्त बुराइयों से लड़ने के लिए उत्प्रेरित किया। तीसरे दिन आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें प्रमुख रूप से श्रीमती सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या बरेली, सुश्री रितम्बरा देवी मारिशस कुमारी सुनैना देवी ईटगांव, आदि ने सम्बोधित किया और महिलाओं की सोचनीय स्थिति पर विचार करते हुए महिलाओं का आह्वान किया कि महिलाओं को स्वयं अपनी स्थिति से उबरने का संकल्प लेना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन डा0 विनय अरोरा ने किया, ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया। इस कार्य क्रम के आयोजक का श्रेय उपसभा प्रधान-डा0हर्षवर्धन को है।

मानव सेवा आश्रम की स्थापना

यह आश्रम सहारनपुर हरिद्वार रोड पर छुटमलपुर से एक किलोमीटर दूर सडक के किनारे पर ही स्थित है। आश्रम में छ कमरे है। शौचालय तथा आवागमन के सब साधन उपलब्ध हैं। बिजली का अभाव है। यज्ञशाला है।

आश्रम में ऐसे साधक,वानप्रस्थी आमन्त्रित हैं जो योग साधना एवं एकान्त भक्ति के इच्छुक हों और अपना खर्च वहन कर सकें। खर्च वहन करने में असमर्थ व्यक्तियों को आश्रम की सेवा करना होगी आश्रम इनका खर्च वहन करेगा। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें या लिखें। पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते पर करें।

श्री राम पाठक
मानवसेवा आश्रम
छुटमलपुर, सहारनपुर।

--

आर्यसमाज सिविल लाइन्स §अलीगढ§

प्रधान - श्री विद्याप्रसाद नैमवाल
मन्त्री - श्री रामदीन आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री ओ३म् प्रकाश शर्मा

गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर) में प्रवेश

गंगातट पर स्थापित "गुरुकुल आश्रम" में गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के पाठ्यक्रम के अनुसार हर वर्ष 15 जून को कक्षा 6 में प्रवेश होता है। कक्षा-10 उत्तीर्ण करके छात्र गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अथवा अन्य किसी कॉलेज में प्रवेश पा सकते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार 8 से 15 वर्ष के मध्य बालकों के संस्कार वातावरण के अनुसार बनते-बिगड़ते हैं। बालकों में यम (अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह) और नियम (शौच-संतोष-तप-स्वाध्याय-ईश्वर-प्रणिधान) के संस्कार डालने हेतु वैदिक विद्वान ब्रह्ममुनि जी (पं0 ब्रह्मप्रकाश बाजपेयी, जसुपुरापुर, जनपद-फर्रुखाबाद-सेवानिवृत्त अध्यापक) ने अपनी सेवायें समर्पित की हैं। गुरुकुल आश्रम का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है।

गुरुकुल आश्रम में बालकों के लिये आवास-भोजन, दूध निःशुल्क है। वस्त्र-पुस्तकादि का व्यय बालक के अभिभावक वहन करते हैं। गुरुकुल आश्रम को ग्यारह हजार रुपये देने वाला (पालक सदस्य) किसी एक छात्र को मनोनीत कर के भेज सकता है। पालक सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें:-

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
(फलाहारी)
आर्य समाज पिथौरागढ
(उत्तर प्रदेश)

● दि0- 22·4·90 ई0 रविवार को आर्य तहसील सभा-ठाकुरद्वारा, जिला- मुरादाबाद की एक बैठक आर्यसमाज मन्दिर-ठाकुरद्वारा में सम्पन्न हुई। जिसमें एक प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया। जिसमें काश्मीर में हो रहे आतंकवाद-अलगाववाद के प्रति गहरा दुःख: असन्तोष व्यक्त किया गया।

आर्यसमाज बड़ौत (मेरठ)
प्रधान - श्री रामलाल
मन्त्री - डा0 ओमवीर सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री सुन्दरलाल

--

आर्यसमाज मऊरानीपुर (झांसी)
प्रधान - श्री वंशीधर भट्ट
मन्त्री - श्री श्री पाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री सत्यप्रकाश शर्मा

आर्यसमाज हनुमान रोड-नई दिल्ली
प्रधान- श्री सरदारी लाल वर्मा
मंत्री- श्री त्रिलोक नारायण मिश्र
कोषाध्यक्ष- श्री ओम प्रकाश आहूजा

शोक श्रद्धांजलि

आर्य समाज फतेहपुर के कोषाध्यक्ष श्री राजनारायण रस्तोगी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया एवं दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

पृष्ठ 3 का शेष.....

आपके गृहमन्त्री जी तो स्पष्ट शब्दों में कह चुके हैं कि "हम कश्मीर से भागकर आने वालों को अधिक आर्थिक सहायता करके कश्मीर घाटी से पलायन को प्रोत्साहन नहीं देना चाहते।" क्या इसका यही अर्थ नहीं है कि वह या तो जान बचाने को वहां इस्लाम ग्रहण करें और यदि कल्मा न पढ़ें तो काफिर होने के नाते वाजिबुल कत्ल समझकर मार डाले जायें। आप बुरा मानें या भला किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि आपके पूज्य बुखारी जी इस समय मि0 मोहम्मद अली जिन्ना का खेल खेल रहे हैं और आपके गृहमंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद की भांति कश्मीर घाटी को इस्लामिस्तान बनाने की नीति पर चल रहे हैं।

आपको यह तो पता होगा ही कि गत 26 जनवरी को कश्मीर घाटी में पाकिस्तानी झण्डा फहराने की योजना थी। इसी कारण से 20,21 और 22 जनवरी की रातों को बारह बजे एकाएक सारे मुस्लिम धर्मस्थानों से लाउडस्पीकरों द्वारा आह्वान किया गया कि-- "सारे कश्मीरी मुसलमान घर छोड़ सड़कों पर आ जायें और कश्मीर को आजाद करालें।" तत्काल हिन्दु घरों के सामने नारे लगाये गये--"भारतीय कुत्तो वापस जाओ। हम आजादी चाहते हैं। खून का बदला खून से लेंगे। छीन के लेंगे आजादी। हम पाकिस्तान बनायेंगे। पण्डिताइनों को हमें सौंपो, हम उन्हें पाक कर देंगे।"

यह सूचना भी आपको मिल ही गयी होगी कि जब कश्मीरी मामलों के प्रभारी जार्ज फर्नाण्डीज कश्मीर गये थे तो आतंकवादियों ने आदेश प्रसारित कर दिया था कि कोई उनसे मिलने न जाय। वह दिन भर अकेले बैठे रहे, कोई भी मिलने नहीं आया। वह स्वयं बाहर नहीं निकल सके। पता नहीं उन्होंने आपको यह बताया या नहीं और यह भी पता नहीं कि गृहमंत्री महोदय के विभाग ने भी इस विषय की सूचना कश्मीर घाटी से दिल्ली भेजी है या नहीं? यह भी आपको पता नहीं चला होगा कि श्री जगमोहन के भी फर्नाण्डीज महोदय हाथ बाँध आये हैं।

फर्नाण्डीज के जाने से पहले श्री जगमोहन ने सकीना नामक आतंकवादी महिला को बन्दी बनाया था। सकीना ने बी0एस0एफ0 के एक कमाण्डर को गोली मारी थी। जार्ज साहब ने वहाँ पहुँचकर सबसे पहला काम सकीना को छुड़वाने का किया। सकीना आतंकवादी संगठन दुख्तर-ए-मिल्लत की सदस्या है। क्या आप अपने द्वारा बनाये श्री प्रभारी अधिकारी जी से इस विषय में पूछने का साहस जुटा पायेंगे?

पाठकगण! उपर्युक्त प्रश्न तो मैंने प्रधानमंत्री जी से कर डाले हैं। किन्तु पहले तो यही विश्वास नहीं होता कि मेरे प्रश्न ही उनके सामने तक जा पायेंगे और यदि किसी प्रकार उनके पास तक यह प्रश्न जा सके तो मैं कोई अब्दुल्ला बुखारी तो हूँ नहीं कि वह मेरे पास दौड़ आयेंगे। मैं जानता हूँ कि मेरे जैसे राष्ट्रभक्ति के अपराधी को वहाँ पहुँच भी संभव नहीं। सच्चाई यह है कि भारत के यह नेता किसी राष्ट्र-भक्त की सुनना नहीं चाहते। यह तो केवल और केवल मात्र राष्ट्र-द्रोहियों की ही सुनते हैं, क्योंकि वह इनकी मुसीबतों और परेशानियों का कारण बन जाते हैं और कोई देशभक्त ऐसा कोई कार्य कर नहीं सकता, जिससे सरकार और राजनेताओं की परेशानी बढ़े। सबसे बड़ी खेद की बात यह है कि यह नेता यह नहीं जानते कि जातीय जीवन क्या होता है और जाति का मार्गदर्शन किस प्रकार होता है? इनके तो केवल दो ही सूत्र हैं जिनकी प्राप्ति की महत्वाकांक्षा इनकी नमाज है और वह दोनों सूत्र इनकी नमाज के दो सजदे हैं। ऐसे ही नेताओं पर उर्दू का निम्न शेर चरितार्थ होता है.-

"कौम क्या चीज है? कौमों की इमाममत क्या है?
इसको क्या जानें ये दो सजदे के इमाम??

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश
प्रधान-ब्र0 आर्य नरेश
मंत्री- श्री भगवानदेव "चैतन्य"
कोषाध्यक्ष-श्री अरुणेश कुमार

शोक समाचार

"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी मनीषी भूतपूर्व प्रधान श्री डा0दुखनराम जी एवं आर्य जगत् के सन्यासी स्वामी श्री रामेश्वरानन्द जी के निधन पर आर्य समाज माटुंगा बम्बई - 19, अपना हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परमात्मा से प्रार्थना है कि अपनी व्यवस्था में अपनायें एवं शोक सन्तप्त आर्यजनों एवं परिजनों को धैर्य प्रदान करें।

पृष्ठ ६ का शेष.....

अपितु देश की राष्ट्रीय दृष्टि से भी गम्भीर दुष्परिणाम होंगे यह स्पष्ट है।

विदेशी सहायता का दुरुपयोग-

मुसलमानों और ईसाइयों द्वारा हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने का प्रश्न केवल धार्मिक स्वतन्त्रता तक सीमित नहीं है, यह सर्वविदित है। मध्य पूर्व से पेट्रोडॉलर की विशाल राशि का उपयोग हमारे देश के गरीब और अशिक्षित लोगों को ही नहीं अन्य बेरोजगार और पिछड़े वर्ग के लोगों को भी प्रलोभित करते हैं। इस प्रकार का दुरुपयोग ईसाई मिशनरियों को विदेशों से प्राप्त अपार धन राशि का किया जाता रहा है।

धर्मान्तरण को प्रोत्साहन-

एक और हमारी सरकार इस देश के आदिवासियों तथा अन्य आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के धर्म और संस्कृति के संरक्षण की बात करता है और संविधान में भी उन्हें इस प्रकार का आश्वासन दिया हुआ है, कि दूसरी और धर्मान्तरण के बाद भी अनुसूचित-जातियों को दिये गये विशेष संरक्षण देने का प्रस्ताव करके विदेशी मिशनरियों द्वारा उनका धर्मान्तरण किये जाने को प्रोत्साहन देता हैं। महात्मा गाँधी जैसे सर्व धर्म सम्भाव के समर्थक ने भी ईसाई मिशनरियों द्वारा किये जाने वाले धर्मान्तरण का इसीलिये विरोध किया था। प्राचीन समय में मुसलमानों द्वारा जिस प्रकार तलवार के जोर से धर्मान्तरण किया जाता था उस प्रकार वर्तमान युग में ईसाई प्रचारक अशिक्षित गरीब और भोले-भाले स्त्री-पुरुषों को लोभ लालच देकर उन्हें अपने धर्म से विमुख करते हैं।

धर्म के साथ राष्ट्रीयता का भी त्याग -

धर्म निरपेक्षता की विकृत परिभाषा और व्यवहार के कारण यह बात कितनी भी अप्रिय मालूम हो, किन्तु इस कटु सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हमारे देश में धर्मान्तरण का अर्थ राष्ट्रान्तरण भी होना है और हुआ है। अन्यथा क्या कारण है कि जिनके पूर्वज हिन्दू थे, वह भी मुसलमान और ईसाई होते ही पृथक राज्य की मांग करके देश की एकता और राष्ट्रीयता को चुनौती देते हैं। जैसा पाकिस्तान तथा अब भी कश्मीर, मिजोरम, नागालेण्ड आदि उदाहरणों से स्पष्ट है।

देशव्यापी आशंका-

इसलिए यह आशंका स्पष्ट है कि यदि वर्तमान सरकार ईसाई और मुसलमान धर्म स्वीकार करने पर भी दलितों को वे ही अधिकार देने का प्रावधान करता है जो हिन्दू या बौद्ध धर्म के अनुयायी दलितों को दिया गया है तो उसका सर्वत्र और राष्ट्रव्यापी प्रबल विरोध होना स्वाभाविक है। भारतीय जनता पार्टी वर्तमान सरकार को दिये जाने वाले अपने समर्थन को इस प्रकार के विधेयक का समर्थन करने की सीमा तक निभा सकेगी यह सम्भव प्रतीत नहीं होता है। ऐसा वह अपनी सारी घोषणाओं और मान्यताओं तथा सिद्धान्तों को तिलांजलि देकर ही कर सकती है।

पृष्ठ ५ का शेष.....

का भाषण सुनने 4 मित्र गये। पहले ने 100/- रु0 प्रसन्न होकर किसी सत्कार्य में दिये। तीसरे ने उनके भाषण से प्रभावित होकर 100/-रु0 दिये। दूसरा उपयुक्त दोनों के बीच में आ गया। उसने लज्जा के मारे 100/-रु0 दिये। चौथे ने न दिया जो राजदंड द्वारा,भय द्वारा उससे 100/- रु0 लिये गये। कम्यूनिज्म में केवल चौथा उपाय ही है जबकि वैदिक वाद में चारों हैं।

इस तरह कम्युनिज्म में क्षत्रत्व का केवल लाल झण्डा ही है। अतः वह खूनी है और गाँधीवाद में लाल नहीं अतः वह लगड़ा है। अब रूस में लाल के अतिरिक्त ग्रहण 'की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। धर्म पर आस्था न रखने वाले स्टालिन ने द्वितीय महायुद्ध में मास्को को संकट-ग्रस्त देखकर घंटे-घड़ियाल बजाने की आज्ञा दे दी थी। कालनिन नामक लेखक की एक समाज विषयक पुस्तक

या उपनिषदों के समान आध्यात्मिक ज्ञान से भरी पड़ी है। योरोपियन विद्वानों ने वेदों के अर्थ का अनर्थ कर दिया। वेद के एक मंत्र का वास्तविक अर्थ तो यह है कि क्षत्रिय और वैश्य अपनी पत्नी के दरबार में ब्राह्मण बन जावें। अपने उग्र बल एवं व्यवसाय का प्रयोग पत्नी पर न करें। केवल सात्विक बुद्धि से आचरण करें। किन्तु अर्थ यह निकाला गया कि एक स्त्री के यदि क्षत्रिय और वैश्य भी पति हो तो ब्राह्मण की ही वह पत्नी रहेगी। अन्यों का दावा खारिज हो जायेगा। कितना अंधेर मचाया है। इन भारतीय संस्कृति के शत्रुओं ने।

लाहौर में सह शिक्षा की उपर्युक्तता अनुपयुक्तता पर विचार करने के लिये आयोजित विद्वानों की गोष्ठी में आधुनिक अंग्रेजी ढंग के विद्वानों ने सह शिक्षा को उपयुक्त बताया। मैंने कहा तुमने इस-भौतिकवाद के प्रतीक मोमबत्ती और दियासलाई से उजाला कर रखा है परन्तु दियासलाइयों और मोमबत्ती के भंडारों को एक साथ रखने पर तो दिवाला ही निकलेगा। हमने

हीनता की भाववना नहीं होनी चाहिये।

न्यायय प्रतिकार भावना हो। कम्यूनिस्ट पूंजीपतियों के लिये कहते हैं- "छोड़ो मत" इन्हें लूटकर जनता में इनका धन वितरित कर दो। जबकि पूंजीवादी कहते हैं, "छेड़ो मत"। किन्तु वैदिक सदुपयोगवाद के पास दोनों अस्त्र हैं, "छोड़ो मत और "छेड़ो मत" निग्रह और अनुग्रह। कम्यूनिस्ट कहते हैं।"मार्क्स ने तो अपनी विचारधारा का अनुयायी रूस को बना दिया। दयानन्द ने क्या सफलता पाई।" किन्तु हमारा उत्तर है कि रूस तो घर का जालिम था, किन्तु भारत तो परतंत्र था। उस साम्राज्य में था जिसमें सूर्य कभी अस्त नहीं होता। वहां स्वतन्त्रता का दाता तथा मनुष्यों में वैज्ञानिक पद्धति का समावेश क्या कम सफलता है। हम कम्यूनिज्म या गाँधीवादी

से जो वेदानुकूल समिति की सम्मति से शासन चलावे अधिक हितकर समझते हैं।

आर्यसमाज की अग्नि परीक्षा

O जगदीश शरण "शीतल"
चाँदपुर, बिजनौर

आज हम सारे विश्व को आर्य बनाने का स्वप्न देखते हैं। परन्तु हमारी स्वयं की इतनी दयनीय दशा है कि हम अपने घर को ही आर्य बनाने में असमर्थ हैं। पचास प्रतिशत से भी अधिक नौजवान लड़के लड़कियाँ किसी न किसी बुराई से ग्रस्त हैं। छोटे-छोटे बच्चे वही नाच अश्लील गाने तथा शराबी अपराधिक अभिनय करते हैं जो वह फिल्मों तथा टी0वी0 पर देखते हैं। आगे चल कर इनका कुमार्गी होना स्वाभाविक है। नौजवान लड़के लड़कियों पर इसका सीधा और अधिक कुप्रभाव पड़ता है। जिसके कारण उनके चरित्र दूषित हो रहे हैं। बच्चों को यह बुरे संस्कार माता-पिता के द्वारा ही मिलते हैं। क्योंकि वह स्वयं अपने परिवार के साथ बैठकर इस दूषित कार्यक्रम को देखते हैं। अतः उनके इस बुराई तथा बिलासिता से बचना चाहिये। अच्छे कार्यक्रम स्वयं भी देखें और बच्चों को भी दिखायें। जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल हो। आज घर-घर में टी0वी0 लगाने की होड़ लगी है। जिस घर में टी0वी0 नहीं शायद वह अपने आप को अति अभागा समझता है।

टी0बी0 रोग से तो मुक्ति मिल सकती है। परन्तु इस टी0वी0 शैतान से जीवन भर छुटकारा नहीं हो सकता और मरकर भी इसी वातावरण में जन्म लेना पड़ेगा। अब तो वैज्ञानिक भी कहने लगे हैं कि इसका आँखों तथा मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मस्तिष्क में तनाव पैदा होकर स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। यदि टी0वी0 पर दूषित कार्यक्रम न आकर अच्छे कार्यक्रम आयें तो समाज की काया पलट हो सकती है। दूसरे अश्लील गाने तथा संवाद और अपराधिक वाली फिल्में न आकर अच्छी फिल्में आनी चाहिये। परन्तु शासक वर्ग तथा जनता का इस ओर कोई ध्यान नहीं। चरित्रहीनता का एक कारण टी0वी0 तथा दूसरा कारण काला धन है। आप सभी जानते हैं कि यह काला धन कितने कुकर्मों से प्राप्त किया जाता है। इस काले धन के कारण ही घरों में अधिक विलासिता बढ़ रही है। आज दुराचार अनाचार व्यभिचार, लूटपाट तथा आतंकवाद इन्हीं की देन है।

महर्षि दयानन्द ने जिन बुराइयों को दूर करने के लिये विषपान करके अपने प्राणों की आहुति दी आज फिर आर्यसमाज के संयासी, वानप्रस्थी, विद्वानों तथा समाज सेवी व्यक्तियों की अग्नि परीक्षा है। इनका परम कर्तव्य और दायित्व है कि वह इन बुराइयों को दूर करने के लिये आगे आयें और शासक वर्ग को अपनी चिन्ता से अवगत कराकर अहिंसक असहयोग आन्दोलन तथा आमरण अनशन करें। तभी देश और आर्य जाति सुरक्षित रख सकते हैं। अन्यथा नहीं।

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन.पी. ७२
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

आषाढ कृष्ण-६ संवत २०४७वि०
दिनांक १७ जून १९९०

दूरभाष
२४५९९३

सेवा में —

2946 श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
{हरिद्वार}

वैदिक धर्म प्रचार

आर्यसमाज सी०बी० गन्ज, बरेली का वाँ वार्षिक उत्सव 14-15-16 मई को उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। साथ ही 17 से 20 मई तक निकट के ग्राम में प्रचार कराया जिसमें बहुत ही उत्साह देखा गया।

शुभ विवाह

श्री मद्दयानन्द अनाथालय यमुना ब्रिज आगरा की 6 अनाथकन्याओं का सामूहिक पाणिग्रहण संस्कार दि0-3 जून 1990 को अपरान्ह 3/30 बजे माननीय श्री अमलकुमार वर्मा {आई ए एस} जिला अधिकारी आगरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

राजस्थान आर्यप्रतिनिधि सभा का शताब्दी स्थापना समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता संयासी वैदिक विद्वानों का जमाव

जयपुर 19 मई-प्रात काल आर्यसमाज आदर्श नगर के विशाल प्रांगण में प0 राजगुरु शर्मा स्वामी वेदानन्द जी के ब्रह्मत्व में वेद पारायण महायज्ञ में राजस्थानी आर्य नर-नारियों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

विशाल शोभा यात्रा

दोपहर 3 बजे जयपुर नगर के प्रमुख बाजारों में शानदार शोभा यात्रा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटू सिंह एडवोकेट, श्री नेतीराम जी शर्मा, श्री सत्यव्रत सामवेदी, डा0 सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री बाल दिवाकर हंस, स्वामी ओमानन्द जी, राजगुरु शर्मा तथा राजस्थान प्रतिनिधि सभा के अधिकारीगण तथा दूर-दूर से आए हुए हजारों नर-नारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आर्यसमाज कृष्ण पोल बाजार ने शोभा यात्री नेताओं का भव्य स्वागत किया। गगनभेदी नारों व ओम ध्वजों की सजधज देखते ही बनती थी। जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

सूचना

श्री रामाज्ञा जी 'आर्यपुत्र" तथा आर्यवीर दल शाखा लार के सचालक श्री रजनीश जी आजकल अस्वस्थ हैं इस कारण वह अपने कार्यक्रमों में भाग न ले सकेंगे। हम उनके स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं. २२४१/५७ आषाढ़ शुक्ल-२ रविवार संवत २०४७ वि. दिनांक २४ जून १९९० (घोषणापत्र सं. ७/२२-३-२५)



विजय का पथ....

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरे भरे।

ऋग्वेद 1/102/4

जो मनुष्य परमात्मा के दिव्य गुणों से अपने को युक्त करके रणसंग्राम में कूदता है वह अवश्य विजयी होता है।

परमात्मा के दिव्यगुणों में सत्यपथ का अनुकरण करते हुए सतत विजयपथ पर अग्रसर होते रहने का उपदेश है।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष

अंक-२४

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के निर्वाचन में

पुलिस द्वारा बर्बर लाठीचार्ज

सभा प्रधान श्री पं. इन्द्रराज व सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी सहित सैकड़ों प्रतिनिधियों द्वारा चुनाव का बहिष्कार

सम्पूर्ण आर्य जगत में आक्रोश की लहर

लखनऊ- रजिस्ट्रार फर्म सोसायटीज़ एण्ड चिट्स, उ0प्र0 द्वारा दिनांक- 9 जून 1990 को, मा0 हाईकोर्ट की लखनऊ बेन्च के आदेशानुसार लखनऊ में सम्पन्न कराए जा रहे चुनाव में सांसद श्री कैलाश नाथ सिंह यादव के इशारे पर पुलिस ने मतदाता आर्य प्रतिनिधियों के साथ जो अभद्र व्यवहार किया है वह इतिहास में अभूतपूर्व तथा अत्यन्त खेदजनक है। इस कृत्य की जितनी भी भर्त्सना की जाय, कम है।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रदेश की लगभग 2000 आर्यसमाजों का प्रतिनिधित्व करती है। नियमानुसार प्रतिनिधि सभा के चुनाव में प्रत्येक आर्यसमाज के निर्वाचित प्रतिनिधि को भाग लेने का वैधानिक अधिकार है। इसी अधिकार की पुष्टि करते हुए मा0 हाईकोर्ट की लखनऊ बेन्च के न्यायमूर्ति श्री सगीर अहमद ने दिनांक 9 जून 1990 को रजिस्ट्रार द्वारा मात्र 182 आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों द्वारा सम्पन्न कराए जाने वाले चुनाव में सभा मन्त्री श्री तिवारी जी द्वारा दायर याचिका में कि प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों द्वारा चुनाव सम्पन्न कराया जाय, मान्य करते हुए ऐसे समस्त प्रतिनिधियों को चुनाव में भाग लेने के लिए अधिकृत किया तथा आदेश दिया किन्तु प्रदेश की आर्यसमाजों से पधारे हुए ऐसे सैकड़ों प्रतिनिधि जब सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी का अनुमोदित पत्र लेकर चुनावस्थल पर पहुँचे तो वहाँ उपस्थित पुलिस कर्मचारियों ने मतदाता आर्य प्रतिनिधियों/आर्य प्रतिनिधि महिलाओं पर बर्बर तरीके से डन्डे बरसाना प्रारम्भ कर दिया तथा अपशब्दों का प्रयोग करते हुए प्रतिनिधियों को चुनावस्थल से बाहर खदेड़ दिया।

आर्यसमाज एक परम शान्त तथा अहिंसा में विश्वास रखने वाली धार्मिक संस्था है। अपने उद्गम काल से लेकर आज तक इस संस्था ने अपने इस व्रत को कभी नहीं तोड़ा है। अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करना और अपना बलिदान देकर भी अत्याचारी को झुकाना इस संस्था की शानदार परम्परा रही है। हमारे विश्वास में अत्याचार सहना अत्याचार करने से भी बड़ा पाप है। सन्तहृदय श्री पं0 इन्द्रराज जी इस सभा के प्रधान ही नहीं अपितु आर्यजगत के निष्णात विद्वान तपोनिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता एवं कोटि-कोटि आर्यजनों के धर्मगुरु हैं। उन पर और सभा के उदीयमान मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जिनके कुशल प्रशासन एवं सूझबूझ के कारण ही यह आर्य प्रतिनिधि सभा अयोग्य हाथों में जाने से बची हुई है, पर पुलिस का यह बर्बर हमला शासन के माथे पर कलंक का धब्बा है। आर्यजनता इस अपमान और दुर्व्यवहार को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकती है। इस अभद्र व्यवहार में जिस लज्जाजनक तरीके से सांसद श्री कैलाशनाथ सिंह ने सारी मर्यादाओं को तोड़ते हुए आर्यप्रतिनिधियों का अपमान कराया है, वह अत्यन्त निन्दनीय है। उन्हें नैतिक आधार पर संसद से त्यागपत्र देकर आर्यजनों से क्षमायाचना करनी चाहिए।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उच्च तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

— कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ आषाढ़ शुक्ल २ संवत् २०४७ वि.

२४ जून १९९० दयानन्दाब्द-१६६

सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

निन्दनीय एवं लज्जास्पद

मा0 हाईकोर्ट, लखनऊ बेन्च, के दिनांक- 7 जून, 1990 के आदेशानुसार दिनांक- 9 जून, 1990 को लखनऊ में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 का चुनाव रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटीज एवं चिट्स उ0प्र0 द्वारा सम्पन्न कराया जाना था। इस अवसर पर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आये हुए आर्यसमाजों के प्रतिनिधि दिनांक- 9 जून, 1990 को जब लखनऊ में स्टेशन रोड स्थित विकासदीप पर अपने मताधिकार का प्रयोग करने पहुँचे तो जनतादल सांसद श्री कैलाशनाथ सिंह यादव के इशारे पर वहाँ ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मचारियों ने आर्य प्रतिनिधियों को मतदान केन्द्र की तरफ़ बढ़ने से रोक दिया। निर्वाचन में भाग लेने के लिए बड़ी संख्या में पधारे मतदाताओं ने जब पुलिस अधिकारियों से यह कहा कि मतदान में भाग लेने का अधिकार उन्हें मा0 हाईकोर्ट लखनऊ बेन्च ने प्रदान किया है इसलिए उन्हें मताधिकार से किसी भी हालत में वंचित नहीं किया जा सकता है। मगर पुलिस कर्मचारी अपनी बात पर डटे रहे और उन्होंने मतदान करने आये प्रतिनिधियों को पहले तो गालियाँ दीं फिर वे उन पर डन्डे लेकर टूट पड़े।

उन्होंने आर्यसमाज के सुसंस्कृत, सभ्य तथा शान्त सदस्यों पर निर्मम तरीके से डन्डे बरसाए और उन्हें धकेलते हुए मतदान केन्द्र से बाहर निकाल दिया। मारपीट करने वाले पुलिस कर्मचारियों ने वृद्धपुरुषों तथा महिलाओं तक को नहीं बख्शा। उन्हें भी अपमानित करते हुए और घसीटते हुए मतदान केन्द्र से बाहर ले गये। पुलिस के डन्डों और मुक्कों के प्रहार से बहुत से आर्यबन्धुओं को चोटें भी आई हैं जिनमें कुछ महिलाएं भी हैं।

जब इन पुलिस कर्मियों ने आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के नेतृत्व में आये सैकड़ों आर्य प्रतिनिधियों को मतदान केन्द्र पर नहीं जाने दिया तो श्री पं0 इन्द्रराज एवं श्री मनमोहन तिवारी चुनाव अधिकारी को चुनाव में बरती जा रही अनियमितताओं और धान्धलेबाजी से सम्बन्धित एक आपत्तिपत्र देने गये और सभी मतदाता बिना मतदान किए ही वापस लौट आये।

बाद में सभा प्रधान श्री पं0- इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिसमें शान्त और सभ्य आर्यप्रतिनिधियों पर पुलिस द्वारा बरसाए गये डन्डों की कड़े शब्दों में निन्दा की गई। इस सभा में श्री कैलाशनाथ सिंह यादव, सांसद पर यह आरोप लगाया गया कि उन्होंने सांसद के पद का दुरुपयोग करते हुए पुलिस से मिलकर आर्यसमाजियों की जिस तरह पिटाई कराई वह आर्यसमाज के इतिहास पर एक कलंक है। उन्हें संसद से तुरन्त इस्तीफा देकर आर्यप्रतिनिधि- यों से क्षमा याचना करनी चाहिए। उनके इस दुष्कृत्य की जितनी भी निन्दा की जाय कम है। उन्होंने उक्त चुनाव में [illegible] ढंग से सारी मर्यादाओं को तोड़कर जो कुत्सित कृत्य कराया वह अतिनिन्दनीय एवं लज्जास्पद है। उनके इस व्यवहार से आर्य जगत में तीव्र आक्रोश व्याप्त है और जनता के सभी वर्गों ने कड़े शब्दों में भर्त्सना की है।

जिस तरह का अत्याचार 9-जून, को पुलिस ने आर्यसमाजियों पर ढाया है ऐसा तो अंग्रेजी शासन काल में भी देखने या सुनने को नहीं मिला। इस सभा में प्रशासन को चेतावनी दी गई है कि वह उन पुलिस कर्मियों के खिलाफ़, जिन्होंने आर्यप्रतिनिधियों के साथ ऐसा निकृष्ट व्यवहार किया है, अविलम्ब सख्त कार्यवाही करे अन्यथा पूरे प्रदेश में एक आन्दोलन छेड़ दिया जायेगा।

आर्यमित्र अपने प्रदेश की आर्यजनता से धैर्य एवं शान्ति रखने का विनम्र अनुरोध करते हुए प्रभु से यही कामना करता है कि सत्य की सदा विजय होती है।

अपनी बात

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के कई वर्षों से चल रहे विवाद में सभा द्वारा निष्कासित कुछ लोग किसी न किसी कुचक्र के माध्यम से आर्यप्रतिनिधि- सभा पर कब्जा करना चाहते हैं। यद्यपि सभा के चुनाव प्रतिवर्ष नियमानुसार होते आ रहे हैं तथापि रजिस्ट्रार फर्म सोसायटीज एवं चिट्स, उ0प्र0 द्वारा चुनाव सम्पन्न कराने में हमें कभी कोई एतराज़ नहीं रहा। किन्तु स्थिति यह है कि मात्र 182 आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों द्वारा फर्जी चुनाव के माध्यम से सभा द्वारा निष्कासित कतिपय व्यक्ति सभा पर कब्जा करना चाहते हैं।

माननीय उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ के न्यायमूर्ति श्री- सगीर अहमद ने आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की ओर से दायर याचिका पर दिनांक- 7 जून 1990 को सायंकाल 5 बजे यह स्पष्ट निर्देश दिया कि सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी द्वारा प्रस्तुत प्रदेश की समस्त 1855 आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों को निर्वाचन में सम्मिलित किया जाये। चूँकि चुनाव दिनांक- 9 जून 1990 को प्रातः 9 बजे सम्पन्न होना था अतः इतने कम समय में प्रदेश के कोने-कोने में स्थापित समस्त समाजों के प्रतिनिधियों को सूचना देना सम्भव ही नहीं था। फिर भी लखनऊ तथा उसके आस-पास फोन तथा तार द्वारा सम्पर्क करके यथा सम्भव लगभग 200 आर्य प्रतिनिधि जिनमें महिला आर्य प्रतिनिधि भी थीं- 9/6 को प्रातः चुनाव स्थल पर एकत्रित हुए। जब यह आर्य प्रतिनिधि मतदान स्थल पर पहुँचे तो वहाँ सभा द्वारा निष्कासित श्री कैलाशनाथ सिंह यादव सांसद तथा उनकी पार्टी ने अपने पद और सत्ता के मदहोश में पुलिस द्वारा निहत्थे शान्त आर्य प्रतिनिधियों जिनमें वृद्ध पुरुष तथा महिलाएं भी सम्मिलित थीं- बर्बर लाठी चार्ज करा दिया और मतदान स्थल से खदेड़ दिया। चुनाव स्थल पर इस प्रकार की अनियमितताओं एवं धांधलियों को देखकर सभी ने चुनाव का बहिष्कार कर दिया।

मा0 उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ के न्यायमूर्ति श्री सगीर अहमद ने स्पष्ट आदेश दिया है कि जब तक सभा द्वारा दायर याचिकाओं पर निर्णय न हो जावे तब तक इस चुनाव का परिणाम घोषित न किया जावे।

इस सम्बन्ध में मैं यह बताना भी अपना कर्तव्य समझता हूँ कि सभा द्वारा उच्च न्यायालय में दायर की हुई याचिकाओं में निम्न दो मुद्दों को स्पष्ट रूप से उठाया गया है-

(1) सभा द्वारा निष्कासित व्यक्तियों को सभा के निर्वाचन में भाग न लेने देना।
(2) तथा वर्ष 1989 तक समस्त समाजों के समस्त प्रतिनिधियों को लेकर 1990 का निर्वाचन सम्पन्न कराना।

मुझे प्रसन्नता है कि मेरे द्वारा प्रदेश की समस्त 1855 आर्यसमाजों के स्वीकृत प्रतिनिधियों की सूची को मा0 उच्चन्यायालय के न्यायमूर्ति श्री सगीर अहमद ने कृपा करके स्वीकार कर लिया है। इससे यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि मात्र 182 आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों को लेकर रजिस्ट्रार फर्म सोसायटीज़ एवं चिट्स उ0प्र0 जो चुनाव करा रहे हैं वह गलत है।

दिनांक 27 जुलाई 1990 को जब इन याचिकाओं की सुनवाई मा0उच्चन्यायालय के समक्ष होगी तो हमारी ओर से यह पूर्ण प्रयास रहेगा कि मा0 उच्चन्यायालय द्वारा दिनांक- 7-6-90 के निर्णयानुसार ही प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों के समस्त प्रतिनिधियों को चुनाव में भाग लेकर ही चुनाव सम्पन्न कराया जाय।

— मनमोहन तिवारी
मन्त्री आ. प्रति. स., उ.प्र., लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का परिपत्र

धर्मान्तरण के पश्चात भी सुविधाएँ देने वाले विधेयक का तीव्र विरोध

प्रेषक:- श्री मनमोहन तिवारी,
मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०,
लखनऊ।

सेवा में,

उत्तर प्रदेशीय समस्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं/ आर्यसमाजों/ आर्यकुमार सभाओं/ आर्यवीर दलों/ आर्यसामाजिक शिक्षण संस्थाओं के प्रमुख/ प्रधान एवं मन्त्री महोदय।

श्रीमन्नमस्ते,

कृपया आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के मुखपत्र "आर्यमित्र" के दिनांक 17 जून 1990 के मुखपृष्ठ पर "धर्मान्तरण के बाद मिलने वाली सुविधाएं जारी रखना धर्मान्तरण को बढ़ावा देना है" शीर्षक से प्रकाशित मेरे वक्तव्य को देखने का कष्ट करें जिससे स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय सरकार संसद् में एक ऐसा विधेयक लाने वाली है जिसमें धर्मान्तरण के बाद भी धर्मान्तरित व्यक्तियों को मिलने वाली सुविधाएं यथावत् जारी रखने का प्राविधान है।

यह सर्वविदित है कि हरिजन, पिछड़ेवर्ग तथा अनुसूचितवर्ग आदि के लोग हमारी आर्य (हिन्दू) जाति के ही अभिन्न अंग हैं। मध्ययुग की सड़ी गली मान्यता, जन्मपरक जातिपान्ति की व्यवस्था जो सर्वथा अवैदिक थी, ने इस वर्ग को हिन्दूसमाज के साथ पूर्णाकार एकाकार होने से कुछ काल तक वंचित रखा था किन्तु महर्षि स्वामी दयानन्द की अपारकृपा एवं आर्यसमाज के अभ्युदय ने समाज से इस अभिशाप भरे बिलगाव को सदा-सदा के लिए समाप्त कर दिया है। आर्यसमाज ने डंके की चोट घोषणा की है कि जातिपान्त की व्यवस्था जन्मपरक न होकर गुणकर्मानुसार है। हम सब आर्य हैं भले ही हमारा वर्ण कोई भी हों। आर्यसमाज धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण के अतिरिक्त और कुछ नहीं मानता है। हमारा विश्वास है इसकी आड़ में भारत की एकता और अखण्डता को नष्ट करके भारतीयता और भारत को सदा-सदा के लिए मिटा देने का भयंकर विदेशी कुचक्र चल रहा है जिसमें विदेशों से प्राप्त अपार धनराशि पानी की तरह बहाई जा रही है। प्रस्तावित विधेयक पारित हो जाने के फलस्वरूप इस वर्ग को मिलने वाली समस्त सरकारी सहायता का अधिकांश भाग धर्मान्तरित (ईसाई व मुसलमान) लोग ही हड़प लेंगे क्योंकि उन्हें संगठित व जागरूक करने वाली विधर्मी एवं विदेशी एजेन्सियाँ बहुत अधिक सक्रिय हैं। इस प्रकार धर्मान्तरण न करने वाले हरिजन आदि में हेय भावना उत्पन्न होगी और उनमें धर्मान्तरण के प्रति अधिक से अधिक आकर्षण उत्पन्न होगा। इस प्रकार इस विधेयक का परिणाम यह होगा कि इस देश में हिन्दू बहुमत बहुत शीघ्र अल्पमत में बदल जायेगा और फिर एक दिन काश्मीर, पंजाब, बोडो जैसी समस्याएं पूरे देश में उठ खड़ी होंगी।

संविधान ने हरिजनों/पिछड़े वर्ग के लोगों आदि के लिए आरक्षण व अन्य सुविधाओं की मूल परिकल्पना उनके आर्थिक व सामाजिक उत्थान द्वारा अभिन्न हिन्दूसमाज के साथ एकाकार होने के लिए की थी। इस भावना को न समझने के कारण उक्त विधेयक में धर्मान्तरण द्वारा उनके राष्ट्रीय मुख्यधारा से अलग हो जाने के बाद भी उन्हें यह सुविधाएं जारी रखना भारत की राष्ट्रीय अस्मिता को समाप्त करना है। धर्मान्तरण में संलग्न विदेशी शक्तियाँ धन का प्रलोभन देकर पहिले ही गरीब भोले-भाले हिन्दुओं को बड़ी संख्या में धर्मान्तरित करने में जुटी हुई हैं। इस विधेयक के पास हो जाने पर धर्मान्तरण को खुली छूट प्राप्त हो जायेगी और विदेशीकुचक्र स्वयमेव सफल हो जायेगा।

अतः आर्यप्रतिनिधि सभा, उ०प्र० इसे आर्यजाति के जीवनमरण का प्रश्न समझती है और अपने प्राणों की बाजी लगा कर भी इस राष्ट्रविरोधी विधेयक को कभी भी कार्यान्वित न होने देने का संकल्प व्यक्त करती है।

हमारा आपसे अनुरोध है कि प्रचार के सभी माध्यमों (दूरदर्शन, आकाशवाणी, समाचार पत्र आदि) का उपयोग करते हुए समाजों तथा सार्वजनिक स्थानों पर विशेष आयोजनों/साप्ताहिक अधिवेशनों आदि में इस राष्ट्रविरोधी विधेयक के विरुद्ध व्यापक अभियान चलाएं और प्रस्ताव पारित करके अपने क्षेत्रीय विधायक एवं सांसद को स्वयं जाकर प्रस्तुत करें तथा राष्ट्रपति-महोदय/मा० प्रधानमन्त्री तथा गृह मन्त्री भारत सरकार/ राज्यपाल महोदय उ०प्र०/ मुख्यमन्त्री उ०प्र० को भेजें तथा उसकी प्रतियाँ अग्रिम कार्यवाही हेतु सभा कार्यालय में भी प्रेषित करने का कष्ट करें।

भवदीय,

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश,
5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दिनांक- जून 17, 1990

"क्या हिन्दू समाज को संगठित करना राष्ट्रघाती है?"

— श्री ब्रह्मदेव

कुछ समय से देश में "हिन्दू-राष्ट्र" की चर्चा विशेष रूप से चल पड़ी है। अनेक नेता, कुछ राजनीतिक दल तथा कुछ समाचार पत्र-पत्रिकाएं हिन्दू राष्ट्र शब्द को हजम ही नहीं कर पा रहे हैं। सम्पादकों के नाम पत्र भी खूब छप रहे हैं।

इस शताब्दी में जिस दिन से भारत में हिन्दू समाज को संगठित करने की बात माँ के प्रखर तेजस्वी पुजारियों के मुख से निकली थी उसी दिन से उनको गालियाँ पड़नी शुरू हो गयी थीं जो आज तक पड़ रही हैं। वे संकुचित हैं, साम्प्रदायिक हैं, तंगदिल हैं, पथभ्रष्ट हैं, एकता के शत्रु हैं, आजादी के दुश्मन हैं, मुसलमानों के दुश्मन हैं आदि-आदि तो क्या सचमुच हिन्दू समाज को संगठित करना एक राष्ट्रघाती कार्य है? क्या देश के लिए यह विनाशकारी सिद्ध होगा।

पिछले सौ वर्षों में देश के शीर्षस्थ नेताओं ने प्रमाणिकता से, सच्चे हृदय से पसीना बहाकर राष्ट्र की एकता के लिए प्रयत्न किये हैं। देश में आजादी के लिए संघर्ष करने वाले कई नेता तथा संस्थायें थीं। उनमें कांग्रेस सबसे बड़ी तथा अग्रणी थी। उसको यह बात जंची कि सभी को एक करके चलने मे आजादी सहज ही मिल जायेगी। वह सब राजनैतिक दलों से विशेष कर मुस्लिम लीग और उसके नेताओं को खुश करके साथ मिलाने के लिए सभी कुछ करने पर उतर आयी। राजनैतिक दलों की एकता को ही राष्ट्रीय एकता कहा जाने लगा। उसी को प्राप्त करने के प्रयासों को राष्ट्रीय एकता के प्रयास कहा गया। इसके सिवाय किसी ने कभी कहीं राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय संस्कृति , राष्ट्रीय एकात्मता आदि की चर्चा तक नहीं की, उसे प्राप्त करना तो दूर की बात रही। जिस किसी ने उनके प्रयत्नों की अलोचना की, उसी की आलोचना की गई ।

कांग्रेस ने मुस्लिम लीग को देश भर के मुसलमानों का प्रतिनिधि माना तथा उससे ही एकता के लिए समझौता किया क्या सचमुच मुस्लिम लीग भारत के मुस्लिम समुदाय की प्रतिनिधि संस्था थी? यदि वह नहीं थी, तो उसको इतना महत्व क्यों दिया गया? कांग्रेस के साथ समर्पण भाव से जुड़े हुए राष्ट्रीय मुस्लिम नेताओं को महत्व देकर उन्हीं के द्वारा मुसलमानों को क्यों नहीं समझाया गया?

दूसरा प्रश्न यह भी है कि क्या कांग्रेस स्वयं एक हिन्दू संस्था थी। यदि हां तो उसी के द्वारा की गयी व्याख्या के अनुसार वह घोर साम्प्रदायिक थी। और यदि नहीं तो भारत के करोड़ों हिन्दुओं की ओरसे समझौते करने का अधिकार उसको किसने दिया, कब दिया, जबकि कांग्रेस के नेताओं में कुछ ऐसे लोग भी थे कि "चाहे तो मुझे गधा कहो पर हिन्दू मत कहो।"

राष्ट्रीय एकता के नाम पर यही धांधली देश में चल रही थी। कोटि-कोटि जन को मूर्ख बनाया जा रहा था। इन नेताओं की कल्पनाशील एकता को प्राप्त करने के लिए उनके ही आग्रह पर हिन्दू समाज ने मुस्लिम समाज को मनाने के लिए अपने अनेक आग्रह छोड़। अपनी राष्ट्रभाषा संस्कृत को मृत भाषा कहकर छोड़ दिया और उस हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा माना जिसका स्वरूप क्या है, लिपि क्या है, व्याकरण क्या है, आज तक कोई नहीं जानता। अपना राष्ट्रध्वज छोड़ा। उसके साथ मुसलमानों का हरा तथा सभी अल्पसंख्यकों का सफेदरंग जोड़कर तिरंगा बनाया। राष्ट्रीय संस्कृति छोड़ दी। उसके साथ कुछ अरब की तथा कुछ योरप की संस्कृति जोड़कर खिचड़ी संस्कृति को अपनी संस्कृति कहा। 1947 में भारत माँ के टुकड़े भी कर दिए। उसके बाद भी स्वतन्त्रता के युग में जम्मु कश्मीर की धारा 370 द्वारा विशेषाधिकार दे दिये। राष्ट्र को बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक समुदायों में बाँट रखा। मानव अधिकार आयोग के स्थान पर अल्पसंख्यक आयोग बनाया। सरकारी कामकाज के लिए अंग्रेजी को ही रखा। यह सब कुछ हिन्दू समाज ने एकता की मृग मरीचिका के पीछे किया है। इतना सब करने पर भी एकता का कहीं पता नहीं है, क्योंकि अन्य समुदायों ने एतदर्थ आज तक कुछ भी किया नहीं है, कुछ भी दिया नहीं है। सभी राजनैतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के पीछे अन्ध हो रहे हैं। तो क्या राष्ट्र की एकता, उसके स्वातन्त्र्य तथा अस्मिता की रक्षा के लिए आज हिन्दू समाज को संगठित रूप से खड़ा रखना आवश्यक नहीं है? यह कार्य विनाशकारी कैसे होगा? विशेषकर जब उसका संगठित करने का आधार "अपने से प्यार हो, किसी से घृणा या शत्रुता नहीं है।"

जब अंग्रेजों की दासता से मुक्ति पाने के लिए जो संघर्ष दिन-रात चल रहे थे उसमें सफलता पाने के लिए "राष्ट्र को एक करना अनिवार्य है", ऐसा नेताओं ने कहा। "हिन्दू मुस्लिम सिख-ईसाई, सारे हैं हम भाई-भाई" का नारा देश में गुंजाया गया। मुख्य अंश मुस्लिम समुदाय ही था। उसके नेताओं नें इस एकता के विरुद्ध विष उगलना शुरू कर दिया। दिन-रात अपने अनुयायियों को उल्टी दिशा में बढ़ाने लगे। उस समय अंग्रेजी शासन के प्रतिनिधि वाइसराय की कार्यकारिणी के एक सदस्य फजलहुसेन ने तो उत्तर भारत के मुसलमानों में एक सनसनीखेज पत्रक बड़े पैमाने पर गुप्त रूप से बाँटा था जिसका भंडाफोड़ लाहौर के एक अखबार ने किया था। उस पत्रक में लिखा था कि "मुसलमानों सावधान रहो, हिन्दू मुसलमान एकता के जाल में मत फँसो। भिखमंगे हिन्दुओं से मेल करने में अपने को क्या फायदा है। हमें तो अंग्रेजों से मिलकर अपना लाभ करना चाहिये। सभी तथाकथित अल्पसंख्यक समुदाय छोटे थे पर संगठित थे, एकजुट थे। इनके नेताओं के सामने जब सबके साथ मिलकर एक होने की बात आई तो वे सोचने लगे कि इतने विराट समाज के साथ मिलने का उनको क्या लाभ होगा। ' यह चित्र भी उनके सामने स्पष्ट था कि जिस हिन्दू समाज के साथ एकता करनी है, वह स्वयं तो टुकड़ों में बंटा हुआ है। प्रान्त भेद, भाषा भेद, जाति भेदों का शिकार है। इसलिए वे सौदेबाजी करने लगे। इसी कारण से आज तक के तथाकथित राष्ट्रीय एकता के सारे प्रयास, सारी योजनाएं असफल रहीं। इस दृष्टि से भी क्या हिन्दू समाज को संगठित करना आज आवश्यक नहीं लगता। यह प्रयास देश के लिए विनाशकारी कैसे होगा?

नेताओं की कल्पना की एकता प्राप्त करने के लिए गत सौ वर्षों में इस हिन्दू समाज ने प्रयत्नों में कोई कमी नहीं रखी फिर भी इस एकता के कहीं दर्शन नहीं हुए। इसलिये इतिहास की ही यह चेतावनी है कि यदि ईमानदारी से सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय एकता करनी है तो जिस भ्रम जाल में फँसे हुए हो, उसको तोड़ दो। सच्ची राष्ट्रीयता के दर्शन करो और उसी के आधार पर शीघ्रातिशीघ्र संगठित शक्ति के रूप में खड़े हो जाओ।

यही है वह मूल पवित्र प्रेरणा जो हिन्दू संगठन के पीछे काम कर रही है। परन्तु राजनैतिक धूर्त लोग ये शब्द सुनते ही प्रचार शुरू कर देते हैं कि ये हिन्दू राष्ट्र वाले भारत में हिन्दुओं का राज्य स्थापित करने का षड्यन्त्र कर रहे हैं। आज जो हिन्दु हैं, वे उन्हीं का राज्य बनायेंगे। ये अन्य सबको जबरन हिन्दू बनायेंगे या उन पर बहुत अत्याचार करके उनको भारत से निकाल देंगे। पर वास्तव में इस प्रकार का प्रचार कर उनको डराकर, मूर्ख बनाकर उनके वोट बटोरना ही इन आलोचकों का उद्देश्य है। जबकि हिन्दू संगठनों की धारणा है कि सब भारतवासी जो भारत को माँ मानते हैं सगे सम्बन्धी हैं। एक ही पूर्वजों का खून हमारी नसों में बह रहा है। कभी विदेशी मुसलमानों के शासनकाल में हमारे कुछ पूर्वजों ने भय से या अश्रद्धा हो जाने के कारण अपना मज़हब (मत या पंथ) बदलकर इस्लाम मज़हब स्वीकार कर लिया होगा। तो भी उससे क्या होता है, मज़हब बदलने से खून नहीं बदल जाता, जाति नहीं बदले जाती पूर्वज नहीं बदल जाते। गाँधी जी ने भी एक बार मोहम्मद जिन्ना को लिखा था कि परिवर्तित लोगों के समुदाय को उसके पूर्वजों से अलग नहीं किया जा सकता। मज़हब बदलने से संस्कृति नहीं बदलती, राष्ट्रीयता नहीं बदलती। "हिन्दू" यह किसी मत पंथ या मज़हब के मानने वालों का नाम नहीं है। यह तो भारत के राष्ट्रीय लोगों का नाम है। हजारों वर्षों से सारा विश्व हमें इसी नाम से जानता पहचानता है। इसलिए इस नाते हम सब हिन्दू ही हैं। हमारे समान अधिकार हैं। समान ही कर्तव्य हैं। इसलिए भारतीय कहें, आर्य कहें, या हिन्दू कहें भाव एक ही है।

हिन्दू राष्ट्र के आलोचक इस बात को समझकर चलें तो उनके दिमागों में वोट के भिखारियों और कुर्सी के पुजारियों ने जो भ्रमजाल पैदा किया है वह टूटकर बिखर जाएगा और वह

— शेष पृष्ठ ६ पर

धर्मान्तरण के बाद भी सुविधाएं जारी रखना अवैधानिक है।

दिल्ली नव बौद्धों को अनुसूचित जातियों के समान आरक्षण तथा अन्य सुविधायें देने संबंधी बिल पास होने के बाद केन्द्रीय श्रम मन्त्री श्री पासवान ने कहा कि यही सुविधायें हिन्दुओं से ईसाई और मुसलमान बने लोगों को भी देने के लिए सरकार विचार करेगी।

इस वक्तव्य पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा पूर्व सांसद श्री आनन्दबोध सरस्वती ने कहा देश में पहले ही साम्प्रदायिकता सीमायें पार कर चुकी है और इस वक्तव्य से श्री पासवान ने एक नई साम्प्रदायिकता को जन्म देने की कोशिश की है। वी0पी0 सिंह सरकार का यह बड़ा भारी षड्यन्त्र है जिससे बहुत जल्दी हिन्दू जाति इस देश में अल्पसंख्यक बन जायेगी। स्वामी जी ने खेद व्यक्त किया कि भारतीय जनता पार्टी भी गैर जिम्मेदार नेताओं द्वारा चलाई जाने वाली राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से अपना समर्थन वापस क्यों नहीं लेती?

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने वक्तव्य में कहा कि अनुसूचित जातियों को मिलने वाला आरक्षण केवल हिन्दू समाज की व्यवस्था का अंग है। इस्लाम और ईसाईयत में जात-पांत की सामाजिक व्यवस्था नहीं है। जब कोई व्यक्ति हिन्दू धर्म से इस्लाम या ईसाई धर्म में प्रवेश करता है तो यह अनुसूचित जाति का कैसे रह सकता है?

स्वामी जी ने सुप्रीम कोर्ट के उन फैसलों का उल्लेख किया जिनमें यह कहा गया है कि धर्मान्तरण के बाद पुरानी जाति की सुविधायें नहीं मिल सकती।

सरकार को चेतावनी देते हुए स्वामी जी ने घोषणा की कि यदि इस तरह का कोई कदम उसने उठाया तो आर्य समाज राष्ट्रव्यापी और उग्र आंदोलन करेगी।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मंत्री सार्वदेशिक सभा

श्री धर्मपाल गुरुकुल फार्मेसी के निदेशक

नई दिल्ली 3। मई: आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान एवं एम0डी० एच0 के स्वत्वाधिकारी श्री महाशय धर्मपाल को गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार का मानद डायरेक्टर नियुक्त किया गया है। महाशय जी का इस व्यवसाय के सफल संचालन में एक लम्बा अनुभव है। विश्वास है कि उनके निर्देशन में फार्मेसी उत्तरोत्तर उन्नति करेगी। महाशय जी अपने व्यापार कार्य से समय निकालकर इस संस्था की उन्नति के लिये जो सहयोग दे रहे हैं, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। फार्मेसी से प्राप्त आर्य गुरुकुल शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहन देने के लिए व्यय की जाती है। तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

स्वास्थ्य सुधा

पत्रांश:- "गुरुजी, सादर चरण स्पर्श। मैं "आर्यमित्र" का प्रेमी हूँ। आपने ही आर्यमित्र पत्रिका लगवाकर मुझे कृतार्थ किया। मेरी अवस्था 24 वर्ष है। कमर में हमेशा हल्का दर्द रहता है। मैं अपना भार बढ़ाना चाहता हूँ।"

-एस0एन0महन्त प्राथमिक पाठशाला रीठाखाल (पिथौरागढ़)

समाधान:- सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ में कई" 1990 तक आर्यमित्र के ग्राहकों की संख्या दो सौ सत्तर से अधिक पहुँच चुकी है।

आर0कम्पाउण्ड (अलारसिन) की दो गोली प्रत्येक भोजन बाद लेकर मनोल (चरक) दो चम्मच पानी में घोलकर पिया करें। भोजन मे दाल अवश्य लेवें। भोजन के अंत में केला-दूध-शहद में मीसकर एक प्याला खाया करें। प्रात: कुछ दौड़ किया करें।

---2---

पत्र-"स्वामी जी, सादर नमस्ते। आर्यमित्र में प्रकाशित स्वास्थ्य सुधा के माध्यम से रोगियों का आप द्वारा बड़ा उपकार हो रहा है। मैं अविवाहित 19 वर्षीय युवक स्वप्नदोष से ग्रसित था। आप द्वारा बताई गई वीर्यशोधन वटी (श्रीराम औषधालय-कालेड़ा) कृष्ण गोपाल, जनपद अजमेर) की एक गोली प्रातः व रात्रि दूध से सेवन कर रहा हूँ। बीस दिन के पश्चात् मुझे काफी लाभ का अनुभव हो रहा है। स्वप्नदोष तो बन्द है, किन्तु पेशाब के समय कभी-कभी वीर्य की एक-दो बूंद आ जाती है।"

-एक युवक (बलिया-उत्तर प्रदेश)

पत्रोत्तर:- वीर्यशोधन वटी का चालीस दिन का कोर्स पूरा करें। मिर्च-लहसुन, प्याज गरममसाला रहित भोजन के साथ फल-सलाद भी लिया करें। आम-इमली की खटाइ से बचे। नित्य मूत्रेन्द्रिय की त्वचा पीछे करके सफेद मल को पानी से धोया करें। प्रातः शौच के बाद एक किलोमीटर की तेजचाल या दौड़ किया करें। स्नान के पश्चात क्रम से भुजंगासन, पश्चिमोत्तानासन हलासन, सर्वांगासन और एक पादांगुष्ठासन करें।

पत्राचार तथा उपचारपत्र हेतु, [illegible] रूपये वाले तीन लिफाफे भेजें।

आवश्यक सूचना

दयानन्द संघ के अवैतनिक महोपदेशक, उपदेशक तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट लिखी जा रही है, अत अपने-अपने कार्य का विवरण साफ-साफ 1 जनवरी 1989 से 31 मार्च, 1990 तक का बनाकर, 10 जुलाई 1990 तक सभा कार्यालय में भेज दें, इसके पश्चात आने पर सभा का उत्तरदायित्व नहीं होगा।

-मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

धर्म एक, सम्प्रदाय, मजहब अनेक:-

विश्वम्भर दयाल गुप्त
मुद्रक एवं प्रकाशक 'आर्य मित्र' लखनऊ

धर्म का वास्तविक स्वरूप न समझने के कारण ही धर्म के नाम पर विरोध है। वास्तव में धर्म वह है जिसको सब धारण करते हैं अर्थात् जिससे संसार में कोई भी मनुष्य इनकार नहीं कर सकता है और सारे संसार के लिये एक है। उदाहरण हेतु जसे सूर्य, चन्द्र समस्त संसार के लिये एक हं। वैदिक शास्त्रों के अनुसार धर्म के लक्षण निम्न प्रकार हैं।

"धृति, क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्"।।

किसी पदार्थ के स्वाभाविक गुण को भी धर्म का लक्षण कहा जाता है। जैसे जल का धर्म शीतलता अग्नि का धर्म जलाना।

धर्म के नाम पर जो विरोध है, उसका कारण केवल एक है कि धर्म को और मजहब, सम्प्रदाय, रिलीजन को एक समझा जाता है। जबकि मजहब सम्प्रदाय आदि का धर्म मे बहुत अन्तर है।

अन्तर:- (1) धर्म वह जो ईश्वर ने सब मनुष्यों के कल्याण के लिये आदि सृष्टि में दिया वह एक ही है, कोई भेदभाव नहीं। मजहब / पंथ मनुष्यों ने अपनी आवश्यकतानुसार चलाये और अनेक हैं और अपने-अपने मानने वालों की पक्षपात पूर्ण हैं।

(2) धर्म मनुष्य के कर्मानुसार ईश्वर के न्याय द्वारा पक्षपात रहित फल मानता है। मज़हब सम्प्रदाय पंथ मानते हैं कि उनके प्रवर्तकों एवं गुरुओं की सिफारिश होने पर पापी भी बहिश्त (स्वर्ग) पा जाता है।

(3) धर्म का विज्ञान से विरोध नहीं है मज़हब या मत में बुद्धि, तर्क विज्ञान का दखल नहीं मानते।

(4) धर्म ईश्वर से सीधा सम्बन्ध स्थापित कराता है। मज़हब। सम्प्रदाय क बीच में एजेन्ट होना अनिवार्य है।

अल्लाह के पल्ले में
वहदत के सिवा क्या है,
लेना है सो ले लेंगे
अपने मुहम्मद से ।।

धर्म प्राणिमात्र के सुख हेतु है, सर्वे भवन्तु सुखिनः। मज़हब/सम्प्रदाय विशेष अपने पंथ को मानने वाले को सुख चाहता है बहिश्त, और दूसरों के लिये, मज़हब न मानने वालों के लिये, दोजख।

धर्म सृष्टि विज्ञान के अनुकूल है, मज़हब/सम्प्रदाय सृष्टि नियम के विरुद्ध मोजजे अर्थात् मुर्दा जिलाना, कुंवारी के पुत्र होना, सूर्य निगलना, चाँद के टुकड़े करना आदि सृष्टि नियम विरुद्ध बातें मानते हैं।

धर्म स्त्री, पुरुष को पढ़ने पढ़ाने आदि सब कार्यों में समान अधिकार देता है। मज़हब/सम्प्रदाय में स्त्रियों को निर्जीव आदि मानकर नरक द्वार कहते हैं। और भी अनेक अन्तर हैं धर्म में और मज़हब सम्प्रदाय में जिससे स्पष्ट होता है कि मानव धर्म एक है और मज़हब सम्प्रदाय मत अनेक हैं। धर्म में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, फारसी आदि किसी के लिये पक्षपात नहीं है। जबकि मज़हब सम्प्रदाय अपने-अपनों के लिये पक्षपातपूर्ण हैं।

नवभारत टाइम्स
स्वतंत्र भारत
दैनिक जागर
The Pioneer
स्वतंत्र चेतना
आज

आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव परिणाम पर रोक

विधि संवाददाता

लखनऊ, ७ जून। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की प्रांतीय कार्यकारिणी का चुनाव ९ जून को होगा किन्तु परिणाम अदालत के अग्रिम आदेशों तक घोषित नहीं किया जाएगा। यह व्यवस्था उच्च न्यायालय की स्थानीय पीठ के न्यायमूर्ति सैयद सगीर अहमद ने आज आर्य प्रतिनिधि सभा के सचिव मनमोहन तिवारी द्वारा दायर याचिका में दी।

अदालत ने कहा है कि याचिका के साथ संलग्न सदस्यों की सूची के अलावा सभा के सचिव मनमोहन तिवारी द्वारा अनुमोदित सदस्यों को भी चुनाव अधिकारी सहायक निबंधक पी.के. पाण्डेय मतदान में शामिल करेंगे।

न्यायालय ने सभी मत पत्रों को सीलबंद रखने का आदेश दिया है।

इस मामले की सुनवाई अब २७ जुलाई वाले सप्ताह में होगी। जिसके साथ इस सिलसिले में प्रस्तुत की गई समस्त याचिकाएं सुनी जाएंगी।

आवेदक के अधिवक्ता सतीश चन्द्र मिश्र ने कहा कि गत ११ मई को इसी अदालत ने निर्देश दिया गया था कि आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा के सभी सदस्यों को नोटिसें जारी करने के उपरान्त चुनाव अधिकारी चुनाव कराएं। किन्तु स्पष्ट आदेशों के बावजूद भी चुनाव अधिकारी ने सभी सदस्यों को नोटिसें नहीं भेजी थीं।

याचिका का विरोध आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष कैलाशनाथ सिंह सांसद एवं पूर्व शिक्षा मंत्री ने किया। श्री सिंह की ओर से हीरालाल एडवोकेट ने कहा कि चुनाव अधिकारी ने अदालत के पूर्व आदेश के तहत सदस्यों को नोटिसें जारी कर ९ जून को मतदान की तिथि विधिवत निर्धारित की है। आवेदक के विरुद्ध चुनाव टालने का आरोप लगाया गया। सचिव श्री तिवारी द्वारा पेश की गई मतदाता सूची का भी विरोध किया गया।

अब श्री अहमद ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद चुनाव की तिथि टालने से मना कर दिया किन्तु चुनाव के परिणाम घोषित करने पर अंकुश लगा दिया।

ऐसा हुआ सरकारी चु



मात्र 30, 35 लोग चुनाव में सम्मिलित हुए लोगों के बीच श्री यादव

अ

THE TIMES OF INDIA, LUCKNOW FRIDAY JUNE 8 1990 8

HC order on Arya Pratinidhi sabha poll

By Our Law Reporter

LUCKNOW June 7 Mr Justice S. Saghir Ahmad of the high court here today directed that the election of Arya Pratinidhi Sabha, Uttar Pradesh, would be held on June 9 but the result would not be declared until further orders of the court.

The judge observed that all the persons, certified by the secretary of the sabha, Mr Man Mohan Tewari, would also cast their votes and votes would be kept under seal.

The aforesaid orders were passed in the writ petition filed by Mr Man Mohan Tewari, secretary of the sabha, challenging holding of election on June 9 for managing committee of the provincial body of the sabha.

It was contended on behalf of the petitioner by Mr S.C. Misra, advocate, that under the earlier order of this court passed on May 11 last election was to be held after sending notice to all the members of the general body but the election officer, Asstt. registrar Mr P.K. Pandey had defied the order and had not issued notices to all the members.

The petition was opposed on behalf of Mr Kailash Nath Singh, president of the sabha and MP (Lok Dal) on the ground that the election was being properly held and membership of persons claimed by the secretary Mr M.M. Tewari, was disputed.

The court after hearing the parties ordered to list all the pending writ petition relating to above dispute after July 27

आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव में धांधली

लखनऊ, रविवार। जनता दल के सांसद कैलाश नाथ सिंह यादव एवं प्रेषित ज्ञापन में रजिस्टार एवं सोसाइटीज एण्ड चिट्स उ.प्र. की सांठ-गांठ के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के चुनाव में बड़े पैमाने पर धांधलियां हुई हैं। यह आरोप आज यहां उ.प्र. आर्य कुमार सभा के प्रान्तीय संयोजक तथा आर्य उप-प्रतिनिधि सभा के मंत्री ... कुमार छाबड़ा, सभा प्रधान वेदव्रत अवस्थी, अर्जुनदेव मल्होत्रा, कोषाध्यक्ष शिवनाथ वर्मा आर्य कुमार सभा के नेता ... कुमार तिवारी तथा चौधरी ओम प्रकाश सिंह ने लगाया।

उक्त नेताओं ने जिला अधिकारी को ... में पुलिस की भूमिका की निन्दा करते हुए आर्य प्रतिनिधियों एवं आर्य महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करने वाले पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध ... कार्यवाही की मांग की है।

आर्य कुमार सभा के प्रान्तीय संयोजक ने कहा कि उक्त चुनाव में सांसद ने जिस ... सारी मर्यादाओं को तोड़कर ... होने का कुत्सित प्रयास किया, उसे सारे आर्य जगत में तीव्र आक्रोश व्याप्त है।

उन्होंने कहा कि महिलाओं से अभद्र व्यवहार कराने के लिए जिम्मेदार स्वयं को आर्य समाज का कर्णधार बताने वाले उक्त सांसद की नैतिकता के आधार पर ... त्याग-पत्र दे देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जनता दल सांसद ने सत्ता ... दुरुपयोग ... पुलिस प्रशासन की मदद से फर्जी मतदान कराया और प्रदेश के कोने-कोने से आये आर्य प्रतिनिधियों को न केवल उनके वोट देने के जनतांत्रिक अधिकार से वंचित किया बल्कि पुलिस द्वारा बेरहम ढंग से उनकी पिटाई भी करवा दी।

श्री छाबड़ा ने कहा कि आर्य कुमार सभा उ.प्र. इस चुनाव में हुए अनियमितताओं तथा धांधलियों के विरुद्ध उच्च न्यायालय में याचिका दायर करेगा।

लखनऊ मेल
निष्पक्ष हिन्दी दैनिक
स्वतंत्र भारत
नव

स्वतंत्र चेतना
नवजीवन
आज
स्वतंत्र भारत
दैनिक जागरण
The Pioneer
जीवन
नवभारत टाइम्स
आज

आर्यसमाजियों पर टूटा पुलिस का कहर

लखनऊ। प्रदेश के विभिन्न जनपदों से चुनाव मे भाग लेने आए आर्य समाज के [illegible] प्रतिनिधियों पर [illegible] ने आज अन्धाधुन्ध [illegible] तथा उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव स्थल से बाहर कर दिया [illegible] और मुक्कों के प्रहार से आर्य समाज के बहुत से सदस्यों को [illegible] आई [illegible] महिलाएं भी हैं।

यह घटना उस समय हुई जब उच्च न्यायालय खण्डपीठ लखनऊ के आदेश से [illegible] रोड स्थित विकास दीप भवन में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का चुनाव रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटीज तथा चिट्स उ.प्र. द्वारा सम्पन्न कराया जा रहा था। इस चुनाव में भाग लेने के लिए जब सभा प्रधान पं. इन्द्रराज तथा सभा मन्त्री मनमोहन तिवारी के नेतृत्व में बड़ी संख्या मे भाग लेने आर्य समाज के प्रतिनिधि [illegible] दो बजे जब वहा पहुचे तो जनता सांसद कैलाश नाथ सिंह यादव के इशारे पर वहा ड्यूटी पर मौजूद पुलिस कर्मियों ने यह कार्य किया। इन्सपेक्टर अलबेल सिंह एस.आई. अशफाक हुसैन तथा एस.आई. आर. एस. यादव ने प्रतिनिधियों को आगे जाने से रोका। प्रतिनिधियों ने उनके इस कदम का विरोध किया और कहा कि [illegible] हाई कोर्ट लखनऊ बेंच के आदेश से वे इस चुनाव में भाग लेने आए हैं और उन्हें इस तरह मतदान से वंचित नहीं किया जा सकता। परन्तु उन पुलिस कर्मियों ने अपनी हठ नहीं छोड़ी और उन्होंने अन्य पुलिस कर्मियों की सहायता से प्रतिनिधियों पर डण्डे और लाठियाँ बरसायीं और कुछ को मारते मारते वे मतदान केंद्र से बाहर ढकेलते चले गये। इन पुलिस कर्मियों ने महिलाओं को भी नहीं बख्शा और उनके साथ भी हाथापाई की। इस तरह पुलिस की इस बर्बरकारवाई से आर्य प्रतिनिधियों में से बहुत से अपने मताधिकार का प्रयोग करने से वंचित रह गए।

बाद में सभा प्रधान तथा सभा मंत्री ने चुनाव में की जा रही धांधले बाजी और अनियमितताओं के विरुद्ध एक आपत्ति पत्र चुनाव अधिकारी को दिया और चुनाव का बहिष्कार कर दिया।

इस चुनाव में यह भी उल्लेखनीय है कि जनता दल सांसद कैलाश नाथ सिंह यादव तथा रजिस्ट्रार की सांठगांठ से सत्ता प्रशासन का खुला दुरुपयोग इस चुनाव में हुआ। यहां तक कि चुनाव स्थल पर प्रदेश के एडवोकेट जनरल उमेश श्रीवास्तव एल.आर. पब्लिक प्रोसीक्यूटर एस.पी.ओ. आदि न्यायिक अधिकारी भी उपस्थित थे। जिससे न्याय पालिका की गरिमा को भी भारी आघात पहुंचा। आज की इस घटना से सम्बन्धित एक शिकायती पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री मनमोहन तिवारी ने ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक लखनऊ को दिया है। जिसमें आर्य समाज के प्रतिनिधियों पर लाठी चार्ज करने वाले पुलिस कर्मियों के खिलाफ कार्यवाही की करने की मांग की है।

बाद में प्रदेश भर से आये हुए प्रतिनिधियों की एक सभा प्रधान पं. इन्द्रराज की अध्यक्षता में हुई जिसमें इस काण्ड की कड़े शब्दों में निन्दा की है। और उक्त पुलिस दल के निलम्बन की मांग की गयी। जिन्होंने जनता सांसद कैलाश नाथ सिंह यादव का खुल्लमखुल्ला पक्ष लेते हुए अपने अधिकारों का दुरुपयोग किया और शान्त आर्य प्रतिनिधियों (मतदाताओं पर) डण्डे बरसाये। सभा में यह भी चेतावनी दी गयी कि अगर पुलिस प्रशासन ने इस दिशा कोई कार्यवाही नहीं की तो पूरे प्रदेश में न्याय प्राप्ति के लिए एक जोरदार संघर्ष छेड़ दिया जायेगा जिसकी पूरी जिम्मेदारी स्थानीय प्रशासन की होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा में धांधली के खिलाफ याचिका दायर होगी

लखनऊ, रविवार। जनता दल के सांसद कैलाश नाथ सिंह यादव एवं रजिस्ट्रार फर्म सोसाइटीज एण्ड चिट्स उत्तर प्रदेश की सांठगांठ के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के चुनाव में बड़े पैमाने पर धांधलियां हुई हैं। यह आरोप आज यहां उत्तर प्रदेश आर्य कुमार सभा के प्रांतीय संयोजक तथा आर्य [illegible] कुमार सभा उत्तर प्रदेश आर्य कुमार सभा के प्रतिनिधि [illegible] प्रांतीय संयोजक तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रधान सभा के मंत्री [illegible] कुमार छाबड़ा सभा प्रधान वेद प्रत अवस्थी उप प्रधान अर्जुन देव [illegible] आर्य कुमार सभा के [illegible] विश्वनाथ शर्मा [illegible] कुमार तिवारी तथा चौधरी ओम [illegible] ने लगाया।

उन्होंने कहा कि जनता दल सांसद ने [illegible] दुरुपयोग का पुलिस प्रशासन की [illegible] कराया और प्रदेश के [illegible] प्रतिनिधियों को न [illegible] अधिकार से वंचित किया बल्कि पुलिस द्वारा [illegible] उनकी पिटाई भी करवा दी।

उक्त नेताओं ने जिलाधिकारी श्री अशोक प्रियदर्शी को प्रेषित ज्ञापन में पुलिस की भूमिका की निन्दा करते हुए आर्य प्रतिनिधियों तथा महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करनेवाले पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कारर्वाई की मांग की है।

आर्य कुमार सभा के प्रांतीय संयोजक ने कहा कि उक्त चुनाव में सांसद ने जिस शर्मनाक ढंग से सारी मर्यादाओं को तोड़कर काबिज होने का प्रयत्न किया उससे सारे आर्य जगत में तीव्र आक्रोश व्याप्त है।

उन्होंने कहा कि महिलाओं से अभद्र व्यवहार कराने के लिए जिम्मेदार स्वयं को आर्य समाज का कर्णधार बताने वाले उक्त सांसद को नैतिकता के आधार पर त्यागपत्र दे देना चाहिये।

सांसद पर धांधलियों का आरोप

[illegible]

आर्य समाज चुनाव में डंडे बरसे

[illegible]

—शेष विवरण पृष्ठ ८ पर देखें

e Pione | नवभारत टाइम्स | दैनिक जागरण | नव
LUCK OW FR DAY JUNE 1 1990

आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन में धांधली का आरोप

लखनऊ, १२ जून। जनता दल के सांसद कैलाश नाथ सिंह यादव एवं रजिस्टार फर्म सोसाइटीज एंड चिट्स उ प्र की सांठ गांठ के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र के चुनाव में बड़े पैमाने पर धांधलियां हुई है। आरोप लगाते हुए उ प्र आर्य कुमार सभा के प्रान्तीय संयोजक तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मंत्री चन्द्र कुमार छाबड़ा सभा प्रधान वेदव्रत अवस्थी उपप्रधान अर्जुन देव महाना कोषाध्यक्ष शिवनाथ वर्मा आर्य कुमार सभा के नेता ज्ञानेन्द्र कुमार तिवारी तथा चौधरी ओमप्रकाश सिंह ने कहा कि जनता दल सांसद ने सत्ता का दुरुपयोग कर पुलिस प्रशासन की मदद से फर्जी मतदान कराया और प्रदेश के कोने कोने से आये आर्य प्रतिनिधियों को न केवल उनके वोट देने के जनतांत्रिक अधिकार से वंचित किया बल्कि पुलिस द्वारा बेरहम ढंग से उनकी पिटाई भी करवा दी।

आर्य कुमार सभा के प्रान्तीय संयोजक ने कहा कि उक्त चुनाव में सांसद ने जिस शर्मनाक ढंग से सारी मर्यादाओं को तोड़कर काबिज होने का कुत्सित प्रयास किया उससे सारे आर्य जगत में तीव्र आक्रोश व्याप्त है।

उन्होंने कहा कि महिलाओं से अभद्र व्यवहार कराने के लिए जिम्मेदार स्वयं को आर्य समाज का कर्णधार बताने वाले उक्त सांसद को नैतिकता के आधार पर त्याग पत्र दे देना चाहिए।

श्री छाबड़ा ने कहाकि आर्य कुमार सभा उ प्र इस चुनाव में हुई अनियमितताओं तथा धांधलियों के विरुद्ध उच्च न्यायालय में याचिका करेगी।

उक्त नेताओं ने जिला अधिकारी श्री अशोक प्रियदर्शी को प्रेषित ज्ञापन में पुलिस की भूमिका की निन्दा करते हुए आर्य प्रतिनिधियों तथा महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करने वाले पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की मांग की है।

ऐसा हुआ

आय प्रातनिधियोको पुलिस ने पीटा

लखनऊ।

प्रदेश के विभिन्न जनपदों से चुनाव मे भाग लेने आऐ आर्य समाज के शान्त प्रतिनिधियो पर पुलिस ने अन्धाधुन्ध डन्डे बरसाये। उन्हे गालिया दी और मारपीट कर उन्हे चुनाव स्थल से निकाल कर बाहर कर दिया। डन्डो और मुक्को के प्रहार से आर्य समाज के बहुत से सदस्यो को गम्भीर चोटे आयी। उनमे कुछ महिलाए भी हैं।

यह घटना उस समय हुई जब माननीय उच्च न्यायालय की लखनऊ खंड पीठ के दिनाक ७।६।९० के आदेश से स्टेशन रोड स्थित विकास द्वीप भवन पर आर्य प्रतिनिधि तथा उ० प्र० का चुनाव रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटीज तथा चिटस उ० प्र० द्वारा सम्पन्न कराया जा रहा था।

इस चुनाव मे भाग लेने के लिए जबसभाप्रधानप ० इन्द्रराज तथा सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के नेतृत्व मे बडी संख्या म भाग लेने आर्य समाज । के प्रतिनिधि दोपहर दो बजे जब वहा पहुचे तो जनता सांसद कैलाशनाथ सिंह यादव के इशारे पर वहा डियूटी पर मौजूद पुलिस कर्मियो ने जिनमे अग्रणी थे

आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव में धाधली का आरोप

ल (उ।) जनता दल के सांसद कैलाश नाथ सिंह यादव एवं रजिस्टार फर्म सोसाइटीज एण्ड चिट्स उप्र की सांठ गांठ के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के चुनाव में बड़े पैमाने पर धाँधली हुई है।

यह आरोप उप्र आर्य कुमार सभा के प्रान्तीय संयोजक तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री चन्द्र कुमार छाबड़ा सभा प्रधान वेद व्रत अवस्थी उप प्रधान अर्जुन देव महाना कोषाध्यक्ष शिवनाथ वर्मा आर्य कुमार सभा के नेता ज्ञानेन्द्र कुमार तिवारी तथा चौधरी ओम प्रकाश सिंह ने लगाते हुए कहा कि जनता दल सांसद ने सत्ता का दुरुपयोग कर पुलिस प्रशासन की मदद से फर्जी मतदान कराया और प्रदेश के कोने-कोने से आये आर्य प्रतिनिधियों को न केवल उनके वोट देने के अधिकार से वंचित किया बल्कि पुलिस द्वारा बेरहम ढंग से उनकी पिटाई भी करा दी।

उक्त नेताओं ने जिला अधिकारी को प्रेषित ज्ञापन में पुलिस की भूमिका की निन्दा करते हुए आर्य प्रतिनिधियों तथा महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करने वाले पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही करने की मांग की है

सरकारी चुनाव

१-विकास दीप, रजिस्ट्रार ऑफिस, लखनऊ को पी0ए0सी0 के जवानों द्वारा घेरा हुआ था तथा अधिकारियों के स्थान पर सांसद श्री कैलाशनाथ सिंह यादव का आदेश चल रहा था। बिचारे अधिकारी मूकदर्शक के रूप में खड़े हुए थे।

2 मात्र 30/35 लोग जो सभा द्वारा या तो निष्कासित थे या जो सभासद ही नही थे, बार-बार मतदान कर रहे थे। ऐसा हुआ सासद यादव, रजिस्ट्रार चुनाव अधिकारी की साठगाँठ में सत्ता शासन का खुला दुरुपयोग।

३-सांसद श्री यादव के आदेश पर पुलिस ने आर्यसमाज के अधिकारियों/माताओं/बहिनों को भी नही बख्शा और उन पर डन्डे बरसाए और जब आर्यजनों से पुलिस अभद्र व्यवहार कर रही थी तो सासद श्री यादव आनन्द ले रहे थे।

४-माताओं/महिलाओं को रोकने तथा चुनावस्थल से बाहर करने हेतु महिला पुलिस के स्थान पर पुरुष पुलिस ही महिलाओं को हटा रहे थे।

५ विकास दीप परिसर में सभा प्रधान श्री0 प0 इन्द्रराज तथा सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के नेतृत्व में लगभग 200 आर्यजन रजिस्ट्रार महोदय से मिलने जा रहे थे उस समय श्री कैलाशनाथ सिंह यादव के इशारे पर टूटा पुलिस का कहर।न पुलिस ने देखा कि इनमें वृद्ध मातायें, पुरुष तथा महिलायें और आर्यसमाज के सम्मानित अधिकारी व आर्य सभासद हैं।

६ सांसद श्री कैलाशनाथ सिंह यादव के इशारे पर एक ट्रक पी0ए0सी0 मौजूद होने के बावजूद भी चार ट्रक पी0ए0सी0 और मंगाई गई।

७-चुनाव स्थल पर ऑफिस के अधिकारियों/कर्मचारियों के अलावा विधिविभाग के अधिकारी तथा सरकारी वकील विशेषरूप से बुलाए गये थे।

८ उच्चन्यायालय के स्पष्ट आदेश के बावजूद भी रजिस्ट्रार तथा चुनाव अधिकारी श्री पी0के0 पान्डे अपनी मनमानी कर रहे थे तथा खुले आम फर्जी मतदान कराया गया।

९ श्री चन्द्रकिरण शर्मा जिन्होंने श्री कैलाश नाथ सिंह यादव के खिलाफ गम्भीर वित्तीय अनियमितताओं के आरोप लगाकर तथा उसे प्रमाणित करके आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित करने में अपना पूर्ण योगदान किया, वही श्री यादव के प्रमुख सलाहकार के रूप में देखे गये।

१०-श्री कैलाश नाथ सिंह यादव जो आर्यसमाज के प्राथमिक सदस्य भी नहीं हैं (इस बात की पुष्टि रजिस्ट्रार द्वारा की गई थी), वह भी चुनाव में उम्मीदवार बने।

११ आधा चुनाव 182 आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा हुआ जबकि उच्च न्यायालय द्वारा आदेश दिए गये कि चुनाव 1855 आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा सम्पन्न होना चाहिए फिर भी चुनाव मात्र 182/- आर्यसमाजों की सूची पर ही कराया गया।

१२-उच्च न्यायालय के आदेश के बाद भी रजिस्ट्रार/चुनाव अधिकारी श्री पान्डे ने सभा के अधिकारी श्री पं0 इन्द्रराज सभाप्रधान, तथा सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी से न ही सम्पर्क किया, न ही किसी प्रकार की कोई लिखित सूचना ही दी जबकि सभामन्त्री ने उनसे चुनाव सम्बन्धी लिखित जानकारी चाही थी।

राष्ट्र की अस्मिता खो गई है?

— अशोक कुमार तिवारी
बोकारो स्टील सिटी (बिहार)

विश्व का सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृति सम्पन्न देश "भारत" युग-युगों से विचित्र विडंबनाओं का शिकार रहा है। अनेक साम्राज्यों का उत्थान-पतन हुआ उसी आधार पर हमारी राष्ट्रीय अस्मिता भी उतार चढ़ाव से गुजरती रही। अस्मिता किसी भी शक्ति, सम्पन्नता और विराटता की चेरी नहीं होती वह एक अलग ही चीज है। लेकिन अस्मिता विहीन बड़े से बड़ा राज्य उसी तरह श्री हीन मरणासन्न हो जाता है जैसे प्राणविहीन विशालकाय हाथी। अस्मिता राष्ट्ररूपी शरीर की आत्मा है। रामायण और महाभारत काल के बाद भारतीय राजनीति ऐसी पतनोन्मुखी हो गई कि बहुत अन्तराल तक वह अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को पूरी तरह संजो नहीं पायी। ऐसा नहीं कि उस समय देशभक्त या राजनीतिज्ञ नहीं थे। "आर्य शूर्पकार" और "आर्य योगन्धरायण" अपने समय के कुशल राजनीतिज्ञ तथा सच्चे देशभक्त थे लेकिन उनका उपयोग छोटे-छोटे साम्राज्यों ने अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए ही किया। उनकी कुशलता और बौद्धिक क्षमता किसी न किसी अपने भारतीय बन्धु को पराभूत करने में ही लगी रही।

मगध में जिस समय महापदम-नन्द का शासन था, उसी समय "आर्य चाणक्य" तत्कालीन जगत्प्रसिद्ध ज्ञानपीठ तक्षशिला में सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता के गौरव के लिए विचारमग्न था। लेकिन उसका तीक्ष्ण विवेक महापद-मनन्द के सहयोग को अपनी लक्ष्यपूर्ति के लिए उपयुक्त नहीं मानता था। "आर्यावर्त" के सौभाग्य से ही उसे "चन्द्रगुप्त" जैसा तेजस्वी सत्पात्र मिल गया और यूनानी आक्रमणकारी "सेल्यूकस" को पराभूत करके उसने हिन्दूकुश पर्वत तक भारतीय पताका फहरायी, इस प्रकार भारतीय अस्मिता को पुनर्प्रतिष्ठित कर दिया। "समुद्रगुप्त", "स्कन्दगुप्त' और 'विक्रमादित्य के पौरुष ने दुर्दान्त को पराजित करके बंगाल की खाड़ी से लेकर हिन्दूकुश पर्वत तक एक रागात्मक हृदय की स्थापना करके राष्ट्रीय अस्मिता को पूर्णता प्रदान की।

गुप्तकाल के पश्चात् राष्ट्रीय अस्मिता और भारतीय गौरव का ह्रास शुरू हुआ और तराइन के दूसरे युद्ध में मुहम्मद गोरी की विजय ने इसकी अन्तिम क्रिया कर दी। राष्ट्रीय अस्मिता को जगाने का प्रयास "सम्राट अकबर और छत्रपति शिवाजी" ने अवश्य किया लेकिन वे भी सम्पूर्ण आर्यावर्त को संजो न पाये। "पेशवा बालाजीराव" ने बहुत हद तक इसकी स्थापना का सत्प्रयास तो किया लेकिन पानीपत के तृतीय संग्राम में एक बार फिर वह लाशों तले पट गई।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आर्यावर्त का प्राचीन पारम्परिक स्वरूप नहीं रहा। रागात्मक सम्बंधों में पड़ी दरार ने भौगोलिक मानचित्र में भी कुछ दरारें डाल दीं। 1947 से जिस राजनीतिक दृष्टिकोण ने हमारी अस्मिता को आच्छन्न कर लिया वह राष्ट्रवाद की अपेक्षा वैयक्तिक अहमन्यता पर अधिक जोर देता था। "असंलग्नता" तथा "पंचशील" सिद्धांत ने किसी एक भारतीय राजनेता का नाम चाहे बढ़ाया हो लेकिन उसकी कीमत भारत को 1948 में कश्मीर तथा 1962 में "नेफा" और लद्दाख" में चुकानी पड़ी। हमारे राजनेता भूल गये कि कूटनीतिविहीन राजनीति नपुंसक होती है। धर्मनिरपेक्षता के चक्कर में हम अधार्मिक होते चले गये। लौह पुरुष सरदार पटेल के विलक्षण और प्रचण्ड व्यक्तित्व का हमने लाभ नहीं उठाया। अहिंसा को हमने कायरता का पर्याय मान लिया और शान्ति के खोखले नारों ने हमें इस सीमा तक अकर्मण्य और क्लीव बना दिया कि 1962 के चीनी झटके ने हमें औंधे मुंह गिरा दिया। तब हाँ, इस झटके ने हमें झकझोर कर जगा भी दिया अन्यथा क्या हम 1965 और 1971 के पाकिस्तानी हमले को बर्दाश्त कर पाते इस प्रकार 1962 की पराजय से परोक्षरूप से भारत को लाभ ही हुआ।

बाहरी खतरों के अतिरिक्त देश की आन्तरिक स्थिति भी ठीक नहीं है। धर्म व वोट की राजनीति खेली जा रही है, लेकिन भारतीय नेतृत्व इस नासूर को जड़मूल से समाप्त करने के बजाय छुपाने में ही अधिक उत्साह दिखाना प्रतीत होता है। यही कारण है कि "सियाचिन ग्लेशियर" समदोरोंग छू घाटी" में चीनियों से खाई मुंह की पर हम मुंह भी नही खोलना चाहते। दूर दृष्टि का यह अभाव हमें अगामी पीढ़ी के सम्मुख मस्तक नही उठाने देगा। आज आवश्यकता है श्रीकृष्ण, कौटिल्य तथा सुभाष जैसे यथार्थवादी नेताओं की।

राष्ट्रीय अस्मिता में किसी देश का इतिहास प्रमुख रखता है। अपने भूत अथवा अतीत के चिंतन के संबंध में मैक्समूलर का कथन है, "जो मनुष्य अपने गौरवपूर्ण अतीत इतिहास पर गर्व नहीं करता, वह अपना राष्ट्रीय चरित्र खो बैठता है।" शिक्षा मन्त्रालय द्वारा "राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण समिति" (एन०सी०ई०आर०टी०) को राष्ट्रीय एकता परिषद के माध्यम से भारत के इतिहास के पुर्नलेखन के लिए कुछ मार्ग निर्देश प्राप्त हुए हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :-

- गुप्तकाल को स्वर्णयुग न कहें।
- इतिहास में हिन्दूकाल, मुस्लिम काल और अंग्रेजी काल न लिखें।
- औरंगजेब को कट्टर मुस्लिम न कहें।
- शिवाजी को गौरवशाली व्यक्ति न लिखें।

ज्ञात एवं लिखित भारतीय इतिहास में "गुप्तकाल वास्तव में स्वर्णयुग रहा है।" गुप्तकाल के जन सामान्यतः सुखी ही नहीं थे अपितु उसी काल में भारतीय संस्कृति, साहित्य, कला, संगीत आदि अपने विकास के चरमबिन्दु पर थे। प्रत्येक देश के इतिहास का एक काल वहाँ के लोगों का प्रेरणा स्रोत रहा है। चीनियों की प्रेरणा के लिये "मिंगकाल", ईरानियों के लिए "साइप्रस काल", ग्रीकों के लिए "पर्किल्स काल", रोमनों के लिए "आगस्टन काल" अरबों के लिये" अब्बासिद काल", अंग्रेजों के लिए "एलिजाबेथ काल', फ्रांसीसियों के लिए "रीजन एवं रिवाल्यूशन काल" और जर्मनों के लिए "बिस्मार्क काल" जैसे प्रसिद्ध गुप्तकाल की महिमा है। इस तथ्य को कैसे झुठलाया जा सकता है। अन्तत. इतिहास के पुनर्लेखन से संबद्ध यह कितना सतही सुझाव है कि पाठ्य पुस्तकों में शिवाजी को गौरवशाली व्यक्ति के रूप में प्रदर्शित न किया जाए। नेहरू जी के शब्दों में "छत्रपति शिवाजी मात्र महाराष्ट्र में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारत के महापुरुष थे।" एक बार नेहरू जी ने कहा था कि भारत का राज्य न हिन्दू होगा, न मुसलमान और न ईसाई। तब आखिर यह किसका राज्य होगा उत्तर है हिन्दुस्तानियों का राज्य होगा।

हिन्दुस्तानी" कौन होंगें इसमें कितना भाग हो इसके निर्णय का समय क्या अब भी नहीं आया? हिन्दुस्तानियों के इतिहास की कुछ ऐसी घटनाएं हैं जो उनकी अमूल्य निधि है और वे भावी पीढ़ी को युगों तक प्रेरणा देती रहेंगी लेकिन इस तरह अपने इतिहास को तोड़-मरोड़ देना क्या हमारी राष्ट्रीय अस्मिता के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाता? परिणामस्वरूप राष्ट्र की जवानियाँ निष्प्रभ हो रही हैं। जो राष्ट्र जवान ही नहीं है, उसकी अस्मिता क्या हो सकती है यही समस्या आज विचारणीय है। भारत ने सातवें दशक में श्रीमती इन्दिरा गाँधी जी के नेतृत्व में बहुत कुछ हासिल किया, लेकिन आज आवश्यकता. इसे क्षिप्रता प्रदान करने की है। आज बेरोजगार युवा, भूखा, नंगा किसान, दिग्भ्रमित और प्रताड़ित मजदूर, घायल नगराज हिमालय, गंगा यमुना की प्रदूषित धाराएं, हिन्द महासागर की लहरें गरज-गरज कर अपने श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम राम, कौटिल्य, सुभाष तथा पटेल आदि को पुकार रही हैं जो भारतीय राजनीति की विकट परिस्थितियों में राष्ट्रीय अस्मिता को पुर्नप्रतिष्ठित कर सकें।

इस परिपेक्ष्य में किसी राष्ट्र की रीढ़-युवा पीढ़ी -को उद्बोधित करती सुकवि मनोज जी ये पंक्तियाँ बड़ी प्रासंगिक प्रतीत होती हैं :-

"उठो देश के हर जवान
अब बिजली बनकर कड़को
राणा के वंशज हो तुम
राणा की तरह ही फड़को
भूलो मत यह देश उसी का
जो इसको चमकाये
नहीं कि उसका जो इसका
सम्मान बेंच खा जाये।" □

पृष्ठ ४ का शेष...

वैचारिक स्नेह आत्मीयता तथा परस्पर विश्वास से भर जाएगा। पर इसके लिए भी तो पहले जीर्ण-शीर्ण हिन्दू समाज को एकजुट करना होगा। संगठित समाज का प्रयास सफलता पा सकेगा।

कृपया सोचें और स्वयं अपनी बुद्धि से निर्णय करें कि क्या हिन्दू समाज को संगठित करने का कार्य देश के लिए विनाशकारी सिद्ध होगा। ■

मुस्लिम अलगाववाद

पी० एस० शर्मा

मुस्लिम अलगाववाद एक सार्वभौम सत्य है जिसे नकारना तथ्यों को नकारना है। इस अलगाववाद का पश्चिमी सेकुलरवाद से जिसकी एक मोड़ी नकल हम भारत में कर रहे हैं- जन्मजात-बैर है।

विश्व के जिस-जिस देश में मुसलमानों का बाहुल्य है वे सेकुलर नहीं इस्लामी हैं। सम्भवतः केवल तुर्की इसका एकमात्र अपवाद है,जो ९९% प्रतिशत जनसंख्या मुसलमान होने के बावजूद एक सेकुलर देश है।

सामान्य रूप से सेकुलरवाद सभी सम्प्रदायों या मजहबों को समान मानता है और सभी के साथ एक समान व्यवहार करता है। पर इस्लामिक देश इस्लाम का सर्वप्रथम सम्पन्न तथा अन्य मजहबों को इस्लाम के अधीन मानकर चलते हैं। सर्व-सम्प्रदाय का तो कोई प्रश्न ही नहीं है।

पाकिस्तान की स्थापना पर कायदे आजम जिन्ना ने प्रयास किया था कि पाकिस्तान एक सेकुलर देश बने, जिसमें गैर-मुस्लिमों के साथ भी बराबरी का सलूक किया जाय पर ऐसा न हो सका और पाकिस्तान कट्टर इस्लामी देश बन गया और उसने अपने अल्पसंख्यकों की समस्या- राजीवगांधी के शब्दों में- "उन्हें समाप्त करके" सुलझा ली।

सेकुलर भारत की सहायता से जब बांगलादेश बना तो बंगबन्धु मुजीबुर रहमान ने बांगलादेश को सेकुलर देश घोषित कर दिया। पर सार्वभौम मुस्लिम अलगाववाद के सामने सभी धर्मावलम्बी समान हैं की बात अधिक दिन नहीं चली। मुजीब को मशीन गनों से भून डाला गया और मुस्लिम बहुल बांगलादेश इस्लामी हो गया अर्थात् वहां इस्लाम की प्रभुता तथा अन्य मजहबों और मजहब वालों की गौणता पर मुहर लगा दी गयी। फलस्वरूप वहां से भी अल्पसंख्यकों का पलायन शुरू हो गया।

जिन देशों में मुसलमान अल्पसंख्यक हैं वहां भी यह अलगाववाद अलग-अलग रूप से काम करता है। साम्यवादी देशों में "यह अलगाववाद दब गया था पर साम्यवाद का शिकंजा ढीला होते ही यह फिर उभरकर सामने आ गया है। रूस में अजरबैजान का विद्रोह इसका जीता जागता प्रमाण है।

अभी गत 5 और 6 अप्रैल को चीन के मुस्लिम बहुल राज्य शिनजिआंग में इस्लामी विद्रोह हुआ था, जिसमें जेहाद करके चीन से अलग होने की बात थी। कहा जाता है कि मुस्लिम कट्टरपंथियों ने गांव-गांव में गैर कानूनी स्कूल खोले हुए थे जहां बच्चों को धार्मिक उन्माद और घृणा का पाठ पढ़ाया जाता था। विश्वास किया जाता है कि इस विद्रोह के लिए हथियार पाकिस्तान और सिल्करोड के रास्ते अफगान मुजाहिदीन ने भेजे थे।

मुस्लिम अलगाववाद का जैसा विद्रोह चीन के शिनजिआंग राज्य में हुआ था, कुछ-कुछ वैसा ही विद्रोह भारत के कश्मीर राज्य में चल रहा है। चीन ने तो विद्रोह को कुचल ही नहीं दिया यह कानून भी बना दिया है कि कोई भी नई मस्जिद नहीं बनायी जा सकती और कोई भी विदेशी धर्म प्रचार नहीं कर सकता। भारत झुकने और समझाने की नीति पर चल रहा है। देखें, इसे कहां तक सफलता मिलती है।

अभी तक का अनुभव तो यहां बताता है कि भारत को मुस्लिम अलगाववाद का हाथ जोड़कर अर्थात् घुटने टेक कर मनाने की नीति से मुस्लिम अलगाववाद को बढ़ावा ही मिला है। इस नीति का भयंकर परिणाम हिन्दू-मुस्लिम एकता और भारत की अखण्डता दोनों को तिलांजलि देकर पाकिस्तान के रूप में एक स्थायी शत्रु मोल लेने के रूप में हुआ है। विभाजन के बाद भी हिन्दुओं ने इस नीति का त्याग नहीं किया। कांग्रेसी हिन्दुओं ने इसे पाला-पोसा और अब जनता दल के हिन्दू यह सिद्ध करने में लगे हुए हैं कि वे "मुस्लिम तुष्टिकरण की इस नीति में कांग्रेसी हिन्दुओं से चार हाथ आगे हैं।

तो क्या भारत के सभी मुसलमान अलगाववादी हैं? ऐसा कुछ नहीं। वे भारत के उतने ही वफादार हैं, जितने कि हिन्दू पर हिन्दुओं की दोरंगी नीति ने उन्हें अलग-थलग कर दिया है। इसी नीति के कारण सिखों के मन में भी आक्रोश है। यही आक्रोश कश्मीर और पंजाब में आतंकवाद के रूप में उभर कर सामने आया है। अतः अलगाववाद को आश्रय देने में जितना हाथ पाकिस्तान का है उतना हाथ भारत सरकार की उन विघटनकारी नीतियों का भी है, जो सभी भारतीयों के समान व्यवहार न करके किसी को बहुसंख्यक मानती हैं, किसी को अल्पसंख्यक केवल धर्म या मजहब के आधार पर ही नहीं बल्कि भाषागत क्षेत्रगत जातिगत और न जाने कितने अन्य आधारों पर और केवल मानती ही नहीं, उनके लिये अलग-अलग प्रकार की व्यवस्था भी करती हैं। यदि बीज ही भेदभाव के बोये जायेंगे, तो एकता का फल खाने को कहां से मिलेगा?

इतिहास साक्षी है कि कांग्रेसी हिन्दू, हमेशा देश भक्त मुसलमानों को नजरअन्दाज करके कट्टरपन्थी और अलगाववादी मुसलमानों के आगे झुकते आए हैं। कट्टरपन्थी मुस्लिम लीग के आगे झुकने में कांग्रेसी हिन्दुओं ने खान अब्दुल गफ्फार खाँ, मौलाना-आजाद तथा कांग्रेस का साथ देने वाले अन्य देशभक्त मुसलमानों को क्या नजर-अंदाज नहीं कर दिया था? दूर क्यों जाए, शाहबानो केस में कितने कांग्रेसी हिन्दू संसद सदस्यों ने आरिफ मुहम्मद खाँ का साथ दिया था? एक ने भी नहीं। सभी शहाबुद्दीन के चरणों पर झुक गये थे। अब भी कांग्रेस या जनता दल के कितने हिन्दू देशभक्त मुख्तार अहमद नकवी का साथ दे रहे हैं जो हिन्दू मुसलमानों में एक आदर्श भाई-चारा पैदा करने का सुझाव दे रहा है?

अधिकांश हिन्दुओं की यह नीति "मुस्लिम तुष्टिकरण" की नीति नहीं है "मुस्लिम अलगाववाद के तुष्टिकरण की नीति है। ऐसी नीति का फल वैमनस्य के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।

पश्चिमी और भारतीय सेकुलरवाद का मूल अन्तर यही है कि जहां सोवियत-रूस चीन व अन्य पश्चिमी देश मुसलमानों में देशभक्ति को बढ़ावा देकर अलगाववादियों से कठोरता का व्यवहार करते हैं, वहां भारत देशभक्त मुसलमानों की आवाज को दबाकर अलगाववादी मुसलमानों की खुशामद में लगा हुआ है।

मिट्टी का तेल डालकर आग बुझाने का यह नाटक कब तक चलेगा?

वार्षिक चित्र

उ०प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय से प्रत्येक आर्यसमाज को वार्षिक चित्र भेजे जा रहे हैं। जिन्हें प्राप्त न हों, वह सभा कार्यालय से पत्र लिखकर मँगाने की कृपा करें।

प्रत्येक जिला सभा को पहले ही चित्र सं0-3 भेजा जा चुका है। यदि प्राप्त न हुआ हो, तो पुनः पत्र, लिखकर मँगा लें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

रात्रि शयन पूर्व मन्त्र गीत

चपल-चंचल मन

• देवनारायण भारद्वाज

अलीगढ़

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरं गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनःशिव संकल्पमस्तु।। यजु॰ 34/1 ।।

आगे पीछे दौड़ लगाओ,
पर प्रभु का ही करो अनुगमन
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन
मन दूर-दूर तक भगता है
चाहे जन सोता-जगता है
है दूर गमन इसका स्वभाव
जग का प्रकाश मन धरता है।
दिव्य ज्योतियों में एक ज्योति,
मन करे इन्द्रियों को- ज्योतन ।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ।।
इन्द्रिय देह या अग्नि दिवाकर
मन से हों ये ज्योति उजागर
मन बिना नहीं कुछ हमें दिखे
देखें जितना जोर लगाकर।
होकर थिर और नियन्त्रित दे,
जग- आत्म- हर्ष व प्रभु दर्शन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ, ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।
चपल चंचला गति है मन की
यजन-भजन या पाप गमन की
सब भूत-भविष्यत-वर्तमान।
करे सुपरिचित क्षमता मन की।
तज गर्ल्प जल्प के सब विकल्प,
मनबनो वशी संकल्प-सदन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ।।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बहेड़ा §पीलीभीत§ का 38वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 22 से 28 मई90 तक धूमधाम से मनाया गया। स्थानीय जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्यसमाज बहादराबाद§सहारनपुर§

प्रधान- श्री विजेन्द्रसिंह राना
मंत्री- श्री मा0रघुवीर सिंह जी
कोषाध्यक्ष- श्री कशीराम जी

जैसा मैंने देखा

§1§ आर्यसमाज मन्दिर नैनीताल-

मैं 25 मई, 1990 को पिथौरागढ़ से चलकर अल्मोड़ा में आर्यसमाजी पूरनसिंहजी के यहाँ रात्रिवास करके 26 मई को प्रातः 10 बजे आर्यसमाज मन्दिर नैनीताल पहुँचा। आर्यसमाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव 20 से 27 मई तक निश्चित तिथियों में हर वर्ष हुआ करता है। इस बार 116वें वार्षिकोत्सव में 26 मई को राज्यपाल बी0 सत्यनारायण रेड्डी यजमान थे। मैंने राष्ट्रभाषा सम्मेलन की अध्यक्षता का सौभाग्य पाया। उत्सव की शोभा बढ़ाने वाले आचार्य जैमिनी-शास्त्री, संगीताचार्य ओमप्रकाश वर्मा, गुसाईदत्त दानी, माता शकुन्तला गोयल, स्वामी भजनानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द आदि थे। उत्सव में सभी के लिये पेटपूजा हेतु ऋषिलंगर चलता है। मन्दिर में नित्य साढ़े छः बजे सत्संग होता है। बांकेलाल जी कंसल ने समयानुपालन इतना सुनिश्चित कर रखा है कि लोग अपनी घड़ी मिलाया करते हैं। केदारजी तो कर्मठ और समर्पित समाजमन्त्री हैं।

§2§ महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ §नैनीताल§-

मैं 27 मई को स्वामी भजनानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द और स्वामी सोमानन्द के साथ नारायण स्वामी अश्रम पहुँचा। 20 मई 1920 को महात्मा नारायण स्वामी द्वारा संस्थापित यह आश्रम योगसाधना शिविर हेतु अत्युत्तम है। ओमगंगा के तट पर बना यह आश्रम फलदार वृक्षों से युक्त है। स्वामी भजनानन्द जी §बाल ब्रह्मचारी-अवकाश प्राप्त सेनाधिकारी, अगस्त-1987 से आश्रम को अपना मुख्यावास बनाने के पश्चात् अब तक अपनी विशेष अभिरुचि से 101 आड़ू, 11 बादाम, 8 नाशपाती और 6 नींबू कागजी के वृक्ष लगा चुके हैं। स्वामी सोमानन्दजी वर्ष में कई योगसाधना शिविर राजपालजी-योगी की अध्यक्षता में सम्पन्न कराते हैं। आश्रम में जगदीश जी पाचक के रूप में सेवारत हैं।

§3§ आर्यसमाज मन्दिर रामगढ़§नैनीताल§

1926 ई0 में महात्मा नारायण स्वामी द्वारा संस्थापित आर्यसमाज मन्दिर रामगढ़, ओमगंगा के तट पर "नारायण स्वामी इन्टर कालेज" के पास है। यहाँ उपदेशक विद्यालय बहुत अच्छा चल सकता है।

§4§ आर्यसमाज मन्दिर ताड़ीखेत §अल्मोड़ा§-

सायं 28 मई को मैं ताड़ीखेत पहुँच गया। आर्यसमाज शताब्दी वर्ष सन्1975 में स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी द्वारा संस्थापित "आर्यसमाज-मन्दिर" ताड़ीखेत में पाँच कमरों के साथ एक यज्ञशाला है। 29 मई को पं0 प्रेमदेव शर्मा §व्यवस्थापक§ के पौरोहित्य में गीता-जगदीश विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। व्यक्तिगत योगसाधना हेतु समय-समय पर व्यवस्थापक जी से सम्पर्क किया जा सकता है।

§5§ दयानन्द बाल मन्दिर, पिथौरागढ़-

30 मई को पिथौरागढ़ पहुँचकर "दयानन्द बाल मन्दिर" के चतुर्थ वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता की। कक्षा 5 में कुल 27 बच्चे बोर्ड की परीक्षा में बैठे। 25 बच्चों ने 75 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। एक बच्चा ने 93 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जनपद में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। शतप्रतिशत परीक्षाफल हेतु श्री गंगादत्त जोशी प्रबन्धक सहित सभी दस अध्यापक बधाई के पात्र हैं। कक्षा- 6 के आरम्भ के साथ जुलाई-1990 में छात्रों की संख्या लगभग-300 हो जायेगी। सभी बच्चे दैनिक-वैदिक प्रार्थना, शनिवार यज्ञहवन और धर्मशिक्षा के माध्यम से मानवतावाद के संस्कार पा रहे हैं। नगरपालिका अध्यक्ष श्री जगजीवन कन्याल ने मुख्य अतिथि के रूप में ऐसी प्राथमिक पाठशालाओं को सहयोग देने का वचन दिया । पूरे कुमाऊँ में श्री गंगादत्त जोशी एम0ए0, बी0एड0 दयानन्द बाल मन्दिर §कक्षा-1 से 5§ और दयानन्द विद्या मन्दिर §कक्षा 6 से 8§ की स्थापना का उत्साह मन में लिये हुए हैं। दयानन्द बालमन्दिर-पिथौरागढ़, आर्यसमाज के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से सम्बद्ध है।

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
कल्याहमी

चक्रवाकिव दम्पती

युवा आन्दोलन में अपने जीवन को अहर्निश समर्पित करने वाले, युवा आकांक्षाओं के प्रतीक, आर्य प्रतिनिधि-सभा, उ0प्र0 के अन्यतम युवा प्रवक्ता तथा श्रेष्ठतम युवाकार्यकर्ता श्री पं0-जयन्त कुमार का शुभ परिणय संस्कार फैजाबाद निवासी श्री पं0 ओंकारनाथ आर्य की सुपुत्री लक्ष्मी आर्या, एम0ए0 के साथ दिनांक 24-6-90 को फैजाबाद में सम्पन्न हो रहा है।

आर्यमित्र परिवार इस युगुल आर्य-जोड़ी को अपनी शत-शत बधाइयाँ, शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रेषित करता है।

- आचार्य इन्द्रदेव पाठक,
प्रबन्धक सम्पादक।

आर्यसमाज सिम्भालका §मुजफ्फरनगर§

प्रधान- श्री ईश्वर सिंह
मंत्री- श्री रघुवीर सिंह
कोषाध्यक्ष-श्री जिले सिंह आर्य

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन.पी. ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
महात्मा नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
आषाढ़ शुक्ल-२ संवत २०४७ वि०
दिनांक २४ जून १९९०
दूरभाष: २४५६६३

गीत

छेड़ सारे संकटों को
प्राण मेरे गीत गाओ।

दूर से भी दूर है जो
पास से भी पास है
सबके अन्दर, सबके बाहर
हो रहा जिसका वास है,
सरल, निर्मल, प्रखर उर कर
हर सफर मय गीत गाओ।
चली मलयज पवन देखो,
तिमिर से संग्राम करने
कुटिल सारे कण्टकों को
विछिन्न कर "पीयूष" पाने
जलज सम्पुट खिले उठे मन
हरीतिमा मन में बसाओ
प्राण मेरे गीत गाओ।

• अखिलेश कुमार 'आर्य'
कटरा, इलाहाबाद

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए [illegible] आर्यभास्कर प्रेस ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अवैतनिक
रूप में प्रिमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री [illegible] द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७ आषाढ शुक्ल-६ रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक १ जुलाई १९९० (घोषणापत्र सं. ७/२२-२-२५)



सत्याचरण

ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम येच सूरयः

ऋग्वेद 7/66/13

हे मनुष्यो! जीवन के लिए, सुख-शान्ति और वैभव के लिए सत्य की ही आराधना करो। तुम्हारा सभी कुछ सत्य के लिए अर्पित हो और किसी भी मूल्य पर असत्य से प्रीति तुम न करो। ऐसा करने पर तुम परमश्रेष्ठ परमात्मा के महान गुणों को धारण कर सकोगे।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम. ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष
अंक - २५

भारतीय स्वतन्त्रता के वटवृक्ष को अपने खून से सींचने वाले 1857 के वे क्रान्तिवीर हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं।

प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की ज्योति मेरठ की ही पवित्र क्रान्तिस्थली से प्रकाशित हुई थी।

शासन १० मई को राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाए.....

श्री पं० इन्द्रराज, सभा प्रधान



भारत की स्वतन्त्रता का प्रथम शंखनाद 10 मई 1857 को सर्वप्रथम मेरठ में ही फूंका गया था। उस समय अंग्रेजों के भीषण अत्याचारो से भारतीय जनता त्रस्त हो रही थी। अंग्रेजों की कूटनीति ने हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य फैलाकर "फूट डालो और-शासन करो" की नीति अपना रक्षी थी। ऐसे समय में देश की आजादी के दीवाने हमारे सैनिक रणबांकुरों ने 10 मई 1857 को सर्वप्रथम मेरठ में सैनिक विद्रोह कर दिया था और देश के अन्य भागों में पहुंचकर विदेशियों को मौत के घाट उतारकर क्रान्ति का बिगुल बजा दिया था। यही हमारी स्वतन्त्रता का प्रथम आह्वान था' यद्यपि यह क्रान्ति सफल नहीं हो सकी परन्तु इसी से प्रेरणा लेकर हमने आजादी की लड़ाई लड़ी और आज हम स्वतन्त्र हैं।

10 मई 1857 के क्रान्तिदिवस पर मेरठ में आयोजित एक विशाल समारोह की अध्यक्षता करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की चिन्गारी का क्रान्तिस्थल मेरठ ही है। इसी भूमि से आजादी की वह ज्वाला उठी थी जिसने भारत ही नही विश्व के समस्त पराधीन देशों को स्वतन्त्रता की ज्योति दिखलाई। अत: इस महत्वपूर्ण दिवस को राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाना चाहिए और सार्वजनिक अवकाश घोषित करते हुए इस दिन समस्त शिक्षण संस्थाओं एव शासकीय कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों में समारोह मनाकर उन अगणित क्रान्तिवीरों की पुण्यस्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए जिन्होंने अपना खून देकर इस स्वातन्त्र्य ज्योति को जलाया था। श्री पं0 इन्द्रराज जी ने इसे दुखद बताया कि रूस की क्रान्ति के प्रतीक मई दिवस को शासन राष्ट्रीय अवकाश घोषित कर सकता है परन्तु अपने देश की आजादी के लिए प्रारम्भ किए गये इस क्रान्तिदिवस को उपेक्षित कर दिया गया है। यदि यही स्थिति रही तो आनें वाली सन्तति को यह पता भी नही चल सकेगा कि स्वतन्त्र भारत में दस मई का कितना महत्व है।

कार्यक्रम के संचालक डा0 रमेश आर्य ने कहा कि 1857 की क्रान्ति के दुर्लभ तथ्यों की खोज करके उसे प्रकाशित किया जाय और जिन वीरों ने अपनी आत्माहुति दी थी उनका जीवन परिचय लिखा जाय। इस अवसर पर श्री राकेश, डा0 राधेश्याम डा0 लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, डा0 निरूपण विद्यालंकार आदि महानुभावों ने आर्य समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के महत्व पर प्रकाश डाला।

आर्य भूमि पर अरूणोदय सा,
उठा उच्च तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
लखनऊ आषाढ़ शुक्ल-९ संवत् २०४७ वि.
१ जुलाई १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

विपक्षविहीन लोकतन्त्र

प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने आम सहमति और न्यूनतम साझा कार्यक्रम के आधार पर विपक्षविहीन राष्ट्रीय सरकार का समर्थन किया है। उन्होंने यह बात मलेशिया की सरकारी यात्रा से लौटते समय विमान पर तथा नई दिल्ली के हवाई अड्डे पर संवाददाताओं से बात करते हुए कही। उनका मत है कि सरकारें व्यक्तिपरक न होकर मुद्दापरक होनी चाहिए। व्यक्ति से राष्ट्र महान होता है और राष्ट्रीय संकट के अवसर पर एक निश्चित कार्यक्रम को आधार बनाकर सर्वदलीय सरकारें स्थापित की जा सकती हैं। उसमें विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमन्त्री रहें अथवा कोई और इससे कोई अन्तर नही पड़ता। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी का न्यूनतम कार्यक्रम के आधार पर साझा राष्ट्रीय सरकार बनाने का विचार तो अत्युत्तम है किन्तु उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि लोकतन्त्रीय शासन की स्वस्थ परम्परा में विपक्ष की भूमिका अनिवार्य मानी जाती है।

लोकतन्त्र का उदय ही, जन-जन की आकांक्षाओं को प्रतिनिधित्व देकर उनकी समस्याओं के निराकरणार्थ अधिनायकवाद के विरोध में हुआ है। अधिनायकवाद की सबसे बड़ी बुराई यही है कि उसमें एकाधिकारवाद निरंकुश बनकर मनमाने अत्याचार कर सकता है और किया है। वहाँ जनता की आवाज़ उठाने वाला कोई नही होता और राज्यतन्त्र निरंकुश बनता चला जाता है। जनता पर मनमाने ढंग से शासन एवं अत्याचारों की लम्बी दास्तान में जनता की कोई आवाज नहीं होती। नतीजा यह हुआ कि जन आक्रोश समय-समय पर खूनी क्रान्तियों के रूप में फूट पड़ा। विश्वप्रसिद्ध सोवियत रूस की क्रान्ति इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसी अधिनायकवाद के विरोध में जनतन्त्रात्मक प्रणाली का उदय हुआ और "जनता का शासन, जनता से, जनता के लिए" लोकतन्त्र का मुख्य नारा बना। इसी प्रणाली पर भारतीय लोकतन्त्र भी चल रहा है जिसमें विपक्ष की भूमिका सराहनीय मानी जाती रही है।

अब मुख्य प्रश्न यह है कि यदि पार्टीविहीन शासन प्रणाली स्वीकार की जाती है तो अवरोध अथवा शासन की गलत नीतियों पर दबाव अथवा अंकुश कौन लगाएगा। देश की मौजूदा समस्याओं के निपटाने में स्वस्थ आलोचना एवं सही दिशा देने का अवसर कहाँ, कैसे और किसको प्राप्त होगा। गम्भीर राष्ट्रीय संकट के अवसर पर इस प्रकार की साझा सरकार की बात तो उठाई जा सकती है परन्तु जहाँ दलगत प्रणाली का शासन है वहाँ पहले तो विचारधाराओं का टकराव ही होना अवश्यम्भावी है। और इस टकराव में खींचातानी आलोचना-प्रत्यालोचना, आरोप- प्रत्यारोपों के बीच अन्त में फिर वही स्थिति स्वीकारनी पड़ती है। अर्थात् जनादेश लेकर बहुमत के आधार पर शासनव्यवस्था को स्थापित करना।

स्वामी दयानन्द ने राजा और प्रजा दोनों का सम्मान करते हुए दोनों के अधिकारों तथा गरिमा को सुरक्षित रखने वाली वैदिक राज्यव्यवस्था के अनुसार प्रजाधीन राजा एवं राजाधीन प्रजा के होने की बात कही है और यही आदर्श लोकतन्त्रात्मक प्रणाली है जहाँ न राजा निरंकुश है और न प्रजा निरंकुश।

प्रधानमन्त्री का उक्त वक्तव्य निश्चितरूप से उनके मन्त्रिपरिषद में बढ़ रहे अन्तर्विरोध का द्योतक है। विपक्ष की प्रमुख पार्टी कांग्रेस ने स्वयं इस विचार को अस्वीकार करते हुए कहा है कि इससे सिद्ध होता है कि बोफोर्स दलाली में कांग्रेस का कोई व्यक्ति शामिल नहीं है और केवल कांग्रेस की छवि धूमिल करके सत्ता हथियाने के लिए यह आरोप लगाया गया है।

इस समय राष्ट्र के सम्मुख उसकी एकता और अखण्डता का प्रमुख राष्ट्रीय मुद्दा है। इस मुद्दे पर सभी राजनैतिक दल एकमत हैं। विपक्ष का पूरा समर्थन जनता सरकार के साथ है। मतभेद केवल समस्या से निबटने के तरीके पर है। ऐसी स्थिति में प्रधानमन्त्री का उक्त वक्तव्य, निराशा एवं शासन में उभड़ रहे अन्तर्विरोध का ही परिचायक है।

अमेरिका मे विश्व हिन्दी सम्मेलन

आर्यसमाज मिशीगन बाक्स नं0,-296, अलमा मिशगन 48809 {अमेरिका} द्वारा आगामी 12-13 और 14 जुलाई 1991 में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसके संयोजक श्री गिरिशचन्द खोसला हैं। यह सम्मेलन अमेरिका स्थित अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थाओं, विश्व विद्यालयों, हिन्दी व संस्कृत के अनेक प्राध्यापकों, के द्वारा आयोजित किया जा रहा है जिसका उद्देश्य आगामी शताब्दी में हिन्दी। के प्रचार और उसके प्रयोग को मजबूत करना है। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिये आर्यसमाज मिशीगन, पो0बा0नं0-296 अलमा मिशीगन- 48809 {अमेरिका} से सम्पर्क किया जा सकता है।

-गिरीशचन्द खोसला

गुरुकुल कण्वाश्रम में प्रवेश प्रारम्भ

आधुनिक सुविधाओं से युक्त एकान्त शान्त प्राकृतिक सौन्दर्य के भण्डार महर्षि कण्व के तपोवन गुरुकुल कण्वाश्रम में 1 जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ है जो कि 15 जुलाई तक चलेगा। प्रवेश आयु 6 वर्ष से 13 वर्ष सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री तक शिक्षा व्यवस्था शिक्षा के साथ योगाभ्यास, तैराकी, कुश्ती, के साथ सभी आधुनिक खेल व भाषण कला, कविता पाठ आदि की विशेष सुविधा विशेष जानकारी के लिये नि:शुल्क नियमावली मंगाये।

- विश्वपाल/जयन्त
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम
पो0 कलालघाटी {कोटद्वार} पौढ़ी {उ0प्र0}

आवश्यक सूचना

दयानन्द सघ के अवैतनिक महोपदेशक, उपदेशक तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट लिखी जा रही है, अत अपने-अपने कार्य का विवरण साफ-साफ 1 जनवरी 1989 से 31 मार्च 1990 तक का बनाकर, 10 जुलाई 1990 तक सभा कार्यालय में भेज दें, इसके पश्चात आने पर सभा का उत्तरदायित्व नहीं होगा।

-मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

वार्षिक चित्र

उ0प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय से प्रत्येक आर्यसमाज को वार्षिक चित्र भेजे जा रहे हैं। जिन्हें प्राप्त न हों, वह सभा कार्यालय से पत्र लिखकर मँगाने की कृपा करें।

प्रत्येक जिला सभा को पहले ही चित्र सं0-3 भेजा जा चुका है। यदि प्राप्त न हुआ हो, तो पुन पत्र लिखकर मँगा लें।

{मनमोहन तिवारी}
सभामन्त्री

आर्यसमाज के निर्वाचन

सभा से संबधित प्रत्येक आर्यसमाज को विगत वर्षों से यह आदेश बराबर दिया जा रहा है कि अपने आर्यसमाज का निर्वाचन अपनी जिला सभा से सत्यापित कराके भेजा करें। खेद है कि समाज के अधिकारी इस पर ध्यान देने की कृपा नहीं करते हैं और बिना सत्यापित कराये भेज देते हैं।

कृपया इस पर विशेष ध्यान दिया जाये और जिला सभा से सत्यापित कराके ही निर्वाचन भेजने का कष्ट करें।

— सम्पादक

शान्ति एवं सुख के लिए विज्ञानसम्मत वैदिक दिनचर्या सर्वोत्तम

डा० शकुनचन्द आर्य
लालगंज, रायबरेली

• संसार के विभिन्न मतमतान्तरों में मनुष्य के जीने की भिन्न-भिन्न दिनचर्याएं बताई गई हैं जो कि धर्मों के उद्गमस्थल की परिस्थितियों के अनुसार हैं। परन्तु वैदिकधर्म एक ऐसा धर्म है जिसमें इस संबंध में जो भी शिक्षाएं दी गई वे मानवमात्र के लिए है सभी परिस्थितियों तथा सभी क्षेत्रों के लोगों के ऊपर समान रूप से लागू होकर उनके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। यही नहीं आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर भी वे सबसे अधिक खरी उतर रही हैं। ऐसी स्थिति में उचित होगा कि वैदिक दिनचर्या के विभिन्न आचरणों की वैज्ञानिक समीक्षा करके आधुनिक परिस्थितियों में उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन किया जाये।

ब्रह्ममुहूर्त में उठना, ऊषापान तथा प्रात कालीन भ्रमण=

वैदिक दिनचर्या में प्रात काल तड़के यानी ब्राह्मवेला में शयया त्यागने का आदेश दिया गया है। बताया गया है कि इस समय जो व्यक्ति चारपाई त्यागकर प्रात काल भ्रमण करता है, वह अधिक स्वस्थ्य, बुद्धिमान, निरोगी तथा कर्मठ होता है। यह भी बताया गया है कि बिस्तर त्यागने के बाद जलपान करने से जिसे ऊषापान की संज्ञा दी गयी मनुष्य का शौच अधिक साफ होने के कारण वह दिन भर प्रसन्न रहता है। तथा उसमें कार्य करने की क्षमता अन्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक होती है। जिस प्रकार वैदिक दिनचर्या के उपरोक्त नियम को आधुनिक विज्ञान इन शब्दों में स्वीकार करता है कि" जो व्यक्ति सूर्योदय से एक घंटे पूर्व उठकर शौचादि से निवृत्त होकर एक घटा तेजगति से भ्रमण करता है वह स्वस्थ्य एवं दीर्घायु होता है और उसका मधुमेह रक्तचाप, हृदयावसाद, मोटापा तथा कैन्सर आदि रोग कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं।" वैदिक दिनचर्या के इस नियम के आधुनिक विज्ञान की कसौटी में खरे उतरने का प्रमाण है।

ब्रह्मयज्ञ

संध्या, प्राणायाम एवं स्वाध्याय ब्रह्मयज्ञ के प्रमुख अंग हैं। जिस प्रकार इसके अंतर्गत गायत्री समेत कई मंत्रों द्वारा परमात्मा की उपासना करने, गायत्री मंत्र द्वारा उससे उत्तम बुद्धि मांगने, कम से कम तीन बार प्राणायाम करके प्राणों को सशक्त बनाने तथा वेदादि का स्वाध्याय कर मन एवं बुद्धि की शुद्धि का परामर्श दिया गया है, यह इस दैनिकयज्ञ के महत्व एवं उपयोगिता का प्रमाण है। जिस प्रकार कि आधुनिक विज्ञान भी यौगिक क्रियाओं एवं प्राणायाम को स्वास्थ्य रक्षा, रोग-उन्मूलन तथा आयुवृद्धि के लिए उपयोगी मानने लगा है तथा अनेक विद्वान एवं भारतीय वैज्ञानिक वेदों के ज्ञान को मानव जाति की अमूल्य निधि तथा मानवमात्र के लिए उपयोगी बनाने लगे हैं। यह दैनिकचर्या के इस नियम के विज्ञानसम्मत होने का प्रमाण है।

देवयज्ञ

ब्रह्मयज्ञ के बाद देवयज्ञ का स्थान है। जिसके अन्तर्गत अग्निहोत्र, सत्संग एवं दान आदि क्रियाएं आती हैं। वैदिक मान्यता के अनुसार अग्निहोत्र या हवन की क्रिया वायुमण्डल के प्रदूषण को नष्टकर वातावरण को शुद्ध कर वायमण्डल को रोगरहित बनाने वाली है। नैतिकता का तकाजा भी यह है कि जबकि हम नित्यप्रति अपने मलमूत्र द्वारा वायुमण्डल को दूषित करते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम सुगन्धित हवनसामग्री, मिष्ठान, मेवा, यव तथा ऐसी अन्य सामग्री से अग्निहोत्र कर वायुमण्डल को पवित्र बनायें। इसी से हमारे देश में अतिप्राचीन काल में दैनिक अग्निहोत्र का नियम था जिससे रोग हम से दूर भागते थे और हमारे विचार शुद्ध एवं पवित्र होते थे। आज हम इस क्रिया को भूल गये हैं। उसी से अनेक रोगों की बाढ़ सी आ गई है। फिर जिस प्रकार अनेक पाश्चात्य वैज्ञानिक अब अग्निहोत्र को प्रदूषण नष्ट करने में सहायक सिद्ध कर रहे हैं वैज्ञानिक दृष्टि से इसके सही होने का प्रमाण है। इसके अतिरिक्त देवयज्ञ का सत्संग कर्म मनुष्य को दुर्गुणों से मुक्त कर ऊँचा उठाने वाला है तथा दान की क्रिया उसका यश बढ़ाकर आर्थिक दृष्टि से निर्बल तथा सम्मान के योग्य वर्ग के प्रति न्याय करने वाली है जो कि वैदिक समाजवाद के सिद्धान्त के अनुरूप है। इस दृष्टि से दैनिक चर्या में देवयज्ञ का महत्व है।

अन्य दैनिक यज्ञों की सार्थकता

इसी प्रकार पितृयज्ञ द्वारा प्रतिदिन देवों, ऋषियों तथा पितरसदृक पुरुषों की सेवा तथा अन्नादि जल, दूध, कन्दमूल तथा फलादि से श्रद्धापूर्वक सत्कार मर्यादा को स्थापित करने वाली, वृद्धों के प्रति न्याय करने वाली तथा वृद्ध हो गये समाजसेवियों को सम्मान प्रदान कर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सद्भावना स्थापित करने वाली तथा सत्कारकर्ता को यश, सुख एवं सन्तोष प्रदान करने वाली है।

इनके अतिरिक्त जिस प्रकार कि बालवैश्यदेवयज्ञ के अन्तर्गत कुत्तों, कंगालों, चंडालों, कुष्ठी आदि रोगियों, काक आदि पक्षियों तथा चींटी आदि कृमियों को अलग-अलग छ भाग बाँटकर देने तथा उन्हें प्रसन्न रखने का विधान है वह आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी सर्वोत्तम तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिन " वैदिक आदर्श के अनुरूप है।

उपरोक्त चार यज्ञों के अतिरिक्त वैदिक दिनचर्या में अतिथि यज्ञ का भी बहुत महत्व है। धार्मिक, परोपकारी, सत्योपदेशक, पक्षपातरहित, शान्त एवं सर्वहितकारी विद्वानों की अन्नादिससेवा, उनसे प्रश्नोत्तर आदि करके विद्या प्राप्त करना" अतिथि यज्ञ" कहलाता है। इसी कर्म का ही प्रभाव था कि हमारे देश में प्राचीन काल में सन्यासियों का एक बड़ा समूह था जो कि अपने-अपने घरों को त्यागकर गृहस्थों के घर-घर जाकर नैतिकता एवं धर्म का प्रचार कर देश, धर्म एवं जाति का कल्याण किया करता था तथा गृहस्थों को सही एवं उचित मार्ग पर चलने की प्रेरणा दिया करता है। दुख का विषय है कि "देश की नयी पीढ़ी खाओ, पियो और मौज करो" की पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर अतिथिसेवा (अतिथि यज्ञ) के इस दैनिक कार्यक्रम को भूलती जा रही है। उसी का परिणाम है कि अपने सांसारिक सुखों पर लात मार कर समाज एवं देश की सेवा करने वाले लोगों का अभाव होता जा रहा है तथा ऐसे सन्यासियों की सही शिक्षा न मिलने के कारण गृहस्थ परिवार तथा उनके बच्चे दिशाहीन होकर बरबाद हो रहे हैं।

वैदिक दिनचर्या की अन्य उल्लेखनीय बातें - वैदिक दिनचर्या के अंतर्गत 'स्वल्पाहारी सदा सुखी" कहकर भूख से कुछ कम, सात्विक एवं पौष्टिक भोजन करने का परामर्श दिया गया है अब आधुनिक विज्ञान भी कम कैलोरी तथा शाकाहारी भोजन पर जोर दे रहा है तथा मांसाहारी भोजन को अनेक रोगों का जन्मदाता बता रहा है। यह इस विचार के विज्ञान सम्मत होने का प्रमाण है।

वैदिक दिनचर्या में शुचिता एवं पवित्रता पर जोर दिया गया, आधुनिक विज्ञान भी सफाई पर जोर दे रहा है यह इस विचार के विज्ञान की कसौटी पर सही उतरने का प्रमाण है। जबकि विश्व में ऐसा भी धर्म है जो कि गन्दगी में ही बरकत मानता है।

वैदिक धर्म के नित्यप्रति स्नान को आवश्यक बताया गया, आधुनिक विज्ञान भी स्वस्थ्य रहने के लिए दैनिक स्नान की शिक्षा देता है जबकि इस्लामधर्म में सप्ताह में एक बार शुक्रवार को स्नान करने को पर्याप्त बताया गया, इस दृष्टि से वैदिक धर्म विज्ञान के निकट है।

वैदिक धर्म ने शव का अग्निदाह करके अन्तिम संस्कार करने का नियम है। मुस्लिम एवं ईसाई धर्मों में शवों को गाड़ने की प्रथा है परन्तु जिस प्रकार कि आधुनिक विज्ञान के मतानुसार सब स्थान-स्थान पर शवों को जलाने के लिए विद्युत शवदाह केन्द्र खोले जा रहे है यह वैदिक दाह संस्कार के विज्ञान सम्मत होने का प्रमाण है।

इसी प्रकार जादूटोना, भूत, प्रेत मिथ्याविश्वास एवं धारणाओं आदि के संबध के मैं वैदिक मान्यताएं विज्ञान के सबसे अधिक निकट है।

उपरोक्त विचार इस बात के प्रमाण हैं कि वैदिक दिनचर्या तथा उससे संबंधित विचारधारा सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक विज्ञान सम्मत है जिसको जीवन में अपनाने से मानवमात्र का कल्याण हो सकता है, उसकी सर्वतोमुखी उन्नति हो सकती है तथा उसे धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों की प्राप्ति हो सकती है।

— शेष पृष्ठ ४ पर



चिन्ता

● प्राचार्या डॉ० आशारानी राय
उपप्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

निखिल संसार परिवर्तनशील है। यथा शैशव के पश्चात् यौवन, तदुपरांत वृद्धावस्था, और देहावसान तत्पश्चात् पुनर्जन्म, उसके बाद शैशव इस प्रकार जीवन में सुख-दुख अवश्यम्भावी है। अज्ञान शाकुन्तलम् नाटक में कविकुल गुरु कालिदास कहते हैं:-

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरापधीना
माविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्या
लोको नियम्यंत इवात्मदशान्तरषु।।

मानव सृष्टि के साथ ही चिन्ता नामक पिशाचिनी भी उत्पन्न हुई है। इसे व्याधिमूला, शरीर सन्तापयित्री, रक्तपायिनी, मनोदाहिका आदि कहा जाता है, जो न केवल रक्तपान से तृप्ति प्राप्त करती है, अपितु छाया के समान विविध रूप धारण करके मानव को सताती है। जैसे शुष्क वृक्ष का अग्नि, जंगल में सूखे पत्रों को दावाग्नि, तृण से आच्छादित घर को वायु, उसी प्रकार से निराशा उदासी व व्याकुलता से संतृप्त मानव के मानस को चिन्ता नष्ट कर देती है, उसकी मुस्कान छीन लेती है मनोवृत्तियों को उदासीन कर देती है, मुख मलिन छायापूर्ण कर देती है। सुखी, तृप्त मानव के मन में चिन्ता प्रवेश करके उसे व्याधिग्रस्त, निष्प्रभ, शोकसंतप्त कर देती है। कहा गया है :-

नास्ति चिन्ता समो व्याधिः
नास्ति चिन्ता समो रिपुः।
नास्ति चिन्तासमं दुखं
नास्ति चिन्तासमं भयम्।।

वस्तुत अभाव चिन्ता का मूल है, अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति न होना, भौतिक सुख धनादि का अभाव, इसका मूल कारण है। जहां कहीं भी अभाव है, वहीं चिन्ता का निवास है। यह न केवल शोक, दुख, ग्लानि, ईर्ष्या, रूक्षत असहिष्णुता, निराशा, क्रोधादि मानसिक रोगों का सदन है अपितु हृदय रोग, रक्तचाप, मधुमेह, अनिद्रा, शिरोवेदना पक्षाघात आदि व्याधियों का मुख्य कारण है। किसी विज्ञ ने ठीक ही कहा है.-

'स्वच्छंदं चरतो नरस्य हृदये चिन्ताज्वरो निर्मित "

चिन्ता से मानव निश्चेष्ट व जड़ हो जाता है, जहाँ-जहाँ जड़त्व व निश्चेष्टता है, वहाँ-वहाँ दुख व्याप्त है। यथा बहता हुआ जल निर्मल, निर्दोष, पवित्र व मीठा होता है तथैव चिन्तारहित मन मस्तिष्क युक्त मनुष्य उत्साही, विवेकी, ज्ञानवान, सक्रिय, स्फूर्त कार्याकार्यविवेक में दक्ष होता है। वास्तव में चिन्ता से व्यथित मनुष्य अन्दर ही अन्दर जलता रहता है, मानसिक रूप से खिन्न रहता है, शारीरिक रूप से निरुत्साही व उदासीन रहता है, अतएव इसे मन से पूर्ण रूप से निकाल देना चाहिए।

मानव जीवन की प्रसन्नताओं को निगल लेने वाली चिन्ता रूपी पिशाची को रोकने के लिए क्या कोई औषधि या उपाय है? भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों ने चिन्ता के प्रतीकार हेतु चिन्तन किया है एवं कुछ गुरु बताए हैं।

स्वावलम्बन चिन्ता को दूर करने का एक साधन है, स्वावलम्बी मनुष्य श्रम से नहीं घबराता, विषम परिस्थिति को स्वानुकूल बना लेता है, तब मानव जीवन के आकाश से चिन्ता के मेघ छंट जाते हैं। इसके अलावा चिन्ता से निढाल व्यक्ति को धैर्य का आश्रय लेना चाहिए। विपत्ति पड़ने पर धैर्यवान नर साहस व विश्वास नहीं खोते और लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।

समय का सदुपयोग भी चिन्ता के निवारण का मुख्य बिन्दु है। अपने प्रत्येक क्रियाकलाप को समयबद्ध करके करना, अपने में एक कला है, स्वयं को सर्वदा महत्वपूर्ण उपयोगी कार्यों में व्यस्त रखना चिन्ता को विकास न देना है। अपने आत्मविश्वास में वृद्धि करना, सद्ग्रन्थों को पढ़ना, स्वाध्याय व महापुरुषों की कृतियों व जीवनी को पढ़ना भी चिन्ता को दूर करने का रसायन है। सबसे आवश्यक है चिन्ता निवारणार्थ चिन्तन करना। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद "कामायनी" में चिन्ता को लक्ष्य करके कहते हैं:-

"अरी व्याधि की सूत्र धारिणी।
अरी आधि, मधुमय अभिशाप।
हृदय गगन में धूमकेतु सी
पुण्य सृष्टि में सुन्दर पाप।
मनन करावेगी तू कितना?
उस निश्चिंत जाति का जीव,
अमर मरेगा क्या? तू कितनी
गहरी डाल रहा है नींव।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला सभाओं के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकट्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अतः आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुनः धन इकट्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनों से अनुरोध है इन की बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

- कार्यालय सचिव।

सभा का वर्ष

हर्ष का विषय है कि सभा का वर्ष 31 मार्च 1990 को समाप्त हो गया है। अतः अधिकारियों, अंतरंग सदस्यों एवं निरीक्षकों को सूचित किया जाता है कि वह अपनी कटी हुई रसीदें हिसाब और अवशेष धन 15 जून 90 तक अवश्य भेजने की कृपा करें, ताकि सभा का प्राप्तव्य धन संबंधी नियम प्रतिनिधि स्वीकारी में बाधक न बने।

2-जिला उपसभाओं से भी अनुरोध है कि वह अपनी जिला सभा का वार्षिक विवरण सभा की वार्षिक रिपोर्ट में सम्मिलित करने हेतु 30 जून सन् 1990 तक अवश्य भेजने की कृपा करें। बाद में आये विवरण प्रकाशित न हो सकेंगे।

—मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें :-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क मास मई १९९० ... को समाप्त हो गया है। वी०पी० भेजने में 7-50 रु० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी०पी० भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु० हो गया है।

मई- 1990

891, 1159, 1232, 2528,
3354, 4412, 5579, 6139,
11608, 11923. 12659, 12895,
12904, 13467, 14265, 14273,
14714, 14716, 14722, 14723,
14740, 14741, 14748, 15337
15340, 15341, 15342, 15343,
15344, 15346, 15347, 15348,
15349, 15350, 15351, 15352,
15353, 15355, 15356, 15357,
15358, 15359, 15360, 15361,
15362, 15363, 15364, 15365,
15366, 15367, 15368, 15370,
15371, 15372, 15573, 15374,
15376, 15377, 15378, 15379,
15380, 15381, 15382, 15383,
15384 । व्यवस्थापक-

आर्यसमाज गाजीपर
प्रधान- श्री अमरनाथ वर्मा
मन्त्री- श्री जयकृष्ण आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री मुखीराम आर्य

पृष्ठ ३ का शेष....

दुर्भाग्यवश आधुनिक भारतीय समाज इस चमत्कारिक वैदिक दिनचर्या से अपरिचित है। इसी से वह पतनोन्मुख है। आवश्यकता है कि उसे विविध माध्यमों से इससे परिचित कराया जाये ताकि वह इसे अपने दैनिक जीवन में अपनाकर सुख, शान्ति एवं समृद्धि की प्राप्ति कर सके तथा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का आदर्श साकार हो सके।

ऋषि दयानंद की महान देन

मुनिवर पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

जन्म : २६ अप्रैल १८६४ निधन : १९ मार्च सन् १८९०

• पवन कुमार
सिद्धान्त शास्त्री, लखनऊ

पंडित गुरुदत्त एम०ए०विश्व के श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए प्रकाश स्तम्भ के समान हैं। नवयुवक मुनिवर पंडित गुरुदत्त पाश्चात्य विज्ञान की चकाचौंध से प्रभावित होकर कट्टर अनीश्वर वादी तथा नास्तिक हो चुका था। पर ऋषि दयानन्द के देहावसान काल के प्रभावजनक दृश्य को देखकर वह अपने पश्चिमी मार्गदर्शक गुरुओं को त्यागकर ऋषिवर का दृढ आस्तिक शिष्य हो गया। उसने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार तथा आर्य जगत की सेवा में समर्पित कर दिया। स्वाध्याय के विषय में वे कहा करते थे कि मैंने 18 बार ऋषि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा पर जब मैंने इसे पढ़ा तब इस ग्रन्थ रत्न से नई से नई शिक्षा तथा जानकारियाँ प्राप्त हुई।

मुनिवर गुरुदत्त की उपनिषदों की व्याख्या तथा वैदिक मैगजीन" में दो तीन अंकों में प्रकाशित वेद सिद्धान्त विषयक अंग्रेजी के लेखों ने युरोप और अमरीका के विद्वत समाज में मौलिक क्रान्ति उत्पन्न कर दी। अपने अल्प जीवन अवधि में आपने त्याग,तपस्या, ,समाज,सेवा तथा जनहित के लिये सर्वाधिक कार्य किया।

मुनिवर पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी ने अमृतसर के एक अपने भाषण में कहा था कि महर्षि दयानन्द के महत्व का लोगों को दो सौ वर्ष पश्चात् बोध होगा जब विद्वान निष्पक्ष भाव से उनके ग्रन्थों पर विचार करेंगे। अभी लोगों की यह स्थिति नहीं कि लोग उस योगी की बात को समझ सकें ।

गुरुदत्त जी ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जिसमें सब का चिन्तन मनन एक हो, भाव और भावना एक हो, धर्म-कर्म एक से हों तथा विचार और ध्येय एक से हों। सभी एक पिता के पुत्र की तरह परस्पर बन्धुत्व के बंधन में बंधे रहे। सब के सुख दुःख सांझे रहें। शोषण,असमानता,भुखमरी, अज्ञान अन्याय अन्धकार वा अभाव समाप्त हो जाय। वे चाहते थे कि देश और जन्म के भेदभाव की दीवारें ढह जायें।

गुरुदत्त जी अन्तर्जातीय और अन्तर्राष्ट्रीय विवाह के पक्ष में थे। वे एक बार कहने लगे कि जब हमारा पुत्र बड़ा होगा और विवाह करना चाहेगा तो अमरीका की कन्या को आर्या बनाकर उसके साथ विवाह करने की "प्रेरणा दूंगा।"

श्री गुरुदत्त जी यह भी जानते थे कि एक सच्चे मानव समाज के निर्माण के लिये बौद्धिक क्रान्ति की नितान्त आवश्यकता है। शिक्षा व्यवस्था वैदिक जीवन मूल्यों पर आधारित होनी चाहिये। जिसमें भौतिक तथा आध्यात्मिक जीवन मूल्यों का उचित संतुलन हो। जिसके व्यक्तित्व के निर्माण में माता-पिता तथा आचार्य की भूमिका हो। जिसका आधार चरित्र निर्माण है तथा जिसके प्रेरणा स्रोत चारों वेद तथा ऋषि मुनियों के रचे आर्ष ग्रन्थ हों।

महर्षि दयानन्द के वेद प्रतिपादित सत्य ज्ञान मूलक सिद्धान्तों,मन्तव्यों,शिक्षाओं और विचारों को जिस सूझी के साथ मुनिवर पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी ने समझा, स्वीकारा और प्राण प्रण से प्रचारित किया उस पर विचार करके मनुष्य की बुद्धि चकित हो जाती है।

जीवन में केवल एक बार और केवल उस समय जबकि ईश के सच्चे उपासक,योगी यति,तपस्वी स्वामी दयानन्द अपनी सांसारिक यात्रा समाप्त कर रहे थे अजमेर में गुरुदत्त जी ने उन्हें देखा था । 19 वर्ष का यह नवयुवक महर्षि के प्राणोत्सर्ग के अद्भुत दृश्य को देखने मात्र से प्राप्त कर पाया वह किसी और को प्राप्त नहीं हो पाया नये पंडित गुरुदत्त की सृष्टि सचमुच ऋषि दयानन्द की दृष्टि मात्र से हुई थी। यह सृष्टि सत थी। परलोक सिधार रहे ऋषि दयानन्द ने उन्हें एक दृष्टि से देख लिया और वे कुछ के कुछ बन गये। आचार्य दयानन्द की अन्तिम कृपा-कटाक्ष के द्वारा जो शिक्षा इस सरल और विनम्र विद्यार्थी को प्राप्त हो गई वह किसी और के भाग में नहीं आयी।

मुनिवर गुरुदत्त के शिष्य मास्टर आत्माराम अमृतसरी ने लिखा है "मृत्युञ्जयी महर्षि दयानन्द की मृत्यु पर यूरोप और अमरीका के प्रतिनिधि नवयुवक गुरुदत्त का नास्तिकता का महर्षि दयानन्द द्वारा समाधान किया जाना। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिन वैदिक सिद्धान्तों का उपदेश और प्रचार किया उन उपदेशों ने जहाँ पर सर्वसाधारण को तथा संस्कृतज्ञों को आर्य बना दिया उनके जीवन काल में अनेक आर्य पुरुष धर्म के महत्व को समझ गये पर मृत्युञ्जयी स्वामी दयानन्द की मृत्यु पर अंग्रेजी भौतिक विज्ञान के पूर्ण विद्वान की संशयात्मा को बिना बोले पलट देना अत्यन्त आश्चर्य जनक बात है।"

मुनिवर पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म वैशाख शुक्ल प्रतिपदा सम्वत 1921 विक्रमी तदानुसार 26 अप्रैल सन् 1864 ई० दिन मंगलवार को पंजाब राज्य के मुलतान नगर के दिल्ली दरवाजा • के अन्दर मातरावाला मुहल्ले में लाला रामकृष्ण सरदाना के घर में हुआ था। राशि के आधार पर गुरुदत्त का नाम "मूला" रखा गया पर कुल गुरु ने वैरागी नाम उपयुक्त समझा। पश्चात 12 वर्ष की आयु में हरिद्वार में गोस्वामी राधेलाल जी ने गुरुदित्ता नाम रखा। यह गुरुदित्ता नाम गुरुदत्त के रूप में परिवर्तित हो गया।

मुनिवर गुरुदत्त की प्रारम्भिक शिक्षा मुलतान में हुई। मिडिल शिक्षा झंग स्थित विद्यालय में प्राप्त की। गुरुदत्त की तीव्र बुद्धि तथा प्रखर स्मरण शक्ति थी। उन्होंने राजकीय उच्च विद्यालय मुलतान में प्रवेश प्राप्त किया। वे प्रारम्भ से ही ईश्वर विश्वासी तथा आस्तिक थे। मुलतान में रहते हुये उनके मन में ईश्वर की सत्ता के प्रति सन्देह उत्पन्न हुआ।

मुनिवर गुरुदत्त संस्कृत को मृतक भाषा कहते थे। पर इतिहास के अध्यापक की प्रेरणा से अंग्रेजी शब्दों का मूल संस्कृत भाषा के अध्ययन में रुचि जागृत हुई। वे संस्कृत पढ़ने लगे। उन्होंने सर्वप्रथम डा० वेलन टाइन कृत"ईजी लेसन्स इन संस्कृत ग्रामर" पढ़ा। तत्पश्चात् ऋषि दयानन्द रचित पुस्तक "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" का संस्कृत भाग शब्द कोष की सहायता से पढ़ा। पश्चात् उनके मन में दयानन्द कृत वेद भाष्य तथा अष्टाध्यायी पढ़ने की रुचि जागृत हुई। आर्य समाज मुलतान के अधिकारियों की व्यवस्था से पंडित अक्षयानन्द जी से डेढ़ मास में अष्टाध्यायी का डेढ़ अध्याय पढ़ा। शेष अष्टाध्यायी उन्होंने "वेदांग प्रकाश" की सहायता से नौ मास में पढ़ली/कालेज में प्रवेश करने से पूर्व उनको सम्पूर्ण अष्टाध्यायी के सूत्र कण्ठस्थ थे। और पाणिनि की व्याकरण पर उनका अच्छा अधिकार था।

जब गुरुदत्त जी दशम कक्षा में आये तो सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण पढ़ा उसको पढ़ने से उनके मन में आमूल परिवर्तन होने लगा तथा आर्य समाज में रुचि बढ़ने लगी। भक्त रैमल दास और लाला चेतनानंद के सम्पर्क से उनके हृदय में सत्य प्रकाश का उदय हुआ। परिणाम स्वरूप 20 जून 1880 के शुभ दिन को आर्य समाज मुलतान की सदस्यता ग्रहण की। उन्होंने आर्योद्देश्य रत्न माला का भी मनोयोग से पारायण किया।

जनवरी सन् 1881 में मुनिवर गुरुदत्त राजकीय कालेज लाहौर में प्रविष्ट हुये यहाँ वे लाला साईं दास जी के सम्पर्क में आए उनकी ही प्रेरणा से तथा साईं दास जी के प्रोत्साहन से लाला हंसराज और लाला लाजपतराय आर्य समाज लाहौर के सभासद बने। राजकीय कालेज लाहौर में पं० गुरुदत्त लाला हंसराज तथा लाला लाजपतराय की जोड़ी प्रसिद्ध हुई। तीनों परस्पर प्रभावित हुये। इनमें गुरुदत्त जी प्रेरणा स्रोत थे।

— क्रमशः

आर्य समाजों को कुछ सामयिक सुझाव

o सत्यदेव आज़ाद
अर्जुनपुरा, मथुरा

यह निर्विवाद सत्य है कि महर्षि-दयानन्द सरस्वती ने सार्वभौमिक स्वतन्त्रता और सनातन सत्यों का प्रचार अखिल विश्व में करने के लिए आर्यसमाज सरीखी पवित्र संस्था की स्थापना की। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् उनका उद्घोष था। यही कारण है कि आज भी शिवरात्रि (जिस दिन उन्हें बोध हुआ था) को समाप्त होने वाला सप्ताह आर्यसमाजों के दयानन्द सप्ताह के नाम से मनाया जाता है। परन्तु खेद है कि आर्यसमाज के काम में शिथिलता आ गई है। आज आर्यसमाज को उपदेशों व भाषणों को छोड़कर रचनात्मक कार्य करने होंगे तथा प्रीतिपूर्वक अपने मिशन को सुसंगठित करना होगा।

रचनात्मकता का बोध इस प्रकार करें

1- वेद प्रचार मात्र आर्यसमाज के भवन में बैठकर सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ने और जयघोष करने से सम्भव नहीं। आर्यसमाज अपनी बौद्धिक निधि के लिए विख्यात है। आर्य विचारधारा वाले विद्वानों से अपेक्षित है कि वे वैदिक विचारों, यज्ञों, स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज के महत्व पर लेख लिखकर दैनिक, साप्ताहिक व मासिक पत्र-पत्रिकाओं में छपवायें। मात्र आर्यमित्र में ही नहीं।

2- भारत में लगभग 100 आकाशवाणी केन्द्र हैं तथा अनेक दूरदर्शन केन्द्र। आर्य उपप्रतिनिधि सभाएं ऐसा प्रयास करें कि वैदिक पर्वों तथा सांस्कृतिक पर्वों पर आर्य विद्वानों से अग्रिम वार्ताएं लिखवाकर निकटस्थ केन्द्र पर प्रसारणार्थ भेजें। दूरदर्शन केन्द्र पर आर्यसमाज को भी समय दिया जाये। इस आशय का प्रस्ताव सार्वदेशिक व प्रान्तीय सभाओं को भेजा जाये, साथ ही प्रसारण मन्त्रालय को भी।

3- आर्य भजनीकों को स्पष्ट निर्देश दें कि वे फिल्मी धुनों पर वैदिक विचार धारा वाले भजन न गाएं। लोक संगीत के प्रति यह उनका दीवालिया पन है।

4- आर्यसमाजें अपने कोण से अच्छी धुन सहित भजनों के रिकार्ड्स तैयार करायें और उन्हें विभिन्न केन्द्रों पर प्रसारणार्थ भेंट करें।

5- आर्य समाजों में सदस्य संख्या की वृद्धि की जाये। चुनावों के लिए नियमों को कड़ा न बनाएं। उन व्यक्तियों को आर्यसमाज का सदस्य जरुर बनायें जो किंचित भी लगाव रखते हों।

6- नित्य संध्या व यज्ञ करने वाले तथा अपनी आय में से दशांश व शतांश आर्य-समाज हेतु व्यय करने वाले व्यक्तियों का सार्वजनिक सम्मान हो।

7- आर्यसमाजों को चाहिए कि वे कचहरी, डाकघर, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, तहसील, नगरपालिका व चौराहों आदि सार्वजनिक स्थानों पर आर्यसमाज के एक-एक या दो-दो नियमों को स्थायी रूप से लिखवायें।

8- आर्य मित्र, सार्वदेशिक जैसी अन्य वैदिक विचार धारा वाली पत्रिकाओं का चन्दा आर्यसमाज/ स्वयं वहन करके उन्हें राजकीय दफ्तरों, वाचनालयों व पुस्तकालयों में निःशुल्क भेजता रहे।

9- मोहल्लों में सार्वजनिक यज्ञों का आयोजन किया जाये।

10-युवापीढ़ी का आर्यसमाज में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये ये तभी होगा जबकि 60 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्ति कोई पद ग्रहण न करें। वे वानप्रस्थी व सन्यासी बनकर मात्र दिशा निर्देश करें।

11-विवाह संस्कार, नामकरण संस्कार व अन्य मांगलिक कार्यों को सम्पन्न कराने के लिए आर्यसमाजें स्वयं पहल करें और अपने प्रयासों से वैदिक पुरोहितों को भेजें। आज वैदिक पुरोहित दम्भी और धन लोलुप होते जा रहे हैं। उनका स्वार्थ जन साधारण को पौराणिक कर्मकाण्ड करने को विवश कर देता है।

12-प्रावेशिक स्तर पर संस्कृत की पाठ्य पुस्तकों में वेदमन्त्र भी हों। पाठ्य-पुस्तक अधिकारी तथा शिक्षा विभाग से सम्पर्क कर प्रतिनिधि सभायें यह कदम भी उठायें।

13-आर्य उपप्रतिनिधि सभायें अपने जिले में वैदिक विचारधारा के विषयों से सम्बद्ध सार्वजनिक छोटी बड़ी प्रतियोगिताएं आयोजित कर दानी महानुभावों के सहयोग से सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत करें।

14-स्वामी दयानन्द के चित्रों, वेदवाक्यों व सुभाषितम के स्टिकर्स बनवाकर निःशुल्क वितरित करें।

15-आर्यसमाज में राजनीति का प्रवेश किंचित न होने दें। आर्यसमाजें अपने वार्षिकोत्सव की पुरानी परम्परा को त्यागकर नवीन रचनात्मक कार्यक्रम बनायें। महिलाओं और बच्चों को आर्यसमाज में जाने के लिए प्रेरित करें।

16-दूरदर्शन पर प्रत्येक जाति, धर्म और सम्प्रदाय के कार्यक्रमों को जिस प्रकार दिखाया जाता है उसी तरह सप्ताह में एक बार दूरदर्शन पर यज्ञ प्रसारित हो समाजें प्रस्ताव भेजें और सार्वजनिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी प्रसारण-मन्त्री से सम्पर्क कर इस दिशा में प्रयास करें।

वेद प्रचार के कार्य में यदि आर्य समाजों को अपने रचनात्मक दायित्व का बोध हो सके तो सम्पूर्ण जगत निश्चय ही आर्य बन सकेगा।

तुष्टीकरण की तस्वीर

पूर्ण प्रकाश मित्तल
-बिजनौर

जगमोहन कश्मीर सूर्य बन,
घाटी रक्षा को आया था।
अलगाववादी हर ताकत को,
उसने धूल चटाया था ।।
हालातों को बिन पहचाने,
आँखों के अन्धों ने,
कश्मीर के रक्षक को,
वापिस दिल्ली बुलाया ।
सुलझती गुत्थी कश्मीर की,
मित्रों फिर उलझाया ।।
हर बार हुआ ऐसा ही,
जब जब भारत वीरों ने ।।
दुश्मन का गला दबाया।
तब-तब गद्दारों ने दबाव डाल।।
उसको था छुड़वाया।
देश के दुश्मन खुश करने को,
क्यों तुष्टीकरण अपनाते हैं।
भूल करी जो पृथ्वी सिंह ने,
क्यों उसको तुम दोहराते हो।।
हरकत से जिसकी देश टूट रहा
वही शासनतन्त्र में लगा पड़ा।
यह भारी भूल दूर हो कैसे,
प्रश्न आर्यों के दिल में लगा पड़ा।।

११० वर्षीय सत्याग्रही की सहायता

चौ0 नरपतसिंह फीना (जि0बिजनौर) निवासी 110 वर्ष के हैं। वे 1939 के हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह में कारावास भुगत चुके हैं। लाहौर में वे सभा के भजनीक थे। श्री-रामनाथ सहगल ने उनको 100/- रुपये प्रादेशिक सभा की ओर से और श्री नारायणदास मोहनराम कटारिया जैतपुर (गुजरात) ने मनीआर्डर से 250 रु0 भेजे। उद्योगपति श्री-अशोक चौहान, नई दिल्ली ने 250 रु0 उनकी सहायतार्थ दिये और डिफेंस कालोनी, आर्यसमाज, जनकपुरी सी ब्लाक आर्यसमाज ने 501/-, बिजनौर मित्र मण्डल ने 250/- या अधिक देना स्वीकार किया है।

सार्वदेशिक सभा के भी प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने 100/- मासिक सहायता देना स्वीकार किया है। इन सभी को पुण्य कार्य के लिए धन्यवाद।

- ब्रह्मदत्त स्नातक
संयोजक

शुभ विवाह सम्पन्न

दिनांक- 5 मई 1990 दिन शनिवार को मुलतान नगर मेरठ निवासी श्री-चिरंजी लाल शर्मा के सुपुत्र कृष्ण दत्त-आर्य एवं अनीता सुपुत्री श्री रामदास-शर्मा निवासी हरदेव पुरी शाहदरा दिल्ली का पाणिग्रहण संस्कार पं0 राजपाल टिटौड़ा मन्त्री आर्यसमाज मुलताननगर मेरठ ने स्थान शाहदरा दिल्ली के इस पौराणिक परिवार में वैदकरीति से सम्पन्न कराया। यह परिवार अत्यंत प्रभावित हुआ तथा वधु ने भी वैदिक धर्म में अपनी आस्था प्रकट की।

यह कड़ुवा फल-आतंकवाद।

• चन्द्रपाल सिंह "मयंक"

"पंजाब और कश्मीर" प्रान्त में
फैला जो आतंकवाद ।
कॉंग्रेसी-शासन का सचमुच
यह कड़ुवा फल-आतंकवाद।

हे चार दशक से औध रहा।
कॉंग्रेस-समर्पित तब शासन।
क्या-क्या षडयंत्र रहे होते ?
यह जान न पाते कोई जन।।

था विकट लोह आवरण वहॉं
उसके पीछे क्या होता था?
यह पता नहीं चल पाता कुछ-
तब भारी तिकड़म होता था।

जगमोहन जी ने वर्षो के
षडयन्त्र उजागर कर डाले।
फुफकार रहे थे रह-रह कर
कश्मीर बीच विषधर काले।

भारत-विरोध था पनप रहा।
अलगाववाद बढ़ता जाता।
तथा मुस्लिम शासन को दिन पर दिन
था पाकिस्तानी भड़काता ।

हिन्दू-जन मारे जाते थे।
हर तरह सताये जाते थे।
तब मुस्लिम फ्रण्टों के द्वारा
हर तरह दबाये जाते थे।

इस हालत पर जगमोहन ने
जाते ही रोक लगाई थी।
अँधियारी छटने लगी-वहॉं
जो घोर तमिस्रा छाई थी।

अत्याचारी घबराये थे।
उन सब पर आफत आई थी।
जो रोते थे, दुख पाते थे
उन सबने राहत पाई थी।

जाते ही जाते रोक दिया
जो नग्न नृत्य हो रहा वहॉं
जो पाकिस्तानी हेल-मेल का
नाटक था हो रहा वहॉं।

अन्यायी-अत्याचारी जन
मन ही मन में घबराये थे।
हौसले पस्त हो गये तभी,
पाकिस्तानी दहलाये थे।

यह हालत अधिक न रह पाई।
मच गया शोर था सभी ओर
जगमोहन को वापस भेजो
आवाज उठ गई सभी ओर।

असुरों को नहीं सुहाया था
जगमोहन का कठोर शासन।
डगमग-डगमग कर उठा तभी
अन्यायी जन का सिंहासन ।

आर्यसमाज वाष्टा

प्रधान- श्री आनन्द स्वरूप शर्मा
मंत्री- श्री दिलाराम वर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री प्रेम कुमार भाटिया

साहित्य समीक्षा

पुस्तक का नामः-वेदों में नारी
लेखक- डा0कपिल देव द्विवेदी,एम0ए0, डी0फिल0
प्रकाशन-विश्वभारती अनुसंधान
तथा प्राप्ति स्थान-परिषद्,ज्ञानपुर वाराणसी।

पुस्तक का मूल्य-अजिल्द रू015-00
सजिल्द 25-00

वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। उसमें निहित ज्ञान परमात्मा का दिया हुआ है। वेदों में नारी की गरिमा एवं उसके गौरव को बड़े ही महान एवं स्तुत्य रूप में प्रदर्शित किया गया है। लेखक ने ऋग्वेद,यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्रों से सप्रमाण उसके वैयक्तिक,सामाजिक,पारिवारिक,धार्मिक आध्यात्मिक तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्यों का आदर्श उद्बोधन कराया है। नारी शक्तिरूपा है वह धर्म की आधारशिला एवं धर्मधुरी है। वैदिक नारी राजनीति निपुण कुशल प्रशासिका न्यायाधिकरणी,वीरांगना सेना नेत्री होने के साथ ही जननी भी है। इस मातृत्वपद ने उसे पूज्यतमा एवं महती महीयसी बना दिया है। उसके उदात्त स्वरूप को लेखक ने बड़ी ही सरल एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है। पाश्चात्य और इस्लामिक संस्कृति में प्रकारान्तर से नारी को भोग्य वस्तु मानते हुए उसके स्वरूप को अधिक से अधिक अश्लील बना दिया गया है जबकि वैदिक संस्कृति ने उसके स्वरूप को दिव्यतमा एवं पूज्यतमा बना दिया है। भारत विशेषकर विश्व की नारियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिए जिससे उन्हें अपने उदात्त वैदिक स्वरूप का ज्ञान हो सके। गेटअप एवं छपाई सुन्दर तथा आकर्षक है। लेखक का प्रयास स्तुत्य है।

-आचार्य इन्द्रदेव पाठक
एम0ए0 दर्शनवाचस्पति

पुस्तक का नाम- गीताहुति
प्रणेता - देवनारायण भारद्वाज
प्राप्ति स्थान प्रकाशक- अनिल प्रकाशन- दयानन्दनगर- बरौलाजाफराबाद अलीगढ़
पृष्ठ सं0- 144
मूल्य - रू0 10-00 मात्र

"गीताहुति" पुस्तक में इसके प्रणेता श्री देवनारायण भारद्वाज ने पंच-महायज्ञविधि के समस्त वेद मन्त्रों का गेयशैली में पद्यानुवाद सर्वसाधारण के लिये सुलभ कर दिया है। नित्य कर्म के इन मंत्रों तथा स्वस्ति वाचन एवं शान्तिकरण के मंत्रों में मानव मात्र के कल्याण की भावनायें भरी हैं। इन भव्य भावनाओं का अंश मात्र जीवन के व्यवहार में ढल जाने पर मानव देवत्व की श्रेणी में आ जाता है। यही देवत्व उसे न केवल प्रत्युत प्राणिमात्र के उत्थान हेतु समर्पित होने की ललक उत्पन्न कर देता है। मंत्राप्रेरित यह गीत वार्षिकोत्सव,नित्य सत्संग आदि के अवसर पर सस्वर गाये भी जा सकते है,जिससे आर्य जनता का मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धन भी होता है और उसे सत्कर्मों की प्रेरणा मिलती है।

श्री भारद्वाज की रचना धर्मिता इस पुस्तक के माध्यम से उजागर हुई है। इससे पूर्व भी उनकी अनेक कृतियॉं प्रकाश में आ चुकी हैं। उनके इस प्रयास के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनायें देते हुये आर्य जनता से अनुरोध है कि वह "गीताहुति" के माध्यम से अधिकाधिक वेद प्रचार में अपनी सक्रियता प्रदर्शित करें ।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक,
एम0ए0,दर्शन वाचस्पति।

स्वास्थ्य-सुधा

पत्रांश- "स्वामी जी, सादर चरणस्पर्श। आपकी निःस्वार्थ सेवा-"आर्यमित्र" में स्वास्थ्य-सुधा- पढ़कर बहुत प्रसन्नता होती है। मेरे हथेली और पैर के पंजे से लेकर एड़ीसहित चारों ओर से पसीना रोज निकलता है। मेरी आयु 18 वर्ष है। शरीर भी दुबला-पतला है। काफी दवाई किया, परन्तु ठीक नहीं हुआ।"

- महेन्द्रप्रताप आर्य,1/428 विकास नगर, कुर्सीरोड- अलीगंज, लखनऊ।

समाधान- निओ{चरक} की दो गोली-प्रातराश, मध्याह्न भोजन व रात्रिभोजन बाद लेकर मनॉल{चरक} दो चम्मच पानी या दूध में मिलाकर पिया करें। गर्मी के दिनों में प्रातराश में खरबूजा-शर्बत लिया करें। कम से कम दो-मास तक उपचार जारी रखें। प्रातः तालीपेढ़ भुजंगासन-हलासन-सर्वांगासन किया करें।

--

पत्रांश-"स्वामी जी, नमस्ते। मेरा पुत्र 13 वर्ष का है। पालतू कुत्ते ने उसे काट लिया है। चौदह सुइयाँ लगवाना उचित है अथवा आयुर्वेदिक उपचार।"

- चन्द्रभूषण तिवारी,रानीकी सराय{आजमगढ़} उ0प्र0

समाधान-यदि कोई कुत्ता, किसी मनुष्य को काटने के बाद दस दिन के अन्दर स्वयं मर जाये, तो समझ लीजिये कि कुत्ता पागल है। सरकारी चिकित्सालय में कुत्ता-काटे की चौदह एन्टीरैबिक सुइयाँ लगवाना परमावश्यक है। अन्यथा स्वस्थ कुत्ता के काटे घाव पर साधारण मरहम-पट्टी की जाती है।

:: रोगविवरण के साथ 75 पैसे वाले तीन डाकलिफाफे भेजें:-

-स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
कच्चाहारी
आर्यसमाज पिथौरागढ़
उत्तर प्रदेश।

मानव-मानव एक समान

वीरेन्द्र वीर
बरेली

आज जोश के साथ कहो सब,
हम तो केवल हैं इन्सान।
नहीं वेद में भेद कहीं है,
मानव-मानव एक समान।।
हिन्दू मुस्लिम या ईसाई,
वर्ग भेद की खोदी खाई
सभी परस्पर भाई-भाई
बन्द करो अब बन्द लड़ाई ।।
एक पिता के हैं सब बेटे,
मिल कर सभी करें उत्थान।
नहीं वेद में भेद कहीं है,
मानव-मानव एक समान ।।1।।
मन्दिर, मस्जिद, गिरजा सबरे,
डालें फूट, करावें झगड़े ।
पण्डित, मुल्ला और पादरी,
सभी स्वार्थ की करें चाकरी।।
मानवता से छोड़ दिया है,
आज सभी ने अपना ध्यान ।
नहीं वेद में भेद कहीं है,
मानव-मानव एक समान ।।2।।
एक रंग का रक्त सभी में,
एक ढंग की स्वाँस सभी में।
जैसे सबका हुआ है आना,
जग से उसी तरह है जाना।।
सबके अन्दर प्राण एक है,
फिर भी बनते हो नादान।
नहीं वेद में भेद कहीं है,
मानव-मानव एक समान।।3।।
आर्य बनें सब, राह मोड़ दें,
द्वेष-शत्रुता, भाव छोड़ दें।
भेद भुला दें, काबा-काशी,
हम सब सच्चे भारतवासी ।।
वीर विरोध तज, प्रेम बढ़ायें,
बनें, बनायें, आर्य-जहान।
नहीं वेद में भेद कहीं है,
मानव-मानव एक समान ।।4।।

धर्मान्तरण रोको-देश बचाओ

कार्यक्रम के अन्तर्गत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 40 वनवासी युवकों का 25 दिन से चल रहा प्रशिक्षण शिविर समापन समारोह आज आर्य समाज दीवान हाल में संपन्न हुआ। विगत मास इस कार्यक्रम के अधीन सार्वदेशिक सभा ने उड़ीसा,मध्यप्रदेश आदि राज्यों में आदिवासी क्षेत्रों में हिन्दु धर्म से ईसाई बने सात हजार भाइयों को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित किया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा0 धर्मपाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में अनेक वर्षों से शुद्धि कार्यक्रम .निरन्तर चल रहा है और आर्यसमाज के हृदय में गजब की तड़प है और इसी के कारण वह आदिवासी व दूरदराज क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। डा0 धर्मपाल ने पेट्रोडालर के बल पर हो रहे धर्म परिवर्तन पर चिन्ता व्यक्त करते हुये कहा कि आर्य समाज को तन मन,धन से सक्रिय होकर इस दिशा में और काम करना चाहिये।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि धर्म परिवर्तन के कारण देश की एकता व अखंडता को गम्भीर खतरा पैदा हो गया है।

प्रख्यात पत्रकार श्री क्षितिश वेदालंकार एवं सार्वदेशिक सभा के महामंत्री डा0 सच्चिदानंद शास्त्री आदि सभी वक्ताओं के उद्गारों का मूल स्वर यही था कि आर्य समाज ही एकमात्र ऐसी राष्ट्रीय संस्था है जो निःस्वार्थ भाव से देश की एकता व अखंडता को बनाये रखने के लिए धर्मपरिवर्तन पर रोक लगवाना चाहती है तथा लोभ- लालच के बल पर विधर्मी बने भाइयों को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित करने के लिए देश के विभिन्न भागों में सक्रिय होकर शुद्धि अभियान चला रही है।

(विमल कान्त शर्मा)
प्रचार सचिव।

प्रवेश सूचना

विगत वर्षों की महनीय उपलब्धियों के साथ "गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर" का नवीन शिक्षा सत्र 2 जुलाई से प्रारम्भ होने जा रहा है। आवासीय पद्धति के अनुसार समग्र व्यक्तित्व के विकास पर बल देने वाली यह संस्था उत्तर प्रदेश शासन से "प्रथम श्रेणी में वर्गीकृत एवं अनुदानित है।

व्यवस्था की दृष्टि से अध्यापन क्रम निम्न वर्गों में विभक्त है ।

(क) प्रवेशिका विभाग अर्थात् प्रथम कक्षा से पंचम तक बेसिक शिक्षा परिषद के नियत पाठ्यक्रम के साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का सुप्रबंध है। विभिन्न योगासनों के साथ पी0टी0तथा शस्त्रास्त्र प्रशिक्षण दिया जाता है।

(ख) संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से संबंधित प्रथमा से आचार्य (एम0ए0समकक्ष) पर्यन्त प्राचीनतम तथा सभी आधुनिक विषयों (अंग्रेजी गणित,विज्ञान) के अध्ययन तथा परीक्षा क्रम सन्निहित है।

(ग) अनुसंधेय विषयों के गहन अध्ययन तथा संस्कृत,हिन्दी विषयक स्नातकोत्तर उपाधि . (एम0ए0,पी0एच0डी0) हेतु स्वतन्त्र रूप से सेवानिवृत्त विद्वानों का सानिध्य सुलभ है।

ज्ञातव्य है कि उक्त परीक्षायें समस्त राजकीय विभागों में नियुक्ति, प्रशिक्षण एंव तकनीकी संस्थाओं में प्रवेश हेतु मान्य हैं। शिक्षण तथा संरक्षण निःशुल्क है प्रवेश शुल्क 400/- एक बार भोजन शुल्क 100/- प्रतिमास/ अन्य शुल्क बच्चे की निजी आवश्यकतानुसार पृथक से देय होगा ।

विद्युत चालित उपकरणों से युक्त गुरुकुल का एकान्त शान्त वातावरण अध्ययन मनन के लिये नितान्त उपादेय है।

प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क करें:-

प्राचार्य,
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर
तिलहर,शाहजहाँपुर।

तेवरी

विजय प्रेमी (कलमकार)
मेरठ

इस कदर हम, सह रहे हैं गम,
ईंट पत्थर और गोली बम ।
हर कदम पर आग में झुलसे,
प्रीत के, पाले हुए मौसम ।
आँसुओं में, डूबती कविता।
पर नहीं कविता में डूबे हम ।
जंगली यह, सभ्यता देखो,
दहशतों से, घुट रहा है दम।
क्या हुआ है, देश को मेरे?,
हर तरफ अलगाव के परचम ।
मौत सस्ती, हो गयी, इतनी।,
आँख तक, होती नहीं है नम।
जिन्दगी अब, दर्द की भाषा,
और खुशियाँ, दर्द का मातम।
रोशनी देती है जो सबको,
आज उस, गंगा किनारे तम।
भगत और सुभाष के सपने ,
देश को फिर दो कोई उद्यम।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

कानपुर जिले में दिनांक 13,14 मई को उमरी में 15,16 को मुरलीपुर में एवं 17 से 19 मई को पनखेड़ा तहसील घाटमपुर में 7 दिन प्रचार हुआ जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

शोक प्रस्ताव

दिनांक- 3-6-90 दिन रविवार को पं0 श्री राम शर्मा आचार्य के देहावसान पर आर्यसमाज मोहम्दी के सभासद हार्दिक शोक प्रकट करते हैं, तथा परम पिता परमात्मा से दो- मिनट मौन रखकर प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। तथा शोक संतप्त परिवार को असह्य दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

बाँदीकुई (राज0) आर्यसमाज के प्रांगण में सामवेद पारायण यज्ञ आचार्य श्री-वेदप्रिय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा कई विद्वानों व भजनोपदेशकों के व्याख्यान व भजन हुए सुनकर जनता प्रभावित हुई। वक्ताओं ने काश्मीर व पंजाब में आतंकवाद पर चिन्ता व्यक्त की, तथा देश की अखण्डता के लिए प्रण किया।

पद्मभूषण डॉ0 दुःखनराम-शान्तियज्ञ

पिथौरागढ़। आर्यसमाज मन्दिर में डॉ0- दुःखनराम का निधन. 26 अप्रैल, 1990 को, दिवंगत आत्मा हेतु शान्तियज्ञ 13 मई को सम्पन्न किया गया।

जन्म भूमि राम की

— स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की।
यहाँ पर कहाँ बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।

छाया है आतंक देश में सियार शेर सम गुर्राते हैं।
हो रहे अत्याचार प्रबल अति दीनदुखी जन चिल्लाते है।।
राष्ट्र शक्तियाँ सुस्त हो रही इस भारत सुखधाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्मभूमि श्री राम की।।

यह भारत सरकार राम मन्दिर पर रोक लगाती है।
राम कृष्ण क वंशज होकर जरा शर्म नहीं आती है।।

राम मर्यादा पुरुषोत्तम बिन कीमत नहीं एक छदाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्मभूमि श्री राम की।।

उखाड़ फेंको हृदय भूमि से अहंकार का खर पतवार।
स्नेह सूत्र में बँध जाओ लो सद विचार निज हृदयधार ।।

राम नाम की ध्वनि गुंजादो देर नहीं शुभ काम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्री राम की।। §3§

यही समस्या बनी रही तो फिर भविष्य में हल क्या होगा।
यह तन के उजले मन के काले इनसे कार्य सफल क्या होगा।।

जब सूख गई सारी खेती फिर बरषात है कौन काम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की।।§4§

सावधान राम भक्तो सीधपन काम नहीं चलता।
टेढ़ी उँगली किये बिना हाँड़ी से घी भी नहीं निकलता।।

बढ़े चलो निर्भय होकर क्या बाट तको परिणाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की। §5§
हम आर्यवीर श्रीराम भक्त सतपथ पर कदम बढ़ायेंगे।
पूरण हो सारी अभिलाषा अब मन्दिर शीघ्र बनायेंगे।।

कहे 'स्वरूपानद" तुम्हें सौगन्ध राम,घनश्याम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्मभूमि श्रीराम की।।§6§
यहाँ पर कहाँ बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।

लापता व्यक्ति की खोज



श्री विजय कुमार जी आर्य,प्रबंधक, दयानन्द बाल विद्या मन्दिर फेरूपुर §रामखेड़ा§ एवम् वरिष्ठ उपमंत्री, जिला आर्य-उप प्रतिनिधि सभा हरिद्वार दिनांक 6-4-90 को रात्री 9 बजे से आर्य समाज लक्सर के वार्षिकोत्सव से अपहृत/लापता हैं। यदि उक्त पते के सज्जन कहीं मिले अथवा उनके संबंध में कोई जानकारी मिले तो कृपया आर्य-समाज-फेरूपुर§रामखेड़ा§ पत्रालय-धनपुरा,जनपद-हरिद्वार के पते पर सूचित करें ।

रामपाल सिंह आर्य,
मंत्री,आर्यसमाज फेरूपुर,
पत्रा0-धनपुरा,जनपद-हरिद्वार।

आर्यसमाज आर्यनगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज आर्यनगर§बदायूँ§ का 93वाँ वार्षिकोत्सव जनजागरण यज्ञोत्सव आर्य कन्या इण्टर कालेज के विशाल प्रांगण में दि0- 27 से 29 तक समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमें 24 आर्य समाजों ने भाग लिया। जिसकी शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गई जिसमें श्री सत्यप्रकाश आर्य दयाशंकर आर्य द्वारा जुलूस को शर्बत तथा श्री रामकुमार आर्य द्वारा दूध दिया गया। जनता पर वैदिक धर्म के प्रति विशेष उत्साह देखने को मिला।

आर्यसमाज सिविल लाइन्स नरही,लखनऊ

प्रधान- श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित
मंत्री-श्री लक्ष्मी नारायण गुप्त
कोषाध्यक्ष-श्री आर0पी0 सिंह

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मोहम्मदी §खीरी§ के कर्मठ सदस्य श्री रामेश्वर दयाल रस्तोगी का दिनांक 21 मई को निधन हो गया। समाज ने अपने सा0 सत्संग में शोक प्रस्ताव पास कर परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य हेतु प्रार्थना की।

हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह पर किताब

नई दिल्ली, अखिल भारतीय हैदराबाद§आर्यसमाज§ स्वतन्त्रता-सेनानी समिति दिल्ली द्वारा एक पुस्तक के माध्यम से रजवाड़ों के खिलाफ चलाए गए "हैदराबाद सत्याग्रह" का शीघ्र ही एक इतिहास प्रकाशित किया जाएगा।

इस पुस्तक के लेखक व स्वतन्त्रता सेनानी श्री ब्रह्मदत्त स्नातक के अनुसार इस पुस्तक मे सत्याग्रह के दौरान स्वतन्त्रता सेनानियों को दी गई यातनाओं का विवरण होगा। इसके साथ ही इस पुस्तक में दो हजार से अधिक स्वतन्त्रता सेनानियों के पत्रो के अंश भी प्रकाशित किए जाएँगे जिनमें उनको जेल यात्रा के दौरान उनकी दुखभरी दास्तान प्रस्तुत की जाएगी।

श्री स्नातक के अनुसार पुस्तक का लेखन कार्य लगभग पूरा हो चुका है। अब शीघ्र ही इसका प्रकाशन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक में इस बात का भी उल्लेख किया जाएगा कि सरकारी आदेश के बावजूद हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वाले स्वतन्त्रता सेनानीयों को पेंशन पाने के लिए किस-किस तरह से परेशान होना पड़ा और होना पड़ रहा है।

वृष्टि विज्ञान मण्डल

मण्डल, भारत सरकार के अनुदान से एक अभूतपूर्व राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है

विषय- "यज्ञ द्वारा वर्षा प्रेरित करने की विधियां।

संगोष्ठी में भाग लेने के लिए तीन प्रकार के विद्वान आमन्त्रित किए जा रहे हैं -

§1§ वैदिक विद्वान जिन्होंने विधि-विधान समेत यज्ञ करके वर्षा कराई है।

§2§ वैदिक विद्वान जो वर्षा तो नहीं करा सकें, परन्तु उनका विधि-विधान सम्बन्धी ज्ञान इतना परिपूर्ण है कि वे वर्षा करा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ प्रमुख वैज्ञानिक भी निमन्त्रित किए जा रहे है जो वृष्टि यज्ञ पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे। आगन्तुक विद्वान अपना मन्तव्य दो पृष्ठीय लेख द्वारा प्रस्तुत करेंगे जो दस मिनट में पढ़ा जा सके। तिथिया तथा कार्यक्रम की सूचना यथासमय प्रकाशित की जायेगी।

लेखपाठ के लिए आमंत्रित विद्वानों के आतिथ्य तथा आवास की उपयुक्त व्यवस्था की जायगी। उन्हें मार्ग व्यय भी दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए उपरोक्त पते पर सम्पर्क करें।

जयकुमार मुद्गल
51 कृष्णापुरी, मथुरा।

कश्मीरी विस्थापितों के लिये राहत-कार्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी॰ए॰वी॰ कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के तत्वावधान में काश्मीर राहत केन्द्र" आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में गत दो मासों से सुचारु रूप से चल रहा है। इस समय हमारे पास 600 परिवारों के नाम रजिस्टर्ड हैं, जिन्हें हम हर सप्ताह खाद्य सामग्री जैसे चीनी, चावल, आटा, दालें, नहाने एवं कपड़े धोने का साबुन, वस्त्र, बर्तन, दरियां, चादरें आदि वितरित करते हैं। -

अब तक हम दो सौ कश्मीरी विद्यार्थियों को अपने डी॰ए॰वी॰ विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश दिला चुके हैं और जो नितान्त ही गरीब विद्यार्थी हैं, उन्हें पुस्तकें एवं वर्दियां भी उपलब्ध कराई हैं। इसी तरह हम 100 कश्मीरी अध्यापकों, क्लर्कों, चपरासी आदि को अपने विद्यालयों में नौकरी दिला चुके हैं।

इस समय कार्य काफी बढ़ गया है इसलिये हमें उपरोक्त सामग्री की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः मेरी समस्त जनता से प्रार्थना है कि वह अधिक से अधिक खाद्य सामग्री आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

यदि आप चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर/नकद राशि भेजना चाहें तो "आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा" के नाम केवल खाते में आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के पते पर भिजवा सकते हैं। आपके सहयोग के लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूँगा।

- रामनाथ सहगल
मन्त्री।

वैदिक विवाह सम्पन्न

आर्य समाज तरौंदा के प्रतिनिधि भूकेन्द्र सिंह त्यागी के सुपुत्र रामबहादुर सिंह का विवाह ग्राम केवड़िया के स्वर्गीय राजा राम प्रताप सिंह की कुमारी बीना से बिना दहेज पुरोहित श्री ओमप्रकाश-जी भजनीक द्वारा 25 मई 1990 को सम्पन्न हुआ।

ऋषि दयानन्द के जीवनकाल के साठ वर्षीय पंचाग का प्रकाशन

कार्य में यथाशक्ति आर्थिक सहयोग की प्रार्थना

आर्यसमाज वा उससे इतर क्षेत्र का जो भी व्यक्ति ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध कार्य करना चाहता है उसे ऋषि दयानन्द के जीवन काल के साठ वर्षों के पंचांगों की महती आवश्यकता का अनुभव होता है। उसके अभाव में उसका शोध कार्य पूरा नहीं हो सकता। उसे पूर्व मुद्रित जीवन चरितों में दी गई तिथि-तारीखों पर आश्रित रहना पड़ता है। उनकी शुद्धि अशुद्धि का उसके पास कोई साधन नहीं होता।

मुझे सन् 1943 में "ऋषि-दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास" लिखते समय इसकी आवश्यकता का अनुभव हुआ था। प्रयत्न करने पर मुझे सं0- 1931-1940 तक का तिथि-तारीख पत्र उपलब्ध हो गया, उससे मेरा कार्य सम्पन्न हो गया, क्योंकि ऋषि दयानन्द ने जो भी ग्रन्थ लिखे हैं उनमें से 3-4 को छोड़कर अपने जीवन के अन्तिम 10 वर्षों में ही लिखे हैं। परन्तु कार्य करते हुए 15-16 वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द के सम्पूर्ण जीवन काल के पंचागों की आवश्यकता पड़ी, परन्तु प्रयत्न करने पर भी उपलब्ध न कर सका। ऋषि दयानन्द के जीवन चरितों में कहीं देशी तिथियां दी हैं तो कहीं अंग्रेजी। दोनों का समन्वय आवश्यक है। अनेक तिथियां व तारीखें जीवन चरितों एवं पत्र व्यवहार में अशुद्ध हैं उनके शोधन की भी आवश्यकता है। इसलिये ऋषि दयानन्द के पूरे जीवनकाल 60 वर्ष के पंचांग का मुद्रण अत्यावश्यक है जिससे प्रत्येक शोधकर्ता को वह उपलब्ध हो सके।

भोपाल के प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री आदित्यपाल सिंह जी ने 200 वर्षों के पंचांग की उपलब्धि की सूचना दी। मैंने उनसे ऋषि दयानन्द के जीवन काल के 60 वर्षों के पंचांग का प्रकाशन करने का अनुरोध किया। उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार कर लिया।

मेरा सभी ऋषि भक्त व्यक्तियों से विनम्र निवेदन है कि वे 70 रुपया भेजकर प्रारम्भिक ग्राहक बनने का भरसक प्रयत्न करें। जिनके लिये यह उपयोगी न हो वे इसे खरीदकर योग्य व्यक्तियों वा समाजों को भेंट दे देवें।

इसके अतिरिक्त मेरी धनीमानी ऋषिभक्त वैदिक धर्मप्रेमी महानुभावों से भी प्रार्थना है कि अपनी सामर्थ्यानुसार इस महत्वपूर्ण कार्य में आर्थिक सहायता प्रदान करें जिससे प्रकाशक को पूरी पुस्तकें न बिकने की अवस्था में आर्थिक क्षति न उठानी पड़े।

पुस्तक की ग्राहकता का तथा आर्थिक सहयोग का धन कृपया निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें-

- अध्यक्ष, सुरुचि प्रकाशन संस्थान,
181 महाराणा प्रताप नगर {जोन 1}
भोपाल 462011 {म0प्र0}
युधिष्ठिर मीमांसक

प्रशिक्षण सम्पन्न

विगत दिनों गुरुकुल होशंगाबाद में चल रहे आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य वीर दल के शिविर का समापन समारोह श्री सीताराम् ... विधायक इटारसी की अध्यक्षता में तथा सम्माननीय श्री बृजमोहन मिश्रा विधान सभा अध्यक्ष के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। पूरे प्रदेश से लगभग एक सौ आर्य वीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

स्त्री आर्य समाज सिम्भालका {मु0नगर}

मंत्री- श्रीमती फूलकुमारी जी
मंत्राणी-श्रीमती सुशीला चौधरी
कोषाध्यक्षा-श्रीमती कृष्णा मेहरा

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश (उपदेश विभाग) प्रस्तुत करता है प्रचार योजना

सस्ती उत्सव योजना- 500 रु0 दक्षिणा वेद प्रचार निधि में, इस योजना के अन्तर्गत द्वि दिवसीय उत्सव हेतु सभा की ओर से एक उपदेशक एवं दो सुयोग्य भजन मण्डली प्रदान की जायेगी। पण्डाल ध्वनि विस्तारक यन्त्र मार्ग व्यय इत्यादि की समस्त व्यवस्था सम्बन्धित आर्यसमाज को करनी होगी।

प्रभावशाली प्रचार योजना- 600 रु0 दक्षिणा वेद प्रचार निधि में। इस योजना के अन्तर्गत द्विदिवसीय प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत सभा की ओर से एक उपदेशक एवं एक भजनोपदेशक प्रदान किये जायेंगे। शेष व्यय भार सम्बन्धित आर्य समाज को वहन करना होगा।

मिशनरी प्रचार योजना- {आप बुलायें हम आयें}

इस योजना के अन्तर्गत एक भजन मण्डली सभा की ओर से प्रदान की जायेगी। आपको केवल मार्ग व्यय भार वहन करना होगा, यह योजना धर्मान्तरण एवं अराष्ट्रीय गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों में लागू की जायेगी।

आप के निमन्त्रण की प्रतीक्षा में

आज ही लिखें या मिलें।

हरिश्चन्द्रार्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग,
प्रचार कार्यालय अमरोहा
जनपद-मुरादाबाद।

लखनऊ दूरभाष सभा-
45393
अमरोहा दूरभाष-554

अमृत कण

जैसे निर्मल जल से शरीर शुद्ध करके मल का नाश करते हैं वैसे ही मनुष्य अन्तःकरण का मल दूर करके आत्मा की शुद्धि करें।

-मनुस्मृति

--

सत्यकर्मी, सत्यज्ञानी, जितेन्द्रिय, ईश्वर और विद्वानों से प्रीति करने वाले चतुर पुरुष पृथ्वी पर उन्नति करते हैं। यह नियम भूत और भविष्यत् तथा वर्तमान के लिए समान है।

- महर्षि व्यास

--

जिस प्रकार मनुष्य उत्तम पुरुषों से मिलकर श्रेष्ठ गुण प्राप्त करते हैं और दूसरों को प्राप्त कराते हैं उसी प्रकार हम उत्तम गुण प्राप्त करके अपना जीवन श्रेष्ठ बनावें।

- महर्षि बाल्मीकि

--

दानवीर, धर्मवीर और कर्मवीर बनकर वसुधा को वेदसुधा का दान देकर विश्व के मानव समाज का कल्याण करो।

- वेद

--

राष्ट्रभाषा हिन्दी के व्यापक प्रचार एवं प्रसार के लिए अपना तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण कर दो।

- राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

--

मृत्यु से कह दो हम अजर अमर अविनाशी आत्मा हैं। हम परमात्मा के अमृत पुत्र हैं।

- भगवद्गीता।

--

मैंने सत्यार्थप्रकाश को अठारह बार पढ़ा जितनी बार उसे पढ़ता हूँ मुझे मन और आत्मा के लिए कुछ नवीन भोजन मिलता है--

- गुरुदत्त विद्यार्थी

--

मैंने भारत में आकर सच्चे धर्म का परिचय सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय में पाया है क्योंकि मार्ग से भटकने वालों के लिए यह पथ प्रदर्शक है।

-पादरी सी0एफ0 एण्ड्रूज

--

सनातनधर्म का रहस्य समझने के लिए वेद हैं और केवल वेद ही हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।

- सर टी0वी0 शेषगिरि, रिटायर्ड जज मद्रास हाईकोर्ट।

--

सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से मेरी विचारधारा ही बदल गई। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है--

- लाला हरदयाल शेरे पंजाब।

--

हिन्दी को विकसित और लोकप्रिय न बनाया गया तो देश बिखर जायेगा।

- स्वामी आनन्दबोध सरस्वती।

--

उदारता से दान देने वालों के भण्डार प्रभु कभी खाली नहीं होने देते--

- वेद

--

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्--

- महर्षि व्यास

--

हे सनातन शाश्वत इन्द्रदेव। आपसे हम रक्षा की इच्छा रखते हैं और अपने जीवन संघर्ष में आपको रक्षा के लिए पुकारते हैं।

- रवीन्द्रनाथ टैगोर।

--

जो चलता है देवता उसके सखा होते हैं उसके साथ चलते हैं जो नहीं चलता है वह श्रेष्ठ होता हुआ भी धीरे-धीरे पतन की ओर चला जाता है--

-महर्षि मनु

--

जो श्रम से नहीं थका उसे लक्ष्मी नहीं मिलती। उद्योगी पुरुष ही लक्ष्मी प्राप्त करता है। भाग्य के भरोसे कापुरुष रहते हैं।

- महाराज भर्तृहरि।

--

Nothing is more important to man than man --

- Einstein

--

निर्वाचन

आर्य समाज जमानियाँ

प्रधान - श्री रामाधार जी, ऐडवोकेट
मन्त्री - श्री रमा शंकर पाण्डेय
कोषाध्यक्ष- श्री आनन्द कुमार

आर्यसमाज नगीना

प्रधान- श्री राजेन्द्र नाथ जी
मंत्री:- श्री दक्षपाल सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री बुद्धसिंह जी

आर्यसमाज कंकरखेड़ा, मेरठ।

प्रधान- श्री टी0सी0 सेटिया
मंत्री- श्री रामस्वरूप विमल
कोषाध्यक्ष- श्री राम सरन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा-फतेहपुर

प्रधान- डा0हर्षवर्धन, फतेहपुर
मंत्री-श्री सुरेन्द्र सिंह यादव, ईटगांव
कोषाध्यक्ष-श्री श्रीचन्द आर्य किन्दकी

श्री भारद्वाज का नया पता

पता- श्री देव नारायण भारद्वाज
एफ- 42 मानसरोवर कालोनी
रामघाट मार्ग, अलीगढ़- 202001

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सहतवार(बलिया) का 46वाँ वार्षिकोत्सव गत- 26,27, 28 मई 1990 को पुरानी बाजार के प्रांगण में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

शोक समाचार

आर्यसमाज खण्डवा(म0प्र0) ने दिनांक 3 जून को सांय श्री किशोरीलाल वर्मा राज्य शिक्षा शालेय मंत्री, म0प्र0 शासन की माताजी के निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट किया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

श्री विद्यासागर सहा0पुस्तकाध्यक्ष सभा की पूज्य बहन श्रीमती चमनदेवी पत्नी श्री हरिराम शर्मा निवासी ग्राम-सौना अर्जुनपुर जिला- सहारनपुर का विगत दिनों निधन हो गया है गत 30 मई को उनके निवास स्थान पर यज्ञ आदि सम्पन्न हुआ। सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सदगति के लिए प्रार्थना की है।

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन० पी० ७९
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आषाढ़ शुक्ल- ९ संवत २०४७ वि०
दिनांक १ जुलाई १९९०

दूरभाष: २४५९९३

सेवा में...



12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

निर्वाचन

आर्यसमाज मवाना (मेरठ)

प्रधान - श्री दयाप्रकाश सर्राफ
मन्त्री - श्री कान्ति प्रकाश
कोषाध्यक्ष- श्री प्रेम प्रकाश

--

आर्यसमाज बरदहा बाजार (बहराइच)

प्रधान - श्री वीरेन्द्र कुमार प्रजापति
मन्त्री - श्री राम सुमिरन आर्य
कोषाध्यक्ष -श्री हरिनारायण आर्य

--

छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची

प्रधान - श्री प्रेम प्रकाश आर्य (रांची)
मन्त्री - श्री दयाराम पोद्दार (रांची)
कोषाध्यक्ष- श्री भोलाराम सोनी



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि स २२४१/५७) आषाढ़ शुक्ल-१५ रविवार संवत् २०४७ वि दिनांक ८ जुलाई १९९० (घोषणापत्र सं ७/22-२२५)



कामना एक छात्र की-

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्।
अग्ने क्रत्वा क्रतूँ ऽरनु ।

यजुर्वेद ९/४

हे विद्वान् गुरुदेव। अपने पवित्र ज्ञान से हमें ज्ञानवान और पवित्र बना दीजिए। हे मेरे शिक्षक। अपनी प्रकाशवती सुखदायिका प्रभा से हमारी बुद्धि को उज्ज्वल कर दीजिए।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू २५१/
वार्षिक	रू ३०/
एक प्रति	१रू मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक- २६

कामना एक शिक्षक की-

स्वाध्यायान्मा प्रमद

प्यारे बच्चो !

इन पंक्तियों के लिखे जाने तक तुम्हारे सत्र का प्रारम्भ हो चुका होगा और तुम माँ सरस्वती के आराधनास्थल अपने-अपने विद्यामन्दिरों में पहुँचकर अपने स्वाध्याय में दत्तचित्त हो चुके हो। प्रात काल की पावनबेला में हरित दूर्वा से भीगी हुई अवनि पर जब तुम अपने गुरुजनों के समक्ष विद्यामन्दिर के विशाल प्रांगण में खड़े होकर समवेत स्वरों में भारतजननी राष्ट्रमाता जगज्जननी दिव्यमाता का स्तवन कर रहे होगे वह दृश्य कितना मनोहारी होगा सचमुच तुम कितने भाग्यशाली हो। आज सूर्य अपनी हजार-हजार किरणों से तुम्हें अपना आशीर्वाद देने के लिए उमड़ा चला आ रहा है। प्रांगण की हरी दूर्वा ने अपनी ओस के आँसुओं से तुम्हारे चरणों के पखारना प्रारम्भ कर दिया है। शीतल मन्द सुगन्ध समीरण का हर झोंका तुम्हें शीतलता शालीनता का सन्देश दे रहा है। तुम्हारे सम्मुख खड़े हुए यह तुम्हारे गुरुजन अपना सर्वस्व तुम्हें अर्पण करने के लिए लालायित खड़े हैं। इस विद्यामन्दिर का कण-कण अपने पलक पाँवड़े बिछाकर तुम्हारा स्वागत करने को तैयार है चारों ओर से पवित्र गन्ध का आगार लिए ये फूल मुस्करा रहे हैं। तुमसे कह रहे हैं मेरे प्यारे बच्चो। काँटों में रहकर भी सदा हमारी तरह मुस्कराते रहना।

मैं एक शिक्षक हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम परमात्मा की बनाई हुई अनमोल निधि हो। तुम राष्ट्र के उदीयमान प्रहरी हो। माँ-बाप ने सुन्दर शरीर देकर तुम्हें हमारे पास भेजा है अब तुम्हें इन्सान से मानव और मानव से महामानव हम बनाएंगे। तुम्हारी इन पंक्तियों में कहीं मेरा राम छिपा हुआ है। कहीं मेरा दयानन्द खड़ा हुआ है। मैं अपने अन्तस्तल की आँखों से झाँककर उन्हें ढूंढ़ रहा हूँ क्योंकि मैं वशिष्ठ हूँ मैं विरजानन्द हूँ। मैं तुम्हारी निधि हूँ तुम मुझे समर्पण दो मैं तुम्हें ज्ञान से ओतप्रोत कर दूंगी।

To my children, Who have joined English medium,

Please remember everybody loves a boy who is neat and clean nobody likes a child who is dirty and unclean Our Lord is so beautiful so clean We should also remain clea and lovable I would like to preach you that you should not hear evils you should not speak evils you should not see evils and you should remain always good to others

क्या तुम मेरे इस स्वप्न को साकार करोगे?

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उठ्ठ तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ आषाढ़ शुक्ल १५, संवत् २०४७ वि.
८ जुलाई १९९०, दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

ओ३म् सम्पादकीय

सा विद्या या विमुक्तये

जो भारतीय संस्कृति और भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्व में समादृत, अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय मानी जाती थीं और जिसने भारत को "जगदगुरु" की पदवी से विभूषित किया था भारत में उसी की रक्षा और प्रसार के लिए हम भारतीयों को प्रयास करना पड़ रहा है- यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है। आज देश की मूलसमस्या शिक्षा में आमूल परिवर्तन करके उसे भारतीयता के अनुकूल बनाना है क्योंकि "छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा।" आज की पीढ़ी यदि सुधर जाय तो हमारा कल सुधर सकता है। राजनीतिक स्तर पर अनेक प्रयास किए गये कोठारी कमीशन 'आदि कई कमीशन तथा समितियाँ बनाई गईं' परन्तु अपेक्षित सुधार अभी तक नहीं हुआ। जितने भी कमीशन बने उन्होंने विद्या के अर्थकरी पहलू पर ही विशेष ध्यान दिया परिणाम यह हुआ कि मानव को मानव बनाकर सर्वांगरूपेण विकसित करने वाली विद्या केवल अर्थकरी ही बनती जा रही है। जैसे कोई आत्माविहीन शरीर को स्वर्णाभूषणों से अलंकृत कर रहा हो।

हमारी संस्कृति में विद्या को मोक्ष का साधन बताते हुए उसे ऐहलौकिक एवं पारलौकिक उन्नति का माध्यम बताया गया है। इस दृष्टिकोण से प्राच्यगुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही मानव को सर्वांगरूपेण विकसित करने में सक्षम है। इस शिक्षा प्रणाली में गुरु शिष्य सम्बन्ध इतना विकसित और समन्वयात्मक है कि वहाँ योग्यता की परख अथवा बच्चे के व्यक्तित्व के विकास को मापने के लिए किसी किताबी या अन्य साधन की आवश्यकता नहीं है। जिस भारत की संस्कृत भाषा से रहित कल्पना ही नहीं की जा सकती उस भाषा को शिक्षा के माध्यम से हमने बिल्कुल विरत यह कहकर कर दिया है कि यह भाषा मृत है। लक्ष्य निश्चित न होने के कारण आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम शिक्षा से वह प्राप्त नहीं कर सके जिसकी भारत को अपेक्षा है। यदि शिक्षा का उद्देश्य केवल भौतिक साधन जुटाना मात्र हो तब तो मानव और पशु में क्या अन्तर रह जायेगा इसलिए वेद ने शिक्षा को भौतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष के समन्वय में विवेचित किया है।

लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली ने हमें मानसिक दृष्टि से अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत का गुलाम बनाया है। आज स्थिति यह पैदा हो गई है कि हम इस शिक्षा पद्धति से भारतीय समाज को छुटकारा नहीं दिला पा रहे हैं। आर्यसमाज का दृढ़ विश्वास है कि प्राच्यगुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से ही हमारी संस्कृति सुरक्षित रह सकती है। इस प्रणाली को शासन से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है। उसके व्यवसायपरक स्वरूप को हम नगण्य नहीं समझते किन्तु शिक्षा का व्यवसायपरक रूप ही सब कुछ है- यह भी हम नहीं मानते। दोनों के समन्वय के साथ प्राचीन आश्रम प्रणाली के माध्यम से नई सन्तति को यदि शिक्षित किया जाये तो निःसन्देह भारत का भाग्य बहुत शीघ्र उदय हो सकता है।

नया सत्र प्रारम्भ हो चुका है। आर्यसमाज अपनी शिक्षण संस्थाओं तथा सभी शिक्षण संस्थाओं में रत अपने छात्र वर्ग अभिभावक वर्ग तथा शिक्षकवर्ग के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। □

वार्षिक चित्र

उ0प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय से प्रत्येक आर्यसमाज को वार्षिक चित्र भेजे जा रहे हैं। जिन्हें प्राप्त न हों, वह सभा कार्यालय से पत्र लिखकर मँगाने की कृपा करें।

प्रत्येक जिला सभा को पहले ही चित्र सं0-3 भेजा जा चुका है। यदि प्राप्त न हुआ हो, तो पुन. पत्र लिखकर मँगा लें।

(मनमोहन तिवारी)
सभामंत्री

आवश्यक सूचना

दयानन्द संघ के 'अवैतनिक महोपदेशक, उपदेशक तथा भजनोपदेशकों से निवेदन है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट लिखी जा रही है, अत. अपने-अपने कार्य का विवरण साफ-साफ। जनवरी 1989 से 31 मार्च 1990 तक का बनाकर 10 जुलाई, 1990 तक सभा कार्यालय में भेज दें। इसके पश्चात आने पर सभा का उत्तरदायित्व नहीं होगा।

-मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

मिलनपर्व यह मंगलमय हो

राष्ट्ररक्षा अभियान के प्रणेता, युवाहृदय सम्राट, आर्यजाति की रक्षा के लिए अपने जीवन का सर्वस्व समर्पित करने की तमन्ना लिए, आर्यसमाज के जीवन्त ज्वलन्त श्रीमन्त जयन्त अन्ततः 24 जून की पावनवेला में श्री ओंकारनाथ आर्य "वन्देमातरम्" की आत्मजा आर्य ललना आर्यकुलकलावतंस आयुष्मती राज्यलक्ष्मी के साथ पवित्र वेदध्वनियों के बीच परिणय के प्रेमसूत्र में सदा-सदा के लिये बन्ध ही गये--- नहीं-नहीं समर्पित हो गये। कौन जाने गंगा सागर में विलीन हुई कि सागर ने गंगा का आँचल पकड़ा। हमने तो मुग्ध होकर दोनों को एकाकार होते देखा है, भँवर बनकर घूमते हुए प्रेमसागर में डुबकी लगाते देखा है, चकवाक बनकर नीड़ की खोज में अनन्त प्रेमाकाश में उड़ते हुये देखा है।

---और राम की पावन नगरी फैजाबाद में शुभ्र वितान तले सुसज्जित यज्ञमण्डप में वैदिक कर्मकाण्ड के परम निष्णात आर्य प्रतिनिधिसभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज ब्रह्मा के आसन पर विराजमान थे। उनके चतुर्दिक बैठी हुई विद्वन्मंडली डा0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री, आर्यमित्र के सम्पादक आचार्य इन्द्रदेव पाठक, श्री सत्यदेव शास्त्री, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ के मंजुमेखलाधारी ब्रह्मचारी द्वय सर्वश्री-नरेन्द्र रामदेव, पूज्य सन्यासी स्वामी चन्द्रदेव हरिद्वार, विदुषी आर्य पुरोहिता कु0 मंजु शास्त्री, एवं दीनानाथ सिंह जी ने अपने समवेत मन्त्रध्वनियों से वातावरण को गुंजायमान कर दिया था। ब्रह्मापद पर आसीन श्री पं0 इन्द्रराज जी ने गृहस्थ आश्रम एवं दाम्पत्य जीवन के उच्च आदर्शों का उद्बोधन कराते हुए इस कर्मकाण्ड की सुन्दरतम शैली में वरवधू का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न कराया।

वैदिक मान्यताओं के अनुसार यह एक आडम्बरहीन आदर्श वैदिक विवाह था। वर महोदय भूतपूर्व पादरी थे जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिकधर्म स्वीकार करके राष्ट्ररक्षा में अपने को समर्पित कर रखा है। आयुष्मती राज्यलक्ष्मी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ओंकारनाथ-आर्य की सुपुत्री हैं। इस अवसर पर लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयालु गुप्ता, देहरादून से डा0 आनन्द सुमन मेरठ से डा0 रमेशचन्द्र, श्री पं0 इन्द्रराजजी का परिवार तथा जौनपुर गोण्डा, इलाहाबाद आदि दूरस्थ जिलों से अनेकों गण्यमान्य नरनारी चि0 वरवधू को आशीर्वाद देने हेतु पधारे थे। आर्यसमाज अंगूरीबाग (फैजाबाद) ने नव वधू को शुद्ध खादी रेशम की साड़ी भेंट की।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 एवं आर्यमित्र परिवार की ओर से चि0-नव दम्पति को शत शत मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

— मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

आर्यसमाज के पत्र और पत्रकारिता

— डा० सुनीता शास्त्री
अमरोहा

भारत को स्वतन्त्र कराने और एकता के सुत्र में बाँधने का श्रेय पत्र और पत्रिकाओं को ही जाता है। स्वतन्त्र्य पूर्व परस्पर योजनाओं और विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम पत्र पत्रिकायें ही थे। स्वतन्त्रता से पूर्व जोखिम भरे ब्रिटिश शासन काल मे आर्यसमाज ने सर्वप्रथम आगे बढकर पत्र और पत्रिकाओं के माध्यम से प्रचार प्रसार का कार्य प्रारम्भ किया।

उन्नीसवीं शती के अंतिम दशक में मुरादाबाद मे मुंशी नारायण प्रसाद ने "मुहारक" नामक एक उर्दू साप्ताहिक पत्र निकाला। यह आर्यसमाजी विचारधारा का था। इसके संचालक मुंशी जी थे जो नारायण स्वामी के नाम से जाने जाते हैं। यही पत्र हिन्दी भाषा में "आर्यमित्र के रूप में परिणत हुआ, जिसका सम्पादन धामपुर निवासी प० रुद्रदत्त शर्मा ने किया, हुकुम सिंह रईस इसे आगरा ले गये, तत्पश्चात् लखनऊ से अद्य पर्यन्त चल रहा है।

इसी काल में मुरादाबाद से "आर्य विनय" हिन्दी पत्र भी निकलता था, जिसके सम्पादक पं० रुद्रदत्त शर्मा थे। शर्मा जी के बाद पं० बद्रीदत्त जोशी ने इसका सम्पादन कार्य संभाला तथा आर्य समाज के प्रचार में समस्त जीवन अर्पण कर दिया। प० क्षेमचन्द्र "सुमन" ने 'आर्य विनय" को ही "आर्यमित्र" के रूप में माना है। जबकि आर्यमित्र के स्व० सम्पादक प० हरिशंकर शर्मा ने उर्दू के "मिहिरक" का रुपान्तर "आर्यमित्र' पत्र को माना है। इसका उद्भव कुछ विवादात्मक होने हुये भी निष्कर्षत स्पष्ट होता है कि 'आर्यमित्र' आर्य सिद्धान्तों, वैदिक धर्म, व नव जागरण का पत्र है। आर्य जगत का सशक्त पत्र "आर्यमित्र" सन् 188 में सर्वप्रथम मुरादाबाद मे ही निकला और वर्तमान में लखनऊ से प्रकाशित हो रहा है।

1908 में श्री नन्दकुमार देव शर्मा, इसके सम्पादक रहे। प्रख्यात लेखक श्री लक्ष्मीधर बाजपेयी ने कई वर्षो तक "सर्वानन्द" नाम से इसका सम्पादन किया। संस्कृत के विद्वान डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तथा धर्मपाल विद्यालंकार चतुर्वेद भाष्यकार श्री जयदेव शर्मा विद्यालंकार ने भी कुछ समय तक इसका कार्यभार सम्भाला।

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी तथा श्री क्षेमचन्द्र "सुमन" भी डॉ० हरिशंकर शर्मा के सम्पादन काल में आर्यमित्र में कार्य कर चुके हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक श्री गोपालदत्त जोशी ने 5 वर्ष तथा सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी एक वर्ष तक इसका सम्पादन कार्य किया। भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार के सम्पादन काल में कुछ समय के लिये दैनिक पत्र के रूप में भी प्रकाशित हुआ। आर्यमित्र के सम्पादक प० रुद्रदत्त शर्मा अच्छे लेखक व सशक्त पत्रकार थे उन्होंने "आर्यावर्त" और "भारतमित्र" का भी सम्पादन किया।

आर्यसमाज के सुधारवादी आन्दोलन से प्रभावित होकर शिवप्रसाद गुप्त ने "दैनिक आज" की स्थापना की। इसी काल में अमेठी से "मनस्वी" पत्र का प्रकाशन हुआ। सन् 1888 में ही लाहौर से "भारत भगिनी" नामक पत्रिका श्रीमति हरदेवी जी ने प्रकाशित की। सन् 1909 में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश की ओर से "आर्य सेवक' नामक पाक्षिक प्रकाश में आया जिसका सम्पादन गणेश प्रसाद शर्मा ने किया। 1909 में पद्मसिंह शर्मा के सम्पादकत्व में "भारतोदय" का प्रादुर्भाव हुआ। यह पत्र साहित्यिक पत्रकारिता के लिए विशेष महत्वपूर्ण रहा। उन दिनों हिन्दी का कोई ऐसा साहित्यकार न था जिसने इस पत्र में लिखा व प्रकाशन न कराया हो। सन 1920 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी का "सामाजिक संशोधन" नामक लेख "भारतोदय" में प्रकाशित हुआ। सम्पादक पद्मसिंह शर्मा के सम्पादन मे "भारतोदय" इतना सुन्दर निकलता था कि संपादकाचार्य अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने "समाचार पत्रों का इतिहास" नामक ग्रन्थ में लिखा है । 'मासिक पत्रों में भाषा और विचार की दृष्टि से "भारतोदय" सर्वश्रेष्ठ पत्र है।"

इसके पश्चात् आचार्य नरदेव शास्त्री, हरिशंकर, प्रेमचन्द्र शास्त्री तथा हरिदत्त शास्त्री ने इसका सम्पादन कार्य किया। वर्तमान में यह "हिन्दी व "संस्कृत" दोनों भाषाओं में प्रकाशित हो रहा है।

सन् 1910 में डॉ० केशवदेव शास्त्री ने 'नवजीवन' मासिक का प्रकाशन कर नवयुवकों में वैदिक धर्म के प्रति आस्था का संचार किया। सन् 1915 में श्री चमूपति के सम्पादन में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से "आर्य' नामक मासिक पत्र प्रकाशन हुआ। श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार ने इसका छ वर्ष तक लगातार सम्पादन किया। तत्पश्चात् भारतेन्दुनाथ साहित्यालंकार के सम्पादकत्व में "आर्य' के स्थान पर 'आर्योदय' प्रकाशित हुआ। इसके बाद आर्य प्रतिनिधि सभा दो भागों में विभक्त हो गयी। एक ओर जगदेवसिंह के सम्पादकत्व में 'आर्य मर्यादा तथा दूसरी ओर से आर्य ज्योति का प्रकाशन हुआ, जिसके सम्पादक श्री हरिप्रकाश वेदालंकार थे।

सन 1921 श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार के सम्पादन में "वैदिक संदेश' का प्रकाशन हुआ। इसके साथ ही अन्य पत्रों ने वैदिक संस्कृति और हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसमें-बदरीदत्तजोशी के सम्पादन में निकलने वाला "शंकर' पत्र जिला मुरादाबाद से, दत्तात्रेय बावले द्वारा "अजय और विजय" अजमेर से, "दिवाकर" आगरा से "वेदपथ" ज्वालापुर से, दयानन्द संदेश, दिल्ली से तथा आर्यसंसार कलकत्ता से निकलने वाले पत्र उल्लेखनीय हैं।

वैदिक प्रचार-प्रसार के साथ स्त्री शिक्षा साहित्य की उन्नति के उद्देश्य से लाला देवराज ने जालन्धर में "कन्या महाविद्यालय " की स्थापना की तथा यहाँ से 'पाचार-पंडिता' नामक पत्रिका भी प्रकाशित की।

1919 में श्री पाददामोदर सातवलेकर ने "वैदिक धर्म, मासिक के द्वारा आर्यजगत की अनन्य सेवा की। इनके निधनोपरान्त पुत्र श्री बसंत सातवलेकर ने निर्वहन प्रकाशित कराया। 56 वर्ष के प्रकाशनोपरान्त सन् 1975 में यह पत्र बन्द हो गया।

सन् 1924 में बंगाल-बिहार की आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से "आर्यजीवन" का प्रकाशन हुआ जिसके सम्पादक श्री जयदेव शर्मा थे।

यज्ञानुष्ठान और सिद्धान्तों से युक्त अजमेर के वेद संस्थान की पत्रिका "सविता" का सम्पादन कार्य विद्यानन्द विदेह के कनिष्ठ पुत्र श्री अभयदेव शर्मा ने सम्भाला। 1920 में सन्तराम बी०ए० ने कन्या गुरुकुल महाविद्यालय से "भारती" नामक पत्रिका का प्रकाशन किया। रामलाल कपूर ट्रस्ट वाराणसी की ओर से प्रकाशित "वेदवाणी" पत्रिका का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वर्तमान में स्थानान्तरित होकर श्री युधिष्ठिर मीमांसक के सम्पादन में सोनीपत (हरियाणा) से प्रकाशित हो रही है।

सन् 1939 में आगरा से स्वामी परमानन्द के संरक्षण में तथा हरिशंकर शर्मा के सम्पादन में "आर्य संदेश" नामक पत्र का प्रकाशन हुआ। हरिशंकर शर्मा ने आगरा से ही "निराला", प्रभाकर, साप्ताहिक व "साधना नामक मासिक पत्रिका का भी सम्पादन किया। विश्व-विख्यात सार्वदेशिक सर्वप्रथम प्रो० सुधाकर एम०ए० के सम्पादन में मासिक पत्र के रूप में प्रकाशन हुआ जो अब साप्ताहिक पत्र के रूप में ज्ञान की पावन गंगा बहा रहा है। प्रादेशिक सभा दिल्ली की ओर से आर्य जगत व पंजाब से आर्य मर्यादा पत्रिकायें पूरे उत्साह के साथ निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं, जिसमें वैदिक विचार चिन्तन, राष्ट्र और राष्ट्रभाषा तथा समसामायिक विषयों पर यथा समय लेख प्रकाशन होते रहते हैं। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी ने आर्यसमाज नामक पत्र निकालना प्रारम्भ किया था किन्तु अब लुप्त प्राय ही है।

यद्यपि कुछ पत्र पत्रिकायें अपने बाल्यकाल में ही स्वयं को मिटाकर अन्य आर्य पत्र पत्रिकाओं को अपना अस्तित्व अर्पित कर गयीं तथापि उनकी प्रेरणा व अदम्य शक्ति से ही आज वर्तमान में आर्य पत्र-पत्रिकायें अपनी अस्मिता सुदृढ किये है जिस पर न केवल आर्य समाज ही वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र स्थिर है क्योंकि जितनी द्रुतगति से राष्ट्र चेतना आर्य नेता व आर्य पत्र पत्रिकाओं में संचरित होती है उतनी शीघ्रता से और किसी में नहीं।

ऋषि दयानंद की महान देन

मुनिवर पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

जन्म: २६ अप्रैल १८६४ निधन: १९ मार्च सन् १८९०

गतांक से आगे -

• पवन कुमार
सिद्धान्त शास्त्री, लखनऊ

मुनिवर गुरुदत्त जी ने लाहौर में फ्री डिबेटिंग सोसाइटी की स्थापना की जिसमें परस्पर विचार-विमर्श होता था। "द रीजनरेटर आफ आर्यावर्त" तथा "देशो उपकारक" नाम के दो पत्र अंग्रेजी भाषा तथा उर्दू भाषा में निकाले तथा इन्होंने मिलकर इन पत्रों का सम्पादन किया। गुरुदत्त जी ने राजकीय कालेज लाहौर में विज्ञान श्रेणी की भी स्थापना की। इन समस्त कार्यों में गुरुदत्त जी हंसराज तथा लाजपत राय जी का पूर्ण सहयोग रहा।

गुरुदत्त जी ने सन 1885 में प्रथम श्रेणी में बी0ए0की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा उनके सहयोगी हंसराज जी द्वितीय रहे। सन् 1880 में गुरुदत्त जी ने भौतिकशास्त्र (फिजिक्स) विषय से प्रथम श्रेणी में एम0ए0 की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। सन् 1887 में वे राजकीय महाविद्यालय में विज्ञान विषय के सहायक प्रोफेसर नियुक्त किये गये। अपनी योग्यता और अध्यापन कुशलता से उन्होंने अपने सहयोगियों और छात्रों में प्रसिद्धि प्राप्त की। वे प्रथम भारतीय प्रोफेसर थे।

ऋषि दयानन्द से आस्तिकता और ईश्वर विश्वास की दिव्य ज्ञान ज्योति प्राप्त कर गुरुदत्त जी ने महर्षि की पुण्य स्मृति के रूप में स्थापित दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षणालय आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे आन्दोलन डी0ए0वी0कालेज आन्दोलन की आत्मा के समान थे। उनका कथन था कि दयानन्द शिक्षण संस्था महर्षि दयानन्द के विचारों और आदर्शों के अनुरूप होनी चाहिये। इस संस्था द्वारा उपदेशक और धर्म प्रचारकों का निर्माण किया जाना चाहिये। कालेज वैदिक आदर्शों का मूर्त रूप होना चाहिये। पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा तथा वेद वेदांग और उपांग की प्रमुखता होनी चाहिये। अष्टाध्यायी महाभाष्य निरुक्त और निघन्टु पढ़ाये जाने चाहिए। ऋषि दयानन्द तथा अन्य ऋषि मुनियों के ग्रन्थों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। मुनिवर गुरुदत्त जी डी0ए0वी0 शिक्षण संस्था के जन्मदाता प्रारम्भिक सदस्यों में से एक थे। उन्होंने डी0ए0वी0कालेज में आर्ष ग्रन्थों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने हेतु संघर्ष किया उन्होंने अपने घर पर अष्टाध्यायी महाभाष्य की श्रेणियाँ भी संचालित की। पश्चात् लाला मुंशीराम ने उनके शैक्षिक आदर्शों को कांगड़ी में गुरुकुल शिक्षण संस्था की स्थापना करके मूर्तरूप दिया।

मुनिवर गुरुदत्त जी को योगाभ्यास करने में अतीव आनन्द प्राप्त होता था। बाल्यकाल से ही उनकी प्राणायाम और ध्यान में अभिरुचि थी। उन्होंने वेद प्रचार, आर्यसमाज की सेवा तथा योगाभ्यास में बाधा पड़ने के कारण विज्ञान की प्रोफेसरी त्याग दी। गुरुदत्त जी की दूसरी धुन वेद का अर्थ समझने की हुई। वेदभाष्य को समझने के लिए उन्होंने अष्टाध्यायी महाभाष्य, वेदांग प्रकाश निघण्टु और निरुक्त को पढ़ना प्रारम्भ किया वे अष्टाध्यायी तथा निरुक्त को वेदाध्ययन का प्रवेशद्वार समझते थे तथा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का प्रमुख सहयोगी ग्रन्थ मानते थे।

गुरुदत्त जी ने वेद संबंधी जो बड़ा काम किया वह था स्वर विद्या का पढ़ना तथा वेदमंत्र के उच्चारण की शुद्ध रीति प्रचलित करना। मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी का कार्यक्षेत्र लाहौर रहा। उन्होंने जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया वह था पाश्चात्य लेखकों द्वारा किये गये आक्षेपों का मुंहतोड़ उत्तर देना। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रथम बोडिन प्रो0 मोनियर विलियम ने मई 1875 में "इण्डियन विजडम" नाम की भारतीय संस्कृति तथा वेदों पर आक्षेप पूर्ण पुस्तक लिखी। पं0 गुरुदत्त जी ने लेखक के आक्षेपों का युक्ति प्रमाण पूर्वक जोरदार उत्तर दिया अपने विभिन्न व्याख्यानों में गुरुदत्त जी ने मोनियर विलियम्स की वेद विषयक अज्ञानता को स्पष्ट किया तथा उसकी जो त्रुटियाँ थी उनको जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। इसी प्रकार बिशप टी0 विलियम्स मिस्टर पिनकाट महोदय तथा ब्रह्मसमाजी भारतीय लेखकों के वेद संबंधी लेखों की समीक्षा किया। उन्होंने प्रबल प्रमाण और युक्तियों से यह प्रमाणित किया कि वेद सत्य विद्याओं का भण्डार है। उन्होंने वेद विरोधियों को ललकारा कि यदि किसी में साहस हो तो वेद में एक भी अनावश्यक असत्य और सारहीन बात दिखायें अन्यथा बिना स्वाध्याय किये वेद संबंधी मिथ्या धारणायें फैलाना अशोभनीय है। उन्होंने यह भी कहा कि पाश्चात्य विज्ञान तथा तत्व ज्ञान जहाँ पर समाप्त होता है, भौतिक विज्ञान और तत्व ज्ञान आरंभ होता है। भौतिक विज्ञान के पास जीवन की समस्याओं का शाश्वत समाधान नहीं है।

दयानन्द के शिष्य गुरुदत्त ने विपक्षियों के आक्षेपों का ऐसा मुंहतोड़ उत्तर दिया कि वे फिर बोलने का साहस नहीं कर सके। उन्होंने कहा कि वेद के शब्द धातु से उत्पन्न यौगिक हैं। उनका अर्थ करने के लिये अष्टाध्यायी महाभाष्य ब्राह्मण ग्रन्थ निरुक्त निघण्टु तथा उपनिषदों का आश्रय लिया जाना चाहिये। सायण या उव्वट रावण और महीधर के वेद भाष्य अशुद्ध हैं गुरुदत्त जी ने "द टर्मिनालाजी आफ वेदाज एण्ड यूरोपियन स्कालर्स" नामक ग्रन्थ में यूरोपीय पंडितों की न्यूनता का प्रतिपादन करते हुए प्रो0 मैक्समूलर और मोनियर विलियम्स की वेद मंत्रों की व्याख्या की अशुद्धियों को बड़ी योग्यता से दिखाया है और यह सिद्ध किया है कि वैदिक धर्म सर्वांग पूर्ण है।

गुरुदत्त विद्यार्थी ने आचार्य दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक विचारों को आंग्ल भाषा में प्रस्तुत करके पश्चिम के लिये ऐसी खिड़की खोल दी जिससे वे आर्यावर्त देश की सच्ची और वास्तविक झाँकी प्राप्त कर सकें।

अपनी रचनाओं के कारण पं0 गुरुदत्त की ख्याति देश-प्रदेश की सीमाएं लाँघ गयी। उनकी पुस्तक वैदिक संज्ञा विज्ञान को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में डिग्री कालेज के लिए संस्कृत पाठ्यक्रम पुस्तक में सम्मिलित किया गया पण्डित जी ने वेदों का शब्दकोष लिखा था जो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ाया जाता था। विश्व धर्म सम्मेलन के अवसर पर सन् 1893 में उनका उपनिषदों का भाष्य तथा जीवात्मा के प्रमाण शिकागो अमरीका में भेज दिये गये थे वहाँ उनकी बड़ी प्रशंसा हुई तथा किसी अमरीका निवासी धनी व्यक्ति ने उसका शिकागो संस्करण अपने व्यय से प्रकाशित करा दिया।

पं0 गुरुदत्त स्वयं अमरीका जाने की इच्छा व्यक्त किया करते थे पर उनकी आसामयिक अकाल मृत्यु ने उनकी इच्छा पूरी न होने दी। यदि कहीं वह विश्व धर्म सम्मेलन में भाग ले पाते तो उनको यश और ख्याति प्राप्त होती उनकी गणना विश्व के प्रमुख प्राच्य विद्या विशारदों तथा प्रमुख मनीषियों में होती पर उनका जो लिखित साहित्य अमरीका पहुँचा उसने विद्वानों में उनकी विद्वता की धाक जमा दी। और विश्वमें उनका सम्मान बढ़ा दिया। महान मनीषी मुनिवर

पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी का लाहौर में 19 मार्च 1890 को प्रातःकाल 7 00 बजे निधन हो गया। सन् 1889 में "वैदिक मैगजीन" नामक पत्रिका के 2-3 अंकों में उनके जो लेख प्रकाशित हुए थे उनका अंग्रेज तथा फ्रेंच विद्वानों ने अध्ययन किया। इन विद्वानों में डा0चार्ल्स ब्रेडला तथा मि0 जोन्स रैना विशेष प्रभावित हुए। डा0चार्ल्स ब्रेडला मुनिवर गुरुदत्त से मिलने की इच्छा से भारत पधारे। जब वह बम्बई पहुँचे तब उन्हें यह दुःखद समाचार सुनने को मिला वह जिस महान मनीषी विद्वान से मिलने के इच्छुक हैं उसका चार घंटे पूर्व निधन हो गया। ब्रेडला ने महान मनीषी गुरुदत्त को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की "वैदिक संस्कृति का प्रकाश नक्षत्र इस विश्व से बहुत दूर चला गया।" दुखी और निराश ब्रेडला अपने देश वापस चला गया।

महान् विद्वान पं0 गुरुदत्त के चरणों में बलिदान शताब्दी के अवसर पर लेखक की शत्-शत् श्रद्धांजलि तथा वन्दना समर्पित है।

□

सब आर्यों से एक ज्वलन्त प्रश्न

क्या आप हृदय से "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" अपना परम लक्ष्य मानते हैं?

• भोलानाथ दिलावरी
पूर्व प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर •

"कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" आर्यों को वेदाज्ञा है। महर्षि इस को परम लक्ष्य मान आयु भर प्रयत्नशील रहे और इसके लिए हर प्रकार के कष्ट झेले और जीवनोत्सर्ग किया। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि पूर्व काल की तरह संसार भर में आर्यों का बोलबाला हो और आर्य "चक्रवर्ती राज्य" बने। उनका मानना था कि बिना आर्य राज्य बने सर्वत्र सुख, शान्ति एवं समृद्धि न हो सकेगी।

प्रश्न उठता है कि क्या हम ...ार्य" इस लक्ष्य को हृदय से मानते ... हृदय से मानने का अर्थ होता है हर समय लक्ष समक्ष और इसके प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशीलता और स्वार्थ परित्यागता। आओ! हम अपने हृदय का निरीक्षण करें और वास्तविकता जान अपनी कमी कमजोरियों को दूर करें।

हृदय निरीक्षणार्थ निम्न प्रश्नों का स्वयं उतर लें, अपना मार्ग प्रशस्त करें::

1- क्या हम अपने को "आर्य" कहने, कहलाने में "गर्व" अनुभव करते हैं?

2- क्या हम समस्त आर्य सन्तान हिन्दु मात्र में "आर्यत्व" जाग्रत करने, इनमें एकात्मता लाने के, हृदय से इच्छुक हैं?

3- क्या हम हृदय से अपने देश को "आर्यावर्त" और यहां "आर्य-राज्य" बनाना चाहते हैं?

यदि उपरोक्त प्रश्नों का उतर आपको "हाँ" में मिले तो आज से ही निम्न संकल्प "प्रभु प्रार्थना" के रूप में अपनाने और अपने घर, अपनी समाज, अपने स्कूल, पाठशाला में नित्य बोलें या कुलवायें। यह हमारा "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" की ओर पहला महत्व पूर्ण पग होगा। यह तभी प्रभावी होगा, यदि हम सतत-लगातार इसे कार्यरूप देंगे।

"प्रभु-प्रार्थना" रूप में हमारा संकल्प निम्न प्रकार होना चाहिये:-

हे परम पिता! परमात्मन्! आप की महान कृपा से हमें आर्य-कुल में जन्म मिला। इस नाते आपने हमें सत्य सनातन वेद-ज्ञान का अधिकारी बनाया।

हम आपका प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए प्रतिज्ञा लेते हैं कि (1) हम सच्चे अर्थों में आर्य बनेंगे। समस्त आर्य-सन्तान हिन्दू मात्र को जाग्रत कर उनमें एकात्मा, सत्यसनातन आर्य धर्म पर चलने को प्रेरित करेंगे।

(2) आप की आज्ञा "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" का तन, मन धन से पालन करेंगे।

(3) सर्वप्रथम अपने देश को फिर से सच्चे अर्थ में "आर्यावर्त" बना यहां स्वच्छ "आर्य राज्य" स्थापित करेंगे।

(4) समस्त संसार में वेद ज्ञान, आर्य संस्कृति फैला, भूमंडल पर पूर्वकाल की भान्ति चक्रवर्ती आर्य-राज्य स्थापित करने की ओर अग्रसर होंगे।

प्रभो! हमें इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शक्ति दो। हम आप को विश्वास दिलाते हैं एवं प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम हर चुनोती का अपना सर्वस्व बलिदान कर दृढता से मुकाबला करेंगे और आपके आशीर्वाद से अवश्य सफल मनोरथ होंगे।

आर्यों! आर्य-संतान-हिन्दु अपने देश में 70-75 करोड़ हैं। बहुमत में हैं। फिर भी यह छोटे-छोटे अल्पसंख्यक सम्प्रदाय हमारे देश को टुकडे-टुकडे करने पर तुले बैठे हैं। खुले रूप से अपने अपने "स्तान" बनाने में तोप-तलवार-बन्दूक का प्रयोग कर रहे हैं। आओ-आर्यत्व जाग्रत कर समस्त हिन्दू मात्र में एकात्मता लावें और देश की रक्षा कर इसे "आर्यावर्त" बना यहां आर्य-राज्य स्थापित करें। □

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास की बैठक जोधपुर में सम्पन्न

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास की बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं न्यास के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में महर्षि दयानन्द स्मृति भवन रातानाडा जोधपुर में सम्पन्न हुई। इस बैठक में श्री पं० बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, श्री रतनलाल एडवोकेट कार्यकर्ता प्रधान न्यास, श्री रमेशचन्द्र भाटिया एवं आर्य समाजों के अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास के विकास और सुरक्षा आदि के संदर्भ में खुलकर चर्चा हुई। चाहर दीवारी को ऊँचा उठाने और अन्य विकास दायित्वों को सम्हालने हेतु एक उप समिति का निर्माण कर दिया गया।

चौपासनी रोड पर सार्वदेशिक सभा की भूमि पर जो अस्थायी किरायेदार से भूमि खाली कराकर उस भूमि में महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति में औषधालय और कन्या पाठशाला बनवाने हेतु उप-समिति श्री रमेशचन्द्र भाटिया की अध्यक्षता में बना दी गई। इस अचल सम्पत्ति के लिए श्री दाऊलाल सोनी को मुखत्यार आम बनाया गया जो सम्पत्ति के संबंध में वैधानिक दृष्टि से साधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे।

दिल्ली से जोधपुर मेल द्वारा जोधपुर पधारने पर स्टेशन पर स्वामी जी और श्री हंस जी का भव्य स्वागत किया गया वैदिक धर्म की जय आदि नारों से स्टेशन का वातावरण निनादित हो उठा। और यात्रीगणों ने आर्य समाज की संगठन शक्ति की सराहना की और कहा महर्षि दयानन्द मानव मात्र के हित संरक्षक थे। □

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- "जब सो कर उठता हूँ, तो नाक कफ से जाम हो जाती है। छींक आने पर कफ खण्ड-खण्ड निकलता है। मुख की तालू खुजलाती है। कभी दाहिनी कूल्हा में दर्द होता है, तो कभी कहीं।"

-मुसाफिर यादव, नजारत अनुभाग-ज्ञानपुर तहसील (वाराणसी)

समाधानः- गारालल (चरक) दो गोली प्रातराश, मध्याह्न भोजन व रात्रि भोजन बाद लेकर, स्यास्मा सीरप (चरक) दो ढक्कन-जुफेक्स एक्सपेक्टोरेन्ट (फ्रमल) दो ढक्कन, समान जल के साथ मिलाकर दो मास तक पियें। दही व ठण्डे खाद्य पदार्थों से बचें। हर चार घण्टे बाद खदिरादि बटी चूसें।

2-पत्र-"मैं 42 वर्ष का हूँ। मुझे प्रातः शौच नहीं होता है। पानी पीकर शौच जाता हूँ तब शौच ठीक होता है।"

-सुरेन्द्रपाल एम०ए०, मंत्री-आर्यसमाज, राडधना (मेरठ)

उत्तरः-पानी पीने के कुछ देर बाद शौच जाना अच्छी बात है। भोजन में बिना छने चोकर सहित आटा की रोटी के साथ रेशेदार सब्जी व सलाद का सेवन करना चाहिये। प्रत्येक भोजन बाद एमलाईक्योर (फ्रमल) की दो गोली पानी से लिया करें। बडी हरड़ और सौंफ बराबर मात्रा में मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लेवें। रात्रि भोजन के आध घण्टा बाद लगभग 10 ग्राम चूर्ण फाँक कर जल पिया करें।

रोग विवरण के साथ तीन डाक लिफाफे भेजना आवश्यक है :-

गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ।

उत्सव सम्पन्न

दिनांक-12, 13, 14 जून 1990 को आर्य समाज ऊँचागाँव (बुलंदशहर) का उत्सव हुआ। आर्य समाज का गठन हुआ।

प्रमुख वक्ता
ब्रह्मदेव शास्त्री
कुँवर महीपाल सिंह

राष्ट्रीय एकात्मता कैसे होगी

— वामनदास अग्रवाल

आज देश की कदाचित सबसे बड़ी समस्या राष्ट्रीय एकात्मता {नेशनल इन्टीग्रेशन} की है। इसी पर देश की अखण्डता निर्भर करती है। राष्ट्रीय एकात्मता से तात्पर्य है, मुख्य रूप से हिन्दू और मुस्लिम समाज के बीच एकात्मता, जो देश की कुल जनसंख्या के क्रमश. 86 प्रतिशत तथा साढ़े-ग्यारह प्रतिशत लगभग है। हिन्दूसमाज सैकड़ों जाति-पंथ भाषा और क्षेत्रों में बंटा होने के बावजूद हिन्दुत्व के सूत्र में ग्रथित होने के कारण, काफी हदतक एकात्म है। कुछ सिख और पूर्वांचल के कुछ वनवासी इसके अपवाद हैं जो हिन्दू होते हुए भी गुमराह होकर इन दिनों हिन्दू यानि राष्ट्र विरोधी क्रिया-कलापों में संलग्न हैं। इन लोगों की हिन्दू समाज के साथ एकात्मता होनी चाहिए।

मुस्लिम समाज की हिन्दू समाज के साथ एकात्मता के लिए मुस्लिम समाज को उनका सही इतिहास बताना होगा कि विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारी मुहम्मदबिन कासिम, मुहम्मद गजनवी, मुहम्मद गोरी, बाबर, औरंगजेब आदि उनके वंशज उनके पूर्वज नहीं थे। हिन्दुओं की तरह उनके पूर्वज भी हिन्दू ही थे। अतः हिन्दू और मुसलमान दोनों का खून एक है, दोनों का इतिहास •एक है तथा दोनों की संस्कृति एक है जो उन्हें अपने हिन्दू पूर्वजों से विरासत में मिली है। कुछ पीढ़ी पहले मुस्लिम शासनकाल में, उन्हें इस्लाम मजहब अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ा था। मजहब छोड़कर अन्य सब बातों में वे और हिन्दू समान हैं। मजहब बिल्कुल व्यक्तिगत चीज है। इसका सम्बन्ध केवल इस बात से है कि हम परमात्मा की उपासना कैसे करेंगे। मजहब बदलने से पूर्वज और इतिहास नहीं बदलते, संस्कृति और राष्ट्रीयता नहीं बदलती। इन्डोनेशिया और मलेशिया के मुसलमानों का उदाहरण हमारे सामने है जो अपने हिन्दू पूर्वजों की संस्कृति को आज तक अपनाए हुए हैं। वे रामायण और महाभारत की कथाओं पर आधारित नाटक खेलते हैं। इन्डोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति सुकर्णो एवं उनकी पत्नी रत्ना का नाम संस्कृत मूलक था यद्यपि वे मुसलमान थे।

आज पाकिस्तान के मुसलमान भी अपने देश की प्राचीन संस्कृति {जो हिन्दू संस्कृति थी} के प्रति जागृत हो रहे हैं और उससे जुड़ रहे हैं। पाकिस्तान सरकार ने दो पुस्तकें प्रकाशित किया है। 1. Five Thousand Years of Pakistan. 2. Buddhist Art and Architecture in Pakistan. पाकिस्तान ने प्राचीन-बन्दरगाह नगर देवल की खुदाई कराया है, जिसे मुहम्मदबिन कासिम ने दसवीं शती में आक्रमण करके नष्ट कर दिया था। खुदाई में एक विशाल शिवलिंग प्राप्त हुआ है जिस का पाकिस्तान ने अपनी सांस्कृतिक विरासत के रूप में गौरवपूर्ण प्रदर्शन किया है। कुछ ही वर्ष पूर्व पाकिस्तान ने महान व्याकरणाचार्य पाणिनी का पांच हजारवां जन्मदिवस भी मनाया था, जिनका जन्मस्थान पाकिस्तान {तक्षशिला} में पड़ता है। लाहौर के मुस्लिम छात्रों का कहना है कि पंजाब का राष्ट्रीय दिवस बैशाखी {पंजाबी वर्ष का प्रथम दिवस} है।

यदि पाकिस्तान के मुसलमान पाणिनी को अपना एक महान पूर्वज मान सकते हैं और अपनी प्राचीन हिन्दू सांस्कृतिक विरासत से जुड़ सकते हैं तो हिन्दुस्थान के मुसलमान क्यों नहीं व्यास, वाल्मीकि, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक को अपना महान पूर्वज मान सकते हैं और अपने हिन्दू मूल को स्वीकार कर यहाँ की संस्कृति से जुड़ सकते हैं? ऐसा करने से ही उनकी हिन्दुओं के साथ भावात्मक एकता होगी और तभी राष्ट्रीय एकात्मता भी होगी। भारत के ईसाई समाज पर भी यही बात लागू होती है, क्योंकि उनके पूर्वज भी हिन्दू ही थे।

मजहब के आधार पर मुस्लिम समुदाय को अल्पसंख्यक कहना और इस आधार पर उनको विशेष सुविधाएं एवं अधिकार देना, अल्पसंख्यक आयोग बनाना, उनके लिए अलग नागरिक कानून बनाना, साम्प्रदायिक मुस्लिम संगठनों के साथ चुनावी गठबन्धन करना, उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाना तथा कश्मीर में संविधान का अनुच्छेद 370 बनाए रखना- इन सबों के फलस्वरूप मुस्लिमों में एक अल्पसंख्यक मानसिकता तथा शेष राष्ट्रीय समाज से एक पृथक अस्तित्व की भावना उत्पन्न हो गई है जो राष्ट्रीय एकात्मता के लिए घातक है। ऐसी मानसिकता एवं भावना ही अन्तत देश का खण्डन कराती है, जैसा 1947 में हुआ था।

राष्ट्रीय एकात्मता के लिए यह भी आवश्यक है कि स्कूलों में इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में, मध्यकालीन भारत का सही इतिहास पढ़ाया जाए कि विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारी, लुटेरे, मन्दिर ध्वस्त करने वाले, देश के विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालय जलाने वाले, सामूहिक नरसंहार करने वाले, लोगों को बलात् मुसलमान बनाने वाले तथा देश को सैकड़ों वर्षों तक पराधीन बनाने वाले जैसे मुहम्मदबिन कासिम, मुहम्मद गजनवी, मुहम्मदगोरी, बाबर, औरंगजेब आदि एवं उनके वंशज भारत के मुसलमानों के पूर्वज नहीं थे। उनके पूर्वज हिन्दू थे।

इसके अतिरिक्त भारत के राष्ट्रनिष्ठ एवं उदार मुस्लिम नेताओं को आगे आकर मुस्लिम समाज का सही दिशा में शिक्षण एवं मार्गदर्शन करना चाहिए, ताकि वे राष्ट्रधारा में मिल जाएं। सभी राजनीतिक दलों एवं अन्य लोगों को ऐसे मुस्लिम नेताओं को प्रोत्साहन देना चाहिए तथा कट्टरपन्थी, साम्प्रदायिक एवं अलगाववादी मुस्लिम नेताओं का बहिष्कार करना चाहिए।

सर्वोपरि राष्ट्रीय एकात्मता के लिए यह आवश्यक है कि ऐसी लोक शिक्षण की व्यवस्था की जाए जिससे सभी भारतवासी यह अनुभव करें कि सब भारतमाता के पुत्र हैं, सब एक जन हैं, सबका एक इतिहास है, एक संस्कृति है, एक राष्ट्रीयता है, एक संविधान है, एक राष्ट्रगान है तथा एक राष्ट्र-भाषा है। □

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला समाजों के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकट्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अतः आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुनः धन इकट्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनों से अनुरोध है कि इनकी बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

- कार्यालय सचिव-

प्रवेश सूचना

आर्य गुरुकुल • एरवाकटरा इटावा में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश 1 मई 90 से प्रारम्भ हो चुका है। यह विद्यालय महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है, इस विद्यालय में अच्छे सुयोग्य मेधावी छात्रों का ही प्रवेश होता है। इच्छुक अभ्यर्थी 5/- मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर नियमावली आदि प्राप्त कर सकते हैं। गुरुकुल में आधुनिक एवं प्राचीन समस्त विषयों के अध्ययन एवं अध्यापन की समुचित व्यवस्था है। शीघ्रता करें।

प्रधानाचार्य
आर्य गुरुकुल, एरवाकटरा
इटावा २०६२५२

आर्यसमाज औरेया {इटावा}

प्रधान- श्री वेद प्रकाश आर्य
मंत्री- श्री डा0 सर्वेश आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री आत्माराम आर्य

"आर्य जाति को विनाश से बचाने का राजसत्ता प्राप्ति ही एक मात्र उपाय"

● यदुवंश सहाय वानप्रस्थ
फैजाबाद

"यथा राजा {शासक} तथा प्रजा" कहावत का तात्पर्य यह है कि शासक को वे सारे साधन उपलब्ध होते हैं जिनके द्वारा वह प्रजा के चिन्तन को, उसके विचारों को जिस ओर चाहे मोड़ सकता है। उसे देवता या राक्षस कुछ भी बना सकता है। दुर्भाग्य से पं० जवाहर लाल नेहरु भारत के सर्वप्रथम भाग्य विधाता हुए। वे आदर्शवादी और मायु-स्वभाव के व्यक्ति थे, परन्तु उनमें यश प्राप्ति की मानवीय दुर्बलता थी। अपनी जाति और देश के हित के लिए राजनीति में जिस कूटनीति की आवश्यकता होती है, उससे वे नितांत अनभिज्ञ थे। पाश्चात्य सभ्यता का उन पर पूरा प्रभाव था, और हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों के अधिक निकट थे, अंग्रेज लेखकों के माध्यम से भारतीय इतिहास और संस्कृति की उनकी जानकारी भी अधूरी और विकृत थी। अतः उन्होंने भारत का पुनरुत्थान अनुकरण-मूलक पश्चिमीकरण के द्वारा उसका आधुनिकीकरण करके ही सम्भव समझा। फलतः अपने इस दृष्टिकोण के कारण उन्होंने अपनी शक्ति इसी उद्देश्य की पूर्ति में लगाई, और जिन साधनो और नीतियों से देश के सभी वर्गों के आपसी भेदभाव को मिटाकर उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा में लाया जा सकता था उन्ही उपायों का दुरुपयोग करके ठीक इसके विपरीत किया, जिसका परिणाम हम सबके सामने है। इसी राष्ट्घातक नीति पर नेहरुजी के पश्चात् भी चला जा रहा है।

यदि जाति के सच्चे हितैषी और भारतीय संस्कृति के प्रेमी व्यक्तियों के हाथों में देश के शासन की बागडोर आ जाय तो उपर्युक्त साधनों के माध्यम से जाति की सभी समस्याओं का समाधान सहज में ही हो सकता है। हिन्दुओं की अनेक समस्याओं में रामममन्दिर-निर्माण केवल एक समस्या है। वर्तमान परिस्थिति में सैकड़ों युवकों का बलिदान देकर भी इस कार्य मे सफलता पाने की आशा नहीं की जा सकती। अतः "एक साधे सब सधे" के अनुसार राजसत्ता जाति के सभी रोगों की एक मात्र औषधि है।

यह कार्य कठिन अवश्य है, और वर्तमान जाति के विघटन को देखकर असम्भव सा प्रतीत होता है। परन्तु जाति को सर्वनाश से बचाने के लिए केवल यही मार्ग है, और अन्तिम, अवसर भी यही है। "फिर पछताये का होत है जब चिड़ियां चुग गई खेत"। वैसे तो सभी संस्थाएं अपने-अपने ढंग से जाति के उत्थान के लिए प्रयत्नशील हैं, परन्तु उनके सारे प्रयासों को सरकार अपनी दूषित नीतियों से विफल कर देती है। हिन्दुओं के हर सम्प्रदाय, संस्था और वर्ग का अस्तित्व राज-सत्ता को प्राप्त करने की योजना पर निर्भर है,' इसलिए इन सबके अगुआ और संचालकों का परम कर्तव्य है कि आपसी भेदभाव, भूलकर, अपने-अपने कार्यक्रम चलाते हुए भी राजसत्ता प्राप्ति के विशेष प्रयोजन के लिए मिलकर सामूहिक प्रयास करें। किसी संस्था का अन्य संस्थाओं के सभी कार्यक्रमों में सहयोग देना असम्भव है, क्योंकि हर संस्था अपने क्रिया कलाप को उत्तम समझती है, परन्तु जो कार्य सबको समानरूप में लाभ पहुंचाने वाला हो, उसमें सहयोग देने में किसी को हिचक नहीं होनी चाहिए।

प्रजातन्त्र में राज-सत्ता शक्ति के बल पर नहीं, अपितु वोटों के बल पर हस्तगत करनी है। अतः जाति के सभी शुभचिन्तक नेता मिलकर एक सार्वदेशिक समिति और प्रान्तीय समितियों का गठन करें, इनके सदस्यों की सहायता से स्थानीय उपसमितियाँ बनाई जांय। उपसमितियां अपने-अपने क्षेत्र के अवकाश प्राप्त व्यक्तियों, उत्साही छात्र-छात्राओं और अन्य देश भक्तों को देश और जाति की दुरवस्था बताकर उन्हें अपना सहयोगी बनायें, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, हिन्दु विश्वपरिषद और आर्यसमाज आदि संस्थाओं के उत्साही व्यक्ति भी यथासम्भव इस कार्य में सहयोग दें। इन सभी कार्यकर्ताओं के द्वारा उपसमितियां हिन्दुओं के हर वर्ग के प्रत्येक परिवार से लगातार सम्पर्क करते रहकर उन्हें हिन्दुओं की वर्तमान दुर्दशा और भावी सर्वनाश की सम्भावना से अवगत करायें। आपसी भेद-भाव, ऊँचनीच, छुआछूत आदि दूषित भावनाओं और कुरीतियों को त्यागकर समाज को सगठित और सबल बनाकर अपने सामूहिक वोटों के द्वारा राजसत्ता प्राप्त करके अपने समस्त कष्टों से मुक्ति पाने का रहस्य समझाएं। जो दल हिन्दुओं के हित में कार्य करने का वचन दे और सार्वदेशिक एवं प्रान्तीय समितियों के परामर्श से उम्मीदवार खड़ा करे उसी दल को सामूहिक वोट दिलाकर विजयी बनाया जाय और वही केन्द्र और प्रान्तों में सत्ता सम्भाले।

इस कार्य में लोगों के विचार परिवर्तन की आवश्यकता है, इस अभिप्राय से हर प्रान्तीय भाषा में मासिक पत्रिकाएं, प्रकाशित की जाय। उनके दो भाग हों, एक भाग में हिन्दुओं पर आये दिन ढाये जाने वाले अत्याचारों के समाचार हों, उसी भाग में देश और जाति को क्षति पहुंचाने वाली सरकारी-नीतियों, योजनाओं और आदेशों का उल्लेख हो, दूसरे भाग में हिन्दुओं में कुरीतियों को छोड़, संगठित होकर अपनी जाति, देश और संस्कृति की रक्षा के हेतु त्याग एवं बलिदान की भावना उत्पन्न कराने वाले वेद-शास्त्र और अन्य उत्तम साहित्य से शिक्षाप्रद वाक्य उद्धृत किये जाय, उसमें ही महापुरुषों की जीवनगाथा दी जाय। यह पत्रिकाएं हर परिवार को बिना मूल्य के दी जायं।

जैसा कि कहा जा चुका है कि कार्य अत्यन्त कठिन है। परन्तु जाति के हर रोग के औषधि-रूप इस कार्य को धैर्यपूर्वक और अध्यवसाय के साथ प्रयास करके सफल बनाया जा सकता है। यदि राम-जन्म मन्दिर निर्माण जैसी एक समस्या के समाधान में बरसों, असफल प्रयास किया जा सकता है तो क्या इस परम आवश्यक कार्य के लिए दस-पांच वर्ष भी नहीं दिये जा सकते।

उपर्युक्त सुझावों के अनुसार या किसी अन्य उपर्युक्त उपाय से राजसत्ता प्राप्त करने से ही हिन्दू जाति की कुशल है। यदि इस दिशा में कोई कार्य न किया गया और सब अपनी-अपनी डफली और अपना-अपना राग ही अलापते रहे तो देश और जाति का भविष्य अन्धकारमय है। अपनी भावी सन्तान को देशद्रोही और भारतीय संस्कृति का शत्रु बनाने के महापाप के भागी आज के हिन्दू और उनके तथाकथित नेता ही होंगे। □

आर्यों के नाम पाती

बहुत वर्षों पहिले मैंने आर्य समाजों के वार्षिकोत्सवों पर जाना बन्द किया हुआ था किन्तु कुछ विद्वानों के कहने और अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों व नेताओं के आग्रह पर पुनः आर्यसमाजों के उत्सवों के कार्यक्रम स्वीकार करने प्रारम्भ कर दिये। परन्तु अब पुनः पूर्ववत परिणाम पर ही पहुँचा हूँ कि उत्सवों पर जाना समय और सामर्थ्य का दुरुपयोग करना है। अपवादों की बात मैं नहीं कहता किन्तु सामान्यतया उत्सवों पर कार्यकर्तागण वक्ताओं के-----चाहे दस हों या बारह--- प्रत्येक बैठक में सभी के भाषण कराना चाहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वक्ता जो कहना चाहता है, वही नहीं कह पाता, केवल मंच पर उपस्थिति लिखा देता है।

न चाहते हुए भी अनेक स्थानों पर कार्यकर्ताओं को यह सुझाव भी दिया कि आपके पास दस या बारह वक्ता हैं तो कुछ को प्रातःकालीन सभा में बुलवाइये कुछ को मध्याह्न की सभा में और कुछ को सायंकालीन सभा में समय दीजिये। परन्तु लगता ऐसा है कि जैसे कोई सनक सवार हो, बुलवायेंगे प्रत्येक वक्ता को प्रत्येक सभा में। पहले तो स्वयं ही अधिक वक्ता बुला लेते हैं फिर यदि कोई अनाहूत आ जाय तो उसे भी सम्मिलित कर लेते हैं।

आजकल यात्रा कितनी कठिन हो गयी है, यह सभी जानते हैं।। यात्रा की यातना भोग कर पहुँचो तो ठहरने की सुविधाजनक व्यवस्था नहीं। एक-एक कमरे में अनेकानेक व्यक्ति ठहरे होते हैं परिणामस्वरूप न पढ़ने की सुविधा होती है और न लिखने की। सम्पूर्ण समय पड़े रहने तथा बक-बक करने और सुनने में समय विनष्ट हो जाता है। और तत्पश्चात् सभास्थल पर वही पन्द्रह-बीस या तीस मिनट ।

इसके अतिरिक्त एक त्रासदी यह भी है कि ऐसे वक्ता बुला लिये जाते है और प्राय. उन्हीं को प्रमुखता दी जाती है, जो सिद्धान्त विरुद्ध अनर्गल प्रलाप करते रहते हैं। यदि उनके भाषण की अनर्गलताओं का निराकरण और प्रतिवाद करना चाहा तो कार्यकर्ता यह कह कर कि---"आर्यसमाज के विषय में जनता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा" रोकते है। ऐसे कार्यकर्ताओं से कोई पूछे कि क्या इन सिद्धान्त विरुद्ध अनर्गल भाषणों से आर्यसमाज का प्रचार होगा ? यह तो श्रोताओं को आर्य समाज के विषय में भ्रान्ति में डालने तथा श्रोताओं के सामने आर्य समाज का भ्रान्तचित्र उपस्थित करने का घृणित और दुष्प्रयत्न है। ऐसे कार्यकर्ताओं को या तो समझा जाय कि वह वास्तव में आर्यसमाजी है ही नहीं अपितु आर्यसमाज में घुसकर आर्यसमाज की जड़े काट रहे है और या फिर इतने बुद्धिहीन है कि न तो आर्यसमाज को समझते हैं और न समझना ही चाहते है। किसी वक्ता का कभी कोई तर्क पसन्द आ गया या आर्यसमाज की कोई एक-दो मान्यता पसन्द आ गयी होती है, बस इतने ही आर्य समाजी है और अब आर्य समाज के अधिकारी बने तो तीन दिन के लिये उत्सव के नाम पर लोकेषणा-पूर्त्ति और स्व मन मना लेने की प्रक्रिया पूर्ण कर लेते हैं।

मेरे द्वारा न तो आर्यसमाज के मंच से अनर्गल भाषणों को सहन किया जा सकता है और न मैं समय की विनष्टि को तैयार हूँ। मैं हूँ आर्यसमाज का, आर्यसमाज के लिये हूँ किन्तु आर्य समाजों के अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि मुझे उत्सवों पर केवल वही समाजें बुलायें जो एकान्त आवास और पूरा समय दे सकें और भ्रान्त भाषण करने वालों की भ्रान्तिपूर्ण बातों का उत्तर देने दें, अन्यथा मुझे केवल वेद-कथा के लिये ही बुलायें। अलमतिविस्तरेण।

— वेदमुनि परिव्राजक

वैदिक संस्थान, नजीबाबाद।

विदाई समारोह

ज्येष्ठ सुदी 11 स02047 तदनुसार 4-6-1990 को गुरुकुल प्रभाताश्रम मोलाझाल मेरठ में एक अभूतपूर्व विदाई समारोह का समायोजन किया गया। वर्तमान सत्र में शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके प्रस्थान करने वाले ब्रह्मचारियों के स्वागतोप लक्ष्य में इस गोष्ठी का आयोजन किया गया । भूतपूर्व स्नातक, ज्येष्ठ कनिष्ठ ब्रह्मचारी, अभिभावक तथा श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज इसमें उपस्थित थे।

जहाँ ब्रह्मचारियों ने अपनी रचनाओं द्वारा अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये वहाँ स्नातक बन्धु एंव अभिभावक महानुभाव द्वारा भी विचार प्रस्तुत किया गया। शोक संतप्त भावविह्वल ब्रह्मचारियों को संबोधित करते हुये पंडित नरेन्द्र शास्त्री भूतपूर्व स्नातक ने कहा- यह समय शोक प्रकट करने का नहीं अपितु उल्लास का है। मैं अपनी जन्मदात्री जननी से उत्कृष्ट सम्मान गुरुकुल जननी को देता हूँ। भला जिस माँ का लाडला गौरव एंव सम्मान हेतु आगे कदम बढा रहा हो उसके लिये कितनी खुशी की बात है कि हम सब को इस खुशी में सहर्ष सम्मिलित होना चाहिये।

आचार्य श्री शिवशंकर जी निगमालंकार ने व्रत की महत्ता का प्रतिपादन करते हुये "व्रतेन दीक्षामाप्नोति" इस यजुमंत्र की विशिष्ट विवेचना की।

ब्र0 बृहस्पति गन्ता स्नातक के पिताजी श्री सत्यप्रिय शास्त्री जी ने कहा- आप संसार रुपी उस नदी को पार करने जा रहे हैं जिसकी वेगवती धारा अच्छे तैराकों को भी बहा ले जाती है। वीर भूषण पुरुष ने अपने बाहुबल से इसे पार कर धन्य-धन्य हुये हैं। आशा है कि आप इस सरिता को लाघंने में समर्थ होंगे। दयानन्द के वीर सैनिक बनेगें दयानन्द का काम पूरा करेगें " पर उन्होंने विशेष बल दिया।

आचार्य वाचस्पति जी ने कहा- कोई आता है जाने के लिये। तथा कोई जाता है आने के लिये। यद्यपि उन्होने स्पष्ट नहीं किया कि आज आने के लिये जा रहे हैं या आये थे इसलिये जा रहे हैं। संभवतः उनका यह संकेत उनके लिये था जो उधेडबुन में थे। आगे बढने वाले को अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेना चाहिये यह आशय था।

अन्त में पूज्य श्री स्वा0जी महाराज ने जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये अपने आशीर्वचन दिया। स्वाध्यायान्मा प्रमद इस उपनिषद वचन का आचरण करते हुये भावी जीवन पथ पर अग्रसर रहते हुये विश्वचर्चित होने की ओर प्रेरित करते हुये-

"यह जो तुम्हारा स्वागत हो रहा है वास्तविक स्वागत नहीं है। बल्कि नाटक है। हाँ कभी तुम्हारा स्वागत होगा तो इसी तरह होगा। यह तो घर है चाहे कुछ कर लो परन्तु आक्सफोर्ड लंदन, वाशिंगटन, अफ्रीका में तुम्हारा स्वागत हुआ तो वह सच्चा होगा।

पुनीत कुमारी शास्त्री

गुरुकुल प्रभाताश्रम मौलाझाल, मेरठ।

गुरुकुल अयोध्या में प्रवेश

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश।

अयोध्या (साकेत) के निकट स्थित विश्व विख्यात आर्ष प्रणाली पर संचालित श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) अपने संस्थापक स्व0श्रीस्वामी त्यागानंद सरस्वती का जन्म-शताब्दी-समारोह 27 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 1990 ई0 तक विशाल आयोजन के साथ मनाने जा रहा हैं। हमारा और आपका कर्तव्य है कि हम गुरुकुल में अधिक से अधिक ब्रह्मचारियों के प्रवेश का प्रयत्न करें। नवीन ब्रह्मचारियों की प्रवेश परीक्षा 8,15,22 जुलाई 1990 ई0 को होगी।

ज्ञानेन्द्र भटनागर
कुलपति

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, बरेली
प्रधान- श्री जगदीश शरण आर्य
मंत्री- श्री विद्याशंकर आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री रामकुमार वीरेश

अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आंदोलन

समर्थको व साथियों सहित इन्दौर पधारिये :-

दिनांक 28 जुलाई से 30 जुलाई 90 तक हम सब जानते ही है कि हमारा देश अभी भी अंग्रेजी का गुलाम है। हमारी केन्द्रीय सरकार अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त होने के लिये विचार भी नही कर रही है। लेकिन कुछ प्रान्तीय सरकार उत्तर प्रदेश मध्यप्रदेश हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा ने भाषाई गुलामी से स्वतन्त्र होने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये है, किन्तु शेष प्रांतों को एंव केन्द्र सरकार को विदेशी भाषा की गुलामी से स्वतन्त्र होने के लिए प्रेरित करना होगा। हमें जनता की मानसिकता को भी बदलना होगा। कि वह दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी को हटाकर केवल अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को ही व्यवहार में लाने का अभ्यास करें। इसके लिये संपूर्ण देश में एकसाथ निरन्तर प्रचार एवं संघर्ष करने की तैयारी करने के लिए इन्दौर में अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

यह निमत्रंण मिलते ही आप अपने पधारने की स्वीकृति भेज दें। जिससे कि आपकी व्यवस्था उचित ढंग से की जा सके। आपके वापस लौटने के लिए बस अथवा रेल के आरक्षण के लिए रकम भेज देवें जिससे कि यहां से आरक्षण करवाया जा सकें।

शीलकुमार निगम — महामंत्री
जगदीशप्रसाद वैदिक — अध्यक्ष

संकल्प करें :

1- अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी में नही करेगें। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेगें।

2- अपने पत्रों पर पता अंग्रेजी में नही लिखेंगे। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेगें।

3-शासन से पत्र व्यवहार अंग्रेजी में नही करेगें। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेगे।

4- दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग नही करेगे। अपनी आदत बनायेगे कि मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी के शब्दोंका प्रयोग करेगें।

5- हम व्यापारी अपनी पावती व हिसाब अंग्रेजी में नही लिखेगें। अपना समस्त कार्य मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेंगे।

6- हम कारखानेदार हमारे द्वारा निर्मित सामान पर और उसके डिब्बो पर गुलामी की निशानी अंग्रेजी नही लिखेगें। प्रत्येक प्रान्त की भाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेंगे।

7- हम चिकित्सक, अभिभावक, मंत्री, शासकीय सेवक अपनी आदत बनायेगे कि अंग्रेजी का व्यवहार बन्द कर मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी का व्यवहार करेगें।

8- अपने बालकों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में नही भेजेगें। मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी माध्यम के विद्यालय में भेजेगें। और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के संचालको से आग्रह करेगें कि अंग्रेजी माध्यम को हटाकर राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही पढावें। अंग्रेजी पढाकर हमारे बालकों को विदेशी नही बनाकर राष्ट्रभक्त बनावें।

9- हम अपने बचों से डेडी, मम्मी, अंकल, आंटी बुलवाना बन्द करेगें और पिताजी माताजी बुलवाने की आदत डालेंगें।

10- समस्त अभिनन्दन पत्र एंव निमंत्रण पत्र अंग्रेजी में नही भेजकर हिन्दी में ही भेजेगें।

11- हमारे नाम पट पर और विज्ञापन अंग्रेजी में नही लिखवायेगें।

12- हम अपने बच्चों को विदेशी संस्कृति में नही ढालेगें। अपनी भारतीय संस्कृति में ढालेगें। ◻

वैदिक विद्वान-डॉ॰ रामनाथ वेदालंकार सम्मानित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक, तथा वेदों के मर्मज्ञ विद्वान डा0 रामनाथ वेदालंकार को उनके द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार एंव विकास कार्य हेतु की गयी दीर्घकालीन विशिष्ट सेवा तथा वैदिक साहित्य के शोधपूर्ण ग्रन्थों के प्रणयन के लिए उत्तर प्रदेश संस्कृत ग्रंथ अकादमी द्वारा दिनांक 31 मई, 1990 को लखनऊ में एक भव्य समारोह में पच्चीस हजार रूपये के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उत्तर प्रदेश के बरेली जनपद के फरीदपुर ग्राम में महाशय जी के नाम से विख्यात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लाला गोपालराम जी के यहाँ 7 जुलाई 1914 को जन्मे डा0 वेदालंकार का संपूमर्ण जीवन गुरुकुल, आर्यसमाज तथा वेद सेवा के लिये समर्पित है। सन् 1936 में वेदालंकार उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने जयपुर रियासत के अंतर्गत ठिकाना सूंड के ठिकानेदार तथा महाराजा जयपुर के ए0डी0सी0ठाकुर जयसिंह के अनुरोध पर सूंड में शिक्षा प्रसार हेतु गुरुकुल की स्थापना की तथा कुछ समय तक उसका संचालन किया। सन् 1938 से 1976 तक आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वेदानुसंधानकर्ता, वेदोपध्याय, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष, कुलसचिव, वेद एवं कला महाविद्यालय के अध्यक्ष, आचार्य एवं उपकुलपति के पदों पर कार्यरत रहे। अगस्त 1976 में आपको तीन वर्ष के लिये पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ में नवस्थापित महर्षि दयानंद वैदिक अनुसंधान पीठ के प्रथम प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। वहाँ से सेवानिवृत्त होने के बाद से आप निजी स्तर पर शोध एवं लेखन में व्यस्त हैं।

आपने अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थो की रचना की है। वेदार्थ की विविध शैलियों एवं प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के प्रयोजन से लिखी गयी वेदों की वर्णन शैलियां एवं वेदभाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियायें" तथा महर्षि दयानन्द के विविध ग्रन्थों में प्रतिपादित उनके विचारों को प्रकाश में लाने वाली "महर्षि दयानन्द के शिक्षा, राजनीति और कला कौशल संबंधी विचार" शीर्षक आपकी शोधपूर्ण कृतियां वैदिक साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। इसी श्रृंखला में आपने संस्कृत भाषा में "वैदिक शब्दार्थविचार" नाम से एक अनुपम ग्रन्थ का प्रणयन किया है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि सामान्यतया एक ही अर्थ में प्रयुक्त होने वाले "अज", "असुर", "वृषभ" आदि शब्द वेदों में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं। इनमें से प्रथम श्रद्धानन्द शोध प्रतिष्ठान गुरुकुल कांगड़ी से तथा शेष महर्षि दयानन्द अनुसंधान पीठ चण्डीगढ़ के तत्वावधान में प्रकाशित हुई है। "वैदिक वीर गर्जना" (200 वीर रस पूर्ण वेदमंत्रों पर आधारित उद्बोधक उदात्त रचना "वैदिक सूक्तियां") अथर्ववेद की एक सहस्र सूक्तियों के अर्थ सहित संग्रह "यज्ञमीमांसा" (अग्निहोत्र दर्पण), "वैदिक प्रार्थना-पुष्पांजलि" (वैदिक निबंध संग्रह) "वेदमंजरी" (365 वेदमंत्रों की भावभीनी प्रवाहमयी व्याख्या) और "वैदिक नारी" (वेदवर्णित नारी के सर्वांगीण उज्जवल चरित्र का चित्रण) आप द्वारा प्रणीत अन्य रचनायें हैं। आपने स्वामी दयानन्द की भाष्यशैली को आधार मानते हुये "सामवेद" का सरल एवं सुबोध भाषा में संस्कृत-हिन्दी भाष्य तैयार किया है जो पूर्वार्चिक एवं उत्तरार्चिक दो भागों में मुद्रणाधीन है।

"अर्थ" एवं "यश" की लालसा से नहीं, वरन् स्वान्त: सुखाय" तथा वेदों में निहित ज्ञान को वेदप्रेमियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से साहित्य सृजन में व्यस्त आचार्य वेदालंकार को इस अनवरत वेद-सेवा के लिए इससे पूर्व बम्बई आर्यसमाज द्वारा इक्कीस हजार रूपये के पुरस्कार से तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा "विद्यामार्तण्ड" की मानद उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। आपकी "यज्ञमीमांसा" शीर्षक कृति वर्ष 1981 में संस्कृत ग्रन्थ अकादमी उत्तर प्रदेश द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। ◻

प्रशासक की नियुक्ति

आर्यसमाज खुर्जा की कार्यकारिणी को सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी द्वारा भंग कर दिया गया है। और आर्यसमाज खुर्जा का प्रशासक श्री वेदप्रकाश-बाधक को नियुक्त कर दिया गया है।

आर्यसमाज जहांगीराबाद (बुलन्दशहर) पर प्रशासकीय व्यवस्था में परिवर्तन करके डा0 लोकेन्द्र सिंह राघव को प्रशासक बनाया गया है।

वीरेन्द्र पाल शर्मा उपमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

आर्य विद्या सभा, बुलन्दशहर भंग, तथा प्रशासक नियुक्त

आर्य विद्या सभा §रजि0§ बुलन्दशहर के तत्वावधान एवं संरक्षण में चलने वाले डी0ए0वी0 पोस्ट ग्रेजुएट कालेज तथा डी0ए0वी0 इन्टर कालेज, बुलन्दशहर के निर्वाचन में हुई अनियमितताओं के सम्बन्ध में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 को शिकायती पत्र प्राप्त हुआ था जिसकी जाँच कराए जाने पर निम्न तथ्य प्रकाश में आये:-

1- नियमानुसार आर्य विद्या सभा की अन्तरंग में 2/3 आर्य सभासद होने चाहिए थे किन्तु जाँच से पता चला कि उपरोक्त विद्यालयों में से किसी भी विद्यालय की अन्तरंग में 2/3 आर्यसभासद §आर्यसमाजी§ नहीं हैं और दोनों ही विद्यालयों में आर्यसामाजिक गतिविधियाँ शून्य हैं।

2- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के पत्र दिनांकित 8/2/90 का जो उत्तर आर्यविद्या सभा §रजि0§ बुलन्दशहर के पत्र सं0- 417/ए0बी0एस0 दिनांक- 21-4-90 द्वारा प्राप्त हुआ है, वह असन्तोषजनक एवं भ्रामक है। इस पत्र में सदस्यों/पदाधिकारियों में 2/3 के आर्यसमाजी होने का कोई वैध प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने अपने स्तर पर अपने क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा जो जाँच कराई उससे भी उक्त तथ्यों की पुष्टि होती है।

अत. आर्य विद्या सभा §रजि0§ बुलन्दशहर की नियमावली की धारा 25 के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए, श्री पं0 इन्द्रराज सभाप्रधान उक्त आर्य विद्या सभा §रजि0§ बुलन्दशहर की वर्तमान कार्यकारिणी को तात्कालिक प्रभाव से भंग कर दिया है। तथा श्री वीरेन्द्र-पाल शर्मा, उपमन्त्री §वरिष्ठ§ आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 को आर्यविद्या-सभा §रजि0§ बुलन्दशहर का प्रशासक नियुक्त किया है। उक्त विद्या सभा के अधीनस्थ चलने वाले दोनों विद्यालयों का प्रबन्ध तन्त्र स्वत ही भंग हो जाने पर यह दोनों विद्यालय प्रशासकीय व्यवस्था के अन्तर्गत संचालित होंगे तथा श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा को उक्त आर्य विद्या सभा §रजि0§ बुलन्दशहर में निहित सभी अधिकार प्राप्त होंगे।

इस सम्बन्ध में यह भी सूच्य है कि सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराजजी के अतिरिक्त अन्य किसी भी व्यक्ति या श्री कैलाश नाथ सिंह को सभा की ओर से कोई निर्देश देने का अधिकार नही है।

- मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

गंगा दशहरा पर गुरुकुल प्रभात आश्रम का वेद प्रचार शिविर

2 जून, 1990 प्रातः 9 बजे विश्रामगृह मोलाशाल मेरठ में गंगा दशहरा पर गुरुकुल की ओर से एक वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर यज्ञ से प्रारम्भ हुआ जिसमें यजमान थे श्री चौधरी सूरत सिंह जी। तत्पश्चात् श्री कर्ण सिंह जी, श्री मांगेराम जी, भजनोपदेशकों के भजन हुये। ग्राम पथौली के प्रवेशार्थी बच्चे प्रेमपाल आर्य ने भी एक भजन बहुत अच्छी प्रकार से प्रस्तुत किया। प्रिय आशुतोष सुपुत्र श्री हरवीर सिंह जी सुमन का स्वस्तिपन्थां मन्त्र पर प्रवचन हुआ। श्री जयन्त कुमार जी पाण्डेय ने अपने प्रवचन में जन्मगत जात-पांत का विरोध करते हुये बताया कि आज देश में जो धर्म परिवर्तन हो रहा है उसका मूलकारण ऊँची-जात का छोटी जातों से घृणा करना है। जब तक यह जन्मगत जात-पांत समाप्त नहीं होती तब तक भारत का उद्धार नहीं होगा। श्री डा0 रमेशचन्द्रजी मेडिकल कालेज ने वैदिक सिद्धान्तों पर चलने का आग्रह किया। इसी गुरुकुल के स्नातक श्री प्रेमप्रकाश जी ने इस समय फैलते हुए अन्धविश्वास और मूर्ति पूजा पर चिन्ता व्यक्त की तथा इसी सन्दर्भ में श्री राम आचार्य द्वारा गायत्री पूजा तथा उसकी मूर्ति बनाकर अपनी और अपनी पत्नी की भी साथ-साथ पूजा पर आश्चर्य प्रकट किया तथा आर्यसमाज को इस पाखण्ड को निरस्त करने का आह्वान किया। श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि-सभा उत्तर प्रदेश तथा मन्त्री गुरुकुल-प्रभात आश्रम ने इस समय देश की विषम परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यदि भारत-पाक युद्ध हुआ तो वह आणविक युद्ध होगा और इससे दोनों ओर भयंकर विनाश होगा। परन्तु यदि हमने एक जुट होकर उसका मुकाबला किया तो पाकिस्तान की अस्तित्व ही मिट जायेगा। एक ओर संकट की तरफ वर्तमान भारत सरकार के दृष्टिकोण की चर्चा करते हुये श्री प्रधान जी ने बताया कि संसद में एक बिल लाया जा रहा है कि यदि हरिजन या पिछड़ी जाति का कोई व्यक्ति धर्म परिवर्तन करता है तो उसके मुसलमान या ईसाई हो जाने पर भी सरकार की ओर से हरिजनों को वे सब सुविधायें जारी रखी जाएँ। यह एक भयंकर षड्यन्त्र है इससे धर्म परिवर्तन में बाढ़ आ जाएगी और भारत की अस्मिता ही मिट जायगी। स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य ने जातिवाद के बढ़ावे के लिये सरकार को दोषी ठहराया। धर्म सबको प्रेम से रहना सिखाता है परन्तु राजनीति आपस में घृणा-द्वेष और लड़ाई तथा हिंसा का वातावरण पैदा करती है। और धर्म को बदनाम करती है। अन्त में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने बल प्रदर्शन करते हुऐ 3 सूत का, 4 सूत का, पाँच सूत का सरिया भाला गले पर तथा भाले की नोक लगाकर तथा आँख में भाला लगाकर मोड़ने का सफल प्रदर्शन किया। छाती पर पत्थर तुड़वाने। हथेली में काँच पीसने और बहुत मोटी लोहे की जंजीर तोड़ने का भी सफल प्रदर्शन किया। जिसे हजारों दर्शनार्थियो ने देखा। —संवाददाता

सभा प्रधान जी मवाना में

5 जून, 90 को प्रात 9 बजे सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी आर्यसमाज मवाना के प्रधान श्री दया प्रकाश जी सराफ के पौत्र के जन्मदिवस पर उनके पौत्र विवेक को आशीर्वाद देने के लिए पहुँचे। जलपान के उपरान्त आर्य समाज मवाना के अधिकारी एव सदस्यों तथा स्त्री आर्य समाज मवाना के कार्यकर्ताओं की बैठक हुई जिसमें दिनांक 2,3 तथा 4 सितम्बर 1990 को आर्य महा सम्मेलन को सफल बनाने पर विचार विमर्श हुआ। अन्त में सभा प्रधान जी ने नगला हरेरू में सिखों द्वारा धर्म-परिवर्तन के प्रयासों को विफल करने का आह्वान किया। —संवाददाता

आर्य समाज महेश्वर

महेश्वर में सर्वप्रथम, आर्य समाज द्वारा आयोजित महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह दिनांक 27-5-1990 रविवार रात्री 8-30 बजे से शारदा सदन ग्रंथालय बाजार चौक, श्री राजेश्वर जी आर्य वानप्रस्थी के प्रयास से, मनाया गया।

●
आर्यसमाज सदर-बाजार, झाँसी
प्रधान- श्री सुरेशचन्द्र माहेश्वरी
मंत्री- श्री जगदीशचन्द्र बाधका
कोषाध्यक्ष- श्री ओमशरण गुप्ता

गुरुकुल वृन्दावन को दान

श्री पूर्ण चन्द्र आर्य दाल मिल भैरो बाजार, आगरा ने कृपापूर्वक गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के लिए दानस्वरूप रु0 पाँच हजार आठ सौ प्रदान किये हैं। तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को मिष्ठान्न वितरण किया। सभा दानी महोदय का हार्दिक धन्यवाद प्रकट करते हुये सभी दानी महानुभावों से इस प्रकार के दान का अनुकरण करने का अनुरोध करता ह।

आवश्यकता

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस §अलीगढ§ उ0प्र0 महिला अभ्यर्थी चाहिये- वेद, दर्शन, संस्कृत व्याकरण अध्यापन हेतु साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य प्रौढ एवं अवकाश प्राप्त पुरुष भी रखे जा सकते हैं। आश्रम संरक्षिकायें §कन्याओं की देखभाल हेतु§ सेविकायें, चिकित्सिका। नर्स। वेतन योग्यतानुसार। प्रार्थना पत्र शीघ्र भेजें।

मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय
हाथरस §अलीगढ§

"मेरी सरकार का संकल्प है कि प्रदेश में लघु एवं ग्रामीण उद्योग, हथकरघा, हस्तशिल्प जैसे रोजगारोन्मुख उद्योगों को विशेष प्रोत्साहन देकर उनका जाल बिछाया जाये।"

—मुलायम सिंह यादव



उत्तर प्रदेश, जिसकी जनसंख्या पूरे देश की जनसंख्या का 16 प्रतिशत और जिसका क्षेत्रफल पूरे देश का 9 प्रतिशत है, का आर्थिक विकास पूरे देश की आर्थिक प्रगति में विशेष महत्व रखता है। आज उत्तर प्रदेश भारत का सर्वाधिक वार्षिक विकास दर 12 5 प्रतिशत वाला राज्य हो गया है। राज्य में औद्योगीकरण की गति को और बढ़ावा देने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश शासन ने माननीय मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव के कुशल मार्गदर्शन में एक नई गतिशील औद्योगिक नीति की घोषणा की है।

आठवीं पंचवर्षीय योजना में 20 हजार करोड़ रुपये का पूंजी विनियोजन किया जाना प्रस्तावित है। बड़ी मध्यम तथा लघु इकाईयों के अतिरिक्त खादी तथा ग्रामोद्योग की 5 लाख इकाईयां स्थापित करने का भी लक्ष्य है। उत्तर प्रदेश में आठवीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक विद्युत की प्रतिष्ठापित क्षमता 7500 मेगावाट हो जाने की सम्भावना है।

वास्तव में उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास को नए आयाम प्रदान करने के लिए हर सम्भव सुविधाएं प्रदान करने के लिए तैयार है।

नई औद्योगिक नीति के कुछ प्रमुख उद्देश्य-

(1) अधिकाधिक रोजगार के अवसर सृजित करने हेतु प्रदेश में लघु उद्योग हथकरघा हस्तशिल्प कुटीर उद्योग, ग्रामीण व रेशम उद्योग जैसे रोजगार प्रधान व रोजगारोन्मुख उद्योगों को विशेष प्रोत्साहन देना।

(2) क्षेत्रीय असतुलन समाप्त करना तथा पिछड़े जनपद विशेषकर ग्रामीण अंचलों के औद्योगिक विकास हेतु विशेष सुविधाएं देते हुए तीव्र विकास सुनिश्चित करना।

(3) आधारभूत उपभोक्ता सामग्रियों का उत्पादन लघु एवं ग्रामीण उद्योगों के क्षेत्र में बढ़ाना तथा बुनकरों को सस्ती दरों पर कच्चा माल उपलब्ध कराना व उत्पादित माल की विपणन-व्यवस्था सुनिश्चित करना।

(4) मध्यम एवं वृहत उद्योगों की कोर सेक्टर व अन्य क्षेत्र जो लघु औद्योगिक क्षेत्र की क्षमता के बाहर हैं और लघु व ग्रामीण उद्योगों के विकास में सहायक हैं, में स्थापना सुनिश्चित करना।

(5) नये उद्योगों की स्थापना द्वारा प्रदेश की जनता, विशेषकर शिक्षित युवकों, महिलाओं, भूतपूर्व सैनिकों, कारीगरों, समाज के कमजोर वर्गों, अनुसूचित जाति/जनजाति के लोगों के लिये अधिकाधिक रोजगार के अवसरों का सृजन करना।

(6) औद्योगिक अवस्थापना सुविधाओं का आवश्यकतानुसार विकास।

(7) वर्तमान में स्थापित उत्पादन क्षमता का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने के उद्देश्य से रुग्ण इकाईयों के पुनर्वास दारुणता की ओर उन्मुख इकाईयों को समुचित सहायता व परपरागत ग्रामीण व लघु उद्योगों का आधुनिकीकरण।

(8) प्रदेश में स्वस्थ, उत्साहजनक एवं प्रगतिगामी औद्योगिक वातावरण का सृजन।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये उत्तर प्रदेश सरकार ने औद्योगीकरण के विभिन्न स्तरों पर उद्यमियों को सहायता प्रदान करने हेतु अनेक प्रोत्साहन दिये जाने की घोषणा की है।

पिछड़े क्षेत्रों का वर्गीकरण-

नई औद्योगिक नीति में विभिन्न जिलों को अ,ब,स एवं द, श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। "अ श्रेणी में सर्वाधिक पिछड़े क्षेत्र रखे गये हैं। जबकि द श्रेणी में गैर पिछड़े क्षेत्र आते हैं।

पूंजी-विनियोजन उपादान योजना-

इस योजना के अनुसार ऐसे उद्योगों को जिनमें संयत्र एवं उपकरणों पर रु0- 5 लाख से ज्यादा न लगे हों, बिना किसी शर्त पूंजी उपादान दिया जायेगा। श्रेणी "अ , "ब" एवं "स , में आने वाले पिछड़े जनपदों को क्रमशः रु0 20 लाख, रु0-15 लाख एवं रु0 10 लाख तक का राज्य पूंजी उपादान दिया जायेगा। इसके अलावा ऐसे उद्योगों को जिनमें संयत्र एवं उपकरणों पर रु0 5 लाख से अधिक की पूंजी निवेश किया गया हो, उपादान दिया जायेगा बशर्ते ये उद्योग निर्धारित क्षेत्रों में ही स्थापित किये गये हों। रु0 5 करोड़ से अधिक स्थाई पूंजी विनियोजन वाली इकाई को कोई पूंजी उपादान देय न होगा।

बिक्रीकर से छूट/आस्थगन की योजना-

इस योजना के अन्तर्गत बिक्री कर में छूट को स्थाई पूंजी विनियोजन से सम्बद्ध किया गया है। श्रेणी "अ में स्थाई पूंजी विनियोजन का 150 प्रतिशत अथवा 10 वर्ष, श्रेणी "ब में 125 प्रतिशत अथवा 9 वर्ष तथा श्रेणी "स" में 100 प्रतिशत अथवा 8 वर्ष जो भी पहले हो, बिक्रीकर से छूट दी जायेगी। लघु औद्योगिक इकाईयों के लिए प्रत्येक श्रेणी में छूट की राशि 25 प्रतिशत अतिरिक्त होगी। छूट के विकल्प में आस्थगन सभी इकाईयों को उपलब्ध होगा।

विद्युत के उपयोग पर विशेष छूट-

सभी श्रेणी के नये उद्योगों को उत्पादन शुरू होने की तिथि से 5 वर्ष तक विद्युत कटौती से मुक्त रखा जायगा तथा उत्पादन शुरू होने की तिथि से 5 वर्ष तक न्यूनतम मांगभार से भी मुक्त रखा जायेगा।

बुन्देलखण्ड में 5 वर्षों के लिये 50 प्रतिशत की छूट एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निर्धारित स्थानों पर इतने ही समय के लिए 33 33 प्रतिशत तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिलों में 20 प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

"सिंगल विण्डो" योजना-

उद्यमियों की कठिनाईयों को दूर करने के लिए जिलास्तर, मण्डल स्तर तथा राज्य स्तर पर सिंगल विण्डो योजना लागू की जायेगी। उद्योग-बन्धु की सहायता से हर स्तर पर इसे सुदृढ़ बनाया जाएगा। वित्तीय सहायता तथा अन्य सुविधाओं के लिए पिकप,यू0पी0एस0आई0डी0सी0,यू0पी0एफ0सी0 आदि संस्थाएं हर सम्भव सहायता प्रदान करेंगी।

अन्य आकर्षण-

उपरोक्त के अतिरिक्त अनेक अन्य सुविधाओं को उपलब्ध कराने का प्रावधान है जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

- ब्लाक स्तरीय पायनियर इकाई को 5 लाख रुपये तक का विशेष राज्य पूंजी उपादान
- तहसील स्तरीय पायनियर इकाई को 10 लाख रुपये तक का विशेष राज्य पूंजी उपादान
- प्रेस्टिज इकाईयों के लिए 15 लाख रुपये तक का विशेष राज्य पूंजी उपादान
- उद्यमियों को सस्ते मूल्य पर भूमि
- प्रदेश की लघु औद्योगिक इकाईयों का आधुनिकीकरण तथा उनकी उत्पादकता एवं गुणवत्ता में सुधार लाये जाने से सम्बन्धित योजना
- रुग्ण औद्योगिक इकाईयो का पुर्नवसन
- भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत पर्वतीय क्षेत्रों में परिवहन अनुदान
- राज्य सरकार द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में विशेष परिवहन अनुदान
- अनुसूचित जाति/जनजाति महिला एवं भूतपूर्व सैनिकों की श्रेणियों के उद्यमियों को विशेष सुविधायें।
- प्रवासी भारतीयों के लिए विशेष सुविधायें
- विशिष्ठ सेक्टरों के वरीयता प्राप्त उद्योगों के लिये विशेष योजना
- शत प्रतिशत निर्यातमूलक इकाईयों को 10 लाख रुपये तक का विशेष राज्य पूंजी उपादान।
- नई औद्योगिक इकाईयों को चुंगी में छूट ।
- व्यवहार्यता रिपोर्ट पर अनुदान
- जिला उद्योग केन्द्रों एवं अन्य संस्थाओं में परामर्शदाताओं की स्थापना
- 15 लाख रुपये तक मार्जिन मनी ऋण योजनाएं
- अल्पसंख्यक समुदाय के उद्यमियों को विशेष सुविधायें
- विभिन्न प्रकार की सहायताओं एवं सुविधाओं हेतु प्रार्थनापत्र का समयबद्ध निस्तारण ।

कृषि के साथ-साथ उत्तर प्रदेश में तीव्र गति से औद्योगिक विकास हो, यही सरकार की नई औद्योगिक नीति है। उत्तर प्रदेश कृषि तथा खनिज पर आधारित इलेक्ट्रानिक्स, रासायनिक, यांत्रिकी, पेट्रो-रसायन पर्यटन से सम्बन्धित, प्लास्टिक-चर्म, कपड़ा, स्पोर्टस, ग्लास व सेरामिक, फाउन्ड्री आदि उद्योगों की स्थापना के लिए एक आदर्श स्थान है।

प्रदेश में 30 से भी अधिक तकनीकी एवं अभियांत्रिकी संस्थायें हैं जिनमें आई0आई0टी0 कानपुर एवं आई0आई0एम लखनऊ भी शामिल हैं। यहाँ पर हर प्रकार की अन्य सुविधाएं जैसे प्रबन्ध कौशल, प्रशिक्षित जनशक्ति, यातायात के साधन विद्युत एवं संचार सुविधायें कोने-कोने में उपलब्ध है।

इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाईये, उत्तर प्रदेश में अपना उद्योग लगाईये और अपने सपनों को साकार होते देखिये।

विस्तृत जानकारी के लिए अपने जिले के उद्योग केन्द्र अपने क्षेत्र के संयुक्त निदेशक उद्योग अथवा निदेशक उद्योग, उद्योग निदेशालय उत्तर प्रदेश कानपुर से सम्पर्क स्थापित करें।

उद्योग विभाग
उत्तर प्रदेश शासन

पंजीकरण सं• एल• डब्ल्यू/एन.पी. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ प्र का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
आषाढ़ शुक्ल १५ संवत २०४७ वि०
दिनांक ८ जुलाई १९९०

दूरभाष
२४५९६३

सेवा में : 12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
(हरिद्वार)

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें -

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क मास मई 1990 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0अधिक पोस्टेज लगते है। इसलिये सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिये विवश होगें। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है।

मई १९९०

891, 1159, 1232, 2528, 3354, 4412, 5579, 6139, 11608, 11923. 12659, 12895, 12904, 13467, 14265, 14273, 14714, 14716, 14722, 14723, 14740, 14741, 14748, 15337, 15340, 15341, 15342, 15343, 15344, 15346, 15347, 15348, 15349, 15350, 15351, 15352, 15353, 15355, 15356, 15357, 15358, 15359, 15360, 15361 15362, 15363, 15364, 15365, 15366, 15367, 15368, 15370, 15371, 15372, 15573, 15374, 15376, 15377, 15378, 15379, 15380, 15381, 15382, 15383, 15384 ।

व्यवस्थापक

निर्वाचन

आर्यसमाज स्टेशन रोड पीलीभीत

मंत्री- श्री कस्तूरीलाल सानन्द
मंत्री- श्री अश्वनीकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री विश्राम सिंह

आर्यसमाज सावली गांव पचपुरी (गढ़वाल

प्रधान- श्री राजेसिंह जी नेगी (अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य (ग्राम-सौगल, सावली, पौडी गढवाल (उ0प्र0)

मंत्री-वासुदेव विमल
ग्राम-सैरामल्ला, सावली, पौडी गढ़वाल (उ0प्र0)

कोषाध्यक्ष- श्री बच्चीराम जी आर्य
ग्राम-अरकन्डाईधार, सावली, पौडी गढवाल (उ0प्र0)

आर्यसमाज जीतमल इटावा,

प्रधान- श्री रामनाथ पाण्डे
मंत्री-श्री बद्रसेन आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री शिवप्रकाश गुप्त

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रुप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं.२२४१/५७) श्रावण कृष्ण-८ रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक १५ जुलाई १९९० (घोषणापत्र सं.७/२२-२-२५)



वह किसकी सुनता है

कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते। गोषाता यस्य ते गिरः ॥

हे परमेश्वर! तू किसकी प्रार्थना स्वीकार करता है। तेरी परमकृपा उस पर होती है जिसकी इन्द्रियाँ और वाणियाँ अपनी-अपनी विषयवासनाओं से विरत होकर तेरी ही स्तुति में लगी रहती हैं। जिसकी आँखें सर्वत्र तेरी महिमा को देखती हैं, कान तेरी महिमा के गीत सुनते हैं। जो मनुष्य इन्द्रिय जन्य विषयवासनाओं से विरत रहकर तेरी स्तुति में रत रहते हैं उनकी तू सुनता है।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्र देव पाठक

एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ५०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष

अंक-२७

ऋषि दयानन्द इस युग के सबसे बड़े समाज सुधारक थे।

— मुख्यमन्त्री शेखावत

जयपुर में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना शताब्दी के समापन समारोह में विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह-शेखावत ने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि महाभारत काल के पश्चात आज तक ऋषि दयानन्द से बढ़कर कोई समाजसुधारक पैदा नहीं हुआ। चिरकाल से अन्धविश्वास, पाखण्ड और कुरीतियों में डूबी हुई मानवता को ऋषि दयानन्द ने ही आत्मिक, शारीरिक एवं सामाजिक उन्नति का प्रशस्त मार्ग दिखलाया। उनके विचार शाश्वत और सत्य हैं क्योंकि उनका आधार परमात्मा का दिया हुआ वेदरूपी ज्ञान है। सामाजिक कुरीतियों का निवारण ऐसे ही सन्त और तपस्वी युगपुरुषों द्वारा हुआ करता है, राजनैतिक पदों पर सत्तासीन नेताओं द्वारा नहीं। महर्षि दयानन्द हमारी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के प्रेरणास्रोत ही नहीं थे अपितु समस्त मानवता को बन्धनमुक्त कराके मोक्षमार्ग तक ले जाने वाले परम निष्णात सन्त थे। आज हम राजनैतिक सत्ता के पदों पर बैठकर उनके बताए हुए समाजसुधार के कार्यों को ही पूरा करने में लगे हुए हैं।

स्थापना शताब्दी समारोह स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता तथा श्री पं०-राजगुरु शर्मा एवं गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के दिव्यसन्त स्वामी विवेकानन्द जी के सान्निध्य में राष्ट्रभृत यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। राष्ट्ररक्षा के लिए वेदों में निहित अनेक उपक्रमों का आख्यान करते हुए तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण रखने के लिए वेदमन्त्रों का उद्धरण देकर आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, दयानन्द शोध संस्थान चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी हरिद्वार के पूर्व कुलपति डा० निरूपण विद्यालंकार तथा डा० सुधीर कुमार गुप्त ने भारतीय नवयुवकों को आर्यसमाज से प्रेरणा लेकर राष्ट्ररक्षा के लिए सन्नद्ध रहने का व्रत दिलाया।

इस अवसर पर एक शिक्षासम्मेलन का भी आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, देहली के अध्यक्ष पू० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। राज्य की शिक्षा एवं ऊर्जामन्त्री श्रीमती सुमित्रासिंह ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए शिक्षा के नैतिक पहलू का व्यापक प्रचार व प्रसार करने का आह्वान किया। पू० स्वामी-आनन्दबोध सरस्वती ने अध्यक्षपद से भाषण करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आश्रम प्रणाली पर आधारित प्राच्य शिक्षा प्रणाली ही मानव का सर्वांगीण विकास करने में समर्थ है। शासन को चाहिए कि इसी शिक्षाप्रणाली को प्रचलित करें। स्थापना समारोह के अवसर पर वेद सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, पंजाब कश्मीर समस्या सम्मेलन, शुद्धि सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि अनेकों सम्मेलनों का आयोजन हुआ जिनमें प्रदेश तथा देश-विदेश के हजारों नरनारियों ने सोत्साह भाग लिया।

प्रतिनिधिसभा का यह समारोह कई दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जायेगा। राजस्थान महर्षि की मुख्य कार्यस्थली रही है वे देशी रियासतों के नरेशों को वैदिक [illegible] चाहते थे और इसी प्रयास में उनके प्राणों का बलिदान भी हुआ। विश्वास है इस समारोह से राजस्थान की आर्यजनता ऋषि के मिशन को घर-घर पहुँचाने में सफल होगी।

आर्य प्रतिनिधि उ०प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के इस स्थापना शताब्दी समारोह के लिए प्रदेश की आर्यजनता की ओर से अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

आर्य भूमि पर अरूणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ श्रावण कृष्ण-८ संवत् २०४७वि.
१५ जुलाई १९९०, दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

ओ३म् सम्पादकीय

वेद की ज्योति जलती रहे

मानव और पशु के भेद को स्पष्ट करके जीव को उसकी उच्चतम उपलब्धि तक पहुँचाने के लिए ही उस कृपालु परमात्मा ने सृष्टि के आदि में मानव को वेदों का ज्ञान दिया था। यह ज्ञान मानवजाति का सर्वस्व है। यह वह वैतरिणी है जिसे तैरकर मानव भवसागर से पार हो सकता है। "सर्वे वेदात् प्रसिद्धयति" कहकर हमारे ऋषि मुनियों ने वेदों को मानवीय संस्कृति का आदिस्रोत बतलाया है। यह वह ज्ञान है जो निर्मल है, महानतम है, श्रेष्ठतम वरणीय है उसी की तरह जिसने इस सृष्टि की रचना करके मानव मस्तिष्क को इतना सुन्दर भोज्य दिया-- वेद--- वेद---- वेद। अगर यह हमें न मिलता तो आज हम क्या होते-- ?

"आहार निद्रा भय मैथुनंच सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हितेषामधि--को विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ।।"

ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों द्वारा सांसारिक भोग भोगते हुए हम पशु ही थे यदि अपने धर्म अथवा कर्तव्य को वेदों के द्वारा नहीं समझ पाते। इसीलिए उस प्रभु की अपार कृपा से धर्म अर्थात मानव कर्तव्य का ज्ञान कराने के लिए ही तो उसने यह ज्ञान की गंगा हमें वेद के रूप में प्रदान की है। धन्य है उसकी कृपा और धन्य हैं वे लोग जो उसकी इस कृपा का अमृतपान कर रहे हैं।

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी-दयानन्द युगदृष्टा ऋषि थे। उनका विश्वास था केवल वेद ही परमात्मा की अमरवाणी है जो मानवजाति को उपहार में हर सृष्टि के आदिकाल में चार ऋषियों के माध्यम से प्राप्त हुआ करती है। महर्षि के अन्तःकरण की यह आवाज---- "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है" केवल मात्र आवाज ही नहीं है, परमात्मा का मानव को दिया हुआ दिव्य सन्देश है जो हमें फिर उसकी कृपा से प्राप्त हुआ है। फलस्वरूप, अन्धकार, विनाश और नाना प्रकार की ऐहिक पारलौकिक भ्रान्तियों में डूबते हुए मानव को पुनः जीवनदान मिला है और उसमें कर्तव्यबोध का ज्ञान कराने के लिए एक ऋषि हमारे भाग्य से इस धरती पर सन्देश देने आ गया और हमें फिर उसी ज्ञान की परमज्योति से सम्बद्ध कर गया जो पौने दो अरब वर्षों से भटकते हुए इन्सानों को राह दिखाने के लिए किसी ने जगमग कर रखी है जो सूरज और चन्द की तरह प्रकाशवान है शीतलवान है, अमृत की वर्षा करने वाली है।

इसलिए वेद का प्रचार करना, उसे पढ़कर एक-एक ऋचा का अनुशीलन करना कराना और तदनुसार जीवन और समाज का आचरण स्वयं करना और कराना आर्यों का परमधर्म है। अगर हम इस धर्म से विचलित हो गये तो हमें अपने को आर्य कहना, आर्यसमाज की स्थापना करना प्रतिनिधि सभाओं के इतने बड़े-बड़े संगठन खड़े करना निष्फल है, जड़विहीन वृक्ष की तरह।

आर्यसमाज का परमपावन श्रावणीपर्व आ रहा है। इस अवसर पर आर्य भाई बहिन बड़ी प्रेम और श्रद्धा से अपने मानसमन्दिरों में, आर्यसमाज मन्दिरों में "वेद प्रचार सप्ताह" का आयोजन करते हैं, विभिन्न उपक्रमों द्वारा प्रभु की इस वाणी का घर-घर में प्रचार करते हैं। इससे अधिक पावनकार्य और कोई हो नहीं सकता। प्राचीन समय से इस अवसर पर ऋषियों, ऋषिकाओं, मुनिपुत्रों, आचार्यों, अन्तेवासियों, उपदेशकों, प्रचारकों, सम्राटों, सम्राटपुत्रों की टोलियों की टोलियाँ दिगदिगन्तों में वेद प्रचार के लिए निकल पड़ती थीं और सारे विश्व को वेदज्ञान की ज्योति से जगमग कर देती थीं। यह श्रेय इसी भूमि को है इसी भूमि के पुत्रों को है जिन्होंने विश्व में आर्य संस्कृति का प्रचार करके भारत को "जगद्गुरु" की उपाधि से अलंकृत करा दिया था।

यह हृदय को बहुत पीड़ा पहुँचाने वाली बात है कि आज, मानवता का प्रहरी आर्यसमाज क्षुद्र स्वार्थों की आलोचना भरी दलदल में फँस गया है। जो शक्ति, समय और धन वेद प्रचार में लगना चाहिए वह इन झगड़ों की शान्ति के लिए व्यय हो रहा है। हमारी कामना है हम अपने मतभेदों को भुलाकर समवेत शक्ति के साथ आर्यसमाज मन्दिरों/घरों तथा सार्वजनिक स्थानों पर "वेद-प्रचार सप्ताह" का आयोजन इतने आकर्षक और सुरुचिपूर्ण उपक्रम के साथ करें कि हमारा भारतीय एवं विश्वजनमानस वेदों की उच्चता, महानता और पवित्रता को स्वतः हृदयंगम कर ले। यह दायित्व हम आर्यों का है। शीघ्र ही "वेद प्रचार सप्ताह" का व्यापक कार्यक्रम सभा द्वारा घोषित किया जायेगा। हमें विश्वास है प्रदेश की आर्यजनता इस समारोह को पूर्ण भव्यता एवं शालीनता के साथ मनाए जाने की तैयारियाँ अभी से प्रारम्भ कर देगी।

बाबरी मस्जिद देश की प्रतिष्ठा पर धब्बा है।

— सुन्दर लाल पटवा

इन्दौर। 11 जून मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री सुन्दरलाल पटवा ने कहा है कि बाबरी मस्जिद देश की प्रतिष्ठा पर धब्बा है। यदि लोग इसे हटा कर अयोध्या में राम जन्म भूमि मन्दिर बनाना चाहते हैं, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। श्री पटवा कल रात यहाँ हिन्दी दैनिक नईदुनिया की 44वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत के मुसलमानों को बाबर के प्रति निष्ठा नहीं रखनी चाहिये। वह अनेक हिन्दू मन्दिर नष्ट करने के लिये जिम्मेदार था।

श्री पटवा ने अपने भाषण में कहा कि यदि पण्डित नेहरु, सरदार पटेल और डा0 राजेन्द्रप्रसाद मुस्लिमों द्वारा नष्ट किये गये सोमनाथ मन्दिर को फिर से बनाने की मंजूरी दे सकते हैं तो सैयद शहाबुद्दीन और अब्दुल्ला बुखारी को राम जन्मभूमि निर्माण का विरोध क्यों करना चाहिये। मध्यप्रदेश के राज्यपाल कुँवर अली महमूद का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि भारत में अनेक मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं। झगड़ा मन्दिर या मस्जिद बनाने का नहीं है, बल्कि कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए इसे गलत ढंग से पेश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मन्दिर बनाने की कोशिश की जानी चाहिये ताकि हमलावरों के हाथों खोई हुई देश की गरिमा वापस मिल सके। श्री पटवा ने कहा कि भारत में ऐसा कोई मुस्लिम नहीं है जो खुद को बाबर के परिवार का बताता हो।

मान्य लेखकों से नम्र निवेदन

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध नेता, लोकसभा में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण को निर्भीकता से प्रस्तुत करने वाले, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्राण स्व0 पं0 प्रकाशवीर शास्त्री की पुण्यस्मृति में हम आगामी दिस॰ 1990 में एक विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

विनम्र निवेदन है कि शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागार करने वाले अपने संक्षिप्त विचार/कविता/संस्मरण आदि मुझे भेजने की कृपा करें। साथ ही सामयिक समस्याओं पर प्रति सप्ताह प्रकाशनार्थ लेख भी भेजें। आर्यमित्र इन्हें प्रकाशित कर अपने को गौरवान्वित समझेगा।

आचार्य इन्द्र देव पाठक
प्रबंध सम्पादक, आर्यमित्र, लखनऊ

व्यावहारिक रूप में हिन्दी कैसे राष्ट्रभाषा बने?

— डा० शकुनचन्द्र आर्य
लालगंज, रायबरेली

बिना राष्ट्रभाषा के कोई भी देश वास्तविक रूप मे एक संगठित राष्ट्र नहीं बन सकता है। यही कारण है कि संसार के सभी राष्ट्रों में कई प्रकार के भाषाभाषियों के होने के बावजूद उनकी कोई न कोई राष्ट्रभाषा अवश्य है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में अंग्रेजी,फ्रेंच, इटालियन तथा आयरिश आदि अनेक भाषाओं के बोलने वाले हैं परन्तु उसकी राष्ट्रभाषा अंग्रेजी है। इसी प्रकार विभिन्न भाषाभाषियों के होने के बावजूद रूस की राष्ट्रभाषा रूसी,फ्रांस की फ्रेंच, जर्मनी की जर्मन,कनाडा की अंग्रेजी,जापान की जापानी,चीन की चीनी आदि हैं।

इसी बात को ध्यान रखकर भारतीय संविधान सभा ने सन् 1948 ई0 में हिन्दी को देवनागरी लिपि में भारत की सरकारी भाषा घोषित किया था। इस संबंध में यह भी निश्चय किया गया था कि "संविधान लागू होने के 15 वर्षों तक केन्द्रीय सरकार के कार्यों में अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनों का प्रयोग होता रहेगा तथा 26 जनवरी 1965 से सभी कार्यों के लिए हिन्दी अंग्रेजी का स्थान लेगी।" परन्तु दुर्भाग्यवश दक्षिणभारत के कुछ दंगों से भयभीत होकर तथा केन्द्र में आसीन कुछ अंग्रेजी समर्थक नेताओं तथा उच्च अधिकारियों के षड्यन्त्र के कारण केन्द्रीय राजभाषा कानून में संशोधन कर ऐसा प्रावधान कर दिया गया कि "जब तक एक भी राज्य चाहेगा अंग्रेजी हिन्दी के साथ साथ देश की सम्पर्क भाषा बनी रहेगी।" निश्चय ही इससे अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिए जीवनदान मिल गया।

दुर्दशा के लिए केन्द्रीयसरकार सबसे अधिक उत्तरदायी -

आशा थी कि उपरोक्त संशोधन के बाद भी केन्द्रीय सरकार राजभाषा कानून के अनुसार हिन्दी को देश की प्रमुख सरकारी भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिये हर सम्भव कदम उठायेगी परन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा कुछ नहीं किया गया जिसका कारण केन्द्रीय सरकार के अधिकांश अधिकारियों तथा कुछ नेताओं का अंग्रेजी समर्थक रूख होना रहा जो कि "हिन्दी कभी नहीं, अंग्रेजी सदैव" के नारे पर विश्वास करते रहे।

उसी का ही परिणाम है कि आज भी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में अंग्रेजी का बोलबाला है तथा हिन्दी पूरी तरह उपेक्षित है। परन्तु उपरोक्त स्थिति के बावजूद भी यदि भारत को एक सुसंगठित,सुदृढ़ एवं गौरवशाली राष्ट्र बनाना है तो आवश्यक है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा व्यावहारिक रूप में उसे देश की राष्ट्र संपर्क एवं सरकारी भाषा बनाने के लिए ठोस कदम उठाये जायें।

राष्ट्रीय भावनाओं के जागरण तथा राष्ट्रवाद की जड़ों को मजबूत बनाने में हिन्दी ने उल्लेखनीय योगदान दिया। यही कारण है कि राष्ट्रपिता महात्मागांधी ने उसे आन्दोलन की भाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस समय भी देश के वे राज्य जहाँ कि हिन्दी भाषा का अधिक प्रचार है अथवा जिनकी राजभाषा हिन्दी है अथवा जो हिन्दी देश की सरकारी भाषा बनाने के समर्थक हैं। जहाँ राष्ट्रीय भावनाओं का प्राबल्य है जैसे गुजरात,महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, बिहार, हरियाणा,राजस्थान तथा मध्यप्रदेश आदि राज्य, वहाँ तमिलनाडु नागालैण्ड,मिजोरम आदि राज्य जहाँ किन्हीं कारणों से हिन्दी विरोध है, अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों के केन्द्र बने हुये हैं इस बात को आज से एक शताब्दी पूर्व आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जो कि स्वयं गुजराती भाषाभाषी थे स्पष्ट रूप से बताया था कि "हिन्दी से ही देश की एकता संभव है।"

नीरदाम प्रयास आवश्यक

ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा उसे व्यावहारिक रूप में देश की सरकारी, संपर्क एवं राष्ट्रभाषा बनाने के लिये निम्नांकित कदम उठायें -

§1§ इस समय देश में जनजागरण एवं आन्दोलन का युग चल रहा है। इसलिये राष्ट्रभाषा हिन्दी के समर्थकों को चाहिये कि वह जनजागरण कर तथा जनआन्दोलन चलाकर केन्द्रीय सरकार को बाध्य करें कि वह संविधान के अनुसार हिन्दी को केन्द्र की सरकारी भाषा बनाने के लिये तत्काल कदम उठाये। यही काम वे राज्यों में अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने के लिये करें।

§2§ इस समय हिन्दी की उपेक्षा एवं अंग्रेजी के वर्चस्व का एक प्रमुख कारण सरकारी नौकरियों में अंग्रेजी की अत्यधिक आवश्यकता है। इस प्रकार वह रोजी रोटी की भाषा बनी हुई है। इस समय आन्दोलन चलाकर केन्द्रीय सरकार को बाध्य करें कि वह केन्द्रीय सरकार की नौकरियों के परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करे तथा हिन्दी माध्यम को प्रोत्साहित करें।

§3§ उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान, मध्यप्रदेश,हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश आदि हिन्दी भाषी राज्य अपना सम्पूर्ण कार्य केवल हिन्दी में करें। एवं अन्य राज्यों के लिये अनुकरणीय हैं। इन राज्यों को चाहिये कि वे एक संयुक्त समिति बनाकर हिन्दी के संबंध में एक सी नीति का अनुकरण करें। एक सी शब्दावली का प्रयोग करें, सम्पूर्ण काम हिन्दी में करने की दिशा में मिलकर कदम उठायें। वे राज्य मिलकर केन्द्रीय सरकार पर दबाव डालें कि वह केन्द्रीय लोक सेवा की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर दे तथा उनके सभी हिन्दी कागज पत्रों को बिना अंग्रेजी अनुवाद के स्वीकार कर ले तथा अंग्रेजी अनुवाद का कार्य वह स्वयं करें।

§4§ राष्ट्रभाषा हिन्दी के समर्थक जन जागरण कर लोगों को प्रेरित करें कि वे अपना लेखन का कार्य हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में करें। अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किसी कार्य के लिये न करें। उपरोक्त उपायों से ही हिन्दी का उत्थान तथा अंग्रेजी का निष्कासन संभव है। आवश्यकता है कि इसकी ओर ध्यान दिया जाये।

ग्रीष्म-योग शिविर सम्पन्न

आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा आयोजित ग्रीष्म-कालीन योग शिविर दिनांक 25-6-90 से 28-6-90 तक आर्यसमाज मन्दिर श्रृंगारनगर,लखनऊ में सुसम्पन्न हुआ। योगाचार्य श्री माण्डाराम आर्य §अलवर§ राजस्थान ने बड़े ही रोचक शैली से आसन-प्राणायाम की व्याख्या प्रस्तुत करते हुये प्रशिक्षुओं को आसन प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया। शिविर में 33 प्रशिक्षुओं ने नियमित भाग लिया। अंतिम दिन सायं श्री आर्य ने गले से 4 सूत की सरिया मोड़कर हाथ से 8 ईटें एक साथ तोड़कर, हाथ से बोतल को फोड़कर हाथ से काँच पीस कर दर्शनार्थियों को रोमांचित कर दिया। उन्होंने अपने इस सत्र के अंतिम संदेश में कहा कि यह प्रदर्शन कोई जादू या करिश्मा नहीं। यह योग प्राणायाम और संयम से शारीरिक बल के प्रतिफलस्वरूप है। शिविर का संयोजन श्री रूपचन्द्र दीपक उपमंत्री जिला सभा लखनऊ ने किया। समारोह के अंत में उपसभा प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने योगाचार्य श्री माण्डाराम जी आर्य को आशीर्वाद देते हुये प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

राकेश-इन्दु-परिणय

श्री मद्दयानन्द बाल सदन लखनऊ के प्रधान श्री अर्जुन देव महाना के पुत्र चि0 राकेश महाना का शुभ विवाह दिनांक 20-6-90 को कु0 इन्दु सुपुत्री श्री जगदीश लाल मदीरत्ता प्रोप्राइटर पापुलर साइकिल अमीनाबाद लखनऊ के साथ सुसम्पन्न हुआ। आचार्य वेदव्रत अवस्थी प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ ने संस्कार को बड़ी ही प्रभावशाली व्याख्या सहित सम्पन्न कराया। नव दम्पत्ति को आशीर्वाद देने के लिए श्री मनमोहन तिवारी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश सहित देश और विदेश के श्री महाना के संबंधी हितैषी व मित्रगण उपस्थित हुये। श्री महाना ने संस्कार उपलक्ष्य में आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर 500/- दयानन्द चिकित्सालय के लिये आर्यसमाज आदर्श नगर को 50/- आर्यसमाज श्रृंगार नगर लखनऊ 50/- श्री मद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर, 101/- आर्य समाज चन्द्रनगर, 101/- वेद प्रचार समिति आलमबाग के लिये सात्विक दान भी प्रदान किया।

महर्षि दयानन्द का ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ

• डा० आनन्द प्रकाश एम०फार्म
संस्थापक मंत्री, महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा, वाराणसी

काशी नगरी में दुर्गाकुन्ड के समीप स्थित आनन्द बाग, वह ऐतिहासिक स्थल है जहाँ पर आर्य समाज के संस्थापक वेदोद्धारक, युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने आज से 120 वर्ष पूर्व, कार्तिक शुक्ला द्वादशी सम्वत् 1926 विक्रमी बुधवार तदनुसार 16 नवम्बर सन् 1869 ईसवी को अपने जीवन का सबसे बड़ा शास्त्रार्थ किया था। उस शास्त्रार्थ की अध्यक्षता तत्कालीन काशी नरेश श्रीमान महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह ने की थी और राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित विवरणों के अनुसार साठ हजार की संख्या में विशाल मानव समुदाय, उस सम्वाद को सुनने के लिये उपस्थित था। काशी नरेश ने जिन तीन सौ प्रतिष्ठित जनों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया था, उनमें से कई अपने समय के ख्याति-प्राप्त साहित्यकार, पत्रकार एवं समाज सुधारक थे। कई सौ व्यक्ति तो पूना जयपुर, कलकत्ता, पटना आदि दूरस्थ स्थानों से भी पधारे थे। अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिये महर्षि दयानन्द अकेले थे और प्रतिपक्ष की ओर से अपने-अपने विषय के सर्वश्रेष्ठ विद्वान समझे जाने वाले स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती, दक्षिणात्य पं0 बाल शास्त्री, श्री माधवाचार्य, श्री वामनाचार्य, राजपुरोहित पं0 ताराचरण तर्करत्न प्रभृति 40 पंडितगण उपस्थित थे। राज्यशक्ति और अपार धन वैभव का आश्रय तो इन पंडितों को प्राप्त था ही। जब शास्त्र चर्चा में पंडितगण पराजित हो गये तो उन्होंने कुटिलता, उद्दंडता और पशुबल का सहारा लिया। इस संकट की भीषण स्थिति में, वहाँ पर शांति व्यवस्था के लिये नियुक्त शहर कोतवाल रघुनाथ प्रसाद जी ने स्वामी जी की प्राण रक्षा की। आर्य समाज, अपने प्रवर्तक की प्राण रक्षा करने के लिये कोतवाल, रघुनाथ प्रसाद जी का सदा ऋणी रहेगा। काशी शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त कर महर्षि ने अपनी और अपने मन्तव्यों की अपराजेयता सिद्ध की और उन्हें विश्व प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इस शास्त्रार्थ का विवरण अनेक पुस्तकों और समचार पत्रों की रिपोर्टों से प्राप्त होता है, जो कल्पनातीत और अत्यन्त स्फूर्ति दायक है।

काशी शास्त्रार्थ, भारत के धर्मक्षेत्र में अद्भूत क्रान्ति उत्पन्न करने वाला महासमर था जिसमें अविचल ईश्वर विश्वासी दयानन्द एकमेव परमात्मा के विश्वास और अपने अद्वितीय ज्ञान बल के सहारे ही अकेला विचार-संग्राम में उतरा था। उस समय आर्यसमाज की स्थापना नहीं हुई थी। आदित्य ब्रह्मचारी ज्ञान-सूर्य परमहंस देव दयानन्द मात्र कौपीन धारण करते थे, संस्कृत में ही सम्भाषण करते थे और अवैदिक मत-सम्प्रदायों का खण्डन करते हुये भ्रमण कर रहे थे महर्षि चाहते थे कि काशी नगरी का विद्वत समुदाय, उनके द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक क्रान्ति में सहयोगी बनें तथा विश्वभर मे वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना का संकल्प करें। इसी पुनीत भावना से सत्यधर्म का निश्चय कराने ओर पाषाण पूजा को वेद विरुद्ध सिद्ध करने के लिये अपनी द्वितीय काशी यात्रा में स्वामी जी ने इस शास्त्रार्थ का आवाहन किया था। इस शास्त्रार्थ के उपरान्त भी स्वामी जी पाँच बार काशी ओर पधारे। जो लोग इस शास्त्रार्थ में स्वामी जी के पराजित होने का असत्य प्रचार करते हैं, उन्हें पता होना चाहिये कि काशी शास्त्रार्थ के उपरान्त भी स्वामी जी हर बार काशी आगमन पर शास्त्रार्थ की चुनौती देते रहे। महर्षि दयानन्द की उस ऐतिहासिक विजय से प्रेरणा प्राप्त कर, सदा उनके मिशन के प्रति अपने समर्पण को दोहराते, रहना, आर्यों का परम दायित्व है।

इस काशी शास्त्रार्थ स्थल (आनन्द बाग) में पत्थरों द्वारा निर्मित बारादरी, जहाँ पर महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ के समय, काशी नरेश एवं पंडित-मंडली के साथ बैठे थे, आज भी विद्यमान है। इस उद्यान के एक भाग में, एक सुन्दर यज्ञशाला का निर्माण हो चुका है, जिसमें दैनिक तथा साप्ताहिक सत्संग होता है। काशी शास्त्रार्थ स्थल के नाम पर एक आर्यसमाज तथा महिला आर्य समाज भी पिछले अनेक वर्षों से कार्य कर रहा है। गत 25 वर्षों से इस स्थल पर कार्तिक शुक्ला द्वादशी का "महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति समारोह" का आयोजन भी जिला आर्य उप प्रतिनिधिसभा वाराणसी के तत्वाधान में किया जा रहा है। अमेठी के राजा साहब राजर्षि रणन्जय सिंह जी का इस स्थल के प्रति बहुत लगाव था। वे इस स्थल को "महर्षि दयानन्द के कीर्ति स्थल" के रूप में विकसित देखना चाहते थे। इस स्थल पर कार्य का प्रारम्भ वास्तव मे उन्हीं की प्रेरणा और मार्गदर्शन से आरम्भ हुआ।

परन्तु इतनी प्रगति से सन्तुष्ट न रहते हुये काशी शास्त्रार्थ से जुड़ी प्रेरणा और इस स्थल के ऐतिहासिक महत्व के अनुरूप, उच्च स्तर के कार्यक्रमों की आवश्यकता अनुभव की गई। देश विदेश से पधारने वाले अनेक ऋषि दयानन्द के भक्त, जो इस काशी शास्त्रार्थ के महान संदेश से अवगत हैं और शास्त्रार्थ के उपरान्त महर्षि के प्रति किये गये अत्यन्त अभद्र व्यवहार से परिचित हैं, इस स्थल पर पहुँच कर भाव-विह्वल हो जाया करते हैं। उनमें से अनेक यह सुझाव देते रहे कि एक उच्च स्तरीय संस्था का गठन कर, वैचारिक कार्यक्रमों का संचालन तथा काशी शास्त्रार्थ की समृति में" "दयानन्द कीर्ति भवन" का निर्माण कराया जाये। कई वर्षों के गम्भीर विचार विमर्श तथा व्यापक सम्पर्क के उपरान्त जनवरी सन् 1987 से एक संस्था के गठन का प्रयास विधिवत आरम्भ हुआ। इस संस्था का नाम "महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा" रखा गया और शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी महाराज इसके संस्थापक बने। प्रारम्भिक तीन वर्षों में अनेक अप्रत्याशित कठिनाइयों का सामना करना पड़। । पर्याप्त संघर्ष के उपरान्त गत 29 मार्च 90 को इस संस्था का पंजीकरण हो गया। (सोसायटी रजिस्ट्रीकरण संख्या 650 है।)

इस संस्था के मुख्य ध्येय को इन शब्दों में घोषित किया गया है- "युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कार्तिक शुक्ला द्वादशी सम्वत् 1926 विक्रमी तदनुसार 16 नवम्बर सन् 1869 ईसवी को काशी स्थित आनन्दबाग (दुर्गाकुन्ड) में इतिहास प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया, जिसका उद्देश्य सद्धर्म की पुर्नस्थापना तथा ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान कराना था। इस शास्त्रार्थ में उनकी अपराजेयता सिद्ध हुयी ओर उन्हें विश्व-प्रसिद्धि मिली। उस ऐतिहासिक घटना की स्मृति से सतत् प्रेरणा प्राप्त कर महर्षि द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक क्रान्ति को चिरस्थायी रखना ओर आर्य समाज के अंतर्गत शास्त्रार्थ परम्परा को शक्ति प्रदान करना, इस सभा का प्रमुख उद्देश्य है।" सभा के अंतर्गत अनेक वैचारिक कार्यक्रमों का सूत्रपात किया जा चुका है शास्त्रार्थ स्थल का वह भाग, जहाँ पर बैठ कर महर्षि ने शास्त्रार्थ किया था, के अधिग्रहण का प्रयास भी चल रहा है। आर्य जगत को इस सभा का संक्षिप्त परिचय देना, इस लेख का उद्देश्य है। आपसे प्रार्थना है कि अपने सुझाव इस पते पर भेजने की कृपा करें।

श्री यज्ञदत्त गौतम,
प्रधान,
महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा,
पंजीकृत कार्यालय,
बी03/2 लेन नं0-13 रवीन्द्रपुरी,
वाराणसी (उ0प्र0)

□

आर्यसमाज को आगे कैसे बढ़ायें

● गंगा प्रसाद विद्यार्थी, जबलपुर

श की कुछ बडी समाजों को छोडकर हीं भी उपस्थिति पर्याप्त नही होती। कर भी जोर-जोर से कृण्वन्तो विश्व-आर्यम् का नारा लगाने वाले और जय बोलने वाले सन्तुष्ट हैं। पहले दूरस्थ रों से भी आर्य परिवार स्त्री पुरुष । बालक प्रति सप्ताह आर्यसमाज के सत्संगों में आनन्द व उत्साहपूर्वक भाग ते थे, आर्यो में बडा मेल व बल था। अब निरपेक्ष भाव से आते हैं और एक दूसरे का खण्डन करके अपनी विद्वता प्रदर्शित करते हैं जिससे रहा-सहा प्रेमभाव भी घटता जाता है। अधिकारीगण पद के कारण मजबूरन आते हैं, कुछ भजन गाने आते है और कुछ भाषण देने। वही घिसी पिटी पुरानी बातें कहते रहने से न तो ज्ञान वृद्धि होती है और न संगठन या प्रेम में वृद्धि। स्थिति को सुधारने में कुछ सुझाव सहायक हो सकते हैं।

प्राय प्रत्येक आर्यसमाज सप्ताह में सातों दिन लगभग दिनभर खुले प्रात काल से रात्रि तक। प्रत्येक समाज में कम से कम एक सन्यासी या वानप्रस्थ अवश्य रहे। एक सक्क और एक पुरोहित भी रहे तो और अच्छा होगा परन्तु वे आपस में लडें नहीं एक दूसरे की निन्दा या चुगली न करें। अवांछित व्यक्ति को तुरन्त हटा दिया जाय। उनको लेकर आर्य समाज में दल न बनें। प्रतिदिन प्रात साय दोनो समय या एक समय यज्ञ हो।

आर्यसमाज में प्रतिदिन प्रात साय वाचनालय, पुस्तकालय पुस्तक बिक्री विभाग और हवन सामग्री इत्यादि का बिक्री की व्यवस्था हो। घाटा सहकर भी बेचने वाले को दस प्रतिशत कमीशन दिया जाये।

सन्यासी, पुरोहित व अधिकारीगण प्राय प्रतिदिन एक या दो सदस्यों के घर पर अवश्य जाये। कार्यक्षेत्र सुविधा-नुसार बॉट लें परन्तु तीन महीने में एक बार प्रत्येक सदस्य के घर पर अवश्य जाया जाये। उसका लेखा रखा जाय कि कोई सदस्य छूट न जाये। सदस्यों के घरों में सभी को सन्ध्या व प्रार्थना के मत्र सिखाए जाय और दोनो समय सध्या करने की अनिवार्य आदत डाली जाय। सध्या नहीं तो उस वक्त भोजन भी नहीं।

प्रत्येक समाज में मुख्य सम्मिलित समाज के अतिरिक्त स्त्री समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य वीरदल और आर्य बाला दल संगठित व सक्रिय किये जाये। उनमें सत्यार्थ प्रकाश व धर्म शिक्षा की परीक्षायें हों। उनमें आपस में वाद विवाद प्रतियोगिता तथा भजन गायन इत्यादि की सांस्कृतिक प्रतियोगितायें भी हो और विजेताओंको पारितोषिक भी दिए जाये।

बडे नगरो व गाँवो में एक से अधिक समाजें खोली जाये। जहाँ भवन न हों वहा सदस्यों के घरों पर क्रमश सत्संग हो। जिस नगर में एक से अधिक समाजें हो उनका महीने में एक दिन सम्मिलित सत्सग हो क्रमश सभी समाजों में। यदि यह साप्ताहिक सत्सग के अतिरिक्त सप्ताह के दूसरे शनिवार या रविवार को शाम को लगभग ४ बजे या 1/2 घटे के लिए हो तो सबको सुविधा होगी।

जहाँ अधिक समाजें हो वहाँ प्रत्येक समाज में वर्ष में एक पर्व सम्मिलन रूप से मनाया जाय और व्यवस्था उसी समाज के हाथ में रहे।

प्रत्येक समाज का वार्षिकोत्सव अवश्य हो चाहे शनिवार व रविवार दो दिनों का ही क्यों न हो प्रतिनिधि सभा इसके लिये उपदेशक व भजनोपदेशक दें या स्थानीय व्यवस्था हो।

प्रत्येक समाज में वर्ष में दो बार सामूहिक सहभोज अवश्य हो चाहे चदा करके व्यवस्था की जाय सदस्यगण अपने घरो से पक्का भोजन लावें और मिल बॉटकर खा लें।

प्रत्येक बडी समाज में एक प्रचार-मत्री व प्रचारक दल हो और प्रत्येक सप्ताह में छुट्टी के दिन किसी सार्वजनिक स्थल पार्क या चौराहे पर एक या दो घण्टे प्रचार किया जाये। जिसमें भजन व्याख्यान वाद विवाद प्रतियोगिता शास्त्रार्थ या प्रश्नोत्तर अवश्य हो।

प्रत्येक समाज में एक दिन चाहे वार्षिकोत्सव के साथ या अलग से सांस्कृतिक कार्यक्रम गायन, वादन, लघु नाटिकायें इत्यादि रखी जाये और नगर के सभी सम्भ्रान्त व्यक्तियों व अधिकारियों को व्यक्तिगत रूप से निमत्रित किया जाये और उन्हें आर्यसमाज का साहित्य भेंट किया जाय।

समाज के सदस्यों व अधिकारियों में आपसी विवाद व मनमुटाव कम करके प्रेम व भाइचारा बढाया जाय। दृष्टि पदों पर न होकर सेवा पर हो। जिसकी जितनी ज्यादा वर्तमान में सेवा उसका उतना ही अधिक मान सम्मान व प्रशसा। निन्दित व्यक्ति यदि समाज में घुस जाय तो उन्हें युक्तिपूर्वक बिना विवाद बढाये दूर कर दिया जाये इसके लिये अनुशासन पालन की अनिवार्यता सभी पर हो चाहे वह कितना ही बडा व्यक्ति क्यों न हो।

आर्यो की सच्चे मन से की गई प्रार्थना व प्रयत्न का सुफल अवश्य होगा। ●

शताब्दी समारोह

आर्य वेद प्रचार मण्डल फैजाबाद के तत्वाधान में उत्तर प्रदेशीय हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्द्धशताब्दी समारोह।

दिनांक 16,17,18 सितम्बर 90 को भव्य रूप से सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर प्रदेश के हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों को सम्मानित किया जावेगा जिन्होने 1939 ई0 में निजाम शाही के क्रूरतापूर्वक अत्याचारों के विरोध में सत्याग्रह किया था।

ये स्मारिकायें

● विद्यानन्द सरस्वती
दिल्ली

स्मृति सदा पूर्वदृष्ट, पूर्वश्रुत या पूर्ववृत की होती है। अर्थात्-पहले कभी देखा-सुना गया था, किन्तु वर्तमान में उपलब्ध नहीं है उसका उदबोधक स्मारक या स्मारिका कहाता है। जो कुछ वर्तमान में हमारे प्रत्यक्ष का विषय है अर्थात जिन्हें हम वर्तमान में आये दिन देखते-सुनते रहते हैं, उनका न स्मारक बनता है और न उनकी स्मारिका अपेक्षित होनी है। किन्तु वर्तमान में स्मारिका नाम से जो प्रकाशन होते हैं, वे जो नहीं रहे उनका स्मरण कराने के लिए नहीं, बल्कि जो हैं उनके आत्म प्रचार के माध्यम होते हैं।

किसी सस्था की स्मारिका में उन लोगों के चित्र और परिचयात्मक विवरण होने चाहिए जिनका उसके निर्माण, विकास और उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस दृष्टि से कुछ दिन पूर्व प्रकाशित आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की स्मारिका सर्वथा निराशापूर्ण है। इस सभा की स्थापना और निर्माण में महात्मा नारायण स्वामी प0 इन्द्र-विद्यावाचस्पति, ला0 देशबन्धु गुप्ता डा0 युद्धवीर सिंह, प्रो0 राम सिंह, चौधरी देशराज, डाक्टर जी0एल0दत्ता, ला0 नारायणदत्त, प0 रामचन्द्र देहलवी जैसे मनीषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सभा का गौरव बढाने वालों में मुख्य थे- डा0 राजेन्द्रप्रसाद, सरदार-वल्लभ भाई पटेल, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, डा0 श्यामाप्रसाद मुकर्जी, नरहरिविष्णु-गाडगिल, श्री गणेशनाथ देव मावलंकर श्री अनन्तशयनम आयगर, बख्शी टेकचन्द, जस्टिस मेहरचन्द्र महाजन, स्वामी सत्यानन्द, महात्मा आनन्द स्वामी, प0 गंगाप्रसाद उपाध्याय, डा0 कैलाशनाथ काटजू, श्री जगजीवनराम, प0 नेकराम शर्मा, बाबू श्रीप्रकाश, हरेकृष्ण महताब, प0-रविशकर शुक्ल, श्री जुगलकिशोर बिड़ला, श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन महाशय-कृष्ण आदि। ये वे लोग हैं जिनको देश भर में श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। किन्तु आर्य केन्द्रीय सभा की स्मारिका में इनमें से एक का भी स्मरण कराने के लिए चित्र देने की आवश्यकता नहीं समझी गई, जबकि उक्त महानुभावों की तुलना में सर्वथा नगण्य व्यक्तियों के तीन-तीन, चार-चार चित्रों को स्थान मिल गया। यह स्मारिका पूर्वजों के प्रति कृतघ्नता व आत्म-प्रशसा की स्मारिका है सभा की नहीं। ●

प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिनांक 9 से 12 जून तक आर्यवीर व शिक्षक प्रशिक्षण शिविर पटेल धर्मशाला किदवई नगर कानपुर में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री व श्री राम प्रसाद आचार्य के प्रभावशाली व्याख्यान हुए तथा श्री ओम प्रकाश आर्य इंजीनियर का विशेष सहयोग रहा। -माताप्रसाद शास्त्री, नोनापुर कानपुर देहात ●

मानव और मानवता के छः शत्रु

स्वा० ब्रह्मानन्द "वेदभिक्षु"
चन्दौसी (मुरादाबाद)

मानव की आकृति में मानवता का दर्शन बाह्यनेत्रों से नहीं होता। उसे देखने व समझने के लिए विवेकशीला बुद्धि चाहिये। जहाँ समस्त कर्म कर्तव्य का विवेक रखकर होते हैं, वहीं मानवता का वास है और जहाँ शासन में रख कर कार्य कराये जाते हैं, वहीं पशुत्व का वास समझें। मानव का सच्चा - भूषण मानवता ही है। किसी प्रगति मान राष्ट्र के अभ्युदय में भी वहाँ के कर्तव्य परायण मानवों का ही योग होता है। मानवता का स्रोत वेद ही है। परम कारुणिक ईश्वर ने मानवों क लिये वेद में पदे-पदे उद्बोधन किया है। आइये एक वेद मन्त्र का अध्ययन करें।

उलूकयातुं शुशुलूक यातुं जहिश्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ।। (अथर्ववेद, 8/4/22)

1- शब्दार्थ- उलूक=उल्लू=अन्धकार का प्रतीक=अज्ञान रूपी दुर्गुण, यातुम =आचरण करने वाले=व्यवहार करने वाले=कुपथ गामी को)

2-शुशुलूक-रात्रि में कर्ण कटु बोलने वाले पक्षी की भाँति=छुपकर निन्दा - चुगली करने वाला स्वभाव। जहि= मार भगये।

3- श्व-श्वान=कुत्ता=कुत्तों के समान, मत्सरी, जातिद्रोही, चाटुकार और छोटों पर 'गुर्रा-गुर्रा कर रोग जमाने वाले। उत=और।

4-कोक=क्रूर भेड़िया का सा स्वभावी, चुपचाप आक्रमण करके लूटने-पीटने वाले।

5- सुपर्ण=बाज पक्षी के समान= अपने से छोटों, कमजोरों पर झपटकर हमला करने वाला और सताने वाला।

6- गृध=गीध का सा वर्तने वाला, लोभी। परधन पर आँख लगाये बैठने वाला -दुष्कर्मी।

दृषदा+इव= जिस प्रकार पत्थर से मिट्टी का घड़ा टट करके चकनाचूर हो जाता है, वैसे ही, प्र+मृण=भली प्रकार से नष्ट कर दे, रक्षः= इन राक्षसों को, इन्द्र = हे राजन् या आत्मन्।

आइये, अब इनका संक्षेप में अध्ययन करें-

(1) प्रथम उल्लू=अज्ञान का प्रतीक है। अज्ञान, मनुष्य, समाज, राष्ट्र और विश्व का शत्रु है। अज्ञान से ही मानव, दानव की श्रेणी में गिना जाता है। वर्तमान में मानव और मानवता के रक्त का प्यासा, मानव कंकाल में छिपा दानव दहाड रहा है। सर्वत्र, असुरक्षा, भय, त्रास और हा-हा कार मचा है, क्यों? धर्म या मजहबों के, भाषाओं के और रंग-रूपों सके आधार पर विश्वभर को राक्षसी-सांप्रदायवाद अपने प्रभुत्व में लेना चाह रहा है।

अज्ञान् का उत्स मजहब (संप्रदाय) ही है, जो कहर मानव समाज पर इस मजहबी पुत्र अज्ञान ने ढाये हैं, उनका साक्षी इतिहास है। इसलिये, सुख, शान्ति और समृद्धि के लिये अज्ञान व उसके कारण का मूलोच्छेद होना आवश्यक है।

(2) शुशूलूक=रात्रि में कर्ण कटु भाषी पक्षी।
यह निन्दा का प्रतीक है। निन्दक या चुगलखोर भी शत्रु ही है। इस प्रवृत्ति के लोग, व्यक्तिगत कार्यों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय घातक कार्यों को कर बैठते हैं। मजहबी अज्ञान, समान मजहबी से प्रीति करता है। समाज व राष्ट्र से नहीं। उसका उद्देश्य व समानता अपने जैसों से ही पूर्ण होते हैं। ऐसे ही तत्व आज अराजकता एवं अशांति फैला रहे हैं। इनको मसल दो।

(3) श्व=श्वान=मत्सर और चाटुकारिता का दोष। जब अज्ञान से अन्धा हुआ दानव, घात-पात कर जुट जाता है, तो उसमें मत्सर और चाटुकारिता दोष उत्पन्न हो जात हैं। वह सु-पथ गामी स्वजाति और राष्ट्र से भी बैर करता है तथा जब पकड़ में आता है तो कुत्ते की भाँति दुम हिला-हिलाकर चाटुकारिता करता है। पुनः समय पाकर वह अपनी दुष्टता पर उतर आता है। ऐसे घातकों को मार दो।

(4) कोक=भेड़िया का सा क्रूर स्वभव। निर्दयी। स्वार्थवश पर पीडक। अज्ञान अंधकार से पीड़ित, निन्दक और जातिद्रोही, इस अज्ञान के वशीभूत हुआ, क्रूर भी बन जाता है। उसकी आँखों पर मतों का सुरमा लगा होने से सत्यता को नहीं देख पाता है और सत्य पथ पर चलने वालों तथा राष्ट्र भक्तों पर भेड़ियों जैसा हमला करने लग जाता है। ऐसे दुष्ट प्रवृत्तियों को समाप्त कर दो।

(5) सुपर्ण= बाज, घमण्ड का प्रतीक है। कमजोर शासकों की तुष्टि नीति से ऐसे पनित जन, घमण्ड में आ जाते है और धर्म, जाति तथा राष्ट्र को विखण्डित करके अपना राज्य तक स्थापित कर देते हैं। दुष्प्रवृत्तियों से वह बाज नहीं आते- इस घमण्ड को भी, मिटा दो।

(6) गृध्रः =गीधा, लोभ का प्रतीक। अज्ञान, निन्दा, मत्सर, क्रोध , घमण्ड, इन पाँच दोषों के बाद, छठा दोष लोभ है। गीध हमेशा मरे हुये पशु-पक्षिओं की लाशों का मांस नोचता रहता है। ऐसे ही यह मानवता के हत्यारे-शैतान, धर्म, जाति और राष्ट्रद्रोही भी भली जनता का शोषण सकरते रहते हैं। "ऋग्वेद" में आया है कि "जहि पणिं वृको हिसः।" उस समाज शोषक का नाश कर दो, क्योंकि वह लोभ के वश हुआ, भेड़िया का सा व्यवहार करता है। इन "षट रिपुओं" का दमन करो।

उनके पाकिस्तानी आका

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
एडवोकेट, कानपुर

उनके पाकिस्तानी आका,
उनको जैसा समझाते हैं।
वे वैसा ही करने लगते --
वे चाभी, जिधर घुमाते हैं।
हैं कभी पुलिस पर हमला करते।
कभी फेंक देते हैं बम।
वे पुलिस और सैनिक-दल की
संख्या करते रहते हैं कम।
काश्मीर प्रान्त से भाग-भाग कर
पाकिस्तान चले जाते।
आतंकवाद औ उग्रवाद
की वहाँ विकट शिक्षा पाते।
हथियार चलाना वहाँ सीख।
हथियार साथ लेकर आते।
फिर भारतीय क्षेत्रों में आकर
वे ही हैं आफत ढाते।
हत्याएँ करते, आग लगाते।
भारी तोड़-फोड़ करते।
आफत के परकाले बनकर
शैतानों से वे होड़ करते।
अलगाववाद की बाते करते।
हैं स्वतन्त्र रहने की कहते।
भारत के सब अहसान भूल
पाकिस्तानी रौ में बहते।
काश्मीर और पंजाब प्रान्त
में आफत करते हैं भारी।
हत्याएं, खून-खराबे की
घटनाएं करत हैं सारी ।
यों पाकिस्तान देश भारत में
हत्याएं करवाता है।
जाने उसको क्या मिल जाता?
गड़बड़ी यहाँ मचवाता है।
भारत की समृद्धि औ उन्नति
उसको न तनिक भी भानी है।
गड़बड़ी यहाँ करवा करके
फूलती दुष्ट की छाती है।
औरों को दुख में देख सदा --
शठ के मन को सुख मिलता है।
औरों का रोदन-क्रन्दन लख कर
हृदय नीच का खिलता है।

सेवारत आर्यवर की आवश्यकता

सुयोग्य सुसंस्कृत एम०ए० (संस्कृत) प्रथम, प्रथम उत्तीर्ण एवं बी०एड व एम०एड०, 25 वर्षीया गोरी आकर्षक 5-3" स्लिम तथा नितान्त विनम्र एवं कुशल कन्या के लिये आर्य उच्च सेवारत वर की आवश्यकता है। कन्या ने पी०एच०डी० का कार्य लगभग पूरा कर लिया है तथा वेदों पर धारावाहिक प्रवचन करती है। योग्यता व गुणों के आधार पर जाति बंधन शिथिल। शीघ्र चित्र सहित पूर्ण विवरण भेजें।

प्रो० बुद्धि प्रकाश आर्य
आर्य महोपदेशक
रामपुरा हाउस रामगंज
अजमेर (राज०)

आज के संदर्भ में:-

आर्यवीर दल- एक प्रेरक संगठन हेतु "कुछ आवश्यक सुझाव

'रामाज्ञा' आर्यपुत्र बौद्धिकाध्यक्ष
आर्यवीर दल पूर्वी, उ.प्र

वर्तमान सकट -

स्वामी श्रद्धानन्द जी के अमर बलिदान के बाद आर्य जगत में आर्य युवकों के एक सैनिक सगठन की आवश्यकता आर्य मनीषियों द्वारा अनुभव की गयी, जिसके फलस्वरूप महात्मा हसराज की अध्यक्षता में आर्यवीर दल की स्थापना की गयी। इस सगठन का सर्वाधिक दुःखद पहलू तो यह है कि अब तक इसका सही इतिहास आर्यवीरों के सम्मुख नहीं आ पाया है जबकि सर्वप्रथम किसी सगठन का इतिहास प्रकाशित होना अति आवश्यक होता है। आज रूप से साहित्य, जो सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित किये गये हैं, वह इस सगठन का सम्पर्क ज्ञान कराने में असमर्थ है। जहाँ राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ अपनी मासिक बौद्धिक पुस्तिकाओं व अन्यान्य छोटे-बड़े साहित्यों द्वारा अपनी कार्य विस्तार योजना को गत पचासों-वर्षों से शहर से लेकर ग्रामीण अचल की शाखाओं तक अविराम गति से पहुँचा रहा है वहीं इस सगठन का एकमात्र साप्ताहिक पर्व आर्यवीर विजय वर्तमान में निष्प्राण है, जिसे पाठक अच्छी प्रकार जानते ही होंगे। आर्यवीर दल के बिना, निश्चित रूप से मृत प्राय आर्यसमाजों को ।।शव।। बनने से, आगे आने वाले दिनों में कोई रोक नहीं सकता। आर्यसभाओं व सभाओं द्वारा तो अपने नियमों में आर्यवीर दल के गठन व उसके सरक्षण की बात बल पूर्वक कही गयी है परन्तु कार्य की प्रगति का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि अब तक यह मात्र कागजों में सिमट कर रह गया है। आज अनेकों भव्य समाज मंदिरों पर कब्जा जमाये बैठे हुये बहुसख्यक तथाकथित आर्यों को इस सगठन के नाम तक की भी जानकारी नहीं है तो आगे उनसे और क्या कहा जा सकता है।

आर्यवीर दल का सगठन गत वर्षों में जिन हाथों में आया व वर्तमान में हैं, उनमें से अधिक बधुओं की दृष्टि सगठनात्मक कम, राजनैतिक अधिक है जिससे सगठन को लगातार बाधाएँ पहुँच रही है। इस सगठन को विश्वव्यापी बनाने का विज्ञापन मात्र एक छलावा है। स्वदेश में ही इसकी दशा का अवलोकन कर सारी पोल खोली जा सकती है। गत वर्षों में इस कार्य के सफल क्षेत्रों हरियाणा व पश्चिमी उ0प्र0 के सारे गढ़ अब धराशायी हो चुके हैं। इसका मुख्य कारण समाजों द्वारा इस तरफ हृदय से, ध्यान न दिया जाना ही है।

आर्यवीर दल की आवश्यकतायें -

§1§ देश की सम्पूर्ण समाजें वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुये इस युवा सैनिक सगठन पर अपनी आय का कम से कम 50% §पचास प्रतिशत§ खर्च करें।

§2§ सभाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के सबंधित साहित्यों को आर्य विद्वानों द्वारा सृजित करवाकर उन्हें प्रोत्साहित करते हुये पुरस्कृत भी किया जाये।

§3§ जहाँ समाज के सदस्यों द्वारा इनकी गतिविधियों में रुचि ली जाय वहीं सामूहिक शोभा यात्राओं में इनके द्वारा सैनिक वेष धारण करने में भी कोई सकोच न किया जाय। जैसे सघ का बूढ़ा से बूढ़ा स्वयसेवक भी अपना गणवेष धारण करने में गौरव की अनुभूति करता है।

§4§ प्रशिक्षण शिविरों से उत्साही कार्यकर्ताओं को प्रचारक बनाने की दिशा में प्रेरित किया जाय। विशेषकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का चयन इस दिशा में क्रान्तिकारी कदम सिद्ध हो सकता है।

§5§ इस संगठन के वरिष्ठ पदों पर आर्य वानप्रस्थियों को नियुक्त कर उनके सहायक के रूप में शारीरिक व बौद्धिक रूप से उन्नत आर्य युवकों को रखा जाय। ध्यान रहे कि संबंधित वानप्रस्थ जनों में पांडित्य की आभा व वक्तृत्व कौशल अपेक्षित रूप में विद्यमान हो।

§6§ कार्यकर्ताओं के चयन में सच्चे अर्थों में आर्ययुवकों पर ही ध्यान दिया जाय। समझौतावादी दृष्टिकोण व सकरे मार्ग से शीघ्र लक्ष्य प्राप्त करने की कोशिश नाकाम होते देर नहीं लगेगा। सघ के द्वितीय सरसघ चालक श्री गुरुजी ने किसी भी सगठन को अपने पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति की शीघ्रता में शार्टकट मार्ग अपनाने की मनाही की थी परन्तु सघ गत वर्षों से उसकी अवहेलना के कारण वर्तमान में अपना प्रारम्भिक स्वरूप बहुत अधिक मात्रा में खो चुका है अतएव हम सावधान रहें।

§7§ प्रत्येक समाज भवनों में आर्यवीर दल का एक विधिवत कार्यालय हो जिसका सम्पूर्ण खर्च आर्यसमाजें वहन करें।

§8§ जनपद केन्द्रों को मजबूत कर विकास खण्ड, पश्चात ग्रामीण इकाईयों तक कार्य को फैलाया जाय।

§9§ समय-समय पर कार्य की प्रगति का लेखा-जोखा त्रैमासिक, षट्मासिक व वार्षिक बैठकों में किया जाना आवश्यक है। आवश्यकता पड़ने पर आपात बैठकें भी बुलायी जायें।

§10§ जनपद स्तर पर एक मासिक बैठक अवश्य हो। प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं से सतत सम्पर्क बनाकर उन्हें इस कार्य के प्रति प्रेरित करने के लिये जनपदीय स्तर पर एक-एक पूर्णकालिक प्रचारकों को नियुक्त किया जाये।

§11§ यदि कोई गृहस्थ आश्रम का कार्यकर्ता, इस कार्य में अपनी निष्ठा व्यक्त करता हो तो उसे कुछ सम्पन्न समाजें आपसी सहयोग से आर्थिक चिन्ता से मुक्त कर दें, जिससे कि वह निश्चिन्त हो कार्य कर सके।

§12§ प्रवासी कार्यकर्ताओं की एक श्रृंखला तैयार करने की योजना को गहन विचार-विमर्श के बाद क्रिया रूप दिया जाये।

§13§ कार्यकर्ताओं की पूर्ण योग्यता के लिये तीन शिक्षण वर्ग विभिन्न स्थानों पर लगाये जाये।

आइए। अब जागरण की इस प्रभात वेला में हम सब कार्य की दिशा में आगे बढ़ते हुये आर्यवीर दल के माध्यम से सदाचारी, शाकाहारी, चरित्र-सम्पन्न व वैदिक, धर्म-ध्वजा को हिमालय पर फहराने का भीष्म सकल्प लेकर चल पड़े। उत्साही युवकों का शीघ्रातिशीघ्र एक मच खड़ा कर "अस्माक वीरा उत्तरे भवन्तु" का स्वप्न साकार करें। ◘

शोक समाचार

आर्यसमाज सिरसी §मुरादाबाद§ के पुराने सदस्य जिनकी आयु 88 वर्ष थी 17 जून को निधन हो गया समाज ने शोक प्रस्ताव पारित कर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा शोक-सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

आर्यसमाज भारत सरकार से मांग करे।

§1§ "भारत सरकार हिन्दी के स्थान पर संस्कृत को राष्ट्रभाषा माने तथा भारत के समस्त विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण अनिवार्य करे। समस्त विज्ञान, इंजीनियरी तथा डाक्टरी का प्रशिक्षण संस्कृत भाषा के माध्यम से हो। विद्यालयों में प्राचीन वेद वेदांगों दर्शन उपनिषदों का पठन पाठन चालू हो।"

सन् 51 में भरत की राष्ट्रभाषा हिन्दी उसकी व्यापकता के आधार पर मानी गई थी लेकिन हिन्दी संस्कृत की अपभ्रंश भाषा है। अत्यन्त प्राचीन काल से ढाई हजार वर्ष पूर्व राजा भोज के समय तक संस्कृत भारत की राष्ट्रभाषा रही थी। प्रान्तीय भाषाये भी थीं। लेकिन समस्त प्रान्तों के लोग संस्कृत भाषा में अपना वार्तालाप किया करते थे तथा समस्त प्रान्तों में वेद वेदांगों का पठन पाठन होता था। संस्कृत पठन पाठन में मुस्लिम शासन ने बाधायें डालीं या कोई प्रोत्साहन नहीं दिया, अंग्रेजी शासन में भी संस्कृत उपेक्षित रही तथा देश की तथाकथित स्वतन्त्रता में भी संस्कृत उपेक्षित होकर मृतप्राय हो गई है। संस्कृत हिन्दुओं की धार्मिक भाषा है यदि संस्कृत भाषा नही रहेगी तो वैदिक हिन्दू धर्म भी नहीं रहेगा। वैदिक हिन्दू धर्म के बिना हिन्दुओं का अस्तित्व कहाँ होगा हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई बनेंगे पर हिन्दू हिन्दू न रहेंगे। हिन्दी हमारे धर्म की रक्षा करने में असमर्थ है। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव इन बातों को हिन्दी कहाँ बता पायेगी तथा ब्रह्मचर्य का ज्ञान ही आस्तिकता, धर्म का ज्ञान तो केवल संस्कृत के माध्यम से ही होगा। आर्यसमाज केवल आर्यसमाजियों की संस्था न मानी जाकर भारत तथा विश्व के समस्त मानवता प्रेमी व्यक्तियों प्रतिनिधि संस्था मानी जानी चाहिये। सार्वदेशिक सभा एक परिपत्र निकाल कर भारत की समस्त आर्यसमाजों से कहे कि वे भारत सरकार से विद्यालयों में संस्कृत शिक्षा की माँग करें तथा उन माँग पत्रों पर हजारों व्यक्तियों के हस्ताक्षर करा कर राष्ट्रपति भारत सरकार को माँग पत्र भेजें तथा उन माँग पत्रों की एक एक प्रति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन को भी भेजें।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
निकट आर्य समाज मन्दिर
गुन्नौर §बदायूँ§

धर्म एक है, अनेक नहीं

श्रवणलाल शर्मा
मंत्री आ. स. बारां

आर्य समाज बारां, जिला कोटा के 59 वें वार्षिक उत्सव पर दिनांक-17 मई को सायं आयोजित धर्म और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में ओजस्वी भाषण करते हुए वेद कुरान व बाइबिल के प्रकाण्ड विद्वान पंडित शान्ति प्रकाश-शास्त्रार्थ महारथी ने कहा कि धर्म एक है अनेक नही। एक धर्म वैदिक धर्म है शेष हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख आदि सब मत मजहब और सम्प्रदाय है। अपने जीवन में किये सैकड़ों शास्त्रार्थों का बारां के मौलवी मौलाना-जनाब हबीबुल्ला व अन्यों की उपस्थिति में अपना अनुभव सुनाते हुए पंडित जी ने कहा कि आर्यसमाज ही राष्ट्र का सच्चा रक्षक और सजग प्रहरी है। उसके मन में मुसलमानों के प्रति रंज मात्र भी पूर्वाग्रह नही है। वह दिल से चाहता है कि मुसलमान और ईसाई मुसलमान और ईसाई रहते हुये वैदिक धर्म व वैदिक संस्कृति की धारा में मिल जाय। सम्मेलन में भजनों उपदेशक अमर सिंह आर्य, व्रजपाल शर्मा कर्मठ और स्वामी शिवानन्द-मस्ताना ने राष्ट्र की वर्तमान दो बड़ी समस्याओं पंजाब और कश्मीर समस्या पर विचार कर उसे हल करने में आर्य समाजियों से आग्रह किया कि वे सत्य अर्थों में राष्ट्र के जनमन को जगायें। कोटा के मजदूर नेता और आर्यसमाज के विद्वान कार्यकर्ता डा0 रामकृष्ण आर्य ने सम्मेलन में उपयुक्त विषयक प्रस्ताव पढ़ते हुए कहा कि- कोटा के पुलिस प्रशासन ने निष्पक्ष और तटस्थ भाव से विस्फोटक पदार्थों एवं हथियारों का जो घर-घर जाकर तलाशी अभियान चलाया है वह कोटा के इतिहास में सबसे अच्छे कार्य की शुरूआत है। आर्यसमाज बारां के 59 वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर 17 मई को सायंकाल आयोजित धर्म और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में उपस्थित सभी स्त्री पुरुष पुलिस प्रशासन की इस अभियान का खुले दिल से समर्थन करते हैं। और राज्य सरकार से निवेदन करते हैं कि इस प्रकार का अभियान किसी समुदाय विशेष को ध्यान में न रखते हुए, न केवल कोटा नगर कोटा जिला ही नही अपितु सम्पूर्ण राजस्थान प्रान्त के सभी सम्पूर्ण गड़बड़ वाले क्षेत्र में चलाये।

यह सम्मेलन प्रान्त के राजनैतिक दलों के कर्ता-धर्ताओं से भी निवेदन करता है कि वे वोटों के स्वार्थ के पीछे किन्ही बहुसंख्यक अथवा अल्पसंख्यक विशेष को भड़का कर उन्हें गलत दिशा में न ले जाय। सम्मेलन में कोटा के जनता दल, कांग्रेस और मार्क्सवाद पार्टी के उन नेताओं की भर्त्सना की जो शान्ति प्रिय मुसलमानों को अपने वोटों के स्वार्थ के खातिर भड़का रहे है। उनसे यह भी आग्रह किया कि वे पुलिस को साम्प्रदायिक घोषित न कर उसे अपना कार्य करने दे। सभा में उपस्थित स्त्री पुरुषों ने हाथ खड़े कर सर्व सम्मति से प्रस्ताव को पारित किया।

सम्मेलन के अन्त में अजमेर से पधारे प्रो0 धर्मवीर का देश की साम्प्रदायिक समस्याओं और उसके समाधान पर चिन्तन पूर्ण भाषण हुआ। सम्मेलन का संचालन समाज के प्रधान भगवती-प्रसाद आर्य ने किया।

समाज के मन्त्री श्रवणलाल-शर्मा ने विज्ञप्ति जारी कर बताया कि आर्यसमाज बारां का यह उत्सव 16 मई को बारां नगर में जलूस निकालने के साथ प्रारम्भ हुआ। जलूस को सफल बनाने में, बारां, कोटा, केलवाड़ा, छीपाबड़ोद आदि स्थानों के आर्यो की प्रमुख भूमिका रही उत्सव 19 मई तक चला। उत्सव को सफल बनाने में बद्रीलाल गुप्ता, प्रहलाद-सोनी, त्रिभोवनदास एवं सेवक रामप्रसाद ने कठिन परिश्रम किया।

प्रवेश सूचना

ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय व्रजघाट में प्रवेश आरम्भ है। सौम्य, शिष्ट, अनुशासनप्रिय, प्रतिभा-शाली तथा आजीवन वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक कम से कम 8वीं पास युवक तथा स्वाध्यायशील, सदाचारी, प्रचार करने में रुची रखने वाले वानप्रस्थी प्रवेश के लिये आमन्त्रित हैं। पत्र व्यवहार निम्न पते पर शीघ्र करें।

कुलाधिपति
श्री पं0 ब्रह्म प्रकाश जी शास्त्री विद्यावाचस्पति
ब्रह्मकुटी वेदमन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय
व्रजघाट 245205 जि0-गाजियाबाद, उ0प्र0।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज राजापुर §बर्दिया§ नेपाल का 11वाँ वार्षिक उत्सव 8-11 अप्रैल 1990 तक बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमें आ0प्र0सभा लखनऊ के तेजपाल सिंह आर्य भजनोपदेशक तथा श्रीमती आशा जी आर्या के वेद उपनिषद, गीता, रामायण और महाभारत के आधार पर सरल सुबोध भाषा में प्रवचन, भजन एवं उपदेश होते रहे तथा प्रातः गायत्री यज्ञ चार दिनों तक चलता रहा। पूर्णाहुति के दिन वैदिक साहित्य वितरित किया गया। गुरुकुल गिलौला §बहराइच§ के ब्रह्मचारी शिवकुमार आर्य §आधुनिक अर्जुन§ ने धनुर्विद्या के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा अन्य शक्ति प्रदर्शन के कार्यक्रम भी हुए। हजारों लोगों की उपस्थिति में वेद प्रचार का कार्यक्रम प्रशंसनीय एवं सफल रहा।

नवीन आर्यसमाज स्थापित

श्री सीताराम आर्य व श्री जुगल किशोर के प्रयत्न से ग्राम सिदपुर §उन्नाव§ में आर्यसमाज का प्रचार हुआ तथा नवीन आर्यसमाज की दिनांक 15,16 जून को स्थापना की गई जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुये.

प्रधान- श्री जयपाल सिंह जी
मंत्री-श्री अजय कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री ज्ञान सिंह आर्य

आर्यसमाज सान्ताकुंज §बम्बई§

प्रधान- श्री रामचन्द्र आर्य
महामंत्री- श्री विश्वभूषण आर्य
मंत्री-श्री लालचन्द्र आर्य,
कोषाध्यक्ष-श्री कस्तूरीलाल मदान

आर्यसमाज जीतपुर में सभाप्रधान जी का भाषण

5 जून 90 को रात्रि को आर्यसमाज-जीतपुर (मेरठ) के वार्षिकोत्सव में गौरक्षा सम्मेलन एवं समता सम्मेलन में बोलते हुए सभा प्रधान श्री इन्द्रराजजी ने गोहत्या के बूचड़खानों में रोमांचक ढंग गौ की हत्या पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यहां से गोमांस विदेशों को भेजा जाता है और वहां उसकी कीमत बहुत है। इस प्रकार से मृत गाय जीवित गाय से महंगी है। इसमें हमारे भारतीय व्यापारी ही लगे हुए हैं जो कि बहुत बड़ा पाप कर्म हैं। गाय को बचाने का सबसे बड़ा उपाय है कि कोई भी किसान भाई गाय को अपने परिवार का सदस्य माने और उस को किसी भी अवस्था में न बेचें। यदि लोग दूध पीने का संकल्प कर लें तो भी गाय की रक्षा हो सकती है। श्री प्रधान जी ने बताया कि जो लोग मुलायम चमड़े का महंगा जूता पहनते हैं वे नहीं जानते कि गाय का यह चमड़ा प्राप्त करने के लिए गाय को कितना पीड़ित किया जाता है और किस प्रकार से मरने से पूर्व चमड़ा उतार लेने पर गाय तड़पती हैं। श्रीप्रधानजी ने कहा कि इस बात को देखते हुए उन्होंने कपड़े का जूता पहनना आरम्भ किया है। समता पर बोलते हुए सभा प्रधान जी ने कहा कि जब तक भारत में यह ऊँचनीच और छुआछूत बनी रहेगी तब तक भारत कभी भी सबल नहीं बन सकता। विदेशी शक्तियां भारत को कमजोर करने के लिए इस जातीय असमानता का लाभ उठा कर धर्म परिवर्तन में संलग्न हैं। आर्यसमाज इस बात से जनता को परिचित कर अपने राष्ट्र को उन्नत करना चाहता है और सबको जागरूक करना चाहता है। श्री जयन्त कुमार जी पाण्डेय ने सच्ची आस्तिकता अपनाने पर बल देते हुए किसी भी पीड़ित को देखकर उसकी सेवा में ही भगवान को देखने का प्रयत्न करने से धर्म परिवर्तन का यह कुचक्र रुक सकता है।

--

आर्यसमाज जीतपुर (मेरठ) में दूसरे दिन सभाप्रधान श्री इन्द्रराजजी

6 जून 1990 को रात्रि मद्यनिषेध सम्मेलन में विशेष अतिथि के रूप में आर्यसमाज जीतपुर के वार्षिकोत्सव में सभा प्रधान जी ने बोलते हुए शराब, स्मैक्स तथा बराऊनशुगर के युवकों में तेजी से बड़ी मात्रा में बढ़ते हुए प्रयोग पर बड़ी चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने बताया कि इन मादक द्रव्यों का तस्करी से युवकों में प्रयोग बढ़ रहा है और देश की युवा शक्ति को पंगु बनाया जा रहा है। किसी भी देश की रक्षा युवाजन ही करते हैं। यदि युवा शक्ति नशों का शिकार हो जाए तो देश की रक्षा कैसे होगी? इसलिए आर्यसमाज को इन नशों के खिलाफ युद्ध स्तर पर काम करना चाहिए। श्री सभाप्रधानजी ने सरकार की इस दोमुही नीति की भी आलोचना की कि एक तरफ तो सरकार ने एक मद्यनिषेध का विभाग ही खोल रखा है और दूसरी ओर शराब की दुकानों की ऊँचे से ऊँचे दाम पर बिक्री का सरकार प्रयत्न करती है। इस नीति से देश अवनति को प्राप्त हो रहा है और युवा शक्ति नष्ट हो रही है। आर्यसमाज को इस सबके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ना होगा ताकि युवा शक्ति को बचाया जा सके।

सामाजिक गतिविधियाँ

सुजानगढ़ में लाहोटी परिवार द्वारा भव्य समारोह

लाहोटी परिवार की सुजानगढ़ में सदैव सामाजिक गतिविधियाँ चलती ही रहती है। श्री रामेश्वर लाल, मदनलाल, शिवभगवान, मुरलीधर लाहोटी ट्रस्टियों ने पुरुषार्थ पुंज स्वर्गीय सेठ श्री हरीबगस लाहोटी एवं उनकी धर्मपरायणा धर्मपत्नी स्व0 बसन्ती देवी लाहोटी की स्मृति में होम्यो-पैथिक चेरटेबल औषधालय सुजानगढ में बनवाया। दस जून को प्रातः औषधालय भवन में यज्ञानुष्ठान के पश्चात् श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने तुमुल जयघोषों के मध्य औषधालय का उद्घाटन किया।

तत्पश्चात् की गाँधी बालिका विद्यालय गाँधी चौक सुजानगढ़ में श्री ब्रह्म प्रकाश जी लाहोटी के संयोजकत्व में होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

महात्मा रतनमुनि शान्तियज्ञ

पिथौरागढ़। आर्य समाज मन्दिर में 21 जून को महात्मा रतनमुनि की दिवंगत आत्मा हेतु शान्तियज्ञ सम्पन्न किया गया। उनका देहान्त । जून, 1990 को अपने निवास स्थान (33 जीवी, श्री विजयनगर-श्री गंगानगर) पर हो गया था। मुझसे 14 नवम्बर, 1987 को अपने निवास पर वानप्रस्थ दीक्षा लेने के बाद दो बार कई सप्ताह तक "गुरुकुल आश्रम" ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर) में रहे। वह अपने पीछे हरा-भरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके जीवन से कई युवकों ने वैदिकधर्म पर चलने की प्रेरणा ली। परमात्मा, दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा परिजनों को धैर्य प्रदान करें।

आवश्यकता

कु0 सीता आयु 25 1/2 वर्ष योग्यता हाईस्कूल रंग-गोरा ऊँचाई 148 सेमी गृह कार्य में दक्ष सुशील स्वभाव

2- कु0 मीरा आयु 20 वर्ष योग्यता हाईस्कूल रंग-गोरा ऊँचाई 149 सेमी गृह कार्य में दक्ष सुशील स्वभाव।

श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम,
6-तिलक रोड, देहरादून।

आत्म निवेदन

• रामलाल 'रसिक'
जगतपुर (मैनपुरी)

नील-निलय सी झिलमिल-आभा
मैं तेरी प्रतिक्षण देखूँ?
वेदी पर चढ़ते प्राणों से
या माँ का अर्चन देखूँ?
क्षण मधुमय कार्टू प्रमुदित हो
लख कर प्रिय तेरी मुस्कान
या दीनों की दलित-दशा-लख
कर डालू आकुल निज प्राण ।
हिमगिर सी स्थिरता धारूँ --
या सरिता की प्रगति महान?
बलिदान तुम्ही पर होऊँ
अथवा विश्व-प्रेम की छेड़ूं तान?
अरे बता दो प्रियतम हमको
जीवन है यह उलझन में --
यह अबोध चैतन्य फँसा है
अस-मंजस - करील वन में।

जागो भारत के लाल

पूर्णप्रकाश मित्तल
बिजनौर

जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।
भारत के कण-कण में तुम,
नवचेतना फिर लादो।।
युग बदलो बहुत हो चुका
खिलवाड़ देश के आँगन में।
युग बदलो बहुत हो चुका,
अन्याय भारत के प्रांगण में।।
हर ओर शान्ति का राज्य रहे,
तुम तस्कर सभी मिटा दो।
जागो भारत ------------।।
सीमाओं को करो सुरक्षित,
संगठन मन्त्र तुम गाओ।
रणभेरी बजन से पहले,
लौह पुरुष बन जाओ ।।
कोई शत्रु झांक सके ना,
आर्यों कदम बढ़ा दो।
जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।।
माटी कहे पुकार देश की,
श्वेत श्रमसीकरों को बहाओ।
लहरायें खेत खलिहान,
जन-जन की भूख मिटाओं।।
असहाय रहे ना कोई भू पर,
तुम अपने हाथ बढ़ा दो।
जागो भारत --------।।
प्रान्त प्रान्त में खून बह रहा,
मानव जीवन का मूल्य नहीं।
आतंकवाद की तूती बोलती,
जीवन रक्षा का मार्ग नहीं।।
हिंसा को अहिंसा से जीतो,
मानवता के प्राण बचा दो।
जागो भारत के लाल आज,
नवयुग का शंख बजा दो।।

उत्सव सम्पन्न

16, 17, 18 जून 1990 को आर्यसमाज सोथरा (फिरोजाबाद) का उत्सव सम्पन्न हुआ।

भोगा न भुक्ता:

हममें से प्रत्येक प्राणी आनन्द की इच्छा रखता हुआ भी जो आनन्द को प्राप्त नहीं कर पा रहा है उसका एकमात्र कारण सद-असद् विवेक के अभाव हो ही बताते हुए गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य श्रद्धेय श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने कहा कि इसी के कारण हम अज्ञानवश दुःखों के उत्पत्ति स्थान भोगों के सञ्चयन में अपनी शक्ति का अपव्यय करते रहते हैं, फलस्वरूप आनन्द के स्रोत परमपिता प्रभु की गोद में बैठने की सामर्थ्य हममें से समाप्त होती जाती है।

फजलपुर (सुन्दरनगर) में माता भगवती जी वानप्रस्था द्वारा 11-10-89 आयोज्यमान यजुर्वेद पारायण-महायज्ञ की दि0 15-10-89 के दिन पूर्णाहुति के अवसर पर ब्रह्मा पद से बोलते हुये उन्होंने कहा कि वास्तविकता यह है कि भोगों को भोगने की लोलुपता में हम उनके इतने वशवर्ती हो जाते हैं कि भोग ही हमको भोगने लगते हैं, जिसको, भर्तृहरि जी महाराज के शब्दों में कहें तो

"भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः (वै0श07)

और यहीं से हमारे दुःखों की नारकीय यातना प्रारम्भ हो जाती है जो तब तक चलती रहती है जब तक हम प्रकृति प्रदत्त भोगों को भोगने की कला नहीं सीख जाता है जिसका उपदेश प्रभु ने अपने एकमात्र सन्देश वेदों द्वारा हमको दिया है-

"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः"

अर्थात् त्याग पूर्वक भोगों का भोग करो न कि लिप्सा और लोलुपता के साथ-यही एक रहस्य है, जिसको अन्तःकरण में उतार लेने मात्र से प्रकृति अपने सम्पूर्ण भोगों सहित मनुष्य के वशवर्तिनी हो जाती है।

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने प्रसंगवश जिज्ञासुओं की शंका का समाधान करते हुये बताया कि कर्म-फल-प्राप्ति की अवश्यम्भाविता के होने पर भी मानव को पुरुषार्थ से मुख मोड़कर हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठना चाहिये- उदाहरणतः उन्होंने कहा कि आहार समक्ष उपस्थित होने पर भी वह स्वयं हमारे मुख में प्रविष्ट नहीं हो जाता है, तदर्थ हमें अन्य प्रयास भी करने पड़ते हैं, ठीक इसी तरह अन्य पदार्थों की प्राप्ति कर्मगति के अनुसार होने पर भी उनकी भुक्ति मानव के प्रयासों पर भी निर्भर रही है।

साथ ही श्री स्वामी जी महाराज ने एक शंका के समाधान के प्रसंग में यज्ञ से होने वाले लाभों का विवरण देते हुये बताया कि दूसरों के देखा देखी हमारे अनेकानेक विद्वान यज्ञ की महिमा को कम करके बताते हैं जबकि भारतीय संस्कृति का मूलाधार यह यज्ञ ही प्राचीन काल से हमारी आध्यात्मिक आधिभौतिक, सामाजिक आर्थिक व्यवस्थाओं का सूत्रधार रहा है।

वानप्रस्थी श्री यज्ञमुनि जी के संयोजन में हुए इस यज्ञ में गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी श्री सुमेरु प्रसाद, विघानन्द, गोपाल, पुनीत, भूपेन्द्र द्वारा किया मधुर सस्वर वेदपाठ ग्रामवासियों का विशेष आकर्षण रहा।

वाचस्पति मिश्र
गुरुकुल प्रभात आश्रम (मेरठ)

डा. द्विवेदी पुरस्कृत

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति तथा प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान डा0कपिलदेव द्विवेदी को उ0प्र0 संस्कृत अकादमी ने उनकी पुस्तक "भक्तिकुसुमाञ्जलिः" पर पुरस्कृत किया है। आप वेद, संस्कृत साहित्य व व्याकरण के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों में से एक हैं तथा आपके 70 से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। डा0 द्विवेदी की इससे पूर्व आधा दर्जन पुस्तकें पुरस्कृत हो चुकी हैं। आपकी "वेदामृतम् ग्रन्थमाला" अत्यन्त लोकप्रिय हुई है।

हाल ही में ये पुरस्कार, उ0प्र0 के राज्यपाल श्री बी0सत्यनारायण रेड्डी द्वारा प्रदान किये गये हैं।

डा0द्विवेदी वेद तथा भारतीय संस्कृति से संबंधित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देने हेतु विदेशों में भी आमन्त्रित किये जाते हैं। आप विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी) के निदेशक भी हैं।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज दुधवा शहीद जिला-हरिद्वार का 8वां वार्षिकोत्सव दिनांक 28 से 30 मई तक बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें कई विद्वानों व भजनोपदेशकों ने अपने विचार प्रकट किए, स्थानीय जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्यसमाज साकेत मेरठ

प्रधान- प्रो0जयप्रकाश गोयल
मंत्री-प्रो0 सत्यप्रकाश गोयल
कोषाध्यक्ष-श्री जगदीशप्रसाद गुप्त

आर्यसमाज थाना भवन (मु0नगर)

प्रधान- श्री विश्वम्भर दयाल जी
मंत्री- श्री महेन्द्र कुमार जी
कोषाध्यक्ष- श्री अजय कुमार जी

आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर

प्रधाना - डा0 आशारानी राय
मन्त्री - श्री सुरेन्द्रकुमार डंग
कोषाध्यक्ष- श्री वीरेन्द्र कपिल

"सूखा वृक्ष"

-जगदीश शरण "शीतल"
चाँदपुर (बिजनौर)

मैं सूखा वृक्ष खड़ा देखो यह जीवन अब निष्प्राण हुआ।
मम त्याग तपस्या सफल हुई इस जीवन का कल्याण हुआ।।
वह हरा-भरा क्या जीवन था जब पक्षी कलरव करते थे।
उस हँसते गाते सावन में जब सुन्दर झूले पड़ते थे।।
जब सूर्य ताप से व्याकुल होकर त्राहि-त्राहि अकुलाते थे।
क्या मानव और पशु पक्षी इस छाया में सुख पाते थे।।
अब मरकर भी मेरे तन से घरद्वार सजाये जायेंगे।
इन मेरी ही समिधाओं से सुयज्ञ रचाये जायेंगे।।
जो राख बची है खेतों में वह चन्दन बनकर महकेगी।
धनधान्य से पूरित यह धरती फिर सोना बनकर चमकेगी।।

बोलते जय जयकार माँ की खौलते बदलाव के क्षण

-लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"
भोगपुरा, मैनपुरी

बोलते जयकार माँ की।

मनुजता का प्राण, जिसकी कोख में पलता हुआ है
देव का-आकार अन्तस- चेत में ढलता हुआ है।
इस प्रसव समवेदक्षण में जागती हुंकार माँ की।
खौलते बदलाव के क्षण, बोलते जयकार माँ की।
एक कर सहला रहा सिर, दैन्य डूबे लाडलों का।
दूसरा कर कोख मलता, दाहसह दावानलों का।
धीर वीर अभीत करती, प्राणवान पुकार माँ की।
तुम न हारो, तुम न हारो, बार-बार पुकारती है।
ज्योति के अवतरण क्षण हैं, भारती ललकारती है।
हो सके चैतन्य, जाग्रत, तुम सुनो चीत्कार माँ की।
खौलते बदलाव के क्षण, बोलते जयकार माँ की।
है अदेखा दिव्य मुखड़ा, उस अजन्मे भोर शिशु का।
कौन मंगल गीत गाये, ध्यान है इस ओर किसका
विश्व वीणा में निनादित, वेदना झंकार माँ की।
खौलते बदलाव के क्षण बोलते जयकार माँ की।

ण्डीगढ़ में सब आर्यसमाजों का सम्मिलित समारोह

ाचार्य विश्वश्रवा ने सन्यास ग्रहण किया नका अभिनन्दन, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती नेतृत्व में सब आर्य जगत् से चलने अपील।

ा॰ भवानी लाल भारतीय का द्घाटन भाषण

3 जून रविवार 1990 चण्डीगढ़ सब आर्य समाजों का सम्मिलित समारोह श्व वेद पारषद के तत्वावधान में हुआ। सका सभापतित्व सार्वदेशिक सभा के धान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती किया। आचार्य विश्वश्रवा वेदाचार्य सन्यास ग्रहण कर लिया है उनका रिवर्तित नाम स्वामी वेदर्षि व्यास योगी ा है। सब आर्य समाजों के तथा आर्य स्थाओं के अधिकारियों तथा विशिष्ट पुरुषों आचार्य जी और स्वामी आनन्दबोध ी के गले में मालाएं अर्पण की। स्वामी ानन्दबोध सरस्वती ने अपने सभापति ाषण में देश-देशान्तर तथा भारतवर्ष ी स्थिति पर प्रकाश डाला और यह ताया कि अब तक आर्य समाज ने या किया अब क्या कर रहा है और ब क्या करने का प्रोग्राम है। इन षयों पर बहुत प्रभावी ढंग से स्वामी ी का भाषण हुआ। डा0 भवानीलाल ारतीय ने आचार्य जी के अभिनन्दन मारोह में उद्घाटन भाषण करते हुये ाचार्य जी के वैदिक साहित्य के अपूर्व ांडित्य, ऋषि दयानन्द में भक्ति और ामी जी के प्रत्येक बात के समर्थन ी अलौकिक प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा ी। आचार्य जी ने अपने डेढ़ घण्टे विस्तृत भाषण में अनेक वैदिक समस्याओं ा समाधान किया और आचार्य जी ने ताया कि मेरे वेद गुरू पंडित मधुसूदन ोझा जयपुर राजगुरू ने मुझे प्रेम पूर्वक मझाया कि पुराणों में आकाश और रती का इतिहास मिला हुआ दिया , आकाश का इतिहास अलग है धरती ा इतिहास अलग है। आकाश के गौतम हिल्या और धरती के गौतम अहिल्या ौर हैं। इस प्रकार धरती के वशिष्ट ौर हैं और वेद में जिन वशिष्ट का र्णन है वे और हैं। वेद की अयोध्या गरी दूसरी है धरती की अयोध्या नगरी ूसरी है। वेद की गंगा जमुना, सरस्वती रीर के अन्दर की इड़ा, पिंगला सुषुम्ना ाड़ियां हैं और धरती की गंगा जमुना रस्वती और हैं। सर्वत्र नाम की समानता । अपने भाषण के अन्त में आचार्य ी ने आर्य जगत से अपील की कि ्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व ें सब आर्य जगत् काम करें। स्वामी ानन्दबोध सरस्वती का सारा जीवन ार्य समाज में ही बीता है उनको आर्य माज को चलाने का बहुत पुराना अनुभव । और अब वे घर बार छोड़कर सन्यासी नकर 24 घंटे सार्वदेशिक सभा में हकर आर्य समाज का ही काम करते । आर्य समाज में ऐसा दूसरा व्यक्ति ौर कौन है अतः मैं आर्य जगत् से नुरोध करता हूँ कि उनके नेतृत्व में ाम करें और वे सबको साथ लेकर लें। अंत में सबको धन्यवाद के साथ ाचार्य जी का अभिनन्दन समारोह समाप्त ुआ।

रात्रिशयन पूर्व मन्त्र गीत

२. कर्मधार हमारे मन

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्त्रः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्प मस्तु।।
यo 34/2 ।।

हो ज्ञान सहायक पथ दर्शक,
हो कर्मधार हमारे मन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ।।
मन के ही द्वारा ज्ञान मिले
मन से ही कर्म प्रयाण मिले
मन से ही कर्म यज्ञमय हों
मन से ही कर्म विधान मिले।
कर्म-धर्म या यज्ञ मर्म में,
आ साथ निभाओ मेरे मन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ।।
धीर मनीषी धैर्य शक्ति से
करें नियन्त्रित इसे युक्ति से
बाहर से इसे खींच लायें
और मिलाएं ध्येय भक्ति से।
मानव शरीर की क्रियायें,
मन से ही होती संचालन
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।
इस शरीर को सही दिशा दो
अन्धकार की मेंट निशा दो।
कल्याण मार्ग की ओर चलो
हमको उदयन और उषा दो।
हो कर शरीर के सहयोगी,
इसमें ही जाओ थम उत्तम।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।

● देवनारायणा भारद्वाज
अलीगढ़

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार अस्वस्थ

दिनांक 1 फरवरी 90 को प्रख्यात लेखक श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार को भयंकर दिल का दौरा पड़ा जिससे वह अत्यन्त कमजोर हो गये हैं उनसे लिखा पढ़ा भी नहीं जाता है। अब धीरे-धीरे आराम अनुभव करते हैं।"
आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी व सभा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने परमपिता परमात्मा से उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना की।

शिविर का आयोजन

राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन का 7 दिवसीय शिविर नरौना नं0-12 जिला अलीगढ़ में दि0 26 सितम्बर स 2 अक्टूबर तक आयोजित किया जायगा जिसमें लगभग 500 शिविरार्थी भाग ले रहे हैं इच्छुक आर्य बन्धु शिविर में भाग लेने हेतु अपने बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में भेजने के लिए शिविर संयोजक श्री पूर्ण सिंह-ब्रह्मचारी प्रधान जिला सभा अलीगढ़ से सम्पर्क करें।

- डा0 विजयपाल सिंह आर्य
मन्त्री जिला सभा, अलीगढ़

साहित्य समीक्षा

"पावमानी द्विजानाम" इस पवित्र ऋचा में मानव को पवित्र करके उसे आयु, यश और विद्या से सुसम्पन्न करने वाली वाणी को "पावमानी" कहा गया है। यह पावमानी वाणी उन मानवों के लिए है जो द्विज बनकर अपने अन्तःकरण को तपःपूत कर लेते हैं और पवमान बनकर पावमानी विचारों का लेखनी तथा वाणी से प्रचार करते हैं। आर्य समाज ने जिस वैचारिक क्रान्ति के नवयुग का सूत्रपात किया है उसका मुख्य उद्देश्य अन्ततः पावन विचारधारा वाले मानव का निर्माण ही तो करना है क्योंकि यही हमारा साध्य है। आर्यसमाज अपने मंच तथा प्रेस से इन्हीं अभिव्यक्तियों को प्रकाशित और प्रचारित करता हुआ सतत अग्रशील हो रहा है।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है वैदिक साधन आश्रम तपोवन (देहरादून) से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका "पवमान" एक बहुत ही सुरुचिपूर्ण सांस्कृतिक पत्रिका है। निःसन्देह सम्पादक महोदय श्री देवदत्त बाली के अन्तःमन की सांस्कृतिक चेतना इस पत्रिका में प्रतिबिम्बित हो रही है। आज के युग में ऐसी पत्र पत्रिकाओं की बड़ी आवश्यकता है। इनके द्वारा हमारे चतुर्दिक ज्ञान की अभिवृद्धि के साथ ही वैदिक विचारधारा का ज्ञान जनमानस में प्रसारित होता है। जिस दयानन्दी विचारधारा का "पवमान" प्रकाशन कर रहा है वह किसी व्यक्तिविशेष की विचारधारा न होकर सृष्टि के शाश्वत सत्यों की विचारधारा है जिसके प्रचार एवं प्रसार का आर्यसमाज ने संकल्प लिया हुआ है। मैं आशा करता हूँ यह पत्रिका अपने इस उद्देश्य में अवश्य सफल होगी।

मैं "आर्यमित्र" परिवार एवं प्रदेश की आर्य जनता की ओर से इसकी सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक
एम0ए0 साहित्याचार्य

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला सभाओं के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकट्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अतः आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुनः धन इकट्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनों से अनुरोध है कि इनकी बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

- कार्यालय सचिव-

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७६

सेवा में...

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
श्रावण कृष्ण -८ संवत २०४७ वि०
दिनांक १५ जुलाई १९९०
दूरभाष
३४५९९३

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें:-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क मास जून 1990 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0अधिक पोस्टेज लगते हैं। इसलिये सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिये विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है।

जून १९९०

548, 2478, 2932, 4462,
6151, 8614, 9182, 10178,
10180, 11209, 11210, 11631
12206, 12213, 12214, 1267%
12904, 13910, 13912, 13917
14285, 14288, 14289, 14290
14296, 14298, 14755, 14758
14760, 14761, 14762, 14767
15384, 15387, 15389
15390, 15391, 15392, 15394
15395, 15396, 15397, 15399
15400, 15401, 15402, 15403
15405, 15406, 15408, 15409
15410, 15411, 15412, 15413
15415, 15417, 15418, 15419
15421, 15422, 15423, 15424
15425, 15426, 15427

व्यवस्थापक

निर्वाचन

आर्यसमाज बदायूं

प्रधान- डा0नरेशचन्द्र आर्य
मंत्री- श्री रवीन्द्र कुमार जी
कोषाध्यक्ष- श्री राजेश कुमार जी

आर्यसमाज जलालाबाद

प्रधान- श्री राज सिंह जी
मंत्री-श्री विजय सिंह सैनी
कोषाध्यक्ष- श्री जयभगवान जी

•

आर्यसमाज स्टेशन रोड, पीलीभीत

प्रधान- श्री कस्तूरीलाल आनन्द
मंत्री- श्री अश्वनी कुमार जी
कोषाध्यक्ष- श्री विश्राम सिंह जी

•

स्त्री आर्य समाज बदायूं

प्रधाना- श्रीमती श्यामवती
मंत्रणी- श्रीमती मायादेवी रस्तोगी
कोषाध्यक्ष- श्रीमती मायादेवी जी

आर्यसमाज ...पुर

प्रधान- श्री तारानाथ जी
मंत्री- श्री पन्नालाल सि0रत्न
कोषाध्यक्ष- श्री सुरेन्द्र कुमार जी

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए [illegible] प्रेस ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में [illegible] लखनऊ से श्री [illegible] गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं.२२४१/५७, श्रावण कृष्णा-३० रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक २२ जुलाई १९९० (घोषणापत्र सं.७/२२-२-२५)



हमारा कश्मीर

"-----कश्मीर हजारों वर्षों से भारत का ही अंग रहा है। अँग्रेजों के आने से सैकड़ों वर्षों पहले भी यह भारत का ही था। यह भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा केन्द्र था और उसी तरह भारत का एक भाग है जिस तरह कलकत्ता, बम्बई और मद्रास"।

- जवाहरलाल नेहरु

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्र देव पाठक

एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१ रू. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष

अंक- २८

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। इस विषय में कोई समझौता इस देश की जनता कदापि स्वीकार नहीं करेगी

— स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आर्यजगत के सर्वोच्च नेता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी-आनन्दबोध सरस्वती ने चण्डीगढ़ में एक बृहत् पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि कश्मीर सृष्टि के आदिकाल से ही भारत का अभिन्न अंग रहा है। यह हमारी सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र है। इस विषय में हमें न किसी की मध्यस्थता स्वीकार है और न किसी प्रकार का समझौता। बातचीत का मुख्य मुद्दा यह है कि किस प्रकार पाकिस्तान द्वारा अवैधरूप से कब्जे में लिए हुए कश्मीर के अपने भूभाग को पाकिस्तान से वापस लिया जाय।

श्री स्वामी जी ने देश की वर्तमान गम्भीर समस्याओं पर आर्यसमाज के रुख को स्पष्ट करते हुए पत्रकार सम्मेलन में निम्न सुझाव प्रस्तुत किए-

1- आतंकवादी गतिविधियों को रोकने के लिए पाकिस्तान से लगी पूरी सीमा पर 5 किलोमीटर चौड़ी सुरक्षा पट्टी बनाकर उसमें भू0 पूर्व सैनिकों को बसाया जाय।

2- संविधान की धारा 370 तुरन्त समाप्त की जाये/ आज की परिस्थितियों में इस अनुच्छेद का अब कोई औचित्य नहीं है।

3- पाकिस्तान द्वारा पंजाब और कश्मीर में चलाए जा रहे उग्रवाद को बहुत सख्ती के साथ कुचल दिया जाय।

4- राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति को छोड़कर समस्त भारतीयों के लिए एक समान नागरिक संहिता बनाए। और मानव-मानव में विभेद उत्पन्न करने वाली तथाकथित धर्म पुस्तकों से उन अंशों को, जो घृणा और विद्वेष उत्पन्न करने वाले है, निकाल दिया जाये।

स्वामी जी ने उदाहरण देते हुए बताया कि वर्तमान सरकार अनुसूचित हिन्दुओं को धर्मपरिवर्तन के बाद भी मिलने वाली सुविधाओं को जारी रखने का आश्वासन देकर परोक्षरूप से धर्मान्तरण को प्रोत्साहन दे रही है। दिल्ली की जामा मस्जिद को 50 लाख रूपयों का अनुदान मरम्मत के लिए दिया जाना, जम्मू कश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन को सम्प्रदाय विशेष के दबाव में आकर वहाँ से वापस बुलाना आदि अनेकों ऐसे कार्य सरकार द्वारा किए जा रहे हैं जिनसे मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को बल मिलता है।

अन्त में स्वामी जी ने देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिए आर्यसमाज के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि हमने पाँच सूत्रीय कार्यक्रम §1§ गोहत्या बन्दी कानून बनाना, §2§ अंग्रेजी हटाओ, §3§ शराब बन्दी, §4§ भारत से विदेशी पादरियों का निष्कासन तथा §5§ अस्पृश्यता-निवारण का कार्यक्रम चालू किया है। भारतीय जनता के सहयोग से आर्यसमाज अपने इस लक्ष्य को पूरा करने में अवश्य सफल होगा।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ श्रावण कृष्ण-३०,संवत,२०४७वि.
२२,जुलाई १९९०, दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

धरती का स्वर्ग

राजकवि कल्हण नामक एक महाकवि ने ग्यारहवीं शताब्दी में "राजतरंगिणी" नामक एक संस्कृत काव्यग्रन्थ लिखा है जिसमें कश्मीर प्रदेश की सौन्दर्यसुषमा का बड़े ही मनोहारी ढंग से वर्णन किया गया है। यह अजेयभूमि भारत की सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र रही है तथा वैयाकरणों की तपस्थली एवं अनेक ऋषिमुनियों की साधनास्थली रही है। विश्व की सुन्दरतम घाटी ने इसके सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिए हैं। यहाँ कल-कल करती हुई नदियों का अनन्त प्रवाह, हिमाच्छादित शैलश्रृंगों की श्रेणीबद्ध चोटियाँ, हरीतिमा से आच्छादित इसके मनमोहक मैदान एवं सुशीतल समीरण ने सृष्टि के आदिकाल से ही आर्यों का मन मोह लिया था। इस काव्यग्रन्थ में उन राजाओं की वंशावलियाँ दी हुई हैं जिन्होंने इस पर शासन किया था। बौद्धयुग में यहाँ बौद्धधर्म का प्रचार हुआ किन्तु शंकराचार्य के आविर्भाव के साथ ही इस रम्यभूमि पर शैवसंस्कृति का पुनरुत्थान हुआ और हिन्दू संस्कृति का वर्चस्व स्थापित हो गया।

काश्मीर के राजा जयापीड़ §779 से 813 ई0§ के राजकवि रत्नाकर ने "हरविजय" नामक संस्कृत महाकाव्य लिखा है जिसमें 50 सर्ग और 4320 श्लोक हैं। इस महाकाव्य में नीतिशास्त्र, शैवदर्शन, इतिहास, पुराण, ज्योतिष, कल्प, व्याकरण, कामसूत्र आदि विविध विषयों का सम्यक् दर्शन होता है। कल्हण से पूर्व बिल्हण नामक एक और काश्मीरी कवि हुए हैं जिनका जन्म श्रीनगर के पास "खोनमुष" §आजकल खुनमोह§ नामक गाँव में हुआ था। उन्होंने भी काश्मीर के राजाओं का इतिहास लिखा है। इस प्रकार भूगोल, इतिहास परम्परा और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत का यह मुकुटशिरोमणि काश्मीर अनादिकाल से हमारा अभिन्न अंग रहा है। मुस्लिम आक्रान्ताओं ने तेरहवीं शताब्दी से इसका भ्रष्टीकरण प्रारम्भ कर दिया और लगभग 500 वर्षों तक इस्लाम धर्म का प्रसार करने के लिए अत्यन्त क्रूर उपाय काम में लाए गये। "The Valley of Kashmir" by walter Lawnen 1895, ने लिखा है कि इस लम्बी अवधि में सिकन्दर नामक सुल्तान ने सन् 1394 में हिन्दुओं के लिए तीन विकल्प रखे थे- §1§ धर्मान्तरण करें, §2§ काश्मीर त्याग करें अथवा §3§- मृत्यु स्वीकार करें। सैकड़ों काश्मीरी पंडित कत्ल कर दिए गये अथवा काश्मीर छोड़कर भाग गये।

सन् 1819 मे महाराजा रणजीत सिंह ने पठान शासकों से काश्मीर को मुक्त कराया और सन् 1846 तक काश्मीर सिख प्रशासकों के हाथ में रहा। सन् 1846 में अंग्रेजों और सिखों के बीच युद्ध में अंग्रेजों की विजय हुई और भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल हार्डिंग्ज ने एक करोड़ रुपया लेकर जम्मू काश्मीर भाग स्वतन्त्र रूप से महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया। इस समय मुस्लिम धर्म में परिवर्तित हजारों काश्मीरी पण्डितों तथा हिन्दू जनता ने महाराजा को लिखित प्रार्थना-पत्र दिया कि हमें शुद्ध करके पुन. हिन्दूधर्म में वापस ले लिया जाय। महाराजा शुद्धीकरण यज्ञ का विशेष आयोजन करके कुटुम्ब के कुटुम्ब मुसल्मान बने हिन्दुओं को हिन्दूधर्म में दीक्षित करने के लिए तैयार भी हो गये किन्तु राजपुरोहित रोड़ा बन गया। उसने महाराजा से कहा- "यदि ऐसा अधर्म आपने किया तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगा" और सचमुच वह झेलम नदी में कूद गया। शुद्धि यज्ञ स्थगित हो गया और आज वही मुसल्मान बने हिन्दू अपने खून के रिश्ते से जुड़े हुए हिन्दुओं को मौत के घाट उतारते चले जा रहे हैं। काश! राजपुरोहित को किसी ने आर्यसमाजी विचारधारा से दीक्षित किया होता।

अपनी उत्कृष्ट औदार्यवृत्ति के कारण हमारा हिन्दुसमाज अतीत के उन तथ्यों को भी स्वीकारने में मुकराता है जो इतिहास के अमिट पन्ने बन चुके हैं। गृहमन्त्री सरदार वल्लभभाई-पटेल के सचिव श्री वी0पी0 मेनन ने अपनी पुस्तक "The story of the integration of the Indian States" में लिखा है जो राष्ट्र अपने इतिहास से तथा अपने भूगोल से मुँह मोड़ता है उस राष्ट्र का विनाश अटल है।"

हमारे अतीत और प्रत्यक्ष वर्त्तमान के बीच के समय- प्रवाह का पाट ज्यों-ज्यों चौड़ा होता जा रहा है त्यों-त्यों हमारी स्मृति में अनजाने ही एक परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है और हम अपना निर्णय तथ्यों के आधार पर न लेकर केवल भावनाओं का आधार लेकर करने को उद्यत् हो जाते हैं और यही इतिहास की सबसे बड़ी भूल बन जाती है। काश्मीर के प्रश्न पर पाकिस्तान और भारत के विदेश सचिवों की वार्ता हो रही है। सीधा सादा मुद्दा है हमारे काश्मीर का वह हिस्सा जो पाकिस्तान ने अनधिकृत रुप से अपने कब्जे में ले रखा है हमें वापस किया जाये। काश्मीर समस्या का यही आदि है और यही अन्त है। इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। भगवान करे हमारे राष्ट्रनेताओं को यह दृढ़प्रेरणाशक्ति प्राप्त हो और हम काश्मीर के उस स्वर्गीय भूभाग को पुनः प्राप्त करने में सफल हो सकें। ◻

गंगा के रमणीय तट ब्रजघाट पर वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय का सत्र उदघाटन समारोह

तिथि श्रावण कृ0 15 सं0 2047 विक्रमी
दिनांक- 22 जुलाई 1990 रविवार

समय- मध्यान्ह 11 बजे से 1 बजे तक

समारोह की अध्यक्षता- माननीय पं0 इन्द्रराज-जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश करेंगे

आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय
कार्यक्रम के समापन पर प्रसाद वितरण §आर्यसमाज हापुड़ के सौजन्य से§

मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आचार्य देवव्रत — प्राचार्य
जयप्रकाश त्यागी — व्यवस्थापक

१००/- का गुप्त दान

"आर्यमित्र" के ग्राहक जो भारतीय हैं और लन्दन में रहते हैं ने दि0- 7 जुलाई को "आर्यमित्र" कार्यालय- 5-मीराबाई मार्ग में पधारे तथा 100/- रु0 आर्यमित्र को गुप्त दान दिया जिसकी रसीद सं0 183/69 है।

आर्यमित्र की ओर से उनको बहुत-बहुत धन्यवाद।

—प्रबन्ध सम्पादक

मान्य लेखकों से नम्र निवेदन

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध नेता, लोकसभा में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण को निर्भीकता से प्रस्तुत करने वाले, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्राण स्व0 पं0 प्रकाशवीर शास्त्री की पुण्यस्मृति में हम आगामी दिस. 1990 में एक विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

विनम्र निवेदन है कि शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागार करने वाले अपने संक्षिप्त विचार/कविता/संस्मरण आदि मुझे भेजने की कृपा करें। साथ ही सामयिक समस्याओं पर प्रति सप्ताह प्रकाशनार्थ लेख भी भेजें। आर्यमित्र इन्हें प्रकाशित कर अपने को गौरवान्वित समझेगा।

आचार्य इन्द्र देव पाठक
प्रबंध सम्पादक आर्यमित्र, लखनऊ

श्री कैलाशनाथ सिंह यादव (सांसद) आर्यसमाज से निष्कासित
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का सर्वसम्मत निर्णय

दिनांक 8 जुलाई, 1990 को, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा अपनी अन्तरंगसभा के प्रस्ताव संख्या- 11 के सर्वसम्मत निर्णय से श्री कैलाशनाथ सिंह यादव, सांसद को आर्यसमाज व तत्सम्बद्ध संस्थाओं के विरुद्ध उनके द्वारा की जा रही विघटनकारी गतिविधियों को देखते हुए आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से छह साल के लिए पुनः निष्कासित कर दिया गया है।

श्री कैलाशनाथ सिंह यादव, सांसद, वर्ष 1984 से उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि-सभा के विरुद्ध लगातार भ्रामक प्रचार तथा आर्यसमाज विरोधी शक्तियों के सहयोग से आर्यसमाज और उनकी संस्थाओं को बदनाम करने का असफल प्रयास करते आ रहे हैं। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने इन सब पर गम्भीरता से विचार करने के उपरान्त अपनी उक्त बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया है कि श्री कैलाश नाथ सिंह यादव, सांसद को आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से छह वर्ष के लिए पुनः निष्कासित किया जाता है। इस निर्णय के उपरान्त पंजाब आर्यप्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री अश्विनीकुमार ने अन्तरंग सभा में ही घोषणा की कि सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के निर्णय के उपरान्त पंजाब आर्यप्रतिनिधि सभा श्री कैलाशनाथ सिंह यादव, सांसद को अपनी शिक्षा समिति की सदस्यता से पृथक कर देगी।

इस सम्बन्ध में यह सूच्य है कि श्री कैलाशनाथ सिंह यादव, सांसद को आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ने अपनी अन्तरंग सभा दिनांक- 15·4·1984 के निश्चय सं0- 9(आ) द्वारा पहिले ही आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से छह वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया था जिसे रजिस्ट्रार फर्म्स सोसायटीज एवं चिट्स, उत्तर प्रदेश ने अनुमोदित कर दिया था। उनके इस निष्कासन को आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने अपनी अन्तरंग सभा दिनांक- 24·12·89 के निश्चय सं0- 10 के अनुसार पुन छह वर्ष के लिए बढ़ा दिया है।

आर्यकेन्द्रीय सभा दिल्ली का चुनाव

दिल्ली प्रदेश की अनेक शिक्षण संस्थाओं की संचालिका एवं महर्षि के मिशन को शिक्षा द्वारा जागरूक करने में अग्रणी आर्यकेन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, 15 हनुमानरोड, नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव केन्द्रीय सभा के विशाल हाल में दिनांक- 1 जुलाई 1990 को बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक गण्यमान शिक्षाविदों के अतिरिक्त उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी भी उपस्थित थे।

आगामी वर्ष के लिए सर्वसम्मति से महाशय धर्मपाल जी प्रधान एवं डा0- शिवकुमार शास्त्री मन्त्री निर्वाचित हुए। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से एक स्मारिका भी प्रकाशित हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के मन्त्री- श्री मनमोहन तिवारी ने आर्यकेन्द्रीय सभा के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए प्रधान म0 धर्मपाल जी तथा डा0- शिवकुमार शास्त्री एवं उनके सहयोगियों को अपनी हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएं दीं।

मध्यप्रदेश विधानसभा द्वारा धारा-३७० समाप्त करने का प्रस्ताव पारित।

भोपाल- मध्यप्रदेश विधानसभा में श्री- सुरेश सेठ एम0एल0ए0 (कांग्रेस) द्वारा काश्मीर के सम्बन्ध में संविधान में जोड़ी गई धारा 370 के अनौचित्य पर प्रकाश डालते हुए इस धारा को तुरन्त समाप्त किए जाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जो सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया है। आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने श्री सेठ के इस साहसपूर्ण कदम की प्रशंसा करते हुए उन्हें धन्यवाद प्रेषित किया है।

नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ की सहायता

आर्यसमाज के शिरोमणि नेता- प्रख्यात सन्त सार्वदेशिक सभा के पूर्व- प्रधान महात्मा नारायण स्वामी की तपस्थली, नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ (नैनीताल) को उसके रखरखाव आदि आवश्यक व्यय हेतु सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने रु0 2000/-(रुपये- दो हजार) की आर्थिक सहायता प्रदान की है। उ0प्र0 आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मन्त्री ने इसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को बहुत- बहुत साधुवाद प्रेषित किया है।

दिसम्बर में आर्य महासम्मेलन

देश विदेश की वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में राष्ट्र की एकता, अखण्डता को अक्षुण्ण रखने तथा वैदिक संस्कृति को विश्व व्यापी प्रचार का अभियान बनाने में आर्यसमाज के योगदान को गतिशील बनाने हेतु आगामी 23 से 26 दिसम्बर 1990 तक दिल्ली में एक विराट् आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा का एक अधिवेशन 10 तथा 11 नवम्बर 1990 को दिल्ली में बुलाया गया है जिसमें आर्य महासम्मेलन की रूपरेखा निश्चित की जायेगी। आर्यजन इस महासम्मेलन को सफल बनाने में अभी से सन्नद्ध रहें।

प्रतिनिधि मण्डल आगरे की घटना की जांच करेगा

आगरे के पनवाड़ी गांव में विगत दिनों जाटवों की बारात को लेकर एक साम्प्रदायिक संघर्ष हो गया था जो प्रशासन की कुशल सूझबूझ स्वार्थी वाले तत्व धर्मपरिवर्तन का प्रचार कर रहे हैं। इस स्थिति पर विचार करते हुए सार्वदेशिक सभा ने अपनी अन्तरग में यह निश्चय किया है कि एक प्रतिनिधि मण्डल जिसमें सार्वदेशिक सभा, तथा उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी सम्मिलित हों वहाँ जाकर स्थिति का आकलन करें और अपनी आख्या आवश्यक कार्यवाही हेतु शीघ्र ही सार्वदेशिक सभा में प्रस्तुत करें।

गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म0प्र0) वेदांग- दर्शन-योग-शिक्षण संस्था है। यहाँ आर्ष पाठविधि के अनुसार शिक्षण देने की व्यवस्था है। छठीं, सातवीं, आठवीं उत्तीर्ण छात्रों को भी प्रवेश दिया जाता है। ये छात्र महर्षि दयानन्द- विश्वविद्यालय रोहतक (हरयाणा) की मध्यमा, शास्त्री और आचार्य कक्षा की परीक्षा देते हैं। घृत दुग्ध आदि सहित मासिक व्यय 200/- (दो सौ रुपये) होता है। शारीरिक आत्मिक और बौद्धिक उन्नति करने का शुभ अवसर उपलब्ध है। शीघ्र सम्पर्क करें-

जगददेव नैष्ठिक
आचार्य
आर्षगुरुकुल होशंगाबाद

"देवभाषा संस्कृतम्"

• डॉ॰ सावित्री देवी शर्मा
एम.ए. वेदाचार्या, बरेली

संस्कृत हमारी हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति का प्रतीक है। जिसमें आज भी जीवन्तता है, जिजीविषा है शक्ति और सामर्थ्य है। यह संसार की प्राचीनतम भाषा है किन्तु उसकी ताजगी, उसका तारुण्य निरन्तर बना हुआ है। उसमें नवीनतम सद्भावनायें हैं शक्ति का अजस्र स्रोत है। उसका नित नवीन साहित्य पुष्पित पल्लवित होता रहता है। आज भी काव्य, कथा, प्रबंध, निबन्धादि सारे देश में संस्कृत में लिखे जाते हैं। संस्कृत भाषा वैदिक ऋषियों की "पुराणी युवतिः" उषा की भाँति वैदिक युग से अब तक अनवरत मुखरित है। संस्कृत का सन्देश वेद, पुराण, दर्शन से हमें निरन्तर प्राप्त होता रहता है। जो आज भी प्रासंगिक है। यदि हम इसकी उपेक्षा करेंगे तो अपना ही सर्वनाश करेंगे। यह हैं हमारे देश के महामहिम राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरमण के संस्कृत विषयक विचार। वस्तुतः देश-विदेश के सभी विद्वान उपर्युक्त भावनाओं का समर्थन करते हैं। पण्डित जवाहरलाल नेहरू इस सुरभारती के साहित्य को भारत की शानदार विरासत स्वीकार करते हैं। जब तक यह जीवित है भारत की मूल प्रतिभा भूत कालीन परम्पराओं की सजीव निधियों को लेकर दृढ़तापूर्वक खड़ी रहेगी। कामधेनू के सदृश समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली संस्कृत भाषा स्वराज्य वैभव सम्पन्न स्वतन्त्र भारत की तो राष्ट्रभाषा थी ही आज भी सांस्कृतिक विचारों की आधारशिला बनकर हमारी धार्मिक मातृभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है।

विश्वकल्याण, सदाचार की प्रतिष्ठा, सार्वभौम विश्व प्रेम, कलात्मक "सत्यं शिवं सुन्दरम्" से परिपूर्ण संस्कृति का सन्देश तथा पावन आध्यात्मिक जीवन को सम्बल प्रदान करने वाली दिव्या सुरभाषा पचायतन देवमन्दिर सी प्रतीत होती है। अन्तः सलिला तरंगिणी के समान हमारी देवभारती सृष्टि के अनादि प्रवाह से सकल विश्व को अपने औदार्य जल से सींचती हुई विमल सात्विक ज्योति पुन्ज का प्रसारण करती आ रही है। यही विश्वभाषाओं की जननी है। शब्द कोष का विशाल सागर है। जिससे निरन्तर परिवर्तन शील साहित्य जगत् में अभिनव शब्द रत्नों की उत्पत्ति संभव है। विविध विषयों के पारिभाषिक शब्दों की नव निर्माण प्रक्रिया केवल संस्कृत भाषा ही जानती है। यौगिक शब्दों की नैरुक्त निर्वचन शैली का आधार संस्कृत धातुकोष है। अतः असीम धातु सम्बल ने इसे अपरिमित शब्दार्थ शक्ति प्रदान की है। किसी भाषा का सही शब्दानुवाद करने के लिये भी हमें इसकी आख्यातज शक्ति का सहारा लेना होगा। प्रचलित शब्दानुवाद हमारी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं है। महर्षि पाणिनि की व्याकरण प्रक्रिया का संस्कृत साहित्य अत्यधिक ऋणी है। किसी एक धातु की समस्त प्रक्रियाओं सभी लकारों के पद रूपों की संख्या 1200 के लगभग सिद्ध होती है। उन पदरूपों में भी उपसर्गों का योग, कृत्प्रत्यययोग तथा तद्धित समासादि से निष्पन्न एक ही धातु के रूपों की संख्या सवा लाख के करीब बैठती है। गण, सौत्र तथा कण्ड्वादि रूपों में विभक्त धातुओं की संख्या हजारों में गणनीय है। इस प्रकार प्रकृति प्रत्यय की अपवाद रहित विधि से सम्पन्न, समृद्ध पदावली देवभाषा संस्कृत को छोड़कर अन्यत्र अप्राप्य है।

अर्थ सम्पदा का आधार भी हमारा अति प्राचीन वेदांग निरुक्त ग्रन्थ है। इस विद्या का वैभव नाट्य, काव्य, पुराण, ब्राह्मण आयुर्वेदादि सभी विषयों में पूर्णतया प्रतिष्ठित है। एक-एक शब्द के अनेकार्थों का प्रकाशन इसी निर्वचन प्रक्रिया से सर्वत्र देखा जा सकता है। स्वर व्यंजनों की वैज्ञानिक व्यवस्था, अतुलनीय शब्दकोष के साथ विविध शब्द निर्माण सामर्थ्य, अर्थगाम्भीर्य, एक ही शब्द में विभिन्न अर्थों और परस्पर विरोधी रसों का समावेश छन्द योजना के विस्तार का सौन्दर्य संस्कृत को संसार की सभी भाषाओं में अद्वितीय सिद्ध करता है।

विश्व की सभी भाषाओं में संस्कृत के ही तत्सम या अपभ्रंश शब्दों का भण्डार दिखाई देता है। प्राकृतादि सभी स्वदेशी भाषायें संस्कृत का ही रूपान्तर प्रतीत होती हैं। कुछ भाषा वैज्ञानिक संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण कल्पित प्राग्भारोपीय भाषा को मूल प्रकृति मानकर संस्कृत को उसी का विकसित रूप स्वीकार करते हैं किन्तु प्रकृति प्रत्यय के संयोग से बनी संस्कृत ही वस्तुतः सभी भाषाओं की प्रकृति परिलक्षित हो रही है। विदेशी भाषाओं में सर्वप्रथम फारसी भाषा को ही लीजिये यह संस्कृत से निकली एक अपभ्रंश भाषा है। इसके प्राचीनतम ग्रन्थ "अवेस्ता" (छन्दो ऽवस्था) या जेन्दावस्ता की भाषा पालि-प्राकृत के समान ही संस्कृत का अपभ्रंश रूप है। इसके शब्दार्थों का शुद्ध स्वरूप वैयाकरण पाणिनि आदि ऋषियों के आधार पर ही निष्पन्न होता है। पौरस्त्य तथा पाश्चात्य विद्वान भी जेन्दावस्ता की गाथाओं को संस्कृतमय ही मानते आये हैं। इसी प्रकार लैटिन भाषा के शब्दों की प्रकृति भी संस्कृत को स्वीकार करने में किसी भाषा वैज्ञानिक को कोई आपत्ति न होगी। उदाहरणार्थ कुछ शब्द प्रस्तुत किये जाते हैं :-

लैटिन	वैदिक लौकिक संस्कृतशब्द
Datum	दत्तम् दत्तः दत्ता
Data	दत्ताः दत्तानि आदि
Twice	द्विः
Dozen	द्वादशन्
Decimal	दशम् +लव
Royal } Layal }	राजन्
Two	द्वौ
Three	त्रि
Dental } Dentist }	दन्त के आधार पर ही बने है।

उपरिलिखित संक्षिप्त शब्द कोष हमारी सुरभारती को विश्व भाषाओं का मूल कारण सिद्ध कर रहा है।

संस्कृत साहित्य द्वारा ही भारतीय एकता तथा विश्वसंघटन संभव है। विष्णु पुराण में भारतवर्ष की परिधि का वर्णन है -

उत्तरमं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्तति ।।

मार्कण्डेय पुराण में भी यही सीमा निर्धारित की गई है :-

दक्षिणा परितोह्यस्य पूर्वेण च महोदधिः।
हिमवानुत्तरेणास्य कार्मुकस्य यथा गुण ।।
तदेतत भारतं वर्षम्।।

उपर्युक्त दोनो पुराणों तथा अन्य भारत के ऐतिहासिक ग्रन्थों में वर्णित भारतीय सीमायें समान ही है।

मनुस्मृति में वर्णित वर्णाश्रम व्यवस्था, राजधर्म तथा मानव संस्कार पद्धति समस्त भारत में ही नहीं, अपितु सारे विश्व में ही कुछ विकृत रूप में प्रचलित है। प्राचीन संस्कृत साहित्य के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि पहले सारे भारत में मातृभाषा के समान देववाणी का प्रचलन था। नाटकों में प्रयुक्त संस्कृतसंभाषण शैली से इस देश की राष्ट्रभाषा तथा मातृभाषा संस्कृत ही सिद्ध हो रही है।

भारत के सभी भागों में स्थित गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु कावेरी आदि नदियाँ, महेन्द्र, मलय, विन्ध्य, ऋक्ष, सुमेरु, सह्याद्रि आदि पर्वत मान्यायें- वाराणसी, मथुरा, उज्जयिनी, अवन्तिका, हरिद्वार, द्वारिका आदि प्रसिद्ध नगरियाँ हमारे सभी सांस्कृतिक ग्रन्थों में वर्णित हैं। इस शस्य श्यामला भारत भूमि के सम्पूर्ण भागों में धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, शास्त्रीय गतिविधियाँ समानरूपेण प्रचलित हैं। हिमालय से कन्या कुमारी तक एक ही गौरव गाथा के शिशिर जल कणों से यह भूभाग आप्लावित हो रहा है। शिव की जटाओं में पतित पावनी पुण्यसलिला जाह्नवी का स्रोत समाया हुआ है। प्रत्येक भारतीय के कटि प्रदेश में निबद्ध मेखलासी विन्ध्य श्रेणियाँ तथा आर्यावर्त का पूर्वान्चल और पश्चिमान्चल इसकी दो सशक्त भुजायें प्रतीत होती हैं।

अतः देशकाल जयी सुरभाषा अपने विशिष्ट गुणों से समस्त विश्व को अपनी वात्सल्यमयी छत्र छाया में सर्वविध ऐश्वर्य प्रदान करती हुई एकता के स्नेह सूत्र में बाँध सकती है। संस्कृत की रक्षा निखिल संसृति की प्राणरक्षा का प्रतीक है। यही साम्प्रदायिक सौहार्द की जननी है। इसका प्रत्येक शब्द अर्थ परक गुणबोधक होने से भौतिक विज्ञान की विलक्षणता को प्रकट करता है। इसकी वैज्ञानिक देवनागरी ब्राह्मीलिपि, वाक्यार्थ की विचित्रता, सृष्टि तत्वों के साथ समरसता आदि गुण इस अमरवाणी को सकल विदेशी भाषाओं की दिव्य संजीवनी घोषित कर रहे हैं।

यही रहस्य इस देवगिरा में विश्व संघटन की अपार क्षमता को व्यक्त करता है। — शेष पृष्ठ ७ पर

आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती

— श्री पुरुषोत्तम सिंह योग, लखनऊ

थामस कार्लाइल ने महापुरुषों के विषय में लिखा है:

"महापुरुष मानव की अधंकारमय तीर्थ यात्रा में अग्नि पुंज की भाँति है। वह स्वर्गीय पथ संकेत की भाँति भूतकाल के सदैव जीते जागते प्रत्यक्षदर्शी है। भविष्य में क्या किया जा सकता है उसकी वह दैवी भविष्यवाणी है। यह मानव स्वभाव की सम्भावनाओं की मानो सशरीर मूर्तियाँ है।"

"महापुरुष अनन्त के स्रोत हैं। समुद्र एवम् पर्वतों के सहोदर भ्राता।"

दयानन्द का व्यक्तित्व भी अनन्त सागर, हिमालय जैसे पर्वत तथा अग्नि स्तम्भ जैसा विस्मयकारी है। आधुनिक भारत के दूसरे निर्माताओं की भाँति उनका कार्य क्षेत्र एक मुखी न होकर बहुमुखी है। हमारे व्यक्तिगत राष्ट्रीय सामाजिक तथा आध्यात्मिक जीवन का कोई भाग ही नहीं है जिसे महर्षि ने दिशा न दी हो। वह एक महान विद्वान, एक महान आध्यात्मिक गुरु, एक महान समाज सुधारक, एक महान देशभक्त और एक महान क्रांतिकारी सब कुछ एक शरीर में ही थे।

सर हर्बर्ट रिजले ने दयानन्द के हिन्दू समाज सुधार अभियान के विषय में कहा था कि वैदिक धर्म के चारों ओर इतना झाड़ झंखाड़ उग आया है कि उससे पीछा छुड़ाना कोई सुलभ कार्य नहीं है। उसने दयानन्द के प्रयत्नों की तुलना एक नन्हें दीपक से की थी।

दयानन्द इस असम्भव से लगने वाले कार्य में पूरी शक्ति से जुट गये। उन्होंने उन तमाम झाड़ झंखाड़ों को एक-एक कर बेरहमी से उखाड़ फेंका। उनके प्रयत्नों का नन्हा दीपक दावानल का रूप धारण कर उन कुरीतियों, भ्रमों तथा सामाजिक बुराइयों को धू-धू कर जलाने लगा। उस दुर्गम जंगल के बीच से उन्होंने जो मार्ग प्रशस्त किया उस पर उनके पीछे चल कर लाखों आर्य समाजी अपनी भ्रान्तियों, कुसंस्कारों, कुप्रथाओं अन्ध विश्वासों और असत्य देवी देवताओं को तिलांजली देकर स्वदेशी और स्वराज्य की भावना से अभिभूत हो चल पड़े। स्वदेशी और स्वराज्य की आवाज लगाने वाले दयानन्द पहले भारतीय थे। आगे चल कर दयानन्द की इस सेना ने गाँधी जी की अहिंसात्मक सेना का मुख्य अंग बनकर जहाँ ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर ली वहीं नवाब हैदराबाद की हिन्दू विरोधी नीतियों को भी धराशायी कर दिया।

दयानन्द की इस सेना के ही एक महारथी थे लाला लाजपतराय जिन्हें पंजाब का सिंह कहा जाता है। ब्रिटिश सरकार को चुनौती देने वाले भारत माँ के इस सपूत ने कहा था "दयानन्द मेरे गुरु हैं और आर्यसमाज मेरी माता है।

उसी सेना के दूसरे महारथी थे स्वामी श्रद्धानन्द। कैसा अद्भुत व्यक्तित्व था उनका। इतिहास के वह पहले गैर मुस्लिम है जिनको सुनने के लिए जामा मस्जिद दिल्ली में मुसलमानों की भीड़ मचल पड़ी थी और जिन्होंने उस मस्जिद के प्रवचन मंच से मुसलमानों को उपदेश दिया। और उन्हीं श्रद्धानन्द की गोली मार कर हत्या करने वाला अब्दुल रशीद भी मुसलमान था। उस हत्या पर दिल्ली में हत्यारे अब्दुल रशीद को मरणोपरान्त जो सम्मान दिया गया वह अब इतिहास बन चुका है। क्या दोष था श्रद्धानन्द का। 1923 में उन्होंने छः मास में 18000 मल्काने मुसलमानों को शुद्ध कर हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कर लिया था जिसे उनके पुरखे मुस्लिम काल में छोड़ गये थे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा- भारत के क्रान्तिकारियों के गुरु महर्षि के अनन्य भक्त थे। उनके आदेश का पालन करने के लिये ही वह विदेशों में संस्कृत का प्रचार तथा भारतीय युवकों को विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध करने गये थे। सावरकर को उन्होंने छात्रवृत्ति देकर विलायत बुलाया था। लन्दन का इण्डिया हाउस उन्हीं की देन है।

अमर शहीद भगत सिंह के पिता और चाचा आर्य समाजी सिख थे। यह महर्षि का ही देश प्रेम था जो भगत सिंह के सर चढ़ कर बोला था।

काकोरी षड्यन्त्र के राम प्रसाद बिस्मिल फाँसी के दिन भी वैदिक यज्ञ और संध्या के उपरान्त ही फाँसी चढ़े थे। भारतीय क्रान्तिकारियों में फाँसी पाने वाले अकेले मुसलमान अशफाकुल्ला बिस्मिल को अपना गुरु मानते थे।

भाई परमानन्द और न जाने कितने दयानन्द भक्तों ने देश के लिये अपने प्राणों का मोह नहीं किया। फहरिस्त बहुत लम्बी है।

स्वयं गुजराती होते हुए और केवल गुजराती एवम् संस्कृत भाषा भाषी होते हुए भी उनकी भविष्य दृष्टि से यह बात छिपी न रह सकी कि हिन्दी ही स्वतन्त्र भारत की राज्य भाषा और राज्य लिपि के पद पर आसीन होने योग्य है। उनकी कथनी और करनी में न अन्तर था न विलम्ब। उन्होंने तुरन्त हिन्दी सीखी और अपने सभी ग्रन्थ उसी भाषा तथा लिपि में लिखे।

कलकत्ते में वाइसराय से मिलने पर शिष्टता वश उन्होंने ब्रिटिश राज्य में कानून व्यवस्था की प्रशंसा की तो वाइसराय ने उनसे ब्रिटिश साम्राज्ञी के राज्य को भारत में अनन्तकाल तक स्थिर करने के लिए भगवान से प्रार्थना करने को कहा। स्वामीजी ने दो टूक उत्तर दिया। मैं तो इस शासन के शीघ्रातिशीघ्र समाप्त होने की कामना करता हूँ। बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी शासन से उत्तम होता है।

वास्तव में अंग्रेजी शासन को भारत से जड़ मूल से मिटाने की प्रक्रिया के जन्मदाता दयानन्द ही थे। प्रसिद्ध फ्रेंच दार्शनिक रोमियाँ रोला के शब्दों में :-

"इस व्याघ्र पुरुष को कदाचित
यूरोप उस समय भूल जायगा जब
वह भारत का मूल्यांकन करेगा।
किन्तु जिसको उसे अपनी हानि

के परिपेक्ष में स्मरण करना
पड़ेगा क्योंकि दयानन्द में दार्शनिक,
कर्म योग तथा नेतृत्व शक्ति
का अद्भुत सम्मिश्रण है।"

दयानन्द का दूसरा गुण उनका कठिन परिस्थिति में भी सत्य वादन का साहस है जिसके कारण अनायास ही उनके सम्मुख नत मस्तक हो जाना पड़ता है।

बरेली में लेक्चर देते समय सर्वोच्च अंग्रेज सिविल तथा सैनिक अधिकारियों की उपस्थिति में उन्होंने जब ईसाईधर्म की कटु-आलोचना की तो उनके लाल चेहरे और भी रक्तिम हो गये। स्वामीजी को संदेश भिजवाया गया कि अगले दिन होने वाली इस्लाम के विषय की चर्चा में वह सँभलकर बोलें क्योंकि मुसलमान ईसाइयों की भाँति सहिष्णु नहीं हैं।

अगले दिन भाषण प्रारम्भ करने से पहले महर्षि ने अपनी सिंह दृष्टि चारों ओर डालकर सिंह नाद किया: मुझे कहा गया है कि यदि मैं इस्लाम का खण्डन करूँगा तो कुछ भी घट सकता है। किन्तु मैं सत्य वादन कर अपने प्रभु के प्रति कर्तव्य पालन करूँ अथवा प्राणों के भय से चुप रह जाऊँ। नहीं मुझे सत्य वादन से कोई नहीं रोक सकता।" और उन्होंने स्वभाववश इस्लाम की भी उसी प्रकार समालोचना की जिस प्रकार दूसरे मत मतान्तरों की करते आये थे। इसके पश्चात तो सभी अंग्रेज अधिकारी तथा वहाँ के पादरी स्कॉट उनके प्रशंसक तथा मित्र बन गये।

भगवद्गीता में दैवी सम्पदा के लक्षण गिनाते समय भगवान कृष्ण ने प्रारम्भ में ही कहा है:-

अभयं सत्व संशुद्धि ज्ञान योग व्यवस्थित.

दयानन्द मानों इन तीनों दैवी-सम्पदा की सशरीर मूर्ति ही थे। मैडम-ब्लेवटस्की ने एक घटना का आँखों देखा वर्णन किया है जिससे महर्षि की निर्भीकता की एक झलक हमें देखने को मिलती है वह कहती है:-

"कभी-कभी ऐसा लगता है कि यह आश्चर्यजनक हिन्दू मन्त्र पूत है। वह अपने श्रोताओं में सर्वोत्कृष्ट क्रोध उत्पन्न होने की किंचित भी चिन्ता नहीं करता जो भारत में अत्यन्त अनिष्टकारी हो सकते हैं।

क्रमशः

जाति अथवा वर्ण

–श्री सत्यनिरूपण गुप्त
शिकोहाबाद

आज वर्ण शब्द शशक श्रृंग बन गया है तथा इसका स्थान जाति शब्द ने ले लिया है। इस लेख में जाति तथा वर्ण दोनों ही शब्दों के अर्थों को समझाने का प्रयत्न किया गया है। ----- सम्पादक ।

प्रथम मैं जाति शब्द को ही लेता हूँ। इसके अर्थ को हम दो भागों में बाँट सकते हैं- प्रथम- देशभाषा, संस्कृति के विचार से मनुष्य समाज का विभाग, जैसे अंग्रेज जाति, जर्मनजाति, भारतीय जाति आदि। द्वितीय- आकृति तथा नस्ल आदि की समानता के विचार से विभाग जैसे मनुष्य जाति, पशुजाति, अच्छी जाति का आम, घोड़ा, बैल, गाय, भैंस आदि। कुछ लोग जाति का अर्थ जन्म से लेते हैं जो मेरे विचार से सही नहीं है। जाति शब्द स्त्रीलिंग है। इसकी धातु जन् है। इसमें क्तिन् प्रत्यय लगकर जाति शब्द बना है, जिसका अर्थ है- उत्पत्ति अथवा जन्म अर्थात् जन्म से निश्चित होने वाली जाति। जैसे- मनुष्यजाति, पशुजाति आदि। कुछ लोग जाति का अर्थ जन्मा हुआ लेते हैं। मेरे विचार से यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि शब्द है जात (जाति नहीं)। यह शब्द जन धातु में क्त प्रत्यय लगने से बना है, जिसका अर्थ है- जन्मा हुआ, जैसे- जल जातु, नवजात आदि। इसी प्रकार जातक का अर्थ है- जात-कन्- सद्योजात बालक, नवजात शिशु, न कि- नव जाति शिशु। इसी प्रकार बालक के उत्पन्न होने के समय किया जाने वाला चौथा संस्कार- जात कर्म संस्कार है, न कि, जाति कर्म संस्कार। इसे जातेष्टि संस्कार भी कहते हैं ।

जाति की पहचान बताते हुए गौतम मुनि कहते हैं- समान प्रसवात्मिका जाति । जिसका समान प्रसव हो वह जाति है, अर्थात् जिसके संयोग से वंश चलता हो। गाय तथा बैल से वंश चलता है। स्त्री पुरुष से वंश चलता है। अतः ये दोनों समान जाति के हैं। योग शास्त्र में लिखा है- सति मूले तद्विपाको जाति आयु"भोग"। जाति की दूसरी पहचान है- आयु, जितनी आयु गाय की होगी उतनी ही बैल की होगी। इसी प्रकार स्त्री-पुरुष की भी आयु समान होगी, क्योंकि ये दोनों एक ही जाति के हैं। तीसरी पहचान है- भोग। अर्थात समान जाति वालों का आहार-विहार भी समान होगा। यह सिद्धान्त समान जाति वाले सभी प्राणियों पर लागू होता है। अत. जाति का वास्तविक अर्थ क्या है? स्पष्ट हो गया होगा।

अब प्रश्न उठता है फिर ये जाति प्रथा कहाँ से आ टपकी? पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय ने अपनी पुस्तक वेद प्रवचन में लिखा है कि यह वर्ण व्यवस्था जिसे चातुर्वर्ण्य कहते हैं स्वतः सिद्ध नहीं है अपितु समाज कल्पित तथा समाज शासित है। आरम्भ में केवल गुण तथा कर्म ही ब्राह्मणत्व के निर्णायक थे, जन्म नहीं। कालान्तर में कभी कोई ब्राह्मण रहा होगा जो अपने अयोग्य पुत्र के लिए वही अधिकार चाहता होगा जो उसे प्राप्त थे, इसलिए उसने गुण कर्म पर आधारित परम्परा को तोड़ दिया तथा उसकी प्रबल आवाज के सामने जनता की ओर से विरोध न हो सका होगा। फिर क्या था तात्कालिक ग्रन्थों ने विशेषतः पुराणों ने इस गलत परम्परा पर अपनी छाप लगा दी तथा आगे चलकर तुलसीदास ने इस पर-पूजिय विप्र जो वेद विहीना कह कर मुलम्मा की पर्त चढ़ा दी। ऐसे देवपीयु ही संस्कृति को सुरक्षित रखने की अपेक्षा उसको नष्ट करने के कारण बनते हैं। यजुर्वेद का 36/11वाँ मन्त्र इस जाति प्रथा का जनक कहा जाता है, क्यों कि अविद्वानों के हाथों में पड़कर इसके अर्थ का वह अनर्थ हुआ है जिसे पढ़कर मस्तक शर्म से झुक जाता है। अर्थ करते समय वह व्यक्ति यह न समझ सका कि 11वाँ मन्त्र 10वें मन्त्र का उत्तर है। और बिना सोचे-समझे, पूर्वा पर सम्बन्ध स्थापित किए इस 11वें मन्त्र का अर्थ जाति परक कर डाला। फलस्वरूप चारों वर्णों का आपसी सहयोग जाता रहा। ऊँच-नीच, छुआ-छूत जाति भेद आदि की भावनाएं पनप गईं और देश फूट की भट्टी में जलने लगा तथा आज भी जल रहा है। मन्त्र है.- यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्। मुखं कि आसीत किं बाहू किमूरू (किं) पादौ उच्येते।। 31/10 ऋषिकृत अर्थ- जिस पुरुष (शरीर, समाज, सृष्टि) को विविध प्रकार से धारण करते हों उसको कितने प्रकार से कहते हैं। इस ईश्वर की सृष्टि में (शरीर, समाज) मुख के समान श्रेष्ठ कौन है? भुजबल को धारण करने वाला कौन? जंघाओं का कार्य करने वाला कौन? पाँव के समान नीच कौन कहे जाते हैं? इस मन्त्र में उठाए गए प्रश्नों का उत्तर क्रमश. 11वें मन्त्र में इस प्रकार दिया गया है। इस शरीर समाज में मुख के समान मुख्य ब्राह्मण है। भुजाओं के समान पराक्रम युक्त क्षत्रिय है। जंघाओं के तुल्य वेगादि काम करने वाला इसका वैश्य है। पैरों के समान अभिमान रहित सेवा परायण मूर्खपन आदि गुणों से युक्त शूद्र कहे जाते हैं। अथवा माने जाने चाहिए। यहाँ सन्दर्भ की दृष्टि से अजायत का अर्थ उच्येते है। यह मन्त्र पुरुष सूक्त का एक भाग है। अतः यह शरीर समाज से सम्बन्धित है। यजुः का 31/11वाँ मन्त्र है ब्राह्मणोऽस्य मुखं आसीद, बाहूराजन्यः कृतः। ऊरूतदस्य वैश्य (आसीत्) पद्भ्यां शूद्रो अजायत। यह मन्त्र ऋग्वेद तथा अथर्व में भी आया है। यहाँ अजायत क्रिया का अर्थ 10वें मन्त्र के अनुसार उच्येते ही लिया जाना चाहिए, न कि उत्पन्न हो गया। इस 11वें मन्त्र का अर्थ होना चाहिए था मानव समाज रूपी विराट् पुरुष का जो मुख्य भाग (मुख) होगा उसको हम ब्राह्मण कहेंगे परन्तु अर्थ कर डाला- जो ब्राह्मण होगा उसको हम समाज का मुखिया (मुख) कहेंगे। (वेद प्रवचन-उपाध्याय जी)। फिर क्या था प्रजापति के मुख से ब्राह्मण की, भुजाओं से क्षत्रिय की, जंघाओं से वैश्य की तथा पैरों से शूद्र की उत्पत्ति करा डाली। उत्पत्ति करते समय वह व्यक्ति यह भूल गया कि निराकार के शरीर से उत्पत्ति कैसी? फिर ईश्वर (प्रजापति) प्रकृति के विरुद्ध कोई कार्य कैसे करेगा? कुछ विद्वानों ने अपने प्रमाण में तैत्तिरीय संहिता कीस मुखतः त्रिवृत्तं निरमिमीत-ये पंक्तियाँ प्रस्तुत की हैं। यदि इस असंभव को तर्क के रूप में मान भी लिया जाय तो फिर यह चौथा वर्ण कहाँ से आ गया? इसे हम केवल घपला ही कह सकते हैं और कुछ नहीं? मुख से जब प्रथम तीनों ही वर्ण पैदा हुए फिर केवल ब्राह्मण को ही प्राथम्य क्यों?

इस दुर्भावना से ऊँचनीच की भावना पैदा कर दी। इसके विरुद्ध महर्षि दयानन्द ने अपनी आवाज बुलन्द की थी तथा तात्कालिक ग्रन्थों को अप्रमाणित कह कर उनकी धज्जियाँ उडाने वाला वह पहला व्यक्ति था। उन्होंने गुण,कर्म तथा स्वभाव के आधार पर कृष्ण की भाँति वर्ण व्यवस्था के पुनरुद्धार का बीड़ा उठाया था। परन्तु दकियानूसी, अपना असम्मान न सह सके और उसे मरवा दिया। देखिए-जनक क्षत्रिय होकर विदेह,युधिष्ठिर धर्मराज,तथा विश्वामित्र ऋषि कहलाए। पहले ऊँच-नीच की कोई भावना थी ही नहीं। तभी तो कृष्ण ने विदुर का तथा राम ने शबरी का आतिथ्य स्वीकार किया। था। इतना ही नहीं वशिष्ठ (गणिका पुत्र) महर्षि कहलाए, व्यास (दासी पुत्र) वेदव्यास बन गए, तथा पराशर ने महर्षि पद पाया। उपनिषद् काल में शूद्र शब्द का कितना सम्मान था। राजा जानश्रुति रैक्व के पास शिक्षा ग्रहण करने के लिए गए और बोले महाराज, मेरी सभी गायें तथा भूमि स्वीकार कर मुझे शिक्षा दीजिये। रैक्व ने उत्तर दिया हारेत्वा शूद्र तवैव सह गोभिः अस्तु।। छान्दोग्य 4/2/3 यजुर्वेद में तो शूद्र को तप से शूद्र कहकर सम्मान दिया गया है। दूसरी ओर तुलसीदास ने तपस्या कर रहे शूद्र को राम के द्वारा मरवा दिया था। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार एलूष को दासी पुत्र होने के कारण शूद्र कहकर ऋषियों ने उसका अपमान करके यज्ञ से बाहर निकाल कर सरस्वती नदी के बालू के तट पर डाल दिया था जब उसने ऋयोनप्त्रीय सूत्र गाना प्रारम्भ कर दिया तब उसके प्रभाव को देखकर ऋषियों ने तुरन्त उसे ससम्मान यज्ञ में बुला लिया। आगे चलकर यही एलूष ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 30वें मन्त्र से लेकर 34वें मन्त्रों तक का दृष्टा हुआ तथा ये पाँचों मन्त्र उसी के नाम से विख्यात हुए है। इससे स्पष्ट है कि शूद्र भी वेदज्ञ थे तथा कोई भी वेदज्ञ हो सकता था।

प्रत्येक अंग पृथक होते हुए भी जीवन यात्रा को पूर्णता की ओर ले जाता है। ये शूद्र (पैर) ही हैं जो आपत्ति में शरीर-समाज को लेकर

–शेष पृष्ठ पर

आर्यसमाज की संस्थाओं पर आर्यसमाज का नियन्त्रण रहे

• विजेन्द्र शार्मा, पश्चिमी आस्ट्रेलिया

आर्यसमाजों के पास लाखों, करोडों की सम्पत्ति है, पाठशालायें हैं, विद्यालय हैं, मन्दिर हैं, मुद्रणालय हैं, पुस्तकालय हैं, गुरुकुल हैं, कोष है, कार्यकर्ता हैं, सो तो ठीक है परन्तु इन सभी के द्वारा आर्यसमाज को, वैदिक धर्म को, हमारे मन्तव्यों को, ऋषि दयानन्द के मिशन को कितनी गति मिलती है यह विचारणीय है ये सब साधन हैं। इन सभी साधनों का भरपूर लाभ उठाया जा रहा है या नहीं, यह एक प्रश्न है जिस पर विचार करना अति आवश्यक है।

हर एक आर्यसमाज की संस्था पर आर्यसमाज का पूरा नियन्त्रण होना अति आवश्यक है। कहीं किसी आर्यसमाज की संस्था में गैर आर्यसमाजी हरकतें तो नहीं की जाती इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है। मैंने यह सुना और अनुभव किया है कि कहीं-कहीं इन आर्यसमाज की संस्थाओं से आर्यसमाज को क्षति पहुँचाने वाले कार्य भी किए जाते हैं इसका एक उदाहरण मैं यहा दे रहा हूँ- आर्यसमाज की एक पाठशाला के मुख्य अध्यापक सनातन मत का था। उसने अपनी कन्या का विवाह संस्कार सनातन पौराणिक मत के अनुसार उस आर्यसमाज की पाठशाला के अन्दर करवाया। पाठशाला आर्यसमाज की संस्कार गैर आर्यसमाजी।

जिन स्थानों के आर्यसमाज की पाठशालाओं में सहशिक्षा हो उन आर्यसमाजों को सार्वदेशिक सभा की सदस्यता से निकाल देना चाहिए क्योंकि सहशिक्षा स्वामी दयानन्द की शिक्षा और मन्तव्यों के प्रतिकूल है। स्वामी दयानन्द जी ने शिक्षा की व्यवस्था का विवरण देते हुए अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में इस प्रकार दिया है- लडकों की लडकों को और लडकियों को लडकियों की शाला में भेजें-- कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। यह शिक्षा व्यवस्था स्वामी दयानन्द की दी हुई है जो सहशिक्षा के प्रतिकूल है। अगर हम स्वामी जी की इस शिक्षा व्यवस्था को नहीं मानते तब हम आर्यसमाजी नहीं कहला सकते इसलिए किसी भी देश विदेश की पाठशालाओं में सहशिक्षा हो उन स्थान के आर्यसमाजों को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सदस्यता से निकाल देना चाहिए।

ऐसा भी हुआ है

आर्यसमाज की संस्थाओं पर आर्यसमाज का ठीक नियन्त्रण न होने से आर्यसमाज को कुछ क्षति भी पहुँचती है। उदाहरण के लिए मैं यहा निज अनुभव देना उचित समझता हूँ-।

मुझे वैदिक साहित्य की आवश्यकता थी। मैंने पुस्तकों की सूची के साथ बैंक ड्राफ्ट द्वारा रुपयों को भेजा। लगभग एक वर्ष रुपयों को जमा कर रखे रहे पुस्तकों को भेजा नहीं। जब मैंने पत्र द्वारा जाच की तब उत्तर मिला कि आप की भेजी हुई सूची खो गई है, कृपया दूसरी सूची भेजिए। दूसरी बार सूची भेजने पर भी पुस्तकें भेजी नहीं गई। जब मैंने पुन जाच की तब फिर उत्तर मिला की दूसरी बार भेजी गई सूची भी खो गई है इसलिए सूची फिर भेजिए। तीसरी बार भेजी हुई सूची पर केवल 26/- की पुस्तकों पर डाक व्यय और बिल्टी बनाने के लिए 106/- लगा कर वायु डाक से कुछ पुस्तकों को भेज दिए। इस हानिकारक अनुभव से हतप्रभ होकर मैंने आर्यसमाज की उस संस्था से पुस्तकें न मगाने का निश्चय कर लिया। दूसरे पुस्तक विक्रेताओं से पुस्तकें मगाने पर अविलम्ब पुस्तकें भेज दी जाती हैं। मेरे पास आर्यसमाज के उस संस्थान से उपरोक्त विषय पर जो पत्र प्राप्त हुए हैं वे सुरक्षित रखे हुए हैं जिन्हें मैं किसी को भी दिखा सकता हूँ।

हर एक आर्यसमाज के संस्थाओं के कार्यों की जाच करना बारीकी से उनके द्वारा आर्यसमाज के उद्देश्यों की प्रगति में योगदान दिलाना अति आवश्यक है।

एक समय था जब कि आर्य युवक और आर्य लोग गाया करते थे-

> गावेंगे खून भरब से उसमें यह लिखा होगा,
> गुरुकुल के ब्रह्मचारी हलचल मचा रहे हैं।

आज वे ब्रह्मचारी किधर हैं? क्या वे कश्मीर पहुँच रहे हैं? क्या वे भटके हुए खालिस्तानियों को सही राह दिखा रहे हैं? क्या वे उत्तर-पूरब में ईसाई उपद्रवकारियों को सदुपदेश दे रहे हैं? क्या वे विधर्मियों और विरोधियों को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे रहे हैं? ◘

पृष्ठ ४ का शेष

नई शिक्षानीति और हमारी देवभाषा-भारतीय प्रशासन ने इस भाषा के विनाशार्थ नई शिक्षा नीति की योजना 1986 ई॰ में बनाई है, जिसके अनुसार कोई भी छात्र प्रारम्भिक कक्षाओं में संस्कृत का अध्ययन नहीं कर सकता। उच्चतम श्रेणियों में पहुँचने पर किसी भी विद्यार्थी में इस उपेक्षित भाषा के प्रति न रुचि ही रहेगी न अवकाश मिल सकेगा। अत भारत के सभी प्रान्तों में बहुलता से बोली लिखी जाने वाली विद्वज्जन सम्मानित भाषा के सुरक्षणार्थ आर्यावर्तीय जन मानस भारत सरकार से अनुरोध करता है कि जिस भाषा के माध्यम से अनेक विश्वविद्यालयों में अध्ययन अध्यापन किया जाता है। शासन की ओर से चरक सुश्रुतादि संस्कृत के ग्रन्थों के द्वारा चिकित्सा शास्त्र का अभ्यास कराया जाता है। विभिन्न प्रान्तों में सरकारी अनुदान प्राप्त पत्र पत्रिकाओं का संस्कृत में प्रकाशन किया जाता है। उस भाषा की उपेक्षा न करके नवीन शिक्षा नीति में इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार करें।

देववाणी के प्रचार से ही भ्रष्टाचार का निवारण--

सन 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यदि हमारे प्रशासन द्वारा संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य कर दिया जाता तो आज राष्ट्र का चरित्र कुछ और ही होता। उत्तरोत्तर गिरता हुआ चारित्रिक स्तर सामाजिकों को कष्ट न पहुँचाता। पद लिप्सा, धनान्धता, स्वार्थपरता के कारण प्रत्येक विभाग में उत्कोच का बोलबाला है जिससे हमारी कर्मभूमि धर्मक्षेत्र न होकर अधर्म-अन्याय का केन्द्र बन गई है।

धार्यते य स धर्म यतो अभ्युदयनिःश्रेयससिद्धि स धर्म धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित आदि आचार शिक्षायें तो संस्कृत के द्वारा ही प्राप्त होती हैं। उस सुशिक्षा के अभाव में प्रत्येक नागरिक कर्मचारी धनागम के अनुचित साधनों का अहर्निश मानस जप करता हुआ पारम्परिक मित्रदृष्टि का त्याग कर शत्रुवत दुखद व्यवहार कर रहा है। आज हम दीन-हीन-क्षीण हुये उस अनादिनिधना दैवी वाक् के कृपा प्रसाद से वंचित होकर अपने स्वरूप को भूल चुके है।

> हम कौन थे क्या हो गये और क्या होंगे अभी।
> आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी।

इस विषम परिस्थिति में भारत के प्रत्येक संस्कृतज्ञ विद्वान का परम धर्म है कि वह इस सुरवाणी की रक्षार्थ अपना तन मन धन समर्पित कर यथाशक्ति हर सम्भव प्रयास करें। तभी हमारा भारतवर्ष वेदोक्त सत्य सनातन धर्म के सांस्कृतिक आदर्शों का पालन कर पुन जगद्गुरु की प्रशस्त पदवी प्राप्त कर सकेगा। ◘

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला सभाओं के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकट्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं, अत आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुन धन इकट्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अत समस्त आर्यजनों से अनुरोध है कि इनकी बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

— कार्यालय सचिव

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- "मेरे 30 वर्षीय मित्र है। इनको कान बहने का रोग है। आशा है कि प्रेषित बन्द डाकलिफाफ में निम्न पता पर उत्तर देंगे।"

- महेन्द्रप्रताप आर्य, ग्राम-पहाड़पुर, डाकघर- हेतमपुर, जनपद-{वाराणी}

समाधान- कर्णरोग की सर्वोत्तम खाने की औषधि सारिवादि बटी {वैद्यनाथ} है। एक बटी प्रातराश व रात्रिभोजन बाद दूध के साथ लेवें। कानीपप {डाबर} की दो बूंद नित्य कान में डाला करें। रुई की फुरेरी से कान साफ रखें। कम से कम तीन सप्ताह तक उपचार जारी रखें।

२

पत्र- "मेरी आयु 40 वर्ष है। सर्दी-जुकाम से बहुधा पीड़ित रहता हूँ। डाक्टरों ने फेफड़ों की कमजोरी बताई है। पाचन संस्थान सदैव कमजोर रहा है।"

- चरन सिंह आर्य, व्यवस्थापक- सत्यप्रकाशन, मथुरा-3

उत्तर- लालमिर्च- गरममसाला रहित भोजन लिया करें। शुद्ध घी/सरसों तेल का सेवन ठीक है। प्रत्येक भोजन बाद एमलाईक्योर {एमिल} सीरप दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। गुर्च- 2 ग्राम, मुलेठी 2 ग्राम, अदरख- 2 ग्राम, तुलसी 5 पत्ती, कालीमिर्च- 2 दाने और मुनक्का 2 दाने पीसकर एक पाव पानी में उबालकर चौथाई काढ़ा {क्वाथ} बनायें। छानकर एक प्याला गरम दूध में मिलाकर प्रातः खाली पेट 40 दिन तक पियें। सायं भोजन से तीन घण्टे पहले गुरुकुल चाय पिया करें। सोते समय नाक में षड्बिन्दु तेल सूता करें।

:: रोगविवरण के साथ तीन डाकलिफाफे भेजना चाहिये -

- स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती {कच्चाहारी}
आर्यसमाज पिथौरागढ़, {उ0प्र0}

आदर्श विवाह संस्कार

गत 2 जून दिन शनिवार को मऊ जनपद स्थित ग्राम नियामतपुर के श्री रामधारी शर्मा की सुपुत्री आ0शीला-शर्मा का विवाह इन्दारा ग्राम के श्री-मुसाफिर शर्मा के सुपुत्र श्री सत्यप्रकाश शर्मा के साथ हर्ष के साथ माननीय-श्री लालमणि आर्य के प्रयासों से आर्यसमाज किंयारा रोड के मन्त्री श्री पारसनाथ-आर्य द्वारा वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। उपस्थित ग्रामीण जनता पर काफी प्रभाव पड़ा।

- चम्पारण जिला में वैदिक धर्मप्रचार 16 जून से 30 जून तक जिला सभा के द्वारा आर्य समाज मझरिया किशुन, जयनगर पुरुषोत्तमपुर, जगदीशपुर प0 चम्पारण प्रसौनी में प्रचार, लक्षाहुति, अखण्डयज्ञ शान्तियज्ञ एवं गायत्री यज्ञ हुआ।

मौलाना शेख अब्दुलरहमान धर्मपाल बने

दिनांक 22 अप्रैल, को आर्यसमाज मन्दिर संभाजी नगर में नायगाँव {साकजी} तहसील संभाजी नगर {औरंगाबाद} के पेश इमाम शेख अब्दुल रहमान हाजी अब्दुल शेख के निवेदन पर शुद्धि संस्कार पं0 नरदेव स्नेही ने करवाया व श्री धर्मपाल आर्य नाम दिया, साथ ही सम्पूर्ण परिवार की शुद्धि धर्मपत्नी हमिदा बेगम से सौ0 हेमलता, पुत्रों का नाम निवेश कुमार व धर्मदेव रखा गया।

इस अवसर पर श्री धर्मपाल ने कहा मैं अपने पूर्वजों के धर्म में लौट आया हूँ। जहाँ आदि किताब जिसे वेदज्ञान कहते हैं वही पूर्ण किताब संसार में सबसे पहले आई है। कुरान का मुहम्मद कहता है कि मुहम्मद पर ईमान लाओ तभी जन्नत मिलेगी। मुहम्मद पर ईमान लाने वालों जारा सोचो मुहम्मद तो खुद एक इंसान है, वह परमात्मा नहीं है। हम उस किताब पर ईमान क्यों न लायें जो कुरान से पहले धरती पर मौजूद है जिसे हम वेद कहते हैं। जो प्रथम आया वह पूर्ण है। इसीलिये मोक्ष का अधिकारी बना हूँ मैं लौट आया यह महर्षि दयानन्द की महती कृपा है।—दयाराम राजाराम बसैये आर्यसमाज खड़की।

प्रशिक्षण शिविर

सभा के समर्पित उपदेशकों, प्रचारकों एवं ढोलकवादकों को आज की बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप प्रचार की कुशलतम क्षमता उपलब्ध कराने हेतु ।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 द्वारा

गंगा के रमणीय तट, बृजघाट पर मिति श्रावण कृष्ण पक्ष 15, सं0 2047 से श्रावण सुदी 8 तदनुसार दिनांक- 22 से 29 जुलाई, 1990 तक।

आर्यसमाज मन्दिर ब्रजघाट में प्रशिक्षण शिविर का कार्यक्रम

दिनांक- 22·7·90 - रविवार

प्रातः 10 बजे, सभा प्रधान माननीय श्री पं0 इन्द्रराजजी द्वारा शिविर का उद्घाटन।

दिनांक- 29·7·90 - रविवार

प्रातः 10 बजे सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री जयनारायण "अरुण" की अध्यक्षता में समापन समारोह होगा।

प्रशिक्षण कार्य में प्रतिदिन प्रचार के अनेक उपक्रमों पर आधारित विभिन्न कार्यक्रम विचार गोष्ठी आदि होंगे। सभी उपदेशकों/प्रचारकों/ढोलकवादकों की उपस्थिति अनिवार्य है।

मनमोहन तिवारी — हरिश्चन्द्र आर्य
सभामन्त्री — अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ।

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पनबड़ी सिवि लाइन्स, बदायूँ का वार्षिकोत्सव एवं महाय दिनांक 8,9,10 जून, 1990 को बड़े ही हर्षोल्लास के वातावरण मनाया गया। उत्सव में आर्य जग के प्रसिद्ध विद्वानों सर्व श्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास, स्वामी विवेकानन्द युवा ओजस्वी वक्ता भू0पू0 पादरी पं0 जयन्त कुमार हरियाणा से पधा भजनोपदेशकों ने अपने भावपूर्ण ओजस् व्याख्यानों द्वारा आर्य जनों को ज्ञा लाभ प्रदान किया।

इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, हिन्दू {आर्य} रक्षा सम्मेलन, आर्य कवि सम्मेलन व आयोजनों के साथ-साथ 10 जुला 1990 को एक वृहत हरिजन एवं सवर्ण सामूहिक प्रीति भोज भी सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जिले की विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ लखनऊ से डा0 भानु प्रकाश आर्य अन्तरंग-सदस्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 भी पधारे।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

- आर्यसमाज भरौली जनपद बदायूँ का 33वाँ वार्षिक उत्सव दि0-13 से 15 जून तक धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

वेद प्रचार सप्ताह

श्रावण शुक्ल १४, सोमवार से भाद्रपद कृष्ण ८, मंगलवार ६ अगस्त से १४ अगस्त १९९० तक

श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान स्मृति एवं स्वाधीनता दिवस समारोह पूर्वक मनाकर वैदिक धर्म का सन्देश जन-जन तक पहुँचाइये।

इस वर्ष "वेद-प्रचार सप्ताह दिनांक- 6 अगस्त से 14 अगस्त 1990 तक सोमवार से मंगलवार तक मनाया जावेगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्नप्रकार है -

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने के भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला आर्यसमाज, आर्य कुमार सभा, आर्य वीरदल, तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये। जहाँ आर्य कुमार सभायें तथा आर्य वीरदल न हों, वहाँ वह स्थापित किये जाने चाहिए। वेदप्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जायें, जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा सके।

श्रावणी का महत्व-

आर्यसमाज के प्रवर्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान वैदिकधर्म के महान प्रचारक, मानवता को मतान्धता, एवं अन्ध-विश्वासों के अन्ध-कूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रदाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान उद्देश्य है।

वेद प्रचार निधि-

इतने बड़े उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिए। प्रान्त में लगभग दो हजार आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक-एक रुपया वेदप्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझें तो वेदप्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेदप्रचार के लिए जो धन संग्रहीत किया जाय, उसे सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

श्री कृष्ण जन्मोत्सव-

14 अगस्त 1990 भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अंगिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभजन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेष रूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिए उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रसार किया जाना चाहिये।

प्रात 7 बजे से आर्यमन्दिरों में आर्य पर्व पद्धति के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्यसमाज मन्दिरों में अथवा सार्वजनिक स्थानों में योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाय।

कार्यक्रम 6 अगस्त से 14 अगस्त 1990 तक

प्रतिदिन प्रात सूर्योदय वेला में दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय, और इस सत्संग को यथासम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिये।

मध्यान्ह - वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का विशेष आयोजन हो वेदों के आधार पर विश्व बन्धुत्व, मानववाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं वाक संघर्ष- इस सप्ताह में आर्य वीरदल आर्यकुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिए।

श्रावणी कार्यक्रम-

पारिवारिक यज्ञ- श्रावणी {रक्षाबन्धन} के दिन प्रत्येक आर्यपरिवार में प्रात पारिवारिक यज्ञ करें। प्रात 7।। बजे से समस्त आर्य नर-नारी युवक तथा बालक-बालिकायें आर्यमन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनायें- वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एवं वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जावे।

स्वतन्त्रता दिवस-

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्यजनों के प्रयत्न से भारत स्वतन्त्र हुआ। 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा की प्रतिज्ञा लीजिये- आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के संग्रामों में सर्वाधिक बलिदान किया है। देश में प्रजातन्त्र के समुचित विकास, भ्रष्टाचार, निवारण, पंचमागी तत्व निरोधादि कार्यों में आर्यसमाज को पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

टिप्पणी-

{1} इस सप्ताह के आरम्भ में आर्यमन्दिरों पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिए।

{2} इस सप्ताह को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिए हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महानुभावों की तैयार करे, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से विद्यालय आदि से सम्बन्ध रहा हो, और इस समय आर्यसमाज के सभासद नहीं हैं ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

लाश

एक लाश।
निवस्त्र,
हताहत,
लहुलुहान-तड़पती,
क्षण भर में ठही पर
एक प्रश्न छोड़ जाती है-
किसकी लाश?
कैसी लाश।
प्रश्न उठता है,

लोग अपनी जुबानी
एक दूसरे से कहते हैं
किसी अबला की है?
क्या हुआ था उसे?

उत्तर ।
खामोशी बीच
सहमी सी उभरी
आवाज
सामूहिक रेप
उसके बाद?
समाज के मुँह पर
नैतिकता के आदर्श पर
झापड़ मारने
उनकी मर्यादा को
ठिकाने छोड़ गये
कुछ जालिम
कुछ दरिन्दे लोग

विचार हुआ विश्लेषण हुआ
पर कुछ नही हुआ

नारे लगे, सभाये चली
भाषण तक दिये
समाज के आदर्शों पर।

पर किसी ने पूछा
अपने आप से
उसका जिम्मेदार कौन?
हम या वह लोग?

कितनी आसानी से
थप्पड़ मार गये
मूक दर्शक बने हम
वीभत्स रस में
तिरोहित मुख से
अन्दर- ही अन्दर
आवाज घुट गयी,
हाथ पैर सुन्न पड़ गये
साथ में पड़ गया
हमारा दिमाग

छाया उन्माद
क्षण भर का
भुला दिया लोगों ने
पर क्या --
ऐसा ही आलम रहेगा?
हमेशा?
पिछली सदियों को छोड़,
21वीं सदी का शुभारम्भ?
प्रश्न चिन्ह ?

अबला। हाय।
क्यों अबला हो?
उठो बचाओ अपने आपको
तुम्ही तो हो
सृष्टि निर्मात्री।

करो सृष्टि ऐसी
ध्वस्त करदे ऐसे लोगों को
अनल- चिनगारी दो
अपने अपमान को
न भूलो
ऐसी सृष्टि निर्माण,
करो। निर्माण दात्री।

परन्तु नहीं।
नही कर पाओगी
टूटी अबला।
यही बनी रहो
तुम्ही तो वासना
की प्रतिमूर्ति बनती हो?

पूजा - अर्चन लो
यही तुम्हारी
नियति है,
हे। देवि।

अर्चना आर्य बी॰ए
(द्वितीय वर्ष)
90/5, प्रियदर्शिनी छात्रावास इलाहाबाद।

रात्रि शयन से पूर्व मन्त्र गीत

ज्ञानाधार मन

— देवनारायण भारद्वाज.
अलीगढ़

यत्प्रज्ञान मुत चेतो धृतश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्नऋते किन्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु। य0 34/3"

हर काम उजागर करते हो,
पर छिप कर रहते तन में मन
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

मन सर्व ज्ञान का साधन है
आधार चेतना का भी मन है।
यह धैर्य शक्ति हमको देता
करता यह ज्योति प्रकाशन है।

यह करते हो उपकार सभी,
पर रहते हो तुम मन गोपन
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

सभी प्रजाओं के शरीर में
सारे निर्धन सा अमीर में
होकर अमर जी रहे हो मन
नाशवान इस तन कुटीर में।

बिना तुम्हारे सम्पन्न नहीं,
होता कार्य हमारा शोभन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे, ओ अन्तर्मन।।

उत्तम कर्म तुम्ही करवाते
और क्रिया की विधि बतलाते
स्वस्ति मार्ग की ओर ले चलो
इसीलिए हम साथ बुलाते।

तुम और कहीं मत जाओ रे
तुम साथ हमारे आओ मन
शुभ संकल्पवान बन जाओ
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।

आ.स. श्रद्धानन्द नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बाँगरमऊ (उन्नाव) दिनांक 13,14 जून को आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर का तृतीय वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ जिसमें सर्वश्री रामओतार शर्मा "मैजिक लालटेन" पं0 युगुल किशोर, महावीर स्वामी तथा पं0 सीताराम के उपदेश हुये। रात्रिकालीन सभा में वैदिक चलचित्र भी दिखाया गया।

पृष्ठ ६ का शेष......

सुरक्षित स्थान पर (व्यवस्था शान्ति, उन्नति) ले जाते है। जंघाएं (वैश्य) शक्ति (धन, धान्य, द्रव्य) प्रदान करती है तथा भुजाएं (क्षात्रिय) गीयर (रक्षा सुरक्षा) का काम करती है। जब शरीर समाज का आधार शूद्र (पैर) ही हैं। फिर इनके साथ यह सौतेला व्यवहार कैसा? इन्हें गुण कर्म स्वभाव के आधार पर अपना वर्ण चुनने का अधिकार मिलना ही चाहिये। इसी में देशका, समाज का तथा मानव जाति का हित है, कल्याण है।,

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

आर्यमित्र दिनांक- 1-7-90 आद्योपान्त पढ़ा। शान्ति एवं सुख के लिए विज्ञान सम्मत वैदिक दिनचर्या सर्वोत्तम लेख में डॉ0 शकुनचन्द ने वेद और विज्ञान का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध दिखाया है जो सराहनीय है पं0 गुरुदत्त-विद्यार्थी के बारे में विस्तृत जानकारी प्रकाशित करना पत्र का सफल सोपान है। चिन्ता नामक मनोविकार का विश्लेषण सुश्री आशा जी ने उत्तम रीति से किया है। सबसे अधिक रचनात्मक व बोधपरक थे वे सामयिक सुझाव, जो श्री आज़ाद ने सम्पूर्ण आर्यजगत् के सामने रखे हैं वस्तुतः आज के बदलते परिवेश में ऐसी ही गतिविधियों की आवश्यकता है। आपके पत्र के माध्यम से मैं श्री आज़ाद से अपेक्षा करूँगा कि वह आर्यसमाज प्रचार हेतु विस्तृत रूप रेखा प्रस्तुत करें। इन सुझावों के समक्ष सभा के उपदेश विभाग की रूढ़िवादी व परम्परागत प्रचार योजना अत्यन्त बौनी लगी। उपदेश विभाग के अधिष्ठाता महोदय रचनात्मक और सामयिक सुझावों को क्रियान्वित करने के लिए श्री आज़ाद से विचार-विमर्श करें।

कृपया अन्यथा न लें। रचनात्मक सुझाव बेहद पसन्द आये। इस प्रकार के क्रांतिकारी व समय की आवश्यकतानुसार लेख प्रकाशन हेतु बधाई।

-अनिल कुमार अग्रवाल
अधिकारी प्रथम
इलाहाबाद बैंक
पैडले गंज
गोरखपुर- 273001

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की वैदिक धर्म की पुस्तकें

एकादशोपनिषद् (भूमिका डा0 राधाकृष्णन)	95/-
उपनिषद प्रकाश	85/-
गीता भाष्य (भूमिका श्रीलाल बहादुर शास्त्री)	65/-
संस्कार चन्द्रिका	85/-
वैदिक संस्कृति के मूल तत्व	40/-
चतुर्वेद गंगा लहरी	95/-

विशेष विवरण तथा प्राप्ति के लिये पुस्तक विक्रेता पत्र व्यवहार करें.-

विजय कृष्ण लखनपाल
डब्लू-77-ए ग्रेटर कैलाश-।
नई दिल्ली।

हरिजन युवकों को यज्ञोपवीत

आर्यसमाज मझरिया किशुन प0 चम्पारण में श्री चन्द्रिकाराम एवं श्री शुभ नारायण राम को श्री रामचन्द्र-सिंह क्रान्तिकारी द्वारा यज्ञोपवीत दिया गया।

बम हथगोले फेंके जाते

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

सिपाहियों पर और सुरक्षा-
दल वालों पर कस कर।
बम-हथगोले फेंके जाते,
कश्मीर में जम कर।

वहाँ उग्रवादी करते हैं
यह अति पावन (?) काम।
पाकिस्तानी आदेशों का
पालन कर अविराम।

पाकिस्तान उन्हें भड़काता।
है गड़बड़ी वहाँ करवाता।
भारत वाले सिपाहियों पर
डट कर बम- गोले फिंकवाता।

जम कर हत्याएं करवाता।
निर्दोषों का खून बहाता।
खूब अराजकता फैलाता।
भारत से विद्रोह कराता।

खूब शत्रुता निभा रहा
भारत से पाकिस्तान।
देख-देख कर भारतवाले
होते हैं हैरान।

भूल गया शिमला समझौता।
अब क्यों आवे याद?
पिछली हार मिली जो उसको-
आज नहीं वह याद

भारत वाले शान्ति पुजारी।
नही युद्ध से करते यारी।
पर जो तंग हमें करता है,
उससे करते जंग करारी।

उसको अच्छा पाठ पढ़ाते।
उसको अच्छी सीख सिखाते।
इस पर भी जो नहीं चेतता-
झपट धूल में उसे मिलाते।

अगर गड़बड़ी अभी करेगा।
हम पर हमला कभी करेगा।
तो भारत इस बार शरारत
का उसको अच्छा फल देगा।

सोच-समझ ले पाकिस्तान।
शान्ति-पुजारी हिन्दुस्तान।
पर जो बदमाशी करता है,
उसको देता सीख महान्।

वैदिक विवाह सम्पन्न

● चम्पारण जिला आर्य सभा के प्रचारक पं0 ध्रुव जी आर्य की सुपुत्री आयु0 कृष्णाकुमारी का शुभ विवाह श्री अमीरीलाल आर्य के सुपुत्र चि0शेषनाथ प्रसाद आर्य के साथ पं0रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी नेपाल के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जिला सभा के अधिकारियों एवं सदस्यों ने वरवधू को आशीर्वाद दिया।

● दिनांक 4 जून को चम्पारण जिले के अंतर्गत ग्राम मधुमालती में आर्य परिवार के लड़के की शादी में लडकी वाल संस्कार पौराणिक ढंग से चाहते थे परन्तु लडके वाले वैदिक रीति से चाहते थे विवाद में क्रान्तिकारी श्रीरामचन्द्र सिंह नेपाल ने वैदिक संस्कार की पुष्टि में जोरदार व्याख्या की अत में विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। समस्त गाँववालों पर वैदिक धर्म का अच्छा प्रभाव पड़ा ।

चूड़ा कर्म संस्कार सम्पन्न

आर्यसमाज बलिया के मंत्री श्री रामनाथ चौरासिया के दो पुत्रों यथा चि० ज्ञान प्रकाश एवं वेद प्रकाश का चूड़ा कर्म संस्कार गत दिनांक 29-5-90 को आर्यजगत के विद्वान पं० गंगाधर शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। संस्कार का प्रभाव सुन्दर तथा सराहनीय रहा।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सैन्धेवास (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक 6 से 8 जून तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

शोक समाचार

आर्यसमाज बेल्थरारोड (बलिया) के कोषाध्यक्ष श्री रामध्यान जी का आकस्मिक देहावसान हो गया वह अपने पीछे भरापुरा परिवार छोड़ गये हैं। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार किया गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतृप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

--

पंजीकरण सं॰ एल॰ डब्ल्यू/एन.पी. ७९

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. का मुख्य पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
श्रावण कृष्ण-३० संवत २०४७ वि॰
दिनांक २३ जुलाई १९९०

दूरभाष
२४५९९३

सेवा में ..

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
(हरिद्वार)

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें.-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क मास जून 1990 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0अधिक पोस्टेज लगते हैं। इसलिये सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिये विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है।

जून १९९०

548, 2478, 2932, 4462, 6151, 8614, 9182, 10178, 10180, 11209, 11210, 11631
12206, 12213, 12214, 12679
12904, 13910, 13912, 13917
14285, 14288, 14289, 14290
14296, 14298, 14755, 14758
14760, 14761, 14762, 14767
15384, 15387, 15389
15390, 15391, 15392, 15394
15395, 15396, 15397, 15399
15400, 15401, 15402, 15403
15405, 15406, 15408, 15409
15410, 15411, 15412, 15413
15415, 15417, 15418, 15419
15421, 15422, 15423, 15424
15425, 15426, 15427

व्यवस्थापक

महिला आर्यसमाज सीपरी बाजार झाँसी

प्रधाना - श्रीमती लाजवन्ती गुरुवारा
मन्त्रिणी - श्रीमती सरला घई
कोषाध्यक्ष- श्रीमती कृष्णा कादी

--

निरीक्षण

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बलिया (उ0प्र0)

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बलिया के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य श्री इन्द्रदेव सिंह "साहित्यरत्न" की पुत्री कुमारी कल्पना का पाणिग्रहण संस्कार गत दिनांक 5-6-90 को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज अल्मोड़ा

प्रधान- श्री किशनसिंह टोलिया
मन्त्री- डा0 जयदत्त शास्त्री
कोषाध्यक्ष- श्री रघुवीर सिंह जी

--

आर्य समाज सुल्तानपुर

प्रधान- श्री राम अभिलाष त्रिपाठी
मन्त्री- डा0 बालकिशोर झा
कोषाध्यक्ष- श्री धुरेन्द्र सिंह

--

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि स.२२४१/५७) श्रावण शुक्ल ८ रविवार सवत २०४७वि दिनाक २९जुलाई १९९० (घोषणापत्र स ७/२८-२२५)



दुष्टों से रक्षा करने वाला

अग्नये वचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्।

स न पर्षदति द्विष ।।

ऋग्वेद 10/187/1

जो सबका पालक पोषक धारक और सर्वशक्तिमान ज्योति स्वरूप परमेश्वर है, आओ, हम सब मिलकर वाणी से उसकी स्तुति प्रार्थना और उपासना करें। वह हमको द्वेष करने वाले दुष्टों से बचाता है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू ३०/
एक प्रति	१रू मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक-२६

आर्यसमाज स्वराज्य को सुराज्य में बदलने के महान कार्य को पूर्ण करने का व्रत ले।

— मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

ऋषि दयानन्द क युगान्तरकारी आगमन के साथ ही सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन को मूत्तरूप देने वाले तथा ब्रिटिशों के छक्के छुड़ाने वाले राजनीति के प्रथम दूरदृष्टा ऋषि **गीतारहस्य** जैसी अद्भुत दार्शनिक विचारधारा को विश्व में प्रस्तुत करने वाले लोकमान्य बाल गगाधर तिलक ने कहा था- '**स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है**। और सचमुच उस राजनीति के दूरदृष्टा ऋषि के उद्घोष को हमने राष्ट्र की स्वतन्त्रता प्राप्त करके प्राप्त कर लिया है, किन्तु अभी इस स्वराज्य को सुराज्य में परिणित करना है।

लोकमान्य बाल गगाधर तिलक की पुण्यतिथि पर आर्यप्रतिनिधि सभा,उ0प्र0 के उदीयमान मन्त्री **श्री मनमोहन तिवारी** ने उस महान आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए एक भेंटवार्ता में बताया कि आज के पदासीन राजनीतिज्ञों को उस महान पुरुष के पदचिन्हों पर चलने का व्रत लेना चाहिए जिसने स्वराज्य को हमारा जन्म सिद्ध अधिकार बताते हुए ब्रिटिशविरोध में अपने सम्पूर्ण जीवन को कारागार की काली कोठरी में व्यतीत कर दियाँ था।

श्री तिवारी ने आगे कहा कि हमारा देश आन्तरिक तथा बाह्य दोनों सकटों से सत्रस्त है। पाकिस्तान ने काश्मीर में अघोषित युद्ध छेड रखा है। पजाब और असम में अलगाववादी शक्तियाँ सिर उठा रही हैं। बाबरी मस्जिद और रामजन्मभूमि प्रकरण ने देश मे बढते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द को चोट पहुँचाई है। भारत जैसे धर्मप्रधान और चरित्रनिष्ठ देश में नास्तिकता भ्रष्टाचार और पापाचार की निरन्तर वृद्धि हो रही है। व्यक्ति की गरिमा और महत्ता लुप्त होती जा रही है। सिद्धान्त विहीन राजनैतिक पार्टियाँ राष्ट्रहित की अवहेलना कर रही हैं। ऐसे समय में देश की एकता, अखण्डता को अक्षुण्ण रखने के साथ ही सबसे बड़ा प्रश्न है देश के नैतिक मूल्यों का उत्थान। इस कार्य को आर्यसमाज पूर्ण कर सकता है।

भारतीय स्वाधीनता क अमर सेनानी लोकमान्य तिलक ने जिस स्वराज्य का नारा हमें दिया था, उसकी इतिश्री केवल ब्रिटिशशासन को हटाकर ही नही हो सकती। उसे सुराज्य में परिवर्तित करना है और उस कर्मयोगी की भावना के अनुरूप इस स्वराज्य को कल्याणकारी राज्य में परिवर्तित करना है। यही अन्तिम लक्ष्य है।

आर्यसमाज देशवासियों के आन्तरिक कलह एव नैतिक मूल्यों के उत्तरोत्तर ह्रास पर तथा सत्तासीनों के पारस्परिक सघर्ष से बहुत चिन्तित है। यदि ऐसा ही रहा तो भारत की स्वतन्त्रता, एकता और अखण्डता कैसे टिक सकेगी। इसलिए समस्त भारतीय समाज को उस महान कर्मयोगी का अनुसरण करते हुए इस स्वराज्य को सच्चे अर्थों में सु-राज्य बनाना है। यही वैदिक आदर्श है।

आर्यसमाज अपने स्थापना काल से ही देश के आन्तरिक चरित्र के उन्नयन के लिए सर्वात्मना प्रयत्नशील है। हमारा सगठन राजनैतिक न होते हुए भी राजनीति को सामाजिक सुधार एव राष्ट्ररक्षा का एक साधनमात्र समझता है। ऐसी स्थिति में मेरा सभी आर्यबन्धुओं से अनुरोध है कि जनसम्पर्क अभियान द्वारा जनता के नैतिक मूल्यों के उत्थान में प्राणपण से लग जायें। नैतिकताविहीन राजनैतिक स्वातन्त्र्य अर्थहीन है और आर्यसमाज ऐसे समाज तथा स्वराज्य की कल्पना कभी नहीं कर सकता।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ श्रावण शुक्ल-८ संवत् २०४७ वि.
२९, जुलाई १९९०, दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

ओ३म् सम्पादकीय

राष्ट्र प्रेम सर्वोपरि है

— और अन्ततः युगयुगों से चली आ रही वीरक्षत्रिय परम्परा ने फिर एक बार राष्ट्रप्रेम के लिए पुत्रप्रेम को न्यौछावर कर ही दिया। पुत्र आत्मज होता है "आत्मा वै जायते-पुत्रः" आत्मा का अपनत्व होता है। जलचर, थलचर, नभचर में कोई ऐसा प्राणी नहीं है जो अपने पुत्रमोह के पाश में आबद्ध न हो, पुत्रेषणा तीनों ईषणाओं से बड़ी मानी जाती है। एक बार दशरथ के सामने भी यही समस्या मुनि विश्वामित्र ने रखी थी। यज्ञ विध्वन्स हो रहे थे, राष्ट्ररक्षा खतरे में पड़ी हुई थी, राक्षसों ने धर्म और समाज को चुनौती दे रखी थी। मुनिवर्य ने कहा- "चक्रवर्ती सम्राट!, तुम्हारे दो पुत्र चाहिए- राम और लक्ष्मण, मुझे राष्ट्रयज्ञ की रक्षा करनी है, राक्षसों ने आतंकवादी गतिविधियाँ तेज कर दी हैं।" दशरथ का हृदय काँप उठा- मेरे प्राणों से प्यारे पुत्र, और वह भी वृद्धावस्था में मिले पुत्र। कहाँ बड़े-बड़े भयंकर राक्षस, और कहाँ मेरे दोनों छौने बिछौने। दशरथ रुँधे हुए कण्ठ से कहने लगे-

"सुनि राजा अति अप्रिय बानी,
हृदय कम्प मुख दुति कुम्हलानी
चौथेपन पायँऊ सुतचारी,
विप्र वचन नहिं कहेउ बिचारी
सब सुत प्रिय मोहि प्रान की नाईं,
राम देत नहिं बनहिं गुसांईं।

परन्तु फिर सोचा राष्ट्रप्रेम पुत्रप्रेम से बड़ा है। और फिर-

"सौंपे भूप रिषिहिं सुत, बहुविधि देई अशीष" दोनों पुत्र सौंप दिए। धन्य है राष्ट्रप्रेम।

और आज उस परम्परा का वहन देश के क्षत्रिय वीर, उपप्रधानमन्त्री-चौधरी देवीलाल ने राष्ट्रहित में अपने पुत्र प्रेम को न्यौछावर करके दिखा दिया। आज उन्होंने दिखा दिया कि राष्ट्रहित के लिए सर्वस्व कुर्बान किया जा सकता है पुत्र चौटाला और हरियाणा की गद्दी किस खेत की मूली है। सारा राष्ट्र उनके और उनके पुत्र श्री ओमप्रकाश-चौटाला के इस अनुपम त्याग के लिए उनका सदैव आभारी रहेगा। अन्यथा इस राष्ट्र पर एक झंझावात आने वाला था। काश्मीर, पंजाब और असम से उठने वाले काले-काले बादल अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। सीमापार से दुश्मन अपने नवीनतम हथियारों से लैस होकर झाँक रहा था, मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। इस देश में राजनैतिक अस्थिरता आने वाली है। प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने तीरकमान रख दिया है। सहयोगी सब छोड़ छोड़कर भागे जा रहे हैं। केन्द्रीय शासन टूटने वाला है- हमें रास्ता बहुत खुला मिल जायेगा। मगर दुश्मन का यह स्वप्न, स्वप्न ही रह गया क्योंकि भारत का राष्ट्रवाद अमर है अटूट है एक है।

भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात केन्द्र में यह दूसरी गैर कांग्रेसी सरकार है जिसे राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार कहा जाता है। इसे सभी वामपन्थी दक्षिण पन्थी दलों का सहयोग मिल रहा है इससे यह आशा होती है कि यह सरकार अपना कार्यकाल बिना किसी व्यवधान के पूर्ण कर सकेगी और अपनी दृढ़ नीतियों और उसके कार्यान्वयन द्वारा देश की छवि को बहुत ऊँचा बनाने में समर्थ हो सकेगी। किन्तु मेहमकाण्ड की उपेक्षा करके चौधरी देवीलाल ने जिस प्रकार रातोंरात अपने बेटे श्री ओमप्रकाश चौटाला को हरियाणा का मुख्यमन्त्री बनाकर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को गहरे संकट में डाल दिया था उससे ऐसा लगने लगा था कि कहीं राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार का अस्तित्व ही खतरे में न पड़ जाय। मोर्चे के अध्यक्ष श्री एन0टी0 रामाराव एवं जनतादल के अध्यक्ष श्री एस0आर0 बोम्मई के दूरदर्शितपूर्ण रवैय्ये से यह स्थिति समाप्त हो गई है और केन्द्रीय सरकार से इस्तीफा देने वाले सभी मन्त्रियों ने अपना इस्तीफा वापस ले लिया है क्योंकि श्री-ओमप्रकाश चौटाला ने हरियाणा के मुख्यमन्त्री पद से स्वयं इस्तीफा दे दिया है।

इस समय हमारा देश इतिहास के कठिन दौर से गुजर रहा है। केन्द्र में सत्तारूढ़ सरकार अभी तक पंजाब, काश्मीर और असम की अशान्त स्थिति पर नियन्त्रण कर पाने में सफल नहीं हो पा रही है। आतंकवादियों के हौसले बढ़ते ही जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हम आशा करते हैं हमारे नेता दलगत परिवारगत क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर केवल मात्र राष्ट्रप्रेम को सर्वोपरि रखते हुए इस देश को सुस्थिर शासन देकर इसके भविष्य को उज्वल बनाने के पुण्यभागी बनेंगे। ◘

अनन्य हिन्दी प्रेमी श्री टण्डन जी

हे हिन्दी के दक्ष सुरक्षक वीर व्रती
पुरुषोत्तम नाम तुम्हारा अमर रहेगा
जब तक सृष्टी का क्रम राजर्षि
पुरुषोत्तम दास जी टन्डन के जन्म
दिवस 1 अगस्त पर कुछ संस्मरण।

नयी आने वाली पीढ़ी विश्वास नहीं करेगी।

क्या भारत में किसी ऐसे महान पुरुष का जन्म हुआ है?

1- जो कभी साबुन से नहीं नहाता हो।
2- बछड़े का अधिकार मानकर दूध नहीं पीता हो।
3- उच्च न्यायालय इलाहाबाद में काठ की खड़ाऊँ पहन कर बहस करने जाता हो।
4- मलेरिया का इलाज नीम के पत्तों से किया करता हो।
5- मृत्यु से कुछ दिन पूर्व नगरपालिका तथा आयकर के नाम यह लिखकर चैक काट दे। कि संभवतः कभी कोई भूल रह गयी हो, जमा कर लिए जायें।
6- केवल दो जोड़ी कपड़ों में ही अपना काम चलाये।
7- कुरता फटे तो रूमाल बना धोती फटे तो जाँघिया बना ले।
8- जीवन भर भिगोकर या कूटकर अन्न खाता हो।
9- कपड़े स्वयं धोता हो।
10- नगरपालिका की अध्यक्षता-विधानसभा का स्पीकर पद पलक मारते ही छोड़ दें।
11- मुख्यमंत्री, राज्यपाल या उपराष्ट्रपति बनाने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दे।
12- फौज की रसद की लाखों की आपूर्ति का ठेका इसलिए छोड़ दिया कि अफसरों को निःशुल्क राशन देना और उसका बिल न बनाने की शर्त उन्हें स्वीकार नहीं थी।
13- वकालत की जाये परन्तु सच्चे मुकदमें ही लिये जायें झूठे मुकदमें की राशि मेज से उठाकर फेंक दी जाय।
14- देश सेवा के लिए चलती वकालत पर लात मार दे।

हरिश्चन्द्र आर्य
अमरोहा

मान्य लेखकों से नम्र निवेदन

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध नेता, लोकसभा में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण को निर्भीकता से प्रस्तुत करने वाले, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्राण स्व0 पं0 प्रकाशवीर शास्त्री की पुण्यस्मृति में हम आगामी दिस० 1990 में एक विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

विनम्र निवेदन है कि शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागर करने वाले अपने संक्षिप्त विचार/कविता/संस्मरण आदि मुझे भेजने की कृपा करें। साथ ही सामयिक समस्याओं पर प्रति सप्ताह प्रकाशनार्थ लेख भी भेजें। आर्यमित्र इन्हें प्रकाशित कर अपने को गौरवान्वित समझेगा।

आचार्य इन्द्र देव पाठक
प्रबंध सम्पादक आर्यमित्र, लखनऊ

आध्यात्मिकता और भौतिकता का समन्वय

— भगवान देव "चैतन्य" एम.ए.
सुन्दरनगर (हिमांचल प्रदेश)

लोग भी हुए जिन्होंने वरदानों में लम्बी-लम्बी आयु प्राप्त करके भी भोगों को तृप्त करने में गुजार दी मगर प्यास ज्यों की त्यों ही बनी रही। तृप्ति मिलना तो दूर रही बल्कि तृष्णाओं की भूख और भी अधिक से अधिक बढ़ती गई। स्थिति रेगिस्तान में पानी की तलाश में भटकते हुए मृग के समान हो गई। दम भी टूट गया मगर प्यास नहीं बुझ सकी। इसी तथ्य को उद्‌घाटित करने के लिए हमारे महापुरुषों ने कहा है- "भोगाः न भुक्ताः व्यमेव भुक्ताः तृष्णा न जीर्णा=दयमेव जीर्णाः।" अर्थात् हम भोगों को नहीं भोगते हैं बल्कि भोग हमें भोग जाते हैं और तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती है। हम ही समाप्त हो जाते हैं। यह है भोगवादियों की कहानी- उन्हें शान्ति नहीं मिलती बल्कि जीवन के चौराहे पर वे प्यासे के प्यासे ही रह जाते हैं।

दूसरी विचारधारा ने कहा कि जो दिखता है वह सब एक भ्रम मात्र है, एक सपना है। सत्य तो वह है जो दिखाई नहीं देता है। जो अदृश्य है वही सब कुछ है जो दृश्य है वह कुछ भी नहीं। इस विचारधारा के प्रचलन से व्यक्ति को कितना लाभ हुआ यह तो एक अलग विषय है मगर समाज को इससे बहुत ही अधिक हानि उठानी पड़ी है। इस विचारधारा से जहां एक ओर प्रबुद्ध व्यक्ति घर, परिवार और समाज को त्यागकर जंगलों में चले गए वहीं दूसरी ओर साधारण व्यक्ति भी भ्रम में पड़ गया। उसकी समझ में यह नहीं आया कि जिस प्रकृति की अपनी एक अटल सत्ता है वह मिथ्या कैसे हो सकती है? जो दिखता नहीं उसे तो सत्य मानें और जो दिखता हो उसे बिल्कुल भी न मानें यह बात थोड़ी सी भी बुद्धि रखने वाले के गले से नहीं उतरती है। कुछ लोग तो सामाजिक दायित्वों को केवल इसलिए ठुकराने चले गए कि यह मिथ्या हैं और कुछ ने आध्यात्मिकता को इसलिए छोड़ दिया कि वह हमारे बस की ही बात नहीं है। इस प्रकार समाज को अत्यधिक क्षति पहुँची। तर्क की कसौटी पर भी यह बात ठीक नहीं उतरती है। निष्कर्षतः यह बात कि- "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्म नापरः।" अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है, जगत मिथ्या है। जीव ब्रह्म ही है दूसरा कुछ भी नहीं है। यह बात समाज के लिए अत्यधिक हानिप्रद रही।

वैदिक विचारधारा आध्यात्मवाद और भौतिकवाद के समन्वय की बात करती है। भौतिकता और आध्यात्मिकता को अलग-अलग करके देखा ही नहीं जा सकता है। विगत इतिहास में यदि देखा, गया तो उसके बहुत ही अधिक परिणाम आने वाली पीढ़ियों को भोगने पड़े हैं। भौतिकता में सुख तो है मगर यह सुख अल्प सुख है। इस अल्प सुख में शान्ति नहीं। आध्यात्मिकता में ही परम आनन्द है। उपनिषदों ने बड़ी सुन्दर बात कही है कि अल्प सुख तो उस परमानन्द का आभास मात्र है उससे व्यक्ति कभी भी परितृप्त नहीं हो सकता है। परम - सुख में शाश्वत शान्ति मिल सकती है। इस सम्बन्ध में वैशेषिक दर्शन के रचयिता ने बड़ी सार्थक बात कही है- "यतोऽभ्युदय-निःश्रेयस सिद्धिः सः धर्मः।" इस सूत्र में

आज संसार में पहले से कहीं अधिक भौतिक सुख सुविधाएं हैं मगर लगता यह है कि इन समस्त सुख सुविधाओं के होते हुए भी आज मानव पहले से कहीं अधिक असुरक्षित, दुःखी, भयभीत तथा अस्थिर बुद्धि हो गया है। सब कुछ होते हुए भी इसे लगता है कि यह किसी चौराहे पर किसी लुटे हुए मुसाफिर की तरह खड़ा हुआ है। वह चल तो रहा है मगर उसे ठीक-ठीक मालूम नहीं कि जाना कहां है। इसका कारण केवल और केवल मात्र मनुष्य की गलत विचारधारा ही है। मस्तिष्क की विकृति ने ही मनुष्य के लिए ऐसी स्थिति पैदा कर दी है। मस्तिष्क विकृत होता है भोगवाद के कीचड़ में निरन्तर डूबकी लगाने से और स्वस्थ होता है- त्याग, निःस्वार्थ एवं परोपकार की भावनाओं को हृदय में स्थान देने से। इसलिए भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय होना परम आवश्यक है। यह भी एक दुर्भाग्य ही रहा है कि समय-समय पर यहां एक दूसरे के एकदम विपरीत विचारधारा का प्रचलन हुआ। कुछ लोगों का सन्देश था कि आत्मा परमात्मा कुछ नहीं, यह शरीर ही सब कुछ है। इसी का पालन-पोषण करें। इसी की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखें। इसी को परिपुष्ट करके भौतिक सुखों का भोग करें। दूसरी ओर इसके एकदम विपरीत ऐसी भी विचारधारा का प्रचलन हुआ कि यह शरीर तथा भौतिक संसार मिथ्या है- स्वप्न है अतः संसार तथा घर बार की उपेक्षा करके लोगों ने जंगल का रास्ता पकड़ लिया।

ये दोनों विचारधाराएं अपने-अपने स्थान पर ठीक हैं मगर अनुयायियों ने अतिवादिता से काम लिया। शरीर की सत्ता को प्रमुख मानने वालों ने केवल जो भोग है उसी को अन्तिम सत्य मानकर स्वयं को भोगवाद की भट्टी में झोंक दिया। वे भौतिक भोगों में डूबते चले गए मगर शान्ति हाथ न लग सकी। सुख-शान्ति की इसी दौड़ के कारण विज्ञान के आविष्कारों में वृद्धि हुई। केवल शरीर के पोषक इन लोगों ने यहां तक कह दिया कि इस शरीर की सुख-सुविधाओं के लिए ऋण करके भी घी पीओ क्योंकि पुनर्जन्म तो होगा नहीं अतः ऋण देने का या पुनः इस संसार में आने का तो प्रश्न ही नहीं है। इनके अनुसार तो- "यावज्जीवेत सुखं जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत, भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः"। भोगवाद की इस पराकाष्ठा तक जब व्यक्ति पहुँच गया तो धर्म उसके लिए एक ढोंग बन गया। आध्यात्मवाद कुछ लोगों की चालाकी लगा तथा इन लोगों ने ईश्वर को गालियां दीं। इन्होंने बैंक-बेलेंस, कारें, कोठियां तथा अन्य समस्त भौतिक पदार्थ अपने चारों ओर इकठ्ठे कर लिए। विषय वासनाओं में आकण्ठ डूबे मगर शान्ति नहीं मिली। मन तो चंचल है अतः इसकी और ला और ला की मांग निरन्तर बढ़ती ही गई। यहां पर तो यायाति जैसे

महामुनि कणाद जी कहते हैं कि जिससे इस लोक और परलोक (दोनों लोकों की) की सिद्धि हो वह धर्म है। इस सूत्र में आध्यात्मिकता और भौतिकता का कितना सुन्दर समन्वय है। इस लोक की उन्नति के लिए भौतिक पदार्थ आवश्यक हैं मगर साथ ही परलोक या मोक्ष की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिकता का अवलम्बन परमआवश्यक है। वास्तविकता यह है कि आध्यात्मिकता भौतिकता के बिना लंगड़ी और भौ-तिकता आध्यात्मिकता के बिना अन्धी है। मनुष्य जीवनरूपी सिक्के के ये दोनों दो पहलू हैं- एक के बिना दूसरे का बिल्कुल भी अस्तित्व नहीं।

धर्म या आध्यात्मिकता न तो व्यक्ति को यह शिक्षा देती है कि वह इस समाज को झूठा या असत्य कहकर जंगल का रास्ता पकड़े और न ही ऐसा निर्देश देती है कि वह भौतिकता में ही आकण्ठ डूब जाए बल्कि इसके विपरीत वह तो समन्वय की बात कहती है। धर्म के उपरोक्त विवेचित लक्षणों में कहीं भी भौतिकता और आध्यात्मिकता का टकराव नहीं है। ये दोनों ही मनुष्यों की लक्ष्य प्राप्ति के लिए साधक हैं बाधक नहीं। किसी भी नदी को पार करने के लिए जिस प्रकार नौका का आधार पानी होता है ठीक इसी प्रकार भौतिकता संसार सागर को तैरने के लिए केवल साधन मात्र है मगर यदि यह आधार (पानी) ही नौका में प्रवेश कर जाए तो वह नौका को ही ले डूबेगा। व्यक्ति को भौतिकता में डूबना नहीं है अर्थात उसे अपने ऊपर प्रभावी नहीं होने देना है बल्कि उसे केवल आधार मात्र ही बनाना चाहिए। उपनिषद्कार ने इस बात को बहुत ही भावपूर्ण ढंग से समझाया है:-

विद्यांचाविद्यां च यस्तद् वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

अर्थात अविद्या (भौतिकता) से मृत्यु पर विजय, प्राप्त करो और विद्या (आध्यात्म) से अमृत की प्राप्ति करो। वैदिक संस्कृति का यही अमर सन्देश है कि यदि व्यक्ति इस जीवन को सुखमय ढंग से बिताकर परलोक में भी अच्छी गति चाहता है तो उसे आध्यात्म मार्ग का अवलम्बन करना ही पड़ेगा मगर इसके लिए भौतिक प्रसाधनों को पूर्णतया त्यागने की आवश्यकता नहीं। ■

आर्यसमाज का शारीरिक एवं आध्यात्मिक पक्ष

—दिव्यानन्द सरस्वती
हरिद्वार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सांगोपांग वैदिक साहित्य का पहले अनुशीलन किया। साथ ही योगाभ्यास के द्वारा प्रज्ञाविवेक को उत्पन्न कर आर्ष एवं अनार्ष का विवेचन कर वैदिक आर्ष ज्ञान को सर्वोत्तम जानकर तदनुसार मानव मात्र को उत्तम मार्ग प्रदर्शित किया। "भद्रमिच्छन्त ऋषयः" वैदिक सूक्ति के अनुसार ऋषित्व प्राप्तकर संसार के उपकार का उद्देश्य प्रत्येक आर्यजन का निश्चित किया। इसी मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज का संगठन संगठित किया। संसार के उपकार का प्रकार बताते हुए उन्होंनें तीन साधनों का संकेत किया प्रथम-शारीरिक,द्वितीय आत्मिक तथा तृतीय सामाजिक उन्नति करना।

एक शताब्दी से कुछ अधिक काल व्यतीत हो जाने पर, आइये। हम सब आर्यजन विचारें कि मुख्य उद्देश्य की सम्प्राप्ति के लिए प्रथम दो साधनों में हमने कितनी सफलता प्राप्त की है।

शारीरिक उन्नति- आर्यसमाज की आधारशिला ही सदाचार एवं ब्रह्मचर्य पर रखी गयी। अतः शारीरिक शक्ति की उपेक्षा करने का कहीं संकेत नहीं मिलता। शारीरिक,उन्नति के लिए अनेक विध प्रयास होते रहे हैं। शरीर को विकृत करने वाले पदार्थों को आर्यजगत् में सदैव हेय दृष्टि से देखा गया। दुर्गुण कुर्व्यसन में फंसे व्यक्ति को व्यसनों से मुक्त रहने तथा अभक्ष्य को त्यागने की प्रेरणा दी जाती रही। साथ ही यदि कोई कुर्व्यसनों को छोड़ने में असमर्थ देखा गया तो उसे आर्यसमाज की सदस्यता से पृथक भी किया गया।

आर्यसमाज के सामाजिक यज्ञों तथा सम्मेलनों में स्वास्थ्य को दूषित करने वाले धूम्रपान,मद्यपान, मांसाहार आदि दुर्व्यसनों से हटाने के लिए आहुतियाँ डालकर प्रतिज्ञायें आज भी करायी जाती हैं। आंशिक रूप से शारीरिक वृद्धि के व्यायामादि साधनों का भी प्रयोग होता होगा परन्तु सर्वांश में नहीं कहा जा सकता कि आर्य जन उक्त दुर्व्यसनों से सर्वथा मुक्त हैं।

शारीरिक शक्ति संवर्धन के लिए प्राथमिक काल में अनेकों साधनों का खूब प्रयोग होता रहा। आर्यसमाज मन्दिरों में व्यायाम शालायें खुलीं, यदाकदा खेलों का भी आयोजन किया जाता रहा। ब्रह्मचर्य काल या विद्यार्जन के समय डी०ए०वी० संस्थाओं की अपेक्षा गुरुकुलों में शारीरिक उन्नति के लिए विशेष बल दिया गया। जिसका शुभ परिणाम अनेक स्थलों पर समाज ने अनुभव किया।

आर्यपर्व पद्धति का निर्माण करते हुए, शारीरिक उन्नति का ध्यान रखकर ही आर्य विद्वानों ने दशहरा आदि पर्वों पर सामूहिक क्रीड़ा की पद्धति बनाई थी, परन्तु देखने में आता है कि आंशिक रूप से किसी आर्यसमाज के सदस्य शारीरिक संसाधनों का प्रयोग करते हों, नहीं तो पद्धति लुप्त हो रही है।

आर्यवीर दल एवं आर्ययुवक परिषद आदि नवयुवकों के संगठनों द्वारा ग्रीष्मकाल में विशेष रूप से इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिविरों का आयोजन होता है, उन शिविरों में प्रत्येक आर्यजन अपने पुत्र-पौत्रों को नहीं भेजते। नगरों में तो प्रचलन ही बहुत कम है। आर्यसमाजों तथा अन्य संस्थाओं में रोगों से छुटकारा पाने के लिए ऐलोपैथिक-आयुर्वैदिक या होम्योपैथिक आदि धमार्थ चिकित्सालयों का प्रबंध तो बहुत हो रहा है परन्तु व्यायाम तथा प्राकृतिक प्रयोगों द्वारा कैसे स्वस्थ रह सकते हैं? इसका ध्यान कम है।

"शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्" अर्थात् शारीरिक उन्नति सर्वधर्म कर्म का साधन है। इस साधन की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आत्मरक्षा एवं धर्मरक्षा तथा राष्ट्र रक्षा,शारीरिक उन्नति पर आधारित है। अतः प्रत्येक आर्यजन का कर्तव्य है नित्य प्रति शारीरिक उन्नति स्वयं करे और अन्यों को कराने में सहयोग दे।

शारीरिक उन्नति पर ध्यान देने से ही व्यक्ति रोगों से मुक्त रहकर स्वस्थमन से जितेन्द्रिय होकर आत्मिक उन्नति के लिए तत्पर हो सकता है तथा सामाजिक उन्नति भी कर सकता है।

आत्मिक उन्नति:-

शारीरिक उन्नति के साथ आत्मिक उन्नति परमावश्यक मानते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में तथा वेदभाष्य में अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है। उन्होंने प्रत्येक आश्रमवासी को प्रातः उठकर नित्य कर्म से निवृत्त होकर जल के किनारे एकान्त देश में जाकर कम से कम एक घण्टा योगाभ्यास करने का निर्देश दिया है। स्वयं भी अपने जीवनकाल में इस नियम का नित्य पालन करते रहे,जिसके परिणामस्वरूप वह संसार को वैदिक पथ का निर्देश देने में समर्थ हुए।

महर्षि दयानन्द के अनुवर्ती स्वामी सर्वदानन्द,नारायण स्वामी,आत्मानन्द सरस्वती वेदानन्द दयानन्द तीर्थ,आनन्द स्वामी तथा सच्चिदानन्द सरस्वती आदि सन्यासियों ने तथा अन्य साधकों ने निज जीवन में यौगिक परम्परा को बनाये रखा है। पुनरपि वैदिक योग परम्परा से नवीन योगाभिलाषियों को संतुष्टि नहीं होती। आज चमत्कार को नमस्कार की प्रथा चल रही है। ऐसे समय में पातञ्जल योग परम्परा जो वैदिक योग परम्परा है, उसका आश्रय लेकर सत्य को निज आचरण से प्रकट करना आवश्यक है। पातञ्जल योग परम्रा के विकास हेतु संगठित प्रयास के अभाव में गुरुकुलों के प्रबुद्ध स्नातक तथा अन्य आर्य योगाभिलाषी अनार्ष योग पद्धतियों का आश्रय ले रहे हैं। शेष आर्य नर-नारी तो संक्षिप्त सन्ध्या-हवन में तत्पर रहते हैं। इस प्रकार आत्मिक उन्नति के लिए गहन चिन्तन-मनन तथा आत्मिक दोष दर्शन कर, आत्म सुधार एवं संशोधन की आवश्यकता है।

अध्यात्म-आत्म-परमात्मविषय:-

वर्तमान में दृष्टिगोचर होता है कि प्रायः समाजों के वार्षिक उत्सवों पर, वेदकथाओं में या सम्मेलनों में ईश्वर उपासना के प्रकार बताये जाते हैं। ईश्वर भक्ति के संगीत तथा प्रवचन से प्रभावित श्रोता एवं व्याख्याता अपने कर्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं। कभी शंका समाधान के द्वारा ईश्वर और मुक्ति के विषय पर प्रश्नोत्तर हो जाते हैं।

इस प्रकार वर्तमान में चल रहे सम्पूर्ण क्रिया-कलाप से आर्यसमाज का आत्मिक उन्नति का व्यवहारिक पक्ष रिक्त प्रतीत होता है।

योगमय जीवन न होने से हानि:-

जो नर-नारी नियमित जीवन व्यतीत करते हुए आत्म चिन्तन तथा ध्यान-धारणादि योगांगों का पालन करते हैं, उनके स्वभाव में छल कपट का अभाव तथा सौम्यता,स्नेह,सद्भाव आदि उत्तम गुणों का विशेष प्रभाव देखा जाता है। ऐसे ही व्यक्ति मान अपमान से पृथक, पदलोलुपता के जाल में नहीं फंसते, वे कर्तव्य भावना का पालन करते हैं।

इसके विपरीत जो अनियमित जीवन जीते हैं। अभक्ष्य का भक्षण करते हैं, साधनोपासना को जीवन में नहीं अपनाते, आत्म चिन्तन न करने से निज दोषों को नहीं जान पाते वे छल-कपट का व्यवहार करने वाले, असत्यभाषी क्रोधी,दुराचार आदि दुर्गुणों से दूषित देखे जाते हैं। ऐसे ही रजोगुण से अभिभूत पदलोलुपता में लिप्त तथा अनेक विध सामाजिक मान-अपमान की लिप्सा में फंसे रहते हैं। इससे निष्कर्ष निकलता है कि योगमय चर्या के अभाव में समाज की अनेक प्रकार से हानि होती है, जिसका परिणाम राजा-प्रजा सभी को भोगना पडता है। प्रत्येक आर्यनर, नारी को आत्म चिन्तन करना होगा, कि हमारे जीवन में योगमय व्यवहार का कितना प्रयोग है? कहीं आध्यात्मिक पक्ष सुनने तक सीमित तो नहीं? कहीं वाणी विलासमात्र व्यवहार तो नहीं कर रहे? इस आचरण से न तो हमें आत्म साक्षात्कार से प्राप्तव्य शन्ति प्राप्त होगी न सामाजिक उन्नति करने में सक्षम हो सकेंगे। कठोपनिषद् ने स्पष्ट किया है-

"नायमात्मां प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।"

आत्म तत्व का ज्ञान न तो प्रवचन करने मात्र से प्राप्त होगा, न तार्किक प्रश्नोत्तर द्वारा और न इस विषय का बहुत बार प्रवचन सुनने मात्र से साक्षात्कार संभव है। इसके लिए तो व्यवहार की शुद्धि तथा अन्तःकरण की पवित्रता आवश्यक है।

आत्मिक उन्नति के उपाय:-

आत्मिक उन्नति के लिए आर्यसमाज की साधारण सदस्यता के लिए, व्यक्ति

— शेष पृष्ठ ७ पर

शवयात्रा के पड़ाव

बात जून सन् 1986 की है। मैं अपने परिवार सहित काश्मीर घूमने के लिए गया हुआ था। शाम का वक्त था, श्रीनगर पहुँचते-पहुँचते वर्षा प्रारम्भ हो गई थी। जब हम लालचौक से गुजर रहे थे, नौजवानों का एक बड़ा समूह "पाकिस्तान जिन्दाबाद" "जिया-उल-हक् जिन्दाबाद" के नारे लगाता हुआ एक गली से निकला और हमारे सामने आकर खड़ा हो गया। हम लोग हतप्रभ होकर देख रहे थे- सम्भवत नौजवानों का वह समूह हमसे भी इसी प्रकार के नारे लगवाने की अपेक्षा कर रहा था। इसी बीच कुछ बुजुर्ग लोग आस-पास की दूकानों से आ गये और उन्होंने काश्मीरी भाषा में उन नौजवानों से कुछ कहा और वे हटकर नारे लगाते हुए दूसरी ओर चले गये।

इससे पहले झेलम के उस पार हजूरीबाग का विशाल आर्यसमाज मन्दिर आतंकवादियों ने फूंक दिया था। आर्यसमाज मन्दिर के व्यवस्थापक श्री-योगेन्द्रपाल शास्त्री परिवार सहित खिड़की से भाग गये थे अन्यथा उन्हें भी उसी आग में झोंक दिया जाता। नवीन आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण सार्वदेशिक सभा तथा आर्यजनता के सहयोग से हो चुका था और हम उसी नवनिर्मित आ0स0 भवन में ठहरे। जब रविवार को खुले हुए लान अथवा बरामदे में हमने साप्ताहिक सत्संग के आयोजन के लिए श्री शास्त्री जी से निवेदन किया तो वे तो चुप रहे उनकी पत्नी ने बताया- "यहाँ आप जोर-जोर से मन्त्रोच्चारण नही कर सकते, बाहर तम्बू आदि लगाकर स्पीच भी नहीं दे सकते, हवन आदि जो कुछ करना हो कमरा बन्द करके कर लीजिए।

उस समय स्थिति प्रकटतया इतनी भयावह नही मालूम पड़ती थी। हम लोग जब पहलगाव तथा गुलमर्ग गये तो रास्तों में बिजली तथा टेलीफोन के खम्भों पर पाकिस्तानी झण्डे लहराते हुए दिखाई पड रहे थे। वैसे काश्मीर शान्त लग रहा था, हाँ पंजाब में आतंकवादी गतिविधियाँ जोर पकड़ चुकी थीं। उन्हीं दिनों की एक घटना है एक साधु कई दिनों से श्रीनगर में ठहरा हुआ था एक दिन वह डलझील के किनारे घूम रहा था कुछ मुस्लिम लड़कों से उसका किसी बात पर झगड़ा हो गया। वे उसे मार डालने के लिए दौड़े वह ... लिए डलझील में कूद पड़ा लेकिन वे उसे डलझील से पकड़कर खींच लाए और मिट्टी का तेल डालकर फूंक दिया। आरोप यह लगाया गया कि वह बच्चों को उठाकर भाग रहा था। ऐसी न जाने कितनी घटनाएं काश्मीर में घट रही थीं और प्रशासन सोया हुआ था। यह सब घटनाएं समाचार पत्रों में आ चुकी हैं।

सन् 1967 की एक और घटना है। मैं उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मन्त्री श्री पं0 उदितनारायण शर्मा के निजी स्टाफ में कार्यरत था। उस समय केन्द्र में श्री यशवन्तराव बलवन्त राव चह्वाण गृहमन्त्री थे। पं0 उदित नारायणशर्माजी उनसे उनके आवास पर मिलने गये मैं भी साथ में था। उन दिनों अखबारों की सुर्खियों में एक लड़की परमेश्वरी का बहुत जिक्र हो रहा था जिसने अपने एक मुस्लिम ऑफीसर से विवाह कर लिया था यद्यपि वे शादीशुदा और बालबच्चेदार थे। तमाम हिन्दू संगठन परमेश्वरी को वापस कराने के लिए केन्द्रीय गृहमन्त्री तथा प्रधानमन्त्री पर जोर डाल रहे थे। मैं केन्द्रीय गृहमन्त्री के निजी सचिव श्री डोंगरा के पास बैठा हुआ था। उसी समय काश्मीरी पंडितों का एक प्रतिनिधि मण्डल केन्द्रीय गृहमन्त्री को यह बताने के लिए आया कि एक परमेश्वरी को वापस कराने के लिए तो इतना हो-हल्ला हो रहा है काश्मीर के सुदूर अचंलों में, गाँवों में, ऐसी अनेकों लड़कियाँ जिनकी सूची हमारे पास है, मुसलमान लोग बलात् ले गये हैं। वहाँ की पुलिस मौन है। जो सूची उन्होंने दिखाई उसे पढ़कर मेरे रोंगटे खड़े हो गये। अच्छे-अच्छे घरानों की कई लड़कियाँ गायब थीं या वापस आने से इन्कार कर चुकी थीं।

पिछले दिनों राज्यसभा में काश्मीर के भू0पू0 राज्यपाल श्री जगमोहन ने बयान दिया था कि काश्मीर के उद्योगपतियों, सरकारी अधिकारियों का आतंकवादियों को समर्थन था। पाकिस्तान के सहयोग से एक योजना बनाई गई थी जिसमें काश्मीर के हिन्दुओं के सम्मुख केवल तीन विकल्प रखें गये थे घाटी छोड़ दें, मुसलमान बन जायें अथवा कत्ल होने के लिए तैयार रहें।

अब इस भयावह, दयनीय और राष्ट्रविघातिनी स्थिति के लिए कौन जिम्मेवार है, कांग्रेसी प्रशासन, धारा 370, तुष्टीकरण की नीति, भारतीय राजनीतिज्ञों की अदूरदर्शिता या हमारा कमजोर हिन्दुसमाज। भारत सरकार ने काश्मीरियों के आर्थिक उत्थान के लिए पानी की तरह पैसा बहाया है आज काश्मीर का मुसल्मान आर्थिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न है, शिक्षित है। आजादी के समय से इस समय उसकी स्थिति हजारों गुना बेहतर है भारत सरकार की कृपा से। परन्तु मर्ज बढ़ रहा है ज्यों ज्यों दवा हो रही है। राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ने की तो बात ही दूर है, देशद्रोह की परम पराकाष्ठा को उसके अन्तर्मन की भावनाएं छूती ... हैं।

इस स्थिति को सिर्फ आर्यसमाज दूर कर सकता है क्योंकि उसके पास रोग को जड़मूल से नष्ट करने की औषधि है। ऐसा धन्वन्तरी यदि खुद सो जाय-----

कभी-कभी सोचता हूँ कि क्या वास्तव में यह कौम मुर्दा हो चुकी है और दिनरात घटने वाली ऐसी घटनाएं कहीं इसकी शवयात्रा के पड़ाव तो नही है?

आचार्य 'इन्द्र'

सभी आर्य संस्थाओं से निवेदन

आर्यमित्र दिनांक- 24-6-90 के अंक में "धर्मान्तरण के पश्चात् भी सुविधाएं देने वाले विधेयक का तीव्र विरोध" शीर्षक के अन्तर्गत समस्त आर्यसंस्थाओं को प्रेषित एक परिपत्र में मैंने यह अनुरोध किया था कि समस्त आर्यसामाजिक संस्थाएं पचार के सभी माध्यमों (दूरदर्शन, आकाशवाणी, समाचारपत्र, व्याख्यान मच आदि) के द्वारा इस राष्ट्रविरोधी विधेयक के विरुद्ध व्यापक अभियान चलाएं तथा प्रस्ताव पारित करके राष्ट्रपति महोदय, प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री भारत सरकार, मुख्यमन्त्री उ0प्र0, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि-सभा दिल्ली को भेजें और उसकी प्रति मुझे भी भेजने का कष्ट करें।

इस सम्बन्ध में सभा के भू0पूर्व मन्त्री एवं वरिष्ठ नेता श्री पं0 प्रेमचन्द्रशर्मा ने सुझाव दिया है कि प्रस्ताव का प्रारूप भी आर्यमित्र में प्रकाशित कर दिया जाये ताकि ग्रामीण अंचलों में स्थित आर्यसमाजों को आसानी हो और वे इस प्रस्ताव को ही सर्वत्र भेज सकें। तदनुसार प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार दिया जा रहा है-

प्रस्ताव

आर्यसमाज द्वारा आयोजित इस जनसभा को यह जानकार बड़ा खेद है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार द्वारा संसद में एक ऐसा विधेयक लाया जा रहा है जिसमें हरिजन, पिछड़े तथा अनुसूचित वर्ग के हिन्दुओं द्वारा धर्मान्तरण किए जाने के बाद भी शासन से मिलने वाली सुविधाएं यथावत् जारी रखने का प्राविधान है।

इस जनसभा का पूर्णविश्वास है कि धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण को बढावा मिलता है तथा राष्ट्र को खण्डित करने वाली शक्तियाँ प्रबल होती हैं। यह विधेयक प्रच्छन्नरूप से अराष्ट्रीय एवं देश को विभाजित करने वाला है।

अत यह जनसभा सर्वसम्मति से इस विधेयक का घोर विरोध करते हुए शासन से आग्रह करती है कि इसे किसी भी दशा में संसद में प्रस्तुत न करें।"

मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज आर्यनगर में दिनांक 29 से 31 जून तक पूज्य स्वामी क्षमानन्द सरस्वती आगरा एवं श्री योगेश चन्द्र जी आर्य सोनीपत द्वारा वेद प्रचार किया गया। जनता पर आर्यसमाज के प्रचार का अच्छा प्रभाव पड़ा।

● आर्यसमाज फेन्हारा, गोविन्दवारा, इजारेवारा (पू0 चम्पारण) का वार्षिकोत्सव तथा गायत्री महायज्ञ दि0 27 से 29 अप्रैल तथा धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें यज्ञोपवीत, मुण्डन, नामकरण संस्कार सम्पन्न हुए।

आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती

गतांक से आगे....

— श्री पुरुषोत्तम सिंह योग, लखनऊ

"यथार्थ में पूरी क्रोधोन्मत्त भीड़ का उस पर उतना ही प्रभाव होता है जितना स्फटिक की किसी मूर्ति पर हमने एक समय अपनी आँखों से देखा कि उसने अपने सभी रक्षकों सहयोगियों को हटा दिया और उन्हें कठोर आदेश दे दिया कि वह न तो उसकी रक्षा करें और न निगरानी। और वह अकेला उस क्रोधोन्मत्त भीड़ के सामने शान्त खड़ा रहा जो एक दैत्य की भाँति किसी भी समय उस पर टूट पड़ सकती थी और उसकी देह के टुकड़े-टुकड़े कर सकती थी।

"यह निश्चय है कि भारत ने इससे पहले दयानन्द से उत्तम संस्कृतज्ञ उससे अधिक आत्मज्ञानी, उससे श्रेष्ठ वक्ता और उससे अधिक कुप्रथाओं का निर्भीक विरोधी नहीं देखा होगा।"

किस धातु का बना था यह मानव? किस प्रकार प्रारम्भ की उसे अपनी स्वनिर्मित कठिन जीवन यात्रा? आइये थोड़ा पीछे चलें।

2 सितम्बर 1824 को गुजरात देश के टंकारा नाम छोटे से ग्राम में एक शैव भक्त ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर मूल शंकर नाम का यह बालक शीघ्र ही पारिवारिक शैव मत में दीक्षित कर दिया गया। 14 वर्ष की आयु में पिता की आज्ञानुसार शिवरात्रि के व्रत का उपवास और रात्रि जागरण करते समय इस बालक ने एक दृश्य देखा जो सहस्रों व्यक्ति न्यूटन के पृथ्वी की ओर गिरते सेब की तरह प्रतिदिन देखकर पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का अनुभव नहीं करते। मूल शंकर ने देखा कि उसके उपास्य सर्व शक्तिमान शिव की मूर्ति पर चूहे उछल कूद मचा रहे हैं। उस पर श्रद्धापूर्वक चढ़ा परसाद खा रहे रहे हैं। मल मूत्र से उसे गंदा कर रहे हैं। न्यूटन की भाँति उसके मन में भी एक विचार कौंधा। कैसा है यह शिव जो अपने मस्तक पर से इन चूहे जैसे क्षुद्र प्राणियों को भी नहीं हटा सकता।

पिता से यह प्रश्न पूछने पर बाल मूल शंकर को डांट फटकार तो मिली संशय का समाधान न मिला। उसे बताया गया कि सच्चा शिव तो कैलास पर रहता है। यह पत्थर की मूर्ति तो उसका प्रतीक मात्र है। इसी घटना के आस पास मूल शंकर की एक प्रिय बहन और चाचा का देहान्त हो गया। जिसने संवेदनशील बालक के मन में जीवन और मृत्यु के विषय में नये प्रश्न खड़े कर दिये। दयानन्द की आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ हो गयी।

अपने घर बार प्रिय परिवार को छोड़कर एक रात्रि को वह सच्चे शिव तथा मृत्यु और जीवन के रहस्य की खोज में चल पड़ा। उसे पता लगा कि अभी तक उसने जो कहानियाँ सुन रखी थीं उनमें कोई भी तथ्य नहीं था। किन्तु इस खोज के अंतराल में उसने कठिन यौगिक साधनायें सिद्ध कर लीं और संस्कृत का जितना भी ज्ञान उपलब्ध हो सका संचित कर लिया। किन्तु सब उपलब्धियों के उपरान्त भी उसे संतोष नहीं हुआ तो उसने एक दिन मथुरा स्थित छोटे से मकान का द्वार जा खटखटाया।

अन्दर से प्रज्ञा चक्षु स्वामी बिरजानन्द ने पूछा "कौन है तू।" क्योंकि वह स्थान उन्हीं का था।

"यही जानने के लिये तो मैं इतनी दूर चलकर आपके पास आया हूँ" दयानन्द ने उत्तर दिया।

और दयानद शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिये गये। दयानंद के जीवन के इस काल के विषय में रोमियाँ रोला लिखते हैं:

"15 वर्ष तक यह एक धनाढ्य ब्राह्मण का पुत्र सारे सांसारिक सुखों को लात मारकर सन्यासी के रूप में भिक्षा पर जीवन यापन करता गेरूये वस्त्रों में विशाल भारत की सड़कों पर भटकता रहा। अंत में 1860 ई0 के लगभग उसको मथुरा में एक गुरु मिल गया जो 11 वर्ष की आयु में ही नेत्र विहीन हो गया था और उसी समय से नितांत अकेला था। जो दयानन्द से भी अधिक मानवी दुर्बलताओं और अंध विश्वासों का कट्टर शत्रु था। एक धुरन्धर विद्वान, एक अप्रतिम व्यक्तित्व का धनी वह व्यक्ति था स्वामी विरजानन्द सरस्वती।

दयानन्द ने अपने को स्वेच्छा से उपरोक्त स्वामी के कठिन अनुशासन के आधीन समर्पित कर दिया। जिसका अर्थ पुरानी सत्रहवीं शताब्दी के अनुसार था उसके शरीर तथा आत्मा दोनों पर अमिट क्षत चिन्हों की छाप। दयानन्द ने इस अगम्य महापुरुष की शिष्य के रूप में ढाई वर्ष सेवा की। जब विदा का समय आया तो गुरु दक्षिणा के रूप में विरजानन्द ने उनसे यह वचन ले लिया कि वह अपना शेष जीवन सनातन धर्म में प्रवेश कर गई भ्रान्तियों और अंध विश्वासों को समूल नष्ट करने में लगा कर बुद्ध से पहले के शुद्ध वैदिक धर्म की स्थापना करेंगें और सत्य का प्रचार करेंगें।"

और सत्य का प्रचार ही उस दयानन्द के जीवन का एक मात्र मिशन बन गया। उनके अपने शब्दों में:

"संसार अज्ञान एवम अंधविश्वासों की जजीरों में जकड़ा हुआ है। मैं उन जंजीरों को तोड़ फेंक कर इन दासों को मुक्त करने आया हूँ। मनुष्यों को उनकी स्वतंत्रता से वंचित करना मेरे मिशन के विरुद्ध है। स्वदेश के मत मतान्तरों में फैले असत्य का जिस प्रकार मैं खण्डन करता हूँ उसी प्रकार विदेशी मतों का भी करता हूँ। जहाँ तक मानव जाति के उत्थान का प्रश्न है मैं अपने देशवासियों और विदेशियों में कोई अन्तर नहीं समझता। सत्य को ग्रहण करने ओर असत्य को त्यागने को सदैव तत्पर रहना चाहिये।

फिर रोमिया रोला के शब्दो में:

"दयानन्द ने तुरन्त उत्तर भारत में प्रचार आरम्भ कर दिया। उन्हें इतनी सफलता मिली कि पाँच वर्ष के भीतर ही उत्तरी भारत में एक चमत्कारिक परिवर्तन हुआ। इन पाँच वर्षों में उनकी हत्या के भी चार पाँच प्रयास हुए। कभी-कभी विष द्वारा। उनसे पार पाना असंभव था क्योंकि उनका संस्कृत तथा वेद ज्ञान अनुपम था। साथ ही साथ उनकी ओजमयी वाणी के सामने प्रतिद्वन्दी धराशायी हो जाते थे। लोग उनकी उपमा जल प्लावन से देते थे। शंकराचार्य के पश्चात ऐसा वेदों का धुरन्धर विद्वान पैदा ही नहीं हुआ था। उसके द्वारा पूर्णरूपेण परास्त ब्राह्मणों ने अपने रोम, वाराणसी में गुहारें लगायीं। दयानन्द ने उस गढ़ पर भी धावा बोल दिया। नवम्बर 1869 में वह निर्भीकता से काशी पहुँचे और वहाँ के रूढ़िवादी ब्राह्मणों को ललकारा। फलस्वरूप 300 पंडितों के समूह से लाखों ऐसे लोगों की भीड़ के सम्मुख जो उसे पददलित होते देखने को उत्सुक थी वह अकेला घंटों तर्क करता रहा। काशी की शिखर श्रेणी का कोई भी विद्वान न था जो दयानन्द के विरोध में वहाँ उपस्थित न हो। दयानन्द ने सिद्ध कर दिया कि प्रचलित धर्म वेदों के अनुकूल नहीं है। उनका बलपूर्वक कहना यह था कि उनकी धर्म की व्याख्या दो सहस्र वर्ष पहले के वैदिक धर्म के अनुकूल है।"

क्रमशः

सार्वभौम व्रत-सत्य

• अमित प्रताप नारायण सिंह
कक्षा-१०
ग्राम-हाटा, पो. नदौली (देवरिया)

भारतीय जीवन का आधार यम नियम है। यह हमारी संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। पतंजलि मुनि ने अपने तथा मानव समाज के जीवन के भवन को खड़ा करने के लिए आधार स्तंभ माना है। उसे उन्होंने अपने ग्रन्थ में "यम" नाम दिया है। वे पाँच हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी नहीं नहीं करना), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन्हीं को "योग" भी कहा गया है। मनु महाराज ने कहा है :-

यमान् सेवेत् सततं न नियमान् केवलान् बुधः
यमान् पतत्यकुर्वाणः नियमान् केवलान् भजन्

अर्थात् शौच, संतोष तप स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान आदि नियमों की अपेक्षा "यम" अर्थात्-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह से अधिक महत्व है। इन्हें "सार्वभौम महाव्रत भी कहा गया है। सार्वभौम का अर्थ है, जो प्रत्येक देशकाल तथा जाति पर एक सा लागू हो और यम का अर्थ ही नियमन करना, अनुशासन में बंधना।

जो कुछ अपनी आँखों देखा, कानों से सुना उसको उसी तरह वर्णन करना सत्य है। सत्य है, कितना सरल। सत्य दृष्टि का प्रतिबिम्ब है, ज्ञान की प्रतिलिपि है, आत्मा की वाणी है। सत्यवादिता के लिए केवल निष्कपट मन चाहिये। वेद में आया है-- "सत्येनोत्तभिता भूमि" यह भूमि सत्य पर टिकी हुई है। सत्य का अर्थ है--लक्षण है- "यन्मनसा मनुते तद्वाचा वदति, यद्वाचा वदति तत्य कर्मणा करोति" जो मन में हो वह वाणी से निकलना चाहिये, जो वाणी से कह दे वह कर्म में आना चाहिये।

आज यह दुनिया उल्टी चल रही है। आज की दुनियाँ का क्या हाल है, इसे हम घटना द्वारा स्पष्ट करना चाहते हैं:- इग्ने जिओन सिलोन इटली की कम्युनिस्ट पार्टी का संस्थापक था। वह यूरोप के कम्युनिस्टों में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। उसका 78 वर्ष की आयु में देहान्त हो चुका था। वह अपने ग्रन्थ The Goods That Failed. में लिखता है कि एक बार वह स्टालिन से मिला। स्टालिन ने उसे सलाह दी कि जो काम करो, उससे ठीक उल्टी बात कहा करो। सिलोन ने कहा यह तो झूठ होगा तो स्टालिन ने इतनी जोर का अट्टहास किया कि सारे कमरे की दीवारें गूंज उठीं। यह है कि हमारे जीवन का दर्शन या फिलासफी परन्तु वैदिक विचार धारा में सत्य को सार्वभौम महाव्रत माना है। संसार में जितने महान पुरूष हुए हैं, सबने सत्य की उपासना की है। धर्म शास्त्रों में बुद्धिमानों ने सत्य को मनुष्य के तारने के लिये अत्यन्त उत्कृष्ट बताया है। उसी प्रकार झूठ को मनुष्य का पतन कराने वाला बताया है। शास्त्रों में कहा है कि सात अश्वमेध और राजसूय यज्ञ करने पर भी राजा यदि एक बार असत्य, भाषण करता है तो उसका पतन हो जायेगा। सचमुच सत्य की महिमा अपरम्पार है। कबीर ने सत्य ही कहा है --

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप।।

सत्य के समान दूसरा कोई तप नहीं और असत्य के समान दूसरा कोई पाप नहीं, जिसके हृदय में सत्य बसता है। उसके हृदय में समझो स्वयं प्रभु का निवास है। सत्य चरित्र या सदाचार का प्रथम और अनिवार्य अंग है। "नहि सत्यात्परो धर्मः" सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं। सत्य मानना सत्य बोलना और सत्य ही कहना मनुष्य का स्वभाव बन जाना चाहिये। याद रखिये सत्यवादिता का सर्वत्र मान और विश्वास रहता है। एक झूठ बोलने के लिए हजारों झूठ बोलने पड़ते हैं। झूठ की लम्बी श्रृंखला मन में बैठानी पड़ती है। और कहीं तारतम्य न बैठा, पोल खुली तो मुँह की खानी पड़ती है। अवमानना को कड़वा घूँट पीना पड़ता है। हाँ सत्य बोलने और करने में भी किसी का अकारण बुरा करने की "मंशा" नहीं होनी चाहिये। काने को "काना" कहकर पुकारना या लंगड़ा को लगड़े जैसे- नकल कर दिखाना सच बोलना या करना नहीं है इस बात को शास्त्र ने यों समझाया है- "सत्यम् ब्रूयात्, प्रियम् ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यम् प्रियम्।"
अर्थात्- सच बोलो पर प्रिय यानी भले उद्देश्य से सच बोलो, अप्रिय यानी कठोरता से सच कभी मत बोलो।

सत्य परमात्मा का रूप है। सत्य धर्म का मूल है। सत्य पुण्यों की जड़ है। हमें सदा सत्य का पालन करना चाहिये। सभी लोगों की वाणी में सत्य, विचार में सत्य और व्यवहार में सत्य होना चाहिये। संसार में जितने महानपुरूष हुये हैं सबने सत्य का सहारा लिया है। सत्य की उपासना की है।

चन्द्र टरे सूरज टरे, टरे जगत व्यवहार पैदृढ़ व्रत हरिश्चन्द्र का, टरे न सत्य विचार। के उद्घोषक महाराजा हरिश्चन्द्र जी की सत्यनिष्ठा जगद्विख्यात है। यह ठीक है कि उन्हें सत्य के मार्ग पर चलने में अनेक कठिनाइयों के दलदल में फँसना पड़ा, लेकिन उनकी कीर्ति आज चाँद की चाँदनी और सूरज की रोशनी से कम प्रकाशपूर्ण नहीं है।

सत्य बोलने का अभ्यास बचपन से ही करना चाहिये। कभी-कभी झूठ बोलने से क्षणिक लाभ होता है। बच्चे झूठ बोलकर माँ-बाप से पैसे झटकलाते हैं। किन्तु ये क्षणिक लाभ है। उनके जीवन विकास का मार्ग अवरूद्ध कर देता है। उनके चरित्र में छिद्र होने लगता है। और रिसता हुआ चरित्र कभी महान नहीं हो सकता। इसलिये सभी को सत्य सुनना चाहिये, सत्य बोलना चाहिये और सत्य करना चाहिये।

सत्यमेव जयते नानृतम् । □

पृष्ठ ४ का शेष....

का योगमय जीवन होना आवश्यक हो।

2- समाजों के साप्ताहिक सत्संगों में सर्वप्रथम सामूहिक साधना हो।

3- नवीन नर-नारियों को योग लाभ तथा रहस्य वार्षिक उत्सवों पर बताये जायें जिससे आत्मिक उन्नति के लिए आर्यसमाज के सदस्य बने।

4- नैतिक शिक्षा तथा ध्यान योग प्रशिक्षण के शिविर लगाये जायें।

5- अवकाश के समय विद्यालयों तथा गुरुकुलों में प्रशिक्षण दिये जायें, उत्तम साधकों को पुरस्कृत किया जाय।

6- सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अंतर्गत सुरम्य, एकान्त स्थानों पर साधना केन्द्र स्थापित व संचालित हों।

7- योगाभ्यासी, धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, संयमी, श्रेष्ठ पुरूष को अधिकारी बनाया जाये जिससे आबालवृद्ध में आत्मिक उन्नति की इच्छा हो।

अध्यात्म किरण की आशाः-

लगभग 10 वर्षों से ध्यान योग शिविरों का संचालन देश के विभिन्न प्रान्तों में करने से अनुभव होता है, कि इस यान्त्रिक भाग दौड से भरे अशान्त जीवन में जनमानस शान्ति खोजने लगा है। वैदिक योग मार्ग का राजयोग मिलने पर संतोष अनुभव करता है। आर्यसमाजों में योग शिविरों के आयोजन की माँग बढ़ रही है। योगाभिलाषा की भूख जागृत हो रही है।

योग्य, अनुभवी, सौम्य शिक्षकों की आवश्यकता, योगजिज्ञासुओं को रहती है। ऐसी स्थिति प्रत्येक आर्य नर नारी का आत्म उन्नति के लिए प्रेरित करती है।

वर्तमान में नैतिकता एवं मानवता के उत्पादक योग के न अपनाने से राष्ट्र को जो अनेक विध हानि हो रही है, उसके निवारण हेतु राजकीय प्रयास जहाँ आवश्यक हैं वहाँ आर्यसमाज को भी इसमें विशेष प्रयत्न करना चाहिये। योगधाम को केन्द्र बनाकर युवकों में नैतिकता एवं योगाभिलाषा की तृप्ति के लिए "योगमित्र मण्डल" की स्थापना की गयी है। [illegible] विपूत विद्यालय के कुलपति तथा कुलाधिपति की इच्छा है कि पुराने गुरूकुल भूमि पर योग विश्वविद्यालय संचालित हो अन्य स्थानों पर भी प्रयास किये जा रहे हैं। सुसंगठित एक पद्धति से किये गये प्रयास संसार में भौतिकवाद की आँधी तथा दुराचार, अनैतिकता की लहर को कम करेंगे। तभी यह ऋषि-महर्षियों की योगविद्या फलीभूत होगी। भारत की शिरोमणि योग विद्या के आधार पर यह संसार का गुरू बनकर, शान्ति का संदेश देता रहेगा। □

चलता अजब दुरंगी चाल

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

अजब दुरंगी चाल चल रहा
देखो जग में पाकिस्तान।
बहा रहा घड़ियाली आँसू,
दिखलाता है फिक्र महान्।

मुसलमान जो भारत में हैं,
उनकी चिन्ता है उसको।
उनको लेकर ज़ाहिर करता
अपनी फिक्र - तरद्दुद को।
"भारत-देश-बीच जो मुस्लिम
जाते बहुत दबाये।
उनकी ही चिन्ता रहती है
उसको बहुत सताये।"

यह झूठा आरोप लगाता
रहता है भारत पर।
दुनिया की नजरों में
दोष लगाता है भारत पर।
अपने घर का हाल न देखे-
प्रतिदिन जाते, मारे।
जहाँ "मुज़ाहिर" बेहिसाब
मारे जाते बेचारे।

नया-नया सन सैंतालिस में
जब कि बना पाकिस्तान।
कितने ही कट्टर मुस्लिम थे
चले गये तब पाकिस्तान।

चालीस से भी अधिक वर्ष हैं
तब से बन्धु। गये हैं बीत।
लेकिन इन लोगों ने अब तक
उनका हृदय न पाया जीत।

तभी "मुज़ाहिर" कहलाने ये।
अब भी "शरणार्थी" विख्यात।
इनकी है मैं बता रहा हूँ-
कष्ट - परेशानी की बात।

अब भी वहाँ किया जाता है
इन लोगों से दुर्व्यवहार।
मुस्लिम देश चले जाने का
मजा मिल रहा भली प्रकार।

बेदर्दी से यही लोग हैं
आज वहाँ जाते मारे।
कोई पुरसाँ हाल न इनका।
बड़े कष्ट में बेचारे।

ये भी तो हैं मुसलमान ही।
इनको भला सताते क्यों?
क्यों इनकी हत्याएं होतीं?
ये हैं मारे जाते क्यों?

मुफती साहब ने दुनिया को
बतलाया है इनका हाल।
पाकिस्तान चल रहा देखो-
कैसी अजब दुरंगी चाल।

भारत के सारे ही मुस्लिम,
यहाँ सुरक्षित हैं भाई।
अपने घर में बेचारों पर
जाती क्यों आफत ढाई?

— नगला पीतम (एटा) में नवीन आर्यसमाज की स्थापना हुई जिसमे निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए-

प्रधान - पं० रामस्वरूप आर्य
मन्त्री - डा० रामरक्षपाल भारतीय
कोषाध्यक्ष- श्री माखन सिंह

एक मात्र आशा की किरण-आर्यसमाज

गंगाप्रसाद विद्यार्थी
जबलपुर

भारत देश में इस समय जितना अधिक भ्रष्टाचार:रिश्वत खोरी, तस्करी, आतंक वाद, मँहगाई असुरक्षा की भावना और मानसिक अशांति जन सामान्य में है। उतनी पहिले कभी भी न थी। जनता कसमसाती तो है पर प्रभावकारी ढंग से कर कुछ भी नहीं पाती। ऐसी परिस्थितियों में आर्यसमाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है जिसके प्राय सभी सदस्य इन पाखण्डों और पाप पूर्ण व्यवहारों से पृथक है। यदि कहीं कोई काली भेड़ दिखलाई पड़े तो निश्चय ही वह नकली आर्य समाजी है और ध्येय निष्ठ व्यक्ति नहीं है।

आर्यसमाज का अब तक का रिकार्ड और अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है। देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति की लड़ाई में 80 प्रतिशत से भी अधिक योगदान आर्य समाजियों का ही था। यह तथ्य देश के इतिहासकारों ने भी स्वीकार किया है। क्रान्तिकारियों का जन्म व उद्भव आर्य समाजियों द्वारा हुआ था। इस ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में यह आशा करना अनुचित न होगा कि यदि एक बार देश का शासन आर्य समाज के बलिष्ठ हाथों में आ जाय, तो ये समस्त बुराइयाँ मिटाने में बहुत अधिक समय नहीं लगेगा। इसके लिए तुर्की के कमाल आतातुर्क की तरह सभी सुधारवादी क्रान्तिकारी कानून बिना किसी पक्षपात के पूर्ण दृढ़ता से लागू करने होंगे। कुछ लोग ऐसा सोच सकते हैं कि बिल्ली के गले में घंटी कौन व कैसे बाँध पाएगा। परन्तु मुझे वीर नायक सुभाष चन्द्र बोस के वे शब्द याद आते हैं जिनमें उन्होंने कहा था कि लीडर जनता को लीड करता है (नेता नेतृत्व करता है) वह जनता या बहुमत द्वारा नियंत्रित नहीं होता वह स्वयं अपनी नीतियां बनाता व कार्यान्वित करता है और बहुमत उसका अनुसरण करता है। इस विषय में महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, और रफी अहमद किदवई को भी रखा जा सकता है। वे अपनी नीतियाँ स्वयं बनाते व कार्यान्वित करते थे। बहुमत उनका समर्थन करने को मजबूर होता था। वे अपने कार्यों व नीतियों का ढिंढोरा नहीं पीटते थे, करके दिखला देते थे।

जैसे डाकू से सभी डरते है वैसे ही कठोर शासन का सभी सम्मान करते हैं या करना पडता है। कुँवर सुखलाल जी कहा करते थे कि सच्चाई वह नहीं है जो मानी जाती है वह तो मजबूरन मनवा ली जाती है। परन्तु जो शासन अपने व्यक्तियों या अपने दल के प्रति पक्षपात करता है। उसका शासन शिथिल हो जाता है और भ्रष्टाचार उत्पन्न हो जाता है। पुलिस और मजिस्ट्रेट भी अपनी जान बचाने के लिए दल के लोगो से डरने लगते हैं।

सरकार की ढिलमुल नीतियां ही पिलपिलेपन और भ्रष्टाचार को जन्म देती हैं। महात्मा गाँधी का स्वप्न था कि स्वराज्य मिलते ही कलम की एक नौक से शराब और गो हत्या रोक दी जाएगी पर क्या ऐसा हुआ। काम न करने के बहाने हजार हैं और काम करने का तरीका एक ही है कि उसे कर डालो। संविधान में देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी मानी गई परन्तु 40 वर्ष बाद भी अंग्रेजी का ही बोलबाला है जबकि अच्छी तरह या मातृभाषा के रूप में अंग्रेजी जानने वाले सम्पूर्ण देश में एक प्रतिशत भी व्यक्ति नहीं हैं। अर्थात् सरकारें 1 प्रतिशत से भी कम लोगों के हित के लिए 99प्रतिशत से अधिक के हितों का बलिदान कर रही हैं। तमिलनाडु में सभी काम तमिलभाषा में और पश्चिम बंगाल में सभी काम बांग्ला भाषा में करने में कोई दिक्कत नहीं है पर दिक्कतों के पहाड़ खड़े किए जा रहे हैं। स्वतन्त्रता से पहिले गुरुकुल कांगड़ी में सभी ज्ञान विज्ञान हिन्दी में पढ़ाया जाता था और हैदराबाद में उर्दू में। तब उनको दिक्कतें न थीं अब अनेक प्रकार की दिक्कतें उत्पन्न कर दी गई हैं।

हम इस बात की चिन्ता करते हैं कि संसार में कुछ देश बहुत अमीर हैं और कुछ बहुत गरीब। परन्तु हम इस बात की चिन्ता नहीं करते हैं कि भारत के कुछ लोग दिनानुदिन बहुत अमीर होते जाते हैं और सामान्य नागरिक बहुत गरीब। एम०एल०ए०, एम०पी० तो अपनी तनख्वाहें और भत्ते इत्यादि लगातार बढ़ाते रहते है क्योंकि इनको बढ़ाना उनके ही हाथ में है। जब उनके सभी भाई-बन्दों का लाभ है तो विरोध कौन करें। जैसे चोर-चोर मौसेरे भाई। संगठित कर्मचारी भी लड़-भिड़कर कुछ प्राप्त ही कर लेते हैं परन्तु सामान्य व्यक्ति क्या करें। सरकार मंहगाई घटाने के लिए पेट्रोल, डीजिल, पोस्टेज, गेहू, चावल इत्यादि सभी वस्तुओं का भाव बढ़ाती रहती है क्योंकि इससे जिनका लाभ होता है उनका धन व वोट पार्टी को चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुद्धिमत्ता व परिश्रम से अधिक से अधिक धन कमाने व उपभोग का अधिकार तो हो परन्तु गरीब व असहाय जनता को चूसकर नहीं। फिर प्रत्येक लाभ की सीमा निश्चित होनी चाहिए जो 15 स 25 प्रतिशत से अधिक किसी भी हालत में न हो और कोई भी व्यक्ति अपनी आगामी पीढ़ियों के लिए धन व सम्पत्ति एकत्रित करके न रख सके। यदि सज्जनता से साम्यवाद नहीं लाया जाएगा तो एक दिन वह खूनी क्रान्ति भी ला सकता है। समय से पूर्व चेतने में ही बुद्धिमत्ता है। □

आर्यसमाज हरदोई

प्रधान - श्री रामदेव अग्निहोत्री
वरिष्ठ उपप्रधान- श्री रामेश्वरदयाल (शुद्ध)
महिला उपप्रधान- श्रीमती सत्यवती सिंह-विदुषी
मन्त्री - श्री नन्दकिशोर अवस्थी
कोषाध्यक्ष- श्री रामलाल गुप्त

अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन इन्दौर

अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन के तत्वावधान में दिनांक- 11 से 13 अगस्त, 1990 को इन्दौर में "अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन" का आयोजन हो रहा है। इसमें भू0पू0 राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, उ0प्र0 के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव, हरियाणा के भू0पूर्व मुख्यमन्त्री श्री- बनारसी दास गुप्ता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, उ0प्र0 आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज आदि देश के विख्यात हिन्दी समर्थक नेता एवं भारत की लगभग समस्त राजनैतिक सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधिगण भाग ले रहे हैं।

भारतीय स्वतन्त्रता के चार दशक बीत जाने पर भी विदेशी दासता की प्रतीक अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व इस राष्ट्र में अब भी कायम है। इस सम्मेलन में इस वर्चस्व को सदा-सदा के लिए इस पावनमातृभूमि से विदा करके राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसके गौरवमय पद पर प्रतिष्ठापित करने हेतु अनेक कार्यक्रमों पर निर्णय लिया जायेगा।

ये आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के समस्त अधिकारियों एवं सभा के अन्तरंग सदस्यों से हार्दिक निवेदन करता हूँ कि उक्त तिथियों में इन्दौर पहुँचकर अमूल्य सुझावों द्वारा राष्ट्रभाषा के सम्मान को बढ़ाने में तथा विदेशी दासता की प्रतीक अंग्रेजी के वर्चस्व को हटाने में अपना योगदान दें।

विस्तृत विवरण के लिए "श्री- जगदीशप्रसाद वैदिक अध्यक्ष, अखिल- भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन, 12/5, श्रद्धानन्द भवन, कोठारीबाजार म0 गाँधी मार्ग, इन्दौर से सम्पर्क करें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री में प्रवेश आरम्भ कोई मासिक शुल्क नहीं

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री श्रेणियों के लिए 31 जुलाई 1990 तक प्रवेश खुला है। भोजन, दूध, पुस्तकें, छात्रावास व मनोरंजन की सर्वथा निःशुल्क सुविधा के साथ ही हिन्दी टाइपिंग तथा संगीत सिखाने का प्रबन्ध। प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास। विद्याधिकारी तथा विद्यावाचस्पति उत्तीर्ण छात्रों को शास्त्री कक्षा में सीधा प्रवेश मिल सकेगा। स्थान सीमित है। प्रवेश लेने वाले शीघ्रता करें।

-नरेश कुमार शास्त्री
एम0ए0, आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत- महाविद्यालय
करतारपुर, जिला-जालन्धर-144801

वर्तमान भारत की शासन व्यवस्था

विनय कुमार भारत
अलीगढ़

आज हमारे देश की शासन व्यवस्था अतिदयनीय है। मैं अपने देश-वासियों को अवगत कराना चाहता हूँ कि देश की बागडोर आज कठोर तथा दूरदर्शी हाथों में नहीं प्रतीत हो रही है।

कैसी अजीब बिडम्बना है कि एक साधारण से साधारण पद के लिए कठिन से कठिन शैक्षिक, शारीरिक एवं मानसिक परीक्षायें लिखित और मौखिक रूप में पास करनी पड़ती हैं।

साधारण से शासकीय और गैर-शासकीय पद को प्राप्त करने के लिए शैक्षिक योग्यताएं निर्धारित की गयीं हैं, परन्तु कितना आश्चर्य है कि देश के सर्वाधिक उच्च और महत्वपूर्ण पदों जैसे विधानसभा का सदस्य विधान परिषद का सदस्य, राज्यपाल, लोकसभा का सदस्य, राज्य सभा का सदस्य, मन्त्री, प्रधानमन्त्री एवं उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति इत्यादि किसी भी उच्चतम पद के लिए कोई शैक्षिक योग्यता निर्धारित नहीं की गयी है।

आज की राजनीति और देश की स्थिति को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त पदों को प्राप्त करने वालों की योग्यता शून्य और अनुभवहीन है, इसी कारणवश देश में गरीबी और बेरोजगारी का बहुमत होते हुए भी अभी तक कोई गरीब देश का नेता नहीं बन सका और न ही गरीब जनता देश को अपना गरीब नेता दे सकी। यही एक विशेषकारण रहा कि इन उच्चपदों को हासिल करने वाले राजघरानों, पूर्व राजनीतिज्ञों तथा धना-वर्ग के लोग इन पदों को हथियाने के लिए दौड़-धूप करते हैं जबकि वे यह बात भलीभाँति जानते हैं कि जिस पद को प्राप्त करने के लिए वे दौड़ लगा रहे हैं वह पद जनता के सेवक का है, परन्तु जैसे ही वे इन पदों को {साम-दाम} अर्थात् किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेते हैं तो जनता का सेवक बनना तो दूर उल्टा जनता को ही अपना सेवक बना लेते हैं।

'चाणक्य" लिखता है कि- "राजा को प्रजा के सुख को ही अपना सुख तथा प्रजा के हित को ही अपना हित समझना चाहिए।"

परन्तु आज के {नेता रूपी} राजा इस नीति के विरुद्ध चल रहे हैं। वे मात्र अपने सुख और अपने हित के विषय में ही कार्य करते और इसी पर विचार करते हैं वे अपने और अपनी सन्तान के भविष्य को बनाने में लगे हैं जनता जाये भाड़ में उन्हें क्या पड़ी।

यही कारण है आज भारत के एम0एल0ए0, एम0पी0 तथा अन्य मन्त्री शायद सबके सब करोड़पति अर्थात् करोड़ों की सम्पत्ति के मालिक हैं। देखा जाय तो यह {ब्रिटिश} अंग्रेजों की भाँति समाज और देश को लूट रहे हैं।

क्या करें देश की बेचारी गरीब जनता को जिस प्रकार अठारह सौ सत्तावन के विद्रोह में बूढ़े और शक्तिहीन बहादुरशाह को विवश होकर नेता बनाना पड़ा था। शायद उसी प्रकार आज जनता के पास योग्य और अनुभवी नेता का अभाव है इसीलिए आज वह अपने नेताओं के विषय में सब कुछ जानते हुए भी बराबर उन्हें चुनने के लिए विवश है। परन्तु अब समय आ चुका है कि जनता को इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना होगा और देश को लुटने से बचाना होगा।

आज के भारतीय नेताओं की योग्यता यह है कि प्रधानमन्त्री जी चाहे जब अपनी इच्छानुसार चाहे जिस व्यक्ति को मुख्यमन्त्री तो उसे ही कभी गृहमन्त्री, रक्षा मन्त्री कभी खेलमन्त्री तो उसे ही स्वास्थ्य मन्त्री या परिवहन मन्त्री आदि- इत्यादि बना देते हैं।

तो यह है हमारे आज के भारत की शासन व्यवस्था इसे व्यंग न समझना यह सच्चाई है हमें इस बीमारी से छुटकारा पाना है।

मेरे विचार से इस बीमारी से जब ही छुटकारा मिल सकता है जब इन महत्वपूर्ण पदों पर योग्य और अनुभवी व्यक्तियों को चुना जाय, और वह तभी सम्भव जब इन पदों पर सम्बन्धित विभागों के सेवानिवृत्त योग्य व्यक्तियों को लोकतांत्रिक प्रणाली के अनुसार इन पदों पर आसीन किया जाय। जैसे- सेवानिवृत्त खिलाड़ी को खेलमन्त्री, सेवानिवृत्त अध्यापक को शिक्षामन्त्री और सैनिक को रक्षामन्त्री इत्यादि बनाया जाय क्योंकि इन सेवानिवृत्त व्यक्तियों को अपने विभाग के विषय में अहम् जानकारी होती है यह कठिन है परन्तु असम्भव नहीं है। ■

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला समाजों के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकट्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अतः आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुनः धन इकट्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनों से अनुरोध है कि इनकी बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

- कार्यालय सचिव-

— अहिंसा केवल ऋषि मुनियों का धर्म नहीं है वह तो सामान्य व्यक्तियों के लिए भी है ---

- महात्मा गाँधी।

श्रद्धांजलि

माखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"
मैनपुरी

गुरुकुल को देकर प्राण-दान नर-कुल को धन्य महान् किया।
दैविव्र, "व्रेव स्वामी" महान्- ऋषि, पर जीवन बलिदान किया।।

शैशव से रहकर रागहीन, वैराग्य आग में ज्ञान जगा,
ऋषि-आदर्शों के अनुरागी, तपसी त्यागी का ध्यान जगा।
तपते-तपते तपसी जीवन विद्या,विवेक निष्णात हुआ।
जागते-जागते ही जग को अज्ञात निशा में प्रात हुआ।।

गुरु "ब्रह्मदत्त" के शिष्य बने व्याकरण-भानु का तेज लिये,
गुरु "ब्रह्मानन्द" शरण में आ, दर्शन-साहित्य सहेज लिये।
आजन्म ब्रह्मचारी रहकर, जग प्रेय-मार्ग को त्याग दिया,
जन मंगल का पावन व्रत ले श्रुति-श्रेय मार्ग का राग लिया।।

ऋषि "दयानन्द" का दिव्य स्वप्न, अनवरत जगाये अन्तर में,
अज्ञान, अविद्या-तम हरकर, आलोक रश्मि भर घर-घर में।
ऋषि शिक्षा के अनुरूप आप, शुचि आर्ष ज्ञान के दानी बन,
जीवन का तिल-तिल होम दिया ऋषि परम्परा के मानी बन।।

तप, स्वाध्याय, निष्काम-दान ही जीवन के आदर्श रहे,
आर्यों का गौरव शिखर सदा, धरती का भारतवर्ष रहे।
तुम इसी लक्ष्य की वेदी पर जीवन का कण-कण चढ़ा गये,
"गुरुकुल", "गौ", "ज्ञान" महत्ता को निज आचरणों से बढ़ा गये।।

तप, त्याग तुम्हारा उदाहरण "गुरुकुल" साक्षात् गवाही है।
पद-चिन्ह पड़े रह गये यहां आगे जा पहुँचा राही है।
बलिदानों से सींचे बिरवे, इक दिन निश्चय हरियायेंगे।
जीवन के जलधर बरसेंगे, अमृत के बादल छायेंगे।।

मन यज्ञ कर्म सहयोगी

देवनारायण भारद्वाज
अलीगढ़

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् । येन
यज्ञस्तायते सप्तहोता तनमे मनः
शिव संकल्पमस्तु ।।
य0 34/4/

सातों होता तुम्हें बुलाते,
इस यज्ञ कर्म में आओ मन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।

सभी काल को मन ने पकड़ा
भूत काल को इसने जकड़ा
वर्तमान में यही रमाये
और भविष्यत से जा अकड़ा।

हर समय बढ़ाते रहो यान,
हर समय तुम्हीं से रहे मिलन
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।

मरण धर्म से रहित हमारा
मन फिरता है मारा-मारा
रह कर इस देह विनाशी में
कर्म करे मन अमर विचारा।

अग्निहोत्र से अश्वमेध तक,
सब कर्म श्रेष्ठ करवाता मन
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।

सातों होता मन से चलते
यज्ञ कर्म में आहुति धरते
नेत्र, नाक, दो कान एक मुख
होता मन के साथ विचरते

मन महान इन होताओं से
करवाओ अब यज्ञायोजन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।

उत्सव सम्पन्न

जिला सभा प्रयाग के तत्वावधान में आर्यसमाज गाजा का वार्षिकोत्सव दि0- 4 से 8 तक आर्यसमाज विरोधा फुलपुर का वार्षिकोत्सव दि0- 10 से 12 जून तक सम्पन्न हुआ। दोनों समाजों में यजुर्वेद यज्ञ हुआ जिसमें श्री अशर्फीलाल जी उपदेशक तथा श्री-फुन्नूलाल जी भजनोपदेशक के भजन हुए, जिससे स्थानीय जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

--

विधर्मियों का भारत में षड्यन्त्र

अंग्रेजी शासन में ईसाई पादरियों ने लाखों भोले-भाले पिछड़े वर्ग के हिन्दुओं को ईसाई बनाया किन्तु भारत की स्वतन्त्रता के बाद भी भारत सरकार ने ईसाई पादरियों को इस कार्य की खुली छूट दे रखी है। इसी कारण धीरे-धीरे नागालैंड मिजोरम पूर्ण रूप से ईसाई क्षेत्र के गढ़ बन चुके हैं। और वास्तव में इन क्षेत्रों में ईसाई चर्च का ही साम्राज्य है जिसका मुख्य उद्देश्य भारत विरोधी प्रचार करना है। यद्यपि हरिजन भाइयों ने ईसाई मत या इस्लाम मत स्वीकार किया है फिर भी यह तथाकथित सामाजिक समानता प्रदान करने वाले ढोंगी मत हरिजन तथा अन्य पिछड़ा वर्ग लोगों को वह सामाजिक समानता के अधिकार नहीं दिला पाये जिनसे वंचित रहने के कारण उन्होंने अपने पैत्रिक धर्म का परित्याग किया था और अब भी उनको वैसा ही अछूत या निम्न वर्ग माना जाता है। अब हरिजनों (हिन्दुओं) से ईसाई या मुसलमान बन गये, लोगों के लिए भी वही संवैधानिक माँगें की जाने लगीं जो मत परिवर्तन से पहले उन्हें प्राप्त हैं। उनकी इस माँग का समर्थन कुछ तथाकथित बुद्धि जीवी भी करने लगे हैं। अभी थोड़ा समय पूर्व ही यह सुविधा इस सरकार द्वारा नव बौद्धों को प्रदान की गई है। यदि ऐसी माँगें भारत की धर्मनिरपेक्ष सरकार द्वारा मान ली गईं तो हरिजन भाइयों को ईसाई या मुसलमान बनाने के कार्य में बढ़ोत्तरी हो जायेगी। जो हरिजन (हिन्दू) धर्म परिवर्तन करके गये हैं उन्हें अनुसूचित जाति व जन जातियों को प्राप्त होने वाली सुविधाओं व अधिकारों को बनाये रखने का आश्वासन देकर परोक्ष रूप में धर्म परिवर्तन को बढ़ावा देने और हिन्दू जाति के विघटन की प्रक्रिया को और तेज कर दिया जायेगा। अब समय की माँग है कि आर्य समाज अपने दायित्व को पहचानें और सरकार का इस तुष्टीकरण की नीति का प्रबल विरोध करें। अतः यह आर्यसमाज थापर नगर, मेरठ भारत सरकार से माँग करता है कि वह कोई ऐसी नीति निर्धारण न करें और न ही विघटन कारी शक्तियों के सामने घुटने टेके जो संविधान की मूल भावना पर कुठाराघात का कार्य करें।

सुकर्मानन्द,
मन्त्री
आर्यसमाज थापर नगर, मेरठ।

वैदिक विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज रजपुरा जनपद बदायूँ में

पं0 विनोद कुमार आर्य के पौरोहित्य में 30 जून को भगवान सिंह यादव निवासी पहलवाड़ा का विवाह श्री मुकुट सिंह यादव की सुपुत्री कुमारी आशा के साथ वैदिक रीति से बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपदेश विभाग में कार्यरत उपदेशकों प्रचारकों ढोलक वादकों के वेदप्रचार के कार्यक्रम

मास अगस्त १९९०

1- श्री पं० केशवदेव जी शास्त्री, महोपदेश
आर्यसमाज बहराइच ,
8 से 14 अगस्त

2- श्री पं० विश्वम्भर दत्त जी शर्मा उपदेशक,
आर्य समाज टांडा वादली, रामपुर
1 से 6 अगस्त
आर्यसमाज लश्कर-ग्वालियर,
11 से 15 अगस्त

3- डा०विजयपाल सिंह जी, उपदेशक
आर्यसमाज उझानी-बदायूं 6
6 से 14 अगस्त

4- श्री सुकर्मा नन्द जी, उपदेशक,
आर्यसमाज भरथना, जनपद, इटावा
7 से 14 अगस्त

5- श्री योगेश दत्त जी आर्य, उपदेशक
आर्यसमाज-टांडा बादलीरामपुर
1 से 6 अगस्त
आर्यसमाज हापुड़ गाजियाबाद
8 से 14 अगस्त

6- श्री गजराज सिंह जी राघव, प्रचारक
आर्यसमाज फैजाबाद, 6 से 14अगस्त

7- श्री ब्रह्मा नन्द जी आर्य, प्रचारक
आर्यसमाज मीरजापुर, 6 स 14अगस्त

8- श्री नेम प्रकाश जी आर्य, प्रचारक
आर्यसमाज गोला, 6 से 14 अगस्त

9- श्री तेजपल सिंह जी आर्य, प्रचारक
आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली 6 से 14अगस्त

10- श्री विक्रमदेव जी आर्य, प्रचारक
आर्यसमाज भरथना, इटावा, 7 से 14 अगस्त

11- श्री धर्मप्रकाश जी प्रेमी, प्रचारक
आर्यसमाज फैजाबाद, 6 से 14अगस्त

12- ढोलकवादक

12- श्री ओमलाल जी आर्य
आर्यसमाज लखीमपुर, 6 से 14 अगस्त

13- श्री अमरलाल जी आर्य आर्यसमाज, गोला
6 से 14 अगस्त

14- श्री सुभाष चन्द्र जी आर्य, आर्यसमाज फैजाबाद, 6 से 14 अगस्त

15- श्री कश्मीरीलाल जी आर्य, आर्यसमाज टांडा बादलीरामपुर, 1 से 6 अगस्त
आर्यसमाज हापुड, गाजियाबाद, 8से 14 अगस्त।

16- श्री आशा आर्या
आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली, 6से 14अगस्त

उपदेशकों प्रचारकों से निवेदन है यथा समय यथा स्थान पहुँचना निश्चित करें- स्वेच्छा से कोई परिवर्तन न करें।

संबोधित आर्य समाजों से निवेदन है कि उपदेशकों प्रचारकों ढोलकवादकों को मार्ग व्यय अग्रिम अवश्य भेज दें।

मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता, उपदेश विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- 'मेरा पुत्र तीन वर्ष-तीन मास का हो चुका है। कोई शब्द कहना नहीं आता है, सुन भी लेता है। डाक्टरों के अनुसार जीभ का अग्रभाग जुड़ा हुआ नहीं है।-"करन सिंह आर्य, नगलासड़क-सौंकरा (अलीगढ़)

समाधान- बच्चे को कमर में मोटे सूत (एक अंगुली की मोटाई) की कर्धनी पहनायें। ओ३म् का उच्चारण सिखायें। निम्नांकित चूर्ण एक ग्राम प्रातः व सायं शहद से चटायें। (1) ब्राह्मीपत्ती सूखी 15 ग्राम (2) तुलसी पत्ती सूखी 15 ग्राम (3) मुलेठी 15 ग्राम (4) पीपल 10 ग्राम (5) लौंग 10 ग्राम (6) कुलंजन 10 ग्राम (7) सफेद मिर्च 10 ग्राम सभी को पीसकर चूर्ण डिब्बा में रखें। तीन मास बाद बच्चा बोलना आरम्भ कर देगा।

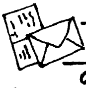
(2)

समस्या-"मुझे बचपन से ही सर्दी जुकाम खाँसी-साँस आदि रहती है। अब मैं दुबला युवक हूँ। इस्नोफिलिया 15 प्रतिशत से अधिक है। मैं इस समय बी०कॉम प्रथमवर्ष कर रहा हूँ। स्वामी कच्चाहारी जी, मैं चाहता हूँ कि सम्पूर्ण-जीवन, देश-धर्म-समाज में लगा दूँ। मैंने आजीवन विवाह न करने का व्रत लिया है। किन्तु यह सब स्वास्थ्य ठीक न होने से बेकार लगता है।"
-इन्द्रदेव बाजपेयी, ग्राम/डाकघर-जसपुरापुर, जनपद-(फर्रुखाबाद)

समाधान-ब्रह्मचर्याश्रम में बढ़ते जायें। परमात्मा की कृपा से स्वास्थ्य पायें। गुर्च, 2 ग्राममुलेठी 2 ग्राम, मिर्च काली 2 दाने, अदरख2 ग्राम, मुनक्का 2 दाने और तुलसी 5 पत्ती पीसकर एक पाव पानी में उबालकर चौथाई काढ़ा (क्वाथ) बनायें। छानकर एक प्याला गरम दूध में प्रातः खाली पेट 40 दिन तक पियें। भोजनोपरान्त लिवोमिन (चरक) दो गोली लेकर स्पास्मा (चरक) दो ढक्कन समान जल में मिलाकर दो बार पिया करें।
0 उपचार पत्र की कार्बन कापी पाने हेतु दो बन्द डाक लिफाफे भेजा करें:-

— गुरुकुलानन्द सरस्वती

हमारे पाठक क्या कहते हैं?



श्रद्धेय पाठक जी,

सादर नमस्ते

मैं सकुशल हूँ और आपकी कुशलता एवं लम्बे स्वस्थ जीवन हेतु सच्चिदानन्द परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ। क्योंकि आपने जबसे "आर्यमित्र" में सम्पादन कार्य कर रहे हैं तब से आर्यमित्र भारतवर्ष के सर्वोत्तम एवं पठनीय आर्य पत्रिका मानी जा रही है। पाठक सर्वदा अगले अंक के लिए लालायित रहते हैं। निर्भीकतापूर्ण आलोचना जिसकी अपेक्षा आर्यसमाज से लोग करते हैं सिर्फ आपके आर्यमित्र में पढ़ने को मिलती है। एतदर्थ मैं आपको इसके लिए धन्यवाद करता हूँ। आर्यमित्र की भाषा परिष्कृत एवं लालित्यपूर्ण है। इसका पूरा श्रेय श्रद्धेय पाठक जी आप को ही है।

डा॰ कस्तूरी लाल आर्य
आ. सं. लार (देवरिया)

हाथरस

श्रीयुत मंत्रीजी,

सप्रेम नमस्ते।

"आर्यमित्र" दिनांक 24 जून, ९० में प्रकाशित "धर्मान्तरण के बाद मिलने वाली सुविधायें जारी रखना धर्मान्तरण को बढ़ावा देना है" शीर्षक समाजों एवं आर्यजगत् के नाम परिपत्र नितान्त सामयिक है इसके विरुद्ध यदि पूरी शक्ति के साथ आन्दोलन न किया गया तो स्थिति बड़ी ही भयावह हो जायेगी।

अत: आप शीघ्र ही उस प्रस्ताव का प्रारूप बनाकर तुरन्त आर्यमित्र में प्रकाशित कर दें जो हजारों आर्य संस्थाओं को पास कर संबोधित अधिकारियों को भेजना है। वैसे आपका परिपत्र बहुत ही स्पष्ट है, परन्तु ग्रामीण तथा अन्य संस्थाएं उसके अनुसार प्रस्ताव बनाने या भेजने में प्रमाद कर सकती हैं। संभव हो तो प्रस्ताव की 5-5 प्रतियाँ आर्यमित्र के साथ भिजवा दें ताकि अन्य संस्थाओं से भी भिजवा सकें।

प्रेम चन्द्र शर्मा
हाथरस

वैदिक मिशनरी शिविर सम्पन्न

वेद मन्दिर मथुरा में गत 3 जुलाई से 8 जुलाई तक वैदिक मिशनरी साधना शिविर का आयोजन किया गया था जो काफी सफल रहा। इसमें 30 आर्य वीरों ने व 40 प्रौढ़ व्यक्तियों ने वैदिक मिशनरी में भाग लिया। आर्ष गुरुकुल मथुरा के आचार्य स्वदेशजी (नैष्ठिक ब्रह्चारी) शिविर के अध्यक्ष थे। आर्य वीरदल के कार्यक्रमों का संचालन श्री अभेद मुनिजी ने किया।

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७९

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
श्रावण शुक्ल-८ संवत २०४७ वि०
दिनांक २९ जुलाई १९९० | दूरभाष २४५९९२

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें -

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क मास जुलाई १९-९० को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0अधिक पोस्टेज लगते है। इसलिये सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिये विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है।

679, 748, 749, 976, 1269, 1348, 2452, 2944, 2966, 5632, 6462, 6476, 8887, 8974, 8975, 10183, 12267, 12279, 12938, 13140, 13170, 13173, 13511, 13926, 14303, 14310, 14311, 14313, 14780, 14783, 14785, 15429, 15430, 15431, 15433, 15434, 15435, 15437, 15439 ।

10185, 14774, 12940, 15428, 13507, 15432, 14306, 15436,

- व्यवस्थापक





स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं.२२४१/५७) श्रावण शुक्ल-१४ रविवार संवत् २०४७,वि. दिनांक ५ अगस्त १९९० (घोषणापत्र सं.७/२२-२-७५)



अमृतवाणी

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऽ ऋचः।
सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि-
जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

—यजुर्वेद ३१।७—

उस जगदीश्वर सर्वप्रणेता पूजनीय परमेश्वर से सृष्टि के आदिकाल में ऋचायें {ऋग्वेद} साम {सामवेद} प्रकट हुआ। उसी से छन्द {अथर्ववेद} उत्पन्न हुआ तथा उसी परमेश्वर से यजु {यजुर्वेद} उत्पन्न हुआ।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो हर सृष्टि के आदिकाल में मानव के कल्याणार्थ ऋषियों के माध्यम से हमें प्राप्त होता आया है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु. २५१/
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक-३०

वेद प्रचार सप्ताह की पावनवेला में -

वेद के प्रचार में तन-मन-धन अर्पण कर दीजिए

वेद परमात्मा का दिया हुआ शाश्वत और पवित्र ज्ञान है। इस संसार सागर को पार करने के लिए उस दयालु परमात्मा ने वेदों को प्रकाश-स्तम्भ के रूप में, सृष्टि के आदि में, स्थापित कर दिया था। जब तक संसार में वेद-प्रतिपादित धर्म, वैदिक सभ्यता, वैदिक संस्कृति का साम्राज्य रहा, यह संसार स्वर्गधाम बना रहा। वेद स्वयं कहता है -

"यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्"

मानव को अपनी जीवनयात्रा में उत्थान के लिए जितने भी ज्ञान-विज्ञान और धर्म की अपेक्षा है उन सबका वेदों में प्रतिपादन है। ऐसी दिव्यवाणी के प्रदाता उस प्रभु तक पहुँचने के लिए वेदमार्ग पर ही संसार को आना पड़ेगा क्योंकि अन्य कोई रास्ता है ही नहीं-**"नाऽन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय"**।

आर्यो!! तुमने विश्वकल्याण के लिए जीवन को सदा आहुत किया है। इतिहास साक्षी है- तुम्हारे बटुकों ने, गृहस्थों ने, युवाओं ने युवादम्पतियों ने, साधु सन्यासियों ने, कन्दराओं में घूमते, विचरते रमते योगियों ने, बहुओं ने बेटियों ने, ओ३म् का झण्डा लेकर विश्व में वेदवीणा बजाई थी, घरघर अलख जगाया था तभी तो यह आर्यावर्त्त जगद्गुरु कहलाया था। आज वेदप्रचार की इस पावनवेला में दिव्यज्ञान के इस अपरिमित कोष को फिर लुटा दो। हर घर में ज्ञान का दीप जला दो। इससे बड़ा दान, इससे बड़ा उपकार और इससे बड़ा संसार का कल्याण और कोई हो नही सकता। आज मनुष्य पापपंक में फँसा हुआ द्वेष की नौकाओं पर चढ़ा हुआ स्वयं अपने ही अस्त्रों से अपना विनाश करने को उद्यत हो रहा है। उसे कोई मार्ग नही सूझ रहा है- '**अन्धेनेव नीयमाना यथान्धः**" वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। वेद तो कहता है- **"मैतं पन्थामनुगा भीम एष येन पूर्व नेयथ तं ब्रवीमितम"** हे मानव उस पथ का अनुसरण मत कर जो तम {पाप} से आच्छादित है।

वेद प्रचार आर्यसमाज का महापर्व है। कोटानुकोटि हिन्दू जनता महापर्वो पर गंगा में डुबकी लगाने मानी है सोचती है वैतारणी पार हो गई। खुदा के बन्दे लाखोंलाख मूक पशुओं को जिबह करके रहमत की धरती को प्रतिवर्ष खून से रंग देते है सोचते है जियारत हो गई वह खुश हो गया। ईसा के सन्देशवाहक चान्दी के टुकडे दिखा दिखाकर संसार को पोप पाखण्ड भरे यौनशोषण के गर्त्त में गिरा देते है समझते है ईसा पापों को लेकर शूली पर चढ़ जायेगा, हम बच जायेंगे। इस तमस की कालीनिशा से मानव को कौन बचा सकता है केवल तुम्हारा वैदिक सूर्य। यह तुम्हारी वह प्रेमगंगा है जिसमें अवगाहन करके मानवमात्र, नहीं नहीं जीवमात्र, सुखी हो सकता है, निर्भय हो सकता है, इस संसार सागर से पार हो सकता है। इसीलिए हमारे ऋषि ने "वेद का पढ़ना पढाना, सुनना सुनाना परम धर्म" बतलाया है।

इसलिए आइए। इस महानपर्व को बहुत शालीनता, भव्यता और महानता के साथ मनायें। सभा द्वारा प्रकाशित कार्यक्रम आपके पास पहुँच चुका होगा। हमें पूर्ण विश्वास है **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** की ओर बढ़ते हुए आर्यसमाज के कदमों को आप शक्ति देंगे, सामर्थ्य देंगे, तन-मन-धन देंगे जिससे हम प्रभु के इस सार्वभौम उद्घोष को विश्व के कोने-कोने में पहुँचा सकें।

असतो मा सद्गमय

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।

— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ श्रावण शुक्ल-१४ संवत् २०४७ वि.

५ अगस्त १९९०, दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

धर्म निरपेक्षता की आड़ में

भारतीय स्वतन्त्रता के इन चार दशकों में सरकार की नीति सदैव तुष्टीकरण की रही है और जो भी पार्टी शासनारूढ़ हुई है उसने अल्पसंख्यकों को हर प्रकार से सन्तुष्ट रखने के लिए उच्चतम न्यायालय के आदेशों तक को कानून बदलकर उन्हें सन्तुष्ट रखने का प्रयत्न किया है। कुछ वर्ष पूर्व कलकत्ता हाईकोर्ट में मुसल्मानों की धार्मिक पुस्तक क़ुरआन में आये हुए भेदभावमूलक आपत्तिजनक अंशों को सप्रमाण प्रस्तुत करते हुए एक याचिका दायर की गई थी कि इन आपत्तिजनक अंशों को निरस्त कर दिया जाय तो तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी ने मुस्लिम समुदाय के अन्दर उमड़ते हुए असन्तोष को मद्देनज़र रखते हुए उस याचिका को यह कहकर अस्वीकृत करा दिया कि धार्मिक पुस्तकें न्यायालय की विचारपरिधि में नहीं आती हैं।

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत में बड़े पैमाने पर जो धर्मान्तरण हो रहा है उसके पीछे विदेशों से आया हुआ अपार धन है। पेट्रोल का उत्पादन करने वाले अनेक धनी अरब देश भारत की मुस्लिम संस्थाओं को अपार धनराशि की सहायता हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन करने हेतु भेज रहे हैं। यह धन भेजे जाने के अनेक प्रच्छन्न तथा प्रत्यक्ष तरीके हैं जिनके बल पर गरीब भोली-भाली हिन्दू जनता को प्रलोभन देकर मुसल्मान बनाया जा रहा है। इसी प्रकार अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी देशों से विपुलमात्रा में धन ईसाईमत के प्रचार के लिए भारतवर्ष में भेजा जा रहा है। यदि देखा जाय तो यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि भारत का इस्लामीकरण अथवा ईसाईकरण करने में एक प्रकार से होड़ लगी हुई है। इधर हिन्दूसमाज कुण्ठित हो चुका है, मूकदर्शक बना ईश्वर के नाम पर अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रहा है। एक मुद्दा उसने उठाया है रामजन्मभूमि मन्दिर के निर्माण का- परन्तु यह स्वप्न भी उसका पूरा हो सकेगा अथवा नहीं- यह तो भविष्य के गर्भ में है। आर्यसमाज अपनी लेखनी और मंच से यह आवाज उठाता आ रहा है कि रामजन्मभूमि मन्दिर के निर्माणार्थ जितना धन और शक्ति हिन्दुसमाज व्यय कर रहा है उससे येनकेन प्रकारेण अगर मन्दिर का निर्माण हो भी गया तो उससे हिन्दूसमाज का कितना हित होगा। अगर यही धन और शक्ति शुद्धीकरण के अभियान में लगाई जाय तो आज हिन्दूसमाज के जो हजारों लाल और ललनाएं धर्मपरिवर्तन करके मुस्लिम ईसाई बनते जा रहे हैं, उसे रोका जा सकता है। अगर हिन्दू नहीं रहा तो तुम्हारे इस बने हुए रामजन्मभूमि मन्दिर में पूजा करने पहुँचेगा कौन? क्या आक्रान्ता शत्रु इसे फिर नष्ट नहीं कर देंगे।

भारत सरकार ने कुछ दिन पूर्व रामजन्मभूमि मन्दिर के निर्माणार्थ विदेशों से आने वाले धन पर एक आदेश निकालकर रोक लगा दी है और परोक्षरूप से मन्दिर निर्माण से अपनी असहमति ही व्यक्त कर दी है। पहिले तो भारत की हिन्दूसंस्थाओं का विदेशों में कोई धार्मिक मूल आधार न होने के कारण किसी विदेशी शक्ति द्वारा धन भेजने का प्रश्न ही नहीं है, न कोई भेजता है। किन्तु यदि विदेशों में रहने वाले हिन्दू अपनी धार्मिक भावना के कारण किसी मन्दिर निर्माणार्थ धन भेजना भी चाहें तो उस पर सरकार द्वारा इस प्रकार अंकुश लगाना अत्यन्त भेदभावमूलक तथा सरकार की धर्मनिरपेक्षता की नीति के सर्वथा विरुद्ध है। शासन यह भलीभाँति जानता है कि गिरिजाघरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, धार्मिक मकतबों तथा धर्मपरिवर्तन कराने के लिए हर वर्ष करोड़ों रूपया विदेशों से भारत में आता है परन्तु उस पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई जाती। शासन के इस प्रकार के आदेश से बहुसख्यक वर्ग में असन्तोष बढ़ेगा क्योंकि रामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण के सन्दर्भ में सरकार ने कोई निर्णयात्मक कदम न उठाकर अपने वक्तव्यों तथा आचरण द्वारा बहुसंख्यक वर्ग में असन्तोष की मात्रा ही बढ़ाई है। प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव बार-बार धमकी भरे वक्तव्य दे रहे हैं कि रामजन्मभूमि मन्दिर का निर्माण किसी भी दशा में नहीं करने देंगे- उनके जैसे प्रदेश के सर्वोच्च पद पर आसीन राजनैतिक पुरूष के लिए यह शोभा नहीं देता है, और बहुसख्यक हिन्दू समाज, जिसके बल पर वह जीतकर आये हैं, के घावों पर नमक छिड़कने के बराबर है।

आर्यसमाज सरकार के इस रवैय्ये का घोर विरोध करते हुए अपने आर्य (हिन्दू) बन्धुओं से यही कहना चाहता है कि रामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण से भी बड़ी समस्या आज धर्म परिवर्तन की है जो अजगर की तरह मुँह बाए हिन्दूसमाज को निगलती चली जा रही है। इसे यदि न रोका गया तो जाति का तो सर्वनाश सुनिश्चित है मन्दिर भी बच नहीं सकेगा।

वृहद् आर्य महा सम्मेलन

देश में धर्मपरिवर्तन एवं वर्ग संघर्ष को दृष्टि में रखते हुए आर्य उपप्रतिनिधि-सभा जिला- मेरठ ने दि0- 2,3,4 सितम्बर 1990 को रामलीला मैदान मवाना (मेरठ) में एक वृहद् आर्य-महा सम्मेलन करने का निश्चय किया है। जिसमें आर्यजगत् के महान नेता, सन्यासी, महोपदेशक और उपदेशक भाग लेंगे।

साधारण जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में इस सम्मेलन में उपस्थित हो कर धर्मान्तरण एव विघटन के कार्यों को रोकने में सहयोग प्रदान करें।

इन्द्रराज
मन्त्री

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

हमारे पाठक क्या कहते है?

आपके सम्पादन सहयोग से 'आर्यमित्र' का स्तर अच्छा बनता जा रहा है। आकर्षण भी बहुत अच्छा रहता है। लेख तथा सम्पादकीय उत्कृष्ट कोटि का रहता है जनता बहुत रुचि से पढ़ती है।

कमलेश कुमार
24-B
वीरनगर सोसायटी
नवावाड्ज रोड
अहमदाबाद-380013

मान्य लेखकों से नम्र निवेदन

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध नेता, लोकसभा में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण को निर्भीकता से प्रस्तुत करने वाले, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्राण स्व0 पं0 प्रकाशवीर शास्त्री की पुण्यस्मृति में हम आगामी दिस॰ 1990 में एक विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

विनम्र निवेदन है कि शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागार करने वाले अपने संक्षिप्त विचार/कविता/संस्मरण आदि मुझे भेजने की कृपा करें। साथ ही सामयिक समस्याओं पर प्रति सप्ताह प्रकाशनार्थ लेख भी भेजें। आर्यमित्र इन्हें प्रकाशित कर अपने को गौरवान्वित समझेगा।

आचार्य इन्द्र देव पाठक
प्रबंध सम्पादक आर्यमित्र, लखनऊ

संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीयता

डा० कपिलदेव द्विवेदी,
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

संस्कृत साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रीयता विषय पर वेदों से लेकर आजकल बहुत अधिक साहित्य लिखा गया है। वेदों में राष्ट्र का स्वरूप, राष्ट्रीय उन्नति के साधन, राष्ट्र में राजा और प्रजा के कर्तव्य, मातृभूमि के प्रति प्रेम, देश की उन्नति के लिए सतत् क्रियाशील होना, देश के लिए बलिदान होना, पृथ्वी को माता मानना, उसकी सुरक्षा के लिए यत्न करना, स्वराज्य का महत्व, स्वराज्य जन्मसिद्ध अधिकार है और स्वराज्य के लिए राष्ट्रीय कर्तव्यों आदि का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। अथर्ववेद के 12 वें काण्ड का 63 मन्त्रों वाला प्रथम सूक्त भूमिसूक्त है। इसमें भूमि का महत्व, उसका गौरव, मातृभूमि के प्रति कर्तव्य आदि का बहुत विस्तार से वर्णन है। इसी प्रकार ब्राह्मण ग्रन्थ, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, पुराण, संस्कृत नाटक, काव्य, गीतिकाव्य, गद्यसाहित्य और वर्तमान लेखकों की अनेक कृतियों में राष्ट्रभक्ति से संबद्ध अनेक रचनाएं हैं।

विश्व का सर्वोत्तम राष्ट्रगीत यजुर्वेद में प्राप्त होता है। ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्, आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो ऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वान् आशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। यजु० 22·22· अर्थात हमारे राष्ट्र में ब्राह्मण ब्रह्मवर्चस्वी हों, क्षत्रिय वीर धनुर्धर और महारथी हों। गौएं प्रचुर मात्रा में दूध दें।

बैल हृष्ट-पुष्ट हों और घोड़े तीव्र गति वाले हों। स्त्रियां गृह कार्यों में दक्ष हों। प्रजाजन सभ्य और वीर हों, उचित समय पर वर्षा हो और देश में अन्न समृद्ध हो। सभी को सुख शान्ति प्राप्त हो।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 80 वां सूक्त स्वराज्य की महिमा पर ही है। इसमें स्वराज्य की प्राप्ति और उसके संरक्षण का वर्णन है। इसके 16 मंत्रों में कहा गया है-

अर्चन अनु स्वराज्यम्। ऋग-1-80-1-16 अर्थात स्वराज्य की पूजा करो। इसके लिए शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो।

हतो वृत्रं जया अपः। ऋग-1·80·3 त्वं त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं माययावधीः। ऋग् 1·80·7· जो छल-कपट से देश की स्वतन्त्रता छीनना चाहते हैं, ऐसे पापियों को सभी प्रकार के उपायों से नष्ट करो और जीतो।

अथर्ववेद में राष्ट्र की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि ऋषियों ने तप और दीक्षा अर्थात् अनुशासन और दृढ़ संकल्प के लिए राष्ट्र निर्माण की योजना बनाई। इससे राष्ट्र को तेज और बल मिलता है।

भद्रमिच्छन्त ऋषयस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उप संनमन्तु ॥ अथर्व· 19·41·1

राष्ट्र के कर्तव्यों का वर्णन यजुर्वेद के 10वें अध्याय में किया गया है कि राष्ट्रीय उन्नति के लिए विशाल सेना होनी चाहिए। राष्ट्रीयता का उद्देश्य है- स्वराज्य के साथ जन-कल्याण और विश्वकल्याण। वृषसेनो ऽसि राष्ट्रदा0। जनभृत स्थ0 विश्वभृत स्थ0 स्वराज्ज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त। यजु010·2,4,

साथ ही अथर्ववेद में कहा गया है कि अन्य राष्ट्रों के सहयोग से अपने राष्ट्र को संवेश्य राष्ट्र या महान् राष्ट्र बनाना चाहिए और प्रजा की उन्नति द्वारा उसे उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर बनाना चाहिए।

बृहद् राष्ट्रं संवेश्यं दधातु। अथर्व0 3·8·1·
उत्तरं राष्ट्रं प्रजया उत्तरावत्। अथर्व 12·3·10

राष्ट्रीयता का परिचय देते हुए कहा गया है कि पृथ्वी माता को प्रणाम। पृथिवी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। पृथिवी और द्युलोक हमारे माता-पिता हैं।

माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्याः।
अथर्व·12·1·12
नमो मात्रे पृथिव्यै। यजु· 9·22·
तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः।
यजु 25·17

राष्ट्रीय कर्तव्यों का उल्लेख यजुर्वेद और अथर्ववेद में किया गया है कि हम मातृभूमि की रक्षा के लिए सदा जागरूक रहें और देश को जब भी आवश्यकता हो हम उसके लिए बलिदान हो जाएं।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः। यजु·9·23·
वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम। अथर्व·12·1 62

स्वराज्य का महत्व बताते हुए कहा गया है कि स्वराज्य जन्मसिद्ध अधिकार है, कोई भी इसको छीन नहीं सकता है। स्वराज्य से सुखों की वर्षा होती है। यह राष्ट्र की व्यापकता को बढ़ाता है और इससे जनहित का संरक्षण होता है।

नकिष्ट्वं प्रियं न मिनन्ति स्वराज्यम्
ऋग·5·32·2·
इदं नमो वृषभाय स्वराजे।
ऋग· 1·15·15
व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये।
ऋग·5·66·6

राजा के कर्तव्यों में राष्ट्रीय उन्नति, प्रजा संरक्षण और सुखों की वृद्धि का विशेषरूप से उल्लेख किया गया है। राजा के लिए कहा गया है कि वह प्रजा का प्रिय हो और प्रजा के सहयोग से ऐसी व्यवस्था करे कि उसका राष्ट्र कभी अवनति की ओर न जावे। साथ ही यह भी कहा गया है कि राजा अपने सौभाग्य की वृद्धि के लिए राष्ट्र की उन्नति करें। राष्ट्रीय उन्नति में आर्थिक उन्नति का विशेष स्थान दिया गया है।

विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु, मा त्वद् राष्ट्रम् अधिभ्रशत्। यजु0 12·11
इदं राष्ट्रं पिपृहि सौभगाय। अथर्व0 7·35·1
राष्ट्रं च रोह द्रविणं च रोह। अथर्व·13·1·34

वेदों में राष्ट्रीय उन्नति के लिए आवश्यक बताया गया है कि ब्रह्मशक्ति और क्षत्रशक्ति मिलकर काम करें।

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्। यजु·32·16
अथर्ववेद में मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि हमारी मातृभूमि तीनों लोकों में उत्तम है।

इमा यास्तिस्रः पृथिवीस्तासां ह भूमिरुत्तमा।
अथर्व·6·21·1
यही भाव संस्कृत के एक सुभाषित में कहा गया है-

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

वेदों में पृथ्वी को माता बताते हुए इसकी सुरक्षा पर बहुत बल दिया गया है और कहा गया है कि पृथ्वी को सुदृढ़ बनाओ और इसके पर्यावरण को किसी प्रकार प्रदूषित न करो।

मधुर्वी मात पृथवी मदीयम्।
अथर्व- 9·10·12
पृथवीं दृढं पृथिवीं मा हिंसी।
यजु·13·18

शतपथ और तैत्तिरीय ब्राह्मणग्रन्थों में राष्ट्र का वर्णन करते हुए कहा गया है कि राष्ट्र का अर्थ है। -सर्वांगीण विकास और अभ्युदय। सर्वांगीण राष्ट्रीय उन्नति को ही अश्वमेध यज्ञ कहते हैं।

श्री वै राष्ट्रम्। शतपथ ब्रा06·73·7
श्री र्वै राष्ट्रम् अश्वमेधः। तैत्तिरीय ब्रा0 3 9·7·1·

पुराणों मे भारतभूमि का महत्व बताते हुए कहा गया है कि यह भूमि देवभूमि है। यहाँ देवता पुनर्जन्म लेते हैं।

गायन्ति देवाः किल गीतिकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे। स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।

उपनिषदों और महाभारत में राजा अश्वपति के राष्ट्र को आदर्श राष्ट्र के रूप में बताते हुए कहा गया है कि उसके राष्ट्र में कोई चोर, डाकू, आततायी और शराबी नहीं था। कोई दुराचारी स्त्री और पुरुष नहीं था।

शेष पृष्ठ ८ पर

वेदामृतम्

• डा० सावित्री देवी शर्मा एम.ए.
वेदाचार्या
बरेली

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" यह आर्य वचन हमें सर्वदा वैदिक स्वाध्याय का व्रत धारण करने की प्रेरणा देता है। विशेषतः पावस कालीन मनोरम वातारण में आज भी तपोनिष्ठ ऋषियों की स्वाध्याय संलग्नता श्रावणी उपाकर्म जेसे महत्वपूर्ण पर्व की याद दिलाती है। शतपथ ब्राह्मण में वेदाध्ययन को मानवीय जीवन का मुख्य कर्म बताते हुए लिखा है:- अथान: स्वाध्याय प्रशंसा। प्रिये स्वाध्याय प्रवचने भवतः। युक्तमना भवति। अपराधीनो अहरहरर्थान् साधयते। सुखं स्वपिति। परमचिकित्सक आत्मनो भवति। इन्द्रिय संयमश्च। एकारामता च। प्रज्ञावृद्धिः यशोलोकपक्तिः। प्रज्ञावर्धमाना चतुरोधर्मान् ब्राह्मणमभिनिष्पादयति। ब्राह्मण्यं प्रतिरूपचर्या यशो लोकपक्तिं। लोकः पच्यमानश्चतुर्भि धर्मैः ब्राह्मणं भुनक्ति अर्चया च दाने न चाज्येयतया चावध्यतया च" (मा0श0 11/5/7/1) अर्थात् स्वाध्यायशील मानव युक्तमना होता है। अपराधीन होकर प्रति दिन विविध पदार्थों की सिद्धि करता है। रात्रि में सुख पूर्वक सोता है अपनी आत्मा का परम चिकित्सक बनकर इन्द्रियसंयम, एकाग्रता और प्रज्ञा वृद्धि का लाभ प्राप्त करता है। संसार में उसका यश निरन्तर बढ़ता है। उसकी ऋतम्भरा प्रज्ञा चार प्रकार के ब्राह्मण भाव को उत्पन्न करती है- अध्ययन, अध्यापन, यजन तथा याजन्। यह लोक भी उस ब्राह्मण धर्म से लाभान्वित होकर चार प्रकार से उसकी आराधना करता है- पूजा, इष्ट वस्तु का समर्पण, उसकी हानि न करना तथा अवध्यता।

"स्वस्याध्ययनम्" स्वाध्यायः अर्थात् आत्मनिरीक्षण ही स्वाध्याय कहलाता है। अपने गुणों का ज्ञान तो प्रायः सभी को होता है किन्तु स्वछिद्रान्वेषण में सजग रहना स्वाध्याय यशील जितेन्द्रिय वीरों का ही कार्य है। इस प्रकार आत्मगुण-दोष परीक्षण धार्मिक पुस्तकों के पठन-पाठन, साधुजनों के सदाचार मय जीवन और उनके प्रवचन श्रवणादि साधना से ही सम्भव है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि दुराचारी के दोषों का दुस्साध्य उपचार केवल स्वाध्याय से ही सम्भव है। अतः श्रावणी के पुण्य पर्व पर वेदामृत का रसास्वादन करें:-
ओ3म् पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसासह वसोष्पते निरमय मय्येवास्तु मयिश्रुतम्।।
अथर्ववेद (काण्ड 1/अ· 1/सूक्त 1)
अन्वित अर्थ- हे वाचस्पते (वेदवाणी के पालक, प्रचारक परमेश्वर) देवेन (प्रकाशयुक्त दिव्य) मनसासह (मनोज्ञान के साथ) पुनः बार-बार) एहि (मुझे प्राप्त होइये) वसोष्पते। (सकल ऐश्वर्यों के स्वामी अथ वा वसु ब्रह्मचारियों के पालक आचार्य) निरमय (हमें सर्वथा सुखों में रमण कराओ। मयि (मुझमें) श्रुतम् (सुना हुआ वेदज्ञान) मयि+एव (मुझ में ही) अस्तु (रहे) अर्थात् मेरा ही हो जावे। मैं उसको सरलता से अपने आचरणों द्वारा जीवन में आत्मसात् कर सकूँ। प्रस्तुत वेदमन्त्र में आचार्य उपदेशक तथा विनीत श्रद्धालु शिष्य के गुण, श्रुत वेद ज्ञान हमारे मानस की स्थायी निधि कैसे बन सके आदि महत्वपूर्ण विषयों पर विचार किया गया है।

वाचस्पते- श्रद्धास्पद आचार्य को वाचस्पति कहकर सम्बोधित किया गया। जिस प्रकार परमेश्वर वेद वाणी का स्वामी है उसका ज्ञान पूर्ण एवं निर्भ्रान्त है। वह वाणी के दोषों से रहित है। अतः वाचस्पति होकर सृष्टि के आदि में अनन्त सत्यज्ञान का आलोक प्रसारित करता है। उसी प्रकार लोक में भी वाग्दोष विहीन वाचस्पति ही ज्ञानोपदेश का अधिकारी है। अनृत, वदतोव्याघात, पुनरूक्तादि दोष वर्जित सूनृता वाणी का प्रयोग करने वाली ही वाणी का अधिपति है। ऐसी विमला सरस्वती की साधना में समर्पित जीवन वाले उपदेशक का वक्तव्य ही प्रभावशाली होता है। अतएव सर्वप्रथम वाणी के दोषों का संक्षिप्त विवेचन आवश्यक है-

अनृतदोष- यह वाणी को मलिन करने वाला प्रधान दोष है शेष दोनों इसी के पुत्र हैं किन्तु अपना-अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हैं। "न ऋतम्" अनृतम् अर्थात् जो सत्य शाश्वत नहीं है। वह अनृत ही महापातक माना गया है। असत् का चिन्तन करते-करते मनुष्य अनृत भाषण करने लगता है। परिणामतः मनसा वाचा कर्मणा अपने असत्यव्यवहारों से संसार को अनिष्ट कर सिद्ध होता है। असत्य की प्रतिष्ठा से विश्व का कोना-कोना अशान्त हो उठता है। महर्षि ने सत्य ही कहा था "अविद्या (असत्य) का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। वस्तुतः वही वाचस्पति है जो सत्य के ग्रहण और अनृतदोष का परित्याग करने में सर्वथा उद्यत रहे।

(2) वदतोव्याघात दोष- जिस वाचोयुक्ति से किसी सिद्धान्त की पुष्टि होती है यदि उसी से खण्डन भी हो जावे तो वह "वदतोव्याघात दोष" कहा जाता है। यह दोष अनृत के दृढ़ अभ्यास से उत्पन्न होता है। प्रथम तो सत्य का असत्य करने में मन की चंचलता बढ़ती है। चंचल मन ऋतम्भरा प्रज्ञा की स्थिरता को भी नष्ट करता है। उस समय वक्ता की अस्थिर मति से जो कुछ भी वाणी द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है वह "वदतो व्याघात दोष से युक्त अवश्य हो जाता है। ऐसा स्थूल दोष साधारण श्रोता भी शीघ्र पकड़ लेता है और उसे उसी के शस्त्र से परास्त कर देता है क्योंकि इस दोष से अल्पज्ञ मनुष्य तत्काल निग्रह स्थान में आ जाता है। और अनायास ही शास्त्रार्थ में पराजित हो जाता है। इससे मनुष्य की बौद्धिक अस्थिरता एवं विवेक हीनता का परिचय मिलता है। ऐसा वाग्दुष्ट व्यक्ति स्वयं तो अन्धकार में रहता ही है साथ ही उपनिषद के शब्दों में "अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः" अपने अनुयायिओं को भी असत् पथ में लाकर भ्रष्ट करता है।

(3) पुनरुक्ति दोष- विषय के उपक्रम (आरम्भ) तथा उपसंहार के अनन्तर किसी अन्य प्रकरण में पूर्वोक्त विषय की अप्रासंगिक चर्चा करना पुनरुक्ति दोष कहलाता है। जहाँ किसी जिज्ञासु के ज्ञानाभ्यास के लिये किसी विषय का पौनःपुन्येन कथन किया जाता है वहाँ पुनरुक्ति दोष न होकर गुण में परिवर्तित हो जाती है। प्रायः माता, पिता आचार्यजन चंचल बालकों के स्थिरज्ञान के लिये एक-एक शब्द का अनेकशः प्रयोग करते हैं। ऐसी स्थिति में पुनरुक्ति अनुवाद मात्र बन जाती है दोष नहीं। इस दोष से दूषित होकर कामदुधा सरस्वती की सरसता नष्ट होने लगती है। नीरस वाणी को संसार में कोई श्रोता नही सुनना चाहता उसकी प्रभावोत्पादकता का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

अतः स्पष्ट है कि त्रिदोष रहित वरदा वेदभारती ही सत्य-शिव सकंल्प मय मानस की ध्रुवा स्मृति की परिचायिका है। आचारवान् वाचस्पति के परिज्ञान का सुनिश्चित लक्षण है। ऐसे दिव्य मन वाले वाग्मी बृहस्पति का एक-एक शब्द जीवन को सार्थक बनाने में सक्षम होगा।
आचार्य का देवत्व भी उसी शिष्य को अपनी चुम्बकीय शक्ति से आकृष्ट कर सकेगा जिसने स्वयं भी गुरूचरणों में बैठकर सविनय निष्कपट साधना की है। उपदेशक में यदि निर्दोष वाग्मिता अपेक्षित है तो शिष्य में भी निम्नांकित योग्यता आवश्यक है:-

प्रशान्त चित्ताय जितेन्द्रियाय।
प्रहीणदोषाय यथोक्त कारिणे

अर्थात्- जिसका चित्त कठोरत तपश्चर्या से प्रशान्त हो चुका है, जिसकी बुद्धि विषयोन्मुख इन्द्रिय रूपी अश्वों पर उत्तम सारथि के तुल्य नियन्त्रण करती हो, जिसके शारीरिक, मानसिक एवं वाचिक दोषक्षीण हो चुके हों तथा जो अपने गुरूवर की सेवा शुश्रूषा में रत रहकर सर्वदा आज्ञाकारी हो वही सुपात्र शिष्य उपदेश ग्रहण करने का अधिकारी है। कुपात्र को दिया गया उपदेश ऊषरभूमि में बोये हुए बीजों के समान सर्वथा निष्फल होता है। अतः प्रस्तुत वेदमन्त्र में शिक्षक-शिष्य दोनों के लिये ही "देवेन मनसा सह" इन सारगर्भित पदों का अन्वय अपेक्षित है। पुनः एहि- यह सरस पद अतृप्तत जिज्ञासु हृदय की सरलता, गुरूनिष्ठा एवं भावविह्वलता को प्रकट कर रहा है। वस्तुतः गुरु की गरिमामयी वाणी सुनकर किसी की तृप्ति नहीं होती। अतः शिष्य विनीत भाव से प्रार्थना करता है-
"वाचस्पते। पुनरेहि"। द्वितीय भाव यह भी ध्वनित हो रहा है कि बार-बार श्रवण करने से ही किसी ज्ञान को हृदय में दृढ़ स्थिति होती है। गुरूजनों को बारम्बार विषय का अभ्यास कराना चाहिये। यह सरल शिष्य की स्वाभाविक मांग है। ज्ञानवान् आचार्यों के सत्संग से ही वेदामृत का पानकर मानस ग्रन्थियाँ शिथिल होती हैं, किन्तु यह एक दिन कार्य नहीं

— शेष पृष्ठ ८ पर

आर्य समाज का मूलाधार-वेद

—यशपाल आर्यबन्धु
मुरादाबाद

उन्नीसवीं शताब्दी के सर्वप्रमुख जन आन्दोलन आर्यसमाज का मूलाधार वेद है। उसके संस्थापक ने इस वेद के प्रचार प्रसार के लिए ही स्थापित किया था [illegible] उस समय एतस्मृत्यर्थ के सम्मुख स्थापित भी किया गया था। महर्षि की घोषणा थी कि 'मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। (देखें स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश) और जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हूँ सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूँ। (वही) तात्पर्य यह कि महर्षि ने आर्यसमाज के मूल में अपनी कोई कपोल कल्पित मान्यता नहीं रखी अपितु वेद को ही उसका आधार बनाया है। पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री का कथन है कि मानव शरीर के प्रत्येक अवयव कार्यकलाप का आधार जैसे कोई मानसिक प्रक्रिया होती है उसी प्रकार संसार के प्रत्येक सामाजिक संगठन का भी कोई दार्शनिक आधार होता है और उसकी सम्पूर्णता के निर्माण में कार्य कारण मर्यादा उसका कार्य की गति दोनों है। उदाहरणार्थ संसार में प्रचलित मत और सम्प्रदाय हिन्दू मुसलमान ईसाई कम्यूनिस्ट आदि के दार्शनिक आधार पुराण कुरान बाइबिल कैपिटल आदि ग्रन्थ हैं उनके अनुयायी लोग के अनुसार ही उनके सिद्धान्त होते हैं। आर्यसमाज का मूलाधार वेद [illegible] जो संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं और जो वाह्य साक्ष्य में मतभेद तथा संशय होने पर भी अन्य साक्षी के अनुसार मानना सृष्टि के आदि के वर्तमान हैं (आर्यमित्र आर्यसमाजाङ्क । अप्रैल 1964)

महर्षि दयानन्द की समस्त मान्यतायें वेद पर ही आधारित हैं। उन्होंने अपनी ओर से कोई नवीन मान्यता अथवा सिद्धान्त खड़ा नहीं किया। ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त प्राचीन ऋषि महर्षिगण जो कुछ मानते मनवाते तथा कहते कहवाते आये हैं कालक्रम से उस पर पड़े आवरण को हटाकर उन्होंने उसी उद्घोष को दुहराया और वेद प्रतिपादित शाश्वत सत्य सनातनधर्म की रक्षा के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की थी। अतः इस दृष्टि से आर्यसमाज कोई मत मजहब या सम्प्रदाय न होकर एक ऐसा आन्दोलन है जो बुद्धिवाद का आश्रय लेकर वैदिक धर्म के शुद्ध स्वरूप को संसार के सामने उपस्थित करता है। इस लिए स्पष्ट है कि आर्यसमाज का मूलाधार वेद है।

आर्यसमाज का तृतीय नियम जहां इस बात की घोषणा करता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वहां इसमें वेद के पढ़ने पढ़ाने और सुनने सुनाने को सब आर्यों का परम धर्म कहा गया है। [illegible] मनुष्य ने सत्यार्थ प्रकाश आदि अपने रचे ग्रन्थों का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना परम धर्म नहीं कहा अपितु वेद के लिए ही ऐसा निर्देश दिया।

वेद ही मूलाधार क्यों

[illegible] अन्वेषण [illegible] आर्यसमाज का मूलाधार बना दिया और फिर अपना सम्पूर्ण जीवन भी उसके प्रचार प्रसार और भाष्य आदि में लगा दिया। उसके लिए उन्हें [illegible] पड़े कितनी बाधायें सहनी पड़ी [illegible] [illegible] बात तो है कि महर्षि [illegible] [illegible] पूर्ण [illegible] नहीं [illegible] [illegible] वेद के प्रचार के लिये [illegible] होने चाहियें। क्योंकि [illegible] किया [illegible] नहीं कर सकता। [illegible] अपने बौद्धिक [illegible] जो शिक्षा दी है [illegible]

महर्षि ने वेद को आर्यसमाज का मूलाधार इस [illegible] [illegible] ईश्वरीय ज्ञान है [illegible] [illegible] की पुस्तक [illegible] ईश्वरीय ज्ञान [illegible] [illegible] जो मानव [illegible] [illegible] के प्रारम्भ में दिया जाता है [illegible] सृष्टि के आरम्भ में [illegible] [illegible] का मूल [illegible] [illegible] ईश्वर [illegible] [illegible] किसी अन्य [illegible] ईश्वरीय [illegible] पुस्तक के सृष्टि के आदि में होने का दावा किसी ने नहीं किया। महर्षि का इसमें यह तर्क है कि यदि सृष्टि के आदि में परमात्मा जो वेदों का उपदेश नहीं करता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों की यथार्थ विद्या नहीं होती। (द्रष्टव्य ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेदोत्पत्ति विषय)

यदि सृष्टि उत्पत्ति के बहुत बाद की पुस्तकों को ईश्वरीय ज्ञान माना जावे तो फिर यह प्रश्न उठेगा कि ईश्वर ने उन असंख्य लोगों को अपने इस ज्ञान से वंचित क्यों रखा? इस अवस्था में उन कोटि कोटि मानवों को विधि और निषेध आदि कर्मों के लिए उत्तरदायी भी नहीं ठहराया जा सकता। वेद की यह विशेषता है कि उसमें [illegible] इतिहास का लेशमात्र भी नहीं। साथ ही उसमें बुद्धि और [illegible] के विरुद्ध कोई बात कहीं नहीं मिलती। फिर वह सारी मानवमात्र के लिए है न कि किसी देश अथवा जाति विशेष के लिए या फिर किसी काल विशेष के लिए। वह ज्ञान सृष्टिक्रम से पूर्ण मेल खाता है इसमें और सृष्टिक्रम में कहीं कोई विरोध नहीं। वेद ईश्वर का ज्ञान है तो सृष्टि उसका कार्य। [illegible] इन दोनों में विरोध नहीं हो सकता [illegible] जो पुस्तकें सृष्टिक्रम के विपरीत ज्ञान देती हैं वे ईश्वरीय ज्ञान कहलाए नहीं जा सकतीं।

वेद धर्म का आदि मूल है वह नित्य निर्भ्रान्त तथा अपौरुषेय ज्ञान है। इस लिए ऐसी अनुपम ज्ञानराशि को छोड़कर और किसको आर्यसमाज का मूलाधार बनाया जा सकता था। वेद स्वतः प्रमाण है जैसे सूर्य के प्रकाश को देखने के लिए किसी अन्य दीपक आदि प्रकाश की आवश्यकता नहीं रहती इसी प्रकार स्वतः प्रमाण वेद के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। जिसकी प्रामाणिकता दूसरे पर आधारित हो [illegible] [illegible] प्रमाण [illegible] संशय हो उसको मूलाधार में क्यों रखते। महर्षि ने [illegible] [illegible] स्वयं प्रमाणरूप [illegible] इसके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप से स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

[illegible] स्वयं विचारें कि ऐसे अनुपम ज्ञान को छोड़ कर [illegible] किसको आर्यसमाज के मूलाधार में रखा जा सकता था। [illegible] वेद शाश्वत [illegible] [illegible] पुस्तक है [illegible] आर्यसमाज के मूलाधार में शाश्वत सत्य को प्रतिष्ठित कर महर्षि दयानन्द ने जो स्वयं सत्य के अन्यतम पुजारी थे अपनी अनोखी सत्य सूझ बूझ तथा ज्ञान के प्रति अपनी अपार निष्ठा का ही परिचय दिया है [illegible] [illegible] विद्यालंकार के शब्दों में महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना शाश्वत सत्य वेदवाणी की नींव पर की है जो समाज शाश्वत सत्य की नींव पर प्रतिष्ठापित है उस ईश्वर की कृपा से शाश्वत जीवन का वरदान प्राप्त होता है। आर्यगण यदि आर्यसमाज को शाश्वत जीवन प्रदान करना चाहते हैं तो फिर वेद के प्रचार प्रसार में सर्वात्मना जुट जाना पड़ेगा। वेद के प्रचार से ही आर्यसमाज का जीवन है। ■

स्त्री आ०स० धामावाला (देहरादून)

प्रधाना	श्रीमती रानेश्वर चन्दा
मन्त्री	शान्ता अरोड़ा
कोषा	शान्ती कोहयार

दुःखद निधन

दिनांक १० जुलाई को आर्यमित्र के लेखक सियाराम वर्मा के भतीजे विनय वर्मा का [illegible] मास की बीमारी के बाद किडनी फेल हो जाने के कारण प्रातः [illegible] 0 बजे निधन हो गया।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।
—सभामन्त्री

रक्षा बन्धन और उसका महत्व

• स्वा० ब्रह्मानन्द "वेदभिक्षु"

आज अन्देशी

रक्षा बन्धन का अर्थ है बहन द्वारा अपनी रक्षा के लिए भाई को बन्धन में बांधना। इस पवित्र भावात्मक धागे की सहायता से भाई के मन में बहन और उसके परिवार के प्रति रक्षा और सद्भावना की महत्वपूर्ण प्रेरणा को उत्पन्न किया जाता है।।

भाई बहन का निश्छल प्रेम तो समस्त मानव जाति में ही पाया जाता है। परन्तु इसे राखी के धागों से स-शक्त करने की अद्भुत व गौरवशाली परम्परा भारत वर्ष को छोड़कर अन्यत्र कहीं भी विश्व में उपलब्ध नहीं है।

इतिहास का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि- समय-समय पर भारत की सामान्य नारियों से लेकर महारानियों ने तक, आपात्तियों में राखी के पवित्र सूत्र का प्रयोग करके महान शत्रुओं और डाकुओं के हृदयों को जीत कर अपने धर्म और प्रजा की रक्षा की है। आइए कुछ ऐतिहासिक एवं शिक्षाप्रद घटनाओं पर ध्यान दें और राखी के पावन भावों को समझें।

- क्रूर डाकू सुल्ताना एक बार सूचना देकर एक गाँव में डाका डालने गया। सभी ग्रामीण घरों की छतों पर- हथियार लिए रक्षा के लिए तत्पर बैठे थे। लेकिन एक कृषक का घर ऐसा था कि- जिसका मालिक कहीं गया हुआ था। सुल्ताना प्रथम उसी सूने हुए घर की ओर बढ़ गया। घर पर पहुँचते ही उसने देखा- द्वार पर एक नव युवति खड़ी और हाथों में थाली लिए देखा सुल्ताना हैरान हो गया। युवती ने देखते ही आगे बढ़कर नमस्ते पूर्वक डाकू के हाथ पर राखी बांधी और माथे पर टीका लगाया। सुल्ताना किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। पुन उसने जेब से कुछ रुपये निकाल कर और धर्म बहन युवती को दे दिए। साथ ही डाकू सेना को कहा- यह गांव अब मेरी बहन का हो गया है। यहाँ अब डकैती नहीं डाली जायेगी। देखिये इस छोटे से धागे ने एक क्रूर व्यक्ति को एक अपरिचित नारी का भाई बना दिया। और उसे बहन तथा बहन के गांव की रक्षार्थ कटिबद्ध होना पड़ा।

भारतीय इतिहास में ऐसे पर्याप्त उदाहरण प्राप्त हैं, जब राखी बन्द भाइयों ने सगे भाइयों की अपेक्षा अधिक रक्षा प्रदान की है।

सिकन्दर की पत्नी ने भी एक राखी भेज कर, महाराजा पुरु से अपने पति के प्राणों की रक्षार्थ गुहार की थी। राजा पुरु ने अवसर प्राप्त होने पर भी सिकन्दर को मारा नहीं था।

चित्तौड़गढ़ की महारानी कर्मवती ने गुजरात के बहादुरशाह की सेनाओं को अपनी तरफ आने की सूचना पाकर, जब कोई सु-रक्षा का उपाय न सूझा तो, उसने मुगल बादशाह हुमायूँ को एक मखमली डिब्बे में एक धागे पर 21 रत्नों से जड़ी एक राखी भेजी और पीपल के पत्ते पर चिटठी भी लिखी थी -

'आप के पिता (बाबर) ने तलवार की शक्ति पर मेरे पिया (राजा सग्राम सिंह) को पराजित किया था। मैं आप को बहन के प्रेम से जीतना चाहती हूँ। मेरी भेंट स्वीकार करें और मेरे राखी बन्द भाई होना स्वीकारें। यदि मेरी राखी को ठुकराओगे तो स्वयं ईश्वर को लज्जित करोगे। राखी हमारी पवित्र भावनाओं की प्रतीक है।' "आपकी धर्म बहना - कर्मवती। हुमायूँ राखी पाकर चकित रह गया। वह धार्मिक था और मानो कर्मवती की रक्षा के लिए तैयार हो गया। कर्मवती को अपनी बहन मान लिया। पुन हुमायूँ ने कर्मवती को आश्वासन पत्र लिखा- भाई बहन का सम्बन्ध इस्लाम में भी पवित्र माना जाता है। अत मुझे एक उच्च वंश की बहन पाने पर गर्व है। मैं आप की सभी खुशियों की खुदा से कामना करता हूँ।' रानी इस पत्र को पा कर प्रसन्न हुई। किन्तु दुर्भाग्य से बहादुरशाह अपनी सेना लेकर शीघ्र ही पहुँच आया और मार-काट मचा दी। जब तक हुमायूँ सहायता के लिए आया, तब तक रानी कर्मवती जौहरव्रत कर चुकी थीं। उसकी राख ही शेष थी। पश्चात् कर्मवती की मौत का बदला लेने के लिए बहादुरशाह को गुजरात से पराजित करके- बुरी तरह से खदेड़ दिया। कर्मवती की राखी बहुत समय तक आगरा के किले में रखा गया था, अमर शहीद चन्द्रशेखर की बहन की रक्षा का बन्धन इन सबसे अनुपम था। एक तूफानीरात को उन्हें एक बूढ़ी माता के घर आश्रय लेना पड़ा। पहले तो वह डाकू समझ कर डरी, लेकिन पुन देश भक्त जानकर, उन्हें आश्रय देकर उनकी भोजनादि से सेवा करने लगी। बुढ़िया की एक कन्या थी, गरीबी के कारण, वह उसकी शादी करने में सक्षम नहीं थी। शेखर को जब यह ज्ञात हुआ तो वह बुढ़िया से बोले- माँ, तुमने मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया है- मैं भी आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ? बूढ़ी ने पूछा- "वह कैसे?

शेखर ने कहा- "सरकार ने मेरे ऊपर पाँच हजार का इनाम रखा हुआ है। आप मुझे पुलिस के हवाले कर दो और, आपको पाँच हजार रुपये मिल जायेंगे उनसे मेरी बहन की शादी कर देना।" यह सुनकर बूढ़ी की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी और बोली- "बेटा, ऐसा न कहो, पाँच हजार क्या- पाँच लाख पर भी थूक सकती हूँ मैं, तुम जैसे देशभक्त पुत्रों को पाकर"। रात को स्वनाम धन्य चन्द्रशेखर आजाद वहीं सोये। कुछ रात रहते ही- एक पत्र लिखा और पाँच हजार रुपये पत्र के साथ खटिया पर छोड़कर चले गए। पत्र में लिखा था- "माँ, मैं जा रहा हूँ, इन पाँच हजार रुपयों से मेरी बहन के पीले हाथ कर देना।"

सन 1962ई० में भी कुछ दृश्य- स्मरणीय हैं। आत्मविश्वास से भरपूर सैनिकों की टुकड़ियां जैसे ही दिल्ली स्टेशन पर आती थीं तो लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती थी, **"भारत माता की जय," "हमारे सैनिक अमर रहे"** आदि जयकारों से गगन गूँज उठता था, लोग उनका सम्मान करते थे। टीका करने और मिठाइया खिलाते थे। स्कूली छात्राए सैनिक भाइयों की कलाइयों पर राखी बांधती थीं और उन्हें विदा करती थीं। चीन से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त हुए- सैनिकों के हाथों पर वह पावन बन्धन सहसा ही देखने- को मिलते थे। उन देश के प्रहरियों में उस बन्धन ने अदम्य साहस भर गया था। क्रतुओं। आओ, आज राखी के पर्व पर इस पावन सम्बन्ध को समझें। इसमें भरा, भ्रातृत्वभाव, राष्ट्र प्रेम और रक्षाभाव का सम्मान करें। हमारी संस्कृति महान है। हमारे पर्व भी महान है। देश पर आए संकटों में हमें, हमारे पर्व एकता के सूत्र में पिरोने का सन्देश देते हैं।

विदेश मंत्रालय का पत्र सार्वदेशिक सभा प्रधान के नाम

(फिजी के लोकतांत्रिक आन्दोलन को भारत सरकार द्वारा समर्थन की पुष्टि)

विदेश मंत्रालय के सचिव डा० मधुप मोहता ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम अपने पत्र द्वारा सूचित किया है कि स्वामी जी के विदेश मन्त्री को लिखे गये पत्र के बाद विदेशमन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल ने ससद के दोनों सदनों में यह वक्तव्य दिया कि भारत सरकार फिजी में भारतीय मूल के लोगों की समस्या के प्रति सजग है तथा पूरी तत्परता से उनके मानवाधिकारों के संरक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भरसक प्रयास कर रही है। श्री गुजराल ने कहा कि आज के इस युग में फिजी की इस गैर कानूनी सरकार की जातिवादी नीतियां स्वीकार नहीं हो सकतीं, जातीय भेदभाव तो दक्षिण अफ्रीका से भी पलायन कर रहा है और फिजी में भी यह बहुत दिन नहीं टिक सकता। यह गैर कानूनी सरकार लोगों में फूट डालकर शासन करने की पुरानी युक्ति को अपना कर सत्ता में बनी रहना चाहती है, अत यह जरूरी है कि विश्व समुदाय इन घृणास्पद प्रथाओं के विरुद्ध अपनी आवाज उठाये।

श्री गुजराल ने यह भी कहा कि भारत लोकतन्त्र और जातीय समरसता की बहाली के लिए फिजी के बहादुर लोगों के संघर्ष में लोक-तांत्रिक आन्दोलन प्रति विश्व जनमत जागृत करेगा उसे अपना समर्थन देता रहेगा।

हम जातीय भेदभाव के विरुद्ध उसका रूप चाहे कुछ भी हो और चाहे वह कहीं भी बरता जाये, जब भी मौका मिलेगा, अपनी आवाज बराबर उठाते रहेंगे।

आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती

गतांक से आगे...

— श्री पुरुषोत्तम सिंह योग, लखनऊ

इस थोड़े से समय में दयानन्द द्वारा उत्पन्न विप्लव का वर्णन अमेरिका के विख्यात योगी एन्डू डेविड जैकसन ने अपनी पुस्तक हार्मोनिका खंड-6 में "वियांडे द वेलो" शीर्ष के अंतर्गत इस प्रकार किया है

" मुझे एक सार्वभौमिक अग्नि पुंज दिखाई देता है। यह भारत में देव प्रेरित ईश्वर पुत्र दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज नामक भट्टी में सुलगाई अग्नि शिखा है। जिसका ध्येय आर्य धर्म को उसके शुद्ध सनातन स्वरूप में पुन स्थापित करना है। हिन्दू और मुसलमान मिल कर उस चहुँ ओर लगी हुई भयानक अग्नि को बुझाने के लिये दौड़ पड़े जिसकी उग्रता की कल्पना कदाचित दयानंद ने भी नहीं की थी। और ईसाई भी जिनकी पवित्र अग्नि और पवित्र दीपक स्वप्निल पूर्व में ही पहले प्रज्वलित किये गये थे एशिया के इस नये दिव्य प्रकाश को बुझाने के लिये हिन्दू मुसलमानों के साथ सम्मिलित हो गये। किन्तु वह देवी अग्नि प्रचंड होती गई।"

शोक। वैदिक धर्म का स्थान अंध विश्वास और कुरीतियों ने ले लिया था। लोगों में आत्मा और परमात्मा को प्रत्यक्ष देखने और मृत्योपरान्त जीवन को जानने का कौतूहल तो बढ़ गया था जिसके कारण नैतिकता, आत्म संयम के स्थान पर धार्मिक नेतृत्व उन धूर्त लोगों के हाथ में आ गया था जो भोले भाले लोगों को धर्म के नाम पर बहकाने और लूटने में लगे थे। धीरे धीरे समाज की गति ऐसी हो गई जैसे एक नेत्रहीन व्यक्ति का पथ प्रदर्शक हो। वेदों और शास्त्रों के अध्ययन का स्थान असंख्य देवी देवताओं की मूर्ति पूजा और तंत्र तथा वाम मार्ग के शैतानी कर्म काण्ड ने ले लिया था। जिसके अवशेष खजुराहो और कोणार्क के मंदिरों में देखे जा सकते हैं। स्वयं वेदों का नाम लेकर इस प्रकार की क्रियायें की जाने लगीं थीं जिनका वेदों से दूर का भी संबंध न था। और इन क्रियाओं का उपदेश करने वाले वह लोग थे जिन्होंने वेदों का पढ़ना तो दूर उनके कभी दर्शन भी नहीं किये थे।

जब दयानन्द ने बनारस की महती सभा में अपने विरोध में एकत्रित 300 ब्राह्मणों से धर्म के लक्षण पूछे तो कोई भी ब्राह्मण उनके इस प्रश्न का शास्त्रपर आधारित समुचित उत्तर न दे सका। सोचिये तो हिन्दू धर्म का रोम कहे जाने वाली काशी में हिन्दू धर्म क्या है यह बताने वाला कोई धर्माचार्य न था? हिन्दू धर्म ही नहीं अपितु एक मात्र मानव धर्म। और तब दयानन्द ने मनु का सन्दर्भ देते हुए उस सभा को बताया कि धर्म सचमुच क्या है। वह संकीर्ण मजहब नहीं है वह सम्पूर्ण मानवतावाद है। उसके बताये मनु द्वारा वर्णित धर्म के दस लक्षण।

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौच इन्द्रिय-निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

धैर्य, क्षमा, आत्म संयम, चोरी न करना, शुचिता (स्वच्छता) इन्द्रिय निग्रह बुद्धि का विकास, ज्ञानोपार्जन सत्य, अक्रोध यह दस धर्म के लक्षण हैं।

और शास्त्र निहित धर्म के दस लक्षण ही वैदिक धर्म की धर्मनिरपेक्षता के मूल है। इनमें संकीर्णता का कोई स्थान नहीं है। आपका मोक्ष अथवा स्वर्ग इस बात पर निर्भर नहीं है कि आप इस मनुष्य को पैगम्बर को मानते है कि नहीं इसको अवतार मानते हैं कि नहीं। किसी विशेष कर्मकान्ड को करते हैं कि नहीं। आपका मोक्ष तो इस बात पर निर्भर है कि आपने हर परिस्थिति में जो भी कार्य आपको सौंपा गया वह इन दस नियमों के अनुकूल सम्पन्न किया है अथवा नहीं। परमात्मा और आप के बीच कोई बिचौलिया नहीं है। जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल भोगोगे। ईश्वर की दया उसकी न्याय प्रियता का उल्लंघन नहीं करती। आइये देखें दयानन्द स्वयं अपने विषय मे क्या कहते हैं।

"मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना व मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो जो आर्यावर्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उसका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें है उनका त्याग नही करता न करना चाहता हूँ क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।"

दयानन्द इन लोगों के प्रति अति कठोर थे जिन्होंने किसी प्रकार भी वैदिक शिक्षाओं को तोड़ा मरोड़ा था।

किन्तु दयानन्द की दृष्टि ने इस देश में कुछ और भी देखा जिसने उनको धर्म के अतिरिक्त समाज सुधार की ओर आकृष्ट किया।

1881 की जनगणना में भारत में 21 लाख विधवायें थीं यह अधिकतर हिन्दू थीं क्योंकि दूसरे मतों में पुनर्विवाह मान्य था। इनमें से 23667 की आयु 5 वर्ष से कम थी, 83920 की आयु 6 और 10 वर्ष के बीच थी, 145449 की आयु 11 और 15 वर्ष के बीच थी और 16 और 20 वर्ष के बीच की आयु की विधवायें चार लाख थीं।

आप यह न सोच बैठें कि यह बालिकायें इस आयु में विधवा हो गई थीं। जी नहीं। यह तो उनकी आयु उस समय थी जब जनगणना हुई। इनमें से काफी बालिकायें इस आयु से कम मे विधवा हो गई होंगी।

हिन्दू समाज इन विधवाओं से छुट्टी ले लेता था उन्हें सती बना कर। किन्तु राजा राम मोहन राय के प्रयत्नों और ब्रिटिश सरकार की लोह भुजा ने जब उनको चिताग्नि से खींच लिया तो हिन्दू समाज ने अपनी इन दुधमुँही पुत्रियों से पीछा छुडाने के दूसरे मार्ग अपना लिये।

उन्हें तीर्थ स्थानों पर तीर्थ यात्रा के लिये ले जाया जाता था। वहाँ उनको बेसहारा छोड़कर परिवार एक रात्रि को चुपचाप चल देता था। यह बेसहारा बालिकायें और युवतियाँ सहज ही असमाजिक तत्वों का शिकार हो जाती थीं और उन तीर्थों में वेश्याओं का नरकमय जीवन व्यतीत करती थीं।

घर पर रहने वाली विधवाओं के केश काट दिये जाते थे। वह श्रृंगार नहीं कर सकती थीं। उनका मुँह देखना दुर्भाग्य को न्योता देना था। इसलिये वह घर के एककोने मे मुँह छिपाये पड़ी रहती थीं। भोजन ऐसा होना चाहिये जिससे उनके शरीर में प्राकृतिक यौवन अंगड़ाई न ले सके। इसलिये उन्हें घर में बचा खुचा मोटा निस्वाद भोजन ही प्राप्त होता था। इस व्यवहार से क्षुब्ध होकर बहुत सी आत्म हत्या कर लेतीं थी, बहुत सी घर से भाग जाती थीं। गर्भपात और उससे पहले होने वाली सामाजिक बुराइयाँ पनपती थीं।

बहुत से माता पिता मोहवश अपनी विधवा बालिकाओं को उनकी जान बचाने के लिये और सामान्य जीवन जीने के लिए मुसलमान, ईसाई धर्म प्रचारकों को दे देते थे।

दयानन्द ने इस कुरीति को जड मूलसे समाप्त करने का निश्चय किया। उन्होंने देश के एक कोने से दूसरे कोने तक घूम घूम कर लोगों को बताया कि 16 वर्ष से कम की बालिकाओं और 25 वर्ष से कम के लडकों का विवाह अवैदिक है। उसने सप्रमाण यह उपदेश दिये। क्योंकि बाल मृत्यु की सम्भावना अधिक होती है इसलिये युवा अवस्था में विवाह होने से वैधव्य स्वयमेव ही कम हो जायेगा। उनके एक परम भक्त के प्रयासों के फलस्वरूप बाल विवाह के विरुद्ध शारदा एक्ट पास हुआ।

हिन्दू समाज का दूसरा कोढ़ अस्पृश्यता थी। समाज का लगभग 1/6 भाग अस्पृश्य समझा जाता था। उच्च वर्ण के लोग अछूतो के साथ अमानवीय व्यवहार करते थे। कहीं कहीं तो उनकी छाया अथवा दर्शन मात्र से वह अपवित्र हो जाना मानते थे।

क्रमशः

वेद मन्दिर का शिलान्यास

आर्यसमाज विश्वकर्मा नगर लालसरैया (प० चम्पारण) में वेद मन्दिर का शिलान्यास जिला सभा के अधिकारियों की उपस्थिति में बेतिया के विधायक श्री मदन प्रसाद जायसवाल ने किया। उपस्थित जन समूह के समक्ष आर्यसमाज के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

फीजी में हिन्दी की यात्रा: रेडियो वार्ता

अब से तीन वर्ष पूर्व 14मई, 1987 को फीजी में प्रजातांत्रिक तरीके से निर्वाचित नेशनल फेडरेशन पार्टी और लेबर पार्टी की संयुक्त सरकार का तख्ता ब्रिगेडियर सितीवेनी राम्बूका ने पलट दिया था। दूसरी बार पुनः उस देश में असैनिक सरकार की स्थापना की घोषणा की गई। तब बताया गया था कि फीजी के लिये एक नया संविधान तैयार करके लागू किया जायेगा। अभी वह संविधान प्रकाशित नहीं हुआ है, और उससे पहले ही वहां के भारतीय उच्चायोग को तानाशाह एवं नस्लवादी फीजी की सरकार ने बन्द करने का आदेश पिछले मास जारी कर दिया। समस्त भारतीय कर्मचारी स्वदेश लौट आये हैं। इस विषय पर अगस्त मास में स्वाधीनता दिवस संबंधी कार्यक्रमों के अन्तर्गत आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रम में फीजी में हिन्दी की यात्रा शीर्षक से एक वार्ता 6 अगस्त को रात्रि में प्रसारित होगी। वार्ताकार है फीजी में गत दो वर्षों तक हिन्दी भाषा एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार में संलग्न रहे श्री ब्रह्मदत्त स्नातक जनकपुरी, नई दिल्ली। श्री स्नातक इससे पूर्व भारतीय सूचना सेवा में पत्रकार रहे हैं और स्वाधीनता सेनानी भी हैं।

"श्रावणी पर्व का विशेष महत्व"

वैसे तो भारतपर्वों का देश है। परन्तु उनमें चार मुख्य पर्व हैं। श्रावणी, दशहरा, दीपावली तथा होली। श्रावणीज्ञान, दशहरा शक्ति, दीपावली वैभव, होली एकता परस्पर समानता, प्यार तथा प्रसन्नता का प्रतीक है। पौराणिक मतानुसार श्रावणी ब्राह्मणों, दशहरा-क्षत्रियों, दीपावली वैश्यों तथा होली शूद्रों का पर्व है। परन्तु यह मान्यता संकुचित हृदय की असत्य है। इन चारों पर्वों का सभी मुनष्यों के लिये समान महत्व है। सभी को ज्ञान, शक्ति, वैभव एकता और प्रसन्नता की समान आवश्यकता है। इनके बिना संसार में कोई भी कार्य सुचारूरूप से चल नहीं सकता। परन्तु इनमें ज्ञान सर्वोपरि है क्योंकि ज्ञान के द्वारा ही शक्ति, वैभव तथा एकता का सही और उचित उपयोग हो सकता है। बिना ज्ञान के मनुष्यपशु के समान है। यह ज्ञान परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आदि में चारों वेदों के द्वारा मुनष्यों के कल्याण के हेतु प्रदान किया। इसी कारण श्रावणी पर्व का विशेष महत्व है।

-जगदीश शरण शीतल
चाँदपुर (बिजनौर)

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, नैनीताल

संरक्षक- श्री सत्येन्द्र चन्द्र गुडिया, काशीपुर
" डा0 अमृत लाल जी, हल्द्वानी
" श्री बाँकेलाल जी कंसल, नैनीताल
प्रधान- श्री सतीशचन्द्र जी रस्तोगी, रुद्रपुर
मन्त्री - श्री जयसिंह सरोज काशीपुर
कोषाध्यक्ष- श्री नरेशचन्द्र आर्य काशीपुर

पृष्ठ 3 का शेष.....

न मे स्तेनो जनपदे, न कदर्यो न मद्यपः
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्, न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

कवि कुलगुरु कालिदास ने कुमार सम्भव के प्रथम श्लोक में हिमालय पर्वत को देवभूमि बताकर अपनी राष्ट्रीयता का परिचय दिया है।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य,
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।
कुमार०।

पुराण, रामायण और महाभारत में राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत अनेक सन्दर्भ हैं। महाभारत में स्पष्ट रूप से राष्ट्र में अशान्ति के लिए राजा को उत्तरदायी बताया गया है-

यद् राष्ट्रेऽकुशलं किंचिद्,
राज्ञो रक्षयतः प्रजाः।
चतुर्थं तस्य पापस्य,
राजा भारत विन्दति।। शान्तिपर्व

राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत साहित्य की रचना वेद से लेकर आज तक अक्षुण्ण बनी हुई है। वर्तमान लेखकों ने राष्ट्रीय नेताओं-शिवाजी, महाराणा प्रताप, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी आदि के जीवन चरित लिखे हैं। कुछ लेखकों ने स्वाधीनता संग्राम का संक्षिप्त और विस्तृत इतिहास लिखा है। मैंने अपने गीतिकाव्य "राष्ट्रगीतांजलि", में 'स्वाधीनता संग्राम' का विस्तृत इतिहास है। राष्ट्रीय भावना वाले ग्रन्थ नाटक, काव्य और गद्यकाव्य के रूप में लिखे गये हैं। कुछ उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं-

काव्यग्रन्थ- नागगत कृत- भारतीय देशभक्तचरित, भगवदाचार्य की 3 कृतियाँ गाँधी चरित और स्वतन्त्रतासंग्राम पर भारतपारिजात, पं0 क्षमाराव कृत सत्याग्रहगीता।

नाटकग्रन्थ- मूलशंकर याज्ञिक कृत- क्षत्रपतिसाम्राज्य हरिदास सिद्धान्तवागीश कृत-शिवाजी चरित मथुरा प्रसाद दीक्षित कृत- मातृमामय भारत और भारतभास्कर।

गद्यकाव्य- अम्बिकादत्तव्यासकृत-शिवराज विजय वामनकृष्ण चिन्तले कृत लोकमान्य तिलकचरित दिलीप शर्मा कृत, प्रतापचम्पूः चारुदेव शास्त्री और स्वामी भागवताचार्य कृत गाँधी चरित। □

सभा के विद्वान महोपदेशक पुरस्कृत

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के विद्वान महोपदेशक श्री पं0 शिवकुमार मिश्र (हरदोई) को उनके द्वारा लिखित "दयानन्द सप्तशती" पर उ0प्र0 संस्कृत अकादमी ने रू0- 2000/- की सम्मान राशि से पुरस्कृत किया है। सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने श्री मिश्र को उनके इस सम्मान पर सभा की ओर से हार्दिक बधाई दी है।

वैदिक धर्म प्रचार

जिला सभा प0 चम्पारण के तत्वावधान में 10 ग्रामों मे वैदिक धर्म का धूमधाम से प्रचार हुआ। ग्रामीण जनता में जागृति की लहर दौड़ गई।

पृष्ठ 4 का शेष.....

जीवन निर्माण के लिये दैनिक गुरू सान्निध्य आवश्यक है।

वसोष्पते निरमय- संयमी वाचस्पति ही वसोष्पति अर्थात् सकल वैभवों का, अधिपति होता है। वह अपने वाग्बल से प्रिय जिज्ञासु को लौकिक पारलौकिक ऐश्वर्यों में रमण करा सकता है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में जिस कामधेनु का आलंकारिक वर्णन है वह यही सर्वसिद्धि प्रदायिनी सूनृता वाणी है फिर उसकी स्वामी वसोष्पति क्यों न होगा। सामान्य लोकव्यवहार में भी यही दृष्टि गोचर होता है कि हितोपदेशक मधुरभाषी के चरणों में श्रद्धालु जन सर्वस्व समर्पण करने को तत्पर रहते हैं किन्तु वाग्दुष्ट की ओर कोई दृष्टि पात भी नहीं करना चाहता।

वाचस्पति महर्षि वसिष्ठ की कामधेनु प्रसिद्ध है जिसके प्रभाव से उन्होंने मृगया से लौटे हुए परिश्रान्त विश्वामित्र का सपरिवार ससैनिक स्वागत किया था। वह ब्राह्मण वसोष्पति था। उसने कामदुधावाणी पर स्वामित्व प्राप्त किया था।
"निरमय" पद से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि हित मित एवं ऋतम्भरा सरस्वती के श्रवण से ही श्रोता का मानस आनन्द मग्न हो जाता है।

मयि श्रुतं मय्येवास्तु- ज्ञान को आत्मसात् करने की वैज्ञानिक पद्धति यही है। ऐसी ध्रुवा स्मृति आज छात्रों में नहीं दिखाई देती क्योंकि साधन विपरीत हैं। प्रथम तो जितेन्द्रिय वाचस्पति ही नहीं मिलते। यदि किसी प्रकार मिले भी तो प्रशान्त चित्त तपस्वी शिष्य नहीं उपलब्ध होते। वेद में स्पष्ट आदेशात्मक संकेत है। "आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते"। आचारवान गुरू ही उन ब्रह्मवर्चस्वी स्थितप्रज्ञ शिष्यों का निर्माण कर सकते हैं जिनकी मेधाशक्ति द्वारा कभी श्रुतज्ञान विस्मृत नहीं होती। वह उनकी आत्मा की स्थिर निधि बन जाती है।

वर्तमान प्रचलित अनर्थकारी शिक्षण पद्धति के विरोध में इस वेद मन्त्र का महान् सन्देश विश्व के शिक्षा शास्त्रियों के समक्ष कड़ी चुनौती है। यह केवल विचारणीय ही नहीं अपितु निर्विवाद रूप से अनुकरणीय है। तभी त्रिदोषरहित वाग्वधा पर मनन करने वाले तपोनिष्ठ आचार्य गण-नम्र, सुशील ब्रह्मचारियों को पवित्र वैदिक ज्ञान से अलंकृत कर सकेंगे। हमारे विद्यापीठ जब ऐसे गुरुशिष्यों के आवास केन्द्र बनेंगे तभी महाराज मनु की दिव्य वाणी धरातल पर गूँज उठेगी-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। □

नामकरण संस्कार

बाँगरमऊ (उन्नाव) के श्री राधेलालगुप्त के सुपुत्र का दिनांक 24 जून को नामकरण संस्कार पं0 युगुलकिशोर त्रिपाठी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ बच्चे का नाम वेदमित्र रखा गया।

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- "मेरी अवस्था 18 वर्ष है। सालभर से शौच साफ न होने से मैं परेशान रहता हूँ। चौबीस-छत्तीस-घण्टे बाद एक बार शौच होता है।"
-रामविलास आर्य, ग्राम-पहाड़पुर, डाकघर-हैतमपुर {वाराणसी}

समाधान- प्रत्येक भोजन बाद सौंफ चबाया करें। रात्रि- भोजन में केवल पपीता-दूध का सेवन करें। रात्रि-भोजन के एक घण्टा बाद लगभग दस ग्राम बड़ी हरड़ का चूर्ण जल से लिया करें। भोजन में सलाद भी लिया करें। प्रातः खालीपेट क्रमवार योगासन किया करें- भुजंगासन, उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन और सर्वांगासन।

2

समस्या-"प्रत्येक 5-6दिन पर स्वप्नदोष होता है। सिर में चक्कर आ जाता है। कमर में दर्द रहता है। शौच साफ नहीं होता है।"
-जनपद बलिया का एक युवक

समाधान-कब्ज हेतु उपर्युक्त समाधान पढ़ें। निओ {चरक} दो गोली प्रातः-मध्याह्न-रात्रि जल से दो मास तक लेवें। प्रातः खाली पेट योगासन क्रमवार किया करें --

भुजंगासन, पश्चिमोत्तानासन, हलासन और एकपादांगुष्ठासन।

3

समस्या-"मेरी आयु 23 वर्ष है। सीने में दायीं ओर दर्द होता है। बहुत गैस बनती है। प्रायः गर्मी के दिनों में नाक से खून गिरता है।"
-रामनारायण गुप्त, 5 एफ-63ओबरा, मीरजापुर-231219

समाधान-दो गोली गारलिल {चरक} प्रत्येक भोजन बाद लेकर, दो ढक्कन अर्जुनारिष्ट तथा दो ढक्कन ड्राइकोनिल {चरक} समानजल में मिलाकर पिया करें। दो मास तक जारी रखें। गर्मी के दिनों में शंखपुष्पी घास पंचांग पीसकर पानी-दूध-चीनी के साथ प्रातःखाली पेट दो गिलास पिया करें।

:: रोगविवरण और तीन बन्द डाक-लिफाफे निम्न पता पर भेजें-

गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज
पिथौरागढ

धर्म रक्षा अभियान को सहयोग देने की अपील

"राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0" महामन्त्री एवं "धर्मरक्षा अभियान-उ0प्र0" के संयोजक श्री जयन्त कुमार-आर्य {मेरठ} ने एक पत्रकार सम्मेलन में बताया कि "आर्य जगत में युवा-शक्ति का नितान्त अभाव होना तथा आर्यवीर दल के प्रभावहीन होने से वैदिक आर्य विचारधारा एवं आन्दोलन से बुद्धिजीवी आर्ययुवक अलग-थलग होते जा रहे थे, इसीलिए महर्षि दयानन्द जी के अनुरूप नये परिवेश में युवकों एवं युवतियों का नया तेजस्वी संगठन "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" के रूप में मेरठ से आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री इन्द्रराज जी एवं अन्य आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेताओं के आशीर्वाद से पिछले वर्ष प्रारम्भ किया गया।

उन्होंने आगे बताया कि आज का बुद्धिजीवी युवक भी दिशा विहीन एवं आस्था विहीन हो गया है। हमारे भारत राष्ट्र, धर्म, संस्कृति के प्रति वास्तविक कर्तव्य निर्वाह करने की दृष्टि से "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" आगे आया है।

श्री जयन्त ने आगे लिए गये कार्यक्रमों की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि दहेज प्रथा को कुरीति को समाप्त करने हेतु हमने बीड़ा उठाया है। इस दृष्टि से युवक स्वयं अपने को समर्पित कर रहे हैं। आर्य {हिन्दू} समाज की व्यापक परिधि के अन्तर्गत संकीर्ण एवं क्षुद्र जातिगत मान्यताओं से ऊपर उठकर हम दहेज प्रथा का विरोध कर रहे हैं। अन्य सम्प्रदाय अवलम्बी युवक-युवतियों को भी शुद्ध कर अपने इस दहेज विरोधी अभियान से जोड़ने में सफलता प्राप्त की है, जिसका उदाहरण मैं स्वयं हूँ। पहले मैं असम में पादरी {ईसाई} के रूप में कार्यरत था।

श्री जयन्त ने आगे बताया कि मेरठ, कानपुर, इटावा, उन्नाव तथा लखनऊ के 150 युवक आर्य ऐसे तैयार हैं, जो पढ़ाई-लिखाई के क्षेत्र में उपाधिधारी होने के बावजूद भी दहेज विरोधी एवम् जाति विरोधी हमारे अभियान के अन्तर्गत विवाह करने को तैयार हैं।

पश्चिमी जिलों मुरादाबाद, मेरठ, गाजियाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, आगरा आदि में जाट और जाटव {हरिजन} के परस्पर संघर्ष को समाप्त करने हेतु अनेक स्थानों पर हमारे संगठन ने सहभोज आयोजित किया है, जिसमें तीन प्रमुख- मेरठ, मोदीनगर आदि उल्लेखनीय हैं।

विकलांगों, बेरोजगारों एवं निराश्रित युवकों को संगठन द्वारा स्वावलम्बी बनाया जा रहा है और उन्हें आर्थिक सहायता भी दी गई जिसमें कई युवकों में से दो गोरखपुर निवासी एवं एक हरिजन उल्लेखनीय हैं।

एक प्रश्नोत्तर के बीच श्री जयन्त ने बताया कि नित्य नये संगठन अलग-अलग सिद्धान्तों को लेकर बन रहे हैं जैसे- स्वामी अग्निवेश का बन्धुआ मजदूर संगठन एवं युग निर्माण योजना आदि किन्तु भीतर सभी राष्ट्र को खोखला करने वाली संकीर्ण जातिवाद के अभिशाप से जकड़े हुए हैं, और जब अपने परिवार का प्रश्न आता है तो सारे सिद्धान्त धरे रह जाते हैं। हमारे संगठन का एक नारा है- "कहो कम- करो अधिक"।

सुलतानपुर में चल रहे ईसाई गतिविधियों के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि मैं अपने पादरी जीवन में सुलतानपुर का भ्रमण किया था। दोस्तपुर, फूलपुर {कूरेभार}, मुड़िला बाजार {अखण्डनगर} मोतिगरपुर, दियरा में इनकी गतिविधियाँ चलती हैं। मुख्यतः हरिजनों को आर्थिक सहायता, भूमि आदि का लालच देकर घिनौना धर्मपरिवर्तन किया जाता है। दोस्तपुर केन्द्र इलाहाबाद डायोसिस {परिक्षेत्र} में आता है। पिछले समय दोस्तपुर में जितने हरिजन ईसाई बने थे, उसमें से 20/ प्रतिशत आपसी झगड़े के कारण पुनः हिन्दू धर्म में लौट गये थे।

श्री जयन्त ने अन्त में बताया कि उपरोक्त कार्यक्रमों की दृष्टि से मैं पुनः सुलतानपुर 9 अगस्त को आ रहा हूँ और राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन का एक सबल केन्द्र सुलतानपुर में बनाऊँगा।

— संवाद सूत्र

जिला सभा मेरठ का निर्वाचन

- दि0- 15-7-90 को आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ का वार्षिक निर्वाचन निम्नलिखित प्रकार से आर्यसमाज खानपुर मेरठ में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ:-

श्री माधव सिंह जी-	प्रधान
श्रीमती शकुन्तला गोयलजी-	उपप्रधान
श्री धर्मपाल जी बड़ावद-	" "
श्री कान्तिप्रकाश जी मवाना-	" "
श्री बलराज सिंह जी दौराला-	" "
श्री इन्द्रराज जी -	मन्त्री
श्री ब्रह्मसिंह जी छपरौली-	उपमन्त्री
श्री सौदान सिंह जी -	" "
श्री अशोक कुमार-फजलपुर	" "
श्रीमती सरोज आर्या-साकेत-	उपमन्त्री
श्री ओ3म्प्रकाश जी जौहरी-	कोषाध्यक्ष
श्री नरेन्द्र प्रकाशजी -	सहकोषाध्यक्ष
श्री जगदीश नारायण सिंह जी-	निरीक्षक

इन्द्रराज
मन्त्री

निर्वाचन

आर्यसमाज विश्वकर्मा नगर लाल सरैया {प0चम्पारण}

प्रधान- श्री रामऔतार शर्मा
मन्त्री- श्री हरिनारायण शर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री गणेश शर्मा

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखीमपुर

प्रधान- श्री सुशील कुमार अग्रवाल
मन्त्री- श्री आनन्द स्वरूप जी,
कोषाध्यक्ष- श्री टीकम सिंह जी

वेद प्रचार सप्ताह

श्रावण शुक्ल १५, सोमवार से भाद्रपद कृष्ण ८, मंगलवार ६ अगस्त से १४ अगस्त १९९० तक

श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान स्मृति एवं स्वाधीनता दिवस समारोह पूर्वक मनाकर वैदिक धर्म का सन्देश जन-जन तक पहुँचाइये।

इस वर्ष "वेद-प्रचार सप्ताह" दिनांक- 6 अगस्त से 14 अगस्त 1990 तक सोमवार से मंगलवार तक मनाया जावेगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्नप्रकार है:-

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने के भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला आर्यसमाज, आर्य कुमार सभा, आर्य वीरदल, तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये। जहां आर्य कुमार सभायें तथा आर्य वीरदल न हों, वहीं वह स्थापित किये जाने चाहिए। वेदप्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जायें, जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा सके।

श्रावणी का महत्व-

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान वैदिकधर्म के महान प्रचारक, मानवता को मतान्धता, एवं अन्ध-विश्वासों के अन्ध-कूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रदाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

वेद प्रचार निधि-

इतने बड़े उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिए। प्रान्त में लगभग दो हजार आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक-एक रुपया वेदप्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझे तो वेदप्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेदप्रचार के लिए जो धन संग्रहीत किया जाय, उसे सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

श्री कृष्ण जन्मोत्सव-

14 अगस्त 1990 भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अंगिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभजन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेष रूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिए उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रसार किया जाना चाहिये।

प्रातः 7 बजे से आर्यमन्दिरों में "आर्य पर्व पद्धति" के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्यसमाज मन्दिरों में अथवा सार्वजनिक स्थानों में योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाय।

कार्यक्रम 6 अगस्त से 14 अगस्त 1990 तक

प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय बेला में दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय, और इस सत्संग को यथासम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिये।

मध्यान्ह - वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का विशेष आयोजन हो वेदों के आधार पर विश्व बन्धुत्व, मानववाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं वाक संघर्ष- इस सप्ताह में आर्य वीरदल आर्यकुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला

श्रावणी कार्यक्रम-

पारिवारिक यज्ञ- श्रावणी (रक्षाबन्धन) के दिन प्रत्येक आर्यपरिवार में प्रातः पारिवारिक यज्ञ करें। प्रातः 7।। बजे से समस्त आर्य नर-नारी युवक तथा बालक-बालिकायें आर्यमन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनायें- वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एवं वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जावे।

स्वतन्त्रता दिवस-

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्यजनों के प्रयत्न से भारत स्वतन्त्र हुआ। 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा की प्रतिज्ञा लीजिये- आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के संग्रामों में सर्वाधिक बलिदान किया है। देश में प्रजातन्त्र के समुचित विकास, भ्रष्टाचार, निवारण, पंचमांगी तत्व निरोधादि कार्यों में आर्यसमाज को पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

टिप्पणी-

(1) इस सप्ताह के आरम्भ में आर्यमन्दिरों पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिए।

(2) इस सप्ताह को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिए हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महानुभावों की तैयार करे, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से विद्यालय आदि से सम्बन्ध रहा हो, और इस समय आर्यसमाज के सभासद नहीं हैं ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

इन्द्रराज — प्रधान | मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

धर्मान्तरितों की सुविधाएं जारी रखना अवैधानिक

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा की एक विशेष बैठक 4 जुलाई 1990 को श्री हरि गोपाल-सिंह चौहान एडवोकेट, सभा प्रधान, की अध्यक्षता मे हुई। बैठक में केन्द्रीय सरकार द्वारा संसद में प्रस्तावित विधेयक, जिसमें धर्मान्तरण के बाद भी धर्मान्तरित व्यक्तियों को मिलने वाली सुविधाएं पूर्ववत जारी रहने का प्राविधान है, के विषय में विचार किया गया।

इस सम्बन्ध में श्री हरि गोपाल-सिंह चौहान, कुं0 बादाम सिंह, श्री श्री चन्द्र गुप्त, श्री रोशन लाल गुप्त आदि नें अपने विचार प्रकट किये। अन्त में श्री रोशनलाल गुप्त, सभामन्त्री, द्वारा प्रस्तुत एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया जिसमें कहा गया कि केन्द्रीय सरकार द्वारा संसद में प्रस्तावित विधेयक, जिसमें हिन्दू अनुसूचित जातियों को मिलने वाली सुविधाएं धर्मान्तरण के बाद भी धर्मान्तरित व्यक्तियों को पूर्ववत् जारी रहने का प्राविधान है, भारत के सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीमकोर्ट) के उन फैसलों के विरुद्ध है जिनमें यह निर्णय दिया गया था कि धर्मान्तरण के बाद पुरानी जाति की सुविधाएं नहीं मिल सकतीं। अतः यह सभा उक्त प्रस्तावित विधेयक का घोर विरोध करती है और केन्द्रीय सरकार से साग्रह अनुरोध करती है कि वह उक्त विधेयक को संसद में प्रस्तुत न करें अन्यथा आर्यसमाज को प्रबल आन्दोलन करने के लिए विवश होना पड़ेगा।

रोशन लाल गुप्त

-मन्त्री, आर्यउपप्रतिनिधि सभा
जनपद, आगरा

आर्य समाज अमरोहा में अन्न वितरण समारोह

— हरिश्चन्द्र आर्य

स्थानीय आर्य समाज मन्दिर, अमरोहा में "अन्न वितरण समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये डा0 श्री सत्यप्रिय शास्त्री, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जगदीश शरण हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमरोहा ने कहा कि आर्यसमाज के सिद्धान्त समाजवादी हैं। लोगों का समाज सेवा त्याग और धर्म वास्तव में समाजवाद के ही पर्याय हैं। लोगों को समाज सेवा और धर्म वास्तव में समाजवाद के ही पर्याय हैं। आपने कहा कि वैदिक सिद्धान्त जिन नैतिक मानदण्डों की रक्षा में तत्पर हैं, उनमें एक सुदृढ़ एवं स्वस्थ समाज की स्थापना होगी।

इसी कारण हमारी संस्कृति सदैव त्याग पूर्वक उपभोग करने का संदेश देती रही है, परिणामतः निर्बल और अभावग्रस्त लोग भी समाज से जुड़े रहे हैं परन्तु जैसे-2 वैदिक विचारधारा का ह्रास हुआ हम स्वार्थी होते गये और कलह, वैमनस्य तथा शत्रुता पनपती गई। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने इसी वैदिक विचारधारा को पुनः प्रवाहित करने हेतु प्राण पन से प्रयास किया।

आर्यसमाज अमरोहा प्रति वर्ष जहाँ लिहाफ वितरण के द्वारा समाज की सेवा में जुड़ा है, वहाँ अन्न वितरण की इस अनूठी योजना के द्वारा सच्ची समाज सेवा एवं सहानुभूति द्वारा समाजवाद का सच्चा रूप प्रस्तुत कर रहा है। कार्यक्रम के प्रेरक एवं एकमात्र दान-दाता डा0 एस0एन0गुप्त, चौराहा गली, मुरादाबाद की प्रशंसा करते हुये मुख्य अतिथि ने कहा कि ऐसे ही लोग समाज के देवता कहलाने के अधिकारी हैं। कार्यक्रम का प्रारम्भ सामूहिक यज्ञ से हुआ। श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य ने मुख्य अतिथि का माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस अवसर पर श्री हरिश्चन्द्र आर्य ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के संयोजक श्री सत्य प्रकाश आर्य ने इस समूची योजना पर प्रकाश डालते हुए [illegible] कि इस कार्यक्रम के निमित्त डा0 एस0एन0गुप्त, मुरादाबाद ने प्रति माह 2000/- रुपये आर्य समाज, अमरोहा को देने का आश्वासन दिया है।

आदर्श विवाह,

● शाहजहाँपुर के सुदागन्ज नगर के श्री घनश्याम शर्मा को ईसाइयों ने विवाह का प्रलोभन देकर ईसाई बनाने को तैयार किया। समाचार किसी तरह आर्यसमाज के मन्त्री को मिला। उन्होंने श्री घनश्याम को समझा बुझाकर ईसाई बनने से बचाया और उसका विवाह एक विधवा जिसका नाम सुषमा गुप्ता है आयु 23 वर्ष के साथ करा दिया, उपस्थित लोगों ने वरवधू को शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी

प्रधान- श्री जगत नारायण आर्य
मंत्री- श्री श्रीराम शास्त्री
कोषाध्यक्ष- श्री बुद्धदेव आर्य

माता मीरायति जी का अभिनन्दन

पूज्या माता मीरायति जी के नाम से आर्यजगत भलीभान्ति परिचित है। वह हमारे आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में वर्षों से रह रही हैं। माता जी लगभग 40 वर्ष से आर्यसमाज की सेवा लेखनी और वाणी से कर रही हैं। आपकी 60 पुस्तकें भिन्न-भिन्न विषयों पर छपकर नि:शुल्क वितरित हो चुकी हैं। आपकी आर्य समाज की निस्वार्थ सेवा के प्रति श्रद्धा रखते हुए। हरिद्वार की महिला समाज ने 25 अप्रैल 1990 को आपका अभिनन्दन करते हुए एक शाल अभिनन्दन पत्र सत्यार्थ प्रकाश और नकदराशि भेंट की थी।

अब 24 जून को जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उनका अभिनन्दन किया। उन्हें एक शाल प्रशस्ति पत्र और पाँच हजार रुपये की राशि भेंट की है। इसके लिये हम आश्रमवासी श्री वीरेन्द्र जी (प्रधान) के बहुत आभारी हैं। पूज्या माताजी को जो भी राशि मिलती है वह साहित्य प्रकाशन में लगा देती हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि वह ऐसी माँ को दीर्घायु करें। ताकि वह इसी प्रकार से आर्यजगत् की सेवा करती रहें।

-यशवन्त मुनि
मन्त्री
आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर,

औषधालय का उद्घाटन

आर्यसमाज मन्दिर आदर्श नगर लखनऊ में लायन्स क्लब लखनऊ के सौजन्य से संचालित स्वामी श्रद्धानन्द धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन लायन श्री गोपाल नारायण जी महरोत्रा डिप्टी गवर्नर के कर-कमलों से एक जुलाई 1990 को सम्पन्न हुआ। इस समारोह में लायन्स क्लब के सदस्यों एवं क्षेत्रीय जनता काफी संख्या में उपस्थित थी। औषधालय का उद्घाटन करते हुये श्री महरोत्रा जी ने जनता जर्नादन की सेवा को परम धर्म बताकर नेत्रहीनों के लिये नेत्रदान करने का आवाहन किया और उपस्थित कई महानुभावों ने अपने नेत्रदान की सहर्ष घोषणा की।

ये औषधालय प्रतिदिन 8 से 10 बजे तक जनता के सेवा के लिये खुला रहेगा।

● दिनांक 20 जून को विवेकानन्द सरस्वती इन्टरकालेज, उन्नाव में श्री क्षेमचन्द्र एम0ए0, प्रधानाचार्य (वि0स0इ0का0) का विवाह संस्कार आयु0 आशा एम0ए0, (वाराणसी) के साथ वर कन्या पक्ष के सम्बन्धियों की उपस्थिति में बिना दहेज के श्री राधेश्याम शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। उपस्थित जन समुदाय ने नव दम्पत्ति को शुभाशीर्वाद दिया तथा भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आर्य समाज ग्राम इटावा (मु0नगर)

प्रधान- श्री नत्थू सिंह आर्य
मन्त्री- श्री मदनपाल राठी आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री सुशील राठी आर्य

प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की वैदिक धर्म की पुस्तकें

एकादशोपनिषद (भूमिका डा0 राधाकृष्णन)	95/-
उपनिषद प्रकाश	25/-
गीता भाष्य (भूमिका श्रीलाल बहादुर शास्त्री)	65/-
संस्कार चन्द्रिका	85/-
वैदिक संस्कृति के मूल तत्व	40/-
चतुर्वेद गंगा लहरी	95/-

विशेष विवरण तथा प्राप्ति के लिये पुस्तक विक्रेता पत्र व्यवहार करें:-

विजय कृष्ण लखनपाल
डब्लू-77-ए ग्रेटर कैलाश-।
नई दिल्ली।

● आर्यसमाज उन्नाव में श्री रमेश पुत्र श्री मेंहगू तथा आयु0 सावित्री (पुत्री स्व0 रंजीत) के साथ वर तथा कन्या पक्ष की उपस्थिति में बिना दहेज के श्री राधेश्याम शर्मा के पौरोहित्य में दिनांक 29 मई को सम्पन्न हुआ। उपस्थित लोगों ने नव दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया।

प्रवेश सूचना

प्रथमा (कक्षा- 6,7,8) से लेकर आचार्य (एम0ए0) पर्यन्त संस्कृत साहित्य के साथ हिन्दी, अंग्रेजी, गणित विज्ञान आदि विषयों की सुयोग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षा की व्यवस्था है। महाविद्यालय में छात्रावास की समुचित व्यवस्था है। प्रवेश प्रारम्भ हैं। शीघ्र सम्पर्क करें।

प्राचार्य
आर्य गुरुकुल महाविद्यालय
सिरसागंज-फिरोजाबाद।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला सभाओं के सम्मानित अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारीगणों को सूचित किया जाता है, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा निष्कासित व्यक्ति प्रदेश के आर्यजनों से दो बार चुनाव के नाम पर धन इकट्ठा कर चुके हैं तथा कुछ आर्य जनों को लखनऊ बुलाकर परेशान कर चुके हैं। अतः आप इन सभी के धोखे में न आयें और न ही किसी प्रकार की कोई सहायता दें सभा को सूचना मिली है कि यह सभी लोग पुनः धन इकट्ठा करने हेतु फिर निकल रहे हैं। अतः समस्त आर्यजनों से अनुरोध है कि इनकी बातों में न आयें और न ही इन्हें धन व किसी भी प्रकार की कोई सहायता दें। आर्यमित्र की सूचना ही सही और प्रमाणित है।

- कार्यालय सचिव-

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
श्रावण शुक्ल-१४ संवत २०४७ वि०
दिनांक ५ अगस्त १९९०

दूरभाष
२४४६६३

सेवा मे..

'2946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
स्कुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
टीरद्वार

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें:-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क मास जुलाई १९-९० को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0अधिक पोस्टेज लगते है। इसलिये सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिये विवश होगें। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। । जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है।

679, 748, 749, 976, 1269, 1348, 2452, 2944, 2966, 5632, 6462, 6476, 8887, 8974, 8975, 10183, 12267, 12279, 12938, 13140, 13170, 13173, 13511, 13926, 14303, 14310, 14311, 14313, 14780, 14783, 14785, 15429, 15430, 15431, 15433, 15434, 15435, 15437, 15439 ।
10185, 14774, 12940, 15428, 13507, 15432, 14306, 15436,

- व्यवस्थापक





स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि स २२४१/५७) भाद्रपद कृष्ण ६ रविवार संवत २०४७ वि दिनांक १२ अगस्त १९९० (घोषणापत्र सं ७/२२ २२५)



वेद मानवमात्र के लिए-

या परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रों को वेद न पढ़ने सुनने का न होता तो उनके शरीर में वाक और श्रोत्र इन्द्रियाँ क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी जल अग्नि वायु चन्द्र सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किए हैं

— स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम ए

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्र देव पाठक

एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क	
आजीवन सदस्य	रु २५१/
वार्षिक	रु ३०/
एक प्रति	१रु मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष

अंक - ३१

मातृभूमि की रक्षा के लिए संकल्प

स्वतंत्रता के पावन पर्व पर समस्त देशवासियों को बधाई

दिल्ली में गुरुद्वारा बंगला साहिब के बाहर आयोजित एक महती सभा में आज ही के दिन भाषण करते हुए इस अवसर ने कहा था

"मैं अमन पसन्द हूँ। देश में झगड़े होते हैं तो मैं समझा बुझाकर उनका समाधान करने का यत्न करता हूँ। परन्तु जब देश पर हमला हो तो मैं पीछे नहीं हट सकता। ऐसी स्थिति में आगे बढ़ूँगा दुश्मन से लडूँगा और उसे हराऊँगा यह मेरा फैसला है

लालबहादुर शास्त्री, प्रधानमंत्री

वैदिक धर्म के पुनरोद्धारक आर्य संस्कृति के सन्देशवाहक स्वामी दयानन्द ने कहा था— 'कोई कितना ही कर परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है ... प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'

राजनीति के निष्णात लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने माण्डले की जेल से बाहर आने पर कहा था **'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है मैं इसे लेकर रहूँगा।'**

नेता और अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति उस वीर सुभाष ने आजाद हिन्द के सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा था **तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।**

स्वतन्त्रता के प्रथम शंखनाद पर देश के दीवाने उस अमर शायर ने गाया था——

यूनान मिस्र रोमा सब मिट गये जहाँ से
अब तक मगर है बाकी नामों निशाँ हमारा
कोई तो बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।

- इकबाल

फिर आज आजादी के चार दशक बाद भी हमारी सीमाएं अरक्षित क्यों हैं? विदेशी ताकतें देश में अव्यवस्था फैलाने में, हमारे निर्दोष बच्चों का खून बहाती हैं क्यों? क्या सिर्फ इसलिए कि हम भारतीय हैं अपनी मातृभूमि से प्यार करते हैं। दुनियाँ के लोगों सुनो

हम अपनी स्वतन्त्रता के लिए बलिदान देने को तैयार हैं

पर भारत माता का एक इंच टुकड़ा भी देने को तैयार नहीं-- ।

जय हिन्द

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सज कर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ भाद्रपद कृष्ण - ६ संवत् २०४७ वि.
१२ अगस्त १९९०, दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

यशोदा तूने काली अंधेरी में...

आ देवानामपि पन्थामगन्म

हम अपने दिव्य पुरुषों के पथ का अनुसरण करें

----- और आज से 5000 वर्ष पूर्व की बात है इसी धरती पर, इसी प्रदेश की बृजरज पर, एक ऐसा लुभावना लालन पैदा हुआ था जिसकी कोई समता नही सानी नही गुणों का पारावार नही। किसी ने उसे प्यारा लालन समझा तो किसी ने उसे गौओं के पीछे-पीछे घूमने वाला गोपालक गोरक्षक समझा। किसी ने उसे कोमलता, वत्सलता और सुन्दरता का मूर्तिमन्त शिशु समझा तो किसी ने उसे गरीब निवाज बनकर सुदामा के पैर धोते हुए देखा। किसी ने उसे चक्र सुदर्शन उठाकर अन्याइयों का वध करते देखा तो किसी ने उसे युद्धभूमि में कर्मयोग ज्ञानयोग का सन्देश देते हुए भी देखा। कोई उसकी वंशी पर मुग्ध था तो कोई उसकी माधुरी छवि पर। ऐसा प्यारा दुलारा न्यारा नररत्न यहाँ की संस्कृति के कण-कण से ऐसा जुड़ गया है कि भले ही चान्द सूरज मिट जायें मगर उसकी याद आर्यजाति विस्मृत कर दे---- असम्भव कल्पनातीत। तभी तो आज घर-घर में झाँकियां सज रही हैं पालने पड़े हुए हैं। हर माँ यशोदा बनने के लिये तड़प रही है। हर किसी ने व्रत रखा हुआ है, आज उसके घर में कन्हैया जो आने वाला है।

चाहे बंगाल हो, गुजरात हो, कन्याकुमारी हो, हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियाँ हों या गंगा का किनारा हो हर घर में उसका नाम पुकारा जा रहा है, हर हृदय में उसकी आरती उतारी जा रही है। ऐसा अद्भुत महापुरुष जो बृहत्तर भारत का निर्माता था। जिसने महाभारत को अन्तिम क्षण तक रोकने का प्रयास किया और जब प्रयास सफल नही हुआ तो "न दैन्यं न पलायनम्" कहकर अन्यायी के विरुद्ध समरांगण में निहत्था बनकर कूद पड़ा और अपने कूटनीतिक चातुर्य से अधर्म पर धर्म की विजय करा दी। ऐसे महान् पुरुष को आर्यसमाज आर्यों का मुकुटशिरोमणि मानता है और उसके आप्तचरित्र को ऋषिवर्य दयानन्द के शब्दों में ही प्रकट करना चाहता है- "देखो! श्री कृष्णजी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्णजी ने जन्म से मरणपर्यन्त कुछ भी नही किया"।

वैदिक मर्यादाओं को भारतीय जीवन किंवा विश्व की मानवीय संस्कृति में साकार करने वाले राम और कृष्ण हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। "यावच्चन्द्र दिवाकरौ" यह आर्य (हिन्दू) जाति उन्हें कभी भूल ही नही सकती है। धार्मिक दृष्टि से वह परमतत्व तक पहुँचे हुए सन्त योगेश्वर थे- "कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने"। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से वे बृहत्तर एवं अखण्ड भारत के निर्माता थे। सांस्कृतिक दृष्टि से वे आर्यसंस्कृति के रक्षक पोषक एवं विस्तारक थे। क्षत्रियोचित धर्मानुसार वे समरांगण से पलायन न करने वाले अजेय योद्धा थे। लोकसंग्रही इतने थे कि जहाँ-जहाँ रहे, जहाँ-जहाँ गये, जहाँ-जहाँ बसे जन-जन के कण्ठ का आभूषण बन गये। आज के युद्ध हमें विरासत में बीमारी महँगाई अव्यवस्था उत्पीड़न और अविश्वास की कभी न खत्म होने वाली धरोहर दे जाते हैं पर महाभारत हमें ज्ञान और कर्म का समन्वय करने वाली "गीता" जैसी अद्भुत पुस्तक देकर गया है। आज कौन ऐसा (आर्य) हिन्दू होगा जिसके घर में गीता और रामायण न हो।

आर्यसमाज ऐसे महान पुरुषों के उदात्तचरित्र का अनुसरण करने की शिक्षा देता है। किसी महान पुरुष के जन्मदिवस को मनाने का यही वैदिक मार्ग है। गीता और महाभारत के कृष्ण को भूलकर आज अधिकांश देशवासी कृष्ण को रासरचैया माखनचोर आदि के रूप में स्मरण कर आनन्द विभोर हो रहे हैं। क्या यह उस महापुरुष का सही मूल्यांकन है? यदि हम उससे सम्बन्धित प्रत्येक घटना का सूक्ष्म परिशीलन करें तो यह बात स्पष्ट हो जायेगी कि प्रत्येक घटना के पीछे राष्ट्रीय हित समाजहित की बात छिपी हुई है। आर्यसमाज इसी रूप में कृष्ण के चरित्र को अपना समर्थन देता है। जरासन्ध ने अपने कारागार में लगभग 80 हजार स्त्रियों को उन उन विजित देशों से अपहरण करके बन्द कर रखा था। कृष्ण ने इस राक्षस का अन्त किया तो सबसे बड़ी समस्या इन स्त्रियों के पुनरुद्धार की हुई। कोई अपनाने को तैयार नही था- ऐसी स्थिति में स्वयं उन्हें अपनाकर आर्यजाति का उन्होंने कितना बड़ा उपकार किया है- इसे हम सूक्ष्म विवेचक दृष्टि से देखें तो पता चलेगा कि आर्यजाति की विस्तीर्णता में इस महान पुरुष का कितना बड़ा योगदान है। उस समय इस आर्यजाति की पाचन शक्ति कितनी प्रबल थी इसका अनुमान लगाया जा सकता है। इन्ही महानुपुरुषों की बदौलत आज हम इतनी संख्या में दिखाई दे पड़ रहे हैं

जन्माष्टमी के इस पावन पर्व पर हमारी कामना है आर्यजाति उनके उदात्त और पावन चरित्र के अनुसरण का व्रत ले। ◘

स्वाधीनता (स्वातन्त्र्यम्)

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति, महाविद्यालय-ज्वालापुर

(1)

स्वतन्त्राप्ति रेषा सदा सौख्य-दात्री
भयानां प्रहर्त्री गुणानां प्रदात्री।
त्वमेवासि लोके सदा मानदात्री
सदा कीर्तिदात्री सदा मोददात्री।।स्व० ।।

(2)

न त्वत्तः परं मानदं लोकमध्ये
न त्वत्तः परं सौख्यदं किंचिदस्ति।
त्वमेवासि लोकस्य चैतन्य-दात्री
सदा प्रेरणाभूः सदा शक्ति-स्रोत।।स्व0।।

(3)

विना त्वां जनाःशक्ति-कीर्त्यादि हीनाः,
सुबुद्धेर्विहीनाः सदा मान-हीनाः।
नराः पामरास्ते क्षुधा-दैन्य-त्रस्ताः,
अविद्या न्ध-ग्रस्ताः सदा शोक ध्वस्ताः।।

(4)

विना त्वां नृणां जीवनं मोघमेव
विना त्वां गतिः सर्वदा दुःखदेव।
विना त्वां शिरस्थः सदा मृत्युरेव
विना त्वां विकासो न हर्षाप्तिरेव।।

(5)

न यत्रास्ति ते दीधितिः सौख्यमूला
न यत्रास्ति ते श्रीः सदा कीर्तिशीला।
न राष्ट्रं न देशः प्रदेशो विशेषो
विना त्वां श्रितः कीर्तिमिष्ठां श्रियं वा।।

(6)

त्वमेवासि सौख्यस्य मूलं समन्तात्
त्वमेवासि कीर्त्यादिमूलं पुरस्तात्।
त्वमेवासि मानस्य शक्तेश्च हेतुः
त्वमेवासि शस्त्रं त्वमेवासि हेतिः।।

(7)

त्वदीये पदाब्जे मुदा देशभक्ताः,
बलिं दत्तवन्तो मुदं प्राप्तवन्तः।
त्वदर्चापरा ये नरा मातृ-भक्ता.
सदा स्थास्नु तेषां यशो राजतेऽत्र।।

(8)

त्वमेवासि शक्तिः त्वमेवानुरक्तिः,
त्वमेवासि सिद्धि, त्वमेवासि ऋद्धिः।
त्वमेवासि मन्त्रः त्वमेवासि तन्त्रं
त्वमेवासि शान्ति, त्वमेवासि क्रान्तिः।।

(9)

त्वमेवासि दुर्गा, त्वमेवासि लभ्या,
अधृष्या त्वमेवासि दुर्धर्षरूपा।
सदा स्नेह-स्रोतः, सदा शक्तिस्रोतः,
त्वदीयां कृपां याचते सर्व-लोकः।।

(10)

सदा भारते ते कृपा संतता स्यात्,
त्वदर्चापरा भारतीया भवेयुः।
विहाय स्वकं स्वार्थजातं जघन्यं
मुदा जीवनं तेऽर्पयेयुः पदाब्जे।।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आगामी २३से २६ दिसम्बर तक दिल्ली में आयोजित

आर्य जनता इसे सफल बनाने में प्राणपण से जुट जाय

सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी का समस्त प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के नाम परिपत्र

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा की अन्तरंग सभा दिनांक- 8 जुलाई 90 द्वारा सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है कि आगामी 23 दिसम्बर से 26 दिसम्बर 1990 तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा की ओर से राजधानी दिल्ली में मनाया जायगा। इस निर्णय की सूचना 15 जुलाई के सार्वदेशिक पत्र में प्रकाशित की जा चुकी है।

यह सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होगा। इसकी पूरी व्यवस्था के लिए सभा को अनेक क्षेत्रों में व्यापक तैयारियां करनी पड़ेंगी। यह कार्य सभी आर्य समाजों, प्रतिनिधि सभाओं व आर्य संगठनों के सहयोग से ही सम्पन्न हो सकेगा।

आपने 1975 में दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह में भाग लिया होगा, और उसके लिए की गई व्यवस्थाएं भी देखी होंगी। लेकिन आज यह घटना 16 वर्ष पुरानी हो चुकी है। उस समय दिल्ली में 6 लाख लोग शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए थे, आज हम चाहते हैं कि कम से कम 10 लाख लोग इस सम्मेलन में पधारें। इस सम्बन्ध में आपकी सभा से हमारा निम्न प्रकार निवेदन है।

1- अपने प्रान्त की समस्त आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं, संगठनों को आर्य महासम्मेलन की तिथियों की सूचना जारी करें और उनसे यह भी पूछें कि कितने लोग सम्मेलन में दिल्ली पधारेंगे। उसके बाद आप अपनी सभा की ओर से हमें सूचित करेंगे कि आपके प्रान्त से कम से कम कितने लोग सम्मेलन में भाग लेंगे, ताकि उसी अनुसार आवासादि की व्यवस्था हो सकेगी।

2- सम्मेलन की सफलता के लिए आपकी प्रान्तीय सभा सार्वदेशिक सभा को क्या-क्या सहयोग प्रदान करेगी।

3- इस सम्मेलन की सफलता और रोचकता के लिए आपकी सभा का कोई विशेष कार्यक्रम हो तो, वह भी लिखें।

4- सम्मेलन के लिए आर्थिक व्यवस्था के विषय में अपने सुझाव भी भेजें।

दिल्ली
१८.७.९०

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली

सार्वदेशिक सभा की चेतावनी

आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा किसी भी व्यक्ति के द्वारा चाहे वह आर्यसमाजी हो अथवा गैर आर्यसमाजी, आर्यसमाज के नाम पर किसी भी नए संगठन की स्थापना करने का विरोध करती है।

इस सम्बन्ध में यह तर्क प्रस्तुत करना कि सार्वदेशिक सभा इस समय देश के समक्ष उपस्थित खतरों का सामना करने में निरन्तर असमर्थ रही है और इसके लिए एक नये संगठन की आवश्यकता है, एक दम निरर्थक और आधारहीन है। इस प्रकार के प्रयास आर्यसमाज को खण्डित करने की एक कुटिल चाल मात्र ही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सब आर्य समाजियों को चेतावनी देती है कि वे इस प्रकार की चालों से सावधान रहें, और ऐसे किसी भी प्रयत्न को आरम्भ में ही कुचल दें।

—डॉ. सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
सार्वदेशिक सभा
दिल्ली

क्रान्ति सन्देश

कविवर "प्रणव" शास्त्री, एम.ए.
मुख्योपदेशक, आगरा

(1)

जब लोक मानस में अन्याय अन्धेर बढ़े
न्याय या प्रकाश भी न सत्य पथ पाते हैं
निराशा की काली-काली घटाओं में घिरा हुआ
ज्ञान भानु किरणें न भूमि पर लाता है।
समता विषमता की गोद में प्रमोद करे
ऊँच-नीच भावना का ज्वार चढ़ जाता है
जनता जनार्दन को शान्ति का सन्देश देने
"प्रणव" प्रबुद्ध क्रान्ति दूत बन आता है।।

(2)

योग्यता विशेषता की मधुर मरालियों की
आरक्षण आखेटक गर्दन मरोड़ता
वर्गवाद वाद या विवाद को बढ़ावा देके
देश-अस्मिता को बरबाद कर छोड़ता।
स्वार्थ सिन्धु में ही जन जीवन का पोत चले
तटीय प्रबन्ध प्रतिबन्धों को भी तोड़ता
तब हो निशंक बिना अंकुशों के वीर वेष
दर्प दलने को क्रान्ति कुन्जरों को छोड़ता।।

(3)

नेता अभिनेता बने नाटकीय सूत्रधार
अभिनय को लाते नव्य योजना की नारियाँ
कथनोपकथन में बीत जाती बेला पूर्ण
कर्मकला कौशल की रिक्त रहें क्यारियाँ
स्नान के प्रलोभन में अस्त कोई भगीरथ
ला न पावे भूतल पे गंगाजल धारियाँ
मानो तब निश्चय ही राख भरी ढेरियों से
"प्रणव" दहकती हैं क्रान्ति-चिनगारियाँ।।

(4)

जिसकी श्रद्धा का स्रोत बहता विदेश में है
रहता यहाँ है अन्न जल खाता पीता है
यहीं के पुनीत वायु मण्डल में लेता हुआ
श्वास प्रतिश्वास जो कि सर्व वैभव जीता है
मरने के बाद भी हड्डियों में सोता रहे
माँ की छाती छेदने में मरने मन चीता है
'प्रणव' तभी तो "शठे शाठ्यं" सुमन्त्रणा लिए
कृष्ण कर्म वीर को पढ़ाता क्रान्ति गीता है।।

(5)

पाक का सपेरा नाग सीमा पर छोड़े नित्य
चाल बाज बातों से न बाज कभी आयेंगे
भारतीय नेता बीन सन्धि की बजाते रहें
कपोत आँख मींचे बिलाव भाग जायेंगे
केसर की क्यारियों में नागफनी उगने दो
कौन सीधी उंगली से घी निकाल पायेंगे
प्रणव प्रतीक्षा करो यही रहा मौसम तो
क्रान्ति के करोड़ों दीप ही जल जायेंगे।।

(6)

राष्ट्र के प्रहरियों से नीति का निवेदन है
अपनायें आप को तो आप अपनाइए
मित्रता की चाह करें मित्रता निभाओ पूर्ण
शत्रुता को शत्रुता का जाम ही पिलाइए।
धूर्त वंचकों की करतूतें न सराहो कभी
उन पर मजबूत जूत ही घुमाइए
"प्रणव" राष्ट्र रक्षा का मन्त्र यही केवल है
निर्भय निष्पक्ष सदा क्रान्ति गान गाइए।।

(7)

प्यारे राष्ट्र कर्णधार निष्पक्ष निशंक होके
चाहते हो सचमुच देश को बचाना है
तुष्टीकरण से नहीं पार कभी पा सकोगे
दृढ़ता से दैत्य द्रोही दल को दबाना है
समता की धारा से ही नन्दन को सींचो अब
दलगत सम्प्रदायवाद न चलाना है
'प्रणव" राष्ट्र अर्चना तब ही सफल होगी
कंस शिशुपालों का तो नाम ही मिटाना है।।

अयोध्या में श्रीराम मन्दिर का नव-निर्माण एक निरर्थक विवाद

— बलराज मधोक

जबसे राम जन्म भूमि मंदिर की समिति ने 30 अक्टूबर से अयोध्या में मंदिर निर्माण का कार्य शुरु करने की घोषणा की है, कुछ सुन्नी मुसलमान और इनके अभिभावक बहुत हायतोबा मचा रहे हैं। मूल प्रश्न से आँख मूंद कर वे इसे राजनैतिक और साम्प्रदायिक रंग देने का प्रयत्न कर रहे हैं और एक निरर्थक विवाद खड़ा कर रहे हैं।

इस प्रश्न को सबसे पहले मैंने उठाया था। 1954 में मैं सैलानी के रूप में अयोध्या गया था। मैं राम-जन्म-भूमि स्थल को देखने भी चला गया। वहां मैंने एक मकबरानुमा इमारत में श्री राम, लक्ष्मण तथा सीता की सुन्दर मूर्तियां और एक पुजारी को पूजा करते देखा। जहां मूर्तियां रखी थीं उसके बाहर लोहे की सीखचों का दरवाजा था। उस पर ताला लगा हुआ था। जब मैंने अन्दर आने की इच्छा प्रकट की तो द्वार के निकट खड़े हुये पुलिस के सिपाही ने मुझसे कहा कि आप सिटी मजिस्ट्रेट से अनुमति ले आइये तब ताला खोल दिया जायेगा। उसने यह भी कहा कि अनुमति मिलने में कोई कठिनाई नहीं होगी। बहुत लोग अनुमति लेकर आते हैं और अन्दर जाकर पूजा करते हैं। मेरे पास इतना समय नहीं था कि फैजाबाद जाकर अनुमति लाता इसलिए मैंने द्वार के बाहर से ही मस्तक नवाया।

इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते मेरी पुरानी इमारतों में रुचि है। मन्दिरों और मस्जिदों की वास्तुकला का भी मैंने अध्ययन किया हुआ है। मुझे वह इमारत मस्जिद नहीं लगी। उसमें न कोई मीनारा था और न उसके आँगन में कोई वजू का स्थान था। मीनार के बिना मस्जिद की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वह इमारत मकबरा लगती थी मस्जिद नहीं। इमारत के मुख्य द्वार के ऊपर सूर्य और कमल के चिन्ह थे जो साधारणतया मन्दिरों के द्वारों पर अंकित होते हैं।

उस यात्रा के बाद मैंने अयोध्या पर बाबर के आक्रमण, मन्दिर के तोड़ने और बनाने के संबंध में उपलब्ध सामग्री का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वह इमारत उस स्थल पर बने मन्दिर को तोड़कर बनाई गई है। तभी से मैंने उस स्थल को हिन्दुओं को सौंपने और वहां पर श्रीराम की गरिमा के अनुरूप मन्दिर के नवनिर्माण की बात उठानी शुरु की।

एक सितम्बर 1961 को मैंने इस मामले को पहली बार लोकसभा में उठाया। देश की भावात्मक एकता के विषय पर बोलते हुए मैंने कहा, हमारे देश मे एक नहीं अनेक स्थान हैं जहां मन्दिरों को मस्जिदों में बदल दिया गया है। इस देश की जनता आज भी उनको भूली नहीं है। जब देश का कोई व्यक्ति बनारस जाता है और काशी विश्वनाथ के मन्दिर के भग्नावेश के ऊपर तैयार की गयी मस्जिद को देखता है या मथुरा या अयोध्या जाता है तो क्या आप समझते हैं उसे ठेस नहीं पहुंचती? ठेस पहुंचती है और वह महसूस करता है कि हमारे देश में हमारे मन्दिरों को, हमारे शिवालयों को और हमारे महापुरुषों के स्थानों को मस्जिदों में बदला गया है और वे अभी तक दूसरे लोगों के कब्जे में हैं। अगर हम सही मायने में भावात्मक एकता लाना चाहते है तो इस स्थिति को बदलना होगा।

" अगर यहां पर ऐसी कोई प्राचीन मस्जिद हो जो तोड़कर मन्दिर या गुरुद्वारों में बदल दी गयी हो तो मैं पहला आदमी होऊंगा जो यह मांग करूंगा कि वहां पर उस मन्दिर या गुरुद्वारों को खत्म करके मस्जिद बनाने के लिये मुसलमानों को वापस कर दिया जाय। मैं अपने कम्यूनिस्ट भाइयों से पूछता हूं कि क्या इस देश में ऐसी कोई मिसाल है? ---ऐसी कोई भी मिसाल पेश नहीं की जा सकती। इसके विपरीत जहां मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाई गयी है, उस प्रकार की मिसालें एक नहीं हजारों हैं और अकारण आज इन दो वर्गों में गहरी खाई है।"

भारत आजाद हो गया है लेकिन इस विषय में कोई कारवाई नहीं की गयी है, यहां पर एकता की बातें की जाती है लेकिन जब यह कहा जाता है कि पुराने मन्दिरो को वापस कर दिया जाय तो उसकी उपेक्षा की जाती है। इससे मुसलमानों को ठेस नहीं होनी चाहिए। वे और मस्जिदें बना सकते हैं। जो राम जन्मभूमि है वही पर नमाज पढ़ने से खुदा मिल सकता है। ऐसी बात नहीं है। --- अगर मुसलमान वास्तव में ही राष्ट्रीय हैं तो उनको ये पूजा स्थान हिन्दुओं को वापस दे देने चाहिएं।"

मेरे इस कथन पर अंसार हरवानी, नागी रेड्डी, नरसिंहन इत्यादि अनेक माननीय सदस्यों ने अंग्रेजी में टोका टाकी की। उनको उत्तर देते हुए मैंने अंग्रेजी में जो कुछ कहा उसका भावार्थ है-"यदि वे वास्तव में भावात्मक एकता चाहते हैं, साम्प्रदायिक सद्भाव चाहते है तो यह काम करना आवश्यक है। फिर मुसलमान सदस्यों को सम्बोधित करते हुए मैने कहा, कि यदि आप राष्ट्रवादी और देशभक्त हैं तो आपको कहना चाहिये कि हमारे कुछ लोगों ने भूतकाल में कुछ गलत काम किए, हम यहां उनकी सफाई देने नहीं आए हैं। हम चाहते है कि उनके द्वारा किए गये गलत कामो का परिमार्जन किया जाए और उन मन्दिरों को उनमें पूजा करने वालों को सौंप दिया जाय। परन्तु यदि वे इस सुझाव का विरोध करेंगे तो यह मानना पड़ेगा कि उन्हें इस देश से प्यार नहीं और वे देश की भावात्मक एकता नहीं चाहते।"

1968 में मैंने यह मुद्दा पुनः लोकसभा में उठाया। उस समय फखरुद्दीन अली अहमद, जो बाद में राष्ट्रपति बने, वक्फ मंत्री थे। उन्हें सम्बोधित करते हुए मैंने कहा कि वे कम से कम रामजन्म भूमि, कृष्ण जन्म भूमि और काशी विश्वनाथ के स्थान जहां अब मस्जिदें बनी हुयी हैं हिन्दुओं को वापस कर दें तो मैं आश्वासन देता हूं कि हिन्दू समाज इन मस्जिदों के स्थानों पर मुसलमानों को जहां वे चाहेंगे नई मस्जिदें बनवा देगें।

जब मेरे बार-बार आग्रह करने पर भी श्री अहमद ने, मेरे सुझाव का कोई सकारात्मक उत्तर नहीं दिया तो मैंने दृढता से कहा कि आपके करदार से लगता है कि आप राष्ट्रवादी नहीं, साम्प्रदायिक और राष्ट्रीय एकता के विरोधी व्यक्ति हैं।

ऊपर दिये गये तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि राम जन्म भूमि का मामला अकस्मात विश्व हिन्दू परिषद या किसी अन्य हिन्दू संगठन ने नहीं उठाया। 1961 में तो विश्व हिन्दू परिषद अस्तित्व में भी नहीं आई थी।

1988 में फैजाबाद की अदालत ने मन्दिर के आंगन के द्वार पर ताला लगाने का फैसला रदद करके राम भक्तों को मूर्तियों के निकट जाने की अनुमति दी। इससे स्थिति में कोई गुणात्मक बदल नहीं आया। मूर्तियां वहां मूर्तियां वहां 1948 से स्थापित थी और उनकी लगातार पूजा अर्चना हो रही थी, परन्तु दर्शनार्थी गर्भगृह के अन्दर नही जा सकते थे। ताला खुलने के बाद वे गर्भगृह में जाने लगे।

जहां मूर्तियां स्थापित हैं, जहां 42 वर्षों से पूजा- अर्चना अनवरत चल रही हो, वह स्थान उसके ऊपर छत कैसी भी हो, इमारत का रूप कुछ भी हो, मन्दिर है। उसे मस्जिद कहना हर दृष्टि से गलत है। वह स्थान बाबर द्वारा मन्दिर तोड़ने से पहले भी मन्दिर था और अब भी मन्दिर है। उसका नया भवन कैसा हो, ईंटों का हो या पत्थरों का, उसे महन्त अवैद्य नाथ बनाएं या जगतगुरु शंकराचार्य स्वरूपानन्द बनाएं यह हिन्दु समाज का घरेलू मामला है। इसमें न सरकार का कोई दखल होना चाहिए और न मुसलमानों के उस वर्ग का जो अपने आपको अपने पुरखों, राष्ट्र-पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम से जोड़ने के बजाय विदेशी आक्रान्ता बाबर के साथ जोड़ता है।

बाबर भारत में 1526 में काबुल से आया था और 1530 में काबुल में ही मरा था। उसका मकबरा वहीं है। कुछ वर्ष पूर्व काबुल जाने पर मैं उसे देखने चला गया। वह अच्छी हालत में नहीं था। मैंने वहां नियुक्त अफगान सरकार के कर्मचारी से पूछा कि इसका रख-रखाव ठीक से क्यों नहीं किया जाता। उसका उत्तर था, "बदमाश विदेशी- हम उसके मकबरे का रख-रखाव क्यों करें।" काबुल में भी बाबर विदेशी आक्रान्ता के रूप में समरकन्द से आया था। उस बर्बर विदेशी आक्रान्ता के साथ अपने आपको जोड़ना किसी भारतीय को शोभा नहीं देता।

शेष पृष्ठ ७ पर

कस्मै देवाय हविषा विधेम

श्री रूपचन्द्र दीपक
लखनऊ

यजुर्वेद में यह मन्त्रांश अनेक स्थलों पर आया है। ईश्वर की प्रार्थना तथा यज्ञ करते हुए इसकी बहुत आवृत्ति की जाती है। इस प्रसिद्ध मन्त्रांश का अर्थ यह है कि हम योगाभ्यास एवं प्रेमपूर्वक ईश्वर के लिए अपनी सकल सामग्री से हवियाँ अर्पित करके उसकी उपासना करते रहें।

(कस्मै) प्रश्न उठता है कि हम आहुतियाँ किसे समर्पित करें? हम अपने जीवन का अधिकांश समय और अपनी अधिकांश शक्ति अपने माता-पिता पति वा पत्नी, भाई-बहनों और मित्रों के लिए लगा देते हैं। तो फिर हवन की हवि इनको क्यों नहीं समर्पित की जाती? वास्तव में ये सब बन्धु-बान्धव सीमित निकटता वाले होते हैं। इनका हमारे साथ न तो सदैव का संबंध है और न ही ये हमारी आत्मा में प्रविष्ट हो सकते हैं। ये कभी प्रेम करते हैं तो कभी द्वेष। कभी न्याय करते हैं तो कभी अन्याय। कभी सुख देते हैं तो कभी दुःख। किन्तु ईश्वर सब प्राणियों का सदैव का मित्र है। वह सबके लिए सदा प्रेम, न्याय एवं सुखस्वरूप ही रहता है। कभी अन्यायी, लोभी, वा द्वेषी नहीं हो सकता। दूसरे, वह पिताओं का पिता माताओं की माता और पतियों का पति है। इससे उस आनन्दस्वरूप प्रजापति परमेश्वर को ही हमारी समस्त हवियाँ समर्पित होने योग्य हैं।

(देवाय) ईश्वर देवों का देव है। वह शुद्धस्वरूप, प्रकाश करने हारा और कामना करने के योग्य है। वह अपने स्वरूप से ही दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव वाला है। उसकी दिव्यता में कभी कोई परिवर्तन वा ह्रास नहीं होता। मनुष्य भी उसकी उपासना करके ही दिव्यता को प्राप्त कर सकता है। अतः हम उस दिव्य स्वरूप परमदेव को ही अपना पूर्ण आत्म-समर्पण करके विशेष भक्ति किया करें।

(हविषा) हवियाँ अनेक प्रकार की होती हैं। अग्निहोत्र में घृत, अगर, तगर, जावित्री, जयफल, केसर, कस्तूरी, शहद, गिलोय, कपूर, अन्न आदि जो पदार्थ डाले जाते हैं वे अपने शुद्ध एवं परिष्कृत रूप में हवि कहलाते हैं। जो व्यक्ति मद्य-मांसादि का सेवन करने वाले और मूर्तिपूजक हैं, वे भी मूर्ति को भोग लगाने के लिए मद्य-मांसादि के स्थान पर घी, दूध, मेवा, मिठाई आदि का ही प्रयोग करते हैं। जो हवन करने वाले व्यक्ति अपने भोजन में चाय, प्याज, लहसुन, वनस्पति घी आदि का सेवन करते हैं। वे भी अग्नि होत्र में उपर्युक्त शुद्ध पदार्थ ही डालते हैं। अतः समस्त आर्यजन अपने भोजन में उन्हीं पदार्थों का प्रयोग करें, जिन्हें अग्निहोत्र में आहूत किया जा सके इससे हमारा आहार हवि द्वारा समर्पित हो सकेगा। कहा भी गया है -"आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः" अर्थात् आहार शुद्ध होने पर ही मन-बुद्धि की शुद्धि होती है।

मानव की इन्द्रियों में नेत्र प्रधान हैं। नेत्र की सार्थकता, दर्शन शक्ति में और इसकी दिव्यता इसकी दृष्टि में है। मनुष्य दूसरे मनुष्यों, पशु-पक्षियों और वस्तुओं को अनेक दृष्टियों से देखता है। उसकी दृष्टि में प्रेम एवं घृणा, त्याग एवं लोभ, सहयोग एवं विरोध और समर्पण एवं अभिमान, सभी का होना संभव है। किन्तु वह कुदृष्टि से बचता हुआ प्रत्येक पर सुदृष्टि ही डाले तो वह दृष्टि हविरूप होगी और उसका जीवन यज्ञमय हो सकेगा। वेद में भी प्रेरणा दी गई है-"भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः" (यजुर्वेद 25-21) अर्थात् हम सुदृष्टि से अपने कल्याण को देखते रहें।

दृष्टि की ही भाँति श्रुति अर्थात् श्रवण भी श्रेष्ठ होना चाहिये। एक साधारण मनुष्य अपनी प्रशंसा और दूसरों की निन्दा सुनना पसन्द करता है। यह प्रवृत्ति उसकी उन्नति में भयंकर बाधा है और ऐसे व्यक्ति का जीवन उत्तम नहीं कहला सकता। वेद की शिक्षा है- "भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः" (यजुर्वेद 25-21) हमें अपने कानों को ईश्वर की स्तुति, वेद की शिक्षा, विद्वानों के वचन और दीन-दुखियों की पुकार सुनने की ओर लगाना चाहिये। इस उत्तम श्रवण से प्राप्त होने वाला शब्द हवि बनकर हमारे जीवनरूपी यज्ञ को सार्थक करेगा।

श्रेष्ठ जनों के मुख से निकला शब्द भी हविरूप होता है। साधारण मनुष्य तो सत्य-असत्य, मधुर-कटु, हित-अहित एवं सुखद-दुःखद सभी प्रकार के शब्द बोलता है। किन्तु स्मरणीय है कि-"गोस्तु मात्रा न विद्यते" (यजुर्वेदः23-48) अर्थात् वाणी के प्रभाव को मापना असम्भव है। यह जब सुख-शान्ति देती है तो उसे मापा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब यह दुःख देती है तो उसे भी नहीं मापा जा सकता। अतः श्रेष्ठ पुरुषों की भाँति हम भी या तो मौन रहें या फिर अच्छा बोलें। हमारे मुख से निकला हुआ शब्द ज्ञान एवं सुख की वृद्धि करने वाला, समस्या के समाधान में सहायक और सत्य एवं प्रेम को प्रकट करने वाला हो। ऐसा ही शब्द व्यवहार-यज्ञ की हवि बनने योग्य है।

मनुष्य के पैर भी उसकी हवि में सहायक हैं। वह इनसे चलकर उत्तम स्थानों पर हो जायें। अर्थात् विद्वानों के निवास-स्थान, सुरम्य प्राकृतिक स्थल, मलिन बस्ती की सफाई करने, अशिक्षितों को शिक्षित करने, दरिद्रों को दान-सहायता करने, सार्वजनिक कार्यों में श्रमदान करने एवं सत्संग के लिए जाने में ही पैरों की सार्थकता है। इसी प्रकार हाथों की सार्थकता शुभ कर्म करने में है। इस संबंध में किसी विद्वान ने कहा है कि "कर्म ही पूजा है।" वैसे कर्म पुरुषार्थ को और पूजा उपासना को कहते हैं। इस प्रकार ये दोनों पृथक-पृथक हैं। किन्तु इस उक्ति का आशय यह है कि जिस प्रकार उपासना में हवि होती है, वैसे ही कर्म इतना उच्च, शुद्ध एवं हितकारी हो कि वह हविरूप हो जाए। इसी प्रकार समस्त इन्द्रियों, मन, बुद्धि एवं आत्मा से मनुष्य इतनी उत्तम चेष्टा करे कि ये सब उसके यज्ञमय जीवन में हवियाँ बन जाँय।

एक कृषक अन्न उपजाने में और श्रमिक कार्यशाला में जो पसीना बहाता है, वह इनकी हवि ही है। एक वैश्य सत्यनिष्ठा से जो धन-संग्रह करके समाज के उपयोगार्थ लगाता है, वह उसकी हवि है। एक क्षत्रिय न्याय की स्थापना में जो ओजपूर्ण प्रयत्न करता है, वह उसकी हवि है। एक ब्राह्मण विद्या एवं धर्म के प्रसार हेतु जो तप करता है वह उसकी हवि है। एक ब्रह्मचारी मन-वचन-कर्म से पवित्र रहते हुए जो चेष्टा करता है वह उसकी हवि है। एक वानप्रस्थी समाज के सुधार हेतु परिवार का जो त्याग करता है, वह उसकी हवि है। इसी प्रकार एक सन्यासी संसार के उपकार के लिए जो जीवनदान देता है, वह उसी हवि है। ये सब व्यक्ति भिन्न-भिन्न ढंग से भिन्न-भिन्न कार्य करते हैं। किन्तु यदि इनके आचार, विचार एवं व्यवहार शुद्धता, दिव्यता एवं परोपकार से भरे हुए हैं, तो ये सब इनकी हवियाँ हो हैं। इन हवियों से ही समाज का जीवन यज्ञ बन सकता है। हम आर्यजन ये सब हवियाँ आहूत करके याज्ञिक बनें।

(विधेम) उपर्युक्त हवियाँ प्रत्येक क्षण देने वाली हैं। हमें इनको अपने स्वार्थ वा प्रदर्शन के लिए नहीं देना है। अपितु ईश्वर के प्रति समर्पण तथा संसार के उपकार के लिए देना है। ईश्वर प्रतिक्षण यज्ञ कर रहा है। हम उसके यज्ञ से सामञ्जस्य स्थापित करके ही जीवन-यापन करें। इसके लिए हमें भी प्रतिक्षण उपर्युक्त हवियाँ देनी होंगी। अतः हम इन हवियों की आहुति देते हुए ईश्वर की दिव्य सेवा में तत्पर रहें और अपने जीवन को वैदिक एवं यज्ञमय बनाकर सच्चे आर्य बनें। कस्मै देवाय हविषा विधेम (यजुर्वेद अध्याय-13, मन्त्र-4)। □

मान्य लेखकों से नम्र निवेदन

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध नेता, लोकसभा में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण को निर्भीकता से प्रस्तुत करने वाले, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के प्राण स्व० पं० प्रकाशवीर शास्त्री की पुण्यस्मृति में हम आगामी दिस० 1990 में एक विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

विनम्र निवेदन है कि शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागर करने वाले अपने संक्षिप्त विचार/कविता/संस्मरण आदि मुझे भेजने की कृपा करें। साथ ही सामयिक समस्याओं पर प्रति सप्ताह प्रकाशनार्थ लेख भी भेजें। आर्यमित्र इन्हें प्रकाशित कर अपने को गौरवान्वित समझेगा ।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबंध सम्पादक, आर्यमित्र, लखनऊ

● मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे- -

- स्वामी दयानन्द

क्या उर्दू विघटनकारी भाषा नहीं है ?

— डा० शकुनचन्द्र गुप्त
लालगंज, रायबरेली

उर्दू कभी भी जनता की भाषा नहीं रही। पहले मुगलकाल में उसका प्रयोग मुगलों की सेनाओं तथा दरबारों में जनसम्पर्क की दृष्टि से किया जाता रहा। इसी से उसे मुगल सम्राटों का संरक्षण प्राप्त होता रहा। जनता की भाषा न होने का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि उसकी लिपि वही है जो कि मुगल बादशाहों की भाषा फारसी की लिपि थी।

मुगलों के शासन की समाप्ति तथा अंग्रेजी शासन की स्थापना के बाद देश की जनता द्वारा उसे न चाहने के बावजूद अंग्रेज शासकों द्वारा उसे उत्तरप्रदेश, पंजाब तथा बिहार आदि में राज्यों की अदालती भाषा तथा अंग्रेजी भाषा के बाद दूसरी सरकारी भाषा बनाने के कारण वह जीवित रही।

परन्तु देश के स्वतन्त्र होने के बाद जनता का शासन स्थापित होने के बाद जनता की दृष्टि में अलोकप्रिय एवं तिरस्कृत होने के कारण शासन के संरक्षण के अभाव में उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। फिर वह सिमट कर वहीं तक रह गई जहाँ के मुसलमान निजी मातृभाषा होने के बावजूद अपनी धार्मिक भाषा के रूप में उसे मान्यता प्रदान करते रहे। उर्दू के मुसलमानों की साम्प्रदायिक भाषा होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है कि यद्यपि उसके प्रभाव क्षेत्र लखनऊ, दिल्ली तथा आन्ध्र के हैदराबाद आदि क्षेत्र रहे परन्तु वह मुस्लिम बहुल पाकिस्तान तथा कश्मीर की सरकारी भाषा बनी यद्यपि वहाँ वह किसी मुसलमान की मातृभाषा नहीं है। जहाँ वर्तमान पाकिस्तान के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की मातृभाषाएं पंजाबी, सिन्धी, बलूची, पश्तो आदि हैं वहां कश्मीरियों की मातृभाषाएं डोगरी तथा कश्मीरी आदि हैं।

इस समय देश के कुछ भागों में उर्दू को राज्यों की दूसरी भाषा बनाने की माँग जोरों से की जा रही है। उन्हें आंशिक सफलता भी मिली जबकि कुछ वर्षों पूर्व राज्य पुनर्गठन आयोग के मापदंड को ठुकराकर तीस प्रतिशत की भाषा होने की शर्त न पूरा होने के बावजूद उसे बिहार की दूसरी भाषा बना दिया गया। यही कार्य कुछ महीनों पूर्व उत्तर प्रदेश में किया गया, 14 सितम्बर, 1989 को जबकि सारा देश "हिन्दी दिवस" मना रहा था उत्तरप्रदेश की तब की कांग्रेस सरकार ने राज्य विधान सभा में प्रस्ताव पारित कराकर उसे राज्य की दूसरी सरकारी भाषा घोषित करा दिया था।

परन्तु उपरोक्त सरकारी कदमों का बहुत ही कम प्रभाव जनसाधारण पर दिखाई पड़ रहा है। बलपूर्वक लादी जाने के कारण जनता उससे और दूर भाग रही है। यहां तक कि मुसलमानों के बच्चे भी उर्दू पढ़ने में रुचि नहीं ले रहे हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में भी उर्दू की फारसी लिपि हिन्दी की देवनागरी लिपि की अपेक्षा कठिन है। उपयोगिता की दृष्टि से तो वह देवनागरी लिपि की तुलना में बिल्कुल निरर्थक एवं अनुपयोगी है। यही कारण है कि मुसलमानों की नई पीढ़ी अपने रिश्तेदारों से पत्राचार अब हिन्दी देवनागरी में करने लगी है। मुसलमान दुकानदार भी अपने साइनबोर्डों में हिन्दी को वरीयता देने लगे हैं क्योंकि वे समझने लगे हैं कि उर्दू में साइनबोर्ड रखने से उनके व्यापार को बढावा नहीं मिल सकता है।

उर्दू की उपरोक्त दुर्दशा को देखकर ही अब कुछ उर्दू समर्थक मुस्लिम संगठन उत्तर प्रदेश के विद्यालयों में उसे कक्षा-8 से अनिवार्य करने की माँग करने लगे हैं जो उनकी जोर जबरदस्ती का प्रमाण है। परन्तु उन्हें समझना चाहिये कि उनकी इस माँग को राज्य की 92 प्रतिशत जनता कदापि स्वीकार नहीं कर सकती है उल्टे इससे उसका विरोध बढ़ने की और सम्भावना है जिससे उसका हित कम तथा अहित अधिक होने की संभावना है।

उर्दू एकता की नहीं अपितु विभाजन की भाषा है-

इस समय देश के कुछ उर्दू समर्थक मुस्लिम नेता तथा मुस्लिम तुष्टीकरणनीति से ग्रस्त राजनीतिक दल तथा उनके नेता उर्दू के राष्ट्रीय एकता में सहायक होने का दावा कर रहे हैं। उनका कथन है कि हिन्दी एवं उर्दू के संगम से ही देश की एकता सुदृढ हो सकती है। परन्तु उनके उपरोक्त विचार ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर सही नहीं उतरते हैं अपितु इस बात को प्रमाणित करते हैं कि जब-जब उर्दू के प्रचारप्रसार पर अधिक जोर दिया गया तथा उसे लादने का प्रयास किया गया तब तक विघटन को प्रोत्साहन मिला तथा विभाजन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि देश के वे नेता जो कि वोटों के लोभ में उर्दू को राष्ट्रीय एकता में सहायक घोषित कर उसे कई राज्यों में दूसरी सरकारी भाषा बनाने की मांग कर रहे हैं अपने इस रुख पर पुनर्विचार करें और गला फाड़फाड़ कर उर्दू का समर्थन करना बन्द कर उसकी विघटनकारी भूमिका को समझें अन्यथा यदि उनकी इस गलत भूमिका के कारण देश के हिन्दुओं एवं मुसलमानों के बीच फूट की रेखा चिरस्थायी हुई तो इसकी जिम्मेदारी उनके ऊपर होगी।

साथ ही साथ इस देश की राष्ट्रभाषाप्रेमी एवं हिन्दीसमर्थक जनता को राजर्षि पुरुषोत्तमदास-टण्डन, सेठगोविन्ददास, महर्षि स्वामी-दयानन्द सरस्वती, बालकृष्णशर्मा नवीन तथा बासुदेवसिंह आदि दिवंगत महापुरुषों के कदमों पर चलकर इस प्रकार जनमत जाग्रत कर तथा शान्तिपूर्ण आन्दोलन चलाकर सरकार को बाध्य करना चाहिए कि वह विघटनकारी उर्दूभाषा को जनता पर लादने का प्रयास न करे बल्कि अभी तक इस परिप्रेक्ष्य में उसने जो कदम उठाये उन्हें वापस ले। ताकि देश उर्दू की विभाजनकारी एवं विघटनकारी दुष्परिणामों से बच सके। ◘

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण की सफलता

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद की ओर से यह तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर तपोवन आश्रम देहरादून में ठीक 15 मई 1990 मंगलवार के दिन प्रात ठीक चार बजे से आरम्भ हुआ।

इस अंतर्राष्ट्रीय शिविर में 8 प्रशिक्षणार्थी विदेशी थे तथा चालीस प्रशिक्षणार्थी भारत के कोने-कोने से विभिन्न प्रान्तों से आये थे।

पूर्व शिविरों की अपेक्षा इस शिविर में आर्य जगत में विशेष उत्साह की लहर पायी गयी।

हर पुरोहित ने यह श्रद्धापूर्वक संकल्प किया कि- हम महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज द्वारा निर्दिष्ट संस्कार विधि के अनुकूल ही कर्मकाण्ड की विधि का प्रचार व प्रसार करेंगे। संस्कारों एवं यज्ञों के प्रशिक्षण के अतिरिक्त ध्यान योग एवं शारीरिक आसनों का अभ्यास भी कराया गया। ◘

निर्वाचन :

आर्यसमाज लक्ष्मीपुर मरजदवा (प०चम्पारण)
प्रधान- श्री गौरीशंकर प्रसाद
मन्त्री- श्री रामचन्द्र जी लोहिया
कोषाध्यक्ष- श्री मदनप्रसाद

आर्यसमाज जगदीशपुर (प०चम्पारण)
प्रधान- श्री नथुनी सिंह आर्य
मन्त्री- श्री दामोदर प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री राम नारायण सिंह आर्य

आर्य कुमार सभा गुरुकुल आमसेना (उडीसा)
प्रधान- नैष्ठिक कुन्जदेव शास्त्री
मन्त्री- ब्र० जगबन्धु आर्य
कोषाध्यक्ष- ब्र० कर्मवीर आर्य

आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती

गतांक से आगे...

— श्री पुरुषोत्तम सिंह योग, लखनऊ

महर्षि ने वेदों में कहीं भी अस्पृश्यता अथवा मूर्ति पूजा का विधान नहीं पाया। इसके विपरीत उन्होंने पाया कि वेद तो स्वयं ही पूरे मानव समाज के शूद्रों से भी नीचे वर्ण तथा स्त्रियों को भी वेद शिक्षा का आदेश देता है। और मूर्ति पूजा का तो स्पष्ट विरोध करता है यजुर्वेद कहता है:-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय: ।।

परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिए (इमाम) इस (कल्याणीम) कल्याण अर्थात संसार और मुक्ति के सुख देनेहारी (वाचम) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आ वदान) उपदेश करता हूं वैसे तुम भी किया करो।

आर्यसमाज ने अपना यह संदेश गाँव-गाँव में पहुंचाया। अस्पृश्यता निवारण के लिये जहाँ एक ओर अछूतों को शुद्ध जीवन व्यतीत करने मांसाहार मदिरापान इत्यादि के प्रचलित कुव्यसनों को त्यागने की शिक्षा दी गई वहीं उनका यज्ञोपवीत संस्कार कर आर्य समाज के उच्च वर्ण के लोगों ने उनके साथ सार्वजनिक सहभोजों का आयोजन किया गया। रूढ़िवादी लोगों ने उसका घोर विरोध किया और कहीं-कहीं इन सहभोजों में भाग लेने वाले आर्य समाजियों को उनकी बिरादरी के सामूहिक बहिष्कार का सामना करना पड़ा। किन्तु आर्य समाज ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। साथ ही साथ इस कोढ़ को मूल रूप से समाप्त करने के लिये अछूतों के बच्चों को आर्य समाज के गुरुकुलों में शिक्षा के लिए प्रवेश दिलाया गया। छात्र वृत्तियाँ दी गईं। इन संस्थाओं में बिना किसी प्रकार के भेदभाव के यह बच्चे 14 वर्ष तक सवर्ण बच्चों के साथ उठते बैठते सोते, खेलते और शिक्षा ग्रहण करते रहे। गुरुकुलों में किसी भी बच्चे के साथ उसकी जाति या वर्ण नहीं लिखा जाता। इसलिये अन्त तक यह पता ही नहीं लगता कौन ब्राह्मण है कौन क्षत्री अथवा वैश्य, शूद्र या अन्तयज वहाँ से शिक्षा प्राप्त अछूतों के बच्चे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान होकर निकले और आर्य समाज के मंच से ऊँचे वर्ण तक के लोगों को उपदेश देने लगे। इन शास्त्री और आचार्य जैसी शिक्षा परीक्षाओं में उत्तीर्ण लोगों को लोग सहज ही पंडित जी शास्त्री जी अथवा आचार्य जी के नाम से जानने लगे।

गाँधी जी ने भी दयानन्द के अधूरे कार्य को पूर्ण करने का कठिन प्रयास किया। किन्तु उन्होंने अपने कार्य की दिशा धार्मिक न रखकर राजनैतिक तथा आर्थिक रखी। उन्होंने उनको एक अलग नाम हरिजन देकर उनका एक अलग वर्ग ही बना दिया। और इस प्रकार भूलवश अंगरेजों की इस वर्ग के लोगों को हिन्दू समाज से काटने की चाल में वह अनायास ही फँस गये। दयानन्द ने इस क्षेत्र में अपने कार्य को धर्म की बुनियाद पर चलाया। वेदों की प्रमाण पर वर्ण को जन्म से न मान कर कर्म पर आधारित कर जन्म जात वर्ण व्यवस्था को जड़ मूल से ही उखाड़ फेंका। यदि अछूतोद्धार के कार्य को दयानन्द के पदचिन्हों पर चल शिक्षा एवम् धर्म पर आधारित रखा गया होता तो वर्तमान हरिजनों के सामूहिक धर्मान्तरण तथा आरक्षण जैसी राजनैतिक कठिनाइयाँ उत्पन्न ही न हुई होतीं।

दो मनोरंजक घटनाओं का वर्णन अप्रासंगिक न होगा। एक शास्त्री जी आर्य समाज के उत्कृष्ट वैदिक विद्वान थे। वह जन्म से तो अछूत थे किन्तु उनकी विद्वता और शास्त्री योग्यता होने के कारण लोग उनका बहुत आदर करते थे। आर्य समाज के क्षेत्रों में भी बहुत से लोगों को यह पता न था कि व अछूत है। सब लोग उन्हें ब्राह्मण समझते थे। जब यह महाशय संसद सदस्य के चुनाव के लिये मैदान में उतरे तो उन्हें इस बात का प्रमाण देना पड़ा कि वह वास्तव में ब्राह्मण नहीं हरिजन है। आर्य समाज के क्षेत्रों में काफी समय तक यह विनोद का विषय रहा कि कांग्रेस सरकार आर्य समाजी ब्राह्मणों को किस प्रकार हरिजन बनने पर मजबूर कर रही है।

दूसरी घटना का विवरण पुरी के जगद्गुरू शंकराचार्य ने स्वयं दिया था। एक युरोपियन संस्कृत के विद्वान् वैदिक धर्म से प्रभावित होकर जगद्गुरु के पास पहुँचा और उनसे विनती की कि वह उसे हिन्दू धर्म में दीक्षित कर दें। जगद्गुरु ने बड़ी शैली से आर्य समाज की खिल्ली उड़ाने के लिये व्यंगपूर्वक कहा कि वह तो उसे हिन्दू धर्म के निम्नतम स्तर पर शूद्र के रूप में ही स्वीकार कर सकेंगे किन्तु यदि उसे हिन्दू ब्राह्मण बनने का शौक है तो वह आर्य समाज के पास चला जाय। शंकराचार्य का यह व्यंग ही आर्य समाज का गौरव है।

क्रमशः

पृष्ठ ४ का शेष...

और जहाँ तक वहाँ बनी मकबरानुमा इमारत का प्रश्न है, उसके अन्दर खड़े मन्दिर के स्तम्भ उन पर खुदे हुए चिन्ह और लेख और मुख्य द्वार पर अंकित सूर्य और कमल के चिन्ह और पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि खण्डहर बता रहे हैं कि इमारत मूलतः मन्दिर थी मस्जिद नहीं।

यदि इसके बावजूद शहाबुद्दीन तथा मौलाना अब्दुल्ला बुखारी जैसे साम्प्रदायिक तत्व "मैं न मानूं" की रट लगाते रहे, तो उनकी सर्वथा उपेक्षा करनी चाहिए। यह दुर्भाग्य का विषय है कि इस देश की सरकार और अधिकांश समाचार पत्र साम्प्रदायिक और राष्ट्र विरोधी तत्वों को महत्व देने को अपनी प्रगतिशीलता और सम्प्रदाय निरपेक्षता का प्रमाण मानते हैं। वे इस बात को भूलते हैं कि मुसलमानों का एक वर्ग, विशेष रूप में शियों, को मन्दिर निर्माण पर कोई आपत्ति नहीं है। वे यह भी भूलते हैं कि मिश्र और सऊदी अरब में भी सड़कों आदि के निर्माण के लिए अनेक पुरानी और महत्वपूर्ण मस्जिदें भी खुदवा दी गयी हैं।

राम जन्म भूमि के मन्दिर का निर्माण होगा यह निश्चित है। यह कोई साम्प्रदायिक या कानूनी प्रश्न नहीं अपितु राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है। राम भारत माता के महानतम सपूत थे कोई उन्हें विष्णु का अवतार माने या न माने यह उसका निजी मामला है, परन्तु कोई भारतीय राम को राष्ट्र की महानतम विभूति और मानबिन्दु होने से इन्कार नहीं कर सकता।

इसलिए राम जन्म भूमि पर मन्दिर के प्रश्न पर खड़ा किया गया विवाद निरर्थक है, बेमानी है। कुछ लोगों ने इससे दलगत स्वार्थ को पूरा करना चाहा है। इसको जारी रखना किसी के भी हित में नहीं। मन्दिर निर्माण के काम में विलम्ब करना इस निरर्थक विवाद को लम्बा करना होगा। इसलिए मन्दिर निर्माण के कार्य को यथाशीघ्र पूरा करना ही इस विवाद को खत्म करने का सही रास्ता है।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

जल न चढ़ाने देना धर्म विरोधी कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अध्यक्ष तथा "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" के प्रान्तीय महामन्त्री एवं "धर्म रक्षा-महाभियान' के प्रान्तीय संयोजक जयन्तकुमार ने संयुक्त रूप से मेरठ के केली ग्राम के शिवमन्दिर में एक बाल्मीकी को जल न चढ़ाने देने के कार्य को धर्म-विरोधी कार्य कहकर इसकी घोर निन्दा की है। उन्होंने अपने संयुक्त बयान में कहा है इस तरह का कृत्य करने वाले पाखण्डी हैं तथा ऐसे लोगों के कारण ही धर्मान्तरण को बढ़ावा मिलता है।

इन्द्रराज	जयन्त कुमार
प्रधान	महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा	राष्ट्र रक्षा युवा-
उ0प्र0	आन्दोलन, उ0प्र0

एक स्वाधीनता संघर्ष को ५१ साल पूरे हुये।

— ब्रह्मदत्त स्नातक, दिल्ली

1939 से द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ। और उससे वर्षों पहले विश्व की तत्कालीन महाशक्तियों, यानी मित्रदेशों, और धुरी देशों में दुनियां को अपने प्रभाव क्षेत्र में जाने के लिए जोड़-तोड शुरू हो गयी थी। विश्व का कौन-सा भूखण्ड किस महाशक्ति के हिस्से में आएगा उसकी निश्चित रूपरेखा बहुत पहले से बन रही थी। चेम्बरलेन के प्रधानमंत्री काल में बर्तानवी साम्राज्य के विखंडन को भावी नियति मान लिया गया था। उस काल में भारत के राजे-महाराजे नवाब अंगरेजों के सबसे बड़े सहायक और समर्थक थे। इन सबसे अधिक उनका विश्वसनीय था- हैदराबाद का निजाम, जिसे निजाम-उल-मुल्क का खिताब मुगल साम्राज्य के पतन काल में मिल गया था। वस्तुत इसी वंश ने इस देश में अंगरेजों की जड़ जमाई थी। जबकि अन्य रियासती शासकों को"हिज हाइनेस" की उपाधि मिली हुई थी, हैदराबाद के निजाम को "हिज एक्लाल्टेड हाइनेस" और उनके बेटे को प्रिंस आफ वेल्स की तरह "प्रिंस आफ बरार" की उपाधि मिली थी। यह सब उस वंश की गद्दारी और स्वार्थी कार्रवाइयों को उजागर करता है।

अभी द्वितीय महायुद्ध भी शुरू नहीं हुआ था और अंगरेज इस देश में मौजूद थे और पाकिस्तान भी बना नहीं था। पाकिस्तान की कल्पना स्वाधीनता से पूर्व निजाम ने ही अपने राज्य में डाली थी। और वह अपने को अमूर-ए-मजहबी (इस्लामी साम्राज्य) का शासक मानता था। पाठकों को भली-भांति याद होगा कि इस देशद्रोही वंश को राज्य से उतारने के लिए सरदार पटेल को 1948 में पुलिस कार्यवाही करनी पड़ी थी। पाकिस्तानी प्रभाव आज भी पूर्व निजाम रियासत के मुस्लिम घरों में देखा जा सकता है।

देशी रियासतों में उत्तरदायी शासन के बारे में राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस की हमेशा से दुमुंही नीति रही। लुधियाना में सन् 39 में हुए रियासती प्रजा सम्मेलन में निजाम की सल्तनत में चलाए गये आर्य समाज के सत्याग्रह को उचित मानकर भी असामयिक कहा गया और मुंशी अहमद्दीन और शेख अब्दुल्ला ने इसकी पुष्टि की थी। इसके विपरीत ठीक सम्मेलन के दो दिन बाद 18-2-39 को "हरिजन" के अंक में महात्मा गाँधी ने इस सत्याग्रह को सर्वथा उचित ठहराया था। इस प्रकार शुरू से इस रियासत का शासक और इसका पूरा ढांचा घोर साम्राज्यवादी और संप्रदायवादी रहा, जिसके कारण राज्य की 88 प्रतिशत हिन्दू जनता नागरिक और धार्मिक अधिकारों से सर्वथा वंचित रही। राजनैतिक अधिकार तो गैर-मुस्लिमों के हाथ में नहीं के बराबर थे। 320 लम्बा और 270 मील चोड़ाई वाला यह राज्य अब आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में बंट गया है।

निजाम और उसके मुस्लिम लीगी हिमायती भारत में अंग्रेजी शासन का जुआ उतरते ही उसे हैदराबाद को स्वाधीन बनाने की जुगाड में थे। 1930-39 में जन प्रतिनिधियों के इस आक्रोश ने अब धीरे-धीरे शक्ल लेनी शुरू कर दी थी। स्टेट कांग्रेस, नागरिक स्वतन्त्रता समिति और हिन्दू महासभा ने उत्तरदायी शासन के लिये अपनी कार्यवाइयां सीमित पैमाने पर शुरू कर दी थीं, परन्तु वास्तविक जान आंदोलन में तब आई जबकि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज की ओर से सत्याग्रह आंदोलन को शुरूआत रखी।

अब से 2 वर्ष पूर्व पहली बार ऋषि निर्वाण समारोह पर अजमेर के आर्य महासम्मेलन में एकत्र आर्य समाज सत्याग्रह (1939) में भाग लेने वालों का सार्वदेशिक सम्मान माल्यार्पण एवं भेंट का कार्यक्रम परोपकारिणी सभा, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव बम्बई आर्य समाज के गणमान्य प्रतिनिधियों द्वारा किया गया था। हमने अपनी जेब से तब एक मात्र मुस्लिम सत्याग्रही सैयद फैयाज अली जी को 101 रू0 भेंट किये थे। तब आर्यसमाज कैसरगंज ने भी उनका सम्मान आयोजित किया था। इस पहली शुरूआत के बाद गत वर्ष आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली ने इस दिशा में हैदराबाद सत्याग्रह दिवस 15 अगस्त के अवसर पर वहां आये। इन स्वतन्त्रता सेनानियों को माला एवं शाल भेंट कर सम्मान एव दिवंगतों को श्रद्धांजलि भेंट की। दीवान हाल उन आर्य समाजों में से एक है जो सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित आर्य पर्व पद्धति मे उक्त पर्व को निकाल देने पर भी उसे सदा मनाती चली आ रही है।

हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह स्वधीनता सेनानी समिति, दिल्ली की ओर से आर्य समाज और राष्ट्र में नया प्राण फूंकने के लिए सार्वदेशिक सभा को राष्ट्रव्यापी स्तर पर, और प्रान्तीय सभाओं को प्रान्त स्तर पर समिति की ओर से प्रति वर्ष तथा चालू वर्ष में स्वर्ण जयन्ती (17 अगस्त 89-16 अगस्त-90) मनाने के लिये अनुरोध किया गया। आकाशवाणी तथा समाचार पत्रों में हिन्दी एवं अंग्रेजी में लेख प्रसारित कराये गये।

इस प्रकार समस्त आर्य जनता हैदराबाद सत्याग्रह आर्य (हिन्दुओं) का स्वाधीनता संघर्ष मानती है।



साहित्य-समीक्षा

राज्यपाल द्वारा "रामचरित मानस जीवन के संग" का विमोचन

रामायण और महाभारत हमारी संस्कृति के महान धरोहर हैं। रामचरित मानस अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ है, इसका पाठ देश के कोने-कोने में घर-घर में होता है। इसके आदर्शों पर चलकर ही मानवमात्र का कल्याण संभव है। राम हमारे जन-जन के प्रिय हैं। उक्त विचार उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री बी0सत्यनारायण रेड्डी जी ने पं0 दीनानाथ शास्त्री द्वारा विरचित "राम चरित मानस जीवन के संग" ग्रन्थ का राजभवन में 6 मई को विमोचन करते हुये व्यक्त किये। उन्होंने आगे कहा कि पं0 दीनानाथ शास्त्री ने मानस के सातों काण्डों से सोलह संस्कारों तथा जीवन के सभी अवसरों के लिये प्रासंगिक अंशों का प्रथम बार संकलन प्रस्तुत कर स्तुत्य कार्य किया है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिये आर्य समाज तथा वैदिक साहित्य प्रकाशन की अग्रणी संस्था "स्वामी सत्य प्रकाश प्रतिष्ठान रायबरेली" बधाई की पात्र है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रथम बीज बोया था। आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आज के समय में समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों आदि को दूर करने के लिये इस समाज की विशेष आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रतिपादित सोलह संस्कारों के द्वारा मानव जीवन आदर्श बनता है। इस सन्दर्भ में यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा, इस रामचरित मानस जीवन के संग ग्रन्थ को देखने से लगता है कि पं0 दीनानाथ शास्त्री ने रामचरित मानस का पूरा निचोड़ दे दिया है। यह पुस्तक अवश्य ही बहुत लोकप्रिय होगी।

इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द बालसदन, मोती नगर, लखनऊ के संवासियों ने सस्वर वेद मन्त्रों का पाठ किया, जिससे जन-मानस मन्त्र-मुग्ध हो उठा। संवासियों ने संस्कृत में स्वागत गीत द्वारा महामहिम का अभिनन्दन किया। स्वामी सत्य प्रकाश प्रतिष्ठान के अध्यक्ष उद्योगपति श्री सुशील कुमार अग्रवाल ने प्रकाशित साहित्य महामहिम को भेंट किया। पं0 दीनानाथ शास्त्री ने प्रतिष्ठान की गतिविधियों से परिचय कराया।

— इन्द्रदेव पाठक
प्रबंध सम्पादक

वृहद् आर्य महा सम्मेलन

देश में धर्मपरिवर्तन एवं वर्ग संघर्ष को दृष्टि में रखते हुए आर्य उपप्रतिनिधि-सभा जिला- मेरठ ने दि0- 2,3,4 सितम्बर 1990 को रामलीला मैदान मवाना (मेरठ) में एक वृहद आर्य-महा सम्मेलन करने का निश्चय किया है। जिसमें आर्यजगत् के महान नेता, सन्यासी, महोपदेशक और उपदेशक भाग लेंगे।

साधारण जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में इस सम्मेलन में उपस्थित हो कर धर्मान्तरण एवं विघटन के कार्यों को रोकने में सहयोग प्रदान करें।

इन्द्रराज
मन्त्री

कृष्ण के शोभन चरित्र से

— डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी
बरेली

कृष्ण के शोभन चरित से,
क्यों न उर पावन बनाया?

योगिवर को भूलकर,
किस कृष्ण की चर्चा चलाई?
स्वाँग करता गोपियों संग,
मद भरी बंशी बजाई।
रुक्मिणी करके उपेक्षित,
संग राधा का दिखाया।
दूध, घृत की थी प्रचुरता,
क्यों भला माखन-चुराते?
उस जितेन्द्रिय को सहस्रों
नारियों संग क्यों दिखाते?
धर्मरक्षक थे, उन्हें ही,
धर्म से वंचित दिखाया।

वास गुरुकुल में किया था,
वेद का आलोक पाने।
बन गया साधक अथक
भूलोक के तम को मिटाने।
नाम की जन्माष्टमी है,
किन्तु हरि का यश न गाया।
योग के वे गुरु रहे थे,
रास लीला तुम समझते।
चित्त की जो वृत्तियाँ थीं
गोपियाँ उनको न कहते।
लोक सेवा बात भूले।
कह रहे पर्वत उठाया।

नाग नर करके पलायित,
प्रात हृदयों में बसाया।
छोड़कर टापू गया जब,
हर्ष था वृज ने मनाया।
किन्तु तुमने "सर्प" कहकर,
बस स्वयं को ही भ्रमाया।
आज भी चाणूर, मुष्ठिक
किन्तु तुम दुर्बल बने हो।
पी रहे मदघूँट प्रतिपल।
पंक में रहते सने हो।
है कुवलयापीड प्रस्तुत,
क्यों कवच निज को दिखाया?

उर्मियाँ आतंकवादी,
आज चहुँ वर्धित बनी हैं।
कंस और शिशुपाल बढ़ते,
रक्त से राहें सनी हैं।
किन्तु जड़ के तुम पुजारी
ज्योतिमय दीपक बुझाया।
पूत भारतभूमि है वृज,
जरासन्धों की चढ़ाई।
फूट की ज्वाला सुलगती,
पर नहीं निद्रा भगाई।
एकता का स्वप्न धूमिल,
क्यों विषमता को बढ़ाया?

अस्तु। अब भी जाग जाओ,
है समय अविराम सरिता।
काल विजयी और मनस्वी,
है बनाती वेद-कविता
देवता की दिव्यता को
क्यों न अपने में जगाया?

जिला सभा आजमगढ़ का निर्वाचन

प्रधान - श्री सीताराम शास्त्री
मन्त्री - श्री गोविन्दास एडवोकेट
कोषा० - श्री रामप्रसाद आर्य

व्यंग्य

— पूर्णप्रकाश मित्तल
बिजनौर

रोको बढ़ती बाढ़, वरना बहजाओगे।
होश सम्भालो आर्यो,वरना मिटजाओगे।।
पढ़ो-पढ़ो नित की घटनाएं,
जो घटें देश के अन्दर।
खाली स्थान पंजाब हो रहा,
कश्मीर को मिटाएं बन्दर।।
असला भारी ले जो घुसते,
उनको कैसे मिटाओगे।
रोको बढ़ती बाढ़,
वरना बहजाओगे।।
आँख खोलकर तुम देखो,
संख्या तुम्हारी घट रही।
देशद्रोही गद्दारों की टोली,
चक्रवर्ती दर से बढ़ रही।।
अपने देश में कुछ वर्षों में,
अल्पसंख्यक बन जाओगे।
रोको बढ़ती बाढ़
वरना बहजाओगे।।
अपने चक्कर में फँसे पड़े,
देश का चक्कर छोड़ दिया।
दुश्मन सिर पर आन डटा,
खड्ग चलाना छोड़ दिया।।
पुंछ, राजौरी डोडा, काश्मीर को
भारत से कटवाओगे।
रोको बढ़ती बाढ़,
वरना बहजाओगे।।
आर्यो घाटी दहक रही,
चहुँओर उठी हैं लपटें
भस्म कर रही स्वर्ण भू को,
अलगाववादी झपटें।।
पाक गति सीमा पर रोको,
वरना हाथ मसल रह जाओगे।

रोको बढ़ती बाढ़,
वरना बहजाओगे।
कामधेनु का दूध पिला,
शासन जिसको पाल रहा।
वही गद्दार धीरे-धीरे,
देश की जड़ को काट रहा।।
हार पर भारत की जो खुश होता,
उसको कैसे भगाओगे ।।
रोको बढ़ती बाढ़,
वरना बहजाओगे।।
शासन लुटा रहा कुर्सी,
तुमको धक्का दे कर।
तुष्टीकरण जोरों पर है,
साम्प्रदायिक तुम को कह कर।।
चेतो अब तो दीवानों,
वरना पछताओगे।
रोको बढ़ती बाढ़,
वरना बहजाओगे।।

भाई! कुछ तो सोचो

— विश्वनाथ

भैया जी। तुम निष्पक्ष रहो।
तुम शासन-सत्ता धारी हो।
तुम मुस्लिम-जनता से दिखलाते
रहते फिर क्यों यारी हो?
तुम अक्सर पक्षपात करते हो।
इससे दिल दुख जाता है।
इस प्रकार हमको पीड़ा देकर
तुम्हें क्या मजा आता है?

उनकी शैतानी – साम्प्रदायिकता
तुमको न दिखाती है।
हमको ही बुरा-भला कहने
में शक्ति तुम्हारी जाती है।
तुम मुस्लिम-तुष्टीकरण-नीति को
हा। कितनी अपनाओगे।
तुम आर्यों को,हिन्दू-जन को
हा। कितना अधिक दबाओगे?

भाई। कुछ तो सोचो-समझो।
तुम मन में तनिक विचार करो।
तुम सच्चे देशभक्त-जन के
मन पर मत कभु। प्रहार करो।
तुम तुष्टीकरण-नीति छोड़ो।
मत सच्चाई से मुँह मोड़ो।
थे जन्मे राम, अयोध्या में।
इस सच्चाई को मत तोड़ो।

भाई जी। तुम निष्पक्ष रहो।
तुम शासन-सत्ता-धारी हो।
तुम न्याय-धर्म के रक्षक हो।
तुम समरथ हो। अधिकारी हो।

चेतना प्राण मन

— देवनारायण भारद्वाज

यस्मिन्नृच: साम यजूंषि यस्मिन्‌-प्रतिष्ठता रथनाभाविवारा । यस्मिंश्चित्त सर्व मोतं प्रजानां तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु।।
य० 34/5

कर रहा ऋचाओं का अर्चन,
वैदिक विधाओं का वर्तन,
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।
जग का ऋग्वेद ज्ञान देता
यजुर्वेद विधि कर्म सुचेता
सामवेद से प्राप्त अर्चना
वेद सु जीवन सूत्र प्रणेता।

श्रुतियों से मिलन कराता मन,
जग में लाता है संजीवन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।
भू-अन्तरिक्ष द्यौ लोक ज्ञान
वेदों के वर्णित विधि विधान
मन से ही हमको मिल पाते
इस जगती के चेतना प्राण।

सारी चिन्ता और चेतना,
मन से ही होते सब चिन्तन
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।
रथ-नाभि मध्य जैसे आरे
ओत प्रोत दे रहे सहारे
धागे के ताने बानों में
जैसे बन जाय वस्त्र सारे।

हो रहे कर्म में ओत प्रोत,
मन के हैं सारे गठबन्धन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ,
मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।

प्यासे की तुम प्यास बुझाते

ओ३म् त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्त्त दधासि श्रवसे दिवे दिवे
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने मयःकृणोषि प्रय आच सूरय
- ऋग्वेद 1-31-7

भाव गीत

प्यासे की तुम प्यास बुझाते तृषितों की हो तृषा मिटाते
जन्म मरण के चक्रवात से नाथ हमें हो तुम्हीं छुड़ाते

हमें मोक्ष पद पाने को दिनरात ज्ञान बिखराते हो
ज्ञानी विज्ञानी जन को तुम अमृत पान कराते हो

हतभाग्य हमारा यदि हम तेरी दया दृष्टि नहिं पाते हैं
अपने दुष्कर्मों के कारण खुद उसको ठुकराते हैं

परम कृपालु दया सिन्धु तव करुणा का अहसास करूं
वेद ज्ञान की दिव्य प्रभा से तुम पर मैं विश्वास करूं

स्वाध्यायशील बन जाऊँ भगवन ऐसी शक्ति हमें दे दो
सत्या सत्य विचारवान् कर अनुपम भक्ति हमें दे दो

यही कामना, प्रियतम मेरी रखना छाया तले बिठाके
तव चरणों में अर्पण कर दूँ अपना जीवन स्वर्ग बनाके

——आचार्य वेदव्रत अवस्थी वेदमन्दिर हिन्दनगर, लखनऊ-5

हम को देश पुकार रहा है

रामलाल तिवारी "रसिक"
जगतपुर (मैनपुरी)

उठो राष्ट्र के अमर पुजारी
हमको देश पुकार रहा है।

छाया बहुत घना अँधियारा
आँधी मचल-मचल कर चलती
कूल-कंगारे काट-काट कर
मदमाती है नदी मचलती।

साहस करके आगे आओ,
जन-जन जीवन हार रहा है।

ढहते पर्वत मिटती झीलें
चट्टानें अब टूट रही हैं
जीवन में हरियाली कैसी
विष की बेलें फूट रही हैं।

उठो, भरत-भू के सेनानी
हमको देश निहार रहा है।

जीवन - मृत्यु लड़े है जब-जब
विजयी सदा हुआ है जीवन।
चाहे धूल - धूधर मे लथ पथ
अथवा घावों से जर्जर तन।

अन्तिम विजय हमारी होगी
रोम - रोम हुँकार रहा है।।

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- "मेरी उम्र 80 साल है। मुझे गैस तथा कब्ज रहता है। दवा लिखकर जरूर से जरूर पत्र द्वारा भेज देवें।"

- रामेश्वर प्रसाद आर्य,
आर्यसमाजखागा (फतेहपुर) (उ0प्र0

समाधान- रात्रि भोजन के आधा घण्टा बाद बड़ी हरड़ का चूर्ण लगभग 10 ग्राम फाँक कर गुनगुन पानी पियें। प्रत्येक भोजन बाद गारोलिन 2 गोली लेकर, ओजस (चरक) 2 ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। बिना छने आटा की रोटी और रेशेवाला साग कब्ज को दूर करता है। ब्लडप्रेशर के लिये सपेरा (चरक) दो गोली प्रात - मध्याह्न- सायं पानी से लिया करें। जब ब्लडप्रेशर सामान्य हो जाय, तो कुछ दिनों तक एक गोली तीन- बार, दो-बार फिर एक-बार लेते रहकर बन्द करें। उपचारपत्र की कार्बन प्रतिलिपि आपके द्वारा भेजें डाकलिफाफा में प्रेषित कर रहा हूँ।

--

(2)

समस्या- मैं आर्यमित्र का नियमित पाठक हूँ। स्वामीजी आपने आर्यमित्र पत्रिका को "स्वास्थ्य-सुधा" के द्वारा आकर्षण ही नहीं बढ़ाया, बल्कि अनेक रोगियों को सन्तोष पहुँचाया है। मैं कील मुहाँसों तथा इनके कारण काले- भद्दे निशानों का उपचार चाहता हूँ। कोई अच्छा सस्ता- घरेलू उपाय बतायें।"

- संजय आर्य, बहादुराबाद,
जनपद (हरिद्वार) पिन- 249402

समाधान- मुहासों को फोड़ें नहीं। सलाद में गाजर का नियमित प्रयोग करें। काले-भूरे धब्बे और मुहाँसे ठीक करने हेतु उपटन प्रस्तुत है -

बाजरे का आटा 100 ग्राम सन्तरे के सूखे छिलके 100 ग्राम, पिसी हल्दी 10 ग्राम और कुछ तुलसी की सूखी पत्तियाँ। सभी को कूटपीस कर मिला लें। प्रतिदिन दो चम्मच इस चूर्ण में नीबू रस और पानी मिलाकर आटा की भाँति गूँध कर उपटन बना लें। इसे मुखड़ा पर लेप कर सूखने दें। फिर उपटन को हाथ से मसलकर छुड़ायें। पानी से मुखड़ा धोकर तौलिया में पोछें। ऐसा कम से कम तीन सप्ताह तक जारी रखें।

रोग विवरण के साथ तीन बन्द लिफाफे निम्न पता पर भेजें -

- गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ़

गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर) में कक्षा-६ का शुभारम्भ

'गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार" के पाठ्यक्रमानुसार गुरुकुल आश्रम में कक्षा-6 का शुभारम्भ। छात्र 31 अगस्त 1990 तक प्रविष्ट किये जायेंगे। गुरुकुल आश्रम को 140 रुपये मासिक देने वाले (पालक-सदस्य) एक छात्र को प्रविष्ट करा सकते हैं। छात्र को आवास-शिक्षण-भोजन-दूध-घी-मंजन-तेल-साबुन-स्याही- क्षौर की सुविधा मिलेगी।

पुस्तक-कापी-वस्त्र-बिस्तर का व्यय अभिभावक पर रहेगा। प्रवेश शुल्क- 380 रुपये है।

छात्रों की शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक उन्नति हेतु मुख्याधिष्ठाता आचार्य जयराम त्यागी (पूर्व छात्र व अधिष्ठाता-दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार), धर्मशिक्षक प0 ब्रह्मप्रकाश बाजपेयी पं0 आर्यभूषण बाजपेयी और सन्त हरिचैतन्य ने अपनी सेवायें समर्पित की हैं।

दूल-भूल (कानपुर) में त्यागी जी द्वारा संस्थापित परिवर्तित किया जा रहा है।

- गुरुकुलानन्द सरस्वती
ब्रह्मचारी
कुलपति- गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त
बिठूर (कानपुर)

: आर्य समाज चितरी आसफपुर (बदायूँ)

प्रधान- श्री नर सिंह आर्य
मन्त्री- श्री ओंकार शर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री सरनाम सिंह

भारत भा-रत हो

कीर्ति विशेष धरा ध्रुव धाम की,
देश की जीवन - गाथ बने।
सत्य दया शुचि शौर्य उदार का,
ताप - विनाशक क्वाथ बने।
निर्मलगंग-झार अनुभूति का
पुण्य - पयोनिधि पाथ बने।
भारत भा-रत भाव-चरित्र से,
शान्ति - सुधी रघुनाथ बने।

ये पुरुषार्थ को अर्थ समर्थ,
धनुर्धर पार्थ सुमादृत हो।
गीता पुनीता के गायक कृष्ण
सी पूर्ण कला प्रतिभावृत हो।
हो नवजीवन संकुल जीव का
जीवन, जी - बन जाग्रत हो।
ज्ञान - मरीचियों से जग में
सविता सम भारत भा-रत हो।

—डॉ० गणेशदत्त सारस्वत
सीतापुर

पनवारी में जाट-जाटव संघर्ष

—जयन्त कुमार पाण्डेय
महामन्त्री
राष्ट्ररक्षा युवा आंदोलन, उ0प्र0।

पनवारी (आगरा) जाट-जाटव संघर्ष का प्रत्यक्ष अध्ययन सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी के निर्देशानुसार मैं उनके साथ दिनांक 11-7-90 की रात्रि को आगरा के लिए रवाना हुआ। हमारे साथ श्री चौ0 धर्मपाल बड़ावद भी थे। हम तीनों 12-7-90 को प्रातः 4 बजे आर्य समाज नामनेर आगरा पहुँचे। थोड़ा विश्राम करने के उपरान्त श्री रोशन लाल जी गुप्त आदि आर्य बन्धुओं से मन्त्रणा करने के पश्चात् निश्चय हुआ कि आर्य समाज का एक शिष्ट मंडल सभा प्रधान जी के नेतृत्व में पनवारी ग्राम चलकर वहां की स्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन करें।

थोड़ी देर में अन्य आर्य अधिकारी भी आ गये। इस प्रकार श्री रोशन लाल जी, श्री हरि गोपाल जी उप प्रधान सभा, श्री चन्द्र जी गुप्त, श्री पूर्ण चन्द्र जी, श्री प्रधानाचार्य दयानन्द विद्या मन्दिर श्री विश्वम्भर प्रताप चतुर्वेदी क्रान्तिकारी आचार्य एवं अन्य आर्य जनों का एक शिष्ट मंडल श्री सभा प्रधान जी के नेतृत्व में दोपहर 12·30 बजे पनवारी ग्राम पहुँचा। एक दूकान पर जब कुछ पूछा तो पता चला कि हम जाट-भाईयों से बात कर रहे हैं और वे हमें कुछ सहमे हुये लगे। उन्हीं से पता चला कि ग्राम के कुछ प्रमुख लोग जमानत के लिए न्यायालय गए हुये हैं। कुछ आगे चलकर ग्राम के पूर्व प्रधान के घर एकत्र हुये। जब उन्हें विश्वास हुआ कि हमारा शिष्ट मंडल एक आर्य समाज का शिष्ट मंडल है तब उन्होंने खुलकर सारी बाते बताई। उन्होंने बताया कि ग्राम में लगभग 100 परिवार जाटवों के हैं और उनकी बस्ती भी थोड़ी पृथक है। और उसका रास्ता भी पृथक से जाता है। जाटव भाईयों की एक बारात चढ़नी थी परन्तु उन्होंने पृथक रास्ते को छोड़कर यह निश्चय किया कि बारात जाट बस्ती वाले क्षेत्र से जायेगी। उस रास्ते पर एक जाट परिवार में एक लड़की की सगाई हो चुकी थी। ग्राम में ऐसा अंध विश्वास है कि सगाई वाले घर के सामने से बारात का गुजरना अपशगुन माना जाता है परन्तु जाटव बन्धुओं को रोकने पर भी उन्होंने जबरजस्ती उस बारात को उसी रास्ते से निकाला। इससे पूर्व उन्हें धमकी दी गई थी कि उनकी बारात को कोई रोक नहीं सकता। बस यह कारण एक बहुत बड़ी दुर्घटना के रूप में हो गया।

हमें यह भी बताया गया कि यह जातीय संघर्ष एक सोचे समझे षडयन्त्र का परिणाम है। जाटवों ने अपने घर पहले से ही खाली करने प्रारम्भ कर दिये थे। उनसे जब ग्राम प्रधान ने पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं तो उन्होंने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। यह पूछे जाने पर कि इस समय ग्राम में कितने जाटव परिवार हैं तो पता चला कि लगभग 5 हैं। शेष सब ग्राम से पलायन कर चुके हैं। जब पूछा गया कि पहले किसने की तो पता चला कि जाटवों के समूह से ही गोली चली जिसमें एक जाट युवक तो स्थान पर ही मर गया और दो ने हास्पिटल में दम तोड़ दिया। कुछ जाट घायल भी हुए। यह पूछे जाने पर कि और कौन-कौन पिछड़ी जातियाँ ग्राम में रहती हैं बताया गया कि ग्राम में कुम्हार, नाई, धोबी और मेहत्तर आदियों के घर हैं परन्तु वे सब इस संघर्ष से दूर रहे हैं। और निर्भय होकर आज भी ग्राम में बस रहे हैं। पूछने पर यह भी पता चला कि जाटवों के कुछ राजनैतिक लोगों के कारण ही यह इतनी बड़ी दुर्घटना हुई है। यह पूछे जाने पर कि समाचार पत्रों में आया कि जाट धर्म परिवर्तन करने जा रहे हैं, जाटों ने बताया कि ऐसा कुछ नहीं है। जाट अपने धर्म में ही जीयेंगे और मरेंगे। यह हो सकता है कि जाटवों की बड़े पैमाने पर धर्म-परिवर्तन की धमकी के विरुद्ध किसी हमारे राजनैतिक नेता ने भी यह धमकी दी हो हमें यह भी बताया गया कि जगदीशपुर जो कि जाटवों की बस्ती है पहले वहां पर जाटों के साथ अमानवीय ज्यादती हुई उसके परिणाम स्वरूप ही बाद में ग्राम में बहुत तनाव हो गया। यह पूछे जाने पर कि ग्राम में जाटवों की झोपड़ियाँ किसने जलाईं। हमें जाटों ने बताया कि पहले जाटव अपना सामान ले गए बाद में उन्होंने अपने आप ही झोपड़ियों में आग लगाई।

सारी बातें सुनने पर हम इस परिणाम पर पहुँचे कि यह बहुत बड़ी दुर्घटना अन्धविश्वास परस्पर जातीय ऊँचनीच तथा अधिकांश राजनीति का ही परिणाम है कुछ वोटों के चक्र में जाटव भाइयों को भड़का कर इतना बड़ा काण्ड करवा दिया कि यह देश की रक्षा अखण्डता एवं प्रभुसत्ता के लिए बहुत बड़ी चुनौती है।

शिष्ट मंडल ने जाटवों के बीच जाना और जले हुए मकानों को स्वयं मेव देखना भी अपना कर्तव्य समझा। जब हम वहां गये तो यह देखा कि मकान की छत तो जली हुई है परन्तु नीचे बिखरी चीजों को आग ने बिल्कुल नहीं छुआ है। पूरी जाटव बस्ती सुनसान थी। उस बस्ती में ही एक स्थान पर हमने कुछ व्यक्तियों और महिलाओं को देखा पूछने पर पता चला कि वे बाल्मीकि थीं। उनसे जब संघर्ष के विषय में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि हमारा इस संघर्ष से कोई वास्ता नहीं है। उपरोक्त जाट-जाटव संघर्ष के विषय में किसी भी प्रकार की टिप्पणी करने से उन्होंने इन्कार कर दिया।

वहाँ पर ही तीन जाटव महिलाएं मिलीं। वे भी कुछ सामान लेने आई थीं। चारपाई और तख्ते के विषय में बाल्मीकि भाई और बहनें उनकी मदद कर रहे थे। उनमें से सोमवती और भगवान देवी ने पूछने पर कुछ सहमे हुये स्वर में बताया कि जाटों ने हमारे घर फूँक दिये। और सामान लूट लिया। जब पूछा गया कि जब अब आप सामान लेने आई हैं तो किसी जाट ने आपको कुछ कहा तो नहीं तो उन्होंने बताया कि अब तो कोई बात नहीं हुई। उन्होंने यह भी बताया कि ग्राम में काम नहीं है और खेतों में हमें टट्टी पेशाब जाने की भी दिक्कत है। हमें यह भी पता चला कि जाटवों में ही दो ग्रुप हैं एक धर्म-परिवर्तन के पक्ष में और दूसरा विरोध में।

बहरहाल देश में बड़े पैमाने पर धर्म-परिवर्तन एक जबरजस्त खतरे की घंटी है। जो राजनैतिक दलाल इस जाति संघर्ष को करवा कर धर्म परिवर्तन की बात करते हैं वे देश का पूरा अहित कर रहे हैं। जातिवाद के आधार पर किसी को छोटा और नीच समझना और उसे मानवीय अधिकारों से वंचित करना एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। विदेशी शक्तियाँ हमारी कमजोरियों का और परस्पर की घृणा और फूट का लाभ उठा कर धर्म-परिवर्तन के द्वारा देश को तोड़ देना चाहती हैं।

आर्य समाज एक सजग प्रहरी के समान हिन्दुओं के सवर्ण और असवर्ण लोगों को समझाता है कि इन राजनैतिक व्यक्तियों के चंगुल से निकल कर परस्पर ऊँच-नीच को छोड़कर प्रेम भाव से देश में रहें। और यदि पुराने संस्कारों के परिणाम स्वरूप कहीं पर अन्याय, शोषण और अत्याचार हो रहा है तो धर्म-परिवर्तन उसका कोई समाधान नहीं है। उसका समाधन तो उस अत्याचार का मुकाबला करना है और आर्य समाज तो सदैव निर्बल और पिछड़े वर्ग के साथ रहा है और आगे भी रहेगा।

परन्तु साथ साथ किसी राजनैतिक षडयन्त्र के कारण निर्बल वर्ग की भावनाओं को भड़काकर कहीं पर अत्याचार और हिंसा होती है तो आर्य समाज उसको भी सहन नहीं कर सकता।

जिस देश रूपी नाव में हम सब बैठे हैं कि यदि किसी की भी गलती से नाव डूब गई तो सभी डूब जायेंगे। कोई भी नहीं बचेगा। आर्य समाज समस्त भारत के नागरिकों को इस खतरे से सचेत करना चाहता है।

आईए प्रत्येक भारतवासी के लिए आर्य समाज मंदिर खुले हुए हैं, प्रेम के द्वार खुले हैं जहां न कोई ऊँच-नीच है न घृणा, न हिंसा।

आर्य समाज सब बन्धुओं को हृदय से स्वागत करता है। ◘

आर्य समाज किशनी महेरा (बदायूँ)

प्रधान- श्री जयप्रकाश आर्य
मन्त्री- श्री पूर्ण प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री विश्वामित्र आर्य

आर्यसमाज उझानी (बदायूँ)

प्रधान- श्री हरिशचन्द्र आर्य मिश्रा
मन्त्री- श्री अशोक कुमार महेश्वरी
कोषाध्यक्ष- श्री राम प्रकाश वर्मा

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७९

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
भाद्रपद कृष्ण ६ संवत २०४७ वि०
दिनांक १२ अगस्त १९९०

दूरभाष
२४५९९३

सेवा में

आर्य समाज जी.टी.रोड मोदीनगर का उद्घाटन समारोह

आर्य समाज मोदीनगर (जी०टी०रोड) का एवं दो निःशुल्क चिकित्सालय केन्द्रों का उद्घाटन मोदी उद्योग, मोदीनगर के मालिक श्री के०एन०मोदी द्वारा किया गया। इसके पूर्व यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पं० इन्द्रराज जी थे। यज्ञ के पश्चात पं० इन्द्रराज जी तथा धर्मरक्षा अभियान के प्रांतीय संयोजक जयन्त कुमार के प्रवचन हुये।

इस अवसर पर अपने प्रवचन में सभा प्रधान पं० इन्द्रराज जी ने आर्य समाज जी०टी०रोड मोदीनगर के भव्य भवन का निर्माण करने के लिए श्री अशर्फी लाल जी बजाज का तथा उनके सहयोगियों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आर्य समाज मन्दिर में बने निःशुल्क चिकित्सालय से समाज के कमजोर तथा गरीब वर्ग लाभ उठा सकेंगे। उन्होंने आगे कहा कि धर्म परिवर्तन में विधर्मी शक्तियों शिक्षा तथा चिकित्सा को प्रमुख साधन बनाये हुये हैं। अतः हमें भी इस दिशा में कार्यशील होकर उनके प्रयास को विफल करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जातिगत संघर्षों के कारण धर्म परिवर्तन कर हिन्दू धर्म से पलायन की गतिविधियों में तेजी आई है। धर्म समाज मन्दिरों का उपयोग समस्त हिन्दू समाज में जातिगत सौहार्द उत्पन्न करने के कार्य के लिए करना चाहिए। उन्होंने आगरा में हुए जाट-जाटव संघर्ष का [illegible] दिया तथा इससे होने वाले धर्म परिवर्तन की सम्भावना पर अपनी चिन्ता व्यक्त की।

इस अवसर पर धर्म रक्षा महाभियान के प्रांतीय संयोजक तथा राष्ट्र रक्षा युवा आंदोलन के महामंत्री जयन्त कुमार ने आर्य समाजों के माध्यम से युवाओं को जातिवाद, अंधविश्वास, नशाखोरी और दिशाहीनता से मुक्त कर रचनात्मक तथा क्रियात्मक कार्य कर अपने वास्तविक कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज मन्दिर निर्माण से ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेना भयंकर भूल है बल्कि आर्य समाज मन्दिर का निर्माण तो एक प्रारम्भ है।

सम्मान्य व्यक्तियों ने तथा आर्य समाज के अधिकारियों ने माल्यार्पण द्वारा उनका स्वागत किया। समारोह की अध्यक्षता श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने की।

— जयन्त कुमार पाण्डेय —

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.स.२२४१/५७) भाद्रपद शुक्ल-६ रविवार सवत् २०४७ वि. दिनांक २६ अगस्त १६६० (घोषणापत्र सं.७/२२-२-२५)



श्रेयपथ पर बढ़े चलो

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि आप्नुहि श्रेयां समति समं क्राम।।

हे मेरे अमरपुत्रों! तुम शक्तिशाली बन जाओ, तेजस्वी बन जाओ, आनन्दमय हो जाओ, ज्योतिस्वरूप हो जाओ और श्रेष्ठता को प्राप्त करते हुए श्रेष्ठों को भी लांघते हुए श्रेयमार्ग पर आगे बढ़ते चलो।

--

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१ रू. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष
अंक - ३३

मध्य एशिया में युद्ध के मंडराते बादल

पिछले दिनों ईराक के राष्ट्रपति **श्री सद्दाम हुसैन** ने अपनी सेनाओं को आदेश देकर अपने पड़ोसी, तेल से मालामाल धनीदेश कुवैत, पर अचानक आक्रमण करके कुछ ही घण्टों में उस पर अधिकार कर लिया और तीसरे ही दिन उसका विलय ईराक में किए जाने की घोषणा भी कर दी। इस हमले की सर्वत्र भर्त्सना हुई है। सऊदी अरब, मिस्र, अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, फ्रान्स आदि सभी देशों ने यहाँ तक कि सोवियत रूस, जो ईराक का अभिन्न मित्र माना जाता है और जो ईराक को शस्त्र सप्लाई करने वाला प्रमुख देश है, उसने भी भर्त्सना की है। कुवैत पर ईराकी आक्रमण का समाचार मिलते ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की मीटिंग हुई जिसमें सर्वसम्मति से ईराकी सेनाओं को तुरन्त वापस बुलाने तथा ईराक में कुवैत के विलय को अवैध करार देने का सर्वसम्मत प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इसके अतिरिक्त अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने इस आक्रमण को अत्यन्त गम्भीरता से लिया है और ब्रिटेन, जापान, फ्रान्स तथा अन्य सभी प्रमुख देशों से ईराक की आर्थिक नाकेबन्दी किए जाने की अपील की है। जिसे लगभग सभी देशों ने स्वीकार भी कर लिया है और एक तरह से ईराक की आर्थिक नाकेबन्दी शुरु कर दी गई है। अमेरिका ने अपनी जलथल वायुसेना भी सऊदी अरब के पास लाकर इकट्ठा कर दी है। और यदि ईराक ने विलय की घोषणा वापस लेते हुए अपनी सेनाएं कुवैत से वापस नहीं बुलाईं तो स्थिति किसी भी समय विस्फोटक हो सकती है। यदि युद्ध हुआ तो आशंका इस बात की है कि कहीं यह विश्वयुद्ध के रूप में संसार के बड़े भूभाग को अपनी चपेट में न ले ले। सबसे विचित्र बात यह है कि ईराक को अरबों डालर के शस्त्र मुहैय्या करने वाला सोवियत रूस भी ईराक का साथ नहीं दे रहा है क्योंकि तेल के इन धनी देशों पर विश्व के सभी राष्ट्रों की आँखें लगी हुई हैं और कोई भी देश इनको नाराज नहीं करना चाहता है।

•

पाकिस्तान पुन: सैनिक शासन की ओर

पाकिस्तान के राष्ट्रपति **गुलाम इसहाक खान** ने पाकिस्तान की प्रधानमन्त्री श्रीमती-बेनज़ीर भुट्टो को बर्खास्त करके वहाँ राष्ट्रीय एसेम्बली तथा चारों प्रान्तों की असेम्बलियों को भंग करके आपत्काल की घोषणा कर दी है और विपक्ष के नेता श्री गुलाम मुस्तफा-जतोई को अन्तरिम प्रधानमन्त्री नियुक्त कर दिया है। इसके साथ ही सेना ने सभी सरकारी इमारतों, प्रमुख कार्यालयों एवं सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को अपने नियन्त्रण में ले लिया है। श्रीमती भुट्टो अपने बंगले में नजरबन्द कर दी गई हैं। उन्हें, उनके परिवार तथा उनके कतिपय साथियों को पाकिस्तान से बाहर जाने पर पाबन्दी लगा दी गई है। गुलाम इसहाकखान ने प्रधानमन्त्री को बर्खास्त करते हुए शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद एवं अन्य गम्भीर आरोप लगाते हुए 24 अक्टूबर को देश में आमचुनाव कराए जाने के आदेश भी कर दिए हैं।

पाकिस्तान का विगत इतिहास सैनिक क्रान्तियों तथा सैनिक तानाशाहों द्वारा लम्बी-लम्बी अवधि तक शासन करने का रहा है। वहाँ जब कभी जन असन्तोष उमड़ता दिखाई दिया, कश्मीर अथवा भारत के रहने वाले अल्पसंख्यकों के हितों का राग अलापकर अपने को सत्ता में बनाए रखने का रहा है। और अधिक जनअसन्तोष उभड़ता दिखाई दिया तो भारत पर हमला बोल दिया ताकि वहाँ की जनता का ध्यान उधर आकर्षित हो जावे। परन्तु अब सारा विश्व समझ गया है कि कश्मीर की समस्या धार्मिक है ही नहीं। यह तो भारत की राष्ट्रीय अखण्डता का प्रश्न है जिसमें मुख्य मुद्दा पाकिस्तान द्वारा अवैध रूप से अपने कब्जे में लिए गये कश्मीर के हिस्से को वापस लेने का है। भारतीय जनता इसके अतिरिक्त और किसी समझौते को कदापि स्वीकार ही नहीं कर सकती है। •

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उच्च तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ भाद्रपद शुक्ल-६, संवत् २०४७ वि
दिनांक २६ अगस्त १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

ओ३म् सम्पादकीय

टुक टुक दीदम दम न कशीदम

बस टुक टुक देखते रहो, बोलने की जरुरत नहीं है क्योंकि इसमें कोई दम ही नहीं है।----- और दूरदर्शन पर हमने महीनों तक महाभारत की कथा देखी, आपने भी देखी, सारे भारत ने देखी। बिला नागा सब काम छोड़ के देखते ही रहे जब तक अथ से इति श्री महाभारत कथा- नहीं हो गई। मगर मिला क्या ----

बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का
जो चीरा तो कतरए खून निकला।

आर्यसमाज के यशस्वी विद्वान श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने लिखा है कि महाभारत वैदिककाल की संध्या थी। सूर्य के अस्त होने और रात के आने से पूर्व जो दशा होती है वह महाभारतकाल की थी। रोशनी समाप्त हो चुकी थी और अन्धकार का आगमन हो रहा था। हर चीज़ धुंधली दशा में थी।

महाभारत हुआ ही इसलिए कि जैसे धुंधली दशा में अपने पराए की पहिचान नहीं रहती है उसी प्रकार चाहे कौरव हों या पाण्डव, विवेकशक्ति समाप्त हो चुकी थी। उस युग में किसी और धर्म की सत्ता तो थी नहीं- न पारसी, न जैनी, न यहूदी, न ईसाई, न मुस्लिम आदि। केवल वैदिक धर्म था लेकिन वह कैसा था- इसे कोई महाभारत से न समझ ले, इसलिए लेखनी उठानी पड़ी है। उस समय तक वैदिक धर्म में काफी विकृति आ चुकी थी। इसके कारण कुछ भी रहे हों पर इतना सत्य है कि वेदप्रतिपादित धर्म का वह सत्यस्वरूप अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर अनेकों भ्रान्तियों, गल्पों और पाखण्डभरे मिथ्या कथानकों का अम्बार बनता चला जा रहा था। यद्यपि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले महाभारत में यत्रतत्र कहीं कहीं वैदिक सिद्धान्तों के अनुरूप चरित्रचित्रण अथवा उसकी विवेचना शुद्धरूप में भी परिलक्षित होती हुई दिखाई देती है किन्तु सब मिलाकर महाभारत का स्वरूप आर्यसमाज के दृष्टिकोण से सर्वथा अग्राह्य एवं अमान्य है।

ऋग्वेद में एक मन्त्र आता है- "अक्षैर्मा दीव्यताम-- कृषिस्व" ऐ मनुष्य! तू जुआ मत खेलना ---- खेती करना---! इन दोनों कार्यों में गहरा समन्वय है। किसान जैसा बोता है या परिश्रम करता है वैसा उसको फल मिलता है। गेहूँ बोता है तो गेहूँ, जौ बोता है तो जौ, और चने बोता है तो चना। चना बो के गेहूँ नहीं मिल सकता क्योंकि यह कर्मफल सिद्धान्त पर आधारित है। इसके विपरीत जुआरी का विश्वास कर्मफल पर नहीं रहता। वह सोचता है जो बोने पर भी तकदीर अगर जोर मार जाय तो गेहूँ प्राप्त हो सकता है। दस रुपये दाँव पर लगाने से एक लाख मिल सकता है।

युधिष्ठर और दुर्योधन दोनों जुआरी थे। कृषक बुद्धि लुप्त हो चुकी थी इसलिए सत्य का निर्णय जुए के पाँसे से करना चाहते थे और इसका परिणाम जैसे आज विनाश का कारण है वैसे ही उस समय भी महाविनाश का कारण बन गया। जुए का यह कृत्य वैदिक धर्म के सर्वथा विपरीत, अमान्य और पाप है। वेदों में पूरा एक सूक्त ही जुआ न खेलने के विषय में दिया हुआ है। यह भी अधर्म के प्रति समर्पण है कि इतने बड़े-बड़े विद्वान ब्रह्मचारी, राजनीतिज्ञ सभा में बैठे हुए हैं और केवल इस कारण कि वचनबद्धता को पूरा करना क्षत्रिय धर्म है- ऐसे अवैदिक कृत्य को किए जाने की अनुमति दे देते हैं अथवा उसे मूकदर्शक बने हुए टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं। आर्यसमाज समाज की इस बुराई को दूर करना चाहता है। अतः हमारे द्वारा ऐसे चित्रण का समर्थन किसी दशा में करने का कोई प्रश्न ही नही है।

इसी प्रकार द्रौपदी के पाँच पतियों वाली कहानी एक पहेली है। वेदों में विवाह के निश्चित नियम देखने को मिलते हैं। एक पत्नीव्रत और पातिव्रत्य के उदात्तगुणों का बहुत सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है जिससे गृहस्थ आश्रम अच्छाइयों और सुखों का आगार बन जाये। आपत्काल में पुनर्विवाह, विधवाविवाह, नियोग आदि का भी विधान है। पर पता नहीं वेद के किस नियम के अन्तर्गत द्रौपदी पाँचों भाइयों की एक साथ पत्नी बन गई और जुए में दाँव पर भी लगा दी गई। इस प्रकार की अज्ञानता और अधर्म जब किसी सोसायटी में प्रवेश कर जाते हैं तथा चलने लगते हैं तो वह सोसायटी नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। देहरादून के पास जौनसार बावर क्षेत्र में रहने वाली जनजातियों में कहीं-कहीं यह प्रथा आज भी चालू है। इसी प्रकार अवतारवाद, चमत्कारवाद, अनेकदिनों तक शरशैय्या पर आरपार बिन्धे हुए शरीर को लेकर जीवित रह जाना आदि अनेकों कपोलकल्पित, अवैज्ञानिक, वेदविरुद्ध कथानकों का तारतम्य महाभारत में दिखाया गया है जो आज के परिप्रेक्ष्य में किसी भी सभ्य समाज की परिभाषापरिधि में न तो स्वीकार्य है और न जिसे वेद में आज्ञा दी गई है।

स्त्री का सम्मान करना वेद की मर्यादा है। उसका अपमान करने वाले को दण्ड देना भी वेद की मर्यादा है परन्तु इस अपमान के प्रतिशोध स्वरूप महाभारत में महाविनाश का जो ताण्डव दिखाया गया है वह विश्व के इतिहास में अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। किन्तु इस महाविनाश का कारण केवल द्रोपदी का अपमान ही नहीं था अपितु कुरुक्षेत्र पर राज्य प्राप्त करने की लालसा भी थी। महाभारत में, सीता के अपमान के कारण रावणवंश के नाश की भांन्ति हमारे समाज में इसे धर्म की विजय के नाम से वर्णित किया गया है।

हमारा विश्वास है कि महाभारत युग की पुनरावृत्ति लाने से न तो हिन्दू समाज का और न वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति का कल्याण हो सकता है। आर्यसमाज तो संसार से पाखण्डों को समाप्त कर ऐसे समाज की रचना के लिए प्रयत्नशील है जो शुद्ध वैदिक आदर्शों पर आधारित हो। इसलिए, हमारी बात भले ही रूढ़िवादी हिन्दुओं को कड़वी लगे लेकिन वह है परमौषधि।

विनम्र निवेदन

आपका प्रिय "आर्य मित्र" आगामी दीपावली पर आपके विचारों की दीपशिखाएँ लेकर उस देव दयानन्द के दिव्य विचारों को भाँति उतारने के लिए विशेषांक के रूप में प्रस्तुत हो रहा है। इसमें आपके देशकाल सम्बन्धी समसामयिक सामाजिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति उसके दिव्य [illegible] में उँजाले का प्रतीक बनेगी।

अतः सम्मानित लेखकों, विद्वानों, मनीषियों, कवियों आदि से विनम्र अनुरोध है कि अपने विचारों को लेखबद्ध करके मुझे [illegible] २० सित० १९९० तक अवश्य भेज देने की कृपा करें। आर्यमित्र उन्हें इस विशेषांक में प्रकाशित कर अपने को विशेष रूप से गौरवान्वित समझेगा।

विदुषामनुचरः —
[illegible] पाठक
प्रधान सम्पादक

आर्यसमाज का उद्धार कौन करेगा?

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान नजीबाबाद उ.प्र.

एक समय वह था जब एक देवी ने अपने हृदय की टीस इन शब्दों में व्यक्त की थी "किं करोमि क्व गच्छामि, कोवेदानुद्धरिष्यति" अर्थात् क्या करूं, कहाँ जाऊँ, वेद का उद्धार कौन करेगा? तब वेद के तात्कालिक महाविद्वान महामना श्री पण्डित कुमारिल भट्ट ने उस मार्ग से जाते हुए उक्त देवी की टीस को सुनकर कहा था-- "मा विरोम्येष वरारोहे भट्टो अस्मि भूतले" अर्थात् ऐ सुन्दरी। तू इस प्रकार विलाप मत कर, मैं कुमारिल भट्ट अभी भूतल पर उपस्थित हूँ।

तब महामना कुमारिल भट्ट ने वेद के उद्धार का बीड़ा उठाया था और अब गत उन्नीसवीं शताब्दी में वेद के उद्धार का बीड़ा महर्षि दयानन्द ने उठाया था तथा अपनी इहलोक लीला समाप्त करने से पहले उन्होंने अपने पीछे अपना उत्तराधिकारी अपना मानसपुत्र आर्यसमाज स्थापित कर इस कार्य के लिये नियुक्त कर दिया था। परन्तु क्या आर्यसमाज सचमुच अपने इस उत्तरदायित्व का उस प्रकार से निर्वहन कर रहा है, जिस प्रकार से उसके संस्थापक परिव्राजकाचार्य देव दयानन्द ने उसे यह कार्य सौंपा था? यदि इस विषय पर विचार किया जाय तो परिणाम नकारात्मक ही निकलेगा।

ऋषिवर कभी मिथ्यावाद से समझौता नहीं करते थे किन्तु इस समय आर्यसमाजियों ने आर्यसमाज के मंच को खेल का मैदान बना रखा है, जहाँ प्रत्येक वक्ता अपनी-अपनी रुचि के अनुकूल खेल खेलता रहता है। जिसके जो मन में आता है, कह डालता है। चाहे अयोग्यता के कारण कहे या जान-बूझकर ---कार्यकर्त्ताओं का इससे कुछ लेना-देना नहीं कि उसने बात सिद्धान्त की कही है या सिद्धान्त विरुद्ध? उन्हें तो अपनी कार्यवाही पंजिका में मात्र इतना लिख देना होता है कि उत्सव बड़ी धूमधाम से तथा बड़े उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

पिछले दिनों मुझे अनेक लेख श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी के विषय में आर्यपत्रों में लिखने पड़े। उनसे मेरा कोई व्यक्तिगत विरोध नहीं किन्तु उन्होंने जो अनर्गल वक्तव्य दिये तथा लेख लिखे, उन्हें पढ़कर मुझे लेखनी उठानी पड़ी थी। इतने पर भी वह "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने" को तैयार नहीं तथा दूसरी ओर आर्यसमाजी भी आँखें खोलने को तैयार नहीं। उन्हें मेरे द्वारा उनके विचारों पर उठायी गयी आपत्तियों को भ्रान्त सिद्ध करने के लिये मुझसे शास्त्रार्थ करना चाहिये। यदि वह इसके लिये तैयार नहीं तो शिरोमणि सभा द्वारा उन्हें इसके लिये बाध्य किया जाना चाहिये और यदि वह तैयार नहीं होते तो यह उनका दुराग्रह होगा और इस स्थिति में उनके आर्यसमाज के मंच पर भाषणों का कोई अर्थ नहीं। आर्यसमाज व्यक्तिपूजा तथा कुछ व्यक्तियों की मौज-मस्ती का मंच नहीं है अपितु ऋषिवर दयानन्द द्वारा दिये गये वैदिक दृष्टिकोण के प्रचार-प्रसार की वेदी है।

एक दूसरे महापुरुष आर्यसमाज में हैं--- श्री आर्यभिक्षु जी महाराज। जो यह कहकर जनता तथा आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं पर प्रभाव डालते हैं कि "जब मैं वाराणसी में वकालत करता था, जब मैं मुगलसराय का चैयरमैन था।" मैं नहीं चाहता कि इस पर कोई अनुसंधान लेख लिखा जाय, परन्तु आपसे यह पूछा जा सकता है कि आपने किस वर्ष में बी०ए० किया था और किस वर्ष में एल०एल०बी० तथा किन वर्षों में वकालत की थी और कब मुगलसराय नगरपालिका के चैयरमैन रहे थे ? आप सदैव द्वितीय श्रेणी में यात्रा करते हैं या बस द्वारा किन्तु समाजों से किराया लेते हैं रेल की प्रथम श्रेणी का। इस प्रकार की आपकी गतिविधियों और अपनी योग्यता तथा व्यक्तित्व के विषय में मिथ्यावक्तृता व्यक्तिगत नहीं अपितु सामाजिक पाप है एतदर्थ मैंने यह शब्द लिखे हैं, व्यक्तिगत बातें होती तो मैं चर्चा नहीं करता।

जहाँ तक प्रश्न योग्यता का है, आप "अग्निमीडे" को "अग्निममीडे" उच्चारण करते हैं। मैंने दो बार पहले तो रुड़की की रामनगर कालोनी आर्यसमाज के प्रथम वार्षिकोत्सव पर इस विषय में कहा था, तब आपका उत्तर था कि पहले तो मैं आप ही के कथनानुसार उच्चारण करता था, वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में आकर एक व्यक्ति ने मुझे इस प्रकार उच्चारण करना बताया। मैंने कहा, अब सुधार कर लो किन्तु उसके कुछ वर्ष पश्चात् आप वाराणसी की भोजूबीर आर्यमाज के उत्सव पर मिले, तब भी वही पूर्ववत अशुद्ध उच्चारण सुना तो मैंने इन्हें पुनः उच्चारण शुद्ध न कर पाने और रुड़की में हुए वार्तालाप की स्मृति दिलायी तो उस समय वहाँ उपस्थित श्री पण्डित विद्यानन्द मन्तकी ने कहा" किसे समझा रहे हो, यह मान ही नहीं सकता।" अबकी बार आप आर्य समाज कल्याणी इलाहाबाद के उत्सव पर मिले तो संभवतः आपको पिछली दो बार की वार्ता स्मरण हो आयी हो अतएव वहाँ आपने भाषण से पहले" विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव" मन्त्र से प्रार्थना की तो दोनों स्थलों पर "आसुव" का उच्चारण "असुवअ" किया और जब सभा में उपस्थित जनों से गायत्री मन्त्र का उच्चारण कराया तो "तत्सवितुर्वरेण्यम्" को "तत-सवितुर्वरेण्यम्" बोला अर्थात् "तत्" का तर्त" बना दिया। वाराणसी और रुड़की में दोनों स्थानों पर वार्तालाप में आपने यद्यपि यह स्वीकार किया कि "मुझे आता-जाता क्या है? मैं हिन्दी नहीं पढ़ा, संस्कृत नहीं पढ़ा। आप गुरुजनों से जो कुछ सुन लेता हूँ, उसे ही गुलदस्ता बनाकर पेश कर देता हूँ। परन्तु यह स्वीकार करते करने वाला व्यक्ति बार-बार बताने पर भी सुधार न करे तो उसके लिये उपयुक्त शब्दों को सब जानते हैं मुझे लिखने की आवश्यकता नहीं है।

गत 24 मई को आर्य समाज कल्याणी इलाहाबाद के उत्सव पर आपने जो भाषण किया, वह इस प्रकार था "जन्म होता है पापों का फल भोगने के लिए। अपराध नहीं किया तो दण्ड क्यो मिला ? जेल क्यों हयी ?" प्रश्न यह है कि जो पाप नहीं करते अर्थात् धर्म का आचरण करते हैं, उनका जन्म नहीं होगा तो कौन गति होगी ? यह सभी जानते हैं कि पाप का फल दुःख होता है और धर्म का फल सुख तथा सुख और दुःख दोनों ही शरीर के द्वारा ही भोगे जाते हैं, शरीर भोगायतन है। जन्म होने का अर्थ है आत्मा को शरीर की प्राप्ति। यदि जन्म नहीं होगा तो आत्मा धर्म के फल सुख को किस प्रकार प्राप्त करेगा ? प्रत्येक धर्मात्मा तो मोक्षाधिकारी नहीं हो जाता और मोक्ष में सुख मिलता नहीं, वहाँ तो आनन्द की प्राप्ति होती है, जो इन्द्रियों और इन्द्रिय समुच्चय शरीर का विषय ही नहीं। आनन्द तो मन का, आत्मा का विषय है।

एक प्रश्न यह भी है कि पाप के परिणामस्वरूप ही जन्म होता है तो फिर सभी प्राणियों का जीवन दुःखमय ही होना चाहिये, किन्तु संसार में सुखी मानव ही नहीं कुत्ते तक भी पाये जाते हैं। ऐसे तो मनुष्य भी कम ही पाये जाते हैं, जिन्हें जीवन में दुःख ही दुःख प्राप्त होता रहता हो। हाँ, ऐसे लोग अधिक हैं, जिन्हें सुख और दुःख दोनों की प्राप्ति होती रहती है। कुछ ऐसे लोग भी संसार में होते हैं, जिन्हें जीवनभर या तो दुःख प्राप्त नहीं होता या नाममात्र को ही दुःख प्राप्त होता है। आर्यभिक्षु जी की परिभाषा के अनुसार तो ब्रह्मा के गुरु चारों आदिकालीन ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा भी पापी थे तो फिर उन्हें ईश्वरीय ज्ञान वेद क्यों प्राप्त हुआ? फिर ऋषिवर दयानन्द सरस्वती भी उसी श्रेणी में आते हैं और आप स्वंय भी तो। जो स्वंय ही पापी है, अपने पूर्वकृत पापों का फल भोगने को ही जिसने जन्म लिया है, उस पापात्मा को धर्मोपदेश करने का क्या अधिकार?

जन्म तो है पाप का फल तो बिना जन्म लिये जीवात्मा ने पाप किस प्रकार, किस माध्यम, किस साधन और किस उपकरण से किये थे? जब पाप कर रहा था, तब जीवात्मा कहाँ अवस्थित था? और किस कारण से उसने पाप किये थे? फिर परान्तकाल पश्चात् "ते परान्तकाले परिमुच्यन्ति सर्वे" मोक्षानन्द प्राप्त कर लेने पर सबका जन्म किस पाप के कारण होता है? मोक्ष तो ज्ञान और निष्काम कर्म का फल है। जब तक पाप के संस्कार साथ हैं, पाप ही

— शेष पृष्ठ १० पर

मोर्चा सरकार सावधान !

• विश्वम्भर देव शास्त्री
आर्यसमाज देववन्द

आज देश की दुर्दशा पर सभी को चिन्ता है। अपना रक्त बहाकर जिन बलिदानियों ने विदेशियों से राज्य छीन कर स्वतन्त्रता दिलाई उनको किस प्रकार श्रद्धांजलि देंगे?

वर्तमान दूषित राजनीति के तुष्टिकरण ने पुन: विदेशी शक्तियों को भारत में आने का अवसर दे दिया है। विदेशी षडयन्त्रों ने भारत का विभाजन करके भी यहाँ से बिस्तर नहीं बान्धा। उदारता दिखाने का भी समय होता है। राजनीति में केवल एक अस्त्र से काम नहीं चलता- जिस तुष्टिकरण के अस्त्र को अबोध राजनीतिज्ञ दल 45 वर्षों से भारत में चला रहे हैं। दीन-दु:खी-पीडितों के प्रति उदारता उचित है। यह एक मानवता है। परन्तु आततायी, आतंकवादियों, उग्रवादियों और राष्ट्र को छिन्न-भिन्न करने वालों के साथ यह नीति कारक नही होती।

स्वतन्त्र भरत के राजनीतिज्ञों से और विशेष कर वर्तमान मोर्चा सरकार से यह कहना है कि भारत को भारत की राजनीति से देखो तुम्हारा मार्ग दर्शक चाणक्य अब भी घोषणा कर रहा है "शठे शाठ्यं समाचरेत" अर्थात् छल कपट करने वाले के साथ छल कपट का व्यवहार करना चाहिये अन्य के साथ नहीं। राजनेताओं को गुरु का मन्त्र पहले सीखना चाहिये, तभी राजनीति में कूदना चाहिये।

हमारे संविधान में संशोधन होते जा रहे हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् हमने क्या पाया- केवल विघटन- भेदभाव के कारण छिन्न-भिन्न समाज। अहंकार और स्वार्थ। अदूरदर्शिता के कारण भारत का मुकुट काश्मीर सुरक्षित नहीं। पंजाब रक्त रंजित हो रहा है । पूर्वोत्तर प्रान्तों की दशा क्या हो रही है। बोडो-झारखण्ड भारत से पृथक होने को तुले हुये हैं। कितने टुकड़े होंगे मातृभूमि के और ?

भारतीय संस्कृति का भी तो अपना कुछ है या नहीं । हमारा देश पन्थ निर्पेक्ष है अर्थात किसी एक मत की सरकार नहीं रहेनी "धर्म निर्पेक्ष" अर्थ अंग्रेजी का अनुवाद मात्र है। धर्म कभी विघटन नहीं सिखाता वह तो विश्वबन्धुत्व सिखाता है। पन्थ मानव विशेष का चलाया होता है जिसमें मतभेद रहते हैं। भारत आदिकाल से वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ सिखाता है।

नये राजनीतिज्ञों ने इसका मन्त्र माना अर्थ लगाकर शान्त समुद्र में पत्थर फैंककर चंचल बना दिया। पन्थ निर्पेक्ष होना भारत की महानता है परन्तु यह महानता तभी तक है जब अन्य देश भी ऐसे ही हों। यह बात दिखाई नहीं देती-जिसके कारण हमारी राजनीति की नौका डगमगाती जा रही है।

अमेरिका भौतिकवाद में एक सम्पन्न देश है परन्तु वह धर्मसापेक्ष है। अरब देश भी विशेष धर्मावलम्बी हैं। भारत जैसे स्वर्ग और सम्पन्न देश को अपनाने में कोई पीछे न रहे और न रह सकते हैं। अत: स्वतन्त्रता के कुछ ही वर्ष पश्चात् 1956 में नेहरू जी के राज्यकाल में भारत की शक्ति से भयभीत होकर भौतिकवादी अमेरिका में ब्राडकास्टिंग स्टेशन से "निर्णय की घडी" नामक प्रोग्राम से श्री विलियम फ्रैंक ग्राहम ने घोषणा की- "अमेरिका के लोगो यदि संसार में कम्युनिज्म का सामना करना चाहते हो तो तुम्हें इसका मुकाबिला सबसे पहले भारत में करना होगा, क्योंकि अमरीकी और रूसी ब्लाक के मध्य भारत के हाथ में ही सन्तुलन शक्ति है। इसके लिये भारत में पादरियों की एक सेना भेजनी होगी जिसका नारा होना चाहिये कि भारत में बूढ़ा हिन्दू धर्म समाप्त हो और उसकी लाश पर ईसाई धर्म का झण्डा लहराये ताकि अपने चर्चों के द्वारा अमरीका भारत के राजनैतिक ढांचे पर अपना नियंत्रण कर सकेगा।

क्या यह केवल घोषणा ही थी यह नहीं कह सकते आज पूर्वोत्तर राज्यों में ही नहीं- मध्यप्रदेश के आदिवासी बस्तियों तथा झारखण्ड की पृथक मांग इन्ही लोगों के षडयन्त्र हैं। इन लोगों को और सहारा उस समय मिला जब, धर्मनिर्पेक्ष राजीव सरकार ने जौन पाल द्वितीय को राजकीय निमंत्रण पर भारत बुलाया। इन राज्यों में ईसाई मत के आधार पर सब काम हो रहा है। अनेकों विदेशों के असंख्य पादरी भारत में छाये हुये हैं। कुछ ऐसे भी हैं जिनको भारत छोड़ने के आदेश हो गये, परन्तु दूषित दल गत नीति से यहीं अड़े हुये हैं। इन विदेशियों के द्वारा अपार धन-अस्त्र-शस्त्र भारत में धर्म परिवर्तन के लिये आ रहा है। हमारी सरकार कहती है कि विदेशी शक्तियाँ भारत के प्रजातंत्र के लिये बाधक हैं किन्तु तुष्टिकरण के कारण कोई उनको कुछ कह नहीं सकता। बेचारे पिछड़े वर्ग को ऊपर उठाने के इन लोगों के हवाले कर दिया है- जिससे इनका पिण्ड तो छूटा रहे।

धन की गर्मी इतनी बढ गयी है कि उसकी भट्टी में मानवता भस्म हो जाती है। तेल के कारण अरब सम्पन्न हुआ वह भी भारत को अपना बनाने मे क्यों पीछे रहता। भारत की उदारता के कारण पाकिस्तान बन जाने पर भी बहुत से राष्ट्रवादी मुस्लिम नेताओं ने एकता प्रदर्शित की और मुस्लिम परिवारों को पाकिस्तान नहीं जाने दिया। वे सब मिल जुल कर रहने लगे। 1976 में धन के उन्माद ने करवट बदली और अरब से पुकार आने लगी भारत को अपनाया जाये। इसी लक्ष्य को लेकर 1973 में कुवैत में इस्लामिक लीग की स्थापना हुई, जिसमें निर्णय था कि "मोरक्को से लगाकर इण्डोनेशिया के समस्त देशों को इस्लाम धर्म के झण्डे के नीचे लाना है। इसके लिये भारत को ही केन्द्र बनाया गया और यह समाचार निकला इस समय यदि प्रयत्न किया जाय तो भारत के समस्त हरिजनों को मुसलमान बनाकर यहाँ मुसलमानों की सख्या तुरन्त बीस करोड़ से अधिक बढ़ाई जा सकती है।" भारतीयों विचार तो करो क्या यह घोषणा "मीनाक्षीपुरम्" मे लागू नहीं की गई। इसमें मुस्लिम संसद सदस्य भी उपस्थित थे। इसके लिये क्या कम धन आ रहा है भारत में। मुस्लिम लीग के प्रधान इब्राहिम सुलेमान सेठ ने सऊदी अरब की राजधानी में घोषणा की थी कि हम लीग को इतना मजबूत बना रहे हैं कि निकट भविष्य में भारतीय सरकार का बनना और काम करना असम्भव हो जावेगा बिना लीग के। वहाँ से अधिक से अधिक पेट्रो डालर्स लेकर पहला प्रयोग मीनाक्षीपुरम् के हरिजन परिवारों को बहकाकर कि प्रत्येक परिवार को 6-6 हजार रुपया दिया जायेगा। मुसलमान बन जाओ और दूसरे दिन दिये केवल 5-5 सौ रुपये।

अरब के पैसे पर खेलने वाले कुछ ही मुस्लिम राजभक्त हैं जो सम्पूर्ण भारत में उपद्रव मचाकर इस्लामीकरण का स्वप्न देख रहे हैं। देश में जितने दंगे हुये उनकी विवेचना कर लो- किसके पास हैं आग्नेय अस्त्र? पाकिस्तान की आड़ में विदेशी शक्तियों ने पंजाब काश्मीर-पूर्वोत्तर सीमा झारखण्ड आदि पृथकता वादियों को उत्पन्न कर दिया है। मि0 जिन्ना दो राष्ट्र मानता रहा भारत में किन्तु सुलेमान सेठ आदि तो मुस्लिम राष्ट्र ही बनाना चाहते हैं। मुस्लिम देशों में अल्पसंख्यकों की क्या दशा बनी और हो रही है। सिन्ध के सिन्धी, काश्मीर के पंडित बंगलादेश के चकमा और पंजाब के अल्पसंख्यक भारत की शरण आ रहे हैं। कौन रक्षा करेगा इनकी।

मेरी मोर्चा सरकार इतने में प्रस्ताव ला रही है कि पिछडे वर्गों के हिन्दू यदि धर्म परिवर्तन कर लें और ईसाई मुसलमान बन जाये तो उनको वही सुविधा मिलती रहेगी, जो मिलती थी। तब तो पेट्रो डालर्स की भी आवश्यकता नहीं होगी। शीघ्र ही अल्पसंख्यक बहुसंख्यक बन जावेगे और हे भारत के कर्णधारों वह दिन दूर नहीं जब दिल्ली को बदल कर इस्लामाबाद कर दिया जावेगा ।

राष्ट्रीय एकता के प्रस्ताव लाओ- राष्ट्रभाषा का सीखना अनिवार्य हो- जनसंख्या रोकने के लिये सभी नागरिकों पर एक नियम हो। गरीबों को शिक्षा का समान अधिकार दिया जाये। राष्ट्र में भेदभाव दूर हो राजभक्ति की अपेक्षा राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत हो। दल को राष्ट्र से ऊपर न समझो। अत: हे मोर्चा सरकार सावधान तुष्टीकरण छोड़ एकता के मार्ग पर चल। समय को देखो स्वार्थ को त्याग।

शोक समाचार

जिला आर्य उ0प्र0 सभा के लखनऊ के पूर्व मंत्री श्री हरिनारायण पाण्डे की वयोवृद्ध माता का 22-7-90 को सायंकाल निधन हो गया। उसी दिन सर्वश्री कुन्दन लाल आर्य एवं हरिवंश लाल आर्य ने पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दाह संस्कार कराया। 24-7-90 अपरान्ह पं0 रामचरित्र पांडे ने गृह शुद्धि यज्ञ संपन्न कराया।

ज्ञानकृष्ण।

परावर्तन (शुद्धि) यज्ञ

वीरेन्द्र "वीर"
निरीक्षक सभा

वास्तव में यज्ञ शब्द का अर्थ है- देव पूजा, संगति-करण और दान। किन्तु हमारा यह मानना भी असंगत नहीं होगा कि धर्म-भावना से किये गये, परोपकारादि के सभी उत्तम कार्य, यज्ञ कार्य ही हैं। अतः इसी पावनी भावना के रूप में अपने ही भाइयों को पुनः {शुद्ध} परावर्तन कर अपने में मिला लेना भी यज्ञ कार्य है, धर्म कार्य है, पुण्यकार्य है।

क्यों कि आज विदेशियों के कुचक्र से भारत में कलह और अशान्ति का वातावरण व्याप्त है। विदेशी शक्तियाँ अपने असीमधन की बौछार द्वारा भारतीय संस्कृति को जड़ से मिटाने पर तुली हैं। वे अरब राष्ट्रों द्वारा प्राप्त पेट्रोडालर्स की सहायता से भारत की अस्मिता के विनाश में भेंट करने के लिए, विदेशी एजेण्टों के झुण्ड भारतीय सीमाओं पर नियुक्त कर चुके हैं, जो यदा-कदा भारत में प्रवेश भी करते रहते हैं।

यह सब हो रहा है हमारे ही अपने भाइयों द्वारा अपनी परम पावन मात्र भूमि {भारत-माता} के प्रति गद्दारो के कुकर्मों के परिणाम स्वरूप। यह निन्दनीय कार्य करने वाले हमारे वे भाई हैं, जो कुछ समय या कुछ पीढ़ी पूर्व, विदेशी शासनकाल में, हमारी अपनी ही भूल, दुर्बलता, अज्ञान, असावधानी, आलस्य, अदूरदर्शिता, अधर्म, {ऊँचनीच, छूत-छात, मूर्तिपूजा आदि} अवैदिक कुकृत्यों के परिणाम स्वरूप, भय, प्रलोभन, दुराचरण या अन्यान्य परिस्थिति-जन्य कारणों से अपने मूल मानव {वैदिक} धर्म को त्याग कर विदेशी और अमानवीय मत-मजहब को स्वीकार कर बैठे हैं। वे भूल गये हैं अपनी परम-पावन- "जननी-जन्मभूमिश्चस्वर्गादपि गीरयसी की" भावना को।

आज भी हमारे निर्बल, निर्धन, दलित और सीमावर्ती अशिक्षित परिवार के सदस्यों को निरन्तर तथाकथित अवैदिक मत-मजहबों की मृग-मारीचिका में जकड़ा जा रहा है। आज भी अनेकों सदस्य हमारे परिवार से निकल कर गैरों के परिवार के सदस्य बन रहे हैं। कहीं प्रलोभन से, कहीं धोखे से, कही बलात् हमारे भाइयों को अपने जाल में फँसा कर आत्मसात करके अपनी जनसंख्या वृद्धि की कूटनीति चला रहे हैं।

भारत विभाजन के समय सन् 1947ई0 में मुसलमान लगभग दो या ढाई करोड़ थे, जो बढ़ कर आज लगभग चौदह करोड़ हो गये हैं। ईसाई सत्तर लाख से बढ़कर दो करोड़ सत्तर लाख हो गये हैं। यदि इनकी बढ़ोत्तरी की गति इसी रूप में रही तो सन् 2000ई0 तक भारत में इतने मुसलमान और ईसाई हो जायेगें कि उनकी अपेक्षा हिन्दू {आर्य} अल्पसंख्यक हो जायेंगे। तब भारत एक नया इस्लामी राष्ट्र बन जायेगा। यही इस्लामी राष्ट्रों एवं इस्लामी नेताओं की योजना है।

इस इस्लामीकरण योजना के लिए अपनाये जाने वाले कारणों में मुस्लिम जन संख्या वृद्धि हेतु एक यह भी प्रमुख कारण है कि हिन्दुओं की परिवार-कल्याण के माध्यम से जनसंख्या में ह्रास और मुसलमानों में मजहब या शरियत के विरुद्ध होने का बहाना बनाकर परिवार कल्याण नियमों का विरोध करना। इस तरह हिन्दुओं के लिए नारा है- हम द हमारे दो, तथा मुसलमानो का नार है हम एक हमारे अनेक। हिन्दू एक पत्नी के जीवित रहते दूसरी पत्नी नहीं रख सकता, किन्तु मुसलमान एक साथ चार-चार पत्नियाँ रख सकता है। इस प्रकार उनके लिए शरियत प्रत्येक ढंग से जनसंख्या वृद्धि की छूट देती है और सरकारी राजनैतिक संविधान भी उनको छूट देता है तथा हिन्दुओं पर अंकुश लगाता है। यह सरकारी दुहरी नीति है। इससे मुसलमान हिन्दुओं की अपेक्षाकृत पाँच गुने बढ़ जाते हैं।

अतः यदि इस कुचक्र से बचना चाहते हो तो ऐ आर्यो {हिन्दुओं} अपने आलस्य को त्याग कर जागो और समय तथा परिस्थितियों को पहिचानो, अन्यथा तुम्हारी संस्कृति, तुम्हारी पहिचान, तुम्हारा आर्य वंश विनाश करने में ये विरोधी सफल हो जायेंगे।

जर्रे जर्रे से वतन के यह सदा आती है।
आर्यो होश में आओ वरना कज़ा आती है।।

अब आवश्यकता है होश में आकर अपने प्राचीन गौरव, मूल इतिहास को स्मरण करने की। अपने अर्वाचीन पूर्वजों, अपने आर्य वंश, की स्मृति को पुनः तरोताजा करने की बेला आ गई है।

कौम की तवारीख से जो बे-खबर
हो जायेगा।
वह आदमीयत खो के रफ्ता रफ्ता...
हो जायेगा।।

याद करो महाभारत से पूर्व कालीन युग को जब सम्पूर्ण विश्व में एक {मानव} वैदिक धर्म था, उस समय ईसाई या मुसलमान या अन्य कुछ संज्ञायें नहीं थीं, सब आर्य थे, समस्त विश्व सत्य सनातन वैदिक धर्म का अनुयायी था।

रुये जमी से आती एक वेद की सदा थी।
हर सर अदब से वेदों के रूबरू झुका था।।

वह वेद पथी भारत समस्त विश्व का गुरु था, सर्वत्र शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान आदि का प्रचार व प्रसार का केन्द्र एक मात्र भारत ही था। किन्तु हम विश्व को ज्ञान का प्रकाश प्रदान करते-करते ऐसे सोये कि स्वयं ही अज्ञान के अंधकार की गुहा में भटक गये।

जमाना बड़े गौर से सुन रहा था।
हमीं सो गये दास्ताँ कहते-कहते।।
सारी दुनियाँ को दे रोशनी हो सितम।
ज्ञान का दीप हमने बुझा ही दिया।।

और हम अपनी भूल, अज्ञानता आदि के कारण इतने फिसले कि महाभारत जैसा विश्व युद्ध अपनी ही पावन देवभूमि पर अपने ही बन्धु बान्धवों के मध्य रचा बैठे। जिसका दुष्परिणाम भारत को गारत बनाकर ही रहा।

महाभारत नहीं था द्वन्द केवल दो घरों का
अनल का पुंज था भरा अगणित नरों का
यह न कुफल केवल कौरव पाण्डवों
के वंश का था।
बल्कि यह विस्फोट सारे भारत वर्ष
का था।।

तब उस अज्ञान युग का सूत्रपात हुआ जिसमें आर्य वर्त से बाहर नव निर्मित अवैदिक, अमानवीय, निराधार और अनेकों अनाचारों के भाव पूर्ण दुर्व्यसनी मत मजहबों के प्रचारकों ने विभिन्न प्रकार की कूटनीति पूर्ण कुचालों के कुचक्रों में हमारे भोले-भाले भाइयों और बहनों को फँसा लिया। कुछ तत्कालीन विदेशी बादशाहों ने अपनी शक्ति {तलवार} के जोर पर कुछ ने प्रलोभन या कूटनीति की मृग मारीचिका के चक्रव्यूह द्वारा इस्लाम या ईसाई बनाने में सफलता प्राप्त की। जिन्होंने धर्म को सहर्ष नहीं त्यागा उन्हें या तो अमानवीय ताड़नायें दी गईं, मौत के घाट उतारे गये, दीवारों में जिन्दा चुनवा दिये गये।

उस समय का नारा था-

धर्म त्याग चोटी हनौ,त्यागो यज्ञोपवीत।
वरना शीश कटाइये,बनी यही थी नीति।।

अतः आज हमारी देव भूमि पर जो भी ईसाई या मुसलमान दृष्टिगोचर होते हैं वे सब हमारे उन्हीं पथभ्रमित भाइयों की सन्तान हैं। अब केवल आवश्यकता है, उन्हें अपने प्राचीन, गौरवमयी-इतिहास और संस्कृति तथा वैदिक-ज्ञान की स्मृति दिलाने की, जिसे भूल जाने के कारण ही वे अपने ही देश, धर्म और परिवार को शत्रु समझ बैठे हैं।

त्यागा अपने धर्म को,भूल गये इतिहास।
अपने थे सो गैर बन,करें स्वराष्ट्र विनाश।

अतः आज हम उन पथ भ्रमित भाइयों को उनके अतीत और वास्तविकता की याद दिला कर अपने पास बुलाने के लिए आवाज बुलन्द करें, उन्हें जागृत करें तथा अपने इन प्यारे बिछुड़े भाइयों को पुनः अपने सीने से लगाने के लिए खोल दें अपनी विशाल बाहें।

लो गले से लगा अब पुनः आर्यो,
ये तुम्हारे ही बिछुड़े हुए भ्रात हैं।
अपनी प्राचीन गाथा को कर याद लो,
पूर्व में एक ही तात और मात हैं।।
संगठन अब करें शक्ति का आज हम,
बन्धु सब अपना कन्धा मिलाकर चलें।
जो बिछुड़े हुए हैं उन्हें संग लें,
और नीचे गिरो को उठाकर चलें।।
शुद्धि को पुण्य का रूप मानो सभी,
शुद्धि का यज्ञ करने को तैयार हो।
सब आर्य बनें, ओ आर्य राष्ट्र हो,
बस यही सर्व हृदय की झन्कार हो।।

— शेष पृष्ठ ७ पर

आखिर क्यों उठाई कलम? सलमान रश्दी नें

एक समय था प्रजातन्त्र से पूर्व व्यक्ति गुलाम था। उसकी वाणी, कलम---गुलाम थी--। स्वंय पर असहनीय अत्याचारों से तिलमिलाकर लिखे कटु सत्य की "कलम" तोड़ दी जाती थी। किन्तु ये भी अमिटसत्य है कि कलम कभी झुकती नहीं टूट--- ही सकती है।

सच्ची कलम का कोई मजहब कोई धर्म, कोई जाति-- रंग-रूप नहीं होता वह तो एक हंस होता है जो कि दूध को पानी से अलग कर देता है। समाज की वास्तविकता की झलक समाज को ही दिखाने हेतु न जाने कितनी कलमें बलिवेदी पर चढ़ गई। किन्तु कलमें मिटी नहीं क्योंकि सत्य कभी नहीं मिटता --।।

सर्व धर्म एक समानः। संस्कृत में एक सूक्ति है ---
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति,
सत्यमं न तद् यच्छलमभ्युपैति।।

अर्थात् वह धर्म नहीं जो सत्य न कहे और वह सत्य नहीं जो छल से युक्त हो--। किन्तु प्रत्येक धर्मावलम्बी अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ बताता है-- इससे स्पष्ट है कि उसे धर्म से वास्तविक ईश्वर से लगाव नहीं वरन् धर्म की श्रेष्ठता से है।।"

वास्तविकता तो यह है कि प्रत्येक धर्म केवल सत्य,गुणों से परिपूर्ण होता है-- अवगुण, असत्य उसके परे नहीं होते। धर्म को तो हम धर्म के अनुयायी अवगुणों/असत्यों से भरते है। ईश्वर तो सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार,सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर अमर, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसकी कोई प्राणी आलोचना नहीं कर सकता-- क्योंकि वह कर्म नहीं करता--मनुष्य कर्म करता है-- सुकर्म/दुष्कर्म इन्हीं दुष्कर्म करने हारे प्राणियों को सचेत करती है-- सुकर्मजीव कलम।"

सच्चा व्यक्ति वही होता है जो नित्य निज कर्मो का पिटारा खोल दुश्कर्मों को खोज, सुन-- सम्मुख रख प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में ये कदापि न होंगे।।" न हो ईश्वर ऐसी शक्ति दे।"

"द सेन्टेनिकवर्सेज" आखिर क्यों लिखी गयी--??" क्या इस्लाम -धर्म को नीचा गिराने, उसकी प्रतिष्ठा मान-मर्यादा को ठेस पहुँचाने के लिये?? यदि ऐसा है तब तो शायद वास्तव में सलमान रशदी कुसूरवार है।"

किन्तु हममें से कितने ऐसे विश्व के इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं- जिन्होंने ,उसे (द सेन्टेनिक वर्सेज) को पढ़ा ?? ये सत्य है कि विश्व में इस्लाम धर्म के अनुयाइयों की संख्या ऊँची है।। कारण- धर्म श्रेष्ठ है यदि रशदी ने उनके विरुद्ध लिखा-- तो इसका मतलब यह तो नहीं कि उससे-- दो बात किये बिना ही-- उसे धर्मालम्बियों द्वारा-- "मौत" का आदेश दे दिया जाय--?-- ये तो वास्तव में अन्याय है। एक कलम की सरेआम हत्या के आदेश का ।।" कोई भी धर्म किसी भी व्यक्ति की हत्या के आदेश नहीं देता--।।" यदि वास्तव में ही "द सेन्टेज वर्सेज" इस्लाम के विरुद्ध है तो इस्लाम धर्म के विदुषियों को चाहिए कि राष्ट्रीय स्तर पर रशदी के साथ "शास्त्रार्थ" करें। और जो सत्य हो उसे स्वीकारें। यदि रशदी वास्तव में गलत ठहरते हैं तो उन्हें सजा दी जाए।। कड़ी से कड़ी सजा -- ताकि भविष्य में कोई कलम किसी धर्म पर ऐसा न लिख पाये जो उसके विरुद्ध अनुचित असत्य हो।"

किन्तु इस तरह बिना देखे--पढ़े- एक कलम की हत्या का आदेश देना खुमैनी साहब व अन्य धर्मालम्बितयों को शोभा नहीं देता--। इस तरह तो देश में और विश्व में, समाज में, हिंसा को जन्म देना है-- और कोई भी धर्म हिंसात्मक कार्य की आज्ञा नहीं देता।

संवत् 1939 को रची स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत "सत्यार्थ प्रकाश" के अन्त्यय दो समुल्लास जो कि ईसाई और इस्लामी मत-मतान्तरो को लेते हुए लिखे गये थे-- उस पर काफी विवाद हुआ-- तब स्वामी जी ने लिखा था---

"मेरा न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ -मूठ बुराई या भलाई लगाने का प्रयोजन है किन्तु जो-जो भलाई है-- वही भलाई है और बुराई है वही बुराई सबको विदित होवे, न कोई किसी पर झूठा आरोप लगा सके- और न सत्य को रोक सकें। और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिसकी इच्छा हो वो माने। और यही सज्जनों की रीति है। कि अपने वा पराये दोषों को दोष गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें।"

वास्तव में न्याय यही है -।- कि धैर्य से और धर्मता से इस विराट समस्या को सुलझाया जाये। आज इसके कारण दो देशों (ईरान-ब्रिटेन) के बीच संबंध समाप्त हुए है-- कल को भयंकर परिणाम भी आ सकते हैं तब हमें यह कहने को विवश हो जाने के सिवाय चारा न होगा कि-- "रशदी ने" आखिर क्यों उठाई कलम?"

श्री संजीव आर्य "रूप"
गुधनी (बदायूँ)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

- 25 से 28 मई तक आर्यसमाज कासगंज (एटा) का 105वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

समीक्षा

मैनपुरी जनपद से निर्वाचित,इस सभा के अन्तरंग-सभासद श्री राम प्रकाश जी की रिपोर्ट दिनांक 30-7-90 के अनुसार नवसृजित जनपद-फिरोजाबाद की नव गठित आर्य उप प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन दिनांक 24-6-90 पर जनपद की अनेक आर्य समाजों की घोर आपत्तियां है और इन आपत्तियों तथा इस उप सभा के गठन तथा निर्वाचन की वैधता की जाँच इस सभा के माननीय मन्त्री जी अपने स्तर से करवा रहे हैं।

व्यवस्था

अतः संगठन के हित में, पुनः व्यवस्था दी जाती है कि जब तक आर्य उप-प्रतिनिधि-सभा,जिला-फिरोजाबाद के गठन और उक्त निर्वाचन को मान्यता देते हुये उसकी प्रविष्टि सभा में नहीं हो जाती है तब तक उक्त नव गठित आर्य उपसभा, संगठन के किसी भी प्रशासन, प्रबंध और विवाद आदि में हस्तक्षेप न करें। इस अवधि में आगरा और मैनपुरी जनपद की आर्य उप-सभायें, अपने-अपने पूर्व क्षेत्रों में, पूर्व की भाँति, यथावत कार्य करती रहेंगी।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा,उ0प्र0

आर्यसमाज बड़ौत को शोक

आर्यसमाज बडौत (मेरठ) के कोषाध्यक्ष ला0 सुन्दरलाल जी का हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया निरपुड़ा ग्राम में भी आर्यसमाज की तथा जवाहर इण्टर कालेज निरपुड़ा की भी आपने स्थापना की थी। लाला जी के शान्ति यज्ञ के अवसर पर मेरठ आर्य उप प्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री चौ0 माधव सिंह जी व आचार्य ब्रह्म सिंह जी तथा उपस्थित लोगों ने शोक श्रद्धांजलि अर्पित की। लाला जी के सुपुत्रों ने इस अवसर पर 1100/- का दान दिया जिसमें से 800/- आर्य सेवाश्रम बड़ौत को दिया।

ओमवीर ,मंत्री

स्वामी दयानन्द

• मनोज आर्या
आर्य स्त्री समाज
साकेत, मेरठ

यद्यपि इस भारतभूमि पर अनेक महान पुरुषों ने जन्म लिया है परन्तु हम आज जिन महर्षि के बारे में आपसे चर्चा कर रहे हैं उस महान विभूति का जन्म टंकारा नामक ग्राम में मोरवी रियासत के काठियावाड़ प्रान्त में हुआ था। इनके पिता का नाम कृष्ण जी था इनका जन्म संवत् 1881 विक्रमी में हुआ था, तथा बचपन का नाम मूलशंकर था यह औदीच्य ब्राह्मण थे।

इनके घर में वेद विहित सभी संस्कार होते थे, बालक मूलशंकर के भी जातकर्म नामकरण इत्यादि सभी संस्कार विधि पूर्वक किये गये थे 8 वर्ष में ही यज्ञोपवीत संस्कार हुआ था, उन्होंने रुद्राध्याय कंठ कर लिया था तथा यजुर्वेद भी सम्पूर्ण पढ़ा था। इनके पिताजी शैव थे इसलिये पुत्र को भी शिवभक्ति का उपदेश दिया था।

इनके एक छोटी बहिन तथा चाचा थे जो इनको बहुत प्यार करते थे। इनके पिताजी ने इनको 14 वर्ष की आयु में ही व्रत रखने को कहा तथा शिवरात्रि की कथा सुनाई वह इन्हें बहुत अच्छी लगी तथा माता के मना करने पर भी उपवास किया और पिताजी के साथ मन्दिर में गये। अब सभी लोगों को नींद आ रही थी तब इन्होंने देखा कि **शिव की पिंडी** पर चढ़कर चूहे जो चावल इत्यादि चढ़ायें हुए थे उन्हें खाते देखकर इनके हृदय में जिज्ञासा जागृत हुई कि जिस शिव के बारे में मुझे बताया गया था कि वह इतना महान **"शक्ति शाली है"** तो क्या वह अपने ऊपर से छोटे से चूहों को भी नहीं हटा सकता? और वह उसी दिन उस घटना को देखकर उनका विश्वास मूर्ति पूजा से हट गया। और उन्होंने निश्चय किया कि मैं सच्चे शिव का साक्षात्कार करे बिना उसका पूजन नहीं करूंगा।

चूहे की इस छोटी सी घटना ने ही मूलशंकर को दयानन्द बना दिया और इस शिवरात्रि ने ही दयानन्द को बोध प्रदान किया।

हम देखते हैं कि प्रतिवर्ष शिवरात्रि का पर्व आता है और सभी लोग ऐसी घटनाएं देखते हैं परन्तु कितने लोग ऐसे हैं जो बोध प्राप्त करते हैं।

वह समय ऐसा था कि मूर्ति पूजा के विरुद्ध एक भी शब्द कहने वाले को हिन्दू धर्म के नास्तिक कहा जाता था किन्तु वेद के प्रमाणों के आधार पर मूर्ति पूजा के खंडन का गौरव वेद के अद्वितीय भक्त आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को ही प्राप्त है। कुछ लोगों को उस समय ही क्या अब भी यह कहते सुना जाता है कि मूर्तियाँ तो केवल मन की एकाग्रता का साधन हैं परन्तु आज समझदार व्यक्ति मूर्ति पूजा की निरर्थकता को समझ चुके हैं।

अतः हम महर्षि दयानन्द से यह शिक्षा ले सकते हैं कि 14 वर्ष की अल्प आयु में जो निश्चय उन्होंने किया था उस पर वह जीवन भर दृढ़ रहे।

प्रत्येक आर्य का यह कर्तव्य है कि साधारण घटनाओं को भी दीर्घ दृष्टि से देखने का स्वभाव तथा अपने निश्चय को जीवन भर कठिनाइयाँ आने पर भी पालन करें। ऋषि के जीवन में अनेक कठिनाईयाँ एवं प्रलोभन पाये एवं प्रलोभन आये परन्तु वह अपने विचार से तनिक भी नहीं विचलित हुए। उन्होंने अनेकों स्थानों पर घूम-घूम कर सच्चे गुरु की खोज की और अन्त में गुरुवर विरजानन्द जी से मिले तथा उनसे महाभाष्य इत्यादि पढ़ा और पूर्ण विद्या प्राप्त कर गुरु जी को दक्षिणा में लौंग देकर चलने लगे। तब गुरु विरजानन्द जी ने उनसे आजन्म वेद प्रचार की तथा देश में जो अविद्या अंधकार फैला हुआ था उसको दूर करने की प्रतिज्ञा कराई।

महर्षि दयानन्द ने अनेकों कष्ट सहकर भी जीवन भर वेद प्रचार किया और अन्त में जीवन का उत्सर्ग कर दिया। ◘

पृष्ठ ५ का शेष....

आज हम सब आर्य-जन इसी पावन संकल्प के साथ आगे बढ़े और जो बिछुड़ने की अर्थात् मुसलमान ईसाई आदि बनने की स्थिति में हैं, उन्हें इस पतन कार्य से रोकें, जो पहले बिछुड़ चुके हैं, उन्हें पुनः परावर्तन कर उनके साथ वास्तविक सम्मान और आत्मीयता का सद्व्यवहार करते हुए अपने में पूर्णतः आत्मसात् कर लें।

मिलाओ शुद्ध करके शुद्ध दिल से,
लख्ते जिगरों को,
नेरे नूरे नजर नजरों से पिनहा,
होते जाते हैं।।
न हर्गिज चाहिए कभी तहकीर शुद्धि की।
बड़ी मुश्किल से आई है, नजर तस्वीरशुद्धि की
यही वह पौधा है जिसे खून से,
स्वामी ने सींचा था।
मुसाफिर भी गये लिखकर,
वह तहरीर शुद्धि की।।

इस प्रकार जितने मुसलमानो ईसाइयों आदि का परावर्तन कर उन्हें आर्य बना लेंगे, उतनी ही संख्या गो भक्षकों की कम हो जाने से गोवध की संख्या में ह्रास होगा, जिसका पुण्य लाभ भी हमें प्राप्त होगा।

अन्यथा-

ऐ आर्यो जगो, हिन्दुओं सब उठो,
तुम सोते रहे देश लुट जायेगा।
तुम काश जागे नहीं, नीदं त्यागी नहीं,
तो धरम औ करम सब ही छुट जायेगा
राष्ट्र नौका भवर बीच डगमग हिले,
बन के मल्लाह पतवार को थाम लो।
डूब जाये न भारत की नइया कहीं,
इसे रोकने का ही व्रत ठान लो।।
यदि आलस में अब तुम पुनःपड़ गये,
आर्यो धर्म का दीप बुझ जायेगा। -1
अपनी भूलों से जब तुम विवस हो गये,
राम औ कृष्ण की जन्मभूमि छिनी।
विरोध भी बन्धु तुम हाय कर न सके,
औ महादेव बाबा की धूनी छिनी।।
नचेते अगर सोच लो आर्यो,
देश का देश पूरा ही छिन जायेगा। -2
सिर की चोटी कटें, लम्बी दाढ़ी रखें,
ओम् का नाम लेना भी दुश्वार हो।
देव यज्ञों की फिर न सुगन्धी उठे,
औ श्रुत गान की भी न झन्कार हो।।
नमाजों अजानों का फिर दौर ही,
देव भूमि में चहुं ओर बढ़ जायेगा। -3
बढ़ के रोको जलद जो फिसलने को हैं,
जा रहे और की गोद में थाम लो।
लो बिछुड़े हुओ को गले से लगा,
उनका दामन भी अपने में कस बाँध लो।।
यदि ऐसा न तुम आर्यों कर सके,
तो पूत ही बाप का शत्रु बन जायेगा-4
संगठन एकता का बजा दो बिगुल,
वैर द्वेषादि कटुता सभी त्याग दो।
छूत का भूत दिल से भगा दीजिए,
ऊँच औ नीच का दम्भ भी त्याग दो।।
आर्य राष्ट्र के "वीर" प्रहरी जगो,
वरना इस्लाम का भूत घुस जायेगा।
ऐ आर्यो जगो, हिन्दुओ सब उठो,
तुम सोते रहे देश लुट जायेगा। 1-5

अतः आज ही हम कृत संकल्प हो परावर्तन- यज्ञ का अपना लक्ष्य निर्धारित करें, इसे यज्ञ कार्य, पुण्यकार्य और धर्म कार्य मानकर पूरा करने में जुट जायें, तभी पावन वैदिक संकल्प और गुरुवर्य स्वामी दयानन्द जी महाराज एवं पूज्य बलिदानी शिरोमणि स्वामी-श्रद्धानन्द जी महाराज का परम् पावन स्वप्न "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" पूर्ण होगा। ◘

नवीन आ.स. मानसरोवर की स्थापना

जिला सभा के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी के प्रयास से एल0डी0ए0 कालोनी सेक्टर "एफ" क्षेत्र लखनऊ में नवीन आर्यसमाज मान सरोवर की स्थापना की गई जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुये।

प्रधान- श्री रामेश्वर लाल लवानिया
मंत्री- श्री आनन्द कुमार भण्डारी
कोषाध्यक्ष- श्री ओम प्रकाश सहगल

बोया पेड़ बबूल का--

• रविदत्त शर्मा आचार्य
आर्यसमाज आनन्द विहार (दिल्ली)

आयुर्वेदशास्त्र एवं धर्मशास्त्र मानवजीवन को श्रेय तक पहुँचाते हैं। आयुर्वेद शरीर को स्वस्थ बनाता है तो धर्मशास्त्र आत्मा को ऊर्ध्वगति प्रदान करता है, यह ही पूर्ण विकास का लक्षण है। शरीर को पुष्ट एवं नीरोग बनाना हमारा प्रमुख कर्तव्य है। शारीरिक विकास के लिये दो प्रकार के साधन हैं, एक तो कृत्रिम और दूसरा प्राकृतिक। मनुष्य द्वारा जुटाये गये साधन कृत्रिम हैं और प्रकृति से प्राप्त सुविधाएं प्राकृतिक हैं। प्रकृति की गोद में बैठकर सब कुछ अनायास उपलब्ध हो जाता है। आत्मा के उत्थान के लिये भी कुछ साधन अपेक्षित हैं, परन्तु इनका विभाजन नहीं किया जा सकता।

मनुष्य भौतिक ऐश्वर्य से तो पूर्ण सन्तुष्ट है, परन्तु आत्मा को भोजन नहीं मिल रहा है, क्यों कि प्रकृति से उसका सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। जंगल में स्वच्छ हवा से जो आनन्द मिलता है, क्या वह पंखे और कूलर के द्वारा सम्भव है? सूर्य की प्रातःकालीन किरणों का सेवन करने की प्रथा प्रायः बन्द होती जा रही है। हमारी दिनचर्या का कोई शास्त्रीय स्वरूप नहीं है, अपनी वासनाओं के अनुसार ही जीवन को ढाललिया है। आज जीवन का परिसर बहुत ही संकुचित होता जा रहा है। सोना, खाना, काम करना आज जीवन की यही परिभाषा है। हमारे शरीर का सीधा सम्बन्ध आत्मा से है। इन्द्रियों का संचालन मन करता है, मन को बुद्धि नियन्त्रित करती है और बुद्धि को आत्मा से प्रेरणा मिलती है। हम भोगों में जितने व्यस्त हैं, उतना चिन्तन-मनन आदि नहीं करते। स्वाध्याय में मन नहीं लगता, सत्संग के लिये समय नहीं, धार्मिक कृत्यों में श्रद्धा नहीं तथा उपदेश ग्रहण करने की आदत नहीं। इसका परिणाम यह है कि जीवन पूर्णतः अव्यवस्थित है।

प्रकृति की ओर से हमें सब कुछ निःशुल्क मिलता है फिर भी हम लेने को तैयार नहीं। उषा अमृत-वर्षा करती है, परन्तु अभागे सोये रहते हैं। तत्पश्चात् सूर्य देव प्रकट होते हैं, जो प्रातः कालीन दर्शन के बदले वर्चस प्रदान करते हैं, इसीसे मनुष्य वर्चस्वी बनता है। प्रातः जागरण से एक अपूर्व शक्ति का संचय होता है, आध्यात्मिक पक्ष प्रबल होता है, अनेको समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाता है क्यों कि बुद्धि उस समय निर्मल होती है।

ऋषि-मुनि जंगलों में कुटिया बनाकर रहते थे तो भी उनका जीवन पूर्ण सुखी था, इसका कारण उनका प्रबल चिन्तन था। आज तो ऋषियों की बात करना पिछड़े पन का प्रतीक माना जाता है। यह युग मन मानी करने का है। जो व्यक्ति जितना ही स्वेच्छाचारी है, वह उतना ही आधुनिक एवं उन्नतिशील कहा जाता है। प्रकृति के सुखद स्वरूप से अपरिचित, भ्रान्तिवश विषाक्त भोगों को चुन कर धूम्रपान, जरदा आदि नशीले पदार्थों के सेवन मे इस अनमोल हीरे को घुन लगादेता है और देखते ही देखते अल्पायु में संसार से विदा हो जाता है। परमात्मा की सृष्टि अपने में पूर्ण है, इसमें मनुष्य के लिये सारी सुविधाएं हैं, परन्तु बुद्धिजीवी प्राणी यदि फूलों को छोड़ कर काँटों पर चलने लगे तो इसमें किसका दोष है?

वैदिक धर्म प्रचारक महा-विद्यालय का सत्र उद्घाटन

दिनांक 22 जौलाई।990 रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अध्यक्ष माननीय श्री पं0 इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय, ब्रजघाट (गाजियाबाद) का सत्र उद्घाटन कार्यक्रम भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

सत्र उद्घाटन कार्यक्रम के शुभारम्भ में महाविद्यालय में प्रविष्ट ।3 सुयोग्य छात्रों ने ईश्वर स्तुति प्रार्थना के मंत्रों का सस्वर पाठ किया। इसके उपरान्त छात्रों के द्वारा भजन, भाषण का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर श्री शोभाराम जी प्रेमी, श्री प्रेम प्रकाश जी, श्री तेजपाल सिंह जी आर्य ने संगीत के माध्यम से पुरोगम को भव्यता प्रदान की।

माननीय श्री प्रधान जी अध्यक्ष पद से बोलते हुये विद्यालय की उन्नति की कामना की तथा आश्रम के कार्यकर्ताओं एवं छात्रों को अपना पावन आशीर्वाद दिया।

शान्ति यज्ञ

आर्यसमाज देवबन्द के भजनोपदेशक तथा पुरोहित महाशय दुर्गादास आर्य का चिरकाल की बीमारी के पश्चात् स्वर्गवास हो गया। आर्यसमाज देवबन्द की ओर से वैदिक रीति से उनका अन्त्येष्टि संस्कार कराया गया। उनके निवास पर ।-8-90 को प्रातः 9बजे शान्तियज्ञ कर उनको श्रद्धांजलि दी गई। उनकी आयु 75 वर्ष की थी। आर्यसमाज के प्रचार से क्षेत्र में उनका नाम प्रसिद्ध हो गया था।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

दानदाताओं से अपील

नेपाल में वैदिक धर्म प्रचारार्थ आर्य गुरुकुल की स्थापना विराट नगर में की गई है कुछ कमरे बने हैं, परन्तु स्थान पर्याप्त नहीं है धनाभाव के कारण कार्य अवरुद्ध हो रहा है दानी महानुभावों से निवेदन है कि वह आर्य समाज विराटनगर (नेपाल) के निम्न पते पर चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट से भेजें। ताकि नेपाल में वैदिक धर्म की दुन्दुभी बज सके।

मन्त्री, आर्यसमाज
विराटनगर (नेपाल)

गुरुकुल में प्रवेश सूचना

सर्वसाधारण के सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा लखनऊ के प्रतिष्ठित आर्य उद्योगपति श्री अर्जुनदेव महाना की कृपा से आचार्य पं0 रामकृष्ण (कलकत्ता) द्वारा संस्थापित गुरुकुल वेदाधि विद्यागार, पिपराघाट, उतरौला जनपद गोण्डा बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में होने के कारण । जुलाई ।990 से लखनऊ में श्री-मद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर में आ गया है।

सभा प्रधान तथा श्री महाना-साहब ने आचार्य रामकृष्ण के गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से प्रभावित होकर इन्हें श्री मद्दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय लखनऊ का कुलपति नियुक्त कर दिया है। इन दिनों इस गुरुकुल में 50 ब्रह्मचारी आर्षविधि से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। प्रवेश के लिए स्थान सीमित होने के कारण पत्राचार द्वारा पहिले सम्पर्क स्थापित करें। दान के लिए तथा कार्यक्रमों के लिए आचार्य जी से निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

- आचार्य रामकृष्ण (कलकत्ता)
कुलपति
श्री मद्दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय
दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर,
लखनऊ।

★ आर्यसमाज कांठ (मुरादाबाद)

प्रधान - श्री रामेश्वरप्रसाद पाण्डेय
मन्त्री - श्री रामचरित सिंह आर्य
कोषा0 - श्री राकेशचन्द जी

आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती

गतांक से आगे.... — श्री पुरुषोत्तम सिंह योग, लखनऊ

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता तो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।-----
यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में है। वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बाते हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्ते वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे---
---जो जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं, वे-वे सब में अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो-जो मतमतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन-उन का खण्डन किया है। इसमें यह भी अभिप्राय रक्खा है कि सब मतमतान्तरों की गुप्त व प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान अविद्वान सब साधारण मनुष्यों के सामने रक्खा है, जिससे सब से सब का विचार होकर परस्पर प्रेमी हो के सत्य मतस्थ होवें। --- जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता है, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मत वालों के साथ भी वर्तता हूँ।"

30 अक्टूबर सन् 1883 को विष प्रयोग के कारण भारत के इस सपूत का अजमेर नगर में निधन हो गया। श्री अरविन्द घोष ने दयानन्द का वर्णन इस प्रकार किया है :-

"उन विलक्षण महापुरुषों की पंक्ति में जो भावी पीढ़ियों की भारतीय पुनर्जागरण के शीर्ष स्थान पर दिखाई देंगे एक ऐसा व्यक्ति भी होगा जो अपनी अनोखी विशिष्टता के कारण अलग थलग दीख पड़ेगा- क्योंकि वह जैसा अपने व्यक्तित्व में अद्वितीय है वैसा ही अपने कार्य में भी है ।

"जैसे कि कोई छोटी बड़ी हरी-भरी एक से एक सुन्दर और मनोरम पहाड़ियों में घंटों घूमता घूमता किसी ऐसे गगन चुम्बी शिखर के पास पहुँच जाय जो सबसे अलग थलग अपनी निराली छटा बिखेर रहा हो, जिसके देखने से ही उसकी विराटता मन पर छा जाती हो, जिसके शिखर से जीवन दायनी, शुद्ध जल की धारायें फूट-फूट कर चारों ओर की वनस्पतियो का हरा भरा कर रही हों। दयानन्द को देखकर भी मन पर कुछ ऐसी ही छाप पड़ती है।

"दयानन्द की कार्यशैली ही अलग थी। वह संशयशील आत्माओं में चुपचाप प्रवेश नहीं करता था अपितु उन पर कुछ इस प्रकार की अमिट छाप उत्पन्न करता था जैसी की धातु की मूर्ति पर। उसके कार्य उसकी आत्मा की मानों संतान ही है-- सुन्दर शक्तिशाली और जीवनी शक्ति से ओत प्रोत ठीक अपने जनक की भांति। उसे निश्चय और स्पष्ट रूप से पता था कि उसे क्या करना है और उसके लिये वह अपने उचित उपकरण मानों दिव्य दृष्टि से चुन लेता था और एक जन्मजात कुशल कारीगर की भांति अपने कार्य का सम्पादन करता था।

"जब मैं ईश्वर की इस दुर्जेय कृति की ओर देखता हूँ तो मेरी दृष्टि में लगातार श्रम, संघर्ष, विजय और सफलताओं के चित्र घूम जाते हैं। और मैं अनायास कह उठता हूँ "दयानन्द"। तू सचमुच ज्योति पुंज है। परमात्मा की कृति का अनुपम योद्धा, महापुरुषों और संस्थाओं का निर्माता है तू। आत्मा की पदार्थ पर विजय का प्रतीक है तू" और इन सब चित्रों का मेरे मन पर जो प्रभाव पड़ता है वह आत्मिक व्यवहारिता का अनुपम गठबंधन है। आत्मा और व्यवहारिकता ही, जिनको हम सदैव दो विरोधी शब्द स्वीकार करते आये हैं, दयानन्द की वास्तविक और ठीक-ठीक परिभाषा है।

" उसकी *आत्मा* आज भी हमारे जैसे पुरुषत्व तथा कर्मठता में दुर्बल मनुष्यों को चिल्ला-चिल्ला कर कहती सुनाई देता है. "ऐ भारतवासियों अनिश्चित मना और ढुलमुलपन के जीवन पर संतोष मत करो देखो तो तुम्हें निर्माण करने में परमात्मा का ध्येय क्या है ? उसके उस ध्येय के परिपेक्ष्य में जीयो और उन्नति करना सीखो। और उसी के अनुसार अपने को ढालो। दार्शनिक तो बनो किन्तु जो सोचते हो उसे करते भी जाओ। प्रकृति पर विजय प्राप्त करो" क्योंकि दयानन्द स्वयं ऐसा ही था। उसकी आत्मा में ईश्वर का निवास था तो आँखों में दूर दृष्टि थी और हाथों में इतना कौशल और बल भी था कि उसी दृष्टि के अनुसार वह जीवन का निर्माण कर सकता था। स्वयं कठोर से कठोर पत्थर की भांति होने के कारण वह कठोर आघातों से पत्थर की मनमानी मूर्तियाँ निर्माण करना जानता था।

" मुख्य बात यह है कि उसने वेदों का आश्रय लिया जो कि भारत की प्राचीन आधार शिला रहे हैं। और उसकी तीक्ष्ण दृष्टि ने उसमें जिस ज्ञान को खोज पाया उसी में उसने एक पूरी राष्ट्रीयता के दर्शन किये।" ◘

ज्ञान दर्पण

1- क्या ईश्वर ने मनुष्य को मांस खानेवाला बनाया है? मांस जिन प्राणियों का भोजन है, उनके बच्चे जन्म के बाद कई दिनों तक अन्धे रहते हैं, वे जीभ से चाटकर पानी पीते हैं, वे जल्दी थक जाते हैं, वे अपना पसीना जीभ से लार टपका कर निकालते हैं और उनके हाथ-दाँत उसी उपयोग हेतु हैं। अतः हम मनुष्य मांसाहारी जीव नहीं हैं।

2- सूर्यग्रहण देखने से आँख का पर्दा जल जाने का भय रहता है।

3- बर्फ पर पड़ने वाली सूर्य की किरणों को नहीं देखना चाहिये। अन्धेपन का भय है। वेल्डिंग में होने वाले प्रकाश को नहीं देखना चाहिये।

4- सिरदर्द व शारीरिक पीड़ा की अवस्था में दूरदर्शन न देखें।

5- आयु बढ़ाने के लिये आवश्यक है कि दुर्व्यसनों से दूर रहा जाय। कम खाना, सन्तुलित आहार लेना तथा हल्का व्यायाम-लम्बी आयु का रहस्य है।

6- त्रिफला चूर्ण के साथ घी-शक्कर खाने से शारीरिक बल बढ़ता है।

-श्रीनिवास आर्य, आर्यपुस्तक भण्डार, भरवारी (इलाहाबाद)

वृहद् आर्य महा सम्मेलन

देश में धर्मपरिवर्तन एवं वर्ग संघर्ष को दृष्टि में रखते हुए आर्य उपप्रतिनिधि-सभा जिला- मेरठ ने दि0- 2,3,4 सितम्बर 1990 को रामलीला मैदान मवाना (मेरठ) में एक वृहद आर्य-महा सम्मेलन करने का निश्चय किया है। जिसमें आर्यजगत् के महान नेता, सन्यासी, महोपदेशक और उपदेशक भाग लेंगे।

साधारण जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में इस सम्मेलन में उपस्थित हो कर धर्मान्तरण एवं विघटन के कार्यो को रोकने में सहयोग प्रदान करें।

इन्द्रराज
मन्त्री

आर्य वीर दल गुरुकुल-करतारपुर

संरक्षक- श्री देवदत्त शास्त्री
प्रधान- ब्र0 अनन्त कुमार आर्य
मन्त्री- ब्र0 विमल प्रकाशार्य
कोषाध्यक्ष- ब्र0 आशीष सामन्त

प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा,उ0प्र0 उपदेश विभाग के अंतर्गत कार्यरत उपदेशकों प्रचारकों का प्रशिक्षण शिविर मास जौलाई,90 के अंतिम सप्ताह में पूर्व घोषित कार्यक्रमानुसार वैदिक धर्म प्रचारक,महाविद्यालय ब्रजघाट, {गाजियाबाद} में सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण शिविर के सर्वसम्मत महत्वपूर्ण निश्चयः-

{1} आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा उद्घोषित अधोलिखित तीन सूत्री कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार का निर्णयः-
{अ} गौहत्या निषेध, {ब} अंग्रेजी हटाओ {स} मद्यनिषेध।

{2} सभा के मुख्य पत्र आर्यमित्र साप्ताहिक के अधिक से अधिक ग्राहक बनाना।

{3} उपदेशक-प्रचारक नवीन आर्य समाजों की स्थापना ,मृत प्रायः आर्य समाजों के पुनर्जीवन, अस्पृश्यता निवारण,अराष्ट्रीय गतिविधियों को समाप्त करने में सजग, एवं आर्य समाज के संगठन को शक्तिशाली बनाने की दिशा में प्रयास करेंगे, इसी आधार पर उनके कृत कार्य का मूल्यांकन किया जायेगा।

{4} निश्चय किया गया कि प्रत्येक उपदेशक-प्रचारक महोदय प्रत्येक मास में अपने प्रयत्न पुरुषार्थ से सस्ती उत्सव योजना एवं प्रभाव शाली प्रचार योजना कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रचार का आयोजन किसी भी क्षेत्र में अवश्य करेंगे।

{5} उपदेशक प्रचारक महानुभाव स्वतंत्र रूप से अपने पास आने वाले कार्यक्रमों की अंतिम स्वीकृति कार्यालय सभा लखनऊ से अवश्य प्राप्त कर लिया करें, यह व्यवस्था के लिये अत्यन्त अनिवार्य है।

{6} कार्यक्रम अभाव अप्राप्ति एवं स्थगित होने की दशा में आपका कर्तव्य होगा कि आप प्रचार कार्यालय अमरोहा से तुरन्त तार-दूरभाष या व्यक्तिगत रूप से संपर्क स्थापित करें। तार का पता-हरिश्चन्द्र आर्य, {मंत्री} अमरोहा}

{7} प्रचार कार्य की साप्ताहिक प्रगति मुद्रित प्रपत्र पर प्रचार कार्यालय अमरोहा को अवश्य भेज दिया करें। इसी में आगामी कार्यक्रम या कार्यालय ध्यानाकर्षण संक्षेप में अंकित कर दिया करें। इसी आधार पर डायरी बिल पारित होंगे।

{8} सभा कार्यालय या प्रचार कार्यालय अमरोहा से भेजे जाने वाले कार्यक्रमों को अपनी डायरी में तिथिवार क्रम सं0 सहित विस्तृत विवरण अंकित किया करें।

{9} कर्मकाण्ड,ज्ञानार्जन, ज्ञानवृद्धि, विषयवदता,ध्यान,स्वर संशोधन एवं समसामयिक विषयों की बृहद ज्ञान जानकारी हेतु सभी उपदेशकों-प्रचारकों ने गत शिविरों की उपयोगिता को अनुभव करते हुये भविष्य में इस प्रकार के शिविरों के आयोजन पर विशेष बल दिया।

{10} उपदेशक प्रचारक महानुभाव जहाँ सभा के अनुशासन का पालन अनिवार्य रूप से करें वहाँ अपने उपदेश विभाग में कार्यरत सभी बन्धुओं के साथ एकता, सहयोग, सहृदयता, सद्भावना का परिचय देते हुये आर्य परिवार की भावना को बल दें।

पूज्यपाद स्वामी व्रतानन्द जी महाराज, आचार्य देवव्रत जी, पं0 केशवदेव जी शास्त्री,महोपदेशकों के सारगर्भित उपदेशों, प्रवचनों, निर्देशों एवं पं0 अभयराम जी शर्मा को भजन गीतों के प्रशिक्षण हेतु धन्यवाद दिया गया।

इन्द्रराज	हरिश्चन्द्र	मनमोहन तिवारी
प्रधान	अधिष्ठाता	मन्त्री
	उपदेश विभाग	

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0

पृष्ठ 3 का शेष.....

क्यों, जब तक फल प्राप्ति की इच्छा से किये गये शुभ कर्मों अर्थात् धर्म कार्यों के भी संस्कार साथ हैं, तब तक मोक्ष नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में पापों से निर्लिप्त रहते हुए जीवात्मा जन्म लेते हैं। जन्म ही न हो तो आगे सृष्टि किस प्रकार चले? सृष्टि ही समाप्त हो जाये तो जीवात्माओं की उपयोगिता ही क्या रह जायगी? मोक्षावधि पूर्ण करने पर जीवात्मा मोक्ष में रहने के अधिकारी नहीं रहते क्योंकि वह अपने द्वारा मोक्ष प्राप्ति के कर्मों का फल पूर्णरूपेण प्राप्त कर चुके। जीवात्मा अपनी सीमित शक्तियों के कारण जो कर्म करता है, वह सीमित ही होते हैं और सीमित कर्म का फल असीमित कदापि नहीं हो सकता।

जब सृष्टि नहीं होगी तो सृष्टि के उपादान कारण प्रकृति की उपयोगिता भी समाप्त हो जायेगी और फिर परमात्मा की ही उपयोगिता कहां रह जायगी? सृष्टि होगी नहीं तो परमात्मा के सृष्टि कर्तृत्व, पुरुषार्थ, दयालुता, न्यायकारिता आदि गुणों सहित परमात्मा ही अनुपयोगी हो जायगा। उपर्युक्त तथा इनसे सम्बद्ध अन्य उत्पन्न होने वाले प्रश्नों के उत्तर आर्य भिक्षुजी जन्म-जन्मान्तर में अनन्तकाल तक भी नहीं दे सकेंगे।

मुरादाबाद में एक भाषण में आपने कहा था "यज्ञ न करना पाप है। करना पुण्य नहीं, कर्तव्य है।" इसका अर्थ है कि आप पाप, पुण्य, कर्तव्य आदि शब्दों के अर्थ तक नहीं जानते। पाप और पुण्य परस्पर विलोम है। जो पाप है, वह पुण्य नहीं और जो पुण्य है, वह पाप नहीं हो सकता। कर्तव्य का अर्थ है किये जाने के योग्य और अकर्तव्य का अर्थ है न किये जाने के योग्य। किये जाने योग्य को ही धर्म कहते हैं और न किये जाने योग्य को पाप कहते हैं। यज्ञ का न किया जाना पाप है तो किया जाना कर्तव्य अर्थात् धर्म है और धर्म का ही नाम पुण्य है। आर्य भिक्षुजी पर्यायवाची और विलोम शब्दों का ज्ञान पहले प्राप्त करें, प्रयोग बाद में। मेरा उनसे यह नम्र निवेदन है कि या तो मेरे उपर्युक्त विवेचनों को झुठलायें और अपनी स्थापना को सत्य सिद्ध करें अन्यथा आर्यसमाज के मंच पर भाषण करना छोड़कर अध्ययन प्रारम्भ करें।

इस प्रकार के वक्ताओं से आर्यसमाजी वेद प्रचार करायेंगे? या जानबूझकर स्वयं आर्यबन्धुओं ने ही आर्यसमाज का भ्रान्त चित्र जनता के सामने प्रस्तुत करने का संकल्प कर रखा है।

आर्य भिक्षुजी की एक विशेषता यह है कि जहाँ आर्यसमाज भवन में यज्ञशाला न हो, वहाँ उसके लिये 5-10 सहस्र रुपये की घोषणा कर देते हैं और जहाँ आर्यसमाज का अपना भवन न हो वहाँ आर्यसमाज भवन के लिये कमरा बनवाने या कुछ सहस्र रुपये देने की घोषणा कर देते हैं। बस फिर क्या था, दो-चार वर्ष आपको रुपये मिलने के लोभ में बुलाया जाता रहता है, दक्षिणा भी अधिकाधिक मिलती है और प्रथम श्रेणी का रेल-भाड़ा भी। देते कहीं एक कौड़ी नहीं, इलाहाबाद की कल्याणी आर्यसमाज के विषय में अपनी ऐसी घोषणा की बात स्वयं आपने मुझसे कही और कुण्डा जनपद प्रतापगढ़ में दो वर्ष तक आपने दस सहस्र देने की घोषणा की किन्तु दिये आज तक दस पैसे भी नहीं। सम्भवतः वह "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने" तथा "सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार कर करने" वाले आर्यसमाज के नियमों का पालन और क्रियात्मक अर्थात् साचार प्रचार कर रहे हैं।

आर्यसमाज को ऋषि दयानन्द ने वेद के उद्धार का दायित्व सौंपा था किन्तु इस समय तो इस प्रकार के वक्ताओं और ऐसे व्यक्तियों के अन्ध भक्तों से आर्यसमाज के उद्धार का प्रश्न उपस्थित हो गया है। हमारा निवेदन है कि आर्यों की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस दायित्व को वहन करे। इन महापुरुषों से हमारे शास्त्रार्थ की व्यवस्था करें और यदि यह लोग शास्त्रार्थ के लिये तैयार न हों तो इनके लिये आर्यसमाज की वेदी बन्द कर दें। ◻

जिला उप प्रतिनिधि सभा,बदायूँ

सभा द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक डा0 भानुप्रकाशजी आर्य के पर्यवेक्षकत्व में जिलासभा बदायूँ का वर्ष 1990-91 का निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान - श्री रामकुमार आर्य इस्लाम नगर
मन्त्री - श्री महेशचन्द्र एडवोकेट आर्यसमाज बदायूँ
कोषाध्यक्ष- श्री गिरीशचन्द्र आर्य, आर्यसमाज-बिलसी

युवकों का निर्माण

• राम लाल तिवारी "रशिक"
जगतपुर (मैनपुरी)

आज देश के दुख हरने को
युवको का निर्माण चाहिए।
क्या कर सकते युग-परिवर्तन
मानव के नव-नव सुख साधन
कब तक तृप्ति भला दे सकते।
इस जग को अपंगु आराधन।
विजय-वधू अपनाने को तो
महा शक्ति आह्वान चाहिए।

रोने से निराश होने से-
क्या बन सकता काम भला है
संतोष नहीं जीवन को भाया
क्षण-प्रतिक्षण संग्राम चला है।
गीता का संदेश सुनावे----
हमको वह भगवान चाहिए।
जननी की सिसकन सुन सिहरन
उठती मन विश्राम कहाँ है
असिते। नहीं अभीष्ट मिला तो
शान्ति-शान्ति का नाम कहा है?
प्राण रहें, न रहें, पर जग में
हमको अपना मान चाहिए।।

शोक समाचार

डा0 श्री अशोक कुमार जी रस्तोगी नि0 रामपुर की पूज्यामाता जी श्रीमती-सुशीला देवी आर्या का 4 जुलाई 90 को निधन हो गया है। श्रीमती सुशीलाजी महिला आ0स0 रामपुर की कर्मठ सदस्या थीं उनके पुत्र डा0 अशोक कुमार जी-रस्तोगी ने इस दुखद अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 को 101/- (एक सौ एक रुपये) प्रदान किए हैं दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रभु से प्रार्थना ।

पं0 विश्वम्भर दत्त
उपदेशक सभा

पंजीकरण स० एल० डब्ल्यू / एन०पी० ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
भाद्रपद शुक्ल ६ संवत २०४७ वि
दिनांक २६ अगस्त १९९०
दूरभाष २४५९९२

आर्यमित्र आपके सानिध्य में उत्तरोत्तर उन्नति के सोपान पर आगे बढ़ता जा रहा है। आर्यमित्र में इस समय जो लेख तथा कवितायें आपके माध्यम से प्रकाशित हो रही है वे अतीव सरस तथा बोधगम्य होती हैं। आपके सम्पादकीय लेख इतने हृदय ग्राही होते हैं जिसे पढ़कर हृदय उल्लास से भर जाता है। प्रभु से प्रार्थना है कि आचार्य जी, सौम्यमूर्ति पंडित इन्द्रराज जी तथा युवा सम्राट मनमोहन तिवारी जी को शतायु करें और अपनी प्रिय पत्रिका आर्यमित्र का प्रचार प्रसार अधिक मात्रा में करें।

-तर्करत्न लक्ष्मीनारायण शास्त्री
सा0 रत्न,
आर्यसमाज लोकहवा-गोण्डा।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं २२४१/५७) भाद्रपद शुक्ल-१२ रविवार सवत् २०४७ वि. दिनाङ्क २ सितम्बर १९९० (घोषणापत्र सं. ७/२२-२-२५)



कृतित्व अमर है.

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मातं ँ शरीरम्

ओ३म क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर कृत ँ स्मर।।

पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से बना यह पचभूत शरीर मरणधर्मा है, भस्मीभूत है लेकिन इसी शरीर के माध्यम से किया हुआ कृतित्व सदैव अमर रहता है। अत हे कर्मशील जीव तू। ओ३म का स्मरण कर, किए हुए का स्मरण कर।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम ए

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१रू मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३ वाँ वर्ष

अंक - ३४

श्री पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी के निधन पर-

हिन्दी जगत में शोक की लहर

हिन्दी के लिए हर स्पन्दन के साथ अनवरत धड़कने वाला हृदय, माँ भारती का अनन्य सपूत पंचतत्व में विलीन ।

मइया साहब के नाम से जन-जन के प्रिय माँ भारती हिन्दी के अनन्य उपासक, प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार, सम्पादक एव अनेको ग्रन्थों के रचयिता पद्मविभूषण श्री प0 श्री नारायण चतुर्वेदी का 18 अगस्त 1990 को 97 वर्ष की आयु में उनके लखनऊ स्थित निवास पर निधन हो गया। वे इधर कुछ दिनों से रोगशय्या पर पड़े हुए भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए अहर्निश चिन्तामग्न रहते थे।



अद्भुत प्रतिभा के धनी इस महान साहित्यकार का जीवन प्रारम्भ से ही हिन्दी के लिए समर्पित रहा। उनका जन्म इटावा मे सितम्बर- 1893 में हुआ था। वैष्णव परिवार में जन्मे श्री चतुर्वेदी अपने बाल्यपन से ही कुशाग्रबुद्धि, साहित्य प्रेमी एवं अपनी बात के धनी थे। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम0ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आप श्री पं0 राम प्रसाद त्रिपाठी, महामना मदनमोहन मालवीय, पं0 बालकृष्ण भट्ट राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन जैसी राष्ट्र की महान् हस्तियों के सम्पर्क में आये और अपने जीवन को राष्ट्र एवं मातृभाषा की सेवा में समर्पित कर दिया। आप अनेक वर्षों तक उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश में उच्च शिक्षाधिकारी रहे और अपने कार्यालय का समस्त कार्य मातृभाषा हिन्दी में ही करते तथा कराते थे। 1948 से 1950 तक आकाशवाणी में उपमहानिदेशक पद पर आसीन रहकर आपने आकाशवाणी को हिन्दीमय बनाने उसके स्वरों को हिन्दी की सुरभि से सुरभित करने में अपना अमूल्य योगदान दिया। आपने दो दशकपर्यन्त हिन्दी की प्रमुख मासिक-पत्रिका **"सरस्वती"** का कुशल सम्पादन करके इसे साहित्यिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र की प्रमुख पत्रिकाओं में स्थान दिलाया। आप कवि हृदय के साथ ही हिन्दी के अप्रतिम लेखक भी थे, आपकी 22 से अधिक रचनाएं हिन्दी साहित्य का गौरव बढ़ा रही हैं। आपने कभी भी लोकैषणा अथवा लाभ के लिए सिद्धान्तों का बलिदान नहीं किया। जीवनयात्रा के किसी पड़ाव पर हिन्दी के विरोध में कितना ही बड़ा प्रलोभन उपस्थित क्यों न हुआ हो, कभी घुटने नहीं टेके। वे हिन्दी के लिए जिए हिन्दी के लिए मरे। उत्तर प्रदेश में पिछले कांग्रेसी शासनकाल में उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राज्यभाषा बनाने की घोषणा की गई थी तो उसके विरोध में उन्होंने एक लाख रूपयों का "भारतभारती" पुरस्कार ठुकरा दिया था और वृद्धावस्था का अत्यन्त जर्जर शरीर लेकर भी उर्दू विरोधी रोष यात्रा में भाग लिया था।

हिन्दी के वे अमरपूत थे, हिन्दी के लिए किया गया उनका त्याग हमारी प्रेरणा का अजस्र स्रोत है। आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री-मनमोहन तिवारी ने प्रदेश की आर्यजनता के अगणित अश्रुपूरित श्रद्धासुमनो के साथ उस स्वर्गीय आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उच्च तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ भाद्रपद शुक्ल-१२, संवत् २०४७ वि
दिनांक २-सितम्बर १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

चेतावनी के स्वर

देश के प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ-प्रताप सिंह का भावुकभरा हृदय है, विश्वास भी अतिशीघ्र कर लेते हैं पर यह राजनीति अतिकुटिल वारांगना है -- "वारांगनेव नृपनीतिरनेक रूपा"। किस वक्त विश्वास बदल जाये, समझौते बलाये-ताक रख दिए जायें- कोई भी नहीं कह सकता। प्रधानमन्त्री कोई भी हो सकता है पर यदि यह देश टूट गया तो इतिहास में जो अमिट धब्बा लगेगा उसे सदियाँ नहीं मिटा पायेंगी"। इसलिए लेखनी कठोर है अवश्य, पर देश की अस्मिता की रक्षा के लिए यह चेतावनी के स्वर निकल रहे हैं।

आजकल काश्मीर में राजनैतिक प्रक्रिया बहाल करने के लिए प्रधानमन्त्री का हृदय बहुत उतावला हो रहा है। इसीलिए काश्मीर के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री डा0 फारुख अब्दुल्ला से मिलने, बात करने के कई दौर केन्द्रीय सरकार ने चलाए भी हैं। उन्हें ससम्मान बुलाने के लिए केन्द्रीय गृहमन्त्री स्वयं लन्दन तशरीफ ले गये क्यों न हो रूठा हुआ मुख्यमन्त्री है उन्हें बिना मनाए काश्मीर में राजनैतिक प्रक्रिया बहाल हो ही नहीं सकती है। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि उन्ह और उनके पिता के शासनकाल ही हिमालय की इस सुन्दर उपत्यक में अन्दर ही अन्दर आग जलती रही थी। बारूद के ढेर जमा होते रहे थे, जहर से भरे हुए कैसेट बजाये जाते रहे थे, राष्ट्र को खण्डित करने वाले देशद्रोही नारे गूंजते रहे थे और काश्मीर का प्रशासन तथा काश्मीर का मुख्यमन्त्री सोया हुआ था। उसके कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारी/अधिकारी बेरोकटोक पाकिस्तानी अधिकृत काश्मीर में जाते रहे दुश्मनों से दीक्षा लेकर राइफल की नोक के साथ वापस आते रहे, उधर दीक्षा मिलती रही इधर हाजिरी लगती रही तनख्वाह भी मिलती रही। भारत सरकार की इन्टेलीजेन्स कहाँ थी- कुछ पता नहीं। और फिर राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार के आगमन के साथ ही विस्फोट हो गया क्योंकि हमारे क्षत्रियवर प्रधानमन्त्री ने राष्ट्ररक्षा का व्रत लिया हुआ था। राष्ट्र के साथ विश्वासघात करने वालों को सख्ती के साथ कुचलने का बीड़ा उठाया हुआ था। और उसी तरह जैसे बोफोर्स काण्ड का विदेशों से भारी मात्रा में आयातित चर्बी काण्ड का पर्दाफाश इन्हीं के प्रशासनकाल में हुआ था, उससे भी भयानक काश्मीर में सुलग रहे इस राष्ट्र विरोधी काण्ड का हुआ जो काश्मीर के भू0पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन की रिपोर्टों तथा वक्तव्यों से स्पष्ट हो जाता है।

यहाँ पाकिस्तान परस्तों का अखण्ड राज्य होने ही वाला था कि ईशकृपा से देश के राजनैतिक क्षितिज पर वर्तमान प्रधानमन्त्री का उदय हुआ और उन्होंने सख्ती से काश्मीर में उभड़ते इस विद्रोह को कुचलकर भारतीय जनमानस के समक्ष साहस का परिचय दिया है जिसके लिए राष्ट्र उनका साधुवाद करता है क्योंकि काश्मीर की समस्या राष्ट्र की समस्या है यह पूरे भारतीय जनमत का धर्मनिरपेक्ष प्रतिबिम्ब है। अब भारतीय जनता यह जानना चाहती है कि ऐसे में राजनैतिक प्रक्रिया शुरु करके जिन लोगों को प्रधानमन्त्री राजनैतिक मंच पर राष्ट्रीयता का मुखड़ा पहिनाकर बिठाना चाहते हैं उन्होंने संवाददाता सम्मेलन में आरोप लगाया है- "कि सुरक्षाबलों ने घाटी की जनता के विरुद्ध अघोषित युद्ध शुरू कर दिया है-- हाल के नरसंहार, आगजनी तथा महिलाओं के साथ बलात्कार की घटनाओं से सिद्ध होता है कि निहत्थे लोगों के विरुद्ध शासन शक्ति का प्रयोग कर रहा है- डा0 फारुख।" उन्होंने राजनैतिक प्रक्रिया बहाल करने के लिए पहली शर्त्त काश्मीर घाटी से सेना को वापस बुला लेने की लगाई है। डा0 साहब ने यह शर्त्त लगाने से पहिले काश्मीर जाकर अपने साथियों से परामर्श किया था उसके पश्चात् प्रधानमन्त्री के सम्मुख यह शर्त्त रखी गई है। इसके पूर्व भी कई बार पूरे काश्मीर से ही सेना को वापस बुलाए जाने तथा दोनों काश्मीरों के आपस में स्वच्छन्द आवागमन की माँग यदा-कदा उठाई जाती रही है और इसके पीछे क्या रहस्य है इसे प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है।

पूरा विश्व इस बात को जानता है कि आज काश्मीर जो बचा है तो केवल सेना के कारण। काश्मीर पर पाकिस्तान के तीन हमले हो चुके हैं। इन हमलों से काश्मीर को बचाने वाली सेना ही थी। यह केवल सीमाओं की सुरक्षा करने का सवाल नहीं है। पूरी काश्मीर घाटी की सुरक्षा का सवाल है। जिस तरह से वहाँ हथियारों के जखीरे के जखीरें मिलते जा रहे हैं उससे तो पता चलता है कि वहाँ सिविल ड्रेस में काश्मीर की मुस्लिम जनता को धर्म के नाम पर भड़का-भड़का कर पूरी पैरा मिलट्री फोर्स तैयार कर ली गई है जो किसी भी समय बाह्य आक्रमण का साथ देकर आन्तरिक बगावत कर सकती है और वहाँ की सिविल पुलिस-- वह तो पहिले भी थी- क्या कर पायेगी। ऐसी स्थिति में काश्मीर को कौन बचायेगा। इसलिए यह भारतीय राष्ट्र की आवाज है कि सेना को हटाने वाली शर्त कदापि स्वीकार न की जाय। काश्मीर समस्या के समाधान में अकेले डाक्टर अब्दुल्ला या काश्मीर के ही लोगों की मदद से काम नहीं चलेगा, यह पूरे राष्ट्र की समस्या है और पूरी भारतीय जनता का जनमत है इसलिए पूरे भारत की जनता का विश्वास प्राप्त करना होगा और यह विश्वास है-हमारे काश्मीर का वह हिस्सा हमें वापस दिलाया जाय जिसे पाकिस्तान ने अनाधिकृत रूप से कब्जे में ले रखा है, क्योंकि यही काश्मीर की समस्या का मूल है। पाकिस्तान के विदेश सचिव से जो वार्ता का दौर चल रहा है उसमें अन्य सभी बातों के अतिरिक्त काश्मीर के उस हिस्से को पाकिस्तान से वापस लिए जाने का मुद्दा प्रमुखरूप से उठाया जाना चाहिए।

विनम्र निवेदन

आपका प्रिय 'आर्य मित्र' आगामी दीपावली पर आपके विचारों की दीपशिखाएँ लेकर उस देव दयानन्द के दिव्य विचारों की आरती उतारने के लिए विशेषांक के रूप में प्रस्तुत हो रहा है। इसमें आपके देशकाल सम्बन्धी समसामयिक सामाजिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति उसके दिव्य चरणों में श्रद्धाँजलि का प्रतीक बनेगी।

अत: समस्त लेखकों, विद्वानों, मनीषियों, कवियों आदि से विनम्र अनुरोध है कि अपने विचारों को लेखबद्ध करके मुझे अधिकतम 30 सित० 1990 तक अवश्य भेज देने की कृपा करें। आर्यमित्र उन्हें इस विशेषांक में प्रकाशित कर अपने को विशेष रूप में गौरवान्वित समझेगा।

विदुषामनुचर: —
[illegible] पाठक
सम्पादक

अंग्रेजी का प्रथम विद्रोही
स्वामी दयानन्द सरस्वती

—रामज्ञानी आर्य देवरिया

भारत में व्यापारी के चोले में प्रवेश कर अंग्रेजों ने बाद में अनेक प्रकार की धोखाधड़ी की। दुर्नीतियों से राजनैतिक सत्ता हथिया कर उन्होंने मुख्यतः दो दिशाओं में अपना कुचक्र चलाना प्रारम्भ किया--

1- बड़े पैमाने पर भारतीय जनता का ईसाईकरण- बलात् प्रलोभन, नृशंस अत्याचार आदि साधनों से।

- भारत की प्राचीनकाल से प्रवाहित सभ्यता, संस्कृति, इतिहास इत्यादि का एक गहरे स्वार्थपूर्ण षड्यन्त्र द्वारा शिक्षा पद्धति का उन्मूलन और पाश्चात्योन्मुखी शिक्षा का चलन। प्रथम लक्ष्य पूर्ति की दिशा में- सरकारी व अर्द्धसरकारी नौकरियों के द्वारा ईसाइयों के लिए उन्मुक्त, साथ ही विविध प्रकार की प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सुविधा उस समय भारत की शासन डोर ब्रिटेन की ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ में थी। कम्पनी के शिक्षा सलाहकार के रूप में 1834 में मैकाले नाम का व्यक्ति भारत आया। वह ईसाईयत के प्रचार की धुन का पक्का था। यहाँ रहते हुए वह इस परिणाम पर पहुँचा कि जब तक हिन्दू शिक्षा पद्धति को एकदम बदल न दिया जायेगा, तब तक ईसाईयत के पैर यहाँ जम नहीं सकते। सन् 1836 अक्टूबर 12 को कलकत्ता से लिखे अपने पिता को एक पत्र में वह कहता है- हमारे अंग्रेजी स्कूल आश्चर्य रूप से बढ़ रहे हैं और हिन्दुओं पर इसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है। कोई भी हिन्दू जो इस अंग्रेजी शिक्षा को प्राप्त कर लेगा, वह कभी भी सच्चा हिन्दू बनकर नहीं रह सकता। फलतः कई हिन्दुओं ने ईसाईयत स्वीकार कर ली है। मेरा विश्वास है, यदि इस योजना का पालन किया गया तो 30 वर्ष बाद बंगाल की उच्च जातियों में एक भी मूर्ति पूजक नहीं रहेगा। यह काम बिना धर्म परिवर्तन और बिना धार्मिक स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप किये, इस शिक्षा पद्धति से स्वतः हो जायेगा। मैं इस भविष्य का ध्यान कर हृदय से प्रसन्न हो रहा हूँ।

वह 28 दिसम्बर 1855 को मैक्समूलर से मिला। कुछ भय सहित प्रलोभन द्वारा डॉ0 मैक्समूलर को इस बात के लिए तैयार कर लिया कि हिन्दूधर्म के वेद आदि प्राचीन ग्रन्थों का ईसाईयत की दृष्टि से ही मान्य करें। 1866 में मैक्समूलर ने अपनी पत्नी को एक पत्र में लिखा- मेरा यह वेद-अनुवाद और मेरा यह संस्करण भारत के भाग्य पर सबसे गहरा प्रभाव डालेगा। मेरा विश्वास है- पिछले तीन हजार वर्षों में जो कुछ प्रकाशित और प्रादुर्भूत हुआ है और जो हिन्दू धर्म का मूल है, उसका उन्मूलन करने का यही एक मात्र साधन है।

अंग्रेज की कूटनीति का पहला फन्दा:-

महर्षि दयानन्द को अपने जीवन काल में, देश में व्याप्त अज्ञान, अत्याचार, अन्याय, अभाव, विदेशी शासन तथा समाज में फैली सामाजिक-कुरीतियाँ, नारी, शूद्र तथा कथित शूद्र और मतान्तरों के पाखण्ड इत्यादि अनेक दोषों के साथ दिन-रात बौद्धिक स्तर पर अकेले ही युद्ध करने से उन्हें अपनी शिक्षा पद्धति को कार्यान्वित करने का अवसर ही न मिल सका। विदेशी सरकार के गुप्त और गहरे षड्यन्त्र के फलस्वरूप जोधपुर रियासत के एक मुस्लिम डाक्टर और कुछ पौराणिक हिन्दुओं की मिलीभगत के फलस्वरूप स्वामी दयानन्दजी को जो वहाँ वैदिक धर्म प्रचारार्थ गये हुए थे। कालकूट विष दिया गया था। यह पहला विष नहीं था, इन्हें जीवन में 13 बार विष दिया जा चुका था। पर स्वामी जी ने इन सबको सरकार व अन्य किसी की शिकायत किए बिना क्षमादान ही किया। यह अन्तिम विष बहुत घातक था। उच्चकोटि के योगी होने के हेतु, वह सदा विष के प्रभावों से कुछ ईसाइयों द्वारा अपने को बचाते ही रहे। इस बार भी विष दाता को अभयदान देते हुए उसे नेपाल भाग जाने और एतदर्थ अपने पास से 100 रु0 का मार्ग व्यय दे, बचा दिया। जोधपुर में इलाज की व्यवस्था ठीक न होने और अपने शुभचिन्तकों की प्रबल आग्रह द्वारा उन्हें आबू पर्वत पर इलाज के लिए लाया गया। वहाँ भी कुछ लाभ न होने पर भक्तजन उन्हें अजमेर ले आए। पर सर्वोत्तम इलाज और एकत्र हुए अनेक भक्तजनों के प्रयास से भी विष का प्रभाव न जा सका। अन्त में सन् 1983- दीपावली की संध्याबेला में लगभग 58 वर्ष की आयु में वेदमन्त्र पाठ के साथ प्रभु प्रार्थना करते और इन शब्दों के साथ "प्रभो तूने यह सुन्दर खेल रचा है, तेरी इच्छा पूरी हो, तूने अच्छी लीला की।" प्राणायाम के साथ अन्तिम श्वाँस छोड़ इस महापुरुष ने मोक्ष यात्रा की।

महर्षि दयानन्द की मृत्यु के बादः भक्तजनों द्वारा गुरुकुल की स्थापना :-

महर्षि दयानन्द के दिवंगत हो जाने के बाद देश में व्याप्त अनेक शिष्यों और भक्तों के माध्यम से उनके द्वारा प्रदर्शित शिक्षा पद्धति को कार्यान्वित किये जाने का आन्दोलन प्रारम्भ किया गया । विदेशी सरकार के अत्याचार और उसकी प्रेरणा पर ईसाईकरण के प्रयास में अपने प्रबल विरोधी स्वामी दयानन्द के देहावसान के फलस्वरूप कुछ तीव्रता ही आयी, जिससे कुछ आर्यसमाज और अन्य भारत हितैषियों का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था। शुद्ध विचारों को मूर्तरूप देने के लिए भगवान किसी उत्तम दृढ़ निश्चयी उद्देश्य के प्रति पूर्णतः समर्पित और संस्कारी व्यक्ति के अन्तःकरण को प्रेरित कर ही देते हैं। जालन्धर के प्रमुख वकील दृढ़ ऋषिभक्त अग्रगण्य आर्यसमाजी महात्मा मुन्शीराम बाद में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी ने अपनी जोरदार चलती वकालत शानदारकोठी

रइसों की सवारी बग्घी इत्यादि सम्पूर्ण चल-अचल सम्पति का आर्यसमाज को दान करने के बाद इस घोषणा के साथ की जब तक 36 हजार रूपया जनता से एकत्रित न कर लूँगा तब तक घर में वापस नहीं आऊँगा। गृह त्यागकर समस्त देश में भ्रमण कर और 6 महीने में यह राशि वसूलकर वापस आये। और गुरुकुल खोलने के लिए जनता से भूमिदान की अपील की। सत्कर्मों में प्रभु भी सहायक होते हैं यहाँ भी ऐसा हुआ। उत्तर प्रदेश के जिला बिजनौर के चौ0 अमन सिंह ने हरिद्वार से लगभग 7 मील दूर गंगा पार चंडीपर्वत की उपत्यका के नीचे कांगड़ी ग्राम सहित कई सौ वर्ग मील भूमि हिंसक पशु पूर्ण घने जंगल सहित दान देने की घोषणा की। महात्मा मुन्शीराम ऐसा ही स्थान चाहते थे। सन् 1902- फरवरी माह अपने दोनों बालकों व चौदह छात्रों के साथ घने जंगल में यज्ञ-अनुष्ठान के बाद गुरुकुल की स्थापना की गई। कुछ ही काल के बाद छात्रों की संख्या 400 हो गयी। यह संस्था इतनी लोकप्रिय हुई की इसे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय रूप दे दिया गया।

सन् 1923-24 में गंगा में प्रलयंकारी बाढ़ आने से उत्तर-प्रदेश के सैकड़ों कस्बों नगरों और फसलों की अकल्पित क्षति हुई। गंगा तट स्थित गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी भी इस बाढ़ के प्रकोप से पूर्णतः नष्ट हो गया। फलतः इस संस्था को पूर्णतः एक नए रूप में गंगातट से हटाकर हरिद्वार के ज्वालापुर के पास गंगा की नहर के तट पर एकान्त प्रदेश में समूचे नये भवनों में चालू किया गया। स्वतन्त्रता के बाद परिवर्तित परिवेश हेतु संशोधनों के साथ इस समय गुरुकुल को कुछ निश्चित राशि सरकारी अनुदान के रूप में प्राप्त होती है। इस समय लगभग एक हजार छात्र इस संस्था में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। गुरुकुल के स्थापना काल से ही यहाँ सह शिक्षा वर्जित है। जिसका पालन अभी तक हो रहा है। इस समय देश के कई प्रदेशों विशेषतः उत्तर-भारत में कुछ परिवर्तनों के साथ गुरुकुल सदृश कई संस्थाएँ प्रारम्भ हो चुकी हैं। □

आर्यसमाज काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल
वाराणसी

प्रधान - श्री यज्ञदत्त गौतम
मन्त्री - श्री शिवमित्र शास्त्री
कोषा0 - श्री रतिराम सिंह

स्वतन्त्रता सेनानी श्री रासबिहारी बोस

(जन्म २५ मई १८६५ निधन २५ अगस्त १९४५)

० पवन कुमार एल०टी० सिद्धान्तशास्त्री, लखनऊ

श्री रासबिहारी बोस एक ऐसे क्रान्तिकारी नेता थे जो भारत को स्वतन्त्र कराने के प्रयास में सन् 1911 से लेकर सन् 1945 तक निरन्तर संघर्षरत रहे। उन्होंने यह कल्पना की थी कि जो क्रान्तिकारी कार्य बंगाल में किया जा रहा है। उसे पंजाब तक फैलाया जाए और उसमें वे सफल भी हुए यदि भेदिए कृपाल सिंह ने सूचना नहीं दी होती तो कदाचित फरवरी 1915 में ही भारत स्वाधीन हो जाता। श्री-रास बिहारी बोस इतनी बड़ी क्रान्ति का उस समय आयोजन दिल्ली और लाहौर रहकर कर रहे थे। लार्ड हार्डिंज पर सन् 1912 में बम फेंकने के आरोप में जनरल्ल श्री रासबिहारी बोस भगोड़े घोषित हो चुके थे। उनको पकडने के लिए हजारों रूपयों का इनाम घोषित था। सभी प्रमुख स्टेशनों पर उनके चित्र लगा दिए गए थे। परन्तु तीन-तीन मुकदमों में भगोड़े घोषित होने पर भी श्री रास बिहारी बोस लाहौर बनारस और चन्द्रनगर में रहकर अपना क्रान्तिकारी कार्य करते रहे। एक दिन चुपके से ब्रिटिश सरकार की आँखों में धूल झोंक कर जापान जा पहुँचे। जापान मे भी अंग्रेजो सरकार उनके पीछे पड़ गई जापान सरकार ने भी उन्हें जापान से निकल जाने का आदेश दे दिया पर वे पुलिस के कब्जे में नही आए। पूरे तीस वर्ष तक जापान में रहकर भारत की स्वतन्त्रता के लिये प्रयास करते रहे। जब द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने नेताजी श्री सुभाष-चन्द्रबोस को जापान बुलाया और आजाद हिन्द सेना की कमान उन्हें सौंप दी। स्वतन्त्रता संग्राम के महान् क्रान्तिकारी श्री रासबिहारी बोस स्वतन्त्रता प्राप्ति के मार्ग पर चलते हुए त्याग साहस धैर्य, वीरता बुद्धिमत्ता तथा कष्ट सहन करते हुए बड़े प्रेरक और उत्साह वर्धक जीवन चित्र खीचे है जो किसी भी राष्ट्र प्रेमी के लिए प्रेरणा स्तम्भ के रूप में प्रयुक्त होने में सफल रहेंगे।

श्री रास बिहारी बोस का जन्म 25 मई सन् 1865 में एक बंगाली कायस्थ परिवार में हुआ था। यह ग्राम पेरत्मबेदारी था जहाँ श्री रासबिहारी-बोस के मामा रहते थे। श्री रासबिहारी-बोस के जन्म के पश्चात् उनकी माता अपने पीहर में ही रही।

श्री रास बिहारी बोस की माताजी देशभक्तों और वीरों की कहानियां सुना-सुना कर अपने पुत्र को एक कर्तव्यनिष्ठ स्वदेशभक्त तथा स्वाभिमानी बालक की शिक्षा प्रदान की। शिक्षा समाप्त होने पर सेना में भर्ती होना चाहते थे। सैनिक बनने की अभिलाषा बचपन में ही रख्खे हुए थे पर उन्हें सफलना नहीं मिल पा रही थी। अंग्रेज कायस्थों को सेना में भर्ती नही करते थे यद्यपि रास बिहारी की शारीरिक गठन अच्छा था उनमें स्फूर्ति भी अच्छी थी फिर भी वे सेना में भर्ती नही हो सके। सेना में प्रवेश करने का प्रयोजन यह था कि वे सैनिकों को सशस्त्रक्रान्ति के लिए प्रेरित करें। श्री रास बिहारी बोस के सामने जीविकोपार्जन की समस्या चिह्नके रूप में खड़ी हो गई। संयोगवश फोर्टविलियम में सरकारी नौकरी मिल गई। फोर्ट विलियम में काम करते हुए श्री रास बिहारी बोसको बड़े कटु अनुभव प्राप्त हुए। गोरे अंग्रेज भारतीयों से बड़े कठोरतम और श्रयमान जनक स्थिति से पेश आते थे। फोर्टविलियम से काफी समय तक काम करने के पश्चात् कसौली और देहरादून चले गए। देहरादून में श्री रास बिहारीबोस फारेस्ट रिसर्च इस्टीटयूट के कार्यालय में लिपिक (क्लर्क के रूप में काम करने लगे) पश्चात् वे प्रधान लिपिक बना दिए गए।

श्री रास बिहारी बोस का राजनैतिक जीवन उस समय से प्रकाश में आया जब अनुशीलन समिति के एक नेता श्री हाजरा कलकत्ते में आकर अज्ञात वास करने लगे। उनके प्रयत्न से ढाका के अनुशीलनदल के क्रान्तिकारियों और चन्द्रनगर के क्रान्तिकारियों में मेल हुआ। उस समय यह निश्चित किया गया कि श्री रास बिहारी बोस उत्तर प्रदेश में जाकर उत्तर प्रदेश पंजाब और राजस्थान में क्रान्ति का काम सम्भालें।

उत्तर प्रदेश के देहरादून में काम करते समय श्री रास बिहारी का सम्पर्क बसन्तकुमार से हो गया जो क्रान्तिकारी विचार का था। बसन्तकुमार रास बिहारी का मित्र बन गया। दोनों मित्र क्रान्तिकारी कार्यों में रुचि लेने लगे।

— शेष पृष्ठ १० पर

शहीदों के नाम

● डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी
बरेली

गीत कुछ अर्पित करो, उनको कि सुरभित फूल बनते,
जो लहू अपना बहा कर के नया इतिहास लिखते।

लौटना पीछे नहीं जो जानते हैं,
लक्ष्य को अपना सदा पहचानते हैं,
गोलियाँ निर्भीक खाते और खिलाते,
रिपु समझ जिनको प्रलय, चहुँ भागते है।

कर्म के तरु हैं सघन, रक्षामयी जो छांह बनते।
जो लहू अपना बहाकर के नया इतिहास लिखते।

प्राण से प्यारा जिन्हें है देश अपना,
नीड़ से प्यारा जिन्हें है धर्म अपना,
ज्योति देने को जलाते आयु दीपक,
राह से बढ़ कर, जिन्हें गतिमान बनना।

मन - वचन और कर्म से जो एकता का गान करते,
जो लहू अपना बहाकर के नया इतिहास लिखते।

रुद्र के विषपान की सौगन्ध जिनको,
राम शर-सन्धान की सौगन्ध जिनको,
दिव्य गीता गान की सौगन्ध जिनको,
सिद्ध भैरव - गान की सौगन्ध जिनको,

भारती के भाल पर जो हैं तिलक का रूप बनते,
गीत कुछ अर्पित करो, उनको कि सुरभित फूल बनते।

शान्ति-वन का दूर जो आतंक करदे,
क्रूर - हिंसा गोलियाँ भी नष्ट कर दे,
जो घृणा की बोलियाँ नानक-चमन में,
देशद्रोही जाति को ही दूर कर दे।

राष्ट्र के बदले नहीं जो स्वर्ग भी स्वीकार करते।
गीत कुछ अर्पित करो उनको सुरभिमय फूल बनते।

स्वप्न अलकों के नही जिनको बुलाते,
जो विजय की मांग को केवल सजाते,
प्रेरणा भुजपाश होकर बाँधती है,
जो समर पदचाप को पायल बताते।

भूल कर श्रृंगार को, जो अग्नि पंथी वीर बनते।
गीत कुछ अर्पित करो उनको, सुरभिमय फूल बनते।

यज्ञ हवन से लाभ

— श्री पुष्कर लाल आर्य
कलकत्ता

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव ।।
{यजुः 30-1-3}

जैसे परमेश्वर ने सब प्राणियों के सुख के अर्थ इस सब जगत् के पदार्थ रचे हैं, वैसे मनुष्यों को भी परोपकार करना चाहिये।

प्रश्नः-होम से क्या उपकार होता है?

उत्तरः- सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख, और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

प्रश्नः- चन्दनादि घिस के किसी को लगावें, वा घृतादि खाने को देवें तो बड़ा उपकार हो। अग्नि में डाल के व्यर्थ करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

उत्तर- जो तुम पदार्थविद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो। जहां होम होता है, वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के फूल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

प्रश्नः- जब ऐसा ही है तो केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प, अतर आदि के घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखकारक होगा।

उत्तरः- उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके, क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है। और अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न-भिन्न और हल्का करके बाहर निकालकर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता है।

प्रश्नः- तो मन्त्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है?

उत्तर- मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जायें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें। वेदपुस्तकों का पठन-पाठन और रक्षा भी होवे।

प्रश्नः-क्या इस होम करने के बिना पाप होता है?

उत्तरः- हां! क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर में जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है, उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिये उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक, वायु और जल में फैलाना चाहिये। और खिलाने-पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुखविशेष होता है। जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है, उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है। परन्तु जो मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खावें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके। इससे अच्छे पदार्थ खिलाना-पिलाना भी चाहिये, परन्तु उससे होम करना अधिक उचित है, इसलिये होम करना अत्यावश्यक है।

प्रश्नः-प्रत्येक मनुष्य कितनी आहुति करे और एक-एक आहुति का कितना परिमाण है?

उत्तर -प्रत्येक मनुष्य को सोलह-सोलह आहुति और छ-छ माशे घृतादि एक-एक आहुति का परिमाण न्यून से न्यून चाहिये, और जो इससे अधिक करे तो बहुत अच्छा है। इसीलिये आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय। ये दो यज्ञ अर्थात् "ब्रह्मयज्ञ" जो पढ़ना-पढ़ाना, सन्ध्योपासन, ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करना। दूसरा "देवयज्ञ" जो अग्निहोत्र से ले के-यज्ञ और विद्वानों की सेवा संग करना। परन्तु ब्रह्मचर्य में केवल ब्रह्मयज्ञ और अग्निहोत्र का ही करना होता है।

राज्यपाल द्वारा ब्लूस्टार के लिए क्षमा याचना अनुचित

दिल्ली 28 जुलाई। पंजाब के राज्य श्री वीरेन्द्र वर्मा द्वारा ब्लूस्टार आपरेशन के लिए माफी मांगे जाने पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कहा कि इससे सारे देश का अपमान हुआ है और यह एक प्रकार से जुर्म और साम्प्रदायिकता के समक्ष सरकार द्वारा घुटने टेकने के बराबर है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की दवा से तो मर्ज और बढ़ेगा। आतंकवाद मजबूत होगा, प्रशासनिक गतिविधियां निष्क्रिय ही नहीं होंगी, अपितु सेना तथा पुलिस का मनोबल भी गिरेगा। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि राष्ट्रवादी जनता ऐसी गतिविधियों को कभी भी स्वीकार नहीं करेगी।

श्री वन्देमातरम् जी ने इस संदर्भ में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री भारत सरकार तथा राजनीतिक दलों के नेताओं को पत्र भेजकर विरोध प्रकट किया है।

संवाद सूत्र।

स्वास्थ्य-सुधा

समस्याः- "मेरा बालक प्रहलाद बी0एस0सी0 का छात्र है। छोटी उम्र में दौरे से पीड़ित हो गया। अंग्रेजी दवाई का इस्तेमाल चार साल तक होता रहा। अध्ययन करते समय या किसी- भी समय 10-15 मिनट तक मस्तिष्क सुन्न हो जाता है।"

-सेवाराम आर्य, दीवालहेडी {सहारनपुर}

समाधानः- प्रातः सहतूत की सात पत्ती और दो कालीमिर्च पीसकर एक गिलास शर्बत में घोलकर 40 दिन तक पीना जारी रखें। प्रत्येक भोजन बाद नेड {चरक} दो गोली लेकर शंखपुष्पी सीरप दो ढक्कन एक प्याला पानी में घोलकर पियें। दो अखरोट और सौंफ-चीनी-रात्रि भोजन बाद चबाया करें। प्रातः व सायं ग्यारह बार गायत्री मन्त्र का जाप करना न भूलें।

{2}

समस्या-" स्वामिनी ओ३म् प्रेमिणी आयु 72 वर्ष लगभग 4 वर्ष से रक्तार्श से पीड़ित है। प्रायः कोष्ठबद्धता रहती है। भूख नहीं लगती है।"

-स्वामी ओ३म् प्रेमी, गुरुकुल-होशंगाबाद -461001

समाधानः-शौच के एक घण्टा बाद बवासीर के खूनी मस्सों पर दुर्वादिघृत {वैद्यनाथ} लेप करना चाहिये। प्रत्येक भोजन बाद अर्शोनिट {चरक} दो गोली खाकर अभयारिष्ट {गुरुकुल कांगड़ी} दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। दो मास से अधिक तक उपचार करें।, -बवासीर से मुक्ति।

0-रोग विवरण के साथ तीन रूपये डाक लिफाफे भेजना अनिवार्य है.-

स्वामी गुरुकुलानन्द सरसवती
आर्यसमाज पिथौरागढ

आर्यसमाज बागपत

प्रधान- श्री कुँवर पाल सिंह चौहान
मंत्री- श्री मा0 सत्य प्रकाश गौड
कोषाध्यक्ष- श्री प्रकाश चन्द

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

विकास का क्रांतिरथ चला गांव की ओर..



छ महीने पहले देश की जनता ने व्यवस्था परिवर्तन की आकांक्षा से सत्ता परिवर्तन का सामूहिक निर्णय किया था। सत्ता परिवर्तन की इस बयार में उत्तर प्रदेश की जनता ने हमारे दल की घोषित नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर हमें अपने स्नेह और विश्वास की थाती सौंपी। जनता के इस विश्वास और आकांक्षा को मूर्त रूप देने का दायित्व हमारे दल ने लोकतांत्रिक पद्धति का अनुसरण करते हुए सर्व सम्मति से मुझ जैसे ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति को सौंपा। जनता से किये गये वायदे हमें सतत सतर्क और सक्रिय रहकर पाँच सालों में पूरे करने हैं।

चुंगी शुल्क समाप्त

अगस्त माह की पहली तारीख से स्थानीय निकायों से चुंगी शुल्क समाप्त किया जा रहा है। इससे छोटे व्यापारियों कृषि व्यवसायियों उद्यान कृषि व्यवसायियों तथा आम उपभोक्ता को काफी लाभ होगा।

भाषा नीति

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" के सिद्धान्त पर अमल करते हुए आम जनता के हित में उ0प्र0 सरकार ने प्रदेश में सरकारी काम काज हिन्दी में करने का निर्णय लिया है। उ0प्र0 सरकार की भाषा नीति के तहत राज्य सरकार ने विभिन्न राज्यों में उनकी भाषाओं में ही पत्र-व्यवहार का निर्णय लिया है। राज्य के आठ जिलों में कुछ चुने हुये विद्यालयों में दूसरी भारतीय भाषायें पढ़ाने की व्यवस्था की जा रही है। इसी तरह हम राज्य सरकार की उर्दू नीति को भी सच्चे दिल से लागू करेंगे। इसके अलावा प्रदेश में अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी आदि विदेशी भाषाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था जारी रहेगी। भावात्मक राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में यह एक सराहनीय प्रयास है।

भूमि सेना योजना

इस योजना के अंतर्गत ऐसी ऊसर भूमि पर जो कि कृषि योग्य नहीं है। सुधार कार्य किये जायेंगे। सुधार के बाद यह भूमि भूमिहीन मजदूरों को यथासम्भव आवंटित की जायेगी।



'परिवर्तन वहाँ से होगा जहाँ किसान-मजदूर और आम जनता रहती है। सरकार की ओर से यह आश्वासन करना चाहूँगा कि वह सदैव जनता के साथ कदम से कदम मिलाकर विकास के पथ पर चलती रहेगी।'

— मुलायम सिंह यादव

भूमि सेना योजना में वर्ष 1990-91 के लिये रू0 35 करोड़ मैदानी क्षेत्रों एवं रू0 3 करोड़ पर्वतीय क्षेत्रों के लिये रखे गये हैं।
इस योजना के तीन प्रमुख लाभ है -

- ग्रामीण अंचलों में रोजगार के नये अवसर उपलब्ध होंगे।
- अधिक से अधिक भूमि का उत्पादनकारी कार्यों में उपयोग होगा।
- भूमिहीनों को अधिक से अधिक से कृषि योग्य भूमि सीधे उपलब्ध होगी।

रोजगार सृजन

- ऐसे बेरोजगार लोगों को जिनके पास कृषि शिक्षा के साथ-साथ इण्टरमीडिएट या उच्चतर डिग्री भी है। हस्तचालित ट्रैक्टरों की खरीद पर 33 / अनुदान अनुदान की अधिकतम सीमा रू010,000/-है।
- लघु एवं ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा दिया जायेगा ताकि ग्रामीणों को रोजगार के अधिक अवसर सुलभ हो सकें।
- इस वर्ष 74,000 खादी एवं ग्रामोद्योग इकाइयाँ स्थापित की जायेंगी। इससे लगभग 2 30 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा।
- आठवीं योजना के अंत तक प्रत्येक विकास खण्ड में एक लघु औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने की योजना।
  अल्पसंख्यक समूहों को स्व-रोजगार हेतु 'ऋण सेवा शिविरों' द्वारा आर्थिक सहायता दी जायेगी।
- रिक्शा चालक 1/6 योगदान देकर अपने रिक्शे पर मालिकाना हक प्राप्त कर सकते है। इस हेतु राज्य सरकार 1/3 योगदान देगी एवं शेष धन बैंक जुटायेगा।
- आई0आर0 डी0पी0 के अंतर्गत योजनाओं का औसत मूल्य रू0 6.568 से बढ़ाकर रू010,000 न्यूनतम एवं औसत अनुपूर्ति का अनुदान रू02000 से बढ़ाकर रू02 500 कर दिया गया है।
- 'जवाहर रोजगार योजना' के अन्तर्गत रू0510 93 करोड़ का परिव्यय तथा 1703 72 लाख मानव दिवस के समतुल्य रोजगार के अवसर सृजित किये जायेंगे।
- आठवीं योजना में 500 बृहत व मध्यम उद्योगों की स्थापना का लक्ष्य। अनुसूचित जाति/जनजाति, महिलाओं, भूतपूर्व सैनिकों, प्रवासी भारतीयों एवं अल्पसंख्यकों में उद्यमिता को बढ़ावा देना।

शिक्षा नीति

सरकार एक ऐसी शिक्षा प्रणाली तैयार करना चाहती है जो स्वस्थ प्रबुद्ध एवं आत्मनिर्भर पीढ़ी का निर्माण कर सकें।

"कक्षा 12वीं तक निःशुल्क शिक्षा"

सरकार ने प्रदेश के बालक-बालिकाओं दोनों ही के लिये बारहवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा देने का निर्णय लिया है।

इससे जहाँ एक ओर सरकार को रू013करोड़ का अतिरिक्त व्यय उठाना होगा वहीं दूसरी ओर इस योजना से 22 57 लाख बच्चों के परिवार लाभान्वित होंगे।

- सभी प्राथमिक पाठशालाओं को भवन दिये जायेंगे। इस वर्ष लगभग 15,000 स्कूल भवनों का निर्माण किया जायेगा।
- 300 अशासकीय सीनियर बेसिक स्कूलों एवं 200 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को अनुदान दिये जायेंगे।
- 100 विकास खण्डों में जहाँ कोई स्कूल नहीं है, राजकीय कन्या हाईस्कूल खोले जायेंगे।
- डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के निर्माण कार्य हेतु रू05 करोड़ दिये जायेंगे।

ऋण राहत योजनाएं

- यह योजना किसानों, बुनकरों, दस्तकारों, शिल्पकारों तथा भूमिहीन कृषि मजदूरों को उनके द्वारा 2 अक्टूबर, 1989 तक या उससे पूर्व लिये गये सहकारी ऋणों के अतिदेयों से राहत दिलाने हेतु घोषित की गई है।
- इसमें काश्त की कोई सीमा नहीं है।
- इसमें उन कर्जदारों को 10,000 रूपये तक की राहत मिलेगी जो आदतन नादेहन्द नहीं है। इस हेतु बजट में इस वर्ष रू0350 करोड का प्रावधान है एवं इससे 36 लाख ऋणियों को लाभ मिलने की आशा है और ये सभी सहकारी सदस्य नया ऋण प्राप्त करने के पात्र हो जायेंगे।

समाज कल्याण

समाज के हर वर्ग के विकास एवं हित को ध्यान में रखते हुये सरकार ने ये कदम उठाये है -

- इस वर्ष पहली जनवरी से पेंशन राशि रू060 से बढ़ाकर रू0100 प्रतिमाह एवं न्यूनतम आयु 65 से घटाकर 60वर्ष। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में ढाई एकड़ भूमि वाले या भूमिहीनों को लाभ शहरी क्षेत्रों में रू0225 प्रतिमाह आय वालों को भी इस पेंशन की पात्रता। इस योजना हेतु रू056 02 करोड रुपये का प्रावधान। स्वतन्त्रता सेनानियों की पेंशन गत 1 अप्रैल से रू0401 प्रतिमाह बढ़ाकर रू0500 प्रतिमाह कर दी गई है।
- स्वतंत्रता की अलख जगाने वाले वयोवृद्ध पत्रकारों के लिये गत 1 जनवरी से वित्तीय सहायता की व्यवस्था।
- 60 वर्ष से अधिक आयु वाले विपन्न ख्याति प्राप्त साहित्यकारों एवं कलाकारों को गत 1जनवरी से आर्थिक सहायता।
- बड़े शहरों में निराश्रितों के लिये रैन बसेरा।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत 10.340 उचित मूल्य की दुकानों द्वारा आवश्यक वस्तुओं का वितरण।
- पेयजल व्यवस्था तथा ग्रामीण आपूर्ति हेतु रू0 136.36 करोड़ का प्रावधान।
- समस्याग्रस्त गाँवों में प्रति 250 व्यक्ति एक हैण्ड पम्प।
- प्रदेश के 5 नये शहरों एवं 48 अन्य शहरों में नल आपूर्ति व्यवस्था के लिये रू0 18 करोड़ खर्च किये जायेंगे।

ग्रामीण खेलकूद व अन्य कार्यक्रमों हेतु रु05 20 करोड़ तथा ग्रामीण युवाओं के विकास हेतु रु03 13 करोड़ का व्यय प्रस्तावित।

परमवीर चक्र, महावीर चक्र एवं वीरचक्र की एक मुश्त पुरस्कार राशि बढ़ाकर क्रमशः 1 लाख 75 हजार एवं 50 हजार रुपये कर दी गई है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के भूतपूर्व सैनिकों या उनकी विधवाओं को रु0100/- प्रतिमाह पेंशन।

अभियंत्रण एवं वस्तु उद्योग में चालू ठेका श्रमिक प्रणाली निषिद्ध।

तम्बाकू उद्योग में लगे श्रमिकों का वेतन पुनरीक्षित, चर्म उद्योग के श्रमिकों के वेतन में भी वृद्धि।

कृषि विकास

कृषक की समृद्धि को उद्देश्य बनाकर सरकार ने कृषि के विकास के लिये निम्न प्रयास किये हैं -

- कृषि निवेशों की आपूर्ति हेतु एक वृहत कार्यक्रम। विश्व बैंक की सहायता से रु0176 करोड़ की प्रशिक्षण एवं प्रसार योजना का प्रदेश के 30 जिलों में विस्तार।

  सूखोन्मुख क्षेत्रों में स्प्रिंकलर/ड्रिप सिंचाई सेटों पर किसानों को रु010,000 तक की सीमा तक 50% अनुदान। इस पर रु03 5 करोड़ का खर्च अनुमानित।

- वृहत तथा मध्यम सिंचाई परियोजनाओं पर रु0304 05 करोड़ के प्रस्तावित व्यय से 1 25 लाख हैक्टेयर भूमि की सिंचाई क्षमता का सृजन।

  राजकीय लघु सिंचाई कार्यक्रमों के लिए रु0 148 27 करोड़ का परिव्यय। मैदानी क्षेत्रों में रु050 करोड़ से 250 नलकूपों का उर्जीकरण।

गन्ना मूल्य में वृद्धि

गन्ने के मूल्य में वृद्धि होने से 27 लाख कृषक परिवारों को लाभ पहुँचा है। इससे रु01150 करोड़ का अधिक भुगतान होगा।

दैवी आपदा राहत निधि

- रु0 90 करोड़ की व्यवस्था इस दैवी आपदा राहत निधि में की गई है। ऐसे कृषकों को जिन्हें ओलावृष्टि या अन्य किसी प्राकृतिक विपदा द्वारा 50% से अधिक फसल का नुकसान हुआ है, रु0300 प्रति हैक्टेयर की दर से राहत राशि दी जायेगी। इसकी अधिकतम सीमा रु0 1500 है।
- कृषकों को 10% प्रभार (सेवा शुल्क प्रासंगिक व्यय) से मुक्ति।

महिला कल्याण

महिलाओं को विकास के समान अवसर देने एवं हर स्तर पर उन्हें सहयोग देने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश सरकार ने निम्न कदम उठाये हैं -

- निराश्रित विधवाओं एवं विकलांगों का भरण-पोषण अनुदान रु0 60 से बढ़ाकर रु0100 प्रतिमाह कर दिया गया है। इससे इस वर्ष 3 05 लाख विधवाओं व विकलांगों को लाभ होगा।
- गाँवों में महिलाओं के लिये 2 लाख निजी शौचालयों का इस वर्ष निर्माण इस हेतु रु026 39 करोड़ की व्यवस्था।
- महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से रु0 3 करोड़ मूल्य की एक नई महिला रोजगार समर्थन योजना लागू की जायेगी।
- कामकाजी महिलाओं हेतु लखनऊ इलाहाबाद, वाराणसी तथा आगरा जैसे नगरों में 60 व्यक्ति क्षमता वाले छात्रावासों का निर्माण।

अनुसूचित जाति/जनजाति कल्याण

अनुसूचित जाति जनजाति के लोगों की आर्थिक-सामाजिक स्थिति और मजबूत करने के उद्देश्य से सरकार निम्न प्रयास कर रही है -

अम्बेडकर ग्राम योजना

- प्रदेश में 10 000 गाँव अनुसूचित जाति जनजाति बाहुल्य के है। इन ग्रामों में पर्यावरण एवं जीवन सुधार की व्यवस्था योजनाबद्ध ढंग से की जायगी। ऐसे गाँवों को अम्बेडकर ग्राम के नाम से जाना जायेगा।

  निर्बल वर्ग ग्रामीण आवासीय योजना के अंतर्गत इस वर्ष 7 लाख आवास बनाये जायेंगे।

- अनुसूचित जाति के लक्षित परिवारों में उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उनको देय अनुदान अब बढ़ाकर 50% एवं अनुदान सीमा रु0 3,000 से बढ़ाकर रु 5000 कर दी गई।
- मैदानी क्षेत्रों में एकीकृत ग्राम्य विकास कार्यक्रम में अनुसूचित जातियों के परिवारों का आरक्षण 50% से बढ़ाकर 60% कर दिया गया है।
- इस वर्ष 7,110 हरिजन बस्तियों एवं जनजाति ग्रामों में पेयजल की सुविधा।
- स्वच्छकारों को सिर पर मैला-गन्दगी उठाने से मुक्ति। नगर क्षेत्र एवं नगरपालिका में दो पहिया, चार पहिया गाड़ियाँ चलाने का निर्णय। नगरों में 40,000 शुष्क शौचालयों के स्थान पर जल प्रवाहित शौचालयों एवं 100 नये सार्वजनिक सुलभ शौचालयों का निर्माण।
- हरिजन एवं जनजाति बाहुल्य के क्षेत्रों में 50 नये होम्योपैथिक दवाखाने खोले जायेंगे।
- पिछले वर्ष की अपेक्षा पूर्व दशम कक्षाओं में 20% अधिक अनुसूचित जाति के छात्रों को आच्छादन।
- अनुसूचित जाति के लोगों में आर्थिक स्वावलम्बन बढ़ाने के उद्देश्य से अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम के कार्यक्रमों में वित्त पोषण योजना की सीमा रु 12,000 से बढ़ाकर रु035,000 कर दी गई है। उसमें अधिक लागत की योजना में निगम 10% की सीमा तक धन विनियोजन करेगा।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं

लोगों को सरलता से चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में सरकार ने निम्न प्रयास किये हैं -

- चिकित्सा परिव्यय की 64 धनराशि ग्रामीण क्षेत्रों के लिये।
- 520, नये प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों और 10 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना।
- बस्ती में आपेक फण्ड की सहायता से 500 शैय्यायुक्त आधुनिक अस्पताल के भवन हेतु करोड़ रुपये।
- फर्रूखाबाद में डा0-राममनोहर लोहिया की स्मृति में एक आधुनिक अस्पताल।
- नवसृजित जनपद सिद्धार्थनगर, सोनभद्र, महराजगंज एवं मउ में से प्रत्येक के मुख्यालय पर 100 शैय्यायुक्त जिला चिकित्सालयों के भवन निर्माण हेतु 6 करोड़ रुपये।

पिछड़े क्षेत्रों का विकास

- पिछड़े क्षेत्रों को विकसित करने हेतु सरकार निम्न प्रयास कर रही है
- पर्वतीय क्षेत्रों के विकास हेतु रु0330 करोड़ रख गये हैं। बागवानी हेतु विकास हेतु विदेशी सहायता से एक महत्वाकांक्षी परियोजना, तीर्थस्थानों के लिये यात्री प्रशासन संगठन श्री बद्रीनाथ धाम में 500 शय्याओं का यात्री निवास, ऋषिकेश में 200 शैय्याओं का आवास गृह बनाये जाने की योजना है।
- जौनपुर-सथरिया और सहजनवा (गोरखपुर) में दो अलग-अलग औद्योगिक विकास प्राधिकरण, ताकि पूर्वी जिलों का औद्योगिक विकास हो सके।
- पूर्वी क्षेत्र के त्वरित विकास के लिये 0 करोड़ रुपये और बुंदेलखण्ड के लिये 5 करोड़ रुपये की निधियों की स्थापना।
- डकैत समस्या वाले क्षेत्रों में नई सड़कों व पुलों के निर्माण हेतु 15 करोड़ रुपये।

औद्योगिक विकास

नई औद्योगिक विकास नीति की घोषणा 30 अप्रैल 1990 को की जा चुकी है। इसमें रोजगार मूलक लघु व ग्रामीण उद्योगों को विशेष प्रोत्साहन।

चीनी उद्योग का विकास

देश की कुल 193 चीनी मिलों में से 67 चीनी मिलें उत्तर प्रदेश में है जिनमें से 47 चीनी मिलें राज्य सहकारी क्षेत्रों में हैं। राज्य चीनी निगम की 16 जर्जर चीनी मिलों के स्थान पर नई आधुनिक 2,500 टन प्रतिदिन पेराई क्षमता वाली मिलें लगाई जायेंगी। सहकारी क्षेत्र में भी 1 चीनी मिलों का दुगुनी क्षमता हेतु विस्तारीकरण किया जा रहा है।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग
उत्तर प्रदेश शासन

मेरठ समाचार

श्रावणी उपाकर्म

दिनांक 6 अगस्त 90 रक्षा बंधन आर्य समाज मन्दिर मेरठ शहर में प्रातः 7 1/2 बजे विशेष यज्ञ। हैदराबाद में सत्याग्रह के समय शहीद होने वालों को श्रद्धांजलि दी गई।

इस अवसर पर श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रवचन हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में बताया कि श्रावणी का पर्व वेद, स्वाध्याय का पर्व। वेद ज्ञान का आदि स्रोत्र है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। संसार में समस्त सत्य विद्याओं का मूल वेदों में है। संसार में वेद, बाईबिल और कुरान को ईश्वरीय ज्ञान माना जाता है। परन्तु ईश्वरीय ज्ञान केवल वह ही हो सकता है जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों के अनुकूल, सृष्टिक्रम के अनुकूल एवं सृष्टि के समस्त प्राणियों के लिए संविधान के रूप में हो। तथा उसका सृष्टि के आदि में होना बहुत आवश्यक है। इन तर्कों पर केवल वेद ही खरा उतरता है इसलिये वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। स्वामी दयानन्द जी महाराज की वेद के संबंध में विशेष देन है कि उन्होंने वेदों को केवल कर्मकाण्ड या यज्ञों तक ही सीमित नहीं रखा अपितु ज्ञान कर्म, उपासना, और विज्ञान का भण्डार वेदों को बताया है। जर्मनी ने वेदों का अध्ययन कर विज्ञान में बहुत उन्नति की है।

अतः वेदों का अध्ययन-स्वाध्याय बहुत आवश्यक है ताकि सारे संसार की उन्नति हो। सारा संसार सुख, शान्ति और आनन्द का अनुभव करें।

प्रस्तोता- इन्द्रराज
मन्त्री
आर्य समाज मेरठ शहर।

●

वेद प्रचार सप्ताह में पारिवारिक यज्ञ

दिनांक 7-8-90 मंगलवार को प्रातः 7 1/2 बजे श्री विश्वप्रकाश जी गान्धीनगर मेरठ के निवास स्थान पर यज्ञ और भजनों के उपरान्त सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने गृहस्थाश्रम को सब आश्रमों को आधार बताया। उन्होंने कहा कि आज सब से बड़ा आश्रम ही बिगड़ गया है। उसमें विघटन-ईर्ष्या, द्वेष तथा घृणा और क्रोध ने अपना डेरा जमाया हुआ है। इस गृहस्थाश्रम को साधना स्थल बनाने की आवश्यकता है। शास्त्रों में लिखा है :-

"वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागीणाम्-
गृहेऽपि पंच इन्द्रिय निग्रहस्तपः।।

वन में एकान्तवास करने वाले को भी दोष परेशान करते हैं और घर में भी पाँचों इन्द्रियों को वश में करने का तप हो सकता है।

अतः परिवारों में से विघटन और अशान्ति को दूर करने के लिए, इसको साधना स्थल बनाने के लिए परमात्मा की उपासना अत्यन्त आवश्यक है। गृहस्थ में जब आध्यात्मिक वातावरण बन जाता है तब गृहस्थ में परस्पर अनन्य प्रेम से घर स्वर्ग बन जाता है। इहलोक और परलोक सुधारने के लिए उपासना की साधना बहुत आवश्यक है। भौतिकवादी लोग इहलोक बनाते-बनाते अपना परलोक बिगाड़ रहे हैं और कहीं-कहीं पर परलोक के सुधार में लगे लोग अपना इहलोक बिगाड़ रहे हैं। धर्म पर आचरण से इहलोक और परलोक दोनों सुधरते हैं। शास्त्रों में कहा भी है:-

"यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः सधर्मः"

वास्तव में धर्म ही वह है जिस पर आचरण करने से इहलोक और परलोक दोनो ही सुधरते हैं।

अतः आज भी भौतिकवादी दुनिया तथा धर्म निरपेक्षता के वातावरण में उपरोक्त धर्म का आचरण बहुत आवश्यक है।

प्रस्तोता-इन्द्रराज

संस्कृत दिवस

रात्रि 8. बजे
स्थान-आर्य समाज मन्दिर बुढ़ाना द्वार, मेरठ शहर।

दिनांक 6-8-90 की रात्रि को 8 बजे डा0 निरूपणजी विद्यालंकार (पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग मेरठ कालिज) की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर में मनाया गया। संयोजक थे पं0 इन्द्रराज जी मन्त्री आर्य समाज मेरठ। वक्ता निम्नलिखित थेः-

1- पं0 नरेन्द्र आचार्य समाज ने अपने वक्तव्य में संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा की।

2- एक बालक आशुतोष सुपुत्र श्री हरवीर सिंह जी सुमन मंत्री केन्द्रीय आर्य समिति ने स्वामी दयानंद जी पर एक संस्कृत गीतिका पढ़ी। बच्चे को पुरस्कृत किया गया।

3- डा0 गणेशदत्त जी ने अपने वक्तव्य में संस्कृत को समस्त भाषाओं की जननी बताते हुये सामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में संस्कृत को प्रस्तुत किया। वैदिक साहित्य साम्यवाद और पूँजीवाद का समाधान प्रस्तुत करता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि निर्वाचन में खड़े होने वालों को संस्कृतज्ञ होना बहुत अनिवार्य है। शिक्षा में भी संस्कृत अनिवार्य होनी चाहिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री पं0 इन्द्रराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि आज हम संस्कृत के साथ-साथ अपनी संस्कृति को भी भूलते जा रहे हैं। आज के विज्ञान के युग में कम्प्यूटर के लिये संस्कृत भाषा को सबसे उपयुक्त माना गया है। संस्कृत केवल देश को ही नहीं अपितु संसार को जोड़ने वाली भाषा है। सरकार को अपनी शिक्षा नीति में संस्कृत को अनिवार्य करना चाहिये। उच्चकोटि के संस्कृत साहित्य एवं वैदिक साहित्य के स्वाध्याय से व्यक्ति इहलोक को भी सुधार सकता है। और मुक्ति को भी प्राप्त कर सकता है। आज के दिन संस्कृत पढ़ने का व्रत लेने से ही आज के पर्व की सार्थकता है।

अन्त में डा0 निरूपण जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्कृत की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया। उन्होंने कहा कि सरकार ने शिक्षा नीति की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। संस्कृत के पठन-पाठन से ही हम भारतीय संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं। जनता और सरकार को संस्कृत के प्रचार और प्रसार में निष्ठापूर्वक लगना चाहिये।

प्रस्तोता-इन्द्रराज
मंत्री
मंत्री आर्य समाज मेरठ शहर।

●

वेद प्रचार सप्ताह के अंतर्गत श्री डा० निरूपण जी विद्यालंकार का प्रवचन

दिनांक 7-8-90 को रात्रि 8·30 बजे श्री डा0 निरूपण जी विद्यालंकार ने स्वामी दयानन्द जी द्वारा रचित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में (1) वेदोत्पत्ति विषय, (2) वेद विषय और (3) वेदोक्त धर्म पर इस वेद प्रचार सप्ताह में विशेष चर्चा रहेगी। इसके लिये वेद का मनन, उसके विषय में वन्दना लेखन और श्रवण बहुत आवश्यक है। वेद के चालीसवें अध्याय के पहले मन्त्र में त्रैतवाद का सिद्धान्त निहित है। अर्थात् (1) सृष्टि का रचने वाला ईश्वर (2) प्रकृति जिससे सृष्टि बनी है (3) जीवात्मा जिसके लिये सृष्टि बनी है। मन्त्रः- ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यांजगत् तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मागृधा कस्य स्विदनम्। दूसरे मन्त्र में जो जीवात्मा को उपदेश है कि मनुष्य को अंतिम समय तक कर्म करने की प्रेरणा है जो कि बंधन में डालने वाले न हों। उपनिषदों में लिखा है असतो मा सद्गमय। कर्म ऐसे हों कि हम असत से सत्य की ओर चलें "तमसोमाज्योतिर्गमय" हमारे कर्म ऐसे हों जो हमें अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाने वाले हों। "मृत्योर्माऽमृतंगमय" हमारे कर्म ऐसे हों जो मृत्यु से मोक्ष की तरफ ले जान वाले हों। हमारे वैदिक धर्म में कर्म निष्ठा है। कर्मों को समझाने की आवश्यकता है जिस का सुन्दर प्रतिपादन वेद करता है।

प्रस्तोता-इन्द्रराज
मंत्री
आर्य समाज मेरठ शहर।

●

पारिवारिक सत्संग श्री राधेलाल जी सर्राफ वेदप्रचार सप्ताह के अंतर्गत

प्रातः 7·30 बजे

वेद प्रचार सप्ताह के अंतर्गत श्री राधेलाल जी सर्राफ साधना शिवाजी रोड मेरठ शहर के निवास स्थान पर श्री इन्द्रराज जी ने अपने प्रवचन में गृहस्थाश्रम को साधनास्थल बताते हुये सत्य को अपने जीवन में लाने पर

— शेष पृष्ठ ९ पर

पृष्ठ ८ का शेष....

बल दिया। उन्होंने कहा कि सत्य बोलने से आज की दुनियाँ अपने आप को हानि में आने की बात् कहती है। और इस् समय सत्य को अव्यवहारिक मानती है। परन्तु आज भी सत्य को बोला जा सकता है। उन्होंने कहा कि अपने जीवन के व्यवहार के 3 भाग मान लेने चाहियें । एक भाग तो वह है जो कि हमारे परिवार से संबंधित है। परिवार में बिना रोक टोक के सत्य बोला जा सकता है। इसमें कोई रुकावट नहीं है। हाँ उन परिवारों में सत्य को कोई स्थान नहीं है जहाँ छल कपट, राजनीति और शोषण का व्यवहार है। परन्तु कैसी भी परिस्थिति हो घर में सत्य का व्यवहार हो सकता है। दूसरा भाग वह है जो कि समाज से संबंधित है। इसमें भी सत्य बोला जा सकता है और सत्यपूर्ण व्यवहार भी किया जा सकता है। हाँ स्वार्थ और राजनीति समाज में सत्य के व्यवहार को रोकते हैं। परन्तु यदि कोई चाहे तो समाज में भी सत्य बोलना और सत्याचरण निर्बाध रूप से हो सकता है। जीवन का तीसरा भाग व्यापार और सरकार से संबंधित् है। एक व्यक्ति अपने व्यापार में अपने ग्राहक से शुद्ध और पवित्र व्यवहार कर सकता है। वह ठीक वस्तु, ठीक नाप तोल और ठीक दर या मूल्य अपने व्यापार में स्थापित कर सकता है। परन्तु सरकार का मामला कुछ उलझा हुआ अवश्य है। सरकार द्वारा आय कर बिक्रीकर एवं उत्पादन शुल्क के कानून नैतिकता पर आधारित न होकर भौतिकवाद पर आधारित हैं। एक व्यक्ति सत्यनिष्ठ रहना चाहता है परन्तु वहाँ कानून के कारण पूरी तरह से सत्यनिष्ठ नहीं रह सकता। अन्य देशों में आयकर का दर कम है, इस लिये कोई व्यक्ति कर की चोरी करना नहीं चाहता। क्योंकि उसके मस्तिष्क में यह है कि यदि देश का विकास होना है। पुल, सड़कें, रेल, बान्ध, बिजली नहरें आदि से देश का विकास होना है तो कर देना होगा। परन्तु जब इन करों का आधार नैतिकता न हो तो विवश होकर करों की चोरी की जाती है। एक प्रकार से परिवार, समाज, व्यापार और सरकार में सत्य से हटाने वाला केवल एक पक्ष सरकार है परन्तु उसमें भी सत्यनिष्ठ व्यक्ति अधिक से अधिक कर देने का ध्यान रखे तो वह 90 प्रतिशत सत्य का आचरण कर सकता है। इसलिये व्यवहारिक रूप से जो सत्यनिष्ठा की ओर झुका रहेगा वह निश्चय ही इस गृहस्थाश्रम रूपी साधना स्थल में एक सच्चा साधक रहेगा। संसार में सच्ची राय देने वालों की भी कमी है। जब कोई उच्चकोटि का सन्त "सर्वभूतहितेरता:" गीता की इस उक्ति के अनुसार प्राणीमात्र के कल्याण में लगा रहता है। सबके साथ सत्य का व्यवहार करता है वह गृहस्थ और संसार में सच्चा साधक है।

प्रस्तोता-इन्द्रराज
मंत्री
आर्य समाज मेरठ शहर।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत डा० निरूपण जी विद्यालंकार की वेद कथा

रात्रि 8 1/2 से 9 1/2

यजुर्वेद के 40वें अध्याय में 9,10 और 11वें 3 मन्त्रों में अविद्या और विद्या का वर्णन है। मन्त्र है:-

"अंधन्तम: प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया ँरता: ।।

(यजु0 40-9)

जो लोग अविद्या की उपासना करते हैं वे घोर अन्धकार को प्राप्त होते हैं। परन्तु जो विद्या में रत हैं वे उससे भी अधिक घोर अंधकार को प्राप्त होते हैं। इस मन्त्र में "अविद्या" को समझने की आवश्यकता है। योगदर्शन में अविद्या के विषय में कहा है-"अनित्याशुचि दु:खाना-त्मसु नित्यशुचि सुखात्मख्यातिरविद्या" (योग 2/5) अनित्य, अशुचि, दु:ख और अनात्म में क्रमश: नित्य, शुचि, सुख और आत्म दृष्टि का होना अविद्या है। यह सारा संसार अनित्य है परन्तु हम इसे नित्य मानकर व्यवहार करते हैं। यह देह अपवित्र है परन्तु साहित्यकार शरीर का वर्णन करते हुए इसे पवित्र मानकर ही वर्णन करते हैं। विषय भोग दु:ख का आगार हैं परन्तु हम विषय भोग में सुख मान कर ही इस का उपभोग करते हैं तथा संसार में जड़ वस्तुओं को चेतन समझकर अनात्मा को आत्मा समझकर ही हमारा व्यवहार चलता है। यह सब अविद्या है। इस अविद्या की उपासना करने वाले अर्थात् दुष्ट ज्ञान के अनुसार संसार में आचरण करने वाले घोर अंधकार को प्राप्त करते हैं। परन्तु जो विद्या में रत हैं अर्थात् शब्द-अर्थ और इसके संबंध को जो लोग भली प्रकार से जानते हैं जो सुपठित और परम विद्वान हैं परन्तु उनके आचरण वेद विरुद्ध हैं ऐसे आचरण हीन विद्वान उससे भी घोर अंधकार को प्राप्त होते हैं। यह सत्य है जो जान बूझकर गलती करता है वह ज्यादा दोषी और अपराधी है और अधिक दण्ड का पात्र हैं। अविद्या और विद्या का आशय बहुत स्पष्ट हो गया। अगला मन्त्र है :-

अन्य देवाहुर्विद्यया ऽन्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।

(यजु0 40-10)

अर्थात् विद्या का फल और है और अविद्या का फल और है यह ही हमें परम पिता परमात्मा द्वारा गुरु शिष्य परम्परानुसार बताया गया है। अर्थात् शब्दार्थ संबंधों को जानते हुए भी यदि उस पर आचरण नहीं किया जाता तो आचरणहीन ज्ञान का फल तो अंधकार ही है और अविद्या अर्थात् अज्ञानान्धकार में कार्य करने का फल भी घोर अंधकार में पड़ना है। मन्त्र में विद्या और अविद्या के क्षेत्रों में कम करने का प्रतिफल बहुत स्पष्ट रूप में बताया गया है। अगले मन्त्र में इस को स्पष्ट करते हुये कहा गया है:-

"विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय ँ सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते"

(यजु0 40-11)

इस मन्त्र में विद्या और अविद्या का अर्थ कुछ भिन्न करते हुये महर्षि दयानन्द मन्त्र में वर्णित इन दोनों का स्पष्ट प्रतिफल निर्देशन करते हैं। इस मन्त्र में आये "अविद्या" का अर्थ कर्म किया गया है। कर्म दो प्रकार का होता है वाह्य और आन्तरिक। वाह्य कर्म को तो कर्म ही कहते हैं और आन्तरिक कर्म का नाम उपासना है। इस प्रकार अविद्या का अर्थ हो गया कर्म और उपासना। मन्त्र में अविद्या से मृत्यु को तरने की बात कही गयी है। यह सत्य है कि व्यक्ति शुभ कर्तव्य कर्मों को करता हुआ और उपासना को करता हुआ मृत्यु को तर जाता है और विद्या अर्थात् ज्ञान से वह अमर हो जाता है। शास्त्रों में लिखा है "ज्ञानान्मुक्ति" ज्ञान से ही मुक्ति होती है। गीता में लिखा है "नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" ज्ञान के सदृश संसार में कोई वस्तु पवित्र नहीं है। इसलिये ज्ञान से ही व्यक्ति अमर हो जाता है। ज्ञान से व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है। इन तीनों मन्त्रों में अविद्या और विद्या का कितना मार्मिक और तात्विक वर्णन है।

प्रस्तोता-इन्द्रराज
मंत्री, आ0स0 मेरठ शहर।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत डा० निरूपण जी विद्यालंकार का प्रवचन

समय- रात्रि 8 1/2 से 9 1/2 तक

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के तीसरे मन्त्र में दूसरे मन्त्र में कथित 100 वर्ष तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करो। कर्म ऐसे हों जो हमें बान्धने वाले न हों। इस मन्त्र के तारतम्य में तीसरे मन्त्र में-

"असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता:
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति येके चात्महनोजना:।

(यजु0 40-3)

जो लोग ऐसे जघन्य कर्म करते हैं जिन से वे आत्म हत्यारे की संज्ञा को प्राप्त करते हैं वे लोग असुर कहलाते हैं और वे घोर अन्धकार से घिरे हुए हैं। वे लोग जो विपरीत कर्म करने के कारण आत्म हत्यारे हैं वे मरकर भी असुर ही बनते हैं जहां अन्धकार ही अन्धकार है। वेद में अन्धकारमय लोगों का वर्णन है जो असुर कहलाते हैं। अपनी आत्मा के विपरीत कर्म करने वाले लोग निश्चितरूपेण असुर ही बनते हैं और अज्ञानरूपी अन्धकार में पड़ कर घोर कष्ट उठाते हैं। इसलिए व्यक्ति को ऐसे कर्म नहीं करने चाहिए जिससे उसको अज्ञान में फँसना पड़े। वह अज्ञानान्धकार कर्म करते हुए कैसे प्राप्त होता है यह वर्णन यजुर्वेद के 40 वें अध्याय में मन्त्र-12, 13 और 14 में तथा इसी के अनुरूप 9,10 और 11 वें मन्त्र में है। पहले हम 12वाँ मन्त्र लेते हैं:-

अन्धन्तम:प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यांरता।।

(यजु0 40-12)

— शेष पृष्ठ १० पर

पृष्ठ ९ का शेष.. ...

जो लोग असम्भूति अर्थात् कारण प्रकृति की उपासना करते हैं वे घोरतम अन्धकार में प्रवेश करते हैं उनसे भी अधिक वे अन्धकार को प्राप्त करते हैं जो सम्भूति अर्थात् कार्य जगत की उपासना करते हैं। इस मन्त्र में "उपासते" क्रिया विशेष ध्यान चाहती है। उपासना तो केवल चेतन तत्व ईश्वर की की जाती है न कि जड़ की। अर्थात् जो लोग सच्चिदानन्द स्वरूप ईश्वर को छोड़-कर केवल प्रकृति की उपासना करते हैं वे लोग घोर अन्धकार को प्राप्त होते हैं। परन्तु जो लोग प्रकृति से बने संसार की उपासना ईश्वर के स्थान पर करते हैं उन्हें उससे भी अधिक अज्ञानरूपी अन्धकार प्राप्त होता है। प्रकृति और जगत् की ओर ले जाने वाले कर्म हमें घोर अज्ञानान्धकार में धकेल देते हैं।

अगले 13 वें मन्त्र में:-

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्-
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।
(यजु0 40/13)

"सम्भव" अर्थात् कार्य जगत् और "असम्भव" अर्थात् कारण प्रकृति को अर्थात् दोनों का फल बिलकुल भिन्न-भिन्न माना गया है। कार्य जगत् का फल और और कारण प्रकृति का फल और माना गया। परन्तु जो असम्भूति और सम्भूति को जानने का फल है वह अगले मन्त्र में है अगला 14वाँ मन्त्र इस प्रकार है-

"सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते।।
(यजु0 40/14)

जो व्यक्ति सम्भूति अर्थात् कार्य जगत् को साथ-साथ जानता है वह विनाश अर्थात् कारण जगत् को जान कर मृत्यु से तर जाता है और संसार से अर्थात् संसार को जान कर वह अमर हो जाता है। प्रकृति और प्रकृति से बने संसार को जानना बहुत जरूरी है। जब साधक इन दोनों को ठीक-ठीक जानता है तो मृत्यु को तरकर अमरत्व (मोक्ष) को प्राप्त करता है। इनकी अर्थात् प्रकृति और जगत् की उपासना व्यक्ति को अंधकार में धकेलती है और इन दोनों के ज्ञान प्राप्त कर लेने से साधक मृत्यु को तर कर मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। यह एक ऐसी कर्म श्रृंखला है जिस कर्म को करने से व्यक्ति ज्ञान के क्षेत्र में पहुँच कर मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

प्रस्तोता:-इन्द्रराज
मंत्री
आ0स0मेरठ शहर।

•

पारिवारिक सत्संग श्री सुबोध जी विनोद सम्पादक, दैनिक प्रभात मेरठ

दिनांक 8-8-90 को प्रातः काल पारिवारिक सत्संग में, जो श्री सुबोध जी विनोद के निवास स्थान पर प्रहलाद वाटिका में हुआ। श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने अपने प्रवचन में कहा कि आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश के लिए सब से पहला द्वार वाणी है। वाणी के दो काम हैं, बोलना और चखना। जब भी हम किसी के सम्पर्क में आते हैं तो वाणी के द्वारा ही आते हैं। वाणी के प्रयोग से ही व्यक्ति राक्षस कहा जाता है और उसी के प्रयोग से व्यक्ति देवता कहलाता है। भगवान् कृष्ण ने गीता के 17वें अध्याय के 15वें श्लोक में वाणी का तप बताया गया है:-

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रिय हितं चयत्
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्चते ।।

वाणी के छः तप बताये गये हैं:- पहला तप है ऐसा वाक्य बोलना जिससे दूसरे के मन में उद्वेग पैदा न हो। जब हम कठोरवाणी का प्रयोग करते हैं तब दूसरे के मन में उद्वेग पैदा होता है। अतः सात्विक वाणी का प्रयोग ही दूसरे के मन को शान्ति प्रदान करता है। आज वाणी के कठोर प्रयोग ने ही घरों में, समाज में अशान्ति उत्पन्न की हुई है। दूसरा वाणी का तप है "सत्यं" सत्य बोलना। आज की राजनैतिक दुनिया में सत्य बोलना भी बहुत कठिन है । सत्य से लोग नाराज हो जाते हैं। सत्य स्वयं में बहुत कड़वा होता है। सत्य को बोलने वाले और सुनने वाले बहुत थोड़े लोग होते हैं। परन्तु सन्त कवि कहते हैं "जहाँ सांच तहाँ आप" अर्थात् जहाँ सत्य होता है वहाँ भगवान् स्वयं होते हैं। सत्य बोलना जहाँ कठोर है वहाँ गीता में कहा है जो कि वाणी का तीसरा तप है "प्रियम्" अर्थात् सत्य बोलो परन्तु प्रिय बोलो। सत्य को प्रिय करके बोलना वाणी का तीसरा तप है परन्तु वह प्रिय सत्य हित करने वाला हो इसलिये वाणी का चौथा तप है "हितम्"। वह प्रिय सत्य जिस से झगड़ा हो जाये। जिस प्रिय सत्य के बोलने से देश की सुरक्षा का खतरा पैदा हो जाय वह सत्य ही नहीं रहता इस से तो असत्य अच्छा। इसलिए वाणी के तप में चौथा तप है। प्रिय सत्य को हितकर बोलना। वाणी का पाँचवा तप स्वाध्याय है। स्वाध्याय का अर्थ है मुक्ति की तरफ ले जाने वाले शास्त्रों का अध्ययन और प्रणव का जप। प्रायः लोग ऐसा साहित्य पढ़ते हैं जो या तो अश्लील होता है या कहानियाँ होती हैं। इनसे वे अपना दिल बहलाते रहते हैं और समय काटते रहते हैं। परन्तु मुक्ति की ओर अग्रसर करने वाले साहित्य का अध्ययन ही स्वाध्याय कहलाता है जो कि वाणी का पाँचवाँ तप कहा गया है। वाणी का छठा तप है ओंकार एवं मंत्रों का जप। इस को गीता में "अभ्यसनम्" अर्थात् परमेश्वर के ओंकारादि पवित्र नामों का अभ्यास। हम वाणी से व्यर्थ की बातें बहुत करते रहते हैं। परन्तु परमात्मा के नाम स्मरण को ही वाणी का छठा तप माना गया है।

इस वाणी के तप को कहीं किसी वन में जाकर करने की बात भगवान कृष्ण जी ने नहीं कही है अपितु गृहस्थ में रहते-रहते और संसार के कर्म करते हुये इस गृहस्थ रूपी साधना स्थली में ही इस वाणी के तप को करना चाहिये तभी हम उस परम शक्ति के निकट पहुँच सकते हैं और गृहस्थाश्रम को स्वर्गाश्रम बना सकते हैं।

प्रस्तोता:-
इन्द्रराज।

पृष्ठ ४ का शेष......

श्री रास बिहारी बोस ने सन् 1909 में पंजाब और उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क स्थापित किया।

दिल्ली में उन्हें लाला हरदयाल जी की क्रान्तिकारी पार्टी का पता चला। उन्होंने उनसे सम्पर्क स्थापित किया। सन् 1909 में लाला हरदयाल के विदेश चले जाने पर उनके प्रतिनिधि मास्टर चन्द्र से रासबिहारी ने भेंट की तथा उनके शिष्य भाई बालमुकुन्द को दिल्ली और लाहौर के संगठन का काम सौंपा।

सन् 1914 में श्री रास-बिहारी बोस काशी में छिपे हुए थे तब भाई परमानन्द जी ने एक मित्र के द्वारा श्री बोस को सन्देशा भिजवाया, जो उनके लिए स्फूर्ति का महान् स्रोत सिद्ध हुआ। उस सन्देश ने श्री बोस को भारत माता की सेवा के लिए सक्रिय बना दिया। श्री रासबिहारी-बोस जब काशी में रह रहे थे तब एक अमरीकी श्री पिंगले उनसे आकर मिले तो उन्होंने पंजाब के काम का लेखा-जोखा लेने के लिए पहले तो श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल को वहाँ भेजा पश्चात् वे स्वयं वहाँ गए लौहार के श्री रामकृष्ण राय चरणदास नाम के एक महान प्रिय भक्त व्यापारी ने उन्हें अपने निवास स्थान पर रहने की आज्ञा प्रदान कर दी। सन् 1915 तक श्री बोस लाहौर में रहे।

श्री बोस ने यह प्रयास किया कि पंजाब से लेकर बंगाल तक सभी स्थानों पर 21 फरवरी सन् 1915 को निश्चित क्रान्ति हो। भारत में अंग्रेजी सैनिकों के विरुद्ध सेना भी विद्रोह करे परन्तु भेदिए कृपालसिंह ने यह सूचना पुलिस को दे दी। यह ज्ञात होने पर तारीख दो-दिन पूर्व कर दी गई, उसी भेदिए-द्वारा यह सूचना भी सरकार को प्राप्त हो गई। 18 फरवरी को सैनिकों की बन्दूकें रखवा ली गई तथा अंग्रेज, सैनिकों ने शस्त्रो के भण्डार पर अधिकार कर लिया।

क्रमशः

पद्मभूषण डा. दुःखनराम स्मारक ट्रस्ट

पटना-बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की एक बैठक में स्वर्गीय डा0 साहब के स्मारक ट्रस्ट का गठन किया गया। बैठक में उनके नाम पर बिहार में एक अस्पताल खोला जाय तथा पटना मेडिकल कालेज अस्पताल में आँख के विभाग का नाम डा0 दुःखनराम के नाम पर होवे गाँधी मैदान के चारों ओर सड़कों के नाम भी उनके नाम पर हों। बैठक में कई गण्यमान सज्जनों ने भाग लिया। डा0 राम के पुत्र डा0-राजेन्द्र राम ने बताया कि पिताजी के नाम पर परिवार की ओर से दो छात्रवृत्ति चलाने का निर्णय लिया गया है।

सदा कश्मीर हमारा है

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
एडवोकेट, कानपुर

यही तो है धरती का स्वर्ग।
पर्वतों का शिशु। प्रिय कश्मीर।
कभी जो था भारत की शान।
जहाँ अमृत-रस-सना समीर।

आज सब बदल गई है बात।
यहाँ पर घुस आये शैतान।
हमारा प्यारा वह कश्मीर।
बन गया अपराधों की खान।

यहाँ आतंकवाद बढ़ रहा।
गर्म हत्याओं का बाजार।
यहाँ बम करते आज विनाश।
सुनाई पड़ता हाहाकार।
यहाँ के भारत-प्रेमी लोग
सताये जाते नाना भाँति।
यहाँ पर दिन-दिन पाकिस्तान
सजाता अपराधों की पाँति।

बढ़ाता उग्रवाद है यहाँ।
चाहता भारत से कट जाए।
मचाता खून-खराबा-ताकि
यहाँ अलगाववाद बढ़ जाए।

तभी भड़काता रहता सदा
यहाँ का वह मुस्लिम समुदाय।
उन्हें ट्रेनिंग देता दिन-रात
उन्हें धमका-धमका कर हाय।

भेजता ट्रेनिंग देकर उन्हें।
साथ में देता है हथियार।
कि वे भारत में करें विनाश।
बहावें यहाँ खून की धार।

न हो पायेगा पूरा कभी-
शत्रु का यह कुत्सित व्यवहार।
सदा से है भारत का अंग।
रहा है बन भारत-परिवार।

सुने अब यह सारा संसार-
हमें प्राणों से प्यारा है।
रहा है सदा। रहेगा सदा।
सदा कश्मीर हमारा है।
सदा कश्मीर हमारा है।

वृहद् आर्य महा सम्मेलन

देश में धर्म परिवर्तन एवं वर्ग संघर्ष को दृष्टि में रखते हुए आर्य उपप्रतिनिधि-सभा जिला- मेरठ ने दि0- 2,3,4 सितम्बर 1990 को रामलीला मैदान मवाना (मेरठ) में एक वृहद आर्य-महा सम्मेलन करने का निश्चय किया है। जिसमें आर्यजगत् के महान नेता, सन्यासी, महोपदेशक और उपदेशक भाग लेंगे।

साधारण जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में इस सम्मेलन में उपस्थित हो कर धर्मान्तरण एव विघटन के कार्यों को रोकने में सहयोग प्रदान करें।

इन्द्रराज
मन्त्री

जन्म दिवस समारोह सम्पन्न

वेदों के अप्रतिम विद्वान् पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती (पं0 बुद्धदेव जी विद्यालंकार) का 95वाँ जन्मदिवस, गत एक अगस्त को गुरुकुल प्रभात-आश्रम (टीकरी) भोलाझाल, मेरठ में सोल्लास सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल उनकी पावन स्मृति में एक वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। तदनन्तर एक सभा आयोजित हुई। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने स्वरचित संस्कृत श्लोक कविता तथा ओजस्वी व्याख्यानों से पूज्य-स्वामी जी को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। संसार से अज्ञान, अन्याय, एवं अभाव को दूर करने के वर्णाश्रम के इस लक्ष्य का उल्लेख करते हुए ब्रह्मचारियों ने इस लक्ष्य को पूर्ण करने का संकल्प किया। इस अवसर पर ब्रह्मचारियों द्वारा पूज्य स्वामी जी की स्मृति में आम, बट, पीपल, पिलखन आदि फलदार वृक्ष लगाए गये।

निर्णय के तट पर
(भाग-४)
छपकर तैयार

जिन सज्जनों ने उपरोक्त ग्रन्थ की अग्रिम प्रतियां बुक करा रक्खी हैं उनसे प्रार्थना है कि, वह अगर अपनी प्रति रजिस्टर्ड डाक से मँगाना चाहते हैं तो 50+13=63रु0 अग्रिम भेजें, अन्यथा वी0पी0 से भेजने पर उनको सत्तर (70) रु0 देने होंगे, यह सूचना हमारे पास आठ सितम्बर तक आ जानी चाहिये, अन्यथा हम वी0पी0 द्वारा 20 सितम्बर तक सभी ग्राहकों की प्रतियाँ भिजवा देंगे।

हमने इस ग्रन्थ को 400 पेजों में प्रकाशित करने की घोषणा की थी, परन्तु पेज 550 होने पर भी हमने कोई मूल्य वृद्धि नहीं की। जिन सज्जनों की प्रतियां बुक नहीं थीं, उन्हें नियमानुसार छूट पर ही ग्रन्थ प्राप्त हो सकेगा, ग्रन्थ का मूल्य 200/- रु0 है। इस ग्रन्थ के पांचवे भाग की प्रकाशन की तैयारी भी चल रही है जो इस श्रृंखला का अन्तिम भाग होगा। पूर्ण जानकारी के लिए प्रकाशन से सम्पर्क स्थापित करें। इस ग्रन्थ के तैयार होने में जो विलम्ब हुआ उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

—लाजपतराय अग्रवाल
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
1058, विवेकानन्दनगर, गाजियाबाद-201001

जिला सभा-पीलीभीत

प्रधान - श्री कृष्णकुमार मिश्रा
मन्त्री - श्री मोहनलाल आर्य

शोक समाचार

उ0प्र0 के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम-सिंह यादव के भाई की बिजली का करेन्ट लग जाने से हुई आकस्मिक मृत्यु पर सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा सभामन्त्री-श्री मनमोहन तिवारी ने पारिवारिक जनों के प्रति हार्दिक शोक प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की है। ●

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री चन्द्रसेन जी का दि0 21 जुलाई को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। श्री चन्द्रसेन जी अपने पीछे भरापुरा परिवार छोड़ गए हैं उन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह में भी भाग लिया। था।

●

आर्यसमाज शमशेरगढ़ (देहरादून) के कर्मठ सदस्य श्री ध्यानसिंह जी का दि0 30 जून को निधन हो गया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

महशर का आलम बपा कर गया

सन्तोष "कण्व"

देखो परवाना ऋषिवर का क्या कर गया।
जो निहाँ थी हकीकत अयाँ कर गया।।
देखकर जिनको हँसती थी दुनियाँ कभी।
तक जालिमों के हवा कर गया।।
... जादूगरी उन सदाओं में थी।
स्याह से स्याह दिल को सफा कर गया।।
उनको हाजिक कहें या तबीबे-वतन।
कौम के दर्द की जो दवा कर गया।।
जिस पे बन पाया जो भी था उसने किया।
बनके रहगीर जग का भला कर गया।।
अपनी तहरीर से अपनी तकरीर से।
हस्ती बेदादगर की फना कर गया।।
बात किसकी कहें और किसकी तर्जे।
जान हर एक अपनी फिदा कर गया।।
हर सिपाही दयानन्द की फौज का।
देखो महशर का आलम बपा कर गया।।
कोई माने न माने मगर सच है यह।
ऋण दयानन्द का वह अदा कर गया।।

पंजीकरण स० एल० डब्ल्यू / एन०पी० ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
भाद्रपद शुक्ल १२ सवत २०४७ वि
दिनाक २ सितम्बर १९९०
दूरभाष २४५९९२

सेवा मे
12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय,
{ हरिद्वार }

आर्य नेता अर्जुनदेव महाना की जघन्य हत्या
उ.प्र. की राजधानी लखनऊ में दिन दहाड़े हत्याओ का सिलसिला जारी लखनऊ जिले मे भारी रोष व तनाव व्याप्त

लखनऊ जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान बाल सदन मोती नगर, लखनऊ के अध्यक्ष तथा नगर की अनेक सामाजिक सस्थाओं से जुड़े श्री अर्जुन देव महाना की दिन दहाड़े 1 बजे गोली मार कर जघन्य हत्या कर दी गई।

व 61 वष के थ अपने पीछे पत्नी एक पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ छोड़ गये। आप श्री कृष्ण बल्देव महाना पूर्व सभा कोषाध्यक्ष के छोटे भाइ थे। श्री महाना को उस समय गोली मारी गइ जब वह पजाब सिंध बैंक के मख्य द्वार में अपने पेट्राल पम्प का लगभग 2 लाख रुपया नगद जमा करने जैसे ही बैंक के मुख्य द्वार पर पहुँचे। 4 नौजवान लड़को ने छीना झपटी की और एक थैला लेकर भागने में सफल हो गये। जब श्री महाना व उनका कर्मचारी श्री शिव प्रसाद दीक्षित पैसा बचाने का प्रयास कर रहे थे हत्यारों ने फायर कर दोनो को गम्भीर रूप से घायल कर दिया।

श्री महाना मेडिकल कालेज पहुँचते ही चल बसे। श्री दीक्षित की हालत चिन्ताजनक बनी हुई है। श्री महाना लखनऊ नगर के अत्यन्त लोकप्रिय आर्य नेता थे। वह पेट्रोल पम्प तथा ईटा भट्ठे का व्यापार करते थ जैसे ही उनके गोली लगने का समाचार नगर में फैला आलमबाग बाजार बन्द हो गया और लखनऊ कानपुर रोड जाम कर दी गई। नगर के पुलिस अधिकारी ए0डी0एम0 घटना स्थल पर पहुँच गये। तथा जनता को विश्वास दिलाया कि हत्यारों को शीघ्र ही पकडेंगे।

24 घन्टे के अन्दर मुख्य अभियुक्त महेन्द्र कुमार सिह को इन्सपेक्टर आलमबाग श्री इमामचन्द ने गिरफतार कर 40 हजार रु भी बरामद कर लिये। महेन्द्र कुमार सिह स्थानीय इलेक्ट्रिक इजीनियरिंग वाली टेक्निक का छात्र है बाकी 3 हत्यारे अभी फरार हैं। जिले की समस्त आर्य समाजी शिक्षण सस्थाओं व प्रतिष्ठानों में शोक व्याप्त हो गया।

जिला सभा लखनऊ के तत्वावधान में लखनऊ जनपद की समस्त आर्य समाजों की एक शोक सभा आदर्शनगर आर्य - समाज मन्दिर में हुइ जिसमें उ0प्र0 आर्य प्रति निधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जिला सभा के प्रधान श्री वेदव्रत अवस्थी मन्त्री श्री चन्द्र कुमार छाबड़ा, श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त प्रकाशक आर्य - मित्र तथा समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों व सदस्यों ने भारी सख्या में उपस्थित होकर स्व0 आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि स २२४१/५७) आश्विन कृष्ण ५ रविवार सवत् २०४७ वि. दिनाक ९ सितम्बर १९९० (घोषणापत्र स.७/२२-२२५)



वीरप्रसविनी माता

पुमांस पुत्र जनय ते पुमाननु जायताम् ।
भवसि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् ।।

हे माता ! तू पुरुषत्वशक्ति-सम्पन्न पुत्रों को उत्पन्न कर। ऐसे तेरे सभी पुत्र दीर्घजीवी हों, कल्याणकारी हों और तू उनकी वीरप्रसविनी माता बनकर ससार में यश की भागिनी हो।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू २५१/
वार्षिक	रू ३०/
एक प्रति	१ रू मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वॉं वर्ष
अंक - ३५

नारी जाति के महान शुभ चिन्तक

मेरे ऋषि

------ और तुम उस दिन धरती और आसमान फाटकर प्रकट क्यों नही हो गये? क्या मोक्षावस्था में देखने की दिव्यशक्ति लुप्त हो गई थी। मैं कुरूपा न थी, गँवारिन न थी, मैंने अपने पति को बचाने के लिए कितनी मिन्नतें की। रातों को दिन बना बनाकर उनके प्राणों की भीख माँगती रही क्योंकि वे मेरे पति थे मेरे देवता थे मेरे सर्वस्व थे पर किसी ने नहीं सुनी, तुमने भी नहीं------ उसने भी नही। और सुनता कौन, यहाँ तो सब अर्थकामी हैं—

सुर नर मुनि सबकी यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।।

------ और एक दिन वे चल दिए अपनी धरोहर मुझे सौंपकर----- कहाँ किस लोक में, मैं नहीं जानती, कोई नहीं जानता और शायद तुम भी नही-- क्योंकि मुक्त आत्माए तो केवल मुक्त आत्माओं से मिलती है। हम गरीब थे, पुण्यात्मा नहीं थे- मजदूरी करके पेट भरने वालों में थे। सुन्दर गृहस्थ-जीवन का सपना लेकर विवाहबन्धन में बन्धे थे। जब विवाहबन्धन में बन्ध रहे थे तो बहुत से लोगों ने हम पर फूल बरसाए थे, इनके भी माता पिता ने, मेरे भी माता-पिता ने, ग्रामवासियों ने, ग्रामवधूटियों ने और कहा था-----

"इहेमाविन्द्र सन्नुद चक्रवाकेव दम्पती।
प्रजयैनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम् ।।

.. 'चकई-चकवे की तरह रहना और ससार की समस्त सुखसमृद्धियों का पूरी आयु उपभोग करना।"—और सचमुच उनके आशीर्वाद से हमें सारी सुखसमृद्धियाँ नसीब थीं। पर एक दिन मेरा चकवा दूर चला गया- क्यों?- व्यवस्था दीजिए — मन्त्र तो आपका ही है। लेकिन तुम व्यवस्था नहीं दे सकते क्योंकि तुम ससार के नियामक हो, नियम बनाना जानते हो- दूसरों के दुखदर्द से तुम्हें क्या मतलब।

------ व्यवस्था मैं देती हूँ- तुम्हारे नियमों के अनुकूल ही है। कोई शक न करे तुम्हारी अमरवाणी पर लाँछन न लगावे इसलिए व्यवस्था दे रही हूँ। वे चले गये तो क्या उनकी धरोहर मेरे पास सुरक्षित थी। काम ने स्नेह और ममता का रूप धारण कर लिया था और मैं जीना चाहती थी अपना सारा प्यार इस स्नेह और ममताभरी गोद को समर्पित करने के लिए एक माँ बनकर। क्योंकि तुम्हीं ने तो कहा है- पुमास पुत्र जनय ते पुमाननु जायताम तू वीरप्रसविनी माँ बनना।

पर हिन्दधर्म के ठेकेदारों ने मुझे पकडकर जला दिया। मैं चीखती रही वे हँसने रहे। मैं अपने प्यार की धरोहर को हाथ लगाकर बचाने में लगी रही और वे सती की जय का नारा लगाते रहे। उस समय आर्यसमाज के मन्दिरों में यज्ञ हो रहा था यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते का उपदेश हो रहा था और यहाँ एक आर्य ललना के साथ उसके अबोध शिशु की चीत्कारें राख बनकर हिन्दूसमाज के विनाश की रेखाए बनती जा रही थी।

आज उस हमारी राख से इन तीन सालों में, मेरे प्यारे हिन्दुस्तान!!! तुझे क्या मिला है हमारे शरीर से निकली हुई ज्वाला की एक एक चिंगारी ने कितनी गोलियाँ बनकर तेरे नौनिहालों को राख बनाया है। गिननी करना चाहे तो कर सकता है- मैं रोकने नही आऊँगी। पर मेरे इस चबूतरे पर मत्था टेकने से काम नहीं चलेगा। सती और दहेज जैसी अवैदिक-कुप्रथाओं का इस कौम से नामोनिशा मिटा दे----- ----- मेरी कुर्बानी सफल हो जायगी।

— चीत्कार करती हुई हिन्दुस्तान की एक बहू "रूपकुँवरि" जो ४ सितम्बर-1987 को देवराला की राख बन गई।

प्रस्तुति आँसुओं से भीगा आर्यमित्र का एक पृष्ठ

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
आर्य मित्र
लखनऊ आश्विन कृष्ण-५ संवत् २०४७ वि
दिनांक ९ सितम्बर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

आरक्षण और आर्यसमाज

आर्यसमाज अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही समाज में समता समानता एकता और बन्धुत्व की मानवीय भावनाओं का पोषक उद्‌घोषक एवं प्रचारक रहा है। आर्थिक वैषम्यता को दूर कर समाज के सभी अंगों को उन्नति के समान अवसर उपलब्ध कराना एवं उसे विश्वक्षितिज पर एक राष्ट्रपुरुष के रूप में अजेय चट्टान की भांति खड़ा कर देना हमारा लक्ष्य रहा है। इसी ध्येय को सम्मुख रखकर आर्य समाज आगे बढ़ा है और हमने समाज में, जहाँ जहाँ हम पहुँचे हैं कहीं भी संघर्ष अथवा द्वेष की, छायामात्र भी नहीं पनपने दी है। आर्यसमाज सदैव से जन्मना जाँतपाँत के आधार पर अथवा आर्थिक वैषम्यता के आधार पर किसी को ऊँचा या नीचा मानने की कुप्रथा का विरोधी रहा है।

महाभारत काल के पश्चात् हमारी वर्ण व्यवस्था गुण कर्मानुसार न रहकर जन्मपरक जातिपान्त पर आधारित हो चली थी जिसका परिणाम हमें समाज में पिछड़े वर्ग, अछूतवर्ग, निम्नवर्ग आदि के रूप में मिला और यह सच है कि सदियों तक हमारे समाज का एक वर्ग निःसन्देह आर्थिक एवं सामाजिक शोषण का शिकार बना रहा तथा समाज में आर्थिक वैषम्यता की खाई चौड़ी होती चली गई।

भारतीय स्वतन्त्रता के साथ ही हमारे संविधान निर्माताओं ने इस स्थिति को गम्भीरता से लिया और पहिली बार 10 वर्ष के लिए पिछड़े वर्ग को आगे बढ़ाने के लिए आरक्षण प्रदान किया और अवधि समाप्त होने पर इसे पुनः पुनः बढ़ाते चले गये। पिछले दिनों हमारे प्रधानमंत्री ने मण्डल आयोग की सिफारिशें स्वीकार करके अनुसूचित, अनुसूचित-जनजाति तथा पिछड़े वर्गों को कुल मिलाकर 52% प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया है। इस आरक्षण का समाचार जैसे जैसे फैलता जा रहा है। आरक्षण विरोधी आन्दोलन हिंसात्मक रूप लेता जा रहा है। बिहार, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में आरक्षण विरोधी छात्रों ने हिंसात्मक कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कर दी हैं।

यह कहना कि कांग्रेस सरकार जिस कार्य को चार दशकों में भी इतना जोर लगाने के बाद पूरा नहीं कर सकी उसे प्रधानमंत्री ने मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू करके पूरा करने का वचन दिया है —मृगतृष्णा मात्र है। उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्रीय हितों का ख्याल किए बिना ही मण्डल आयोग की रिपोर्ट लागू कर दी है। उनकी यह दलील भी भूल सिद्ध होगी कि मण्डल आयोग की रिपोर्ट से देश के चालीस प्रतिशत गरीबों का उत्थान होगा। निश्चित रूप से यह आरक्षण वोटों की राजनीति से प्रेरित होकर किया गया प्रतीत होता है। इसमें इस बात का कोई मूल्यांकन नहीं किया गया है कि जातिगत आधार पर आरक्षण देने से कार्यकुशलता पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है और इस नीति ने योग्यता एवं प्रतियोगिता को महत्वहीन बना दिया है। इससे वर्ग-संघर्ष को बढ़ावा मिल रहा है और यदि यही स्थिति रही तो भारतीय वर्ग में संघर्ष एवं विद्वेष की एक ऐसी अभेद्य दीवार खड़ी हो जायेगी जिसे तोड़ना बहुत मुश्किल हो जायेगा। इसलिय इस नीति पर पुनर्विचार करना परमावश्यक है।

मण्डल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार पिछड़े वर्ग को 27% + अनुसूचित 15% + अनु0जनजाति एवं विकलांग 10.5% कुल 52.5% प्रतिशत आरक्षण नौकरियों में किया गया है जो सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित 50% प्रतिशत की सर्वोच्च सीमा को पार कर गया है। इस आरक्षण में इस बात का कोई ज़िक्र नहीं है कि पिछड़ी जाति के उन लोगों को जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हैं, उन्हें आरक्षण दिये जाने का क्या औचित्य है। इस आरक्षण के दुष्परिणामस्वरूप सम्पूर्ण देश में आरक्षण विरोधी लहर व्याप्त हो रही है और जगह जगह प्रदर्शन, राष्ट्रीय सम्पत्ति का विनाश एवं हिन्सा का ताण्डव फैलता जा रहा है। बुद्धिजीवी वर्ग हीनता का अनुभव कर रहा है। पद के लिए न्यूनतम अपेक्षित योग्यता के अभाव में राष्ट्र में अक्षमता एवं असमर्थता बढ़ती जा रही है। आपसी संघर्ष वर्ग-संघर्ष की दिशा में बढ़ता जा रहा है। ऐसी आशंकाएँ प्रबल होती जा रही है कि यह वर्ग-संघर्ष व्यापक हिंसा का रूप न ले ले। इससे देश में बढ़ा हुआ जातिवाद, जिससे आज भी देश की हानि हो रही है, प्राचीन काल में भी हुई थी, और हानि होगी।

अतः समुचित, सर्वमान्य, सर्वोपयोगी व्यवस्था यही प्रतीत होती है कि यह आरक्षण आर्थिक आधार पर ही होना चाहिए। किसी भी न्यायप्रिय सरकार के लिए आर्थिक आधार पर आरक्षण कोई मुश्किल कार्य नहीं है क्योंकि गरीबी की रेखा में रहने वाले व्यक्ति हर वर्ग में हैं। उन सभी को वास्तविक अर्थों में समाजवादी व्यवस्था के अंतर्गत लाना ही कल्याणकारी राज्य का ध्येय है।

इन्द्रराज
सभा प्रधान

श्रद्धा के सुमन

वे हिन्दी के लिए जिए, हिन्दी के लिए हृदय की अन्तिम धड़कन तक धड़कते रहे, तड़पते रहे, बिलखते रहे। पिछले वर्ष 14 सितम्बर को जब सारा राष्ट्र "हिन्दी दिवस" पर माँ भारती के प्रति नतमस्तक होकर समर्पण के फूल अर्पित कर रहा था उत्तर प्रदेश के एक मुख्यमन्त्री ने, तुच्छ वोटों की लालसा में, गद्दी की मृगतृष्णा में, माँ भारती के वक्षस्थल पर, उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा घोषित करके बड़ी मर्मान्तक चोट पहुँचाई थी। सारा राष्ट्र कराह उठा था। जीवन के शतक की सीमा को छूता हुआ हिन्दी का वह अजेय योद्धा शय्या पर पड़े पड़े काँप उठा था- बोलो-"प्यारे नारायणदत्त !, ऐसा मत करना, यह हिन्दी का नहीं राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है। तेरा एक लाख का "भारत भारती पुरस्कार" मेरी ठोकर पर है। मैं हिन्दी के लिए एक लाख तो क्या सौ सौ जीवन भी न्योछावर करने को तैयार हूँ।"

----और हुंकारता हुआ वह जर्जर शरीर रोष-यात्रा का अग्रणी बनकर जूझने के लिए चल पड़ा उन सत्ता लोलुपों से जो वोटों के लिए अन्धे हो गये थे, गद्दी को बचाने के लिए, राष्ट्र की अस्मिता को दाँव पर लगाने में जरा भी संकोच नहीं किया था। आनन फानन में उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राज्यभाषा विधान मण्डल से पारित कराकर घोषणा कर दी थी सोचा था गद्दी बच गई है, वे खुश हो गये हैं-------मगर ?.

------वे त्याग के अनुपम आदर्श बन गये, हिन्दी की तरह अमर हो गये। वे पुरस्कार और सम्मानों से बहुत ऊपर थे। वे शतायु के जिजीविषु थे पर इस सदमे ने उन्हें तोड़ दिया था। वे 97 वर्ष की आयु में गत 18 अगस्त को पंचतत्व में विलीन होकर, अमर हो गये। वे श्री नारायण चतुर्वेदी नहीं "हिन्दी के अमर सपूत थे" उस दिन सुरपुर के देवताओं ने उनकी जय, उनकी भावनाओं की विजय के नारे लगाये थे।

अन्तरंग सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के माननीय पदाधिकारियों तथा अंतरंग सदस्यों की बैठक दिनांक 16 सितम्बर 1990 दिन रविवार को प्रातः 11 बजे नारायण स्वामी भवन 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगी।

अतः सभी महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि नियत समय पर सभा भवन में पधार कर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करें।

मनमोहन तिवारी, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0।

अल्पसंख्यक समस्या और समाधान

• बलराज मधोक

अल्पसंख्यक समस्या राष्ट्र राज्यों के निर्माण के साथ जुड़ी हुई है। किसी भी राष्ट्र राज्य में एक राष्ट्रीय समाज अथवा गिरोह हाता है जिसके घटक भावात्मक लगावों और सांझी आस्थाओं के आधार पर उस राष्ट्र की धरती और संस्कृति के प्राते आत्मीयता रखते हैं और उनकी रक्षा के लिए सब कुछ करने को उद्यत रहते हैं, राष्ट्र राज्य में यह राष्ट्र समूह सत्तासंपन्न होता है और राष्ट्र और देश उस के नाम से जाना जाता है, ऐस राज्यों में जा कुछ कम संख्या वाले तत्व या समूह होते हैं जो भाषा नस्ल अथवा पंथ के मामले में राष्ट्र समूह से भिन्न होते हैं, उन्हें उस राष्ट्र राज्य के अल्पसंख्यक माना जाता है। इस प्रकार अल्पसंख्यकों का प्रश्न वहीं उठता है, जहां काई बहुसंख्यक समूह को वहां का राष्ट्र माना जाता है। जहां काई विशिष्ट समूह राष्ट्र के रूप में मान्यता नहीं पाता, वहा किसी अन्य समूह को अल्पसंख्यक के रूप में मान्यता देने का प्रश्न भी नहीं उठता।

संयुक्त राष्ट्र संघ के मानव-अधिकार आयोग ने 1950 में अल्पसंख्यकों की निम्न परिभाषा की थी

"राष्ट्रीय सत्तासंपन्न समाज से भिन्न वही समुदाय अल्पसंख्यक कहे जा सकते हैं, जिनकी भाषा, मजहब अथवा नस्ल मुख्य राष्ट्रीय समुदाय की भाषा, मजहब और नस्ल से भिन्न हो और जो उस भिन्नता को वनाए रखना चाहते हों, अल्पसंख्यक माना जाने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी संख्या पर्याप्त हो और उनके सदस्य उस राष्ट्र राज्य जिसमें वे रहते हैं, के प्रति वफादार हों।"

ऐसे अल्पसंख्यकों को समान कानूनी और मानवीय अधिकार देना और उनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव न बरतना सभी राष्ट्र राज्यों से अपेक्षित है व संयुक्त राष्ट्र संघ इस पर बल देता है। परन्तु व्यवहार में अल्पसंख्यकों के प्रति विभिन्न राज्यों का दृष्टिकोण और बरताव एक जैसा नहीं है।

भाषाई अल्पसंख्यक

इन तीन प्रकार के अल्पसंख्यकों में भाषायी अल्पसंख्यकों की समस्या बहुत जटिल नहीं है। विभिन्न राज्यों में उन्हें राष्ट्रभाषा को अपनाना पड़ता है परन्तु उन की अलग भाषा के पठनपाठन की व्यवस्था भी की जाती है। जहां लिपि समान हो वहां अल्पसंख्यको के लिए अपनी भाषा और राष्ट्रभाषा को एक साथ पढ़ना आसान हो जाता है क्योंकि यूरोप की सभी भाषाओं ने रोमनलिपि अपना ली है इसलिए वहां भाषाई अल्पसंख्यकों की कोई विशेष समस्या नहीं है, सरकारी कामकाज के लिए राष्ट्रभाषा का ही प्रयोग होता है परन्तु जहां विभिन्न भाषा वाले लोगों का विशिष्ट और बड़ा क्षेत्र हो वहां उनकी भाषा का स्थानीय शासन मे प्रयोग किया जाता है।

नस्ली अल्पसंख्यक

नस्ली अल्पसंख्यकों की समस्या भाषाई अल्पसख्यको की समस्या की अपेक्षा अधिक जटिल होती है। नस्ली विशिष्टताएं शक्लसूरत और रंग में प्रतिबिम्बित होती हैं। उन्हें मिटाना आसान नहीं होता परन्तु अन्तर्जातीय और अंतर्नस्ली विवाह तथा समान भाषा और मजहब के बल पर नस्ली अल्पसंख्यकों को राष्ट्रीय समूह के निकट लाया जा सकता है। अमरीका इसका अच्छा उदाहरण है।

मजहबी अल्पसंख्यक

मजहबी अल्पसंख्यकों की समस्या, विशेषरूप से मुसलिम धर्मावलम्बी अल्पसंख्यकों की समस्या सबसे अधिक जटिल है। उनकी आस्था का प्रथम केन्द्र उनका मजहब होने के कारण और इस्लाम की "मिल्लत और कुफ्र", "दार-उल-इस्लाम" और "दार-उल-हरब" की परिकल्पनाओं के कारण उनका गैर मुस्लिमों के साथ बराबरी के आधार पर शांतिपूर्ण सहअस्तित्व कहीं भी सम्भव नहीं हो पाता, जहां मुस्लिम बहुमत में होते हैं या जहां राजसत्ता उनके हाथ में होती है, वहा उनका गैर मुसलमानों के प्रति रवैया दमनकारी होता है और जहा वे अल्पसख्या में होते हैं, वहां उनका व्यवहार विघटनकारी होता है।

यही बात कुछ अंशों में अन्य सेमेटिक मजहबों- इसाइयत और यहूदी धर्म- के मानने वालों पर भी लागू होती है, परन्तु यहूदी अब इजराइल में सीमित हो चुके हैं और ईसाइयों के बड़े भाग ने अपने मजहब का कुछ हद तक आधुनिकीकरण और मानवीकरण कर लिया है।

संसार में अल्पसंख्यकों के प्रति लोकतांत्रिक देशों और कम्यूनिस्ट देशों के रवैए में थोड़ा अन्तर रहा है, अमरीका और ब्रिटेन जैसे लोकतांत्रिक ईसाई देशों ने व्यवहार में सर्वपंथसमभाव के सिद्धान्त को अपना लिया है। वे सभी पूजाविधियों को अपनाने की समान छूट देते हैं और सभी नागरिकों के लिए समान कानून और कानून के सामने सबकी बराबरी की व्यवस्था करते हैं, इस कारण वे घोषित या अघोषित ईसाई राज्य होते हुए भी व्यवहार में सेक्यूलर अथवा पन्थनिरपेक्ष राज्य माने जाते हैं, परन्तु ऐसे देश भी मुसलमान अल्पसंख्यकों के प्रति विशेषरूप में सतर्क रहते हैं क्योंकि वहां की ईसाई जनता और शासक इसलाम के सही स्वरूप को बेहतर समझते हैं, इसके ऐतिहासिक कारण भी हैं।

शताब्दियों तक ईसाइयत और इसलाम के बीच विश्वव्यापी संघर्ष चलता रहा, पहले महायुद्ध के बाद जब इसलाम एक राजनीतिक शक्ति के रूप में बहुत दुर्बल हो गया और साम्यवाद के रूप में ईसाइयत और लोकतन्त्र के लिए एक नई चुनौती सामने आई तब ईसाइयत और इसलाम के बीच का संघर्ष कुछ थम गया। इस्लाम का स्थान साम्यवाद ने ले लिया और साम्यवाद तथा साम्यवादी देश ईसाइयत और ईसाई राज्यों का पहला निशाना बन गए।

यह स्थिति अब बदल रही है। कम्यूनिज्म और कम्यूनिस्ट देशों के वैचारिक आधार और व्यवहार में बदलाव आ रहा है वहां लोकतन्त्र और मानववाद फिर उभर रहा है और ईसाइयत का पुनः उदय हो रहा है, इसलिए उनके साथ संघर्ष के स्थान पर सहयोग का वातावरण बन रहा है।

दूसरी ओर पेट्रो डालरों के कारण इसलामवादियों और इसलामी देशों की बढ़ती हुई शक्ति तथा पाकिस्तान और ईरान जैसे देशों में इसलामी सिद्धान्तवाद और जुनून के फिर उग्र रूप लेने के कारण इसलामी देशों और इसलामवादियों तथा ईसाई देशों और ईसाइयत के बीच पुराना संघर्ष फिर चालू हो गया है।

रुशदीकांड ने भी इस संघर्ष को पुन चालू करने में अहम भूमिका अदा की है।

यूरोप के ईसाई बहुल राष्ट्र राज्यों में यह एहसास फिर पैदा होने लगा है कि इसलामवादियों की आस्था का पहला केन्द्र इसलाम और इसलामी देश ही हैं, इसलिए उनकी वफादारी पर फिर से शक किया जाने लगा है।

इस एहसास की स्पष्ट झलक अमरीका में देखने को मिली। शिकागो में मैं वहां के काले मुसलिम नेता को मिलने गया। मेरे साथ मेरे मार्गदर्शक रूजवेल्ट जूनियर थे, इस काले मुसलिम नेता ने लगभग उसी प्रकार की बातें कीं जैसी कि हिन्दुस्तान में मौलाना बुखारी और शाहबुद्दीन करते हैं, उसने काले मुसलमानों को अलग राष्ट्र बताया और दावा किया कि अमरीका को काटकर एक अलग मुसलिम राज्य बनाया जाएगा, उससे मिल कर वापस लौटते हुए मैं ने रूजवेल्ट से कहा कि जब अमरीका में भी मुसलमानों की जनसंख्या 10% के लगभग हो जाएगी तब आप लोग हमारी मुस्लिम समस्या को समझ सकोगे।

उसकी प्रतिक्रिया बहुत स्पष्ट और चौंका देने वाली थी। उसने

— शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष....

कहा, "हम आप हिन्दुओं की तरह मूर्ख नहीं हैं, हम अमरीका में इन मुसलमानों को उस स्तर तक पहुँचने से पहले ही कुचल देंगे, "कोई भी राष्ट्रराज्य विघटनकारियों को पनपने देना नहीं चाहता।

कम्यूनिस्ट अपने अल्पसंख्यकों के प्रति लोकतान्त्रिक ईसाई देशों की अपेक्षा अधिक सतर्क और जागरूक हैं, उनका प्रयत्न रहता है कि मुसलिम तथा अन्य भाषाई नस्ली और मजहबी अल्पसंख्यकों को या तो पूरी तरह आत्मसात कर लिया जाए, उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा में मिला लिया जाए या फिर ऐसी स्थिति पैदा कर दी जाए कि वे अल्पसंख्यक किसी प्रकार का विघटनकारी रोल न अदा कर सकें।

इस दृष्टि से सोवियत रूस ने एक ओर अपने अल्पसंख्यकों का योजनाबद्ध ढंग से रूसीकरण किया और दूसरी ओर अपने मुसलिम बहुल क्षेत्रों और राज्यों में सफेद रूसियों को बड़ी संख्या में योजनाबद्ध ढंग से बसाया ताकि वे इसलाम की अलगाववादी और विघटनकारी प्रवृत्तियों पर प्रभावी अंकुश का काम कर सकें। रूस में मुसलिम अल्पसंख्यक लगभग 20/ हैं।

यूगोस्लाविया, बुलगारिया और चीन ने भी अपने क्रमशः 18:, 12: और 5% मुसलिम अल्पसंख्यकों के प्रति ऐसी ही नीति अपना रखी है। इस नीति का एक प्रमुख अंग यह रहा है कि अल्पसंख्यकों की जनसंख्या न बढ़े इसके लिये इन सभी देशों ने विशेष पेशबंदियाँ कर रखी हैं।

परंतु इन पेशबंदियों के बावजूद इन कम्यूनिस्ट देशों में भी अब यह एहसास पैदा हो रहा है कि इसलामवादियों का राष्ट्रीयकरण करना और उन्हें राष्ट्रधारा में लाना आसान नहीं और उनकी वफादारी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। अफगानिस्तान में सोवियत रूस के मुसलिम सैनिकों के व्यवहार ने रूस को चौंका दिया। उसे वहाँ से अपने मुसलिम सैनिकों को वापस बुलाना पड़ा। अजरबेजान आदि मुसलिम राज्यों के मुसलमानों में अलगाववाद के पुनरुदय ने भी कम्यूनिस्टों को झकझोरा है। अब वे भी मानने लगे हैं कि इसलाम-वादी अल्पसंख्यक सोवियत रूस, यूगोस्लाविया इत्यादि कम्यूनिस्ट देशों की एकता के लिए भी बड़ा खतरा हैं।

भारत मूल के पंथ, जिन में वैदिक मानववाद और सभी पूजाविधियों और मजहब के प्रति सहिष्णुता का भाव व्याप्त है, सेमेटिक मजहबों, विशेष रूप में इसलाम से मेल नहीं खाते। परन्तु अपनी वैदिक परंपरा के कारण उन्होंने सेमेटिक मजहबों को भी उसी भाव से देखा जिससे वे भारत मूल के अन्य पंथों और उनके अनुयायियों को देखते थे। इस कारण उन्होंने धोखा खाया और खा रहे हैं।

परन्तु 1947 के भारत विभाजन के बाद साइप्रस के विभाजन और लेबनान, पाकिस्तान, बंगलादेश, थाईलैंड और फिलिपीन में मुसलमानों के गैरमुसलिमों के प्रति व्यवहार तथा खंडित भारत में मुसलिम समस्या के फिर खड़े हो जाने के कारण बहुत से राष्ट्रवादी और जागरूक भारतीयों को भी इसलाम और इसलामवादियों के प्रति अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना पड़ रहा है।

ऊपर दिये गए तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में ही भारत की अल्पसंख्यक समस्या का सही मूल्यांकन किया जा सकता है और उस के समाधान का मार्ग ढूंढा जा सकता है।

भारत की अल्पसंख्यक समस्या

भारत अथवा हिन्दुस्तान एक विशाल और प्राचीन देश है। इसमें भाषा, जाति और पंथ की अनेक विविधताओं के बावजूद इस की मूल भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता निर्विवाद है। राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न कालों में अनेक राज्यों में बंटे रहने और लम्बे काल तक विदेशी राज से पीड़ित रहने के बावजूद इसने अपनी मौलिक एकता को अक्षुण्ण रखा है।

भारत के मुसलमान नस्ल, भाषा और संस्कृति की दृष्टि से यहाँ के राष्ट्रीय हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हैं। विदेशी अरब और तुर्क मुसलमानों के वंशज दोतीन प्रतिशत से अधिक नहीं हैं। परन्तु इसलामवाद और कुरान ने उन में जो अलगाववाद पैदा किया और जिसे ब्रिटिश शासकों ने अपने साम्राज्यवादी हितों के लिए बढ़ावा दिया, उसके कारण उन्होंने देश का विभाजन कर के अपने लिए एक अलग "होमलैंड" की मांग उठाई।

सन् 1941 की जनसंख्या के अनुसार ब्रिटिश भारत में मुसलमान लगभग 23% थे और देशी रियासतों की जनसंख्या में, जो कुल देश की जनसंख्या की एक तिहाई थी, उनका अनुपात 10% से कम था। इस प्रकार 1947 में सारे देश की जनसंख्या का अनुपात लगभग 20% था। परन्तु विभाजन के कारण उन्हें भारत की 30% धरती मिल गयी।

इस अलगाववाद और विघटनकारी मांग का समर्थन लगभग सभी मुसलमानों ने किया था। 1946 के आम चुनाव में जिसका मुख्य मुद्दा अखंड भारत बनाम विभाजन था, 93% मुसलमान मतदाताओं ने विभाजन और पाकिस्तान के पक्ष में मत दिया था। जिन 4% ने इस के विरोध में मत दिया था वे सिंध, सीमा प्रान्त और पश्चिमी पंजाब के रहने वाले थे।

कांग्रेस के नेताओं द्वारा विभाजन के पक्ष में तब केवल एक बात कही जाती थी- इससे अल्पसंख्यक अथवा मुसलिम समस्या का स्थायी समाधान हो जाएगा। गाँधीजी ने तब कहा था कि क्योंकि मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिल कर एक घर में रहने को तैयार नहीं थे इसलिए हमने देश की धरती को बाँट दिया है ताकि मुसलमान पाकिस्तान में सुख रहें और हिन्दू हिन्दुस्तान में। परन्तु यह अपेक्षा पूरी नहीं हुई।

यदि विभाजन के साथ ही इसके तर्कसंगत फलितार्थों को भी मान कर कार्यरूप दिया गया होता तो संभवतः खंडित भारत और पाकिस्तान दोनों की अल्पसंख्यक समस्या समाप्त हो जाती। उन तर्कसंगत फलितार्थों में प्रमुख था भारत में बच गए मुसलमानों और पाकिस्तान में बच गए हिन्दुओं की अदलाबदली। उस समय खंडित भारत में लगभग ढाई करोड़ मुसलमान बच गए थे और पाकिस्तान में लगभग इतने ही हिन्दू।

डा० अंबेडकर ने तुर्की और यूनान के बीच मुसलिम और ईसाई जनसंख्या की अदलाबदली की तरह भारत और पाकिस्तान की हिन्दू मुसलिम जनसंख्या की अदलाबदली की विस्तृत योजना भी अपनी विख्यात पुस्तक "थाट्स ऑन पाकिस्तान" में पेश की थी। देश का विभाजन स्वीकार करना और इसके तर्कसंगत फलितार्थ को स्वीकार न करना उस समय के भारत के नेताओं की सब से बड़ी विफलता ही नहीं अपितु मूर्खता भी थी। अब बहुत से कांग्रेसी नेता भी इस बात को दबी जबान से मानने लगे हैं।

दूसरा रास्ता यह था कि दोनों नए राष्ट्रराज्य मिल कर तय करते कि दोनों में रह गये हिन्दू और मुसमान अल्पसंख्यकों के प्रति समान व्यवहार किया जाएगा। यह तर्कसंगत और व्यावहारिक बात होती। यदि पाकिस्तान के शासकों को यह स्पष्ट रूप में बता दिया जाता कि भारत में मुसलिम अल्पसंख्यकों के प्रति वही व्यवहार होगा जो पाकिस्तान अपने हिन्दू अल्पसंख्यकों के प्रति करेगा तो शायद उन का व्यवहार कुछ भिन्न होता और दोनो देशों में अल्पसंख्यकों को समान राहत मिलती। परन्तु ऐसा भी नहीं हुआ।

गत 42 वर्षों में पाकिस्तान ने अपनी हिन्दू अल्पसंख्यक समस्या का समाधान उन सब को मार कर या जबरजस्ती मुसलमान बनाकर या खदेड़ कर कर लिया है। 1947 में पाकिस्तान में हिन्दू लगभग 23% थे अब वे 23% से कम होकर 19% भी नहीं रहे। पूर्वी पाकिस्तान जो बंगलादेश कहलाता है, में भी यही स्थिति है। वहाँ हिन्दू बौद्ध लगभग 33/ थे, अब वे 10/ भी नहीं रहे और ये 10/ भी अपने दिन गिन रहे हैं।

दूसरी ओर खंडित भारत में मुसलिम अल्पसंख्यक समस्या ने फिर वही रूप धारण कर लिया है जो 1947 से पहले था। उनकी जनसंख्या चार गुना बढ़ चुकी है। 1981 की जनगणना में वे लगभग 8 करोड़ हो चुके हैं। वास्तव में स्थिति 1947 से भी अधिक भयानक हो चुकी है क्योंकि अब इस अल्पसंख्यक समूह की पीठ पर भारत के कुछ राजनीतिक दलों का भी वरदहस्त है और पाकिस्तान, बंगलादेश तथा अन्य इसलामी देशों का भी।

कश्मीर घाटी की तरह जहाँ भी वे बहुसंख्या में हैं, उसे वे भारत से काट कर पाकिस्तान में मिलाने के लिए सक्रिय हैं। शेष देश में वे योजनाबद्ध ढंग से अपनी जनसंख्या बढ़ा रहे हैं और इसे भी पाकिस्तान की तरह इसलामी राज्य बनाने का षडयन्त्र चला रहे हैं। 1947 के पूर्व की तरह वे फिर जगह-जगह दंगे करने लगे हैं। और अपनी अलगाववादी माँगों को दिनोंदिन बढ़ाते जा रहे हैं।

मुसलमान अल्पसंख्यकों के रुख का प्रभाव कुछ ईसाई और केशधारी सिक्खों पर भी पड़ने लगा है। इस प्रकार सारे देश में अल्पसंख्यक समस्या ने फिर भयानक रूप धारण कर लिया है और देश के नए विघटन का खतरा पैदा हो गया है। शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

खंडित भारत में मुसलमानों की जनसंख्या का चारगुना बढ़ जाना इस बात का अकाट्य और ज्वलन्त प्रमाण है। परन्तु इसके बावजूद मुस्लिम नेता सारे संसार में यह कुप्रचार कर रहे हैं कि भारत में उनके साथ बुरा और अमानवीय बरताव होता है। इस प्रकार भारत दोनों ओर से पिट रहा है और यहाँ का राष्ट्रीय समाज अपने ही देश में अपने अस्तित्व को असुरक्षित महसूस करने लगा है।

इस स्थिति का सामना और अल्पसंख्यक समस्या का संसार के अन्य देशों के अनुभव के आधार पर तर्कसंगत और राष्ट्रहित के अनुरूप समाधान निकालना अब अपरिहार्य हो चुका है। इस उद्देश्य से निम्न सुझावों पर विचार करने की आवश्यकता है।

भारत के विरुद्ध संसार भर में होने वाले कुप्रचार को रोकने के लिए यह आवश्यक है कि संसार के सामने ठीक जानकारी प्रस्तुत की जाए। इसलिए यह उचित होगा कि भारत सरकार यथाशीघ्र भारत के अल्पसंख्यकों के संबंध में एक श्वेतपत्र जारी करे जिसमें 1947 से पूर्व सारे देश में अल्पसंख्यकों की स्थिति के संबंध में आंकड़े और अन्य जानकारी दी जाए। 1947 के बाद खंडित भारत और पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की जनसंख्या और अन्य प्रासंगिक जानकारी भी दी जाए और इस समय पाकिस्तान और बंगलादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों की संख्या और स्थिति क्या है और भारत में मुसलमानों की संख्या और स्थिति क्या है यह विस्तार से बताया जाये। इस प्रकार का श्वेतपत्र न केवल गलत प्रचार पर प्रभावी रोक लगाएगा अपितु भारत की अल्पसंख्यक समस्या को वस्तुपरक ढंग से समझने और उसका यथार्थवादी हल निकालने के लिए भी सहायक सिद्ध होगा।

यह भी स्पष्ट करना होगा कि भारत में राष्ट्र कौन सा समाज या समूह है। मुसलमान अपने अलग राष्ट्र होने के आधार पर अलग देश ले चुके हैं। खंडित भारत में वे अल्पसंख्यक तभी माने जा सकते हैं जब यह स्पष्ट रूप से मान लिया जाय कि खंडित भारत हिन्दू राष्ट्र है और हिन्दू इसका राष्ट्रीय समाज है क्योंकि मूल समस्या मुस्लिम अल्पसंख्यकों की है इसलिये यदि उसका ठीक समाधान निकाल लिया जाये तो अन्य अल्पसंख्यकों की समस्या का समाधान कठिन नहीं होगा।

अखंड भारत के मुसलमान अल्पसंख्यकों को 1947 में अलग देश मिल गया था। इसलिये उनमें से जो आज भारत में अपने प्रति व्यवहार से असंतुष्ट हैं या यहाँ की रीति नीति अपने अनुकूल नहीं समझते वे पाकिस्तान अथवा बंगलादेश जा सकते हैं। यह रास्ता उनके लिए 1947 से खुला है। उन्हें कोई भारत में रहने के लिए बाध्य नहीं कर रहा है न करना चाहेगा।

जो पाकिस्तान नहीं जाना चाहते उनके लिए दूसरा विकल्प यह है कि वे भारत के प्रति वफादार रहें और अपनी अलगाववादी माँगें छोड़ कर देश के समान नागरिक बन कर रहें। इस मामले में भारत सरकार राजनेताओं और राजनीतिक दलों पर भी जिम्मेदारी आती है कि वे अपने दलगत स्वार्थ के लिए मुस्लिम अलगाववाद को बढ़ावा देना बन्द करें और मुसलमानों तथा अन्य अल्पसंख्यकों को विशेष अधिकार की बात और उनका तुष्टीकरण बन्द करें। इस दृष्टि से निम्नांकित बातें करनी होंगी।

भारत के संविधान में से धारा 29 व 30 और 370 जो अल्पसंख्यकों के पक्ष में भेदभाव करती हैं निकाल दी जाएं और ऐसी व्यवस्था की जाए कि सरकार नागरिकों के बीच पूजाविधि के आधार पर कोई भेदभाव न करे।

सभी नागरिकों के लिए समान कानून हो। इस हेतु संविधान की धारा 44 पर अविलम्ब अमल हो और शरीयत की ऐसी बातों का जो भारत के संविधान और मानववाद के विपरीत हैं। अमान्य घोषित किया जाए।

कानून के सामने सभी नागरिक बराबर हों। मुस्लिम महिलाओं को भी वही अधिकार दिये जायें जो हिन्दू महिलाओं के हैं।

पूजाविधि की पूरी छूट देते हुए मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यकों को राष्ट्र की धरती और संस्कृति के प्रति प्रथम आस्था रखने के लिये प्रेरित किया जाए इस दृष्टि से सभी का भारतीयकरण तथा राष्ट्रीयकरण किया जाये।

जो मुसलमान न पाकिस्तान जाना चाहते हैं और न अपना भारतीयकरण करके राष्ट्र की महाधारा में शामिल होना चाहते हैं। उनके लिए तीसरा विकल्प यह है कि वे भारत में विदेशी के रूप में रहें। तब उन्हें वोट के अधिकार से वंचित होना पड़ेगा।

भारत के मुसलमानों के सामने ये तीन विकल्प हैं। इनमें से उन्हें एक चुनना पड़ेगा। जितनी जल्दी वे इन तीन में से एक रास्ता चुन लें उतनी ही उनके लिए भी अच्छा होगा और देश के लिए भी।

देश के शासकों का कर्तव्य है कि वे मुसलमानों के सामने ये तीन विकल्प दृढ़ता से रखें और उन्हें स्पष्ट रूप में बतायें कि भारत न अल्पसंख्यकों के प्रति वह नीति जो पाकिस्तान और बंगलादेश ने अपने अल्पसंख्यकों के प्रति अपनाई है और जिसे भारत द्वारा भी अपनाना तर्कसंगत होगा नहीं अपनाई है और न अपनाएगा ही परन्तु मुसलमानों से यह अपेक्षा अवश्य की जाती है कि वे दो नावों की सवारी बन्द करें और मनसा वाचा कर्मणा भारत में भारतीय, इंडिया में इंडियन और हिन्दुस्तान में हिन्दू बन कर रहें पाकिस्तानी या बंगलादेशी या अरब बन कर न रहें।

मुसलमानों और अन्य मजहबी अल्पसंख्यकों को अपने पंथ को स्वतंत्रता से मानने और चलाने की छूट देते हुए यह स्पष्ट करना चाहिए कि मजहब या पंथ उनके व्यक्तिगत जीवन तक सीमित रहे। इस संदर्भ में अल्पसंख्यक आयोग और शिक्षा क्षेत्र में अल्पसंख्यक संस्थानों की कोई प्रासंगिकता नहीं है। अल्पसंख्यक आयोग खत्म करना चाहिए या उसके स्थान पर मानव अधिकार आयोग बनाना चाहिए और सभी शिक्षा-विद्यालयों के लिए समान कानून बनना चाहिए।

जहाँ तक भाषाई अल्पसंख्यकों का प्रश्न है भारत में यह कोई विशेष समस्या नहीं है यहाँ की अधिकांश भाषाएं संस्कृत में से उपजी हैं और शेष में संस्कृतमूलक शब्दों की बहुलता है। यदि इन सबके लिये देवनागरी लिपि को शुरू में वैकल्पिक लिपि के रूप में मान लिया जाये संस्कृत के पठनपाठन पर विशेष बल दिया जाय और हिन्दी भाषाभारती के रूप में सभी भाषाओं के शब्दों से समृद्ध किया जाए तो भाषाई अल्पसंख्यकों की कोई समस्या भारत में नहीं होगी।

भारत में नस्ली अल्पसंख्यकों की समस्या भी कोई खास नहीं है। पूर्वी राज्यों के लोगों पर मंगोल नस्ल का प्रभाव है परन्तु हिन्दू बौद्ध संस्कृति ने उन्हें शेष राष्ट्रीय हिन्दू समाज के साथ बहुत कुछ एकरूप कर दिया है। ईसाई मिशनरियाँ जरूर इस एकरूपता को समाप्त करने का प्रयत्न कर रही हैं। उनकी गतिविधियों पर प्रभावी रोक लगाने की आवश्यकता है।

ऊपर दिया गया विवेचन तथ्यात्मक है और सुझाव व्यावहारिक और तर्कसंगत हैं वे तथाकथित सेक्यूलरवाद के अनुरूप हैं। सेक्यूलरवाद के तीन बुनियादी तकाजे हैं

खंडित भारत इस बात पर गर्व कर सकता है कि उसने हिन्दू परंपरा और संस्कृति के अनुरूप अपने अल्पसंख्यकों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया।

राज्य के अपने नागरिकों में पंथ अथवा पूजाविधि के आधार पर भेदभाव न करें।

सभी नागरिकों के लिए समान कानून हो।

कानून के सामने सब बराबर हों।

आज का भारत राज्य इन तकाजों को पूरा नहीं करता। व्यवहार में यह ऐसा साम्प्रदायिक राज्य बन गया है जो राष्ट्रीय समाज की कीमत पर अल्पसंख्यकों विशेष रूप में मुसलमानों को विशेष अधिकार देता है।

यदि भारत को सही अर्थों में सेक्यूलर राज्य बनाना है तो भारत को हिन्दू राज्य घोषित करना होगा। हिन्दू ही सभी पूजाविधियों की प्रासंगिकता को स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि सारे इतिहास में हिन्दू राज्य कभी साम्प्रदायिकता राज्य नहीं रहा। हिन्दू राज्य में मजहबी अल्पसंख्यकों के साथ बराबरी का व्यवहार होता रहा है और होगा। हमारा पुराना इतिहास इसका साक्षी है।

इसलिए आवश्यकता है कि हिन्दुस्तान के मनीषी बुद्धिजीवी चिंतक और राजनेता भारत की अल्पसंख्यक समस्या का विश्व इतिहास और अन्य देशों के अनुभव की पृष्ठभूमि में देखें और आँकें। पहले वे भारत को राष्ट्र राज्य मानें हिन्दू समाज को यहाँ का राष्ट्रीय समाज मानें और हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र है, इसे खुले मन से स्वीकार करें। तभी वे यहाँ पर अल्पसंख्यकों के अस्तित्व को स्वीकार कर सकेंगे और उनके प्रति सही नीति अपना सकेंगे। ■

अयोध्या काण्ड और अयोध्या जन्मभूमि

डा० रामेश्वर दयाल गुप्त
ज्वालापुर (हरिद्वार)

यह काण्ड राम के अयोध्या से निष्क्रमण से प्रारम्भ होता है। विजयोपरान्त लंका से अयोध्या हेतु पुनरागमन समय पर-

महर्षि वाल्मीकि ने लंका काण्ड में लक्ष्मण द्वारा अपने अग्रज को एक राजनैतिक सलाह देते दिखाया है कि बाहुबल से सोने की लंका जीती है। अब अयोध्या क्यों लौटा जाय? यहीं की राज्यश्री को भोगा जाय। तब रामचन्द्र जी ने उत्तर दिया है-

यद्यपि स्वर्णमयी लंका तदपि न मे रोचते लक्ष्मण।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है, क्योंकि वहां जन्म होने से वह जननी सम है। तुलसीदास ने यह भाव यों प्रगट किया है-

अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।
यह प्रसंग जानहि कोई कोऊ।।
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि।
उत्तर दिसि बह सरजू पावनि।।
जा मज्जन से विनहिं प्रयासा।
मम समीप नर पावहिं बासा।।

(उत्तर काण्ड । दोहा 3/4 से 6 तक जहाँ वे कपि समन्तों से अयोध्या महात्म्य वर्णन करते हैं।)

अयोध्या के इतने प्रिय होने का कारण मात्र जन्मभूमि या पितृभूमि न होकर कुछ और ही है जो कि यहां उजागर नहीं किया गया है, कि "उस प्रसंग को कोई विरले ही जानते हैं।"

कदाचित् यह कारण हो कि वह पुण्य भूमि के मध्य में स्थित है जिसके चारों ओर ऋषिमुनि आश्रम बनाकर वैदिक अध्यात्म का सतत प्रवाह जारी रखते थे। राम ने वन गमन पर पहली रात्रि तमसा तीर पर काटी थी। वहां से श्रृंगवेरपुर तीर्थ पर, दूसरी रात्रि बिताई थी। उसके बाद प्रयागराज पर गंगा पार की थी। तदनन्तर आश्रमों की श्रृंखला प्रारम्भ हुई थी।

अत्रि के आश्रम का वर्णन अ०काण्ड 2/4 में, मुनि सरभंग के आश्रम का संकेत अ० काण्ड 7/4 तथा मुनि अगस्त्य के शिष्य सरभंग का आश्रम, अ०काण्ड 9/1 में चर्चित है और वशिष्ठ के आश्रमों की तो अविच्छिन्न परम्परा थी, क्योंकि वे दशरथ के कुलगुरु थे और महाभारत काल में जो तत्कालीन गद्दीधारी वशिष्ठ थे, उनका जिक्र महाभारत आदि पर्व (93/5) में आया है कि उनसे देवव्रत (भीष्म) ने वेद पढ़े थे।

जब भरत जी रामचन्द्र जी से मिलने चित्रकूट को गये तब कैवटराज ने उन्हें वह स्थान दिखाया जहां राम ने निवास किया था।

जहां राम ठहरते हैं, वहां यज्ञ वेदी अवश्य बनाते हैं ताकि दैनिक दिनचर्या का निर्वाह हो।

अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में यज्ञ भूमि की स्तुति में एक ऋचा आई है-

यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्यां
यस्यां यज्ञं तन्वते विश्वकर्माणः।
यस्यां मीयन्ते स्वरवः पुरस्तात्।
सानो भूमिर्वर्धयद्वर्धमाना।
अथर्व 12/1/13

जिस पुण्यभूमि पर विश्वकर्मा ने यज्ञ वेदि बनाई और उसके चारों ओर स्तूप खड़े किये। जहां यज्ञाहुति दी जाती रही है, जिनसे सफेद धुआं ऊपर उड़कर जाता है, वह भूमि हमें वर्धमान करे-

यस्यांपूर्वेभूतकृत ऋषयो गा उदानृचुः।
सप्त सत्रेण वेधसो यज्ञेनतपसा सह।।
मही ऋचा 39.

जिस भूमि पर ऋषियों ने यज्ञ और तप से सब भूतों का कल्याण किया, उसी परम्परा से हम जुड़े रहें। ऐसी है पुण्य भूमि की अनुज्ञा।

आदि निर्माताओं ने अयोध्या का निर्माण स्वयं वेद वर्णित एक उपमेय नगर की योजना के अनुसार किया था। उसके भवनावशेष बृहद् अयोध्या नगर में अब भी प्राप्त हैं। ऋचा यों है-

अष्ट चक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्मयः कोषः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।
तस्मिन् हिरण्यकोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदो विदुः
प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृताम्।
पुरं हिरण्ययीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम्।।

अथर्व- 11/2/31-33.

यों इस ऋचा में शरीर को एक चक्रव्यूह सदृश नगर मानकर उसमें पहिले आत्मा और फिर उससे भी अपराजित ब्रह्म का स्थान वर्णन किया गया है। उस हिरण्यमय नगर के 8 चक्र तथा 9 द्वार हैं। पर वेद में वर्णित इस नक्शे के अनुसार भारत के प्रथम राजाओं ने जो सूर्यवंशी थे और इक्ष्वाकु के कुल के थे अपनी राजधानी का निर्माण किया था और उसका नामकरण भी अयोध्या कर के किया था। उसके केन्द्र में जो ब्रह्म स्थान वर्णित है वही राजमहल थे, जिनमें राजाओं का जन्म स्थल रहता था। उसे रघु ने, अज ने, दशरथ ने और राम ने संवारा था। वंशक्रम में अयोध्या से प्रारम्भ करके भारत के चक्रवर्तित्व की यात्रा हेतु इनकी विजय दुन्दुभि का वर्णन कालिदास की कृति रघुवंश में है। कालिदास की इस कृति से ही प्रेरणा पा महाराज चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने हूणों और शकों का पराभव करके भारत में एकछत्र अपराजित राज्य स्थापित किया था। पुराकाल में रघुकुल ने उत्तर से दक्षिण तक के भारत को एकनिष्ट किया था और कालान्तर में कृष्ण ने पूर्व से पश्चिम अर्थात् आसाम से सिन्धु तक एकला भारत में ला बांधा था। इसीलिए भारत के जनमानस ने इन दोनों को भगवान की उपाधि से अलंकृत किया था। सो अयोध्या का अभ्युदय भारत राष्ट्र के अभ्युदय का प्रतीक है। दैन्य, पराजय, परतन्त्रता के अवशेषों को नष्ट करने को जो उद्वेग उठा है, वह हमारे परमोत्कर्ष का सूत्रपात है। इस प्रारम्भ की भित्ति पर पुनः प्राचीर उठेगी और पुण्यभूमि एवं पितृभूमि अयोध्या पुनः समुन्नत वैभवमय राष्ट्र की आध्यात्मिक और आधिभौतिक राजधानी होगी। प्रश्न आक्रान्ताओं की विषबेलि को हटा कर एक देवता या एक और मूर्ति और उसका परकोटा स्थापित करने का नहीं है। यह तो साध्य हेतु प्रयुक्त एक साधन है। अथर्व- 12/1/43 में भी यही आदेश देवकृत क्षेत्र हेत है--

यस्याः पुरो देवकृताः क्षेत्रे यस्या विकुर्वते।
प्रजापतिः पृथिवीं विश्वगर्भामाशामाशां
रण्यां नः कृणोतु ।।

हां हर संग्राम में देव व असुर दोनों होते हैं। अयोध्या में राम जन्मभूमि पुनरुत्थान में भी असुर पक्ष उपस्थित हो गया है। खास अयोध्या में भी उनका प्रवेश व निवास है।

श्री राजीव को बधाई

तरुणाई एवं नवचेतना के प्रतीक भारत के भू०पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी के पावन जन्म दिवस पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रदेश की आर्य जनता की ओर से शत-शत बधाई-यॉं प्रेषित की हैं।

भूल सुधार

आर्यमित्र के दिनांक 26 अगस्त 1990 के अंक में पृष्ठ 3 पर प्रकाशित श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक द्वारा "आर्य समाज का उद्धार कौन करेगा" शीर्षक लेख में व्यक्त विचार उनके निजी हैं। "आर्यमित्र" उसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

-प्रबंध सम्पादक

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हों और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

अब भी सोचो-समझो भाई।

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
- एम्पोअर कानपुर

कश्मीर में बढ़ता जाता
उग्रवादियों का संघर्ष।
देख-देख यह घबराता है-
अपना प्यारा भारतवर्ष।

धर्म-निरपेक्ष व देश भक्त जन
वहाँ जा रहे हैं मारे।
और सुरक्षा-बल के सैनिक
भी मरते हैं बेचारे।

वहाँ उग्रवादी उन पर-
"राकेट" से हमला करते हैं।
सीधे-सादे लोग अचानक
ही "राकेट" से मरते हैं।
नंग-नाच यह उग्रवाद का
पाकिस्तान कराता है।
गिरीशचन्द्र जी राज्यपाल का
मन यह लख घबराता है।

कश्मीर के चार जिलों ने
शान्ति - व्यवस्था - कम भूला।
"श्रीनगर" औ "अनन्तनाग",
"कुपवारा" औ "बारामूला"।

वहाँ उपद्रव उग्रवादियों का
दिन-दिन बढ़ता जाता।
जन - मानस अपने भारत का
देख-देख यह भय खाता।

भारत दबता जाएगा-
वह इसे दबाते जायेंगे
कश्मीर के उग्रवादी यों
मन चाहा फल पायेंगे।

जगमोहन जी की मस्ती
कितनों को रास न आई थी।
उन्हें बुला लेने को कितनी
चीख-पुकार मचाई थी।
आखिर में वह गये बुलाये।
राज्यपाल थे बदल गये।
अलगाववादियों के तब तो
खिल जोरों से ह्रिय-कमल गये।

बढ़े हौसले उन दुष्टों के।
सोचा- "विजय नहीं है दूर।
दिन-पर दिन होते जाते हैं
अब भारत वाले मजबूर।

हम मनमानी करवा लेंगे।
भारत क्या कर पाएगा?
कश्मीर पर आज़ादी का
झण्डा तब लहराएगा।"
अब भी सोचो-समझो भाई।
तनिक होश में आ जाओ।
उग्रवाद-अलगाववाद को
अब सख्ती से दबवाओ।

"कश्मीर' बस तभी बचेगा।
भारत का रह पाएगा।
लापरवाही हुई अगर तो
रोना ही रह जाएगा।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

"आर्य समाज बगहा-मीरजापुर द्वारा 5 से 14 अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह व 15 अगस्त बड़े धूमधाम से मनाया गया। नित्य यज्ञ के बाद यजुर्वेद पाठ होता रहा।"

—बेचन सिंह

"मृतक श्राद्ध और तर्पण"

• श्री जगदीशशरण "शीतल"
कॉटपुर बिजनौर

पौराणिक मतानुसार श्राद और तर्पण मृत व्यक्ति के लिये सोलह दिन अर्थात भादों सुदि पूर्णमासी से असौजवदि अमावस्या तक किये जाते हैं। मृतक श्राद में जो भोजन ब्राह्मण को खिलाया जाता है। वह भोजन मृत व्यक्ति को मिल जाता है। ऐसी पौराणिक मत की मान्यता है। अब प्रश्न होता है कि जब यहाँ का भोजन ऐसे व्यक्ति और ऐसे स्थान पर पहुँच सकता है जिसका हमें कुछ मालूम नहीं तो एक मनुष्य जो अपने घर से बाहर दो चार दिन के लिये परदेश गया है और वह बाजार का घटिया और मँहगा खाना न खाकर अपनी पत्नी से कह जाय कि दोनो समय छत्तीस प्रकार के व्यजन बनाकर और पंडित जी को बुलाकर कहना महाराज यह खाना मेरे पतिदेव को जो परदेश गये हैं अमुक स्थान पर पहुँचा दीजिये। यदि वह खाना स्वयं खाकर उस व्यक्ति तक उस स्थान पर पहुँचा दे जहाँ वह व्यक्ति रह रहा है और वह व्यक्ति घर आने पर यह कह दे कि तुम्हारा भेजा हुआ खाना मुझे प्रतिदिन ठीक दोनों समय मिल गया। तो आपकी यह बात भी सच्ची है कि आपका किया हुआ भोजन मृत व्यक्ति के पास पहुँच गया। परन्तु यह बात कदापि संभव नहीं। पंडित जी का खाया हुआ भोजन उनके ही पेट में रहेगा। वह वहाँ किसी भी दशा में और किसी प्रकार पहुँच नहीं सकता। क्योंकि खाना जड पदार्थ है उसमें आप जाने की कोई सामर्थ्य नहीं। वह तो जो खायेगा वही तृप्त होगा। दूसरा नहीं। जब यहाँ का भोजन जो व्यक्ति जीवित है और उसके स्थान का भी पता है उस तक नहीं पहुँच सकता तो फिर मृत व्यक्ति जो अपने कर्मानुसार किस योनि में है अथवा कहाँ है ईश्वर के सिवा और कोई नहीं जानता उस तक वह भोजन किस प्रकार पहुँच सकता है। इसके संदर्भ में एक निवेदन और कर दूँ। आप और हम सब भी कहीं से मरकर आये हैं। इन सोलह दिनों में आपने किसी दिन अपनी पत्नी या अपने घरवालों से कहा कि आज हमारे लिये खाना मत बनाना। क्योंकि आज मुझे जहाँ मैं पिछले जन्म में जिस घर में था वहाँ से भोजन आ गया है। भगवान जब कर्मानुसार जीव को दूसरा जन्म देता है तो फिर पहले जन्म का उसे कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। यदि ज्ञान रहे तो यह संसार चल ही नहीं सकता। अतः मृतक श्राद और तर्पण सृष्टि नियम के विरुद्ध अवैदिक तथा मूर्खता पूर्ण पाखंड है। इसके विपरीत वैदिक धर्मानुसार जीवित माता-पिता वृद्ध जन, आचार्य तथा सन्यासी ही पितर हैं। इनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करना श्राद तथा अपनी सेवा सत्कार से इन्हें तृप्त करना ही तर्पण है जो सृष्टि नियम के अनुसार तथा बुद्धिपूर्वक है।

देह जब भस्म हुई शेष न कुछ भी रहता।
कर्म अनुसार सदा जीव ही दुख सुख सहना।।
श्राद पितरों का यही और यही तर्पण भी।
उनके जीवित ही जो सत्कार वह सेवा करता। ◻

यज्ञोपवीत व विवाह संस्कार सम्पन्न

आर्यसमाज पाली (हरदोई) के प्रधान श्री चन्द्रप्रकाश मिश्र के सुपुत्र चि० जय प्रकाश मिश्र पत्रकार व चि० श्री रवि प्रकाश का यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात चि० जयप्रकाश मिश्र पत्रकार का शुभ विवाह अकबरपुर (शाहजहाँपुर) निवासी श्री मिश्रीलाल चतुर्वेदी की सुपुत्री आयु० शोभा के साथ बड़े धूमधाम से श्री ब्रह्मानन्द आर्य के पौरोहित्य में उपरोक्त संस्कार सम्पन्न हुए। उपस्थित सज्जनों ने वर वधू को आशीर्वाद दिया।

•

आर्य समाज बगहा (मिरजापुर)

प्रधान- श्री ज्वाला प्रसाद सिंह
मंत्री- श्री हरिशंकर सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री सरोज कुमार सिंह
अधिष्ठाता दल-श्री बेचन सिंह

वर की आवश्यकता

कन्या गुरुकुल में शिक्षारत छात्री वर्णीय सुन्दर, गृह कार्य में दक्ष, आयु 18 वर्षीय कन्या के लिये वर, सरकारी सर्विस में कार्यरत या व्यापारी हो, की आवश्यकता है पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें- श्री मोहनलाल चड्ढा, कटरा बाजार धोबी गली, ग्राम पो०-शिकोहाबाद फिरोजाबाद (उ०प्र०)

गुरुकुल के सहायतार्थ अपील

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन आर्य प्रतिनिधि सभा की एक मात्र शिक्षा संस्था है। आजकल गुरुकुल अत्यधिक आर्थिक संकट में है। गुरुकुल की सम्पत्ति करोड़ों रुपये की है। परन्तु समय पर मरम्मत न हो पाने के कारण अति जीर्ण स्थिति में है। भवन मरम्मत के लिए हो कम से कम एक लाख रुपये की तुरन्त आवश्यकता है। यदि शीघ्र ही मरम्मत नहीं करायी गयी तो सब भवन धराशायी हो जाएंगे।

उड़ीसा में स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा शुद्ध किये गये बीस बालक गुरुकुल में विद्याध्ययन हेतु आ रहे हैं। जिन पर प्रतिमास लगभग 2500/- व्यय होगा। अतः प्रदेश की सभी आर्य समाजों एवं आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि वे गुरुकुल के नाम शीघ्र ही अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट या चेक द्वारा 'गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन' के नाम भेजने की कृपा करें।

प्रदेश की सभी आर्य समाजें कम से कम एक हजार रुपये के चेक अवश्य भेजने की व्यवस्था कर गुरुकुल के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें।

रोशन लाल गुप्त
मुख्याधिष्ठाता

प्रभु से प्रार्थना

• संतोष "कण्व"
बरेली

भगवान दया करना इतनी,
सत्पथ पर नित बढ़ते ही रहें।
दुर्गुण-कुव्यसन सभी अपने,
हम मूल नष्ट करते ही रहें।।

बाधाएँ कितनी हों भीषण,
और प्रबल बवंडर वात चले।
पग कभी न मेरा डगमग हो,
निज मारग पर चलते ही रहें।।

मद-लोभ-मोह, और काम कभी,
प्रतिकूल न हों अनुकूल रहें।
मन कभी न मेरा विचलित हो,
पग लक्ष्य ओर बढ़ते ही रहें।।

जाने अनजाने में हमसे,
अपकार किसी का न होवे।
हम दीन-दुखी-निर्बल-जन के,
सब कष्ट सदा हरते ही रहें।।

अन्यायी-कुटिल-प्रपंची का,
सर्वत्र सदा ही क्षय होवे।
भयभीत प्राणियों को जग में,
हम अभय-दान देते ही रहें।।

माँ शक्ति दो कि हिन्दी हो

• लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"
भोजपुरा, मैनपुरी

चित्त में, चरित्र में, चिन्तन में हिन्दी हो.
बुद्धि और विचार के स्पन्दन में हिन्दी हो
वन्दन में हिन्दी, अभिनन्दन में हिन्दी हो
पूजन, अर्चन, अभिवादन में हिन्दी हो।
जीवन आचरण के चरण चरण में हिन्दी हो

सभा सदन, न्यायालय, संभाषण में हिन्दी हो
माँ शक्ति दो, कि जन-मन में हिन्दी हो
माँ भक्ति दो कि भारत के जन मन में हिन्दी हो
भारती के भाल की सुदीप्त भाल हिन्दी हो।
अनुरक्ति दो कि हिन्दी हो, हिन्दी हो, हिन्दी हो।

डा० कपिलदेव द्विवेदी विदेश यात्रा पर

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर के निदेशक तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी की अमेरिका तथा कनाडा में विभिन्न विश्वविद्यालयों ने वेद तथा भारतीय संस्कृति से संबंधित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया है। आप अमेरिका में हो रहे वेद सम्मेलन में भी अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

डा० द्विवेदी भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ अमेरिका, कनाडा, सूरीनाम, गुयाना तथा त्रिनिदाद भी जाएँगे। इन देशों में विभिन्न विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं ने आपके प्रमुख शहरों में कार्यक्रम रखे हैं। आपका विदेश यात्रा का उद्देश्य विश्व में वेद का प्रचार करना है।

स्वतंत्रता सेनानी रास बिहारी बोस

पवन कुमार एम.ए.
गतांक से आगे..... लखनऊ

श्री रासबिहारी बोस बच गए। वे लाहौर स्टेशन से चन्दननगर रवाना हो गए। उन्होंने अपना भेष बदल रखा था। इसलिए पहचाने नहीं गए, जब उन्होंने देखा कि चन्द्रनगर में रहना खतरे से खाली नहीं है। तो उन्होंने पी०एन० टैगोर के नाम से जापान का टिकट बनवा लिया। टोकियो पहुँच गए तो ब्रिटिश खुफिया पुलिस ने जापान सरकार पर दबाव डाला कि उन्हें जापान से वापस भेज दिया जाए। भारत के वाइसराय ने भारत सरकार के सचिव को पत्र लिखा और ब्रिटिश राजदूत ने जापान सरकार पर जोर दिया पर उस समय एक प्रसिद्ध जापानी नागरिक एजेहोमू ने उन्हें अपने घर का संरक्षण दिया। जब तक जापान व ब्रिटेन के सम्बन्ध खराब नहीं हुए तब तक जापानी पुलिस से छिपे रहे। जुलाई 1918 में उन्होंने एजेहोमू की पुत्री से विवाह कर लिया और

2 जुलाई 1923 को जापान की नागरिकता स्वीकार कर ली। वहाँ पर श्री बोस की डा० सन्यातसेन से मित्रता हो गई और उन्होंने 20 हजार जापानी सिक्के आन्दोलन के लिए दिए थे।

श्री राम बिहारी बोस जापान में "न्यु एशिया" नामक एक समाचार पत्र निकालने लगे। अंग्रेज शासन की आलोचना करने से जापान के लोग भारत की स्वतन्त्रता में सहयोगी भी बन सके। जापानी पत्र-पत्रिकाओं में बोस के संबंध में अनेक लेख फोटो छपा करते थे। अगस्त 1926 में श्री रास बिहारी बोस ने नागासाकी में एशियाई देशों के लोगों का एक सम्मेलन बुलाया जिसमें ईरान, अफगानिस्तान, फिलीपीन्स, वियतनाम और जापान के लोग सम्मिलित हुए। सन् 1937 में उन्होंने इण्डियन इण्डिपेन्डेन्स लीग की स्थापना की और 28 अक्टूबर 1937 को एक एशियाई युवक सम्मेलन बुलाया जो टोकियो में हुआ। इसके पश्चात उन्होंने 11 दिसम्बर 1941 को इण्डियन नेशनल आर्मी की स्थापना की और 18 फरवरी 1942 को मोहन सिंह इस सेना के जनरल बनाए गये। उन्होंने जापान के प्रधानमंत्री श्री तोजो को इस बात के लिए राजी कर लिया कि यदि जापानी जीत जायेंगे तो भारत को स्वाधीन कर देंगे। दिनांक 28 से 30 मार्च 42 तक पूर्व एशिया के भारतीयों की एक सभा हुई। उन्होंने जून 1942 में पूरे एशिया के देशों की यात्रा की। तथा आजादहिन्द फौज के प्रमुख परामर्शदाता रहे। 21 अगस्त 1945 को वे बीमार पड़े और 25 अगस्त 1945 को श्री रास बिहारी बोस की मृत्यु हो गयी।

श्री रास बिहारी बोस ने सबसे पहले क्रान्ति का बिगुल बजाया। ऐसे महान क्रान्तिकारी वीर योद्धा को शत-शत नमन है। ●

श्री पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी की स्मृति में शोक सभा

हिन्दी जगत के मूर्धन्य नक्षत्र प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार श्री पं० श्री नारायण चतुर्वेदी के 97वें वर्ष में निधन हो जाने के कारण आर्य समाज गणेशगंज, लखनऊ में जनपद के समस्त साहित्यकारों, कवियों, लेखकों की एक विशाल शोकसभा हुई जिसमें श्री चतुर्वेदी जी द्वारा हिन्दी के लिये की गई सेवाओं को स्मरण किया गया और उन्हें भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा प्रस्ताव पारित करते हुए मृत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना की गई।

राज्यपाल के जन्मदिवस पर बधाई

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी के 63वें जन्मदिवस पर आर्य प्रतिनिधि सभा० उ०प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज तथा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने बधाई प्रेषित करते हुए उनके दीर्घ एवं यशस्वी जीवन की कामना की है।

आवश्यक सूचना

1- प्रदेश की समस्त आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/मंत्री तथा आर्यसमाजों स्त्री आर्यसमाजों के प्रधान/मंत्री गण से निवेदन है कि वह अपनी समाजों के वार्षिक चित्र शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय में भेजें।

2- जिला सभायें, आर्यवीर दल, आर्यकुमार सभा अपनी रिपोर्ट भी शीघ्र ही भेजें, सभा की रिपोर्ट छपने जा रही है।

मनमोहन तिवारी, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०।

स्वामी त्यागानन्द जन्म-शताब्दी समारोह अयोध्या

निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या अपने संस्थापक स्व० स्वामी त्यागानन्दजी का जन्म शताब्दी समारोह 27 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 1990 तक बड़े ही समारोह-पूर्वक मनाने जा रहा है। इसमें देश विदेश के प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान उपदेशक, प्रचारक एवं शास्त्रार्थ महारथी भाग लेंगे। सभी वैदिक प्रेमी जनता इस समारोह में सप्रेम आमन्त्रित है। आवास भोजन की निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। कृपया पूर्व सूचना दें जिससे स्वागत व्यवस्था में सुविधा हो सके।

- ज्ञानेन्द्र भटनागर
कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय,
अयोध्या।

आर्यसमाज सोजवाँ (वाराणसी):

संरक्षक- श्री विमलाचरण सिंह
प्रधान- श्री अवध बिहारी खन्ना
मंत्री- श्री ओम् प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री कन्हैयालाल गुप्त

पारिवारिक सत्संग सम्पन्न

दिनांक 10-8-90 को वेद प्रचार सप्ताह के अंतर्गत पारिवारिक सत्संग श्री हरिकृष्ण जी सरार्फ बेगमपुल रोड पर सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज के तथा डा0 निरूपण जी विद्यालंकार के प्रवचन श्री हरिकृष्ण जी सरार्फ के निवास स्थान पर श्री मनवीर जी तथा श्री हीरालाल जी के भक्ति संगीत के पश्चात् श्री डा0 निरूपण जी विद्यालंकार ने यज्ञ पद्धति की एक रूपता पर बल दिया। इस संबंध में उन्होंने कई शंकाएं उठाईं। सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने उनकी शंकाओं को उचित ठहराते हुए समय के अभाव में पुनः समाधान का आश्वासन देते हुये अपने प्रवचन में कहा कि यह मानव तन बहुत ही अनमोल है। बड़े भाग्य से यह नर तन मिलता है। जब शुभ कर्म अधिक होते हैं तब इस की उपलब्धि होती है। परन्तु इस नर तन में उपनिषदों की एक रोचक कथा सुनाते हुये प्राण को बहुत ही अमूल्य बताया। उन्होंने कहा कि जब मनुष्य साधारण श्वास लेता है तो वह प्राण के मूल्य को नहीं जानता। परन्तु जब कभी भोजन करते समय अन्न का ग्रास श्वास की नली में चला जाये तो प्राण की कीमत का पता चलता है। अंतिम समय में कई विशेषज्ञ डाक्टर एक प्राण को भी नहीं दिलवा सकते। थकने और असफल हो जाने पर वे कह उठते हैं I treat He cures मैं तो चिकित्सा करता हूँ और परमात्मा निरोग करता है। ऐसे अमूल्य प्राण हमारे पास हैं परन्तु हम अनजाने में इन प्राणों का दुरुपयोग करते रहते हैं। जब हम कठोर बोलते हैं, अपशब्द बोलते हैं, किसी का दिल दुखाते हैं, किसी गरीब को अकारण सताते हैं, किसी निर्बल को दबाते और कुचलते हैं उस समय हम प्राणों का दुरुपयोग कर रहे होते हैं। परन्तु जब हम किसी गरीब को सहारा देते हैं, किसी अन्धे को रास्ता दिखाते हैं, किसी निराश को आशा का दीपक दिखाते हैं, सर्वहित चाहते हुए सबसे प्रेम का व्यवहार करते हैं, जब हम इस वाणी से परमपिता परमात्मा का पवित्र नाम स्मरण करते हैं और जब हम किसी निराश्रित को आश्रय देते हैं, तब हमारे प्राण का सदुपयोग होता है। इसलिए अमूल्य प्राणों का मूल्य हमें समझना चाहिए जिनके बिना हमारा जीवन एक क्षण भी नहीं रह सकता।

प्राणों के बाद हमारे शरीर में दूसरे नम्बर पर बुद्धि का स्थान है। भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं- "बुद्धि नाशात् प्रणश्यति" बुद्धि के नष्ट हो जाने से व्यक्ति नष्ट हो जाता है। जिस बुद्धि के कारण हमारा जीवन, हमारी समृद्धि और ईश्वर की प्राप्ति हमें होती है यदि उसे ही नष्ट करने में हम लग जाएं तो हमारे जैसा दुर्भाग्यशाली कौन होगा। उन लोगों पर दया आती है जो केवल नर तन में प्राप्त बुद्धि रूपी रत्न को शराब के पानी में बहाते चले जाते हैं। मादक द्रव्यों का सेवन और तामस पदार्थों का सेवन, मांसाहार अण्डे आदि का प्रयोग निश्चित रूपेण बुद्धि को अपवित्र करता है। अपवित्र बुद्धि दुःखों का घर है। इसलिये मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले लोग यह नहीं जानते कि यदि एक बार बुद्धि प्रदूषित हो जाएगी तो भगवान बुद्धि छीन लेगा और पशुओं की योनि में जाना पड़ेगा जहाँ बुद्धि और ज्ञान का कोई काम नहीं। एक बार घोर अन्धकार में फँसने के पश्चात् कैसे उद्धार होगा। अतः हमें कठोरता से तामसिक पदार्थों के सेवन को छोड़ना होगा तभी हम पवित्र मन और बुद्धि वाले होकर परमात्मा की कृपा के पात्र बन सकेंगे।

प्रस्तोता- इन्द्रराज,
मंत्री, आर्य समाज, मेरठ शहर।

जनपदीय आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं व समस्त आर्य समाजों के प्रधान एवं मंत्रियों के नाम

यह अनुभव किया जा रहा है कि कुछ आर्य समाजें अपने यहाँ होने वाले कार्यक्रमों से प्रतिनिधि सभा को अवगत नहीं करती हैं। जिससे सम्पर्क व सहयोग में कमी आती है। आर्य समाज को और अधिक क्रियाशील तथा संगठन को सुदृढ़ करने के लिए आपके सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है।

अतः श्री पं0 इन्द्रराज सभा प्रधान जी ने मुझे निर्देश दिया है कि मैं आपसे निम्न लिखित निवेदन करूँ।

1- क्या आपने अपनी समाज का वार्षिक अंश प्रतिनिधि सभा को सीधे या जनपद आर्य उप प्रतिनिधि सभा के माध्यम से भेजा है या नहीं।

- क्या आपने अपनी समाज का वार्षिक विवरण तथा फार्म प्रतिनिधि सभा को भेजे हैं या नहीं। यदि नहीं भेजें हैं तो शीघ्र भेज दें। आपकी समाज व उससे संबंधित संस्थाओं की सम्पत्ति के बारे में क्या-क्या अभिलेख हैं उनका विवरण दे दीजिए तथा उसकी एक-एक प्रमाणित प्रतिलिपि भी भेज दें।

3- आपकी समाज का निर्वाचन हुआ है या नहीं। यदि हो गया है तो आप पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों की सूची जनपदीय आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान अथवा मंत्री जी से अग्रसारित करा कर भेज दें। यदि आपके जनपद में आर्य उप प्रतिनिधि सभा का गठन न हुआ हो तो सभा कार्यालय को सीधे भेज दें।

यदि निर्वाचन नही हुआ है तो क्या कारण है जिसकी वजह से निर्वाचन नहीं हुआ है।

4- आपकी समाज में संगठन या सम्पत्ति संबंधी कौन-कौन से विवाद न्यायालय में लम्बित हैं उनका विवरण भेज दीजिये।

5- आपकी समाज की सक्रियता में कमी का आप क्या कारण समझते हैं तथा आप प्रतिनिधि सभा से क्या अपेक्षा करते हैं।

विश्वास है आप यथासंभव शीघ्र वांछित सूचना सभा को देकर तथा अपना कर्त्तव्य पालन कर आर्य समाज के कार्य को और अधिक गतिशील बनाएगें।

हरिगोपाल सिंह चौहान,
उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा0उ0प्र0।

स्वास्थ्य-सुधा

(1)

समस्या- "भोजन जल्दी नहीं पचना, दस्त साफ नहीं होता। डाक्टर का कहना है कि पित्त-थैली में सूजन है। लीवर बढ़ गया है। कभी-कभी छाती-गले में जलन होती है। सारे शरीर में जहाँ-तहाँ दर्द उठता है। निराश हो गया हूँ।"

- राजकिशोर शर्मा, ग्राम/डाकघर- उदयपुर (पलामू) बिहार

समाधान- त्रिफला-गुग्गुल (वैद्यनाथ) दो गोली प्रातः- मध्याह्न- सायं लेकर लिवोमिन (चरक) दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। लालमिर्च- गरम मसाले रहित भोजन लेवें। तले पदार्थ न खायें। सप्ताह में एक समय भरपेट पपीता खायें। दो मास के बाद पुनः परामर्श लेवें।

--

(2)

समस्या- "मेरी पत्नी का मासिक धर्म सही समय पर नहीं आता है। कमर एवं पेडू में दर्द एवं सूजन रहती है। सफेदपानी जैसा स्राव रहता है। शादी को आठ वर्ष हो गये अभी तक कोई सन्तान नहीं है।"

- शिवकुमार अवस्थी, वाडा, ग्रीडगंज- देवारोड (बाराबंकी)

समाधान- आपकी पत्नी का उपचार तीन कोर्सों में होगा। प्रथमकोर्स (पचास दिन तक)- बंगशील (अलारसिन) दो गोली प्रातः मध्याह्न- सायं लेकर पत्रंगासव और अशोकारिष्ट दो-दो ढक्कन समानजल के साथ पियें। यह कोर्स मासिक धर्म के दिनों में भी जारी रहेगा। शेष दो कोर्स यथा समय बताऊँगा।

:: समस्यापत्र के साथ तीन बन्द डाक- लिफाफे भेजना चाहिये।

-गुरुकुलानन्द सरस्वती

गोरक्षा सत्याग्रह हेतु अपील

उत्तर प्रदेश के समस्त गो भक्तों से निवेदन है कि गोवध बन्द कराने के लिए सितम्बर मास में सत्याग्रह का आयोजन किया जा रहा है जो सज्जन इस सत्याग्रह में भाग लेना चाहें वह अपना नाम व पता सह संचालक गोरक्षा सत्याग्रह अभियान, उ0प्र0 पो0- नोनापुर कानपुर (देहात) को भेज दें।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज बीसलपुर (पीलीभीत) का वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 7-8-90 से 14-8-90 तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। वेद प्रचार हेतु श्री महावीर मुमुक्षु मुरादाबाद एवं सभा के भजनोपदेश श्री वृजपाल शर्मा, बिजनौर से पधारे। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ एव भजनोपदेश तथा सायंकाल रात्रि 8 वजे से 10 बजे तक भजन एवं वेदकथा सम्पन्न हुयी। आर्य जनता के अतिरिक्त नगर के बहुत से गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए।

वेद ईश्वर की वाणी है :

देवदत्त बाली



देवदत्त बाली प्रवचन करते हुए उनके साथ स्वामी निरंजन देव तीर्थ, प्रो. वी.पी. गौतम

सहारनपुर, अगस्त। वेद किसी धर्म जाति अथवा सम्प्रदाय विशेष का ग्रंथ नहीं है। यह तो ईश्वर की वाणी है। जिसकी उपयोगिता मानवमात्र के लिए है।

ये विचार आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान देवदत्तबाली ने स्थानीय आर्यसमाज खालापार में वेद प्रचार सप्ताह का उद्घाटन करते हुए प्रगट किये। उन्होंने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। उसका पढ़ना और पढ़ाना हर एक का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन को सफल बनाने के लिए वेद ने बहुत से मान दण्ड निर्धारित किये हैं। वेद कहता है कि एक अच्छे गृहस्थी को मधुर भाषी होना चाहिए। उसे कल्याणकारी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। वेद आज्ञा देता है कि मनुष्य को ऐसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए जो सत्य की छलनी में छनी हुई हो। ऐसी कोई बात जो तर्क की कसौटी पर खरी न उतरे किसी हालत में भी स्वीकार नहीं की जानी चाहिए।

श्री बाली ने कहा कि आज के इस भौतिकवादी युग में हमारी प्राचीन मान्यतायें जो समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं एक - एक करके टूटती जा रही हैं। उन्होंने लोगों को सलाह दी कि अगर वे चाहते हैं कि उनकी सन्तान नेक बने और सुसंस्कृत हो तो उन्हें अपने घर में बेईमानी से कमाया हुआ धन नहीं लाना चाहिए।

इस अवसर पर भाषण देते हुए संयोजिष्ठ सन्यासी स्वामी निरंजनदेव-तीर्थ ने कहा कि आज समाज में मानव चोले में दानव और जानवर घूम रहे हैं। उन्होंने मानव की परिभाषा देते हुए बताया कि मानव वह है जो मननशील हो और जिसके हृदय में दीनहीन और असहाय लोगों के लिए पीड़ा हो। उन्होंने कहा कि अगर परमात्मा के दर्शन करने हैं तो हृदय में प्रेम की ज्योति प्रज्वलित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि क्रोधी, अभिमानी और स्वार्थी व्यक्ति से ईश्वर कोसों दूर रहता है। स्वामीजी ने कहा कि गृहस्थ जीवन भोगते हुए भी मनुष्य ईश्वर को पा सकता है। सभा की अध्यक्षता प्रो0 वी0वी0 गौतम ने की तथा संचालन आर्यसमाज खालापार के मन्त्री विद्यासागर ने किया।

इस अवसर पर आर्यसमाज खालापार की ओर से वैदिक विद्वान-देवदत्त बाली, स्वामी निरंजन देव-तीर्थ पंडित ओमप्रकाश शर्मा का भव्य स्वागत किया गया। ◘

रक्षाबन्धन पर्व सम्पन्न

- आर्यसमाज हेमपुर वि0 खण्ड इसलाम नगर (बदायूँ) में रक्षाबन्धन पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया जिसमें हरिजन लड़कियों ने सवर्णों के राखी-बाँधी सभी ने उनका सम्मान किया।

--

आर्यसमाज मन्दिर परशुरामपुरी जलालाबाद जनपद शाहजहाँपुर में 31 जुलाई से 6 अगस्त 90 तक वेदप्रचार सप्ताह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें कई विद्वानों के व्याख्यान, भजन हुए। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

--

- आर्यसमाज क्यूटरारोड (बलिया) के श्री विजयसिंह आर्य के यहाँ रक्षाबन्धन के अवसर पर बृहद् यज्ञ श्री प्रमोदकुमार-शर्मा के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसरपर काफी जनसमूह एकत्रित था। तथा लोगों में यज्ञ के प्रति श्रद्धा देखी गई। ◘

ग्रामीणाञ्चल में वेद प्रचार

रामपुर जनपद की ग्रामीणाञ्चल की समाजों में 5 जून से 24 जून 90 तक मिशनरी प्रचार योजना के अन्तर्गत वेद प्रचार किया गया प्रचार में श्री विश्वम्भर दत्त जो शास्त्री उपदेशक तथा श्री विक्रमदेवजी आर्य व श्री कश्मीरीलाल आर्य ने प्रचार में भाग लिया। जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

माहेला आर्यसमाज सभा भवन ने वेद प्रचार सप्ताह गायत्री यज्ञ दि0-6 से 13 अगस्त तक बड़े सोल्लास पूर्वक श्रीमती प्रेमलता बख्शी जी की अध्यक्षता में मनाया गया।

जिसमें श्री मेधावी शास्त्री जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा श्री पं0 इन्द्रदेव पाठक सम्पादक आर्यमित्र, श्री पं0 रामचरित-पाण्डेय, एवं श्री पं0 रूपचन्द्र "दीपक" के सारगर्भित व्याख्यान हुए। श्रोताओं में वैदिक धर्म के प्रति विशेष रुचि देखी गई। ◘

वैदिक उषा का स्वरूप

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल मेरठ में दिनांक 9 सितम्बर को प्रातः 11 बजे "वैदिक उषा का स्वरूप" विषय पर एक शोध गोष्ठी समर्पणानन्द शोध संस्थान की ओर से आयोजित है। सभी आमन्त्रित हैं।

डा0निरूपण विद्यालंकार,
संयोजक।

यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

दिनांक 22-7-90 को आर्यसमाज मन्दिर छर्रा में वैद्य चिरंजीलाल आर्य की प्रेरणा से श्री भगवतीप्रसाद सिविल जज नैनीताल (तन्तुवाय वैश्य) के अनुज जगदीश प्रसाद पुत्र श्री कन्धीलाल भू0पू0 प्रधान ग्राम सभा मौरेनी जिला बुलन्दशहर ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर वैदिक धर्म में दीक्षा ली। साप्ताहिक अधिवेशन में उपस्थित लगभग 80 आर्य बन्धुओं ने इस कार्य के लिए वैद्यजी की प्रशंसा की और जगदीशप्रसाद को आशीर्वाद दिया।

--

आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण तथा आर्यमित्र के ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि लखनऊ में प्रकाशित होने वाले आर्यमित्र साप्ताहिक का पंजीकरण सं0-एल0डब्ल्यू0एन0 पी079 है। इसका वितरण पोस्ट आफिस में पंजीकृत उक्त नियमानुसार केवल 00·15 पैसे के टिकट द्वारा होता है। अतः इस पर अतिरिक्त टिकट या शुल्क दिया जाना अवैध है।

- प्रबंध सम्पादक

आर्य वीरदल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुलबर्गा (कर्नाटक) के बाहर जंगल में 14 से 15 जुलाई 90 तक दो दिन का एक शिविर लगाया गया। इस शिविर में नगर के 10 युवकों ने भाग लिया। इसमें सभी प्रशिक्षणार्थियों ने शराब, माँस, सिगरेट आदि मादक पदार्थों के छोड़ने की प्रतिज्ञा की। व्यायाम शिक्षक श्री गोविन्द आर्य ने योगासन प्राणायाम, दण्ड बैठक लाठी, जूडो कराटे व आत्म रक्षा संबंधी प्रशिक्षण दिया।

संयोजक मण्डल

भाषा नीति पर हाय-तोबा क्यों?

— राजीव दीक्षित

आजाद तो हम हो चुके, लेकिन आजादी के 42 सालों के बाद जब प्रदेश के मौजूदा शासन ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद घोषित की गयी राजभाषा यानि हिन्दी को वास्तविक अर्थों में लागू करने की कोशिश की, तो इस नीति की व्यवहारिकता को लेकर शंकाओं का एक ऐसा जाल खड़ा करने की कोशिश की गयी जिसके पीछे असली मुद्दों से ध्यान हटाने की साजिश थी। 42 साल पहले ही जब एक नीति बना दी गयी थी, तो उसे अब लागू करते वक्त इस कदर हाय-तोबा मचाने का तुक क्या है? यह हिम्मत कोई नहीं कर पा रहा है कि संविधान में संशोधन कर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के दर्जे से नीचे उतार कर खड़ाकर देने की सिफारिश कर दे। उत्तर प्रदेश सरकार के मुखिया की इस बात से सचमुच दम है कि आखिर हिन्दी को क्या लंदन में इस्तेमाल किया जायेगा। ऊपर से देखने पर देहाती- से लगने वाले इस सीधे-सादे तर्क का न उन अंग्रेजी अखबारों के पास जवाब है और न उन अंग्रेजी पत्रकारों के पास, जिन्हें अपने खोखले साम्राज्यों और उपनिवेशों की नींव हिलती दिखायी दे रही है।

बहुत दिनों से अगर कोई मसला टलता चला आ रहा हो (या टाला जा रहा हो?) तो उस पर कोई फैसला एक झटके से और पूरे संकल्प और दृढ़ता के साथ ले लेना होता है। हिन्दी लागू किये जाने का मसला भी ऐसा ही एक मसला है। तुर्की की राष्ट्रीय क्रांति के महानायक कमाल पाशा को भी अंग्रेजी हटाकर तुर्की भाषा लागू करने के मुद्दे पर विशेषज्ञों ने 10 वर्ष लम्बी एक प्रक्रिया का झांसा देने की कोशिश की थी। उसने थोड़ी देर के सोच-विचार के बाद कहा था कि 10 साल इसी समय पूरे समझे जायें। अंग्रेजों के साथ अंग्रेजी का भी तुर्की से विदाई लेनी पड़ी। दरअसल प्रक्रिया उस समय बहानेबाजी का ही दूसरा रूप बन जाती है, जब उसके पीछे निहित स्वार्थ और मक्कारी छुपे हों। अंग्रेजी के बिना प्रगति की कल्पना न कर सकने वाला जो एक खास वर्ग हिन्दुस्तान में है, वह उन समृद्ध देशों की तरफ देखने से परहेज कर रहा है, जिन्होंने अंग्रेजी के बिना अपनी राष्ट्रभाषा के बल पर आज अंग्रेजों से कहीं बड़ी हैसियत बना रखी है। जर्मनी, जापान रूस, चीन कोरिया आदि में अंग्रेजी राज-काज और सार्वजनिक जीवन में प्रयोग की भाषा नहीं है और ये सभी ब्रिटेन से कहीं अधिक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र हैं।

जिस प्रदेश में 98 प्रतिशत आदमी न अंग्रेजी जानते हों और न समझते हों, उसमें सरकारी काम-काज की भाषा अंग्रेजी क्यों चाहिए? और जो दो प्रतिशत अंग्रेजी जानने वाले हैं उनके भाषा ज्ञान के नमूने रोज अखबारों में दिखाई देते हैं। अपने प्रदेश में अपनी ही भाषा को मान्यता देना उसे थोपना कैसे हो गया यह भी समझ से एकदम परे है। अगर मुलायम सिंह यादव अंग्रेजी का विरोध करने वालों को मूर्ख या धूर्त में से एक समझते और घोषित करते हैं, तो इसमें झूठ क्या है? इससे ज्यादा क्रूर और अमानवीय बात दूसरी क्या हो सकती है कि जिसे फांसी पर लटकाया जा रहा है, उसे यह नहीं पता कि उसका अपराध क्या है और उसको सजा में क्या कहा गया है एक ऐसी भाषा में उसके बारे में बिचौलिये लोग फैसला कर देते हैं जो इस प्रदेश के 98 प्रतिशत लोगों की तो समझ में ही नहीं आ सकती। पाखण्ड का इससे बेहतर उदाहरण देने वाले का नाम जरूर गिनीज बुक में दर्ज होना चाहिए। अंग्रेजी ने इस मुल्क के जजों और वकीलों की हैसियत बिचौलियों और मक्कारों की बना दी है। लेकिन हिन्दी का विरोध करने वालों को बिल्कुल शर्म नहीं आती। क्योंकि यहां सवाल जरा धंधे का आ जाता है और धंधे में शर्म कैसी? बनिया तो बनिया ठहरा।

कितनी ही प्रतिभाएं सिर्फ इसलिए उभर आने से वंचित रह जाती हैं कि अंग्रेजी के खौफनाक जाल के पार उनकी पहुंच नहीं हो पाती। फिर, अंग्रेजी में ऐसी कौन सी खास बात है कि उसके बिना काम चलेगा ही नहीं? अंग्रेजों के इस दुनिया को उपनिवेश में बदल डालने के कुचक्र से पहले भी दुनिया मौजूद थी और शायद बेहतर हालत में थी। शोषण के सबसे असरदार हथियार के तौर पर अंग्रेजों ने इसे इस्तेमाल किया और बुद्धिजीवियों का जामा पहने कुछ संवेदनहीन बदमाशों ने इसका सहारा लेकर अपनी कुटिल चालें खेलनी शुरू कर रखी हैं।

दक्षिण और उत्तर को लेकर जो शोरगुल मचाया जा रहा है, वह तो और भी ज्यादा हास्यास्पद है। दक्षिणी भारत में अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम और लगाव उत्तरी भारत के लोगों से कहीं ज्यादा है। यही कारण है कि सभी दक्षिणी भाषाओं का साहित्य उत्तर भारत की भाषाओं के साहित्य के बजाय कहीं अधिक समृद्ध है। उन्हें अंग्रेजी से अतिरिक्त लगाव क्यों होने लगा? एक साजिश के तहत उन्हें धमकाया- डराया जाता रहा कि हिन्दी देर-सवेर उन पर भी थोप दी जायेगी। डरकर वे अंग्रेजी रूपी शिखंडी के पीछे जा छुपे हैं। जब गोर्बाच्येव के भारत आने पर द्विभाषिये और अनुवादक की मदद से काम चलाया जा सकता है, तो करूणानिधि के आने पर ऐसा करने में क्या परेशानी हो सकती है? जब भारत सरकार के पास जापान और चीन से आये पत्रों का उत्तर अनुवाद करवाकर ही दिया जाता है, तो मद्रास से आये पत्रों का तमिल अनुवाद करवाने में क्या पहाड़ टूट पड़ेगा? उत्तर प्रदेश सरकार के यह स्पष्ट कर देने के बाद भी, कि हिन्दी थोपने की कोशिश अंग्रेजी थोपने की कोशिश से किसी मायने में कम पाशविक नहीं है, आखिर बात कुछ लोगों की समझ में क्यों नहीं आ रही है? इसे साजिश और धूर्तता नहीं, तो और क्या कहा जायेगा? जिस भाषा में मतदाता से वोट मांगा गया है, उसके इस्तेमाल में शर्म की क्या बात आ गयी? अंग्रेजी से मुहब्बत के इस जज्बे के पीछे प्रदेश और देश के अधिसंख्य लोगों को एक खास तरह से गुलाम बनाये रखकर उनके शोषण का षडयन्त्र नहीं तो आखिर और क्या है?

सम्पर्क भाषा की जरूरत के मुद्दे पर काफी गम्भीर से लगने वाले सवाल उठाये जा रहे हैं, जो एकदम बोगस और बेदम हैं। सदियों से कुम्भ के अवसर पर पूरे भारतवर्ष के लोग इकट्ठे होते रहे हैं, तो क्या उनकी सम्पर्क भाषा अंग्रेजी हुआ करती थी? बद्रीनाथ, केदारनाथ और गंगोत्री की यात्रा पर हिन्दू का उसी तरह सपना है, जिस तरह मुसलमान के लिए काबा जाना। इतनी सदियों से आखिर इस मुल्क के लोग क्या उत्तर से दक्षिण या दक्षिण से उत्तर गये ही नहीं और अगर दक्षिण के लोग बद्री-केदार जाते रहे, तो शायद पहले अंग्रेजी सीख लेते होंगे। वर्ना तो उन्हें नीले आसमान से ही अपनी बात कहनी पड़ती होगी। हो सकता है कि भारतीयों में ईश्वर को आसमान के पीछे बैठा हुआ मानने की जो अवधारणा रही है, उसके पीछे सम्पर्क भाषा का अभाव ही मुख्य कारण रहा हो।

पजीकरण स एल० डब्ल्यू एन०पी० ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
आश्विन कृष्ण ५ सवत २०४७ वि
दिन क ६ सितम्बर १९९०
दूरभाष २४५६६३

सेवा मे

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष-जी,
गुरुकुल कॉंगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित ।

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं २२४१/५७) आश्विन कृष्ण-१२ रविवार संवत २०४७ वि. दिनांक १६ सितम्बर १९९० (घोषणापत्र सं.10/27-2-75)



श्राद्ध और तर्पण जीवितों के लिए है मृतकों के लिए नहीं — महर्षि दयानन्द

वैदिक संस्कृति के महान उद्वारक वेदों के परमनिष्णात महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि पितृयज्ञ के दो भेद हैं- श्राद्ध तथा तर्पण। जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उसका नाम श्राद्ध है।

{श्रत् सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा श्रद्धया यत्क्रियते तत् श्राद्धम्}

और जिस कर्म से विधमान माता-पिता पितर पूर्वज पूज्य आचार्य, साधु, सन्यासी तृप्त हों, प्रसन्न किए जाय उसका नाम तर्पण है।

{तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्} परन्तु यह जीवितों के लिए है मृतकों के लिए नहीं ।

वेद का प्रमाणः-

उपहूतानः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।

त आगमन्तु स इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु ते वन्त्वस्मान्।।

अथर्व0 18/3/45

हे पितरो? {पूज्य पुरुषो} इस यज्ञ में आप आवें और हमारे वचन सुनें और सुनकर अच्छी प्रकार समझावें। पितरों की ओर से जो कुछ पुत्रों के लिए कहने योग्य हो वह कहें और हमारी रक्षा करें।

आजकल हिन्दूसमाज में मृतकश्राद्ध चल रहा है। बहुत से लोग इन दिनों न बाल बनवाते हैं न कपड़े धोते हैं। वे मृत पितरों को पिण्डदान देने के लिए गया आदि स्थानों पर जात हैं, उनके नाम पर ब्रहमभोज दान आदि करते हैं और यह समझते है कि ऐसा करके हमने अपने मृत पितरों की आत्माओं को शान्ति दिला दी हैं, उन्हें वैतरिणी पार कराके स्वर्गलोक का अधिकारी बना दिया है। यह विज्ञान का युग हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने जा रहे हैं परन्तु पुरानी सड़ी-गली मान्यताओं दकियानुसी कुप्रथाओं ने हिन्दूसमाज को आज भी बुरी तरह जकड़ रखा है। मृतक श्राद्ध और तर्पण की वर्तमान प्रथा पूर्णतया अवैदिक है और निश्चितरूप से पौराणिक युग की देन है। वैसे तो इस चरम महँगाई में श्राद्ध के नाम पर बड़े-बड़े ब्रहमभोज अब समाप्त-प्राय ही हैं फिर भी अन्धविश्वास के रूप में यह प्रथा कहीं-कहीं जड़ जमाए हुए है। वेद केवल अपने जीवित पितरों के प्रति कर्तव्य पालन करने की शिक्षा देता है। इसलिए आर्यसमाज मृतकश्राद्ध एव तर्पण का अवैदिक और अज्ञानतापूर्ण बताकर खण्डन करता आ रहा है। हमारा विश्वास हैं कि जो मर चुका वह कहाँ किस योनि में किस शरीर में स्थित है- यह मानवज्ञान की पहुँच से सर्वथा बाहि है। अत उसे कोई वस्तु पहुँचना या पहुँचाना बुद्धि शून्य हैं। इसी प्रकार वेदादि सत्यशास्त्रों का पठन-पाठन, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, सत्यभाषण, जीवित माता-पिता और अतिथि की सेवा करना तर्पण कहलाता हैं। भारत के महान कूटनीतिज्ञ चाणक्य ने कहा है -

जनिता चोपनेता च यस्तु विद्यां प्रयच्छति ।
अन्न दाता भयत्राता पंचैते पितरः स्मृताः ।।

अर्थात्- जन्म देने वाले **माता-पिता** विधा प्रदान करने वाले **आचार्य** राष्ट्र को सन्मार्ग पर ले चलने वाले **अग्रणी** नेता अन्नादि से तुष्ट करने वाले कृषक और भय से मुक्त कर **रक्षा करने वाले रक्षक**, यह पाँचों पितर हैं. पूज्य हैं, सम्माननीय हैं।

जीवित पितरों की सेवा

ये च जीवा ये च मृता
ये जाता ये च यज्ञियाः ।
तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु मधुधारा
व्युन्दती --

अथर्व 0

हम जीवित आप्त पुरुषों अथवा गुणहीन होने के कारण मृतवत् पुरुषों की भी, तथा उत्पन्न हुए बालकों की घृत अथवा अन्य पुष्टिकारक पदार्थों की उपलब्धि कराकर उनके हृदय रूपी आनन्द की धारा को सदैव आप्लावित करते रहें।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१ रू. मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष
अंक - ३६

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ आश्विन कृष्ण-१२ संवत २०४७ वि

दिनांक १६ सितम्बर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

हिन्दी दिवस पर संकल्प

प्रत्येक देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है जिस पर राष्ट्रवासियों को गर्व होता है। उस भाषा में साहित्य विज्ञान और टेक्नालॉजी की रचनाएं करके राष्ट्र आगे बढ़ता है। अंग्रेजी का इतिहास कुछ ऐसा ही है। ईसा से पूर्व अंग्रेजी भाषा का कोई विशेष अस्तित्व नहीं था। रोमन लिपि में लिखी जाने वाली लैटिन हिब्रू आदि भाषाएं पश्चिमी योरोप में तथा ब्राह्मी लिपि में लिखी जाने वाली पाली संस्कृत प्राकृत भाषाएं मध्य एशिया के देशों में बोली और पढ़ी जाती थीं। भाषाओं का विकास हुआ और संसार के लगभग आधे भाग पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उदय के साथ ही अंग्रेजी भाषा का प्रचार एवं विस्तार हो गया। अपनी अद्भुत वैज्ञानिक साहित्यिक रचनाकौशल्य के कारण अंग्रेजी आज अन्तर्राष्ट्रीय पद पर विराजमान है। यद्यपि व्याकरण, उच्चारण और लिपि आदि की उत्तमता में वह देवनागरीलिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी से कहीं पीछे है।

हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा एवं बहुसंख्यक लोगों की मातृभाषा है। दक्षिण भारत से लेकर उत्तरांचल के छोर एवं पूर्वी तथा पश्चिमी प्रान्तों में जितनी भी भाषाएं बंगला, तेलगू, तमिल, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, असमिया, डोंगरी आदि बोली जाती हैं उन सबका और हिन्दी का मूल एकमात्र देववाणी संस्कृत होने के कारण इन समस्त भाषाओं में अद्भुत साम्य है। असंख्यात तद्भव तत्सम शब्द एक दूसरे में माला की तरह पिरोये हुए हैं। भारतीय संविधान में यह व्यवस्था है कि संघ की सरकारी भाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी होगी। किन्तु क्रियात्मक रूप से हिन्दी आज भी पूर्णरूप से केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों की राजकाज की भाषा नहीं बन सकी है। सभी भारतीय मनीषी, राजनीतिज्ञ, सत्तासीन नेता यह तो मानते हैं कि सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो समस्त भारत को एक सूत्र में बान्ध सकती है किन्तु अंग्रेजी का मोह उन्हें हिन्दी की प्रगति में यथावांछित सहयोग देने में रुकावट डाल रहा है।

उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमन्त्री साधुवाद के पात्र हैं कि उन्होंने बलपूर्वक प्रदेश के समस्त राजकाज में हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य कर दिया है। यदि इसी का अनुकरण अन्य प्रदेशों की सरकारें तथा केन्द्रीय सरकार भी करे तो कोई कारण नहीं कि हमारी प्रिय हिन्दी भाषा इस देश में ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने में समर्थ न हो सके।

अक्टूबर 28, 1983 को दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने राष्ट्र को आश्वासन दिया था कि हिन्दी को राष्ट्र में तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानजनक स्थान दिलाने में वह अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी किन्तु वास्तविकता यह है कि उनके कार्यकाल में सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का वर्चस्व यथावत बना रहा। यह वर्चस्व कुछेक अपवादों को छोड़कर आज भी वैसा ही बना हुआ है।

अब हिन्दी को उसके गौरवास्पद पद पर आसीन कराने हेतु समस्त हिन्दी प्रेमी जनता को जन आन्दोलन के रूप में सड़कों पर आना पड़ेगा। साहित्यकों, राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों, विधिकों को हिन्दी में सृजन के नये-नये आयाम खोजने होंगे और उसके कलेवर को साहित्य एवं टेक्नालॉजी की उत्कृष्ट रचनाओं से लबालब भरना होगा और ऐसा साहित्य प्रस्तुत करना होगा जो अन्य भाषाओं के समसामयिक ज्ञान की कसौटी पर खरा उतरे। वास्तव में यही हिन्दी की सबसे बड़ी सेवा है। संस्कृत पुत्री होने के कारण हिन्दी में शब्दनिर्माण की अपार क्षमता है। ऐसी अपार क्षमता जो विश्व के किसी भी ज्ञान को अक्षरों का परिधान पहिनाकर साकार, सत्य, शिव और सुन्दर रूप में प्रस्तुत कर सकती है।

गुरुकुल के सहायतार्थ अपील

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन आर्य प्रतिनिधि सभा की एक मात्र शिक्षा संस्था है। आजकल गुरुकुल अत्यधिक आर्थिक संकट में है। गुरुकुल की सम्पत्ति करोड़ों रुपये की है। परन्तु समय पर मरम्मत न हो पाने के कारण अति जीर्ण स्थिति में है। भवन मरम्मत के लिए ही कम से कम एक लाख रुपये की तुरन्त आवश्यकता है। यदि शीघ्र ही मरम्मत नहीं करायी गयी तो सब भवन धराशायी हो जायेंगे।

उड़ीसा में स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा शुद्ध किये गये बीस बालक गुरुकुल में विद्याध्ययन हेतु आ रहे हैं। जिन पर प्रतिमास लगभग 25000/- व्यय होगा। अतः प्रदेश की सभी आर्य समाजों एवं आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि वे गुरुकुल के नाम शीघ्र ही अधिक से अधिक धनराशि मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट या चेक द्वारा "गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन" के नाम भेजने की कृपा करें।

प्रदेश की सभी आर्य समाजें कम से कम एक हजार रुपये के चेक अवश्य भेजने की व्यवस्था कर गुरुकुल के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें।

रोशन लाल गुप्त
मुख्याधिष्ठाता

विनम्र निवेदन

आपका प्रिय 'आर्यमित्र' आगामी दीपावली पर आपके विचारों की दीपशिखाएँ लेकर उस देव दयानन्द के दिव्य विचारों की आरती उतारने के लिए विशेषांक के रूप में पुनः प्रस्तुत हो रहा है। इसमें आपके देशकाल सम्बन्धी समसामयिक सामाजिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति उसके दिव्य चरणों में श्रद्धांजलि का प्रतीक बनेगी।

अतः समस्त लेखकों, विद्वानों, मनीषियों, कवियों आदि से विनम्र अनुरोध है कि अपने विचारों को लिपिबद्ध करके मुझे विलम्बतम 30 सित० 1990 तक अवश्य भेज देने की कृपा करें। आर्यमित्र उन्हें इस विशेषांक में प्रकाशित कर अपने को विशेष रूप से गौरवान्वित समझेगा।

विदुषामनुचर —
[illegible] पाठक
प्रधान सम्पादक

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह दिनांक- 6,7 अक्टूबर को केन्द्रीय आर्यसमाज चण्डीगढ़ के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा गायक पधारेंगे तथा पं० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करने वाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार गोष्ठियों, कवि सम्मेलन तथा भाषण प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेंगी।

गोरक्षा सत्याग्रह हेतु अपील

उत्तर प्रदेश के समस्त गो भक्तों से निवेदन है कि गोवध बन्द कराने के लिए सितम्बर मास में सत्याग्रह का आयोजन किया जा रहा है जो सज्जन इस सत्याग्रह में भाग लेना चाहें वह अपना नाम व पता सह संचालक गोरक्षा सत्याग्रह अभियान, उ०प्र० पो०- नौनापुर कानपुर (देहात) को भेज दें।

देश स्वतन्त्र है पर उसकी भाषा पर आज भी प्रतिबंध है।

डा० प्रशान्त वेदालंकार
कमलनगर दिल्ली

जब भारत स्वतंत्र हुआ था तो बी0बी0सी0 लंदन ने महात्मा गाँधी से विश्व के नाम एक संदेश देने के लिए कहा था। तब महात्मा गाँधी का उत्तर था कि विश्व से कह दो कि गाँधी अब अंग्रेजी नहीं जानता। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महात्मा गाँधी का यह वाक्य इस बात का संकल्प था कि देश की भाषा अब केवल हिन्दी होगी। अंग्रेजी का स्थान केवल एक विदेशी भाषा के रूप में रहेगा। किन्तु बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 43 वर्षों के बाद भी इस देश में अंग्रेजी का वर्चस्व है। चवालीसवें स्वाधीनता दिवस पर देश के प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने देश की भाषा समस्या के संबंध में एक शब्द भी नहीं कहा। जबकि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के वे प्रेमी माने जाते हैं। यदि बी0पी0सिंह ने हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का संकल्प किया होता तो वे लालकिले की प्राचीर से इसकी अवश्य घोषणा करते। उन्होंने विदेशों में जाकर हिन्दी का प्रयोग करने की बात अवश्य कही है। पर अभी उनके कथन की परीक्षा शेष है।

सबसे बड़ी शिकायत देश के राष्ट्रपति से है। उन्होंने सदा की भाँति इस वर्ष भी स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर अपना संदेश अंग्रेजी भाषा में दिया। उन्होंने अपने संदेश में स्वतन्त्रता सेनानियों को आदर से स्मरण किया पर अंग्रेजी बोलकर वे उनका उपहास कर रहे थे। मानो कह रहे हों- उन्होंने देश को स्वतत्र कराने के लिये बलिदान किये पर हम इन 43 वर्षों में भी अपनी भाषाओं को स्वतंत्र नहीं करा सके। राष्ट्रपति यह भी नहीं जान सके कि देश में अच्छी तरह अंग्रेजी समझने वाले 2 प्रतिशत लोग हैं जबकि हिन्दी 65 प्रतिशत लोगों की भाषा है। तमिल भाषी भी अंग्रेजी जानने वालों से अधिक है।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने संविधान के सत्रहवें भाग के 343 अनुच्छेद में देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया था। यह भ्रान्त धारणा है कि राष्ट्रभाषा की स्वीकृति केवल एकमत की अधिकता से हुई थी। वस्तुत एकमत की अधिकता नागरी अंकों को स्वीकार करने के संबंध में 26 अगस्त 1949 को कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में हुई थी न कि राष्ट्रभाषा के संबंध मे। राष्ट्र भाषा के संबंध में संविधान सभा एकमत थी। हाँ, उसके स्वरूप के संबंध में अवश्य मतभेद थे।

संभवत: उस समय दृष्टिकोण यह था कि 1949 में प्रथम अथवा दूसरी श्रेणी में पढ़ने वाला छात्र 1965 तक एम0ए0 कर चुकेगा और उसे इस प्रकार से शिक्षित किया जाएगा कि वह भारतीय भाषाओं में अपना सम्पूर्ण व्यवहार पूर्ण कर ले। पर धारा 343(2) तथा 344 में ऐसी व्यवस्थाएं कर दी गयी कि 1965 के बाद भी अंग्रेजी बनी रहे। और यही हुआ। आज 1990 में भी अंग्रेजी यथावत विद्यमान है जो हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को अपना स्थान नहीं लेने दे रही।

यह निश्चित है कि स्वतंत्र भारत में शासन के साथ सामान्य जनता का सम्पर्क इसलिए नहीं जुड़ पा रहा है कि देश की भाषा हिन्दी का त्याग करके राजकाज में विदेशी अंग्रेजी का अधिक प्रयोग हो रहा है। जब इस देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या दो प्रतिशत से अधिक नहीं है, तब भी अंग्रेजी का वर्चस्व बने रहने के कारण भारत सरकार का प्रजातंत्र, समाजवादी समाज व्यवस्था तथा कल्याणकारी शासन होने का दावा निरा खोखला सिद्ध हो जाता है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव तथा मध्य प्रदेश व हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्रियों ने सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का बहिष्कार करने का निर्णय लेकर क्रान्तिकारी कार्य आरम्भ किया है। पर उनके मार्ग में भी रोड़े अटकाए जा रहे हैं।

अनुच्छेद 351 के अनुसार संविधान में स्वीकृत संघीय राजभाषा हिन्दी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश जैसे हिन्दी प्रदेशों में बोली जाने वाली क्षेत्रीय हिन्दी नहीं है, वरन वह संविधान की अष्टम सूची में परिगणित सभी भारतीय भाषाओं की समन्वयात्मक हिन्दी है, जो भारत की भावात्मक एकता का माध्यम बन सकती है। अर्थात संविधानानुमोदित हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप है, न कि क्षेत्रीय। देश की सभी भाषाओं को निकट लाने के लिए संविधान (धारा) 351 के अनुसार हिन्दी का स्वरूप संस्कृत शब्दावली पर आधारित होना चाहिए। इसी कारण त्रिभाषा सूत्र में भी संस्कृत की गणना अनिवार्य है।

भारत की भाषा समस्या के समाधान के लिए त्रिभाषा सूत्र बनाया गया पर कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु आदि में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए त्रिभाषा सूत्र को पूर्ण रूप से कार्यान्वित नहीं किया गया। कुछ प्रान्तों में तो एक भाषा सूत्र ही अपनाया जा रहा है। जहाँ त्रिभाषा सूत्र कार्यान्वित किया गया है, वहाँ भी हिन्दी की पढाई असंतोषजनक है। हिन्दी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए संतोषप्रद व्यवस्था नहीं है और न ही अनुयोज्य पाठ्यक्रम बनाया गया है। अत सरकार के पास भाषा संबंधी कोई निश्चित नीति नहीं है। जिन सरकारों ने त्रिभाषा सूत्र को अपनाया है वे भी अपने प्रान्त के विद्यार्थियों के भविष्य के प्रति आशंकित हैं और अपनी नीति बदलने की सोच रहे हैं। अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिए सहराजभाषा स्वीकार करने का यह दुष्परिणाम निकला कि अंग्रेजी का अस्तित्व बना रहा और हिन्दी के राजभाषा बनने की संभावना नहीं रही।

प्रजातंत्र में अल्पसंख्यकों के कुछ विशिष्ट अधिकार आवश्यक हैं-- इस तर्क के आधार पर अल्पसंख्यकों की भाषा तथा संस्कृति को जिस प्रकार प्रश्रय दिया गया है उसे प्रादेशिक भाषाओं तथा राष्ट्रीय भाषा पर बहुत ही दुष्प्रभाव पड़ा है। वस्तुतः अल्पसंख्यक भाषा और राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित करने से इस देश की भाषाओं की जितनी हानि हुई है उतनी और किसी बात से नहीं। एक अल्पसंख्यक भाषा को राजभाषा की मान्यता देना संविधान सभा की सबसे बड़ी गलती रही।

संविधान में हिन्दी को राजभाषा तक नहीं कहा गया उसके लिए "संघ सरकार की राजभाषा" शब्द का प्रयोग किया गया है। बाद में 1965 में एक राजभाषा अधिनियम बनाकर उसका यह अधिकार सदा सदा के लिए छीन लिया गया है। आज देश स्वतंत्र है पर उसकी भाषा पर प्रतिबंध है। पता नहीं कोई पुरुषोत्तम दास टण्डन या सेठ गोविन्द दास कब संसद में आकर हिन्दी को ठीक स्थान दिलाने के लिए संघर्ष कर सकेगा।

यह निश्चित है कि जब तक संविधान में पूरी निष्ठा के साथ भारतीय भाषाओं का आदर नहीं होगा, तब तक हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा असंभव है। यह कार्य प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाकर पूरा हो जाने वाला नहीं है। हिन्दी पर सरकारी राजभाषा विभाग हिन्दी सप्ताह अथवा हिन्दी पखवाड़ा मनाकर कुछ हिन्दी प्रेमियों का सम्मान अवश्य कर देते हैं पर उससे हिन्दी का कोई लाभ नहीं होता।

पिछले दिनों इन्दौर में हुए अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव का यह प्रस्ताव कि हिन्दी भाषी प्रदेशों के मुख्यमंत्री मिलकर इन प्रदेशों में हिन्दी को प्रस्थापित करें--हिन्दी के प्रयोग की दिशा में एक प्रभावी कदम हो सकता है। इस सम्मेलन में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शान्ताकुमार, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुन्दर लाल पटवा तथा राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भैरों सिंह शेखावत ने भी उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया।

श्री शेखावत ने हिन्दी के प्रयोग के लिए सब दलों को एक ही मंच पर आने का आह्वान किया और केन्द्रीय सरकार से हिन्दी के प्रयोग करने की माँग की। इस सम्मेलन में निवर्तमान राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, केन्द्रीय रेलमंत्री जार्ज फर्नाण्डीज, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़, समाजवादी नेता श्री बालेश्वर दयाल आदि ने भी हिन्दी के बारे में सरकार की ढुलमुल नीति की आलोचना की।

वस्तुत अभी भी हमें बहुत संघर्ष करना है। शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम तथा प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेजी से भारत माँ की कुल दो संतान ही बोल सकती है, बाकी 98 गूँगी बनी रहती हैं। यह गूँगापन जन्मना नहीं है, वरन् उनको बलात् गूँगा बना दिया गया है। हमें राजनीतिक दलों व नेताओं से आशा नहीं है। जनता को ही जागरूक होकर अपना मुँह खोलना होगा। जैसे भारत माँ को स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष किया था वैसे ही भारत माँ के 98 प्रतिशत पुत्रों की वाणी पर लगे प्रतिबंध को हटाने के लिये भी संघर्ष करना होगा। ☐

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज कृष्णानगर कानपुर के प्रधान श्री भैरवप्रसाद गुप्त के पूज्यपिता श्री बालगोविन्द गुप्त के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य व सहन शक्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

महिला आर्य समाज मैंनपुरी

प्रधान - श्रीमती पदमावती जी
मंत्री - श्रीमती शालिनी जी
कोषा0- श्रीमती निर्मला जी

हिन्दी गौरव के प्रथम पुरोधा

महर्षि दयानन्द सरस्वती

•डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी
श्यामगंज, बरेली

अहिन्दी भाषी होते हुए भी महर्षि दयानन्द ने आर्यभाषा हिन्दी हेतु जो योगदान किया है वह स्तुत्य ही नही अपितु अवर्णनीय भी है। जो कार्य हिन्दी भाषी नही कर सके, वह महनीय कार्य टंकारा में जन्म लेने वाले योगिवर दयानन्द ने कर दिखाया। राष्ट्र के प्रति महर्षि का अनन्यानुराग ही उनके सत्कार्यों से परिलक्षित है। महर्षि दयानन्द भारत से पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों, हीनता की भावना व अन्य निस्तेज करने वाले तत्वों को वेदालोक से मिटाना चाहते थे, जिसके लिए उन्होंने आजीवन तप किया, तथा बहुत सीमा तक अपने "लक्ष्य" में भी सफल हुए। "आर्यसमाज" की स्थापना कर महर्षि ने वैदिक धर्म पर आधारित सिद्धान्तों एवं आर्यत्व का प्रसार, देश के कोने-कोने में घूमकर किया। उन्होंने पृथ्वी के प्रत्येक मानव को ऐसा मार्ग दिखाया जिसका अनुगमन कर मानव द्वन्द एवं दु:खों से छुटकारा पाकर, आनन्द से अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर सकता है।

राष्ट्रहित से समन्वित युगपुरुष महर्षि दयानन्द की क्रान्ति सर्जक थी, क्योंकि वे राज्य तथा नाम की नहीं अपितु वैचारिक क्रान्ति चाहते थे। महर्षि दयानन्द के अनुसार विचारों के प्रसार का माध्यम लोक प्रचलित भाषा होनी चाहिए। "हिन्दी" ही भारत की लोक प्रचलित भाषा है, तथा "हिन्दी" को राष्ट्रभाषा का रूप देने वाले प्रथम पुरुष महर्षि दयानन्द ही थे। गुजरात देश में उत्पन्न कर समस्त देश में आर्यसमाज, स्थापित करने के अनन्तर भी, आर्य भाषा को अपनाना, उनका महनीय कार्य है।

महर्षि दयानन्द इस तथ्य से भली भांति सुपरिचित थे कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति का मूलाधार है--वाणी, जन, एवं संस्कृति--"इलासरस्वतीमही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।। (ऋ0 5,5.8,) अर्थात् भूमि, भाषा, और विद्या, ये तीन देवियाँ अमूल्य धरोहर हैं तथा इनके संतुष्ट रहने से ही देश का वातावरण समृद्धिमय बन सकता है, एवं तभी राष्ट्र का नेता, छान्दोग्य-उपनिषद के नेता के समान घोषणा कर सकेगा --

"नमेस्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाचाविद्वान न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।"

अर्थात् मेरे जनपद में न चोर हैं, ना कायर, न मद्यपान करने वाले, न मूर्ख न व्यभिचारी फिर व्यभिचारिणियों का होना संभव कहाँ? इस उपनिषद वाक्य से स्पष्ट है कि राज्य जनजन के सहयोग से संचालित होता रहेगा--"राष्ट्रं दधातु सुमनस्यमानः" (अथर्व 3,1,13,) अर्थात् चारों वर्ण सबल हों। चारों वर्ण सबल तभी होंगे, जब राष्ट्र के नागरिक मनस्वी एवं विवेकी होंगे, विवेक तभी जाग्रत होगा जब वे सद्विचारों को हृदयंगम करेंगे, सद्विचार तभी हृदयंगम हो सकेंगे जब वे लोकभाषा में हों। अतः हिन्दी के विचाररत्नों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु "आर्यभाषा" का व्यापक प्रसार अपेक्षित है। जैसा कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा है- "निज भाषा उन्नति अहो सब उन्नति के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल।।"

वागाम्भृणी जी सूक्त में "वाणी" का महत्व वर्णित है--
"अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां" अर्थात् मैं विश्वरूपी राष्ट्र की संचालिका हूँ। तथा धनों को प्राप्त कराने वाली हूँ। यह ऋचायें परिलक्षित करती हैं कि राष्ट्र की वाणी राष्ट्रभाषा में ही समाहित है, तथा बिना वाणी के राष्ट्र गूँगा है। राष्ट्र को सशक्त एवं सजग बनाने हेतु राष्ट्रभाषा हिन्दी का व्यापक प्रसार अपेक्षित है।

महर्षि दयाननद गुजराती भाषा के पूर्ण पंडित थे तथा मुम्बई बास में उन्होंने अपने समस्त ग्रन्थ गुर्जर भाषा में नहीं, अपितु सरल आर्यभाषा हिन्दी में लिखे। अपने जन्मप्रान्त में भी, वे अपनी मातृभाषा को छोड़कर आर्यभाषा में ही व्याख्यान देते रहे। आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ऋग्वेदभाष्य, यजुर्वेद भाष्य, वेदविरुद्धमत खंडन, व्यवहारभानु, सत्यार्थप्रकाश, सत्यासत्यविवेक तथा आलंकारिक कथा आदि इकतालिस ग्रन्थ, सभी हिन्दी भाषा में रचित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इन तथ्यों को देखते हुये मुक्तकंठ से कहना पड़ता है कि आर्यभाषा की मौलिक जड़ में जीवन का संचार करने वाले महर्षि दयानन्द ही थे।

भावात्मक एकता की संवाहिका राष्ट्रभाषा हिन्दी है जो हमें जाति धर्म की संकीर्ण मनोवृत्ति से उबार कर मात्र भारतीय बनाए है तथा किसी भी देश के निवासी भारतीय को भारत में जाने को, तथा भारत दर्शन को प्रेरित करती रहती है-

"सुखदा वरदा हिन्दी भाषा"
क्षुद्रभावभारितावैविदधाति हिन्दी भाषा भाव विरोधम्।
राष्ट्रहितं ते समुपेक्षन्ते सुखदा वरदा हिन्दी भाषा।
या मुखरी कुरते न विभेदान् धृत्वाचार्य भापपद गुरुताम्।
मन्दाकिनी· राष्ट्रभाषाया: सुखदा सेयं हिन्दी भाषा।
जननी संस्कृत भाषा चास्या सार्वभौम संस्कृति सम्पन्ना।
यत्साकमानान्या भाषा धन्यामान्या हिन्दी भाषा।"

(काव्यामृतम डॉ0 महाश्वेता चतुर्वेदी)

यही भावात्मक एकता हमारी विषमता को समाप्त करने में समर्थ है। महर्षि दयानन्द ने जिस आर्यभाषा को राष्ट्र के पद पर प्रतिष्ठित कराने की प्रेरणा, अपने महनीय कार्यों से दी, उस हिन्दी के प्रबल प्रसार हेतु अपेक्षित है कि उन कारणों को समाप्त किया जाये जो एकतामयी भावना को क्षति पहुँचाते हैं। 14 सितम्बर सन् 1949 से देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। क्षेत्रीय भाषायें कितनी ही हों, किन्तु सम्पर्क भाषा एक होनी चाहिए तथा यह स्थान केवल "हिन्दी" ही पा सकती है।

महर्षि दयानन्द हिन्दी अनुरागी ही नहीं अपितु इसके प्रबल पक्षधर भी थे। हरिद्वार में सन्यासियों के मध्य बैठे दयानन्द से एक प्रबुद्ध व्यक्ति ने निवेदन किया-"यदि आप अपनी पुस्तकों का अनुवाद कराकर, फारसी अक्षरों में छपवा दें, तो पंजाबादि प्रान्तों में जो लोग नागरी अक्षर नहीं जानते उनको आर्यधर्म के जानने में बड़ी सुविधा हो जाए।" महर्षि का इस पर स्पष्ट उत्तर था-"अनुवाद तो विदेशियों के लिए होता है। नागरी के अक्षर थोड़े दिनों में सीखे जा सकते हैं। आर्यभाषा को सीखना भी कोई कठिन कार्य है? फारसी तथा अरबी शब्दों को छोड़कर ब्रह्मावर्त की सभ्य भाषा ही आर्यभाषा है जो अतिकोमल और सुगम है। जो इस देश में उत्पन्न होकर भी अपनी भाषा के सीखने में परिश्रम नहीं करता, उससे और क्या आशा की जा सकती है? उसमें धर्म लग्न है इसका भी क्या प्रमाण है? आप तो अनुवाद की सम्मति देते हैं, किन्तु दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त भर में, भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए अपने सकलग्रन्थ आर्यभाषा में लिखे और प्रकाशित किये हैं।" (स्वामी दयानन्द जीवन परिचय)

यदि हमारे शरीर में पानी प्रवाहित हो रहा है। हमें भी राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रबल प्रसार हेतु कृत संकल्प होना चाहिये। तभी राष्ट्र की चतुर्दिक उन्नति संभव है। □

पूर्वी चम्पारन में विवाह संसकार सम्पन्न

1- दिनांक 4 मई को चि0 सरोज कुमार सुपुत्र चौ0 लाला प्रसाद) का आयु0 कु0 गायत्री सुपुत्री (श्री रामाधार चौधरी) ग्राम पो0 जीतपुर भाया छोड़ा दानो।

2- दिनांक 10 मई को चि0लक्ष्मी नारायण आर्य बी0एस0सी0 पुत्र (पं0 माधवानन्दार्य) का आयु0 कुमारी उमरावती सुपुत्री (श्री रामाज्ञा सिंह ग्राम धाहर पो0 कुहरकर छोड़ादानो ।

3- दिनांक 12 मई को चि0 अनिरुद्ध आर्य (सुपुत्र श्री चौ0· रामचन्द्र) जीतपुर का आयु0 कुमारी मिथिलेश (सुपुत्री श्री चौ0 सोनलाल) ग्राम फतुहाँ, पो0 पकड़िया।

4- 16 मई को चि0 उमानन्द आर्य (सुपुत्र श्री चौ0 रामचन्द्र) जीतपुर का आयु0 कुमारी ऊषा (सुपुत्री श्री नागेन्द्र सिंह शिक्षक) ग्राम पो0-मेछुड़ा, बगहा।

यह सभी वैवाहिक कार्यक्रम श्री पं0 रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी नेपाल व श्री पं0 ध्रुव जी आर्य के पौरोहित्य में वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुए।

आवश्यक सूचना

"आर्यमित्र" के ग्राहकों से निवेदन है कि शुल्क भेजते समय कृपया पुरानी ग्राहक संख्या अथवा नवीन ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य लिखें।

-प्रबंध सम्पादक

साम्प्रदायिकता की जड़ है-धारा-३०

— बलराज मधोक

आजकल देश में साम्प्रदायिकता के विरुद्ध एक मुहिम चल रही है। साम्प्रदायिता विरोधी सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है और लोगों से साम्प्रदायिकता से लड़ने का आह्वान किया जा रहा है। परन्तु "मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की" के अनुरूप साम्प्रदायिकता के विरुद्ध जितनी चिल्लाहट होती है उतना ही यह उग्र रूप धारण करती जा रही है। इसका मूल कारण यह है कि साम्प्रदायिकता के विरुद्ध हाय तोबा करने वालों ने न कभी साम्प्रदायिकता है क्या इस विषय पर जनमत को शिक्षित करने का प्रयत्न किया है और न इसे खत्म करने के लिए ठोस सकारात्म उपाय पेश किए हैं।

साम्प्रदायिकता शब्द सम्प्रदाय से निकला है। यह सर्वविदित है कि हिन्दुस्तान में अनेक सम्प्रदाय हैं। यह कोई अनहोनी बात नहीं है। वैदिक, ऋषियों के अनुसार परमात्मा एक है परन्तु विद्वान उसे अनेक नामों से याद करते हैं और उस तक पहुँचने के, उसकी पूजा आराधना करने के, अनेक मार्ग अथवा पन्थ है। अलग अलग पूजा विधियाँ अपनाने वाले अलग-अलग पन्थ अथवा सम्प्रदाय बन गए हैं। परन्तु अलग-अलग होते हुए भी इनमें बहुत सी बातें समान है।

मजहब और धर्म

ये सभी परमात्मा को मानव मात्र का पिता मानते हैं किसी एक समूह या व्यक्ति का नहीं। इसलिए ये सभी मानव एकता में विश्वास रखते हैं और एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता का भाव रखते हैं। "धर्म जो सम्प्रदाय से सर्वथा भिन्न है और जिसके दस लक्षण मनु ने बताए थे और जिनमें वर्द्धमान महावीर और महात्मा बुद्ध ने अहिंसा को भी जोड़ दिया था, उसमें इन सब सम्प्रदायों की समान आस्था है। भारत में पन्थ अनेक हैं किन्तु धर्म एक है वह सनातन और सार्वभौमिक है। इस तरह इन पंथों या सम्प्रदायों के अनुभौमिक की अपने अपने पंथ में आस्था से अन्य पंथ या सम्प्रदाय वालों को कोई खतरा नहीं। खालसा पंथ के प्रवर्तक गुरु गोविन्द सिंह का यह विख्यात पद-

"सकल जगत में खालसा पंथ गाजे, जगे धर्म हिन्दू सकल भेड़ भाजे" इस सत्य को ही उजागर करता है।

इसलाम और ईसाइयत भारत मूल के पंथ नही वे सेमेटिक अर्थात् अरब मूल के मजहब है। उनकी मान्यता है उनके अपने-अपने नबी थे। पैगम्बर ईसा और मोहम्मद तथा उनकी पुस्तकें अंजील और कुरान ही मानने योग्य है। उनका पंथ ही सच्चा पंथ है, शेष सब पंथ झूठे हैं। इनको मानने वाले काफिर ०। उन्हें ईसाई या मुसलमान बनाना या खत्म करना आवश्यक है ईसाइयों ने अपने इस मत का कुछ हद तक तर्क और विज्ञान के अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया है। परन्तु चूंकि इस्लामवादी कुरान को अपने अल्ला की आखिरी और न बदला आने वाला आदेश मानते हैं, इसलिए वे अपने मजहब की बदले हालात के अनुरूप ढालने को तैयार नहीं हैं।

साम्प्रदायिकता

साम्प्रदायिकता की समस्या को समझने के लिए पली आवश्यकता मजहब अथवा सम्प्रदाय अथवा पंथ और धर्म के अन्तर तथा भारत मूल के पंथों अथवा सम्प्रदायों और अरब मूल के मजहबों के अन्तर को समझना आवश्यक है। सर्व धर्म/पंथ समभाव में भारत मूल के सभी पंथों की समान आस्था है। परन्तु सेमेटिक मूल के मजहबों की इसमें कोई आस्था नहीं है। इस्लाम अन्य पंथों के प्रति समभाव की अनुमति नहीं देता।

संसार के सभी राष्ट्रों में अनेक सम्प्रदाय और जात विरोधियाँ हैं। उनके अनुयायियों की अपने अपने सम्प्रदाय और विरादरी के प्रति भी आस्था होती है और राष्ट्र के प्रति भी। कोई व्यक्ति साम्प्रदायिक है या राष्ट्रवादी यह प्रश्न तब उठता है जब उस व्यक्ति के अपने मजहबी समुदाय के हितों में और राष्ट्र के हितों में टकराव आए। उस स्थिति में जो व्यक्ति या गिरोह राष्ट्र के हितों की कीमत पर भी अपने सम्प्रदाय के हितों को प्राथमिकता दें, वह व्यक्ति या गिरोह साम्प्रदायिक होता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति या समूह अपने आचरण से यह सिद्ध करे कि वह राष्ट्र के हितों के लिए अपने सम्प्रदाय के हितो को बलि चढाने के लिए तैयार है उसे राष्ट्रवादी कहा जाता है। संसार भर में सम्प्रदायक ३ अथवा साम्प्रदायिकता और राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता की यही परिभाषा और कसौटी मानी गई है।

आजादी के पहले की स्थिति

1947 से पहले भारत में इस्लाम एक मात्र सम्प्रदाय था जिसके अनुयायियों ने अपने सम्प्रदाय के हितों के लिए देश के हितों और देश की एकता के विरुद्ध काम किया और मातृभूमि का बंटवारा कराया। इस कारण 1947 से पहले देश में केवल मुस्लिम साम्प्रदायिकता थी। राष्ट्र के उस समय के नेताओं ने इस साम्प्रदायिकता से लड़ने के बजाय इसके आगे समर्पण किया। फलत भारत के टुकड़े हुए पाकिस्तान बना और पाकिस्तान में रह गए लगभग सभी गैर मुसलमानों को वहां से निकाल दिया गया था बलात् मुसलमान बना लिया गया।

देश के विभाजन और मुसलमानों को अलग देश मिल जाने के बाद खंडित भारत में साम्प्रदायिकता खत्म हो जानी चाहिए थी। परन्तु यह खत्म नहीं हुई। मुसलमान भारत में रह गए वे पुन 1947 से पूर्व की तरह अपने मजहब के हितों को राष्ट्रहित के ऊपर वरीयता देते हैं। उनकी देखादेखी ईसाई और सिक्ख पंथ के कुछ लोगों में भी साम्प्रदायिकता और सम्प्रदाय के आधार पर अलगाववाद का भाव पैदा हुआ है। मिजोरम, नागालैण्ड, पंजाब और काश्मीर में जो कुछ हुआ है और हो रहा है वह उसी का परिणाम है।

इसकी प्रतिक्रिया हिन्दुओं में भी होने लगी है। परन्तु हिन्दूवाद या हिन्दुइज्म कोई पंथ या मजहब नहीं स्वर्गीय राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन के शब्दों में हिन्दुज्म या हिन्दूवाद एक "जीवन-पद्धति" तथा एक सांस्कृतिक धारा है जो भारत के मूल के सभी पंथों को साझी धाती है। उनके अनुसार हिन्दुज्म कोई अलग मजहब या पंथ न होकर भारत मूल के सभी पंथों का महासंघ है।

धारा-30

मुस्लिम साम्प्रदायिकता और उसकी देखादेखी ईसाई और सिक्ख साम्प्रदायिकता और इनकी हिन्दू प्रतिक्रिया के 194

बाद उभरने और उग्र रूप लेने के अनेक कारण हैं। उनमें सबसे प्रमुख कारण भारत के संविधान की धारा 30 है। इस धारा के अनुसार भारत में हिन्दुओं से इतर अन्य सम्प्रदायों के लोग जिन्हें अल्पमत कहा जाता है अपने अपने अलग अल्प संख्यक शिक्षा संस्थान खोल सकते हैं जिनमें वे अपने मजहब की शिक्षा विशेष रूप से दे सकते हैं। ऐसी शिक्षण संस्थानों को सरकार अन्य संस्थाओं की तरह ही वित्तीय सहायता देती है। परन्तु उसका उन पर कोई नियंत्रण नहीं होता। इस प्रकार इस धारा ने न केवल मजहब अथवा पंथ के आधार पर राष्ट्र को अल्पसंख्यकों में बाँट दिया है अपितु अल्पसंख्यकों को ऐसे विशेष अधिकार भी दिये हैं जो बहुसंख्यकों को प्राप्त नहीं इस कारण इन अल्पसंख्यक सम्प्रदायों के अनुयायियों में अल्प सख्यकवाद और सम्प्रदायवाद में एक निहित स्वार्थ पैदा हो गया है। फलस्वरूप साम्प्रदायिकता और अलगाववाद का भाव बढ़ता जा रहा है और हिन्दुओं में इसकी प्रतिक्रिया भी हो रही है।

संविधान की यह धारा 30 संविधान की भावना तथा सभी नागरिकों की समानता और मूल अधिकारों के प्रतिकूल है और देश में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता की जड़ है। संविधान में से इस धारा को निकाले बिना साम्प्रदायिकता खत्म करने की बात दिवास्वप्न जैसी है।

राष्ट्रवाद का अभाव

साम्प्रदायिकता का दूसरा बड़ा कारण देश में राष्ट्रवाद की भावना का दुर्बल होना है। संसार के सभी देशों में जोड़ने वाले और तोड़ने वाले तत्व रहते हैं। सम्प्रदायों का भेद भाषाभेद तथा जाति बिरादरी का भाव भारत में तोड़ने वाले तत्व हैं। दूसरी ओर देश की धरती और देश की संस्कृति के प्रति प्रथम आस्था और श्रद्धा का भाव समान कानून और सम्मान राष्ट्रभाषा जोड़ने वाले तत्व हैं। ये ही राष्ट्र का सार और आधार माने जाते हैं। राष्ट्रवाद का संबंध आस्थाओं से होता है। मजहब या पंथ से नहीं। विभिन्न पंथों के मानने वालों में यदि उपरिलिखित आस्थाएं समान हों तो

—— शेष पृष्ठ ८ पर

श्री अर्जुन देव महाना का नश्वर शरीर पंचतत्व में विलीन



लखनऊ के जन प्रिय आर्य नेता श्री अर्जुनदेव महाना का गत 13 अगस्त को दोपहर लुटेरों की गोलियों से बुरी तरह घायल होकर निधन हो गया। इस दुर्घटना का समाचार कुछ क्षणों में सम्पूर्ण नगर में फैल गया। श्री महाना अपने पेट्रोल पम्प का धन पंजाब सिन्ध बैंक,आलमबाग में जमा कराने जा रहे थे आपके साथ ही आपके पेट्रोल पम्प के मैनेजर श्री शिव प्रसाद दीक्षित भीगोलियों से गम्भीर रूप से घायल हो गये और अभी बलरामपुर अस्पताल में भर्ती हैं। श्री महाना को घायल होने के बाद पहले अवध अस्पताल और फिर मेडिकल कालेज ले जाया गया परन्तु अथक प्रयास के बाद भी डाक्टर उन्हें बचा न सके। उनका शव पोस्टमार्टम के पश्चात् लगभग 11 बजे रात्रि को प्राप्त हुआ। दूसरे दिन 14 अगस्त को मध्याह्नोत्तर 1 30 बजे उनके निवास स्थान 60 बी श्रृंगारनगर से उनकी शवयात्रा निकाली गयी। आर्यसमाज श्रृंगारनगर में कुछ देर उनके शव को रखा गया वहाँ से अंतिम श्रद्धांजलि भेंट करके श्रृंगारनगर श्मशान भूमि में 3 बजे हजारों अश्रुपूरित प्रशंसकों संबंधियों एवं आर्यसमाज के नेताओं और कार्यकर्त्ताओं के समक्ष वैदिक मंत्रोच्चार के साथ उनके पुत्र चि0 राकेश महाना ने मुखाग्नि दी। सबके देखते ही कुछ ही काल में उस दिव्यात्मा का शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया।

16 अगस्त को मध्याह्नोत्तर 2 बजे से आर्यसमाज श्रृंगारनगर में शान्तियज्ञ एवं शोकसभा आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी की अध्यक्षता में हुयी। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री मनमोहन तिवारी सहित, भारतीय जनता पार्टी, विश्व हिन्दू परिषद,राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, सनातन धर्म सभा, श्रृंगारनगर सोसाइटी आलमबाग मर्चेण्टस एसोसियेशन भट्ठा यूनियन, उ0प्र0 सिन्धु समाज श्री मद्‌यानन्द बाल सदन एवं विविध आर्य समाजों एवं संस्थाओं की ओर से श्री महाना को भाव पूर्ण श्रद्धांजलि भेंट की गयी। पगडी की रश्म के माध्यम से चि0 राकेश को श्री अर्जुन देव महाना के सम्पूर्ण दायित्व सौंपे गये। आप अपने पीछे पत्नी, 3 पुत्री एक पुत्र (चारो विवाहित) छोड गये हैं।

श्री अर्जुन देव महाना का जन्म लायलपुर पंजाब वर्तमान पाकिस्तान में 17-8-1929 को ला0 रामलाल जी महाना के घर में हुआ था। हाईस्कूल की शिक्षा पंजाब में हुयी। शेष शिक्षा दीक्षा लखनऊ और इलाहाबाद में हुयी। स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती के कई वर्ष आप विज्ञान के विद्यार्थी इलाहाबाद विश्व विद्यालय में रहे। आप प्रारम्भ से ही धार्मिक वृत्तियों से पूर्ण थे। अपने विद्यार्थी काल में ही आपने जो नित्य घर से निजी खर्च के पैसे मिलते थे उनसे बचाकर आर्यसमाज के लिए एक दरी खरीद कर दान की थी। और सामान्यत नित्य अर्थदान करते ही थे।

आप आर्यसमाज श्रृंगारनगर के संस्थापक सदस्य रहे समाज के विभिन्न पदों पर रहते हुए और बिना पद के भी समान रूप से समाज की अभ्युन्नीत के लिए सदा समर्पित रहे। आपके घर में यज्ञ की अखण्ड अग्नि रहती है और नित्य सम्पूर्ण परिवार की श्रद्धा और लगन से दैनिक अग्नि होत्र करता है। निरन्तर चारों वेदों का क्रमश आंशिक पारायण यज्ञ चलाते रहते थे। और वर्ष में एक बार वृहद वेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी सार्वजनिक संस्थाओं के अभ्युत्थान के लिए दान माँगने वाले खाली नहीं जाते थे। मुक्तहस्त वे सभी को देते थे।

आप वर्षों आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के मंत्री और प्रधान रहे। श्री मद्‌यानन्द बाल सदन के अनेकों वर्षों से सर्वसम्मत अध्यक्ष थे और उसके उत्थान के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे। उनके सुझाव पर ही श्री मद्‌यानन्द अनाथालय का नाम श्री मद्‌यानन्द बाल सदन रखा गया था। आप कहते थे कि सदन के बच्चों को कभी भी अनाथ अनुभव करके हीन भावना ग्रस्त नहीं होने देना चाहिए। आपकी सहधार्मिणी श्रीमती विमला महाना भी सम्पूर्ण रूप से समर्पित भाव से उनके साथ सम्पूर्ण सामाजिक कार्यों में सदैव व्यस्त रहती थी। बाल सदन के ब्रह्मचारी श्री महाना में पिता एवं श्रीमती विमला महाना में माता का दर्शन करते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वे अनेकों वर्षों से सम्मानित अन्तरंग सदस्य थे। आपके सुझाव सभा के लिए सदैव उपयोगी रहते थे।

श्री महाना अजातशत्रु थे निर्भीक स्पष्टवादी, सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदैव उद्यत रहते थे।

यह आर्यजगत् का दुर्भाग्य ही है कि सात महीने तेरह दिन के अन्दर आर्यसमाज ने अपने दो सर्वात्मना समर्पित सहोदर नेताओं को खो दिया। श्री अर्जुन देव महाना स्व0 श्रीकृष्ण बलदेव महाना भू0पू0 प्रधान एवं कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अनुज थे।

आर्यसमाज की यह अपूरणीय क्षति हुई है। प्रभु उनके सम्पूर्ण परिवार एव मित्रों हितैषियों को शक्ति और सामर्थ्य दे कि उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का दृढ संकल्प लें।

— आचार्य वेदव्रत अवस्थी
मन्त्री आ0स0 श्रृंगारनगर लखनऊ

स्वतन्त्रता दिवस

दिनांक 15-8-1990 सभा प्रधान- श्री इन्द्रराज जी ने निम्नलिखित शिक्षण संस्थाओं में ध्वजारोहण किया तथा उद्‌बोधन दिया -

1- आर्य विद्या सदन, थापरनगर,मेरठ ध्वजारोहण एवं उद्‌बोधन।
2- लिसाडी गेट व्यापार मण्डल की ओर से आयोजित स्वतंत्रता समारोह में-ध्वजारोहण एवं उद्‌बोधन।
3- हरिशंकर आर्य विद्या सदन में-उद्‌बोधन।
4- आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ शहर में उद्‌बोधन।
5- श्री मनोहरलाल जी प्रधान् आर्य समाज मेरठ शहर द्वारा आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ शहर में ध्वजारोहण एव उद्‌बोधन।

श्री स्वराज्यचन्द्र जी प्रबंधक आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ ने

1- हरिशंकर आर्य विद्या सदन में उद्‌बोधन।
2- आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ शहर में उद्‌बोधन।

सभी वक्ताओं ने अनुशासन, राष्ट्र की एकता का संकल्प तथा हिन्दी भाषा के अधिक से अधिक प्रयोग, नगर और प्रदेश में बढ़ती हुई अपराधिक गतिविधियों के उखाड़ फेंकने का व्रत लिया।

आर्यसमाज पिलखुआ गाजियाबाद में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी

दिनांक 26-8-90 की रात्रि को 8 बजे आर्यसमाज पिलखुवा द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह में सभा प्रधान् श्री इन्द्रराज जी के पहुँचने पर आर्यसमाज के प्रधान एवं जिला सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री शक्ति स्वरूप जी तथा आर्य समाज के मंत्रीजी ने उनका भव्य स्वागत किया। श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय के वैज्ञानिक वैदिक प्रवचन एवं श्री शोभा राम जी प्रेमी ओजस्वी भजनों के पश्चात् सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने वेद पढ़ने की प्रेरणा देते हुए वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन को ऊँचा उठाने की बात बड़ी रोचक ढग से प्रस्तुत की। उन्होंने काश्मीर,पंजाब और आसाम को बचाने तथा आगरे जैसे ऐतिहासिक नगर में वर्ग संघर्ष की चर्चा करते हुए हिन्दू मात्र का आह्वान किया कि वे आर्य समाज के इस पुनीत कार्य में देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।

प्रस्तोता-इन्द्रराज् जी,
आर्य समाज मेरठ।

कुमारी नोरिन अब नीतू बनीं

आर्यसमाज नेपियर टाउन जबलपुर में जन्मजात ईसाई युवती कु0 नोरिन फ्रान्सिस स्वेच्छा से ईसाई मत त्याग कर वैदिक धर्मी बनीं। पं0 निर्मलचन्द्र विद्यावाचस्पति ने वैदिक रीत्यानुसार शुद्धि का कार्य किया। शुद्धि के पश्चात् उसका नाम नीतू रखा गया उसके उपरान्त श्री अमरसिंह नामक युवक से उसका विवाह कर दिया गया। नगर के प्रतिष्ठित लोगों ने वर-वधु को आशीर्वाद दिया।

आर्यसमाज मेरठ में जन्माष्टमी का पर्व

दिनांक 14-8-90 को आर्यसमाज मेरठ शहर में जन्माष्टमी का पर्व रात्रि को 8 बजे समारोहपूर्वक मनाया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री डा0 निरुपण जी ने की तथा संयोजन श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने किया। श्री मनवीर जी तथा श्री हरिश्चन्द्र जी महता ने भजन प्रस्तुत किए। श्रद्धांजलियों में सर्वप्रथम श्री जयन्त कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए हिन्दुओं के जन्मगत जातिवाद पर प्रहार करते हुए धर्म परिवर्तन का मुख्य कारण जातिवाद को ही बताया तथा इसे दूर करने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण ने विदेशियों पर पूरी दृष्टि रखी। आज भी उस दृष्टि की आवश्यकता है।

सनातन धर्म के मान्य विद्वान श्री प्रो0 शिवानन्द जी ने वर्तमान परिस्थितियों में धर्म परिवर्तन हो रहा है। एक तरफ मण्डल आयोग की सिफारिशों को भी माना जा रहा है दूसरी ओर देश की अखण्डता की बात भी कही जाती है।

कायदे आज़म की चापलूसी होती रही। फिर भी पाकिस्तान बन गया। श्रीकृष्ण जैसे व्यक्ति इस समय नहीं थे। आज के युग में स्वामी दयानन्द जी ने कौन सी बात ऐसी कही है जो कि मान्य नहीं है। स्वामी दयानन्द जी ने योगेश्वर श्री कृष्ण जी को महामानव मान लिया। आज यह बहुत महत्वपूर्ण है कि श्रीकृष्ण की दृष्टि राष्ट्र की दृष्टि थी। गीता में एक स्थल पर कर्म के महत्व को बताते हुए योगेश्वर कृष्ण कहते हैं कि यदि ईश्वर भी तुम्हारी समझ में नहीं आता तो न आए परन्तु तुम निष्काम कर्म करो। इसी से तुम्हें सिद्धि प्राप्त हो जायेगी। हम लोग गीता और उपनिषदों के महात्म्य में उलझ कर रह गए परन्तु मूल ग्रन्थों के उपदेशों को छोड़ दिया। योगेश्वर कृष्ण का सब को निष्काम कर्म करने का उपदेश आज भी भारत निर्माण में बड़ा सार्थक है।

डा॰ गणेशदत्त जी प्राचार्य ने अपने प्रवचन में बताया कि यह देश वह देश है जिसमें भगवान कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था। हमें गौरव है कि सारा संसार आज भी गीता के उपदेशों पर चलने को तत्पर है। समस्त महाभारत ग्रन्थ में योगेश्वर श्री कृष्ण ही सर्वोपरि हैं। भीष्म भी अपनी कुण्ठा में घिरे हुए थे और तथाकथित प्रतिज्ञा के जाल में फँसे हुए थे। परन्तु कृष्ण की प्रतिज्ञा थी—

"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्"

सज्जनों के परित्राण के लिये और दुष्टों के विनाश के लिए भगवान श्री कृष्ण ने कभी भी देरी नहीं लगाई। द्रोणाचार्य कृपाचार्य और कर्ण ये महान शक्तियाँ थीं परन्तु इन कालक्ष्य बहुत तुच्छ था। परन्तु श्रीकृष्ण का कोई स्वार्थ नहीं था। वे तो धर्म की स्थापना करना चाहते थे। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने योगीराज श्री कृष्ण जी के विषय में लिखा है कि उन्होंने जीवन में जन्म से लेकर कभी झूठ नहीं बोला"। यह यथार्थ सत्य है क्योंकि श्रीकृष्ण जी की सत्य की परिभाषा थी। "भूतहितम व्यन्तमेव सत्यम" वे आयु भर प्राणीमात्र का हित करते रहे। उन्होंने कर्ण की हत्या की प्रेरणा अर्जुन को करते हुए जो धर्म की व्याख्या की वह अद्भुत है। दूत बनकर जो अपना ओजस्वी रूप सभा में दिखाया वह अद्भुत है। गीता ही भगवान कृष्ण का आकार है, स्वरूप है क्योंकि इस का उपदेश युद्ध में और संघर्ष में दिया गया था, और उपदेश है संघर्ष में निष्काम रहने का। आज के इस विषम समय में उन का उपदेश बहुत सार्थक है।

डा0निरुपण जी का अध्यक्षीय भाषण:-

योगेश्वर श्री कृष्ण के जीवन को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं। §1§ आठ वर्ष से पूर्व का जीवन। सन्दीपनी आचार्य के पास गुरुकुल में जाने से पूर्वका जीवन। वह साहित्य में सूरदास का कृष्ण है। और आज की झाँकियाँ भी 8 वर्ष पूर्व की झाँकियाँ हैं। §2§ गुरुकुल से लेकर विवाह का जीवन- जिसमें उन्होंने आदर्श स्थापित किया शिक्षा के क्षेत्र में भी और गृहस्थ में अद्भूत 12 वर्ष के संयम के रूप में।

§3§ महाभारत के कृष्ण जहाँ उन्होंने संसार को दिशा निर्देश दिया। राजसूय यज्ञ में पद प्रक्षालन का कार्य स्वीकार करके सेवा की प्रतिष्ठा उन्होंने स्थापित की। उस यज्ञ में सब पर निगाह रखी और युद्ध में भी भीष्म-द्रोण, कृपाचार्य और कर्ण पर पूरी तरह से निगाह रखी। तभी विजय प्राप्त हुई। द्वारिका में निवास एक राजनीतिकरण की धुरी स्थापित करने के लिए था। शिशुपाल वध, जरासन्ध वध और कंसवध बड़ी योजनापूर्वक हुआ। उनकी विशालदृष्टि थी या यूँ कहना चाहिये। कि उन की राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक दृष्टि थी। वे योगेश्वर थे। उन का योग पहले था और व्यवहार पीछे था। यौगिक व्यवहार ही संसार में सुख शान्ति फैलाता है। उन्होंने अर्जुन को पात्र चुना। वह युद्ध के मध्य घबरा गया। और जब भगवान कृष्ण ने उसे उपदेश दिया तो अन्त में उसने कहा "करिष्येवचनं तव" अब तो मैं आप के वचन का पालन करूँगा अर्थात् युद्ध अवश्य करूँगा।

अन्त में समारोह के संयोजक सभा प्रधान ने श्रीकृष्ण के वास्तविक स्वरूप को जनता के सन्मुख रखते हुये बोले कि योगेश्वर श्री कृष्ण अपने से बड़ों के चरण स्पर्श करके नमस्ते करते थे। यह उनका शिष्टाचार में एक आदर्श था। वे नित्य प्रति प्रातः सायं सन्ध्या करते थे। दूत कर्म के लिए जाते हुए मार्ग में ही जब सायंकाल हुआ। उन्होंने तालाब के किनारे सारथी को घोड़े खोलने का आदेश देकर तालाब में हाथ मुख धोकर आसन पर बैठ कर सन्ध्या में तल्लीन हो गए। हमें विचार करना चाहिये कि वे सन्ध्या में किस की उपासना करते थे। निश्चित रूपेण उन्होंने महामानव के रूप में हम सब को निष्काम कर्म का उपदेश देकर योग के क्षेत्र में आदर्श उपस्थित किया।

●

आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार-दिल्ली में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत

दिनांक 19-8-90 को प्रातः 8 बजे आर्य समाज जंगपुरा विस्तार नई दिल्ली पहुँचने पर आर्यसमाज जंगपुरा आर्यसमाज भोगल, एवं आर्यसमाज लाजपतनगर के अधिकारियों तथा स्त्री समाज की अधिकारियों ने माल्यार्पण द्वारा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का हार्दिक स्वागत किया। अथर्ववेद शतक के विशेष यज्ञ में ब्रह्मा का आसन स्वीकार करते हुये उन्होंने अपने आध्यात्मिक प्रवचन में आत्मा से दूर होकर संसार के दुःखी और अशान्त होने की चर्चा करते हुए पुनः अपनी आध्यात्मिक थाती को प्राप्तकर सारे संसार को भारत की शरण में आने और योग द्वारा आत्मा की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी। गुरुकुल के स्नातक अपने शिष्य ब्र0 शिवशंकर की प्रशंसा करते हुए यजुर्वेद के कंठस्थ करने पर उनको हार्दिक आशीर्वाद दिया। गुरुकुल प्रभात आश्रम में आने का निमंत्रण दिया।

●

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का डी॰ए॰वी॰ (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय मुजफ्फर नगर में आगमन

दिनांक 20-8-90 को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी के डी0ए0वी0 कालेज में पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। श्री डा0 बालकृष्ण त्यागी जी प्राचार्य एवं डा0 महेन्द्र कुमार बंसल सचिव ने माल्यार्पण द्वारा सभा प्रधान का स्वागत किया। फिजिक्स के लिए नये कक्ष के उद्घाटन यज्ञ में डा0 बंसल जी ने सपत्नीक यजमान का आसन ग्रहण किया तथा श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने ब्रह्मा का आसन ग्रहण किया। अपने आशीर्वाद भाषण में बोलते हुए श्री सभा प्रधान जी ने किसी भी शिक्षण संस्था को ऊँचा उठने या उठाने में चार खम्भों की चर्चा की।

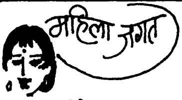
प्रथम खम्भा प्रबंध समिति है जिस के जागरूक और सतर्क रहने में संस्था ऊँची जाती है। द्वितीय खम्भा अध्यापक वर्ग और शिक्षक वर्ग हैं जिसके ज़रा से परिश्रम से कालिज में अनुशासन और पढ़ाई का स्तर ऊँचा उठ सकता है। तीसरा खम्भा विद्यार्थी हैं जिनको विद्या के साथ-साथ संस्कार देने की आवश्यकता है। संस्कारित विद्यार्थी ही संस्था को ऊँचा उठा सकते हैं। चौथा खम्भा है अभिभावक। कालेज में वर्ष में ऐसे समारोह होने चाहिए जिसमें विद्यार्थी और अभिभावक भी सम्मिलित हों। कालेज में तोरण, ध्वज आदि के द्वारा जो एक वातावरण आज बनाया गया है। उसके लिए प्रबंध समिति और अध्यापक वर्ग बधाई के पात्र हैं। आज के समारोह के संचालक श्री डा॰ महावीर जी के कुशल संयोजन के लिए उन्हें भी सभा प्रधान जी ने धन्यवाद दिया। बाद में सचिव श्री बंसल एवं श्री डा0 बालकृष्ण जी त्यागी ने भी डी0ए0वी0 कालेज की गतिविधियों पर इसकी प्रगति पर और शुभारम्भ के अवसर पर यज्ञ का निर्णय लेने पर प्रकाश डाला। सभा प्रधान जी ने इनके प्रगति के कार्यों में सभा की ओर से सहयोग देने का आश्वासन दिया। अन्य आर्य समाजों और महिला समाजों के सदस्य और सदस्यायें भी उपस्थित थीं। श्री द्वारिका नाथ शर्मा जी का मधुर संगीत भी हुआ।

—प्रस्तोता-इन्द्रराज जी,
मंत्री, आर्यसमाज मेरठ।

हीरक जयन्ती समारोह

आर्यसमाज नारनौल में दिनांक 5 से 7 अक्टूबर 90 तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में हीरक जयन्ती समारोह बड़े समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी, भजनोपदेशक पधार रहे हैं। प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुँच कर हीरक जयन्ती समारोह को सफल बनायें।

-सभामंत्री।



महर्षि दयानन्द और नारी कल्याण

— डा० प्रियव्रत (शास्त्री प्रभाकर)

महर्षि स्वामी दयानन्द से पूर्व नारी की क्या स्थिति थी। कुछ लोग नारी को पैर की जूती बतलाते थे कुछ लोग कहते थे "स्त्री शूद्रो नाधीयताम्" अर्थात् स्त्री और शूद्रों को न पढ़ाया जाय। यदि कोई स्त्री या शूद्र वेद पढ़ लेते थे तो उनकी जिह्वा काट ली जाती थी और यदि कान से श्रवण कर लेते थे तो उनके कानमेंसीसा पिघला कर डाल दिया जाता था इस प्रकार शंकराचार्य जी महाराज ने कहा है कि:-

"द्वारं कि मेकं नरकस्य नारी"

अर्थात्- नरक का द्वार नारी है। इस प्रकार की सूक्तियां उचचकोटि के महात्मा व आचार्यों द्वारा लिखी गई थीं। तुलसी दास जी ने भी लिख दिया कि-

ढोल गंवार शूद्र पशु नरी।
ये सब ताडन के अधिकारी॥

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने इस प्रकार की सूक्तियों को देखा और यह भी देखा कि कुछ लड़कियों जन्म लेत ही विधवा हो जाती थीं। जैसे उस समय ऐसी प्रथा थी कि यदि दो गर्भवती स्त्रियां कहीं यात्रा के लिए ट्रेन इत्यादि में जा रही हों तब वे दोनों ही आपस में बाते करती थीं कि यदि तेरे पुत्र और मेरे पुत्री हुई तो हम उन दोनों का विवाह कर देंगे। बाद में जन्म के समय यदि दोनों के लड़कियाँ हो जाती थीं। तो उसको विधवा कहते थे। या फिर बाद में जन्म के बाद पुत्र मर जाय तब भी विधवा । वह जीवन भर न तो अच्छा पहन सकती थी और न ही वह श्रृंगार कर सकती थी। और उसको हर समय अपवित्र माना जाता था। भाई के विवाह जैसे शुभ अवसर पर उन्हें निषेध जानकर ताले में बन्द रखा जाता था विधवायें आहें भरती थीं। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने विचार किया कि यह तो महान अन्धकार है उन्होंने बताया कि :-

"मातृमान पितृमान आचार्य मान पुरुषोवेद"

सर्वप्रथम बालक का गुरु माता है माता जैसी होगी तो उसकीवैसीसंतान होगी। यदि माता शिक्षिका चरित्रवती, एवं सात्विक वृत्ति की धार्मिका गुणवती होगी तो उसकी संतान भी उच्च कोटि की होगी। इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए स्त्री शिक्षा पर जोर दिया और कन्या गुरुकुल स्वामी दयानन्द जी महाराज की प्रेरणा से खोले गये। स्त्रियों को यज्ञोपवीत पूर्वक पढ़ना-पढ़ाना वेद विहित बतलाया। जिससे वे समझें कि नारी समाज की उन्नति के मूल कारण क्या हो सकते हैं। मनुष्य समाज में नारियों का आदर कैसे बढ़े। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में वे क्या सहयोग दे सकती हैं। और अपनी सन्तानों को अच्छा बना सकती हैं। इसलिए नारियों को वैदिक शिक्षा दिलाना उचित समझा ।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अपना सारा जीवन सामाजिक बुराईयों को दूर करने में लगाया। आज नारी को समान अधिकार प्राप्त है। वह वेदों का अध्ययन कर सकती है। वेदों को सुन सकती है। और पुरुष के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर सकती है। यहाँ तक ही नहीं, अपितु भारत और पाकिस्तान देशों की प्रधान मंत्री तक के पद को नारी ने सुशोभित किया यह सब महर्षि की देन है।

कुछ समय पूर्व काशी में पोराणिकों से शास्त्रार्थ हो रहा था शंकराचार्य जी महाराज से कई लोग शास्त्रार्थ कर चुके थे पर वे हार नही मान रहे थे। तब पाणिनीय

—शेष पृष्ठ ९ पर

पृष्ठ ५ का शेष....

वे एक राष्ट्र माने जाते हैं यदि यदि एक सा मजहब मानने वालों में भी यह समान आस्थाएं न हों तो वे एक राष्ट्र नहीं बन सकते। यही कारण है ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि देशों के लगभग सभी लोग ईसाई होने के बावजूद वे अलग-अलग राष्ट्र हैं।

इसी प्रकार ईराक, सीरिया, सऊदी अरब और कुवैत के सभी लोग अरब और मुसलमान होने के बावजूद अलग-अलग राष्ट्र हैं।

सम्प्रदायवाद की सबसे प्रभावी काट राष्ट्रवाद ही हो सकती है। इसलिए राष्ट्र और राष्ट्रवाद के सही स्वरूप को समझना और उसके श्रोतों को बल देना साम्प्रदायिकता से लड़ने के लिए अवश्यक है। भारतीयकरण राष्ट्रवाद का ही दूसरा नाम है ।

"राजा कालस्य कारणम्" एक सनातन सत्य है। इसलिए राजा और राजनीति का साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने में बड़ा हाथ रहता है। दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता के बाद भारत के शासक दल ने अपने लिए सुरक्षित वोट बैंक बनाने के लिए योजनाबद्ध ढंग से मुस्लिम सांप्रदायिक और जातिमत अलगाववाद को बढ़ावा दिया। अन्य दलों ने उसका अनुकरण किया। फलस्वरूप सम्प्रदायवाद और जातिवाद को बढ़ावा देना भारतीय राजनीति का अंग बन गया है। राजनीति की रोटी सेंकने के लिए शासक वर्ग तथा अन्य दलों के नेता सम्प्रदायवाद को बढ़ावा दे रहे हैं।

साम्प्रादायिकता का किसी व्यक्ति के अच्छा शेव, वैष्णव शिया या सुन्नी होने से सम्बध नहीं।

हिंदू संगठनों और मुस्लिम संगठनों को एक स्तर पर रखना गलत है। हिंदु शब्द हिन्दुस्तान की राष्ट्रीयता का परिचायक है किसी पन्थ या मजहब विशेष का नहीं।

राम जन्मभूमि विवाद

राम जन्मभूमि अयोध्या के सम्बंध में विवाद सांप्रदायिकता का कारण नहीं परिणाम है। श्री राम को कोई विष्णु का अवतार माने या न माने परन्तु कोई इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि वे भारत माता की एकता और सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं। उनकी याद राष्ट्र की अस्मिता से जुड़ी हुई है। किसी सम्प्रदाय विशेष से नहीं।

बाबर एक विदेशी आक्रान्ता था। उसका मूल स्थान मध्य एशिया में फरगाना नामका नगर था। वहां से बढ़कर उसने पहले काबुल पर अधिकार किया और बाद में भारत के कुछ भाग पर। उसकी मृत्यु 1539 में काबुल में हुइ थी। उसका मकबरा काबुल में है।

जो लोग अपने आपको राम के साथ जोड़ने के बजाय इसलिए बाबर के साथ जोड़ते हैं कि वह भी इस्लामवादी था। वे अपनी साम्प्रदायिकता का परिचय देते हैं। उनकी हठधर्मी के कारण राम जन्मभूमि का प्रश्न अब भारतीय राष्ट्रवाद की कसौटी बन गया है। यह प्रसन्नता की बात है कि बहुत से मुसलमान भी अब इस बात को समझने लगे हैं और मन्दिर तोड़कर बाबर के आक्रमण की यादगार के रूप में बनायी गयी मस्जिद को वहां से हटाकर श्री राम की यादगार का मन्दिर बनाने की मांग करने लगे हैं।

यह कहना गलत है कि रामजन्मभूमि का मामला विश्व हिंदू परिषद ने उठाया है। उसे सर्वप्रथम लोकसभा में एक सितम्बर 1961 को मैंने उठाया था। तब विश्व हिन्दू परिषद बनी ही नहीं थी। मैंने अपने भाषण में यह भी कहा था कि यदि कहीं कोई मस्जिद तोड़कर मन्दिर गुरुद्वारा, बनाया गया है तो उन्हें भी हटा लेना चाहिए ताकि वहां पुनः मस्जिद बनायी जा सके।

अयोध्या में श्रीराम के मन्दिर के निर्माण के काम में विलम्ब करने या रोड़े अटकाने से साम्प्रदायिकता को बल मिलेगा।

खण्डित भारत पाकिस्तान और बंगला देश का पुनः मिलाकर भारत को अखण्ड करना वांछित है। वियतनाम का एकीकरण हो चुका, जर्मनी का हो रहा है और कोरिया पुनः एक होने जा रहा है। इसलिए कोई कारण नहीं कि भारत को पुनः एक क्यों न किया जाय। पाकिस्तान के अन्दर के घटनाचक्र ने भारत को पुनः एक करने की सम्भावना को उजागर कर दिया है। मगर उसके ठोस रूप लेने में अभी समय लगेगा।

परन्तु भारत और पाकिस्तान के एक हो जाने से साम्प्रदायिकता खत्म नहीं होगी। मुस्लिम साम्प्रदायिकता का मूल आधार और प्रेरणा स्रोत इस्लाम के "मिल्लत" और "कुफर" "दार-उल-इस्लाम" और "दार-उल-हरब तथा "जिहाद" की परिकल्पनाएं हैं। भारत के पंथों की साम्प्रदायिकता मुस्लिम साम्प्रदाकिता को खत्म करने के लिए मूलतः दो बातें आवश्यक हैं। पहली है इस्लाम का आधुनिकरण उसे तर्क और विज्ञान के अनुरूप बनाना और दूसरे ऐसे हालात पैदा करना कि साम्प्रदायवादियों को लगने लगे कि साम्प्रदायियकता उनके अपने हितों के लिए भी घातक सिद्ध हो सकती है। अभी तक उन्हें लग रहा है कि साम्प्रदायिकता और अलगाववाद उनके लिए हितकर है उन्होंने पाकिस्तान भी ले लिया और खंडित भारत में भी उन्हें विशेष अधिकार प्राप्त है। यह स्थिति बदलनी होगी।

राष्ट्रवाद और सेक्युलरवाद का तकाजा है कि सम्प्रदाय के आधार पर नागरिकों में भेदभाव न हो सभी नागरिकों के लिए समान कानून हो और कानून के सामने सभी नागरिक समान हैं। आज के भारत राज्य में तो ये बातें नहीं इसलिए इसे धर्म निरपेक्ष राज्य कहना गलत है। व्यवहार में यह अल्पसंख्यकों की ओर झुका हुआ साम्प्रदायिक राज्य है।

साम्प्रदायिकता खत्म करने के लिए इस स्थिति को बदलना होगा संविधान से धारा 30 निकालनी होगी और समान कानून सम्बन्धी धारा 44 पर अमल करना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि देश के राजनेता अपने चिन्तन में बदलाव लाएं, "मनसा वाचा कर्मणा"। राष्ट्रवादी बनें और व्यक्तिगत तथा दलगत स्वार्थों के लिए साम्प्रदायिकता की राजनीति से खेलना बन्द करें। □

मोर्चा सरकार की विघटनकारी नीतियों पर आर्यसमाज की प्रतिक्रिया

• स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, सरकार के हाल ही में उठाए गये कदमों से चिन्तित है जिनके तहत वर्तमान राष्ट्रीय मोर्चा सरकार सम्प्रदायकवादी तथा देशद्राही तत्वों को हर सम्भव उपहार देने की होड़ में लगी है।

राष्ट्र की एकता और अखण्डता पर पहला प्रहार मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का फैसला लेकर किया गया। मण्डल आयोग की सिफारिशें हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के प्रक्षेपों तथा झूठे तथ्यों पर आधारित हैं।

इसके तुरन्त बाद एक और सम्प्रदायिक घोषणा राष्ट्र के 44 वें स्वतन्त्रता दिवस पर मोहम्मद हजरत के जन्मदिवस को राष्ट्रीय अवकाश घोषित करके की गई। आर्य समाज पूछता है कि यह सरकार इस प्रकार के निर्णय लेते समय राष्ट्र को एक संगठित शक्ति के रूप में क्यों नहीं देखती? क्या प्रधानमन्त्री यह नहीं जानते कि राष्ट्र आर्यसमाज का ऋणी है जिसके सार्वाधिक बलिदान स्वतन्त्रता आन्दोलन में दिए गए और जिसके प्रर्वतक महर्षि-दयानन्द का एक देश भक्त तथा समाज सुधारक के रूप में योगदान राष्ट्र के प्रतापी इतिहास का अखण्ड हिस्सा है।

यदि हजरत मोहम्मद का जन्मदिवस राष्ट्रीय अवकाश हो सकता है तो महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस राष्ट्रीय अवकाश न होने का कोई कारण ही नहीं। हमारे राष्ट्र की विभिन्न विचारधाराओं एवं समूहों से सरकार एक समान व्यवहार क्यों नहीं करती?

सारा राष्ट्र जानता है कि ब्रिटिश सरकार अपनी हुकूमत को कायम रखने के लिए इसाईयत में धर्मान्तरण को हर प्रकार का सहयोग व प्रोत्साहन देती रही है। आज यही ईसाई समुदाय उन दलितों व हरिजनों के लिए जो ईसाई बन गये थे, समस्त पूर्व सुविधाओं की मांग कर रहा है। उनका कहना है कि जब धर्मान्तिरत बौद्धों को सभी पूर्व सुविधाएं मिल सकती हैं तो धर्मान्तिरत ईसाईयों को क्यों नहीं? यह कथन कि धर्मान्तरण से सामाजिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आता, उनके अपने धर्मान्तरण प्रचार को छुपाने की एक चाल है। ईसा के नाम पर यही नेता दावा करते हैं कि ईसाई धर्म में प्रवेश करने से हरिजनों की सामाजिक स्थिति सुधर जाएगी क्योंकि वे हरिजन नहीं रहेंगे। आर्यसमाज सरकार से पूछता है कि क्या सब असंवैधानिक तथा राष्ट्र-द्रोह नहीं है कि एक समूह समाज में वर्ग संघर्ष को बढ़ाने के लिए कार्यरत है और सरकार उन्हीं को मदद देना चाहती है।

जब इस प्रकार के तत्व ईसाईयत या इस्लाम के नाम पर हमारे राष्ट्र की एकता को तोड़ने में लगे हैं तो केन्द्रीय सरकार खामोश क्यों हैं?

इसी प्रसंग में ईसाईयों से भी सवाल करते हैं कि -

"क्या वे विदेश से प्राप्त धन को उन सभी हरिजन तथा समाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ी जातियों में बाँटने के लिए तैयार हैं जिन्होंने धर्मान्तरण से इन्कार कर दिया है। यदि ऐसा नहीं हो सकता तो हरिजनों को मिलने वाली विशेष सुविधाएं उन्हें क्यों मिलें जो अपना धर्म छोड़ चुके हैं जिसके कारण उन्हें सुविधाएं मिलती थीं।"

आर्यसमाज ने देश को असंख्य शहीद जैसे पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, स्वामी-श्रद्धानन्द आदि दिए, परन्तु आज किसी भी राष्ट्रीय पर्व पर सरकार द्वारा इन आर्य समाजी नेताओं को याद करने की जगह उन लोगों के नाम लिए जाते हैं जिन्होंने कोई उल्लेखनीय राष्ट्रसेवा नही की। आर्य समाजियों को ब्रिटिश राज का शत्रु उस समय माना जाता था जब कांग्रेस की स्थापना भी नहीं हुई थी। उन्हें हर प्रकार की यातनाएं दी जाती थीं और अपने राष्ट्र भक्त विचारों के कारण ही आर्य समाजियों को फौज में भर्ती के काबिल नहीं समझा जाता था।

आर्यसमाज जैसी राष्ट्रवादी ताकत का धैर्य अब लगभग समाप्त होता जा रहा है। सरकार को इसे महसूस कर लेना चाहिए और न्यायोचित कदमों पर विचार करना चाहिए।

इन सब वर्तमान समस्याओं पर निर्णय लेने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक शीघ्र ही बुलाई जायेगी। □

पृष्ठ ८ का शेष...

विश्व विद्यालय से आचार्या प्रज्ञावती जी को बुलाया गया। उन्हें देखकर शंकराचार्य जी महाराज कहने लगे कि अब पैर की जुती आ रही है। यह शब्द प्रज्ञावती जी ने सुने। तब हँस कर कहने लगीं, कि यह जूती अब आपके ही सिर पर पड़ने वाली है। ऐसा ही हुआ भी वे शंकराचार्य जी महाराज को सबके सामने मुँह की खानी पड़ी। प्रज्ञावती जी विजयी रहीं।

लिखने का तात्पर्य यह है कि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने जो कार्य किया संसारमें उसकी दूसरी मिसाल नहीं है। उन्होंने मनु महाराज के शब्दों में कहा है कि .-
"यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रै तास्तु न पुज्यन्ते सर्वास्तत्रा फलाः क्रियाः ।।
अर्थात् जहाँ पर नारियों की पूजा होती है। वहाँ देवता निवास करते हैं। और जहाँ पर सदा नारियों का तिरस्कार होता है। वहाँ पर की गई सब क्रियायें निष्फल ही हो जाती है। इसलिए नारियों का आदर सम्मान करना चाहिए।

इस प्रकार हम कह सकते है कि नारी समाज महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का सदैव ऋणी रहेगा।

आर्यसमाज रेणुकूट- ☆ सोनभद्र

प्रधान - श्री लालमन सिंह
मन्त्री - श्री युगेश सिंह पटेल
कोषाध्यक्ष- श्री अमरेश सिंह,

मण्डल आयोग की रिपोर्ट से वर्ग संघर्ष का खतरा

सरकार ने मण्डल आयोग की रिपोर्ट को लागू कर राष्ट्र को विभाजन के गर्त में धकेलने का जो कार्य किया है वह राष्ट्र घाती है आज समूचा राष्ट्र पुन टू नेशन थ्योरी" की अग्नि में जलने लगा है जो प्रतिभाशाली हैं उनका अपमान और जो बैसाखी लगाकर ऊपर आना चाहते है उनका सम्मान यही मण्डल आयोग रिपोर्ट है। यदि इसे बिना शर्त वापस नहीं लिया गया तो आर्य समाज राष्ट्र व्यापी आन्दोलन शुरू करेगा। जब तक सरकार आरक्षण समाप्त कर समान नागरिक संहिता की स्थापना नहीं करती तब तक आर्य समाज का आन्दोलन जारी रहेगा उपरोक्त विचार हैं आर्य समाज के महोपदेशक डा0 आनन्द सुमन सिंह के।

डा0 सुमन ने यहाँ एक लिखित वक्तव्य में कहा है कि मण्डल आयोग की रिपोर्ट के कुछ ही अंशों को लागू होने से जो भयावह स्थिति मानने आयी है यदि इसे पूरा लागू कर दिया गया तो इसके परिणाम अत्यन्त गम्भीर होंगे। अछूत हरिजन बैकवर्ड आदि के नाम पर जो लोग अपनी राजनीति की रोटियां सैंक रहें हैं वह समूचे राष्ट्र के लिए घातक है वास्तव में यह अंग्रेजों द्वारा प्रतिपादित दो राष्ट्र नीति का ही अंग है जिसके कारण एक बार राष्ट्र का विभाजन हो चुका है।

डा0 सिंह ने कहा 52% स्थान आरक्षित कर सरकार ने जो स्वतन्त्रता दिवस पर झूठी वाहवाही लूटी है क्या उसके उलटे उन प्रतिभाशाली छात्रों के बारे में सोचा है जो इस प्रकार के समाचार पढ़ कर अपनी प्रतिभा पर आंसू बहा रहें हैं यह राष्ट्र का अपमान है, मण्डल आयोग की रिपोर्ट हीन भावना और पूर्वाग्रह से ग्रस्त है अतः सरकार इसे बिना शर्त वापस ले, अन्यथा राष्ट्र व्यापी आन्दोलन की जिम्मेदारी सरकार की होगी।

डा0 सिंह ने कहा कि आर्य समाज पहली संस्था है जिसने हरिजनों को पंडित बनाया बाबू जगजीवन राम, मोहन लाल पिप्पल और पं0 चिन्तामणि आर्यसमाज की ही देन हैं किन्तु आरक्षण के नाम पर सरकार सवर्ण और हरिजन का जो हौवा खड़ा कर रही है वह राष्ट्र घाती है। भारत का प्रत्येक नागरिक केवल भारतीय है उसमें न कोई छोटा है और न बड़ा फिर सभी के लिये समान अवसर हों। मण्डल आयोग के नाम पर अनेक लोग धर्म परिवर्तन कर रहें हैं तब भी उन्हें वही सुविधायें मिलेंगी जो पूर्व रूपी हरिजन में मिलती थीं ये कैसा कानून है।

☆ आर्यसमाज सिठौली (बदायूँ)

प्रधान - श्री महेशकुमार सिंह आर्य,
मन्त्री - श्री मोहनलाल आर्य,
कोषाध्यक्ष- श्री ध्रुवेन्द्रपाल सिंह आर्य

☆ आर्यसमाज विकासनगर, लखनऊ

प्रधान - श्री कृष्ण पाल सिंह आर्य
मन्त्री - श्री कैशीलाल आर्य,
कोषाध्यक्ष- श्री डोरीलाल

वेद प्रचार सप्ताह

श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वैदिक धर्म प्रचार प्रसार सप्ताह में आर्यसमाज तिघराघाट पीपीगंज,गोरखपुर की ओर से बड़े समारोह के साथ मनाया गया। जिसमें 200 पुस्तकें वितरित की गई तथा बच्चों नवजवानों को यज्ञ,सन्ध्या का प्रशिक्षण दिया गया तथा कई लोगों को यज्ञोपवीत भी दिया गया और लोगों ने शराब,जुआ,मांसाहार,धूम्रपान आदि छोड़ने की शपथ ली।

ध्यानयोग शिविर का आयोजन

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) में दिनांक 22 से 29 सितम्बर तक आयोजित किया जा रहा है जिसमें स्वामी क्रियानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। योग प्रेमी आवश्यक सामान, हल्का बिस्तर लावें, कृपया स्वस्थ सज्जन ही आवें निवास व भोजन का प्रबंध आश्रम की ओर से होगा। साथ ही कतिपय विद्वानों के व्याख्यान भी सभी को सुनने को मिलेंगे।

-भजनानन्द सरस्वती
मुख्याधिष्ठाता आश्रम।

● आर्य समाज विलसंडा (पीलीभीत) मे दिनांक 6-8-90 से 14-8-90 तक वेद प्रचार सप्ताह "श्री धर्मवीर विद्यालंकार" वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के वैदिकधर्मप्रचार के माध्यम से सम्पन्न हुआ।

● श्री ब्रह्मचारी कुड़क देव जी आर्य, श्रीयुत राम लाल जी आर्य, श्री प्रभात आर्य मण्डली सहित (उपदेशक प्रचारक, आर्य उप-प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद)

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी जनपद मुरादाबाद अधोलिखित ग्रामों में मास जुलाई 1990 में पद यात्रा कार्यक्रम प्रारम्भ किया। उनके इस कार्यक्रम से जहाँ इन ग्रामों में वैदिक धर्म की भावनायें और प्रचार में वृद्धि हुई वहीं नवीन आर्य समाजों की स्थापना भी की गई। क्षेत्र-वासियों ने इस प्रकार के कार्यक्रम का सभी प्रकार से हार्दिक स्वागत किया। 1-बिकनी 2-रघुनाथपुर 3-कड़ापुर 4-मंजूपुरा 5-पुरनपुर 6-रसूलपुर 7-डिडौली 8-हसनपुर कलां 9- पतई खालसा 10-नजरपुर 11- लोदीपुर राजपूत 12- मसेवी 13- नगला निडर 14- जमापुर 15-मकनपुर 16- मढन।

● **रक्षाबंधन पर वेद प्रचार**

रक्षाबंधन का पावन पर्व जो कि ऋषि तर्पण और श्रावणी उपा कर्म के नाम से जाना जाता है। वैदिक ऋषियों के ऋण से उऋण होने हेतु वेद रक्षा एवं प्रचार के व्रत ग्रहण का पर्व है। इस पवित्र अवसर पर आर्यसमाज बारो की ओर से वैदिक प्रवचनों का आयोजन किया गया।

● आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी में श्रावणी उपाकर्म व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया गया जिसमें अनेक विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान हुए। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

● आर्यसमाज गोविन्द बाग बलरामपुर (गोण्डा) में श्रावणी पर्व दिनांक 6 से 14 अगस्त तक नगर के भिन्न-भिन्न स्थानों में आयोजित किया गया। संत रविदास मन्दिर व हरिजन बस्तियों में आयोजित कार्यक्रम बड़े ही प्रभावशाली रहे। हरिजनों पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। उन्होंने मांसाहार और मदिरापान को त्यागने का व्रत लिया।

● आर्यसाज मीरजापुर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह 6 अगसत से 15 अगस्त तक धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

● आर्यसमाज नेमदारगंज (नवादा) द्वारा वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया।

● आर्यसमाज लालगंज (रायबरेली) में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व ससमारोह से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ,भजन, वाद-विवाद प्रतियोगिता के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने वाले ध्यानचन्द्र आर्य को पुरस्कृत किया गया।

● श्री दोदराज वैदिक आश्रम रफयतपुर (बदायूं) में जन्माष्टमी पर्व के उपलक्ष्य में दिनांक 14 से 16 अगस्त को उत्सव के रूप में मनाया गया। जिला सभा के प्रधान श्री रामकुमार जी आर्य ने नवयुवकों से बुरे व्यसनों को छोड़ने का आह्वान किया।

● आर्यसमाज फतेहाबाद (आगरा) में वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 7 से 14 अगस्त तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

● आर्य समाज भरथना (इटावा) में वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 7 से 14 अगस्त तक धूमधाम से मनाया गया। जिसमें श्री स्वामी दर्शनानन्द जी उपदेशक अलवर तथा श्री सीताराम जी भजनोपदेशक पधारे। कार्यक्रम बहुत ही रोचक रहा।

● आर्यसमाज बदायूं में श्रावणी पर्व उत्साह व हर्ष के वातावरण में सम्पन्न हुआ। तथा श्री कृष्णजन्माष्टमी पर्व हर्ष के साथ मनाया गया। कई विद्वानों के व्याख्यान हुए। उपस्थित जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

--

● आर्यसमाज विकासनगर, लखनऊ द्वारा वेद प्रचार सप्ताह रानी लक्ष्मीबाई-मैमोरियल स्कूल में सम्पन्न हुआ जिसमें आचार्य श्री रामकृष्ण जी शास्त्री का बड़ा हो विद्वतापूर्ण प्रवचन हुआ। और कई विद्वानों के भी प्रवचन हुए जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

● आर्यसमाज शंकरगढ़, जनपद इलाहाबाद में 14 अगस्त को श्री कृष्ण जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष एवं वृहद कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रात: 8 बजे हवन वृहद रूप से आर्य सभासदों एवं अन्य गण्य मान्य व्यक्तियों के साथ सम्पन्न हुआ। रात्रि में श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

अन्तरंग सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के माननीय पदाधिकारियों तथा अंतरग सदस्यों की बैठक दिनांक 16 सितम्बर 1990 दिन रविवार को प्रात 11 बजे नारायण स्वामी भवन 5,मीराबाई मार्ग,लखनऊ में सम्पन्न होगी।

अत: सभी महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि नियत समय पर सभा भवन में पधार कर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करें।

मनमोहन तिवारी,मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा,उ0प्र0।

आवश्यक सूचना

1- प्रदेश की समस्त आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/मंत्री तथा आर्यसमाजों स्त्री आर्यसमाजों के प्रधान/मंत्री गण से निवेदन है कि वह अपनी समाजों के वार्षिक चित्र शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय में भेजें।

2- जिला सभायें, आर्यवीर दल, आर्यकुमार सभा अपनी रिपोर्ट भी शीघ्र ही भेजें, सभा की रिपोर्ट छपने जा रही है।

मनमोहन तिवारी,मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा,उ0प्र0।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण तथा आर्यमित्र के ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि लखनऊ में प्रकाशित होने वाले आर्यमित्र साप्ताहिक का पंजीकरण सं0-एल0डब्ल्यू0एन0 पी079 है। इसका वितरण पोस्ट आफिस में पंजीकृत उक्त नियमानुसार केवल 00 15 पैसे के टिकट द्वारा होना है। अन इस पर अतिरिक्त टिकट या शुल्क दिया जाना अवैध है

— प्रबन्ध सम्पादक

आर्यसमाज आवास विकास कालोनी काशीपुर (नैनीताल)

प्रधान - श्री राजेन्द्रपाल आर्य,
मन्त्री - श्री त्रिलोकचन्द्र आर्य,
कोषा0- श्री शान्ति प्रसाद गोयल,

जाति-पांति मिटानी है

गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम.ए.,एम.फिल.
जबलपुर

यदि हिन्दुओं को संगठित करना है, तो जाति पाँति भी मिटानी है।
यदि आर्यसमाज को बढ़ाना है, तो अनार्य रीति हटानी है।।1।।

किसी मुद्दे पर एक हो जाना, तो कोई मेल नहीं है।
तेल पानी को एक करना कोई हँसी खेल नहीं है।।2।।

भेद भी रखना मेल भी कहना, यह तो सच्ची बात नहीं है।
संगठन कभी न दृढ़ होगा, जब तक सच्चा मेल नहीं है।।3।।

जात - पात तोड़कर, सबको ही समान कर दो।
जो भेद की दीवारें खड़ी हैं उन्हें चूर-चूर कर दो।।4।।

जब तक जात - पांत रहेगी, दिलो एकता न होगी।
ऊपर से मुस्कराते हुए, भीतर से घात होगी ।।5।।

न संस्कृत जानते हैं अरू नहीं वेद पढ़ते।
फिर किस प्रकार अपने को हैं द्विज श्रेष्ठ कहते।।6।।

जन्माधारित वर्ण व्यवस्था को बिल्कुल ही तोड़ दो।
उसे गुण कर्म स्वभाव से धर्म पूर्वक जोड़ दो।।7।।

हिन्दुओं में अभी है ऐसा मेल, जैसे हों पानी औ तेल।
जाति-पाँति का रेलम पेल, कैसी एकता कैसा मेल ।।8।।

साहस व सचाई से तुम ऐसा ऐलान कर दो।
कि हम में कोई भी ऊँचा या नीचा नहीं है ।।9।।

सभी वर्ण बराबर हैं, ऐसा ऐलान कर दो।
सदियों का द्वेष मिटाकर परस्पर प्रेम भर दो।।10।।

सत्य कितना भी खराब दिखे, उसे स्वीकार कर लो।
असत्य कितना भी मोहक हो, उसे दूर हीकर दो ।।11।।

जाति को ऊँचा मत मानो, चरित्र को ऊँचा उठाओ।
अभिमान दर्प त्यागकर सबको ही गले लगाओ।।12।।

हिन्दुओं की संख्या बढ़ानी है, तो अहिन्दुओं को हिन्दू बनाओ।
अन्यों को हिन्दू बनाने को, हिन्दू की जाति-पाँति मिटाओ।।13।।

जाति-पाँति को बनाए रखोगे तो शुद्धि कैसे कर पाओगे।
शुद्ध हुए हिन्दू को वापस किस जाति में ले आओगे।।14।।

एकता संगठन और शक्ति यदि अपने में लानी है।
तो जाति-पाँति तोड़कर एक आर्यजाति भी बनानी है।।15।।

इक्कीसवीं सदी

अशोक कुमार तिवारी
बोकारो (बिहार)

इक्कीसवीं सदी का जन्मोत्सव मनाने में अभी लगभग एक दशक बाकी है लेकिन उसकी तैयारियाँ तथा चर्चे जोरों पर हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की खबरें हों, गाँवों की चौपाल या पान की दूकान की गपशप हर जगह इक्कीसवीं सदी के सपने देखे जा रहे हैं।

राजनीतिक पार्टियाँ भले ही बीसवीं सदी में कुछ नहीं कर पाई हैं, मुद्रास्फीति तथा गरीबी का औसत अनुपात लगातार बढ़ा है, चारों तरफ अफरा तफरी मची है लेकिन इक्कीसवीं सदी के सब्ज बाग़ के सबने दिखाने में वे भी पीछे नहीं हैं।

समाज का अधिकांश उच्च वर्ग अपने खातों को बढ़ाने तथा विदेशी खाते जमाने की योजना में व्यस्त है। दोनों हाथों से समाज की सारी सम्पदा अपनी तिजोरियों में रख लेने के लिए आतुर है।

वहीं समाज का निम्न वर्ग जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा है। अपने नंगे बदन पर अंगोछा डालता हुआ, भूखे पेट पर हाथ फेरता हुआ, सूनी आँखों से ही अदम साहब के शब्दों में ये अनकहे प्रश्न कर रहा है :-

"सौ में सत्तर आदमी जब नाबाद है, तो दिल पे हाथ रख के कहिये क्या हिन्दुस्तान आजाद है।"

"कोठियों से मुल्क की संपदा मत आँकिए असली आबादी तो फुटपाथ पर आबाद है।"

उक्त दोनों वर्गों के बीच में मध्यम वर्ग जो उच्च वर्ग की तरफ ललचाई तथा निम्न वर्ग की तरफ आह। ही नजरें रखता है कुछ अलग ही सोच रहा है। जिस देश समाज का मध्यम वर्ग बहुसंख्यक तथा शक्तिशाली होता है, वह समाज उतना ही सन्तुलित तथा टिकाऊ होता है। संक्षेप में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की कल्पना को साकार करने में यही वर्ग प्रमुख भूमिका अदा करता है। अधिकांशतया इसी वर्ग से निकलने वाले नौनिहाल भावी इन्जीनियर डाक्टर, शैतिहर तथा तकनीशियन भी होंगे जो भारत को इक्कीसवीं सदी में विश्व महाशक्ति देखना चाहते हैं, क्योंकि आज भारतीय जनमानस की भी यही चाह है।

स्वतन्त्रता के तैंतालिस वर्ष बाद आज भी देश के चालीस प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे गुजर कर रहे हैं। हमारे भावी कृष्ण और अर्जुन के कन्धों पर चालीस प्रतिशत जनसंख्या के थके-हारे-नंगे बदन, रोटी-कपड़ा और मकान के भार के साथ ही साथ जातिवाद और धार्मिक कट्टरता आदि का भी भार है।

ऐसे में क्या वे भारत को एक विश्व महाशक्ति बना सकेंगे। क्या हमारे सभी सामाजिक वर्ग और हमारी सरकार भी उनके कन्धों को, मस्तिष्क को इतना सबल बनाने का उचित उपक्रम कर रही है। यही स्मरणीय तथा विचारणीय प्रश्न है। हर सच्चे भारतीय शिक्षाविदों तथा वैज्ञानिकों आदि का पुनीत कर्तव्य भी है।

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या:- "शौच एक वर्ष से साफ नहीं होती है। कभी कभी दो रोज पर शौच होता है। इसके कारण काफी कमजोरी है। उचित व्यायाम भी बतावें।"
-रामविलास आर्य, ग्राम-पहाड़पुर, डाकघर-हेतमपुर (वाराणसी)

समाधान:- प्रातराश में एक मुट्ठी अंकुरित चने चबाकर एक प्याला दूध में मनोल (चरक) तीन चम्मच घोलकर पिया करें। प्रत्येक भोजन बाद अभयारिष्ट 2 ढक्कन समान जल के साथ मिलाकर पिया करें। रात्रि भोजन के आध घण्टा बाद बड़ी हरड़ का चूर्ण लगभग छह ग्राम जल से लिया करें। भोजन के साथ सलाद-फल भी लेना चाहिए। प्रातः खाली पेट क्रमवार भुजंगासन, उत्तानपादासन, हलासन और सर्वांगासन किया करें।

समस्या:- "मेरे बाल बहुत ही गिरने लगे हैं।"
- कु. सुनीता, 99/5 प्रियदर्शिनी छात्रावास इलाहाबाद।

समाधान:- प्रातः दो चम्मच कलौंजी, आधा प्याला पानी में भिगोयें। रात्रि को पीस कर बालों में पाँच मिनट तक मलें। ऐसा दो सप्ताह तक करें। सिर में साबुन का प्रयोग न करें। एक लीटर पानी में चार आँवले उबाल कर आधा करें। इस पानी में दही मिलाकर एक बार सप्ताह में सिर के बाल धोया करें। पचास ग्राम नारियल के तेल में दो चम्मच साबुत मूँगदाल के दाने शीशी में रखें। इसे केश तेल के रूप में प्रयुक्त करें। यह उपचार करने से बाल गिरने की समस्या से आप बाल-बाल बच जायेंगी।

0- समस्या विवरण के साथ तीन डाक लिफाफे निम्न पता पर भेजें।

गुरुकुलानन्द सरस्वती

शुभ विवाह सम्पन्न

काशीपुर आर्यसमाज के सदस्य श्री हीरा सिंह चौहान के सुपुत्र चि0 वीरेन्द्र कुमार चौहान का विवाह सौ0 रुपारानी सुपुत्री श्री धर्मसिंह मुरादाबाद निवासी के साथ 28-4-90 को स्वामी समतानन्द के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।"

आर्यसमाज रम्पुरा, रुद्रपुर (नैनीताल)

प्रधान- श्रीमती डा0 प्रतिमा शास्त्री,
मंत्री- श्री वेद मित्र आर्य,
कोषाध्यक्ष- श्री ब्रह्म मित्र आर्य,

पजीकरण स० एल० डब्ल्यू / एन० पी० ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
आश्विन कृष्ण १२ सवत २०४७ वि
दिनाक १६ सितम्बर १६६०

दूरभाष
२४५६६२

सेवा मे

12946 श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

मान्यवर लेखकों से नम्र निवेदन

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्यसमाज के प्राण थे। उनके कृतित्व एव व्यक्तित्व ने वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा को सर्वोच्च शिखर तक पहुँचा दिया था। आर्य मित्र आगामी दिसम्बर मे स्व0 प्रकाश वीर शास्त्री एव अमर शहीद स्वा0 श्रद्धानन्द जी की पुण्यस्मृति मे एक विशेषाक प्रकाशित कर रहा है।

अत मान्य लेखकों से नम्र निवेदन है कि उक्त दोनों नेताओ के कृतित्व एव व्यक्तित्व पर अपने लेख/कविताएँ आदि 30 अक्टूबर 1990 तक मुझे अवश्य भेज देने की कृपा करें।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक,
प्रबध सम्पादक।

आर्य मित्र में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं.२२४१/५७) आश्विन शुक्ल-४ रविवार सवत् २०४७ वि. दिनांक २३ सितम्बर १९९० (घोषणापत्र सं.७/२८-२-२५)



मुझे आर्य बनाओ

विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धयाशासदव्रतान्। शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन्।।

हे प्रभो? आपको भले बुरे सभी प्रकार के मनुष्यों का ज्ञान है। हमें ऐसी उत्तम स्थितियाँ और साधन प्रदान करो जिनके द्वारा हम व्रतस्वी तथा आर्य बनें।

--

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१ रू. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक - ३७

अन्तरंग सभा का सर्वसम्मत निर्णय

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का आगामी १०५वाँ वार्षिक बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन १९९०-९१

दिनांक - २४ तथा २५ नवम्बर १९९० को डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा की एक महत्वपूर्ण बैठक लखनऊ में नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग पर दिनांक- 16 सितम्बर 1990 को श्री पं0 इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें सर्वसम्मति से दिनांक 24 तथा 25 नवम्बर 1990 को लखनऊ के डी0ए0वी0 कालेज के प्रांगण में सभा का आगामी वार्षिक बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न कराने का निर्णय लिया गया। वार्षिक बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन का कार्यक्रम निम्नवत् है:-

(1)	सभा कार्यालय में चित्रों के प्राप्ति की अन्तिम तिथि	15-10-90	-	(सोमवार)
(2)	प्राप्त चित्रों की जाँच	16-10-90 से 19-10-90 तक	-	(मंगलवार से शुक्रवार तक)
(3)	मतदाता सूची का प्रकाशन	22-10-90	-	(सोमवार)
(4)	आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	25-10-90	-	(बृहस्पतिवार)
(5)	आपत्ति का निवारण	26-10-90 से 27-10-90 तक		(शुक्रवार से शनिवार तक)
(6)	शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	6-11-90	-	(मंगलवार)
(7)	बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	24,25-11-90		(शनिवार तथा रविवार)
(8)	चुनाव परिणाम की घोषणा -	निर्वाचन की समाप्ति के बाद।		

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उ0प्र0
नारायण स्वामी भवन
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

लखनऊ आश्विन शुक्ल-४ संवत् २०४७ वि.

दिनांक २३ सितम्बर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

जनगणना में "आर्य" लिखाएं

सम्पूर्ण भारतवर्ष में सन् 1991 से प्रारम्भ होने वाले दशक के लिए जनगणना का कार्य शीघ्र प्रारम्भ होने जा रहा है। यह कार्य शासन द्वारा प्रशिक्षित कर्मचारियों के माध्यम से घर-घर जाकर प्रतिव्यक्ति के सम्बन्ध में अपेक्षित जानकारी उपलब्ध करके उसे स्थायी रिकार्ड के रूप में एक निर्धारित प्रपत्र पर लेखबद्ध करना है। अपेक्षित जानकारी में उसकी जाति सम्बन्धी सूचना भी लिखी जायेगी। यह जानकारी अति गोपनीय रूप में भारत सरकार के पास सुरक्षित रहेगी। इसी जनगणना के आधार पर देश में रहने वाले हिन्दू, मुस्लिम, सिख, पारसी, ईसाई आदि की संख्या का अनुपात लगाया जायेगा।

यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसकी ओर समस्त आर्यजनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए सभा अलग से एक परिपत्र निर्गत कर रही है। अत समस्त हिन्दू विशेषत आर्यत्व प्रेमी भारतीय जनता से अनुरोध किया जाता है कि वह जातिसूचक कालम में अपने को केवल "आर्य" लिखावें और ऐसा लिखाने के लिए लोगों को अधिक से अधिक प्रेरणा दें।

आर्यसमाज प्रत्येक मानव को आर्यत्व के श्रेष्ठ गुणों से विभूषित करना चाहता है। आर्य शब्द जहां गुणवाचक है वहीं प्रभु का दिया हुआ मानवजाति के लिए श्रेष्ठतम संज्ञासूचक नाम भी है। विश्व को आर्य बनाना "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" हमारा लक्ष्य है। आर्यसमाज का उदय एक संस्था के रूप में विश्व को आर्य बनाने हेतु ही हुआ था। हम समस्त विश्व में आर्य जीवनदर्शन-शैली का विकास करना चाहते हैं और इसी के लिए अपने स्थापनाकाल से प्रयत्नशील हैं। आर्यसमाज को अपनी संगठन शक्ति एवं अपने वर्चस्व का दिग्दर्शन कराने के लिए आवश्यक है कि आर्यों की संख्या के सरकारी आँकड़ों के माध्यम से भी विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया जाये।

इसके लिए आवश्यक है कि आगामी जनगणना में:-

(1) आर्यसमाजों के सदस्य एवं आर्य परिवारों के समस्त व्यक्ति अपने विवरण के जातिसूचक कालम में अपने को केवल "आर्य" लिखावें।

(2) आर्यसमाजों के अधिकारी एवं समस्त आर्यजन इस दिशा में सक्रिय होकर समस्त भारतीयों को अधिक-से अधिक संख्या में "आर्य" लिखाने हेतु प्रेरित करें।

(3) इस कार्य को प्रेरणा देने के लिए "विशेष आर्यजनजागरण अभियान" भी चलाया जाये जिसमें गोष्ठियों/व्याख्यानों/प्रभातफेरियों/ तथा प्रचार के अन्य समस्त साधनों का उपयोग करके जनता को "आर्य" लिखाए जाने के लिए उत्साहित किया जाय।

आर्य जाति की अपनी विशेषताओं में एक यह भी है कि हम उन ऋषियों/मुनियों के गोत्रज हैं जिनके कुल व वंश में उत्पन्न होना गौरव की बात मानी जाती है। भगवान-राम और कृष्ण अपने को आर्यपुत्र कहते थे। महाभारत के सभी उदात्त चरित्र आर्यपुत्र के नाम से सम्बोधित किए गये हैं। 500 ईस्वीपूर्व फ़ारस के सम्राट डेरियस का एक शिलालेख मिला है जिसमें डेरियस ने अपने को "आर्यकुलदिवाकर" लिखा है। सन् 1952 में ईरान ने अपनी 2000वीं सालगिरह मनाई थी जिसमें वहाँ के शहन्शाह रज़ाशाह पहलवी ने अपने को आर्यवंशज बताते हुए अपने को "आर्यामिहर" कहा था। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि 5000वर्ष पूर्व सम्पूर्ण विश्व पर आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य था अन्य राज्य माण्डलिक थे।

आज जनतन्त्र का युग है। इसमें जनसंख्या का बहुत महत्व होता है। इसी के आधार पर राष्ट्र में सत्ताएं पदासीन होती हैं, राष्ट्रनीतियों का निर्धारण होता है। प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार नोबेल पुरस्कार विजेता सोल्जे ने कहा था कि जो कौम अपने नाम और अपने पूर्वजों को भूल जाती है वह नष्ट हो जाती है। हिन्दू नाम विदेशियों का दिया हुआ— हमारी दासता का प्रतीक है। विदेशियों के शब्दकोश में हिन्दू का अर्थ काफिर, गुलाम, दास, लिखा हुआ है जबकि आर्य नाम श्रेष्ठ का है। यह नाम सृष्टि के आदिकाल से श्रेष्ठ पुरुषों के लिए प्रयुक्त होता आया है। हमारी एकता और संगठन का प्रतीक है। अतः इस कार्य को सर्वोच्च महत्व देते हुए जनगणना में अपने को "आर्य" लिखिए लिखाइए और आर्यजाति के उत्थान में सहयोग दीजिए। ■

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में गोहत्या, धर्मान्तरण के विरुद्ध प्रदर्शन होगा।

यह अत्यन्त दुर्भाग्य का विषय है कि गो गंगा तथा गायत्री के देश में गोहत्या विरोधी प्रस्ताव भारतीय संसद में पारित न हो सका। विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा छल प्रपन्च एवं प्रलोभन के आधार पर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन निरन्तर चल रहा है। इस हेतु विदेशों तथा अन्य अवैध श्रोतों से विशाल धनराशि प्राप्त हो रही है। अब भारत सरकार भी उनको धर्म परिवर्तन के पश्चात् भी पूर्ववत् प्राप्त सुविधाएं यथापूर्व देकर धर्मान्तरण में उनको सहयोग देकर प्रोत्साहित कर रही है और ऐसा प्रस्ताव संसद में लाकर पारित करवाने का कुचक्र चल रहा है। आर्यसमाज धार्मिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना का सजग प्रहरी है। जब-जब हमारे धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक मान बिन्दुओं पर कुठाराघात हुआ है आर्यसमाज ने अग्रसर होकर जन-मानस को दिशा निर्देश किया है तथा उन दुःस्साहस पूर्ण कदमों का समूलोच्छेद किया है।

आर्यसमाज इस योजनाबद्ध धर्म परिवर्तन का विरोध करता है तथा पूरे देश में गोहत्या पर प्रतिबन्ध की माँग करता है।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

★ आर्यसमाज श्रृंगारनगर, लखनऊ

प्रधान - श्री वेदराज नन्दा,
मन्त्री - आचार्य वेदव्रत अवस्थी,
कोषा० - श्री ओ३म् प्रकाश मलिक,

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का अभूतपूर्व समारोह

१४ वाँ सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

२२ से २६ दिसम्बर १६६० तक दिल्ली में आयोजित

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कीजिए वैदिक धर्म प्रचार एव प्रसार के अनेक योजनाओं को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहायता कीजिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती एव उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज ने एक सयुक्त वक्तव्य में देश विदेश की बिगड़ती हुई राजनैतिक, आर्थिक एव सामाजिक दशा पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए वेदाधारित मानव समाज की रचना के आर्य समाज के दृढ़सकल्प को दोहराते हुए प्रदेश एव विश्व की सभी मानवता प्रेमी जनता से आगामी दिसम्बर में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की अपील की है।

ऋषिवर्य का स्वप्न अभी साकार नहीं हुआ है। परमात्मा की अमरवाणी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। भारतीय आज़ादी के बाद हमने विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार एव प्रसार की जो कल्पना की थी उसका मूर्तरूप अभी बहुत दूर है। अभी हमें बहुत दूर जाना है। पथ कण्टकाकीर्ण अवश्य है पर आर्य वह है जो कभी पराजय स्वीकार नहीं करता हारता नहीं "चरैवेति चरैवेति" उसका आदर्श है।

उक्त आर्य महासम्मेलन आर्यजगत में नवप्राणों का सचार करेगा। सोई हुई मानवता को जगायेगा और विश्वशान्ति के हमारे वैदिक पथ को प्रशस्त करेगा।

तो, आइए इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए वैदिक सस्कृति को उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने के लिए अभी से प्राणपण से जुट जायें।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज एव मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने गगा यमुना की पावन जन्मस्थली के अपने अन्तराल में सजाए इस महान प्रदेश की गौरवमयी परम्पराओं का स्मरण कराते हुए कहा है कि **राम, कृष्ण** और **दयानन्द** की यह कर्मस्थली है। इस प्रदेश की जनता ने आर्यसमाज के मस्तक को सदैव ऊँचा रखा है। हमें आशा है प्रदेश की जनता इस सम्मेलन में लाखों की सख्या में सम्मिलित होगी और इस पुण्यकार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर यश की भागी बनेगी।

अमेठी में आर्य सम्मेलन

आर्य समाज मन्दिर अमेठी में गत अगस्त को वृहद सामूहिक यज्ञ के पश्चात जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में जिला आर्य सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें प्रबुद्ध विद्वान एव मुख्य अतिथि डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने आह्वान किया कि गाँवों में भी आर्य समाज का प्रचार करने आर्य बन्धुओं के व्यक्तिगत चरित्र को उठाने हेतु धूम्रपान-मद्यपान, मांस सेवन की बुराइयों की जानकारी देने तथा उनके सेवन पर रोक लगाने हेतु उप आर्य सम्मेलन को सक्रिय योजना बनानी चाहिए।

डा० शास्त्री ने आगे बताया कि कुछ आर्यसमाज मन्दिरों में जो बारातें टिकती है, उस पर तुरन्त रोक लगनी चाहिए। उन्होने जनपद के सभी आर्य पदाधिकारियों से आग्रह किया कि आगे सत्र से उनमें चलने वाले स्कूलों को अन्यत्र ले जाने की व्यवस्था करें, जिससे बाहर से आने वाले आर्य बन्धुओं, विद्वानो, सन्यासियों, को मन्दिर में विश्राम करने में बाधा न हो। जहाँ-जहाँ मन्दिर में स्कूल चले हैं, वहाँ-वहाँ दोहरी शासन व्यवस्था के कारण आर्य समाज के पुनीत कार्यों में गतिरोध आया है।

नगर आर्यसमाज के प्रधान प०-राम अभिलाष त्रिपाठी ने अनेक वेद मन्त्रों का उद्धरण देते हुए बताया कि वेद के स्वाध्याय से हम अपना जीवन भौतिक एव आध्यात्मिक दृष्टि से सफल कर सकते हैं।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राम कृष्ण जायसवाल ने आर्यसमाज के सगठनात्मक पक्ष और आर्य साहित्य के प्रचार की दृष्टि से बताया कि अमेठी आर्यसमाज को गौरीगज मुसाफिरखाना आर्यसमाज को जगदीशपुर तथा नगर आर्यसमाज को दोस्तपुर क्षेत्र को गोद लेकर वहाँ आर्यसमाज की स्थापना करनी चाहिए।

राजर्षि रणजय सिंह
जिला आर्य सम्मेलन के सयोजक

— शेष पृष्ठ ६ पर

मतभेदों को भूलें

• डा० गणेशदत्त सारस्वत
सीतापुर

आज चतुर्दिक लगी हुई है आग भयकर
रक्तिम लपटें अन्तरिक्ष को छूने वाली।
फुँकार कर रहे घृणा के काले विषधर
झुलसा - सी लग रही चमन की डाली डाली।

पुरखों की दिव्य विरासत का हम भूले
सब समृद्धि का सपना स्वय ही घोट रहे हैं।
क्षुद्र स्वार्थ की बेलि सींचने के सपने ले
बारूदी यन्त्रों से कर विस्फोट रहे हैं।

हिसा का ताण्डव रुकने का नाम न लेना
अपने ही अगों पर कर खुद वार रहे हैं।
आरोपों प्रत्यारोपों की इस आँधी में
राष्ट्र - तरी को कर हम बिन पतवार रहे हैं।

उग्रवाद का दानव ग्रस लेने को आतुर
प्रजातन्त्र के तरु का जर्जर किये डाला।
दृष्टि जिधर भी जाती पड़ता यही दिखाई
सम्बन्धों की शुष्क हुई जा रही लता।

देश बचाना तो हम मतभेदों को भूलें,
मिल - जुलकर सामना करें आतकवाद का।
करें भिन्नता में अभिन्नता आज प्रमाणित।
परिचय दें युग को निष्ठा का अप्रमाद का।

"हिन्दी का गौरव बढ़ाओ

• स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

शादी उत्सव के निमन्त्रण पत्र हिन्दी में छपाओ।
राष्ट्र का सन्देश सुमधुर हिन्दी भाषा में सुनाओ।
बोलकर भाषा विदेशी मत वृथा शेखी जताओ।
हसों की महफिल में क्यों सरञ्च कागा को बनाओ।
छोड़कर अनमोल हीरा हाथ ना ककड़ उठाओ।
विदेशी भिखारिन को महारानी न बनाओ
देश की मझधार में मत हिन्दी नौका को डुबाओ।
कृष्ण की सन्तान बन क्यों गीत कसासुर के गाओ।
अन्याय रूढीवाद की बन पवनसुत लंका जलाओ।
बोल दो हिन्दी की जय चिर निन्द्रित भारत को जगाओ।
त्याग दो अग्रेजियत कर लेखनी अपनी उठाओ।
आज मिल करके परस्पर हिन्दी का गौरव बढ़ाओ।

ये वह नहीं देख सके जो दयानन्द ने देखा था

डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, दिल्ली

राजनैतिक लोग समझते हैं कि देश की समस्याओं को हल करना उनकी जिम्मेदारी है। वे यह नहीं समझते कि देश की समस्यायें वे ही उत्पन्न कर रहे हैं, किन्तु उन समस्याओं का हल उनके पास न होकर आर्यसमाज के पास है। भारत या किसी भी देश की समस्याएं दो प्रकार की हो सकती हैं। या वे सामजिक होती हैं, या आर्थिक होती हैं। इन दोनों प्रकार की समस्याओं में राजनैतिक नेता आर्थिक समस्या को मुख्य स्थान देते हैं। ऋषि दयानन्द ने सामजिक समस्या को मुख्य स्थान दिया था। उनका कथन था कि सामाजिक समस्या हल हो जाय, तो आर्थिक-समस्या का अपने-आप हल हो जाता है। सामाजिक-समस्या का रूप ऊँच-नीच का भेद या जात-पांत है, आर्थिक समस्या का रूप रोटी, कपड़ा और मकान का होना या न होना है। उथलेपन से देखें तो यही प्रतीत होता है कि समाज की असली समस्या रोटी, कपड़ा और मकान है, गहराई से देखें तो समझ पड़ जायगा कि मनुष्य की असली समस्या उसकी वैयक्तिक योग्यता है। योग्य व्यक्ति समाज के किसी स्तर पर भी क्यों न हो--
ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो, शूद्र हो, अन्त्यज हो, अपनी योग्यता से रोटी, कपड़े और मकान की समस्या को हल कर सकता है- अयोग्य व्यक्ति समाज के ऊँचे या नीचे किसी भी स्तर पर हो- वह अपने लिये, ही नहीं दूसरों के लिये भी रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याओं को उत्पन्न कर देगा। ऋषि दयानन्द का कहना है कि असली समस्या आर्थिक नहीं, सामाजिक है, वह समस्या हल हो जाय तो तज्जन्य सभी समस्याएं हल हो जाती हैं। यह सूक्ष्म बात आज के राजनैतिक ठेकेदारों को आज तक नहीं सूझी, ऋषि दयानन्द को यह बात आज से सैकड़ों साल पहले सूझ गई थी और इसलिये उन्होंने जन्मगत जात-पांत के आधार पर सामाजिक रचना के विरूद्ध जिहाद छेड़ा था।

आज समाज में जो उथल-पुथल मच रही है उसका कारण क्या है? रोज-रोज हुड़दंगें क्यों मच रहे हैं आज बन्द, कल बन्द। क्यों? राजनीतिज्ञों ने इस आधार पर कि समाज का एक वर्ग जो पिछड़ा हुआ है उसके पिछड़े पन को दूर करने के स्थान में उन्हें हर बात में रियायतें देने का क्रम जारी कर दिया है। पढ़ेंगे सब एक जगह, परीक्षा होगी सबकी एक समान, पास होंगे सब एक समान प्रश्न-पत्रों में, परन्तु अगर परीक्षार्थियों में एक ब्राहमण है और वह 50 प्रतिशत अंकों में पास हुआ है, और दूसरा शूद्र या अन्त्यज है और पास होने के स्थान में फेल हो गया है या कंपार्टमेन्ट में आया है, तो नौकरी अन्त्यज होने के कारण अन्त्यज को मिलेगी ब्राहमण को ब्राहमण होने के कारण नहीं मिलेगी। इसी को "रिजर्वेशन" कहा जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि जिस कंजात जात-पांत को ऋषि दयानन्द मिटाना चाहते थे उसे आज के राजनीतिज्ञ पक्का करना चाहते हैं। यह काम वे उनके हित के लिये नहीं, उनसे वोट लेने के कारण अपने हित के लिये कर रहे हैं।

राजनैतिक नेता बड़ा शोर मचा रहे हैं कि समाज का पिछड़ा वर्ग सदियों से पिछड़ा हुआ है यद्यपि उसकी संख्या सब से अधिक है। कोई नेता किसानों को भड़का कर उनके अधिकारों के लिये लड़ने लगता है, कोई बंधुओं का नेता बन जाता है, कोई किसी अन्य वर्ग को अपने पीछे लगाकर उनके लिये लड़ता है। यह सब लड़ाई जन्म को आधार बनाकर लड़ी जा रही है। हम जन्म के किसान हैं, हम जन्म के अछूत कहे जाते हैं, हमारी संख्या सब से अधिक है, हमारे वोट सबसे अधिक हैं, इसलिये हमारे अधिकार सबसे अधिक होने चाहिए। ऋषि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने डंके की चोट पर कहा था कि जन्म से न कोई ब्राहमण है, न कोई शूद्र है, मनुष्य का मूल्यांकन उसके कर्म से, उसकी योग्यता से होता है। योग्यता के आधार पर ब्राहमण-वृत्ति का शूद्र ब्राहमण बन जाता है, योग्यता के आधार पर ही शूद्र-वृत्ति का व्यक्ति का जन्म का ब्राहमण होने पर भी वह शूद्र बन जाता है। यह दृष्टिकोण समाज के लिये बिल्कुल नया था यद्यपि वैदिक विचारधारा का यही आधारभूत दृष्टि-कोण था।

समाज की इस गिरावट को देखकर स्वामी श्रद्धानन्द ने "अछूत"- शब्द का बहिष्कार कर उसकी जगह "दलित"- शब्द का प्रयोग शुरूकर दिया था। "दलित" अर्थात् जिसके योग्यता के अधिकारों को छीनने का अपराध मेरा है। मैं जब राज्य सभा का सदस्य था तब मैंने सदस्यों के सामने यह विचार रखा था कि हमारे समाज का पुनःनिर्माण होना चाहिये, समाज की रचना ऐसी होनी चाहिए जिसमें कोई अपने को शर्मा न कहे, कोई अपने को वर्मा न कहे, कोई व्यक्ति अपने नाम के साथ जाति वाचक शब्द न लगा सके। इस बात को मानने के लिये कोई तैयार न हो सका, और राज्य सभा के सदस्य मुझे सत्यव्रत न कह कर मिस्टर सिद्धान्तालंकार कहते रहे क्योंकि वे समझते रहे कि सिद्धान्तालंकार मेरी डिग्री नहीं है, मेरी जाति है। हम इतने जातिवादी हो गये हैं कि अगर कोई अपने नाम के साथ कोई भी निकम्मा शब्द लगा दे तो हम समझते हैं कि वह हमारी जात है। मुझे 29 अगस्त के इण्डियन एक्सप्रेस में किसी व्यक्ति का यह प्रस्ताव पढ़कर प्रसन्नता हुई कि ऐसा भी व्यक्ति समाज में है जो सरे-आम कहता है कि आज की सामाजिक-अव्यवस्था को दूर करने का एक ही तरीका है कि कानूनन "जाति" शब्द को खत्म कर दिया जाय, कोई अपने नाम के साथ किसी प्रकार का जाति-वाचक शब्द न लगाये, जो लगाये उसे छः मास की सजा दी जाय।

जिन लोगों ने ऋषि दयानन्द का नाम सुनकर अनसुना कर दिया और जन्म की जाति-पांत से चिपटे रहे, वेद का एक अक्षर भी न जानते हुए अपने को द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि नामों से कहते रहे, उन्हें आज "बन्ध"-- "महाबन्ध" आदि भोगने पड़ रहे हैं। मण्डल रिपोर्ट को आधार बनाकर सामाजिक- रचना के पुनःनिर्माण करने की भावना से भारतीय सरकार ने जो कार्य-क्रम चलाया है उसका परिणाम यह हुआ है कि जो व्यक्ति जन्म की जात-पांत को नहीं भी मानता था वह भी जन्म की जात-पांत मानने को विवश हो गया है। स्थिति यहाँ तक पहुँच गई है कि अगर आप प्रमाणित कर सकें कि आप किसी नीच जाति के हैं तो आपको वे सब अधिकार मिल जायेंगे या मिल सकेंगे जो पिछड़े वर्ग के लिये सुरक्षित किये जा रहे हैं। राजनीति के पण्डितों तथा वोट बटोरियों ने देश को इस उपहासास्पद स्थिति में पहुँचा दिया है कि पहली अवस्था तो यह थी कि जो दलित कहे जाने वाले व्यक्ति थे वे हम लोगों के पास आकर अपने को उच्च-कुल का कह कर तत्संबंधी सार्टीफिकेट माँगा करते थे ताकि उन्हें वे अधिकार प्राप्त हो जो उच्च कुल वालों के लिये सुरक्षित थे, अब स्थिति यह आ रही है कि ब्राहमण-कुल में उत्पन्न व्यक्ति हम लोगों के पास आकर अपने को नीच-कुल का कहकर संबंधी सार्टीफिकेट माँगेंगे ताकि उन्हें वे अधिकार प्राप्त हो जो नीच-कुल वालों के लिये सुरक्षित किये जा रहे हैं। विधिवेत्ता न्याय-पंडित श्री पालखीवाला का कथन है कि इस प्रकार की विडम्बना की स्थिति कभी किसी देश में नहीं हुई। जिसमें अयोग्य व्यक्तियों को वे अधिकार दिये जायें जो योग्य व्यक्तियों को दिये जाते हैं। उनका कथन है कि कोई कर्नल जो शिक्षा के क्षेत्र में पचास प्रतिशत नम्बरों में पास हुआ है सेना में ऐसे व्यक्ति के नीचे काम करने के लिये तैयार नहीं होगा जो शिक्षा के क्षेत्र में कम्पार्टमेंट में लिया गया है। यह देश की सुरक्षा का प्रश्न बन जायगा।

इस दृष्टि से आज देश के सामने जो समस्या उपस्थित हो गई है उसका हल ऋषि दयानन्द के ही पास है- "जन्म की जात-पांत को भूल जाना"। तभी मैं कहता हूँ- "ये वह नहीं देख सके जो दयानन्द ने देखा था"।

बृहद् राष्ट्रभृत यज्ञ

राष्ट्र को बाहय तथा आन्तरिक विपदाओं से मुक्ति दिलाने हेतु दिनांक- 21 सितम्बर से 24 सितम्बर 1990 तक आर्यसमाज स्टेशनरोड मुरादाबाद की हीरक जयन्ती पर एक बृहत् राष्ट्रभृत यज्ञ सम्पन्न होने जा रहा है।

समस्त यज्ञ प्रेमी आर्य जनता सादर आमन्त्रित हैं।

★ आर्यसमाज पिलखुवा (गाजियाबाद)
प्रधान - श्री क्रान्ति प्रसाद आर्य,
मन्त्री - श्री रोशनलाल आर्य,
कोषा० - श्री रघुवीर सिंह आर्य,

वेद ईश्वरीय ज्ञान

• अशर्फीलाल शास्त्री
उस्कुल अ० पद्म / सिरथु इलाहबाद

इस शीर्षक से आशय है कि परम पिता परमात्मा ने सृष्टि के आदि में लोकोपकार के लिए अर्थात जीवों को ज्ञानवान बनाने के लिए जो ज्ञान दिया वह वेद में ही निहित है तथा वेद द्वारा ही दिया गया है। आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द का ऐसा ही मत है जिसे उन्होंने स्थान स्थान पर प्रकट किया है। वे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखते हैं

'यथा पिता स्वसन्ततिं पोन सदैव करुणां दधाति। तथेश्वरोऽपि परमकृपया सर्वमनुष्यार्थं वेदोपदेशं कृतवान्।'

आशय यह है कि जिस प्रकार पिता अपनी सन्तान पर सदा कृपा करता है उसी प्रकार ईश्वर ने भी कृपा पूर्वक सब मनुष्यों के हित के लिए वेदों का उपदेश दिया। ध्यान रहे कि ईश्वर ने कुछ पुस्तक रूप वेद नहीं रचे अपितु आदि ऋषियों के हृदयों में ज्ञानरूप से प्रेरणा की। मैडम ब्लेवटस्की के पत्र के उत्तर में भी उन्होंने लिखा है

सर्वव्यापक परमात्मा ने उनकी आत्मा में पवित्र वेदों की प्रेरणा की परमात्मा ने अपने पैगम्बर द्वारा स्वर्ग से ईश्वरीय पुस्तक जैसी कोई चीज नहीं भेजी।

(ऋ० द० प० वि० पृ०) । ६२

इस प्रकार स्पष्ट है कि ऋषि वेदों में ही ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। ऋषि से पूर्ववत अन्य अनेक मनीषी महर्षियों का भी यही मत है। तब परिणाम यह होता कि आर्यसमाज की दृष्टि में वेद का छोड़कर कोई भी ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान नहीं है। अब आगे इस विषय में संक्षिप्त प्रमाण पूर्वक उल्लेख की जाती है।

अब एक मोटा प्रश्न उठता है कि सृष्टि के आदि में ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता ही क्या है क्योंकि मनुष्य के पास नैसर्गिक ज्ञान है ही उसकी उन्नति करके कार्य चल सकता है इसलिये न किसी ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता है और न उसके देने वाले ईश्वर की। इस का उत्तर यह है कि

(क) हम प्रत्यक्षतः देखते हैं कि कोल भील मुण्ड, शबर जिप्सी आदि अपने नैसर्गिक ज्ञान के होते हुए भी समुन्नत न हो सके जब तक उनका उस प्रकार के व्यक्तियों से संसर्ग न हुआ। और सम्पर्क होने पर वे शीघ्र ही उन्नत हो गये। अतः स्पष्ट है कि बिना किसी शिक्षक के ज्ञानदाता के स्वाभाविक ज्ञान से ही व्यक्ति उन्नति नहीं कर सकता। अब जब वर्तमान काल में ऐसा है तो पहले भी ऐसा होना चाहिए। नहीं नहीं हुआ है। अतः स्पष्ट है कि मनुष्य में स्वाभाविक ज्ञान होने पर भी उसके विकास के लिये एक ज्ञान दाता की आवश्यकता है वही ज्ञान वेद है और उसका प्रदाता परमपिता परमात्मा है। ऋषि दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश में उल्लिखित प्रश्न का यही उत्तर दिया है वे लिखते हैं -

जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान नहीं होते और जब उनको कोई शिक्षक मिल जाय तो विद्वान हो जाते हैं। और अब भी किसी से पढ़े बिना कोई भी विद्वान नहीं होता। इस प्रकार जो परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वे ग्रन्थों को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान ही रह जाते।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जीव के स्वाभाविक ज्ञानवान होने पर भी उसको ज्ञानदाता की आवश्यकता है और यह ज्ञानदाता ईश्वर है तथा यह ज्ञान वेद है।

(ख) स्वाभाविक ज्ञान होने पर भी कोई उन्नति नहीं कर सकता जब तक कि उसे शिक्षक न मिले। इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए भारत में तथा भारत से बाहर परीक्षण किये गये। यूनान का राजा सोमाटकल, जर्मनी का राजा फ्रेडरिक (1194-1250) में तथा चतुर्थ जेम्स (1473-1513) में और अकबर बादशाह ने सन् (1554-1605) में इस विषय में परीक्षण करवाये थे। अकबर बादशाह ने बच्चों पर परीक्षण करवाया था जिसका वर्णन दाराशिकोह तथा फैजी की पुस्तक में मिलता है जिसमें लिखा है कि बच्चों को शहर के मकानों में रखा गया और उनके पालन पोषण के निमित्त धायें नियत की गयीं जिनका काम केवल खिलाना पिलाना तथा पालन पोषण था। जब ये बालक कुछ बड़े हुए तब दरबार में लाये गए। परन्तु वे पूछे पर किसी बात का उत्तर न देते थे बहरे गूंगे की भांति खड़े रहते थे।

इस प्रकार से नंगी आदि जातियाँ इस बात की साक्षी हैं कि जब तक वे शिक्षित लोगों के सम्पर्क में नहीं आये तथा उनको अच्छे अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ तब तक वे स्वयं ज्ञान प्राप्त करने में हजारों वर्ष व्यतीत होने पर भी समर्थ नहीं हो सके। रामू नामक एक भेड़िया द्वारा पोषित बालक का (जिसे गाँधी हस्पताल लखनऊ में रखा गया था और जो पशुओं की तरह चलना बोलना मनुष्यों से भय खाता और कच्चा मांस खाता था) उदाहरण अभी पाठकों को स्मरण ही होगा जिसके विषय में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री कन्हैयालाल मुन्शी जी का लेख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था।

इस प्रकार से जिन मनुष्यों के छोटे छोटे बच्चों को भेड़िया उठा ले जाते हैं और पाल लेते हैं उनमें मनुष्य का एक भी गुण नहीं होता यद्यपि वे होते मनुष्य के बच्चे हैं किन्तु भेड़िये के स्वभाव बोली रहन-सहन को सीख लेते हैं। ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है

जैसे किसी बालक को जन्म से एकान्त देश अविद्वानों या पशुओं के संग में रख देवें तो वह जैसे संग होगा वैसे ही हो जायेगा। इसका दृष्टान्त जंगली भील आदि हैं।

इन परीक्षणों से स्पष्ट है कि नैमित्तिक ज्ञान बिना शिक्षक के स्वयं विकसित व समृद्ध नहीं हो सकता।

(ग) पौरस्त्य तथा पाश्चात्य दोनों प्रकार के विद्वान ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता को अनुभव करते हैं।

(1) मनु कहते हैं-

अनादिनिधना नित्या
वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः
सर्वाः प्रवृत्तयः ।

अर्थात परमात्मा ने सर्ग के आदि में वेद का ज्ञान दिया यदि न देते तो आगे का सम्पूर्ण व्यवहार कैसे चलता।

(2) भगवान पतंजलि कहते हैं

स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्

अर्थात- आदि गुरु ज्ञानदाता ईश्वर ही क्योंकि वही कालातीत है।

इसलिए जैसे पिता पुत्र के कल्याणार्थ उपदेश करता है वैसे ही सर्गादि के प्रारम्भ में पितृस्थानीय वा आदि गुरु परमेश्वर ने सब मनुष्यों के कल्याणार्थ अन्तर्यामी रूप से जीवों को धर्माधर्म पाप-पुण्य शारीरिक मानसिक आत्मिक सामाजिक उन्नति के साधन मनुष्य जीवन का उद्देश्य परमानन्द शाश्वत सुख और शान्ति की प्राप्ति इत्यादि विषय का वेदों के द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ में उपदेश किया। यह बात सर्वथा अनुमोदित है।

स्वास्थ्य-सुधा

(1)

समस्या मेरे मित्र के हाथ व पैर पर एक्जिमा (छाजन) है बहुत खुजलाता है।
रामकुमार सिंह आर्य 4 न्यूमार्केट रावर्ट्सगंज (सोनभद्र)

समाधान सरसों तैल 100 ग्राम पिसी हल्दी 10 ग्राम और आक (मदार) के पत्तों का रस 10 ग्राम पकाकर तीन चौथाई करें। यह गाढ़ा तैल शीशी में रखें। प्रातः व सायं स्थानीय त्वचा पर लेप करें। प्रत्येक भोजन बाद खदिरारिष्ट दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। दो मास के भीतर पूर्ण लाभ हो जायेगा।

(2)

समस्या आपके बारे में जानकारी मिली कि आप सफेद दाग का इलाज कर देते हैं। एक मरीज है जिसके शरीर पर सफेद दाग हैं। लगभग 8 साल हो गये है।
मुहम्मद यासीन सिद्दीकी मनीहा औंवला (बरेली)

समाधान प्रथम कोर्स कीकर (बबूल) की हरी पत्तियाँ 150 ग्राम बड़ी हरड़ 50 ग्राम और सुपारी चूर्ण 50 ग्राम पीस कर एक लीटर पानी में उबाल कर आधा करें। छानकर बोतल में रखें। नित्य प्रातराश से पहले आधा प्याला पिया करें। दो मास बाद द्वितीय कोर्स हेतु पत्राचार करें

रोग विवरण के साथ नाम पता लिफाफे में पता पर भेजना चाहिए

गुरुकुलानन्द सरस्वती
पिथौरागढ़

आर्यवीरों (हिन्दूराष्ट्रप्रेमी) सावधान !

• पं० केदारनाथ वर्मा "मित्र"

स्व० राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने "भारतभारती" का प्रणयन इसी आशय से किया था कि भारत की जनता अपने पूर्वजों की गौरव गरिमा को पुनः प्राप्त करने के प्रति स्वतन्त्रभारत में निरन्तर संघर्षरत रहेगी। क्योंकि 'संघर्ष ही जीवन है'। जीवन में गतिशीलता अपेक्षित है। कवि की ही वाणी में व्यक्त भावना पर दृष्टिपात करें -

हम कौन थे, क्या हैं और क्या होंगे अभी।
आओ मिल विचारें ये समस्यायें सभी।।

भारत की धरती पर जन्म लेकर जो राष्ट्रभक्त मातृभूमि के प्रति समर्पित भावना से जो न जी सका उस मानव का जीवन भी क्या कोई जीवन है। मानव शरीर पूर्वजन्म के सत्कर्मों से तथा घोर तपस्या से मिलता है। तभी तो मानस के रचयिता की लेखनी भी मानवता की प्रशंसा किये बिना न रह सकी।

बड़े भाग्य मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सदग्रन्थनगावा।।

बड़े भाग्य से मानव शरीर पाकर भी यदि व्यक्ति ने आस्तिक, आध्यात्मिक ईश्वर के प्रति समर्पित श्रद्धावनत जीवन न व्यतीत कर पाया तो उसका किसी भी देश में जन्म लेना निरर्थक ही माना जायेगा।

उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत। (उपनिषद्) जो भरा नहीं है भावों से जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।
मानव मानव होता है पशु नहीं। फिर भी आज का मानव मानवीय गुणों, मूल्यों, विशेषताओं से विहीन क्यों होता जा रहा है। यह प्रत्येक विवेकशील प्राणी के लिये प्रश्नचिन्ह एवं समस्या के रूप में घोर चिन्ता का विषय है। देश के प्रत्येक नागरिक को स्वतन्त्ररूप से इस संदर्भ में चिन्तन करना चाहिए।

जिसको न निज गौरव तथा
निज देश पर अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा
और मृतक समान है।।

इस युग में भौतिकता से ओत-प्रोत जीवन यात्रा में मानव कहाँ से कहाँ जा रहा है। एक दम दिग्भ्रमित बावला सा पथभ्रष्ट बस एक मात्र "खाओ पियो मौज मस्ती में झूमते रहो।"

किसी आंग्लभाषा के कवि ने लिखा था। अपने जीवन का अथवा "माडर्नलाइफ" की परिभाषा अपने ढंग से दिया था। वह कदाचित आज के युवा वर्ग में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। "ईट, ड्रिंक एण्ड बी मैरी"। जीवन जीने के लिये है और अपने पीछे एक सर्वतोमुखी सुविकसित समुन्नत, समृद्ध, सुखी समाज छोड़कर संसार में आदर्श प्रस्तुत करके ही जाना है। जीवन आलोकमय, ज्ञानमय त्यागपूर्ण सेवाभावना से जीने के लिये है। जीवन तो रचनात्मक ही आना होना है विध्वंसक नहीं।

इसी में अपना समाज का तथा देश का कल्याण निहित है। अन्यथा जीवन से शिक्षा लेना ही है तो दीपक से, सुमनों, दरिया से, पर्वतों से, वृक्षों और नदियों से लो। जियो तो ऐसा कि जैसे जिये थे वीर सावरकर जैसे सुभाष जैसे नेहरू और शास्त्री। जिनकी मनसा वाचा कर्मणा राष्ट्र के प्रति समर्पित इसी रूप में कि वे ही इस बगिया के माली थे। जिनके शब्दों (नारों) को स्मरण करने ही राष्ट्र के प्रति बलिदान होने की भावना जागृत होती है। "लिव एण्ड लेट लिव"। (जियो और जीने दो) -नेहरू। जयहिन्द कहो और "आजाद हिन्द" है। - सुभाष। जय जवान-जय किसान। स्वर्णदान रक्तदान श्रमदान, जीवनदान, आत्मदान। - शास्त्री

स्वतन्त्रता दिवस पर प्रधान-मन्त्री के भाषण में शिक्षा व भारतीय भाषाओं की चर्चा नहीं।

पूर्व महानगर पार्षद डा० प्रशान्त-वेदालंकार ने लालकिले की प्राचीर से प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को इस बात की बधाई दी कि उन्होंने अपने ओजस्वी भाषण में राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान का अपना संकल्प दोहराया है। इससे देश की जनता को यह आशा क्यों है कि प्रधानमन्त्री के इरादे नेक हैं और वे इन इरादों को पूरा करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

पर डा० वेदालंकार ने प्रधानमन्त्री की इस बात की आलोचना की कि उन्होंने अपने भाषण में शिक्षा व शिक्षकों की समस्याओं तथा शिक्षा में भारतीय भाषाओं के स्थान की कोई चर्चा नहीं की। ऐसा लगा कि प्रधानमन्त्री शिक्षा का राष्ट्रीय विकास में कोई महत्व नहीं मानते।

देश के निर्धनवर्ग व पिछड़ी जातियों की आरक्षण की बैसाखी से उनके विकास का स्वप्न देखने वाला प्रधानमन्त्री यदि पब्लिक स्कूलों को समाप्ति या इन स्कूलों में 50 प्रतिशत स्थान पिछड़ी व अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों और पिछड़े वर्ग के लिए सुरक्षित करने की घोषणा करता तो यह प्रकट हो सकता था कि वे जातियों के विकास के लिए सचमुच कृतसंकल्प हैं।

देश में ३० प्रतिशत लोगों को साक्षरता की समस्या, उच्च वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, प्रतिभापलायन, मातृभाषा में शिक्षा, शिक्षणालयों में खेल व योगिक शिक्षा की अपेक्षा, अध्यापकों व छात्रों में असन्तोष, शिक्षा में चरित्र निर्माण का अभाव आदि शिक्षा जगत से सम्बद्ध अनेक समस्याएं हैं, जिनकी ओर प्रधानमन्त्री का ध्यान जाना चाहिए था।

इसी प्रकार स्वतन्त्रता के 43 वर्षों के उपरान्त भी शिक्षा में राष्ट्रीय भाषाओं विशेषतः संस्कृत की अवहेलना से उत्पन्न राष्ट्र की भावात्मक तथा सांस्कृतिक एकता के नष्ट होने का भय भी प्रधानमन्त्री की दृष्टि में आना चाहिए था।

डा० वेदालंकार ने प्रधानमन्त्री से अपील की कि वे शैक्षणिक जगत की ओर भी ध्यान दें।

इसी प्रकार उन्होंने राष्ट्रपति द्वारा अंग्रेजी में देश के नाम संदेश देने की कड़ी आलोचना की। राष्ट्रपति का भाषण सचमुच उद्बोधक था पर अंग्रेजी में होने के कारण यह स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का हँसी उड़ा रहा था। मानो वे यह प्रकट कर रहे हों कि तुमने हमें स्वतन्त्र कराया पर हमने अभी तक अंग्रेजी भाषा की पराधीनता नहीं छोड़ी।

आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन" को संस्थान सम्मान

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन" को उनकी दीर्घकालीन साहित्य-सेवाओं के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा इक्कीस हजार रुपये का "संस्थान-सम्मान" प्रदान किया गया है।

"सुमन" जी ने एक ओर जहाँ काव्य, निबन्ध, जीवनी, समीक्षा इतिहास, पत्रकारिता, साहित्येतिहास, संस्मरण आदि अनेक विधाओं पर लगभग तीस मौलिक ग्रन्थों की रचना करके हिन्दी साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया है, वहाँ दूसरी ओर अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों और पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादित करने का श्रेय भी उन्हें प्राप्त है। दस खण्डों में प्रकाश्य "दिवंगत हिन्दी-सेवी" नामक सन्दर्भ-ग्रन्थ के प्रणयन द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य के संवर्द्धन तथा विकास का वास्तविक इतिहास प्रस्तुत करने का जो अभूतपूर्व अनुष्ठान "सुमन" जी ने प्रारम्भ किया है, वह उनकी अक्षय कीर्ति का स्तम्भ है।

सम्पूर्ण हिन्दी जगत में "सुमन" जी ही एक मात्र ऐसे मनीषी हैं जिन्हें देश के प्रत्येक जनपद और नगर के साहित्यकारों और पत्रकारों का अगणित इतिहास कण्ठस्थ है। "सुमन" जी की इसी अप्रतिम प्रतिभा के कारण उन्हें हिन्दी भाषा और साहित्य का "मोबाइल विश्वकोश" कहा जाता है।

"सुमन" जी जहाँ हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा विशिष्ट साहित्यकार" के रूप में सम्मानित हो चुके हैं वहां उन्हें भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय द्वारा "भारतेन्दु पुरस्कार" भी प्राप्त हो चुका है। इसके अतिरिक्त संस्कृति मंत्रालय की ओर से आपको "अमेरिटस फैलोशिप" भी प्रदान की गई थी। आप अनन्य प्रभुभक्त एवं सुप्रसिद्ध आर्य समाजी हैं। आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके इस सम्मान प्राप्ति पर हार्दिक बधाई प्रेषित की है।

गोवध निवारण राष्ट्रीय कानून बनाया जाय

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने अपने एक वक्तव्य में शासन से अनुरोध किया है कि वह तुरन्त संविधान में आवश्यक संशोधन करके पूरे देश में गोवध निवारण राष्ट्रीय कानून बनाये जिससे यह हमारा कृषि प्रधान देश गोहत्या के कलंक से सदा-सदा के लिए विमुक्त हो जाये।

उन्होंने कहा कि कितने दुःख की बात है कि आजादी के इतने वर्षों पश्चात भी देश में प्रतिदिन लाखों गाय बछड़ों का वध किया जाता है। समाचारपत्रों में आये दिन प्रकाशित होता रहता है कि अमुक स्थान पर गायों का वध किया गया अथवा वध करने हेतु ले जाई जा रही थी। भारत एक कृषि प्रधान देश है गोवंश की रक्षा करना भारतीयता और भारत की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ रखने हेतु परम आवश्यक है।

कृषि वैज्ञानिकों की राय है कि खेतों में आज करोड़ों टन रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण होती जा रही है। धरती की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए प्रति टन रासायनिक उर्वरक के साथ पर्याप्त मात्रा में गोबर खाद भी डालना आवश्यक है। यह खाद हमें गाय बैल भैंस के गोबर से प्राप्त हो सकती है।

अतः गोवंश पर सम्पूर्ण देश में प्रतिबन्ध लगाने के लिए राष्ट्रीय कानून तुरन्त बनाया जाना चाहिए।

नामकरण संस्कार सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री अशोककुमार आर्य के सुपुत्र का नामकरण संस्कार पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में स्वामी स्वरूपानन्द जी ने सम्पन्न कराया। बच्चे का नाम जिनेन्द्रकुमार रखा गया। इस अवसर अनेक गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे सबने बच्चे को आशीर्वाद दिया।

जिला आर्य सम्मेलन सम्पन्न

आर्य उपप्रतिनिधि सभा पीलीभीत का जिला आर्य सम्मेलन दि० -6- अगस्त को आर्यसमाज वासलपुर में स्वामी इन्द्रदेव यति की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें 24 आर्यसमाजों के 60 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिला सभामन्त्री ने भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

शोक समाचार

वैदिक स्त्री आर्यसमाज अलीगढ़ की मन्त्राणी डा० जानकी देवी जौहर के पति का गत 8 अगस्त को आकस्मिक निधन हो गया। सभामन्त्री ने उनके निधन पर शोक प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की है।

आरक्षण का आधार आर्थिक हो

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की एक बैठक में सभा प्रधान डा० धर्म पाल जी ने कहा है कि देश की अखण्डता, एकता, तथा राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए आरक्षण जातिगत न होकर आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोगों को दिया जाना चाहिए नहीं तो वर्ग संघर्ष पैदा होने का खतरा है।

सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा वर्तमान सरकार महंगाई एवं अन्य अनेक असफलताओं के कारण यह आरक्षण घोषित करके जनता को भुलावे में डालने के लिए किया गया कदम है।

आर्य समाज पहले से ही अछूतों और पिछड़ी जातियों के लोगों की उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहा है और आज भी है। जिसका सिद्धान्त है जातिगत न होकर कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था में विश्वास। इसी आशय का एक प्रस्ताव पास किया गया।

सरकार से मांग की गई कि आरक्षण जातिगत न होकर आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोगों को दिया जाय।

महर्षि दयानन्द के आर्थिक विवेचन पर शोध

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में विवेचित आर्थिक विचारधारा विषय पर डा० भवानीलाल जी भारतीय के निर्देशन में पंजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ़ से पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त कर राजस्थान के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ता कोटा नि० डा० रामकृष्ण आर्य ने सपत्नीक 11 से 13 अगस्त तक इन्दौर में अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन में भाग लिया। इस दौरान डा० आर्य ने दि० 10 अगस्त को आर्यसमाज उज्जैन के वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम में और दि० 1 अगस्त को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर के साप्ताहिक सत्संग में महर्षि दयानन्द के आर्थिक विचारों पर भाषण दिया। डा० आर्य के उपर्युक्त शोध प्रबन्ध को छपाने के लिये आर्यसमाज उज्जैन ने पूर्ण आर्थिक सहयोग देने का आश्वासन दिया। आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर में प० युधिष्ठिर जी मीमांसक का अभिनन्दन भी किया गया। पूज्य मीमांसक जी ने डा० आर्य के शोध ग्रन्थ से प्रभावित होकर आशीर्वाद देकर शोध ग्रन्थ को छपाने के लिये डा० आर्य द्वारा गठित आर्य परिवार प्रकाशन संस्थान को 50 रु० देने की घोषणा की। सभी ने महर्षि दयानन्द के आर्थिक विचारों पर सर्वप्रथम पी-एच०डी० करने पर डा० आर्य के शोध कार्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

आर्यसमाज रमा कालोनी बेरण्वा

- सरंक्षक - श्री रामजीवन यादव
- प्रधान - श्री हीरालाल आर्य,
- मन्त्री श्री रामगोपाल फुलर
- कोषाध्यक्ष - श्री बाबूलाल अग्रवाल

त्यागानन्द शताब्दी समारोह स्थगित

अपरिहार्य कारणों से स्व०-स्वामी त्यागानन्द जन्म शताब्दी समारोह जो दिनाक- 27 अक्तूबर से 30 अक्तूबर 1990 तक अयोध्या (फैजाबाद) में होना था, स्थगित कर दिया गया है। नवीन तिथियों की सूचना यथा समय प्रसारित होगी।

कुलपति
गुरुकुल म०वि० अयोध्या

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती पुरस्कृत

हिण्डौन सिटी। आर्यसमाज हिण्डौन सिटी द्वारा प्रतिवर्ष साहित्य सेवा के लिए दिया जाने वाला श्री-घूडमल आर्य पुरस्कार इस बार स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती को उनके बाल्मीकि रामायण भाष्य पर दिया गया। सम्मान स्वरूप आपको 2101/- इक्कीस-सौ एक रुपये, शाल और अभिनन्दन पत्र प्रसिद्ध शोधकर्ता इतिहासज्ञ विद्वान प्राध्यापक राजेन्द्र जी जिज्ञासु द्वारा प्रदान किया गया। समारोह का संचालन डा० ओमप्रकाश वेदालंकार प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय गंगापुर सिटी ने किया। विशाल जनसमूह की उपस्थिति में स्वामी जी का नागरिक अभिनन्दन भी किया गया जिसमें कई जिलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर स्वामी जी द्वारा किया गया भाष्य अल्पमूल्य पर आम जनता को सुलभ कराया गया।

शुद्धि संस्कार सम्पन्न

डा० कु० शिवा जोनफ मुस्लिम विश्वविद्यालय मेडीकल कालेज अलीगढ़ की (एम०बी०बी०एस०,एम०डी०) छात्रा निवासी केरल को 9/8/90 को शुद्ध कर डा०-कु० सीमा नाम रखा गया, तथा इसी कालेज, के (एम०डी०) के छात्र डा० श्री मनोजकुमार सक्सेना निवासी झाँसी के साथ विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। यह कार्य आर्य उपप्रतिनिधि-सभा अलीगढ़ के मन्त्री डा० विजयपाल-सिंह प्रधान श्री प्रद्युम्न सिंह की देख-रेख में श्री विजय सिंह राघव के पौरोहित्य में हुआ। उपस्थित लोगों ने वर वधू को आशीर्वाद दिया तथा एक सत्यार्थप्रकाश भेंट किया गया। आर्यमित्र की ओर से बधाई।

दान की अपील

निःशुल्क गुरुकुल महर्षि दयानन्द नगर गोसाईंगंज (फैजाबाद) में विद्यार्थियों को निःशुल्क आचार्य तक शिक्षा दी जाती है। इस गुरुकुल का उद्देश्य वैदिक शिक्षा प्रणाली के प्रति आयजनता में जन जागरण करना है।

जनता से निवेदन है कि गुरुकुल में भवन निर्माण हेतु मुक्त हस्त होकर दान दें।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
निःशुल्क गुरुकुल महर्षि दयानन्द
नगर गोसाईंगंज जिला फैजाबाद

आर्यसमाज बिजरौल (बागपत) में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी

दि0- 12-8-90 को सभाप्रधान श्री-इन्द्रराज जी आर्य समाज बिजरौल में श्री चौ0 माधव सिंह जी प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ के साथ पहुँचने पर भव्य स्वागत किया गया। श्री माधव सिंह जी ने ग्राम की प्रशंसा करते हुए बताया कि इस ग्राम ने विश्व विख्यात श्री स्वामी योगानन्द जी जैसे महान सन्यासी दिए हैं। अब भी आर्यों के संगठन और जागृति की आवश्यकता है। अन्यथा हमारा विनाश सन्निकट है। श्री माधव सिंह जी ने सबको यज्ञ में आने की और सम्मिलित होने की प्रेरणा दी।

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने जन्मगत जाति के मानने के कारण देश में वर्ग संघर्ष की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करते हुए आर्यसमाज के प्रेम और प्यार के दृष्टिकोण को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पनवारी आगरा का संघर्ष और देश में अन्यत्र हो रहे धर्म परिवर्तन के पीछे राजनीति है। राजनैतिक लोग अपने क्षुद्र वोट के लालच में ऐसे कार्य कर रहे हैं जिनसे आगे चलकर देश की स्वतन्त्रता और अखण्डता को भारी खतरा है। सभा प्रधान जी ने आर्य-बन्धुओं से निवेदन किया कि महर्षि दयानन्द के गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर देश में तथाकथित जातिवाद-को दूर करने में अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए ताकि देश टूटने से बच जाए। उन्होंने अन्त में यह भी कहा कि इन विशाल यज्ञों में पिछड़े वर्ग और हरिजनों को भी आहुति देने का प्रयास होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यज्ञ- की सुगन्धि जहां बड़ी-बड़ी कोठियों में जाती है वहां गरीबों की झोपड़ियों में भी जाती है। वह सुगन्धि छुआछूत नहीं मानती। अतः वेद की वाणी पढ़ने- सुनने और यज्ञ में आहुति डालने का हर छोटे-बड़े को अधिकार है। भविष्य में यज्ञों का आयोजन ऐसा हो जिसमें गरीब और पिछड़ा वर्ग भी यजमान बने। तभी यज्ञों की सार्थकता है।

•

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी रेनबो टेलर्स के परिवार में

दि0- 13-8-90 को श्री धीरेन्द्रकुमारजी गुप्त मालिक रेनबो टेलर्स शास्त्रीनगर के निवास स्थान पर जन्माष्टमी के उपलक्ष में आयोजित विशेष यज्ञ, पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने अपने प्रवचन में बताया कि आज जब हम महाभारत शब्द का प्रयोग करते हैं। तो उसका अर्थ लड़ाई से लिया जाता है परन्तु उस 5 हजार वर्ष पूर्व युद्ध के पीछे योगेश्वर श्री कृष्ण जी का छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटे हुए भारत को महान भारत बनाने का उद्देश्य था। आज स्वतन्त्रता मिलने पर सरदार वल्लभभाई पटेल ने छोटी-छोटी लगभग 500- रियासतों में बटे हुए भारत को महान भारत बनाने की प्रेरणा भगवान कृष्ण से ही ली थी। उस समय के तानाशाह कंस और जरासन्ध थे हस्तिनापुर का राज्य जुए में चतुर शकुनि के इशारे पर नाचता था। शिशुपाल-दुःशासन आदि पापाचार के प्रतीक बने हुए थे। योगेश्वर श्री कृष्ण जी का जन्म ही इन पापों के और पापियों के विरुद्ध संघर्ष करके भारत में एक चक्रवर्ती राज्य की स्थापना के लिए हुआ था। उन्होंने युधिष्ठिर और पण्डवों को इस का पात्र समझा उन्हें उस विशाल राज्य को सम्भालने के योग्य समझते हुए उनका साथ दिया। यदि वे पाण्डवों के साथ न होते तो धर्म न्याय और सत्य की विजय हो ही नहीं सकती थी। आज पुन भारत संकट में है। सरदार पटेल के महान भारत को आज तोड़ने के षड्यन्त्र अन्दर और बाहर से हो रहे हैं। आज पुन योगेश्वर श्री कृष्ण की आवश्यकता है जो इस महान भारत का मस्तक संसार में ऊँचा कर सके। इसीरूप में आज योगीराज श्री कृष्णचन्द जी को स्मरण करने का दिन है।

•

सभाप्रधान श्री इन्द्रराज जी आर्यसमाज बागपत में

दि0- 11-8-90 को वेदप्रचार सप्ताह के अन्तर्गत कविगोष्ठी में सभा प्रधान-श्री इन्द्रराज ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। अपने भाषण में सभा प्रधान जी ने देश में अलगाववाद की प्रवृति की ओर इंगित करते हुए पंजाब, कश्मीर एवं असम में हो रहे नर-संहार का मार्मिक चित्रण किया तथा कवियों को अपनी क्रान्तिकारी कविताओं द्वारा देश में संगठन की ऐसी लहर पैदा कर दें कि विघटनात्मक प्रवृतियां इस लहर में ही डूब जाऐं। सभा प्रधान जी ने वेद प्रचार सप्ताह में वेद के पठन-पाठन पर बल दिया। उन्होंने बताया कि वेद की विचारधारा ही क्रान्तिकारी विचारधारा है जिसने मानवीय मूल्यों को अपने अन्दर संजोया हुआ है। वेद के अध्ययन और स्वाध्याय तथा इसकी शिक्षाओं पर चलने से ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है।

•

श्री डा० निरूपण जी विद्यालंकार का पारिवारिक यज्ञ में प्रवचन

दि0- 13-8-90 को प्रातः श्री ओम प्रकाश जी जौहरी के निवास स्थान पर श्री डा0 निरूपण जी ने अपने प्रवचन में कहा कि आज परिवारों में स्नेह और प्रेम की कमी हो गई है। वेद में आदर्श पारिवारिक जीवन का उल्लेख है। परन्तु आज भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण सारा पारिवारिक ढांचा स्वार्थ के चंगुल में फँस गया है। जहां परिवार को स्वर्ग माना जाता था आज नरक धाम बना हुआ है। परिवारों में फिर से वैदिक आदर्शों पर चलने की आवश्यकता है। तभी परिवार सुख के धाम बन सकेंगे।

सभाप्रधान श्री इन्द्रराज जी गुरुपूठ (गाजियाबाद) में

दि0- 13-8-90 को पुष्पावती आर्ष गुरुकुल पूठ में श्री जयन्त कुमार जी-पाण्डेय के साथ पहुँचने पर श्री आचार्य-धर्मपाल जी एवं श्री सोदान सिंह जी ने सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत किया। सर्वप्रथम श्री-जयन्त कुमार जी ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में गुरुकुल के कुशल संचालन के लिए श्री आचार्य जी तथा श्री सोदानसिंह जी का हार्दिक धन्यवाद किया। सभा प्रधान जी ने शिक्षा पर बोलते हुए गुरुकुल पद्धति पर विशेष बल दिया। उन्होंने बताया कि आज शहरी स्कूलों की शिक्षा पद्धति में अनुशासन, गुरुजनों का आदर तथा चरित्र निर्माण का सर्वथा अभाव है। परन्तु गुरुकुल पद्धति में ये सब बातें हैं। गुरुकुल आचार्य को माता और पिता के कर्तव्य भी निभाने पड़ते हैं। आधुनिक विज्ञान, गणित, तकनीकी का समावेश गुरुकुल पद्धति में होने से शिक्षा जगत बहुत पवित्र हो जाएगा। गुरुकुल पद्धति में शिक्षा के साथ-साथ मानवीय गुणों के विकास का भी ध्यान रखा जाता है। सभाप्रधानजी ने ब्रह्मचारियों की संख्या को देखते हुए वहां के निवास की व्यवस्था में जुटे श्री सोदान सिंह जी को धन्यवाद दिया कि उनके प्रयास से ही गुरुकुल में कुछ चहल-पहल दृष्टिगोचर हो रही है। सभा प्रधान जी ने गुरुकुल के निर्माण में सहयोग का भी आश्वासन दिया।

संवाद सूत्र

विनम्र निवेदन ॐ

आपका प्रिय 'आर्यमित्र' आगामी दीपावली पर आपके विचारों को दृष्टिगत रखते हुए उस देव दयानन्द के दिव्य विचारों को भारती उतारने के लिए विशेषांक के रूप में पुनः प्रस्तुत हो रहा है। इसमें आपके देशकाल सम्बन्धी समसामयिक सामाजिक राजनैतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति उसके दिव्य चरणों में श्रद्धांजलि का प्रतीक बनेगी।

अतः समस्त लेखकों, विद्वानों, मनीषियों, कवियों आदि से विनम्र अनुरोध है कि अपने विचारों को लेखबद्ध करके मुझे विलम्बतम 30 सित० 1990 तक अवश्य भेज देने की कृपा करें। आर्यमित्र उन्हें इस विशेषांक में प्रकाशित कर अपने को विशेष रूप से गौरवान्वित समझेगा।

विदुषामनुचर —
स्वदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों, प्रचारकों, ढोलक वादकों के कार्यक्रम

मास सितम्बर-१९९०

मिति भा0सुदी 11, स0 2047 से आश्विन सुदी 11 सं0 2047 विक्रमी तक

उपदेशकः—

उपदेशक / कार्यक्रम

1- श्री पं0 केशवदेव जी शास्त्री
1 से 26 सितम्बर लालगंज-रायबरेली, 30 सांडी जनपद - हरदोई

2- श्री शिव कुमार जी शास्त्री
अवैतनिक अवकाश

3- श्री आचार्य देवव्रत जी
वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट (गाजि0) से सम्बद्ध।

4- श्री विजयपाल सिंह जी
आगरा, अलीगढ़, बुलन्दशहर जनपद

5- श्री विश्वम्भर दत्त शर्मा
5 से 20 महोदीनपुर क्षेत्र, धनौरा मण्डी, मुरादाबाद
2- से 30 बी0 185 गुरूनानकपुरा दिल्ली।

6- श्री सुकर्मानन्द जी महाराज
2 से 6 फीना जनपद बिजनौर, 30 शाहजहाँपुर

7- श्री जयन्त कुमार जी आर्य
मा0 सभा प्रधान जी के निर्देशन में कार्यरत।

8- श्री योगेश दत्त जी आर्य
3 से 6 फीना जनपद बिजनौर, 7.8,9 गद्दी नेगी, (काशीपुर) जनपद नैनीताल- 21 से 25 आ0स0 स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, 27 से 30 बी0-185 गुरूनानकपुरा पुलिस स्टेशन के निकट, लक्ष्मीनगर, दिल्ली।

9- पू0 वेद व्रतानन्द जी
वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट (गाजियाबाद) से सम्बद्ध

भजनोपदेशक

10- श्री गजराज सिंह जी
अलीगढ़ जनपद

11- श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य
8 से 18 गोनी गोडवा जनपद-हरदोई, 19 से 25 हसनापर जनपद-शाहजहाँपुर 27 से 29 हरदोई, 30 सांडी जनपद हरदोई।

12- श्री कमल देव जी आर्य
मथुरा, एटा, फर्रुखाबाद जनपद

13- श्री रामचन्द्र जी शर्मा
4-5-6 फीना, 7-8-9 गद्दी नेगी (काशीपुर) जनपद नैना0 15 से 25 धूंधली विराल, मीरापुर, पाहुली, इस्माईलपुर, चांदपुर क्षेत्र बिजनौर, 27 से 30 बहेड़ी जनपद बरेली।

14- श्री सीताराम जी आर्य हरदोई
हरदोई - उन्नाव - कानपुर जनपद।

15- श्री सीताराम जी शर्मा, मंगलौर
16-17-18 मंगलौर

16- नेमप्रकाश जी आर्य
4 से 15 ओम प्रकाश जी आर्य प्रधान उप सभा कानपुर, (572/के ब्लाक, किदवईनगर)
19 से 25 हसनापुर जनपद शाहजहाँपुर।

17- श्री युगल किशोर जी आर्य
1 से 26 लालगंज रायबरेली।

18- श्री तेजपाल सिंह जी आर्य
2-3-4 मवाना जनपद मेरठ
20 से 29 टन्डवा (खाद दुकान), पो0 गढ़वा जनपद लालु (बिहार), 30 सांडी जनपद हरदोई।

19- श्री विक्रम देव जी आर्य
2 से 6 फीना मेला, जनपद बिजनौर, 7 से 13 गद्दी नेगी काशीपुर (नैनीताल), 15 से 20 महोदीनपुर धनौरा जनपद मुरादाबाद।

20- श्री ब्रजपाल जी शर्मा
5 से 15 महोदीनपुर (धनौरा) जनपद मुरादाबाद
16 से 25 धूंधली-विराल मीरापुर, पाहुली इस्माईलपुर (चांदपुर-क्षेत्र) बिजनौर।

21- श्री मनवीर सिंह जी आर्य
2-3-4 मवाना जनपद मेरठ
(श्री सभा प्रधान जी के निर्देशन में)

22- श्री धर्म प्रकाश जी प्रेमी
5 से 20 महोउद्दीन क्षेत्र, धनौरा मण्डी (मुरादाबाद)

23- श्री सीताराम जी आर्य सहारनपुर
6 से 20 महोदीनपुर क्षेत्र (धनौरा मण्डी) प्रभावशाली प्रचार योजना।

ढोलक वादकः-

24- श्री नेम लाल जी आर्य
4 से 15 श्री नेम प्रकाश जी आर्य के साथ सम्बद्ध कानपुर देहात, 19 से 25 हसनापुर, 27 से 29 हरदोई, 30 सांडी जनपद हरदोई।

25- श्री अमर लाल जी आर्य
1 से 26 सितम्बर लाल गंज (रायबरेली) श्री युगल किशोर जी आर्य से सम्बद्ध।

26- श्री सुभागचन्द्र जी आर्य
5 से 20 महोउद्दीनपुर क्षेत्र (धनौरा मण्डी) मुरादाबाद श्री धर्म प्रकाश जी प्रेमी से सम्बद्ध।

27- श्री कश्मीरीलाल जी आर्य
2 से6 फीना मेला बिजनौर, 7 से 13 गद्दी नेगी काशीपुर जनपद नैनीताल, 15 से 20 महोउद्दीनपुर क्षेत्र, 21 से 25 मुरादाबाद, 27 से 30 बी0- 185 गुरूनानकपुरा देहली।

28- श्रीमती आशा आर्या
श्री तेजपाल सिंह जी आर्य के साथ सम्बद्ध।
2-3-4 मवाना, मेरठ, 20 से 29 टंडवा (बिहार) 30 सांडी जनपद हरदोई।

निर्देश:-

1- प्रशिक्षण शिविर के निश्चय आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ के 26 अगस्त 1990 के अंक में प्रकाशित हैं। प्रचार कार्यालय अमरोहा द्वारा भी प्रपत्र पृथक से भेजे गये हैं, उनके क्रियान्वयन पर ध्यान दें तथा प्रगति से अवगत करायें।

2- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, राजधानी दिल्ली में दिनांक- 23 दिसम्बर से 26 दिसम्बर तक आयोजित होगा। आप इस सम्मेलन की सूचना अपने कार्यक्रमों के माध्यम से प्रसारित करते रहें। जो उपदेशक प्रचारक इस सम्मेलन में भाग लेना चाहें वह अपनी सूचना 15 अक्टूबर 1990 तक प्रचार कार्यालय अमरोहा को भेज दें, जिससे उनके आवास आदि की पूरी व्यवस्था कराई जा सके।

3- कार्यक्रम अभाव अप्राप्ति या स्थगित होने की सूचना आप तुरन्त प्रचार कार्यालय अमरोहा के पते पर भेजें।

4- आये हुए कार्यक्रम, तुरन्त स्वीकृति के लिये इस कार्यालय को भेजना सुनिश्चित करें।

मनमोहन तिवारी — हरिश्चन्द्र आर्य
मन्त्री — अधिष्ठाता, उपदेश विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0

पृष्ठ 3 का शेष.....

पं0 दीनानाथ शास्त्री ने अपने प्रस्ताविक भाषण में बताया कि इस सम्मेलन के कारण जहाँ जिले की अनेक आर्यसमाजें जागृत हुई हैं, वहीं अमेठी आर्यसमाज का गतिशीलता की दृष्टि से कायाकल्प हुआ है। उन्होंने इस अवसर पर राजर्षि रणंजय सिंह की पुण्यतिथि के अवसर पर बताया कि राजर्षि आर्यसमाज की दृष्टि से सदैव गतिशील रहे। राजनीति में सक्रिय होने के बावजूद भी अपने जीवन में आर्यसमाज के काम को प्रथम स्थान देते थे। राजर्षि चाहते थे कि डा0 संजय सिंह भी उनके उत्तराधिकार के रूप में आर्यसमाज की दृष्टि से गतिशील रहें।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के नये पदाधिकारी

इस अवसर पर डा0 ज्वलन्तकुमार-शास्त्री निर्वाचन अधिकारी के निर्देशन में जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा का चुनाव निम्नवत सम्पन्न हुआ।
संरक्षक- डा0 संजय सिंह (सांसद)
माननीय सदस्य-डा0ज्वलन्त कुमार शास्त्री
अध्यक्ष - श्री राम कृष्ण जायसवाल,
मन्त्री- श्री राधेश्याम एडवोकेट,
कोषाध्यक्ष- श्री आर0एन0 त्रिपाठी,

माननीय पं० इन्द्रराज जी, का मैनपुरी में- भव्य स्वागत एवं ५०११ रू० की थैली भेंट

मैनपुरी, 26·8·90 को आर्य-प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के माननीय प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी तथा राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0 के महामन्त्री पं0 जयन्त कुमार जी संगम-एक्सप्रेस ट्रेन से शिकोहाबाद रेलवे-स्टेशन पर पधारे वैदिक धर्म की जय के उदघोषों के साथ आर्यसमाज जाजूमई, केसरी, शिकोहाबाद तथा मैनपुरी आदि से भारी संख्या में आए आर्य-जनों ने अपने प्रदेश के शिरोमणि आर्यनेता का हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें सुगन्धित पुष्प-मालाओं से लाद दिया जहाँ से वह इस जनपद की आर्योप सभा के प्रशासक पं0 नरेन्द्रार्य आदि की व्यवस्था में, मोटरकार द्वारा रात्र में ही आर्यसमाज मन्दिर मैनपुरी पधारे और शयन किया।

प्रात. साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् आर्य स्त्री समाज मैनपुरी द्वारा गठित स्वागत- समिति के तत्वावधान में माननीय प्रधान जी. सभा के स्वागत की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम पाँच आर्यकन्याओं ने वाद्ययन्त्रों की तुमुल ध्वनि के साथ स्वागत-गीत पढ़ा और स्वागत समिति की अध्यक्षा श्रीमती कलावतीजी ने अपने प्रिय नेता को, माल्यार्पण-पूर्वक, स्वागत-गीत भेंट किया और तत्पश्चात्- कानपुर, इटावा, फर्रुखाबाद {कानपुर-मण्डल}, अलीगढ़, आगरा, फिरोजाबाद, एटा और मैनपुरी जनपदों {आगरा-मण्डल} से भारी संख्या में आये आर्य-जनों ने, स्वागत की श्रृंखला में अपनी-अपनी मालायें भेंट करके माननीय प्रधान जी, सभा की स्वागत-माला को पूर्ण करके अपने को धन्य किया। माननीय प्रधान जी, सभा ने अपने स्वागत का उत्तर देने से पूर्व स्वागत गीत गाने वाली कन्याओं को एक एक पुस्तक "भक्ति-दर्पण" की सस्नेह भेंट की और तत्पश्चात स्वागत कर्ताओं के प्रति आभार प्रस्तुत किया।

अपरान्ह, सभा द्वारा लखनऊ में बनाये जा रहे "स्वामी श्रद्धानन्द-अतिथि-भवन" की सहायता हेतु सभा के मुख्य निरीक्षक कुँ0 ध्रुवपाल सिंहजी "अटल" द्वारा की गई मार्मिक-अपील पर, उपस्थित आर्यजनों के संयुक्त सहयोग से, पाँच सहस्र ग्यारह रू0 की थैली, आर्यसमाज मैनपुरी की ओर से, माननीय प्रधान जी, सभा को सादर समर्पित की गई। सहयोगियों की सूची निम्न प्रकार है·-

1-	आर्यसमाज मैनपुरी।	1001 रू0
2-	सेठ मनोहरलालजी मैनपुरी।	1001 रू0
3-	श्री दयाशंकर जी, खैरगढ़।	1001 रू0
4-	श्री आर्यसमाज जगतपुर।	1001 रू0
5-	श्री छिगाराम जी, सिरसागंज।	0501 रू0
6-	आर्यसमाज बकेवर {इटावा}	0251 रू0
7-	श्री ब्रजनन्दन सिंह मैनपुरी	0103 रू0
8-	आर्यसमाज बेवर {मैनपुरी}	0101 रू0
9-	श्री सूरजपाल सिंह नवा-टेढ़ा।	0051 रू0
		5011 रू0

सायंकाल, नगर के सर्वात्मना समर्पित राष्ट्रवादी नेता तथा आर्योप सभा, जिला मैनपुरी के पूर्व-प्रधान डा0 रामेश्वर दयालु जी "पुरंग" की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें पं0 जयन्तकुमारजी का सुनकर नगर के राष्ट्रवादी विभिन्न संगठनों ने उन्हें बहुत सराहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों का सफल संचालन कुँ0 ध्रुव पाल सिंह जी "अटल" ने प्रबन्ध प0 मूलचन्द्र जी ने तथा आतिथ्य {भोजन} डा0 पीयूष कुमारजी व डा0 ज्ञान प्रकाश जी शास्त्री क्रमशः कोषाध्यक्ष व मन्त्री, स्थानीय आर्यसमाज ने किया और रात्रि में अपने मेहमानों को इटावा तक पहुँचाकर संगम एक्सप्रेस से मेरठ के लिये सादर विदा किया।

- प्रस्तुति शालिनी गुप्ता
मन्त्री
स्त्री आर्यसमाज, मैनपुरी

धर्म परिवर्तन :- अराष्ट्रीय दुरभिसन्धियों के समूलोच्छेदन के लिए

उपदेशकों प्रचारकों - धर्म शिक्षकों-पुरोहितों के

निर्माण का संकल्प

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

{5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ}

द्वारा संचालित

वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट जनपद गाजियाबाद एक दृष्टि में

1- गंगा का रमणीय तट - स्वास्थ्य प्रद जलवायु
2- सुरम्य प्राकृतिक छटा - शान्त वातावरण
3- विद्युत पंखों- जल एवं प्रकाश युक्त कक्षों से युक्त भवन
4- आवास- भोजन शिक्षा- की निशुल्क व्यवस्था।
5- सुयोग्य प्रशिक्षित अनुभवी आचार्यों द्वारा अध्यापन कार्य
6- द्विवर्षीय पाठ्यक्रम- परीक्षा उत्तीर्ण होने पर वैतनिक नियुक्ति का आश्वासन।
7- सिद्धान्त मर्मज्ञ शिक्षा विदों का सफल निर्देशन।

गुरुकुलीय वातावरण में आपकी अपनी आकांक्षाओं के प्रतीक इस महाविद्यालय को तन मन धन का सहयोग प्रदान कीजियेगा {आय कर से मुक्त}

दानदाताओं की सूची
{1 मई 1990 से प्रारम्भ}

क0सं0	दानदाता का नाम व पता	राशि
1-	श्री राजकुमार टटीरी, मेरठ	31-00
2-	श्री जगदीशप्रसाद, गाजियाबाद	11-00
3-	श्री धर्मवीर त्यागी,	5-00
4-	श्री महाशय याद राम, आर्यसमाज ब्रजघाट	100-00
5-	श्रीमती शान्ति देवी, गाजियाबाद	51-00
6-	श्री ब्रजेन्द्र सिंह, सिकंदराबाद	20-00
7-	श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी आ0स0 ब्रजघाट	100-00
8-	श्री शारदा प्रसाद, दिलशाद गार्डन दिल्ली-32	101-00
9-	श्री कन्हैया लाल जी, आ0स0 गजरौला	101-00
10-	श्री शारदा प्रसाद जी दिल्ली- 32	100-00
11-	श्री ब्रजेन्द्र सिंह, सिकन्दराबाद बुलन्दशहर	100-00
12-	श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी आर्यसमाज ब्रजघाट	50-00
13-	श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी आर्यसमाज ब्रजघाट	100-00
14-	श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी आर्यसमाज ब्रजघाट	200-00
15-	श्री प्रेमनाथ गौड, फरीदाबाद	110-00
16-	महिला आर्यसमाज स्याना बुलन्दशहर	101-00
17-	श्री बदन सिंह जी, पिलखावली गाजियाबाद	51-00
18-	श्री चमनलाल सोनी, गाजियाबाद	21-00
19-	श्री केवल मुनी जी, गजरौला	51-00
20-	श्री गोविन्द अरविन्द कुमार दिल्ली	201-00
21-	श्री राधेश्याम बाकराबाद-रामपुर	50-00
22-	महिला आर्यसमाज स्याना बुलन्दशहर	101-00
23-	श्रीमती शान्ति देवी स्याना	21-00
24-	श्रीमती सरोजदेवी स्याना बुलन्दशहर	51-00
25-	श्री तुलसी राम जी दिल्ली	21-00
	योग	1849-00

दानदाताओं को धन्यवाद।

नोट: चैक ड्राफ्ट- धनादेश

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पते पर भेजें।

आपके सहयोगाकांक्षी

इन्द्रराज — प्रधान
आचार्य देवव्रत — आचार्य
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

गांधी जी ने कहा था

नौकरी का आधार योग्यता हो

लखनऊ, 10 सितम्बर । सरकारी पदों पर भर्ती को लेकर स्वयं महात्मा गांधी का भी यह मानना था कि जो लाग देश की सरकारी सेवाओं में आने की इच्छा रखते हैं, उनके लिए आवश्यक है कि पदों के लिए वांछित परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हों। क्योंकि दायित्व से भरे उच्च पदों पर ऐसे ही लोग सेवा करने के पात्र हो सकते है। यह विचार बापू ने अपनी पुस्तक "मेरे सपनों का भारत" में व्यक्त किया है।

गाँधी जी के अनुसार सरकारी विभागों में जहां तक रोजगार मुहैय्या करने का सवाल है, उस संबंध में मै सोचता हूँ कि यदि हम लोग साम्प्रदायिकता की भावना का परिचय देते हैं तो यह एक अच्छी और कुशल सरकार के लिए बड़ी बुरी बात होगी। क्योंकि प्रशासन की कुशलता को बरकरार रखने के लिए ये जरुरी है कि इसकी बागडोर सदैव अत्यन्त योग्य हाथों को सौंपी जाए। प्रशासनिक क्षेत्र में निश्चित तौर पर कोई पक्षपात नहीं बरता जाना चाहिए। गाँधी जा ने दृष्टान्त दिया है कि यदि हमें पाच अभियन्ताओं की आवश्यकना है तो हमें प्रत्येक सम्प्रदाय से एक-एक का चयन नही करना चाहिए बल्कि पांचो पदों पर योग्य व्यक्तियों का चुनाव करना चाहिए। चाहे सबके सब मुसलमान हों या कि पारसी। निचले पदों पर यदि जरुरी हो तो निष्पक्ष परीक्षा बोर्ड के माध्यम से रिक्तियाँ भरी जा सकती हैं। उक्त बोर्ड में विभिन्न सम्प्रदायों के व्यक्ति शामिल किए जा सकते हैं।

लेकिन प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों की संख्या के अनुपात को आधार मानकर पदों का वितरण कभी नहीं होना चाहिए। शैक्षिक रूप से पिछड़े सम्प्रदाय के लोगों को सरकार से सिर्फ शिक्षा के संबंध में अतिरिक्त सुविधा पाने का हक होगा। इसे प्रभावशाली ढंग से शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े लोगों के हक में सुरक्षित किया जा सकता है। गांधी जी की किताब "मेरे सपनों का भारत" से उक्त अंश उत्तर प्रदेश के पूर्व मन्त्री श्री वंशीधर पाण्डे द्वारा प्राप्त हुए हैं।

आवश्यक सूचना

पूज्य स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक अध्यक्ष वेद संस्थान नजीबाबाद (बिजनौर) लखनऊ पधार रहे है और दिनांक-6 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 1990 तक सभा कार्यालय मे निवास करेंगे। लखनऊ जनपद तथा शहर की जो आर्यसमाजें/आर्य शिक्षण संस्थाएं पूज्य स्वामी जी के उपदेशामृत अथवा वेदकथा कराने की इच्छुक हो वह कृपया स्वामी जी से उक्त पते पर पत्र व्यवहार करें-

प्रबन्ध सम्पादक ।

आरक्षण का आधार-आर्थिक

आज से लगभग 30 वर्ष पहले हर देशवासी का एक ही निर्णय होता था- हर प्रकार से अपने देश का हित।

यहां प्रस्तुत है पण्डित जवाहरलाल नेहरु द्वारा 27 जून 1961 को मुख्यमन्त्रियों को भेजे गए पत्र का अवतरण। इसमें पं0 नेहरु को प्रभावित किये उच्च आदर्शों व अवसरवाद के बीच विरोधाभास के भेदों को स्पष्ट किया गया है।

अवतरण:

मैंने मुख्यमन्त्रियों को पारम्परिक रुढ़िवादिता त्यागने व क्षमता बढ़ाने की संस्तुति की थी। इसकी आवश्यकता तब पड़ी जब जाति व समूह के आधार पर विशेष रियायतें दी जाने लगीं। मैंने हाल ही में एक बैठक बुलाई जिसमें सभी "मुख्यमन्त्री उपस्थित हुए और राष्ट्रीय एकता पर विचार किया। इसके तहत यह मत व्यक्त किया गया कि आरक्षण व सहायता आर्थिक स्थितियों पर दिया जाए न कि हम किसी रूप में अनुसूचित जाति व जनजातियों को सहायता देने के बारे में निश्चित नियमों में बन्धे हैं और उन्हें सहायता की जरुरत भी है लेकिन फिर भी मैं किसी भी प्रकार के आरक्षण विशेषकर नौकरियों में के बिल्कुल पक्ष में नहीं हूं। मैं किसी भी दूसरे दर्जे या अक्षमता का सख्त विरोध करता हूँ। मैं अपने देश को हर बात में प्रथम श्रेणी का देखना चाहता हूँ। वह क्षण जब हम दूसरे दर्जे की बात करते हैं हम कुछ खो चुके होते हैं।

पिछड़े वर्गों की सहायता देने का वास्तविक मार्ग उन्हें केवल अच्छी शिक्षा का अवसर दिलाना है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी शिक्षा भी शामिल है। हाल ही में मैंने दो निर्णय लिये जो बहुत महत्वपूर्ण है। पहला- विश्वव्यापी फ्री प्राथमिक शिक्षा और दूसरा- मेधावी बालकों व बालिकाओं के प्रत्येक स्तर पर बड़ी मात्रा में छात्रवृत्ति। इससे न केवल साक्षर शिक्षा पर यह बात लागू होगी, बल्कि तकनीकी, विज्ञानपरक व चिकित्सकीय प्रशिक्षण में भी इसका उपयोग हो सकेगा। मैं यह सुविधा मेधावी व योग्य बालकों को ही देने पर जोर दे रहा हूँ क्योंकि यही बालक बालिकाएं देश का स्तर ऊँचा उठा सकते हैं। मुझे सन्देह नहीं कि हमारे देश में हिन्दी प्रतिभाओं का विशाल आरक्षित भण्डार है। परन्तु हम अगर उन्हें पर्याप्त अवसर दें।

लेकिन यदि हम जातीय व सम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण देते हैं तो हम मेधावी व योग्य छात्रों को पीछे छोड़ जाते हैं, मात्र दूसरे दर्जे व तीसरे दर्जे की बात ही बच जाती है। मुझे दुःख है कि साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण का व्यापार कितनी दूर तक फैला है।

मुझे यह जानकर हैरत होती है कि पदोन्नतियां भी जाति या सम्प्रदाय के आधार पर होती हैं यह मात्र भूल नहीं, बल्कि गम्भीर खतरा है। हमें पिछड़ी जातियों की हर प्रकार से सहायता करनी चाहिए, लेकिन क्षमता की कीमत पर नहीं। हम अपने सार्वजनिक क्षेत्र या किसी भी क्षेत्र का दूसरे दर्जे के लोगों के साथ कैसे निर्माण कर सकते हैं।

(जवाहरलाल नेहरु के पत्र मुख्यमन्त्रियों को (1947-1964) वाल्यूम 5, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989 पी पी 456-7)

आरक्षण : दोषी कौन?

सैयद सहाबुद्दीन ने अल्पसंख्यकों विशेषत. मुसलमानों के आरक्षण की मांग बहुत गर्मजोशी के साथ की है। मुस्लिम नेताओं का कहना है कि इस देश में मुसलमान शैक्षिक एवं सामाजिक दृष्टि से सबसे अधिक पिछड़ा हुआ है। अत: उन्हें जनसंख्या के आधार पर 11 प्रतिशत आरक्षण सरकारी नौकरियों में मिलना ही चाहिए। ईसाई सम्प्रदाय के लोग भी आरक्षण प्राप्त करने के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं। इस समय देश में भेड़िया धसान की सी स्थिति है। अल्पमत की कमजोर सरकार तुष्टिकरण की नीति पर अंतिम स्वांसें भर रही है।

प्रश्न है कि क्या मुसलमान और इसाई 1947 के पश्चात पिछड़े, अथवा पहले से ही पिछड़े थे? यदि मुसलमान एक हजार वर्ष तक शासन करने के पश्चात भी अशिक्षित एवं दरिन्दा बना रहा तो उसका दोषी कौन? उसका दण्ड (आरक्षण के द्वारा) हिन्दू क्यों चुकाएं? जो लोग पाकिस्तान चले गये क्या उन्हें वहां आरक्षण मिल रहा है? इसी प्रकार अंग्रेजों के दो-सौ वर्षो के शासनकाल में यदि कोई ईसाई पिछड़े रहे तो आज वे किस मुंह से आरक्षण की मांग कर रहे हैं।

ज्ञात हो कि हिन्दुओं में जिनके शैक्षिक, सामाजिक रूप से पिछड़ने का दोष सवर्ण हिन्दुओं पर थोपा जाता है, वस्तुत वे 712 से 1947 ई0 तक के 12 सौ वर्षों में तत्कालीन शासन व्यवस्था के अन्तर्गत ही शोषित एवं उत्पीड़ित हुए हैं। 1947 ई0 के पश्चात् तो उनका शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर बढ़ा ही है।

-जयदेव शर्मा
सदर, लखनऊ।

आवश्यकता

श्री नि:शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) में संरक्षण- हेतु एक संरक्षक की आवश्यकता है। संन्यासी को वरीयता दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार। पूर्ण विवरण के साथ पत्र-व्यवहार करें।

-ज्ञानेन्द्र भटनागर
कुलपति
श्री नि:शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय
अयोध्या, फैजाबाद।

--

पञ्जीकरण स. एल. डब्ल्यू / एन.पा. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
आश्विन शुक्ल ५ , संवत २०४७ वि
दिनांक २३ सितम्बर १९९०

दूरभाष २४५६६२

सेवा में :

आर्य विद्या सभा बुलन्दशहर के वास्तविक प्रशासक श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा

जिलाधिकारी तथा (पूर्वपदेन) अध्यक्ष, आर्य विद्या सभा बुलन्दशहर द्वारा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 को प्रेषित पत्र दिनांक- 6 सितम्बर 1990, आर्यप्रतिनिधि-सभा उ0प्र0 की अन्तरग सभा दिनांक- 16-9-90 में विचार हेतु प्रस्तुत हुआ। तथा विचारोपरान्त सर्वसम्मत निश्चय के अनुरूप आर्य विद्या सभा बुलन्दशहर के प्रशासक पद पर श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा की पुन पुष्टि की गई।

जिलाधिकारी का उक्त, पत्र अंतरग सभा में पढ़ा गया तथा उसके सभी बिन्दुओं पर गम्भीर विचार-विमर्श ,हुआ तथा विचारोपरान्त श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा की ही उक्त विद्यार्यसभा के प्रशासक पद पर पुष्टि सर्वसम्मति से की गई। श्री प्रधान जी सभा को यह भी अधिकार दिया गया कि वे तदनुसार ही जिलाधीश महोदय को उनके पत्र दिनाक- 6 सितम्बर 1990 के अनुसार सूचित कर दें तथा उनसे अनुरोध करें कि वे श्री शर्मा को प्रशासन का कार्यभार हस्तान्तरित कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-मनमोहन तिवारी सभामन्त्री

आर्य महासम्मेलन का आयोजन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद द्वारा दि0 30 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक चिरोडी ग्राम में सम्पन्न होगा। जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं जिसमें आर्य जनता अधिक से अधिक सख्या में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

- गोपाल सिंह वरिष्ठ उपमन्त्री
जिलासभा, गाजियाबाद।

7 वाँ आर्य युवा महासम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 7 वाँ आर्य युवा-महासम्मेलन ० अक्टूबर 1990 से 10 नवम्बर 1990 तक आयोजित किया गया है। जिसमें विभिन्न स्थानों पर प्रतियोगिताएँ होंगी। समापन एव पारितोषिक वितरण समारोह 10 नवम्बर 1990 को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित किया जायेगा, जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोधजी सरस्वती करेंगे।

- सूर्य देव
महामन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित ।

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि.सं.२२४१/५७) आश्विन शुक्ल ११ रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक ३० सितम्बर १९९० (घोषणापत्र सं.७/२२-२-२५)



सबके सुख की करें कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।

सुखी बसे संसार सब
दुखिया रहै न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी
मेरे भगवन पूरी होय।।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१ रू. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष
अंक - ३८

आर्यसमाज देश में अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों को कभी पनपने नहीं देगा

आरक्षण का आधार आर्थिक होना चाहिए

—— इन्द्रराज, सभा प्रधान

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की एक महत्वपूर्ण अन्तरंग सभा दिनांक- 16·9·1990 को लखनऊ में श्री पं0 इन्द्रराज सभा प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें आगामी वर्ष के लिए सभा का चुनाव कार्यक्रम स्वीकृत किया गया तथा देश के सम्मुख उपस्थित गम्भीर समस्याओं पर विचार विमर्श के उपरान्त कतिपय निर्णय लिए गये।

इस अवसर पर शासन की अदूरदर्शिता से भरी हुई घोषणाओं एवं नीतियों के परिणामस्वरूप देश में बढ़ रहे जातीय एवं साम्प्रदायिक विद्वेष, धर्मान्तरित हुए व्यक्तियों को मिलने वाली सुविधाओं को यथावत् जारी रखे जाने, एवं गोहत्या के कलंक से राष्ट्र को अब तक मुक्त न किए जाने के विरोध में प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए आर्य प्रतिनिधियों, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री डा0 सच्चिदानन्द शास्त्री ने अन्तरंग में प्रस्तुत प्रस्तावों पर अपने अपने विचार प्रकट किए। सभी ने एक मत से देश में बढ़ रही अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों की निन्दा करते हुए आरक्षण को आर्थिक आधार पर दिए जाने का समर्थन किया तथा इस बात के लिए राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार की कटु आलोचना की गई कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ गाय का आर्थिक एवं धार्मिक महत्व है- पिछले दिनों उसकी हत्या के विरोध में लाया गया एक विधेयक संसद में पारित न हो सका।

आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने घोषणा की कि आर्यसमाज देश में कभी भी विघटनवाद, अराष्ट्रीयता, जातिविद्वेष एवं साम्प्रदायिक वैमनस्य को नही पनपने देगा। आर्यसमाज जन्मना जातिपान्त का सदैव से विरोधी रहा है और वह एक ऐसे स्वस्थ समाज की रचना के लिए अपने जीवनकाल के प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील है, जहाँ "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" की मूलभावना अन्तर्निहित है। आज समाज के हर वर्ग में गरीबी और शोषण से ग्रस्त व्यक्ति पाए जाते हैं। इन सभी को उन्नति के समान अवसर प्रदान करना ही न्यायोचित मार्ग है। हमारे संविधान में भी यही भावना निहित है। अतः आरक्षण का आधार वर्गविशेष पर सीमित न रखकर केवल आर्थिक आधार पर रखना चाहिए। इसी प्रकार जब यह स्पष्ट हो चुका है कि धर्मान्तरण प्रकारान्तरण से राष्ट्रान्तरण ही है और विदेशों से आये हुए अपार धन से गरीब भोलेभाले हिन्दुओं को धर्मान्तरित करके उन्हें राष्ट्रविरोधी बनाया जा रहा है तो फिर धर्मान्तरित व्यक्तियों को मिलने वाली सुविधाएं जारी रखना राष्ट्रद्रोह नही तो और क्या है। यदि यही स्थिति रही तो भारत का नक्शा ही विकृत होता चला जायेगा। आगे उन्होंने कहा कि कितने दुख की बात है कि जो गौ आदिकाल से इस देश के आर्थिक ढाँचे की मेरुदण्ड मानी जाती रही है और जिसे वेदों में "अघ्न्या" कहा गया है। उसकी हत्या के अभिशाप से यह देश अभी तक मुक्त नही हो सका है।

मा0 प्रधान जी ने उपस्थित आर्य प्रतिनिधियों को स्मरण कराया कि आर्यसमाज एक जीवन्त और जुझारु संस्था है। उसने कभी असत्य से समझौता नही किया और इस बार भी हम शासन की गलत नीतियों के सामने घुटने नही टेकेंगे। उन्होंने प्रतिनिधियों का आह्वान करते हुए कहा कि वे आर्यसमाज के जागरूक प्रहरी की भाँति प्रदेश के कोने-कोने में फैल जायें और सरकार की भेद परक नीतियों का भण्डाफोड़ करके हिन्दूसमाज को विघटित होने से बचाएं। उन्होंने समस्त राष्ट्रीयता प्रेमी भारतीय जनता से भी पुरजोर अपील की कि वह आर्यसमाज के हाथों को मजबूत करे, जिससे हम आर्यसमाज के केन्द्रीय नेतृत्व के मार्गदर्शन में एक बार फिर अपने त्याग और बलिदान का इतिहास दोहरा दें।

आर्य भूमि पर अरूणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
—राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ आश्विन शुक्ल- ११ संवत २०४७ वि.

दिनांक ३० सितम्बर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि सवंत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

बीसवीं सदी का रावण

रावण त्रेतायुग में मारा गया था पर उसके रक्तबीज ने न जाने कितने कुकुरमुत्ते रावण पैदा कर दिए हैं। कभी आतंकवाद कभी आरक्षण वाद कभी सम्प्रदायवाद और कभी मन्दिर-मस्जिदवाद----- देश के कोने-कोने में उसके पुतले खड़े हो गये हैं, राम के वंशजों को ललकार रहे हैं, कह रहे हैं अभी मैं मरा नहीं हूं। उस समय तो मेरे केवल दश सिर थे आज तो मेरे हजारों सिर और हजारों रुप हैं। उस समय तो मैंने एक ही मनारी का अपहरण किया था आज तो किसी की खैर नही है कहां किसकी अस्मत लुट जाय कौन धांय-धांय का शिकार बन जाय। कितने राम पैदा करोगे? । सत्ता की लालच में वोटों की मिन्नतों में हर मुखौटा राम बन रहा है। हर मुंह से शबरी के लिए प्रेम उमड़ रहा है पर उसके झूठे बेर खाने को कोई तैयार नही है। रोटी बेटी के व्यवहार की तो बात ही दूर है। तुम उनका मुकाबला करोगे?। ईरान का मुसल्मान लखनऊ के मुसल्मान के साथ एक थाली में बैठकर खाना खा लेता है रोटी बेटी का व्यवहार भी कर लेता है पर ठाकुर विश्वनाथ सिंह के बेटे की शादी चौधरी मुलायम सिंह की लड़की से हर्गिज़ नही हो सकती। शबरी को नौकरी दी जा सकती है पर उसके झूठे बेर नही खाए जा सकते और न उसे घर की बहू बनाकर लाया जा सकता है।

एक बार चौ0 चरणसिंह जी ने शर्त लगानी चाही थी कि उत्तर-प्रदेश में पी0सी0एस0 ओफीसर वही बनाया जायेगा जो अन्तर्जातीय विवाह करेगा, राष्ट्र की भावात्मक एकता का कितना सुन्दर क्रियात्मक स्वरूप था- पर हंगामा खड़ा हो गया। ब्रह्मभोज में अपवित्रता नजर आने लगी, प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। सच्चा राम आर्यसमाज ने पैदा किया है। सदियों से चली आ रही भेद की दीवारों को तोड़ दिया है। हमने गुरुकुलों में पढ़ते हुए एक थाली में बैठकर रोटी खाई है। निषाद को हृदय से लगाकर प्यार और स्नेह दिया है। हमने किसी की जातिपान्त पूछी ही नहीं केवल गुणों का मूल्यांकन किया है। राष्ट्र में ऐसी भावात्मक एकता और कौन ला सकता है। राम के वंशजों को आर्यसमाज का ऋणी होना चाहिए क्योंकि इसी भावना से रावण के यह रूप मिट सकते हैं।

सीधा प्रश्न यह है कि हम किसकी विजय चाहते हैं रामत्व की अथवा रावणत्व की। जो रामत्व की विजय चाहते हैं उन्हें हमारा खुला निमन्त्रण है। राम आर्यत्व के प्रतीक थे, वेद में दी हुई समस्त मानवीय मर्यादाओं के पालक-पोषक थे जबकि रावण आसुरी शक्तियों का प्रतीक था। कहा जाता है रावण बड़ा विद्वान था, ब्राह्मण था, वेदों का ज्ञाता था किन्तु उसके कृतित्व ने उसे इतना अपूज्य और हेय बना दिया था कि जहां हम दुश्मन के मरने पर भी गम मनाते हैं वहीं रावण के मरने पर खुशियाँ मनाई जाती हैं। कोई अपने बच्चों का नाम रावण नहीं रखना चाहता। उसके वंश से कोई हिन्दू अपने को जोड़ना नहीं चाहता। और राम की पूजा घर-घर हो रही है। सुबह उठते ही राम का नाम लेना अहोभाग्य माना जाता है। आज हमारे सामने त्रेतायुग के वे दोनों ही नहीं हैं लेकिन रामत्व और रावणत्व का भयंकर संघर्ष आज भी राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित है। आज हमारे राजनैतिक क्षितिज पर ऐसे ही क्षत्रियप्रवर राम की आवश्यकता है। राम के वंशज राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह की एक ही हुंकार से पाकिस्तान ठंडा पड़ गया है, लेकिन राष्ट्र के अन्दर बढ़ रहे इन बहुरुपी रावणों का विनाश करना शेष है। ■

आवश्यक सूचना

जिला सभा एटा की सभी आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य उपप्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन दि0- 7 अक्टूबर को प्रात: 11 बजे होगा। सभी सम्बन्धित आर्यसमाजों के प्रतिनिधि नियत समय पर पधारें।

-मन्त्री

वार्षिकोत्सव

• आर्यसमाज सुल्तानपुर पट्टी (नैनीताल) का 43वाँ वार्षिकोत्सव दि0- 3 से 5 अक्टूबर को मनाया जा रहा है जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् उपदेशक भजनीक पधार रहे हैं आर्य जनता सादर आमन्त्रित है।

- • वेदमन्दिर सत्संग मण्डल चाँदपुर (बिजनौर) का सत्ताईसवाँ वार्षिक यज्ञ दिनांक- 6 से 11-10-90 तक महात्मा लखपत राय शास्त्री जी की अध्यक्षता में रेलवे-स्टेशन के निकट वेदमन्दिर में होगा। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि यज्ञ में सम्मिलित होकर जीवन को सफल बनायें।

आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का आगामी १०५वाँ वार्षिक बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन १९९०-९१

दिनांक-२४ तथा २५ नवम्बर १९९० को डी०ए०वी० कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

१ -	सभा कार्यालय में चित्रों के प्राप्ति की अन्तिम तिथि	15-10-90 -	(सोमवार)
२ -	प्राप्त चित्रों की जाँच	16-10-90 से 19-10-90 तक -	(मंगलवार से शुक्रवार तक)
३ -	मतदाता सूची का प्रकाशन	22-10-90 -	(सोमवार)
४ -	आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	25-10-90 -	(बृहस्पतिवार)
५ -	आपत्ति का निवारण	26-10-90 से 27-10-90 तक	(शुक्रवार से शनिवार तक)
६ -	शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	6-11-90 -	(मंगलवार)
७ -	बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	24,25-11-90	(शनिवार तथा रविवार)
८ -	चुनाव परिणाम की घोषणा -	निर्वाचन की समाप्ति के बाद।	

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उ0प्र0
नारायण स्वामी भवन
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

मृत्यु का महत्व

डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, दिल्ली

मृत्यु से हर-कोई डरता है। कोई मरना नहीं चाहता। जिस व्यक्ति की दशा ऐसी हो गई हो कि उसका मरना निश्चित है, जिसे भगवान् भी नहीं बचा सकता, वह भी मरना नहीं चाहता। शंकराचार्य ने ठीक ही कहा है:

अंग गलितं पलितं मुंडं दशन विहीनं जातं तुंड
वृद्धे याति गृहीत्वा दंडं तदपि न मुञ्चति आशा पिंडम्।

अंग गल गया है, शरीर रक्तहीन होकर पीला पड़ गया तो, मुंह में दांत एक भी न रहा हो, दण्ड के सहारे-बिना जो एक भी कदम न चल सकता हो, वह भी जीने की आशा लेकर बैठा रहता है। किसी तरह भी हो, मनुष्य जीना चाहता है। हम जीना क्यों चाहते हैं? मरने से क्यों डरते हैं? इस बात को अधिक स्पष्ट करने के लिये भागवतपुराण में ययाति का एक आख्यान दिया गया है। वहां लिखा है कि सत्-युग में नहुष नाम के एक राजा हुए। उनका विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से हुआ। उस काल में कन्या के विवाह के साथ एक दासी भी भेजी जाती थी। देवयानी की दासी का नाम शर्मिष्ठा था। नहुष तथा देवयानी के छः पुत्र हुए। द्वितीय पुत्र का नाम ययाति था। ययाति का शर्मिष्ठा से प्रेम हो गया। यह बात शुक्राचार्य को अच्छी न लगी। यह देखकर शुक्राचार्य ने ययाति को शाप दे दिया कि तुम सदा वृद्ध बने रहोगे ताकि तुम्हारे साथ किसी कन्या का प्रेम-संबंध न हो।

ययाति बड़ा विषयी व्यक्ति था। उसने बार-बार शुक्राचार्य से इस शाप से मुक्त होने की प्रार्थना की। परिणामस्वरूप आचार्य ने उक्त शाप के साथ एक वरदान भी दे दिया। वरदान यह था कि अगर कोई व्यक्ति स्वेच्छा से अपना यौवन तुम्हें देकर तुम्हारे वार्धक्य को लेने के लिये तैयार हो जाय तो ऐसा अदल बदल हो सकेगा।

कुछ दिनों बाद ययाति के पांच पुत्र हुए जिनका नाम था- यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु, अनु तथा पुरु। जैसा पहले कहा जा चुका है, ययाति अत्यन्त विषयी व्यक्ति थे। उसने अपने पुत्रों से वार्धक्य लेकर यौवन देने की प्रार्थना की, परन्तु किसी ने न माना, परन्तु पुरु मान गया। पुरु बूढ़ा हो गया, ययाति जवान होकर विषय-वासना में लिप्त रहने लगा। विषयों में लिप्त रहने के बाद एक दिन उसने अनुभव किया कि विषयों से कभी तृप्ति नहीं होती। ये तो आग के समान हैं- इनमें जितनी आहुति दी जाय, उतनी विषय-वासना भड़क उठती है। यह अनुभव कर उसने अपनी पत्नी देवयानी से कहा कि संसार देख लिया, यहां तृप्ति नहीं होती, अब हम दोनों को अध्यात्म का मार्ग अपनाना चाहिये। इस अनुभव के बाद दोनों एक साथ अध्यात्म- मार्ग के राही बन गये।

यह कथानक मात्र है। इसका अभिप्राय इतना ही है कि संसार में रहने का असली गुर विषयों से दूर रहना, अर्थात् निस्संगता है। परन्तु प्रश्नों का प्रश्न यह रह जाता है कि निस्संग हुआ नहीं जाता। कहते सब हैं, निस्संगता करता कोई नहीं। श्री कृष्ण ने गीता में कहा है:- निस्संगो भवार्जुन- हे अर्जुन, जीवन का गुर निस्संग हो जाना है। "निस्संगता" का क्या अर्थ है? "निस्संगता" का अर्थ है- संसार के जितने संग हैं उन्हें तोड़ देना। प्रश्न खड़ा हो जाता है कि संसार में हमारे कौन-कौन से संग हैं? संग का अर्थ है "बन्धन"। जो बंधन हमें संसार से बांधे हुए हैं उन्हें तोड़ना है ताकि हम गीता के शब्दों में निस्संग हो जायें। "निस्संग" होना तो हमारा ध्येय है, परन्तु निस्संग हो जाना हमारे बस की बात नहीं है। हम पहले देख चुके हैं कि संसार के विषयों के संग से ययाति का क्या हाल हुआ। हम सब ययाति से कम नहीं हैं, उससे कुछ बढ़-चढ़ कर ही हैं। संसार को भोगते हुए हम सब- कुछ भूल जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति विषयों में डूबा हुआ है। हमें सब-कुछ चाहिये, संसार की हर वस्तु चाहिये। हम संसार की हर वस्तु के साथ ऐसे चिपटे रहते हैं जैसे चींटी गुड़ के साथ चिपटी रहती है। उसे खींचें तो वह स्वयं टूट जायगी, परन्तु गुड़ को नहीं छोड़ेगी। इसका क्या इलाज है। हम कहते रहते हैं- विषया न भुक्ताः वयमेव भुक्ताः, कालो न यात वयमेव याताः- "हमने विषयों को नहीं भोगा विषयों ने ही हमें भोग लिया- हम सबकी ययाति की - सी दशा है। इसका इलाज प्रभु ने अपने पास रखा है, हमारे हाथ में नहीं दिया। वह इलाज क्या है?

उस इलाज का नाम "मृत्यु" है। हम जीवन भर धन-सम्पत्ति जोड़ते हैं। बड़े-बड़े महल खड़े करते हैं। अपने लिये, अपने बच्चों के लिये, अपने समाज के लिये, अपने देश के लिये जी-जान से मेहनत करते हैं, यहां तक कि यह मेहनत करते-करते प्राण तक त्याग देते हैं। मृत्यु को क्या जीवन की सार्थकता नही कहा जा सकता, क्या इस प्रकार का जीवन "निस्संगताः का जीवन नहीं है? इसमें सन्देह नहीं कि दूसरों के लिये जीना निस्संगता का जीवन है, वैदिक-संस्कृति में इसी को स्वार्थहीनता, निस्संगता कहा गया है, परन्तु इस प्रकार के जीवन में जीवन की अनुभूति "मृत्यु" में ही होती है। "निस्संगता" का अर्थ है- संसार की किसी वस्तु से चिपटने न रहना, उससे अलग रहना। जब अलगाव में दुःख न हो तभी निस्संगता की अनुभूति होती है। हम अपने जीवन में सब कुछ अपना बना लेते हैं, अपना बना लेने का अर्थ है- यह मेरा, वह मेरा, सब-कुछ मेरा- ही - मेरा। इस मेरे पन को दूर करने के लिये भगवान् ने "मृत्यु" को अपने हाथ में रखा हुआ है। जब मृत्यु आती है तब मेरा धन-धान्य, मेरे मकान, मेरे महल, पति के लिये मेरी पत्नी, मेरे बाल-बच्चे, मेरा परिवार, मेरा समाज, मेरा देश- सब खो जाते हैं, मेरा कुछ नहीं रहता। यही हाल पति का होता है।

इस दृष्टि से "मृत्यु" डरने की घटना नहीं है, परमात्मा की तरफ से "मृत्यु" एक वरदान है, "मृत्यु" होने पर ही यह स्पष्ट हो जाता है कि जिन महलों को हम अपना समझे बैठे थे, जिन कुटुम्बियों को हम अपना समझते थे, संसार की जिस वस्तु के लिये हम दूसरों से लड़ते-झगड़ते थे, उनमें से कुछ भी हमारे साथ जाने वाली नहीं हैं। हम चले जायेंगे, हमारा परिवार, हमारा देश यहीं रहेगा, हमारे साथ कुछ न जायगा।

इसमें सन्देह नहीं कि निस्संगता ही जीवन का यथार्थ तथ्य है, परन्तु इसकी स्पष्ट अनुभूति "मृत्यु" द्वारा ही होती है। अन्यथा हम-सब ययाति ही बने रहते हैं।

"मृत्यु" का यही यथार्थ महत्व है। "मृत्यु" हमें संसार की वह निस्सारता दिखा देती है, जिसे हम जीवनभर भूले रहते हैं।

आवश्यक सूचना

"आर्यमित्र" के ग्राहकों से निवेदन है कि शुल्क भेजते समय कृपया पुरानी ग्राहक संख्या अथवा नवीन ग्राहक मनीऑर्डर कूपन पर अवश्य लिखें।

-प्रबंध सम्पादक

आधुनिक भारत पर दयानन्द का प्रभाव

• डा० शकुनचन्द्र आर्य विद्यावाचस्पति(रायबरेली)

आधुनिक भारत के महापुरुषों में आर्यसमाज के प्रवर्तक एवं वेदों के उद्धारक स्वामी दयानन्द सरस्वती का अति प्रमुख स्थान है। जिस प्रकार कि उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य धारणकर, अनेक कष्टों का सह, सभी प्रकार के विरोधों का मुकाबिला कर, पत्थरों एवं ईंटों के प्रहार सह तथा तलवार का वार सहकर सत्य एवं ज्ञान के प्रचार में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया, वह विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। उन्होंने भारतीय जीवन के विविध क्षेत्रों में अपने विचारों एवं आदर्शों का प्रभाव डाला। आज देश के प्रत्येक क्षेत्र में जो अभूतपूर्व परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं उन पर उनकी विद्वता, तपस्या, स्पष्टवादिता, तर्कशक्ति तथा चरित्रबल का सर्वाधिक प्रभाव है।

विविध क्षेत्रों में उनका जो प्रभाव पड़ा उनका निम्नांकित पंक्तियों में उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा।

धर्म एवं उपासना के क्षेत्र में स्वामी जी के कार्य

सारे देश का भ्रमण करने तथा मथुरा में दण्डी विरजानन्द से वेदज्ञान प्राप्त करने के बाद स्वामी-दयानन्द ने अनुभव किया कि भारत के हिन्दुओं(आर्यों) के पतन का एक प्रमुख कारण उनकी सच्चे वैदिक धर्म के प्रति अनभिज्ञता है। उन्होंने देखा कि देश के सभी हिन्दुओं की मुसलमानों एवं ईसाईयों की भांति कोई सर्वमान्य उपासना पद्धति, धार्मिक ग्रन्थ, अभिवादन सूचक शब्द, ईश्वर का नाम तथा चिन्तन की शैली नहीं है। ऐसी स्थिति में उन्होंने सभी हिन्दुओं को यह समझाकर कि "उनका सही नाम आर्य है, वेद उनके धार्मिक ग्रन्थ हैं, "ओ३म्" परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है, "नमस्ते" उनका पारस्परिक अभिवादन सूचक शब्द है, संस्कृत उनकी धार्मिक भाषा है, ईश्वर निराकार है, मूर्ति पूजा अवैदिक है, संध्या, देवयज्ञ, अतिथि-यज्ञ, पितृ-यज्ञ तथा बलिवैश्व देवयज्ञ दैनिक पंच कर्म हैं" उनमें धार्मिक एवं उपासना संबंधी एकता लाने का प्रयास किया। उनके पहिले मूर्ति पूजा, ढोंग, आडम्बर, बलि, जादूटोना आदि हिन्दुओं की पूजा के प्रमुख अंग बन चुके थे परन्तु स्वामी जी के उपरोक्त वैदिक आन्दोलन के फलस्वरूप हिन्दुओं के विभिन्न पन्थों में धार्मिक एकता बढ़ी, वे वेदज्ञान, ओ३म् नमस्ते, यज्ञ तथा हिन्दू एकता का महत्व समझने लगे हैं।

वर्तमान सामाजिक परिवर्तन उनकी देन

देश के वर्तमान सामाजिक परिवर्तन में स्वामीजी का सबसे अधिक योगदान है। एक समय था जबकि देश में छुआछूत एवं ऊँचनीच की भावना अपनी चरमसीमा पर थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र की क्या बात, ब्राह्मण का छुआ खाना नहीं खाते थे, "नौ कनौजिया छत्तीस चूल्हे, की कहावत चरितार्थ थी। परन्तु स्वामी जी के क्रांतिकारी विचारों का इतना प्रभाव पड़ा कि आज देश में खान-पान के क्षेत्र में छुआछूत समाप्त हो चुकी है, होटलों में तथा विवाहों के अवसर पर सभी हिन्दू क्या मुसलमान एवं ईसाई एक साथ बैठकर भोजन करने लगे हैं। काश। यदि यह स्थिति पहले होती अथवा स्वामी जी महाराज के जन्म आधुनिक युग में होने के बजाय भारत में मुस्लिम आक्रमणों के पूर्व होता तो इस देश में आर्यों (हिन्दुओं) के अतिरिक्त अन्य कोई विधर्मी न होता तथा वर्तमान साम्प्रदायिक समस्या का जन्म न होता।

एक समय था जबकि देश में नारियों की स्थिति दयनीय थी। बाल विवाह एवं अनमेल विवाहों के कारण विधवाओं की संख्या तेजी से बढ़ रही थी। उन्हें शिक्षित करना अधार्मिक माना जाता था। उन्हें धर्माचार्य नरक का द्वार मानते थे। परन्तु स्वामी जी ने "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" तथा "नारी निन्दा मत करो नारी नर की खान" के अनुरूप विचार व्यक्त कर नारियों को शिक्षित करने, उन्हें पुरुषों के बराबर स्थान देने बाल विवाह रोकने तथा विधवा विवाह करने का समर्थन कर उन्हें दयनीय स्थिति से उबारने का प्रयास किया। उनके विचारों का ही प्रभाव पड़ा कि आर्यसमाज ने सारे देश में कन्यागुरुकुल तथा कन्याविद्यालय खोले जो कि नारी जाति के लिए वरदान सिद्ध हुए।

इस समय हिन्दू समाज में विवाह के अवसर पर जो कन्या की शैक्षिक योग्यता की पूँछ की जाती है, विवाह की आयु कन्या की लगभग 18वर्ष तथा वर की लगभग 25 वर्ष हो गई है, कन्याएं (महिलाएं) जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों का मुकाबिला कर रही हैं, इस समय अछूतों की स्थिति आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य दृष्टियों से अच्छी है, अपने देश में स्व० श्रीमती इन्दिरागांधी ऐसी विधवा देश की प्रधानमन्त्री तथा स्व० श्री जगजीवनराम ऐसे हरिजन देश के रक्षामन्त्री बनने में समर्थ हुए, यह स्वामी जी के विचारों, आन्दोलन तथा दिखाये गये मार्ग के ही परिणाम हैं।

शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में उनका प्रभाव

शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी स्वामी जी का प्रभाव अभूतपूर्व एवं उल्लेखनीय रहा। उनके आगमन के पूर्व इस देश में लार्ड मैकाले का भारतीयों को काला अंग्रेज बनाने, वेदों को गडरियों का गीत बताकर उन्हें असभ्य ठहराकर अंग्रेजियत फैलाने का जादू पूरी तरह काम करने लगा था परन्तु स्वामी जी ने देशवासियों के समक्ष वेदों का रहस्य खोल कर तथा उनकी महत्ता बताकर उन्हें वेदों तथा अतीत की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया, देशवासियों में अतीत के प्रति गौरवभाव उत्पन्न किया। उनके विचारों का प्रभाव श्री मैथिलीशरण गुप्त, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिशंकर-शर्मा कविरत्न तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि अनेक साहित्यकारों पर पड़ा। "हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी" विचारात्मक पंक्तियों से युक्त भारत के विगत गौरव पर प्रकाश डालने वाली श्री मैथिलीशरण गुप्त की "भारतभारती" पुस्तक पर स्वामी जी के विचारों की स्पष्ट छाप है। अंग्रेजी शासनकाल में अंग्रेजों एवं ईसाई मिशनरियों के कुतर्कों का मुंहतोड़ जवाब देकर भारतीय संस्कृति, संस्कृत भाषा तथा शुद्ध वैदिक विचारधारा को पुर्नस्थापित करने का श्रेय स्वामी जी को है। यदि वे उस भारत भूमि में जन्म न लेते तो, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि भारत अंग्रेज विजेताओं के सामने अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा कर पाता अथवा अन्य अंग्रेजशासित देशों की भांति उसे गवांकर उनका सांस्कृतिक दास बन जाता।

निस्सन्देह स्वामी जी के विचारों तथा कार्यक्रमों ने राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। आधुनिक भारत के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। ▫

आदरणीय लेखक महोदय

आर्य जगत के शिरोमणि नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान, अद्भुत वक्ता पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री-पं0 प्रकाशवीर शास्त्री देश की उन महान विभूतियों में गिने जाते हैं, जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व ने राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गरिमा को बहुत ऊँचा उठा दिया था। ऐसे पुरुषरत्न को अपनी पावन धरती पर जन्म देना इस प्रदेश का सौभाग्य रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का मुख पत्र "आर्यमित्र" उनकी पुण्यस्मृति में, आगामी दिसम्बर 90 में "प्रकाशवीर शास्त्री अंक" प्रकाशित करने जा रहा है। इस अंक में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बहु आयामी स्वरूप पर देश-विदेश के मान्य विद्वज्जनों। राजनीतिज्ञों तथा उच्चकोटि के सत्. पुरुषों के विचारों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में प्रकाशित की जायेगी।

आप उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित रहे हैं और उनके कृतित्व के प्रशंसक भी।

मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा, यदि आप उनके सम्बन्ध में अपने विचारों को मूर्तरूप देते हुए इस अंक में प्रकाशनार्थ मुझे भेजने की कृपा करेंगे।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

मण्डल संचालक नियुक्त

जौनपुर जनपद के आर्यवीर दल मण्डल संचालक के पद पर दि0-9 अगस्त 90 को श्री आर्य मुनि केराकत ने शाहगंज में श्री राधेमोहन गुप्त को नियुक्त किया है। श्री गुप्तजी ने कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

डा. हरिशंकर शर्मा शती समारोह

• धर्मपाल विद्यार्थी
भूतपूर्व प्रधान, नगर आर्यसमाज (आगरा)

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार तथा आर्यसमाज के नेता के रूप में भी मान्य रहे स्वर्गीय पं0 हरिशंकर-शर्मा का जन्म भाद्रपद कृष्ण 9 संवत्-1947 को हरदुआगंज (अलीगढ़) में हुआ था। साहित्य साधना और आर्यसमाज के संस्कार उन्हें अपने पूज्य पिताश्री महाकवि "शंकर" से विरासत में प्राप्त हुए थें। आपकी लेखन प्रतिभा और योग्यता को ध्यान में रखकर सभा के अधिकारियों ने सन् 1916 में आपको "आर्यमित्र" का सम्पादक नियुक्त करके आगरा भेज दिया। सम्पादकीय कौशल का परिचय देते हुए आपने कुछ वर्षों में ही इस पत्र की उन्नति में जो विशिष्ट योग दिया उसकी मुक्तकण्ठ से सराहना भी की गई। आपके सम्पादन में "आर्यमित्र" की गणना हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ सप्ताहिक पत्रों में होने लगी थी।

शर्माजी ने आगे चलकर "आर्यसन्देश" "प्रभाकर" "निराला" "साधना" "कर्मयोग" आदि कई पत्रों का सम्पादन किया। आर्यसमाज के हैदराबाद सत्याग्रह के दौरान आप कई महीनों हैदराबाद में रहे थे तथा वहाँ दैनिक "दिग्विजय" का सम्पादन करते थे।

आर्यसमाजी संस्थाओं, उदाहरण के लिए गुरुकुल, वृन्दावन महाविद्यालय, ज्वालापुर, गुरुकुल कांगड़ी, कन्या गुरुकुल सासनी के साथ शर्माजी का निकट का सम्बन्ध रहा था। सन् 1958 में आपको उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का अध्यक्षपद प्रदान किया गया। इस पद पर रहते हुए आप गुरुकुल, वृन्दावन, विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे थे। आपके कार्यकाल में तथा आपके सद्प्रयास और विशिष्ट योगदान के सहारे सन् 1959 में मथुरा में स्वामी दयानन्द दीक्षा शताब्दी का वृहत आयोजन किया गया था जिसमें राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद विशेष अतिथि के रूप में पधारे थे।

शर्माजी की योग्यता एवं उनके गुणों का समादर करते हुए सन् 1959 में आगरा विश्व विद्यालयने उन्हें डी0लिट की तथा सन् 1966 में राष्ट्रपति ने "पद्मश्री" की उपाधि से अलंकृत किया था। उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें "साहित्य वारिधि" और "विद्या वाचस्पति" की उपाधियाँ प्रदान की थीं।
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने सन् 1925 में उन्हें "कवि रत्न" और 1955 में "साहित्य सरस्वती" की उपाधि प्रदान की थी।

देश की आर्यसमाजों से मेरा विनम्र निवेदन है कि वे स्वर्गीय पं0हरिशंकर शर्मा की पुण्य स्मृति में शती समारोह मनाने के कार्यक्रम बनाएं। उन जैसे महाप्राण समाज सेवक की स्मृति में शताब्दी वर्ष में सुविधानुसार समारोहों का आयोजन किया जा सकता है।

आशा है आर्यसमाज के पदाधिकारी मेरी उपर्युक्त अपील पर समुचित ध्यान देने की कृपा करेंगे।

शर्माजी के सम्बन्ध में आवश्यक सामग्री उनके सुपुत्र से निम्न पते पर प्राप्त की जा सकती है:-

विद्याशंकर शर्मा
११३, जयपुर हाउस कालोनी
आगरा

वेद प्रचार यात्रा

राष्ट्र संस्कृति व युवा-शक्ति के उत्थान हेतु उदगीथ साधना स्थली, ओमवन (हिमांचल) के संस्थापक आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता द्वारा जून, जुलाई में निम्न स्थानों पर प्रचार किया गया।

उत्तर प्रदेश- आर्यसमाज वेद सप्ताह मसूरी, देहरादून, कोटद्वार, गुरुकुल, गौरीकुण्ड, केदारनाथ, अम्बेहटा, देववन, राम कृष्ण आश्रम, राजपुर रोड, जमीरन, हरिद्वार, ग्राम-कांवली ऋषिकेश।
पंजाब- समराला, लुधियाना, फिरोजपुर छावनी, हुसैनीवाला बार्डर, करतार पुर गुरुकुल।
हरियाणा:- करनाल।
दिल्ली:- डिफेन्स कालोनी, ईस्ट ऑफ कैलाश सैनिक विहार, शक्तिनगर राजौरी।

इन स्थानों पर पारिवारिक सत्संग, वेद प्रवचन यज्ञ योगासन प्रशिक्षण कैसेट पुस्तिका वितरण, तथा स्टिकर चिपका कर प्रचार किया गया। इस स्थानों के साथ-साथ।
हिमांचल में:- विकासपुर, अरकी, शिमला, सलोगड़ा राजगढ़ कण्डाघाट, रा0स्व0 सेवकसंघ हिमांचल में वेद प्रवचन भौड़त (राजगढ़) एन0सी0सी0 कैम्प गिरीपुर (यशवन्तनगर) धर्मपुर, कसौली, टी0बी0 सैनीटोरियम (गढ़ खल)

इस वेद प्रचार यात्रा के दौरान कई युवक युवतियों ने संध्या यज्ञ, व्यायाम करने का तथा चाय काफी, बीड़ी-सिगरेट, अण्डा-मांस-मदिरा आदि छोड़ने का संकल्प लिया।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाना है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

जनगणना में केवल आर्य लिखें

मा0 इन्द्रराज, सभा प्रधान तथा मा0 मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री द्वारा प्रदेश की समस्त आर्य सामाजिक संस्थाओं को आवश्यक परिपत्र-

श्रीमन्नमस्ते।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में सन् 1991 के दशक के लिए जनगणना का कार्यक्रम शीघ्र प्रारम्भ होने जा रहा है। यह कार्य शासन द्वारा प्रशिक्षित कर्मचारियों के माध्यम से घर-घर जाकर प्रतिव्यक्ति के सम्बन्ध में अपेक्षित जानकारी हासिल करके उसे स्थायी रिकार्ड के रूप में एक निर्धारित प्रपत्र पर लेखबद्ध करना है। अपेक्षित जनकारी में उसकी जाति व्यवसाय आदि सम्बन्धी सूचनाएं सम्मिलित रहेंगी तथा यह सम्पूर्ण जानकारी अतिगोपनीय रिकार्ड के रूप में भारत सरकार के पास सुरक्षित रहेगी।

यह सर्वविदित है कि इसी जनगणना के आधार पर देश में निवास करने वाली जातियों-हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी आदि की जनसंख्या का अनुपात निकाला जाएगा और इसी आधार पर भविष्य में जनप्रतिनिधित्व कानून के अन्तर्गत मिलने वाले संरक्षण तथा अन्य राष्ट्रीय नीतियाँ निर्धारित की जायेंगी। यह प्रश्न बड़े महत्व का है, किन्तु खेद है कि भारत सरकार ने इस जनगणना में आर्यों के नाम का कोई कालम ही नहीं रखा है। जिसके कारण आर्यों की अलग से पहिचान अथवा उनकी संख्या का अनुपात लगाना असम्भव हो जायेगा।

इस सम्बन्ध में सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से भारत सरकार के गृह मन्त्रालय से अपने स्तर से इस मुद्दे पर बात चलाएगी, किन्तु अनुकूल परिणाम प्राप्त होने में कुछ बिलम्ब लग सकता है।

अतः जनगणना का कार्य प्रारम्भ होने जा रहा है, अतः समस्त आर्य भाई-बहिनों से विनम्र अनुरोध है कि वे जनगणना में अपना विवरण लिखाते समय अन्य बातों के साथ जाति सूचक कालम में अपने को केवल "आर्य" ही लिखाएं तथा इस कार्य में ऐसा करने के लिए अधिक से अधिक लोगों को प्रेरित भी करें।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शोक समाचार

गुरुकुल वैधनाथ धाम (देवघर) के प्राध्यापक श्री आचार्य वासुदेव शास्त्री का आकस्मिक निधन दिनांक 26 अगस्त को हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

मण्डल आयोग राष्ट्र विरोधी तथा हिन्दू विरोधी कार्य

9 सितम्बर 1990, आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आज राजधानी के विठ्ठलभाई पटेल भवन में- आदर्श सामाजिक व्यवस्था विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। मारीशस के उच्चायुक्त श्री आनन्दप्रिय निदूर इस गोष्ठी के मुख्य अतिथि थे जिन्हें आर्यसमाज की तरफ से वेदों का सैट भेंट किया गया। सेमिनार में प्रमुख वक्ता डा0 लक्ष्मीमल सिंघवी, पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, श्री वीरेन्द्र, श्रीमती सुषमापाल तथा आर्यसमाज के अन्य अनेक विद्वान उपस्थित थे।

गोष्ठी के संयोजक श्री विमल-वधावन एडवोकेट ने बताया कि इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दो महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए हैं। प्रथम प्रस्ताव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा यह महसूस करती है कि विश्व की वर्तमान परिस्थितियों में एक ऐसी सर्व स्वीकार्य सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की आवश्यकता है जिसका ढांचा वर्ग रहित हो, जो समस्त राष्ट्रों में एकता, शान्ति तथा भाई-चारे को बढ़ावा दे और शोषण रहित हो। सभा का दृढ़मत है कि वर्णाश्रम पर आधारित सामाजिक व्यवस्था उपरोक्त आकांक्षाओं को पर्याप्त रूप से पूरा कर सकती है। संगोष्ठी में यह निश्चय किया गया कि सामाजिक व्यवस्था की इस अवधारणा के प्रचार एवं प्रसार के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा लक्ष्यबद्ध होकर प्रयत्न करेगी।

दूसरे महत्वपूर्ण प्रस्ताव में मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने से उत्पन्न स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए यह स्पष्ट कहा गया कि मण्डल आयोग ने जिस जल्दबाजी से सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों के बारे में छानबीन की है, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कड़े शब्दों में उसकी भर्त्सना करती है। मण्डल आयोग ने हिन्दू धर्म शास्त्रों की गलत व्याख्या के आधार पर अपने निष्कर्ष निकालकर केवल जाति के आधार पर अपनी छानबीन करके संविधान की धारा 340 की सीमा का भी उल्लंघन किया है। इसके अतिरिक्त आयोग ने धारा 335 में निर्धारित-प्रशासन में कार्य क्षमता की भावना का भी ध्यान नहीं रखा। प्रधानमन्त्री द्वारा 7 अगस्त 1990 को मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने की घोषणा पर देश भर में भयंकर विरोध हुआ है। आरक्षण के विरुद्ध आन्दोलनों में अब तक कई लोगों की जाने ही नहीं गई अपितु एक प्रकार से गृह युद्ध की स्थिति पैदा हो चुकी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री मण्डल तथा उनके साथियों से मांग करती है कि हिन्दू धर्म शास्त्रों के गलत अर्थ करके उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम और द्रोणाचार्य के विरुद्ध जो गलत टिप्पणियां की हैं उसके लिए सार्वजनिक रूप से क्षमा मांगें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सुझाव है कि वर्तमान में जातिवाद के कारण जो स्थिति पैदा हो गई है, उसको समाप्त करने के लिए जातपांत को समाप्त किया जाये और एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था कायम की जाये जो किसी भी प्रकार के शोषण से मुक्त हो और केवल योग्यता व समान अवसर को प्राथमिकता दी जाये। वैदिक वर्णाश्रम ही इस व्यवस्था का विकल्प हो सकता है। ▫

"उगल सूरज ही रहे हैं अब अंधेरे"

• रवि सारस्वत (बरेली)

बाढ़ ही खाने लगी है खेत मेरे देखिये।
उगल सूरज ही रहे हैं अब अंधेरे देखिये।।

आ सकेंगी क्या बहारें इस चमन में इस तरह
पड़ रहे हैं दलदलों के विकट घेरे देखिये।

हविस सत्ता की दिखाये और आगे हाथ क्या।
ले चिताओं के रही वह सात फेरे देखिये ।।

कुछ हवायें पश्छिमी तो स्वार्थ की कुछ घुटन से।
सूख कमलों के गये सरवर सवेरे देखिये ।।

पड़ गई आदत जिन्हें हो जुल्म सहने की सदा ।
रौंदते उनको रहें नित ही अंधेरे देखिये।।

क्या कहें उस जाति को जो मृतक बनकर जी रही।
फूंक कर नव प्राण इसमें कौन टेरे देखिये।।

आज सब शकुनी बने तब क्या चलेगी विदुर की।
कब छटें छाये हुए बादल घनेरे देखिये।।

गरल कन्या सा किया हो जिस जुबा ने काम फिर।
कण्ठ से उनको लगाने कौन प्रेरे देखिये।।

आह भी हम भर न पायें इस कदर पावँ दियां।
किस तरह आँखे उन्हें वह "रवि" तरेरे देखिये।।

ऋषि दयानन्द क्या थे

चन्द्र प्रकाश आर्य (इटावा)

प्रवर, तपस्वी, ब्रह्मचारी, निर्भीक विचारक थे
वेदों के प्रकाण्ड पंडित, खंडित तिमिर निवारक थे
कुशल प्रवक्ता, धीर, वीर गम्भीर, सुधारक थे
उदार, साहसी, अटल विश्वासी, योग, धारक थे

तत्ववेत्ता, सूक्ष्मदर्शी, दृढ़व्रती, जन उद्धारक थे
मिथ्या पंथ मतों के तोवे, कट्टर, कुशल प्रहारक थे
दीन, दुखी, असहाय, जनों के, थे तरण तारक थे
योग, तपोबल, गहन विषय के, वे पारख थे

अविचल, निश्छल, स्थिर मन, ध्रुव सत्यवादी थे
वेदादि के अनवरत सुपाठी, सत्य कथन के आदी थे
सजग, सचेत, सदा जागरूक, मन, वे नहीं प्रमादी थे
वेद विरुद्ध मतों के प्रति वे, रहे सदा प्रतिवादी थे

ईश्वर भक्त, सदाप्रत्याशी,मन,वचन,कर्म, से निर्भय थे
अटल अहिंसक, सत्यव्रती,तप,तेजपुंज, अभय थे
नारी रत्न अछूतों के वे,प्रबल समर्थक,प्राची के सर्वोदय थे
परम मनीषी,कवि,ऋषि, देव दयानन्द सदा महोदय थे

जग के प्रपंच, असत्य मतों के, सदा रहे वे शोषक थे
प्रतिरोधी रहे सदा वे उनके,जो मिथ्यामतों के पोषक थे
विश्वमतों के कुशल पारखी, औ कुशल समीक्षक थे
बुधवर्य तार्की, सदाअभय, औ आत्म निरीक्षक थे

महा मानव, युग दृष्टा, सत्यार्थ प्रकाश के लेखक थे
ऋग्वेदादि आदि ग्रन्थों के तो वे, कुशल सचेतक थे
देव नरोत्तम दयानन्द जी, गुरु आज्ञा के पोषक थे

★ आर्यसमाज भुवाली (नैनीताल)

प्रधान - श्री लक्ष्मीदत्त पाण्डे
मन्त्री - श्री शंकर देव आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री घनश्याम सिंह विष्ठ

सूचना

आगामी अप्रैल 1990 में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर राजर्षि रणंजयसिंहजी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के सम्बन्ध में "आर्यमित्र" विशेष रूप से लेख/कविता आदि का प्रकाशन करने जा रहा है। अतः कृपया उनके सम्बन्ध में अपेक्षित सामग्री शीघ्र भेजने की कृपा करें।

-सम्पादक

राष्ट्रव्यापी दैवी आपदाएं क्यों?

• दर्शन देवी भारद्वाज अलीगढ़

व्यक्ति में जब स्वार्थ वृत्ति आ जाती है, तब वह अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। अपने स्वार्थ के कारण माता, माता नहीं रहती, पिता, पिता नहीं रहता, भाई, भाई नहीं रहता, बहिन, बहिन नहीं रहती, गुरु, गुरु नहीं रहता और शिष्य भी गुरु की उपेक्षा करने लगते हैं। गुरु भी शिष्य के हितैषी नहीं रहे हैं जैसे कि पहले प्राचीन काल में थे। ये सब सम्बन्ध गौण हो जाते हैं, जब स्वार्थ प्रमुख हो जाता है। राष्ट्र में धनपति जब अधिक धन संग्रह करने लगते हैं, वैश्य अनाज का और अन्य आवश्यक वस्तुओं का संग्रह करके बाजार में माल की कमी दिखा देते हैं, तब निर्धन वर्ग में, जब द्रव्यपतियों व धनपतियों के अत्याचार को सहन करने की शक्ति समाप्त हो जाती है, तब वे क्रान्ति पर उतर आते हैं। जिस राष्ट्र में विचारों की स्वतन्त्रता नहीं रहती है, विद्वान व धार्मिक लोगों का शोषण होता है। किसी व्यक्ति विशेष से डर कर हम अपने विचारों की अभिव्यक्ति नहीं कर पाते हैं, (जैसा कि आजकल पंजाब व काश्मीर में हो रहा है), तब वे ही लोग विरोध करने पर उतर आते हैं, जो उनके आश्रम में काम कर रहे होते हैं। जिस राष्ट्र में चोरी होती है, स्त्रियाँ अपने शरीर का व्यापार करके उदर पूर्ति करती हैं, व्यक्ति के जान-माल की रक्षा नहीं हो पाती है तब ऐसे राष्ट्र में उथल-पुथल हो जाती है।

जो मानव परस्पर दूसरे मानव से स्नेह नहीं करते तो उन मानवों को पशुओं व प्रकृति से कब प्रेम हो सकता है? ऐसे ही रस-लोलुप व्यक्ति रसना के वशीभूत हो कर दूसरों के गर्भों का आहार कर जाते हैं, मूक पशुओं का भक्षण कर जाते हैं। तो ऐसे असहाय पशुओं का वध करते समय उनको जो अन्तर्वेदना होती है वह अन्तरिक्ष में जा करके सम्पूर्ण वातावरण को विषाक्त बना देती है। उस वेदना के फलस्वरूप उनकी बुद्धि विकृत हो जाती है वाणी कटु तथा अनर्गल प्रलाप करने वाली हो जाती है जिससे रक्त भरी क्रान्ति आ जाती है जैसा कि आजकल पंजाब व काश्मीर में मृत्यु का वीभत्स तांडव चल रहा है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है:-

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस से, सार भस्म हो जाय।।

यह तो मरे हुए जानवर की खाल से लोहा गलने का संकेत मात्र है पर दीन-दुर्बल जीवों की आहें अधिक मारक सिद्ध होती हैं। व्यक्ति जब मिथ्या वाणी उच्चारण करता है, तब उसका अपने पर सन्तुलन नहीं रहता और वह सदैव दूसरों को नष्ट करने की सोचता रहता है। अतः जब एक व्यक्ति दूसरे को नष्ट करने की सोचता है तो दूसरा व्यक्ति भी उसको अधिक से अधिक क्षति पहुँचाने की सोचता है। फलतः दोनों ही एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। जब व्यक्ति प्राणियों की, पक्षियों की, जानवरों की वेदना को नहीं समझ सकता है तब वह प्रकृति की वेदना को कैसे समझ सकता है? प्रतिदिन वनों का विनाश, नदियों का प्रदूषण, वायु का प्रदूषण। अन्धाधुन्ध वनों की कटाई से अनावृष्टि होती है, अति वृष्टि होती है, भूकम्प आदि दैवी आपदाएं आती हैं। शहर के शहर तहस-नहस हो जाते हैं। दैवी आपदाओं से इतना अधिक विनाश नहीं होता है जितना कि व्यक्तियों से होता है, जो एक दूसरे के राष्ट्र को समाप्त कर देना चाहते हैं। आज ऐसे-ऐसे आयुध बन गए है कि एक ही बम गिरा देने से संसार का विनाश होकर भूमि का पता ही नहीं चलेगा, कहाँ चली गई, सर्वत्र पानी-पानी ही प्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो जायेगा।

उपरोक्त आपदाओं से बचने का केवल एक ही उपाय है कि स्वार्थ को अपने ऊपर हावी न होने दें। परस्पर वैर, ईर्ष्या छोड़कर, जैसा व्यवहार हम अपने लिए दूसरों से चाहते हैं, वैसा ही व्यवहार उनके साथ करें, "आत्मा प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्"- तभी राष्ट्र की उन्नति हो सकती है। महात्मा आनन्द स्वामी जी लिखने हैं कि जब वे गृह आश्रम में थे तब वर्ष में एक बार कुछ दिनों के लिए अज्ञातवास को अवश्य जाते थे। एक बार वे अपने साथ थोड़ा सा आटा, घी, शक्कर, दाल व कपड़े लेकर कांगड़ा के जंगल में पहुँच गए। वहाँ जाकर उन्होंने स्नान, संध्या व हवन के पश्चात् ध्यान लगाया और अपने मनोरोगों पर चिन्तन करने लगे। पर उनकी आत्मा को शान्ति नहीं मिली क्योंकि लाहौर में एक व्यक्ति से उनकी अनबन थी। वे शीघ्र ही घर लौट आये और सामान रख कर सीधे उस व्यक्ति से जाकर मिले और क्षमा मांगी। प्रत्युत्तर वह भी स्वामीजी से स्नेह पूर्वक मिला, वर्षों का मनोमालिन्य धुल चुका था। अब की बार जब स्वामी जी एकान्त वास को गए, तब उनका हृदय शान्त था।

राष्ट्र में मनु द्वारा निर्देशित प्रणाली को कठोरता पूर्वक प्रचलन में लाना होगा। चुनाव के स्थान पर चयन का अधिकार योग्य धार्मिक व्यक्ति को देना होगा। क्योंकि हजार मूर्खों से एक धार्मिक व योग्य व्यक्ति श्रेष्ठ होता है, ऐसा स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं। राष्ट्र में सच्चरित्रता से राष्ट्र का उद्धार कर सकते हैं। लीजिए एक वेद मन्त्र प्रस्तुत है:-

परित्वा धात सविता देवो अग्निर्वर्चसा
मित्रा वरुणानि त्वा।
सर्वा आरातीरवक्रमन्नेहि इदं
राष्ट्र मकर : सूनृतावत् ।।

—अथर्व 13/1/20

(सविता देव) सूर्य देव (त्वा) तुझको, तेरे (परिधात) चारों ओर रहे (अग्नि) अग्निदेव (वर्चसा) अपने तेज से तुझे घेरे रहें। (मित्रावरुणौ) मित्र और वरुण (त्वा) तुझे (अभियाताम) चारों ओर से बचावें (सर्वाः) सारे (आरातीः) शत्रुओं को (अवक्रमन्) कुचलते हुए (एहि) आवो (इदं राष्ट्रम्) इस राष्ट्र को (सूनृतावत्) सत्यवादी, सत्यनिष्ठ, शालीन (अकरः) करो।

भावार्थः- सूर्य देव तुझे चारों ओर से बचावें। अग्नि अपने तेज से तेरी रक्षा करें। मित्र और वरुण तुझे चारों ओर से बचावें। तू सारे शत्रुओं को कुचलता हुआ आ। इस राष्ट्र को सत्य निष्ठ बना।

उपरोक्त मन्त्र में दो बातों पर विशेष बल दिया गया है। पहला शत्रुओं का विनाश करता हुआ आगे बढ़ और दूसरा सत्यनिष्ठ बन। दुष्ट आततायियों शत्रुओं को शस्त्र से छेदन करने से ही राष्ट्र में सत्यवादी व्यक्ति रह सकते हैं और ज्ञान विज्ञान अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच सकता है जैसा कि प्राचीन काल में था। विज्ञान के साथ अध्यात्म भी हो तो सोने में सुहागा है। यथा राजा तथा प्रजा के अनुसार जब शासक क्रूर, स्वयं बड़े-बड़े भ्रष्टाचार कमीशन काण्डों में लिप्त हो जाते हैं, तो सामान्य जन्य भी मर्यादाएं खो कर लूट खसोट में जुट जाते हैं। इस प्रकार संसद के शोर-शराबे और सामूहिक त्याग पत्र, विश्व के समक्ष एक अजीब दृश्य उपस्थित कर देते हैं। यदि उत्तरदायी थोड़े से नेता नियम पूर्वक स्वार्थ का परित्याग कर सकें तो राष्ट्र में परमार्थ को प्रश्रय मिल जाता है।

आवश्यक सूचना एवं निर्देश

सभा के अन्तर्गत कार्यरत महोपदेशकों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों आदि की दैनन्दिनी और आर्य-व्यय का वार्षिक लेखा अवलोकन करने पर अत्यन्त आश्चर्य हुआ, साथ ही दुःख भी हुआ कि हमारे उपदेशक महानुभाव कभी-कभी अपने मार्ग- व्यय की राशि, जितना धन सभा के हित में प्राप्त करके जमा नहीं कर सकें हैं, जबकि उन्हें अपने वेतन की राशि के बराबर धन प्रतिमाह जमा करना अपना नैतिक कर्तव्य समझना चाहिए।

भविष्य में उपदेशक महानुभाव कार्यक्रमों से धन प्राप्त करते हुए कृपया सभा का आर्थिक हित भी ध्यान रखें और सामान्यतः अपने वेतन की न्यूनतम आधी राशि अनिवार्य रूप से सभा कोष में जमा करें तथा इसके साथ ही साथ प्रत्येक मास में कम से कम 10 नवीन ग्राहक आर्यमित्र के अवश्य बनायें, ऐसा न करने पर कर्मचारी की अक्षमता समझी जाएगी।

हरिश्चन्द्र आर्य — मनमोहन तिवारी
अधि0 उपदेश विभाग — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0

वीर पर्व विजयादशमी

आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश के समस्त उपसंचालको, मण्डलपतियों, नगरनायकों तथा शाखानायकों से निवेदन है कि आर्य वीरों का "वीर पर्व विजयादशमी" अपनी सुविधानुसार 29 सितम्बर से 20 अक्टूबर तक खेलकूद व बौद्धिक प्रतियोगिता के रूप में मनावें तथा "दल सहायता" "वीर निधि" अधिकाधिक संग्रह कर ऊपर के कार्यालयों में प्रेषित करें।

— बेचन सिंह अधिष्ठाता

दशहरा

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

अत्याचारी "रावण" हारा।
"रामचन्द्र जी" जीते।
सुख की साँस सभी ने खींची।
दुख के दुर्दिन बीते।

अन्यायी का नाश एक दिन।

न्यायी की होती जय।
अन्धकार पर जय प्रकाश की
होगी ही। है निश्चय।

दिन-दिन यह विश्वास हृदय में
जमता जाता गहरा ।
आकर हमको याद दिलाता
है प्रति वर्ष "दशहरा" ।

आगे कदम बढ़ाओ

• राजदेव सिंह आर्य
हरदोई

मेरे देश के सिपाही आगे कदम बढ़ाना--
जो देश हित मरोगे ए जवानो--
इस देश की कहानी वीरों तुम्हें चलानी ।
सरताज इसके तुम हो रक्षक तेरी जवानी।

यह देश वीरों तेरा कुछ भी नहीं हमारा।
जब भी हुई गुलामी इस देश ने पुकारा ।।
सरदार भगत ने भी सूली को हँस के झेला।
जब तक रहे जमाना उनका लगेगा मेला ।

यह कर्ज है पुराना इसको पड़े चुकाना --
वो देश के बहादुर पूजा करेंगे तेरी
जो वीरता करेगा यादें बनेंगी तेरी

तेरी माँ है यह सुहागिन
कभी हो न यह अभागिन
यह सुन माँगती है मौका मिले सुहाना -----

आरक्षण नहीं संरक्षण चाहिए

• देवेन्द्र विद्याभास्कर, हरिद्वार

आज भारत का सम्पूर्ण जन जीवन मानसिक और आर्थिक पतन इन दो प्रकार की समस्याओं से ग्रसित है। मानसिक और आर्थिक पतन का प्रभाव देश में प्रत्येक वर्ग तथा जाति पर व्यापक रूप से देखने को मिलता है। प्रत्येक वर्ग ओर जाति में सर्वत्र दो प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं। एक गरीब तथा दूसरा अमीर वर्ग। गरीब वर्ग आर्थिक पतन की पीड़ा से पीड़ित है तो दूसरा धनिक है, जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है। किन्तु उसका मानसिक स्वर प्रायेण अपने तक सीमित है। इसलिए इसे मानसिक पतन कहा जाए तो आपत्ति न होगी। आर्थिक पतन की पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति अर्थाभाव में मानसिक दृढ़ता बनाए रखे, यह असम्भव है।

भारत में प्रजातन्त्र की एक धवल प्रणाली प्रचलित है। प्रजातन्त्र का स्वरूप धवल है। प्रजातन्त्र के धवल स्वरूप को धूमिल बना, भारत में लोकतन्त्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों की कठपुतली बन गया है। मानसिक दृष्टि से पतित लोग अपनी-अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए लोकतन्त्र को नचाने में लगे हैं ओर डोर खींच-खींच कर अपनी गन्दी से गन्दी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं।

आर्थिक दृष्टि से निर्बल समूह इनकी कुत्सित कलाओं को न समझ पाने के कारण मोहित हो, उद्धार की आशा से, इन्हें सत्ता सौंप देता है। क्योंकि आर्थिक निर्बलता के कारण वह निर्वाचन में लाखों, करोड़ों झोंकने की क्षमता नहीं रखता, इसलिए सत्ता सौंपने के लिए उसे असमर्थ होना पड़ता है। सत्ता सौंपने पर इनसे प्राप्त होता है, वर्ग संघर्ष, जातीय दंगे, मंहगाई, संरक्षण विहीन व्यवस्था और आरक्षण जैसी अनेका नेक विषम समस्यायें।

भारत वर्ष इस समय आरक्षण विरोधी आग की लपटों में जल रहा है। तो कहीं पक्षकर आन्दोलनरत है।

लोकतन्त्र में आरक्षण का क्या? औचित्य है। औचित्य विहीन आरक्षण से जातिवाद को बढ़ावा मिला है और मिलेगा। क्या? यह आरक्षण जातिवाद को समाप्त करने का फार्मूला है। क्या? सभी जाति और वर्ग के लोगों का आर्थिक तथा मानसिक सुधार इस आरक्षण से सम्भव है। क्या? आरक्षण से विषमता समाप्त होकर एकता स्थापित होगी। यदि इस आरक्षण व्यवस्था से जातिवाद को बढ़ावा मिलता है, समस्यायें बढ़ती हैं तो निः सन्देह, ऐसे आरक्षण का निःसंकोच विरोध करना ही चाहिए।

लोकतन्त्र एक जनाधार प्रणाली है। प्रत्येक वर्ग ओर जाति के व्यक्ति का वोट मूल्य बराबर है। ऐसा नहीं है अमुक वर्ग व जाति के व्यक्तियों के वोट का मूल्य दुगना हो। या किसी को दो-दो मतों के प्रयोग का अधिकार प्राप्त हो। विधानसभा ओर लोकसभा पहुँचे व्यक्ति कैसे भूल जाते हैं कि सभी को समान उन्नति के साधन उपलब्ध कराये जायें। यह आरक्षण लोकतन्त्र प्रणाली का विरोधी है। हमें आरक्षण नहीं संरक्षण चाहिए जहां सभी वर्ग और जाति के लोग चैन की श्वास ले सकें।

गरीबी

दिनेश कुमार शर्मा
कासगंज (एटा)

वर्तमान युग में नेता
गरीबी हटाने का नारा लगा रहे हैं।
इसके साथ ही, वे
गरीबी हटाने का प्रतिशत भी बता रहे हैं।
किन्तु खेद है, --
जब रात्रि 12 बजे,
मैं स्टेशन से अपने आवास को आ रहा था,
क्योंकि
मेरे पास भी रिक्शेवाले के लिए,
पैसे नहीं थे।
घोर गरीबी का मारा हुआ था,
देखाकि --
स्टेशन से कुछ दूर
कुछ महिलाऐं तीन-तीन मासूमों की
अपने आँचल में छिपाए
तन कंपकंपाए
शीत रात्रि बिता रही थीं।
ऐसी विषम गरीबी को देख
मेरा कलेजा कुछ कुम्हलाया,
ऊपर की अनुमान लगाया,
उस प्रतिशत का ध्यान लगाया।
प्रतीत हुआ --
वे आंकड़े मिथ्या थे,
क्योंकि
ऐसी शीत रात्रि को,
ये लोग
ऐसे थोड़े ही बिताते।
आज देश में सर्वत्र
गरीबी छाई है,
किन्तु यह गरीबी
उन नेताओं के बंगले की लक्ष्मण रेखा को
छू भी नहीं पायी है।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मुजफ्फर नगर का वेद कथा, वेद प्रचार सप्ताह रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी दि० 6 से 13 अगस्त तक सम्पन्न हुआ। जिसमें कई विद्वानों के प्रवचन हुए। स्थानीय जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

• आर्यसमाज, आजमगढ़ का वार्षिक उत्सव 22 नवम्बर से 25 नवम्बर 90 तक डी०ए०वी० कालेज के प्रांगण में मनाया जायेगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी पधार रहे हैं। आर्य जनता सादर आमंत्रित है।

चार कवित्त

• डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी
बरेली

﴾1﴿
नकली राम और कागजी रावण-

दानव है हृदयस्थित, जान नहीं पाये कभी,
राम और रावण की चर्चा चलाते हैं।
मानवता वन्दिनी न मुक्त हुई अब तक है,
अभिनय में उसकी विजय को दर्शाते हैं।
राम नकली हैं सब, रावण भी कागजी हैं,
मार उसको ही कैसा शौर्य फिर बताते हैं।
कहाँ है विवेक बुद्धि, अब तक अपरिचित से,
निजके ही वंचक जब, किसको भ्रमाते हैं?

﴾2﴿
शेरों का चर्म-

राम ने चलाये शर दानवता मेटने को,
किन्तु तुम देख, सामना न कर पाते हो,
कृष्ण ने सुदर्शन चलाया शिशुपाल देख,
किन्तु आगे क्रूरता के, तुम भाग जाते हो।
हनुमान भक्त बन, डरते श्रृगालों से,
सिंहों का चर्म ओढ़, गर्व भाव लाते हो।
वीर प्रसू भारती है देख तुम्हें लज्जित सी,
किन्तु अपने पर तुम नेक न लजाते हो।

﴾3﴿
आरक्षण-नीति-कुचालिनी-

धार्मिक स्वतन्त्रता का चलता दुरुपयोग,
पक्षपात पूर्ण दुर्नीति विकसाती है।
बैठे जिस डाल पर हैं, काटते उसे ही रहे,
स्वार्थ अन्धता न देशभक्ति को बसाती है।
आरक्षण-नीति, मात्र वोट-बैंक रूपा सी,
वर्ग संघर्ष भेदभाव सिखलाती है।
ईश्वरीय राज्य जग, मानवों की एक प्रजा,
किन्तु यह कुचालिनी द्वेष उपजाती है।

﴾4﴿
आरक्षण नीति और रोगी राष्ट्र-

एक को बचाने हेतु अन्य को डुबोना यहीं,
कौन सा है धर्म श्रेष्ठ जग को बताता है?
दलितों प्रति करुणा हो, उनका उत्थान चले,
आपस में बँट रहना, कौन फिर सिखाता है?
राजनीति भ्रष्ट यदि, कैसे कल्याण करे?
पक्षपात उन्नति अवरोध बन जाता है।
प्रतिभा और अर्थाभाव, आरक्षण मूल रहे,
किन्तु वर्गभेद राष्ट्र रोगमय बनाता है।

कानपुर में कृष्ण जन्मोत्सव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में "योगीराज श्री कृष्ण जन्मोत्सव" कानपुर विद्या मन्दिर महिला डिग्री कालेज में मनाया गया, जिसमें बोलते हुए मुख्य अतिथि डा0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री ﴾अमेठी﴿ ने कहा कि श्री कृष्ण के कार्य व जीवन युगों-युगों तक जनजीवन को चेतना, व कर्म की प्रेरणा देते रहेंगे, उन्होंने कर्म, सकर्म, अकर्म व निष्काम, कर्म की अत्यन्त वैज्ञानिक व्याख्या, महाभारत के विभिन्न सन्दर्भों से की। प्राचार्या - डा0 आशा रानी राय, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने बताया कि इतिहास में श्रीकृष्ण जैसा दूसरा विलक्षण कूटनीतिज्ञ प्राप्त नहीं है। वह अपने युग के श्रेष्ठ योद्धा, योगी व अनुकरण योग्य महापुरुष ही थे। डा0 आई0 सी0 गुप्त ने उन्हें युगनिर्माता व कालदृष्टा की संज्ञा देते हुए भी उनके जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर प्रकाश डाला।

जिला सभा कानपुर द्वारा वेदप्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न आर्यसमाजों में सायंकाल तथा प्रातः विभिन्न परिवारों में वेद-कथा तथा उपदेश आयोजित किए गए। वेद-कथा का आरम्भ श्रावणी उपाकर्म, रक्षाबन्धन पर्व व संस्कृत दिवस से हुआ। डा0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री ﴾अमेठी﴿ ने वेद की पीयूष धारा का रसास्वादन कानपुर महानगर के कोने-कोने में कराते हुए विद्वतापूर्वक ढंग से बताया कि सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान के अक्षय भण्डार ही वेद संज्ञा से अभिहित हैं, इसी अमृतधारा से जनमानस को चेतना देते हुए स्पष्ट किया कि महाभारत काल तक भारत राष्ट्र में ऋषियों की परम्परा रही, महाभारत के बाद आचार्य, दार्शनिक व मुनि आदि ने अपने विचारों का प्रसार किया, किन्तु दयानन्द को छोड़कर अन्य कोई ऋषि नहीं हुआ। प्राचार्या डा0 आशा रानी राय, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने वेदों का महत्व स्पष्ट करते हुए बताया कि आदि ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा द्वारा श्रुति परम्परा में प्रदत्त ज्ञान को किस प्रकार कालान्तर में अन्य ऋषियों ने प्राप्त किया और कैसे बाद में लिपिबद्ध किया गया, उन्होंने वेदों के सूक्त के प्रारम्भ में लिखे ऋषि देवता व छन्द आदि पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या करते हुए, ऋषि दयानन्द का वेदभाष्य किस प्रकार के अन्य विद्वानों के भाष्य से श्रेष्ठ है, प्रमाणों सहित बताया। श्रीमती सरला चौधरी, उपप्रधान, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर, ने वेदमन्त्रों की सुरुचिपूर्ण व भाव पूर्ण व्याख्या और भजनों से जनमानस को प्रभावित किया। श्री भीष्मदेव चौधरी व श्रीमती आशा चावला ने भक्तिपूर्ण सरस भजनों के गायन से सबको मोह सा लिया। कार्यक्रम की विद्वतापूर्ण अध्यक्षता डा0 हरपाल सिंह, प्रधान ने करते हुए प्रत्येक कार्यक्रम का उपसंहार किया। ◘

● आर्यनगर ﴾बदायूँ﴿ के श्री ओंकार आर्य के ज्येष्ठ पुत्र चि0-प्रदीप कुमार आर्य की वर्षगांठ के अवसर पर बृहद्यज्ञ एवं सत्संग सम्पन्न हुआ जिसमें यज्ञ श्री पं0 सत्यप्रकाशजी ने कराया स्त्री समाज व पुरुष समाज के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

--

● आर्यसमाज रजपुरा ﴾बदायूँ﴿ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने दि0-28 से 31 अगस्त तक यज्ञ, दिन में महिला सम्मेलन रात को विद्वानों के प्रवचन हुए, जिसकी स्थानीय जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

● आर्यसमाज आर्यनगर ﴾बदायूँ﴿ के द्वारा श्री कुलदीप कुमार आर्य का जन्मदिन बृहद् यज्ञ एवं सत्संग द्वारा मनाया गया आर्यसमाज एवं स्त्री आर्यसमाज को दान दिया।

साकेत मेरठ में श्रावणी पर्व

5-8-90 को प्रात. 8 बजे से आर्यसमाज मन्दिर साकेत ﴾मेरठ﴿ में उत्साह पूर्वक यह पर्व मनाया गया। गत दो वर्षों से बच्चों में संस्कृत और अपने धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से साकेत के स्कूलों के बच्चों की ईश्वर प्रार्थना मन्त्रों के उच्चारण और आर्य समाज के 10 नियमों को सुनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई है।

श्री सत्यपाल जिज्ञासु और डा0-ओमशरण ने पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला। केन्द्रीय आर्य समिति के प्रधान श्री मान सिंह जी वर्मा ने पुरस्कार प्रदान किये। सभा की अध्यक्षता प्रो0-जय प्रकाश जी गोयल ने की और संचालन आर्यसमाज के मन्त्री प्रो0-सत्य प्रकाश गोयल ने।

14·8·90 को प्रात 8 बजे से कृष्ण जन्माष्टमी तथा स्वतन्त्रतापर्व संयुक्त रूप से मनाया गया। श्री पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने योगीराज कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने अपने समय के छोटे-छोटे राष्ट्रों में बंटे भारत को एक कर महाभारत बनाने का प्रयास किया। आज भी भारत में विघटनवादी और अलगाववादी प्रवृत्तियाँ जोरों पर हैं। उनका दमन कर महाभारत के निर्माण की आवश्यकता है। प्रो0 सत्यप्रकाश गोयल ने कहा कि आज मानव निर्माण और विदेशी संस्कृति द्वारा भारतीय संस्कृति पर होने वाले आक्रमण का मुकाबला आर्यसमाज ही कर सकता है। सभा की अध्यक्षता प्रो0 जय प्रकाश गोयल प्रधान आर्यसमाज ने की। ◘

सोमकीर्ति जी नहीं रहे

दि0 30 अगस्त 1990 को गुरुकुल कांगड़ी के सुप्रसिद्ध स्नातक श्री सोमकीर्ति जी विद्यालंकार का देहावसान हो गया। वे मियाणी ﴾पाकिस्तान﴿ के निवासी थे। उन्होंने सन् 1924 में गुरुकुल कांगड़ी से रसायन शास्त्र लेकर वेदालंकार परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये। इसी कारण उन्हें अनन्तराय पदक प्राप्त हुआ।

उनके दिवंगत होने से आर्यसमाज और विशेषरूप से गुरुकुलीय परिवार को बहुत हानि हुई है। हम उनकी आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

-सभामन्त्री

शोक प्रस्ताव

जिला आर्योपसभा जनपद इटावा की अन्तरंग सभा दि0 ८।९।९० में हिन्दी वांग्मय के अनन्य उपासक, अनेक ग्रन्थों के रचयिता, प्रसिद्ध साहित्यकार, पद्म विभूषण की पदवी से समलंकृत, जन जन के प्रिय, भइया साहब के नाम से विख्यात वयोवृद्ध श्री पं0 श्रीनारायण-जी चतुर्वेदी के निधन पर महान शोक व्यक्त किया गया तथा इसे हिन्दी की अपूरणीय क्षति बताया गया।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी

आर्य केन्द्रीय सभा चण्डीगढ़ की ओर से 6 व 7-10-90 को पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह पूर्वक मनाई जा रही है। आर्य परिवारों को चण्डीगढ़ ले जाने हेतु देहली से स्पेशल बसें चलाई जा रही हैं। यह बसें दोपहर एक बजे आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई देहली से चलेंगी और 14-10-90 रात्रि देहली वापिस आयेंगी। यात्री चण्डीगढ़ के साथ-साथ देखेंगे : चिन्तापूर्णी, ज्वालाजी, कांगड़ा, डिलहौजी, चम्बा और वैष्णो देवी। किराया बस 575/- रुपये प्रति यात्री है। चण्डीगढ़ में निवास और भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज में होगी, शेष रास्ते के व्यय यात्री स्वयं करेंगे। चलने वाले भाई-बहिन डा० यशपाल जी सह प्रबन्धक यात्रा से आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। (फोन : 343718) से सम्पर्क करें।

लखनऊ सदर समाज का उत्सव

आर्यसमाज सदर लखनऊ का वार्षिकोत्सव आगामी 4 से 7 अक्टूबर तक बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है। आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान, सन्यासी विदुषी प्रचारिकाएं पधार रही हैं। 4 अक्टूबर को दिन में 2 बजे से नगर कीर्तन निकलेगा। जनपद की समस्त समाजों से प्रार्थना है कि वे अपनी पताकाएं लेकर सम्मिलित हों।

पुस्तक विक्रेताओं को एक ओर का मार्ग व्यय दिया जायेगा। तथा भोजन निवास की व्यवस्था निःशुल्क आर्यसमाज की ओर से रहेगी।

- मन्त्री आ०स० सदर,
लखनऊ।

वधू की आवश्यकता

आर्य अधिवक्ता युवक, रंग गेहुँआ के लिए सुयोग्य कन्या कद 5"-6" आर्य परिवार से मेवारत विशेषकर शिक्षिका एल०टी०हो जीवन साथी के लिए। इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर सम्पर्क करें।

आनन्द स्वरूप मंत्री जिला सभा
आर्य समाज मन्दिर लखीमपुर (उ०प्र०)

★ जिला उपसभा मऊ

प्रधान - श्री ब्रहमदेव राय
मन्त्री - श्री सुमेधामित्र शास्त्री
कोषाध्यक्ष- श्री ओमप्रकाश आर्य

शोक समाचार

आर्यसमाज केराकत (जौनपुर) के अधिकारी एवं सदस्यगण तथा दयानन्द बाल मन्दिर के आचार्य व छात्रों की एक सभा पुस्तक विक्रेता श्री बैजनाथप्रसाद के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया और परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

श्रीयुत मन्त्री जी,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०
लखनऊ।

(1)

महोदय,

सम्भवतः आपको समाचार पत्रों द्वारा यह विदित हुआ होगा कि कांग्रेस के एक नेता तथा भू०पू० राज्य मन्त्री- श्री गुलाब सेहरा पनवारी काण्ड का बहाना लेकर जाटवों को भड़काकर धर्म परिवर्तन कराने का जोर शोर से प्रचार कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में वह आस-पास के जिलों में भी दौरा कर रहे हैं। उनके कथनानुसार सितम्बर मास में लगभग 3-4 लाख जाटव बौद्ध बनेंगे। जैसा कि आपको ज्ञात है कि सरकार उनको धर्म परिवर्तन के बाद भी वही सुविधा देगी जो परिगणित जातियों को दी जाती हैं। इससे धर्म परिवर्तन को प्रोत्साहन ही मिलता है। अब तक का अनुभव यह रहा है कि धर्म परिवर्तन के साथ ही लोगों की राष्ट्रीयता की भावना में भी कमी आ जाती है। राजनैतिक लोग तो तत्काल वोटों के लाभ ही सोचते हैं। भले ही राष्ट्र खण्डित होता चला जाय। ऐसा हो भी चुका है और आज भी देश में ऐसे ही धर्म परिवर्तन किये हुए लोग देश की अखण्डता को चुनौती दे रहे हैं। परन्तु दुर्भाग्य है इस देश का कि शासक लोग स्वार्थवश न तो पूर्व इतिहास की ओर दृष्टि डालते हैं, न ही वर्तमान में देश में हो रहे भयानक रक्तपात को देख रहे हैं। इतिहास को देखा-जाय तो यह सभी धर्म परिवर्तन करने वाले हो हैं।

ऐसे अवसरों पर सभी देश प्रेमी लोगों की दृष्टि आर्यसमाज की ओर ही जाती है। आर्यसमाज अपने सीमित साधनों के होते हुए भी जो कुछ हो सकता है, करता है।

अतः आपसे निवेदन है कि उपरोक्त भयावह स्थिति की ओर तत्काल ध्यान देकर सार्वदेशिक सभा की सहायता से इस धर्म परिवर्तन को रोकें।

आपका,
प्रेमचन्द्र शर्मा
भू०पू० मन्त्री आ०प्र०सभा,
उत्तर प्रदेश।

(2)

आदरणीय तिवारी जी,
सादर नमन।

29 जुलाई 1990 का "आर्यमित्र" का अंक देखा सम्पादकीय बड़ा ज्ञानवर्धक व प्रेरणाप्रद लगा। आचार्य इन्द्र का लेख "शवयात्रा के पड़ाव" बड़ा ही सटीक है। आर्यमित्र के सहयोग के लिये मैं सदैव तत्पर हूँ। मैं एक लेखक, कवि होने के नाते "शव यात्रा के पड़ाव" लेख की हजारों बार प्रशंसा करूँ, तब भी कम ही है।

- अजय कुमार शर्मा "यात्री"
खुटार, शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

(3)

"आर्यमित्र" निरन्तर मिल रहा है। छपाई सज्जा में तो आर्यजगत के सभी पत्रों में आगे है ही मौलिक लेखों, उत्तेजक कविताओं, उद्बोधक सम्पादकीय तथा रोचक ज्ञान वर्धक परिचर्चाओं के कारण भी यह पत्रों की भीड़ से अलग से दीख पड़ता है। स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी "आर्यमित्र" का मैत्रीभाव है, जो समस्त मानव जाति के लिए समान रूप से उपकारी है। इतने स्तरीय सम्पादन के लिए साधुवाद।

- सारस्वत मोहन "मनीषी:"
3, कल्पना कालोनी डी०ए०वी० परिसर
अबोहर- 152116 (पंजाब)

--

आर्यसमाज "अनारकली" का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दि०- 5 से 11 नवम्बर तक धूमधाम से मनाया जायगा जिसमें गायत्री महायज्ञ तथा सायं आचार्य यशपाल सुधांशु की कथा होगी। दि०- 9 नवम्बर को स्त्री आर्यसमाज "अनारकली" का वार्षिकोत्सव होगा। प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक बाल मेला होगा जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा भाषण एवं गायन प्रतियोगिता होगी जिसमें दिल्ली और दिल्ली के आस-पास के बच्चे भाग लेंगे। पूरे सप्ताह आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों की जानकारी दी जायगी।

रविवार को प्रातः 10 बजे से 1 बजे विशेष उपदेश होगा तथा 1 से 2 बजे तक ऋषिलंगर और 2 बजे केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद के युवकों का युवक सम्मेलन का आयोजन किया जायगा।

--

आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड नईदिल्ली द्वारा वेद प्रचार सप्ताह दि०- 27 जुलाई से 4 अगस्त तक धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें कई विद्वानों के प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

--

आचार्य रामनाथ अभिनन्दन समारोह

दिनांक- 7-9-90 को सार्वदेशिक दयानन्द वानप्रस्थी सन्यासी मण्डल वेद मन्दिर ज्वालापुर में हाल ही में उ०प्र० संस्कृत अकादमी की ओर से पुरस्कृत आचार्य- रामनाथ वेदालंकार का स्वागत समारोह हुआ। समारोह का आरम्भ यज्ञ से हुआ। समारोह में आचार्य प्रियव्रत श्री सुभाष विद्यालंकार, प्रो० रामप्रसाद- वेदालंकार, डा० जयदेव, डा० वेदप्रकाश- शास्त्री व डा० महावीर अग्रवाल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति पधारे। वेद मन्दिर के मन्त्री श्री जगदीश मुन्शी, उपाध्यक्ष स्वामी ओमानन्द, डा० शिवपूजन सिंह कुशवाहा आदि महानुभावों ने आगन्तुक जनों का आभार व्यक्त किया।

--

मानविकी महाविद्यालय का उद्घाटन

दिनांक- 11·8·90 को केन्द्रीय शिक्षा राज्यमन्त्री श्री चिमनभाई मेहता द्वारा गुरुकुल कांगड़ी में दीक्षान्त समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में नवनिर्मित मानविकी महाविद्यालय का उद्घाटन किया गया।

साहित्य समीक्षा

पुस्तक का नामः- "स्वामी दयानन्द का राजनीतिक दर्शन"
लेखकडा0 लालसाहबसिंहएम0ए0, पी-एच0डी0 प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी, सुल्तानपुर। प्रकाशक - "आर्यसंसार" मासिक- पत्र, आर्यसमाज, 19, विधान- सरणी, कलकत्ता- 700006

"स्वामी दयानन्द का राजनीतिक दर्शन" विषयक शोध प्रबन्ध पर डा0 लाल साहब सिंह को अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा पी-एच0डी0 की उपाधि सन् 1989 में प्रदान की गई है। प्रस्तुत पुस्तक उनके उपर्युक्त शोध-ग्रन्थ का संशोधित एवं परिवर्धित स्वरूप है।

इस ग्रन्थ में डा0 सिंह ने वेद एवं अन्य शास्त्रों में प्रतिपादित सैद्धांतिक राजनीति के साथ क्रियात्मक राजनीति का सामंजस्य अत्यन्त योग्यता से प्रस्तुत किया है। उन्होंने राजधर्म की अवधारणा के वर्णनोपरान्त राज-धर्म सम्बन्धी स्वामी दयानन्दीय अवधारणा का भी विशद विवेचन दिया है। अतएव राजत्व के सिद्धान्त, राज्य के उद्देश्य [illegible]ं कार्य, राजा की अर्हताएं, राज्य [illegible]था, शासन संचालन के प्रमुख अभिकरण, स्थानीय स्वशासन, न्याय व्यवस्था, रक्षा व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था आदि का विस्तृत विश्लेषण इस ग्रन्थ की उल्लेखनीय उपलब्धि है।

अपने विचारों के पुष्टि पक्ष में लेखक ने स्वामी जी के ग्रन्थों, पत्रों एवं विज्ञापनों के अतिरिक्त मैक्समूलर, रोमा रोलां, विलियम इक्स्टीन एवं हैनरी फेरमेन प्रभृति जैसे अनेक विदेशी विद्वानों तथा महात्मा गांधी, अरविंदघोष, रवीन्द्रनाथ टैगोर, लाला लाजपतराय, जवाहरलाल नेहरू जैसे अनेकों महानुभावों की कृतियों से बहुलता से उदाहरण दिए हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती एक सर्वगुण सम्पन्न मूर्धन्य मनीषी थे। वह बहुमुखी प्रतिभावान थे। अतएव उन्होंने देश की चतुर्मुखी उन्नति करने का बीड़ा उठाया था। उन्होंने विस्मृत वैदिक धर्म की तो पुनर्स्थापना की ही साथ में उनका देश के लिए सर्वोपरि उल्लेखनीय योगदान यह है कि वह राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति के एक निर्भीक उन्नायक के रूप में अपने देशवासियों के सामने आये। उन्होंने अतीत के गौरव का स्मरण करा कर देशवासियों में आत्म गौरव की भावना उजागर की। एक सच्चे राष्ट्रनायक की तरह उन्होंने नवजागरण की दुंदुभी बजाई तथा स्वराज्य की अलख ज्योति जगाने वालों में वह निश्चय ही अग्रदूत थे।

भारतीय राजनीतिक सिद्धांतों एवं स्वामी जी के तत्संबंधी विचारों को इतने स्पष्ट रूप से अवगत करा देना कठिन कार्य था जिसे लेखक ने अपनी शोध-परक प्रस्तुति द्वारा श्लाघनीय कार्य किया है। उनकी भाषा प्रांजल, परिमार्जित परिष्कृत एवं विषयानुकूल है।।

यह ग्रन्थ आधुनिक भारतीय राजनीति विज्ञान के शिक्षकों, छात्रों एवं अन्य विद्याव्यसनी मनुष्यों के लिए अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक है।

- आचार्य इन्द्रदेव पाठक
एम0ए0 दर्शनवाचस्पति

सभा के प्रचारकों की भजन प्रतियोगिता

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अधिवेशन पर दि0- 24 नवम्बर 90 को रात्रि 7·30 बजे सभा के प्रचारकों की भजन प्रतियोगिता डी0ए0वी0 कालेज लखनऊ के प्रांगण में होगी। जिसमें सभी की उपस्थिति अनिवार्य है। उसी दिन मध्यान्ह 4 बजे सभी उपदेशकों प्रचारकों की आवश्यक बैठक पण्डाल में होगी। कृपया समय पर पहुँच कर उपस्थिति अंकित कराएं।

सभी उपदेशक महानुभावों को वैदिक सिद्धान्त (त्रैतवाद, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, सृष्ट्युत्पत्ति, आत्मा की अमरता, ईश्वर का स्वरूप) आदि विषयों पर दि0- 24 तथा 25 नवम्बर को किसी भी समय पूर्व सूचना देकर अत्यन्त संक्षिप्त व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया जा सकता है।

उपदेशकों प्रचारकों को इस निमित्त द्वितीय श्रेणी का रेलवे किराया दिया जायगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आ0प्रति0स0, उ0प्र0

हरिश्चन्द्र आर्य
अधि0 उपदेश विभाग

गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा नहीं होगी

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने एक प्रेस वक्तव्य में सरकार को चुनौती दी है। कि गुरुकुल कांगड़ी में किसी भी हालत में सहशिक्षा शुरू नहीं होगी चाहे सरकार अनुदान दे या ना दे, गुरुकुल [illegible] का पालन करेगा। कुलपति श्री सुभाष ने दिनांक- 7-9-90 को वेद मन्दिर ज्वालापुर में अपने भाषण में कहा कि सरकार कांगड़ी के आदर्शों से बहुत अधिक प्रभावित हुई है। तथा कांगड़ी [illegible] विगत वर्षों की उपेक्षा इस वर्ष अधिक अनुदान दिया है।

- संवाद सूत्र

वार्षिकोत्सव

■ आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का 68वाँ वार्षिकोत्सव 22 से 28 अक्टूबर 1990 तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। इस अवसर पर अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है, जिनमें आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान, सन्यासी एवं राष्ट्रीय नेता भाग लेंगे।"

●

■ आर्ष गुरुकुल पेरवा कटरा इटावा (उ0प्र0) का "नवम वार्षिकोत्सव" दिनांक- 25 से 28 अक्टूबर 1990 तक बड़ी ही भव्यता के साथ मनाया जा रहा है जिसमें अनेक विद्वान सन्यासी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। जनता सादर आमन्त्रित है।

●

■ आर्यसमाज बांदा का 105वाँ वार्षिकोत्सव दि0 10 से 13 नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी भजनोपदेशक पधार रहे हैं आर्य जनता अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर उत्सव को सफल बनावे।

●

■ आर्य समाज साहूकारा उझानी में वेद प्रचार सप्ताह दि0- 6 से 13 अगस्त 90 तक अत्यन्त धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें विद्वानों के प्रवचन व भजनीकों के भजनों से स्थानीय जनता अत्यधिक प्रभावित हुई।

● आर्यसमाज बीसलपुर (पीलीभीत) की साहित्यिक संस्था "दर्पण" ने वयोवृद्ध पत्रकार भू0पू0 प्रधान डा0 पूर्णानन्द जी का हिन्दी दिवस पर सम्मान किया।

● आर्यसमाज बीसलपुर (पीलीभीत) का 80 वाँ वार्षिकोत्सव दि0 9 से 11 नवम्बर 90 को सम्पन्न होगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी, भजनोपदेशक पधार रहे हैं आर्य जनता सादर आमन्त्रित है।

वार्षिक चित्र भेजने की तिथि बढ़ी

१- प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपने अपने वार्षिक चित्र भरकर 15 अक्टूबर तक अवश्य सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें- बाद में आये चित्रों को स्वीकृत करने में कठिनाई होगी।

2- जिला सभायें, आर्यवीर दल, आर्यकुमार सभा अपनी रिपोर्ट भी शीघ्र ही भेजें, सभा की रिपोर्ट छपने जा रही है।

मनमोहन तिवारी, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0।

वार्षिकोत्सव

- आर्यसमाज खसार (बिजनौर) का 37वाँ वार्षिकोत्सव दि0- 30 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक धूमधाम के साथ सम्पन्न होगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान पधार रहे हैं। जनता सादर आमन्त्रित है। ●

- आर्यसमाज कठगर (रायबरेली) का वार्षिकोत्सव दि0 31 अगस्त से 2 सितम्बर तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

●

- आर्यसमाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग अलीगढ़ में विजयदशमी-पर्व दि0 29 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। जिसमें कई विद्वानों के ओजस्वी वक्तव्य होंगे। ●

महिला आर्यसमाज गणेशगंज (खण्डवा)
★ प्रधाना - श्रीमती प्रमिला सोनी,
मन्त्राणी- श्रीमती बसंतीदेवी श्रीमाली,
कोषाध्यक्षा- सुश्री क्षमा पाठक,

पंजीकरण सं. एल. डब्ल्यू / एन.पी. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
आश्विन शुक्ल- ११, संवत् २०४७ वि.
दिनांक ३० सितम्बर १९९०

दूरभाष २४५९९२

सेवा में...

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा , उ0प्र0 आर्यसमाजों तथा आर्यसमाज के लिए समर्पित व्यक्तियों का इतिहास प्रकाशित कर रहा है। इसमें हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सम्मिलित होने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों का भी विवरण प्रकाशित किया जायेगा।

अतः कृपया हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह संग्राम में भाग लेने वाले स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का पूर्ण विवरण यदि चित्र होतो उसके साथ अतिशीघ्र निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें।

-डा0 निरुपण विद्यालंकार
आर्य प्रतिनिधि सभा,
उ0प्र0
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आवश्यक सूचना

श्री महिपाल शास्त्री जी द्वारा विवादित आ0-स0 अलेसर व सोरों का सर्व सम्मति से निर्वाचन करा दिया गया है जो निम्न प्रकार है-

आर्यसमाज जलेसर (एटा)

प्रधान - श्री दिनेश कुमार
मन्त्री - श्री इन्द्रेश कुमार
कोषाध्यक्ष- श्री उमाशंकर

--

आर्यसमाज सोरों (एटा)

प्रधान श्री हरिकृष्ण
मन्त्री श्री जयपाल सिंह
कोषा0 श्री राजेन्द्रकुमार

संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में लोकभाषा प्रचार समिति द्वारा 5.9.90 से संस्कृत प्रशिक्षण शिविर चल रहा है। शिविर उद्घाटन डा0 हरिगोपाल शास्त्री ने किया।

आवश्यकता

आर्यसमाज मन्दिर हेतु एक समर्पित पुरोहित की आवश्यकता है निवास की सुविधा उपलब्ध है। प्रार्थनापत्र में शैक्षिक योग्यता स्वीकृत वेतन। मानदेय निम्न पते पर लिखें -

- संजीव वर्मा एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट
20, बी0एन0 वर्मा रोड
लखनऊ- 18

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं २२४१/५७) कार्तिक कृष्ण-३ रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक :७ अक्तूबर १९९० (घोषणापत्र सं.७/२२-२-७५)



गुणकर्मानुसार व्यवस्था

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः

-भगवान कृष्ण

इस पुरुष समाज की रचना गुण कर्म की व्यवस्था के अनुसार चार वर्णों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभाजित है। इसमें ऊँचा नीचा कोई नहीं है। सभी राष्ट्रपुरुष के समान एवं सम्पूज्य अंग हैं।

मनमोहन तिवारी

इन्द्रदेव पाठक

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू ३०/
एक प्रति	१रू मात्र
विदेश मे	१५ पोंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष

अंक-३९

मानव धर्म एक है क्योंकि उसका जनक एक है

त्वं समुद्रोऽसि विश्ववित् कवे
तवेमा पंचप्रदिशो वि धर्मणि।
त्वं द्यांच पृथिवीं चाति जभ्रिषे,
तव ज्योतींषि पवमान सूर्यः ।।

- ऋग्वेद -----

यह सम्पूर्ण विश्व जिसमें मानवकृति भी सम्मिलित है, उस परमात्मा की अद्भुत देन है। वह इसकी रचना करके इसके कण-कण में समाया हुआ है, स्वयंदृष्टा एवं स्वयसाक्षी है। वह सर्वज्ञ है, कवि है, क्रान्तिदर्शी है। सृष्टि के यह पाँचों तत्व-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश उसके नियन्त्रण में हैं वह इनका धारक है नियामक है। वही द्यावा से लेकर पृथ्वीपर्यन्त सबका पालन-पोषण कर रहा है। उसी के ध्रुव धर्म और अटल शक्तिशाली नियमों से पृथ्वी सूर्य चन्द्र नक्षत्र आदि में गति है जो सन्तुलित है। गति नियन्त्रित है दूरी नपी-तुली निश्चित है सबके कक्ष और धुरी नियत है इसी कारण टकराव का कोई प्रश्न नही है। इन सबका एकमात्र कारण एक सर्वशक्तिमान् परमात्मा को छोड़कर और कोई हो नही सकता।

जब सृष्टि के तत्व टकराव का रास्ता छोड़कर अपने-अपने नियत कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं तो मनुष्य क्यों टकराव के रास्ते पर चल पड़ा है। क्या वह अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए प्रगति पथ पर नही चल सकता। निश्चितरूप से उसके क्षुद्र स्वार्थो ने उसे विभाजित कर दिया है और आज स्वयं ही अग्नि प्रदीप्त करके उसमें स्वय ही जल भी रहा है। कैसा आश्चर्य है उसकी महिमा का सभी गुणगान करते हैं, दुखों से मुक्ति के लिए सभी उसे पुकारते हैं पर उसके नियमों और आज्ञाओं की अनदेखा कर देते हैं। मानव!, तू जिस दिन इस रहस्य को समझ जायेगा, इस संसार में एकता और प्रेम की गंगा बहा देगा। तेरी सेवा तेरा प्रेम स्वार्थ प्रेरित न होकर केवल कर्तव्य प्रेरित होना चाहिए।

सेवा की आड़ में ईसाइयत का प्रचार

लन्दन से प्रकाशित होने वाली **"द इंडिपेन्डेन्ट"** पत्रिका में प्रख्यात लेखिका जरमेन ग्रीयर ने **मदर टेरेसा** को ईसाई धर्म की साम्राज्यवादी नेता कहा है। उन्होंने लिखा है कि मदर टेरेसा इस्लाम और हिन्दू धर्म से घृणा करती हैं। वे सेवाभाव की प्रच्छन्न ओट लेकर वास्तव में ईसाई धर्म का प्रचार कर रही हैं। उनके इस प्रचार में पश्चिमी योरोप के अनेक देश तथा अमेरिका मदद कर रहे हैं और भरपूर आर्थिक सहायता प्रदान कर रहे हैं। वे बड़ी चुपचाप और धैर्य के साथ विश्व में ईसाइयत के प्रचार में लगी हुई है उन्हें **"मिशनरीज् आफ् चैरिटी"** का प्रमुख इसीलिए बनाया गया है कि भारत तथा अन्य देशों में जहाँ-जहाँ उन्हें गरीबी और [illegible] दिखाई दे- उनकी मदद कर उन्हें ईसाई बनावें। इस तरह से विश्व का एक बहुत बड़ा भाग ईसाइयत में दीक्षित हो सकता है। उनका उद्देश्य ईसाई जनसख्या में वृद्धि करना है इसीलिए वे परिवार नियोजन की विरोधी हैं। बंगाल और कलकत्ते को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया हुआ है। आर्यसमाज सेवाधर्म को मानव का सबसे बड़ा धर्म मानता है- **"सेवाधर्मो परमगहनः"**। परन्तु उसकी आड़ में किसी विशेष धर्म का प्रचार करना किसी भी दृष्टि से उचित नही माना जा सकता। अब भी समय है हिन्दुओं को चेतना चाहिए अन्यथा हिन्दुओं का एक बहुत बड़ा वर्ग ईसाइयत और इस्लामियत की गोद में चला जायेगा।

आर्य भूमि पर अरूणोदय सा,
उठा अरुण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ कार्तिक कृष्ण-३ संवत् २०४७ वि.

दिनांक-७ अक्तूबर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

सम्पादकीय

आर्य महासम्मेलन चुनौती स्वीकार करे

आजादी के बाद से भारत की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दोनों एकताओं को नष्ट करने का बड़ा गम्भीर षड्यन्त्र चल रहा है। विदेशी शक्तियाँ किसी भी हालत में विश्व के क्षितिज पर भारत के नवोन्मेष उदय को देखना नहीं चाहतीं। न उसे सैनिक दृष्टि से सशक्त, न औद्योगिक दृष्टि से समृद्ध, न सामाजिक दृष्टि से सुगठित संगठित और न सांस्कृतिक दृष्टि से एकाकार। इसके लिए उन्होंने कई मोर्चे खोल रखे हैं। विदेशी ईसाई मिशनरी दूरदेशों से आकर भारत की बहुसंख्यक जनता को धड़ाधड़ ईसाई बनाते जा रहे हैं। उन्हें आश्चर्यजनक सफलता भी मिल रही है। मिजोरम केरल आदि प्रदेश इसके उदाहरण हैं। इसी प्रकार अरब देशों से आये हुए पेट्रो डालर के बल पर मुस्लिम संस्थाएं गरीब भोले भाले हिन्दुओं का सामूहिक धर्म परिवर्तन करने के कार्य में बड़े जोरशोर से जुटी हुई हैं। इधर आगरे में पनवाड़ी गाँव में एक बहुत मामूली से हुए जाट-जाटव संघर्ष से हिन्दुओं के एक बहुत बड़े वर्ग को बौद्ध बनाए जाने के प्रयास के समाचार पढ़ने को मिल रहे हैं। सिख भी जहाँ कहीं अवसर मिलता है हिन्दुओं को सिख बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। निःसन्देह इन सबके पीछे वोटों की राजनीति एवं राजनैतिक पुरुषों की उग्र लोकैषणा ही कार्य कर रही है। परन्तु ग्रह केवल कह देने मात्र से काम नहीं चलेगा। यदि यही स्थिति रही और इस पर गम्भीर होकर रोक नहीं लगाई गई तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि हिन्दूजाति का अस्तित्व ही समाप्त प्राय हो जाये।

क्या कारण है असवर्ण कहा जाने वाला जो वर्ग हिन्दूजाति का रक्षक माना जाता था वही आज अपने ही धर्म का शत्रु बनता जा रहा है। क्या वास्तव में जन्मना जातिपान्त की कुटिलप्रथा इसके लिए उत्तरदायी है अथवा धर्मनिरपेक्षता की आड़ में वर्ग संघर्ष की आग भड़काने वाले हमारे नेता, जो वोटों के लालच में अपना वर्चस्व स्थापित कर सत्तासीन पदासीन होना चाहते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुओं में जन्मना जातिपान्त की जड़ें बड़ी गहरी हैं और इन्हें एक दिन में दूर भी नहीं किया जा सकता किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं हमारा हिन्दूधर्म ईसाई या मुसल्मान धर्म से हेय है। ऋषि दयानन्द के समय में भी हिन्दुओं को धार्मिक दृष्टि से पराजित करने का भीषण षडयन्त्र चल रहा था। इसीलिए उस दूरदृष्टा ऋषि ने "सत्यार्थ प्रकाश" में अन्तिम दो समुल्लास इस्लाम और इसाइयत के बारे में लिखे। इसका परिणाम यह हुआ कि आर्य (हिन्दू) जनता ईसाइयत और इस्लामियत की असलियत समझ गई और विधर्मी बनने का कुचक्र शिथिल होने लगा। यह आर्यजाति की बड़ी भारी विजय थी और शुद्धिकरण के अभियान से हमें यह आशा हो चली थी कि भारतीय आर्य (हिन्दूसमाज) विश्व में एक सशक्त शक्ति के रूप में उभरेगा किन्तु आजादी के बाद धर्मनिरपेक्षता की आड़ में हुए प्रचार ने फिर इस जाति में विघटन पैदा करना शुरु कर दिया है। कभी कोई ईसाई या मुस्लिम नेता अपने धर्म की बुराइ नहीं करता किन्तु हिन्दुओं में ऊँचा बनने के लिए आज हिन्दु धर्म की बुराई करना आवश्यक माना जाता है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री स्वयं को हिन्दू कहते हुए भी हिन्दू धर्म की यदा-कदा बुराई करते रहते हैं हिन्दुओं को कोसते रहते हैं। उन्हें यह तथ्य हृदयगम नहीं होता कि धर्म परिवर्तन होते ही एक हिन्दू की समस्त प्राचीन भारतीय आस्थाएं एक दम विलुप्त हो जाती हैं और वह राष्ट्रविरोधी बनता चला जाता है। कश्मीर पाकिस्तान में क्यों जाना चाहता है इसलिए कि वहाँ के अधिकांश मुसल्मानों की आस्थाएं पाकिस्तान से जुड़ी हुई हैं जबकि कश्मीर के मुसलमानों की रगों में उन्हीं हिन्दू पूर्वजों का खून बह रहा है जो भारतीय हिन्दुओं की रगों में है।

आर्यसमाज के प्रभाव से जन्मना जातिपान्त की प्रथा विलुप्त होने लगी थी और भारत के क्षितिज पर एक समग्र सुगठित गुणकर्मानुसार संगठित सशक्त समाज का उदय होने ही वाला था कि राजनीति के क्षितिज पर वोटों की राजनीति का बोलबाला हो गया और वर्गविद्वेष फिर साँप की तरह फन उठाकर खड़ा हो गया है। बिना सोचे विचारे मण्डल आयोग की रिपोर्ट लागू करने की घोषणा ने इस विद्वेष को बढ़ाने में आग की तरह काम किया है। आज आर्यसमाज के सामने यह एक बड़ी चुनोती है। हमने जिस सशक्त समाज की रचना के प्रयास में पग उठाया था उस पर कुठाराघात हो रहा है समाज को छिन्न-भिन्न करके नष्टभ्रष्ट करने का उपाय किया जा रहा है। हमारा केन्द्रीय नेतृत्व आगामी दिसम्बर में एक विशाल आर्यमहासम्मेलन का आयोजन करने जा रहा है। हम चाहते हैं सम्मेलन इस चुनौती को स्वीकार करे। ऋषिवर्य के सम्मुख भी ऐसी ही अनेक चुनौतियाँ थीं पर वह कभी भयभीत नहीं हुआ और न उसने कभी पग पीछे हटाया, जीवन की अन्तिम श्वास तक जूझता रहा। हम उसके शिष्य हैं उसने बताया है "अहमिन्द्रो न पराजिग्ये" मैं आर्य हूँ कभी पराजय नहीं मानता और आज सचमुच हमें यह सत्य करके दिखा देना है। ●

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का आगामी १०५वाँ वार्षिक बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन १९९०-९१

दिनांक - २४ तथा २५ नवम्बर १९९० को डी०ए०वी कालेज लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है

१ -	सभा कार्यालय में चित्रों के प्राप्ति की अन्तिम तिथि	15-10-90 -	(सोमवार)
२ -	प्राप्त चित्रों की जाँच	16-10-90 से 19-10-90 तक -	(मंगलवार से शुक्रवार तक)
३ -	मतदाता सूची का प्रकाशन	22-10-90 -	(सोमवार)
४ -	आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	25-10-90 -	(बृहस्पतिवार)
५ -	आपत्ति का निवारण	26-10-90 से 27-10-90 तक	(शुक्रवार से शनिवार तक)
६ -	शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	6-11-90 -	(मंगलवार)
७ -	बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	24,25-11-90	(शनिवार तथा रविवार)
८ -	चुनाव परिणाम की घोषणा -	निर्वाचन की समाप्ति के बाद।	

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

पं. युधिष्ठर मीमांसक से एक भेंट वार्ता

• श्री मनुदेव "अभय" विद्यावाचस्पति
इन्दौर

"आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं0 युधिष्ठिर मीमांसक के इन्दौर में शुभागमन के अवसर पर "युग प्रभात" साप्ताहिक के संपादक श्री मनुदेव "अभय" विद्यावाचस्पति ने उनसे साक्षात्कार लिया था। माननीय-पंडितजी ने रुग्ण होते हुए पत्रकार अभय जी से जो महत्वपूर्ण चर्चा की, वह चर्चा संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत है। आशा है कि पाठकों को यह चर्चा लाभप्रद लगेगी।"

- सम्पादक ।

मनु-{प्रश्न} आर्यसमाज के प्रचार की शिथिलता के क्या कारण हैं तथा इनके निवारण के कौन-कौन से उपाय सम्भावित हैं?

युधि0 {उत्तर} वर्तमान आर्यसमाज में शिथिलता का एक मात्र कारण वेद के स्वाध्याय का अभाव है। महर्षि-दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में वेद का पढ़ना-पढ़ाना केवल धर्म ही नहीं अपितु "परम धर्म" निरूपित किया है। इस नियम का परिपालन आर्य समाज के आरंभिक आर्यों ने किया था, इस कारण आर्य समाज का प्रचार जंगल में आग की भाँति फैल गया और आर्यों में वैदिक धर्म के प्रचार की तीव्र आकांक्षा बनी रही । वेद के स्वाध्याय में ज्यों-ज्यों शिथिलता आती गई, वैसे-वैसे आर्यसमाज के प्रचार में भी कमी आती गई। वर्तमान में यह स्थिति और भी गम्भीर बनती जा रही है। परन्तु हमें निराशावादी न बनकर प्रचार कार्य में गति लाने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

प्रश्न- वेद मन्त्रों के सस्वर पाठ करने की सरलतम कौन सी विधि है?

उत्तर- वेद मन्त्रों का सस्वर पाठ "गुरु-मुख" से ही सीखा जा सकता है इसके लिए अधिक से अधिक आठ वर्ष की आयु से प्रारम्भ किया जाना चाहिए। इसके पश्चात् शनै-शनैः स्वर यंत्रों के कठोर हो जाने के कारण स्वरोच्चारण स्पष्ट और शुद्ध नहीं होने पाते। इसके फलस्वरूप वास्तविक रूप में सस्वर वेदाध्ययन नहीं आ सकता। जैसे संगीत का अध्ययन बाल्यकाल में आरम्भ करने से संगीत का यथावत् स्वर ज्ञान का और ठीक-ठीक उच्चारण होता है, वैसे ही सस्वर वेद पाठ के लिए भी यही प्रणाली अपनाना बहुत आवश्यक है। इसके लिए एक विशेष बात का ध्यान् रखना जरूरी है। बालक-बालिका के स्वर यंत्रों को यथावत् बनाये रखने के लिए वेदपाठी के लिए भोजन आदि का विशेष ध्यान और विधान होना चाहिए। इसके लिए नित्य दंत- धावन {विशेष-वृक्ष जैसे नीम, बबूल आदि}, स्नान, भोजन {गोघृत युक्त} तथा मिष्ठान्न पदार्थ का उपयोग होना चाहिए। भोजन अत्यन्त सात्विक होना चाहिए। क्योंकि आहार शुद्धौ सत्य शुद्धिः के अनुसार गोघृत युक्त सात्विक भोजन ही सात्विक वृत्ति उत्थान करता है। इसके बिना शुद्ध शब्दोच्चारण करना कठिन ही नहीं, अपितु असम्भव है।

प्रश्न- स्वामी अग्निवेश द्वारा भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा बनाने तथा आन्दोलन का क्या औचित्य है?

उत्तर- स्वामी अग्निवेश में अपने स्वभाव के अनुसार "जोड़ो" अर्थात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के स्थान पर भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना का प्रचार किया है। शेष, वह कुछ भी रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहते। उन्होंने अभी तक तो कोई भी रचनात्मक ठोस कार्य नहीं किया, वे ध्वन्सात्मक अथवा ऋणात्मक कार्य में ही अपनी शक्ति अपव्यय करते रहे हैं। यह दुर्भाग्य का विषय है कि सभा में विघटनकारी तत्वों का प्रवेश स्वामी ध्रुवानन्द के कार्य काल में ही हो चुका था। इसके पूर्व तक महात्मा-नारायण स्वामी तक सार्वदेशिक आ0प्र0 सभा का कार्य ठीक से चलता रहा। इनके जाने के पश्चात् प्रतीत होता है कि सभा अपने उद्देश्य से भटक गई।

प्रश्न- आर्यसमाज की वर्तमान निर्वाचन प्रणाली में परिवर्तन होना आवश्यक अनुभव हो रहा है। इसके लिए कोई नवीनतम सुझाव क्या हो सकता है?

उत्तर- आपका यह कथन उचित नहीं है कि वर्तमान निर्वाचन प्रणाली दोषपूर्ण है, इसलिए इसमें परिवर्तन की आवश्यकता है। निर्वाचन प्रणाली इतनी दोषपूर्ण नहीं है, जितनी आर्य व्यक्ति के चरित्र की कमी की। आर्य सदस्य की जो व्याख्या की है, उसमें कितने आर्य खरे उतरते हैं? नियम क0-4 का आर्यसमाज के सदस्य कितना पालन करते हैं, यह एक गम्भीर चिन्तन का विषय है। यही कारण है कि चारित्रिक दोष के कारण आर्यसमाज के चतुर्थ नियम का भी पालन नहीं हो रहा है। क्योंकि चुनाव में एक पक्ष सत्य का होगा और दूसरा पक्ष असत्य का। इसके लिए जब तक स्वाध्याय नहीं होगा, तथा मन और आत्मा की उन्नति करने वाला आत्मिक भोजन नहीं मिलेगा, तब तक यही दुर्दशा बनी रहेगी।

इस दुर्दशा रूपी रोग को दूर करने के लिए पंच महायज्ञों में प्रथम ब्रह्म यज्ञ {संध्या} निरूपित है। केवल मात्र संध्या से नहीं, अपितु उसके उचित साधनों-उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। तभी निर्वाचन में पवित्रता आ सकती है।

प्रश्न- वर्तमान में प्रचलित कथित योग का आर्यसमाज का कितना और कैसा संबंध है?

उत्तर- योग में चमत्कारवाद नहीं है। सूर्य नमस्कार तथा आसनिक मुद्राएं योग की कोटि में नहीं आतीं। इसमें सत्यांश अल्प है। हाँ, इनका हठयोग में वर्णन अवश्य मिलता है। वर्तमान योग के नाम पर किये जा रहे शारीरिक व्यायामों का स्वास्थ्य से संबंध है। पर यह योग नहीं है। इनसे मन की स्थिरता- एकाग्रता नहीं होती। यह भी सत्य है कि इन विविध व्यायामों से भोगवादी प्रवृति प्रोत्साहित होती है। रजनीश इसका ही दूसरा नाम है। उनके पूना स्थित आश्रम से ही यह प्रचार हुआ कि आसनों का संबंध भोगवाद से है। वास्तुतः इनका संबंध केवल स्वास्थ्य से है।

आर्य समाज में ऋषि पतंजलि का योग मान्य है। इसमें मन की चितवृत्ति का स्थिर या निरोध करने का विधान है। यह प्रदर्शन, चमत्कार अथवा अर्थोपार्जन का साधन नहीं। योग से योगिक क्रिया तथा योगिक क्रियाओं से मन, आत्मा को परमात्मा से जोड़ना ही योग है।

प्रश्नः औद्योगिक श्रमिकों तथा ग्रामीण बंधुओं के बीच में आर्य समाज के प्रचार के लिये कौन सी प्रणाली अपनाई जाय?

उत्तरः औद्योगिक श्रमिकों तथा कृषकों बंधुओं में आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए स्थानीय लोकभाषा ही एक मात्र साधन है। इन क्षेत्रों में कार्य करने वाले सभा प्रचारकों का ग्रामीण भाषा और परिवेश में रहकर ही उनमें सतत् प्रचार कार्य किया जाय। जिस दिन श्रमिक कृषक आर्य प्रचारक पर अपना आत्म विश्वास प्रकट कर देंगे तभी वह इस कार्य में सफल हो सकेगा। शहरों में केवल इस्त्री बंद कपड़े पहिन तथा रोज कपड़े धोने वाले दक्षिणावृत्ति के आर्य प्रचारक न तो अब तक कोई प्रचार कर पाये हैं और न कभी वे सफल प्रचारक बन सकेंगे। भाषायी और चरित्रवान प्रचारक ही इन श्रमिकों, मजदूरों, कृषकों के बीच वैदिक धर्म का प्रचार कर पायेंगे।

प्रश्नः आर्य समाजियों में असामाजिकता तथा जातिवाद के प्रोत्साहन को कैसे दूर किया जा सकता है? आर्य परिवार कैसे बन सकेंगे?

उत्तरः आर्यों में सामाजिकता उत्पन्न करने तथा आर्य परिवारों के निर्माण के लिए सर्वप्रथम पारिवारिक पुरोहित की आवश्यकता है। प्रत्येक आर्य परिवार का एक निश्चित योग्य, त्यागी, विद्वान तथा सदाचारी-चरित्रवान पुरोहित हो। यही पुरोहित अपने आर्य परिवारों में संस्कार सम्पन्न कराये। पौराणिकों की इस अच्छाई को हमें स्वीकार करना पड़ेगा। चरित्रवान पुरोहित ही परिवारों में प्रवेश पाने के अधिकारी है। आर्य परिवारों में आर्य पुरोहित बहुत महत्वपूर्ण कड़ी बन जाता है। पौराणिक से आर्य बने परिवार बिना पुरोहित के पुनः पौराणिक बन जाते हैं। इससे ही जन्मना-जातिवाद की कुप्रथा समाप्त हो सकती है।

प्रश्नः आर्य परिवारों की रचना हेतु क्या अन्तर्जातीय विवाह उपयुक्त हैं?

उत्तरः महर्षि दयानन्द ने पूना-प्रवचन में स्पष्ट कहा है कि महिलाएं अपने पुरोहितों-पंडितों पर अगाध श्रद्धा रखती हैं। इनसे ही आर्य परिवारों की रचना संभव है। स्मरण रहे, अन्तर्जातीय विवाह उच्चकुलों में ही सफल होते देखे गये हैं। कामुकता वश अथवा प्रेम-विवाहों को अन्तर्जातीय विवाह कहना उचित नहीं है। पिछले कुछ समय से मनचले युवक-युवतियों के कामयुक्त संबंधों का विवाह करवा देने से आर्यसमाज की ख्याति में कलंक लग रहा है। अब तो कहीं-कहीं

—शेष पृष्ठ ९ पर

क्रान्तिकारियों के पितामह

पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा

पवन कुमार एम.ए.
लखनऊ

जन्म 4 अक्टूबर 1857
निधन- 31 मार्च 1930

पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा महान संस्कृतज्ञ आर्ष प्रणाली के प्रयोक्ता, वेदों के उद्भट विद्वान, इंगलेण्ड, फ्रांस और जर्मनी में अपनी विद्वता का डंका बजाने वाले तेजस्वी पण्डित, कुशल अध्यापक, तथा सफल प्रशासक थे। विदेशों में भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता का शंखनाद करने वाले, शान्तिपूर्ण असहयोग तथा पूर्ण बहिष्कार को प्रस्तुत करने वाले, ब्रिटिश साम्राज्यवाद से संघर्ष करने वाले सशस्त्र क्रान्ति को यथोचित ठहरा कर क्रान्तिकारी संघर्ष को प्रोत्साहित करने वाले विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन के पितामह और गुरु थे। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष के प्रथम मार्ग-दर्शकों में से एक थे।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, श्री विपिन चन्द्र पाल तथा श्री लाला लाजपतराय आदि उग्र राष्ट्रवादी नेताओं का उन्होने उत्साहवर्धन किया। सशस्त्र क्रान्तिकारियों का खुला समर्थन किया। तत्कालीन भारतीय राष्ट्रीय महासभा (इण्डियन नेशनल कांग्रेस) के उदारवादी नेताओं की ब्रिटिश साम्राज्यवाद की राष्ट्रभक्ति पर तीव्र प्रहार किए। उन्होंने साम्राज्यवाद से किसी भी प्रकार की सहायता या सहयोग का पूर्ण विरोध किया तथा संघर्ष करते रहने के मार्ग का समर्थन किया।

19वीं शताब्दी में भारतीय पुनर्जागरण की श्रेष्ठतम विभूति स्वामी-दयानन्द सरस्वती तथा श्याम जी कृष्ण वर्मा में गुरु-शिष्य का सम्बन्ध था। स्वामी दयानन्द तेजस्वी सूर्य के समान और श्याम जी कृष्ण वर्मा शीतल चन्द्रमा के समान थे। श्याम जी कृष्ण अपनी युवावस्था में स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये थे। स्वामी जी से उन्होंने वेद, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निघन्टु निरुक्त आदि का तथा संस्कृत का अद्वितीय अप्रतिम ज्ञान प्राप्त किया। दूसरी ओर स्वदेश निष्ठा तथा साम्राज्यवाद से संघर्ष के क्रान्तिकारी संस्कार तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान के दिव्य भावों को ग्रहण किया। स्वामी जी के प्रति उनका सम्मानभाव जीवनपर्यन्त बना रहा। वे अत्यन्त कृतज्ञता पूर्वक उनका स्मरण करते थे। यदि श्याम जी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में न आये होते और उनके क्रान्तिकारी विचारों का सम्पर्क न हुआ होता तो वे चाहे और कुछ भी बन जाते किन्तु क्रान्ति सेनापति का पद उन्हें प्राप्त न होता।

श्याम जी क्रान्तिकारियों के गुरु तथा अनुशास्ता थे। वे सशस्त्र क्रान्ति चेष्टा के पितामह थे। वे ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने सर्वप्रथम कहा था कि अत्याचार का प्रतिकार करना न्यायोचित और आवश्यक है। जहाँ एक ओर उन्होंने विदेशी सत्ता को हटाने के लिये शस्त्र बल प्रयोग के औचित्य को स्वीकार किया वहाँ दूसरी ओर उन्होंने ये भी कहा कि यदि हम विदेशी शासन के प्रति शान्ति पूर्ण असहयोग तथा पूर्ण बहिष्कार करें तो अंग्रेजी शासन का एक दिन भी टिकना असंभव हो जायेगा।

भारत के स्वतन्त्रता के संघर्ष में श्याम जी कृष्ण वर्मा का योगदान एक सिद्धान्त प्रतिपादक आचार्य का है पर उन्होंने जो कुछ भी किया वह इतिहास का अमर पृष्ठ बन चुका है। इस शताब्दी के प्रथम दशक में इंगलैंड में रहकर भारतीय नवयुवक विद्यार्थियों को उन्होंने देश भक्ति की भावदीक्षा में दीक्षित किया। इन्डिया हाऊस की स्थापना भारतीय "होमरूल सोसाइटी" का गठन तथा भारत की स्वतंत्रता के लिये सतत संघर्ष की प्रेरणा दी। इन्डिया हाऊस को केन्द्र बनाकर प्रवासी भारतीयों में पूर्ण स्वतंत्रता स्वदेश भक्ति, आत्म गौरव और देश की पुरातन गरिमा को स्थापित किया।

श्याम जी कृष्ण वर्मा का दृष्टिकोण वैज्ञानिक तथा युक्ति संगत था। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष में विश्व जनमत की उपयोगिता स्वीकार करने वाले वे प्रथम भारतीय नेता थे। भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में लन्दन, पेरिस तथा जिनेवा में उन्होंने अनवरत प्रचार किया। उन्होंने भारत देश में जनतंत्र शासन व्यवस्था का समर्थन किया। भारतीय राजाओं को अपनी रियासतों में जनता को जनतान्त्रिक अधिकार प्रदान करने की प्रेरणा दी। भारत के संघर्ष को अन्य देशों के राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने में वे नहीं चूके। उनके इन प्रयत्नों से अनेक देशों में भारत समर्थक लोगों का निर्माण हुआ। अनेक देशों में भारत के स्वतंत्रता के समर्थन में सभायें हुईं।

श्याम जी कृष्ण वर्मा को श्रद्धान्जलि देते हुए *अमरहुतात्मा* सरदार भगत सिंह ने कहा था।

"देशवासियों। पूर्ण स्वराज्य का बिगुल बजाने वाले श्याम जी कृष्ण वर्मा हमारे महान नेता को नियति के क्रूर हाथों ने हमसे छीन लिया है। इण्डिया हाउस की स्थापना कर तथा देश को स्वतंत्र कराने के पुण्य कार्य में मैडम कामा सावरकर तथा मदन लाल धींगरा जैसे साहसी देशभक्तों को दीक्षित कर श्याम जी कृष्ण वर्मा ने हमारा मार्ग प्रशस्त किया है।"

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा था "पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा भारतीय स्वतंत्रता के संदेशवाहक थे तथा लंदन के आकाश पर चमकने वाले नक्षत्र थे। उनके द्वारा संचालित पत्र इण्डियन सोशियालोजिस्ट में उदारवादी परम्पराओं को तोड़कर अंग्रेजों के अभिशापों को गिनाना आरम्भ कर दिया है।" श्याम जी कृष्ण वर्मा की मृत्यु पर श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुए उनको भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

"श्याम जी कृष्ण वर्मा के साथ ही पुरानी पीढ़ी के देशनायकों का युग समाप्त हो गया। वह श्रृंखला बिखर गयी जो आज तक उस पीढ़ी के क्रान्तिकारियों के साथ जोड़ती थी। श्याम जी कृष्ण वर्मा देश को स्वतंत्र कराने के लिये सशस्त्र क्रान्ति का मार्ग आवश्यक मानते थे। मातृभूमि से सहस्रों मील दूर रहकर उन्होंने अपनी अलौकिक प्रतिभा और अपार सम्पदा देश के हित के लिए लगा दी भारतीयों के हृदय में वह सदैव सर्वोच्च आसन पर विराजमान रहेंगे।"

स्वास्थ्य-सुधा



समस्या-"आयु 25 वर्ष, अविवाहित युवक-चार वर्ष से सिर के बाल टूट रहे हैं। अनेक मेडिकेटेड तैल लगाये, कोई लाभ नहीं। कृपया अचूक-सटीक उपचार बतायें।"

-एक युवक, साकेत (मेरठ)

समाधान- प्रातः दो चम्मच कलौंजी आधा प्याला पानी में भिगोयें। रात्रि में सिर पर पीसकर बालों में मलकर सुखायें। ऐसा दो सप्ताह तक करें। तीसरे सप्ताह में रात्रि में नीबू के बीज पानी में पीसकर सिर के बालों की जड़ में मल कर सुखायें। एक लीटर पानी में चार आँवले उबाल कर आधा करें। इस पानी में दो चम्मच दही डालकर सप्ताह में एक या दो बार स्नान के समय सिर के बाल धोया करें। सौ ग्राम नारियल-तेल में दो चम्मच साबुत मूँग डाल देवें। यह नारियल-मूँग तैल, केशतेल के रूप में प्रयुक्त करें। प्रातः खाली पेट, सर्वांगासन किया करें। चार मास में आपके बाल घने-काले हो जायेंगे।

समस्या-"मेरा पुत्र उम्र 18 साल, कक्षा-11 में पढ़ता है। वह तुतला कर बोलता है। मैंने कई डाक्टरों को दिखाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ।"

-हुकुम सिंह, बिजनौर (उ0प्र0)

समाधानः- ब्रह्मी पत्ती 15 ग्राम, तुलसीपत्ती 20 ग्राम, मुलेहठी 15 ग्राम, पीपल 10 ग्राम, लौंग 10 ग्राम, कुलंजन 10 ग्राम व सफेद मिर्च 10 ग्राम- इर्न, सभी सात घटकों को धूप में सुखाकर पीस कर चूर्ण बना कर रखें। यह चूर्ण 2 ग्राम प्रातः व सायं मधु से चाटें। मिठाई गुड़-चीनी 40 दिन तक न खायें। पत्राचार करते रहें।

0-अपनी समस्या के साथ बन्द डाक लिफाफे मेरे पास भेजें।

शोक समाचार

- आर्य समाज बेल्थरारोड (बलिया) के निकट ग्राम तरछापार के निवासी श्री सुरेश प्रसाद वर्मा की माता जी का देहान्त दि0 11 अगस्त को हो गया तथा शान्ति यज्ञ दि0- 22 अगस्त को श्री पारसनाथ आर्य के पौरोहित्य में वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ जिसमें आर्यसमाज बेल्थरारोड के सभी अधिकारी व सदस्य उपस्थित थे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- कायमगंज (फर्रुखाबाद) ने श्री सियाराम जी आर्य के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया। श्री आर्य कर्मठ कार्यकर्ता थे। उनको सन् 19.. के वार्षिकोत्सव पर सम्मानित किया गया था। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान हेतु प्रार्थना की गई।

- श्रीमती शशिकला सिंह (पुस्तकाध्यक्ष-आ0स0 अमिरता) हरदोई का आकस्मिक निधन दि0 22 अगस्त को हो गया तथा दि0 3 सितम्बर को शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

जातीय आधार पर आरक्षण सामाजिक विषमताओं में वृद्धि कर रहा है

— डा० धर्मपाल प्रधान- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आर्यसमाज जन्म के आधार पर किसी जाति की बात को स्वीकार नहीं करता। यहाँ पर गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था पर बल दिया गया है। वैदिक धर्म में कहीं पर भी जन्म के आधार पर किसी को अछूत अथवा पिछड़ा वा अगड़ा कहने की बात को नहीं माना गया। ये जातियाँ समय के प्रवाह में फलस्वरूप बनती चली गयीं और एक ऐसा समय आया जब जन्म को ही आधार माना जाने लगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुनः इस विषय को सामाजिक व्यवस्था को बदलने के उद्देश्य से उठाया और वे स्वयं तथा बाद में उनके अनुयायी, आर्यसमाज के सिद्धान्तों में आस्था रखने वाले लोग इस दिशा में सफल भी हुए, परन्तु जब जाति के आधार पर आरक्षण की सुविधा दी जाने लगी, तो वही लोग पुनः अनुसूचित कहलाने की दिशा में प्रवृत्त हो गए। आर्यसमाज के गुरुकुलों में किसी को पता भी न होता था कि वे किस जाति में जन्में हैं, पर जब वे जीवन यापन के लिए बाहर निकले तो सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के लोभ को वे भी संवरण न कर सके। निश्चय ही आर्यसमाज तो गुण कर्म स्वभाव के अनुसार जाति का निर्धारण करना चाहता है, पर हमारे हरिजन भाई आरक्षण की चकाचौंध से भ्रमित हो गए हैं। एक बार किसी शास्त्रार्थ के दौरान विपक्षी ने कहा कि हम आपकी वर्ण व्यवस्था को तब मानेंगे जब आप इन हरिजनों के घर का दूध पीलेंगे। श्री रघुवीर सिंह शास्त्री वहाँ पर थे। उन्होंने दो युवकों की ओर वहीं पर इशारा किया और वे गटागट दूध पी गए और आर्य समाज की जय का नारा लग गया। इसी प्रकार श्री ब्रह्मानन्द दण्डी कहा करते थे कि मैं अपने शिष्यों को ब्राह्मण बनाने की कोशिश कर रहा हूँ पर ये अब भी जब विवाह आदि की बात चलती है, तो अपनी जन्मना जाति की ओर उन्मुख होते हैं। देश में जो हरिजनों ने सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन भोगा है, आर्यसमाज तो उन्हें समान अधिकार देना चाहता है, पर वे लेना ही नहीं चाहते क्योंकि सरकार उन्हें जो सुविधायें दे रही है, वे ज्यादा लुभावनी नहीं हैं। इस प्रकार सरकार ही उन्हें आरक्षण देकर ऊपर नहीं उठने देना चाहती।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक वक्तव्य ध्यान देने योग्य है- "जो कोई जन्म से वर्णव्यवस्था माने और गुण कर्म के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिये कि जो कोई अपने वर्ण को छोड़ नीच अत्यन्त अथवा क्रिश्चियन मुसलमान हो गया हो, उसको भी ब्राह्मण क्यों नहीं मानते? तब यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म को छोड़ दिया, इसलिये वह ब्राह्मण नहीं है, इससे यह भी सिद्ध होता है कि जो ब्राह्मणादि उत्तम कर्म करते हों, वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और उत्तम वर्णस्थ हो के नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना ही अवश्य चाहिए।" यह वक्तव्य निश्चय ही किसी भी नृशास्त्र-समाजशास्त्र के सिद्धान्तों पर खरा उतरेगा। सामाजिक व्यवस्था का यही नियम है और यही होना भी चाहिए, जो जैसा करे उसे वैसा ही वर्ण मिले। हम कर्म फल में विश्वास करते हैं- "अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभम्"। जब हम भगवान श्रीकृष्ण के इस उपदेश को अन्य जन्म के लिए सत्य मानते हैं तो यहाँ क्यों नहीं मानते। हमारे सिद्धान्त तो सर्वत्र एक समान ही होने चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के आठवें अध्याय में "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः की सुन्दर व्याख्या की है।

कुछ लोग मनुस्मृति की दुहाई देते हैं कि वहाँ पर जन्मना जाति व्यवस्था की बात कही है। यह भी नितान्त भ्रामक है। मनु का विधान इस प्रकार है- लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुख बाहूरुपादतः। ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्। ऐसी की मान्यता वेदों में भी प्राप्य है। "ब्राह्मणो स्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः, उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत। इस प्रकार मनु के विचार निश्चय ही वैदिक हैं। यदि कहीं पर कुछ अकथनीय है, तो वह प्रक्षेप है।

जो हमारे सनातनी भाई महाभारत, रामायण, पुराण व अन्य ग्रन्थों की बात मानते हैं, वे भी यदि खुली आँखों तथा खुले मन से इन ग्रन्थों का अध्ययन करें तो वे पाएंगे कि वहां पर भी जाति जन्म से नहीं, अपितु वर्णव्यवस्था कर्म के आधार पर मानी गई है। "इन्द्रो ब्राह्मणः पुत्रः क्षत्रियाः कर्मस्य कारणम्" (महाभारत, शान्तिपर्व) "गणिका गर्भसम्भूतो वशिष्टश्च महामुनिः। तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तेन कारणम्।। (भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व) "शूद्रोऽपि आगम सम्पन्नो द्विजो भवति संस्कृतः।" "कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करहिं सो तस फल चाखा।। "(गोस्वामी तुलसीदास) "जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्चते।"

अच्छा तो यह रहता कि उपर्युक्त संस्कृत पंक्तियों की सही व्याख्या करते हुए, अपने विषय का प्रतिपादन किया जाता पर स्थान की सीमायें हैं और इस लेख का आवश्यक पहलू है कि हमारी सरकार क्या करना चाहती है।

हमारे इतिहास में ऐसे नाम अनेक हैं जो निम्न कुल में उत्पन्न होने पर भी ऊँचे स्थान को प्राप्त हुए, विदुर दासीपुत्र थे, पर वे महामन्त्री थे। सुदामा जन्म से ब्राह्मण थे, पर वे आर्थिक रूप से पिछड़े थे। फिर भी वे माँगना नहीं चाहते थे। वे आरक्षण नहीं चाहते थे। बाल्मीकि का स्थान कितना ऊँचा था? भक्त शिरोमणि रविदास की आराधना की जाती है। ऐसे नामों की लम्बी सूची बनेगी।

सामाजिक न्याय महर्षि दयानन्द के दर्शन में है जहाँ पर वे सभी के लिए समान शिक्षा व्यवस्था की बात कहते हैं और बाद में योग्यता के आधार पर कार्य व्यापार चयन की बात करते हैं। वे राजा और रंक सभी के लिए समान वातावरण एवं समान शिक्षा व्यवस्था की बात करते हैं। उन्होंने स्त्री और शूद्रों के लिए वेद वाक्य उद्धृत करके उनके अध्ययन की वकालत की है।

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों ने कभी सोचा भी नहीं था कि स्वतंत्रता के बाद ये वर्तमान शासक पुनः देश को इस प्रकार जातियों को स्वार्थों की श्रृंखला में बाँट देंगे। ये अपनी राजनीति को चमकाने के लिए वर्ग-युद्ध का आमन्त्रण देंगे और देश की एकता को पुनः खंडित करने की दिशा में उद्यत होंगे।

जन्मना जाति के आधार पर किसी प्रकार का आरक्षण न्यायसंगत नहीं है। जाति के आधार पर किसी को पिछड़ा मानना भी उचित नहीं है। आपातकाल में जब झुग्गी वालों को पुनर्वास कालोनियों में बसाया गया तो भी यही कहा गया था कि इन्हें रहम की नहीं, बल्कि समान सम्मान देने की आवश्यकता है। जो उस समय यह कहते थे, वे ही आज फिर रहम दिखाना चाहते हैं।

सभी का समान मानना इस सामाजिक व्यवस्था का अंग होना चाहिए। अयोग्य को स्थान न देकर, उन्हें योग्य बनाने का प्रयास करना चाहिए। योग्य बनने के लिए सभी प्रकार के आरक्षण देने चाहिए। ■

आर्यसमाज रम्पुरिया (बरेली)

प्रधान - श्री रामदास आर्य
मन्त्री - श्री वासुदेव आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री सहदेव आर्य

शोक समाचार

● श्री रणधीर सिंह सुपुत्र श्री-तोखराम ग्राम आहूलाना (रोहतक) दिनांक- 18-8-90 को देहावसान हो गया। उनकी आयु लगभग 82 वर्ष की थी। वे आर्यसमाज के एक सक्रिय एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाए गए हैदराबाद सत्याग्रह व हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भाग लिया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा उनके शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

● दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा की अन्तरंग बैठक में आर्यसमाज के गौरव श्री अर्जुन देव मक्खना की नृशंस हत्या के प्रति अत्यन्त दुख व्यक्त करते हुए, अधिकारियों से मांग की कि अपराधियों को कठोर से कठोर दण्ड दिया जाय।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि ऐसे उदार चरित्र महामानव की आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके परिजनों को इस आघात को सहने की शक्ति दे।

सच्चा धर्म क्या है

पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी
जबलपुर

सभी धर्म वाले अपने को अच्छा व पूर्ण तथा अन्यों को बुरा या अपूर्ण मानते हैं। सामान्यतः धर्म शब्द मुख्यतः 3 अर्थों में आता है। प्रथम तो धर्म अर्थात् गुण ‡Quality‡ जैसे अग्नि का धर्म है गर्मी व प्रकाश देना तथा जलाना। लकड़ी व कोयले में भी अग्नि तो है परन्तु जब तक वे ये तीन काम न करें तब तक उन्हें कोई भी अग्नि नहीं कह सकता। अग्नि जब जलते जलते राख हो जाती है तब उसमें ये तीनों गुण नहीं रहते फिर उसे कोई अग्नि नहीं कहता। मनुष्य का धर्म है मनन पूर्वक अर्थात विचार पूर्वक कार्य करना। सदाचारी व्यक्ति को तो मनुष्य कहना ठीक है परन्तु दुराचारी को तो पशु कहना भी पशु का ही अपमान करना है। इसी प्रकार अहिंसा अर्थात् दया, प्रेम व परोपकार इत्यादि मनुष्य के धर्म हैं। यह ठीक है कि बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। या बलवान पशु निर्बल को ही सताता है क्योंकि वह अपने से बलवान का सता ही नहीं सकता। परन्तु यह पशु का गुण है मनुष्य का नहीं। मनुष्य का गुण तो इससे उल्टा अर्थात् निर्बल की सेवा व सहायता करना तथा अन्यायी बलवान से भी कभी न डरना है।

धर्म का दूसरा अर्थ है कर्तव्य‡ Duty‡। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्य जानने चाहिए और उन्हें पूरे भी करने चाहिए। इसी तरह अकर्तव्य भी जानने चाहिए और उन्हें कभी नहीं करना चाहिए। जिसने कभी तुम्हारे साथ उपकार या भलाई की हो उसके उपकार को मानना, कृतज्ञता प्रकट करना और प्रत्युपकार करना मनुष्यता है। इसके विपरीत उपकारी का उपकार न मानना, उसका अपकार या बुराई करना कृतघ्नता है, यह बहुत बड़ा पाप है। पशु कभी कृतघ्न नहीं होते। शेर बाघ भी उन्हें भोजन देने वालों, सेवा करने वालों, व दवाई करने वालों पर कभी भी हमला नहीं करते। कृतघ्न मनुष्य पशुओं से भी नीच है। माता-पिता व आचार्य ने हमारी तन, मन व धन से सेवा की है, अशक्त से सशक्त बनाया है, अज्ञानी से ज्ञानवान बनाया है, अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकार दिया है। इसके लिए हमें सदैव उनके कृतज्ञ रहना चाहिए और तन, मन व धन से उनकी सेवा करके उनसे उऋण होने का प्रयत्न करते रहना चाहिये। उनका अपमान कभी नहीं करना चाहिए, उन्हें कभी भी दुर्वचन नहीं कहना चाहिए, सदैव विनम्र [illegible]। इसी प्रकार पत्नी के प्रति पति का और पति के प्रति पत्नी का कर्तव्य है कि वे परस्पर प्रेम का ही बर्ताव करें, सदा मधुर वचन ही बोलें, कटु वचन कभी भी न बोलें, ताड़ना या अपमान कभी न करें और सदा ही एक दूसरे की मनोयोग पूर्वक सेवा व सत्कार करते रहें।

मनुष्य के सर्वसामान्य कर्तव्यों के अतिरिक्त कुछ विशेष कर्तव्य भी होते हैं। जैसे विद्यार्थी का कर्तव्य है मनोयोग पूर्वक विद्याध्ययन करना और व्यर्थ के कामों में समय नष्ट न करना। इसी तरह अध्यापक का कर्तव्य है कि छात्र को निष्कपट भाव से प्रेम व मनोयोग पूर्वक जितना यथोचित जानता हो उतना ज्ञान सरलता से करा देना। ब्राह्मण का कर्तव्य है देश से अज्ञानान्धकार को मिटाना। क्षत्रिय का कर्तव्य है अन्याय को मिटाने में अपना जीवन अर्पण कर देना। वैश्य का कर्तव्य है वस्तुओं के अभाव को दूर करने में अपना जीवन खपा देना। जिससे और कुछ न बन पड़े वह देश व देशवासियों की सेवा में अपने को समर्पित कर दें।

धर्म का एक तीसरा अर्थ भी होता है मजहब, पन्थ या मार्ग ‡RELIGION‡ जैसे कबीर पन्थ या नानक पन्थ। योगमार्ग, श्रेय मार्ग व प्रेय मार्ग। ईसाई मत अर्थात् ईसामसीह और उनके अनुयायियों द्वारा बताया मार्ग। इस्लाम अर्थात् शान्ति का मार्ग या दंगाफसाद व खून खराबे से दूर रहना।

सच्चा धर्म मनुष्य मात्र के लिए एक ही होता है अर्थात् मानव धर्म। वह सभी देशों के लिए सभी कालों के लिए और सभी मनुष्यों के लिए एक जैसा ही होता है, उसमें विपर्यय नहीं होता। जैसे-1-सत्य, अर्थात् सत्य जानना, सत्य मानना, सत्य बोलना और सत्य कर्म ही करना। 2-अहिंसा-अर्थात् सभी जीवों से प्रेम करना, किसी से बैर न करना। 3-अस्तेय अर्थात् दूसरे की वस्तु बिना उसकी आज्ञा के न छूना, न लेना और न व्यवहार में लाना, चोरी का भाव भी मन में न लाना। 4-ब्रह्मचर्य-अर्थात् शरीर में अधिक से अधिक वीर्य का संचय व रक्षण करना, उसे व्यर्थ न बहाना। वीर्य जब तक शरीर में रहता है वह जीवन, स्वास्थ्य व स्फूर्ति देता है। अत्याधिक वीर्य क्षय से शरीर व मन दोनों ही रोगी व निर्बल हो जाते हैं। अनिद्रा व अपस्मार ‡दौरा व पागलपन‡ अत्याधिक वीर्य क्षय के कारण होते हैं। वीर्यपात में क्षणिक उत्तेजना के कारण काल्पनिक अनुभूति होती है, परन्तु बाद में मनुष्य उत्साहहीन व निर्बल हो जाता है।

-अपरिग्रह- संसार में मनुष्यों के दुःख का एक बहुत बड़ा कारण है। उसमें अनन्त इच्छाओं का होना। सब [illegible] की सभी प्रकार की [illegible] पूरा हो सकना सम्भव ही नहीं है। [illegible] लोग लूट खसोट या अन्याय से अपने प्रयोजन से अधिक धन व वस्तुएँ एकत्रित कर लेते है। वे विलासी प्रमादी व आलसी हो जाते हैं। और अभावग्रस्त लोग जीवन भर दुख भोगते व कुढ़ते हैं। महात्मा बुद्ध ने भी कहा था कि मनुष्य की इच्छाएं ही दुख का कारण बनती हैं। इच्छा रहित मनुष्य ही पूर्णतः सुखी है। अतएव इच्छाओं को कम से कम करके उनकी पूर्ति में सफल होना ही सुख और सन्तोष का हेतु है। आवश्यकताओं को सीमित कर देने से सभी को अत्यावश्यक वस्तुएँ आसानी से मिल जाएँगी। नितान्त आवश्यक वस्तुओं से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना ही अपरिग्रह है।

धर्म की ये बातें संसार के सभी मनुष्यों के लिए बिना किसी सम्प्रदाय भेद के समान रूप से लागू होती है इसलिए यही सच्चा व आवश्यक धर्म है।

दानदाताओं की सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट जनपद-गाजियाबाद के दान दाताओं की सूची

गताक से आगे — गतयोग-1849

नामदाता	राशि
श्रीमती उर्मिला देवी जी स्याना-बुलंदशहर।	21/-
श्रीमती शैलबाला जी स्याना-बुलंदशहर	31/-
" कुसुमलता जी स्याना-बुलदशहर	101/-
" धर्मवती जी स्याना-बुलंदशहर	31/-
श्री सत्यप्रकाश जी बजाज स्याना-बुलंदशहर	11/-
" रोशन लाल जी स्याना-बुलंदशहर	11/-
" सत्यवीर सिंह जी चितसोना गाजियाबाद	205/-
" चन्दन सिंह जी करन सिंह जी चितसोना गाजियाबाद	45/-
" प्रदीप कुमार जी आर्य बहादुरगढ, गाजियाबाद	40/-
" मिश्री लाल जी बाकराबाद-रामपुर	21/-
" जयदेव जी शर्मा फरीदाबाद	15/-
" आर्यसमाज बहादुरनगर-बुलंदशहर	101/-
" खचेडलाल शर्मा बी0बी0नगर, बुलंदशहर	50/-
" गनेशी लाल शर्मा बी0बी0नगर, बुलंदशहर	21/-
" प्यारे लाल शर्मा बी0बी0नगर, बुलदशहर	21/-
" रामगोपाल जी सेठ बी0बी0नगर, बुलंदशहर	11/-
" शीशराम जी बी0बी0नगर, बुलंदशहर	11/-
" गोविन राम जी बी0बी0नगर बुलंदशहर	10/-
[illegible] जी शर्मा [illegible]	[illegible]
" [illegible] जी शर्मा बी0बी0नगर बुलदशहर	[illegible]
" कुन्दन लाल जी शर्मा बी0बी0नगर बुलदशहर	11/-
" यशपाल सिंह जी बी0बी0नगर, बुलंदशहर	21/-
" हरपाल सिंह जी बी0बी0नगर बुलंदशहर	51/-
" ब्रह्मदत्त जी द्विवेदी प्रतापगढ़-अवध	200/-
समस्त योग	2991

चिन्तन की दिशाएँ

• डा० ज्ञानेन्द्र प्रकाश "जिज्ञासु" बदायूँ

हिन्दुस्तान सदियों से एक गरीब एव पिछड़ा देश रहा है। ऐसा उन विकास वादियों का कथन है जिन्होंने इस देश को विकासशीलता की दौड़ में आगे बढ़ाने की कोशिशें कीं। न जाने पिछड़ेपन का ऐसे लोगों ने कहाँ से देख पाया, अन्यथा वास्तविकता तो यह है कि हम ससार में सबसे अधिक आगे थे हमारी सम्पन्नता की महत्ता को विश्व के हरक्षेत्र में आदर की दृष्टि से देखा जाता था मगर तब, जब आज के भौतिक विकासवादी ससाधनों का अभाव था।

अपनी इस सास्कृतिक सम्पन्नता के दर्शन हमें व्यक्तिगत जीवन से सामाजिक क्षेत्र तक व्याप्त दृष्टिगत होता है।

मनुष्य, समाज की सबसे छोटी इकाई है। भौतिक रूप से सम्पन्न दिखते हुये किसी चोर, डाकू, व्यभिचारी कुलटा, वैश्या, कसाई, हत्यारे, लालची, ठग को हमारा जनमानस कदापि मान्यता नहीं देता क्योंकि हमारी सस्कृति के अनुसार व्यक्ति के चारित्रिक एव नैतिक गुणों की समृद्धता को ही समृद्धि माना जाता है। और ऐसे आचार भ्रष्ट लोगो को हेय समझा जाता रहा।

प्रत्येक परिवार अपने ढग से जीने के लिए स्वतत्र है चाहे जैसी उसकी जीवन विधा हो किन्तु यदि किसी परिवार से अतिथि सत्कार के भाव लुप्त हो जाएं परस्पर के सबधों की आत्मीयता में ह्रास होने लगे, पारिवारिक जन बच्चों की ओर से विमुख हो जाये और छोटे अपने से बडों की सुविधाओं/आवश्यकताओं का ध्यान न रखे तो ऐसे परिवार भी निन्दनीय बन जाते है क्या कभी आपने सोचा है कि ऐसे परिवारों के समस्त भौतिक ससाधन पारिवारिक प्रतिष्ठा की पूर्ति क्यों नहीं कर पाते? इन परिवारों का कौन सा धन था जो आज इनसे छिन रहा है? परहित, पारस्परिक प्रेम, अतिथि-सत्कार, मातृवान, पितृवान, आचार्यवान भव की शिक्षा के बिना परिवार निर्धन हो रहे हैं, ये ही हमारे परिवारों का धन था।

सामाजिक जीवन की प्रथम पाठशाला अर्थात् परिवार में प्राप्त अच्छे सस्कार और उनसे पोषित सदप्रवृत्तियों ... मनुष्य की निज प्रयत्नों से ... गुणों का विकास करना ... समाज के कार्यक्षेत्र में इसी का मूल्याकन भी होता है। जिस देश के जैसे नागरिक होंगे उसका राष्ट्रीय चिन्तन भी उसी के अनुरूप होगा। वसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष हमने सारे ससार को दिया और विश्व ने उसे स्वीकारा भी यही कारण है कि मर्यादाच्युत किसी भी देश के कृत्यों की आलोचना पृथक-पृथक एव सयुक्त राष्ट्र सघ द्वारा की जाती है। ईराक द्वारा कुवैत का अधिग्रहण पाकिस्तान द्वारा कश्मीर पर आक्रमण ये वर्तमान के उदाहरण हैं।

हम और हमारा राष्ट्र इन्हीं विचारधाराओं से सम्पन्न था हमने मानवोचित गुणों के मूल्यों पर सारे विश्व में सम्मान प्राप्त किया। हमारी इन्हीं मान्यताओं को विश्व ने सजोना चाहा, ये और बात है कि सस्कार मूलक चिन्तन न होने से वे उसे आत्मसात न कर सके, हमने अपने इन मूल्यों के लिए आरक्षण कभी नहीं चाहा।

ऋषियों द्वारा प्रदत्त अपनी ऐश्वर्यता से हमने सम्पूर्ण विश्व को क्या नही दिया वेद-विद्या, अध्यात्म-ज्ञान, सुख-शान्ति का सदेश, जीवन-पद्धति का विश्वबन्धुत्व परक दर्शन, मनु का उपदेश, चाणक्य की नीति, कौटिल्य का अर्थशास्त्र लीलावती का गणित, ज्योतिष और प्रचुर सम्पदा भी।

इसे काल का व्यतिक्रम ही कहा जायेगा या देश का दुर्भाग्य कि गलत नीतियों के कारण हम पत्ते-पत्ते बँट गये और प्रतिवर्ष विभिन्न कुचालों से हमें अलग-अलग कर तोड़ा जा रहा है। कभी पत्रकार तो कभी उनमें भी छोटे पत्रकार कभी स्वतत्रता सग्राम सेनानी, कभी शिक्षक-कवि-लेखक व रगमची अभिनेता गायक आदि। कभी अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति-पिछड़ी जाति, कभी अल्पसख्यक शरणार्थी, कभी नवबौद्ध ईसाई-समुदाय, कभी हिन्दी भाषी, पजाबी-दक्षिण भारतीय भाषाई कभी आतकवादी आदिवासी एवं हरिजन आदि अभिप्राय यह कि जहाँ असतोष देखा वहीं शासकीय उदारता का ग्रास फैंका गया और कुछ समय के लिए जनता की आवाजें बन्द कर दी गयीं परिणामत जनता का पारस्परिक सदभाव सौहार्द समाप्त हो गया।

हमारे सामाजिक स्वरूप को विकृत करने के उद्देश्य से प्रथम चोट खान-पान पर की गयी, हमारा आहार भ्रष्ट किया गया और विचारों से ब्रह्मचर्य। भेदभाव की नीति के अधीन अल्पसख्यकों को विशेषाधिकार, मुस्लिम पर्सनल ला की वैधता, अल्पसख्यक आयोग, वक्फ बोर्ड, अल्पसख्यक विकास वित्त निगम आदि की स्थापना/परम्परागत व्यवसायों में सरकारी घुसपैठ, सरकारी तत्र में असामाजिक तत्वों का प्रतिनिधित्व इत्यादि दुर्नीतियों के परिणामस्वरूप आज देश के नागरिकों का अधिसख्य भाग अपनी अभिव्यक्तियों के लिए घुट रहा है। राजनीति के अपराधीकरण से त्रस्त प्रबुद्धवर्ग अपनी शिक्षा के प्रतिफल में आकल्पित सुख की चाह में उस ... में है।

अत स्वस्थ आरोग्य के लिए स्वास्थ्य के नियम ही ... ... के लिए तैयार ... पत्र ... हमारे कर्णधार उसके अन्तस के ... को पहचानने के समय उसका सही ... कर पायें तो यह देश का सौभाग्य और देशवासियों का भाग्योदय माना जायेगा। सीमावर्ती राज्य जल रहे हैं। अन्तर्राज्य भी समस्याओं से सुलग रहे है।

अत हम वय राष्ट्र जागृयाम का सकल्प लें और भारत की अखड राष्ट्रीयता के पक्षधर बनें।

आर्यवीरदल संगठन हेतु दौरा

पूर्वी उ०प्र० में आर्य वीरदल सगठन हेतु का० सचालक एव उपसचालक आर्य वीरदल परिमडल गोरखपुर ने विभिन्न स्थानों का दौरा किया। श्री आर्यमुनि जी 17-18 अगस्त खेता सराय 18,19 अगस्त शाहगज (जौनपुर), 20 से 26 अगस्त नवाबगज (गोण्डा), श्री आर्यमुनि जी व ब्र०नरेन्द्र लाल जी 28 अगस्त बस्ती, 29 अगस्त लालगज, 30 को मेहदावल 31 को बाँसी (बस्ती), 1 सितम्बर को कोल्हुई सिद्धार्थनगर, 2 को मऊ 3 को आजमगढ, 4 को रानी की सराय, (आजमगढ) इस दौरे से लालगज और सनीलाबाद, कप्तानगज में नये आर्य वीर दल का गठन हुआ। तथा दैनिक कार्य का शुभारम्भ हो गया है। दिनाक 23 सितम्बर को आजमगढ शाखा, घोसी, कोपागज तेन्दुली मऊनाथ भजन में वीर पर्व मनाया गया। दिनाक 21-22 नवम्बर को आर्यवीर दल महासम्मेलन आयसमाज आजमगढ में होगा।

-औंकार नाथ सिह, मत्री
आर्य वीरदल परिमडल-गोरखपुर।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एव समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाना है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

सम्पादक के नाम पत्र :

हिन्दुओं पर घोर अत्याचार

गजरौला में ईसाई स्कूल की दो ननों के साथ कथित बलात्कार को लेकर भारत भर के ईसाई समाज ने रोष एवं आक्रोश प्रकट किया। इस घटना को ऐसा रूप दे दिया गया मानो ईसाई समाज पर भारत में अत्याचार हो रहा है। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री तथा केन्द्र से श्री जार्ज फर्नांडीज वहां पहुंचे। सरकार ने अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा का वचन दिया तथा इस ईसाई संस्था को 3 लाख रुपये का अनुदान भी दिया।

किन्तु कश्मीर में अनेक स्थानों पर पाकिस्तानी नारे लगाने वाले एक विशिष्ट, समुदाय द्वारा वहां के हिन्दू नर-नारियों पर जो भीषण अत्याचार किए जा रहे हैं उसके विरुद्ध न सरकार ही बोलती है और न ही भारत भर के हिन्दू समाज ने सम्पूर्ण भारत में कोई आन्दोलन किया। केन्द्र सरकार तो यह कह कर लोगों को धोखा दे रही है कि कश्मीर की घटनाएं साम्प्रदायिकता से प्रेरित नहीं है अर्थात मजहबी जनून के कारण कश्मीरी मुसलमान विद्रोह नहीं कर रहे। मुफ्ती मोहम्मद साहेब ने कई बार वक्तव्य दिया कि कश्मीर में हिन्दू-मुसलमान का कोई झगड़ा नहीं है। किन्तु वास्तविकता तो इसके बिल्कुल विपरीत है। जैसेः-

26 अप्रैल को ग्राम कंडीखास तहसील हन्दवाड़ा के महंत ब्रजनाथ गोस्वामी का मुख सीकर वृक्ष पर उल्टा लटका कर फांसी दी गई। इस गाँव में फिर 3 हिन्दुओं को मार डाला किन्तु शिकायत करने पर भी पुलिस ने कुछ नहीं किया बल्कि वहां बसे सभी हिन्दुओं को गाँव छोड़कर चले जाने को ही कहा। भरीपुरा क्षेत्र के पं० प्रेमनाथ प्रेमी के सम्मुख ही उनके परिवार की एक महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया फिर इस महिला को आरे से चीर डाला। इस क्षेत्र की अनेक महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार करके उनके स्तन काटने, आँखें निकालने और गर्म लोहे से शरीर के अंगों को जलाने, हाथ-पैर काट देने की घटनाएं हुई हैं।

30 अप्रैल को विख्यात लेखक और कवि पं० सर्वानन्द कौल तथा उनके पुत्र की आँखें निकाल ली गईं। फिर जख्मों पर मिर्चें डाली गईं। उनके मस्तक को जहां तिलक लगा था एक कर्म लोहे के सूए से बींधा गया।

आस्ट्रेलिया में प्राध्यापक श्री-बी०एल० गंजू कश्मीर आए तो उन्हें अनेक यातनाएं देकर पानी में डुबो दिया। उनकी पत्नी जो अध्यापिका हैं, से कई दिनों तक सामूहिक बलात्कार करके स्तन काट डाले। उनके शरीर पर जलती सिगरेटें लगाकर तड़पाया गया फिर उन्हें पानी में डूबो दिया। कई लोगों के कान, जिव्हा, बाहू और टांगें काटी गई हैं। ऐसी सैकड़ों घटनाएं हो रही हैं फिर भी सम्पूर्ण भारत का हिन्दू समाज रोष और आक्रोश प्रकट नहीं कर रहा। यदि हिन्दू समाज भी हिन्दुओं पर हो रहे इन पाशविक अत्याचारों के विरुद्ध सम्पूर्ण भारत में आक्रोश प्रकट करने लगे तो भारत में स्थान-स्थान पर चल रहा आतंकवाद और देशद्रोही षड्यन्त्र सब बन्द हो जाए। देश में शान्ति तथा व्यवस्था हो जावे। और हिन्दुओं की मजहबी जनून की क्रूरता से रक्षा भी हो जाए।

-- -डा० कैलाशचन्द्र
संकट मोचन आश्रम, श्रीहनुमान मन्दिर
सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली।

कांटों पे चलना पड़ेगा

सन्तोष "कण्व" बरेली

आज संकट में है देश सारा,
इसका उपचार करना पड़ेगा।
बात बातों से अब न बनेगी,
कुछ न कुछ उठके करना पड़ेगा।।

हाथ पर हाथ धर कर जो बैठे,
बीच मंझधार में ही है डूबे।
पार उफनाती नदिया को करने,
मिलके पुरुषार्थ करना पड़ेगा।

राष्ट्र जीवन में सर्वत्र विष है,
सांस लेना भी मुश्किल हुआ है।
इस भयंकर हलाहल को पीने,
तुमको शंकर ही बनना पड़ेगा ।।

सीधी अंगुली से घी कब मिला है,
नीति निर्धारकों यह बताओ।
लोभ और मोह सब कुछ भुलाकर,
तुमको चाणक्य बनना पड़ेगा।

कांटा कांटे बिना कब है निकला,
लोहा लोहे से ही तो कटा है।
नष्ट आतंक का राज्य करने,
दल असुर दल का दलना पड़ेगा।।

घर का भेदी ही लंका ढहाता,
घात भीतर का मंहगा पड़ा है।
दुश्मनों के इरादे कुचलने,
वार अपनों का सहना पड़ेगा ।।

दूध मत विषधरों को पिलाओ,
आस्तीनों में लिपटे हुए हैं।
फन को पहले कुचल कर ही आगे,
अपनी मंजिल पे बढना पड़ेगा ।।

यह चुनौती समय की कठिन है,
कांटे पग-पग में बिखरे पड़े हैं।
लक्ष्य को प्राप्त करने से पहले,
तुमको कांटों पे चलना पड़ेगा।

मृत्यु सर पर खड़ी मुस्कराती,
होश में आओ उठ कर खड़े हो।
नष्ट वैभव पुनः प्राप्त करने,
सर के बल तुमको चलना पड़ेगा।

जन्म इस देश में जब लिया है,
भू से माता का रिश्ता जुड़ा है।
माँ का सच्चा सुपुत्र कहाने,
कष्ट भारत का हरना पड़ेगा।

गोद में जिसकी खेले पले हो,
धूल में गिरके सनके बढ़े हो।
आज वह मातृ-भू है बिलखती,
उसकी पीड़ा को हरना पड़ेगा।

वीर पुत्रों ने सर्वस्व देकर,
राष्ट्र-ध्वज को सदा थामें रखा।
बाजी शतरंज की फिर बिछी है,
कूट चालों को चलना पड़ेगा।

ग़ज़ल

•डा॰ गणेशदत्त सारस्वत
सीतापुर

विष घृणा का न घोलें,निवेदन यही।
बोल कड़ुवे न बोलें,निवेदन यही।।
आग घर में लगी है, बुझाएं उसे,
बन प्रभंजन न डोलें,निवेदन यही।।
आपके हैं सभी,गैर कोई नहीं,
निज हृदय को टटोलें,निवेदन यही।।
रक्त में है, सने आपके हाथ जो,
स्नेह-पानिप से धोलें,निवेदन यही।।
दुःख से होन गीले किसी के नयन,
स्वप्न स्वर्णिम संजोले,निवेदन यही।।
दूसरों को कहें बाद में हम बुरा,
पहले अपने को तोलें,निवेदन यही।।
पथ प्रगति सामने है विमुखता तजें,
सबके सब साथ हो लें,निवेदन यही।।

सूचना

आगामी अप्रैल 1990 में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर राजर्षि रणंजयसिंहजी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के सम्बन्ध में "आर्यमित्र" विशेष रूप से लेख/कविता आदि का प्रकाशन करने जा रहा है। अतः कृपया उनके सम्बन्ध में अपेक्षित सामग्री शीघ्र भेजने की कृपा करें।

-सम्पादक

आदरणीय लेखक महोदय

आर्य जगत के शिरोमणि नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान, अद्भुत वक्ता पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री-पं0 प्रकाशवीर शास्त्री देश की उन महान विभूतियों में गिने जाते हैं, जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व ने राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गरिमा को बहुत ऊँचा उठा दिया था। ऐसे पुरुषरत्न को अपनी पावन धरती पर जन्म देना इस प्रदेश का सौभाग्य रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का मुख पत्र "आर्यमित्र" उनकी पुण्यस्मृति में, आगामी दिसम्बर 90 में "प्रकाशवीर शास्त्री अंक" प्रकाशित करने जा रहा है। इस अंक में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बहु आयामी स्वरूप पर देश-विदेश के मान्य विद्वज्जनों। राजनीतिज्ञों तथा उच्चकोटि के सन्त पुरुषों के विचारों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में प्रकाशित की जायेगी।

आप उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित रहे हैं और उनके कृतित्व के प्रशंसक भी।

मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा, यदि आप उनके सम्बन्ध में अपने विचारों को मूर्तरूप देते हुए इस अंक में प्रकाशनार्थ मुझे भेजने की कृपा करेंगे।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में बारहवीं शोध गोष्ठी

आज दिनांक 9-9-90 को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल मेरठ की ओर से एक शोध गोष्ठी का आयोजन हुआ। विषय था वैदिक उषा का स्वरूप"। गोष्ठी की अध्यक्षता, प्रो0 शेर सिंह जी पूर्वमंत्री केन्द्रीय सरकार एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने की। मुख्य अतिथि थे श्री सुभाष जी विद्यालंकार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय। इस अवसर पर निम्नलिखित विद्वानों ने अपना शोध पत्र पढ़ा:-

(1) डा0 अवतार कृष्ण गुटटू--निदेशक वैदिक विज्ञान-अनुसंधान संस्थान-मथुरा।
(2) डॉ0सुधाकराचार्य-रीडर संस्कृत मेरठ विश्वविद्यालय।
(3) डॉ0 ज्ञान प्रकाश- प्रवक्ता संस्कृत-नेशनल डिग्री कालेज मैनपुरी।
(4) डॉ0 दुर्गा प्रसाद मिश्र-प्रवक्ता संस्कृत मेरठ कालेज, मेरठ।
(5) डॉ0 विजेन्द्र कुमार -प्रवक्ता संस्कृत कृषक डिग्री कालेज मवाना।
(6) डॉ0 विजेन्द्र कुमार- प्रवक्ता संस्कृत बदायूँ ।
(7) डा0 राजेन्द्र प्रसाद-प्रवक्ता संस्कृत-छपरौली।

गोष्ठी का सयोजन संस्थान के निदेशक डॉ0 निरूपण विद्यालंकार ने किया। वैदिक प्रार्थना एवं सरस्वती वन्दनाः गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा हुई। सर्वप्रथम डा0 सुधाकराचार्य ने "सामवेद में ऊषा का स्वरूप" विषय पर अपना शोध पत्र मधुर कण्ठ मे संस्कृत श्लोकों के माध्यम मे पढ़ा।

डा0 विजेन्द्र कुमार मवाना ने शांखायाग ब्राह्मण में ऊषा का स्वरूप कैसा है इस पर प्रकाश डाला तथा बताया कि उषा प्रजापति की पुत्री है इस आधार पर उन्होंने उषा के द्वारा सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन किया।

डा0 दुर्गा प्रसाद मिश्र जी ने विश्व के अन्य साहित्य और संस्कृत साहित्य में उषा के स्वरूप का विवेचन किया।

डा0 अवतार कृष्ण जी मथुरा ने उषा की लालिमा, स्त्री स्वरूप, हिरण्मयम रथ पर वैज्ञानिक रूप से प्रकाश डाला तथा बतया कि लाल रंग-सुखदायक होता है। स्त्री स्नेह एवं प्रेम स्वरूपा होती है। अतः उषा को स्त्री रूप में वर्णित किया गया है। उन्होंने उषा संबंधी आख्यानों का वैज्ञानिक विवेचन किया।

श्री सोमदेव शतांशु ने "उषा" के माता, पत्नी एवं भगिनी के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिस प्रकार सूर्योदय से पूर्व "उषा" जागती है एवं सूर्य के प्रकाशकत्व धर्म को प्रकाशित करती है, उसी प्रकार पत्नी भी पति के समस्त कार्यों में सहयोगिनी होनी चाहिए।

श्री ब्र0शिवशंकर जी ने अपना शोध पत्र संस्कृत में पढा तथा उषा के विविध रूपों का वर्णन करते हुए उसे एक विदुषी, वीरांगना और प्रतिव्रता आदि की संज्ञा दी।

श्री ज्ञान प्रकाश जी निरुक्त के संदर्भ में उषा का वर्णन करते हुए उसकी विस्तृत व्याख्या की ।

श्री सुभाष जी विद्यालंकार- कुलपति ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए गुरुकुल के संस्कृतमय वातावरण से प्रभावित होकर बडी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि अब यहाँ मेरा जो सम्मान किया गया है। वह वास्तव में वैदिक संस्कृति का सम्मान है। गोष्ठी के अध्यक्ष प्रो0शेरसिंहजी ने वैदिक ज्ञान और विज्ञान के महत्व को प्रतिपादित करते हुए गुरुकुल प्रभात आश्रम में इस विषय में होने वली गोष्ठियों को बहुत महत्वपूर्ण बताया। साथ ही वैदिक विज्ञान को संसार में फैलाने की प्रेरणा की।

श्री पं0 इन्द्रराज जी मंत्री गुरुकुल प्रभात आश्रम ने सब का धन्यवाद करते हुए बताया कि स्वामी समर्पणानन्द जी एक अद्भुत पाण्डित्य एवं विलक्षण प्रतिभा के व्यक्ति थे। उनके बताए हुए मार्ग पर चल कर एवं उनकी योजनाओं को सफल बनाकर ही हम उन्हें वास्तविक श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। उन्होंने वैदिक विज्ञान के विकास के लिए गुरुकुल में 8 लोकों की कल्पना की थी जिन लोकों की स्थापना आज के वैज्ञानिक युग में बहुत महत्व रखती है। समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान और समर्पणानन्द वैदिक पुस्तकालय इस शोध केन्द्र की ओर पहला पग है।

अन्त में शोध संस्थान के अध्यक्ष पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने परमात्मा को धन्यवाद देते हुए कहा कि सब कार्य निर्विघ्नता पूर्वक सम्पन्न हुआ। उन्होंने कहा कि जब हम किसी शुभ कार्य को करने चलने हैं, तो प्रकृति स्वयं अनुकूल हो जाती है। आज के विद्वान वेद को मैक्समूलर, ग्रिफित, मैकडानल्ड, सायण, महीधर और उव्वट आदि विद्वानों के माध्यम से पढ़ते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने वेदों के अध्ययन के लिए ऋषियों के माध्यम से पढ़ने की एक दृष्टि प्रदान की। स्वामी विवेकानन्द जी ने बताया कि वेद को समझने के लिए पं0 बुद्धदेव जी विद्यालंकार ने ऋग्वेद मण्डल गति सूक्त की रचना की। जिसके अध्ययन से वेद को समझने में बड़ी सहायता मिलती है। अन्त में उन्होंने वेद को वेद से पढ़ने पर बल दिया।

अन्त में श्री डा0 निरूपण जी विद्यालंकार संयोजक ने सब को धन्यवाद किया।

इस अवसर पर प्रभात आश्रम के सुयोग्य स्नातक का राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली के व्याकरणाचार्य परीक्षा में सर्वप्रथम आने पर स्नातक मण्डल की ओर से उनका रेशमी चादर एवं 501/- रूपये प्रो0 शेर सिंह जी अध्यक्ष के कर कमलों से प्रदान कर अभिनन्दन किया गया।

-संवादसूत्र

पृष्ठ 3 का शेष.....

आर्यसमाज को विवाह करा देने वाली संस्था तक कहा जाने लगा है।

प्रश्नः वैदिक साहित्य तथा आर्य पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार के लिए कौन-कौन से उपाय संभव हैं?

उत्तर: जब तक आर्यों में स्वाध्याय की वृत्ति उत्पन्न नहीं होगी, तब तक वैदिक साहित्य लोकप्रिय नहीं हो सकता। स्वाध्याय की भूख को मिटाने के लिए नये वैदिक साहित्य की आवश्यकता पड़ेगी। साथ ही प्रत्येक आर्य परिवार में एक आर्य पत्र-पत्रिका अनिवार्य रूप से आना चाहिए। आर्यों के परिवार में पौराणिक, सत्य कथाएँ कथा श्रृंगार-रस प्रधान साहित्य का प्रवेश न होना चाहिए। वैदिक साहित्य ही घर में हो।

प्रश्नः आर्य समाज के मंदिरों को किराये पर देकर या धर्मशाला बनवाकर धन उपार्जन करने का साधन बनाना कहाँ तक उचित है?

उत्तर: आर्य समाज के कई मंदिरों में विद्यालय आदि चलते हैं। इससे आर्य विद्वानों तथा अतिथियों को बड़ी कठिनाई पड़ती है। हाँ, परिचय-पत्र देकर आने वालों को नियमों के अंतर्गत ठहराया जाना उचित है। परन्तु मन्दिरों को धर्मशाला या किराये पर देना आर्योचित नहीं है। मंदिर को मंदिर को मंदिर के स्वरूप में रहने देना ही आर्यत्व है।

प्रश्न वर्ण-व्यवस्था का निर्धारण क्या अनेक बार में हो सकता है?

उत्तर नहीं। विवाह के पूर्व वरण किये वर्ण का परिवर्तन कभी नहीं होता। आर्य समाज में सेवा-निवृत्त अधिकारियों ने ही वर्ण-व्यवस्था को वर्ण-भ्रष्ट कर दिया है। वर्ण व्यवस्था का मूल आधार गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर होता है। वातावरण से गुण और कर्म में परिवर्तन संभव है। परन्तु "स्वभाव" परिवर्तन बहुत कठिन है। इसी अपरिवर्तित "स्वभाव" के कारण ही आर्य समाज में विघटनकारी तत्व सक्रिय हैं। ऐसे विघटन कारी तत्वों को आर्य समाज से दूर रखना चाहिए।

प्रश्न: आर्यसमाज में उच्च वर्णो विशेषकर कुलीन ब्राह्मण के न आने का क्या कारण है? उन्हें यहाँ कैसे लाना संभव है?

उत्तर महर्षि दयानन्द ब्राह्मण और सन्यासी थे। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर आर्यसमाज के आरम्भिक काल में उच्च कुल के अनेक ब्राह्मण वैश्य आदि आये। दूसरी ओर स्वामी दयानन्द के व्याख्यानों का प्रभाव पढ़े-लिखे बाबू वर्ग पर अधिक पड़ा। इन्हें उच्च स्थानों पर पदासीन देखकर ब्राह्मण वर्ग चमका और वे धीरे-धीरे आर्य समाज में ब्राह्मणो की संख्या घटने लगी। स्वामी दयानन्द ने जन्मना ब्राह्मणों का विरोध कहीं नहीं किया। हाँ उन्हें गुण-कर्म से भी ब्राह्मण बनने की प्रेरणा दी। ब्राह्मणों में ब्रह्मात्व पूर्ण "स्वभाव" पूर्ण से ही था। इधर आर्य समाज ने भी गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर सच्चे ब्राह्मणों का निर्माण नहीं किया। यही कारण है कुछ नव-ब्राह्मणों ने उच्च कुल के आर्य ब्राह्मणों का विरोध शुरू कर दिया। उल्लेखनीय है कि आर्यों में कर्मकाण्ड में कम अभिरुचि होने के कारण कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का आना रुक गया। क्योंकि सच्चे ब्राह्मण की जीविका ही कर्म-काण्ड पर निर्भर रही है। इन्हीं कुछ कारणों से कुलीन श्रेष्ठ ब्राह्मण आर्य समाज में दिखाई नहीं देते।

आर्यसमाज ससौर (बिजनौर)

प्रधान - श्री नरेशपाल आर्य
मन्त्री - श्री रामकुमार सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री महेशचन्द्र आर्य

"काश्मीर" बचाओ"

— चन्द्रपालसिंह "मयंक" कानपुर

हिंसा और ध्वंस का ताण्डव
दिन पर दिन बढ़ता जाता।
काश्मीर में विकट परिस्थिति।
पाकिस्तान लिये आता।

भारत विवश हो रहा है-
अब वह सस्ती को अपनाता॥
सैनिक-दल को- "गोलीमारो"
का आदेश दिया जाता।

ध्वंस- अपहरण - हत्या का क्रम
हर हालत में होना बन्द।
भीषण अग्निकाण्ड हैं करते
रहते वहाँ विनाश प्रचण्ड।

देखो- कितने होटल और
मकान जलाये गये वहाँ।
उग्रवादियों द्वारा कितने-
जुल्म हैं ढाये गये वहाँ।

अब आतंकवादियों की
ली जाए तलाशी भली प्रकार।
बाज नहीं आते फिर भी
अपने मनसूबों से मक्कार।

उनके गिरफ्तार होने पर
पकड़े जाते हैं हथियार।
जो उनको सहयोग न देता।
उसको देते गोली मार।

काश्मीर के मुस्लिम भी
रहते आतंक की छाया में।
पाकिस्तानी उग्रवादियों के
जुल्मों की माया में।

उपायुक्त का पुत्र अपहरण
निर्भय वहाँ किया जाता।
"आतंकवादियों को छोड़ो।"-
यह सौदा वहाँ किया जाता।

निर्भय अपहृत कर लेते हैं।
निर्भय शर्तें रखते हैं।
डर औ भय है नहीं किसी का।
वे मनमानी करते हैं।

कुछ तो देखो। सोचो-समझो
कितना बिगड़ गया है हाल।
उग्रवादियों के द्वारा है
फैला कितना विस्तृत जाल।

निर्भय होकर हत्या करते।
निर्भय आग लगा देते।
ऊँची बिल्डिंग-ऊँचे भवनों
को हैं खाक बना देते।

भाई । इस पर रोक लगाओ।
हालत नहीं बिगाड़ो और।
जैसे हो- "काश्मीर बचाओ" ।
इसे न चीरो - फाड़ो और।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पुष्पनगर (आजमगढ़) का 18वाँ वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ दि0 26 सितम्बर से 29 सितम्बर 1990 तक मनाया गया। स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती पिथौरागढ़ एवं श्री महेन्द्रपाल जी कलकत्ता पधारे। स्थानीय जनता प्रभावित हुई।

नया आज

• यतीन्द्र कुमार विद्यारत्न (हरिद्वार)

आयेगा एक तूफान
और उड़ने लगेंगे पापों के पर्दे
तब सामने होगा शैतान।
किन्तु। यह स्वप्न कब साकार होगा,
जब उठ सकेगा वह पर्दा-
और शैतान् का संहार होगा।
आज युवाओं के कण्ठ पर-
खामोशी है,अनशन हड़ताल है।
यह कैसा समाज का बुरा हाल है।।
इसके साथ ही-
कहीं आरक्षण का फसाद है।
तो कहीं-
मन्दिर-मस्जिद का विवाद है।।
कहते हैं-
जब बाड़ ही खेत को खाने लगे तो-
कैसे बचेगा ये खेत।
क्योंकि अब-
रक्षक ही भक्षक हो गये
रिश्वत लेते हैं चपरासी मंत्री समेत।।
सुना है-
जब हद की सीमाएँ हो जाती हैं पार।
और बढ़ जाता है, सर्वत्र अत्याचार।।
तब-तब समस्त पापों के समापन हेतु
समाज में आता है एक उभार।
अतः हमें है यह पूर्ण विश्वास-
कि फिर उठेगी एक आवाज।
और इस अन्धेरी रात के बाद-

पुनः आयेगा एक नया प्रभात।।
नया युग,नया पल,नया कल,नया आज।।

आर्य महासम्मेलन,मवाना

दिनांक 4-9-90 को मध्यान्ह आर्य महा सम्मेलन मवाना के अंतर्गत आयोजित "धर्म रक्षा सम्मेलन" में अपने प्रवचन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ जनपद के मंत्री श्री प0 इन्द्रराज जी ने कहा कि जब तक जातिवाद, अस्पृश्यता तथा ऊँच-नीच की बुराईयों को हिन्दू समाज नहीं त्यागता, तब तक धर्मान्तरण को रोकना असंभव है। आज बदले हुए वातावरण में भी हरिजनों तथा बाल्मीकि भाईयों को मन्दिरों तथा हिन्दू उपासना स्थलों में प्रवेश नहीं करने दिया जाता। हरिजन तथा बाल्मीकि स्वयं को हिन्दू समझते हैं परन्तु आज भी सवर्ण हिन्दू उन्हें न्यायोचित सामाजिक तथा आध्यात्मिक अधिकार नहीं देना चाहता। विदेशी तथा राष्ट्रघाती शक्तियाँ तथा विधर्मियों द्वारा इस दुःखद स्थिति का अनुचित लाभ उठाकर धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अब हमें एक दूसरे की गलतियों को देखना छोड़कर अपने स्वयं के योगदान के बारे में सोचना चाहिए। तथा यथासंभव अपना तन-मन-धन देकर मन-वचन-कर्म से धर्म रक्षा के पुनीत कार्य में सहयोग करना चाहिए। धर्म रक्षा सम्मेलन में श्री सत्यपाल शास्त्री, श्री माधव सिंह जी डा0 रमेश आर्य श्री कैलाश चन्द्र जी आर्य, स्वामी चन्द्रदेव तथा अन्य विद्वानों और भजनोपदेशकों ने अपने प्रवचन तथा भजनोपदेश द्वारा धर्म रक्षा की भावना को उद्दीप्त किया। धर्म रक्षा सम्मेलन का संयोजन तथा संचालन जयन्त कुमार पाण्डेय ने किया।

- संवाददाता

आर्य समाज सांकली आदि पंचपुरी पौड़ी गढ़वाल (उ0प्र0)

दिनांक- 6-8-90 श्रावणी पर्व (रक्षाबन्धन) से दिनांक 14-8-90 श्री कृष्णजन्माष्टमी तक आर्यसमाज पंचपुरी द्वारा विद्यालयों व कालेजों में वेदप्रचार सप्ताह का कार्यक्रम चलाया गया जिसमें नैतिक शिक्षा, व्यसनमुक्ति, सदाचार आदि विषयों पर प्रभावशाली प्रवचन हुए, समाज के सभी पदाधिकारियों ने अपना पूर्ण योगदान दिया। ●

वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज वरदहा बाजार (बहराइच) में वेद प्रचार सप्ताह दि0 10 से 18 अगस्त तक क्षेत्रीय ग्रामों में सम्पन्न हुआ। ग्रामीण जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

● आर्यसमाज बगही (मिर्जापुर) में वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया।

ग्रामीणान्चल में वैदिक धर्म प्रचार का भव्य अयोजन।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा,नैनीताल, स्थानीय आर्यसमाज एवं ग्रामवासियों के सहयोग से हरिजन बहुलग्रामों मालधन करनपुर तथा गढ़ी नेगी में वैदिक धर्म प्रचार का दिनांक 7-9-90 से 13-9-90 तक भव्य आयोजन हुआ जिसमें शिरोमणि सन्यासी तथा उच्च कोटि के उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों ने भाग लिया। ●

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत

प्रधान- श्री स्वामी सत्यानन्द जी परिव्राजक
मंत्री- श्री सेवाराम जी आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री लखवीर सिंह जी राणा

आर्य उपप्रतिनिधि सभा,बस्ती

प्रधान - श्री लाल बिहारी शर्मा
मन्त्री - श्री ओमप्रकाश आर्य
कोषा0 - श्री जीवन प्रकाश आर्य

वैदिक ज्ञान मेला

उन्नाव। महिला आर्यसमाज उन्नाव के तत्वावधान में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर दिनांक- 1 से 4 नवम्बर 1990 तक वैदिक ज्ञान मेला का भव्य आयोजन आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में होगा। जिसमें देश के उच्चकोटि के महात्मा, विद्वान और भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

वार्षिकोत्सव

- आर्यसमाज लालगंज (रायबरेली) का वार्षिकोत्सव 6 सितम्बर से 8 सितम्बर 1990 तक समाज के प्रधान डा0शकुन्तचन्द गुप्त की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर लालगंज के प्रांगण में धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः काल यज्ञ, भजन एवं प्रवचन तथा सायंकाल भजनोपदेशों तथा व्याख्यानों के कार्यक्रम हुए जिनमें पर्याप्त संख्या में जनता ने कार्यक्रमों में भाग लेकर सफल बनाने में सहयोग दिया।

परख

• वीरेन्द्र सिंह चौहान (सीतापुर)

जग पर दुखमयता का न कलंक लगाओ,
सच्चे सुख की तुमको पहचान नही है।

§1§

धरती ने जीवन को आधार दिया है,
नभ ने उड़ने का मार्ग दिखाया तुमको।
आस्वाद तृप्ति का दिया नीर ने रस हो,
मारुत ने बनकर प्राण जिलाया तुमको।
अगणित उपकारों को उसके न भुलाओ,
जिस नित्य अग्नि का तुमको भान नहीं है।
जग पर दुखमयता का न कलंग लगाओ,
सच्चे सुख की तुमको पहचान नहीं है।।

§2§

जो श्रान्त पथिक के लिए रात्रि बन आता,
उस तम का आश्रय ले प्रकाश चलता है।
यों चक्र द्वन्द का नियति घुमाती रहती,
पीकर वियोग का रक्त योग पलता है।
सुख - दुख की आँधी में न स्वयम् उड़ जाओ,
कूटस्थ सुदृढ़ तुम इसमें जान नही है।
जग पर दुखमयता का न कलंक लगाओ,
सच्चे सुख की तुमको पहचान नही है।।

§3§

हिमखण्ड सदृश रवि ताप हीन लगता है,
नैराश्य गगन से घटा आग बरसाती।
सन्ताप किरन शीतल शशि की देती है,
धरती पग तल से बरबस खसती जाती।
मत जीवन का यह पार्श्व प्रिये अपनाओ,
इसमें निज का सच्चा उत्थान नही है।
जग पर दुखमयता का न कलंग लगाओ,
सच्चे सुख की तुमको पहचान नहीं है।।

§4§

क्या संघर्षों से अमर पथिक घबराता,
साहस का परिचय लेकर ये हट जाते।
अवरोध क्षणिक हर कठिनाई का होता,
लेकर अदम्य उत्साह वीर डट जाते।
दुर्बलता का भ्रम मन से दूर भगाओ,
सक्रिय जीवन में इसको स्थान नही है।
जग पर दुखमयता का न कलंक लगाओ,
सच्चे सुख की तुमको पहचान नहीं है॥

ॐ अस्मिता का अपमान

• डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी
श्यामगज बरेली

अस्मिता का चल रहा अपमान
चाल शकुनी सी बनाई,
प्रिय सुमेधा है सुलाई,
चम्पई छवि को सुखाकर,
बेल है विष की लगाई।
सौत घर में आ गई जब,
कुलवधू का शेष क्या स्थान?
है "दिवस-हिन्दी" मनाते,
दूर-उर कितने बनाते।
थोप कर उर्दू वृथा ही,
ये विभाजक कब लजाते?
सूत्र उलझाते स्वयं ही,
जो समझते प्रेम का सोपान।
आग हैं पहिले लगाते,
मेघ का अभिनय रचाते।
ग्रस्त है दुर्नीतियों से,
क्यों विदुर बन्दी बनाते?
खोखली कर नींव अपनी,
गा रहे हैं किस विजय के गान?
प्राण शव में फूंकते हैं,
मूल बिन तरू सूखते हैं।
जागरण के स्वर मुखर जो,
क्यों उन्हीं से ऊबते है?
साम्प्रदायिकता बढ़ा कर,
एकता का कर रहे अवसान।
भारती-द्रोही रहे जो,
त्याग दें यह देश पावन ।
कुर्सियों का मोह जिनको
पर उपेक्षित गेह - आँगन ।
देश को परदेश कर दें
क्या सफल नेतृत्व की पहचान?
भूमि, जन-संस्कृति, सुभाषा,
तत्व ये निर्माण करते ।
राष्ट्र है जिनसे समुन्नत,
विप्लवों को शीघ्र हरते ।
खोल कर निज दुर्ग अपना,
शत्रुदल का कर रहे सम्मान।

वेद गोष्ठी का ओयाजन

अजमेर में सम्पन्न होने वाले ऋषि मेला समारोह में दि0-26 से 29 अक्टूबर 1990 को अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ की ओर से परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित अनुसन्धान विभाग के तत्वावधान में एक वेद गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, जिसका विषय है-"अथर्ववेद समस्या और समाधान"।

इसमें विचार हेतु कुन्ताप सूक्त, गोहनो अतिथि, यज्ञविधि उच्छिष्ठ ब्रह्म, अथर्ववेद की भाषा, अथर्व वेद और जादू टोना, अथर्ववेद और मन्याख्या, वेदत्रयी और अथर्ववेद, अथर्ववेद के मन्त्रों में पाठ भेद, आदि विषयों पर विद्वानों के खोज पूर्ण लेख आमान्त्रित किए जाते हैं। सभी विद्वानों से अनुरोध है अपने शोध निबन्ध 15 अक्टूबर तक संयोजक को भेज दें। इनमें उत्कृष्ट निबन्धों का चयन कर परोपकारी में प्रकाशित किया जायगा।

- धर्मवीर संयोजक वेदगोष्ठी
परोपकारिणी सभा, अजमेर

हिन्दी बलिदान चाहती है

सहारनपुर-आर्यसमाज खालापार में "हिन्दी-दिवस" मनाया गया जिसमें नगर के अनेक साहित्यकारों, लेखकों, कवियों और पत्रकारों ने भाग लिया। नगर की प्रमुख साहित्यिक संस्था "प्रेरणा" द्वारा साहित्य चूड़ामणि पं0 श्यामलाल कौशिक का उनकी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में की गई सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया गया इस समारोह की अध्यक्षता कागज प्रौद्योगिकी सस्थान के डायरेक्टर डा0 मुकेश बंसल ने की।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो0 वी0वी0 गौतम ने कहा कि हिन्दी हमारी भारतमाता के माथे की बिन्दी है जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही राजनीतिज्ञों के व्यूह जाल में फंसी हुई है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र भाषा का प्रश्न हमारे स्वतन्त्रता संग्राम का एक भाग था इसीलिए पूरा राष्ट्रीय आन्दोलन हिन्दी के झण्डे के नीचे लड़ा गया। उन्होंने कहा कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने गुजराती होते हुए भी अपने ग्रन्थों की रचना हिन्दी में की- उनका विचार था कि हिन्दी ही सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सकती है। महात्मा गाँधी, लोकमान्य तिलक, पडित मदन मोहन मालवीय, कैप्टन केशवचन्द्र, सुभाषचन्द्र-बोस जैसे स्वतन्त्रता सेनानियों ने अंग्रेजी का मोह त्याग कर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर बल दिया। श्री गौतम ने कहा कि आजादी के बाद भी राष्ट्रभाषा हिन्दी परित्यक्ता नारी की तरह वनवासिनी बनी हुइ है, उन्होंने कहा कि हिन्दी को सरकारी बैसाखियों पर ज्यादा दिन तक नहीं चलाया जा सकता, इसके लिए हिन्दी प्रेमियों को आगे आकर इसमें प्रचार व प्रसार में लगाना पडेगा। सभा को पं0 श्यामलाल, डा0 सीताराम-त्यागी, धर्मपाल दत्त, आदि ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर एक सरस काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। ■

आर्यसमाज बिस्कोहर (सिद्धार्थनगर)

प्रधान - श्री विद्याविशारद आर्य
मन्त्री - श्री चन्द्रप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री सत्यप्रकाश आर्य

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू / एन०पी० ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
कार्तिक कृष्ण-३ संवत् २०४७ वि०
दिनांक : ७ अक्तूबर १९९०
दूरभाष २४५९९३

सेवा में...
12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
(हरिद्वार)

वार्षिक चित्र भेजने की तिथि बढ़ी

१- प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपने अपने वार्षिक चित्र भरकर 15 अक्टूबर तक अवश्य सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें- बाद में आये चित्रों को स्वीकृत करने मे कठिनाई होगी।

2- जिला सभायें, आर्यवीर दल, आर्यकुमार सभा अपनी रिपोर्ट भी शीघ्र ही भेजें, सभा की रिपोर्ट छपने जा रही है।

मनमोहन तिवारी, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०।

आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से आ०स० से निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने "भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा" के नाम से एक अवैधानिक संगठन खोल कर आर्यजनता मे भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इस तथाकथित अवैधानिक संगठन को अपना किसी प्रकार का कोई सहयोग न दें।

- सभामन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(राज सं २२४१/५७) कार्तिक शुक्ल ३ रविवार सवत २०४७वि दिनाक २१ अक्तूबर १९९० (घोषणा पत्र स ७/२७-२ ७५



हे शाश्वत साध !

मह नो अद्य बोधय,
 उषो राये दिवित्मती।
यथा चिन्नो अबोधय ,
 सत्यं श्रवसि वाय्य सुजाते अश्व-
 सूनृते ।।

-- ऋग्वेद

गहन अमा की निशा के बाद जनमानस के हृदय का अन्धकार दूर हो, वे उठकर उषा की किरणों का स्वागत करें और अपनी वाणी तथा लेखनी से (अश्व-सूनृते) शाश्वत सत्य का ही प्रचार करें।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू ३०/
एक प्रति	१रू मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वॉं वर्ष
अंक - ४१

हमारी कोई टिप्पणी नहीं है -

पढ़िए, विचारिए और अन्तरात्मा पर हाथ रखकर निर्णय लीजिए, शाश्वत सत्य क्या है...?

(१) **अफ़नत तकरहुन्ना सहत्तामकूनो मोमनीन --**

सूरये यूननस आयत 99

ऐ मोहम्मद! तू जबर करता रह लोगों पर जब तक कि वे मुसल्मान न हो जावें।

(२ **क्कातलुल कुफ्फारबान बुन अन्नालहुम युवतव वैहि--**

सूरये अनफ़ाल यनोब

ऐ मुसल्मानो! जंग करना काफिरों (बुतपरस्तों) से वाजिब है चाहे वे इसका प्रारम्भ न करें ।

(३ **ला तत्तरकेज़ुल मोमेनूनल्काफेरीन औलिया मिन बुनिल मोमनीना--**

सूरत उमरान आयत - 25

मुसल्मानों को चाहिए काफिरों को कभी दोस्त न बनावें सिवाय मुसल्मानों के।

(४) **या ए योहल्ल जीना आमनू ला तत्तरकेज़ुल काफ़रीना औलिया आमिन बुनिल मामनीन --**

सूरत निसाँ आयत

ऐ मुसल्मानो! जो ईमान लाए हो, मत इख्तियार करो काफ़िरो को दोस्त, सिवायें मुसल्मानों के।

(५) **क्कातेलुहुम इजा लातकूना फ़ितन तुन व यकूनल्ली जीना कुल्लहू लिल्लाहे --**

सूरत अनफ़ाल

ऐ मुसल्मानो! ओर लडो उनसे (काफ़िरों से)लडते रहो यहाँ तक कि न रहे फ़ितना यानी गलबा कुफ्फार का और होवे दीन तमाम, वास्ते अल्लाह के।

(६) **प्रिय मा कृणु देवेषु प्रिय राजसु मा कृणु ।**
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रय उतार्ये ।।

-- अथर्ववेद

हे सबका कल्याण करने वाले परमेश्वर! मुझे सभी पुरुषों, विशेषकर ज्ञानी पुरुषो के बीच प्रिय बना दें। शासकों के बीच प्रिय बना दें। सबके देखते हुओ के बीच चाहे वे आर्य हों अथवा अनार्य, सभी के बीच मुझे सबका प्रिय बना दे। सब मुझे प्रिय लगें, सबको मैं प्रिय लगूँ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा अरुण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

लखनऊ - कार्तिक शुक्ल-३ संवत २०४७ वि.
दिनाक: २१ अक्तूबर १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

मन्दिर बनाम मस्जिद

मन्दिर और मस्जिद दोनों ईश्वरीय उपासना के स्थल माने जाते हैं। जिसकी उपासना की जाती है वह एक ही है और दोनों स्थलों पर है किन्तु उपासकों में मतभेद है और यह मतभेद इस सीमा तक बढ़ गया है कि उपास्य और उपासना तो दूर रही उपासक ही एक दूसरे के खून के प्यासे होते जा रहे हैं। अपने नियम के अनुसार वह भी मज़बूर है प्रकट होकर मन्दिर मस्जिद के झगड़े मिटा नहीं सकता। यह झगड़ा मिटाना हमीं को है चाहे खून बहाकर मिटाएं अथवा मिल बैठकर। अगर दोनों पक्ष, न अपने को हिन्दू समझकर, न अपने को मुसलमान समझकर, केवल इन्सान समझकर, सत्य को स्वीकार कर लें तो झगड़ा एक मिनट में शान्त हो सकता है। वेद कहता है-- **"अपानुदो जनममित्रयन्तम्"** शत्रुता रखने वालों से वह बहुत दूर रहता है। **"अमृतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः"**। जो सत्यपथ को स्वीकार नहीं करते वे उसकी दृष्टि में दुष्कृत (दुष्ट) हैं।

क्या इबादत का वह तरीक़ा स्वीकार्य नहीं हो सकता जहाँ न द्वेष है न शत्रुता। क्या सब मिलकर उस परमसुख को प्राप्त नहीं कर सकते जो इन्सानी जीवन का परम उद्देश्य है और जिसके लिए हमने यह मानवचोला धारण किया हुआ है। सत्य यह है कि मोहम्मद साहब महान पुरुष थे उन्होंने तत्कालीन अरब समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर किया था किन्तु ईश्वर और धर्म संबंधी मान्यताओं के मामले में उनके विचार सत्य की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। यही हाल ईसाइयत और हिन्दुओं का है। इनमें भी महान पुरुष हुए हैं पर यह आवश्यक नही है कि हर महान पुरुष हर बात में दक्षता रखता हो। भूल यहीं से शुरु हो जाती है कि हम जिसमें आस्था रखते हैं उसके गुणों का मूल्यांकन करते समय उसे सर्वगुणसम्पन्न सर्वसिद्ध-सम्पन्न सर्वांगसत्य के रूप में समझ लेते हैं। एक वैज्ञानिक रसायनशास्त्र का विशेषज्ञ हो सकता है पर जरुरी नही कि वह साहित्यिक क्षेत्र का भी विशेषज्ञ हो। आज की राजनीति में ऐसा ही कुछ देखने में आ रहा है। प्रदेश का मुख्यमंत्री हो या देश का प्रधानमंत्री, अच्छा प्रशासक हो सकता है वक्ता भी हो सकता है लेकिन धर्म के मूल तत्वों का जानकार न होने के कारण धार्मिक मामलों पर व्यवस्था देने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है। जितना धन और शक्ति विघटनकारी तत्वों को दबाने में अपव्यय की जा रही है यदि उसका आधा भी वेद के शाश्वत सत्यों के प्रचार में लगाया जाता तो आज यह नौबत ही नहीं आती।

मानव का धर्म एक है, सारी पृथ्वी उसका पूजास्थल है। जहाँ मन्दिर है वहीं मस्जिद है जो मस्जिद है वहीं मन्दिर है। आस्था धरती के स्थान-विशेष से मत जोड़ो। जड़पूजक हो जाओगे। आस्था उससे जोड़ो जो घट-घट में रम रहा है जो मन्दिर में भी है मस्जिद में भी है और मन्दिर मस्जिद से बाहर भी है। आर्यसमाज जड़पूजा का विरोधी है। **वेद कहता है- "न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः"**। उस निराकार की प्रतिमा हो ही नहीं सकती। जो लोग मन्दिर या मस्जिद के लिए अपनी क़ुर्बानी देकर बहिश्त या स्वर्ग जाने का स्वप्न देख रहे हैं उन्हें हम बताना चाहते हैं यह क़ुर्बानी नहीं प्राणहत्या है, घोर पाप है, घोर असत्य है। इस्लाम जो अपने को सबसे बड़ा जड़पूजा-विरोधी बताता है वह स्वयं क़ाबे में जाकर एक विशेष प्रकार के रखे काले पत्थर को चूमना पुण्य मानता है। निर्जीव शरीर को क़ब्रों में रखकर उनकी पूजा करता है। इस प्रकार दोनों ही मूर्तिपूजक हैं और वैदिक मान्यताओं के अनुसार इस अज्ञान में हैं कि वे ईश्वर की आराधना कर रहे हैं। इसी प्रकार जहाँ आज मन्दिर है, या मन्दिर बनाने का प्रयास हो रहा है वह राम का स्मारक हो सकता है। उसमें रखी हुई मूर्ति उसकी प्रतिकृति हो सकती है लेकिन वह उसमें निश्चित रूप से नहीं है। वह दाशरथिः राम आज कहाँ किस रूप में है- इसे सर्वशक्तिमान् परमात्मा के सिवाय और कोई नहीं जानता। कितना आश्चर्य है एक जड़वस्तु के ध्वन्स अथवा निर्माण को लेकर चेतनप्राणियों को दुख दिया जा रहा है। जो मानव शरीर बड़े भाग्य से प्राणियों को मिलता है उसे हिन्सात्मक तरीके से नष्ट कर दिया जाता है, मानो जड़ के सम्मुख चेतन का कोई मूल्य ही नहीं है।

ऐतिहासिक सच्चाई यह है कि [illegible] लाख वर्ष पूर्व अयोध्या में राम का जन्म हुआ था। वे आर्य थे, आर्यमर्यादाओं की उन्होंने रक्षा की थी इसलिए उनके कृतित्व और व्यक्तित्व को बड़ी श्रद्धा से स्मरण किया जाता है। बाबर मुस्लिम शासनकाल की देन है, वह विदेशी (समरकन्द) निवासी था, आक्रामक था, इस्लाम फैलाने के ज़ुनून में उसने मूर्तियों को तोड़कर मन्दिर को मस्जिद का रूप दे दिया। "बुतशिक़न" (मूर्तियों को तोड़ना) इस्लाम में ज़ायज़ माना जाता है। सोमनाथ की मूर्ति को तोड़ते हुये गज़नी के सुल्तान महमूद ने भी यही कहा था। यह सब मुस्लिम शासक थे। "क़ुर आन" से प्रेरणा लेकर मज़हब के झूठे ज़ुनून में आकर उन्होंने ऐसा किया। दोष उनका नहीं उस प्रेरणा का है जो उन्हें "क़ुरआन" से मिली थी।

आज परिस्थितियाँ दूसरी हैं। ऋषि दयानन्द की कृपा से वेदों के ज्ञान के पुनः प्राकट्य ने धर्म और ईश्वर के संबंध में फैली हुई सभी भ्रान्तियों का निराकरण कर दिया है। इसलिये धर्म के नाम पर किसी व्यक्ति की हत्या करना महान पाप है। ऐसे पाप करने वालों को ईश्वर कभी क्षमा नहीं कर सकता है। □

भारत का हिस्सा "कश्मीर"

• चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
एडवोकेट, कानपुर

है कश्मीर बिगड़ता जाता।
दिन-दिन बिगड़ रहा है हाल।
है लिबरेशन फ्रण्ट संस्था-
विपदा नित्य रही वह डाल।

प्रतिबन्धित संगठन वहाँ पर
बड़ी गड़बड़ी करवाते।
लिबरेशन फ्रण्ट के सदस्य।
अपहरण व हत्या कर जाते।

दिन पर दिन बढ़ते जाते हैं
उग्रवाद के अत्याचार ।
"जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रण्ट"
कर रहा कैसे तीव्र प्रहार।

प्रतिबन्धित संगठन हो गया।
फिर भी हैं हौसले बुलन्द।
बदमाशी बढ़ती ही जाती।
नहीं हुई उसकी गतिमन्द।

ये अलगाव वाद के प्रेमी।
मेल-जोल है नहीं पसन्द।
"काला दिवस" मनाते हैं ये।
इनकी बुद्धि हो गई बन्द।

शिमला - ताशकन्द समझौते
इनको तनिक नहीं भाते।
ये पागल - उन समझौतों में
आग लगा कर सुख पाते।

पर सरकार हो गई है अब
इन बदमाशों से हुशियार।
प्रतिबन्धित कर दिया संगठन-
और कर रही तीव्र प्रहार।

सख्ती करने से ही तो
बच पायेगा अपना कश्मीर।
बतला दो सारी दुनिया को-
भारत का हिस्सा कश्मीर ।

मुक्तक

• लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"
मैनपुरी

हम कहीं ठहरें नहीं, चलते चलें।
राह के दीपक बनें, जलते चलें।
भोर की अगवानियों की आरती में-
रोशनी हँसते हुए, जलते चलें।

(2)

जिन्दगी का अर्थ है, चलते रहो चलते रहो
दीप-बाती कह रहे-जलते रहो, जलते रहो
फूलती-फलती हुई तरु-डालियाँ कहती यहीं,
बीज बन कर धूल में, गलते-गलते रहो।

(3)

एक क्षण दे दो, किसी को मुस्कुरा दो।
इस तरह से आग का पीना सिखा दो।
रास्ता मुस्कान से सूना न हो-
इस तरह से जिन्दगी जीना सिखा दो।

(4)

अनय और हम, आमने-सामने हैं।
समय और हम, आमने-सामने हैं।
सृजन-ध्वन्स, कुरुक्षेत्र में आ खड़े हैं।
प्रलय और हम, आमने-सामने हैं-

आर्यसमाज रामपुर का उत्सव स्थगित

आर्यसमाज रामपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक 22 से 24 अक्टूबर तक होने वाला था, वह स्थगित किया जाता है। अतः आमंत्रित महानुभाव पधारने का कष्ट न करें।

आर्यसमाज करौंदा बघौड़ा (मीरजापुर)
प्रधान- श्री डा0 गुलाब सिंह
मंत्री- आर्या अनुराधा सिंह
कोषाध्यक्ष-श्री ज्ञानी सिंह

अल्लोपनिषद् एक समस्या

● आचार्य विश्वानन्द शास्त्री
बदायूँ

उपनिषद् एवं ब्राह्मण ग्रन्थ वस्तुतः वेदपरक तथा वैदिक आख्यान हैं। इनमें स्वतः प्रमाण वेदानुकूल अंश ही मान्य हैं। मुस्लिम शासन काल में किसी ने "अल्लोपनिषद्" की रचना करके मुहम्मदी सम्प्रदाय मत को उपनिषदों से जोड़ दिया विद्वान लेखक ने इस भ्रान्तधारणा का युक्तिपूर्वक खण्डन किया है--

— सम्पादक

परोपकारी के जुलाई 1990 के अंक में डा0 भूप सिंह जी का "अल्लोपनिषद्" का शुद्ध पाठ एक समस्या" शीर्षक से लेख प्रकाशित हुआ है इस शीर्षक को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है मानो "अल्लोपनिषद्" सिद्धान्त प्रतिपादन की दृष्टि से कोई महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसका शुद्ध पाठ गवेषणा का विषय ०। मैं समझता हूँ यहाँ यह उपमा सुघटित होगी जैसे कई प्रकार के उपस्थित गोबर में शुद्ध गोबर कौन सा है यह खोज करना। इसके निष्कर्ष तक पहुँचने के लिये लेखक का विशेष प्रयास है। मेरे विचार से इसका शुद्ध पाठ समस्या नहीं है, प्रत्युत "अल्लोपनिषद्" का होना या उसकी रचना ही वैदिक वाङ्मय के लिये एक समस्या और उलझन है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ-प्रकाश के अंत में इस उपनिषद की अथर्ववेद मूलकता का खण्डन किया है कि (भावार्थ) "बीस काण्ड युक्त मन्त्र संहिता वाले अथर्ववेद में या इसके गोपथ ब्राह्मण में या इसकी अन्य किसी शाखा में मोहम्मदी मत प्रवर्तक मोहम्मद या उनके मत का नामोनिशान भी नहीं है। और यह जो अल्लोपनिषद् है वह स्यात् अकबर कालीन किसी कवि की रचना है जो अरबी और संस्कृत का थोड़ा बहुत ज्ञाता रहा होगा।

आगे लेखक का यह अनुमान लगाना कि ज्ञात सम्प्रदाय के मान्य अल्लोपनिषद और सत्यार्थ प्रकाश के पाठ में दिये भेद का कारण यह लगता है कि स्वामी जी के समय में यह उपनिषद् उपलब्ध नहीं रहा होगा।

इस विषय में यह कहना पर्याप्त होगा कि महर्षि ने उसी बात का खण्डन किया जिसका उस समय के समाज या साहित्य में प्रचार हो रहा था तथा लेखबद्ध खण्डन भी लेख में प्राप्त सिद्धान्त तथा पुस्तक का किया था तत्तत् संबंधी शंका करें उसका समाधान किया था। 108 प्रकाशित उपनिषदों के अंतर्गत न होने पर भी "अल्लोपनिषद्" के नाम से एक छोटा सा ग्रन्थ श्री कृष्ण मोहन शर्मा "कात्तान्तिक पुस्तकालय माडवी बम्बई से सन् 1874 में प्रकाशित हुआ था। निश्चित रूप से प्रतीत होता है कि ऋषि दयानन्द के जीवन काल में यह या अन्य (प्रति) किसी न किसी रूप में छपी हुई थी। जिसका उद्धरण सत्यार्थ प्रकाश में दिया गया है। गुरुकुल काँगड़ी के पुस्तकालय में प्राप्त श्री कृष्ण मोहन शर्मा के प्रकाशित "अल्लोपनिषद्" और महर्षि के उद्धरण में कुछ अंतर है दोनों के पाठों की तुलना कीजिये।

श्री कृष्ण मोहन शर्मा के पाठ में (श्री गणेशाय नमः। हरिः ओ३म् वरुणनु दिव्यानुदत्तं इल्लल्ले मित्रा ही) इतना "अस्मांल्ला से पूर्व अधिक जुड़ा हुआ है तथा स0प्र0 में "हत्या के स्थान पर "दयामि" है। शेष प्रथम श्लोक एक सा है(2) द्वितीय श्लोक में प्रारम्भ में शर्मा के पाठ में "हूँ" अधिक है शेष एक सा है ।।2।। तीसरा व शेष पाठ प्रायः एक सा है। हाँ, शर्मा जी के पाठ में संस्कृत कुछ अशुद्ध छपी है, पर स्वामी जी के उद्धरण में संस्कृत प्रायः शुद्ध है। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी को अन्य परिष्कृत पाठ प्रतिलिपि प्राप्त हुई होगी अथवा भ्रष्ट संस्कृत पाठ को स्वामी जी ने स्वयं शुद्ध कर छापा है।

श्री कृष्ण मोहन शर्मा के इस पाठ के अंत में "इत्याथर्वण शाखायां लक्ष्म्युपनिषद् सम्पूर्णम्" छापा है। इस शीर्षक में "अल्लोपनिषद्" और अंत में "लक्ष्मी-उपनिषद्" लिखा है। इससे दो बातों का आभास तो मिलता ही है। एक तो रचयिता ने हिन्दू समाज में उपनिषद की अत्यधिक प्रतिष्ठा अच्छी तरह सँभाल ली थी। दूसरे लक्ष्मी के उपासक जिनका शास्त्र से कोई सरोकार नहीं, बस इतना प्रयोजन है कि किसी भी सूक्त, उपनिषद् या संस्कृत के श्लोक पाठ से लक्ष्मी का आवाहन होना चाहिये। साथ ही हमारा यह निश्चित चिन्तन है कि किसी चालाक आदमी ने भोले भाले "आँख के अंधे और गांठ के पूरे" हिन्दुओं को इस्लाम के जाल में फँसाने के लिये अरबों के कुछ गिने चुने "अल्ला, इल्लल्ला, रसूल, मुहम्मदरकबरस्यल्ले"- बस ये कतिपय शब्दों के शरीर ढांचे पर "वरुणो दिव्यानिधत्ते, राजा पुनर्ददुः, हरि ओ३म आथर्वणी शाखा असुर संहारिणी हूँ।" आदि संस्कृत शब्दावली द्वारा ग्रन्थ को रेशमी वस्त्र पहनाकर प्रस्तुत किया है।

उस काल में टोने टुटके, मणिबंध, ताबीज, ऋद्धि सिद्धि आदि प्राप्त करने के लिये अथर्ववेद इन चीजों का आकार है ऐसा प्रचारित हो चुका था। अतः इस अल्लोपनिषद् को अथर्ववेद की शाखा के रूप में प्रचारित करना, जनता को फाँसना सरलतया संभव था। पर इस कपोलकल्पित पुस्तक को वैदिक साहित्य का अंग बताना अत्यन्त गर्हित कार्य था।

महान् आचर्श्य तो तब होता है जबकि संस्कृत के महान पण्डितों ने भी इस जालसाजी पर कोई विचार न कर संस्कृत कोशों में इसे "अल्लोपनिषद्" नाम से संदर्भित कर दिया। उदाहरणतः "वाचस्पत्य- वृहदभिधान" नामक सुप्रसिद्ध संस्कृत कोष के सम्पादक पं0 ताराचन्द तर्क वाचस्पति तथा "शब्दकल्पद्रुम" कोष के निर्माता राजा राधाकांत देव ने भी "अल्लोपनिषद्" नाम से संकलित उक्त वचनों को अथर्ववेद के नाम से अपने कोष में लिखने की अक्षम्य भूल की है।

"वाचस्पत्य वृहदभिधान " के प्रथम खण्ड में "अल्ला" शब्द पर निम्न व्याख्या दी है :-

Those who have studied the Hindu serupturs known that among the 108 up nishadas there was one called the Allopanishad.

अल्ला स्त्री अल्यते अति अल क्विप अले भूषये लाति सर्वान अन्ति गृह्णाति मातरि। अलतीति अल् पर्याप्तः सन् लाति सर्वान् याति, गृह्णात्, जानाति वा।

2- सर्वज्ञायां सर्वभक्षिकायां परमात्मदेवतायां सा च अथर्ववेद अल्लाल्लेत्यादि सूक्ते प्रसिद्धा।

यहाँ पर तर्क वाचस्पति ने अल्ला के माता और परमात्मा अर्थ देकर अथर्ववेद सूक्त में इसका होकर लिख मारा।

इनका तर्क वाचस्पतित्व उसकी विवेचना में सुट्टल हो गया।

संस्कृत वाङ्मय के कुछ कुछ भी काम नहीं आया, प्रत्युत उसने और भी रेढ़ मार दी।

ऐसे ही राजा राधाकान्त देव जी ने भी (शब्दकल्प-द्रुम) के प्रथम खण्ड में लिखा है कि "अल्ला" परमेश्वरः सूति नाम्ना यवना उपासते। अल्ला इस नाम से यवनलोग उपासना करते हैं। चलो, यहाँ तक तो अधिक बुरा नहीं, पर आगे आप भी लिखते हैं। कि "अल्लोपनिषद" में "इल्लाल्लां" इल्ले मित्रा वरुणातिरूध " इत्यादि "इत्याथर्वणसूक्तम्"।

अफसोस, इन आँख वालों ने अथर्ववेद में पाठ को देखने की आवश्यकता ही नहीं समझी।

महर्षि दयानन्द की तो इस युग के लिये यह एक अद्भुत देन थी कि उन्होंने समझाया, नाम से तर्क वाचस्पति बना रहना व्यर्थ है, बुद्धि की आँख से तर्क का संबंध जोड़कर शास्त्रों को देखकर विश्वास करो।

इतने पर भी दकियानूसी या रूढ़िवादी लोगों ने आँख न खोली और शास्त्रों पर मढ़े कलंकों को अलंकार मान स्वीकर करते रहे, और किसे कहें- इस युग के नेता पूज्य महात्मा गाँधी तक इस अल्लोपनिषद् के विषय में अपने 11 मई 1947 के अंग्रेजी (हरिजन) पत्र में लिखते हैं- "

अर्थात् जिन्होंने हिन्दू धर्म ग्रन्थों का अध्ययन किया है उनको ज्ञात है एक सौ आठ उपनिषदों में एक अल्लोपनिषद हैं।

अब बताइये, किसको कहें? जब वाराणसी के विश्वनाथ मन्दिर से ही "अल्ला ईश्वर तेरे नाम की ध्वनि आने लगे तो इस भोले हिन्दू धर्म की नैया का खिवैया या कर्णधार कहाँ से आयेगा? क्या किसी मुसलमान लीडर के मुख से किसी मस्जिद के प्रांगण से भी "रघुपति राघव राजाराम, पतितपावन सीताराम।" का कीर्तन कभी सुनाई पड़ा? ऐसी भोली हिन्दू कौम का रक्षक तो अब केवल परमात्मा या ऋषि दयानन्द का आर्यसमाज ही हो सकता है। अन्यथा यह तो विनाश कगार पर खड़ी हुई है।

पाठक देखें, सबसे पहले निर्णय सागर प्रेस बम्बई से 1913 में "ईशाद्यष्टोत्तर शतोपनिषद्" नाम से 108 उपनिषदों का प्रकाशन हुआ था, इसमें कहीं अल्लोपनिषद् नहीं है।

यहाँ पर प्रसंगवश यह भी कह दें कि पं० जयचन्द विद्यालंकार ने अपने एक पत्र में यह भी लिखा था कि चित्तौड़ में राणा कुम्भा के विजय स्तम्भ पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिमूर्ति के साथ अरबी में "अल्ला" भी खुदा हुआ है, इत्यादि।"

क्रमशः

"न रहे बांस न बजे बांसुरी"

• डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
दिल्ली

भारत का संविधान बनाने वाले सब राजनीति के पण्डित थे। उनके सामने युरोप का इतिहास था जहां सामाजिक-विकास होते-होते मनुष्य डेमाक्रेसी तक पहुँचा था। वे यहीं तक पहुँच पाये थे प्रत्येक मानव को वे सब अधिकार प्राप्त होने चाहिए जो देश के किसी भी मानव को प्राप्त हैं। मनुष्य-मनुष्य में जो भेद है, कोई ऊँचा कोई नीचा- इस भेद को मिटाने का उनके पास एक ही तरीका था- और वह तरीका सिर्फ यह था कि विधान में लिख दें कि सब मनुष्य एक-समान हैं, कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। परन्तु सामाजिक-रचना संविधान बना देने या उसे लिख देने से नहीं बनती। सामाजिक-रचना परिश्रम पूर्वक बनाने से बनती है, बिगाड़ने से बिगड़ती है। संविधान में तो 1947 में लिखा गया था कि संविधान की दृष्टि में सब एक-समान हैं, परन्तु वह कानून की पुस्तकों में लिखा ही रहा, क्रियात्मक रूप में मनुष्य-मनुष्य में भेद बना ही रहा। यौरुप में गोरे-कालों के भेद को कोई न मिटा सका, भारत में छूत-अछूत के भेद को कोई न मिटा सका। यह भेद जन्म के आधार पर था जिसे अन्य देशों में "रेस" के नाम से और भारत में "जाति" के नाम से पुकारा जाता है। अन्य देशों का काले-गोरों का भेद जन्म के आधार पर टिका है, भारत में ऊँच-नीच जाति का भेद भी जन्म के आधार पर टिका है। इस भेद-भाव को दो-तीन तरीकों से मिटाया जा सकता है- या यह भेद-भाव राजनैतिक-क्रान्ति से मिट सकता है, या सामाजिक-क्रान्ति से मिट सकता है। उक्त दोनों क्रांतियों से हल सम्भव नहीं है, आर्यसमाज के पास ही इस समस्या का हल है। सामाजिक विषमता को मिटाने के लिये, तीन हल हैं जो निम्न प्रकार कहे जा सकते हैं।

{क} सामाजिक क्रान्ति-

सामाजिक क्रान्ति का अर्थ है कि समाज के नेता अपने व्याख्यानों, उपदेशों या क्रियात्मक-जीवन से ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दें जिससे समाज के हर वर्ग के लोग एक-दूसरे को भाई के समान समझने लगें और सबसे समान-भाव से व्यवहार करें। इस प्रकार की सामाजिक-क्रांति में कुछ बातों में भेदभाव के रहते हुए भी ग्लानि का भाव या अधिकार-हीनता का भाव नहीं रहता। उदाहरणार्थ, 1947 से पूर्व हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई की तरह रहते थे, यद्यपि उनमें अनेक बातों में भेद-भाव था। ऐसी क्रांति में उबाल तभी आता है जब कोई स्वार्थी- वर्ग अधिकार-हीनों को भड़काने के लिये उठ खड़ा होता है। अगर कोई न भड़काये तो समाज के सब लोग शान्ति से एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। मनुष्य का स्वभाव शान्ति पूर्वक जीवन बिताना है। फिर भी सामाजिक-क्रान्ति से मानव-मानव में अन्तर्निहित भेद-भाव के उबल पड़ने का खतरा बना ही रहता है जैसा भारत-विभाजन के समय स्पष्ट हुआ। तभी गीता में कहा है- "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं-गुण कर्म विभागसः।

{ख} राजनैतिक क्रान्ति-

राजनैतिक क्रांति का अर्थ है कि राज्य ऐसे कानून बना दे जिनके द्वारा उच्च-नीच का भेद-भाव ही न रहे। यह रास्ता मण्डल कमीशन का है। इस रास्ते को हमारे प्रधान-मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपनाया है। इस रास्ते का जो परिणाम हो सकता है वह हमारे सामने रैलियों तथा उपद्रवों के रूप में है। कानून के दो काम हो सकते हैं। या तो जो लोग ऊँच-नीच को बढ़ावा देते हैं उन्हें "सजा" दे ताकि मानव-मानव में भेद-भाव न रहे, या जिन लोगों को समाज निचले दर्जे में रखता है उन्हें विशेष "रियायतें" देकर उन्हें उच्च जाति के सम-कक्ष बना दे। इसी को "रिजर्वेशन" या "संरक्षण" की नीति कहते हैं।

संरक्षण की नीति का क्या परिणाम है? संरक्षण का अर्थ है- "रियायत" "रियायत" का अर्थ है। जो जिस काम के योग्य नहीं है उसे उस काम के लिये योग्य समझकर रियायत के तौर पर वह काम दे देना। जिस रास्ते पर चलने से "रियायत" मिले, अयोग्यता के होते हुए भी योग्यता का प्रमाण-पत्र मिले, उसे सहज मिलने वाले मार्ग को कौन छोड़ेगा? रिजर्वेशन का परिणाम यह होगा कि प्रत्येक, व्यक्ति "रिजर्वेशन" चाहेगा, अगर दलित या "भंगी या चमार" कहे जाने वाले व्यक्ति को नौकरी में रियायत मिलेगी तो सभी लोग अपने को "भंगी" या "चमार" कहलाना पसन्द करेंगे। जैसे आज उच्च जाति का होना एक गौरव की बात है, वैसे मण्डल-कमीशन के मार्ग पर चलने पर अपने को नीच-जाति का कहलाना फैशन हो जायेगा। यह गौरव की बात हो जायेगी और यह बात सदा के लिये पक्की हो जायेगी।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि जन्म की जाति पर रियायत दी जाने के रास्ते पर चलने से देश का विभाजन बढ़ता चला जायेगा। आज अछूत या दलित को रियायत दी जाये, कल जाटों को, किसानों को, अहीरों को सभी को रियायतें देने का सिलसिला जारी हो जायेगा। देखा जाये, तो सभी दलित, दलित ही रह जायेंगे, उच्च वर्ग कहलाने वाला कोई नहीं रहेगा, "उच्च-वर्ग" का अर्थ ही बदल जायेगा। इसका अर्थ "नीच-वर्ग" हो जायेगा। देश में 3742 दलित कही जाने वाली जन्मजात जातियां हैं, इन सब को रियायतें देकर कौन सम्भाल सकेगा। तो फिर इस धन्धे से कैसे निपटा जाये। इस धन्धे से निबटने का मार्ग अब कुछ-कुछ रिजर्वेशन वादियों को सूझने भी लगा है। एक तरफ तो वे खम ठोक्कर कहते हैं कि आरक्षण की नीति सोलहों आना चल कर रहेगी, दूसरी तरफ इस नीति के विरुद्ध इतना हो- हल्ला, रैलियां और मार-धाड़ देखकर वे पलटने लगे हैं, और कहने लगे हैं कि सैनिक सेवाओं में, शिक्षा के क्षेत्र में, भिन्न-भिन्न राज्यों में यह नीति चलना आवश्यक नहीं है। आवश्यक हो, या न हो, इतना तो स्पष्ट है कि इस नीति से जन्म की जात-पांत की जड़ें मजबूत हो जायेंगी और ज्यों-ज्यों दवा करेंगे, त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता जायेगा।

हम पहले लिख आये हैं कि जन्म-जात भेद-भाव को मिटाने का इलाज रियायतें या रिजर्वेशन देने से न होगा, इस से सिर्फ जात-पांत की जड़ें पक्की होकर पाताल तक पहुँच जायेंगी, इसका इलाज सिर्फ आर्यसमाज के पास है और किसी के पास नहीं है। आर्यसमाज का कहना है कि सारे झगड़े की जड़ जन्म की जात-पांत है। कानून से इसे पक्का करने के स्थान पर इसे ही मिटा दो, न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।

{ग} आर्यसमाज का दृष्टिकोण-

आर्यसमाज का दृष्टिकोण यह है कि न कोई जन्म से ब्राह्मण होता है, न जन्म से शूद्र या दलित होता है। यह एक छोटी सी समझदारी की बात है। ऐसा लगता है कि पहले भी कभी इस देश में जन्म से उच्च-नीच की समस्या उठी थी और उस समय यहां के विद्वत् समाज ने इसका हल करते हुए कहा था- "जन्मना-जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्चते"- जन्म से कोई ऊँचा नहीं, जन्म से कोई नीचा नहीं। पैदा तो सब शूद्र ही होते हैं, कर्म से, अपनी योग्यता से कोई ब्राह्मण हो जाता है- "ब्रह्म जानाति इति ब्राह्मण"। उस समय आज की तरह उपद्रव हुए होंगे, और विद्वानों ने उस समय जन्म की जात-पांत को मिटा दिया होगा। समाज में समय-समय पर इस प्रकार की विसंगतियों का उत्पन्न होना तथा उनका विद्वानों द्वारा समझा-बुझा कर मिटा देना स्वाभाविक है। क्या आज भी, उन्नत देशों में भी इस प्रकार की समस्याएं नहीं उत्पन्न होतीं। होती हैं, मिटती भी हैं। भारत की कठिनाई यह है कि इस देश की वर्तमान स्थिति में यह सामान्यतः राजनीति के साथ जुड़ा है। और क्योंकि इस देश में दलित वर्ग के लोगों की संख्या अधिक हो गई है। इसलिए चुनाव में उनका वोट लेने के लिये आरक्षण नीति की रिश्वत देकर उनके वोटों को खरीदने की कोशिश होना स्वाभाविक है यद्यपि यह जरूरी नहीं है कि आरक्षण मिल जाने के बाद दलित वर्ग के सब लोग अपना वोट उसी पार्टी के उम्मीदवारों को देंगे। जिन्होंने वर्तमान स्थिति में उनका साथ दिया है।

आर्यसमाज का कहना है कि जन्म की जाति-पांत के झगड़े को ही समाप्त कर देना ही इस समस्या का सर्वोत्तम हल है। पहले भी कभी यही हल किया गया था, अब भी इस समस्या का यही हल है, अन्यथा यह समस्या सदा बनी रहेगी। समझदारी की बात भी यह है कि समाज की उन्नति में योग्य व्यक्तियों के हाथ में ही होनी चाहिए, संरक्षण द्वारा उच्च पदों पर आये कर्मियों के हाथ में नहीं। ऐसे योग्य व्यक्ति किसी भी जाति में हो सकते हैं, ब्राह्मणों में भी, शूद्रों में भी। हर हालत में समाज की रचना रियायती लोगों के हाथ में होकर नहीं, योग्यता के आधार पर शिखरस्थ व्यक्तियों के हाथ में होनी चाहिए। यही आर्यसमाज का दृष्टिकोण है। □

भारत का दुर्भाग्य-आरक्षण

• राम प्रकाश शर्मा 'सरस'
गाजियाबाद

किसी एक राजा में राजकाज चलाने की असमर्थता थी, और उसके मंत्रीगण अधिकारीगण, कर्मचारीगण, अत्यधिक भ्रष्ट, रोषित, रिश्वती, अकर्मण्य एवं क्रूर थे राजा की अयोग्यता के कारण ही समस्त राज्य में अराजकता व्याप्त थी कहीं चोरी, डकैती, मिलावट, नफाखोरी, भ्रष्टाचार, अपहरण, बलात्कार, आगजनी, हड़तालें धरने सीमा पर घुसपैठ, जैसी अमानवीय अराजकीय घटनायें ही सर्वत्र सुनाई व दिखायी पड़ती थीं न कोई करुण रुदन को सुनने वाले मानव हृदय ही मिलते थे। मनुष्य में मानवता के स्थान पर असुरवृत्ति ही बढ़ रही थी। राजा के मित्र आततायी, अपराधी, खूनी, मानवहृदय में जहर घोलने वाले गरीबों की कमाई पर ऐश लूटने वाले बड़ी आजादी से फल-फूल रहे थे।

न्याय के मंदिरों में अन्याय का
नृत्य हो रहा था।
विद्या के नाम पर अविद्या
का प्रचार हो रहा था
पोषण के नाम पर रक्त शोषण
किया जा रहा था।
शासन के नाम पर दुःशासनों को
संरक्षण दिया जा रहा था।
धर्म निरपेक्षता के नाम पर धर्म
सापेक्षता का नारा दिया जा रहा था।

सड़कों, गली, गलियारों के बलात्कारियों को जेल और मौत की सजायें दी जा रही थीं। वातानुकूलित रेलों में, वायुयानों में, फाइव स्टार होटलों के बलात्कारियों को चरित्रवान कह कर फूल मालाओं से उनका स्वागत किया जा रहा था। इस देश के महापुरुषों ने मनुष्य मात्र को एक मानवता के सूत्र में पिरोने के लिए आत्माहुति दी, चाहे वह राम, कृष्ण बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर, विवेकानंद, दयानंद, गाँधी कोई भी क्यों न हो सभी का एक ही कथन था कि मनुष्य जाति एक है एक माँ के अनेक बेटे बेटियाँ अनेक काम करने वाले हैं, जिस प्रकार आज जातीय भेद-भाव की विनाशकारी दुर्भावना पैदा करने वाली शक्तियाँ सक्रिय हैं इसी प्रकार के और भी अदूरदर्शी लोगों ने प्रत्येक शताब्दी में नर-संहार कराया है जिसके कारण लम्बे समय तक मनुष्य ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु रहा।

वेद में चारों वर्णों को समान महत्व दिया है कि शिर ब्राह्मण बाहु क्षत्रिय, वैश्य उदर, पैर शूद्र है। यह चारों वर्ण एक दूसरे पर आधारित हैं एक के बिना दूसरा अंग अधूरा है पैर गति के प्रतीक हैं जिनके द्वारा ही मनुष्य का पूरा शरीर सुन्दरता एवं गतिशीलता को प्राप्त करता है।

देश की चहुमुखी उन्नति में प्रत्येक मानव मात्र का सहयोग रहा है। जातीय भावना से उन्नति न हुई और न होगी। सम्मान, विद्या लक्ष्मी पर किसी का एकाधिकार नहीं है। उसे पाने का प्रत्येक को समान अधिकार है। जातीय व्यवस्था से दिये जाने वाला लाभ उस जाति की बौद्धिक एवं मानसिक अवनति का ही कारण हो सकता है इससे न तो शिक्षण-प्रशिक्षण में ही उच्चदक्षता प्राप्त करने की रुचि ही रहेगी और न ही अनुशासन बढ़ता रहेगी जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षा, उद्योग, कला, वाणिज्य, विज्ञान, तकनीक, के क्षेत्र में गुणवत्ता एवं उन्नत भविष्य का अभाव होने लगेगा।

कठिन परिस्थितियों के बीच विकास के पथ की ओर अग्रसर भारतवर्ष रसातल की तरफ उन्मुख हो जायेगा सन् 1850 के बाद से निरन्तर जातीय भेद-भाव प्रायः समाप्त हो गया था सभी वर्गों को समानता प्राप्त हो रही थी योग्यता के आधार पर प्रत्येक वर्ग के लोग देश के सर्वोच्च पदों पर रहे हैं, चाहे बाबा साहब हों, चाहे डा0 जाकिर हुसैन, मौलाना-आजाद, ज्ञानी जैल सिंह, जगजीवन राम जी हों, इन पूज्य पुरुषों को निजी पौरुष एवं सत्प्रयास, तप-त्याग के कारण यह पद व सम्मान मिला, यह किसी आरक्षण व्यवस्था के अधीन नहीं मिला, इनका सम्मान आरक्षित वर्ग के हृदय में ही नहीं बल्कि जन-जन के हृदय में विद्यमान है।

किन्तु दुर्भाग्यवश कुछ अनुभवहीन, जातीय ऊँच-नीच के भेदभाव का जहर फैलाने वाले द्रोही "अम्बेडकर बनने का दुस्वप्न देख रहे हैं। उन्हें यह पता नहीं है कि उन्होंने दो साथियों, दो पड़ोसियों, दो सहयोगियों, दो मित्रों, दो भाईयों, को दिल से घृणा कर ने एक दूसरे को मारने-काटने के लिए प्रोत्साहित किया है। इन नादान लोगों के भड़कावे व बहकावे में कोई आने वाला नहीं है सब स्वाभिमान पूर्ण जीवन जीने की दिशा में प्रयास रत हैं शिक्षा और योग्यता के महत्व को सब समझते हैं। स्वाभिमान पूर्ण जीवन चाहने वाले कभी आरक्षण का समर्थन नहीं करेंगे। और न ही आज का युवा वर्ग यह सुनने को तैयार है कि वह नीची जाति का है यह कहकर उन पर भिखारी की भाँति दया की जाय ऐसा भी किसी नवयुवक को स्वीकार नहीं। चाहे वह किसी वर्ग, जाति, धर्म का क्यों न हो, आरक्षण देना या आरक्षण का समर्थन करना, उठत हुए को गिराना है, स्वयं कमाकर खाने वाले हाथों को भिक्षावृत्ति पर आश्रित कराना है, हीन भावना से मुक्त नौजवानों में हीनता फैलाना है, शिखर पर चढ़े हुए को नीचे गिराना है, परिश्रमी को आलसी बनाना है, जिन हाथों में पुस्तकें शोभा देती हैं उन हाथों को रिक्त हस्त कराना है, प्रतिभाओं को अंधकार के घेरे में डालना है, किसी को यह कहकर कुछ देना कि यह नीच है क्या यह गाली देने के बराबर नहीं है इन्हें आरक्षण नहीं सहयोग एवं सम्मान की आवश्यकता है ताकि किसी दूसरे के हाथ से छीनी या मांगी रोटी खाने की बजाय स्वयं सम्मान पूर्वक कमाकर खायें ऐसी भावना भरने की राष्ट्रहित में आवश्यकता है। स्वतन्त्रता एवं सम्पन्नता परस्पर संगठन चाहती है विघटन में स्वतन्त्रता पड़ोसियों की दासी बन जाती है और सम्पन्नता, विपन्नता का स्थान ले लेती है। आरक्षण से उत्पन्न जातीय संघर्ष ने देश की संगठन शक्ति को रुग्ण एवं विचारणीय बना दिया है। □

सीमा की पुकार

• पूर्ण प्रकाश मित्तल
बिजनौर

सीमा रही पुकार देश की,
वीरों कदम बढ़ा दो।
शत्रु झांके बार-बार,
तुम उसको सबक सिखा दो।।

अगर नहीं तुम चेते अब भी,
हाथ मसल रह जाओगे।
कश्मीर, पंजाब अपने में,
तुम विदेशी कहलाओगे।।
आतंकवाद का खेल खत्म हो,
तुम ऐसे बाण चला दो। शत्रु झांके-।

शेरों तुम हुंकार मार कर,
अपना जौहर दिखला दो,
जैमल-फत्ता, गोरा-बादल की,
गरजना पुनः सुना दो।
गुरुपुत्रों सी भर किलकारी
दुश्मन को फिर दहला दो। शत्रु झांके-।।
शिवा मनाए अपनी भवानी,
प्रतापधार दे भाले पर।
रक्षा खातिर आज वतन की,
कूदा टूटे फिर शत्रु पर।।
नाम से जिसके दुश्मन काँपे,
नलवासी खड्ग चला दो। शत्रु झांके-।।
सुलग रही चिंगारी दिल में,
गद्दारों की करतूतों से।
प्यारा भारत मिटने को है,
तुष्टीकरण की नीति से।।
आँख खोल दुश्मन को जाने,
शासन को आज बनलादो। सीमा रही--।।

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- "मेरी उम्र 35 साल है। पाँच कन्याओं को जन्म दे चुका हूँ। पुत्र के लिये उपाय बताने की कृपा कीजियेगा।"

- रमेशचन्द्र आर्य, ग्राम-टूढरा, डाकघर- दूनागिरि जनपद-(अल्मोड़ा)

समाधान- निर्माणाधीन "गुरुकुल आश्रम बिठूर (कानपुर)" को दान देने का मन में संकल्प करें। संकल्पित दान का अंशदान मेरे पास भेजकर पुत्रायन कैपसूल प्राप्त करें। दो मास की गर्भावस्था पूर्ण होने से पहले एक पुत्रायन कैपसूल लगातार तीन दिन तक प्रातः खाली पेट दूध के साथ सेवन करायें। शेष दान पुत्र के नामकरण संस्कार के दिन अर्पित करें। परमात्मा कृपा से पुत्र ही जन्म लेगा।

:: समाधान की प्रतियाँ सम्पादक व इष्टजन को भेजने हेतु डाकलिफाफे निम्न पता पर भेजें:-

- गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्य समाज पिथौरागढ़

आदर्श विवाह सम्पन्न

बरेली-आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में श्री पूरन लाल आर्य के पौरोहित्य में श्री संजीव कुमार शर्मा निवासी पीलीभीत ने कु0 लक्ष्मी देवी पुत्री श्री किशन दास खत्री निवासी पटेल नगर, बरेली के साथ वैदिक रीत्यनुसार जाति एवं दहेज रहित आदर्श विवाह किया। जिला आर्य उपसभा बरेली के पूर्व प्रधान श्री कृष्ण आर्य ने तथा अन्य अनेकों गणमान्य लोगों ने वरवधू को आशीर्वाद दिया।

युग निर्माता स्वामी दयानन्द

• डॉ० सुनीता शास्त्री
मुरादाबाद

युगपुरुष महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व वर्णनातीत है। इसे कोई अपनी भाषा में कैसे बाँध सकता है। वह तो साक्षात् ज्योतिपुन्ज थे जिन्होंने समाज, देश-काल से परे वेद और सृष्टि के गुह्यतम रहस्यों का आच्छादित सत्यावरणों को छिन्न-भिन्न कर सम्पूर्ण भूखण्ड को आलोकित किया।

भारत में वेदों की इतनी सत्य और यथार्थ व्याख्या दयानन्द से पूर्व नहीं हो पाई। अरविन्द महाराज ने वेद व्याख्या के विषय में कहा हैः-
"मेरा पूरा विश्वास है कि दयानन्द उसके सत्यसूत्रों के प्रथम अविष्कर्ता के तौर पर सदा आदृत किये जायेंगे। यह दयानन्द की प्रत्यक्षदर्शी चक्षु थी, जिसने पुराने अज्ञान और लम्बे युग से चली आती नासमझी की गोलमाल और अंधकार के बीच में से चीर कर सत्य को सीधे देखा और अपनी दृष्टि वहाँ आबद्ध की जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण वस्तु थी। उसने उन द्वारों की कुंजी प्राप्त कर ली जिन्हें कि काल ने बन्द कर रखा था और रुके पड़े निर्झरों के मुख पर से उन्हें बन्द करने वाली सील-मोहर तोड़ फेंकी।" समाज से रीति कुरीतियों और भ्रष्टाचारों के निवारण हेतु, लोक कल्याणार्थ स्वयं विष पान कर सत्य के यज्ञ में अपनी देह और प्राणों को अहूत कर दिया। इसी से दयानन्द को देव कहा जाता है। देव-जो स्वयं प्रकाशवान हो और दूसरों के अंधकार को दूर कर प्रकाशित कर सके वही देवत्व का अधिकारी है। दयानन्द के इसी देवत्व भाव से प्रभावित होकर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने उन्हें राष्ट्र निर्माण प्रेरणा का प्रथम श्रोत भी माना है।

"वे देवता थे, ऋषि थे, योगी थे।

स्वामी दयानन्द की चिन्तन शैली मानवमात्र की उन्नतिशील विचारों से परिपूर्ण है। वह जाति के नहीं मानव को प्रधान मानते थे उनकी दृष्टि में सभी जातियाँ समान हैं। वह सभी को ईश्वर की संतान मानते थे। वह हिन्दू मुसलमान में कोई भेद नहीं मानते थे। आर्यसमाज की प्रथम कार्यसमिति में "हाजी अल्लाखाँ रहमतुल्ला भी थे। जिनका नाम आज भी आर्यसमाज मुम्बई में कांकर वाड़ी में लगे दानियों की सूची शिला पर सबसे पहले खुदा हुआ है। स्वामी जी का निजी चिकित्सक "अली मरदान खाँ, अन्त समय तक स्वामी जी के साथ रहा। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वामी जी वर्ग जाति भेद के कट्टर विरोधी थे। वह सबको समभाव से देखते थे। यदि आज भी सभी वर्ग-जातियों के हितों को सामाजिक व शैक्षिक समानता मिले तो सम्भवतः "आरक्षण" संबंधी समस्या सरलता से निपट जाय। टुकड़ों-टुकड़ों में बटी हमारी मानसिकता इस बात का प्रमाण है कि हमारा समाज कहीं भीतर से टूट सा रहा है। धैर्य का अन्त हो गया। वर्तमान समाज को आज फिर दयानंद विचार दर्शन की अपेक्षा है। स्वामी जी चारित्रिकबल व भारतीय संस्कृति पर बहुत जोर देते थे उनका कहना था-
"सांस्कृतिक धरोहर के उपयोग के बिना किसी की उन्नति नहीं हो सकती।" वर्तमान में हमारे देश में नैतिकता और भारतीय संस्कृति को उपेक्षित कर दिया है। इसी कारण चहुओर अशान्ति का वातावरण व्याप्त है।

बड़े दुःख की बात है कि आज भी हमारे सत्ताधारी, राजनेता, हिन्दी को अपनाने में संकोच करते हैं। आज जब हमारा देश स्वतंत्र है तो अपनी भाषा, संस्कृति को त्याग स्वयं भारतीय आत्महीनता के शिकार हो रहे हैं। स्वतंत्र विचारों, सभ्यता का वैज्ञानिक उन्नति के लिए पश्चिम की ओर दौड़ रहे हैं। जबकि पश्चिम दिशा में जाकर तो तेजस्वी सूर्य भी डूब जाता है।

अतः ऐसे क्लान्त, क्रान्तिकारी युग में फिर किसी राष्ट्र निर्माता, समाज सुधारक, युग पुरुष दयानन्द की अपेक्षा है। जो देश और समाज का पुनः नवनिर्माण करे। □

राष्ट्ररक्षा शिविर अलीगढ़

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ द्वारा 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक राष्ट्ररक्षा युवा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में 500 प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पू0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शिविर का उद्घाटन किया और राष्ट्र पर छाये हुये संकट के निवारणार्थ आर्य युवकों को सन्नद्ध रहने के लिए आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज काश्मीर की तथा धर्म परिवर्तन की समस्या विकराल रूप में हमारे सामने पहिले से ही उपस्थित थी किन्तु शासन की अदूरदर्शी नीति के कारण आरक्षण की एक नवीन समस्या उठ खड़ी हुई है। इन सभी समस्याओं का समाधान आर्यसमाज के सिद्धान्तों में निहित है। आर्य समाज सदैव से जन्मना जातिपाँत की व्यवस्था का विरोधी रहा है। और राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तैयार है। इस अवसर पर जिले के कर्मठ आर्य समाजी एवं 12 वर्ष की अल्पायु में हैदराबाद के सत्याग्रह में सम्मिलित होने वाले डॉ0 राजेन्द्र सिंह जी को "राजर्षि" की मानद उपाधि से विभूषित किया गया तथा अन्य सत्याग्रहियों का सम्मान किया गया। 30 सित0 को एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी जिसमें क्षेत्रीय जनपद के विधायक, सांसद एवं शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने सोत्साह भाग लिया। इस अवसर पर आयोजित आर्य महासम्मेलन में अनेक वक्ताओं ने अपने प्रवचन एवं भाषणों द्वारा जनता को राष्ट्र की रक्षा के लिए प्रत्येक बलिदान हेतु तैयार रहने का आह्वान किया। अंतिम दिन डा0 विजयपाल सिंह आर्य ने आगन्तुकों को धन्यवाद देते हुए आगामी वर्ष के लिए प्रचार की एक वृहत योजना जनता के सम्मुख प्रस्तुत की। इस शिविर से आर्य जनता में बड़ी जागृति उत्पन्न हुई है।

संवादसूत्र

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज औरंदपुर (हरदोई) का 5वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 2 से 4 अक्टूबर 90 तक धूमधाम के साथ मनाया गया। ग्रामीण जनता में वैदिक धर्म के प्रति उत्साह जागृत हुआ।

दानदाताओं से अपील

जनपद अल्मोड़ा के सुरम्य पर्वतीय स्थान देघाट में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 से सम्बद्ध एक आर्य इन्टर कालेज है जो वर्ष 1965 से इस क्षेत्र में शिक्षा के व्यापक प्रसार कार्य में संलग्न है। इस विद्यालय को विज्ञान तथा कलावर्ग में इन्टर तक मान्यता प्राप्त है तथा हाईस्कूल एवं इन्टर कक्षाओं की वाणिज्य वर्ग में मान्यता के लिए प्रयास किया जा रहा है। इस विद्यालय में 40 कक्ष, 1 पुस्तकालय भवन तथा विज्ञान के छात्रों के लिए प्रयोगशालाएँ हैं। यह विद्यालय अपने जीवनकाल के प्रारम्भ से ही प्रगतिशील रहा है और इसका परीक्षा परिणाम सदैव उच्चकोटि का रहा है। इस विद्यालय में बच्चों को नैतिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है। तथा उन्हें आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति समर्पित बनाया जाता है। विद्यालय यद्यपि प्रगतिपथ पर अग्रसर है किन्तु बढ़ती हुई छात्र संख्या और क्षेत्र की शैक्षिक आवश्यकताओं को देखते हुये अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

यह एक आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ पर्वतीय क्षेत्र है। यहाँ के लोगों ने स्वतंत्रता की लड़ाई में खुलकर भाग लिया था तथा स्थानीय जनता के सहयोग से, जिनमें श्री प्रेमबल्लभ शास्त्री का नाम प्रमुखता से लिया जायेगा, इसे प्राइमरी पाठशाला से प्रारम्भ कर आज इस क्षेत्र का एक प्रगतिशील इन्टर कालेज बना दिया है। यह एक आर्य सामाजिक शिक्षा संस्था है जिसका संचालन करने वाली वर्तमान कार्यकारिणी सभा के अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता चौ0 माधव सिंह जी हैं। आर्यसमाज शिक्षा के लिए सदैव से समर्पित रहा है और विद्यादान को सर्वश्रेष्ठ दान मानता है। हम चाहते हैं यह विद्यालय इस क्षेत्र और जनपद की शिक्षा संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने वाला एक आदर्श महाविद्यालय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में विकसित हो। इसलिए सभी दानी महापुरुषों एवं शिक्षा प्रेमी जनता से अनुरोध है किया जाता है कि अधिक से अधिक धन की सहायता कर यश के भागी बनें।

धनः-मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट, चेक आदि के द्वारा निम्न पते पर भेजें।

आर्य इन्टर कालेज, देघाट, जनपद-अल्मोड़ा

-मनमोहन तिवारी-
-सभामंत्री-

सूचना

आगामी अप्रैल १९९१ में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर राजर्षि रणंजयसिंहजी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के सम्बन्ध में "आर्यमित्र" विशेष रूप से लेख/कविता आदि का प्रकाशन करने जा रहा है। अतः कृपया उनके सम्बन्ध में अपेक्षित सामग्री शीघ्र भेजने की कृपा करें।

-सम्पादक

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का अभूतपूर्व समारोह

१४ वाँ सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

२२ से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली में आयोजित

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कीजिए वैदिक धर्म प्रचार एवं प्रसार की अनेक योजनाओं को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहायता कीजिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एवं उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज ने एक संयुक्त वक्तव्य में देश विदेश की बिगड़ती हुई राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दशा पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए वेदाधारित मानव समाज की रचना के आर्य समाज के दृढ़संकल्प को दोहराते हुए प्रदेश एवं विश्व की सभी मानवता प्रेमी जनता से आगामी दिसम्बर में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की अपील की है।

ऋषिवर्य का स्वप्न अभी साकार नहीं हुआ है। परमात्मा की अमरवाणी **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। भारतीय आजादी के साथ हमने विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार की जो कल्पना की थी उसका मूर्तरूप अभी बहुत दूर है। अभी हमें बहुत दूर जाना है पथ कण्टकाकीर्ण अवश्य है पर आर्य वह है जो कभी पराजय स्वीकार नहीं करता हारना न॰ **"चरैवेति चरैवेति"** उसका आदर्श है।

उक्त आर्य महासम्मेलन आर्यजाति में नवप्राणों का संचार करेगा। सोई हुई मानवता को जगायेगा और विश्वशान्ति के हमारे वैदिक पथ को प्रशस्त करेगा।

तो, आइए, इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए वैदिक संस्कृति को उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने के लिए अभी से प्राणपण से जुट जायें।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज एवं मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने गंगा यमुना की पावन संगमस्थली के अपने वक्तव्य में मनोरम इस महान प्रदेश की गौरवमयी परम्पराओं का स्मरण कराते हुए कहा है कि राम, कृष्ण और दयानन्द की यह कर्मस्थली है। इस प्रदेश की जनता ने भारतमाता के मस्तक को सदैव ऊँचा रखा है। हमें आशा है प्रदेश की जनता इस सम्मेलन में लाखों की संख्या में सम्मिलित होगी और इस पुण्यकार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर यश की भागी बनेगी।



बीना जबीं को राष्ट्रीय पुरस्कार

आर्यमित्र के कुशल सज्जाकार श्री शफीक हसन की पुत्री, लालबाग गर्ल्स इन्टर कालेज, लखनऊ की छात्रा कु० बीना जबी ने राष्ट्र स्तरीय अखिल भारतीय कैमल रंग प्रतियोगिता 1989 में राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय तथा जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया जिसके लिए उनको एक पदक और प्रमाण-पत्र दिया गया। कु० बीना जबी ने एम०आर०एफ० द्वारा आयोजित रंग प्रतियोगिता में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया जिसमें उन्हें प्रमाण-पत्र के अतिरिक्त रु03,000/- की धनराशि तथा पाकिस्तान, श्रीलंका के बीच खेले गये मैच में दो विशिष्ट टिकट भी प्रदान किए गये। कु० बीना अब तक एक राष्ट्रीय पुरस्कार एवं आधा दर्जन से अधिक प्रादेशिक स्तर के पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है।

आर्यमित्र परिवार की बहुत-बहुत बधाई एवं आशीर्वाद। —सम्पादक

अजमेर में दयानन्द शोध-पीठ की मान्यता

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा संचालित दयानन्द शोधपीठ का अजमेर वि० वि० ने उच्च अनुसंधान केन्द्र के रूप में गत वर्ष मान्यता प्रदान की थी। शोधपीठ में वेद संस्कृत संबंधी निर्धारित विषयों में अब एम०फिल०/पी०एच०डी० विद्यावारिधि के छात्र-छात्राओं के प्रशिक्षण के लिये सुयोग्य अध्यापकों की व्यवस्था है। साथ ही शोधार्थियों के मार्ग दर्शन के लिए एक अतिरिक्त एम०ए०एम०फिल विदुषी को शोध सहायक के रूप में नियुक्ति की गई है जो शोधार्थियों को धारावाहिक संस्कृत सम्भाषणार्थ प्रशिक्षण देगी।

शोधपीठ के निदेशक प्रो० दत्तात्रेय जी ने सूचित किया कि योग्य शोधार्थियों को 200/00 मासिक छात्रवृत्ति भी दी जायेगी।

नई मण्डी मुजफ्फरनगर में यज्ञ

श्री निरन्जन लाल जी गुप्त अवकाश प्राप्त अधिशासी अभियता के सौजन्य से वार्षिक यज्ञ दिनांक 7-10-90 से 14-10-90 तक आर्यसमाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर में प्रतिदिन प्रात सायं बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

मैनपुरी मे आ॰स॰ का उत्सव

मैनपुरी आर्यसमाज व आर्यस्त्री-समाज का 110 वाँ वार्षिकोत्सव दि0-2 से 5 नवम्बर 1990 को समारोह पूर्वक मनाया जावेगा।

इस उत्सव में स्वामी आनन्दबोधजी सरस्वती दिल्ली, स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती हरिद्वार, प0 इन्द्रराज जी मेरठ, ब्र0 आर्य नरेश शिमला, डॉ0निरूपणजी विद्यालंकार गुरूकुल कांगड़ी आदि अनेक विद्वान सन्यासी तथा उपदेशक पधार रहे हैं। जनता अधिक से अधिक सख्या में आमन्त्रित है।

आर्य समाज आज़मगढ़ का उत्सव

आर्य समाज आजमगढ का 86वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 22 से 25 नवम्बर 90 तक समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी, तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं आर्य जनता से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

विजय दशमी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज खण्डवा (म0प्र0) में विजय दशमी पर्व धूमधाम से मनाया गया।

सभा के प्रचारकों की भजन प्रतियोगिता

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अधिवेशन पर दि0- 24 नवम्बर 90 को रात्रि 7 30 बजे सभा के प्रचारकों की भजन प्रतियोगिता डी0ए0वी0 कालेज लखनऊ के प्रांगण में होगी। जिसमें सभी की उपस्थिति अनिवार्य है। उसी दिन मध्यान्ह 4 बजे सभी उपदेशकों प्रचारकों की आवश्यक बैठक पण्डाल में होगी। कृपया समय पर पहुँच कर उपस्थिति अंकित कराएं।

सभी उपदेशक महानुभावों को वैदिक सिद्धान्त (त्रैतवाद, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, सृष्टयुत्पत्ति, आत्मा की अमरता, ईश्वर का स्वरूप) आदि विषयों पर दि0- 24 तथा 25 नवम्बर को किसी भी समय पूर्व सूचना देकर अत्यन्त संक्षिप्त व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया जा सकता हैं।

उपदेशकों प्रचारकों को इस निमित्त द्वितीय श्रेणी का रेलवे किराया दिया जायगा।

मनमोहन तिवारी — मन्त्री आ0प्रति0स0, उ0प्र0
हरिश्चन्द्र आर्य — अधि0 उपदेश विभाग

आर्यसमाज मोहम्मदपुर मऊ (बदायूँ)

प्रधान- श्री बिहारीलाल आर्य
मन्त्री-श्री चन्द्रभानु आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री प्रेमपाल आर्य

आर्य उपप्रतिनिधि सभा की ओर से वेद सम्मेलन का आयोजन

अंधविश्वास से परे पूर्ण विज्ञान है वेद

मवाना, 5 सितम्बर। आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ के तत्वावधान में यहाँ आयोजन जिला आर्य महासम्मेलन के तहत कल रात यहाँ आर्य समाज मंदिर में वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें बताया गया कि वेदों में विज्ञान का रहस्यमय भंडार छिपा पड़ा है।

स्वामी सत्यानंद जी ने कहा कि आज वेदों का अनुसंधान जारी है, परन्तु अभी तक अनुसंधान का कोई भी परिणाम वेदों के ज्ञान को झूठा सिद्ध नहीं कर पाया है। वैज्ञानिकों की भी अब यह धारणा बनने लगी है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और शीघ्र ही वे इसकी सार्वजनिक घोषणा भी करेंगे। उन्होंने कहा कि वेद तथा अन्य ग्रंथों में यही अंतर है। वेद का कोई भी अक्षर आज तक झूठा सिद्ध नहीं हुआ है, जबकि अन्य ग्रंथों में वर्णित बातों पर व्यापक विरोध देखने को मिला है।

उन्होंने बताया कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने सभी सम्प्रदायों के गुरुओं पंडितों को हरिद्वार में इकट्ठा करके उनसे एक झण्डे के नीचे आने का आह्वान किया था। यह झण्डा सूर्य का झण्डा था, परन्तु कोई भी इसके लिए तैयार नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि वेद मानव मात्र के लिये है। वेदों में बताया गया है कि किस प्रकार मनुष्य की आयु लंबी होती है, मनुष्य को उत्तम संतान पाने के लिए, दूध देने वाली गाय पालने हेतु घर-बाहर धन-धान्य भरे, कीर्ति छाये, यश फैले तथा ब्रह्म वर्चस्व और बुद्धि प्राप्त हो, इस सबका वर्णन वेदों में है।

उन्होंने कहा कि राम का जीवन वेदों के अनुकूल था। बाल्मीकि रामायण में राम को 36 बार आर्य बताया गया है। उन्होंने कहा कि जिस "आर्य" शब्द से बड़े-बड़े पंडित ईर्ष्या करते हैं वह कोई जाति नहीं है। बल्कि आर्य वह है, जिसमें श्रेष्ठ गुण हों। उन्होंने कहा कि हमें अपने जीवन में संकल्प लेना चाहिए कि पूरा विश्व आर्यावर्त बने।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए डा0 निरुपण विद्यालंकार ने कहा कि यदि खुद को व परिवार को ठीक रखना है, तो वेद पढ़ना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यदि कोई वेद पढ़ने की इच्छा रखता है तो आर्यसमाज के प्रधान व मन्त्री को यहां संस्कृत के ज्ञान की व्यवस्था करनी होगी। उन्होंने कहा कि यदि मनुष्य वेद वैसे भी न पढ़े और यज्ञ करें तो खुद-ब-खुद वेद पढ़े जायेंगे।

स्वामी चन्द्रदेव ने कहा कि वेदों का प्रादुर्भाव परम्परा से हुआ है। ऋषियों ने परम-पिता परमात्मा के ज्ञान का प्रकाश वेदों में फैलाया है। उन्होंने बताया कि वेद ही धर्म के मार्ग पर चलने वाला रास्ता बताते हैं। इस युग में ऋषि दयानन्द ने हमें वेदों का रास्ता बताया। उन्होंने बताया कि सूर्य का प्रकाश तो सभी जीव जंतुओं के लिए है, परन्तु वेदों का प्रकाश केवल मनुष्य के लिए है। उन्होंने कहा कि वेद का पढ़ना ब्रह्मचारी का, वेद पढ़ाना वानप्रस्थी का, वेद सुनना गृहस्थी का तथा वेद सुनाना सन्यासी का परम-कर्त्तव्य है। अर्थात् वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

स्वामी करुणवेश ने कहा कि वेद परमपिता, परमात्मा की वाणी है। जो सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य के कल्याण के लिए रची गई है। इसके स्वाध्याय से बुद्धि का विकास होता है। उन्होंने कहा कि वेद में कोई बात विज्ञान के विपरीत नहीं है। हमें अपने अंध विश्वासों को दूर करने के लिए वेदों का स्वाध्याय करना चाहिए। चौ0 माधव सिंह, जयंतकुमार पाण्डेय, डा0 विजय कुमार, डा0-रमेश आदि ने भी वेदों पर विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर पं0 अभयराम-शर्मा ने एक भजन सुनाया- "मधुर वेद वीणा बजाये चला जा/जो सोते हैं उनको जगाये चला जा/कुकर्मों की कीचड़ में जो धंस रहे हैं/ भविष्य अंधेरे में जो फंस रहे हैं। उन्हें सत्य पथ तू दिखाये चला जा।" सम्मेलन का संयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा मेरठ, के मन्त्री पं0 इन्द्रराजजी ने किया। उन्होंने कहा कि यदि वेदों का थोड़ा अंश भी हम जीवन में उतार लें, तो जीवन का कल्याण होगा। आर्यसमाज मवाना के मन्त्री कान्ति प्रकाश ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस आर्य महासम्मेलन में श्रीमती प्रेमलता दुबलिश को महिला सम्मेलन का, कांत प्रकाश को कार्यालय का, प्रेम प्रकाश रस्तोगी को भोजन समिति का, वेदपाल आर्य को यज्ञ समिति का, ज्ञानेन्द्र प्रकाश सरार्फ को शोभायात्रा समिति का तथा सुशील कुमार कामिल को पंडाल समिति का संयोजक बनाया गया था। सभी के पूरे प्रयासों से आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक समाप्त होने पर मन्त्री ने आभार व्यक्त किया। - संवाददाता □

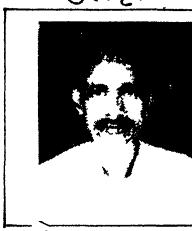
लखनऊ में उत्सव

प्रसिद्ध होम्योपैथिक औषधालय बारा बिरवा, लखनऊ में 14-9-90 से 21-9-90 तक बड़ी श्रद्धा के वातावरण में चारों शतकों से यज्ञ किया गया। यह यज्ञ वैद्य श्री कुन्दन लाल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। वेद पाठ पं0 विजयपाल जी आर्य पुरोहित आर्यसमाज आदर्शनगर करते रहे। इन दिनों श्री आचार्य वेदव्रत अवस्थी श्री यशपाल दीवान एवं वेद मनीषी मेहता हरवंश लाल जी के उपदेश होते रहे।

वानप्रस्थ में प्रवेश

आर्य समाज आदर्श नगर में लखनऊ के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री तिलक नारायण तलवार एवं प्रधान वेद प्रचार समिति आलमबाग लखनऊ ने दिनांक 23-9-90 को वीतराग स्वामी सर्वानंद जी महाराज प्रधान यतिमंडल दयानंद मठ दीनानगर से गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली में वानप्रस्थ की दीक्षा प्राप्त की और उनका नाम यज्ञमुनि वानप्रस्थ रखा गया।

श्री बृजकिशोर सिंह यादव पुरस्कृत



आर्यसमाज भरुआ सुमेरपुर के उपप्रधान एवं चन्दपुरवा बुजुर्ग जू0हा0स्कूल के प्रधानाचार्य अपनी विशेष प्रतिभा शिक्षण कार्य की दक्षता एवं कई जीर्ण विद्यालयों की दशा सवारने में निपुण श्री यादव को 5 सितम्बर 1990 को शिक्षक दिवस के अवसर पर भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार में 5,000/- रु0 नगद एवं प्रसस्ति पत्र भेंट किया गया। आर्य मित्र परिवार की ओर से शत-शत बधाई। □

साधु आश्रम का उत्सव

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ का 80वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 10 से 12 नवम्बर तक धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी, भजनोपदेशक पधार रहे हैं। जनता से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म उपदेशों से लाभ उठावे।

आदरणीय लेखक महोदय

आर्य जगत के शिरोमणि नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान, अद्भुत वक्ता पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री- पं0 प्रकाशवीर शास्त्री देश की उन महान विभूतियों में गिने जाते हैं, जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व ने राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गरिमा को बहुत ऊँचा उठा दिया था। ऐसे पुरुषरत्न को अपनी पावन धरती पर जन्म देना इस प्रदेश का सौभाग्य रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का मुख पत्र "आर्यमित्र" उनकी पुण्यस्मृति में, आगामी दिसम्बर 90 में "प्रकाशवीर शास्त्री अंक" प्रकाशित करने जा रहा है। इस अंक में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बहु आयामी स्वरूप पर देश-विदेश के मान्य विद्वज्जनों। राजनीतिज्ञों तथा उच्चकोटि के सन्त पुरुषों के विचारों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में प्रकाशित की जायेगी।

आप उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित रहे हैं और उनके कृतित्व के प्रशंसक भी।

मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा, यदि आप उनके सम्बन्ध में अपने विचारों को मूर्तरूप देते हुए इस अंक में प्रकाशनार्थ मुझे भेजने की कृपा करेंगे।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित धर्म परीक्षायें

प्रस्तावना:- आर्य विद्यालयों की स्थापना मुख्यतया वैदिक धर्म के प्रसार और प्रचार के लिये की गई थी। प्रारम्भ में आर्य विद्यालयों ने इस उद्देश्य की पूर्ति में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। वैदिक धर्म की शिक्षा वहाँ अनिवार्य थी। देश के स्वतंत्र होने के उपरान्त इस कार्य में शनैः-शनैः शिथिलता आने लगी और जबसे मान्यता प्राप्त विद्यालयों में वेतन वितरण सरकार द्वारा होने लगा तबसे इस कार्य में चिंताजनक ह्रास हो गया है। बहुत से विद्यालय तो नाम के आर्य विद्यालय बनकर रह गये हैं। यह इन विद्यालयों के संस्थापकों के प्रति घोर कृतघ्नता है जिसके लिये मुख्यतया प्रधानाचार्य एवं अध्यापक उत्तरदायी हैं। समय तीव्रगति से बदल रहा है। धर्म परिवर्तन की आँधी जोर से चल रही है। सरकार धर्म निरपेक्षता की आड़ में इस राष्ट्रघाती स्थिति को अनदेखा कर रही है। यही नहीं, तथाकथित पब्लिक स्कूलों की स्थापना तो धर्म ही नहीं हमारी संस्कृति को भी संकट में डाल रही है। प्रबंध समितियाँ भी इस दिशा में उदासीन हैं।

इस भयावह स्थिति में हमारे प्रबंधकों, प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों का यह नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि वे धर्मशिक्षा के पवित्र कार्य की उपेक्षा करके धर्महन्ता होने के पाप के भागी न बनें। चाहे उन्हें अपनी कर्तव्यसीमा से बाहर निकलकर भी यह काम करना पड़े, किन्तु इस कार्य में धर्म ही नहीं राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा के लिये भी आगे आकर अभीष्ट योगदान देना चाहिये। हमें हर्ष है कि कुछ संस्थायें तो इसमें पूरा योगदान दे रही हैं यद्यपि उनकी संख्या बहुत ही थोड़ी है। हम सभी आर्य विद्यालयों के प्रबंधकों, प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों से अनुरोध करते हैं कि वे इस दिशा में अपने नैतिक कर्तव्य का पालन अवश्य करें। भावी संतति उनकी ऋणी होगी, राष्ट्र उनका यशोगान करेगा।

सूचना:-

1- सभा चार धर्म परीक्षायें संचालित करती है जो प्रायः प्रतिवर्ष मार्च के प्रथम सप्ताह में रविवार के दिन आयोजित की जाती हैं।

2- पाठ्यक्रम और फार्म सभा कार्यालय, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से उपलब्ध हो सकते हैं।

3- फार्म दो प्रतियों में भेजे जायेंगे।

4- प्रत्येक परीक्षा के परीक्षार्थियों की संख्या भेजने से फार्म अभीष्ट संख्या में भेजे जा सकते है। एक फार्म पर 25 नाम आते है।

5- फार्म पर विद्यालय का पूरा नाम लिखना आवश्यक है।

6- प्रधानाचार्य जी फार्मों का सैनरीक्षण करके उन पर मुहर सहित हस्ताक्षर किया करें।

7- प्रत्येक विद्यार्थी के पास सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित "दैनिक यज्ञ प्रकाश" नामक पुस्तक अवश्य होनी चाहिये। सभी प्रकार के आवश्यक मंत्र उस पुस्तक में दिये हुये हैं।

चार परीक्षायें:-

धर्मरत्न परीक्षा, धर्म प्रवेशिका परीक्षा, धर्म भूषण परीक्षा, धर्माधिकारी परीक्षा, जिनमें क्रमशः कक्षा-5, कक्षा-7, कक्षा-9 व कक्षा-11 तक पढ़ने वाले विद्यार्थी प्रविष्ट हो सकते हैं तथा जिनके लिये आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा पुस्तकें क्रमशः भाग-5, भाग-7 भाग-9, एवं भाग-11 निर्धारित पुस्तकें हैं। प्रश्नपत्र सामान्यतया इन पुस्तकों पर ही आधारित होंगे।

टिप्पणी:-

उत्तीर्ण होने के लिये प्रार्थना के आठ मंत्र, संध्या के मंत्र, सामान्य यज्ञ के मंत्र, यज्ञ प्रार्थना का कण्ठस्थ होना एवं महर्षि दयानन्द की जीवनी से परिचित होना पर्याप्त होगा।

माधव सिंह मंत्री
प्रदेशीय विद्यार्थ सभा.उ0प्र0।
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का आगामी १०५ वाँ वार्षिक बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन १९९०-९१

दिनांक-२४ तथा २५ नवम्बर १९९० को डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है:

१ -	मतदाता सूची का प्रकाशन	22-10-90 -	(सोमवार)
२ -	आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	25-10-90 -	(बृहस्पतिवार)
३ -	आपत्ति का निवारण	26-10-90 से 27-10-90 तक	(शुक्रवार से शनिवार तक)
४ -	शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	6-11-90 -	(मंगलवार)
५ -	बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	24,25-11-90	(शनिवार तथा रविवार)
६ -	चुनाव परिणाम की घोषणा -	निर्वाचन की समाप्ति के बाद।	

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 नारायण स्वामी भवन 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

कमलापति त्रिपाठी दिवंगत

उत्तर प्रदेश के भू0पूर्व मुख्यमन्त्री एवं राष्ट्रसेवा में आजीवन समर्पित श्री पं0 कमलापति त्रिपाठी का गत 7 अक्टूबर को वाराणसी में 86 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया।

वे काशी विद्यापीठ में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े थे। आपने अनेकों पत्रों का सम्पादन किया एवं कुशल वक्ता तथा प्रशासक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके निधन पर शोक प्रकट करते हुए इसे राष्ट्र की अपूरणीय क्षति बताया है।

शोक समाचार

आर्यसमाज औहदपुर के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री दानवीर सिंह का दिनांक 2 अक्टूबर को आकस्मिक निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोक संतप्त परिवार के धैर्य हेतु समाज के सदस्यों ने प्रार्थना की।

वर की आवश्यकता

श्री श्रद्धानंद बाल वनिता आश्रम (देहरादून) की 2 कन्याओं के शुभ विवाह हेतु योग्य वरों की आवश्यकता है। (1) कु0सीता आयु 25 वर्ष, हाईस्कूल 148 से0मी0 (2) कु0 मीरा आयु 20 वर्ष हाईस्कूल 149 से0मी0 है। दोनों कन्याओं का रंग गोरा तथा गृहकार्य में दक्ष, स्वभाव से सुशील हैं। इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें। व्यवस्थापक श्री श्रद्धानंद बाल वनिता आश्रम।

आवश्यकता है

आर्ष गुरुकुल टनकपुर (नैनीताल) में आर्ष पाठ विधि से पढ़ाने हेतु एक संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है। शास्त्री (व्याकरण विषय से) परीक्षा उत्तीर्ण। आर्य विचारवान व्यक्ति को प्राथमिकता दी जायगी। पूर्व पत्र व्यवहार करें। कार्यालय रामदेव आर्य

प्रबन्धक- दयानन्द विद्या मन्दिर,
टनकपुर, (नैनीताल)

वेद प्रचार

● आर्यसमाज हसनापुर (शाहजहाँपुर) के ग्राम टकेली में दि0- 19 से 25सितम्बर तक सभा प्रचारक श्री प0 ब्रह्मानन्दार्य, नेम प्रकाश जीने मण्डली सहित वैदिक धम का प्रचार किया तथा धनुर्विद्या का प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम को देखकर जनता अत्यधिक प्रभावित हुई।

● आर्यसमाज सिरसा(आजमगढ़) में श्री स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा दिनाक 11 से 18 सितम्बर तक 8 दिन वेद कथा — तथा श्री देवी सिह जी के भजन हुये जिससे पर्याप्त उपस्थिति होती रही और जनता पर बडा अच्छा प्रभाव पडा।

● आर्य समाज नेमदारगज द्वारा प्रसिद दुर्गा मेला में श्री दयानन्द जी सत्यार्थी आर्य भजनोपदेशक के माध्यम से वैदिक विचारधारा का प्रचार किया गया। ग्रामीण जनता देर रात तक मन्त्रमुग्ध भजनोपदेश सुनती रही।

-आर्य मरुत'

पञीकरण स० एल० डब्ल्यू / एन.पी. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
कार्तिक शुक्ल ३ सवत २०४७ वि
दिनाक २१ अक्तूबर १९९०
दूरभाष २४५९९२

12746-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
{ हरिद्वार }



आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से आ०स०१ से निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा के नाम से एक अवैधानिक संगठन बना कर आर्यजनता में भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इस तथाकथित अवैधानिक संगठन को अपना किसी प्रकार का कोई सहयोग न दें।

- सभामन्त्री





उत्तर प्रदेश के मुख्य विक्रेता

1- आयुर्वेद सेन्टर, लखनऊ।
2- एस0एस0 मेहता, लखनऊ।
3- अलकार फार्मेसी, कानपुर।
4- रामदेव मिश्रा, रायबरेली।
5- शिव आयुर्वेदिक औषधालय, प्रतापगढ।
6- स्वदेशी औषधालय, गोण्डा।
7- मिश्रा आयुर्वेदिक स्टोर, सुलतानपुर।
8- विनय कुमार अरुण कुमार, इलाहाबाद।
9- कुलदीप चन्द्र सामा, आगरा।
10- बैजनाथ प्रसाद एण्ड सस, फैजाबाद।

शाखा कार्यालय- ६३ गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली ११०००६

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् [illegible]

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं २२४१/५७) कार्तिक शुक्ल- ९ रविवार सवत २०४७ वि दिनाक २८ अक्तूबर १९९० (घोषणा पत्र स ७/२७ [illegible]



- श्री आडवाणी गिरफ्तार
- भारतीय जनता पार्टी द्वारा राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को दिया समर्थन वापस
- अध्यादेश वापस
- संसद मे ७ नवम्बर को शक्ति परीक्षण

[illegible]

नयी दिल्ली, अक्टूबर 20 - रामजन्म भूमि तथा बाबरी मस्जिद विवाद से सम्बन्धित सभी पक्षों से अनेकों बार लम्बी वार्त्ताओं के दौर के पश्चात भी कोई सर्वमान्य हल न निकल पाने के कारण अन्तत केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने त्रिसूत्रीये फार्मूले पर अपनी सहमति व्यक्त करते हुए राष्ट्रपति से सम्बद्ध भूमि तथा सम्पत्ति का अधिग्रहण करने के लिए सिफारिश कर दी। राष्ट्रपति ने देर रात एक अध्यादेश जारी कर दिया जिसमें रामजन्म भूमि - बाबरी मस्जिद से सम्बन्धित विवाद संविधान की धारा 143 के तहत उच्चतम न्यायालय में एक विशेष पीठ स्थापित करके निर्णयार्थ सुपुर्द कर दिया जायेगा। जिन त्रिसूत्रीय बिन्दुओं पर अध्यादेश निर्गत हुआ है वे निम्नवत् हैं-

1- केन्द्रीय सरकार इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में विचाराधीन रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद से सम्बन्धित समस्त विवादास्पद भूमि तथा उसके आस पास की जगह अधिगृहीत कर लेगी।

2- विवादास्पद भूमि को छोडकर अन्य अधिगृहीत भूमि रामजन्म भूमि यज्ञ समिति अथवा न्यास को राम मन्दिर के निर्माणार्थ दे दी जायेगी।

3- इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में लम्बित विवादास्पद भूमि के मामले में शीघ्र निपटारे के लिए संविधान के अनुच्छेद 143 के तहत उच्चतम न्यायालय में एक विशेष पीठ की स्थापना की जायेगी और जब तक यह विशेष पीठ अपना निर्णय नही दे देती विवादग्रस्त क्षेत्र में यथास्थिति बनाई रखी जायेगी।

यद्यपि भारतीय जनता पार्टी, विश्व हिन्दू परिषद ने इस अध्यादेश को सही दिशा में बहुत देर से उठाया गया छोटा कदम माना है और अध्यादेश की कुछ विसगतियों के निराकरण होने पर इस पर विचार करने के लिए लचीला दृष्टिकोण अपनाने का आभास भी दिया है, परन्तु खेद है कि बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के नेताओं ने इसे मुसलमानों के साथ धोखाधडी बताते हुए 30 अक्टूबर को भारत बन्द की घोषणा कर दी है। उधर भारतीय शिया मुसलमानों के लिए ईरान से फतवा आया है कि बाबरी मस्जिद को दूसरी जगह हटाया नहीं जा सकता। मुसलमान मस्जिद गिराकर मन्दिर बनाने की कोशिशों को हर कीमत पर नाकाम करें। यह फतवा शिया मुसलमानों के सबसे बडे मौलाना ईरान के खुमैनी गुलपायगानी का है, जिनका तर्क है कि मस्जिद की जमीन कयामत तक मस्जिद ही रहेगी इसे हटाया नहीं जा सकता। यद्यपि इससे पूर्व शिया मुसलमानों की संस्था 'खुमैनी अरबी दारुल उलूम ने बाबरी मस्जिद को हिन्दुओं को सौंपने की अपील की थी।

हिन्दुओं की अब आँखे खुल जानी चाहिए। इस देश में जगह-जगह चौराहों पर तमाम मजारें, मानारें, मस्जिदें, दरगाह खडे होते जा रहे हैं। बरसाती बाढ आई हुई है। पहले दिन 10/5 ईंटें बिछा दी जाती हैं फिर एक चादर डाल दी जाती है (यद्यपि वहाँ कोई दफन नहीं है) फिर उसे मजार घोषित कर दिया जाता है। थोडे दिनों बाद आस पास मकान और दूकानें खडी कर दी जाती हैं। हर शहर में हर सडक के किनारे, हर चौराहे पर जहाँ जगह खाली दिखाई पडी - बनता ही चला जा रहा है। शासन आँखें मूँद चुका है। नजूल की जमीन पर बिना स्वीकृति के बने इन अवैध निर्माणों को कौन हटा सकता है। क्या फिर कोई फतवा नहीं आ जाएगा ?- जो बन चुका वह कयामत तक ऐसा ही बना रहेगा उसे कोई हटा नही सकता।

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु. २५१/
वार्षिक	रु ३०/
एक प्रति	१रु मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक - ४२

आर्य भूमि पर अरूणोदय सा,
उठा अरुण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ - कार्तिक शुक्ल- ९ संवत २०४७ वि.
दिनांक: २८अक्तूबर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

सकारात्मक दृष्टिकोण

गत 12 अक्टूबर को लखनऊ में एक विशाल सद्भावना रैली का आयोजन हुआ। यह रैली मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव के आह्वान पर बुलाई गई थी। इसमें सभी वामपंथी पार्टियों ने एकजुट होकर भाग लिया और वस्तुतः लखनऊ के इतिहास में इस रैली को अभूतपूर्व ही कहा जाएगा क्योंकि प्रदेश के कोने-कोने से इसमें भाग लेने वाले कम्युनिस्ट, बहुजन समाज पार्टी, जनता दल, जनता पार्टी, फारवर्ड ब्लाक, मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी, आरक्षण समर्थक पार्टियों के लगभग डेढ लाख लोग लखनऊ में एकत्र हो गये थे। मंच पर भारत के प्रधानमंत्री को छोड़कर लगभग सभी वामपंथी नेता उपस्थित थे जिन्होंने जी भर कर भारतीय जनता पार्टी को कोसा। सबका एक ही लक्ष्य था भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिकता फैला रही है। अडवाणी की रथ यात्रा से देश में अशान्ति उत्पन्न हो रही है। मस्जिद तोड़ कर मन्दिर हरगिज नहीं बन सकना। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके जीवन की यह सबसे बड़ी चुनौती है और वे किसी भी कीमत पर मन्दिर निर्माण नहीं होने देंगे। चन्द्रशेखर ने कहा यह विशुद्ध धार्मिक मसला है दोनो पक्षों के धर्मगुरु एकत्रित होकर मामले को सुलझा लें। मुख्यमंत्री ने खड़े होकर कहा यह विशुद्ध राजनैतिक मसला है या तो आपस में सहमति से कोई मार्ग निकाला जाय अथवा अदालत का फैसला माना जाय।

एक युग था जब हमारे देश में राजनीति को धर्म का एक अंग समझकर शासकीय व्यवस्था धर्ममनीषियों की व्यवस्था के अनुसर चला करती थी। शासन का कार्य उस व्यवस्था का क्रियान्वयन मात्र था। आज राजनीति सर्वोपरि हो गई है जो शासक है। वही धर्मगुरु बन कर धार्मिक व्यवस्था भी देना चाहता है। मन्दिर मस्जिद का विवाद इसलिए भी उग्र होता जा रहा है क्योंकि राजनीतिज्ञों ने इसे धर्म की परिधि से निकालकर विशुद्ध राजनैतिक दर्पण से देखना शुरु कर दिया है। राजनैतिक पार्टियाँ इस मसले पर अपने निहित स्वार्थों की सिद्धि देख रही हैं जबकि यह मामला दोनो पक्षों की धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आपसी बातचीत से तय हो सकता है। 17 अक्टूबर को प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा दिल्ली में आहूत सर्वदलीय बैठक में कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी ने सम्मिलित होने से मना कर दिया और इस प्रकार शासन तथा विश्व हिन्दू परिषद के नेताओं में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं है। इधर 19 अक्टूबर को राष्ट्रपति ने अध्यादेश लागू करके राम जन्म भूमि विवाद से सम्बन्धित समस्त भूमि तथा सम्पत्ति का अधिग्रहण कर लिया है इसलिए स्थिति बड़ी भयावह और जटिल होती जा रही है। यह निश्चित दिखाई पड़ रहा है कि यदि शासन ने अपने अड़ियल रुख में परिवर्तन नहीं किया तो हिन्दू जाति का फिर बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है क्योंकि सैनिक बल बड़ा अनुशासित होता है यदि उसका कमाण्डर उसे गोलियों बौछर करने का हुक्म देता है तो सैनिक गोलियाँ बरसायेगा फिर इसमें कोई भी कितनी ही संख्या में क्यों न मरे .....।

आजादी के पश्चात भारत सरकार के तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने महमूद गज़नवी द्वारा खण्डित सोमनाथ मन्दिर के पुनीनिर्माण का संकल्प लिया था - उनका यह संकल्प नवनिर्मित सोमनाथ के भव्य और विशाल मन्दिर के सामने उनकी लगी हुई प्रतिमा के नीचे लिखा हुआ है। उस मन्दिर के निर्माण के लिए उत्तर प्रदेश की तत्कालीन सरकार ने कई लाख रुपये का अंशदान दिया था। भारत की लगभग सभी प्रदेशीय सरकारों ने, हिन्दुओं ने, मुसलमानों ने उस निर्माण में लाखों रुपये का अंशदान दिया था और उस वीरवर का संकल्प पूरा हुआ। कहीं से किसी भी प्रदेशीय या केन्द्रीय शासन की ओर से कोई विरोध नहीं हुआ। हिन्दू मुसलमान दोनों ने मिलकर उस विदेशी आक्रान्ता द्वारा भग्न एवं खण्डित मूर्ति की पुन. प्रतिष्ठापना की।

हिन्दू क़ौम सदा से उदार रही है इसने अपने मुसलमान भाइयों के उत्थान के लिए, उनके कल्याण के लिए- क्या नहीं किया- इतिहास को उठाकर देखिए। भारत के जितने भी मुसलमान हैं सब उन्हीं पूर्वजों की सन्तान हैं जिनकी सन्तान हिन्दू हैं। अरब से आये हुए आक्रान्ता मुसलमान सैनिक अपने साथ स्त्रियाँ नहीं लाए थे। आज मुसलमानों के घरों में जितनी भी बहू-बेटियाँ-माताएं-बहिने हैं वे सब हिन्दू सन्तान हैं, उनकी रगों में उन्हीं पूर्वजों का खून है जो हिन्दुओं की रगों में है। उपासना-पद्धति बदलने से खून नहीं बदलता, पूर्वज नहीं बदलते। राम उनके भी पूर्वज थे- अनेकों आलिम मुसलमानों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है और वे खुशी-खुशी मन्दिर निर्माण में सहयोग देना चाहते हैं। किन्तु हाय-री भारतीय राजनीति!!! तूने हिन्दू मुसलमान ही नहीं, हिन्दुओं के अनेकों वर्गों को राजनीति का मुखौटा पहिनाकर, चन्द सुविधाओं का टुकड़ा डालकर कैसा विद्वेष का बीभत्स ताण्डव इस देश में पैदा कर दिया है जो न भूतो न भविष्यति-------- यदि यही हालत रही तो इस देश में क्या बचेगा----- क्या चर्चिल के वे शब्द साकार हो जायेगें----"Indians are not able to run the Administration and perhaps they are corrupt".

मुसलमान धर्म के मामले में बहुत दृढ़ और उदार है जैसे वह अपने धर्म का आदर करना जानता है वैसे ही दूसरे के धर्म का आदर करना भी जानता है। उसके पास मस्जिदों की कमी नहीं है नित नई मस्जिदें बनती जा रही हैं-- बनती रहेंगी इसलिए उनसे अनुरोध किया जाता है कि वे अपने करोड़ों हिन्दू भाइयों की आस्था को ध्यान में रखकर इस मन्दिर के निर्माण में अपना सहयोग दें और उनके इस सहयोग को मन्दिर के मुख्यद्वार पर स्वर्णाक्षरों में, राष्ट्र की एकता के प्रतीक रूप में, सदा-सदा के लिए अंकित कर दिया जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. का आगामी १०५वाँ वार्षिक वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन १९९०-९१

दिनांक - २४ तथा २५ नवम्बर १९९० को डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है:

१-शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन
(६-११-९०) ९-११-९० (मंगलवार)

२-वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन
२४,२५-११-९० (शनिवार तथा रविवार)

३-चुनाव परिणाम की घोषणा--
निर्वाचन की समाप्ति के बाद।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०
नारायण स्वामी भवन-५ मीराबाई मार्ग
लखनऊ

सभा के प्रचारकों की भजन प्रतियोगिता

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के अधिवेशन पर दि०- 24 नवम्बर 90 को रात्रि 7·30 बजे सभा के प्रचारकों की भजन प्रतियोगिता डी०ए०वी० कालेज लखनऊ के प्रांगण में होगी। जिसमें सभी की उपस्थिति अनिवार्य है। उसी दिन मध्यान्ह 4 बजे सभी उपदेशकों प्रचारकों की आवश्यक बैठक पण्डाल में होगी। कृपया समय पर पहुँच कर उपस्थिति अंकित करायें।

सभी उपदेशक महानुभावों को वैदिक सिद्धान्त (त्रैतवाद, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, सृष्ट्युत्पत्ति, आत्मा की अमरता, ईश्वर का स्वरूप) आदि विषयों पर दि०- 24 तथा 25 नवम्बर को किसी भी समय पूर्व सूचना देकर अत्यन्त संक्षिप्त व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया जा सकता है।

उपदेशकों प्रचारकों को इस निमित्त द्वितीय श्रेणी का रेलवे किराया दिया जायगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आ०प्रति०स०, उ०प्र०

हरिश्चन्द्र आर्य
अधि० उपदेश विभाग

राम जन्म भूमि मुक्ति आन्दोलन तथा आर्यसमाज

● डा० विनय प्रताप वरिष्ठ उपमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा,
उ0प्र0, गोरखपुर ।

आर्यसमाज धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतना और जागृति के लिये, रूढ़ियों, पाखण्ड तथा अन्ध-विश्वास के विरुद्ध एक सुधारवादी आन्दोलन है। जब-जब भी वैदिक {हिन्दू} धर्म, भारतीय संस्कृति, तथा आर्य {हिन्दु} राष्ट्र पर उसकी मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा तथा अस्मिता का संकट उपस्थित हुआ है, आर्यसमाज सदैव एक सजग प्रहरी के रूप में सन्नद्ध रहा है। चाहे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम रहा हो या अन्ध-विश्वास, पाखण्ड और अज्ञानान्धकार से सुषुप्त एवं स्वाभिमान विस्मृत हिन्दु समाज में चेतना जागृत करने का अवसर रहा हो या छुआ-छूत, बाल विवाह, नारी उत्पीड़न, और सती प्रथा जैसी कुरीतियों के विरुद्ध सशक्त एवं साहसयुक्त प्रतिरोध तथा प्रबल जनजागरण का अभियान रहा हो या इस महान राष्ट्र की एकता और अखण्डता का प्रश्न रहा हो या प्रलोभनों एवं षडयन्त्रों द्वारा धर्म परिवर्तन की समस्या रही हो असंख्य बलिदानों की श्रृंखला निर्माण कर हिन्दुसमाज के मनो- मस्तिष्क में नव-संगठन का संदेश देते हुए आर्य समाज ने ही उद्घोषणा की थी-

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि-जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानानाम्-उपासते।।

स्वातन्त्र्य समर में पंजाब केसरी-लाला लाजपतराय, अमर शहीद भगतसिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, लाला हरदयाल, शहीद ऊधम सिंह, अमर शहीद अशफाक़ उल्ला, सरदार करतार सिंह सदृश बलिदानियों को कौन विस्मृत कर सकता है ये सभी आर्यसमाज की ही प्रेरणा से स्फूर्त जवानियाँ थीं। आर्यसमाज प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही ललकार कर कहा था कि "अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य भी बुरे से बुरे स्वदेशी राज्य से बुरा है"। और "यदि मेरी अंगुलियों की बत्तियाँ बना कर भी जला दी जायँ तो भी मैं अन्धविश्वास, पाखण्ड-खण्डन, और छुआछूत उन्मूलन का कार्य करता रहूँगा"। "नारी नरकस्य-द्वारम" तथा शूद्रों और नारियों को वेदाध्ययन {ज्ञानार्जन} का अधिकार नही है, नारियों और शूद्रों के कानों में यदि वेद मन्त्र पड़ जाय तो सीसा पिघला कर भर दिया जाना चाहिये, "ढोल गंवार शूद्र पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी" जैसी समाज विरोधी तथा क्षुद्र मनोवृत्तियों का प्रबल प्रतिकार करते हुए ऋषि दयानन्द ने ही घोषणा की थी "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" तथा नारी को मातृ शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया था। नारी शिक्षा के क्षेत्र में आर्यकन्या विद्यालयों के रूप में आर्यसमाज के योगदान को कौन विस्मृत कर सकता है। बाल विवाह तथा विधवा संत्रास की घृणित प्रवृत्तियों का समूलोच्छेदन करते हुए आर्यसमाज ने ही वर्णाश्रम व्यवस्था तथा विधवा-विवाह का साहस पूर्ण कदम उठाकर सामाजिक तथा वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया था। जब राज्यों के एकीकरण का प्रश्न उपस्थित हुआ हैदराबाद की रियासत के भारत में विलय की समस्या आई तो हैदराबाद आन्दोलन का प्रणेता आर्यसमाज ही था। हंसते-हंसते हजारों आर्य शूर वीर सर पर कफ़न बाँध कर निकल पड़े थे। सैकड़ों बलिदान हुए परन्तु हैदराबाद स्वतन्त्र हुआ और उसका भारत में विलय हुआ। ये इतिहास के पृष्ठ हैं, आर्य वीरों का वह यशस्वी बलिदान भारतीय इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित है। परकीय दासता से आक्रांत हताश और निराश भारतीय जन-मानस जब स्वधर्म, और संस्कृति और उसके गौरवमय अतीत को विस्मृत कर धार्मिक शोषण, प्रलोभनों तथा षडयन्त्रों का शिकार होकर मुसलमान तथा ईसाई मत को ग्रहण करता चला जा रहा था और हिन्दु जाति के अस्तित्व रक्षा का प्रश्न आ पड़ा था तब अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्य बलिदानी ने दिल्ली की जामा मस्जिद के बुर्ज से गायत्री मन्त्र का पाठ कर अपने कमण्डल से सहस्त्रावधि स्वधर्म परित्यक्त हिन्दुओं पर जल छिड़क कर अभिसिंचित करते हुए हुंकार भरी थी "न हिन्दू पतितो भवति" और कहा कि जिस पर भी कमण्डल का जल बिन्दु मात्र भी पड़ गया और गायत्री मन्त्र का पाठ कर लिया वह सभी धर्म परित्यक्त हिन्दू पुनः वापस हिन्दू धर्म में प्रविष्ट हुए। इस प्रकार स्वधर्म प्रत्यावर्तन {शुद्धि} आन्दोलन के प्रणेता भी आर्य सन्यासी अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज थे। जिन्हें दिल्ली के चान्दनी चौक पर एक मुसलमान ने गोली मार दी थी। उस अमर बलिदानी की प्रतिमा दिल्ली के चांदनीचौक पर आज भी आर्यसमाज के गौरवमय अतीत तथा स्वधर्म रक्षणार्थ बलिदान की अमर गाथा का स्मरण दिलाती हुई प्रतिष्ठित है। वर्तमान में हिन्दी आन्दोलन, गोहत्याबन्दी आन्दोलन, सती-प्रथा का प्रतिकार, धर्म परिवर्तन के विरुद्ध {स्वधर्म प्रत्यावर्तन} {शुद्धि संस्कार} आदि अनेकों धार्मिक, सामाजिक, और राष्ट्रीय प्रश्नों पर आर्यसमाज सदैव अग्रणी रहा है।

खालिस्तान आन्दोलन के द्वारा जब पंचनद {पंजाब} प्रान्त को देश से पृथक करने का क्रूर आतंकवादी प्रयास प्रारम्भ हुआ तो देश की समस्त धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक संस्थाएं और संगठन किंकर्तव्य विमूढ़ स्थिति में पशोपेश में पड़े हुए थे और पहल कौन करें इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे तब आर्य समाज ने ही सर्वप्रथम घोषणा की "पंजाब भारत का अविभाज्य अंग है" सिख समुदाय भारत का राष्ट्रभक्त नैष्ठिक नागरिक और खालसा खालिस हिन्दू पंथ है"। इसके विपरीत आचरण करने वाले आतंकवादी गद्दार और लुटेरे हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय सम्मान, धार्मिक मान बिन्दुओं की प्रतिष्ठा और सामाजिक तथा सांस्कृतिक गौरव गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने में आर्यसमाज कभी भी पीछे नही रहा।

राम जन्म भूमि मुक्ति आन्दोलन भी आज किसी मत, पंथ, सम्प्रदाय अथवा किसी वर्ग विशेष की महत्वाकांक्षा या पूर्वाग्रह नही अपितु इस भारत भूमि पर रहने वाले कोटि-कोटि भारतवासी जो इस हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक तथा अटक से लेकर कटक तक की पावन धरा को अपनी मातृभूमि, पितृभूमि, तथा कर्मभूमि मानता हैं, जो राम और कृष्ण को अपना आराध्य और आदर्श मानता है उसकी मान, सम्मान तथा प्रतिष्ठा का प्रश्न है। यह किसी मन्दिर-मस्जिद, किसी पूजा पद्धति अथवा धर्म और मज़हब का दुराग्रह नही अपितु समग्र भारतीय राष्ट्र की अस्मिता और स्वाभिमान का प्रश्न है। और इस भारत राष्ट्र का प्रत्येक निवासी जो इसके मानबिन्दुओं की प्रतिष्ठा तथा उनके प्रति अपनी आस्था और निष्ठा रखता है वह हिन्दु इस नाम से जाना जाता है। यह हिन्दू शब्द अत्यन्त व्यापक है। भारत वर्ष की धरती पर रहने वाला, उसके आदर्श पुरुषों तथा पूर्वजों के प्रति निष्ठा और सम्मान रखने वाला वह प्रत्येक नागरिक जिसके शरीर में इस धरती के अन्न और जल से निर्मित रक्त की धारा प्रवाहित हो रही है। ऐसा प्रत्येक राष्ट्रवादी आबाल, वृद्ध नर नारी हिन्दू है, चाहे वह मुसलमान, ईसाई, फारसी कोई भी क्यों न हो। क्या भारत का मुसलमान अथवा ईसाई या पारसी सम्प्रदाय, राम, कृष्ण, महाराणाप्रताप, शिवाजी, चन्द्र शेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल और शहीद भगत सिंह को अपना आदर्श नही मानता। आज जब समस्त हिन्दू समाज बहादुरशाह जफर, अशफाक़ उल्ला और अब्दुल हमीद को अपना आदर्श और गौरव मान सकता है तथा मानसिंह और जय चन्द सरीखे देश द्रोहियों की भर्त्सना करता है तो क्या मुसलमान और ईसाई सीना ठोंक कर कह सकता है कि उसका आदर्श रावण था या कंस था या उसका आदर्श अकबर, औरंगजेब, चंगेज खाँ, मोहम्मद तुगलक या मीरजाफर था। क्या जनरल डायर-ओडायर या रानी विक्टोरिया को प्रतिष्ठित करने का साहस कर सकता है। फिर ऐसा दुराग्रह क्यों? क्या बाबर एक दुर्दान्त लुटेरा और आक्रमणकारी नही था? क्या इस इतिहास को बदला जा सकता है। क्या मुलायम सिंह या वी0पी0 सिंह या उनके साथी किसी नवीन इतिहास का सृजन कर यह सिद्ध कर देंगे कि बाबर महान समाज सेवी, राष्ट्रभक्त था। यदि ऐसा असम्भव है तो बाबरी मस्जिद जिसे आज मुस्लिम वर्ग भी अस्वीकार नही कर सकता कि वह राम जन्म भूमि मन्दिर को तोड़कर बनाई गई थी, जिसमें कभी नमाज नही अदा की गई, जहाँ कभी इबादत नही की गई, वह मात्र लुटेरे बाबर के दुस्साहस का प्रतीक है। भारतीय राष्ट्र के माथे पर कलंक का टीका है, हमारे अतीत के काले पृष्ठों का चिन्ह है उसे निश्चय ही मिटा दिया जाना चाहिए \ नेस्तनाबूद कर दिया जाना चाहिए उसका तो नामोनिशां मिटा दिया जाना चाहिये उसके प्रति

—— शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष.....

कैसा मोह और क्यों उसे स्थापित रखकर बार-बार अपने कलंकित अतीत का स्मरण करते रहें। और क्यों उसे आवश्यक रूप से अपने जन-जन के मन भावन आदर्श राष्ट्र पुरुष युग-प्रवर्तक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान-श्रीराम के जन्म स्थल पर ही रहने दें। यह मात्र दुराग्रह नही तो और क्या है। क्या आर्यसमाज और आर्यसमाजी इसे स्वीकार कर लेगा। कदापि नही। यदि मुलायम सिंह और वी0पी0 सिंह को अपने अतीत के उन काले पृष्ठों से अत्यधिक मोह जागृत हो गया है तो उसे उठाकर यथावत अन्यत्र क्यों नही स्थापित कर लेते। और प्रतिदिन उसकी पूजा अर्चना कर अपनी आत्म प्रवन्चना की तुष्टि करते रहें। अच्छा हो कि मुलायम सिंह उसे अपने गृह जनपद इटावा उठवा ले जॉय या वी0पी0 सिंह माण्डा में स्थापित करवा लें और वहीं उसे प्रतिष्ठित कर तृप्त होते रहें। अब तो धर्माचार्यों ने तथा राष्ट्रीय नेतृत्व ने इसे भी स्वीकार कर लिया है फिर कैसा आड़ियलपन। क्या यही आवश्यक है कि दासता और इतिहास की भूलों के इस प्रतीक को बहुसंख्यक राष्ट्रीय जनों के मानबिन्दुओं के सीने पर हो रख कर तथा भाई-भाई का खून बहाकर, देश की एकता और अस्मिता का गला घोंटकर देश को वर्ग संघर्ष और गृह युद्ध की आग में झोंक कर उस पर राजनैतिक स्वार्थों की रोटियॉं सेकी जॉय। वास्तव में यदि हम सब हिन्दू, मुसलमान मिल कर आज ठन्डे दिलो दिमाग से, बुद्धि और विवेक का परिचय देते हुए, सम्पूर्ण राष्ट्र का हित समक्ष रख कर, राजनैतिक स्वार्थो और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर दूरदर्शिता पूर्वक विचार करें तो यह तथ्य सामने आएगा कि चाहे वह 40 वर्षो का कॉंग्रेसी शासन रहा हो या 10,11 माह का असन्तुष्ट कॉंग्रेसियों (वी0पी0) सिंह का राज्य रहा हो सभी ने अपने राजनैतिक स्वार्थों की सिद्धि के लिए, वोटों की राजनीति करने के लिए हिन्दू, मुसलमान, सवर्ण और हरिजन तथा अगड़े और पिछड़े का विवाद खड़ा कर, भाई-भाई को एक दूसरे का दुश्मन बना कर, बॉंटो और राज्य करो की नीति अपना कर बार-बार खून की होली खेलने का प्रयास किया है। और येन केन प्रकारेण सत्ता चिरस्थायी हो यही प्रयास किया है। आज भी वी0पी0 और मुलायम इसी नीति के तहत चलकर अपनी शासकीय असफलताओं और अक्षमताओं को छुपाने और उनसे हमारा ध्यान हटाने के लिए ही इस विवाद को तूल देने की घिनौनी चालें चल रहे हैं। नहीं तो क्यों देश की इस सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या को हल करने के लिए 10, 11 माह में इन्होंने बारम्बार चेतावनी के पश्चात भी कभी कोई ध्यान दिया। क्या न्यायालय के निर्णय की दुहाई देने वाले ये चालबाज शासक क्या यह बतायेंगे कि 11 माह के अन्दर सर्व प्राथमिकता देकर लगातार सुनवाई कराकर न्यायालय के लिए निश्चित समय का निर्धारण कर इस विषय पर अब तक समय रहते निर्णय देने का निर्देश क्यों नहीं दिया। और अब जब पानी सिर के ऊपर पहुँच रहा है तब इनके कानों पर जूँ रेंग रही है। अब ये सर्वमान्य हल खोजने चले हैं। अबतक क्या करते रहे। किन्तु अब हम सब हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सवर्ण, हरिजन, अगड़े, पिछड़े सभी को मिलकर विचार करना होगा कि क्या हम इसी प्रकार इन निहित स्वार्थी राजनीति बाजों की अखाड़े की भूमि बने रहेंगे। क्या एक दूसरे का खून बहाकर इनकी सत्ता की प्यास बुझाते रहेंगे। या हम अपने बुद्धि और विवेक की, आपसी सौहार्द और भाईचारे की शक्ति से एकता और प्रेम की गंगा बहाकर इनकी शैतानी चालों को ध्वस्त कर दें। आर्यसमाज भारतीय राष्ट्रीय जन-जन का आह्वाहन करता है कि आइये हम मिल बैठ कर प्रेम पूर्वक विचार विमर्श कर इस आपसी मसले को शान्ति पूर्वक आपस में हल कर इन राजनीतिज्ञों तथा सत्ता के भूखे पदलोलुप स्वार्थी तत्वों के इरादों को मटियामेट कर दें।

इस प्रकार विचार करते हुए हमें समस्त आपसी भेदभाव भुलाकर, पूर्वाग्रहो और दुराग्रहों से ऊपर उठकर, सभी राष्ट्रवादी को एक साथ मिलकर आगे आना होगा। तथा प्रदेश और केन्द्र की इस सत्ता की भूखी सरकार को जो सत्ता के मद में मदान्ध हो कर देश की गरीब जनता की खून और पसीने की गाढ़ी कमाई पर ऐसा कर रही है तथा पुलिस और सेना जिसे कि देश की सीमाओं की सुरक्षा, आतंकवाद, चोरों-लुटेरों, हत्यारों, तथा अराजकतावादियों के विरुद्ध जेहाद छेड़ कर देश में अमन चैन, सुरक्षा और समृद्धि हेतु कटिबद्ध करना चाहिये था उसे अपने ही भाई बन्धुओं तथा देशवासियों का खून बहाने तथा उन पर बर्बर अत्याचार करने को प्रेरित कर रही है, उसे आगाह कर दो कि मदान्ध और सत्ता के मद में चूर शासकों चेतो कि ये सेना और पुलिस तुम्हारे हाथों की कठपुतली नहीं है उनमें भी बुद्धि और विवेक सम्पन्न लोग हैं अतः देश को गृह युद्ध के कगार पर खड़ा कर, वर्ग संघर्ष तथा अराजकता की आग में हाथ सेंकते हुए कहीं तुम्हारे ही हाथ न जल जायें।

इस राष्ट्रवादी आन्दोलन में आर्यसमाज का अत्यन्त महत्वपूर्ण दायित्व है कि अपनी गौरवमयी परम्परा को कायम रखते हुए देश की मर्यादा और अस्मिता की रक्षा के लिये विश्वहिन्दू परिषद के नेतृत्व में जो इस राम-जन्मभूमि आन्दोलन को आज नेतृत्व प्रदान कर रहा है उसके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर समस्त राष्ट्रवादी संगठनों की भॉंति राम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन के इस राष्ट्रीय महायज्ञ में अपनी भी आहुति देने के लिये समस्त आर्य वीर सन्नद्ध हो जाये। इसमें किसी प्रकार के संशय या सन्देह की कोई गुंजाईश न रहे। यही समय की मांग है यही राष्ट्रमाता का आह्वाहन है। यही आर्यसमाज के प्रान्तीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय नेतृत्व का दिशा निर्देश है। यह संक्रमण काल है, यह वह समय है जब देश की राष्ट्रीय और अराष्ट्रीय, देशभक्त तथा देशद्रोही, शान्ति प्रिय तथा अराजकतावादी, रामभक्त और बाबर भक्त ताकतों का स्पष्ट ध्रुवीकरण दृष्टिगोचर हो रहा है। आज इस आन्दोलन से हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई, कॉंग्रेसी, कम्युनिष्ट, भाजपाई जाति भेद. प्रांत भेद, भाषा भेद त्याग कर जुड़ता चला जा रहा है। और यह अटल सत्य है कि इस राम परस्त तथा बाबर परस्तों के निर्णायक आन्दोलन में, इस राष्ट्र यज्ञ में प्रत्येक भारतवासी को एक को चुनना ही होगा। दोरंगी चालें, दोहरी नीतियां, दो मुही बातें, दोहरी निष्ठाऐं, दोहरी आस्थाएं और दोहरी प्रतिबद्धताएं नही चलेंगी। इस प्रबल राष्ट्रीय एकात्मता की आंधी में मुलायम और वी0पी0 की संकीर्ण राजनैतिक स्वार्थों का पत्ता उड़कर कहा गिरे गा पता भी नहीं चलेगा। राम भक्ति के इस ज्वार में समस्त कलुष बह जायगा। अन्तिम विजय राम की ही होगी न कि रावणी आसुरी प्रवृत्तियों की अतः-

उत्तिष्ठ सन्नयध्वं, उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत् । ■

स्वास्थ्य-सुधा

पत्रः-"मेरी आयु 47 है। मुझे 4 वर्षो से पेट में गैस (तेजाब का रोग) हो गया है। भोजन के 2-3 घण्टे बाद छाती में जलन हो जाती है।"

-आदित्य प्रकाश, आर्यसमाज खेडा, अफगान (सहारनपुर)

पत्रोत्तरः- प्रत्येक भोजन बाद गारोलिल (चरक) दो गोली लेकर जिमनेट सीरप (एमिल) दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। गरम मसाले-मिर्च रहित भोजन के साथ फलाहार-सलाद लिया करें। रात्रि मे भोजन के आध घण्टा बाद 10 ग्राम त्रिफला चूर्ण लेकर जल पियें। सप्ताह में एक दिन पपीता या कोई फलाहार ही लेवें। भोजन बाद वज्रासन करते रहें। प्रात. खाली पेट कमवार किया करें:-भुजगांसन, पवनमुक्तासन, उत्तानपादासन, हलासन और शवासन।

२

पत्र- "पुत्र प्राप्त्यर्थ, पुत्रायन कैपसूल मुझे कैसे प्राप्त होगा?"

-संजय पाठक, गॉंधीनगर वरसतियों, डाकघर-मुसाईनगर, जनपद (बदायूँ)

पत्रोत्तर.- "निर्माणाधीन, "गुरुकुल आश्रम-ब्रम्हावर्त-बिठूर (कानपुर) को दान देने का मन में संकल्प करें। संकल्पित दान का अंशदान देकर, पुत्रायन कैपसूल प्राप्त करें। शेष दान पुत्रजन्म के दिन अर्पित करें।"

: पत्र के साथ, पत्रोत्तर व पत्रिका हेतु डाक लिफाफे -
स्वॉमी गुरुकुलानंद सरस्वती, आर्य समाज-पिथौरागढ़ पिन-26250। - को भेजें।

गुरुकुलानंद सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ।

आत्म-दर्शन क्यों?

• स्वामी विवेकानंद सरस्वती
प्रभात आश्रम, मेरठ

इस विषय के सिद्ध करने के लिए किसी युक्ति प्रमाण की आवश्यकता नही कि संसार में अधिकांश प्राणी दुःखी या दुःख मग्न दृष्टिगोचर हो रहे है, यदि महर्षि वात्सायन की परिभाषा के अनुसार देखें तो संसार शब्द का अर्थ ही दुःख से पूर्ण है-"त इमे मिथ्या ज्ञानादयो दुःखान्ता धर्म अविच्छेनैव प्रवर्त्तमानः संसारः इति" न्याय दर्शन वात्सायन भाष्य।। प्रकृति के अपने नियमानुसार ही यदि कार्य है तो उसका कारण भी होगा और कारण होगा तो उसका निवारण भी संभव है, जैसे रोग है तो रोग का हेतु भी है और रोग निवारण का उपाय भी है। जो व्यक्ति उन उपायों को जानकर तत्तत् कारणों का निवारण कर देता है वह संसार दुःख से सर्वथा मुक्त हो जाता है। उन दुःखों को दूर कर शाश्वतिक शांति सर्वजन सुलभ हो, इसको हमारे ऋषियों ने किया और उनके वे उपाय ही मानव मात्र के सम्मुख षड् दर्शन सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा वेदान्त के स्वरूप में जाने जाते है। इन दर्शनों के अतिरिक्त भी अन्य अनेक दर्शन हैं उनमें भी इनके प्रकार का विवेचन मिलता है, किन्तु वह विवेचन कितना ही विशद हो या संक्षिप्त। स्थूल हो या सूक्ष्म सबका एक मत है कि जब वस्तु का यथार्थ दर्शन हो जाये तो हमारे क्लेश नष्ट हो जाते हैं। अर्थात् दुःखों का मूल कारण है वस्तु के यथार्थ ज्ञान का अभाव अर्थात् अविद्या (अज्ञान) "अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषाम्" योग दर्शन, अविद्या अन्य अस्मिता राग द्वेषादि की प्रसावित्री (जन्मभूमि) है। उस अविद्या को दूर करने का उपाय है साक्षात्कार, जब हम किसी वस्तु के यथार्थस्वरूप को देख लेगें तो उसके यथार्थ दर्शन से पूर्व जो उसके संबंध में भ्रम के कारण से हमें क्लेश था, दर्शनोपरान्त सद्यः ही उसकी निवृत्ति हो जायेगी। जैसे भ्रम के कारण रज्जु में सर्प दर्शन प्रकाश के आने पर उसके वास्तविक दर्शन से तज्जन्य भय का स्वयमेव निवारण हो जाता है। स्थूल एवं सूक्ष्म दर्शन, बाह्य दर्शन से स्थूल दर्शन से अन्त का होता है। इसके दो साधन हैं-प्रज्ञा तथा बाह्य चक्षुः। अन्तः चक्षु से हम सूक्ष्मातिसूक्ष्म का दर्शन करते हैं, बाह्य से भौतिक तत्वों का। जैसे बाह्य स्थूल दर्शन से हमारा भ्रम मिटता है उसी प्रकार से अन्तः दर्शन से हमारा सम्पूर्ण क्लेश मिटता है। इसी बात को उपनिषद् का ऋषि जयघोष पूर्वक कहता है-"

भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशया।
क्षीयंते चाऽस्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ।।

तमात्मस्थं परि पश्यन्ति धीराः तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।। अर्थात् उस आत्म दर्शन से अनात्म वस्तुओं के प्रति राग, द्वेष, मोह, मात्सर्यादि की निवृत्ति और इन रागद्वेषादि के कारण जो चित्त चंचल विक्षिप्त मूढ हो गया था, अब वह निरुद्ध हो जाता है और जब चित्त निरुद्ध हो जाता है तब महर्षि पतञ्जलि के अनुसार होता है द्रष्टा का अपने स्वरूप में अवस्थान। "तदाद्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्" "योग । ।3।। यह स्वरूपावस्थान ही आत्म दर्शन है। दार्शनिक भाषा में यह आत्मोपलब्धि या आत्म-दर्शन कहा जाना है, उपनिषद इसे परम गति कहता है। यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह। बुद्धिश्च न विचेष्टते तमाहुः परमां गतिम्।। इस परम गति को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक प्रबुद्ध मानव की चेष्टायें होती है। इसे याज्ञवल्क्य स्मृति में परम धर्म कहा गया है। "अयं तु परमो धर्मो यद योगेनात्मदर्शनम्" योग के द्वारा जो आत्म दर्शन है वह परम धर्म है।

इस प्रकार हम देखते है, आत्म दर्शन हमारे समस्त दुरितों का क्षय एवं क्लेशों को नष्ट करने वाला है। आत्मदर्शन वह महोषधि है जिसके सेवन करने से कोई भी व्याधि हमें व्यथित नही करती। इसलिए समस्त ऋषियों ने समवेत स्वर से कहा- उस एक आत्मा को तुम जानो। (साक्षात्कार) करो, अन्य निरर्थक बातों को छोड दो, यही अमृत का सेतु है, "तमेव आत्मानं विजानीथ अन्या वाचो विमुच्चथ अमृतस्य एष सेतुः। उपनिषद।। जिसने उसको देख लिया, उसका साक्षात्कर दर्शन कर लिया। उसके अनात्म दर्शन से उत्पन्न होने वाले व्यवहारों से जनित पाप, ताप, संताप नष्ट हो जाते हैं और वह उनसे बच जाता है। अतः आइये, हम इस दीपावली की पावन बेला में बाह्य ज्योति को प्रज्वलित करते हुए अन्तर की ज्योति को प्रज्वलित कर अशेष पाप वृत्तियों से मुक्त हो जावें।

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात्"। □

बालमीकि आर्य हैं

• ओम प्रकाश बग्गा
मंत्री आर्यसमाज, माडल टाउन बरेली

हिन्दू जाति के चार वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होते थे जो गुण कर्म स्वभाव अनुसार कर्म से माने जाते थे। यह छुटाई-बडाई का चिन्ह न थे। प्रत्युत एक दूसरे के पूरक थे और यह चारो वर्ण मिलकर जाति की सुदृढ आधारशिला थे। यह क्रम महाभारत तक चलता रहा। महाभारत के युद्ध के साथ-साथ देश का पतन भी आरम्भ हो गया तथा यह चारो वर्ण कर्म से न मानकर जन्म से माने जाने लगे और इनमें अन्य त्रुटियाँ भी आने लगी। ब्राह्मण-क्षत्रिय और वैश्य यह उच्च माने जाने लगे तथा शूद्रो को अछूत तथा अस्पृश्य समझा जाने लगा। यह भी सुना जाता है कि दक्षिण में जो शूद्र वेद आदि शास्त्रों के मंत्रों को सुन लेता था उसके कानो में पिघला हुआ सीसा डाल दिया जाता था अथवा जब शूद्र सड़क पर निकलता था तो लकड़ी के द्वारा सड़क पर शब्द कहता जाता था ताकि किसी सवर्ण जाति के व्यक्ति पर उस की छाया न पड जाये अर्थात् अछूत तो अछूत उस की छाया तक से भी बचा जाता था। वास्तव में यह अपमान की पराकाष्ठा थी जो हम उनपर करते रहे और यह उनकी हम पर अत्यन्त निष्ठा थी कि जो सब अपमान को सहते हुये हिन्दू जाति से चिपके रहे। परन्तु देश सुधारक महर्षि दयानंद ने इस अत्याचार को वेद विरुद्ध और अमानवीय बताया तब से आर्य समाज अछूत उद्धार की ओर अग्रसर हो गया। महात्मा गाँधी ने हिन्दुओं के इस अन्याय को देखा तो कांग्रेस ने भी शूद्र कहे जाने वाले लोगो के उत्थान के लिये संविधान द्वारा कई कार्यक्रम रखे।

उस दिन को नही भूलनाा चाहिए जब संविधान के निर्माता अत्यन्त विद्वान माननीय बाबा अम्बेदकर को जब विदेशो से शिक्षा प्राप्त करके न्यायाधीश बनाया गया तो सवर्ण जाति का चपरासी उनके सामने फाइलें रखने में झूठे दम्भ के कारण अपना अपमान समझता था परन्तु जो रोग जाति में 5-6 हजार वर्षो से चला आ रहा था वह एक दम कैसे निकल जाता उसके जाने में भी समय का लगना अनिवार्य है और प्रसन्नता की बात है कि उस अस्पृश्यता का कलंक बहुत कुछ मात्रा में धो दिया गया है अब हिन्दू जाति में घृणा के भाव एक प्रकार से समाप्त हो रहे है। क्या बाबू जगजीवन राम का उदाहरण पर्याप्त नही होगा कि जिन्होंने सम्मान के साथ लोकसभा के सदस्य, गृह मंत्री, रक्षा मंत्री विदेश मंत्री आदि महत्वपूर्ण पदों को सम्भाला तथा भारत में किसी भी अन्य मंत्री से अधिक काल तक शासन पर छाये रहे। अब जबकि हिन्दू जाति सन्मार्ग पर आ रही है तो हमारे यह शूद्र भाई जो हर हाल में हमारे साथ हजारो वर्ष चिपके रहे अब हम से पृथक होने का क्यो मन बना रहे है। गलतियाँ किस समाज में नही होती लड़ाइयाँ किस जाति में नही होती, शिया या सुन्नी का भेद, कैथोलिक प्रोटस्टेंन्ट की दरार किस मजहब में नही है। इस कारण हमारा निवेदन है कि अन्य जाति में जाने का विचार छोड दें। अब इस जाति का बच्चा-बच्चा नही, व्यक्ति-व्यक्ति नही जगद्गुरु भी इसमें विश्वास रखते है कि यह वर्ग हजारो जाति का अभिन्न अंग है। 1979 में प्रयाग के तीर पर चारो जगद्गुरूओं ने इनको अपनी जाति में मिलाने को आहवान किया था अतः हमारे पूर्वजों की गलतियों पर न जाकर हमारी जाति का का पूर्ववत् अंग बने और वह दिन दूर नही जब आप को खोया हुआ सम्मान दोबारा लौटकर मिलेगा। गीता में उपदेश दिये गये श्रीकृष्ण के इन वचनों को न भूलें-"स्वधर्मे निधनं श्रेय परधर्मो भयावहः" अर्थात् अपने धर्म में मरना भी श्रेष्ठ है और दूसरे का धर्म भय देने वाला है। □

जोधपुर में महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती की अंतिम कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास में दिनांक 27-9-90 से दिनांक 30-9-90 तक महर्षि दयानंद स्मृति-सम्मेलन, एवं सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ। 29 मई 1883 को इसी स्थान पर महर्षि दयानंद को प्राणघाती विष दिया गया था। महर्षि की इसी स्मृति में उक्त सम्मेलन एवं महायज्ञ का आयोजन किया गया।

आर्यसमाज विकास नगर का उत्सव

आर्यसमाज विकास नगर लखनऊ का वार्षिकोत्सव दिनांक 9 से 11 नवम्बर तक धूमधाम से मनाया जायेगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। स्थानीय जनता सादर आमंत्रित है।

शोक समाचार

दिनांक 9 सितम्बर को श्री ओं प्रेमी चतुर्थाश्रमी का निधन हो गया। श्री प्रेमी जी ने जीवनभर वैदिक धर्म की सेवा की है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद के कुछ मंत्रों का पद्यानुवाद किया साथ ही भरत की पत्नी माण्डवी का जीवन चरित पद्यानुवाद किया। दि0 10 सितम्बर को गुरुकुल होशंगाबाद में शोक प्रस्ताव पारित किया गया। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

ऋषि दयानन्द के बाद कौन?

• पं० ब्रह्मानन्द "आज़ाद"
सिद्धान्ताचार्य बम्बई

18 वीं शताब्दी में एक ओर भारत वर्ष की स्थिति एक गीले गुंथे आटे की भाँति थी जिसे दोनों ओर से भय था यदि बाहर रखें तो कौवे और अन्दर रखें तो चूहे दोनों ही खाने की ताक में थे। भारतवासियों पर अंग्रेजों के अत्याचार, वेद धर्म संस्कृति, शिक्षा आदि को बदलने का बृहद कुत्सित आयोजन, आदि से सर्वत्र देशवासी त्रस्त हो चुके थे इन्हें इनसे उबारने वाला कोई दृष्टिगोचर नही हो रहा था सर्वत्र निराशा छायी थी। अविद्यान्धकार, ढोंग पाखण्ड, मूर्तिपूजा, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, बाल विवाह स्त्री, शुद्र को विद्या व शिखा-सूत्र से वंचित रखना, पंडित वर्ग की वेद विरुद्ध निंदनीय कार्य तथा कथित धर्म नेताओं द्वारा धर्म की नित-नूतन कल्पित धर्म की व्याख्या एवं उस पर आचरण के लिए विवश धर्मप्रिय मानव समुदाय पूर्णतः ऊब चुका था, ऐसे विषम समय में इसाइयों द्वारा हिन्दुओं का ईसाईकरण लालच या भय से भी जारी था। हमारे गौरवमय प्रेरणास्पद इतिहास को छीछालेदर कर इसमें कपोल कल्पित इतिहास की रचना भारतवासियों को पूर्णतः ईसाई बनाने के लिए कुचक्र का चलना तथा देशवासियों को धर्म संस्कृति, सदाचार, सहिष्णुतादि से दूर कर पूर्ण भौतिकवादी बनाने का दुष्प्रयास अविराम चल रहा था ।

वहीं दूसरी ओर मथुरा की एक जीर्णशीर्ण कुटिया में कृशकाय प्रज्ञाचक्षु व्याकरण सूर्य गुरवर्य स्वामी विरजानन्द से आदित्यबाल ब्रह्मचारी, वेदज्ञ, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी गुरु की सेवाकर उनसे शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। शिक्षा पूर्ण हुई दीक्षा भी हो चुकी। पुरातन परम्परानुसार स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु की प्रियवस्तु लौंग लाकर उनके चरणों में सादर अर्पण कर विनम्र उनसे विदा लेने की विनती की। गुरु-विरजानन्द जी ने कहा कि दयानन्द हमें तुमसे इन लौंगों की दक्षिणा नहीं चाहिए। दयानन्द ने विनय पूर्वक कहा कि गुरुदेव मेरे पास इसके सिवा और कुछ नहीं है जिसे मैं आपके चरणों में भेंट कर सकूँ। स्वामी विरजानन्द जो ने गम्भीर स्वर में कहा कि दयानन्द तुम्हारा जीवन तुम्हारे पास है जाओ इसे वेदोद्धार देश एवं जन कल्याण में लगाकर भारत से अविद्यान्धकार कुरीतियाँ, कुप्रथाएं, अशिक्षा दूर करो। भारतमाँ परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी है उसके बन्धन काटो। बस मुझे दक्षिणा देना चाहते हो ते इसे स्वीकार कर हमें दक्षिणा दो। स्वामी दयानन्द ने गुरु जी की आज्ञाशिरोधार्य कर उनका आशीष प्राप्त कर कार्य क्षेत्र में उतर आए।

जिस समय आचार्यप्रवर गुरुदेव दयानन्द कार्य क्षेत्र में आए उस समय सारा संसार एक तरफ था और दूसरी ओर निर्भीक ऋषि दयानन्द ने वेद और सत्य का प्रकाश लेकर अविद्यान्धकार की पाखण्ड नगरी में आग लगा दी बस फिर क्या था चारों ओर से कुढ़े बैठे लोगों को और भी अवसर मिल गया और उन सबने मिलकर ऋषि को मिटाना चाहा किन्तु उनका दुर्भाग्य कि आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द से उन्हें मुँह की खानी पड़ी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरुदेव दयानन्द ने सर्वप्रथम हरिद्वार में कुम्भ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका लहराकर कौपीनधारी दयानन्द ने तथाकथित धर्मविध्वंसकों को शास्त्रार्थ की चुनोती दी इसी प्रकार काशी शास्त्रार्थ में वहां की पण्डित मण्डली को मुँह की खानी पड़ी थी ऋषि के प्रश्नों का उत्तर किसी से भी देते न बन पड़ता था। सर्वत्र ऋषि दयानन्द की विजय हो रही थी। ऋषि ने कुरीतियों, कुनीतियों, अशिक्षा, अविद्या, वेदों के दुष्प्रचार के बढ़ते हुए दुष्प्रभाव का समूलोच्छेदन किया। परिणामतः विरोधियों की संख्या भी बढ़ गयी इसमें अब हिन्दू मुस्लिम, ईसाई आदि अनेक प्रकार के मत सम्प्रदायों के असंख्य अनुयायी थे। परिणामतः इसका प्रकोप ऋषि को कई बार विष के रूप में मिला किन्तु ऋषि ने उफ तक न की कहते है कि भगवान शंकर ने देवों के हितार्थ एक बार गरल पान किया था, किन्तु ऋषि ने संसार के कल्याणार्थ अनेक बार विषपान ही नहीं अपितु अनेक अन्य भी असहनीय कष्टों को सहा किन्तु अपने पथ पर सर्वथा अडिग रहे। ऋषि दयानन्द ने सत्य को आधार बना, ईश्वर को अपना रक्षक मानकर ही राजस्थान में कहा था कि "यदि अज्ञानी जन मेरे जीते जी मेरी इन अंगुलिओं को काटकर बत्ती का काम क्यों न लें तो भी मैं सत्य धर्म से न हटूंगा।" "राजन यदि मैं चाहूँ तो आपकी राज्य की सीमा को एक दोड़ में पार कर लूँ किन्तु परमेश्वर के उस असीम राज्य में जन्म-जन्मातंर तक भी दौड़ता रहूँ तो भी उससे पार न हो सकूँगा। और इसी प्रकार ऋषि दयानंद ने अडिग रहकर देश कल्याणार्थ अनेकशः कार्य किए। जब हमारे देशवासी पराधीनता में भी सोते थे तो ऋषि रातों में जागकर देश कल्याण का उपाय सोचते थे। उन्होंने विचारा कि यदि इस देश से अंग्रेजी राज्य समाप्त हो जाए और स्वदेशी राज्य आने पर पुनः सत्य धर्म, न्याय, शिक्षा समाजसुधारादि कार्य हो सकेंगा। अतः ऋषि ने प्रच्छन्न रूप से अंग्रेजों को खदेड़ने का बीड़ा उठाया। और तत्कालीन राजाओं महाराजाओं के पास जाकर सिंह की मांद में सुप्त सिंहो को जगाया, अनेक क्रान्तिकारियों के लिए मार्गदर्शक बने सन् 1857 की स्वतन्त्रता वाली सुप्त अग्नि को पुनः प्रदीप्त कर देशवासियों को स्वतन्त्रता कराने का बिगुल बजा दिया परिणामतः मातृभूमि की बलिवेदी पर "वयं बलिहृत स्याम" की वेदोक्ति को सार्थक करते हुए अनेक क्रान्तिकारीयों ने स्वदेशी राज्य हेतु अंग्रेजों से लोहा लिया। ऋषि ने सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य का नारा लगाया इस बात का साक्षी ऋषि का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है। परिणामतः बाल गंगाधरतिलक ने (इन्होंने पूना में ऋषि दर्शन किया और अपने प्रश्नों का यथेष्ट उत्तर भी पाया) जैसे सुप्रसिद्ध क्रांतिकारियों ने स्वराज्य "हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।" की साधिकार सार्थक घोषणा कर क्रान्तिकारियों की अग्नि में घी का काम किया। यद्यपि कहने को तो आज इतिहास यही कहता है कि स्वतन्त्रता की मन्त्र दाता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस है कि जिसके संस्थापक स्वयं एक अंग्रेज (सर ए०ओ० ह्यूम अवकाश प्राप्त जिला जज इटावा उ०प्र०) थे। किन्तु इतिहास वालों को शायद यह तथ्य नहीं मालूम कि सत्यार्थ प्रकाश की रचना कांग्रेस के जन्म से कई दशक पूर्व की है तब तो शायद कांग्रेस के रूप का स्वप्न भी किसी कांग्रेसी को न रहा हो। ऋषि दयानन्द ने अपनी दृष्टि चारों ओर रखी। हिन्दुओं की हो रही दुर्दशा को सुधारने का आजीवन निस्पृह भाव से कार्य किया।

ऋषि के पश्चात् ऋषि की आत्मा गुरुदत्त, लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्य शिरोमणियों में रहकर सर्वदा समाज सुधार करता रही। ऋषि ने अपने समय में ही पुण्यनगरी मुंबई में आर्यसमाज की स्थापना करते हुए यह सर्वथा स्पष्ट कर दिया था कि संसार का उपकार करना, सत्यका प्रचार करना, उसको ग्रहण करना, असत्य का परित्याग, एकमेव निराकर परमेश्वर की उपासना, वेद को ही ईश्वर प्रदत्त अपौरुषेय ग्रन्थ का मानना, समान एवं यथा योग्य व्यवहार, अविद्या का नाश करना ही कहा था। और इस समाज के प्रत्येक सदस्य को नियमानुसार आचरण तथा संसार को वेदोक्ति "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के अनुसार पुनः आर्य बनाना बताया था। संसार के समस्त विद्वानों ने आर्य समाज के इन सार्वभौम दशों नियमों को नतमस्तक हो स्वीकार किया क्योंकि ये नियम अकाट्य हैं। और उसी ऋषि की ही अहर्निश सेवा का ही पुण्य प्रताप है कि आज भी उपरोक्त नियमों को सारा संसार निर्विरोध किसी न किसी रूप में स्वीकार करता है।

परन्तु दुर्भाग्य हमारा यही है कि जब से आर्यो में आपसी भेद-भावनाएं, कुर्सीमोह, पद-प्रतिष्ठा लोभ, आदि की स्वार्थी समाज विरोधी, प्रगति अवरोधक भावनाएं पनपी बस तभी से आर्यो की उच्चतम स्थिति भी पतन की अथाह खाई की ओर बढ़ चली है। पहले के आर्य समाजी सर्वदा समाज की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझते थे और अपना सर्वस्व समाज के हितार्थ अर्पण कर अपने को धन्य समझते थे किन्तु आज तथा-कथित आर्यजन आर्यसमाज का समूलोच्छेदन करने में जुटे हैं। इन्हें बस पद, प्रतिष्ठा, मालाँ, झूठी वाहवाही, चाटुकारिता खूब भाती है। ये हमेशा होती रहे समाज चाहे किसी भी गर्त में चला जाए इन्हें इसकी किंचितमात्र भी चिन्ता नहीं है। युवाशक्ति आज जो कि राष्ट्र की रीढ़ है उसका ह्रास इन्ही अधिकारियों द्वारा आज हो रहा है उन्हें आगे न लाकर उन्हें उत्साहित करने की बजाए हत्सोहित कर रहे हैं परिणामतः हमारे नवयुवक दिशा विहीन होकर अनेक अनैतिक समाज विरोधी निंदनीय दुष्कार्यों से जुड़ रहे हैं और इसका परिणाम भी इन्हीं को भोगना पड़ेगा यह ध्यान रखना चाहिए।

कहते हैं कि पहले आर्य समाजी होने पर न्यायालय में न्यायाधीश यह

— शेष पृष्ठ ८ पर

अल्लोपनिषद् एक समस्या

• आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री
बदायूँ

उपनिषद् एवं ब्राह्मण ग्रन्थ वस्तुतः वेदपरक तथा वैदिक आख्यान हैं। इनमें स्वतः प्रमाण वेदानुकूल अंश ही मान्य हैं। मुस्लिम शासन काल में किसी ने "अल्लोपनिषद्" की रचना करके मुहम्मदी सम्प्रदाय मत को उपनिषदों से जोड़ दिया विद्वान लेखक ने इस भ्रान्तधारणा का युक्तिपूर्वक खण्डन किया है--

— सम्पादक

गतांक से आगे....

इस विषय पर हम इतना ही ना चाहेंगे कि हमने स्वयं स्तम्भ · ऐसा खुदा हुआ नहीं देखा है। यदि रबी में खुदा हुआ हो भी तो उसमें रम कारण तो यह हो सकता है कि कृत का धातु पाठ और उनसे होने ले प्रत्ययों से करोड़ों नहीं असंख्य द बनते हैं, यहीं तक नहीं संसार किसी भी भाषा का कोई शब्द उसी र्थ में भी संस्कृत धातुओं से उणादि ययों की कल्पना करके सुव्यवस्थित प से बनाया जा सकता है, मेरे विद्यार्थी ल में संस्कृत भाषा की क्षमता और सकी अनन्यता की बात गुरु जी से ल रही थी तो उन्होंने बताया कि रे शब्दों की रचना संस्कृत से संभव ।

उदाहरण दिया, जैसे "माङ्·" ातु से उणादि डालिक,डियाँ,डोलाना त्यय कर दिये जायें और डित परे ने से "मा" धातु के आकार का ाप हो जाने पर मालिक,मियाँ और ौलाना शब्द बन जायेंगे और उनका र्थ भी वही होगा। अस्तु, संस्कृत ी विचित्र रचना क्षमता पर फिर कभी ाखा जायेगा।

यहाँ अल् {भूषण,पर्याप्तिवारणेषु} ातु से अल्+ला=अल्ला निष्पन्न हो सकता ा, पर इस प्रकार अल्लोपनिषद् अर्थवरण ुक्त या अथर्ववेद से बताना धृष्टता ।

विजय स्तम्भ पर अल्ला शब्द दा है तो इसका दूसरा कारण यह ो हो सकता है, मुसलमान राज या ल्पी ने चालाकी से या उस समय ुसलमान शासक के दबाव से लिख दिया ागा। पर अल्ला शब्द के स्तम्भ पर नखा जाने मात्र से इसकी वैदिकता थमपि सिद्ध नहीं होती। रही बात ाद या अशुद्ध पाठ की "तो इस विषय ी ऊपर उद्धृत मूलपाठ से ही निश्चय ो सकता है। डा0 भूप सिंह जी ने ो पाठ उद्धृत किया है "उस पाठ े नो किसी वेदपाठी की चंचलता "कौतूहल" ारारत अथवा टु संकल्पना ही झलकती ;, क्योंकि वेद की रक्षार्थ मध्यकालीन वद्वानों ने आठ विकृतियों की कल्पना ी हुई थी, जिससे बाहर का कोई ब्द आकर वेद मंत्र में न मिलने पाये। मलावट का परीक्षण करने में क्रम,जटा,माला, ान,दण्ड आदि रीति से कण्ठस्थ कराने ाले पण्डितों से पाठ करके देख लिया ाता था। अब भी संदिग्ध पाठ का नश्चय करने के लिये "न तस्य प्रतिमा ास्ति" में "नतस्य" यह पाठ शुद्ध है या "न "तस्य" यह पाठ। इसका पता वेदपाठी तत्काल बता देगा कि "न तस्य" यह पाठ ही शुद्ध है।

उसी प्रकार "दिव्यानि धत्ते इल लल्ले" आदि का जटा पाठ में बदला हुआ पाठ श्री डा0 महोदय के द्वारा उद्धृत है। परन्तु जटा पाठ भी अंतिम पंक्ति में अशुद्ध है। जटा पाठ जैसे "दिव्यानि धत्ते धत्ते दिव्यानि" दिव्यानि धत्ते इत्यादि, ज्ञात हो कि स्वामी जी का दिया पाठ मूलपाठ है। और जुलाई के उपकारी में दिया पाठ जटा पाठ है। अतः जटाओं में मत उलझिये। वैसे हम यहाँ पर हिन्दी अनुवाद भी दे सकते हैं परन्तु इसका कोई भावपूर्ण अर्थ अरबी के शब्दों के साथ मिलकर नहीं बनता, तथापि इल लल्लाः ईश्वर के अतिरिक्त ईश्वर, रसूल, पैगम्बर, मोहम्मद "हम्द" धातु से बना जिसका अर्थ है स्तुति करने योग्य अकबर महान्, "अकबरस्य" में यहाँ षष्ठी विभक्ति लगा दी है, अल्ला ईश्वर का नाम। बस इतने शब्द यहाँ अरबी के आये हैं। संस्कृत विद्वान शेष अर्थ स्वयं कर लें।

श्री स्वामी जी महाराज का सत्यार्थ प्रकाश में किया हुआ यह अनुमान ठीक लगता है कि "अकबर शाह के समय" किसी ने यह "अल्लोपनिषद्" बनाई हो। मेरे निज अनुमान से अब्दुल रहीम खानखाना या उन जैसा व्यक्ति जो संस्कृत अरबी दोनों का जानकार था, उसने लिखी हो। रहीम की ऐसी अनेक कविता -यें मिलती हैं, जो अरबी, फारसी और संस्कृत का मिश्रित रूप हैं। "खेट कौतुकम्" में एक उदाहरण देखिये:-

भवेदाफताबो{सूर्य} यदा षष्ठ खाने{कक्षा·में} मिरीखो ऽ {मंगल}थवा मुश्तरी{वृहस्पति}वक्त-खाने,अतारिद् विलग्नो भवेद् वक्मपूर्णे।। भवेददीनदारोऽथवा बादशाहः।।

विद्वान और समाज सुधारकों को चाहिये कि वे सजग रहें। आज भी हिन्दुओं के श्रद्धेय देवता के लिये प्रयुक्त उत्तम विशेषण युक्त कीर्तन् कविताओं में विशेष परिवर्तन न कर केवल "ईशू" का नाम घुसाकर कीर्तन करा सामान्य जनता को गुमराह किया जा रहा है। ◻

ज्योति जगे जग के जन-जन में

• राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

वेद पथों पर स्वयं चलें हम,
यह संसार चलाएं।

परहित-परसेवा में अर्पित,
हो तन-मन-धन सार।
राष्ट्रवेदि पर सदा समर्पित,
हो सर्वस्व हमारा।
ज्योतिपुंज हम बनें प्रखरतम,
दूर हटे अंधियारा।
मन में हो सद्भाव सुजाग्रत,
गूंज रहा यह नारा।

मानवता के पावन पथ पर,
हम सब कदम बढ़ाएं।
वेद पथों पर स्वयं चले हम,
यह संसार चलाएं ।।

सत्य- धर्म के पथिक बनें हम,
करें मनुजता का कल्याण।
शोषित-उत्पीड़ित मानव को,
निर्भय होकर दें हम त्राण।
सुप्तावस्थित मानवता के-
उर में भरें नवलतम प्राण।
ज्योति जगे जग के जन-जन·में,
दिव्य-उदात्त सुज्योनिर्मान ।

धैर्य तथ अक्रोध भावना,
जीवन में अपनाएं।
वेद पथों पर स्वयं चलें हम,
यह संसार चलाएं।।

जाति-पाँति के, भेद-भाव के,
बन्धन सारे तोड़ें।
टूटे हुए हृदय जन-जन के,
फिर से हम सब जोड़ें।
दूषित करते शुचि समाज को,
छुआछूत- अराजकता-अव्यवस्था-
अनाचार का झण्डा फोड़ें।

समता-समरसता- शुचिना के,
पावन भाव जगाएं।
वेद पथों पर स्वयं चलें हम,
यह संसार चलाएं ।।

पृष्ठ ७ का शेष

कहते हुए अपना न्याय आर्य के पक्ष में इसीलिए देता था कि आर्य सर्वदा सत्य बोलते हैं। किन्तु आज न ही ऐसे आर्य रह गए तो फिर न्यायाधीश ही कहाँ से मिलेंगे?

ऋषि के पश्चात् और आजादी के पूर्व आर्यसमाज में जो उत्साह था वह आज जाने क्यों कर ठण्डा होता जा रहा है। हम ऊपर उठने उन्नति करने की बजाए नीचे और अवनति की ओर क्यों अग्रसर होते जा रहे है? क्या इसका कारण हमारी अदूरदर्शिता समाज विरोधी कार्य, अनेक निन्दनीय कार्य नहीं है? क्या हमने कभी मिलकर अपनी हो रही अवनति पर विचारा हैं? या फिर समाज में आकर उत्सव में हार पहन लेना, चुनाव में तिकडम भिडाकर पद पाना, और पदाभिमान में आकर समाज को अवनति करना ही सीखा है? प्रभु हमें सद्बुद्धि दें और हम सन्मार्ग पर चले। आज ऋषि की दिव्य आत्मा मोक्ष पाकर भी शायद सुखी न होगी क्योंकि उसकी लगायी पुष्प वाटिका आज वीरान होती जा रही, पुष्पों की सुगंधी समाप्त हो रही है। आज यदि हम इसकी दुर्दशा देखते हुए भी यदि आँखे बन्द किए हुए हैं तो हमें धिक्कार है। -अस्तु--

ऋषि दयानन्द ने सारे संसार को जगा दिया और एक नई राह दिखायी किन्तु आज फिर सारा संसार सो रहा है उसे कौन जागाएगा? मतमतान्तरों की प्रबल आंधी 18 वीं शताब्दी पे भी दूने बेग से आज बह रही है, अविद्या फिर अपने पांव पसार रही है, कुप्रथाएं फिर प्रारम्भ हो रही है- {दिवरालादि सतीकाण्ड} आज देश पराधीन तो नही है किन्तु इसका भय समाप्त है क्या? आज यही प्रश्न बार-बार सामने आना है कि संसार का उपकार करने वाली आर्यसमाज आज स्वयं अवनति की ओर बढ़ रही है तब संसार का उपकार कैसे होगा? क्या हमारे आर्य जन आपसी वैर भाव, लोभवृत्ति त्यागकर समाज कल्याण के लिए क्या फिर से ऋषि पथ के अनुगामी बनेगें? हमें विश्व को आर्य बनाना है, किन्तु पहले स्वयं को। अतः अब आर्यो ! एक दयानन्द से काम नही चलेगा समय की मांग के साथ आज घर-घर दयानन्द, गुरुदत्त लेखराम, श्रद्धानन्दादि प्रभृति महात्माओं नेताओं की आवश्यकता है। आइए इस ज्योतिर्मय पर्व पर अपने अन्दर भी पुनः ऋषि की ज्योति से ज्योति जलाकर अपना और संसार का पथ आलोकित कर लें। ◻

मुस्लिम युवती की शुद्धि तथा विवाह

दिनाक 14 अक्टूबर को जिला सभा अलीगढ द्वारा एक मुस्लिम युवती जिसका नाम मुन्नी था उसको शुद्ध करके नया नाम कु0 मुनीशा रखा गया और चि0 अशोक कुमार शर्मा के साथ वैदिक रीति से सभा के प्रधान श्री पूरन सिह ब्रहमचारी तथा मत्री डा0विजय पाल सिह की देख-रेख में शुभ विवाह सम्पन्न हुआ। तथा सत्यार्थ प्रकाश भेट किया गया। उपस्थित जन समूह ने नव दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया।

● मैनपुरी 4-10-90 । आर्य स्त्री समाज के तत्वावधान में, नगर के प्रमुख उधोगपति कुँ0 ब्रजेन्द्र सिह जी द्वारा दिनक 28-9-90 से प्रारभ किया गया सप्त-दिवसीय यजुर्वेद-पारायण वृहद-यज्ञ गुरुकुल एटा के आचार्य पू0 विश्वदेव जी ब्रहमा द्वारा शांति पूर्वक सम्पन्न हुआ।

● आर्यसमाज मेहदावल (बस्ती) का 74वॉ वार्षिकोत्सव दिनाक 5 से 7 अक्टूबर तक बडे धूमधाम के साथ मनाया गया।

शोक समाचार

आर्य समाज सुलतानपुर (गगागज) प्रयोग के प्रधान बाबा शिवनारायण आर्य का देहावसान दिनाक 12-8-90 को हो गया। उनकी आयु 80 वर्ष की थी। वे कर्मठ आर्यसमाजी थे, उन्होंने बालक-बालिकाओं के अध्ययन हेतु अलग-अलग विधालय खोले तथा 22 वर्ष से लगातार यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का पच दिवसीय कार्यक्रम भी करते रहे। परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा को सदगति तथा शोक सतप्त परिवार के धैर्य हेतु प्रार्थना की गई।

कुष्ठ : कारण-बचाव-उपचार

• स्वामी गुरुकुलानंद सरस्वती
शास्त्री, योगाचार्य, साहित्यरत्न,
आयुर्वेदाचार्य, बी0एससी0, एम0बी0बी0एस0

महात्मा गाँधी जयन्ती- 2 अक्टूबर प्रत्येक देश में कुष्ठरोग से निरोग होने का संदेश देता है। 1990 ई0 में संसार को बने हुये, लगभग 1 अरब 97 करोड वर्ष हो गये। कुष्ठ रोग विगत चौंतीस सौ वर्षों से चला आ रहा है। आर्यावर्त अर्थात् भारतदेश, विश्व का प्राचीनतम देश है। संसार में लगभग 1 करोड़ 20 लाख कुष्ठरोगी हैं तथा 3 कुष्ठरोगियों में 1 भारत का है।

कुष्ठरोगी के नाम से- एक ऐसे व्यक्ति का चित्र सामने आता है, जिसका शरीर विकृत हो चुका है और उसकी ओर देखने का मन न करें। यदि समय से कुष्ठरोग का पता चल जाय तथा उपचार प्रारम्भ हो जाय, तो यह रोग ठीक हो सकता है।

सुन्न-झनक-धब्बों का भान।
कुष्ठरोग की, है पहचान ।।

कुष्ठरोग, "माइकोबैक्टीरियम-लेप्री" नामक कुष्ठ जीवाणु से पैदा होता है। इन कुष्ठ जीवाणुओं को सूक्ष्मदर्शीयंत्र से 12सौ गुणा बड़ा करने पर महीन आधे-चावल के समान देखा जा सकता है। क्षयरोग, -हैजा-मलेरिया-टाइफॉइड-आदि में कुष्ठरोग सबसे कम संक्रामक है। एक विशेष बात यह है कि 80 प्रतिशत कुष्ठरोगी असंक्रामक होते है। केवल 20 प्रतिशत कुष्ठरोगी ही संक्रामक अर्थात् रोग फैलाने वाले होते है। कुष्ठ, वंशानुगत रोग नही है।

संक्रामक रोगी से, निरोगी व्यक्ति में कुष्ठ- त्वचा से त्वचा का बार-बार सम्पर्क होने पर- हो सकता है। रोगी की वस्तु वापरने से भी रोग हो सकता है। रोगी के खाँसने-छींकने से कुष्ठजीवाणु बाहर आकर- 3 से 46 दिन तक जीवित रहते है। कुष्ठजीवाणु, वायु के माध्यम से भी- नाक की छिद्र-झिल्ली से प्रवेश पा जाते हैं। कुष्ठजीवाणुओं के प्रवेश होने पर 2 से 5 वर्षों के बाद कुष्ठ-चिन्ह-लक्षण उद्भव होने लगते हैं।

बहुधा लोग, कुष्ठ से बचाव के उपाय पूछा करते हैं। यह बात भली-भाँति समझ लेना चाहिए, कि अपने घर में कोई भी कुष्ठरोगी न रहते हुये भी- किसी को भी, किसी समय कुष्ठरोग हो सकता है। कुष्ठरोग से बचाव हेतु तीन बातें ध्यान में रखें। पहली बात-कुष्ठरोग संक्रमण से अपने-आपको बचावें। परन्तु जब तक समाज में संक्रामक कुष्ठरोगी विधमान हैं और हम पहचान नही पाते, तब तक बचाव असंभव हैं। कुष्ठसंक्रमण का प्रभाव, कुष्ठप्रतिरोधक शक्ति पर निर्भर है। यदि किसी की प्रतिरोधकशक्ति (इम्म्युनिटी) सर्वोत्तम हो, तो कुष्ठ जीवाणु -प्रवेश के बाद भी- उसे कुष्ठ नही हो सकता। ऐसे व्यक्ति लगभग 995 प्रति हजार हैं- अर्थात् 5 प्रति हजार व्यक्ति कुष्ठरोग से पीडित होते हैं। इस प्रकार भारत देश में लगभग 40 लाख कुष्ठरोगी हैं। भारत के दक्षिणी व पूर्वी तटीय भागों में कुष्ठ की व्यापकता अधिक है। तमिलनाडु, पांडिचेरी, आन्ध्रप्रदेश, उडीसा, और पश्चिमी बंगाल में कुष्ठ-व्यापकता 5 प्रति हजार से अधिक है। केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र बिहार, मध्यप्रदेश, गुजरात एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में कुष्ठ व्यापकता 1 से 5 प्रति हजार है। हरियाणा और राजस्थान में व्यापकता-दर 1 रोगी प्रति हजार या इससे भी कम है।

दूसरी बात-यदि संक्रमण से बचाव कठिन हो, तो नियमित कुष्ठ-निवारक औषधि सेवन से कुष्ठ रोग के जीवाणुओं का संक्रमण नही हो सकेगा। कुष्ट से बचाव हेतु टीके की खोज जारी है।

तीसरी बात- यदि कुष्ठ रोग प्रकट होने से बचना कठिन हो, तो फिर कुष्ठ के प्राथमिक लक्षण-चिहन उभरते ही औषध-उपचार आरम्भ कर देना चाहिये। कुष्ठ से बचने हेतु वर्ष में एक बार परिवार के सभी व्यक्तियों की जाँच अपने डाक्टर अथवा सरकारी कुष्ठ-केन्द्र में करा लेनी चाहिए। याद रखें- आप स्वयं के प्रयत्नों से ही कुष्ठरोग से बच सकते हैं।

कुष्ठ के प्राथमिक लक्षण-चिहन के अन्तर्गत- जिसमें खाज, दर्द-जलन आदि नही होती। यह त्वचा के समतल या उभरा हुआ हो सकता है। धब्बे का रंग, त्वचा से फीका या पीला-गुलाबी हो सकता है, कभी-कभी धब्बा न होकर, त्वचा की बनावट-पोत बदल जाती है तथा चमकदार-चिकनी (तैलीय) दीखती है। त्वचा का रंग ताँबा-जैसा भी हो सकता है। त्वचा का स्पर्शज्ञान नष्ट होने पर- पिनचुभन या घावदर्द का ज्ञान नही होता तथा ठण्डा-गरम का पता नही चलता।

कुष्ठ किसी भी आयु में हो सकता है। महिलाओं की तुलना में पुरुषरोगी दोगुने होते हैं। बच्चों में प्रतिरोधक शक्ति अति उत्तम होने के कारण, 80 प्रतिशत बच्चों में कुष्ठ के प्राथमिक चिहन अपने-आप समाप्त हो जाते है। कुष्ठरोगी माता-पिता की सन्तानें अपने-आप पीडित नही होती। अपितु कुछ सन्तानें, यह रोग संक्रमण द्वारा प्राप्त करती है। यदि माता रोगी है तथा वह नियमित उपचार ले रही है, तो शिशु माँ के दूध के माध्यम से बचाव पा जाता हैं। कुष्ठ प्रकट होने पर- उपचार के अभाव में-अंग-प्रत्यंगों में सुन्नता के साथ-साथ, विकलांगता आने लगती है।- अंगुलियों का टेढ़ा-मेढ़ा होना, घाव-पडना, भौहों के बाल झडना, आदि विकृतियाँ आने लगती है। बिना उपचार के असंक्रामक रोगियों में 3 वर्ष के बाद विकृतियाँ तथा घाव की दशायें आती हैं, जबकि संक्रामक रोगियों में 5 वर्ष के बाद भी कम विकृतियाँ-साधारण घावों के साथ आती हैं।

आम नागरिक, असंक्रामक कुष्ठ रोगियों के घाव व विकलांगता को देखकर- उन्हें परिवार-समाज से बाहर करके कुष्ठ-भिखारी बनाने के कारण बनते हैं। दूसरी ओर संक्रामक रोगी, जिनमें विकृतियाँ विलम्ब से आती हैं-समाज में बिना-बाधा के घुलते-मिलते हुये रोग फैलाने के कारण बनते हैं।

कुष्ठ जीवाणु, तन्त्रिकातन्तु (नर्व) पर आक्रमण करते हैं, और फलस्वरूप सुन्नता तथा विकृतियाँ आती हैं। अतः सुन्न अंगों को चोट व आग से बचाते रहना चाहिये। कुष्ठ का उपचार बहुत सरल है। कुष्ठ का पता चलते ही डैपसोन की एक गोली नित्य खाना आरम्भ कर देना चाहिये। अच्छा-भला व्यक्ति भी यह गोली खाय, तो उसे कुष्ठ नही होगा।

कुष्ठ के शीघ्र-सटीक उपचार हेतु "बहुऔषधि उपचार" के अंतर्गत 5 से अधिक खाने वाली औषधियों की खोज हो चुकी है। नियमित उपचार से असंक्रामक रोगी 6 मास में तथा संक्रामक रोगी 24 मास में ठीक हो जाते हैं। त्वचा परीक्षण में कुष्ठ जीवाणु शून्य होने पर कुष्ठ रोगी को रोगमुक्त माना जाता है। परन्तु कुछ मास तक और औषधि लेते रहना अच्छा है। विलम्ब से उपचार कराने वालों की विकृतियाँ शल्यक्रिया से ठीक हो जाती हैं। साधारण विकृतियाँ तैलमालिश-व्यायाम की फिजियोथेरपी विधि से ठीक हो जाती हैं।

भारत में 1982 से 1989 तक "बहुऔषधि उपचार" द्वारा 15 लाख से अधिक कुष्ठ रोगी, रोग मुक्त हो चुके हैं। अब हर वर्ष उपचार के बाद- भले चंगे होकर वापस लौटे रोगियों की संख्या-नये पता लगे रोगियो की संख्या से अधिक रहती हैं।

विगत चार वर्षों में भारत में 336 कुष्ठ इकाइयां, 278 शहरी कुष्ठकेन्द्र और 38 नमूना सर्वेक्षण इकाइयाँ स्थापित की गई हैं। बहुऔषधि उपचार की नई योजन कुष्ठ रोग-प्रभाववाले और 112 जनपदों में लागू की गई हैं। कुष्ठ प्रभावित शेष 84 जनपदों में भी नई योजना 1992 ई0 लागू कर दी जायेगी। हर कुष्ठ केन्द्र पर कुष्ठ तथा हर प्रकार के चर्मरोगी देखे जाते हैं। भारत सरकार तथा सामाजिक संगठनों द्वारा "कुष्ठ-उपचार-उन्मूलन" हेतु कई चिकित्सालय भी चलाये जा रहे है। 2000 ई0 के बाद कुष्ठ-उन्मूलन की पूरी संभावना है। अर्थात् संसार से कुष्ठ रोग का नाम मिट जायेगा।

कुष्ठ रोगियों में हीनभावना नही रहनी चाहिये। कुष्ठ-मुक्त व्यक्तियों को व्यवसाय सहित पुनर्वास दिया जाने लगा हैं। यह बहुत हर्षवर्धक बात है, कि अब कुष्ठरोग साध्य होने के कारण-सामाजिक कुष्ठ-कलंक दूर हो रहा है। अतः हताश निराश-कुष्ठरोगी और निरोगी जन सुनिश्चित कर लेवें, कि "कुष्ठ-उपचार-बचाव" अभियान-कुष्ठ उन्मूलन की ओर बढ चला है।

भारतीय अस्मिता के प्रतीक दयानन्द

• सतीशचन्द्र गुप्त, एडवोकेट
मुरादाबाद

यदि हम संसार के रूप को प्रतिपादित करना चाहते हैं तो हमें संसार के बाहय एवम् आन्तरिक स्थितियों को देखना होगा। भारतीय अस्मिता की पुष्टि करने हेतु कर्म ही पूजा है इसका सन्देश देने हेतु स्वामी दयानंद का जन्म इस भारत की धरती पर हुआ था।

वेदों का निचोड़ ही स्वार्थ रहित कर्म ही जीवन का आधार है,-का पुनीत सन्देश भारतीय अस्मिता के मंत्र द्वारा स्वामी दयानंद ने दिया था। इसलिये प्रस्तुत लेख में जिसमें कई एक विद्वानों के विचारों का निचोड़ है, मैं संकलित करके भारतीय जनमानस के सामने रख रहा हूँ।

संसार के सब मनुष्यों में सब अंगों की समानता होने पर भी प्रत्येक मनुष्य में अपनी कुछ ऐसी विशेषता अवश्य होती है जिससे उसके व्यक्तित्व का निर्धारण होता है और उसे अन्य मनुष्यों से अलग पहचाना जा सकता है। मनुष्य के व्यक्तित्व की तरह ही प्रत्येक राष्ट्र का भी एक व्यक्तित्व होता है, जिसके कारण उसे अन्य राष्ट्रों से अलग करके पहचाना जा सकता है। जैसे मनुष्य के व्यक्तित्व के दो रूप हैं- एक बाहरी और एक आन्तरिक, उसी तरह किसी राष्ट्र के व्यक्तित्व के भी दो रूप हैं- एक वाहय और एक आन्तरिक। जिस तरह मनुष्य का निर्माण शरीर और आत्मा के संयोग से होता है उसी तरह राष्ट्र का निर्माण भी उसके बाहय भूखण्ड-भौतिक परिवेश और आन्तरिक स्वरूप को जिसे भारत की अस्मिता कहना चाहिये-जिस रूप में ऋषि दयानन्द ने पहचाना, उस रूप में पहचानने वाले अन्य व्यक्ति दुर्लभ हैं।

भारत के बाहय परिवेश को "आर्यावर्त्त" शब्द जिस यथार्थता से व्यक्त करता है, उस यथार्थता से अन्य कोई शब्द नही। यह भारत का पर्यायवाची वह आदिकालीन शब्द है जिसमें भारत के प्राचीन गौरव पूर्ण रूप से समाहित है। इस शब्द के साथ आर्यों द्वारा देवत्व की चिर आराधना, विदेशों में अपनी संस्कृति के प्रसार की अदम्य लालसा और वह विजिगीषा निहित है जो किसी और शब्द के द्वारा प्रकट नही होती। ऋषि दयानन्द ने इसी शब्द का पुनरुद्धार करके देश की पराधीनता के उस युग में भारतवासियों को नये आत्म-विश्वास से और प्राचीन संस्कृति के प्रति अद्भुत आस्था से भर दिया।

भौतिक परिवेश के पश्चात जहां तक इस देश के आन्तरिक परिवेश का सम्बन्ध है, उसको भी जिस रूप में ऋषि दयानन्द ने पहचाना, वह अन्यत्र दुर्लभ है। ऋषि दयानन्द ने बार-बार यह कहा है- "मैं अपनी ओर से कोई बात कहने नही आया, ब्रहमा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त जिस विचारधारा को मानते चले आये, मैं उसी विचारधारा का प्रचार करने आया हूँ"। हजारों वर्षो के प्राचीन इतिहास में" ब्रहमा से जैमिनी मुनि पर्यन्त वाली विचारधारा पर काई छा गई थी, ऋषि दयानन्द ने उस काई को हटाकर पुन. वैदिक संस्कृति का उद्धार किया। भारत का समस्त वाड्मय, वेदों को केन्द्र मानकर उनके चारों ओर ही घूमता है। इस वाड्मय में वेदों के साथ वेदांग, उपवेद आरण्यक, प्रतिशाख्य, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद, दर्शन पुराण, रामायण, महाभारत और वे सैकड़ों काव्य तथा नाटक शामिल हैं, जिनके आधार पर आज भी भारत संसार के सामने अपना सिर ऊँचा करके खड़ा हो सकता है। वेदों का और वैदिक संस्कृति का जिस जोर-शोर के साथ ऋषि दयानन्द ने नाद गुंजाया, विगत पांच हजार वर्षो में आदि शंकराचार्य के सिवाय अन्य किसी व्यक्ति से उसकी तुलना नही की जा सकती।

हिन्दू समाज में अनेक धार्मिक और सामाजिक कुरीतियां प्रचलित थीं। पुराने पंडित उन सबका आधार वेदों को ही बताया करते थे। उदाहरण के लिये संस्कृत के पंड़ितों का कहना था कि यज्ञों में पशु हिंसा का विधान, सती प्रथा, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, जन्म परक जाति व्यवस्था, स्त्रियों और शूद्रों को वेद तथा विद्या पढ़ने से वंचित रखना जड़-पूजा आदि सब वेदों में वर्णित हैं। इसलिये वे धर्म का अंग हैं। सबसे पहले व्यक्ति केवल ऋषि दयानन्द ही है, जिन्होंने इन सब कुरीतियों का केवल तर्क के आधार पर खण्डन किया, परन्तु अपनी मान्यताओं को शास्त्रीय आधार भी प्रदान किया। जिन वेदों के नाम से इन सब कुरीतियों का समर्थन किया जाता था, ऋषि दयानन्द ने उन्हीं वेदों के सही अर्थ करके वेद मन्त्रों के द्वारा ही इन सब कुरीतियों का खण्डन किया। इन्हीं कुरीतियों के कारण विधर्मी लोग हिन्दू समाज के पद दलित और उपेक्षित वर्ग को तरह-तरह के प्रलोभन देकर, या अपनी सत्ता के समय भय दिखाकर, धर्मान्तरण किया करते थे। जब सारे हिन्दू समाज को यह पता लगा कि ये कुरीतियां कपोल कल्पित है और वेदों में इनका कहीं वर्णन नही है, तो उसे विधर्मियों के सामने लज्जित होने के बजाय अपने धर्म पर और अपनी संस्कृति पर गर्व की अनुभूति हुई।

ऋषि दयानन्द ने स्व- धर्म, स्व - संस्कृति, स्व - भाषा, स्व - राज्य, स्व- वेश और स्वदेश आदि पर जो इतना जोर दिया है, उसका मुख्य कारण वही "स्व" की पहचान है। इस "स्व" के बिना भारत जैसे व्यक्तित्वहीन है। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर निर्जीव होता है और वह अग्नि की भेंट कर दिया जाता है, उसी प्रकार अपने इस "स्व" के बिना भारत निर्जीव और व्यक्तित्व-शून्य हो जायेगा। □

यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सुलतानपुर भावा (गंगागंज) प्रयाग का 33वाँ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक सम्पन्न हेगा। जिसमें आर्यजगत के विद्वान, सन्यासी, भजनोपदेशक पधार रहे हैं, आर्य जनता सादर आमंत्रित है।

ऋषि दयानन्द तुमको [illegible]

• पं. गंगाप्रसाद विद्यार्थी
जबलपुर

हे युगावतार, हे ज्योतिपुंज,
तुम थे पावनता की प्रतिमूर्ति।
तुम पुण्योदय इस धरती के
अरु मानवता की अमर विभूति।।1।।

तुमने ढूँढा सच्चे शिव को,
और बताया जन-जन को।
मूर्ति पूजा का दम्भ तोड़
दिखलाया प्रभु को कण-कण में।।2।।

तुमने मृत्यु का हल ढूँढा,
मरना न पड़े बहु जीवन में।
मोक्ष मिले, अमरत्व मिले,
पुनरागमन न होवे काया में।।3।।

जब तक जीवन तब तक शुचिता,
पतन न हो जीवात्मा का।
सत्य से तनिक भी डिगें नहीं,
ध्यान सदा जगदीश्वर का।।4।।

जीव मात्र से प्रेम करें,
बध करें न किसी भी प्राणी का।
प्राणि मात्र का हित हम साधें,
भेट न धर्मी अधर्मी का।।5।।

तन भी पावन, मन भी पावन,
धन भी पावन हो प्राणी का।
तब वह "पावन तम" मिल जाए,
पता यही अविनाशी का।।6।।

था योग तुम्हारी काया में,
अरु वेद तुम्हारी वाणी में।
थी दया तुम्हारे अन्तर में,
आनन्द तुम्हारी आत्मा में।।7।।

था ब्रहमचर्य तब नस नस में,
भूत दया थी बसी मन में।
था ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में,
भगवान तुम्हारे तन-मन में।।8।।

समाधि लगाकर के तुमने,
भगवान को था पहिचान लिया।
फिर सबको ही भगवान दिखाना,
अपना कर्तव्य था मान लिया।।9।।

वेदों का ज्ञान बताया था,
मनुस्मृति का आचार सुझाया था।
हम सबको ही आर्य करें,
यह वैदिक नाद गुंजाया था।।10।।

आर्यसमाज मेहदांवल (बस्ती)

प्रधान- श्री जगदीश प्रसाद
मंत्री- श्री प्रभुदयाल गुप्त
कोषाध्यक्ष-श्री कान्त कुमार

आर्य [illegible]

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

पजीकरण स. एल. डब्ल्यू / एन.पी. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
कार्तिक शुक्ल- ६ संवत २०४७ वि
दिनांक १८ अक्तूबर १९९०

दूरभाष २४५६६२

आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से आ०स०से निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा" के नाम से एक अवैधानिक संगठन खोल कर आर्यजनता में भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इस तथाकथित अवैधानिक संगठन को अपना किसी प्रकार का कोई सहयोग न दें।

- सभामन्त्री

गुरुकुल बिठूर (कानपुर) में यज्ञोपवीत संस्कार

कानपुर। गंगातट पर स्थित "गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त- बिठूर (कानपुर) में सोमवार 24 सितम्बर 1990 को प्रात: 10 बजे कक्षा-6 में प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार धर्माचार्य पं0 ब्रह्मप्रकाश जी वाजपेयी के पौरोहित्य में मुख्याधिष्ठाता आचार्य जयराम त्यागी की अध्यक्षता में हुआ। गुरुकुल कांगड़ी के पाठ्यक्रमानुसार कक्षा-6 में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश भी उक्त अवसर पर किया गया। प्रवेश शुल्क 380 रुपये तथा मासिक शुल्क (भोजन-दूध-घी-साबुन-तैल-मंजन-स्याही-चिकित्सा हेतु) 140 रुपये है।

गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ़

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं. २२४१, ८७) मार्गशीर्ष कृष्ण २/६ रविवार संवत २०४७ वि दिनांक ४/११ नवम्बर १९९० (घोषणा पत्र स.७/२७-२ ७५)



मन्दिर तेरा हर मानस में

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे ।
यस्यां देवा असुरान् अभ्यवर्त्तयन्।।
-- वेद

जिस हमारी पावनभूमि पर पूर्वकाल के दिव्यशक्ति-सम्पन्न पराक्रमी महापुरुषों ने नाना प्रकार के विक्रम के कार्य किए तथा प्रजापीड़क असुरों का दमन किया, वे हमारे पूज्य हैं, हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं। उनका मन्दिर हर मानस में है।

मनमोहन तिवारी

इन्द्रदेव पाठक

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रू मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष
अंक - ४३/४४

शासकीय व्यवस्था चकनाचूर

राममन्दिर स्थल पर केसरिया झण्डा फहराया गया

अयोध्या 30 अक्टूबर,— केन्द्रीय रिजर्व पुलिस, अर्धसैनिकबल, पी०ए०सी० तथा अन्य सुरक्षाबलों की जबर्दस्त नाकेबन्दी और सुरक्षा के चक्रव्यूह को ध्वस्त करते हुए रामधुन गाती हुई अपार भीड़ ने तथा कथित बाबरी मस्जिद पर धावा बोल दिया और मस्जिद की छत पर चढकर केसरिया झण्डा फहरा दिया।

अयोध्या में आज प्रात से ही रामभक्तों का सैलाब उमड़ा पड़ रहा था। मुख्यमन्त्री के उदघोष "परिन्दा भी पर नही मार सकता" की तैयारी को तहस-नहस करते हुए कारसेवकों ने गोलियों की बौछारों के बीच सुरक्षाबलों द्वारा बनाये गये अवरोधों को तोड़ते हुए मन्दिर के मुख्य गर्भगृह में प्रवेश किया और मस्जिद परिसर से लगी खिड़कियों को तोड़ते हुए गुम्बज पर चढ़कर तोडफोड़ की तथा भगवाध्वज फहरा दिया। समाचार लिखे जाने तक अत्यन्त विकट स्थिति बनी हुई है। गोलियों की बौछार में कितने मरे और कितने घायल हुए इसका सही विवरण अभी तक ज्ञात नही हो सका है। अयोध्या - फैजाबाद के आसपास के क्षेत्रों में पुलिस और कारसेवकों के बीच दर्जनों स्थानों पर संघर्ष जारी है। अयोध्या का सरयू तट संघर्ष का सबसे बडा स्थल बना हुआ है। हजारों लोगो को पुलिस ने कई बार खदेड़ा किन्तु रामभक्तों का दबाव बढता ही जा रहा है। अपुष्ट खबरों के अनुसार पचास चक्र से अधिक गोलियाँ चलाई जा चुकी हैं और कई बार लाठीचार्ज भी किया जा चुका है। इन सबके बावजूद हजारों की संख्या में कारसेवकों ने पंचकोसी परिक्रमा भी प्रारम्भ कर दी है। इस पंचकोसी परिक्रमा में अयोध्या तथा उसके आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली जनता ने भरपूर सहयोग दिया है। हजारों की संख्या में बच्चे बूढे महिलाएं तथा शहर एवं देहाती इलाकों के नागरिक सडकों पर कर्फ्यू तोडकर निकल पडे हैं और रामधुन गाते हुए तथा 'सौगन्ध राम की खाते हैं, हम मन्दिर वहीं बनाएंगे" के गगनघोषी नारे लगाते हुए फतेहगज, चौक, रकाबगज, दिल्ली दरवाजा, अमानीगंज, नाका, सआदतगंज आदि में पुलिस के जबर्दस्त घेरे को तोड़ते हुए आगे बढ़ रहे हैं। परिक्रमा पर बढती हुई भीड के दबाव के कारण सुरक्षा की तमाम व्यवस्थाए चरमरा कर टूट गई हैं। कई ओर से कारसेवकों के समूह के समूह जन्मभूमि मन्दिर की ओर बढ़ रहे हैं। देखते ही देखते जन्मभूमि स्थल के चारों ओर हजारों साधू, महात्माओं, कारसेवकों तथा रामभक्तों की भीड प्रात से ही जुट गई। भक्ति और श्रद्धा के जोश में रामभक्तों ने मुख्यद्वार के आगे लगे लोहे के मजबूत बैरियर को तोड दिया। बैरियर के टूटते ही विश्व हिन्दू-परिषद के नेता श्रीशचन्द्र दीक्षित और मनीराम छावनी के महन्त नृत्य गोपाल दास सबसे आगे आ गये और रामभक्तों से मन्दिर के अन्दर आने के लिए आह्वान करने लगे। जिलाधिकारी तथा वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के चेहरे पर हवाइयाँ उड रही थीं। कहा जाता है कि जिलाधिकारी भीड के रुख को समझकर वहाँ से खिसक गये। प्रात ।। बजकर 55 मिनट पर बैरियर टूट गया और उसके कुछ ही मिनटों बाद **"राजा रामचन्द्र की जय"** बोलते हुए लगभग एक हजार रामभक्त, रामजन्मभूमि परिसर में दाखिल हो गये। घुसते समय इन पर लाठियों से फिर आँसू गैस से हमला किया गया गोली भी चली है लेकिन भीड इससे विचलित नही हुई और अन्दर बढ़ती ही गई।

कारसेवकों ने अन्दर पहुँचकर दीवार पर हल्ला बोल दिया, साधु,पुरुष, बच्चे ईट-पत्थर और लोहे की सरियों से दीवार तोड़ने में जुट गये। दीवार का एक हिस्सा टूट गया। कारसेवकों का एक समूह गर्भगृह के गुम्बद पर चढ़ गया और उसे भी क्षतिग्रस्त कर दिया। तथाकथित विवादित स्थल पर ईंटों और मलबे का ढेर लगा हुआ है। कारसेवक खुशी में नाचने गाने तथा रोने लगे। लगभग 35 मिनट तक कारसेवा चलती रही तथा इस अवधि में बाहर और अन्दर तैनात सुरक्षाबल मूकदर्शक बना खड़ा रहा। इस प्रकार मन्दिर निर्माण का एक अध्याय समाप्त हुआ समझना चाहिए।

● ● ● ● ● ● ●

अब बौखलाए हुए प्रशासन ने सेना भेजकर मन्दिर परिसर को खाली करा लिया है और अपने प्रचार माध्यमों {रेडियो,टी०वी० आदि} द्वारा कुछ अन्यथा ही प्रचार किया जा रहा है। मगर सत्य कब तक छिपाया जा सकेगा यह भविष्य बताएगा— ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ मार्गशीर्ष-२/९ संवत २०४७ वि
दिनांक ४/११ नवम्बर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

रक्तपात कैसा ?

समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवान् इव।
- महर्षि वाल्मीकि

वह मर्यादापुरुषोत्तम, धरती का अमरपुत्र, समुद्र की तरह गम्भीर और हिमालय की तरह धैर्यवान था ऐसा अनोखा, अद्भुत, वैदिक- मर्यादाओं का जीवन्त ज्वलन्त प्रतिमन्त तो आज तक इस धरती पर हुआ ही नहीं- हमारा चैलेन्ज है। उसका पितृप्रेम, मातृप्रेम, पत्नीप्रेम, सेवकप्रेम शरणागत प्रेम अनुपमेय है अनुपमेय। ऐसा राजा ऐसा पुत्र ऐसा भाई, ऐसा स्वामी और ऐसा दीन प्रतिपालक न भूतो न भविष्यति--
"तो सो एक तू ही, और दूसरो न राजा राम"। क्या यह आर्य (हिन्दू) जाति उसे कभी भुला सकती है?-- **यावच्चन्द्र दिवाकरौ"** वह अमर है, उसका यश अमर है, उसका नाम अमर है। हर आर्य के मानस-मन्दिर में वह विराजमान है। उसके ज्ञान और गुणों की सीमा नहीं है। ऋषियों और मुनियों ने उसकी पूजा की है, उसके गुणगान गाये हैं-- कोई बात तो जरूर रही होगी वर्ना ऋषि मुनि किसी को घास डालने वाले नहीं हैं।

उसके नाम के साथ हमारी आँख खुलती है। उसके नाम के साथ हमारी आँख बन्द होती है। उसका नाम लेकर हमारी अरथी उठाई जाती है। अन्तिम श्वास के साथ उसका नाम लेना हम अहोभाग्य समझते हैं। करोड़ों वर्षों की तपस्या के बाद उसे हमने त्रेता में पाया था। वह ईश्वर का परम प्रतिनिधि था। उसने भुजाएं उठाकर प्रतिज्ञा की थी- निश्चरहीन करहुँ महि भुज उठाय प्रण कीन्ह। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अन्तिम समय में "हे राम!" - कहकर पुकारा था। वे जीवनभर उसके **"रामराज्य"** की कल्पना मनोमय मन्त्र से गये। प्रजा के ऐसे उमड़ते हुए सागर को संगीनों और तलवारों से मत रोको। उसके नाम पर खून बहाने की इजाजत मत दो। राम राजा थे राजा ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है। तुम्हारे इस व्यवहार से जनता की ईश्वर पर अश्रद्धा होने लगेगी। राम मानवता का सच्चा हितैषी था। कोटि-कोटि भारतीय जनता की आस्था उससे जुड़ी हुई है। वह मन्दिर और मस्जिद से बहुत ऊँचा है। कोई ऐसा उपाय निकालो जिससे समस्त मानवजाति उसके चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करने की प्रेरणा ले। उसका चरित आकाश में गुंजायमान हो रहा है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण ने कहा था- **"राम!, तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है"।**

अयोध्या में जो कुछ हुआ उसे किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। शक्ति के सहारे जनमानस की भावनाओं को कुचलने का प्रयास खतरनाक सिद्ध हुआ है। यदि मन्दिर मस्जिद विवाद का फैसला न्यायालय द्वारा ही होना है तो क्यों नहीं शासन ने न्यायालय की विशेष पीठ बनाकर समयबद्ध कार्यक्रम के तहत शीघ्र निर्णय घोषित किए जाने को बाध्य किया। राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया अध्यादेश "जिसे सही दिशा में देर से उठाया गया सही कदम माना जा रहा था- क्यों वापस ले लिया गया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री ने जगह-जगह सदभावना रैलियों में हिन्दुओं के प्रति जो विषवमन किया है वह एक वर्गविशेष का तुष्टीकरण नहीं तो और क्या है। जितनी शक्ति और सरकारी धन अयोध्या की घेराबन्दी करने में व्यय हो रहा है उसका एक तिहाई भी मुसलमानों के कल्याणार्थ दे दिया जाता और उन्हें मनाया जाता तो वे मान सकते थे।

आर्यसमाज मूर्तिपूजा का विरोधी अवश्य है लेकिन अपने पूर्वजों के स्मारकों का वह रक्षक है क्योंकि वे हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं। हमारा मुसलमान भाइयों से पुनः अनुरोध है कि वे इस तथ्य को हृदयगम करें कि **राम** जिस प्रकार हमारे पूर्वज थे उसी प्रकार उनके भी पूर्वज थे। क्या राष्ट्र की एकता के नाम पर वे हिन्दू जाति को यह तथाकथित मस्जिद उपहार में भेंट नहीं कर सकते हैं। उनके पास पूजागृहों की कमी नहीं है। हिन्दू जाति उनके इस उपकार को कृतज्ञता के साथ स्वीकार करेगी और इस उपकार के बदले उनके कल्याण के लिए जो कुछ सम्भव हो सकता है, करेगी। पर यह तभी सम्भव है जब राजनीति को बीच में घसीटने का प्रयास न किया जाये और इसे विशुद्ध आन्तरिक और धार्मिक मामला समझकर समझौता किया जाये। रक्तपात बन्द होना चाहिए- **यह राम और गौतम की नगरी है।**

राम की नगरी में रक्तपात कैसा
पुण्य आर्यभूमि में वज्रपात कैसा।।

आवश्यक सूचना

लखनऊ में गत कई दिनों से लगातार कर्फ्यू लगे रहने के कारण "आर्यमित्र" का दिनांक- 4 तथा 11- नवम्बर 1990 का अंक संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। पाठक व एजेन्ट नोट कर लें।

-विश्वम्भर दयाल गुप्त
मुद्रक प्रकाशक

आर्य वीर सम्मेलन

आर्य वीरदल परिमण्डल- गोरखपुर द्वारा आर्य वीर महासम्मेलन एवं प्रतियोगितायें आगामी 21 तथा 22 नवम्बर को डी०ए०वी० डिग्री कालेज आजमगढ में आयोजित है जिनमें अनेक रोचक कार्यक्रम तथा आर्य विद्वानों के भजन व उपदेश होंगे। जनता सादर आमन्त्रित है।

आदरणीय लेखक महोदय

आर्य जगत के शिरोमणि नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के प्रधान, अद्भुत वक्ता पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री- पं० प्रकाशवीर शास्त्री देश की उन महान विभूतियों में गिने जाते हैं, जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व ने राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गरिमा को बहुत ऊँचा उठा दिया था। ऐसे पुरुषरत्न को अपनी पावन धरती पर जन्म देना इस प्रदेश का सौभाग्य रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० का मुख पत्र "आर्यमित्र" उनकी पुण्यस्मृति में, आगामी दिसम्बर 90 में "प्रकाशवीर शास्त्री अंक" प्रकाशित करने जा रहा है। इस अंक में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बहु आयामी स्वरूप पर देश-विदेश के मान्य विद्वज्जनों, राजनीतिज्ञों तथा उच्चकोटि के सत्पुरुषों के विचारों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में प्रकाशित की जायेगी।

आप उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित रहे हैं और उनके कृतित्व के प्रशंसक भी।

मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा, यदि आप उनके सम्बन्ध में अपने विचारों को मूर्तरूप देते हुए इस अंक में प्रकाशनार्थ मुझे भेजने की कृपा करेंगे।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. का आगामी १०५वाँ वार्षिक वृहदधिवेशन एवं वार्षिक, निर्वाचन १९९०-९१

दिनांक - २४ तथा २५ नवम्बर १९९० को डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है-

१-शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन
(६-११-९०) ६-११-९० (मंगलवार)
२-वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन
२४,२५-११-९० (शनिवार तथा रविवार)
३-चुनाव परिणाम की घोषणा-
निर्वाचन की समाप्ति के बाद।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०
नारायण स्वामी भवन-५ मीराबाई मार्ग
लखनऊ

स्वामी दयानंद सरस्वती वर्तमान संदर्भ में

● विमल वधावन एडवोकेट
संयोजक कानूनी सेल, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।

पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन का मुख्य कार्य चाहे धर्म प्रचार ही था परन्तु इसी कार्य के माध्यम से जहाँ उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग, गृहस्थ विद्यार्थी, स्त्री, राज कार्य करने वालों आदि के कर्तव्यों का उपदेश किया वहीं समाज की लगभग सभी बुराईयों और कुरीतियों का स्पष्ट विरोध किया। स्वयं भारत प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में "स्वामी दयानंद की सबसे बड़ी विशेषता थी उनकी दूरदर्शिता। यह देखकर आश्चर्य होता है कि जिन बातों पर महात्मा गाँधी ने अधिक बल दिया और उन्हें रचनात्मक कार्य कहा, प्रायः वे सभी काम स्वामी दयानंद के कार्यक्रम में 50 वर्ष पूर्व शामिल थे। चाहे वह स्वभाषा स्वदेशी और स्वराज्य का मामला था या अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा और नैतिक शिक्षा का।"

इससे स्पष्ट है कि स्वामी दयानंद मात्र धार्मिक नेता ही न थे बल्कि विचारों एवं कर्मों के सच्चे राष्ट्रवादी सामाजिक नेता भी थे। समाज सेवा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने जो कार्य किए हैं उनके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। स्वामी दयानंद ने सारे भारतवर्ष का भ्रमण करके अपने भाषणों और शास्त्रार्थों के माध्यम से वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति का अत्यधिक प्रचार किया। उपदेशों के बाद श्रोताओं द्वारा तरह-तरह के प्रश्नों से भी स्वामी जी का मार्ग दर्शन प्राप्त किया जाता था।

एक बार किसी भक्त ने प्रश्न किया कि पहले जैसी उत्तम मनोवांछित सुपात्र संतान हुआ करती थी वैसी अब क्यों नहीं होती ? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि पहले लोग वैदिक संस्कार किया करते थे, सदाचारी होते थे इसलिए उनकी संतान में ओज होता था, तेज होता था और शूरवीरता होती थी। इस युग में इन संस्कारों को त्याग कर लोग इन्द्रियाराम और विषयानंद को ही प्रधानता दिए हुए हैं, लोगों के घरों में कुरीतियों की भरमार है इसलिए उनकी संतान भी निस्तेज, दीन, दुखिया, उत्पन्न होती है।

बुलंदशहर में एक सभा के दौरान वहाँ के तत्कालीन कलेक्टर ने अपना एक सेवक सभा स्थल पर भेजा और दर्शनों की इच्छा प्रकट की। उत्तर में स्वामी जी ने पूछा कि आपको किस समय अवकाश होगा। कलेक्टर महाशय ने इस पर उत्तर भिजवाया कि चार घण्टे पश्चात् अवकाश ही अवकाश है। मुलाकात के समय कलेक्टर को राज्य-धर्म पर उपदेश देते हुए कहा "जिसके सिर पर एक परिवार के भरण पोषण का भार होता है उसे बड़ी दौड़ धूप करनी पड़ती है। रातों जागना पड़ता है और सिर खुजलाने का भी अवकाश नहीं होता परन्तु हजारों मनुष्यों का बोझ आपके कन्धों पर है। दीन-दुखियों का संकट निवारण करना आपका कर्तव्य है फिर भी आपको अवकाश ही अवकाश है, ऐसा जान कर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि यह तो सर्वथा ही राज्य धर्म के विपरीत है।

स्वामी जी का विचार था कि शिक्षण कार्य को अधिकाधिक संगठित एवं सुदृढ करके ही इन सब बुराईयों, कुरीतियों और अज्ञानता को दूर किया जा सकता है। पंजाब के एक शहर में जब स्वामी जी रेलगाड़ी से उतरे तो एक बहुत बड़े उद्योगपति स्वयं अपनी गाड़ी लेकर स्वामी जी को लेने आये। रास्ते में एक विशाल भव्य मन्दिर की ओर संकेत करते हुए उन्होंने स्वामी जी को बताया कि लाखों रुपये स्वयं लगाकर उन्होंने इस मन्दिर को बनवाया है। इस पर स्वामी जी ने पूछा कि 10-15 वर्ष पश्चात इस मन्दिर में से क्या निकलेगा। स्वामी जी ने उसी उद्योगपति से कहा कि यदि इस मन्दिर के ही स्थान पर विशाल विद्यालय बनवाया होता तो 15 वर्ष पश्चात् अगली पीढ़ी आपके अनुरूप सभ्य, सदाचारी, परोपकारी बनकर आप ही के चरण स्पर्श करती। इस पर वह सज्जन बहुत शर्मिन्दा हुए परन्तु इस घटना से यह कदापि न समझना चाहिए कि स्वामी दयानंद का ईश्वर में विश्वास नहीं था इसलिए उन्होंने मन्दिर निर्माण का विरोध किया। ये तो स्वामी दयानंद ही थे जिन्होंने एक ईश्वरवाद की भावना पर बल दिया, विरोध तो उन्होंने केवल उन मतमतान्तरों का किया जो सबके अनुकूल नहीं थे, जो मिथ्या थे और जिनसे आपस में विरोध बढ़ने की सम्भावना थी। स्वामी दयानंद ने मूल रूप से ईश्वरीय ज्ञान का वैदिक प्रचार किया जिससे मानवता के वास्तविक कर्तव्यों का ज्ञान लोगों को हुआ। वेदों में ऐसा कोई भी उपदेश नहीं है जिससे भिन्न मतों में विरोध या घृणा उत्पन्न हो इसीलिए स्वामी जी ने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। अछूतोद्धार पर अपने उपदेश देते हुये स्वामी जी ने कहा था कि जो मनुष्य कुत्ते को छूता है, बिल्लियों से खेलता है, भैंस, ऊँटों तथा अन्य घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेता है, वह मनुष्यों को अछूत समझें, उनसे दूर भागा करें यह कितना अन्याय है कितना अधर्म है।

स्वामी दयानंद बचपन से ही उच्च कोटि के ब्रह्मचारी थे जिन्होंने वेद की शिक्षा स्वामी विरजानंद जी के आश्रम में प्राप्त की। एक बार स्वामी विरजानंद जी ने आवेश में आकर दयानंद जी पर लाठी का एक प्रहार किया तो उनकी भुजा पर कड़ी चोट आई। इस पर एक अन्य शिष्य नयनसुख दास जी ने गुरु जी से कहा कि ये दयानंद हमारे समान गृहस्थ नहीं हैं इसमें सन्यासी की आत्मा है इन्हें न तो अवाच्य कहना उचित है और न मानना। गुरुजी ने नयनसुख के वचन को स्वीकार करते हुए कहा कि बहुत अच्छा आगे से हम इन्हें आदर और प्रतिष्ठा पूर्वक पढ़ायेंगे। नयनसुख से अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि तुमने मेरे लिए गुरुजी से क्यों कुछ कहा ? उनका हमारे साथ कोई द्वेष तो है नहीं, यदि मारते हैं तो हित-बुद्धि से प्रेरित होकर ही मारते हैं।

आज राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद विवाद के कारण जो अस्थिरता की तलवार समाज के सिर पर टंगी नजर आ रही है, मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के कारण जो जाति युद्ध शुरू होता नजर आ रहा है और अर्थ व्यवस्था की चरमराती हालत में भी स्वामी दयानंद के उपदेशों से स्पष्ट तथा निर्विरोध मार्ग दर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

जैसा कि उपरोक्त मन्दिर निर्माण विरोध की घटना से स्पष्ट है कि स्वामी दयानंद का यह दृढ मत था कि मन्दिरों, मस्जिदों गुरुद्वारों आदि से किसी मत मतान्तर के मानने वालों का उद्धार नहीं हो सकता। मानवता का उत्थान तो तभी होगा जब ऐसी सभ्यता और संस्कृति का विकास हो जिसमें मनुष्यों में आपसी विरोध, क्लेश एवं दुर्भावना खत्म हो। स्वामी दयानंद का इस मन्दिर-मस्जिद विवाद पर स्पष्ट उपदेश होता कि यदि एक विशाल राष्ट्रीय उच्च महाविद्यालय इस स्थान पर स्थापित कर दिया जाए तो दोनों समुदायों की भावनाएँ हताहत नहीं होंगी। इन्हीं विचारों के तहत तो स्वामी दयानंद के शिष्यों ने प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर को मात्र हवन या सत्संग का केन्द्र ही न बनाते हुए, साथ में विद्यालयों, औषधालयों तथा अन्य समाज सेवी कार्यक्रमों को भी इनका अंग बनाया। अब तो कानूनी सहायता केन्द्रों की स्थापना भी इन आर्य समाज मन्दिरों में होने लगी है।

पिछड़े वर्गों के सामाजिक उत्थान के लिए तो स्वामी दयानंद ने भी सम्पूर्ण जीवन भरसक प्रयत्न किए परन्तु इतना भयंकर विद्रोह तो कभी नहीं हुआ। गुरुकुल शिक्षा पद्धति की शुरुआत का एक उद्देश्य यह भी था कि गरीब अमीर तथा समस्त वर्गों के परिवारों से आए विद्यार्थी समान आसन, समान वस्त्र, समान भोजन तथा समान शिक्षा प्राप्त कर सकें। सरकार की इस प्रकार की आरक्षण नीतियों से तो जातिवाद और मजबूत होगा, समानता होनी तो मुश्किल नजर आती है। वर्तमान संदर्भ में स्वामी दयानंद सरस्वती के उपदेशों का आज भी उतना ही महत्व है जितना 100 वर्ष पहले था। मानवता सदैव ऋणी रहेगी स्वामी दयानंद की तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की जो उन उपदेशों का भार अपने कन्धों पर लादे हुए आज भी समाज की सेवा में प्रयत्नशील है। □

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीर दल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उनसे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

सांस्कृतिक मार्गदृष्टा भारत

• सुरेश आर्य
प्रान्तीय उपसंचालक
आर्यवीर दल

आज विश्वव्यापी परिवर्तन हो रहे हैं। अपना भारतवर्ष भी इस बदलते परिवेश से अछूता नहीं रहा, प्रखर राष्ट्रीयता देशभक्ति व हिन्दुत्व की लहर पूरे सदेश में प्रकट हो पूरे विश्व में फैल रही है। जो आर्यावर्त जम्बूदीप में आर्यनिवास करते थे आज वह समाज "हिन्दू" नाम से जाना जाता है। वेद सृष्टि की प्रथम व सर्वसंग्राहक सब सत्य विधाओं की पुस्तक है। आज वेद को न समझने के कारण ज्ञान कोश {इनसाइ- {इनसाइक्लोपीडिया} रचे जा रहे हैं। जबकि वेद एक पूर्ण ज्ञान कोश है। उसका अध्ययन कर यदि कुछ और जोड़ने की आवश्यकता हो तो जोड़ना चाहिए अन्यथा वह पूर्ण है। ज्ञान सृष्टि में विद्यमान है परन्तु हम जितना जानते हैं उसी को ज्ञान मानते हैं। वेद ही सृष्टि ज्ञान हैं।

महर्षि दयानंद ने प्रथम "स्वराज्य" व वेदों की ओर लौटो मूल से प्रारम्भ करो" का उदघोष किया। बाल गंगाधर तिलक ,लाला लाजपत राय, भगत सिंह जैसे अनेकों स्वतंत्रता संग्राम सेनानो के अग्रणी सेनानियों ने महर्षि व आर्य समाज से प्रेरणा ले राष्ट्र हेतु अपना जीवन होम कर दिया था। गुरुकुलीय व डी ए. शिक्षा ने एक क्रान्तिकारी परिवर्तन समाज में ला दिया था आज तिलक से प्रेरित डा0 हेडगेवार जी का संघ, अनुसांगिक संगठनों व शिशु मन्दिरों द्वारा क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहा है।

विश्व में हो रहे परिवर्तन में मुख्य है समाजवाद की असफलता व विद्रोह जिससे रूमानिया में सत्तापलट हुआ, चीन में छात्र बलिदान हुआ। रूस तो ग्लास्नोस्त {खुलापन} व पैरोस्त्रोइका {पुनर्गठन} नीति की घोषणा कर वैदिक व्यवस्था की ओर अग्रसर हो ही गया अन्य देशों में भी परिवर्तन हुये है कहीं परिवर्तन हेतु छटपटाहट है जिसे विश्व में एक वैचारिक रिक्तता हो गयी वह पुन जगत गुरु भारत की ओर दृष्टिगत हुआ है 'विश्व भारत से सांस्कृतिक नेतृत्व की अपेक्षा रखता है।

भारत में पिछले काल खण्ड से समाज जागरण हिन्दु संगठन का एक अभिनव प्रयोग चल रहा है आज राम जन्म भूमि निर्माण में सारा समाज आन्दोलित हुआ है। हम राम को परमात्मा तो नहीं कहते परमात्मा को महर्षि ने परिभाषित किया परन्तु राम मर्यादा पुरुषोत्तम हमारे पूर्वज और जनजन के प्रेरणा स्रोत हैं। हमारे ही प्रयासों से मूर्ति को लडडू खिलाना बन्द होगा और चित्र से पूर्वजों को स्मरण कर चरित्र अपनाने का जनमानस प्रयास करेगा। वास्तव में यह पुरातन राष्ट्र के परिष्कार का समय है।

भारत माता है "मातृभू" यहीं विश्व में प्रथम संस्कृति का जन्म हुआ जिसका पूरे संदेश आर्य में पूरे विश्व को दिया आज भले ही पारिवारिक सबंध जैसे माता पिता, मामा, चाचा भाई,---- -आदि के नाम मम्मी, डेडी, अंकल आदि विदेशों में वे गुलामी के कारणवत भारत में कहे जाते है परन्तु इन संबंधों की कल्पना पूरे विश्व को भारत ने ही दी है। जब अन्य देश अपने शैशवकाल में थे तब भारत संस्कृति सम्पन्न सोने की चिड़िया था। पश्चिमी विद्वान ब्रायन एलवर्न ने शोध किया कि ईसा मसीह ने जो लोगो के रोग ठीक किये। उपदेश दिये वह सब भारत से सीखा शास्त्रज्ञान था। उन्होंने भारत में बौद्ध धर्म में भिक्षुक के रूप में शिक्षा ग्रहण की व उसका

प्रचार किया मुहम्मद को जो फरिस्ते ने सदेश दिया वह भारतीय प्रचारक थे, उसके द्वारा प्रदत्त उपनिषद के सदेशों के आधार पर कुरान की। आयतें लिखी ऐसा कई विद्वान "मुस्लिम समाज व राष्ट्रीय मुख्य धारा" सबंधी अपने लेखों में लिख चुके हैं। इस सब का तात्पर्य निकलता है कि भारत ने सारे विश्व को सांस्कृतिक नेतृत्व प्रदान किया आज भी हमारे देश के कर्णधार नीति निर्धारक इस ओर ध्यान दें। क्षुद्र राजनीति में न फँस कर सत्य का अनुसरण करें, तो कोई कारण नहीं कि भारत परम वैभव के शिखर पर पहुँच कर पुन विश्व गुरु न बने।

आर्यजनों को भारत को पुन विश्व गुरु के सिंहासन पर आरूढ करने व "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के अपने दायित्व का बोध करने के लिए आज आर्य समाज पुन अपने को सुदृढ कर रहा है। आर्य वीर दल के गठन से अपने वीरों को पुष्ट बनाने का प्रयत्न कर रहा है। सारे समाज को एकसूत्र में बाँधकर निर्भय बनाने हेतु आर्य वीरदल अपनी भूमिका निर्वहन हेतु आगे आया है। भारत का नियोजित करना है संसार में इतने श्रेष्ठ संसाधन जलवायु और षठऋतु वाला कोई देश नहीं है।

सम्पूर्ण आर्यसमाज से आह्वान है कि वह इस राष्ट्र को अपनी आहुति प्रदान करने हेतु अग्रिम पंक्ति में आये और भारत को परम वैभव के शिखर में पहुँचाकर पुन. विश्व गुरु सिंहासन पर आरूढ करें। ●

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का अभूतपूर्व समारोह

१४ वाँ सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

२२ से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली में आयोजित

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कीजिए वैदिक धर्म प्रचार एवं प्रसार की विभिन्न योजनाओं को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहायता कीजिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती एवं उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प0 इन्द्रराज ने एक संयुक्त वक्तव्य में देश विदेश की बिगड़ती हुई राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दशा पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए वेदाधारित मानव समाज की रचना के आर्य समाज के दृढ़संकल्प को दोहराते हुए प्रदेश एवं विश्व की सभी मानवता प्रेमी जनता से आगामी दिसम्बर में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की अपील की है।

महर्षि का स्वप्न अभी साकार नहीं हुआ है। परमात्मा की अमरवाणी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। भारतीय आज़ादी के साथ हमने विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार की जो कल्पना की थी उसका पूर्णरूप अभी बहुत दूर है। अभी हमें बहुत दूर जाना है। पथ कण्टकाकीर्ण अवश्य है पर आर्य वह है जो कभी पराजय स्वीकार नहीं करता, हारना न, "चरैवेति चरैवेति" उसका आदर्श है।

उक्त आर्य महासम्मेलन आर्यजाति में नवप्राणों का संचार करेगा। सोई हुई मानवता को जगायेगा और विश्वशान्ति के हमारे वैदिक पथ को प्रशस्त करेगा।

तो, आइए, इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए वैदिक संस्कृति को उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने के लिए अभी से प्राणपण से जुट जायें।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प0 इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने गंगा यमुना की पावन संगमस्थली के अपने अन्तराल में संजोए इस महान प्रदेश की गौरवमयी परम्पराओं का स्मरण कराते हुए कहा है कि राम, कृष्ण और दयानन्द की यह कर्मस्थली है। इस प्रदेश की जनता ने आर्यसमाज के मस्तक को सदैव ऊँचा रखा है। हमें आशा है प्रदेश की जनता इस सम्मेलन में लाखों की संख्या में सम्मिलित होगी और इस पुण्यकार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर यश की भागी बनेगी।

"संसार का सर्वोत्तम महापुरुष"

● जगदीश शरण "शीतल"
— चाँदपुर (बिजनौर)

आज तक संसार में महर्षि दयानन्द जैसा महान तथा सर्वोत्तम महापुरुष पैदा ही नहीं हुआ। यदि तराजू के एक पलड़े पर संसार के सारे महापुरुष रक्खे जायें और दूसरे पलड़े पर महर्षि दयानद तो महर्षि का ही पलडा भारी रहेगा। क्योंकि जितनी कुरीतियों तथा अंधविश्वासों से महर्षि को संघर्ष करके उन पर विजय पाने का सौभाग्य तथा गौरव प्राप्त हुआ उतना आज तक संसार के किसी अन्य महापुरुष को नहीं। आदित्य ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी तथा प्रकाण्ड पंडित यह तीनों विशेषतायें महर्षि दयानंद ही में हैं। किसी अन्य महापुरुष में नहीं। संसार के सारे महापुरुषों ने अपने-अपने क्षेत्र के लिए ही सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयत्न किया। परन्तु एक महर्षि दयानंद ही ऐसे व्यक्ति हैं। जिन्होंने सारे संसार के कल्याण की बात कही उन्होंने आर्यसमाज के नियम (6) में संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है तथा नियम (9) में सबको सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये कहकर अपने हृदय की उदारता तथा विशालता का परिचय दिया। नारी को किसी ने नर्क का द्वार कहा और किसी ने उसको ताड़ना का अधिकारी कहने का दु.साहस किया। परन्तू महर्षि ने मातृशक्ति के सम्मान को सर्वोच्च स्थान देकर उसके गौरव में चार चाँद लगाये। स्वराज्य, नारी शिक्षा, विधवा विवाह स्त्री और शुद्र को वेद पढने का अधिकार, जन्म-जात वर्ण व्यवस्था, बाल विवाह की हानि, यज्ञों में पशु बलि के विरुद्ध है, राजधर्म तथा सत्यता से धनोपार्जन इत्यादि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें महर्षि का योगदान न हो। मेरे सारे अंग प्रत्यंगों की मोमबत्ती बनाकर जला दो फिर भी मैं सत्य का वैदिक मार्ग कभी छोड़ नहीं सकता। उनकी यह निर्भीकता तथा सत्यता का ज्वलंत प्रमाण है। इतने पर भी उनका कथन था कि यदि मेरे कहने या लिखने में कोई त्रुटि या दोष हो तो विद्वान लोग उसका वेदानुसार परिमार्जन कर सकते हैं। इतने प्रकाण्ड पंडित को अपने को पूर्ण न समझना कितनी महानता है। अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को प्रकाशित करके उन्होंने सारे संसार को सत्य का मार्ग प्रशस्त किया। सत्यार्थ प्रकाश ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिससे संसार की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

इसके पठन-पाठन करने वाले के जीवन में अज्ञान रूपी अंधेरा कभी आ नहीं सकता, यदि संसार के मानव को सुख और शांति की इच्छा हो तो महर्षि के बताये हुये वैदिक मार्ग पर चलना पड़ेगा। ◻

महर्षि दयानन्द और उनका दर्शन

लखनऊ में दिनांक- 28/10 को आयोजित विशाल जैनमिलन सम्मेलन में आर्यमित्र के यशस्वी प्रबन्ध सम्पादक एवं आर्यवक्ता आचार्य इन्द्रदेव पाठक ने जैनदर्शन एवं दयानन्द दर्शन का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि जैनधर्म के प्रवर्तक भगवान-महावीर तथा अन्य अनेक आचार्यो ने सत्य, अहिंसा, करूणा और प्रेम का मार्ग दिखलाकर मानवता का महान उपकार किया है। सयम, सदाचार, शुद्ध सात्विक आहार विहार और विचारों का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। मानव के ऐहिलौकिक पारिलौकिक कल्याण के पथ को प्रशस्त वाले ये सभी मूल तत्व परमात्मा की अमरवाणी वेद से ही नि सृत हुए हैं और यही वैदिक दर्शन महर्षि दयानन्द दर्शन है।

श्री आचार्य ने वैदिक त्रैतवाद विषयक- "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाय -----" वेद मन्त्र की सुन्दर शैली में व्याख्या करते हुए बताया कि ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन मूल तत्व हैं। ईश्वर, जीव नित्य सनातन अनादि सत्ता है जिनमें ज्ञातृत्व, भोक्तृत्व, कर्तृत्व तीनों गुण स्वभावत विद्यमान हैं। सृष्टि जड़ है धाराप्रवाह रूप में नित्य है। ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार और सर्वज्ञ है। आत्मा अल्पज्ञ होने के कारण ईश्वर के नियन्त्रण में वैदिकपथ पर चलते हुए अपना विकास कर सकता है और जीवन के परम उद्देश्य मोक्षावस्था को प्राप्त कर सकता है। ऐसी मुक्त आत्माएं परान्तकाल (जिसकी अवधि कई हजार बार सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलयावस्था है) के पश्चात् महान आत्माओं के रूप में पृथ्वी पर अवतरित होती रहती हैं। इन्हीं महान आत्माओं को हम महान पुरूष कहते हैं। जैनधर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर ऋषि दयानन्द तथा अन्य अनेक महान पुरूष नि सन्देह इसी श्रेणी की उत्तम आत्माएं थीं जिन्होंने धरती पर अपने करूणा, प्रेम और सत्यमय उपदेशों से मानवता का बड़ा कल्याण किया है। महान पुरूषों की मूर्तियों से उनके उदात्त चरित्रों की प्रेरणा लेकर उन्हें हम जीवन में कार्यान्वित करें- यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इसके अतिरिक्त जड़मूर्त्ति से चेतनवत् व्यवहार की आशा रखना मूर्खता है।

अन्त में जैन समाज की ओर से स्टेट आयुर्वेदिक कालेज, लखनऊ के भू0पू0 प्रिन्सिपल डा0 पी0सी0 जैन ने आचार्य जी को धन्यवाद देते हुए आभार प्रकट किया और दयान्न्द दर्शन के प्रति जैन समाज की पूर्ण आस्था व्यक्त की।

-- संवाददाता

सभा प्रधान जी मुरादनगर में

आर्य समाज आयुध निर्माणी (मुरादनगर) के वेद प्रचार कार्यक्रम के रात्रि कालीन अधिवेशन में दिनांक 6-10-90 को सभा प्रधान जी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना प्रवचन किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में आर्य समाज की जिम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं। सारा देश मंडल आयोग के कारण जातिवाद की आग में जल रहा है। युवाओं द्वारा आत्मदाह जैसी रोमाञ्चक मृत्यु का वरण किया जा रहा है। धर्मान्तरण की बाढ़ आ गई है। युवा दिशाहीन होकर धर्म में अपनी आस्था खो रहा है। साम्यवाद का प्रचार-प्रसार अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचता जा रहा है। ऐसे समय में केवल आर्य समाज ही विभिन्न जातियों में सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता रखता है। यह तभी संभव हो सकता है जब आर्य समाज का प्रचार समाज के प्रत्येक वर्ग में हो।

अत. हमें जन-जन तक महर्षि दयानंद के संदेश को नि स्वार्थ समर्पण भाव से पहुँचाना होगा।

आध्यात्मिकता की ओर इंगित करते हुए सभा प्रधान जी ने कहा कि हम भौतिकवाद में इतना डूब गये हैं कि ईश्वर की प्रार्थना तथा आत्म चिन्तन के लिए समय ही नहीं निकाल पाते जागते हुए और सुप्तावस्था में मानव मन सांसारिकता में डूबा रहता है। जब तक हम भौतिकवाद से ऊपर उठ कर आध्यात्मिकता को नहीं अपनाते हमें मन तथा आत्मा की शान्ति नहीं मिल सकती ।

हमें अपने व्यस्ततम जीवन में से कुछ समय ईश्वरोपासना तथा आत्मावलोकन में अवश्य बिताना चाहिये। हमें सात्विकता से अनुप्राणित होकर निष्काम भाव से सांसारिक कर्मो को करना चाहिए। इसी में जीवन की सार्थकता है।

बुढ़ाना गेट में बाल्मीकि जयन्ती

दिनांक 7-10-90 को आर्य समाज बुढ़ाना गेट में बाल्मीकि जयन्ती का आयोजन किया गया इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक श्री कैलाश चन्द्र जी आर्य (बाल्मीकि) ने महर्षि बाल्मीकि के जीवन पर प्रकाश डाला। श्रीमती सुशीला शास्त्री (अलीगढ) ने कविता पाठ किया तथा चौधरी दरियाब सिंह जी ने महर्षि बाल्मीकि जी को श्रद्धान्जलि अर्पित की। सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने बहुत ही प्रेरणादायक व्याख्यान महर्षि बाल्मीकि के रामायण की समरूपता समदर्शिता पर प्रस्तुत किया। डा0 निरूपण विद्यालंकार ने कहा कि हमें महर्षि बाल्मीकि के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने रामायण जैसा ग्रन्थ लिखा। जिसके पठन-पाठन तथा अनुकरण से मानवता का भला हो सकता है। इस अवसर पर अन्य गणमान्य व्यक्तियों तथा विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मनोहर लाल जी सर्राफ ने की ।

प्रस्तोता- जयन्त कुमार पाण्डेय

ऋषि-निर्वाण दिवस

मैनपुरी आर्य समाज मन्दिर में, आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जिला- मैनपुरी के प्रशासक पं0 नरेन्द्रार्य की अध्यक्षता में नव-जागरण के पुरोधा, स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत एवं आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 108वाँ निर्वाण-दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान ठा0 महावीर सिंह, सभासद सर्वश्री मूलचन्द्र व हरनाम सिंह मंत्री डॉ0 ज्ञान प्रकाश शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के मुख्य निरीक्षक कुँ0 ध्रुव पाल सिंह "अटल" एवं स्त्री समाज की प्रधान श्रीमती पद्मावती आदि ने ऋषिवर के उपकारों का बखान करते हुये, भावभीनी श्रद्धान्जलियाँ समर्पित कीं।

वतन के मसीहा वतन बेच देंगे

• रमेश चन्द्र गुप्त

आर्यसमाज बरदहा बाजार (बहराइच)

आज मानव का भौतिकवादी पथ पर अग्रसर होना विश्व अशान्ति की जड़ों में एक प्रमुख उर्वरा का कार्य कर रहा है। देश, जाति, धर्म, परिवार व बच्चों के संस्कार की चिन्ता से सर्वथा- विमुक्त मानव आज साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, राष्ट्रद्रोह आदि कुटिल मार्गों पर चलता हुआ एक लक्ष्यहीन दिशा में बढ़ रहा है। लक्ष्यहीन दिशा में जाते हुए वह अपने मूलमार्ग से विचलित हो गया है और आज उसे याद नहीं कि मैं परमात्मा का पुत्र हूँ और परमात्मा ने मुझे मनुष्य या बुद्धिजीवी प्राणी बनाकर किस उद्देश्य से भेजा है। अन्धकार के काले विवर में जा रहा मानव मंडल कीट पतंगों की तरह दीपक की लौ रूपी समाज के भौतिक वादी साधनों की तरफ आकर्षित होता जा रहा है। वह नहीं जानता कि उसकी दशा उसी तरह होगी जिस तरह कीट पतंगे लक्ष्यहीन दिशा में जाकर दीपक की भौतिकवादी आकर्षक लौ में जल मरते हैं। तो ऐसी परिस्थितियों में जब संसार का श्रेष्ठ या आर्य वर्ग "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को छोड़ स्वयं लिपटककर कुछ सीमित संख्या में रह गया है और बार-बार बहुसंख्यक शब्द सुन सुनकर आत्म संतोष प्राप्त कर रहा है। उसके चारों ओर बहुत सी राष्ट्रघाती समस्यायें मंडरा रही हैं। आज इसका बहुमत खतरे में है और यह वर्ग कुछ सोच समझ ही नहीं रहा है। कुचाली कुचक्र रच रहे हैं यह सो रहा है। शासक वर्ग "फूट डालो राज्य करो" वोट प्राप्त करने लिए गन्दी स्वार्थी राजनीति की कुटिल नीति से इस वर्ग में फूट डालकर वर्ग संघर्ष की स्थिति पैदा कर रहे हैं। तो आज की इस अंधाकार मय परिस्थितियों में मात्र चार दीप ज्लाकर पटाखे छोड़कर हम न तो सुरक्षित रह पायेंगे और न ही बुरी तरह से आत्मघात यह अंधेरा हमसे अलग हो पायेगा। आज दीपावली की इस पावन बेला में जब हम ध्यानपूर्वक मन, मस्तिष्क सबको एकाकार करके सोचेंगे तभी यह अंधेरा दूर करने के प्रथम चरण की शुरुआत होगी।

"जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाये।"

आज के इस वर्तमान परिपेक्ष्य में वर्तमान राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से जनहित में कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ और यह चाहता हूँ कि सरकारी प्रवक्ता इन प्रश्नों का सार्वजनिक उत्तर दे।

1- वर्तमान राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को क्या अधिकार है किसी भी ऐसे विधेयक को लागू करने का, जिससे कि देश में गृहयुद्ध प्रारम्भ हो गया है?

देश वैसे ही पंजाब, कश्मीर, असम, नागालैण्ड व अन्य समस्याओं से जूझ रहा था। ऐसी परिस्थितियों में जब विदेशी आक्रमण की संभावना है देश में गृहयुद्ध का वातावरण बनाना क्या राष्ट्रद्रोह नहीं है ?

उ0प्र0 के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने मुसलमानों को शस्त्र रखने की सलाह देकर क्या धर्म निरपेक्ष संविधान का अपमान करके देश के प्रति राष्ट्रद्रोह नही किया है?

4- क्या बजरंगदल व अन्य हिन्दुओं को मांसाहारी शराबी आदि गालियाँ देना प्रदेश के सर्वोच्च नेता को शोभा देता है? जबकि मांस खाना इस्लाम में जायज है और पर्यावरण असंतुलन की दृष्टि से पशु पक्षी मारना गम्भीर अपराध है। तो इस आधार पर मुख्यमंत्री जी क्या उनके शरीयत का संशोधन कराके यह कह सकते हैं कि तुम मांस खाना छोड़ दो ?

5- मुख्यमंत्री का यह कहना कि मैं यादव हूँ कृष्ण की जाति का हूँ व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह क्षत्रिय राम की जाति के। रामजन्म भूमि हेतु प्रधान मंत्री जी को व कृष्ण जन्मभूमि के लिए मुझे लड़ना चाहिये।" क्या यह जातियता का विषवमन नहीं है ?

6- मुख्यमंत्री का एक तरफ अंग्रेजी हटाना दूसरी ओर पब्लिक स्कूलों के लिए विशेष राशि मंजूर करना (विशेषतया इटावा में निजी क्षेत्र में) क्या उनके दोमुँही नीति का सूचक नहीं है।

7- आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन में आर्य प्रतिनिधियों के शान्ति दल पर जनतादल सांसद द्वारा लाठी चार्ज करवाया जाना, शासन व सत्ता का दुरुपयोग नहीं है ?

8- "स्वराज्य" शब्द के प्रथम उद्बोधक ऋषिवर दयानंद का न तो घोषित कहीं भी नाम लिया जाता है और उनके जन्म दिवस पर अवकाश न घोषित करना क्या कृतघ्नता व बुद्धिजीवी वर्ग आर्य समाज व समस्त राष्ट्र का अपमान नहीं है? क्योंकि आर्य समाज ने ही क्रान्तिकारी दिये थे।

9- जब आक्रान्ता ग्रस्त सोमनाथ मन्दिर सरकार बनवा सकती है तो रामजन्म भूमि हेतु ऐसी पहल क्यों नहीं करती।

इन प्रश्नों को पूछने के बाद हम आरक्षण पर पहुँचते हैं कि आज इस आरक्षण के राक्षस के कारण देश में प्रतिभायें पीछे रह जाती हैं और कम अंक पाने वाले सर्वथा अयोग्य अभ्यार्थियों का चयन हो जाता है तो क्या देश उन्नति कर पायेगा? इसलिये ऐसी परिस्थितियाँ न आने पायें इस हेतु आज हममें से किसी को दयानंद बनना होगा, आगे आना होगा। हर समय जागृत रहना होगा, सोना नहीं होगा- कवि के शब्दों में:-

धरा बेच देंगे, गगन बेच देंगे,
दयानंद के शिष्य, अगर सो गये
वतन के मसीहा वतन बेच देंगे। ■

आवश्यक सूचना

भारत के प्रसिद्ध व्याख्याता श्री विश्वमित्र मेधावी शास्त्री ने आर्य समाज दयानंद मार्ग शकूर बस्ती-दिल्ली-34 को अपनी सेवायें प्रदान कर दी हैं। अतः समाजें अपने वार्षिकोत्सवों, महायज्ञों एवं पर्वों पर उपरोक्त पते पर सम्पर्क करें जिसकी दूरभाष सं0-7126966 है। सूचित करने का कष्ट करें।

श्री तिलक नारायण- तलवार वानप्रस्थी बने

आदर्शनगर आर्यसमाज लखनऊ के पूर्वमंत्री तथा वेदप्रचार समिति लखनऊ के प्रधान श्री तिलक नारायण तलवार ने पू0 स्वा0 सर्वदानंद जी महाराज से 23-9-90 को वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली तथा उनका नाम अब पू0 यज्ञमुनि वानप्रस्थी रखा गया। इनका पता द्वारा आर्य समाज आदर्शनगर लखनऊ है। बधाई।

मनमोहन तिवारी
सभामंत्री

वीर पर्वोत्सव

गत 12 अक्टूबर को आर्य वीर दल घोसी जनपद (आजमगढ) का वीर पर्वोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। इसमें अनेकों आर्यवीरों ने पूर्ण गणवेश के साथ रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा अन्य अनेकों सांस्कृतिक तथा धार्मिक सम्मेलन भी सम्पन्न हुए। जनता प्रभावित हुई ।

कानपुर में दयानंद निर्वाण दिवस

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वाधान में आर्य समाज मन्दिर लाजपतनगर कानपुर में महर्षि दयानंद निर्वाण दिवस मनाया, जिसमें बोलते हुए प्राचार्या डा0 आशारानी राय, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती युग निर्माता थे, उन्होंने अपने जीवन व कृतित्व से नये युग का सूत्रपात किया, स्वभाषा (हिन्दी) स्वराज्य स्वधर्म (वेद व स्वदेशी का नारा सर्वप्रथम उन्होंने दिया। डा0 हरपाल सिंह प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा ने अध्यक्षता करते हुये कहा कि आज की परिस्थितियों में वैदिक संस्कृति व शिक्षा के प्रचार-प्रसार से ही शांति संभव है। प्यारे लाल आर्य, मंत्री, आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर में संयोजन करते हुये महर्षि दयानंद के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया । अन्य वक्ताओं में श्रीमती उर्मिला नागपाल, श्री होशियार सिंह, श्री पुरुषोत्तम दास धींगरा, श्रीमती शान्ति मेहरोत्रा आदि थे।

भीषण दुर्घटना में आर्य युवक की मृत्यु

आर्यमित्र कार्यालय के लेखक श्री गंगा प्रसाद त्रिवेदी के भतीजे श्री कृष्ण शंकर द्विवेदी का ग्राम ककरारी (उन्नाव) में दिनांक 21 अक्टूबर को मोटर साइकिल के ट्रक से भिड़न्त हो जाने के कारण घटनास्थल पर ही आकस्मिक मृत्यु हो गई। मोटर साइकिल पर पीछे बैठे उनके बहनोई गंभीर रूप से घायल हो गये।

श्री कृष्णशंकर द्विवेदी एक उदीयमान आर्यनवयुवक थे। वे अपने परिवार में बिलखती हुई पत्नी तथा बूढ़ी माँ तथा समस्त परिवार। छोटी पुत्री को छोड़ गये है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

इन्द्रदेव पाठक
प्रबंध सम्पादक ।

आत्म चिन्तन की ओर से डा० मित्तल दम्पत्ति का सम्मान

गीता वार्ता के बीच आरक्षण की राजनीति की निन्दा

मेरठ, सामाजिक और आध्यात्मिक संस्था "आत्म चिंतन" द्वारा आयोजित गीता वर्ता में जहाँ भक्ति और समर्पण की भावना की व्याख्या की गयी, वहीं आरक्षण के नाम पर समाज में जातीय संघर्ष और आत्मदाह जैसी चुनौतियाँ खड़ी करने वाली घटिया राजनीति की जमकर आलोचना की गयी।

त्रिशला भवन में शहर के वयोवृद्ध चिकित्सक एवं समाजसेवी डा० के०जी० मित्तल व उनकी पत्नी के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम में संस्कृत महाशक देवक्देवनम् एवं पर्व भारतम् आदि के रचयिता प्रभुदत्त स्वामी ने गीता में भक्तियोग सम्पूर्ण समर्पण पर विस्तृत व्याख्यान देते हुये कहा कि गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिये हैं उनमें स्पष्ट है कि गीता केवल समर्पण की भावना से भक्ति भाव रखने वालों के लिये ही है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि गीता को निंदा करने वालों तथा अज्ञानियों से दूर रखा जाये।

प्रभुदत्त स्वामी का कहना था कि जिस व्यक्ति में भक्ति भावना ही नहीं होगी, उसमें समर्पण का भाव आना ही संभव नहीं है, इसलिये भक्ति का विशेष महत्व है जो व्यक्ति भगवान के प्रति भक्तिभाव रखता है, वही उसके स्वरूप को समझ सकता है तथा उपदेशों से लाभ उठाकर जीवन की कठिनाइयों से संघर्ष करने की शक्ति प्राप्त कर सकता है।

स्वामी समर्पणानंद वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम के निदेशक डा० निरुपण विद्यालंकार ने कहा कि अर्जुन ने महाभारत युद्ध से पूर्व मुकाबले के लिये खड़े स्वजनों को देखकर गांडीव रख दिया, तो भगवान श्रीकृष्ण ने उसे समझाया कि, जिस युद्ध के लिये वह रण में खड़ा है, वह उसका व्यक्तिगत नहीं, इसलिये जो कुछ भी रणभूमि में करेगा, उससे कोई पाप उसे नहीं लगेगा। यह युद्ध निष्काम भावना से किया जा रहा है। जो उसके कर्म का तकाजा है। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण ने अर्जुन को यह उपदेश इसलिये दिये कि वह उनका भक्त है और स्थित को समझेगा।

डा० विद्यालंकार ने गीता के विभिन्न खण्डों की चर्चा करते हुये भक्ति एवं समर्पण की भावना बलवती करने पर जोर दिया।

गीता रसामृत के रचयिता गीता मर्मज्ञ प्रोफेसर शिवानंद ने गीता के प्रसंगों से हटकर जीवन संघर्ष के लिये आवश्यक तथ्यों व तरीकों पर श्लोकों के माध्यम से विभिन्न विचार श्रोताओं में सम्प्रेषित किये।

उन्होंने कहा कि गुरु और शिष्य में जब एकात्मकता हो जाती है, तभी शिक्षा की सार्थकता है। उन्होंने कहा कि शिष्य में गुरु के प्रति भक्ति की भावना हो और ग्रहण करने के लिये समर्पण का भाव है, तभी तो गुरु की दी गई शिक्षा सार्थक होगी। जीवन संघर्ष किसी कठोर पर्वत पर चढने का प्रयास है, मगर यदि पर्वत से निकलने वाले शीतल जल स्रोतों का रसास्वादन न किया, तो पर्वत पर चढने का क्या लाभ? इसी प्रकार जीवन की कठिनाइयों का सोपन भी रुचि लेकर करना अनुभवों और परिपक्वता के लिये जरूरी है।

उन्होंने कहा कि जीवन रसधारा है। यदि रस की उत्पत्ति ही नहीं, तो वह मरुस्थल बन जायेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मेरठ विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर रमेश मोहन ने कहा कि गीता में भक्ति और समर्पण की भावना को प्रमुख बताया गया है, मगर यह भावना सभी में होना जरूरी है।

प्रोफेसर रमेश मोहन देश की मौजूदा स्थिति में काफी क्षुब्ध थे। उन्होंने कहा मौजूदा परिस्थितियों पर भी चर्चायें होना चाहिये। उन्होंने वोट की राजनीति पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये कहा कि जातियों को विभाजित कर समाज में संघर्ष की स्थितियाँ पैदा करने वाली अवसरवादी राजनीति के रहते निष्काम भावना से सामाजिक कार्यों का निर्वाह सोचना भी गलत है। उन्होंने आज के माहौल में शक्तिपूजा और सत्ता की राजनीति हावी को बताया।

उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी ने कहा था कि व्यक्ति का सम्मान होगा, मगर घटिया राजनीति ने इस विचार को आघात पहुँचाया। उन्होंने कहा कि शिक्षा खोखली हो गयी है। शिक्षा की दुकानदारी ने संस्कारों को पीछे धकेला है।

प्रोफेसर रमेश मोहन ने कहा कि स्वार्थी और लोलुपता की काट की जाये ऐसे व्यक्तियों का बहिष्कार किया जाये, जो समाज में बुराईयों और कुरीतियों को पनपाने की मंशा से काम कर रहे हैं।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पंडित इन्द्रराज ने भी आरक्षण की धज्जियां उड़ाते हुए कहा कि इतिहास में सम्भवत यह पहला मौका है, जब नौजवानों को आत्मदाह जैसा कठोर निर्णय लेना पड़ा है। उन्होंने देशवासियों को जातियों में बाँटकर राज कायम रखने के राजनैतिक प्रयासों की खुलकर आलोचना की। उन्होंने कहा कि आज सरकार ने गृह युद्ध की स्थिति खड़ी कर दी है और बचाव के लिये कोई कृष्ण नहीं नजर आता।

बाद में कार्यक्रम के विशेष अतिथि वयोवृद्ध चिकित्सक डा० के०जी० मित्तल और उनकी पत्नी अन्नपूर्णा मित्तल को सम्मानित किया गया। डा० मित्तल ने अपने अनुभवों की जानकारी देते हुए बतौर आशीष वचन कहा कि उनके गुरु ने कहा था कि "कम समय और कम कीमत में रोगी को अच्छा करना"। उन्होंने कहा कि उनके इस आदेश का वह आज 80 वर्ष की आयु में भी पालन कर रहे हैं। मगर इसके लिये उन्हें अधिक ज्ञानार्जन करना पड़ता है। इसकी शक्ति उन्हें बचपन में आश्रम में दी गयी शिक्षाओं से मिलती है।

संस्था के अध्यक्ष सेठ मनोहर लाल ने आगंतुकों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया। □

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के १०५ वें वार्षिक वृहद् अधिवेशन के अवसर पर आर्य भजनोपदेशक प्रतियोगिता

दिनांक 24 नवम्बर 1990 शनिवार मिति मार्ग शीर्ष सु07, स0 2047 विक्रमी समय रात्रि 8 बजे
स्थानः दयानंद महाविद्यालय (डी0ए0वी0कालेज लखनऊ)

प्रतियोगिता के नियम

1- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 में कार्यरत भजनोपदेशक ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे।
2- आर्य समाज और महर्षि दयानंद के विषय में एक-एक भजन प्रस्तुत करना होगा।
3- वाद्य यन्त्र सभा स्थल पर ही उपलब्ध होंगे (बाजा-ढोलक)
4- प्रत्येक प्रतियोगी को एक भजन प्रस्तुत करने के लिए केवल छः मिनट का समय दिया जायेगा।
5- प्रथम-द्वितीय-तृतीय विजेताओं को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जायेगा
6- निर्णायकों का निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होगा।
7- बोलने का क्रम वर्णानुक्रम के आधार पर होगा।
8- माननीय सभा प्रधान जी को नियम परिवर्तन, संशोधन का अधिकार होगा
9- प्रतियोगिता में निरन्तर तीन वर्ष तक प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगी को विशेष सम्मान सूचक "वैजयन्ती" प्रदान की जायेगी तथा वेतन में एक वार्षिक वृद्धि भी प्रदान की जायेगी।

सभी भजनोपदेशकों को सूचित किया जाता है कि वह दिनांक- 24-11-1990 को मध्यान्ह तक पहुँचकर अपनी उपस्थिति अंकित करायें।

यथासमय यथास्थान पहुँचने की अनिवार्यता अंकित करें।

इन्द्रराज प्रधान	हरिशचन्द्र आर्य अधिष्ठाता उपदेश विभाग	मनमोहन तिवारी मंत्री

जय नारायण "अरुण"
संयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, लखनऊ।
दूरभाष- 245993

"सामवेद पारायण यज्ञ"

श्री ज्ञान कृष्ण, प्रसिद्ध आर्यसमाजी, लखनऊ के भतीजे चि0 अशोक ने अपने नव निर्मित आवास "सुधा कुंज" ए-275 सूरजमल विहार दिल्ली- 12 में गृह प्रवेश के सुअवसर पर गुरुकुल खेड़ा खुर्द के कुलपति पं0 प्रकाशवीर-शास्त्री के आचार्यत्व में सामवेद पारायण यज्ञ 27-9-90 से 30-9-90 तक आयोजित किया। विजया दशमी के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने पधार कर सारे परिवार को आशीर्वाद दिया।

"वैदिक धर्म ही सच्चा सनातन धर्म"

• यदुवंश सहाय
फैजाबाद

विभिन्न जाति उपजातियो और सम्प्रदायों में बँटे होने से आर्य §हिन्दू§ जाति के आपसी मतभेदों को मिटाकर उसे संगठित करना अत्यन्त कठिन कार्य है। जाति को संगठित करने के अभिप्राय से सभी सम्प्रदायों को ईश्वर और वेद के माध्यम से एक मत करने और प्रचलित जातिवाद को मिटाकर . गुण,कर्म, और स्वभाव के अनुसार प्राचीन वर्ण व्यवस्था को पुनः स्थापित करने का प्रयास महर्षि दयानंद ने किया। अब उसी कार्य को आर्य समाज कर रहा है, परन्तु पौराणिक जो अपने को सनातन धर्मी कहते हैं उसके कार्य में बाधक बनकर देश और जाति का अहित कर रहे हैं। उनका विश्वास है कि उनकी मान्यताएँ और मूर्ति पूजा प्राचीन और सनातन हैं। अतः उनमें परिवर्तन करने अथवा उन्हें छोड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।

तथाकथित सनातन धर्मी तनिक "सनातन" शब्द पर विचार करें। इस शब्द का अर्थ है पुराना, और अथर्वेद के मन्त्र-"सनातनमेनमाहुरताद्य स्यात् पुनर्णवः।
अहोरात्रे प्रजायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः।।
के अनुसार सनातन वह है जो पुराना होते हुए भी सर्वदा नया बना रहता है। जैसे रात दिन का चक्र सदा नया है। जो नियम सदा एक से रहते हैं। वे, सनातन हैं। दो और दो मिलकर चार होते है। यह सनातन नियम है क्योंकि किसी देश और काल में यह बदल नहीं सकता, इसी प्रकार एक त्रिभुज के तीनों कोण मिलकर दो समकोणों के बराबर होते हैं सनातन नियम है।

धर्म या नियम दो प्रकार के होते हैं एक सनातन और दूसरे सामयिक सनातन बदलते नहीं और सामयिक समय और परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। भोजन करना सनातन सनातन धर्म है क्योंकि किसी युग में बिना खाये शरीर की रक्षा नहीं हो सकती। दवा खाना सामयिक है क्योंकि दवा का प्रयोग रोगी होने पर ही किया जाता है।

हर सम्प्रदाय और मत में धर्म के दो रूप होते हैं। एक तो मूल तत्व, जो सदा एक से रहते हैं। दूसरे कर्मकाण्ड और रीति-रिवाज जो देशकाल के विचार से बदलते रहते हैं, जैसे वेश-भूषा और ईश्वर उपासना की विधियाँ। इनका संबंध अपने अपने देश और धर्मगुरुओं की शिक्षा से है। वास्तविक सनातन धर्म तो शरीर की रक्षा हेतु तन ढांकना और आत्म शुद्धि के लिए ईश्वर चिन्तन है।

आर्यसमाज के वैदिक धर्म और सनातन धर्म में भेद का मुख्य कारण यह है कि आज जिसे सनातन धर्म कहते हैं। उसमें बहुत से रस्मो-रिवाज पीछे से मिल गये हैं। शुद्ध सनातन धर्म में सामयिक धर्म और नवीन प्रथायें मिलकर वर्तमान सनातन धर्म भानुमती का पिटारा या चूँ चूँ का मुरब्बा बनकर रह गया है। उसे सनातन धर्म कहना भूल है। जबकि वैदिक धर्म का आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद है। समस्त भारतीय साहित्य, आचार्य और समाज वेद को ईश्वरी ज्ञान मानता है। मनु भगवान के शब्दो में- धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः -धर्म के तत्व को जानने वालों के लिए वेद परम प्रमाण है। अतः आर्य समाज की इस मान्यता से सनातन धर्मियों का कोई विरोध नहीं होना चाहिए अतः वैदिक धर्म ही शुद्ध सनातन धर्म है ।

महर्षि दयानंद के द्वारा सुझाये गये धार्मिक एवं सामाजिक सुधारो का आधार वेद शास्त्र और अन्य भारतीय साहित्य ही है, उसमें उनका अपना कुछ नहीं है। उदाहरण के लिए जाति के लिए आर्य शब्द और अभिवादन के लिए नमस्ते वाक्य के प्रयोग वेद, रामायण और गीता आदि ग्रन्थों से लिये गये हैं। बाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड में मर्यादा पुरुषोत्तम राम को आर्य कहा गया है गीता के श्लोक §2/2§ में भगवान कृष्ण ने अनार्य जुष्टम् कहकर अर्जुन के व्यवहार की भर्त्सना की थी। "नमस्ते अस्त्वायते और नमस्ते प्राण तिष्ठते " ये क्या अथर्ववेद के मन्त्र 11,4,7 में आये हैं। अर्जुन ने गीता के श्लोक §11,39§ में कृष्ण भगवान को नमस्ते कहकर अभिवादन किया है।

हिन्दुओं का प्राचीन और वास्तविक नाम आर्य है। ईरानी और यूनानी लोगों ने अपने साहित्य में भारतीयों को हिन्दू कहकर उल्लेख किया है। दासता के युग में मुस्लिम शासकों ने भी इन्हें हिन्दू ही कहा। सैकड़ों बरसों तक इसी नाम से जाने जाने के कारण वे अपने को हिन्दू ही समझने लगे। महर्षि ने दासता से जुड़े हुये हिन्दू के स्थान पर अपने वास्तविक नाम आर्य के प्रयोग करने का परामर्श दिया। चूँकि हिन्दू समाज ने हिन्दू नाम को स्वीकार कर लिया है और उसे छोड़ना नहीं चाहता इसलिये आर्य समाजियों का इस विषय में विशेष आग्रह नहीं है। समाज हित में किये जाने वाले समस्त कार्यों में वे हिन्दुओं के साथ हैं। जबकि पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित और अंग्रेजो के पक्षपाती सेक्यूलर कहलाने के फेर में अपने को हिन्दू कहलाने में अपना अपमान समझते हैं और जाति को संगठित करके उसे उचित अधिकार दिलाने के प्रयासों में बाधा डालते हैं।

प्राचीन आर्य §हिन्दू§ जाति जो अपने ज्ञान-विज्ञान और चरित्र-बल के कारण जगद्-गुरु थी, आज अपने स्वतंत्र भारत देश में ही तिरस्कृत है। स्वार्थी और अदूरदर्शी शासकों की राष्ट्रघातक दुर्नीतियों से वह सर्वनाश की ओर अग्रसर हो रही है, उसकी रक्षा करने और उसे प्राचीन गौरव दिलाने के लिए जाति में प्रचलित कुरीतियों और आपसी भेदभाव मिटाकर सनातन धर्मी सच्चे अर्थों में सनातन धर्मी और आर्यसमाजी सच्चे आर्य §श्रेष्ठ§ बनकर दोनों कन्धे से कन्धा मिलाकर जाति की डूबती नैया को भँवर से निकालने में प्राणपण से जुट जायें। यही समय की पुकार है। अभी चूके तो सदा के लिये चूके। ■

महर्षि दयानंद कीर्ति स्तम्भ निर्माण-योजना

रामनगर §नैनीताल§ महर्षि दयानंद शिला निर्माण समिति भारत के महामंत्री श्री इन्द्र वर्मा चौहान के अनुसार स्वामी जी के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण स्थानों पर "दयानंद कीर्ति स्तम्भ" का निर्माण कराया जायेगा। प्रथम चरण में हरिद्वार, ऋषिकेश, द्रोणसागर, काशीपुर बद्रीनाथ, केदारनाथ, जोशीमठ,कर्णप्रयाग,श्रीनगर,टिहरी उत्तरकाशी में इन शिलाओं का निर्माण कराया जायेगा, यह सम्पूर्ण कार्य अखिल भारतीय स्तर पर गठित समिति की देख-रेख में सम्पन्न होगा, जिसके पदेन सदस्य हैं। स्वामी आनंद बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली- महाशय धर्मपाल, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा नई दिल्ली। डा० धर्मपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा,नई दिल्ली , मनमोहन तिवारी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०,लखनऊ सरदारी लाल वर्मा प्रधान आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली। जय सिंह सरोज मंत्री आर्य उप प्रनिनिधि सभा कुमायूँ मंडल अजय भल्ला प्रधान आर्य समाज करोलबाग नई दिल्ली, डा० सूर्यदेव मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, गजानंद आर्य कलकत्ता, छोटू सिंह एडवोकेट राजस्थान, कैप्टन देवरत्न बम्बई, प्रो० शेर सिंह पूर्व केन्द्रीय मंत्री,हरियाणा मंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढ़वाल सदस्य हैं। श्री बांकेलाल कंसल नैनीताल देवीदत्त छिम्वाल पूर्व विधायक उ०प्र० ढिकुली इन्द्रवर्मा चौहान पूर्व उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा,उ०प्र० तथा मनोनीत सदस्य हैं पूर्व सांसद नैनीताल श्री सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया काशीपुर

सुश्री बिन्दु सहगल प्राचार्या दयानंद बाल मन्दिर रामनगर एवं निर्वाचित सदस्य हैं श्री रतन लाल सहदेवा तथा श्री राममूर्ति केला नईदिल्ली।

अब तक लिये गये निर्णय के अनुसार हरिद्वार एवं काशीपुर में शिला निर्माण हेतु उपसमितियाँ गठित की जा चुकी हैं। हरिद्वार में शिला वानप्रस्थ आश्रम में निर्मित होगी जिसके सदस्य हैं श्रीमती संतोष कुमारी रंगन, अध्यक्ष आर्य समाज हरिद्वार श्री देवेन्द्र कुमार प्रबंधक आर्य समाज हरिद्वार, प्राचार्य सोहनलाल शर्मा बहादराबाद §सहारनपुर§ श्री बांकेलाल कंसल नैनीताल श्री ज्ञान चन्द्र सेवा निवृत्त इन्जीनियर हरिद्वार,मंत्री वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार,मंत्री जिला उपसभा हरिद्वार तथा इन्द्र वर्मा चौहान। काशीपुर में शिला द्रोणसागर पर निर्मित होगी एवं यह कार्य नैनीताल के पूर्व सांसद श्री सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया की अध्यक्षता में गठित उपसमिति करायेगी जिस के सदस्य हैः- श्री जयसिंह सरोज डा० कौशिल्या चौधरी, स्वामी ओमानंद §सभी काशीपुर§ डा० सतीश चन्द्र रस्तोगी रुद्रपुर डा० ज्ञान प्रकाश कच्चाहारी पिथौरागढ़ श्री बांके लाल कंसल,नैनीताल ,इन्द्र वर्मा चौहान रामनगर तथा जनपद नैनीताल की समाजों के मंत्रीगण। शिला के डिजायनिंग को अंतिम रूप दे दिया गया है। यह जमीन से तेरह फुट ऊँची होगी एवं आठ फुट लम्बाई तथा चौड़ाई के चबूतरे पर निर्मित होगी। इसके चारों ओर मार्बल के पत्थर होंगे जिन पर महर्षि दयानंद के उस स्थान से जुड़े तथ्यों आर्यसमाज के सिद्धान्त तथा वैदिक साहित्य के महत्वपूर्ण आदर्श अंकित होंगे, वैराटपाटन ठिकुली §नैनीताल§ में निर्मित शिला का पुनर्निर्माण कराया जायेगा जिसका उद्घाटन स्व० प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी० ने किया था। ■

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रदर्शन

प्राचार्या डा0 आशा रानी राय, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरजेन्द्रनगर, कानपुर के कार्यक्रम का उद्घाटन ध्वजारोहण करके किया और कहा कि देश के विभिन्न अंचलों में अशांति व तनाव है, युवकों को सम्प्रदाय भाषा व अन्य मुद्दों पर बाँटा जा रहा है। राष्ट्रीय एकता व सद्भावना के लिए आवश्यक है कि युवा पीढ़ी शारीरिक रूप से स्वस्थ हो, तभी मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक उन्नति सम्भव है। आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री शिवपूजन आर्य ने अतिथियों का माल्यार्पण से स्वागत किया, व्यायाम शिक्षक तथा शाखा नायक राजकुमार आर्य ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संचालित कराया तथा स्वयं भी अभूतपूर्व तलवार जिमनास्टिक का प्रदर्शन किया। शिक्षक श्री उमाशंकर आर्य ने भी सुन्दर प्रदर्शन किया। आर्य वीर दल के प्रदर्शन में सर्वांग सुन्दर व्यायाम, भाला, लाठी, बाक्सिंग, झूला, वेटलिफ्टिंग, रिंग प्रदर्शन, सिंगलवार, डबलवार, विशिष्ट योगासन, जिम्नास्टिक, नलवार, पिरामिड आदि उल्लेखनीय रहे। □

उत्सव

आर्य समाज सुलतानपुर (नैनीताल) का वार्षिकोत्सव 3 से 5 अक्टूबर तक धूमधाम से मनाया गया। अनेक विद्वानों व भजनीकों के प्रवचन व उपदेशों का जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

बाल्मीकियों के बीच धर्म-प्रचार

दिनांक 4-10-90 को मेरठ शहर के एक बाल्मीकि बस्ती भगवतपुरा में बाल्मीकि जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ हवन द्वारा किया गया। यज्ञ के उपरान्त समारोह के मुख्य अतिथि श्री पं0 इन्द्रराज जी तथा जयन्त कुमार पाण्डेय का मुख्य प्रवचन हुआ।

अपने उद्बोधन में जयन्त कुमार पाण्डेय ने कहा कि आज जब देश में जातिवाद का जहर तेजी के साथ फैल रहा है तथा सारी सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था चरमरा कर टूटने के कगार पर है महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण की महत्ता बढ़ गई है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने बिना भेद-भाव की भावना से जाति तथा स्तर को महत्व न देकर प्रेम तथा श्रद्धा को महत्व दिया था, शबरी के द्वारा प्रदत्त आहार को निःसंकोच भाव से पूर्ण आदर तथा सम्मान देते हुए ग्रहण किया था। महर्षि बाल्मीकि रचित रामायण के नित्य पठन-पाठन तथा चिन्तन से ही लोगों के जातिगत संकीर्ण भावना से ऊपर उठकर गुण, दोष, कर्म तथा प्रेम और श्रद्धा को महत्व देने की प्रेरणा मिल सकती है।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने महर्षि बाल्मीकि के बारे में प्रचलित मिथ्या कथाओं का खण्डन किया। उन्होंने कहा कि महर्षि बाल्मीकि डाकू नहीं थे, बल्कि वे एक ब्राह्मण थे तथा उन्हीं के द्वारा लिखित रामायण को स्वामी दयानंद जी ने प्रामाणिक माना है। उन्होंने कहा कि कहा हम सभी आर्य हैं तथा महर्षि बाल्मीकि हमारे पूर्वज थे अतः बाल्मीकि भाईयों को अपने अन्दर से अस्पृश्य होने जैसी हीन भावना को निकाल देना चाहिए। उन्होंने कहा कि महर्षि बाल्मीकि केवल बाल्मीकियों के ही नहीं बल्कि हम सबके पूर्वज हैं। अतः हम सब भाई हैं और एक हैं। हमें अस्पृश्यता जातिवाद, तथा सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर महर्षि बाल्मीकि द्वारा वर्णित रामराज्य की स्थापना का प्रयास करना चाहिए। जिससे समाज में प्रेम सहयोग भाई-चारा की पुनः स्थापना हो सके तथा जातिवाद और अस्पृश्यता जैसी बुराईयों को समाप्त किया जा सके। केवल इसी तरह राष्ट्र तथा समाज में एकता तथा शान्ति स्थापित की जा सकती है।

उपरोक्त आयोजन के संचालन तथा संयोजन में कैलाश चन्द्र जी आर्य (बाल्मीकि) का योगदान सराहनीय तथा महत्वपूर्ण रहा। इस कार्य क्रम के पश्चात् एक बाल्मीकि परिवार में जलपान के कार्यक्रम में सभा प्रधान जी तथा जयन्त कुमार पाण्डेय ने भाग लिया।

प्रस्तोता- कैलाश चन्द्र आर्य, मेरठ।

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न

पटना 15 अक्टूबर, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का 64वाँ वार्षिक सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न हुआ। बिहार राज्य के कोने-कोने से आये हजारों प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूज्य प्रधान स्वामी आनंद बोध सरस्वती ने किया। पूर्वाह्न में सम्मेलन का प्रारम्भ हवन यज्ञ तथा वेद मंत्रोच्चार से हुआ। इस अवसर पर आनंद बोध सरस्वती ने स्वामी दयानंद को समाज सुधारक स्वतंत्रता के उद्घोषक के रूप में निरुपित किया तथा आर्य समाज की एक मिशन एक आन्दोलन के रूप में व्याख्या की। तत्पश्चात् उनकी देख रेख में बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव भी सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री भूप नारायण शास्त्री सभा प्रधान, श्री प्रो0 योगेन्द्र नारायण सभा मंत्री तथा श्री रामचन्द्र प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

अपरान्ह के सम्मेलन की अध्यक्षता पूर्व मंत्री श्री राम लखन सिंह यादव ने की। इस सम्मेलन में मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव का अभिनंदन सभा मंत्री प्रो0 योगेन्द्र नारायण द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने आर्य समाज की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का आश्वासन दिया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस अवसर पर समाज परिसर में नवनिर्मित विशाल, भव्य दयानंद अतिथिशाला का उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्वामी जी ने आर्य समाज की विशिष्ट सेवा के लिए सर्वश्री गंगाधर शास्त्री, सत्येन्द्र शास्त्री पं0 बासुदेव शर्मा तथा उमाकांत शास्त्री का अभिनंदन किया तथा उन्हें शाल भेंट किया।

आर्यसमाज धर्म नहीं आन्दोलन है

दिल्ली में ऋषि निर्वाणोत्सव पर आर्यनेताओं के उद्गार

हैदराबाद के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी आर्य नेता पं0 वन्देमातरम् रामचन्द्र राव की अध्यक्षता में आर्य समाज के हजारों अनुयायियों ने महर्षि दयानंद निर्वाणोत्सव बड़े हर्षोउल्लास के साथ मनाया।

प्रातः 8 बजे रामलीला मैदान में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पं0 यशपाल सुधांशु ने यज्ञ कराया। स्वामी जीवनानंद जी के द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् आर्य वीर दल के गणवेश धारी नौजवानों ने ध्वजगीत गाया।

सभा की अध्यक्षता करते हुए पं0 वन्देमातरम जी ने कहा कि वेद और महर्षि दयानंद के आदर्शों पर चलकर आज की समस्त समस्याओं का समाधान हो सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनंदबोध सरस्वती ने कहा कि महर्षि दयानंद का आर्य समाज एक सर्वतोमुखी आन्दोलन है। आर्य समाज कोई धर्म नहीं, कोई सम्प्रदाय नहीं, कोई मजहब या कोई पन्थ भी नहीं। आर्य समाज सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का संदेशवाहक है।

स्वामी जी ने आगामी 23, 24, 25 और 26 दिसम्बर 1990 को होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की आर्य जनता से जोरदार अपील की।

इस अवसर पर सांसद श्री रामचन्द्र जी विकल, श्रीमती सुषमापाल मल्होत्रा डा0 वाचस्पति उपाध्याय, डा0 धर्मपाल, श्री सूर्यदेव श्री शिवकुमार शास्त्री आदि ने भाषण दिये। सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह को आर्ष साहित्य भेंट करके उनका स्वागत भी किया गया।

डा॰ सच्चिदानंद शास्त्री द्वारा हालैण्ड में वैदिक प्रचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री डा0 सच्चिदानंद शास्त्री गत 6 अक्टूबर को हालैण्ड के दौरे पर रवाना हो चुके हैं। वेद प्रचार के उद्देश्य से लगभग 4 हफ्ते की अपनी, विदेश यात्रा के दौरान जहाँ शास्त्री जी के द्वारा हालैण्ड की विभिन्न आर्य समाजों में वैदिक उपदेश दिए जायेंगे वहीं आर्य समाज की गतिविधियों के अधिकाधिक प्रचार तथा प्रसार के लिए भी हालैण्ड के आर्य जनों को मार्ग दर्शन मिलेगा। शास्त्री जी की वापसी नवम्बर 1990 के प्रथम सप्ताह में अपेक्षित है। इस बीच यदि संभव हुआ तो वह गुयाना, सूरीनाम, व ट्रिनीडाड की आर्य समाजों का भी निरीक्षण करेंगे।

वैदिक प्रचार की दृष्टि से शास्त्री जी की इस विदेश यात्रा का आर्य जगत को विशेष लाभ होगा। डा0 सच्चिदानंद शास्त्री वहाँ अपने साथ वैदिक तथा आर्ष साहित्य भी काफी मात्रा में प्रचारार्थ ले गए हैं।

डा॰ कपिलदेव द्विवेदी अमेरिका में

न्यूयार्क। भारत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति तथा विश्वभारती अनुसंधान परिषद (वाराणसी) के निदेशक डा0 कपिलदेव द्विवेदी अमेरिका, कनाडा, सूरीनाम, गुयाना की धर्मप्रचार यात्रा पर हैं। डा0 द्विवेदी ने गीता मन्दिर न्यूयार्क में वेदों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सामाजिक और धार्मिक जीवन में जो स्थान वेद दे सकते हैं वह अन्य ग्रन्थ नहीं। आपने आधुनिक युग में वेदों के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। गीता मन्दिर की ओर से आपका स्वागत स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने किया।

आर्यसमाज न्यूयार्क में डा0 कपिलदेव-द्विवेदी ने वेदों में मनोविज्ञान विषय पर बोलते हुए कहा कि हमें वेदों में मनोविज्ञान विषय पर विशद विवरण प्राप्त होता है। मन की पवित्रता, विचारों की शुद्धि और तपस्या को मुक्ति का साधन माना गया है।

आपने कहा कि मन, आत्मा का प्रतिनिधि है तथा मन ही का प्रेरणा स्रोत है, इसकी प्रेरणा से सारे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष होते हैं।

आर्यसमाज, ओहियो में डा0 द्विवेदी ने परिवार सुखी कैसे हो विषय पर बोलते हुए कहा कि परिवार को सुखी बनाने का एकमात्र उपाय यह है कि व्यक्ति सभी पुरुषार्थी हों और सद्गुणों को अपनावें। वेदों की शिक्षा है कि स्वपुरुषार्थ से उपार्जित धन का भोग किया जाना चाहिए।

डा0 कपिलदेव द्विवेदी ने आर्यसमाज न्यूजर्सी में "जीवन के उद्देश्य एवं लक्ष्य" पर तथा आर्यसमाज वेस्टचेस्टर, न्यूयार्क में "जीवन और ऐश्वर्य" विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला। आनन्द आश्रम मनरो में आपने कहा कि वेद हमारे प्रकाश स्तम्भ हैं और हमें विश्वशान्ति का उपदेश देते हैं। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने आपका स्वागत किया। और वेद तथा भारतीय संस्कृति पर किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

उत्सव सम्पन्न

"आर्य समाज हसनपुर (मुरादाबाद) का [वा]र्षिकोत्सव दिनांक 13-14-15 अक्टूबर [को] मनाया गया। इस अवसर पर वेद वेदांग [के] माने विद्वान डा0 श्री सत्यप्रिय जी शास्त्री [आ]चार्य प्रवर श्री विश्वमित्र जी मेधावी एवं गीतकार श्री नरेशदत्त एवं वयोवृद्ध भजनो-पदेशक श्री गजराज सिंह जी राघव जी आदि पधारे।

● आर्यसमाज ... (बलिया) का 5वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 2 से 4 अक्टबर तक धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ उपस्थित लोगों में वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा देखने को मिली।

● -आर्यसमाज नई बाजार बक्सर (बिहार) का 11वॉ वार्षिकोत्सव दिनाक 21 से 23 सितम्बर तक समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

★ आर्य समाज सुल्तानपुर (नैनीताल)

प्रधान- श्री ओमप्रकाश
मंत्री- श्री दुर्गा सिह
कोषाध्यक्ष- श्री चोखे सिह

शोक श्रद्धांजलि

आर्यसमाज किशनगर (आगरा) ने आरक्षण के विरोध में दिवगत छात्र-छात्राओं के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुये मृत आत्माओं को सदगति तथा शोक संतप्त परिवारों को परमपिता परमात्मा से धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की। और सभी सदस्यों ने सरकार की इस नीति की भर्त्सना की।

पंजीकरण सं. एल. डब्ल्यू/एन.पी. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
मार्गशीर्ष कृष्ण २/६ संवत् २०४७ वि०
दिनांक ४/११ नवम्बर १९९०

दूरभाष २४५६६२

आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से आ०स० से निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने "भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा" के नाम से एक अवैधानिक संगठन खोल कर आर्यजनता में भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इस तथाकथित अवैधानिक संगठन को अपना किसी प्रकार का कोई सहयोग न दें।

- सभामन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य (ओ३म्) मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) मार्गशीर्ष शुक्ल-१ रविवार संवत २०४७ वि दिनाक १८ नवम्बर १९९० (घोषणा पत्र स.७/२७-२ ७५



श्री चन्द्रशेखर प्रधान मंत्री एवं श्री देवीलाल उप प्रधान मंत्री को बधाई

श्री चन्द्रशेखर के भारतीय गणतंत्र के प्रधानमंत्री तथा श्री देवीलाल के उपप्रधानमंत्री पद पर सुभासीन होने के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज तथा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने उ०प्र० की आर्यजनता की ओर से बधाई प्रेषित करते हुये उनके कुशल नेतृत्व में कोटि-कोटि भारतीय जनता के सुख शान्ति और समृद्धि की कामना की है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक ४५

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन

उत्तर प्रदेश तथा राष्ट्र की असामान्य एवं अपरिहार्य गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के नियम सं० ८ (ए) के अन्तर्गत उक्त सभा के लखनऊ में सम्पन्न होनेवाले १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन कर दिया गया है। अब सभा के उक्त अधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की परिवर्तित तिथियाँ सभा के नियम सं० ८ (ए) के अनुसार निम्न प्रकार घोषित की जाती हैं—

(१) वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन....
दिनांक १५ तथा १६ दिसम्बर १९९०
(शनिवार तथा रविवार)

(२) निर्वाचन परिणाम की घोषणा.... निर्वाचन की समाप्ति के बाद।

समय तथा स्थान डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में यथा घोषित पूर्व कार्यक्रमानुसार।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम
आर्य मित्र
लखनऊ मार्गशीर्ष शुक्ल-१ संवत २०४७ वि.
दिनांक १८ नवम्बर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

जनादेश से कतराते ये राष्ट्रभक्त

केन्द्र में विश्वास मत प्राप्त न कर सकने के कारण राष्ट्रीय मोर्चे की ।। मास से चली आ रही सत्तारूढ़ सरकार गिर गई है और विश्वनाथ-प्रताप सिंह ने अपनी मन्त्रिपरिषद का त्यागपत्र राष्ट्रपति को सौंप दिया है जिसे राष्ट्रपति ने स्वीकार भी कर लिया है। विश्वनाथ प्रताप सिंह ने संसद में धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देते हुए तथा पिछड़ी जातियों के प्रति अपनी करुणाभरी आरक्षणनीति का अपने को मसीहा घोषित करते हुए सदन के सदस्यों से अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ पर विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में मत दिए जाने की मार्मिक अपील की थी किन्तु इसका कोई प्रभाव संसद सदस्यों पर नहीं पड़ा और प्रस्ताव के पक्ष में केवल १५१ — मत पड़े जबकि विपक्ष में ३५६। इस प्रकार सरकार के प्रति रखा गया विश्वास का प्रस्ताव काफी बहुमत से अस्वीकृत हो गया। अब लोहिया विचारमंच के प्रबल समर्थक एवं प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री चन्द्रशेखर को (लिखे जाने तक) प्रधानमन्त्री पद पर आरूढ़ कराए जाने की जोड़-तोड़ चल रही है।

यह स्थिति, लालकृष्ण आडवानी की बिहार में रोकी गई रथयात्रा के कारण भारतीय जनता पार्टी द्वारा राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार से समर्थन वापस लिए जाने से उत्पन्न हुई और उसकी परिणति हमें एक अल्पमत वाली सरकार के रूप में मिली है जिसकी साँसें कितनी हैं-- यह तो भविष्य ही बतलाएगा किन्तु इतना निश्चित है कि इस समय रामजन्मभूमि मुददे पर भारतीय जनमानस की अवस्था को भाँपते हुए भारतीय जनता पार्टी के अतिरिक्त और कोई भी पार्टी चुनाव मैदान में उतरकर जनता का सामना करने को तैयार नहीं है।

अयोध्या में राम मन्दिर के निर्माण के प्रश्न पर जिस तरह तत्कालीन प्रदेशीय और केन्द्रीय शासन ने मिलकर निहत्थे कार सेवकों का नरसंहार किया है उसे हिन्दूजाति कभी भुला नहीं सकती है। स्वतंत्रता के बाद भारत के राजनैतिक इतिहास में ऐसी घोर अदूरदर्शितापूर्ण क्रूर कार्यवाही शायद ही कभी घटित हुई हो। 30 अक्टूबर की वास्तविक घटना तथा उसके बाद हुए नरसंहार में मारे गये निहत्थे कारसेवकों की संख्या के बारे में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह ने तथ्यों को छिपाया, जनता को गुमराह किया और अपनी बहादुरी का आशीर्वाद तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को गलत रिपोर्ट देकर प्राप्त कर लिया। यदि समाचार पत्र वास्तविकता का उद्घाटन न करते तो सच्चाई सदा-सदा के लिये अन्धेरे में डूबी रहती। पर सत्य की सदा विजय होती है। तथ्यों को वास्तविक रूप में जनता के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए भारतीय जनता, समाचार पत्रों की सदैव के लिए ऋणी रहेगी।

अयोध्या के रामजन्मभूमि आन्दोलन ने भारतीय जनता में एक संकल्प पैदा कर दिया है जिसे हमारे धर्मनिरपेक्ष कहलाने वाले आधुनिक नेता समझ नहीं पा रहे हैं। मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ने दावा किया था कि अयोध्या में चिड़िया पर नहीं मार सकती। हजारों स्थानों पर नाकेबंदी, कोई अयोध्या न पहुँच पाये इसलिए रेलें, बसें तथा अन्य सभी यातायात के साधन बन्द। तीस किलोमीटर के व्यास में अधिकारियों की इच्छा के बिना किसी का आना जाना संभव ही नहीं। केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस, दक्षिण के राज्यों की पुलिस, इन्डोतिब्बत बार्डर, सुरक्षाबलों के कड़े पहरों के बीच हजारों की संख्या में कारसेवक मन्दिर के गर्भगृह तक पहुँच कैसे गये-- यह भी एक अनबूझा रहस्य है जिसे मुलायम सिंह तो क्या शासन का कोई भी व्यक्ति नहीं बता सकता। हम बताते हैं- घेरा डालने वाले हृदय से राम के प्रति आस्थावान और राममन्दिर निर्माण के पक्ष में थे। वे निहत्थों को नहीं मारना चाहते थे-- उनकी पत्नियों ने नरसंहार के बाद जगह-जगह रोते हुये जो जलूस निकाले हैं और छाती पीट-पीटकर "प्रशासन मुर्दाबाद" के नारे लगाये हैं वे इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। अयोध्या में जो कुछ हुआ उसे हम किसी भी दृष्टिकोण से न तो निष्पक्ष ऐडमिनिस्ट्रेशन कह सकते हैं और न संविधान के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की रक्षा में उठाया गया कदम। यह तो घोर पाप हुआ है।

.... हम यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते हैं। उत्तर प्रदेश में स्व0 लाल बहादुर शास्त्री पुलिसमंत्री थे। किसी मुददे पर विरोध प्रदर्शन करते हुये छात्रों का एक बहुत बड़ा जलूस निकला जो पुलिस घेरे को तोड़ता हुआ हिंसक हो गया। अधिकारी बार-बार शास्त्री जी से गोली चलाने का आदेश प्राप्त करने के लिये आग्रह कर रहे थे किन्तु शास्त्री जी अत्यन्त कुशल और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे, उन्होने ऐसी आज्ञा देने से साफ इन्कार कर दिया। वे कुछ देर सोचते रहे फिर उन्हें एक तरकीब सूझी उन्होंने भीड़ पर पानी की बौछार किए जाने की आज्ञा दे दी। बड़े- बड़े पाइपों से पानी की बौछार होने लगी और भीड़ तितर-बितर हो गई।

मुलायम सिंह ने जिस तरह एक वर्ग विशेष को खुश रखने के लिए धर्मनिरपेक्षता की आड़ में शक्ति परीक्षण किया है वह उनके दम्भ तथा शक्तिमद को केवल उजागर करता है। न वह समस्या का समाधान है और न शान्ति और अहिंसा का रास्ता। यही कारण है कि भारतीय जनमानस बौखलाया बैठा है और राजनीति के ये ठेकेदार मध्यावधि चुनाव के विरोध में अनैतिक गठबंधन कर रहे हैं तथा जनता के सामने चुनाव मैदान में जाने से कतरा रहे हैं। क्या चुनाव एक सौदेबाजी है जो जनता के रुख को देखकर ही किया जायेगा? क्या संविधान में निहित मूलबहुमत वाली दलीय प्रणाली की उपेक्षा करके अनजोड़ तथा, परस्पर विरोधी आदर्शों वाला गठबंधन करके सरकार चलाना अनैतिकता नहीं है?

प्रभात आश्रम की प्रभा



गुरुकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री वाचस्पति मिश्र ने मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय (भारत सरकार के स्वायत्त प्रतिष्ठान "राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान" (दिल्ली) द्वारा आयोजित (प्राचीन व्याकरण) की परीक्षा (सत्र 89-90) में सर्वप्रथम आकर मेरिट में सर्वोच्च स्थान द्वारा गुरुकुल एवं आर्यजगत् को गौरवान्वित किया है।

श्री मु0 इन्द्रराज सभा प्रधान एवं मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने इस उदीयमान प्रतिभा को अपना शत-शत आशीर्वाद एवं शुभकामनायें प्रेषित की हैं।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

● कलियुग नाम काल का है। काल निष्क्रिय होने से कुछ धर्माधर्म करने में बाधक नहीं।"

जातियों पर आधारित आरक्षण न उचित है न ही सम्भव

प्रो॰ शेरसिंह प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
एवं पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री
भारत सरकार

सरकारी नौकरियों में आरक्षण के संवेदनशील प्रश्न ने दूसरे अधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्नों को पीछे डाल दिया है। इसलिए इस प्रश्न के सभी पहलुओं पर तटस्थ भाव से और निष्पक्षता के साथ विचार करना आवश्यक हो गया है।

1 अक्टूबर 1990 को उच्चतम न्यायालय ने मण्डल आयोग की सिफारिशों के अमल पर रोक लगा दी है और 25 अक्टूबर 1990 से पांच न्यायमूर्तियों की पीठ उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों में दायर की गई याचिकाओं को सुनना आरम्भ करेगी। मुझे इस बात में पूरा-पूरा संदेह है कि उच्चतम न्यायालय जन्म के आधार पर जातियों के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण की अनुमति दे देगा। हो सकता है कि इस महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न को यह पीठ अपने से बड़े न्यायपीठ को सौंप दें। इस प्रकार इस प्रश्न के निर्णय में काफी समय लग सकता है। इस दौरान सभी सम्बद्ध पक्षों को मिल बैठकर सहमति से हल निकालना चाहिए।

यह ध्यान देने की बात है कि संविधान के अनुच्छेद 341§1§ और 342§1§ के अनुसार राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया है कि वे लोक अधिसूचनाओं के द्वारा उन जातियों या आदिम जातियों का उल्लेख कर सकेंगे जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिए अनुसूचित जातियां या अनुसूचित आदिम जातियां समझा जाएगा।

परन्तु राष्ट्रपति को यह अधिकार नहीं दिया गया है कि वे लोक अधिसूचना द्वारा उन जातियों का उल्लेख कर सकेंगे जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिए "पिछड़ी-जातियां" समझा जाएगा। मुझे ऐसा लगता है कि इस सम्बन्ध में जारी की गई सभी लोक अधिसूचनायें संविधान का उल्लंघन करने वाली और अधिकारातीत हैं।

यह भी ध्यान देने की बात है कि पिछड़े नागरिकों के इन दो वर्गों में जान-बूझकर विभेद किया गया है। जिन जातियों का "अनुसूचित-जातियों" के रूप में उल्लेख किया गया है उन सभी जातियों को सदियों से "अस्पृश्य" माना जाता रहा और उनको कुओं, तालाबों, स्नानघाटों, सड़कों, सार्वजनिक समागम स्थानों के उपयोग से वंचित किया जाता रहा और सार्वजनिक भोजनालयों, होटलों तथा मनोरंजन के स्थानों और मन्दिरों आदि में इनका प्रवेश बन्द रहा। परन्तु पिछड़े दर्जे की मानी जाने वाली तथाकथित पिछड़ी जातियों को छुआछूत तथा अन्य सामाजिक निर्योग्यताओं का शिकार नहीं होना पड़ा। दयानन्द और गांधी ने जो जन जागरण किया उसके परिणामस्वरूप इन जातियों ने हीनता की भावनाओं को उखाड़ फैंका और अपने आपको ऋषिमुनियों और वीर क्षत्रियों का वंशज घोषित करते हुए अपने नामों के साथ शर्मा और वर्मा लगाना शुरू किया।

इसीलिए संविधान के निर्माताओं ने "अनुसूचित जातियों" को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करने के लिए अनुच्छेद 330 के अनुसार लोक सभा और विधान सभाओं की सीटों के लिये जनसंख्या के आधार पर आरक्षण दिया और अनुच्छेद 335§ के अनुसार राज्य की सेवाओं और पदों के लिए उनके आरक्षण का दावा कबूल किया।

आर्थिक सामाजिक तथा शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े नागरिक वर्गों की उन्नति, सामाजिक अन्याय और शोषण से उनकी मुक्ति, उनके शिक्षा तथा अर्थ सम्बन्धी हितों के उन्नयन, उनकी प्रगति में बाधक कठिनाईयों के निराकरण तथा आर्थिक अनुदानों द्वारा उनके धन्धों को लाभकारी बनाने के लिए संविधान के अनुच्छेदों §15§4", 46 और 340§ में इस प्रकार के विशेष प्रावधान करने की छूट दी गई है। संविधान के अनुच्छेद 16§4§ के अनुसार राज्य को पिछड़े हुए किसी नागरिक वर्ग के पक्ष में आरक्षण करने का अधिकार होगा, जिनका प्रतिनिधित्व राज्य की राय में राज्याधीन सेवाओं में पर्याप्त नहीं है।

यह ठीक है कि राज्याधीन सेवाओं की संख्या अब नौकरियों का एक प्रतिशत के लगभग हैं, परन्तु यही सेवायें तो सारे प्रशासन को चलाती हैं और इस देश में प्रशासन की सहायता और संरक्षण के बिना खेती, उद्योग व्यापार कोई भी धन्धा नहीं चल सकता। इसलिए इन सेवाओं में पर्याप्त नहीं है।

जिस कोटि की शिक्षा ग्रामीण बालक बालिकाओं को, ग्रामीण स्कूलों में मिल रही है उसको सविस्तार प्रतिपादित करना मैं आवश्यक नहीं समझता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के प्रवर्तकों ने ग्रामीण स्कूलों की दशा का जो चित्रण किया है और टीका-टिप्पणी की है उनको मैं दोहराऊँगा नहीं। परन्तु इस सन्दर्भ में, मैं मण्डल आयोग के उत्कट समर्थक श्री मुलायमसिंह-यादव की उक्ति को उद्धरित करना आवश्यक समझता हूँ। अप्रैल 1990 में उन्होंने कहा था "ग्रामों में जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है उसका नतीजा हमारे सामने है, स्वतन्त्रता प्राप्ति के 42 वर्षों बाद भी देहाती युवकों को बड़े और महत्वपूर्ण पद सरकारी नौकरियों में नहीं मिल पाये हैं। केवल मुट्ठीभर लोगों को ही आई०ए०एस० तथा सहवर्गी पद मिल सके हैं वे भी उनको जिनके पिता या अभिभावक सरकारी अफसर हैं। "शुद्ध गांव वाले" तो आई०ए०एस० तक पहुँच ही नहीं सकते"।

हरयाणा की कुल आबादी का 51 प्रतिशत, अहीर, गुजर, जाट, सिख जाट, राजपूत, सैनी, रोड़ मेव, बिश्नोई, कम्बोज इत्यादि का प्रतिनिधित्व आई०ए०एस० में केवल 8·5 प्रतिशत ही है। यदि इनमें से उन अफसरों को निकाल दिया जाए जिनके पिता या अभिभावक सरकारी अफसर थे या जिनके पास शहर के स्कूलों में पढ़ने के साधन थे, तो पता चलेगा कि शुद्ध गांव वालों का प्रतिनिधित्व 4 प्रतिशत भी नहीं है। दूसरे प्रदेशों की अवस्था हरयाणा से बेहतर नहीं हो सकती।

इन तथ्यों के प्रकाश में और भारत के सबसे बड़े प्रदेश के मुख्यमन्त्री की राय में, राज्याधीन सेवाओं में यदि पिछड़े हुए किसी नागरिक वर्ग का सबसे कम प्रतिनिधित्व है तो वह है "शुद्ध ग्रामीण" जिसने गांव के स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है। इसलिये बिना लिहाज जाति और मजहब के "शुद्ध गांव वालों" जिसने शिक्षा गांव के स्कूल में पाई है, राज्याधीन सेवाओं में आरक्षण का अधिकारी बनता है। प्रधानमन्त्री "पिछड़ी जातियों" को लोकसभा और विधान सभाओं में 40 प्रतिशत सीटें देने की घोषणा करते रहे हैं, फिर सरकारी सेवाओं में आरक्षण 27 प्रतिशत क्यों" वह भी 40 प्रतिशत ही होना चाहिए। इस आरक्षण के अन्तर्गत वे सभी जातियां आ जायेंगी, जिनके लिए मण्डल आयोग ने 27 प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश की है।

शहरों की गन्दी बस्तियों और शहरीकृत ग्रामों की अवस्था गांव वालों जैसी ही है, इसलिए बिना लिहाज जाति और मजहब के 5 प्रतिशत आरक्षण इनके लिए भी होना चाहिए।

अनुसूचित जातियों, जनजातियों का आरक्षण यथापूर्व रहे और भूतपूर्व सैनिकों, विकलांगों और स्वतन्त्रता सेनानियों का आरक्षण भी यथा पूर्व रहे।

शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के लिए आरक्षण अनिवार्य :-

प्रधानमन्त्री ने यह कहकर कि शिक्षा संस्थाओं के प्रवेश में आरक्षण नहीं होगा, सब गुड़ गोबर कर दिया। इस घोषणा ने आरक्षण के द्वारा जो पद पिछड़े वर्गों को मिल सकते थे उनसे तो वंचित कर ही दिया इसके अलावा स्वावलम्बन स्वरोजगार के भी रास्ते बन्द कर दिये हैं। यह सर्वविदित है कि व्यावसायिक और पेशावर शिक्षा के महाविद्यालयों और संस्थानों में प्रवेश के लिए न्यूनतम अंक 75 प्रतिशत होने चाहिएं, स्नातक आनर्स आदि में प्रवेश के लिए न्यूनतम अंक 65 प्रतिशत होने चाहिएं। स्नातक स्तर के अच्छे महाविद्यालयों में भी अच्छे अंक प्राप्त किये बिना प्रवेश सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में कम से कम योग्यता के अभाव में शुद्ध गांववालों को बड़े पद और

शेष पृष्ठ ८ पर

विश्वव्यापी भ्रष्टाचार के उन्मूलन में समर्थ

भारतीय प्राचीन प्रणाली

● प्रेम नारायण अग्रवाल, एम०ए० बम्बई

हमेशा से ही भ्रष्टाचार विश्वव्यापी रहा है- कभी ज्यादा और कभी कम इसके रंग-रूप भी बदलते रहे हैं, कभी राजनीतिक, कभी सामाजिक या अन्य किसी रूप में। प्रत्येक देश की स्थिति के अनुसार इसका आकार-प्रकार भी बदलता रहा है। गहराई और व्यापकता में यह कभी कम नहीं रहा। संसार के अमीर-गरीब विकसित अविकसित, पूँजीवादी या कम्युनिस्ट सभी इसके शिकार रहे हैं, और हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व संसार प्रायः दो भागों में बँटा हुआ था। एक था गुलाम देशों का और दूसरा स्वतंत्र देशों का। परतंत्र देशों की राजनीति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक दशा आदि सभी शासकों के इशारे पर चलती थी। शासित देश अपनी सारी शक्ति स्वतंत्रता प्राप्त करने के प्रयत्नों पर केन्द्रित किये हुये थे। विदेशी शासक अपने गुलाम देशों का धन धान्य आदि सभी को लूटकर अपने देश को खुले तौर पर आजादी के साथ ले जाते थे। चूँकि शासक देश लूट खसोट के कार्य में अपनी पूरी शक्ति से जुटे थे। अतः वे अपने अधीनस्थ देशों के आन्तरिक भ्रष्टाचार को अनदेखी कर रहे थे। परन्तु युद्ध के बाद संसार की सारी स्थिति अनायास एकदम बदल गई। नव स्वतंत्र देशों में भ्रष्टाचार के अनेक नये क्षेत्र खुल गये जो पराधीनता काल के केवल शासकों के लिये सुरक्षित थे। अधीनस्थ देशों के हाथ से निकल जाने के बाद शासक देशों को अपने देश की आन्तरिक नयी पुरानी समस्याओं पर ध्यान देने की आवश्यकता उत्पन्न हो गई। अब उनको अपने देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों की अनेकानेक कमजोरियाँ दिखाई पड़ने लगी। और उनको ठीक ढंग से शीघ्रातिशीघ्र सम्हालने की आवश्यकता उन्हें अनुभव हुयी, क्योंकि सांसारिक संघर्ष से जूझकर उनको अपनी श्रेष्ठता को बनाये रखना आवश्यक हो गया था। आर्थिक भ्रष्टाचार जो अभी तक प्रधानतः व्यापारिक क्षेत्रों में ही था, चारों तरफ फैल गया। सत्ता के लिये संघर्ष भीषण होने के साथ साथ बहुत मँहगा हो गया। सामाजिक जीवन और पारिवारिक शान्ति को दयनीय स्थिति से बाहर निकालना आवश्यक हो गया। चुनावों के खर्चे अंधाधुंध अत्यधिक बढ़ गये और इसके लिये चन्दा इकट्ठा करने में अवांछनीय और निन्दनीय हथकण्डे अपनाये जाने लगे जिनका भंडाफोड़ होने पर ऊँचे-ऊँचे पदाधिकारियों के आसन भी हिल गये और अनेकों को अपने पदों से हाथ धोने पड़े। जो जितना धनी था, वहाँ पैसे का उतना ही बड़ा घोटाला प्रकाश में आया। अमेरिका में संसद और राष्ट्रपति के चुनाव विभिन्न समय पर होने से दोनों में कल्पनातीत धनराशि खर्च होती है, जो उनके अच्छे बुरे तरीकों से एकत्रित की जाती है। इसके बदले में धनदाताओं को कुछ न कुछ लाभ पहुँचाना पड़ता है।

भारत की जबर्दस्त गरीबी और सदियों तक दासता में रहने के फलस्वरूप भ्रष्टाचार भयंकर रूप से सभी स्तरों पर जीवन के सभी क्षेत्रों में बुरी तरह व्याप्त है।

भारत में इस महामारी को नियत्रण में रखने के लिये अनेक तरीके अपनाये गये और अब भी अपनाये जा रहे हैं।

भारतीय सभ्यता में प्रत्येक स्त्री पुरुष की औसत आयु 100 वर्ष की मानकर उसे चार भागों में बाँटा गया है। और प्रत्येक भाग के लिए उनके कर्तव्यों की परिभाषा दी गई है। प्रथम 25 वर्ष को ब्रह्मचर्य आश्रम कहा जाता है, जिसमें युवकों को विद्योपार्जन के साथ अगले 25 वर्षों के गृहस्थ जीवन की तैयारी करनी होती है। गृहस्थ जीवन में शादी विवाह करके बच्चे उत्पन्न करना तथा तीसरे वानप्रस्थ और चतुर्थ संयास आश्रम के प्रति अपने दायित्व को निभाना बताया गया है। ।● वर्ष की आयु के बाद मनुष्य को "वानप्रस्थ" आश्रम में प्रवेश करने को बताया गया है। इस आश्रम में वह अपने को चतुर्थ आश्रम संयास के लिये तैयार करता है ताकि वह संयास आश्रम के कर्तव्य और दायित्वों से घबरा न जाए, वरन् आसानी से खुशी खुशी उसका निर्वाह करते हुये अपना शेष जीवन संचालित करें। यह चौथा आश्रम 75 वर्ष के बाद की आयु से प्रारम्भ होता है और इसको संयास आश्रम कहते हैं। इसमें प्रत्येक सन्यासी के लिए अनिवार्य है कि वह अपने स्त्री बच्चों, नाते-रिश्तेदारों आदि से संबंध विच्छेद करके सांसारिक राग-द्वेष, लगाव कीर्ति आदि के सभी लालचों से दूर रहे और जीवन यापन की उसकी आवश्यकतायें अत्यधिक न्यून हों। लंगोटी, कमण्डल दण्ड ही उसके मुख्य जीवन के आधार रहते थे। खाने के लिए आश्रम में, जो प्रायः आबादी से दूर जंगलों में होते रहे हैं, मिलने वाले कन्दमूल फलादि फल होते थे। किसी से कोई चीज माँगना वर्जित था। इस अवस्था में वह अपना नाम बदलकर गेरूवे वस्त्र पहनता था ताकि आम जनता और उनके घनिष्ट आसानी से उनको पहचान न सकें और उन्हें निःसंकोच कहने सुनने का अवसर मिले। उनसे आशा की जाती थी कि वह अपने संयास काल के जीवन में अपने धार्मिक कार्यों के साथ-साथ जनता जनार्दन की सेवा भी करें। जो स्त्री पुरु उनके आश्रम में आयें उनकी समस्याओं का समाधान करें और उनको उनके कर्तव्यों और उत्तरदायित्व की बात बताएं। देश के कोने कोने में भ्रमण करके वह सभी प्रकार के सभी श्रेणियों के लोगों को देशकाल की स्थिति से अवगत करायें और उनको अपनी त्रुटियों से सावधान रहने और उनको मिटाने की प्ररणा दें। उनका सभी राजा व सर्वसाधारण सम्मान करते थे और आदर की दृष्टि से देखते थे। सभी के पास आने जाने की उनको छूट होती थी। चूँकि उनको किसी से कुछ लेना देना नहीं होता था। न नाम कमाने की इच्छा होती थी। अतः बेधड़क निर्भीकता पूर्वक न्यायोचित कल्याणकारी कार्य और उपदेश देते थे। सभी लोग उनकी बातों को ध्यान से सुनते थे और उनके अनुसार अपने को चलाने का प्रयत्न करते थे वह सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक आदि बुराईयों से बचाने के लिए बराबर देश के कोने-कोने में भ्रमण करते रहते थे। वह राजाओं को उनके कर्तव्य की याद दिलाते रहते, उनके शासन की गलतियों जनता की परेशानियों कुरीतियों गलत राजनीति आदि से परिचित कराकर उनको सम्भालने एवं सुधारने के लिए प्रेरित करते रहते थे और राजा प्रजा सभी को सही रास्ते पर चलने के लिए बराबर सावधान करते रहते थे।

विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारे प्राचीन साहित्य को बरबाद कर दिया है। अनेक उपयोगी सामग्री लूटकर वे ले गये और उसका उन्होंने दुरुपयोग किया। जब उन्होंने अपना राज्य यहाँ कायम किया था, तब उसे स्थायी बनाने के लिये हमारे साहित्य, इतिहास व संस्कृति को बदलकर उसका रंग रूप विकृत कर अपने अनुकूल बनाने की चेष्टा की। इसी कारण हम पाश्चात्य सभ्यता को सब कुछ मान बैठे हैं। उसे सर्वश्रेष्ठ समझकर अपने को अत्यन्त हीन, तुच्छ तथा असभ्य समझने लगे हैं। जो अच्छाई आज हमारे पास है वह सब पाश्चात्य संस्कृति की देन है ऐसी हमारी मनोभावना बन गई है।

यदि आज हमारा संयासी वर्ग अपने आश्रमों, मठों को छोड़कर जनता के बीच बाहर आ जायें और हमें सचेत करें तो थोडे समय में केवल भारत में ही नहीं, संसार में एक नये जीवन का संचार हो जाये और वर्तमान, भ्रष्ट एवं प्रदूषित कार्य कलाप रुक जायें। हमें चाहिये कि हम उनको उनके कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों की याद दिलायें और जनता का मार्ग दर्शन करने के लिये आगे आने को तैयार करें। इधर के वर्षों में कुछ साधु संत, संयासी आगे आये हैं और उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व सबको प्रभावित कर रहा है। इस प्राचीन भारतीय जीवनसारणी तथा आश्रम प्रणाली की उपयोगिता अपने आप प्रामाणिक रूप में आज भारत में उपस्थित हैं, जिसका अनुपालन कर हम स्वयं अपने देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सकते हैं और विश्व का भी इस क्षेत्र में मार्ग दर्शन कर सकते हैं। ■

अयोध्या में राम मन्दिर का नवनिर्माण एक निरर्थक विवाद

—बलराज मधोक

राम जन्म भूमि का मसला-

1988 में फैजाबाद की अदालत ने मन्दिर के आंगन के द्वार पर ताला लगाने का फैसला रद्द करके रामभक्तों को मूर्तियों के निकट जाने की अनुमति दी। इससे स्थिति में कोई गुणात्मक बदलाव नहीं आया। मूर्तियां वहाँ 1948 से स्थापित थीं और उनकी लगातार पूजा अर्चना हो रही थी, परन्तु दर्शनार्थी गर्भगृह के अन्दर नहीं जा सकते थे। ताला खुलने के बाद वे गर्भगृह में जाने लगे।

जहाँ मूर्तियां स्थापित हैं, जहाँ 42 वर्षों से पूजा, अर्चना, अनवरत चल रही हो, वह स्थान उसके ऊपर छत, कैसी हो, इमारत का रूप कुछ भी हो, मन्दिर है। उसे मस्जिद कहना हर दृष्टि से गलत है। वह स्थान बाबर द्वारा मन्दिर तोड़ने से पहले भी मन्दिर था और अब भी मन्दिर है। उसका नया भवन कैसा हो, ईंटों का हो या पत्थरों का, उसे महन्त अवैधनाथ बनाएं या जगद्गुरु शंकराचार्य स्वरूपानन्द बनाएं यह हिन्दू समाज का घरेलू मामला है। इसमें न सरकार का कोई दखल होना चाहिए और न मुसलमानों के उस वर्ग का जो अपने आपको अपने पुरखों, राष्ट्रपुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम से जोड़ने के बजाय विदेशी आक्रान्ता बाबर के साथ जोड़ता है।

बाबर का मकबरा

बाबर भारत में 1526 में काबुल से आया था और 1530 में काबुल में ही मरा था। उसका मकबरा वहीं है। कुछ वर्ष पूर्व काबुल जाने पर उसे देखने चला गया। वह अच्छी हालत में नहीं था। मैंने वहाँ नियुक्त अफगान सरकार के कर्मचारी से पूछा कि इसका रख-रखाव ठीक से क्यों नहीं किया जाता। उसका उत्तर था, बदमाश विदेशी-हम उसके मकबरे का रख-रखाव क्यों करें। काबुल में भी बाबर विदेशी आक्रान्ता के रूप में समरकन्द से आया था। उस बर्बर विदेशी आक्रान्ता के साथ अपने आपको जोड़ना किसी भारतीय को शोभा नहीं देता।

और जहाँ तक वहां बनी मकबरानुमा इमारत का प्रश्न है, उसके अन्दर खड़े मन्दिर के स्तम्भ उस पर खुदे हुए चिन्ह और लेख और मुख्य द्वार पर अंकित सूर्य और कमल के चिन्ह पुकार कर कह रहे हैं कि खण्डहर बता रहे है कि इमारत मूलतः मन्दिर थी, मस्जिद नहीं।

यदि इसके बावजूद शहाबुद्दीन तथा मौलाना अब्दुल्ला बुखारी जैसे साम्प्रदायिक तत्व "मैं तू मानू" की रट लगाते रहें, तो उनकी सर्वथा अपेक्षा करनी चाहिए। यह दुर्भाग्य का विषय है कि इस देश की सरकार और अधिकांश समाचार पत्र साम्प्रदायिक और राष्ट्रविरोधी तत्वों को महत्व देने को अपनी प्रगतिवादिता और साम्प्रदाय निरपेक्षता का प्रमाण मानते हैं। वे इस बात को भूलते हैं कि मुसलमानों का एक वर्ग विशेष रूप में शियों को मन्दिर निर्माण पर कोई आपत्ति नहीं है। वे वह भी भूलते हैं कि मिश्र और सऊदी अरब में भी सड़कों आदि के निर्माण के लिए अनेक पुरानी और महत्वपूर्ण मस्जिदें भी खुदवा दी गयी हैं।

राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न

रामजन्मभूमि के मन्दिर का निर्माण होगा यह निश्चित है। यह कोई साम्प्रदायिक या कानूनी प्रश्न नहीं अपितु राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है। राम भारत माता के महानतम सपूत थे। कोई विष्णु का अवतार माने या न माने यह उसका निजी मामला है परन्तु कोई भारतीय राम के राष्ट्र की महानतम विभूति और मानबिन्दु होने से इन्कार नहीं कर सकता।

इसलिए राम जन्मभूमि पर मन्दिर के प्रश्न पर खड़ा किया गया विवाद निरर्थक है, बेमानी है। कुछ लोगों ने इससे दलगत स्वार्थ पूरा करना चाहा है। इसको जारी रखना किसी के भी हित में नहीं मन्दिर निर्माण के काम में विलम्ब करना इस निरर्थक विवाद को लम्बा करना होगा। इसलिए मन्दिर निर्माण के कार्य को यथाशीघ्र पूरा करना ही इस विवाद को खत्म करने का सही रास्ता है।

वी॰पी॰ सिंह की पत्नी चाहती हैं-

श्रीमती सीतादेवी इस मत की हैं कि अयोध्या में राम मन्दिर बन जाना चाहिए। वी0पी0 सिंह का हर कदम पर साथ देने वाली सीता देवी का अयोध्या विवाद पर वी0पी0 सिंह से मतभेद है। अयोध्या विवाद पर सीता देवी ने प्रधानमन्त्री से कई दफा कहा कि वहाँ मन्दिर बनवाने के लिये सरकार को छूट दे देनी चाहिये, क्योंकि वह राम की जन्म स्थली है। प्रधानमन्त्री निवास के अन्तरंग सूत्र के मुताबिक एक दिन इस मसले पर दोनों में विवाद भी हुआ। और वी0पी0 सिंह ने कहा कि तुम लोग चाहते हो कि मैं देश छोड़ दूँ। हमको मन्दिर नहीं पूरा देश देखना है। श्रीमती सीता देवी ने कहा मन्दिर नहीं बनेगा तो पाप लगेगा। आप चाहते ही नहीं कि मन्दिर बने।

पता परिवर्तन

सभा के बरेली मण्डल के निरीक्षक श्री वीरेन्द्र 'वीर' जी का पता बदल गया है अब निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

वीरेन्द्र वीर"
निरीक्षक सभा बरेली मण्डल,
द्वारा श्री ओम प्रकाश आर्य,
आर्य भवन, गली सं0-208जी
प्रेमनगर, बरेली, उ0प्र0-243003

गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव

आर्ष कन्या गुरुकुल दधिया (राजस्थान) का वार्षिकोत्सव दिनांक 23 से 25 नवम्बर तक मनाया जायेगा इसमें एक सप्ताह पूर्व ऋग्वेद पारायण यज्ञ किया जायेगा इसमें उच्चकोटि के विद्वान, संयासी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। दानी सज्जनों से प्रार्थना है कि गुरुकुल को चैक/बैंक ड्राफ्ट/नकद मनीआर्डर द्वारा आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, अलवर राजस्थान-301401 के पते पर अथवा आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवाने की कृपा करें। साथ ही आर्य जनता की अधिक से अधिक संख्या में उपस्थिति प्रार्थनीय है।

-रामनाथ सहगल मंत्री

वैदिक सत्संग सम्पन्न

कस्बा -मिलक-, जनपद-रामपुर में गत दिनांक 4 अक्टूबर 1990 गुरुवार को श्री सुखदेव शास्त्री (प्रधानाचार्य, आर्य इण्टर कालेज) ने अपने नव निर्मित भवन में गृह प्रवेश कार्यक्रम वैदिक रीत्यानुसार आयोजित किया, जिसमें श्री पं0 राम प्रसाद उपाध्याय शास्त्री जी, श्री महा0 रामपाल सिंह जी तथा श्री वीरेन्द्र "वीर" सभा निरीक्षक के आचार्यत्व में वैदिक यज्ञ तथा वैदिक सत्संग सम्पन्न हुआ।

छपते - छपते

(1) श्री चन्द्रशेखर भारत के आठवें प्रधानमन्त्री बने।

(2) चौधरी देवीलाल उपप्रधान-मन्त्री--

(3) १६ नवम्बर को लोकसभा में बहुमत सिद्ध करने का दावा

(4) गरीबों, पिछड़ों को आदर्श जिन्दगी देना तथा अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान करना पहिला काम।

★ "जम्मू काश्मीर सम्बन्धी संविधान की धारा 370 समाप्त कर भारत की एकता, समता और धर्मनिरपेक्षता की छवि को उज्वल किया जाये"।

आत्मगौरव के उद्गाता दयानन्द

• डॉ० गणेशदत्त शर्मा
गाजियाबाद

अतीत के गौरव की अनुभूति किसी भी राष्ट्र की प्राण शक्ति हुआ करती है। इसीलिए अपने लेखों, भाषणों एवं उपदेशों में स्वाभिमान एवं स्वदेश गौरव का बखान करना स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन का ध्येय बना लिया था। भारतीयों में आत्म-गौरव को जागृत करते हुए सत्यार्थप्रकाश के 11 वें समुल्लास के प्रारम्भ में उन्होंने लिखा- "यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नही है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है।" क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है।-- जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं"। पराधीनता और दारिद्रय से ग्रस्त भारतीय जनता में जीवन का संचार करने के लिए उस युग में महर्षि दयानन्द की इन पंक्तियों ने निःसन्देह संजीवनी का काम किया होगा।

स्वामी दयानन्द ब्रिटिश शासकों एवं विदेशी विद्वानों के उस कुचक्र को भली-भांति समझे हुए थे जिसके अनुसार वे भारतीय साहित्य संस्कृति एवं इतिहास को गिरा हुआ सिद्ध करते हुए भारतीयों में अपने प्रति हीन भावना उत्पन्न करके इस देश में अपने राज्य की जड़ें और अधिक गहरी और मजबूत बनाना चाहते थे। भारतीयों को असभ्य कहकर स्वयं सभ्यता के ठेकेदार बनने वालों के सम्मुख महर्षि दयानन्द ने भारत के जगदगुरुत्व का शंख फूंकते हुए मनु महाराज की यह घोषणा दोहराई जिसमें उन्होंने पृथ्वी के प्रत्येक मानव को भारत के विद्वान ब्राह्मणों से अपने-अपने चरित्र की शिक्षा लेने के लिए कहा था-

> एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
> स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां
> सर्वमानवाः ।।

मनुस्मृति उस पुरातन युग की रचना है जबकि सभ्यता का दम भरने वाले पश्चिमी देशों एवं उनकी सभ्यताओं का विश्व के मानचित्र में कोई स्थान नही था। इससे सिद्ध होता है कि भारत ने ही सारे विश्व को सभ्यता और सदाचार का पाठ पढ़ाया। भारत के इस गौरव का गान करते हुए स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के 11 वें समुल्लास में ही लिखते हैं-- "जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिश्र वालों, उनसे यूनानी उनसे रूम और उनसे यूरोप के देश में उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है।" इतना ही नही अपनी इस बात को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने शोल्डस्टकर तथा दाराशिकोह के मत को भी इस प्रकार उद्धृत किया है- देखो एक गोल्डस्टकर साहब पैरस अर्थात् फ्रांस देश निवासी अपनी "बाइबिल इन इण्डिया" में लिखते हैं कि सब विद्या और भलाईयों का भण्डार आर्यावर्त देश है और सब विद्या तथा मत इसी देश से फैले हैं।"--- " तथा दाराशिकोह बादशाह ने भी यही निश्चय किया था कि जैसे पूरी विद्या संस्कृत में है वैसी किसी भाषा में नही ।" ऐसे तथ्यों को प्रस्तुत करके स्वामी जी अपने देश की संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति निष्ठा उत्पन्न करके देशवासियों में राष्ट्रवाद को जगाना चाहते थे।

प्राचीन भारत के गौरवमय स्वर्णिम अतीत की स्मृति और पराधीन भारत की दुर्दशा से महर्षि दयानन्द के हृदय में अपार वेदना हुई थी, जिसकी अभिव्यक्ति उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में इन पंक्तियों में की है- "इक्ष्वाकु से लेकर कौरव पाण्डव तक सर्वभूगोल में आर्यों का राज्य था और वेदों का थोड़ा-थोड़ा प्रचार आर्यावर्त से भिन्न देशों में भी रहा।------- अब अभाग्योदय से और आर्यो के आलस्य प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यो का अखण्ड स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नही है, जो कुछ है सो भी विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है"। स्वामी जी की यही वेदना सत्यार्थप्रकाश के 11 वें समु० की इन पंक्तियों में भी मुखरित हुई है, जो कि उन्होंने मैत्र्युपनिषद् का प्रमाण देते हुए लिखी है- "इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्य कुल में ही हुए थे। अब इनके सन्तानों के अभाग्योदय से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों के पदाक्रान्त हो रहे हैं"।

भारत की सांस्कृतिक नगरी पूना में महर्षि दयानन्द ने जो 15 व्याख्यान दिये थे उनमें से 6 व्याख्यान विशुद्ध रूप से इतिहास विषयक थे। इन व्याख्यानों में उन्होंने सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त भारत के इतिहास का सप्रमाण वर्णन किया है। आर्यो के प्राचीन यश एवं वैभव का कथन करते हुए अपने दूसरे भाषण में स्वामी जी ने कहा था- "इस आर्यावर्त के राजाओं की नेकी या नेकनामी संसार में फैल रही थी। योरुप और अमेरिका के कुछ राजा लोग इनकी सेवकाई में तत्पर होकर कर देते थे। अब सोचिए कि वर्तमान समय में देश की दशा ऐसी गिर गई है।"

एक बात विशेष ध्यान देने की है। सृष्टि से लेकर आर्यों के सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की चर्चा से प्रारम्भ किए गए सत्यार्थप्रकाश के 11 वें समुल्लास में मतमतान्तरों के खण्डन के बाद अन्त में महर्षि दयानन्द ने महाराज युधिष्ठिर से लेकर महाराज यशपाल तक के 124 राजाओं की वंशावली दी है, जिन्होंने इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को राजधानी बनाकर यहां 4157 वर्ष 9 मास और 14 दिन तकराज्य किया। साथ ही उन्होंने अपने समय के ग्रन्थ एवं पत्रों के संदर्भ देकर यह भी लिखा है कि किस राजा ने कब और कितने समय तक राज्य किया। यह कहा जा सकता है कि मतमतान्तर के खण्डन-मण्डन के बाद यह इतिहास देने की क्या आवश्यकता थी? वास्तव में स्वामी दयानन्द उपर्युक्त ऐतिहासिक तथ्यों को प्रस्तुत करके अपने देशवासियों के हृदय में प्रबल राष्ट्रीय भावनाओं को जगाना चाहते थे। जिनके पूर्वजों का सृष्टि से लेकर महाभारत सारे भूमण्डल पर और फिर युधिष्ठिर से यशपाल तक अपने देश में अखण्ड और स्वतन्त्र राज्य रहा, वे आज पराधीन बने हुए हैं। उनके हृदय में यदि अपनी पराधीनता के प्रति घृणा और अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की महत्वाकांक्षा पैदा हो जाये तो फिर संसार में कोई भी उनका दमन नही कर सकता। ऐसा स्वाभिमान और ऐसी महत्वाकांक्षा स्वामी दयानन्द अपने देशवासियों के हृदय में भर देना चाहते थे। उनके खण्डन-मण्डन का उद्देश्य भी धार्मिक होने के साथ-साथ राष्ट्रीय अधिक था। मतमतान्तरों के जिन अन्धविश्वासों, कुरीतियों पारस्परिक विरोधों एवं भेदभावों के कारण देश की दुर्दशा हुई थी उन्हें दूर करके देश को एकता के सूत्र में बांधकर स्वराज्य का मन्त्र फूंकना स्वामी दयानन्द के जीवन का चरम लक्ष्य था और इसी के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व होम दिया । ■

आवश्यक सूचना

फैजाबाद अयोध्या आर्य वेद प्रचार मंडल के मंत्री की सूचनानुसार अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन दिल्ली (रामलीला मैदान) दिनांक 23,24,25 26 दिसम्बर के लिये अपने 6 जनपदों (बहराइच, गोण्डा, फैजाबाद अयोध्या, सुलतानपुर, प्रतापगढ़ बाराबंकी) से विशेष आग्रह किया (आप सबको छपा पत्रक प्रेषित है) गया है कि आप सब 15 नवम्बर 90 तक 325/- शुल्क आने जाने का (जलपान भोजन इत्यादि) प्रधान आर्य वेद प्रचार मंडल 5/11/135 स्वामी दयानंद मार्ग, फैजाबाद 224001 को भेजें। इस यात्रा में बिठूर, आगरा मथुरा, वृन्दावन बरसाना, नैमिषारण्य के दर्शन भी कराये जायेंगे। मनीआर्डर, ड्राफ्ट के साथ, नाम, पिता का नाम, पति का नाम, आयु पूर्ण विवरण पता भी भेजें। 6 वर्ष के बालक निःशुल्क हैं। बसें उस स्थल से चलेंगी जहां यात्रियों की संख्या अधिक होगी।

बसें प्रातः 10 बजे 21 दिसम्बर को चलेंगी आपकी धनराशि एवं विवरण प्राप्त होने पर बसें कहां से चलेंगी यह हम सूचित करेंगे।

मंत्री
कामता प्रसाद "कर्मठ"
आर्य वेद प्रचार मंडल-फैजाबाद।

आचार्य नरेश द्वारा उद्बोधन

विश्व में वेद ही स्वतः प्रमाणित ग्रन्थ है और संस्कृत आदि भाषा है। उक्त विचार आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता, उद्गीथ साधना स्थली, हिमाचल प्रदेश ने अपने छः दिवसीय प्रवास में दिए। वेद की ज्योति से नगर के कोने-कोने को आलोकित करने का श्रेय मान्या प्राचार्या डा० आशा रानी राय, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, को है, जिन्होंने आचार्य जी के प्रवचन पूरे नगर में आयोजित कराने का स्तुत्य कार्य कराने के साथ स्वयं भी वर्तमान समस्याओं से जनमानस को अवगत कराते हुए कहा कि समस्त समस्याओं का निदान वेदों के प्रचार-प्रसार से मिल जाएगा।

"घर में दीपावली हम मनाते रहे"

—रविदत्त शर्मा आचार्य
-दिल्ली

विश्व में व्याप्त घनघोर था अन्धकार।
घर में दीपावली हम मनाते रहे ।।

(1)
मोह में तम में मानव भटकने लगा,
व्यर्थ अज्ञान में सिर पटकने लगा,
रूढ़ियाँ और पाखण्ड फैले बहुत,
बन्द मन्दिर में ईश्वर अटकने लगा,
भूल में अपना सब कुछ लुटाते रहे,
अर्द्धरात्रि को लक्ष्मी बुलाते रहे,
विश्व में व्याप्त घनघोर था अन्धकार।
घर में दीपावली हम मनाते रहे ।।

(2)
बिगड़े रीति-रिवाजों के आधार पर,
पर्व-त्यौहार का रूप विकृत हुआ,
भूल बैठे थे अपने सही रूप को,
धर्म कर्तव्य इत्यादि विस्मृत हुआ,
वासनाओं की धारा में बहते रहे,
डूबते-डूबते छटपटाते रहे,
विश्व में व्याप्त घनघोर था अन्धकार।
घर में दीपावली हम मनाते रहे ।।

(3)
उस निराशा में भी एक आशा जगी,
ईश्वर की कृपा से ऋषि आ गया,
दूर भागी थी आपत्तियों की निशा,
लोक में दिव्य आलोक सा छा गया,
वेद की ओर आर्यों को उन्मुख किया,
और दुरितों को स्वामी हटाते रहे,
विश्व में व्याप्त घनघोर था अन्धकार।
घर में दीपावली हम मनाते रहे।।

(4)
ऐसा जादू चलाया दयानन्द ने,
युग पलट कर दिखाया दयानन्द ने,
मोह की नींद में जो थे सोये हुए,
उनको फिर से जगाया दयानन्द ने,
डूबी थी आर्य जाति लिया था उबार,
बदले में विष ऋषि को पिलाते रहे,
विश्व में व्याप्त घनघोर था अन्धकार।
घर में दीपावली हम मनाते रहे ।।

(5)
वेद का ऐसा दीपक जला कर गये,
कैसी दीपावली हो सिखा कर गये,
स्वयं दीपावली को ही बलिदान हो,
वे दिलों का अन्धेरा मिटा कर गये,
जीवन के अन्तिम क्षणों में ऋषि,
मन्त्र पढ़ते रहे मुस्कुराते रहे,
विश्व में व्याप्त घनघोर था अन्धकार ।
घर में दीपावली हम मनाते रहे ।।

(6)
भूल आगे न हो अब सुनो आर्यो,
इन पटाखों से घर को न दूषित करो,
न प्रदूषण हो अन्दर व बाहर कभी,
शुद्धि सर्वत्र मन्त्रों से यज्ञों से हो,
वेदज्योति से जग हो प्रकाशित "रवि",
वह दयानन्द युग फिर से आ के रहे,
विश्व में व्याप्त घनघोर था अन्धकार।
घर में दीपावली हम मनाते रहे ।।

● -आर्यसमाज मुड़िया (बदायूँ) के साप्ताहिक सत्संग में जिला सभा के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने नवयुवकों से आह्वान किया कि वह समाज में फैली बुराईयों को दूर कर महर्षि के बताये मार्ग पर चलकर देश व समाज की सेवा करें।

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का अभूतपूर्व समारोह

१४ वाँ सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

२२ से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली में आयोजित

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कीजिए वैदिक धर्म प्रचार एवं प्रसार की अनेक योजनाओं को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहायता कीजिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती एवं उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज ने एक संयुक्त वक्तव्य में देश विदेश की बिगड़ती हुई राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दशा पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए वेदाधारित मानव समाज की रचना के आर्य समाज के दृढ़संकल्प को दोहराते हुए प्रदेश एवं विश्व की सभी मानवता प्रेमी जनता से आगामी दिसम्बर में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की अपील की है।

ऋषिवर्य का स्वप्न अभी साकार नहीं हुआ है। परमात्मा की अमरवाणी **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। भारतीय आजादी के साथ हमने विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार की जो कल्पना की थी उसका मूर्तरूप अभी बहुत दूर है। अभी हमें बहुत दूर जाना है। पथ कण्टकाकीर्ण अवश्य है पर आर्य वह है जो कभी पराजय स्वीकार नहीं करता, हारता नहीं **"चरैवेति चरैवेति"** उसका आदर्श है।

उक्त आर्य महासम्मेलन आर्यजाति में नवप्राणों का संचार करेगा। सोई हुई मानवता को जगायेगा और विश्वशान्ति के हमारे वैदिक पथ को प्रशस्त करेगा।

तो, आइए, इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए वैदिक संस्कृति को उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने के लिए अभी से प्राणपण से जुट जायें।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने गंगा यमुना की पावन संगमस्थली के अपने अन्तराल में संजोए इस महान प्रदेश की गौरवमयी परम्पराओं का स्मरण कराते हुए कहा है कि राम, कृष्ण और दयानन्द की यह कर्मस्थली है। इस प्रदेश की जनता ने आर्यसमाज के मस्तक को सदैव ऊँचा रखा है। हमें आशा है प्रदेश की जनता इस सम्मेलन में लाखों की संख्या में सम्मिलित होगी और इस पुण्यकार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर यश की भागी बनेंगी।

मानव जीवन का लक्ष्य

आचार्या- सुशीला देवी शास्त्री
अध्यक्षा- संस्कृत विभाग
आर्य कन्या पाठशाला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
खुरजा

संसार में प्रत्येक प्राणी सुख और शान्ति चाहता हुआ भी निरन्तर दुख और अशान्ति भोग रहा है। इस विषय पर गम्भीरता से विचार करने पर ज्ञात होता है कि जिन सांसारिक ऐश्वर्य तथा भोगों में सुख की खोज की जा रही है । वहाँ सच्चा सुख तथा शांति है ही नहीं। कठोपनिषद में यमराज नचिकेता से कहते हैं कि हे नचिकेता। तू अपार धन सम्पत्ति सुन्दर स्त्रियाँ तथा लम्बी आयु का वरदान मुझसे माँग लें परन्तु इस जन्म मरण के प्रश्न को मत पूछ। परन्तु नचिकेता को आत्मज्ञान प्राप्त करने की सच्ची जिज्ञासा थी अतः वह कहता है -

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो, लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्वा।
जीविष्यामि यावदीशिष्यसित्वं, वरस्तु मे वरणीयः स एव ।।

सत्य यही है कि मनुष्य की धन से कभी संतुष्टि नहीं होती है। हजारपति लखपति होना चाहता है तो लखपति करोड़पति होने में उत्सुक है तथा करोड़पति अरबपति होने की लालसा में दिन रात चिन्ता युक्त है। यही क्रम जीवन भर चलता रहता है तथा मनुष्य का जीवन इसी उधेड़बुन में समाप्त हो जाता है।

अतः संसार में वासनाओं को त्याग कर अपनी सामर्थ्यानुसार पुरुषार्थ करके जो कुछ प्राप्त हो उसमें संतोष का अनुभव करते हुए आत्म ज्ञान प्राप्त करके सदैव रहने वाले सच्चे सुख और आनंद की अनुभूति ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। नीतिकार ने ठीक लिखा है कि संतोषामृत तृप्तानां यत्सुखं शान्त चेतसाम्।
कुतस्तत् धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।।

अर्थ- शान्त चित्तमनस्वियों को जो सुख है, वह इधर-उधर दौड़ने वाले धन लोभियों को कहाँ?

यही भाव हिन्दी कवि की निम्न पंक्तियों में स्पष्ट प्रतीत हो रहा है।

गोधन गजधन वाजिधन, और रतनधन खान।
जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान।

इस संतोषरूपी अमृत का पान करके जीवन में आनन्दपूर्वक कर्तव्य पालन करते हुए आत्म ज्ञान प्राप्त करके "आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः" इस वचनानुसार अपनी आत्मा के समान सबको देखना ही मानवधर्म है तथा उस धर्म का पालन ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

जेला सभा मेरठ के प्रस्ताव

आर्य उपप्रति निधि सभा नपद मेरठ ने दिनांक 14-10-0 को अपनी अन्तरंग में निम्न स्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किये।

- आर्यसमाज ने पिछड़े वर्ग को ऊँचा उठाने, उनका शैक्षिक और सामाजिक एवं आर्थिक स्तर ऊँचा उठाने के लिये बहुत रचनात्मक कार्य किया है और कर रहा है। परन्तु विदेशी धन और साधनों से देश को कमजोर करने के लिए भारत में धर्म परिवर्तन का कार्य जोरों पर चल रहा है। इस समय हिन्दुओं में ही परस्पर विद्वेष के कारण बहुत से हरिजन भाई बौद्ध धर्म स्वीकार कर रहे हैं। आर्य समाज को समझ-बूझ कर किसी भी सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु संत रविदास जैसे महान युग पुरुषों के सिद्धान्तों को छोड़कर बिना सोचे विचारे और समझे अन्य सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को अपनाने का आर्य समाज विरोध करता है। इस प्रकार के धर्म परिवर्तन के पीछे कुछ निहित स्वार्थ करने वाले राजनीतिज्ञों का हाथ है जो भोली-भाली जनता की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करके अपने राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करना चाहते हैं।

केन्द्रीय सरकार के कुछ नेता धर्म परिवर्तन के पश्चात भी हरिजनों को मिलने वाली सुविधाओं को जारी रखने का विधेयक संसद में लाकर अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का अन्दर अन्दर प्रयत्न कर रहे हैं।

आर्य समाज धर्म परिवर्तन के पश्चात भी सरकार की ओर से हरिजनों को मिलने वाली सुविधाओं का विरोध करता है। उसका यह निश्चित मत है कि हरिजनों और पिछडी जातियों का सामाजिक शैक्षिक और आर्थिक स्तर ऊँचा उठाने के लिए उनकी सरकार की ओर से अधिक से अधिक सुविधाओं का मिलना बहुत आवश्यक है। परन्तु धर्म परिवर्तन के पश्चात् भी उन सुविधाओं का जारी रखना भारत और भारतीय समाज को तोड़ने का एक बहुत बड़ा षडयन्त्र है, जिसका आर्य समाज प्रचण्ड विरोध करता है आर्य समाज की दृष्टि में सामाजिक अन्याय और शोषण के विरुद्ध संघर्ष को छोड़कर अन्य धर्म स्वीकार करना एक पलायनवाद और कायरता है तथा हरिजन और पिछड़े वर्ग के भाईयों को आश्वस्त करता है कि अन्याय, शोषण एवं छुआछूत की घृणा के विरुद्ध संघर्ष में आर्य समाज उनके साथ है।

2- राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के बाद और विवाद के विषय में आर्य समाज का यह निश्चित मत है कि राजनीतिज्ञों ने इस समस्या को पूरी तरह से उलझा दिया है। राम हमारे राष्ट्रपुरुष हैं। युगपुरुष हैं, मानवधर्म के मूर्तरूप हैं और महामानव हैं। भारत के हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई एवं अन्यान्य सम्प्रदाय के अनुयाइयों की धमनियों में भी मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगेश्वर कृष्ण का ही रक्त प्रवाहित ो रहा है।
अतः आर्यसमाज का यह निश्चित मत है कि राम जन्म स्थली पर मन्दिर निर्माण होनां अनिवार्य है तथा हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई एवं अन्यान्य सम्प्रदायों को इस मन्दिर के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान कर राष्ट्रपुरुष महामानव को अपनी क्रियात्मक श्रद्धांजलि देनी चाहिए।

देश की स्वतंत्रता अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा करने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जन्म स्थल पर मन्दिर का निर्माण एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के स्वप्नों के भारत में रामराज्य की स्थापना अत्यन्त आवश्यक है।

3- आर्य समाज प्रारम्भ से ही ऊँच-नीच भेद-भाव और अछूतपन का विरोधी रहा है। आर्य समाज वर्ण व्यवस्था को जन्म से नहीं अपितु गुण कर्म स्वभाव से मानता है। आर्य समाज ने अछूतोद्धार एवं पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए आरक्षण बहुत आवश्यक है, परन्तु यह आरक्षण जन्मगत जाति के आधार पर न होकर आर्थिक आधार पर होना चाहिए। मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने की घोषणा के पश्चात् जन्मगत जातिवाद इतना उभर कर सामने आया है। कि हिन्दू-हिन्दू में घृणा-विद्वेष हिंसा और विघटन हुआ है। यह स्वतंत्र भारत के लिये भयंकर खतरे का संकेत है। महर्षि दयानंद और महात्मा गाँधी ने कभी यह कल्पना भी न की थी कि जन्मगत जातिवाद इतना उभर कर आएगा कि हिन्दूओं में ही यह परस्पर घृणा और हिंसा का रूप ले लेगा।

अतः आज की यह सभा सर्वसम्मति से आर्थिक आधार पर आरक्षण का समर्थन करती है तथा केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करती है कि वह अपने निर्णय पर पुनर्विचार कर भारत में उमड़ते हुए जातिगत उन्माद का उन्मूलन करें। यह सभा देश के तरुण युवक युवतियों में भी प्रेमपूर्वक अनुरोध करती है कि वे आत्मदाह जैसे अन्धकारमय रोमांचक आत्महत्या के प्रयासों को छोड़कर संघर्ष वैधानिक तरीके से जारी रखकर मण्डल आयोग का विरोध करें। □

वार्षिकोत्सव

- आर्य समाज मझावली का प्रथम वार्षिकोत्सव हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया जिसमें 4 यज्ञोपवीत संस्कार एवं 2- चूडाकर्म {मुंडन} संस्कार हुए- आर्यसमाज सिठोली-भरतरा आर्यनगर बहजोई के सभासदों ने तन-मन-धन से सहयोग दिया- ग्रामीण जनता पर अच्छा असर पड़ा।

पृष्ठ ३ का शेष....

नौकरियाँ कैसे मिल सकेंगी, यदि न भर जाने पर व जगह खाली रखी जाये तो वे पद खाली ही पड़े रहेगें। इसलिये जब तक प्रत्येक तहसील या ताल्लुका में एक एक निवासीय नवोदय स्कूल गाँव के स्कूलों में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों के लिए सरकारी खर्चे से नही खोले जायें, और गाँव के स्कूलों की शिक्षा का स्तर ऊँचा न किया जाए, तब तक शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के लिए "शुद्ध गाँववाले" बच्चों के वास्ते आरक्षण रहना चाहिये। ऐसे बच्चों के लिए

हम अपने देश के पिछड़े और शोषित सभी वर्गों को सब प्रकार का न्याय इस ढंग से दें, जिससे हमारा सर्वनिष्ठ भाईचारा मजबूत हो।

विशेष क्लासें छुट्टियों में लगानी पड़ें तो लगानी चाहिए, ताकि वे जिन कक्षाओं में प्रविष्ट किये गये हैं उनमें चल सकें।

आर्थिक मानदण्ड :-

आरक्षण का लाभ नये और अधिक से अधिक लोगों को मिल सके इसके लिए सभी आरक्षणों के लिए आर्थिक मानदण्ड आवश्यक है। जो प्रथम श्रेणी के अधिकारी राज्याधीन सेवाओं में या उसके समकक्ष पद सार्वजनिक क्षेत्र या निजी क्षेत्र के धन्धों में नियुक्त हैं, या जो आयकर या सम्पत्ति कर दे रहे हैं या जिनके पास 20 एकड़ से अधिक सिंचित अथवा 4· एकड़ से अधिक असिंचित भूमि है उनके लड़के लड़कियों को आरक्षण का लाभ नही मिलना चाहिये।

उपसंहार :-

मण्डल आयोग देश को जातियों में बाँटने वाली रेखाओं को प्रतिष्ठापित करके सदा-सदा के लिए जन्मना जातियों के आधार पर बाँटने का दोषी कहा जायेगा। कुछ तथाकथित बुद्धीजीवियों तथा केन्द्रीय मंत्री मण्डल के सदस्यों समेत कुछ राजनेताओं की अदूरदर्शिता से जातियों में टकराव की स्थिति पैदा हो गई है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि अनेक नवयुवकों नवयुवतियों और अन्य नागरिकों को अपने मूल्यवान जीवनों की आहूति देनी पड़ी है और अरबों रुपये की सार्वजनिक सम्पत्ति बर्बाद हुई है। आज भी आत्महत्याओं---आत्मदाहों का सिलसिला जारी है और आरक्षण समर्थक और आरक्षण विरोधी रैलियों में सर फुटब्बल हो रहे हैं। जैसी विडम्बना है कि आज चारों तरफ ताप और गरमागरमी तो है परन्तु आलोक नहीं है। शायद हम भूल गये हैं कि हमारे मूलभूत कर्तव्य भी हैं, केवल मौलिक अधिकार ही नहीं, और दोनों का उल्लेख हमारे संविधान में है।

संविधान के मूलभूत कर्तव्यों संबंधी भाग-4-ए अनुच्छेद 51-ए {ई} के अनुसार {भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह मजहब, भाषा, क्षेत्र तथा वर्गों से ऊपर उठकर देश के सभी लोगों में सद्भाव, सौमनस्य और सर्वनिष्ठ भाईचारा बढ़ावें।"

समय की माँग है कि हम अपने नवयुवकों का हृदय छूकर उनके हृदयों के घाव भरें और देश की टूटती राज्य व्यवस्था को संभालें।

राम मन्दिर का निर्माण रोकना किसी के हित में नहीं

पिलखुवा, 19 अगस्त
आर्य समाज के प्रदेशीय अध्यक्ष पंडित वीदराजी - ने कहा कि रामजन्म भूमि मंदिर निर्माण कार्य करोड़ों- करोड़ हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं से केवल जुड़ा हुआ, धार्मिक प्रश्न नहीं है बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़ा ऐतिहासिक तथ्यों का सवाल है जिसे किसी भी आधार पर नकारा नहीं जा सकता। इस निर्माण कार्य में किसी प्रकार का व्यवधान व अदालती मामलों से जोड़ कर लटकाये रखना आज की दशा में न समाज के हित में है और न सरकार के।

वे यहाँ आर्य समाज द्वारा आयोजित वेद सप्ताह कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राम का आदर्श जीवन राष्ट्रीय जन-जीवन में सदियों से व्याप्त हो गया है और इस संस्कृति का केन्द्र बिन्दु रहा है। सभी मतावलंबियों को इस महत्व के प्रश्न पर एकमत होकर इस निर्माण कार्य में भाग लेना चाहिये और राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता का परिचय देना चाहिये।

उन्होंने आर्य समाज का आह्वान किया कि वे इस निर्माण कार्य में निराकार व साकार तथा मूर्ति पूजा से किसी प्रकार न जोड़े और बहुत की भावना का आदर कर एकता का परिचय दें। उन्होंने किसी राष्ट्रीय महापुरुष के जीवन को बाहर से आये आक्रांता के समक्ष रखे जाने की दलीलों को दुर्भाग्यपूर्ण तथा संकीर्णता का सूचक बताया।

उन्होंने स्पष्ट किया कि हिन्दुत्व एक ऐसी धारा रही है जहाँ सभी मत एक उपधारा के रूप में बँटते रहे हैं और फलते फूलते रहे हैं। संसार में अन्यत्र ऐसा कोई देश नहीं है। जहाँ इस प्रकार की स्वतंत्रता सभी मतावलंबियों को मिली हुई हो। उन्होने राम मंदिर निर्माण को अविलंब शुरू किये जाने तथा उसी ऐतिहासिक स्थान पर शुरू किये जाने पर बल दिया।

पंडित जी ने कश्मीर से हिन्दुओं के पलायन पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इसे अविलंब रोका जाना चाहिए और सेना को कठोर कदम उठाने में तनिक भी हिचक नहीं करनी चाहिए अन्यथा इसके गंभीर परिणाम राष्ट्र को भुगतने पड़ेंगे।

इस अवसर पर नगर के प्रमुख नागरिकों सहित भारी संख्या में जनता उपस्थित थी। इससे पूर्व भी वेद सप्ताह कार्यक्रमों में राष्ट्र की महान विभूतियाँ भाग ले चुकी हैं और अपने विचारों का प्रतिपादन कर रही चुकी हैं।

आर्यसमाज बिल्सी (बदायूँ)

प्रधान- श्री स्वराज्य चन्द्र मालपाणि
मंत्री- श्री गिरीशचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री धर्मवीर आर्य

कश्मीर की औरतों की करुण कहानी

संपादक महोदय,

कश्मीर में हिन्दुओं के कई खानदानों को मुसलमान गुण्डों ने खम्भों के सहारे खड़ा करके रस्सी से बाँध दिया और उन परिवारों की नौजवान बहू-बेटियों को माँ-बाप, चाचा-ताऊ या सास-ससुर के सामने नीचे लिटाकर बाँध दिया। पहले उनके साथ बारी-बारी से उस-उस गुण्डों ने बलात्कार किया। हिन्दुओं की बहू-बेटियाँ लहूलुहान होकर बेहोश हो गईं। उनकी बेहोशी में उनके जिस्म में सुई लगाकर उनका सारा खून निकाल लिया गया और बाद में उन बहू-बेटियों की एक-एक बोटी काटकर दरिया में फेंक दी गई। कई माँ-बापों का यह नजारा देखकर हार्टफेल हो गया, कुछ बेहोश होकर खम्भों के सहारे लटक गये।

कई जगह ऐसी भी घटना हुई है कि छोटे-छोटे बच्चों को उनकी माँ की गोदों से मुसलमान गुण्डों ने छीन लिया और उन साल-छः महीने के बच्चों की टाँग पर पाँव रखकर उन्हें चीर दिया गया और जानवरों के सामने फेंक दिया गया।

मुझे कई औरतों ने अपने शरीर दिखाये। उनकी जंघाओं और छाती पर "पाकिस्तान जिन्दाबाद"- खुदा हुआ था। ये दो लफ्ज लोहे के साँचे गर्म करके चिपकाये गये। उनके अंगों को गरम साँचों से दागा गया। जिसकी वजह से हिन्दू औरतें कई दिन तिलमिलाती रहीं, चिल्लाती रहीं बाद में उन्हें इस गर्ज से छोड़ दिया गया कि वे हिन्दू खानदानों में अपनी हालत दिखायें और सबके दिलों में खौफ पैदा हो जाए कि सब हिन्दू औरतों को इसी तरह दागा जायेगा, अगर वे कश्मीर में रहे।

ऐसी दर्दनाक हरकतों के कारण हिन्दू लोग अपनी जान और आबरू बचाकर भागे हैं।

वैसे भी वर्षों से घाटी का माहौल जहरीला बना हुआ है। श्रीनगर के गली कूचों में ये आम नारा सुनने को मिलता है कि :-

1- "पाकिस्तान जिन्दाबाद"।

2- "हिन्दुस्तानी कुत्तो भाग जाओ।"

3- भारत के सरकारी झण्डे को सरे आम चौक पर जलाया जाता है।

4- वहाँ सभी को अपनी-घड़ियों का टाईम पाकिस्तान स्टेण्डर्ड टाईम के मुताबिक रखने को मजबूर किया जाता है। कोई अपनी घड़ी का टाईम भी हिन्दुस्तानी रेडियो के मुताबिक रख नहीं सकता।

5- कश्मीर में पाकिस्तानी सिक्का चल रहा है। हिन्दुस्तानी नोट या सिक्के पर थूक कर उसे जूतों से रौंदा जाता है।

6- जिस स्कूल या कालेज में कुरान नहीं पढ़ाई जाती है वे स्कूल बन्द करा दिए हैं या उन स्कूलों को आग लगा दी गई है।

7- हिन्दुओं के घरों पर पोस्टर चिपकाए जाते हैं कि काफिरो अपनी बहन-बेटियों को यहाँ छोड़कर कश्मीर खाली कर जाओ वरना तुम्हारी गरदन काट ली जायेगी।

8- 47,000 हिन्दू परिवार भाग आये। जो हिन्दू मजबूरी से वहाँ रह रहे हैं उन्हें वहाँ जो जुलूस निकलते हैं उनमें सबसे आगे रखा जाता है और हिन्दुस्तान के खिलाफ उन हिन्दुओं से नारे लगवाये जाते हैं।

9- मैं खुद 75 साल की हो गई हूँ। मैं घाटी में समाज सेविका थी। हिन्दू घरानों के दुःख दर्द में उन्हें सम्हालती रहती थी। मेरे ऊपर भी मुसलमानों ने हमले किए हैं। 18 जगह मेरे छुरे लगे हैं। इस वक्त मैं घायल पड़ी हूँ पता नहीं कब प्राण पखेरू उड़ जायें। मरने से पहले मैं अपने मुल्क को, अपने हिन्दू भाइयों को कुछ तजरबे की बात कह कर और कुछ सही बयान करके मरना चाहती हूँ।

प्रेषक- लाजो भाटिया,
वीर भवन, जम्मू तवी।

(हिमगिरि "संदेश" से साभार)

कारसेवा में आर्य समाज बढ़चढ़ कर हिस्सा लेगा

मेरठ, 13 नवम्बर।
आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० इन्द्रराज ने कहा कि अयोध्या में राम मन्दिर के निर्माण हेतु अब जब भी कार सेवा शुरू होगी आर्य समाज सबसे आगे भाग लेगा। वे लालकुर्ती आर्य भवन में आयोजित एक समारोह को संबोधित कर रहे थे। समारोह में अयोध्या गये कार सेवकों का अभिनंदन भी किया गया।

पं0 इन्द्रराज जो आर्य प्रतिनिधि सभा के दिल्ली में हुये अखिल भारतीय सम्मेलन से सीधे ही समारोह में पहुँचे थे। उन्होंने बताया कि सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि अब जिस क्षण भी श्री राम कार सेवा का कार्य प्रारम्भ होगा आर्य समाज को सबसे आगे भाग लेगा। उन्होंने बताया कि अयोध्या में शहीद होने वालों की संख्या तीन अंकों में नहीं चार अंकों में है।

उन्होंने कहा कि इस समय प्रश्न साकार और निराकार का नहीं हम सभी को एकजुट होकर यह कार्य सम्पन्न करना होगा। श्री इन्द्रराज ने कहा कि शहीदों की शहादत हमें प्रेरणा देती रहेगी। हमें लम्बी लड़ाई लड़नी है। उन्होंने कहा कि चन्द्रशेखर को भी हम जानते हैं वे मलियाना तो जाते है लेकिन हिन्दुओं की बस्तियों में नहीं जा सकते।

सम्पादक के नाम पत्र

मुस्लिम भाइयों को परामर्श

श्रीराम जन्मभूमि के प्रश्न पर मुस्लिम नेताओं ने जो रूख अपनाया है उससे भारत के मुस्लिम समाज को अपार हानि हो रही है। पिछले 6 वर्षों से हिन्दू समाज में हिन्दूवाद बढ़ता जा रहा है। इसी कारण जहाँ लोकसभा में मुस्लिम सदस्यों की संख्या 47-48 हुआ करती थी वह इस बार मात्र 33 रह गयी है। विभिन्न विधानसभाओं में तो मुस्लिम सदस्यों की संख्या और भी अधिक गिरी है। जैसे गुजरात में मात्र 1, मध्यप्रदेश में केवल दो मुस्लिम विधायक रह गए हैं। अन्य विधानसभाओं में भी यही प्रक्रिया देखने को मिलती है और अब रामजन्मभूमि आन्दोलन की चरमसीमा आने पर यह हालत हो चुकी है कि यदि अब मध्यावधि चुनाव हो जायें तो लोकसभा में मुस्लिम सदस्यों की संख्या और गिरेगी। अब 25 से कम ही मुस्लिम प्रत्याशी लोकसभा के लिए जीत पायेंगे। देशभर में लोकसभा के 9 चुनाव क्षेत्रों में ही मुस्लिम बहुसंख्यक हैं। वहाँ से तो वे चुने ही जायेंगे। कांग्रेस, जनतादल तथा साम्यवादी पार्टी के टिकट की बदौलत मुस्लिम प्रत्याशियों को हिन्दू वोट भी भारी मात्रा में मिल जाया करते थे। किन्तु रामजन्मभूमि के प्रश्न पर सैयद शहाबुद्दीन व इमाम अब्दुल्ला बुखारी जैसे नेताओं के हिन्दू विरोधी वक्तव्यों के कारण अब हिन्दुओं का मन बहुत बदल चुका है। अब तो स्थिति यह बन चुकी है कि हिन्दू बहुल क्षेत्रों से कांग्रेस आदि दलों के टिकट पर खड़े होने वाले मुस्लिम प्रत्याशी स्वयं तो हारेंगे ही साथ ही उनको टिकट देने वाली पार्टी भी उस क्षेत्र से हारेगी। यह बात सभी राजनैतिक दल भी भलीभाँति समझने लगे हैं।

हिन्दुओं की मानसिकता को बदलने का श्रेय शायद हिन्दू नेताओं से अधिक शाहबुद्दीन एवं इमाम अब्दुल्ला बुखारी को जाता है। जिन्होंने अपने भड़कीले भाषणों से एक ओर मुस्लिमसमाज को कट्टर पन्थी बनाया वहीं दूसरी ओर हिन्दू समाज में व्याप्त सहिष्णुता को भी क्षति पहुँचाई।

कश्मीर के बहुसंख्यक मुस्लिमसमाज ने तो खुले आम भारत के प्रति विद्रोह खड़ा कर के, पाकिस्तानी नारे लगाते हुए कश्मीर के हिन्दूसमाज को कश्मीर से बाहर खदेड़ देने के कारण हिन्दुओं में मुस्लिमों के प्रति रही सही भाईचारे की भावना को समाप्त कर दिया।

देश में हिन्दुओं की जनसंख्या 80% से अधिक है। यदि मुस्लिम नेताओं ने अपना जिहाद जारी रखा तो वह दिन दूर नहीं कि भारत के हिन्दू अपने देश को हिन्दू राष्ट्र घोषित कर दें। यदि ऐसा हुआ तो मुसलमानों की राजनैतिक शक्ति सदा के लिए घट जायेगी किन्तु हिन्दू-मुस्लिम दंगे भी बन्द हो जायेंगे। फिर दोनों समाज शांति से रह सकेंगे।

(डा० कैलाश चन्द्र)
संकट मोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली

सेना नहीं हटाओ

• चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
एडवोकेट, कानपुर

कश्मीर से भारत की तुम
सेना नहीं हटाओ।
राष्ट्रघातियों की बातों में
नहीं भूल कर आओ।
सेना के ही बल पर तो
कश्मीर बचा है, भाई।
सेना ने ही भारत-माँ की
कैसी लाज बचाई।
सेना ही आतंकवाद को
बढ़ कर रोक रही है।
सेना ही अलगाववाद पर
कीलें ठोंक रही है।
पाकिस्तानी ट्रेनिंग पाकर
जो भारत में आते।
खून-खराबा, हत्याओं का
यहाँ कुचक्र रचाते।

उन मक्कारों- शैतानों पर
सेना रोक लगाती।
उन बदमाशों को सेना ही
तो यमपुर पहुँचाती।
उनकी कड़ी तलाशी लेती।
पकड़ रही हथियार।
बदमाशी पर रोक लगाती,
घबराते मक्कार।
सेना बड़ी जरूरी है।
तुम सेना नहीं हटाओ।
कभी न बेईमानों की
बातों में भैया। आओ।
सच्चाई को समझो तुम।
मत बहकावे में आओ।
भारतीय सेना आवश्यक।
इसको नहीं हटाओ।
भैया। सेना नहीं हटाओ।

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

श्रद्धेय महोदय,

अंक 39 दिनांक- 7 अक्टूबर 1990 के आर्यमित्र में:-

(1) चिन्तन की दिशाएँ- में, "वयं राष्ट्रं जागृयामः", संकल्प भारत की अखण्ड राष्ट्रीयता।
(2) सच्चा धर्म क्या है? पं०- गंगा प्रसाद विद्यार्थी का सारगर्भित है।
(3) पं० युधिष्ठर मीमांसक से एक भेंट वार्ता।
(4) आर्य महासम्मेलन चुनौती स्वीकार करें। सम्पादकीय
(5) मानव धर्म एक है क्योंकि उसका जनक एक है।
(6) कांटों पे चलना पड़ेगा।

आदि विषय से संग्रहणीय एवं विचारणीय हो गया है यह सब ज्ञान के दीप हैं इन्हें बुझने न देना। इस आशा से दीपावली की शुभकामनाएं मेरी प्रकाशित करें। प्रस्तुत अंक मुझे स्वामी श्री प्रभावती जी से प्राप्त हुआ था। उच्च चिन्तन को कर्माभ्यास में उतारा जाए तभी चिन्तन की महत्ता हो सकती है। अन्यथा सब व्यर्थ ही है।

- विश्वप्रकाश वैद्य
मोती बाजार
देहरादून-238001

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या- "अपनी छोटी बहन 13 वर्ष एवं भाई 11 वर्ष दोनों हाथ-पैरों में फटन-दर्द से पीड़ित रहते हैं। शरीर से दुबले भी हैं। कब्ज भी रहती है।"

-कु० प्रभा गुप्ता, द्वारा/रामपकारय-विश्वानिदेव गुप्त, क्लॉथ मर्चेन्ट, मुफ्फरपुरी (बीरी)

समाधान- प्रत्येक भोजन बाद चूने का पानी दो चम्मच-आधा प्याला पानी में मिला कर पिलाया करें। रात्रि भोजन के आधे घण्टा बाद त्रिफला चूर्ण 10ग्राम दो चम्मच चीनी के साथ लेकर पानी पीना चाहिये। दोपहर भोजन बाद शहद, दूध और केला मिलाकर खाया करें।

(2-)

समस्या-"मेरी मामी जी के तीन गर्भ खण्डित हो चुके हैं। स्वामी जी मार्ग दर्शन कीजियेगा।"

-हवलदार क्लर्क भीमसिंह, 1663/166 फील्ड रेजिमेन्ट द्वारा/99ए०पी०ओ०

समाधान:- पत्रंगासव 2 ढक्कन और अशोकारिष्ट 2 ढक्कन समान जल के साथ प्रत्येक भोजन बाद पियें। गर्भ स्थापित हो जाने के बाद भी कम से कम पाँच मास तक पीते रहें। परमात्मा-कृपा से गर्भ खण्डित नहीं होगा।

स्वामी गुरुकुलानंद, आर्यसमाज-पिथौरागढ़ को पत्रोत्तर व पत्रिका हेतु बन्द लिफाफे भेजें।

गुरुकुलानंद सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ़

आर्य महासम्मेलन स्थगित

18-11-90 रविवार को पिनगँवा (गुड़गावाँ) में होने जा रहा आर्य महासम्मेलन किन्हीं विशेष कारणों से स्थगित किया जा रहा है।

टंकारा समाचार

युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज की पावन जन्म भूमि में स्थित उनके जन्म-गृह पर स्वामी जी का 107वाँ निर्वाण दिन उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के ब्रह्मचारी एवं कार्यकर्त्ता, स्थानीय आर्य समाज के सदस्य एवं आर्य वीर दल के आर्यवीरों की उपस्थिति में आर्य समाज के मंत्री श्री हँसमुख भाई आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

आवश्यक सूचना

सभा के आर्य भजनोपदेशक प्रतियोगिता कार्यक्रम की तिथियाँ परिवर्तित होकर अब दि०- 15 दिसम्बर 1990 दिन शनिवार मिति पौष कृष्ण 14 सं०- 2047 वि० की रात्रि को 8 बजे डी०ए०वी० कालेज लखनऊ में पहुँचना निश्चित करें।

-धीरजमल आर्य
अधिष्ठाता उपदेशविभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

वन्य जीव सुरक्षा सप्ताह 1990

वन्य प्राणियों की रक्षा कीजिये



वन्य प्राणी प्रकृति की अनुपम देन हैं। वनो की भांति वन्य जन्तु भी मानव मात्र के परम मित्र एव हितैषी हैं। आदि काल मे ही वे हमारी सभ्यता और सस्कृति के अभिन्न अग रहे हैं। पर्यावरण सुधार और पारिस्थितिकीय सन्तुलन बनाये रखने मे वन्य जीवो की अति महत्वपूर्ण भूमिका है। विहग गण हानिकारक कीट-पतगो को नष्ट कर कृषको की बहुत सहायता करते हैं। जल प्रदूषण दूर करने मे वन्य जन्तुओ की अद्भुत क्षमता है।

बढती हुई आबादी, औद्योगीकरण, एव अवैध शिकार के कारण वन्य जीवो की सख्या में बहुत कमी आ गयी है। कई प्रजातियां विलुप्त हो गयी हैं और अनेक विलुप्त होने के कगार पर हैं। प्राकृतिक सतुलन की शृंखला मे मानव के साथ वन्य जन्तु एक महत्वपूर्ण कडी हैं। एक कडी के टूट जाने से पूरा सन्तुलन ही बिगड जायेगा। अत अपना अस्तित्व बनाये रखने हेतु मनुष्य के लिए वन्य जन्तुओ के सरक्षण के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नही है।

उक्त परिस्थितियो मे यह आवश्यक है कि विद्यमान वनो एव उनमे रहने वाले वन्य जन्तुओ का प्रभावकारी ढग से सरक्षण एव विकास हो। अतएव वन्य प्राणियो की रक्षा करना हम सबका पुनीत कर्तव्य है।



'यदि हमारे बीच यह आकर्षक पशु-पक्षी न होते तो हमारा जीवन कितना नीरस एव उदास होता'।

— पं० जवाहर लाल नेहरू

वन संरक्षक प्रसार एवं जन सम्पर्क उत्तर प्रदेश

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद का वार्षिकोत्सव दिनांक 28,29 व 30 अक्टूबर को मनाया गया, जिसमें स्वामी लक्ष्मणानंद, सन्यासिनी सुजाता, राम लाल, पं० ज्ञान प्रकाश, महावीर सिंह मुमुक्षु तथा यशपाल आर्य बंधु ने अपने ओजस्वी व्याख्यानों तथा प्रभावशाली भजनोपदेशों द्वारा देश के लिए संकट की इस घडी में हताश व निराश न होकर साहस पूर्वक कर्तव्य कर्म करते रहने का आह्वान किया।

अमृत महोत्सव

पद्म श्री- आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन"
अमृत महोत्सव का शुभारम्भ

दिनांक- 17 सितम्बर 90 "नागरी-प्रचारिणी सभा नई दिल्ली के सत्वावधान में "शुक्रवादी नगरीमंच" तथा "कविसभा" की ओर से हिन्दी के तपोनिष्ठ साहित्यकार एवं मनीषी पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र-"सुमन" के 75 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में "अमृत महोत्सव" का शुभारम्भ हिमाचल भवन- सभागार, नई दिल्ली में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य वीरदल शिक्षकों को सूचना

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के सभी शिक्षकों को डा० वेदव्रत आचार्य जी के आदेशानुसार सूचित किया जाता है कि 24 दिसम्बर श्रद्धानंद शताब्दी हेतु सभी शिक्षक अपनी स्वीकृति कार्यालय पलेडी (मेरठ) उ०प्र० को शीघ्र भेजें।
रामगोपाल कार्यालय सचिव सार्वदेशिक वीरदल पलडी-250622 (मेरठ)

आर्यसमाज हकीकतनगर सहारनपुर

प्रधान - श्री हंसराज वेदार्थी
मन्त्री - श्री अमृतसागर शास्त्री
कोषाध्यक्ष- श्री राजकुमार कोहली

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/ एन०पी० ७८

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
मार्गशीर्ष शुक्ल-१ संवत् २०४७ वि०
दिनांक, १८ नवम्बर १९९०

दूरभाष
२४५९९२

सेवा में



आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से आ०स० से निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने "भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा" के नाम से एक अवैधानिक संगठन खोल कर आर्यजनता में भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इस तथाकथित अवैधानिक संगठन को अपना किसी प्रकार का कोई सहयोग न दें।

- सभामन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) मार्गशीर्ष शुक्ल-८ रविवार संवत् २०४७ वि. दिनांक: २५ नवम्बर १९९० (घोषणा पत्र सं. ७/२७-२-८५)



वेद मानवमात्र के लिए-

यदि परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रों को वेद के पढ़ने-सुनने का न होता तो उनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रियाँ क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किए हैं:-

— स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम.ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक ४६

प्रामाणिक आधार पर -

राम जन्म भूमि मस्जिद नहीं हो सकती

— सभा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी का वक्तव्य

अयोध्या स्थित श्रीरामजन्म-स्थल कोटि-कोटि भारतीय जनता की आस्था का केन्द्र एवं भावात्मक एकता का पावन स्रोत रहा है। पौराणिक दृष्टिकोण से इस मन्दिर का निर्माण इक्ष्वाकुवंशीय महाराजा मान्धाता ने कराया था, तत्पश्चात इसी जन्म स्थल को आधार मानकर सम्राट विक्रमादित्य ने यहां विशाल मन्दिर स्थापित कर इसकी पुनः प्रतिष्ठा की। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से "गजेटियर" के बाबर जो एक विदेशी आक्रान्ता था, 1588ई0 में बिहार अयोध्या होते हुए जा रहा था, तब अयोध्या के कुछ साम्प्रदायिक मुल्लाओं ने उसे वहां मन्दिर ढहाकर मस्जिद बनाने के लिए उकसाया था, किन्तु बाबर इसके लिए तैयार नहीं हुआ, क्योंकि यह इस्लाम धर्म के प्रतिकूल है कि किसी दूसरे की भूमि पर बिना अनुमति के मस्जिद बना ली जाय। इस पर मुल्लाओं ने बाबर के विरुद्ध फतवा निकालने की धमकी दी और अन्ततः बाबर ने विवश होकर विक्रमादित्य द्वारा निर्मित मन्दिर को ध्वस्त करके उसी की दीवारों पर गुम्बज खड़े करने का मीरबाकी को निर्देश दे दिया, जिसे अब बाबरी मस्जिद के नाम से पुकारा जाता है। यह तथाकथित मस्जिद बन जाने के बाद भी पूजा और दर्शन के लिए हिन्दू बराबर उस परिसर में जाते रहे हैं। और इसे मुक्त कराने का प्रयास करते रहे हैं। इस मुक्ति आन्दोलन में अब तक अनेकों युद्ध तथा अगणित हिन्दुओं का बलिदान हो चुका है।

औरंगजेब की "आलमगीर" नामक पुस्तक के पृष्ठ 623-630 में लिखा है कि काफिरों ने तीस बार आक्रमण किया और मुगल सेना की लापरवाही के कारण पराजय का मुँह देखना पड़ा। सन् 1664 में मुगल सेना ने फिर आक्रमण किया, जिससे लगभग 10 हजार, हिन्दुओं के बलिदान के बाद जन्मभूमि मन्दिर पर पुनः कब्जा हो गया।" अंग्रेजों के शासनकाल में जब बहादुर शाहजफर के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 का स्वाधीनता संग्राम छिड़ा हुआ था, उस समय क्रान्तिकारी मुस्लिम नेता- अमीर अली ने मुसलमान भाइयों से अपील करते हुए कहा था- "बहादुर शाहजफर को अपना बादशाह मानकर हमारे हिन्दू भाई अपना खून बहा रहे हैं- इसलिए फर्जे इलाही हमें मजबूर करता है कि हिन्दुओं के खुदा- श्री रामचन्द्र जी की पैदाइशी जगह जहां पर बाबरी मस्जिद बनी हुई है, हिन्दुओं को वापस कर दी जाय। "मुस्लिम वर्ग ने इस प्रस्ताव का एक स्वर से समर्थन कर दिया था किन्तु अंग्रेज बौखला गया। सुल्तानपुर गजट में कर्नल मार्टिन की रिपोर्ट में लिखा है- "बाबरी मस्जिद को मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं को वापस किए जाने से हम बहुत चिन्तित हैं, इसी समय गदर का पासा पलट गया और 18मार्च, 1858 को ही रामजन्मभूमि परिसर में ही कुबेर टीला स्थित इमली के पेड़ पर अमीर अली और बाबा रामचरणदास को फाँसी पर लटका दिया गया। इस प्रकार रामजन्मभूमि उद्धार का यह सामूहिक मुसलमानों द्वारा किया गया प्रयास भी अंग्रेजी शासन ने ध्वस्त कर दिया।

इस प्रकार ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाय, तो रामजन्मभूमि मस्जिद नहीं हो सकती। आजादी के पश्चात इसकी मुक्ति के लिए चलाया गया आन्दोलन। आज एक भीषण मोड़ के साथ हमारे सन्मुख खड़ा हुआ है।

स्वार्थी तत्व इससे राजनैतिक लाभ उठाना चाहते हैं। साम्प्रदायिक तत्व इसे भड़काकर देश की आजादी को नष्ट करना चाहते हैं, जबकि यह विशुद्ध धार्मिक मसला है और आपसी सौहार्दपूर्ण वार्ता से, राजनीति को बिना

— शेष पृष्ठ २ पर

आर्य भूमि पर अरूणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ मार्गशीर्ष शुक्ल, ८ संवत २०४७ वि.
दिनांक २५ नवम्बर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

वृहदधिवेशन की तिथियों में परिवर्तन

उत्तर प्रदेश तथा राष्ट्र की असामान्य, अपरिहार्य गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए, आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के नियम सं0-8 §ए§ के अन्तर्गत आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के दिनांक- 24 तथा 25 नवम्बर 1990 को लखनऊ के डी0ए0वी कालेज में आयोजित होने वाले 105वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन कर दिया गया है। अब सभा का उक्त वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन दिनांक- 15 तथा 16 दिसम्बर 1990 को लखनऊ के डी0ए0वी0 कालेज में ही पूर्वघोषित समय तथा कार्यक्रम के अनुसार सम्पन्न होगा। प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों एवं आर्यत्वप्रेमी जनता से अपेक्षा की जाती है कि आर्यसमाज और सभा के कार्यों को प्रगति देने के लिए वह बड़ी संख्या में इस वृहदधिवेशन में सम्मिलित होगी।

आज हमारा राष्ट्र बहुकोणीय संकटों से घिरता जा रहा है। समस्याओं का समाधान नजर नहीं आ रहा है। राजनैतिक मंच पर पदासीन नेताओं के परिवर्तनमात्र से समाधान की आशा रखना दुराशामात्र है। कितने आश्चर्य और लज्जा की बात है कि आजादी के चार दशक बीत जाने पर भी राष्ट्र को परमवैभव के शिखर पर पहुँचाने का लक्ष्य दुष्कर ही होता चला जा रहा है। ऐसे समय में आशा की किरण केवल मात्र आर्यसमाज है। हमारे देखते-देखते विगत महायुद्ध में पूर्णतया ध्वस्त हुए अनेकों राष्ट्र आज वैभव के शिखर पर पहुँच गये किन्तु भारत अपनी दलगत राजनीति से ही अभी तक नहीं उबर पाया है। राष्ट्र में चारों ओर अनिश्चितता, अव्यवस्था और हिंसा का माहौल बढ़ता ही जा रहा है। ऐसी अवस्था में राष्ट्र को सही दिशानिर्देश देने में केवल आर्यसमाज ही सक्षम है।

इसलिए आर्यसमाजों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था "आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0" को इस प्रदेश में अपना सहयोग दीजिए। इसे बलशाली बनाइए- यह आपका पावनकर्त्तव्य है। आज हम देख रहे हैं इस पावन धरती से आर्यजाति को समूल नष्ट करने का भीषण कुचक्र चल रहा है, वेद की मर्यादाएं लुप्त होती जा रही हैं। प्रदेश के कोने-कोने में स्थापित आर्यसमाज मन्दिर हमारी शक्ति और संगठन के केन्द्र हैं। इन्हें जीवन्त बनाकर प्रचारकार्य को और गति दी जा सकती है। इसलिए सभी प्रतिनिधि सब कार्यों को छोड़कर आगामी 15 तथा 16 दिसम्बर को लखनऊ अवश्य पहुँचें और सभारूपी इस महाशक्ति को अपना संबल प्रदान करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का यह वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन कई दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हमें राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों का उत्तर देने के लिए एक सशक्त रणनीति इस अधिवेशन में तैयार करनी है इसलिए सभा के आमन्त्रण को स्वीकार कर अवश्य पधारिए। अपने क्षेत्र की परिस्थितियों से हमें अवगत कराइए और सभा के निर्णयों को क्रियान्वित करने में अपना सक्रिय सहयोग देकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य को पूरा करने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए। ◻

प्रथम पृष्ठ का शेष...

बीच में डाले, आसानी से सुलझाया जा सकता है। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा0 श्री अमरेश आर्य, "अफजल उल्मा" जो मुसलमानों के धर्म गुरु भी रह चुके हैं- उन्होंने 24 अप्रैल, 1986 से लेकर, 28 अप्रैल 1986 तक, अयोध्या में रहकर "कथित मस्जिद" के वास्तविक रूप का गम्भीर अनुशीलन करके जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसका संक्षिपत रूप निम्नवत् है:-

रामजन्मभूमि पर किसी भी आधार से एक मस्जिद का रूप लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि :-

§1§ इस इमारत का रुख स्वयं बता रहा है कि सचमुच यह इमारत मस्जिद के रूप में निर्मित ही नहीं है, क्योंकि इसमें "मेहराब" §वह स्थान जहां पर नमाज में इमाम साहब खड़े होते हैं§ का रुख ठीक तरह से "किबला" §मक्के का वह घर जिसकी तरफ नमाजी को नमाज में अपना मुँह करना अत्यन्त आवश्यक है§ की ओर नहीं है।

§2§ इस इमारत के अन्दर और बाहर की दीवारों पर जो दस्तकारी है, वह किसी भी रूप में मस्जिद में नहीं पाई जाती। यह दस्तकारी तो सिर्फ हिन्दू मन्दिरों में ही पाई जाती है।

§3§ इस इमारत में अथवा उसके आस-पास "वजू" करने के लिए कोई स्थान नही है और न ऐसे स्थान का कोई निशान है।

§4§ इस इमारत के आस-पास की आबादी अन्य उपासनागृह तथा इमारतें यह साबित कर रही हैं कि यहां पर किसी मस्जिद का वजूद ही नहीं था।

§5§ इस इमारत में लगे पत्थरों में खुले रूप में नक्श किया गया है कि इस इमारत को मस्जिद में रूपान्तरित करने से पूर्व यह एक ऐसा उपसानागृह था जहाँ पर श्रीराम, सीता और हनुमान की पूजा होती थी । किसी पीर या मुर्शिद को खुश करने के लिए इस इमारत के ऊपरी हिस्से में थोड़ा सा रूपान्तर करके अधूरा मस्जिद का रूप दिया गया है।

§6§ इस इमारत में पाई जाने वाली दस्तकारियां, खम्बों का स्वरूप उस पर बनी देवी-देवताओं की मूर्त्तियां एवं अन्य तमाम प्रमाणों से यह साफ जाहिर है कि बाबरी मस्जिद का नाम जिस इमारत को दिया गया है, वह वास्तव में एक मन्दिर था, जो जबरदस्ती मस्जिद में रूपान्तरित किया गया है। इस्लामी शरियत की प्रमाणिक पुस्तकों में साफ लिखा गया है कि - जबरदस्ती कब्जा की हुई इमारत को यदि मस्जिद में रूपान्तरित किया जाय तो ऐसी मस्जिद में नमाज पढ़ना निषिद्ध है, ऐसी इमारत को किसी भी आधार पर मस्जिद की पवित्रता नहीं दी जायेगी §आलम गरिमा में मुजमरात एवं बहरूल शईक के हवाले से§

इस प्रकार इस्लामी शरियत के अनुसार "बाबरी मस्जिद" का दावा जिस इमारत पर किया जा रहा है, वह मस्जिद बन नहीं सकती। इसलिए साधारण मुस्लिम जनता को मजहब का नाम लेकर भटकाना एक ऐसा अत्याचार है, जिसको न खुदा और न नेक पसन्द लोग स्वीकार कर सकते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि ऐतिहासिक तथ्यों को देखते हुए अयोध्या में मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम की जन्मस्थली पर खून की नदियां न बहायें।

बाबर विदेशी आक्रान्ता था। अतः जिस सरदार पटेल ने सोमनाथ मन्दिर को बनवाकर दासता की निशानी को निर्मल किया था। उसी प्रकार देश की बहुसंख्यक हिन्दू जाति की धार्मिक भावनाओं का आदर करते हुए राष्ट्र की सभी राजनैतिक पार्टियों तथा धार्मिक नेता एकमत होकर सत्य को स्वीकार करें और पुरुषोत्तम श्री राम के भव्य मन्दिर का निर्माण करके देश में सच्ची राष्ट्रीय एकता की स्थापना करें। ◻

● आर्य समाज गंगोह §सहारनपुर§ के सम्मानित सभासद तथा हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लेखक, विद्वान पं0 वेद भूषण वेदालंकार का 71 वर्ष की आयु में निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उनसे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

आर्यसमाज आज के परिपेक्ष्य में

आचार्य प्रेमभिक्षु संपादक "तपोभूमि"
वेदमंदिर, मथुरा

कुछ लोगों का विचार है कि "आर्यसमाज के आदर्श ऊँचे और महान हैं। पर वह आज के परिपेक्ष्य में वास्तविकता से मेल नहीं खाते।" जब कि सच्चाई यह है कि आर्यसमाज के आदर्श और सिद्धान्त मात्र ऊँचे और महान ही नहीं वरन् वे स्वयं में किसी भी युग के लिये एक वास्तविकता हैं, वे सत्य, सनातन, शाश्वत और अपरिवर्तनीय एवं सार्वभौम हैं।

यहाँ स्मरणीय है कि आर्यसमाज न तो एक मत, पंथ या सम्प्रदाय है और नहीं एक सम-सामायिक आन्दोलन है, जिसका महत्व समय बीतने पर प्रायः समाप्त या कम हो जाता है। ध्यान रहे कि आर्यसमाज का मूलाधार स्वयं परमेश प्रभु की कल्याणी वाणी-वेद है। इसीलिये आर्यसमाज के तृतीय नियम में-"वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म है।" ऐसी व्यवस्था दी गई है। आर्यसमाज के दश नियमों में एक भी स्थल पर "दयानंद" शब्द नहीं आया है। आर्यसमाज में प्रवेश के समय "बुद्धं शरणं गच्छामि" की भांति "दयानंद शरणं गच्छामि" कहने की आवश्यकता नहीं होती। तो वेद ही आर्यसमाज का सर्वस्व है और आर्यसमाज वेद प्रचारक संगठन है। चूँकि वेद सार्वभौम है, अतः आर्यसमाज सार्वभौम है। और पवित्र वेद के प्रकाश में ही मानवतावादी और राष्ट्रवादी है।

स्मरण रहे वैदिक धर्म ही सनातन धर्म है, मानव धर्म है, शाश्वत और सार्वभौमिक धर्म है। आर्यसमाज के दश नियम सार्वभौम मानव धर्म के स्वर्ण सूत्र हैं। सत्य, न्याय, प्रेम, सेवा, परोपकार सदाचार-सद्व्यवहार और मानवता एवं सच्ची आस्तिकता ही इन नियमों की आत्मा है। संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है।"

प्रकट है कि ऐसा संगठन कभी युग-बाह्य नहीं हो सकता। हाँ, आज के वातावरण में सत्य, न्याय, सेवा-सदाचार और परोपकार की बातें "युगबाह्य" समझी जा रही हैं। और इसीलिये आर्यसमाज को कोई युग बाह्य और वास्तविकता से दूर भले ही कहे। पर सत्य यह है कि इसीलिये ही तो आर्यसमाज युग की महती आवश्यकता है, क्योंकि रोग अधिक व्यापक हो तो चिकित्सक की और भी आवश्यकता है।

यह ठीक है कि शराब-माँस के बढ़ते हुए दौर, रहन-सहन और आचार-व्यवहार में पाश्चात्य सभ्यता एवं अंग्रेजियत के बढ़ते हुये दुष्प्रभाव, जीवन के प्रति सर्वथा आध्यात्म-शून्य अति भौतिकवादी दृष्टिकोण (आर्यसमाज अध्यात्म और भौतिकता के समन्वय को स्वीकारता है। तथा वर्तमान युग के प्रतीक भ्रष्टाचार, दुराचार इसी प्रकार धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र और आर्थिक क्षेत्र में बढ़ते हुये काला बाजार का आर्यसमाज किसी भी रूप में समर्थन नहीं कर सकता, और इसीलिये यदि आर्यसमाज को आज के परिपेक्ष्य में युग बाह्य या वास्तविकता से दूर कहा जाये तथा इसीलिये यदि आर्यसमाज में भीड़ कम हो तो यह तो उसके लिये गौरव की बात है। आर्यसमाज को भीड़ नहीं सदाचार और चरित्र चाहिये। यहाँ हम भूले नहीं - "सत्यमेव जयते नानृतम्" अन्ततः विजय सत्य की ही होती है। सत्य अमर है, मानवता अमर है, देवत्व अमर है, अतः आर्यसमाज अमर है।

कुछ सज्जनों को आर्यसमाज की गतिविधियाँ इसलिये भी कम प्रतीत हो सकती हैं क्योंकि आर्यसमाज शोर-शराबे मात्र प्रदर्शन और असत्य मूलक एवं अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों में विश्वास नहीं रखता, जो आज के युग का दूसरा नाम बन गई है। दूसरी ओर आर्यसमाज "नींव का पत्थर" बनकर मानवता और राष्ट्रीयता के भव्य भवन के निर्माण कार्य में आज भी पूर्ण शक्ति से लगा है। हम भूले नहीं कि देश में स्वराज्य लाने में, तदर्थ तप-त्याग-बलिदान और सर्वस्व होमने में वह सबसे आगे था, इतिहास का यह सर्वमान्य तथ्य है कि सन् 31-32 तक के आन्दोलनों में तथा क्रान्तिकारी योजनाओं में भाग लेने वाले 80/ प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से आर्यसमाजी थे। बाद में कॉग्रेस की अराष्ट्रीय (मुस्लिम तुष्टीकरण की) दुर्नीति, जिसके कारण ही पाकिस्तान बना और आज भी जिसके कारण राष्ट्र खण्ड-खण्ड होता जा रहा है, के कारण उसने अपने को प्रायः कॉग्रेस से अलग ही कर लिया, परन्तु वह (आर्यसमाज) राष्ट्रोत्थान के मूल कार्यों में, भारतमाता और माँ मानवता की सेवा में वेद स्वाध्याय, वेद प्रचार वेदाचार, वैदिक शिक्षा आधार सत्साहित्य निर्माण द्वारा निरन्तर संलग्न रहा। देश के बंटवारे के मूल्य पर जो कथित "स्वराज्य" मिला उसे "सुराज" बनाने-चरित्र निर्माण या मानवता से युक्त मानव में निर्माण और राष्ट्र की आन्तरिक सुरक्षा, कुरीति-निवारण, सुरीति-प्रसारण शान्ति और सद्भावना के निर्माणात्मक कार्यों में वह आज भी सेवारत है।

नशा-निषेध, हिन्दी-गौरव-रक्षा-संस्कृत-संस्कृति-रक्षा, विद्यालयों में नैतिक शिक्षा सती-प्रथा विरोध, नाथ द्वारा मन्दिर में सभी को समान प्रवेशाधिकार दिलाने तथा शुद्धि-संगठन द्वारा राष्ट्रीयता की रक्षा हेतु "धर्म रक्षा अभियान" के माध्यम से व्यापक कार्य इसके ताजा उदाहरण हैं। हाँ, आर्यसमाज आज की राजनैतिक कुर्सियों की लड़ाई से दूर रहा है, इसी से उसका रचनात्मक कार्य सर्व साधारण को दीखता नहीं है, क्योंकि आर्यसमाज सफेद-लाल-पीली टोपियों के बदलने में नहीं, टोपियों के बदलने में नहीं, टोपियों के नीचे की खोपड़ियों के मानव के मन-मस्तिष्क और चिंतन के-बदलने में विश्वास रखता है। वह वैचारिक क्रान्ति का अग्रदूत है।

फिर यह भी विचारणीय है कि हमारे इन मित्रों को यह तथ्य क्यों नहीं दीख पड़ रहा है कि आर्यसमाज के स्वरों की ही आज सर्वत्र प्रतिष्ठापना हो रही है। आर्यसमाज की वैदिक एवं वैज्ञानिक सत्य मान्यताओं का कल तक निषेध करने वाले, इसके साथ शास्त्रार्थ करने वाले भी आज उन्हें अपना रहे हैं। देश की स्वतंत्रता को स्वर देने के साथ ही, आर्यसमाज के नारी-शिक्षा नारी-सम्मान, विधवा-विवाह-प्रचलन, बाल विवाह-वृद्ध विचार निषेध, समुद्र यात्रा (विदेश यात्रा) प्रचलन दलितोद्धार, शुद्धि-संगठन आदि विविध वेदोक्त सेवा कार्यों को आज सभी ने मान लिया है। यह तो आर्यसमाज का दिग्विजय है। हाँ, यह बात अलग है कि अन्य संगठनों द्वारा इन सेवा कार्यों को अपना लेने से आर्यसमाज के क्षेत्र में चहल-पहल कुछ कम दिखाई दे। पर साथ ही यह भी ज्ञातव्य है कि अन्य संगठनों द्वारा इन सेवा कार्यों को भी प्रायः स्वार्थवश या अज्ञानवश भिन्न दिशा दे दी गई है, जिसके दुष्परिणाम भी प्रत्यक्ष हैं।

आर्यसमाज का नारी जागरण अभियान अपने मूल वैदिक (भारतीय) संस्कृति से कटकर आज पाश्चात्य सभ्यता से अभिभूत है। फलतः देवियों के स्थान पर लौड़ियाँ उसे नेतृत्व दे रही हैं। इस क्षेत्र में पुरुष के प्रतिस्पर्द्धा जैसे उनकी टेक हो। आर्यसमाज ने पर्दाप्रथा के विरुद्ध आन्दोलन किया था, पर आज बेपर्दगी चरम सीमा पर है। अर्धनग्न फिल्मी सभ्यता, कला के नाम पर कामराधना और नारी-विज्ञापन के खिलाफ आज मोर्चा लेने की आवश्यकता हो गई है। नारी, जो विश्व पूज्य है, पूजा की वस्तु है, वह आज चौराहे की फुटबाल बन कर रह गई है। इसी प्रकार आर्य समाज का दलितोद्धार का कार्य भी अज्येष्ठासो अकनिष्ठासः एते सं भ्रातरो वावृधुः (न कोई बड़ा है न छोटा है सभी आपस में भाई भाई हैं) पवित्र वेद की ऐसी ही पावन ऋचाओं पर आधृत मानव समता मूल एवं विशुद्ध मानवतावादी था। दलितों को हरिजन संज्ञा देकर और इस प्रकार एक नया वर्ग बनाकर उसे आज राजनैतिक खिलाड़ियों ने जो विकृत रूप दिया है उसी का दुष्परिणाम पनवारी (आगरा) जैसे दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड और उसी का दुष्फल जातीय आधार पर आरक्षण (मण्डल आयोग) की विकटतम समस्या है। इन सबका एक मात्र समाधान आर्यसमाज द्वारा प्रस्तुत गुण कर्म स्वभावाश्रित वैदिक वर्ग व्यवस्था ही है, जिसमें जन्मगत जाति-पाँति की विद्वेषत अन्याय मूलक अमानवीय मान्यता के लिये कोई स्थान नहीं है। आर्यसमाज भी अभी इस दिशा में क्रियात्मक रूप से बहुत कुछ करना है।

आज का ज्वलन्त प्रश्न होने के कारण यहाँ हम इस संबंध में कुछ विस्तार से विचार कर रहे हैं। सभी जानते हैं कि वर्ण चार हैं, तीन नहीं। पर कैसा दुर्भाग्य है कि राजनीति के पण्डों द्वारा "सवर्ण" शब्द का प्रयोग मात्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिये हो रहा है, शूद्र के लिये नहीं। आखिर शूद्र भी तो एक वर्ग है, वर्ण के अंतर्गत है, फिर सवर्ण क्यों नहीं? "यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।। इस पवित्र वेदमंत्र तथा अन्य अनेकों मंत्रों में ब्राह्मण क्षत्रिय

शेष पृष्ठ ८ पर

आरक्षण क्रान्ति के मार्ग में बाधक

•संतोष "कण्व" बरेली

निस्सन्देह हमारा देश महाविनाश की ओर बढ़ रहा है। समाज बँटा हुआ है। पहले छूत-अछूत का रगड़ा था, अब अगड़े-पिछड़ों का झगड़ा है। इन पचड़ों से देश पिछड़ता है। मानव स्वभाव बिगड़ता है। तगड़ा तो कोई नहीं होता है, हाँ। अगले-पगलों के चक्कर में समाज अवश्य लंगड़ा हो जाता है। शान्ति भंग हो जाती है। उन्नति रुक जाती है। अविश्वास ,घृणा व विद्वेष की आग एक-एक सब कुछ भस्म कर देती है।

समाज का निर्माण व विकास जब किसी सुनियोजित व सुनिश्चित ढंग से किया जाता है, तभी परस्पर सहमति और सद्भाव बनता है, प्रेम व सौहार्द बढ़ता है, चतुर्दिक सुख -शान्ति रहती है, अन्यथा अशान्ति की पूरी संभावनायें बनती हैं, जो शनैः-शनैः हिंसक रूपधारण कर समाज का विध्वंस कर देती है। स्वास्थ्य समाज के निर्माण की उपेक्षा का यही परिणाम होता है।

भारतीय समाज का पतन तो महाभारत काल से पूर्व ही हो चुका था, नहीं तो भारत-युद्ध ही न होता। वह भारत का स्वर्णिम युग नहीं, प्रत्युत पतन-काल था। समाज द्रुतगति से पतनोन्मुख था। तब से अब तक यत्किंच सुधार के आन्दोलन व प्रयास तो अनेक हुए, परन्तु उस दिशा में ठोस, सार्थक, व्यावहारिक व वैज्ञानिक प्रयास यदि किसी ने किया तो महर्षि दयानंद ने। उन्होंने समाज के पतन के मूल कारणों का गम्भीर विश्लेषण किया। उपलब्ध शास्त्रों का सूक्ष्मतम विवेचन किया, अण्ड-बण्ड कर स्वस्थ दिशा-निर्देश किया।

ऋषिराज दयानंद ने रूढ़ियों की बेड़ियाँ काटकर फेंक दी। अंधधान्धकार में वेद की ज्योति जला दी। सत्यासत्य के निर्णय की कसौटी बता दी। मरणासन्न जाति को नवजीवन की राह दिखा दी। महान् कृपा है, उस महर्षि की जिसने वर्णाश्रम व्यवस्था का सच्चा स्वरूप हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया। गुण-कर्म-स्वभाव के महत्व को समझा दिया।

हमारे अपने ही देश में जन्म के आधार पर भेदभाव और ऊँच-नीच के प्रपंच का एक दुर्भाग्य पूर्ण युग था। इस दृष्टि से शास्त्र भी रचे गये थे। समाज के एक वर्ग को कुछ कुटिल मना लोगों ने दबाकर रखा हुआ था। वे चाहकर भी उठ नहीं पाते थे। शिक्षा के द्वार उनके लिए बंद थे। पानी के कुँओं पर चढ़ने की रोक थी। समाज में अन्यों के साथ उठने-बैठने पर प्रतिबंध था। उनके घाट और पाथ अलग थे। बस्ती और हाट अलग थे। मनगढ़न्त शास्त्रों की दुहाई देकर उन्हें अपने कथित भाग्य पर ही सन्तोष करने को विवश किया जाता था। महर्षि दयानंद से यह अन्याय नहीं देखा गया। उन्होंने इस भयानक धारा को उलट दिया। मनगढ़न्त शास्त्रों की धज्जियाँ उड़ा दीं। सारी पोपलीलाओं की कलई खोल दी।

आर्य समाज ने महर्षि की इस क्रान्ति को आगे बढ़ाया है। अछूत कहे जाने वालों को छाती से लगाया है। कथित दलितों को ऊपर उठाया है। इस समाज में कोई "अस्पृश्य" है, यह भाव ही मस्तिष्क से हटाया है। सामाजिक विषमता और भेदभाव के विरुद्ध आर्य समाज का सशक्त स्वर सदा ही गूँजा है। हमनें विचार ही नहीं आचार भी बदला है। सामाजिक कुरीतियों का निदान और सशक्त समाज का निर्माण, आर्यसमाज के बहुआयामी कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण भाग रहा है।

दुर्भाग्य से इस देश में ऐसे आन्दोलन भी चले जिन्होंने आर्य समाज के किए धरे पर पानी फेरा है। हमने बनाया तो उन्होंने बिगाड़ा है। एकने जोड़ा , तो दूसरे ने तोड़ा है। हमने लोगों के मन-मस्तिष्क से मिथ्या जातिवाद का विष निकाला है, तो दूसरी ओर जातिवाद को बढ़ावा भी दिया गया है। किसी और ने नहीं, इस देश की राजनीति ने दिया है। हमने तो वर्गवाद और सम्प्रदायवाद के विरुद्ध व्यापक स्तर पर सशक्त संघर्ष छेड़ा, परन्तु इस देश की सरकारों व राजनीतिक दलों ने वर्गवाद और सम्प्रदायवाद को बढ़ावा दिया है। विश्व में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है, जहाँ स्वदेशी कहे जाने वाली सरकार और राजनीति अपने ही समाज को तोड़ती है।

"आरक्षण" किसी भी प्रकार के अन्याय का समाधान नहीं है। यह तो सीधी-सादी सौदेबाजी है- नोट और वोट की सौदेबाजी। सत्ता हथियाने का ओछा हथकंडा । पीड़ितों की पीड़ा को भी भुनाया जा रहा है। गरीबों की गरीबी को सीढ़ी बनाकर कुर्सी तक पहुँचा जा रहा है। दुखिया का दुःख भी लोगों की अय्याशी और विलासिता का साधन बन रहा है। धिक्कार है।

विषमता और भेदभाव मिटाना है, तो उस व्यवस्था को बदलना होगा जिसमें शोषण और अन्याय पनपता है। उस मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा जो मानव समुदाय को वर्गों और सम्प्रदायों में बाँटती है। आरक्षण तो किसी भूखे को रोटी का टुकड़ा डालकर उसे अपनी उंगलियों पर नचाना भर है, दूसरे शब्दों में उसे अपमानित करना है। लोगों के सम्मान का भी सौदा किया जा रहा है। जिस व्यवस्था में लोग स्वाभिमान से जी नहीं सकते उसे उखाड़कर फेंकना ही होगा। इसी का नाम "क्रान्ति" है।

कहा तो यह जाता है कि आरक्षण सामाजिक परिवर्तन का साधन है, परन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। महर्षि दयानंद ने जिस क्रान्ति का आह्वान किया था, आरक्षण उसमें सबसे बड़ी बाधा है, जबकि "क्रान्ति" आज की एक मात्र आवश्यकता है। क्रान्ति अर्थात वैचारिक, सामाजिक, आर्थिक ,शैक्षणिक, राजनीतिक,सांस्कृतिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवतन। इसे सड़े-गले जर्जरित ढाँचे को बनाए रखकर यदि हम सामाजिक न्याय के दिवास्वप्न देखते हैं, तो यह हमारी मूर्खता है। न्याय और अन्याय तो व्यवस्था की देन है। इस व्यवस्था में तो अविद्या, अन्याय व अभाव का ही बोलबाला है। सर्वत्र अविश्वास का वातावरण है। समाज में जो एक दूसरे के सुख-दुःख के साथी होते हैं, वे ही आज परस्पर खून के प्यासे होते जा रहे हैं। हो नहीं रहे। प्रत्युत किए जा रहे हैं। यह चिन्ता की बात है। शासन का मुख्य काम लोगों को न्याय और सुरक्षा प्रदान करना है। दुर्भाग्य से ये दोनों काम ही नहीं हो रहे हैं। इनके स्थान पर अन्याय और असुरक्षा है। चतुर्दिक अराजकता है। जब सुशासन ही नहीं है, तो अव्यवस्था तो पनपनी ही है।

तर्क यह भी दिया जाता है कि यदि आरक्षण नहीं होता तो ये ऊँची जातियाँ, नीची जातियों को जीने नहीं देतीं। वस्तुतः समाज को ऊँची-और नीची जातियों में बाँटने की कल्पना ही अपने आप में रुग्ण मानसिकता की प्रतीक है। मध्य-काल की इस बर्बरता का आर्य समाज ने प्रबल विरोध किया है। इतिहास साक्षी है कि उच्च या सवर्ण कहे जाने वाले वर्ग के लोगों ने आर्य समाज के सिद्धान्तों व कार्यक्रमों से प्रभावित होकर तथाकथित निम्न या दलित वर्ग के लोगों को आत्मीयता से गले लगाया है। उन्हें संस्कारित व शिक्षित किया है। बिना किसी भेदभाव के किया है। इस प्रकार सुशिक्षित व सुसंस्कारित लोगों से रोटी-बेटी तक का संबंध स्थापित किया है। इस कार्य में उन्हें अपने ही वर्ग के लोगों का विरोध, उपेक्षा और तिरस्कार तक सहना पड़ा, लेकिन बढ़ा हुआ पग पीछे नहीं हटाया। घातक प्रथाएँ व परम्पराएँ तोड़ी हैं। समाज-निर्माण की दिशा में आगे बढ़े हैं, एक वर्ग-विहीन व सम्प्रदाय विहीन समाज के निर्माण की दिशा में।

आर्य समाज छूत-अछूत,सवर्ण दलित-अगड़े-पिछड़े जैसे भेदों को जनमानस से निकालकर एक स्वस्थ चिन्तन परम्परा को विकसित करता है। ताकि समाज में समरसता आए और हर व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने को सतत प्रयत्नशील रहे। उसके इस प्रयास में कोई बाधा भी नहीं डाल सके। ऐसी हमारी चेष्टा रही है।

इस पर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि परिवर्तन की गति निश्चित ही धीमी रही है। परन्तु यह निरुत्साह का कारण नहीं, क्योंकि हर बड़ा परिवर्तन प्रारम्भ में धीमी गति से होता है। जैसे-जैसे लोगों का विश्वास जमता है, उनमें साहस बढ़ता है, गति भी तीव्र हो जाती है। यही स्वाभाविक प्रक्रिया है।

यद्यपि हम परिवर्तन की मंथरगति से संतुष्ट नहीं है, परन्तु असंतुष्ट भी नहीं हैं। भविष्य के प्रति आशान्वित हैं। समाज में भेद-दृष्टि है, परन्तु समाज सुधार की संस्थाओं और शासन में बैठे लोगों की दृष्टि तो भेदभाव से रहित होनी चाहिये।

- शेष पृष्ठ ७ पर

दयानंद और उनकी विचारधारा

प्राध्यापक राजेन्द्र "जिज्ञासु"
वेद सदन अबोहर-152116

महर्षि दयानंद की विचारधारा को एक वाक्य में यदि कहना व बताना हो तो हम कहेंगे:-

"प्रभु एक है, वेद है उसकी वाणी" यदि फिर भी कोई कहे कि कुछ और स्पष्ट कीजिये तो हम कहेंगे ऋषिवर का यह वैदिक घोष है :-

"ईश्वर जीव व प्रकृति ये तीनों अनादि हैं।" कुछ और जानना चाहे तो हम कहेंगे:-
"सृष्टि प्रवाह से अनादि है।"
भ्रान्ति-निवारण के लिए—हम कहेंगे।"
जीव न कभी ब्रह्म था, न ब्रह्म है और न ब्रह्म बनेगा। ब्रह्म का न अंश है और न कोई वंश है।
जीव ईश्वर के सब गुण धारण कर सकता है परन्तु जीव न तो सर्वज्ञ बन सकता है और न कभी सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान बन सकता है।

जैसे भौतिक जगत् में कार्य कारण सिद्धान्त काम कर रहा है वैसे ही अध्यात्म जगत् में कर्म-फल सिद्धान्त कार्य कर रहा है वैसे ही अध्यात्म जगत् में कर्म-फल सिद्धान्त कार्य कर रहा है। किए हुए पाप पुण्य का फल अपने आप नहीं मिलता सर्वनियामक प्रभु कर्मों का एक व्यवस्था के अनुसार फल देता है। पुण्य का फल सुख व पाप का दुःख रूप में मिलता है। पाप व पुण्य कर्मों की ईश्वर एडजसमेंट (जोड़ घटा करके लेखा-जोखा करना) नहीं करता। दोनों का पृथक-पृथक फल मिलके रहेगा ।

ऋषि का घोष है कि ईश्वर किसी लोक विशेष में निवास नहीं करता। उसे ऊपर वाला कहना मूर्खतापूर्ण बात है। वह हममें है, हम उसमें हैं। वह हमारे भीतर है, हम उसके भीतर हैं।

ऋषि की एक अद्भुत देन यह रही कि वेद अनादि व नित्य है। अतः उसमें इतिहास नहीं और वेद के शब्दों के रूढ़ अर्थ करना बड़ा अनर्थ है।

आर्य जन महामहोपाध्याय पं० आर्य मुनि, पं० कृपाराम (पूज्य स्वामी दर्शनानंद) व पं० लेखराम जी से लेकर पं० रामचन्द्र जी देहलवी तक सोत्साह ईश्वर की वाणी वेद के लिए सर्वस्व अर्पण के भाव से संघर्ष करके प्रचार करते आये। पग-पग पर उन्होंने वैदिक मान्यताओं के प्रसार में विजय प्राप्त की। इसका एक नवीनतम उदाहरण यहाँ देते हैं। दो वर्ष पूर्व मुम्बई में श्री कैप्टन देव रत्न जी के निजी पुस्तकालय में एक अमरीकन प्राध्यापक की एक अंग्रेजी पुस्तक "ऋग्वेद के मंत्र" देखी। लेखक वहाँ एक विश्व विद्यालय में देव वाणी पढ़ता है। उसने अपने ग्रन्थ की भूमिका में कहीं किसी आर्य विद्वान की चर्चा नहीं की परन्तु पुस्तक से स्पष्ट पता चलता है कि लेखक पर ऋषि की पावन विचारधारा का गहरा प्रभाव है।

. वह लिखता है कि मेरी पुस्तक की क्या विशेषता है? उसका उत्तर है मैंने वेद के शब्दों के रूढ़ अर्थ नहीं किए। यौगिक अर्थ किये हैं। ऐसे करने से वेद आज भी सम्पूर्ण मानव समाज की उन्नति व कल्याण के लिये एक सर्वांगीड विचारधारा है। वह उदाहरण देता है जब गौ शब्द का अर्थ काऊ गाय के अतिरिक्त और भी है तो केवल काऊ गऊ अर्थ ही क्यों लिया जावे। प्रसंग के अनुसार क्यों न सार्थक अर्थ किया जावे? ऐसे ही अग्नि का अर्थ फेयर आग ही क्यों लिया जावे? इन्द्र का अर्थ भी क्यों न यौगिक किया जावे?

पाठकवृन्द। यह किसका प्रताप है? यह ऋषि की ही दिग्विजय है। यह स्वामी दर्शनानंद, वेदानंद, भूमानंद, समर्पणानंद, आत्मानंद जी जैसे महापुरुषों की सतत् साधना का यह सुखद फल है। खेद है कि अब भी ऐसे-ऐसे लोग भारत में हैं। जिनके विद्या ज्ञान का क्षेत्रफल इतना सीमित है कि वे वेद शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वानों के ग्रन्थों के आर-पार होना तो दूर उनकी कृतियों के नाम तक नहीं जानते। ऐसे घुसपैठिये आर्यसमाज में भी लूट-पाट के लिए, स्वार्थ सिद्धि के लिए आर्यसमाज को चिपटे लिपटे हैं।

ऋषि दयानंद के विचारों पर आर्यसमाज में घुसे घुसपैठियों ने वार कर रखा है अन्यथा पोंगापंथी तो हिल रहे हैं। कुछ हिल चुके थे। इस्लाम के सबसे बड़े शास्त्रार्थियों में से एक मौलाना सनाउल्ला साहेब हज को गये तो संगे अस्वद (काले पत्थर) की परिक्रमा करते हुये उसे बोसा (चुम्बन) न दिया। इस पर बड़ा विवाद खड़ा हो गया। इसके बिना हज कैसे ?

तब मौलाना ने कहा था क्या पत्थर के चुम्बन से ही हज का पुण्य मिलेगा? मौलाना में स्वस्थ परिवर्तन कैसे? यह पं० कृपाराम का जादू था। मौलाना प्रथम मुस्लिम विद्वान थे जिन्होंने देवनागरी में सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा था।

भारतीय विद्याभवन ने The Art of Life In Bhagwadgita पुस्तक के कई संस्करण निकाले हैं। इसका लेखक कहता है कि वेद उपनिषद काल में पाषाण पूजा नहीं थी। यह किसका प्रभाव है ? यह किसका प्रताप है ? यह पं० लेखराम से लेकर पं० शान्ति प्रकाश तक ऋषि के दिलजले दीवानों के परम पुरुषार्थ का फल हैं। यह महात्मा नारायण स्वामी, पं० तुलसीराम स्वामी व महात्मा भगवानदीन जैसे पूज्य पुरुषों सकी लगन का चमत्कार है।

पंजाब में मोगा मण्डी में एक बड़ा कलात्मक मन्दिर बना है। इस गीता मन्दिर में हनुमान की पूछ नहीं । श्री रामानंद सागर ने बानरों की पूंछ दिखाई उनकी स्त्रियाँ पूंछ सहित दिखाई। आधा सत्य तो रामानंद जी के गले के नीचे भी उतर गया।

श्री विवेकानंद स्वामी कभी मूर्ति पूजा की वकालत करते थे परन्तु मृत्यु से पूर्व कहा मेरी यह चाह थी कि एक तो मन्दिर ऐसा होता जहाँ मूर्तियाँ न होती। यह बेलूर मठ में मूर्तियाँ लगाने पर कहा। यह रामकृष्ण मिशन द्वारा स्वामी विवेकानंद की प्रामाणिक जीवनी में छपा है।

ऋषि ने व्यवहार भानु में अप्राप्य की प्राप्ति, प्राप्त किये हुये की वृद्धि व रक्षा को पुरुषार्थ बताया है फिर धर्म पूर्वक व्यय की बात लिखी है। रोग इसलिये नहीं कि धन क्यों कमाया जाये। रोग तो यह है कि धर्म पूर्वक व्यय नहीं। बहु विवाह व अनमेल विवाह पर धन लुटाया जा रहा है। क्या कोई बहु विवाह विरोधी आन्दोलन किसी राजनेता ने चलाया ? सब साम्यवादी मुल्ला लोगों से डरते हैं। नारी उत्पीड़न का रोना रोने वाली शबाना किसी साधु बाबे, फकीर पीर को लेकर जामा मस्जिद तक एक पद यात्रा बुर्का के विरुद्ध तो निकाले। सभी डरते है मुल्ला खा जावेंगे।

आर्यो । सुन लो। यदि वेद का प्रचार करना है तो शक्ति वेद प्रचार पर लगाओ। स्कूल रूपी व्यापार बन्द करो। आज तक स्कूलों ने आर्यसमाज को एक भी शहीद नहीं दिया। कोई दिया हो तो बतावें। टूटे-फूटे गुरुकुल भी आर्यसमाज के प्रत्येक आंदोलन में आगे आये। कष्ट सहे, जेलों में गये और गुरुकुलों के कई ब्रह्मचारी शहीद हो गये।

आओ। ऋषि के बलिदान से शिक्षा ग्रहण कर सच्चे ईश्वर विश्वासी बने। वेद भक्त बनें। संध्या वंदन में प्रमाद न करें। जीवन निर्मल बनावे। समाजों में प्रेम गंगा बहावें। हमारे जीवन की रंगत से पता चले कि हम प्रभु भक्त आर्य हैं। जाति पाँति के पचड़े से निकलो।

नाम के साथ जाति पाँति सूचक शब्दों का प्रयोग करना एक घृणित पाप जानकर इसे त्याग दें। फिर देखे हमारे उद्योग से ऋषि का मिशन फैलेगा। समाज फूलेगा फलेगा। ◘

शोक समाचार

● श्री चिरंजी लाल सर्राफ (हौरई वाले) हैदराबाद के स्वतंत्रता सेनानी की धर्मशीला धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशवती देवी का दिनांक 13 अक्टूबर को निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सदगति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

● आर्य समाज छर्रा (अलीगढ़) के पूर्व प्रधान श्री सुखराम आर्य का दिनांक 21 अक्टूबर को हृदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

● बा0 बद्री नारायण जी (शिकोहाबाद) का दिनांक 18 अक्टूबर को निधन हो गया बाबूजी की आयु 98 वर्ष की थी। वह कर्मठ आर्यसमाजी थे। वह अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगंत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी के चार कवित्त

भारत महान {1}

हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई सभी जानते हैं,
भारत सभी की जन्मभूमि है महान है।
बाबर न लाया जन्मभूमि कहीं बाहर से
भगवान राम का यह पुण्य स्थान है।
मन्दिर बनेगा यहीं, मन्दिर बनेगा यहीं
एकता का चारों ओर गुंजित यह गान है।
तुमने लड़ाया, हम और पास आ गये हैं,
करके रहेंगे कुछ, यह हमारी आन है।

{2}

वोट के पाँसे

वोट के ये पाँसे कितने दिन सफल होंगे,
भ्रम में ये वंचक नहीं अब डाल पायेंगे।
जिनको न ध्यान है युवाजन के क्रन्दन का,
प्रजा के सुरक्षक वही क्या कह लायेंगे?
आत्मदाह देख रहे, आग को बुझाते नहीं,
अबल विवेकहीन देश क्या चलायेंगे।
कुर्सियों को घेरने का जिन्हें अधिकार नहीं,
प्रभुता की स्वार्थ ज्वाल, क्षार बन जायेंगे।

{3}

आरक्षण या संरक्षण

भावी राष्ट्रकर्णधार व्याकुल हो दीखते हैं,
न्यायोचित बात कहने न यहाँ पाते हैं।
शोषित सवर्ण जन झुग्गियों में झोपड़ी में,
दुर्बल हैं किन्तु न विपन्न जाने जाते हैं।
आरक्षण जातिगत आधार से पोषित है,
धनवान भी वहाँ हो दुर्बल कहाते हैं।
दुर्नीतियों ने विषवृक्ष है लगाया ऐसा,
छाँह में भी एक दूसरे को ही जलाते हैं।

{4}

राम जन्मभूमि

राम जन्मभूमि राम की है सन्देह नहीं
इसको विवाद का विषय क्यों बनाते हो,
राष्ट्र की अखंडता को नष्ट करने के लिए
कुर्सी के मोह में परस्पर लड़ाते हो,
लहू की हैं नदियाँ उफनती हो देख रहीं
उनके प्रवाह को निरन्तर बढ़ाते हो।
पीपल के पल्लव सा जीवन यह चंचल है,
पाप पुस्तिका है, धर्म जिल्दो चढ़ाते हो।

आर्य हवन सामग्री

वैदिक विद्वानों द्वारा प्रशंसित रोगनाशक, सुगन्धित और पौष्टिक हवन सामग्री का ही प्रयोग नित्य करें।

नं0-1 स्पेशल आर्य हवन सामग्री 25/- किलो।
नं0-2 आर्य हवन सामग्री 10/- किलो।
नं0-3 सामान्य आर्य हवन सामग्री का भाव 8/- आठ रुपया किलो है।

धर्मवीर ग्रन्थमाला

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिल्ली के उपलक्ष में धर्मवीर ग्रन्थमाला के 200/- रुपयों का सेट केवल 100/- मात्र में आर्य समाजों के पुस्तकालयों के लिये हम सादर भेंट कर रहे हैं। डाक खर्च ग्राहक को देना होगा।

धन और आदेश आज ही भेजें।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी, स्वतत्रता सेनानी
अध्यक्ष
धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग
9856, अहाता ठाकुरदास सरायरुहेला
नई दिल्ली-5, दूरभाष-586545

स्वास्थ्य-सुधा

{1}

समस्या- "श्वेतप्रदर से पीड़ित हूँ। कमजोरी महसूस होती है। उठने-बैठने में अस्थियों में टूट-फूट होती रहती है। मासिक धर्म सही समय पर रहता है।"

-- एक बहन, श्रीविजयनगर {श्रीगंगानगर} राजस्थान।

समाधान- प्रत्येक भोजन बाद प्रदरान्तकरस {बैद्यनाथ} दो गोली लेकर-- पत्रांगासव दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। कम से कम दो मास तक उपचार जारी रखें।

{2}

समस्या- "स्वामी जी। मेरी पेशाब में कुछ धातु की मात्रा निकलती है। डाक्टर से चेक कराने पर ज्ञात हुआ।"

-- एक युवक, विकासनगर-लखनऊ

समाधान- बंगभस्म एक रत्ती प्रात एक चम्मच घी-चीनी के साथ मिलाकर चाटें। प्रत्येक भोजन बाद फॉरटीग {अलारसिन फार्मेसी} दो गोली लेकर-पुनर्नवारिष्ट दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। कम से कम दो मास तक उपचार जारी रखें। प्रातः चालीपैट कमरबंद भुजंगासन-उत्तानपादासन-हलासन-सर्वांगासन-एकपादांगुष्ठासन किया करें।

:: स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती, पियौरागढ़ {उ0प्र0}- को पत्रोत्तर व पत्रिका हेतु डाकटिकट भेजें।

- गुरुकुलानन्द सरस्वती

आत्मदाह

·अर्चना आर्या
90/5 प्रियदर्शिनी छात्रावास,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

पवित्रता सूचक आत्मदाह-
युवापीढ़ी, साथ ही सवर्ण।
योग्यता का प्रतिबिम्ब--
आत्मदाह है क्या?
क्या केवल, शरीर का अग्नि-समर्पण।
आक्रोश से हट कर सोचो।
यदि करना है, आत्मदाह--
कर दो अपने को, देशहित बलिदान।
सामाजिक रूढ़ियों-बन्धनों व आर्थिक-विषमताओं को
हटाने हेतु करो, आत्मदाह।
युवा संघर्षरतमा, जारी रखो अभियान --
जयघोष करो--
नहीं चाहिये, आरक्षण जाति के नाम-पर।
जाति के नाम पर आरक्षण-
समाज का विखण्डन है।

पं0 शिवकुमार शास्त्री जी का 76वाँ जन्मदिवस

नयी दिल्ली दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान में आर्यसमाज डिफेन्स कालोनी में 14-अक्टूबर को आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान, शिक्षाविद, राजनेता भू0पू0सांसद स्व0 पं0 शिवकुमार जी शास्त्री का 76वाँ जन्मदिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूज्यपाद स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने की।

स्वामी ओ३म् प्रेमी-शान्तियज्ञ

पियौरागढ़। आर्यसमाज दयानन्द बालमन्दिर में स्वामी ओ३म् प्रेमी की दिवंगत आत्मा {निधनतिथि 9 सितम्बर 1990} हेतु पं0 गंगादत्त जोशी की अध्यक्षता में शान्तियज्ञ 30 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। स्वामीप्रेमी जी ने वानप्रस्थ आश्रम के बाद सपत्नीक संन्यास की दीक्षा ली थी तथा विगत 8 वर्षों से गुरुकुल हौशंगाबाद {म0प्र0} में आत्मसाधना में संलग्न थे। स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

दान सूची

- वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट जिला गाजियाबाद के दानदाताओं की सूची -

1- श्रीमती गोविन्दी देवी, हापुड़	25-00
2- श्रीमती चन्द्रवती देवी, हापुड़	21-00
3- श्री डा0 धापर हापुड़	51-00
4- श्रीमती सत्यबाला जी हापुड़	21-00
5- श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी ब्रजघाट	1000-00
6- श्री अमरीश कुमार जी मेरठ	51-00
7- श्री पृथ्वी सिंह जी, ब्रजघाट	51-00
8- श्री मन्त्री जी आर्यसमाज, गढ़मुक्तेश्वर	116-00
9- श्री जगदीश मित्र जी दिल्ली	51-00
	1387-00

अन्नदान

	कुन्तल	कि0ग्रा0
1- बहादुर गढ़ जनपद-गाजियाबाद	2-	25 "
2- गन्दू नगला जनपद गाजियाबाद	1-	15 "
3- बीहटा जनपद गाजियाबाद	4-	55 "
4- स्याना जनपद बुलन्दशहर	1-	5 "
5- चितसोना जनपद गाजियाबाद	1-	0 0
6- सेहल जनपद गाजियाबाद	2-	0
7- कन्दोसी जनपद मुरादाबाद	1-	0
8- सीगनपुर जनपद गाजियाबाद	1-	0
9- टाटडरा जनपद गाजियाबाद	2-	0
10- यसबाड़ा जनपद गाजियाबाद	2-	50"
11- सदरपुर जनपद गाजियाबाद	1-	0
12- स्वामी वेद-व्रतानन्द जी ब्रजघाट	3-	50"
23 कुन्तल गेहूँ	23	- 00

समस्त दानदाताओं को धन्यवाद

-जयप्रकाश त्यागी
व्यवस्थापक

धर्म परिवर्तन का औचित्य

वारसचन्द्र आर्य लोहेवाले
बजार लुहानी, सहारनपुर

जब भी कभी देश के किसी भाग में हरिजन भाईयों के साथ कोई ज्यादतियाँ होती हैं तो एक दम धर्म परिवर्तन की ध्वनि कान में पड़ती है अभी थोड़ा समय पूर्व पनवारी {आगरा परिक्षेत्र} में हुई। ऐसी ही बड़ी दुःखद घटना के बाद महान हरिजन नेताओं सर्वश्री बी0पी0 मौर्य और गुलाब सेहरा जी के वक्तव्य समाचार पत्रों में आये हैं कि वह अमुक तिथि को हरिजन भाई सामूहिक धर्म परिवर्तन कर बौद्धधर्म ग्रहण कर लेंगे। जब-जब हरिजन समाज की ओर से ऐसी ध्वनि उठती है मेरे मन में यह विचार उठता है कि हरिजन समाज को हृदयंगम कराऊं कि उन्हें धर्मान्तरण की कोई आवश्यकता नहीं है न ही जिसका कोई औचित्य नहीं है और न हो यह कोई समस्या का समाधान है क्योंकि हिन्दू धर्म छोड़कर अन्य धर्म ग्रहण कर लेने से ऊँच-नीच का जो क्लेश है वह समाप्त न होगा। हाँ हिन्दू समाज से संघर्ष रत रहकर तो कुछ समय पाकर यह कलंक धोया जा सकता है ध्यान दीजिये, कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के अगले दशक के प्रारम्भ में एक मैंने दिल्ली में शुद्धि समारोह देखा था। श्री सुर्जनदास नाम के एक ईसाई सज्जन ने सब परिवार सहित शुद्ध होकर पुनः हिन्दू धर्म स्वीकार किया था उस समय को श्री सुर्जनदास का अपना भाषण यह है वह ईसाई प्रचारक उनका कथन था कि {जनता यह जानना चाहेगी कि हम कभी ईसाई क्यों बने और पुनः हिन्दू धर्म में क्यों लौट रहे हैं} मेरा उत्तर है कि मुद्दतों पहले हमारी बस्तियों में ईसाई मिशनरी जाते थे और हमें हमारे निर्धन माँ-बाप से गन्दे रहन-सहन और कपड़ों में गोद में उठाकर हमें शिक्षित बनाकर उच्चस्तर का स्वावलम्बी जीवन वाला बनाने का वचन देते थे इसी के अनुरूप हमारा पालन पोषण और शिक्षा-दिक्षा हुई और हमें सम्मान जनक रोजगार भी प्राप्त हुए पर एक कसक हमें सालती रही कि सामाजिक बराबरी यहां भी हमें प्राप्त नहीं हुई क्योंकि जो ईसाई सवर्ण हिन्दुओं में से या मुसलमानों में से बनाकर आये थे वह हम उन ईसाईयों को लड़की देने को तैयार नहीं हैं जो हम हरिजनों में से ईसाई बनकर आये हैं। इस भेदभाव ने हमें झकझोरा और हमने निर्णय लिया कि क्यों न हम अपने घर यानि विराट हिन्दू धर्म में लौट जायें और संघर्ष करके अपने अधिकार और समुचित स्थान प्राप्त करें। इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर हम अपने घर हिन्दू धर्म में लौट रहे हैं।

यही स्थिति सिख धर्म स्वीकार करने से होगी कोई भी जागरूक व्यक्ति पंजाब जाकर देख सकता है कि हरिजनों में से बने सिखों के साथ कितना बराबरी का व्यवहार होता है शायद गुरुद्वारा में इकट्ठा बैठकर धार्मिक अनुष्ठान पूरे कर प्रशाद तो ग्रहण कर सकते हैं पर शायद ही बाहर रोटी-बेटी का कोई व्यवहार बराबरी का होगा जबकि ईसाईयत में खानपान में इतना भेदभाव न हो।

मुसलमान बनकर भी भेदभाव से मुक्ति न मिल सकेगी। क्योंकि वहाँ भी पहले ही सिया, सुन्नि, एनखिया आदि कई वर्गभेद भयानक रूप में विद्यमान हैं।

पूरे देश पर छा गये बौद्धधर्म को जबसे इस देश से वैदिक धर्माचार्यों ने निकाल बाहर किया है तब से उसका इस देश में कोई विशेष आधार नहीं है।

हाँ पिछले दिनों आगरा की एक सभा में एक विवेकवान व्यक्ति का यह सुझाव सराहनीय और समाधान कारक है कि ज्यादतियों का डटकर मुकाबला किया जाये और मैं समझता हूँ कि आज के युग में यथातथ्य व्यवहार इस बुराई को जड़ से उखाड़ देगा। अन्त में मेरा सुझाव है कि हरिजन समाज को यदि सवर्ण कहे जाने वाले हिन्दुओं से कोई शिकायत है तो बेशक उनकी उपेक्षा करें यदि मनु जी महाराज के कुछ लेख अनुकूल नहीं है उन्हें छोड़ दें तुलसी के प्रतिकूल दोहे या पूरा रामचरितमानसन पढ़ें पर भिलनी के झूठे बेर खाने वाले भगवान श्रीराम या युग पवर्तक अछूत उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती को क्यों छोड़ें यदि उन्हें भी छोड़ना चाहें तुम्हारा आदि वाल्मीकि और सन्त रविदास उनका आधार है हो उनको छोड़कर ईसाईयत या इस्लाम या सिखी या बुद्ध मत की ओर देखना कोई तर्कसंगत नहीं है। अतः हरिजन समाज गम्भीरता पूर्वक ध्यान दें और अपने भविष्य का ऐसा निर्धारण करें जो स्थायी तो हो ही सम्मानजनक भी हो। □

शोक समाचार

अत्यन्त दुख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के भू0पू0 प्रधान एवं भूतपूर्व संसद सदस्य स्व0 श्री पं0 शिवकुमार शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती सोमलता शास्त्री का दिनांक 18-10-90 को आकस्मिक निधन हो गया। वे एक अत्यन्त विदुषी आर्य महिला थी और जीवन भर आर्य समाज के कार्यो के लिए समर्पित रहीं।

सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हुये उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

श्री राम चन्दर सेठ स्थान कौड़ीराम जनपद गोरखपुर का 85 वर्ष में दिनांक 13-10-90 को देहावसान हो गया। अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके पुत्रगण भी आर्य समाज के कार्य में सहयोग प्रदान करते हैं। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा परिवार वालों को धैर्य प्रदान करे।

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सौरिख {फर्रुखाबाद} का वार्षिकोत्सव दि0- 21 से 23 अक्टूबर तक समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें पं0आत्माराम पुरोहित, स्वामी-चेतनान्द राष्ट्री योग प्रशिक्षक पं0-कुशराम आर्य, पं0 राजकुमार आर्य, पं0 मदनलाल आर्य, स्वामी वेदानन्द, यज्ञमुनि वानप्रस्थी, रामदेव ब्रह्मचारी एवं विद्यासागर आर्य ने अपने व्याख्यानों व भजनोपदेशकों ने श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव डाला।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज

आर्यसमाज सांताक्रुज ट्रस्ट {बम्बई} के अध्यक्ष महाशय चिमनलाल एवं मंत्री- कैप्टिन देवरत्न आर्य सर्वसम्मति से चुने गये इस ट्रस्ट के सात आजीवन ट्रस्टी हैं और आर्यसमाज प्रधान व मंत्री पदेन ट्रस्टी हैं।

आर्यसमाज मन्दिर नेमदार गंज {नवादा} के तत्वावधान में दीपावली के अवसर पर 29 व्यवसायिक संस्थानों में हवन यज्ञ का कार्य सम्पादित हुआ,जिसमें पत्रिकाओं का शुल्क अनुदान में मिला।

- आर्य "मरुत"

पृष्ठ ४ का शेष.....

आरक्षण-प्रावधान के पीछे भाव कितना ही अच्छा क्यों न रहा हो, व्यवहार में इससे सवर्ण और दलित के भेद को बढ़ावा ही मिला है। ऊँच-नीच की कल्पना सशक्त हुई है। जनमानस की इस मानसिक रुग्णता का यथोचित उपचार न होकर रोग में उग्रता आई है। आपसी वैमनस्य व दुर्भाव बढ़ा है। वास्तविक लाभ आरक्षित वर्गों को नहीं, प्रत्युत उन वर्गों के सौदेबाजों ने उठाया है।

ऐसी स्थिति में आर्य समाज का दायित्व बढ़ जाता है। शासन की नीतियों का विरोध करने या उन्हें सलाह देने में हमें अपना समय व शक्ति नष्ट नहीं करनी चाहिये। अंधे के आगे रोकर अपने नैन खोने की क्या आवश्यकता है? हमें तो महर्षि के बताए मार्ग पर चलकर क्रान्ति करनी है। इस व्यवस्था को बदलना है। एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जिसमें जाति, वर्ग, सम्प्रदाय जैसे भेदों को कोई स्थान न हो। प्रेम व सौहार्द को विकसित करना है। ऐसे मानवों का निर्माण करना है, जो शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा से स्वस्थ व परिपक्व हों। ऐसे ही व्यक्तियों का अनुशासित संगठन खड़ा करना है, जिससे भूमण्डल पर सुशासन और स्वराज्य की स्थापना हो सके। प्राणीमात्र का कल्याण हो सके। इसी दिशा में हमें अपने कार्य की गति तीव्र करनी है। तीव्र से तीव्रतर और तीव्रतम करनी है। समस्त विरोधों का सामना करते हुए हमें निरन्तर आगे बढ़ना है, और अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। हमारा लक्ष्य है -

:: अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना।
:: अन्याय को समाप्त कर न्याय की स्थापना करना।
:: अभाव एवं दारिद्रय का अन्त कर परमैश्वर्य अर्थात् चक्रवर्ती साम्राज्य अर्थात विश्व सरकार की स्थापना करना।

सच्ची बात

• पूर्ण प्रकाश मित्तल
बिजनौर

वी0पी0 तुम आज हजारों,
हत्याओं के जिम्मेवार हो।
आत्मा से अपनी तुम पूछो,
फांसी के हकदार हो।।

तुमने अपनी करतूतों से,
लाखों निर्मम मौत कराई।
आज हजारों अधखिलों कली,
आरक्षण कारण हैं मुरझाई।।

तुम फिर भी बेखौफ घूमते,
जब मौत नचाई भारत में।
सैकड़ों मारे जाते मानव,
पंजाब और काश्मीर में।

हल्ला बोल दिया पाक ने,
कई बार भारत भू पर।
तुष्टीकरण हित तू ना बोला।
खाया तमाचा करारा मुंह पर।।

तेरी अक्ल ने देश मिटाया,
भाई आपस में लड़ बैठे।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
जगह-जगह हैं भिड़ बैठे।।

स्वर्ग समान इस भारत भू का,
तू बैरी बनकर है आया।
दुनियां के इस शान्ति दूत को
दानव तू ने हाय बनाया।।

स्वर्ग के समान था, मेरा भारत देश महान
काफिले आते गए, हिन्दोस्तां मिटता गया।।

पृष्ठ 2 का शेष....

और वैश्य की भांति ही शूद्र और स्त्री अर्थात् सभी मनुष्य मात्र को समान रूप से वेदाध्ययन की व्यवस्था है। महर्षि मनु तो सुस्पष्ट घोषणा करते हैं कि "शूद्रो ब्राह्मण तामीति ब्राह्मण श्चैति शूद्रताम् अर्थात् शूद्र कुल में उत्पन्न व्यक्ति {अपने गुण-कर्म-स्वभावानुसार} ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है। तथा ब्राह्मण कुलोत्पन्न शूद्रत्व को।

हमारा इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। शूद्र कुलोत्पन्न बाल्मीकि, गणिका {वेश्या} के गर्भ से उत्पन्न वशिष्ठ क्या ब्रह्मर्षि महामुनि {गुरुकुल} नहीं बन गये। गोत्रहीन जाबालि पुत्र सत्यकाम ब्राह्मण पद पाता है। और ऋषि या ब्राह्मण कुल में उत्पन्न रावण तो शूद्रत्व से भी पतित होकर अनार्य {दस्यु} बन गया। राम क्षत्रिय होकर सर्वपूज्य बन गये। तथा क्षत्रिय कुलोत्पन्न विश्वामित्र राजर्षि और फिर ब्रह्मर्षि बने। पवित्र वेद में चारों वर्णों की तुलना राष्ट्-पुरुष के विभिन्न अंगों से की गई है- ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य. कृतः ।
अरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।। यजु0 31/11/1

- यहाँ ब्राह्मण को राष्ट् पुरुष को मुख, क्षत्रिय को उसकी भुजा और वैश्य को अरू {पेट-मध्यभाग} तुल्य कहा है। शूद्र को राष्ट् पुरुष को खड़ा रखने वाले शूद्र के तुल्य माना है। वह राष्ट्-पुरुष का आधार है। इसी से सभी चरण-वन्दना ही करते हैं। पैर में कांटा लगता है तो आँख में आँसू आता है। पौराणिक काल में भी राष्ट् की रक्षा करने वाली "अष्ट भुजी दुर्गा" की कल्पना {कार्टून} द्वारा बताया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र- इनमें से प्रत्येक के दो-दो हाथ मिलकर जब "अष्ट भुजी दुर्गा" के रूप में सिंह-वाहिनी अर्थात् एक शक्ति बन जाते हैं तभी राष्ट् रक्षा सम्भव है।

इन सभी उदाहरणों में कहीं भी छोटे-बड़े {ऊँच-नीच} की दुष्ट कल्पना नहीं है। महाभारत के पश्चात् मध्य युग या वाम मार्ग काल में जब हमारा नाम-धाम, एक उपास्यदेव, एक धर्मग्रन्थ, एक धर्म, एक गुरुमन्त्र, एक अभिवादन आदि सभी कुछ उलट गया तभी सामाजिक क्षेत्र में भी "पूजिय-विप्रशील गुण हीना, शूद्र न पूजिय वेद प्रवीना" जैसी अवैदिक मान्यतायें चल पड़ीं। यज्ञों में पशुबलि, नारी-अपमान, जन्मगत जाति-पाँति की स्थिति तभी बनी। महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध जैसे युगपुरुषों ने इन अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध स्वर ऊँचे किये; पर पवित्र वेद से परिचय न होने के कारण कालान्तर में मूर्तिपूजा के एक अन्य भयंकर रोग को ओर साथ लेकर वही विकृतियाँ नये रूप में पुनः आ गईं। सन्त कबीर, भक्त रैदास, दाऊ दयाल, गुरुनानक आदि ने पुनः इन बुराइयों के विरुद्ध स्वर बुलन्द किये, पर पौराणिक मतवाद के रूप में मनुष्य का स्वार्थ फिर हँसने लगा और आज तो राजनीति की गोटी लाल करने के लिए भाई को भाई से अलग करके सड़कों पर युद्ध-रत किया जा रहा है। मण्डल आयोग योजना के आरक्षण के पीछे यही "फूट डालो और राज्य करो" दुर्नीति चल रही है। इसका एक मात्र समाधान, जैसा कि पहले भी बताया है, गुणकर्म आधारित वेद विहित एवं योगेश्वर कृष्ण द्वारा गीता में अनुमोदित वैदिक वर्ण व्यवस्था है।

जन्मगत जाति मूलक हमारी इस दुर्बलता का लाभ विदेशी आक्रान्ताओं {मुसलमान, ईसाइयों} ने भरपूर उठाया। ईश्वर की महती कृपा से युगों के बाद महर्षि दयानन्द आये। उन्होंने सदियों, सहस्राब्दियों के बाद वैदिक शंखनाद किया। "वेदों की ओर लौटो, का सन्देश दिया। जो हम भूल गये थे उसे पुनः याद कराया और अभिनव क्रान्ति के साथ नवयुग आया। उसी क्रम में शुद्धि-संगठन के स्वर गूँजे। वैदिक धर्म का द्वार पुनः एक बार मानव मात्र के लिये खुला। स्वामी श्रद्धानन्द के सफल नेतृत्व में जो लाखों शुद्धियाँ हुईं- हमारे ही मथुरा जनपद में उन्वी, नौगाँव, तरौली, तेहरा आदि जो गाँव के गाँव नव मुस्लिमों के शुद्ध हुए वे आज भी हिन्दूसमाज के गौरवमय अंग बन राष्ट्रिय धारा के साथ अभिन्न हैं। पिछले दिनों ही मथुरा जनपद के नगला कुरावई {छोटी कोसी} गाँव को शुद्ध किया गया। कर सौरा, उसपार के जाटव बन्धुओं को ईसाइयत के जाल से रक्षा की गई। बाजना व चन्दूनगला में श्री दयानन्द सेवाश्रम चलाकर अराष्ट्रियकरण का सफल सामना किया गया। उत्कल प्रदेश में गत वर्ष ही स्वामी धर्मानन्द जी {गुरुकुल आम सेना} द्वारा 7 हजार शुद्धियाँ सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में हुईं। इतना ही नहीं मुसलमानों व ईसाइयों के कई प्रसिद्ध विद्वान भी पिछले दिनों वैदिक विद्वान् के रूप में दीक्षित हुए हैं, जिनमें श्री-पं0 जय प्रकाश जी आर्य, डा0 आनन्द "सुमन" पं0 महेन्द्रपाल आर्योपदेशक, पं0 जीवन मित्र एवं श्री पं0-अमरेश आर्य के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी सर्वात्मना वैदिक सद्धर्म प्रचार में संलग्न हैं।

जहाँ तक जाटव बन्धुओं का सम्बन्ध है ये तो हमारे समाज के अभिन्न अंग हैं। फिर सिद्धान्ततः आर्यसमाज पूर्ण समतावादी और मानवतावादी है। जैसा कि विवेचन किया जा चुका है। पवित्र वेद के एक मन्त्र- "समानी प्रपा सहवोऽन्नभागः समाने योक्त्रे"
सहवोयुनज्मि। सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः" में बताया है कि जैसे पहिये में धुरी से परिधि तक लगे सभी अरे समान होते हैं, वैसे ही प्रभुदेव की पावन प्रजा रूप सभी मानव समान हैं। प्रभु कहते हैं- तुम्हारी {प्रपा} प्याऊ समान हो, तुम्हारा {अन्नभागः} अन्न सेवन समान हो। तुम सभी को समानरूप से संसार रूप जुए में जोड़ता है। आर्यसमाज के गुरुकुलों में शिक्षित अनेक जाटव बन्धु आज शास्त्री और आचार्य हैं। अनेकों उपदेशक, भजनोपदेशक तथा सन्यासी हैं, जिनकी चरण वन्दना कर लोग स्वयं को धन्य समझते हैं। बुरा हो आज की कुर्सीवाली राजनीति का जिसने आचार्य शास्त्री स्नातक बने आर्य विद्वानों को भी सुरक्षित कोटा {आरक्षण} के लालच में पुनः जाटव में स्तर आदि की श्रेणी में खड़ा कर दिया। इस प्रकार आज की दुष्ट राजनीति ने जन्मगत जातिवाद को सींचा है। आर्यसमाज आज भी दलितोद्धार-पतितोद्धार, मानव निर्माण और स्वराज की "सुराज" बनाने के अपने राष्ट्रोद्धार और लोक-कल्याण कार्य में लगा है। हाँ, आर्यजनों द्वारा भी यह मान लिये जाने पर कि बड़े अंशों में उसके सुधार कार्यों को सभी ने अपना लिया है, उनमें कुछ शिथिलता आई है।

आर्यसमाज के अनेकों ज्वलन्त जीवनों के राजनीति में चले जाने से भी शिथिलता आई है। पर अमेरिकन विद्वान डेविड महोदय के शब्दों में- "आर्यसमाज आग की वह भट्टी है, जिसे स्वामी दयानन्द ने जलाया था और जिसमें संसार भरका {प कूड़ा-कचरा जल कर भस्मसात हो जायेगा। झीनी सी राख की {शैथिल्य की} परत उस पर आ गई है। आयें, हम सभी मानवता और राष्ट्रीयता प्रेमी उसे मिलकर हटा दें तो हम देखेंगे कि आर्यसमाज वही आग का शोला है, और कि आर्यसमाज की आज के परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द के 107वें बलिदान पर्व पर हम भी परिपथ के बनाने का संकल्प लें, राष्ट् और मानवता के कल्याण का पथ प्रशस्त करें। और एक दीप बुझ गया आज ही अगणित जीवन-दीप जलाकर "मेटें हम अज्ञान-तमिस्रा अपनी जीवन-ज्योति जगाकर" ।।

ऋषि निर्वाण पर्व पर आर्यजनों द्वारा राष्ट्र रक्षा का संकल्प

लखनऊ आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ एवं आर्य कुमार सभा, उ0प्र0 द्वारा आर्यसमाज चन्द्रनगर के सभागार में ऋषि निर्वाण पर्व का आयोजन हुआ। जिसमें भारी संख्या में आर्य नर नारी आबाल वृद्धों ने भाग लेकर ऋषि दयानंद के निर्दिष्ट पथ पर चलकर राष्ट्ररक्षा का संकल्प लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने अपने संदेश में कहा कि आज देश भौतिकवाद के चक्कर में फँसकर अपनी अस्मिता खो रहा है। शासन द्वारा राष्ट्रीय समृद्धि के नाम पर विविध घोषणायें करके विघटनकारी तत्वों को बढ़ावा दे रहा है। जाति-भेदवर्ग भेद आज देश को जला रहा है। शासन अपने बयानो से आग में घी का काम कर रहा है। राजनीतिक दल भी शान्ति का स्वस्थ मार्ग नहीं दिखा पा रहे हैं। सभी के आगे वोट की राजनीति बाधायें बन जाती है। ऐसे संकटापन्न अवसर पर राष्ट्र आर्य समाज की ओर देख रहा है। महर्षि दयानंद ने ऐसे ही संकटा-पन्न समय में पदार्पण करके राष्ट्र रक्षा का नाद गुँजाया था। देश भर से संकट के बादल छँट गये थे। पराधीनता की बेड़ियाँ काटकर हम स्वतंत्र हो गये। आज के इस गम्भीर संकट के समय आर्यसमाज के आबाल वृद्ध सबका दायित्व है कि अपने दायित्व को पहचानें। विशेष रूप में युवकों का आह्वान करते हुये उन्होंने कहा कि आप पर देश रक्षा का गम्भीर दायित्व है। उस व्रत को निभाने का आदेश और मार्ग केवल आर्यसमाज से ही प्राप्त हो सकता है। अत आइये संगठित होकर देश रक्षा का सकल्प लीजिये।

इस अवसर पर लखनऊ के प्रसिद्ध वक्ता वेदमनीषी श्री हरिवंश लाल मेहता ने बोलते हुये कहा कि सबके सुख का साधन वेदपथ का अनुसरण ही है।

डॉ0 ओम प्रकाश बब्बर ने अपने भाषण में कहा कि ऋषि दयानंद की हत्या का सुनियोजित षड्यंत्र था उन्हें संखिया देकर मारा गया।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने अपने भाषण में कहा कि देश की वर्तमान गिरती स्थितो का सुधार केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। राजनीतिक प्रपंची मडल आयोग की सिफारिशें, राम जन्मभूमि के निर्माण में बाधायें उत्पन्न करके भारतीय अस्मिता को नष्ट करने पर तुले हैं। वे अंग्रेजों की फूट डालो और राज्य करो की नीति पर चलकर हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई, सवर्ण असवर्ण ऊँच-नीच का हौवा खड़ा करके आपस में संदेह और विग्रह उत्पन्न करके अपना वोट बैंक मजबूत करने पर लगे हैं। ऐसे विषम समय में आर्य समाज ही एक मात्र राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा में संबल है। आर्यसमाज का सिद्धान्त व्यक्ति या जाति या वर्ग का नहीं सार्वभौम है। जिसमें मानव मात्र को सुख शान्ति से जीने का संदेश दिया गया है आज के ऋषि निर्वाण पर्व पर हमें राष्ट्र रक्षा का दृढ़ सकल्प लेना है।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के मत्री एवं आर्य कुमार सभा, उत्तर प्रदेश के सयोजक श्री चन्द्रकुमार छाबड़ा ने कहा कि किसी भी राष्ट्र की रीढ़ युवक होते है जिस राष्ट्र का युवक बिगड़ जाता है। वह राष्ट्र टूट जाता है। आज हमारा राष्ट्र टूट रहा है। इसका मूल कारण है कुमार युवा समाज दिग्भ्रमित हो रहा है। राजनीति के खिलाड़ी अपने खेल में युवा वर्ग को भागीदार बनाकर अपना वोट बैंक सजाने में लगा है। परन्तु आर्यसमाज ऐसी ओछी वोट की राजनीति को स्वच्छ सुथरी रखकर राष्ट्र की रक्षा शासन की सुव्यवस्था का पक्षधर है। युवकों का आह्वान करते हुये उन्होंने कहा कि ऐसे विषम काल में सही रास्ता प्राप्त करने के लिए आर्यसमाज के मंच पर आये। जगह-जगह आर्य कुमार सभाएँ स्थापित करें और उनके माध्यम से महर्षि स्वामी दयानंद द्वारा प्रतिपादित वेद का सार्वभौम संदेश घर-घर पहुँचाने का सकल्प लें। निश्चय जाने युवकों का यह कदम उन्हें सुमार्ग सुझाएगा और वे भटकाव के रास्ते से हटकर राष्ट्र रक्षा राष्ट्र समृद्धि के सहायक बनकर यशस्वी बनेंगे।

इस अवसर पर सबसे पहले आचार्य वैद्य कुन्दन लाल आर्य के नेतृत्व में वृहद् नक्षत्र्येष्टि यज्ञ हुआ। समाज की ओर से ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया जिसमें बिना किसी जातीय भेदभाव के सभी ने एक साथ बैठकर भोजन किया।

सभा में लखनऊ के प्राय सभी आर्य विद्वान और आर्य विदुषियों ने उपस्थित होकर महर्षि के प्रति अपने श्रद्धासुमन भेंट किये। समारोह में भाग लेने वालों में आचार्य रामकृष्ण डॉ0 वीरेन्द्र बहादुर सिंह, पं0 पवन कुमार आर्य, पं0 रूपचन्द्र दीपक, सत्यदेव सैनी मदनमोहन जोशी, यशपाल दीवान आदि शामिल थे। ◻

सम्पादक के नाम पत्र

देश जल रहा है

जब से देश स्वतन्त्र हुआ और आज तक तीन सरकारें बदल गई लेकिन भारतीय संस्कृति के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम राम की जन्मभूमि का विवाद बना हुआ है, न्यायालयमें भी विचार बहुत धीमी गति से चल रहा है, हमारे कर्णधार मुस्लिम तुष्टीकरण तथा वोट बैंक की वजह से यह जानते हुए कि मस्जिद नही है मन्दिर है, परन्तु कह नहीं सकते। श्री राम की बाबर से क्या तुलना है वह आक्रान्ता है उसने हमारे देश पर आक्रमण किया और मन्दिर तोड़ मस्जिद बनवाई। क्या स्वतन्त्र भारत में यही होगा।

-सरदार सिंह हैमपुर
पत्रालय-भुसाया 202523 (बदायूँ)

दुखों से छुटकारे का मार्ग वेदों में वर्णित है

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ के तत्वावधान में मवाना में आयोजित आर्य महासम्मेलन में स्वामी विवेकानन्दजी-आचार्य ने वेदों की महिमा का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि वेदों का संदेश सन्मार्ग है, जिस पर चलकर समस्त दुःखों से छुटकारा सम्भव है।

उन्होंने कहा कि वेद के बताये रास्ते पर चलने से जीवन में मधुरता, और सौम्यता आती है। जीवन में सुख प्राप्त करने के लिए कर्म भी करने आवश्यक हैं। यदि हम सुख पाने के कार्य ही नहीं करेंगे, तो हमें सुख कहां से मिलेगा। उन्होंने कहा कि आज वेदों के बताये मार्ग से हम भटक गये हैं, जिसके कारण हमारे जीवन में दुःखों का अम्बार व्याप्त हो गया है।

वेदों के बताये मार्ग पर चलने से हमें मुक्ति का मार्ग मिलता है, ज्ञान में वृद्धि होती है और धर्म व कर्म के प्रति आस्था बढ़ती है। आज संध्या, यज्ञ और हवन को हम भूल चुके हैं, जो हमारे विनाश का द्योतक है। यदि हमें सत्मार्ग पर चलना है, तो वेद के अनुसार कार्य करने होंगे। वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने से ही पूरे समाज का भला है।

स्वामी सत्यानन्द जी ने इस अवसर पर कहा कि वेद का कहना है कि हम अपने जीवन में अच्छाइयां ही गृहण करें। यह तभी सम्भव है, जब हम सत्संग, व धार्मिक स्थलों पर जाकर वहां से अच्छाइयां गृहण करें। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार एक मधुमक्खी नीम के कड़वे वृक्ष पर बैठकर भी मीठा शहद उत्पन्न करती है, उसी प्रकार हम अपने जीवन की बुराइयों को नष्ट कर उन्हें अच्छाईयों में बदल सकते हैं। उन्होंने कहा कि वेद में कहा गया है कि प्राणीमात्र की रक्षा ही नहीं, अपितु पशु-पक्षी व प्रकृति की रक्षा भी हम करें।

सम्मेलन में आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती शकुन्तला जी ने की। श्रीमती कैलाशवती ने इस अवसर पर कहा कि जीवन का लक्ष्य है कि हम हर तरह से अपने को परिपूर्ण करें। आज महिलाओं में शिक्षा का अभाव है और आर्यसमाजने नारी उद्धार के लिये शिक्षा को आवश्यक माना है। आर्यसमाज की ओर से जगह-जगह बच्चों व लड़कियों के लिए विद्यालयों की स्थापना की गयी है।

श्रीमती सावित्री रस्तोगी ने कहा कि आज दहेज की समस्या सबसे विकराल है, हमें इसे खत्म करना होगा। दहेज के कारण हमारा सम्मान खत्म हो गया है। श्रीमती सुषमा ने कहा कि आर्य समाज ने जीवन में चारित्रिक लक्षण पैदा करने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि जगह-जगह अश्लील फिल्मी पोस्टरों व साहित्य के कारण हमें शर्म से झुकना पड़ता है। हमें इसके खिलाफ जेहाद छेड़नी होगी। ◻

उनको हम सबकी श्रद्धांजलि

• चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

"तीस अक्टूबर" व "दो नवम्बर"
को निज जीवन कर बलिदान।
"राम" नाम ले, चले गये जो-
सचमुच उनका त्याग महान्।
सचमुच उनका त्याग महान्।
उनको हम सबकी श्रद्धांजलि।
वे कर गये निछावर प्राण।
चम-चम-चम-चम चमक रहा है
उन सबका अनुपम बलिदान।
निज प्राणों की आहुति दे दी
सत्ता के पागलपन पर।
हँसते-हँसते शूरवीर
कर गए प्राण निज न्यौछावर।
लिखा जाएगा जब भी मन्दिर
के निर्माणों का इतिहास।
स्वर्ण-अक्षरों में तब अंकित
होगा उनका पुण्य प्रयास।
प्रभु-विश्वास करेगा सबको
युग-युग तक प्रेरणा प्रदान।
अमर रहेगा सदा-सदा को
कार-सेवकों का बलिदान।
उनका प्राणोत्सर्ग अमर है।
अमर पुण्य-जीवन-विश्वास।
जो हँसकर सो गए सदा को
सबको दिखला गए प्रकाश।

देहरादून जनपद के जनजाति क्षेत्र में वेद प्रचार

इस जनपद के पर्वतीय क्षेत्र चकराता तहसील में त्यूनी में पिछड़ी जनजातियों में वैदिक धर्म का प्रचार किया गया जिससे उन लोगों में नई जागृति उत्पन्न हुई तथा अनेक लोगों ने मांस-मदिरा छोड़ने की प्रतिज्ञा की। श्री बाली जी तथा श्री यशपाल जी आदि आगन्तुक महानुभावों का श्री-पंचीराम जी ने भव्य स्वागत किया और निःशुल्क साहित्य वितरण किया गया।

--

पातंजल ध्यान योग शिविर सम्पन्न

आर्य नगर योगधाम में दि0- 10 से 17 अक्टूबर 1990 को ध्यान योग शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में देश के विभिन्न प्रदेशों से योगाभिलाषी सम्मिलित हुए।

--

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक विष्णुस्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन् 1988 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/-रुपये प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालोंको 50/- रु0 में सौ प्रति भेजी जायेंगी।

पता - व्यवस्थापक वेद प्रचार मण्डल
60/13 रामजस रोड,केसरबाग
नई दिल्ली-5

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन

दिनांक: १५-१६ दिसम्बर १९९०

उत्तर प्रदेश तथा राष्ट्र की असामान्य एवं अपरिहार्य गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा,उ.प्र. के नियम सं० ८ (ए) के अन्तर्गत उक्त सभा के लखनऊ में सम्पन्न होनेवाले १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन कर दिया गया है। अब सभा के उक्त अधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की परिवर्तित तिथियाँ सभा के नियम सं० ८ (ए) के अनुसार निम्न प्रकार घोषित की जाती हैं —

(१) वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन....
दिनांक १५ तथा १६ दिसम्बर १९९०
(शनिवार तथा रविवार)

(२) निर्वाचन परिणाम की घोषणा.... निर्वाचन की समाप्ति के बाद

समय तथा स्थान डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में यथा घोषित पूर्व कार्यक्रमानुसार।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

आर्यसमाज सांकली आदि पंचपुरी गढ़वाल

देशभक्त, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी स्व0 श्री जयानन्द जी भारतीय की 109 वीं जयन्ती आर्यसमाज मन्दिर पंचपुरी गढ़वाल में दिनांक-19·10·90 को आ0स0 पंचपुरी में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर विभिन्न ग्राम समाजों के प्रधान, स्थानीय समाज सेवी, एवं पदाधिकारी गण उपस्थित लोगों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

--

- आर्यसमाज भटोली (बदायूँ) के साप्ताहिक सत्संग में श्री व्रजपालसिंह भूतपूर्व प्रधान आ0स0 भटोली के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया। परमपिता परमात्मा जी से प्रार्थना की गई कि प्रधान जी की आत्मा को सद्गति प्रदान कर उनके परिवार को धैर्य प्रदान करें।

शुभ विवाह

आर्यसमाज गाजीपुर के पुरोहित श्री नृसिंह तिवारी द्वारा दि0- 16 अक्टूबर को डा0 उत्सव कुमार चतुर्वेदी निवासी-जनपद जौनपुर जो साहा नाभिकीय भौतिक संस्थान ए0एफ0 कलकत्ता में कार्यरत हैं का शुभ विवाह संस्कार कु0 अल्का श्रीवास्तव निवासी गाजीपुर कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (अमेरिका) में शोध कार्यरत हैं के साथ वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ।

वैवाहिक विज्ञापन

गुप्ता (माहौर) 23/154 एम0ए0 (अंग्रेजी,राजनीति) बी0एड0 सुशील, गृह कार्य में दक्ष,सुन्दर,कन्या हेतु श्रेष्ठ संस्कारों वाले, अध्यापक/इंजीनियर/डाक्टर/राजकीय कर्मचारी/ व्यापारी, वर की आवश्यकता है। उपजाति बंधन नहीं। लिखें। मंत्री आर्यसमाज गंजडुण्डवारा (एटा) उ0प्र0,

कल कारखाने और स्वास्थ्य

कारखाने के वातावरण का वहाँ पर काम करने वाले श्रमिकों [मजदूरों] पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

अतः - मालिक निम्न बातों का पालन करें:-

:: कारखाने में हवा व रोशनी का अच्छा प्रबन्ध हो तथा काम करने की जगह साफ-सुथरी हो।

:: श्रमिकों को काम करने के बीच आराम देने व उनके जलपान के लिये कैन्टीन की व्यवस्था हो।

:: श्रमिकों के लिये हाथ मुँह धोने तथा शौचालय का प्रबन्ध हो।

:: श्रमिकों को उनकी स्वास्थ्य रक्षा के लिये आवश्यक कपड़े व उपकरण जैसे मास्क, इयर प्लग, गमबूट तथा चमड़े के दस्ताने आदि दिये जायें व काम के समय उनको पहनना अथवा लगाना सुनिश्चित किया जाये।

:: कारखाने से दूषित जल की निकासी तथा उसे नदी नाले में गिराने से पहले शुद्धीकरण की व्यवस्था हो।

श्रमिक भी निम्न बातों पर अमल करें:-

1- यदि कारखाने में मशीनों का शोर बहुत ज्यादा हो तो कानों में "इयर प्लग" या रुई लगायें अन्यथा कान खराब हो सकते हैं ।

2- जिस कारखाने में रसायनिक पदार्थ बनते हैं या प्रयोग में लाये जाते हैं वहाँ कार्य करते समय पैरों में गमबूट तथा हाथों में चमड़े के दस्ताने जरूर पहने। पूरा शरीर कपड़े से ढका होना चाहिये। ऐसी जगहों पर खाना कभी न खायें।

3- यदि कारखाने में धूल बहुत होती हो तो नाक व मुँह पर "मास्क" लगायें।

4- काम के बाद अपने शरीर को पूरा आराम दें। धूम्रपान न करें।

5- मशीन पर काम करते समय पूरा ध्यान मशीन पर ही रखें। शराब पीकर मशीन चलाना जानलेवा हो सकता है।

6- समय समय पर डाक्टर से अपनी सेहत की जाँच करवाते रहें।

श्रमिक राष्ट्र के निर्माता है- इनका स्वास्थ्य सुरक्षित रखें।

प्रसारित : राज्य स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो, उत्तर प्रदेश, जवाहर भवन, लखनऊ

"दयानंद महाविद्यालय, अजमेर आदि संस्थाएँ अल्पसंख्यक घोषित"

आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर की ओर से राजस्थान उच्च न्यायालय में सन 1987 में एक याचिका दायर की गई थी, जिसमें दयानंद महाविद्यालय आदि शिक्षण संस्थाओं को संविधान की धारा-30 के अंतर्गत अल्पसंख्यक संस्थाओं को प्राप्त सुविधायें दिये जाने की माँग की गई थी। किन्तु न्यायालय ने सन् 1989 में यह कहकर कि आर्यसमाज हिन्दू धर्म का ही एक सम्प्रदाय है, याचिका खारिज कर दी।

सभा ने सन 1990 में इस निर्णय के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील प्रस्तुत की जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त यह आपत्ति भी उठाई कि याचिका के साथ प्रेषित तथा न्यायालय की पत्रावली में सम्मिलित प्राचार्य दत्तात्रेय जी वाब्ले की बहुचर्चित अंग्रेजी पुस्तक [आर्य समाज हिन्दू विदाउट हिन्दूइज्म] द्वारा तर्क और प्रमाणों के आधार पर यह नवीन मुद्दा उठाया गया था कि आर्य समाज व्यापक अर्थ मे हिन्दू समाज का अंग होते हुए भी ऋषि दयानंद द्वारा प्रतिपादित भिन्न मान्यताओं के कारण एक धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय है। राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा उस मुद्दे को सर्वथा नजरअंदाज किया गया जबकि मुसलमान होने पर भी "शिया" पाकिस्तान में अल्पसंख्यक और ईसाई होने पर आयरलैण्ड में "प्रोटेस्टेन्ट्स" धार्मिक अल्पसंख्यक स्वीकार किये गये हैं।

उच्चतम न्यायालय ने दिनांक 30 अक्टूबर, 1990 को शिक्षा सभा की अपील विचारार्थ स्वीकार करते हुए राज्य सरकार को यह अस्थाई आदेश भी दिया है कि इन शिक्षण संस्थाओं का अनुदान इस आधार पर नहीं रोका जा सकता कि वे धार्मिक अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाएं नहीं है।

आचार्य गोविन्द सिंह
मंत्री
आर्य समाज अजमेर।

पजीकरण स. एल. डब्ल्यू / एन.पी. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
मार्गशीर्ष शुक्ल ८ सवत २०४७ वि
दिनांक. २५ नवम्बर १९९०

दूरभाष
२४५९९२

सेवा मे-

१2946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

प्रो॰ सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की वैदिक धर्म संबंधी अपूर्व पुस्तकें

यजुर्वेद गंगा लहरी ... नया
...म 5
एकादशोपनिषद ... राधाकृष्णन
... भूमिका ...
...पानिषद प्रकाश 8 -
वैदिक संस्कृति के मूल तत्व 41
संस्कार चन्द्रिका ...
गीता-भाष्य श्री लाल बहादुर शास्त्री
... भूमिका सहित

पुस्तक विक्रेता शर्तों के लिए
पत्र-व्यवहार करें

विजयकृष्ण लखनपाल
डब्ल्यू ७७ ए ग्रेटर कैलाश ११
नई दिल्ली ४८

आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से आ0स0 से निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा के नाम से एक अवैधानिक संगठन खोल कर आर्यजनता में भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को ... किया जाता है कि ... तथाकथित अवैधानिक संगठन को अपना किसी प्रकार ... सहयोग न दें।

\- सभामन्त्री

यज्ञ सम्पन्न

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने "उद्गाता", आर्य समाज मैनपुरी के मंत्री डॉ0 ज्ञान प्रकाश जी शास्त्री ने अध्वर्यु तथा इस सभा के मुख्य निरीक्षक कुँ0 ध्रुव पाल सिंह जी अटल ने 'होता' पद के दायित्वों का सफल निर्वहन किया।

इस यज्ञ में, सहस्त्रों रू0 की दक्षिणा के अनन्तर, गुरुकुल एटा को 1151/- रू0, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 को 201/- रू0, आर्य स्त्री समाज को 101/- रू0 तथा आर्य समाज को 51/- रू0 दान तथा सहस्रों की संख्या में पधारे यज्ञप्रेमी सज्जनों को प्रीति-भोज दिया गया।

आर्यसमाज ठाकुर द्वारा
प्रधान - श्री हरस्वरूप सिंह आर्य
मन्त्री - श्री सोमप्रकाश आर्य

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) मार्गशीर्ष शुक्ल-१५ रविवार संवत २०४७वि दिनाक २ दिसम्बर १९९० (घोषणा पत्र सं.७/२७-२ ८५)



वेदना भरे महर्षि के स्वर-

"--कोई देश जनशून्य नही हो जाया करता। लोग तो बने ही रहते हैं। जाति के आचार-विचार परिवर्तित हो जाते हैं। ठीक ऐसा समय अब इस देश पर उपस्थित है। यदि सम्भाला न गया तो आर्यजाति परिवर्तन के चंचल-चक्र पर अतिशय उतावली से, अपने पूर्व पवित्र शरीर को परिवर्तित कर डालेगी। ऐसे समय अपने सधर्म बन्धुओं को कड़े हाथ से उनकी चोटियाँ पकड़कर जगाना होगा"।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१ रू. मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष
अंक - ४७

६ दिसम्बर को सभा प्रधान, श्री पं० इन्द्रराज द्वारा अयोध्या में कारसेवा में भाग लेने का आह्वान

अयोध्या में राममन्दिर के निर्माण का प्रश्न हिन्दुओं के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है —पं० इन्द्रराज, सभा प्रधान

मर्यादा पुरुषोत्तम **भगवान राम** की जन्मस्थली अयोध्या की पावन नगरी में राममन्दिर निर्माण के पवित्र संकल्प को पूरा करने के लिए समस्त भारतीय जनता कटिबद्ध होकर 6 दिसम्बर को पुन कारसेवा प्रारम्भ करने जा रही है। इस अवसर पर आर्यप्रतिनिधि-सभा, उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज का प्रदेश के समस्त आर्यजनों को निर्देश है कि वे बढ़ चढ कर इस कार सेवा (सत्याग्रह) में भाग लें।



श्री प्रधान जी ने उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों/आर्यकुमार सभाओं/आर्यशिक्षण-संस्थाओं/ आर्यवीरदल के स्वयंसेवकों तथा आर्यजनों से कारसेवा में 6 दिसम्बर को अयोध्या पहुँचने का निर्देश दिया है। उन्होंने एक वक्तव्य में कहा है कि **भगवान राम** आर्यों के आदर्श पूर्वज थे। वे समस्त भारतीयों के लिए सर्वगुण-सम्पन्न महामानव ही नहीं अपितु एक आदर्श राजा तथा आर्य संस्कृति के महान रक्षक थे। ऐसे महामानव की स्मृति में बनने वाले मन्दिर निर्माण के प्रश्न पर आर्यसमाज का पूरा समर्थन है। इस मन्दिर के निर्माण से आर्यजाति के अस्तित्व का प्रश्न जुड़ा हुआ है। इन्हीं सब तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा, दिल्ली ने अपने वृहदाधिवेशन दिनांक-11 नवम्बर 1990 को एक सर्वसम्मत पारित प्रस्ताव द्वारा रामजन्मभूमि मन्दिर के निर्माणार्थ चलाए जा रहे आन्दोलन को अपना पूर्ण समर्थन दिया है।

श्री प्रधान जी ने आगे बताया कि यद्यपि आर्यसमाज मूर्तिपूजा में विश्वास नही रखता है तथापि अपने पूर्वजों की स्मृति में बनने वाले मन्दिरों, स्मारकों का पूर्ण सम्मान करता है। प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि भगवान राम का जन्म अयोध्या में उसी स्थान पर हुआ था जहाँ आज तथाकथित बाबरी मस्जिद की चर्चा की जाती है। जिस प्रकार मुसल्मान भाई अपने पैगम्बर के जन्मस्थान को पवित्र मानते हैं उसी प्रकार भारतीयों के लिए राम की जन्मस्थली पवित्र एवं सम्माननीय है। उनकी स्मृति में मन्दिर निर्माण की मांग सर्वथा उचित है। हमें आशा है मुसल्मान भाई स्वय इस स्थान पर मन्दिर निर्माण में सहयोग देकर भारतीय एकता और अपनी उदारता का परिचय देंगे।

श्री प्रधानजी ने प्रदेश की आर्यजनता का आह्वान करते हुए कहा है कि 6 दिसम्बर 1990 से प्रारम्भ होने वाली कारसेवा में सक्रिय रूप से भाग लें और अपनी संगठनात्मक शक्ति तथा आर्यसंस्कृति के प्रति अपनी रक्षा-निष्ठा का परिचय दें।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा अरुण तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ मार्गशीर्ष शुक्ल १२ संवत २०४७ वि
दिनांक २ दिसम्बर १९९० दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन

दिनांक: १५-१६ दिसम्बर १९९०

उत्तर प्रदेश तथा राष्ट्र की असामान्य एवं अपरिहार्य गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के नियम सं० ८ (ए) के अन्तर्गत उक्त सभा के लखनऊ में सम्पन्न होनेवाले १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन कर दिया गया है। अब सभा के उक्त अधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की परिवर्तित तिथियाँ सभा के नियम सं० ८ (ए) के अनुसार निम्न प्रकार घोषित की जाती हैं—

वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन....
दिनांक १५ तथा १६ दिसम्बर १९९०
(शनिवार तथा रविवार)

निर्वाचन परिणाम की घोषणा.... निर्वाचन की समाप्ति के बाद।

समय तथा स्थान डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में यथा घोषित पूर्व कार्यक्रमानुसार।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व

23 दिसम्बर 1926 को दिल्ली में ऋषि के परमभक्त, शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता, आर्यजगत के प्राण स्वामी श्रद्धानन्द के सीने को चीरती हुई पिस्तौल की कई गोलियाँ निकल गईं। हत्यारा अब्दुल रशीद भागना ही चाहता था कि एक बलिष्ठ युवक छज्जे से कूद पड़ा और उसे पकड़ लिया तथा तब तक उसे दबोचे रहा जब तक पुलिस नहीं आ गई। उस समय भी हत्यारे की पिस्तौल में भरी हुई दो गोलियाँ अवशेष थीं। यह युवक और कोई नहीं हमारे जननायक श्री धर्मपाल विद्यालंकार थे जिनके महान व्यक्तित्व और कृतित्व ने आर्यसमाज की यशोगाथा को सदा समुज्ज्वल किया है। जीवनभर आर्यसमाज के लिए तड़पने वाली यह महान आत्मा अपना शतक पूरा करते करते पिछले दिनों परमधाम की गोद में चली गई और इस प्रकार आर्य जगत की ऐसी अपूरणीय क्षति हुई है जिसकी पूर्ति निकटभविष्य में होना सम्भव नहीं प्रतीत होता है।

वे आर्यजगत के महान सिद्धान्तवादी विचारक थे। उनका जीवन अथ से इति तक आर्यसमाज के सैद्धान्तिक विचारों से ओतप्रोत रहा। जिस समय स्वा0 श्रद्धानन्द जी ने हरिद्वार में भागीरथी के पावन तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी उस समय गुरुकुल के आदि-छात्र के रूप में स्वामी जी के पुत्र पं0 इन्द्र विद्यावाचस्पति के साथ धर्मपाल जी ने भी प्रवेश लिया था और तब से लेकर जीवन के अन्त तक गुरुकुल तथा आर्यसमाज की सेवा में वे समर्पित रहे। वे कई वर्षों तक गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता भी रहे और आज गुरुकुल को जो केन्द्रीय विश्वविद्यालय का रूप मिला है उसके पीछे पं0 जी का अथक परिश्रम एवं उनकी कुशल सूझबूझ ही है।

वे कई वर्षों तक "आर्यमित्र" के अवैतनिक प्रधान सम्पादक एवं सभा के मन्त्री पद पर सुशोभित रहे। इस काल को सभा के स्वर्णिमकाल के नाम से जाना जा सकता है क्योंकि उनके ही अथक प्रयास से "आर्यमित्र" प्रकाशन लि0" की स्थापना हुई और कुछ समय के लिए आर्यमित्र दैनिक बनकर खूब चमका। आर्यसमाज दयानन्द सेवाश्रम, बदायूँ की स्थापना आपकी ही प्रेरणा पर हुई थी। पं0 जी का व्यक्तित्व बड़ा गम्भीर था। राजनैतिक दूरदर्शिता उनमें गजब की थी। कांग्रेसी विचारधारा तथा वर्तमान धर्म निरपेक्षमयी शासननीति के वे कटु आलोचक थे। उनका विचार था कि आर्यसमाज के आन्दोलन को शिथिल करने में सबसे बड़ा हाथ कांग्रेस का रहा है। वे विशुद्ध वेदाधारित राजनीति के पोषक थे। उनके असमय देहावसान से आर्यसमाज की बड़ी क्षति हुई है। आर्यमित्र परिवार तथा सभा कार्यालय अपने दिवगंत नेता के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा उनके बताए रास्ते पर चलने का व्रत लेता है।

सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने श्री पं0 धर्मपालजी के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि आर्यसमाज का महान स्तम्भ हमसे विदा हो गया। स्व0 पं0 धर्मपाल जी आर्यजगत के अन्यतम विभूति थे उनके चले जाने से आर्यसमाज में जो शून्यता आई है उसे पूरा करने में हमें बहुत समय लगेगा। प्रभु ऐसे महान पुरुषों को हमारे बीच में बार-बार भेजते रहें जिससे यह आर्यजाति नवप्राण और नवजीवन लेकर विश्व को आर्यत्व का सन्देश देती रहे। ◻

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उनसे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी 23 से 26 दिसम्बर 1990 तक दिल्ली के रामलीला मैदान में 14 वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां प्रारम्भ हो गई हैं। दिल्ली की सभी आर्यसमाजें महासम्मेलन की सफलता के लिए कार्य कर रही हैं।

इस समागम में देश विदेश के लगभग 10 लाख आर्य जन भाग लेंगे। सम्मेलन में देश की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता से विचार किया जायेगा।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा पं0 वन्देमातरम् रामचन्द्रराव आगामी 11 नवम्बर को नेपाल की यात्रा पर गये। जहां वे 12-13 नवम्बर को नेपाल के महाराजाधिराज श्री वीरेन्द्र तथा प्रधानमन्त्री श्री भट्टाराई जी से मिलकर आर्य महासम्मेलन के अवसर पर उन्हें भारत आने का निमन्त्रण दिया। इस अवसर पर आर्यनेताओं ने काठमाण्डू में शहीद शुक्रराज शास्त्री की जयन्ती समारोह में भी भाग लिया। इन दोनों नेताओं के स्वागत के लिए काठमाण्डू में आर्य हिन्दू जनता ने जोरदार तैयारिया की थी।

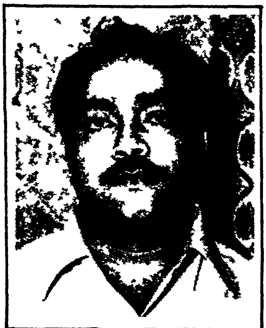
सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज द्वारा राहत कार्य

आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान एव जन नेता श्री पं0 इन्द्रराज जी के निर्देशन में मेरठ के कर्फ्यू ग्रस्त इलाके में पीडितों को 16 1/2 बोरी आटा, 1 बोरा चावल, 2 बोरी आलू एवं अन्य सामग्री, वस्त्र आदि का वितरण किया जा चुका है।

-सवादसूत्र

द्वे वृत्ती तु मनस्विनः —
(मनस्वी सदा सूर्य बनकर चमकता है)

उदीयमान आर्यनेता डॉ संजय सिंह केन्द्र में संचारमन्त्री



अमेठी जनपद सुल्तानपुर के राजा स्वर्गीय रणंजय सिंह के सुपुत्र राजकुमार डाक्टर संजय सिंह के केन्द्र में संचारमन्त्री पद पर नियुक्त किए जाने के समाचार से सम्पूर्ण आर्यजगत में खुशी की लहर व्याप्त हो गई है। डा0 संजय सिंह अमेठी के राजवंश की उस परम्परा से जुड़े हुए हैं जो देशप्रेम, समाजसुधार एवं शिक्षाप्रेम के कारण भारतीय जनमानस के हृदय में अतीव सम्मान के साथ सदा याद किया जाता रहा है। यह राजवंश कई पीढ़ियों से आर्यसमाज की भूमि के साथ समर्पित भाव से जुड़ा हुआ है। आपके पिता राजर्षि रणंजय सिंह जी अत्यन्त निरभिमान विद्याप्रेमी तथा आर्यसंस्कारों से ओतप्रोत एक क्रियमान उदारमना आर्यपुरुष थे। आपके परिवार द्वारा जनपद सुल्तानपुर में तथा अन्यत्र स्थापित की हुई अनेकों शिक्षण संस्थाएं, संस्कृत पाठशालाएं, गौशालाएं, आर्यसमाज मन्दिर तथा अन्य जनोपयोगी संस्थाएं आपकी यशोगाथा का गुणगान कर रही हैं। आप कई वर्षों तक आर्यप्रतिनिधि-सभा, उ0प्र0 के प्रधान रहे तथा जीवनपर्यन्त आर्यसमाज की प्रगति के लिए सर्वात्मना चिन्तित रहे।

डा0 संजय सिंह को आर्यसमाज की दीक्षा विरासत में मिली है। जनसेवा के लिए आपने अपना जीवन समर्पित कर दिया है। आप आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के उपमन्त्री रह चुके हैं। आप प्रादेशिक सेना में कमीशन प्राप्त अधिकारी तथा एक कुशल पायलट हैं। आप इससे पूर्व उ0प्र0 सरकार में दो बार मन्त्री रह चुके हैं तथा जाने-माने घुड़सवार, तैराक एवं निशानेबाज़ हैं। आप स्व0 राजर्षि रणजंय सिंह जी के एकमात्र पुत्र होने के कारण अमेठी राज्य के उत्तराधिकारी हैं। शरीर से सुन्दर, स्वस्थ और बलिष्ठ होने के साथ ही स्वभाव से अत्यन्त सरल, सौम्य तथा सुशील हैं। पहिले आप और आपका परिवार कांग्रेस से जुड़ा हुआ था किन्तु कुछ सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण आपने पिछले चुनाव में जनता दल के टिकट पर अमेठी विधानसभा क्षेत्र के लिए चुनाव लड़ा था किन्तु चुनाव प्रचार के दौरान गोली लगने से घायल हो गये थे। इस समय आप राज्यसभा के सदस्य हैं।

आर्यमित्र परिवार आदर्श राजा के अपने आदर्श पुत्र डा0 संजय सिंह को इस गरिमा भरे मन्त्रिपद पर सुशोभित देखकर अत्यन्त गौरवान्वित है। सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने डा0 संजयसिंह को उत्तर प्रदेशीय आर्यजनता की ओर से हार्दिक बधाई प्रेषित करते हुए जनकल्याण के पथ पर उनके सतत् अग्रशील रहने की प्रभु से कामना की है।

वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार-1991

आर्य समाज सान्ताक्रुज अपने आगामी वार्षिकोत्सव पर जनवरी 1991 में निम्न दो पुरस्कारों से आर्य विद्वानों को सम्मानित करेगा।

1- वेद वेदांग पुरस्कार :-

जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद वेदांगों पर अनुसंधान किया हो एवं ग्रन्थ लिखे हो। उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। जिसकी पुरस्कार राशि 21000/- होगी।

2- वेदोपदेशक पुरस्कार :-

वेद वेदांग के अनुसंधान कर्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त आर्य समाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में सेवा की हो-- इस पुरस्कार की राशि 11000/= होगी।

उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त जिस विद्वान को पुरस्कृत किया जाएगा उन्हें अभिनन्दन पत्र, शाल एवं रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जाएगा।

उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई-54 योग्य विद्वानों के प्रस्ताव को आमन्त्रित करती है। जो आर्य बन्धु किसी विद्वान के नाम उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं वे विद्वानों के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गये ग्रन्थों की सूची सहित विस्तृत पत्र दिनांक 31-12-90 तक भेजने की कृपा करें। जो विद्वान अपने नाम का स्वयं प्रस्ताव करेंगे वे अयोग्य माने जाएंगे।

कैप्टिन देवरत्न आर्य
संयोजक-वेद वेदांग पुरस्कार समिति।

श्री पं. धर्मपाल जी दिवंगत

आर्य जगत में यह समाचार बड़े ही दुख के साथ सुना जायेगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के भूतपूर्व मन्त्री गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के पूर्व सहायक मुख्याधिष्ठाता "आर्यमित्र" के भू0पूर्व सम्पादक तथा आर्यसमाज के उच्चकोटि के विचारक एवं महान नेता श्री पं0 धर्मपाल विद्यालंकार का पिछले दिनों बदायूं में निधन हो गया। उनके निधन के समाचार के फैलते ही बदायूं की समस्त शिक्षण संस्थाएं तथा बाजार बन्द हो गये। प्रतिनिधि सभा कार्यालय में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई तथा कार्यालय बन्द कर दिया गया।

आवश्यक सूचना

सभा के आर्य भजनोपदेशक प्रतियोगिता कार्यक्रम की तिथियाँ परिवर्तित होकर अब दि0- 15 दिसम्बर 1990 दिन शनिवार मिति पौष कृष्ण 14 सं0- 2047 वि0 की रात्रि को 8 बजे डी0ए0वी0 कालेज लखनऊ में पहुँचना निश्चित करें।

-हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेशविभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

राम जन्मभूमि बनाम बाबरी मस्जिद

श्री अर्येन्दु द्विवेदी, मन्त्री,
विश्वभारती अनुसंधान परिषद
ज्ञानपुर (वाराणसी)

रामजन्मभूमि और बाबरी-मस्जिद विवाद इस समय तीव्रतम है। यह विवाद बहुत लम्बे समय से चल रहा है। प्राचीनकाल से लोगों का दृढ़ विश्वास है कि दशरथ पुत्र **श्री राम** अयोध्या में ही पैदा हुए थे। अयोध्या श्री राम की पावन स्थली है। जिस प्रकार मुसलमानों की आस्था **मक्का मदीना** से जुड़ी हुई है उसी प्रकार हिन्दुओं की भावना रामजन्मभूमि से जुड़ी हुई है। ऐतिहासिक दस्तावेजों से हमें ज्ञात होता है कि श्री राम की स्मृति में उनके पुत्र कुश ने उनके जन्मस्थान पर विशाल मन्दिर का निर्माण कराया। इस रामजन्मभूमि मन्दिर का जिर्णोद्धार सम्राट विक्रमादित्य ने कराया। उन्होंने 84 खम्बों से युक्त कलात्मक सुन्दर भव्य रामजन्मभूमि मन्दिर बनवाया। इसके अतिरिक्त 360 अन्य मन्दिर श्री विक्रमादित्य ने बनवाए।

अंग्रेजी इतिहासकार इलियट का मत है कि अयोध्या में राजा विक्रमादित्य द्वारा बनाए गए इस मन्दिर को अनेक बार हानि पहुँचायी गयी और नष्ट करने का प्रयास किया गया। मुस्लिम शासकों ने भारत के अनेक मन्दिर तोड़े थे। सर्वप्रथम रामजन्मभूमि पर सन् 1033ई0 में महमूद गजनवी के भान्जे सालार मसूद ने दो बार आक्रमण किया और मन्दिर को नुकसान पहुँचाने का प्रयास किया। वह बहराइच में युद्ध करता हुआ मारा गया। सन् 1525 में महाराणा संग्राम सिंह को हराकर शहंशाह बाबर ने दिल्ली पर अपना अधिकार कर लिया। 1526 से 1530 ई0 तक बाबर ने रामजन्मभूमि पर चार बार आक्रमण किये लाखों हिन्दू इस मन्दिर की रक्षा करते हुए मारे गए। बाबर के आदेश से सेनापति मीरबाकी ने सेना लेकर मन्दिर पर चढ़ाई की। 17 दिनों तक लड़ाई होती रही, अन्त में हिन्दुओं की हार हुई। 1528 में बाबर ने श्री रामजन्मभूमि पर बने मन्दिर को विध्वंस करके एक मस्जिद बनवाई थी। अकबर के समय में हिन्दुओं ने मस्जिद के बाहर एक चबूतरे पर श्री राम मन्दिर का निर्माण कराया। इसे औरंगजेब ने पुन तुड़वाकर मस्जिद बनवा दी 1530 से 1556 तक हुमायूँ के शासन में 10 बार तथा अकबर के शासन में 20 बार एवं औरंगजेब के शासनकाल में 30 बार युद्ध हुए। इसके अतिरिक्त अवध के नवाब सआदत अली ने 5 बार तथा नवाब नसिरूद्दीन हैदर ने तीन बार तथा नवाब वाजिद अली शाह ने 2 बार लड़ाई की। इतिहास के अनुसार बाबर के शासनकाल से 1914 ई0 तक यहां 76 बार युद्ध हुए तथा 3 लाख से भी अधिक हिन्दू रामजन्मभूमि की रक्षा करते हुए मारे गए।

सन् 1857 के स्वाधीनता सेनानी अमीर अली और बाबा रामचरणदास के समझौते के अनुसार रामजन्मभूमि हिन्दुओं को सौंप देने का समझौता हुआ। परन्तु भारत का दुर्भाग्य था कि अंग्रेजों ने इस समझौते को क्रियान्वित होने से पहले उन्हें फांसी पर लटका दिया।

वर्तमानकाल में रामजन्मभूमि की मुक्ति का प्रयास अयोध्या के युवा वकील श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय ने किया। 1 फरवरी 1986 की उनके प्रयास से जिला सत्र न्यायाधीश श्री कृष्णमोहन-पाण्डेय ने रामजन्मभूमि का ताला खोलने का आदेश दिया। इसके पश्चात् 9 तथा 10 नवम्बर 1989 को रामजन्मभूमि की आधारशिला विश्वहिन्दू परिषद के तत्वावधान में रखी गयी।

विगत 40 वर्षों से अदालत में मुकदमा चल रहा है परन्तु अदालत इतने वर्षों बाद भी निर्णय नहीं दे सकी है। अदालत इस विवाद का शीघ्र निर्णय दे देगी, ऐसी सम्भावना नहीं दिखाई देती। रामजन्मभूमि और बाबरी विवाद को ठीक ढंग से सुलझा न पाने के कारण श्री-विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार का पतन हो गया। 30 अक्टूबर 1990 को विश्वहिन्दू परिषद तथा भारतीय जनतापार्टी ने कार सेवा आरम्भ करने की घोषणा की। किन्तु सरकार ने हिन्दुओं का दमन करने की नीति का अनुसरण किया। लाखों कार सेवकों को गिरफतार कर लिया गया, बस तथा ट्रेनों को बन्द कर दिया गया इसके बावजूद लाखों लोग अयोध्या पहुँचे। और उस स्थल पर झंडा फहरा कर प्रतीकात्मक कार सेवा आरम्भ कर दी गयी। 2 नवम्बर 1990 को निहत्थे रामभक्तों को श्री मुलायम सिंह यादव मुख्यमन्त्री उ0प्र0 के आदेश से गोलियों से भून दिया गया। सैकड़ों रामभक्तों को मारकर स्वतन्त्रता के बाद सबसे बड़ा नरसंहार हुआ है।

श्री राम मर्यादा पुरूषोत्तम एवं सर्वप्रिय शासक थे। रामजन्मभूमि पर 42 वर्षों से पूजा अर्चन चल रहा है। इतिहास वेत्ताओं का मत है कि बाबर द्वारा तोड़े जाने से पूर्व भी यह मन्दिर था। आज भी यह मन्दिर है। इतिहास के विद्वानों के अनुसार रामजन्मभूमि पर ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है जिससे यह मस्जिद सिद्ध की जा सके, बाबर के पूर्व यह मन्दिर था, परन्तु बाबर ने इसे मस्जिद के रूप में परिवर्तित करने की चेष्टा की।

कुरानशरीफ की अनेक आयतों में कहा गया है कि जिस स्थान पर दंगा फसाद हो, जिस पर विवाद हो वहां पढ़ी गयी नमाज अल्लाह कबूल नहीं करेगा।

इस्लामी शरीयत के सिद्धान्तों के आधार पर विवादग्रस्त क्षेत्र पर मन्दिर हो सकता है या नहीं? जहाँ तक इस्लामी शरीयत का संबंध है उसके आधार पर मस्जिद नहीं हो सकती। इसके निम्नलिखित कारण हैं--,

1- उस स्थान के आस-पास उतनी मुस्लिम आबादी नहीं है जितनी एक मस्जिद के लिए इस्लामी शरीयत के अनुसार होनी चाहिए।

2- यदि उस स्थान पर मस्जिद मान लिया जाए तो वह एक ऐसी मस्जिद होगी जो अनुचित प्रकार से कब्जा की हुई जगह पर निर्माण की गयी है। अनुचितरूप से कब्जा की गयी मस्जिद अथवा अनुचितरूप से कब्जा की हुई इमारत को मस्जिद के रूप में रूपान्तरित कर उसमें नमाज पढ़ना, प्रवेश करना शरीयत के आधार पर अनुचित एवं निषिद्ध है। (मुजमारात)

3- किसी स्थान पर कोई मस्जिद हो अथवा किसी इमारत को मस्जिद की इमारत को मस्जिद का रूप दिया गया हो, जब इस संबंध में इस प्रकार की जानकारी मिल जाए कि वह अनुचित रूप से कब्जा करके बनाई गयी है, तब केवल इस प्रकार की जानकारी प्राप्त होने पर ऐसे मस्जिदों की मस्जिदी हैसियत समाप्त हो जाती है। चाहे वहाँ नमाज भी क्यों न पढ़ी जाती हो। (अलमजहरिया)

4- जिस स्थान पर मूर्तिपूजा की जाती हो ऐसे स्थान को मस्जिद में रूपान्तरित करना शरीयत के अनुसार दण्डनीय अपराध है। (अलमनार)

5- अन्य मतावलम्बियों के पूजागृहों को मस्जिद में परिवर्तित करना शरीयत के आधार पर दण्डनीय अपराध है। (आलमगिरिया)

6- किसी स्थान या इमारत के विषयों में जब तक इस बात का प्रमाणिक आधार (दस्तावेज) न हो कि वह स्थान समस्त मुस्लिम जाति के नाम पर प्रतिष्ठापित किया गया है, ऐसे स्थानों के संबंधों में मुतलबा करने का अधिकार हर मुसलमान को शरीयत के अनुसार प्राप्त नहीं है। (मुल्ला)

7- इस प्रकार अनेक प्रमाण इस्लामी शरीयत के अंगीकृत ग्रन्थों में विद्यमान हैं। अतः शरीयत के आधार पर न्यायोचित कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त रामजन्मभूमि के स्थान पर निम्नलिखित आधारों पर मस्जिद नहीं मानी जा सकती-

क- गुम्बद तथा मीनार होना मस्जिद के लिए आवश्यक है।

— शेष पृष्ठ १० पर

सैन्य कमज़ोरी बनाम गुलामी

पं० अरविन्द कुमार विकसन
लखनऊ

विश्व में हिन्दुस्तान ऐसा अनोखा देश है जिसने प्राचीन काल से ही विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट किया। आज का अमेरिका भी उस कोलम्बस की खोज है जो आज से 500 साल पहले भारतवर्ष में आना चाह रहा था मगर भूल से अमेरिका पहुँच गया। यूनानी, चीनी, अरबी, मंगोल, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच और अंग्रेज आदि जातियां यहां आईं। मगर भारतीय कहीं बाहर नहीं निकला।

आज अमेरिका की यह हालत है कि दुनिया के लोग अमेरिका में जाकर बसते हैं। न्यूयार्क में करीब 100 देशों के लोग रहते हैं। मगर यहां फर्क है। अमेरिका में ये लोग आप्रावासी के रूप में कमाने-खाने और बसने जाते हैं जबकि ज्यादातर विदेशी भारत में लूट-खसोट करने आते थे। भारत समृद्ध एवं सभ्य देश तो था ही यहां का निवासी भी बड़ा सहिष्णु रहा है। इसके बावजूद भारत एक हजार साल से ज्यादा गुलाम रहा। इसका मुख्य कारण रहा है सैन्य कमजोरियां।

रूस- अमेरिका सर्वशक्तिमान इसकी वजह सिर्फ हथियार है वरना इनसे अमीर देश तो कुवैत था जो अपनी सैन्य कमजोरी की वजह से इराक द्वारा हड़प कर लिया गया है। रूस शस्त्रों के बल पर ही उजबेक, कजाख, ताजिक, तुर्कमानी, किरगीज आदि जातियों का इकट्ठा करने में सफल रहा है। उल्लेखनीय है सोवियत संघ में रूसी प्रांत ही सर्वप्रमुख है जो स्लाव जाति (आर्यों की ही एक शाखा) के लोगों का प्रांत है।

यूरोप में जर्मनी सबसे शक्तिशाली रहा है। इसका भी मुख्य कारण उसकी सैनिक शक्ति ही रही। जिस वक्त दूसरा महायुद्ध लड़ा जा रहा था तब अकेले जर्मनी के पास ही इतने हवाई जहाज एवं हथियार थे कि शेष यूरोप के कुल हथियार भी कम पड़ रहे थे।

इराक, अमेरिका के मुकाबले पिद्दी सा देश है। मगर अमेरिका उसे पर गत अगस्त से हमला करने की धमकियां ही दे रहा है। हमले को कार्यरूप देने से अमेरिका इसलिए सहमा है क्योंकि इराक के पास भी खतरनाक रूस निर्मित रासायनिक हथियार एवं मिसाइलें हैं।

पंजाब में कुछ हजार आतंकवादियों ने पूरे भारत के नाक में दम कर रखा है। इसकी वजह साफ है। आतंकवादियों के पास इतने अत्याधुनिक हथियार हैं जो हमारे सुरक्षा बलों को भी उपलब्ध नहीं हैं। सब जानते हैं जहीरुद्दीन बाबर ने विशाल भारतवर्ष को अपनी छोटी सी सेना से इसलिए हराया था क्योंकि बाबर की सेना शिक्षित और तोपखाने का इस्तेमाल करती थी जबकि भारत में तब भी धनुषबाण और तलवारें- भाले ही मौजूद थे।

आज भारत के करोड़ों हिन्दुओं की नई पीढ़ी को अपने बुजुर्गों से यह पूछने का अधिकार है, कि आखिर आप भी हम सैन्य रूप से क्यों कमजोर हैं। अगर नहीं हैं तो क्यों छुटभैयये पड़ोसी देश हमें धमकाते रहते हैं। क्या चीन को उसका कोई पड़ोसी देश गीदड़ भभकी दे सकता है जिस तरह भारत को पाकिस्तान और श्रीलंका से धमकियां मिलती रहती हैं।

हिन्दू दुनियां में बल-बुद्धि में किसी भी जाति से कम नहीं, फिर क्यों हमें दब्बू, गुलाम एवं कायर मानसिकता का समझा जाता है। हमारे महापुरुष जिन्हें हम देवी-देवता मानकर पूजते हैं, वे सब अस्त्रों से सुसज्जित हैं। श्रीराम, कृष्ण, विष्णु, शंकर एवं दुर्गा सभी के हाथों में अस्त्र विद्यमान हैं तब क्यों पूरे हिन्दू समाज को सैन्य शिक्षा अनिवार्य रूप से नहीं दी जाती।

पंजाब में सिख आतंकवादी हिन्दुओं को मारते हैं, वे बोलते तक नहीं। जम्मू-कश्मीर में मुसलमान उग्रवादी हिन्दुओं को मारते हैं तो वे पलायन करने लगते हैं। गोंडा, बिजनौर और मेरठ में हिन्दू-मुसिलम झगड़े होते हैं तो मुस्लिम डटकर हिन्दुओं का मुकाबला करते हैं। मगर हिन्दू कहीं भी प्रतिरोध नहीं करता। वह अल्पसंख्यक के बहाने क्षेत्र छोड़कर भागने लगता है। आखिर क्यों?

आज प्रत्येक हिन्दू को कायरता त्यागकर बहादुरी को अपनाना होगा। निजी स्तर पर सैनिक शिक्षा लेनी होगी। सहर्ष हथियार रखने होंगे। सैनिक शिक्षा और हथियार अपराधी या आतंकवादी बनने के लिए नहीं बल्कि असामाजिक तत्वों से अपनी रक्षा करने के लिए धारण करने होंगे। हथियार कभी भी व्यक्ति को अपराधी अथवा आततायी नहीं बनाता बल्कि शत्रुओं से हमारी रक्षा करता है।

यदि हमारी वर्तमान पीढ़ी वीर होगी। सैन्य-शिक्षा में प्रवीण होगी तो हमारा देश भी वीरों का देश कहलाएगा। कोई भी शत्रु देश हम पर हमला नहीं करेगा और न ही देश में आतंकवाद और अपराध को बढ़ावा मिलेगा। सहिष्णु और अहिंसक होने का अर्थ यह कदापि नहीं कि हम सैनिक शिक्षा और अस्त्रों से घृणा करने लगें। शस्त्र में शक्ति है। यह कतई सच है। □

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का अभूतपूर्व समारोह

१४ वाँ सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

२३ से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली में आयोजित

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कीजिए वैदिक धर्म प्रचार एवं प्रसार की अनेक योजनाओं को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहायता कीजिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती एवं उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज ने एक संयुक्त वक्तव्य में देश विदेश की बिगड़ती हुई राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दशा पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए वेदाधारित मानव समाज की रचना के आर्य समाज के दृढ़संकल्प को दोहराते हुए प्रदेश एवं विश्व की सभी मानवता प्रेमी जनता से आगामी दिसम्बर में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की अपील की है।

ऋषिवर्य का स्वप्न अभी साकार नहीं हुआ है। परमात्मा की अमरवाणी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। भारतीय आज़ादी के साथ हमने विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार की जो कल्पना की थी उसका मूर्तरूप अभी बहुत दूर है। अभी हमें बहुत दूर जाना है। पथ कण्टकाकीर्ण अवश्य है पर आर्य वह है जो कभी पराजय स्वीकार नहीं करता, हारता नहीं "चरैवेति चरैवेति" उसका आदर्श है।

उक्त आर्य महासम्मेलन आर्यजाति में नवप्राणों का संचार करेगा। सोई हुई मानवता को जगायेगा और विश्वशान्ति के हमारे वैदिक पथ को प्रशस्त करेगा।

तो, आइए, इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए वैदिक संस्कृति को उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने के लिए अभी से प्राणपण से जुट जायें।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने गंगा यमुना की पावन संगमस्थली के अपने अन्तराल में संजोए इस महान प्रदेश की गौरवमयी परम्पराओं का स्मरण कराते हुए कहा है कि राम, कृष्ण और दयानन्द की यह कर्मस्थली है। इस प्रदेश की जनता ने आर्यसमाज के मस्तक को सदैव ऊँचा रखा है। हमें आशा है प्रदेश की जनता इस सम्मेलन में लाखों की संख्या में सम्मिलित होगी और इस पुण्यकार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर यश की भागी बनेंगी।

देश की एकता में बाधक जातिवाद एवं जातीय आरक्षण

• राजेन्द्र "सरल"
आर्यसमाज-रायपुर घुन्सी खीरो

ईश्वर ने सृष्टि की आवश्यकता के अनुरूप वस्तुओं और जीवों की सीमायें निर्धारित की हैं। उनमें हम फेर बदल नहीं कर सकते और न ही काट-छाँट कर सकते। सभी मनुष्यों का जन्म एक समान होता है। ईश्वर ने उन सबकी रचना एक समान की है। एक सी बुद्वि और एक सी शक्ति दी है फिर मनुष्य को यह अधिकार नहीं कि हम किसी को हीन समझें। भारतीय अथवा वैदिक संस्कृति का आधार वर्णाश्रम व्यवस्था है, और वर्णाश्रम व्यवस्था का आधार है, भोग एवं त्याग और व्यष्टि एवं समष्टि के समन्वय से युक्त उसकी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि। वेद ने किसी के साथ पक्षपात नहीं किया। वेद की मर्यादा के अनुसार श्रम की दृष्टि से सारे मानव समाज को चार भागों में- शिक्षक, रक्षक, पालक, सेवक के रूप में विभक्त किया। जिसको वेद और स्मृति की शब्दावली में अब तक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नाम से पुकारा जाता रहा है। किसी भी समाज में ज्ञानियों का स्थान सर्वोपरि होता है। मानव शरीर में ज्ञान सम्बन्धी समस्त व्यवहार शिर के माध्यम से होता है, यह एक भाग है। शरीर की रक्षा और कष्टों से बचाने का काम हाथ करते हैं यह दूसरा भाग है। खाये हुए भोजन का रस एवं रक्त बनाकर आवश्यकतानुसार सम्पूर्ण शरीर के अवयवों को बाँट देना पेट का काम है यह तीसरा भाग है और समस्त शरीर को ज्ञान के लिए, रक्षा के लिए, उदर पूर्ति के लिए ढोकर ले जाना पैरों का काम है, यह शरीर का चौथा भाग है। जैसे प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार इन अंगों का प्रयोग करता है उसी प्रकार मानव समाज भी एक विशाल शरीर है और उसकी भी सब आवश्यकतायें जिन्हें शिक्षा, रक्षा पालना और सेवा के नाम से पुकारा जा सकता है। इनको समाज के लोग बिना किसी भेदभाव के योग्यतानुसार पूर्ण करते चलें। यह थी ऋषियों की श्रेष्ठ समाज की परिकल्पना। इसमें न कोई ऊँचा था और न कोई नीचा। प्रत्येक अंग महत्वपूर्ण है। ज्ञान के समय सिर का महत्व है तो चलने के समय पैरों का। जिस प्रकार शरीर के किसी एक अंग पर विपत्ति पड़ने पर सभी अंग उसका सामना करने के लिये तैयार हो जाते हैं, इसी प्रकार का सौमनस्य मानव समाज में भी होना चाहिए। इसमें राग द्वेष की बात नहीं है। यह एक व्यवस्था है जिसमें रहते हुए सब अपना-अपना काम करते हैं।

कालान्तर में वेद की यह व्यवस्था बिगड़ गयी। वेद और गीता के मानने वाले जो सर्वत्र आत्मतत्व को देखकर समता का उद्देश्य संसार को देते थे, वे अपने ही स्वार्थ पर इतने हृदयहीन और पाषाण बन जायेंगे, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

यह अत्युक्ति न होगी कि जातीयता तथा छुआछूत के विरुद्ध सबसे पहले देश में निर्भीकता से बोलने वाले व्यक्ति थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। स्वामी जी ने जन्म से नहीं अपितु कर्म से वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया, जन्म से न कोई ऊँच है और न कोई नीच। आज यदि हमारी वर्ण व्यवस्था में कोई दोष दिखायी देते हैं तो वर्ण व्यवस्था का ठीक पालन न करने से है। शास्त्रीय विधान में कोई दोष नहीं है जहाँ तक शास्त्रीय व्यवस्था का सम्बन्ध है शास्त्र ने यहाँ तक कहा है:- "शस्त्र द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मोयत्रोपरुध्यते" अर्थात:- "जहाँ धर्म या संस्कृति को खतरा हो वहाँ ब्राह्मणादि सब वर्णों को शस्त्र ग्रहण कर लेना चाहिए।"

आज हमारा देश जातिवाद के नाम पर विघटन के कगार पर है। प्रतिदिन भारत भर में कहीं न कहीं आन्दोलन होते रहते हैं। विघटनवाद में सरकार भी दोषी है। सभी जानते हैं कि हरिजनों और दलित वर्गों के लिए संविधान में विशेष व्यवस्थायें की गयी हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति से अब तक निरन्तर इन वर्गों को संरक्षण प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार की सुविधायें प्रदान की जाती रही हैं। इनमें नौकरियों शिक्षण संस्थाओं में स्थान सुरक्षित करने की भी व्यवस्थायें शामिल हैं। आरक्षण, विशेषाधिकार, अल्पसंख्यक आयोग आदि के नाम पर देशभर में अलगाव व संघर्ष की प्रवृत्ति पनप रही है। जिनको उनके गुण कर्म स्वभाव के अनुसार सब कोई ब्राह्मण समझते थे, वे हाथ उठा-उठाकर अपने हरिजन होने की घोषणा कर रहे हैं। तात्कालिक स्वार्थ लाभ के कारण साम्प्रदायिक संगठनों के कारण साम्प्रदायिक विद्वेष को बढ़ावा मिल रहा है और यह सब जन्ममूलक जात-पांत के आधार पर हो रहा है। विडम्बना यह है कि इन वर्गों को आर्थिक और राजनीतिक लाभ देकर उनकी स्थिति मजबूत बनाकर उन्हें समाज का अभिन्न अंग बनाने के जितने प्रयास किये गये हैं उतना ही यह वर्ग अपनी पृथक एक सत्ता बनाता चला गया है जो कि संविधान तथा अन्य कानूनी व्यवस्थाओं के अन्तर्गत विशेषाधिकार प्राप्त किये हुए हैं। स्पष्ट रूप से यह व्यवस्थायें हमारे हिन्दू समाज के बिखराव का कारण बन गयी हैं और यह विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग अब विद्रोह के रास्ते पर चल पड़ा है। यह विद्रोह आर्थिक न होकर सामाजिक है।

आज से कई सौ वर्ष पहले अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो कि नीति के आधीन यह बात लिख दी गयी कि आर्य लोग बाहर से आये और यहाँ के मूल निवासियों पर आक्रमण करके उनको दक्षिण की ओर भगाकर खुद देश के मालिक बन बैठे। परिणामतः द्रविड़स्तान की माँग उठ रही है। संस्कृत को विदेशी भाषा कहकर निकालने को कहा जा रहा है। सरकार को चाहिए कि इतिहास में आर्यों को विदेशी न मानकर यहाँ के निवासी ही मानें। आरक्षण एवं विशेषाधिकार आर्थिक स्थिति के आधार पर ही दिये जायें इससे आपस का भेद भाव दूर होगा, क्योंकि हर सम्प्रदाय में आर्थिक स्थिति से कमजोर लोग होते हैं उन्हें भी इसका लाभ मिलेगा। जातिगत आरक्षण से अमीर अधिक अमीर होते गये हैं और गरीब अधिक गरीब होते गये हैं। जिससे समाज में ऊँच-नीच एवं पारस्परिक विद्वेष को बढ़ावा मिला है। जिनको वास्तव में लाभ मिलना चाहिए और जो वास्तव में आर्थिक स्थिति से कमजोर हैं उन्हें लाभ नहीं मिल पा रहा है।

अतः हमारा विचार है कि देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाने के लिए तथा सामाजिक वातावरण मधुर बनाने के लिए जातिगत आरक्षण समाप्त कर आर्थिक स्थिति पर आरक्षण लागू हो और वर्ण व्यवस्था जन्म से नहीं वरन् कर्म से मानी जाय। ◻

आर्यसमाज आर्यनगर, बाँगरमऊ-जनपद-उन्नाव (उ0प्र0)

आचार्य आर्य नरेश ब्रम्हाचारी जी (हिमांचल प्रदेश) द्वारा दिनांक 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर"90 तक बाँगरमऊ , जगदापुर नसिरपुर, आलापुर कोट, पलिया जाकर वेद प्रचार किया तथा आरक्षण या अभक्षण , राष्ट्र बचाओ तथा राम जन्म भूमि पर पर्याप्त प्रकाश डालते हुये संबोधित इस्तहार का वितरण प्रचुर मात्रा में किया गया।

दिनांक 29 व 30 को विजयदशमी के शुभ अवसर पर वेद प्रचार हेतु मेले में शिविर लगाया गया इस अवसर पर आचार्य आर्य नरेश जी, पं0 सुखदेव जी, पं0 विश्वबन्धु जी स्वामी महावीर जी, पं0 युगुल किशोर जी, पं0 नेम प्रकाश जी, पं0 सीताराम जी व पं0 अवध किशोर जी ने प्रचार में भाग लिया।

नामकरण संस्कार

श्री सत्येन्द्रसिंह के सुपुत्र का नामकरण संस्कार श्री दिवाकरलाल- एवं युगुलकिशोर के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ बच्चे का नाम चि0 रोहित कुमार रखा गया, उपस्थित लोगों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

आर्यसमाज कब अपने को पहचानेगा?

• डा० जयदत्त शास्त्री मन्त्री,
आर्यसमाज अल्मोड़ा, उ०प्र०।

इन दिनों अपने देश में नाना प्रकार के संकट देशवासियों को पीड़ित कर रहे है। कुछ तो संकटों को प्रत्यक्ष झेल रहे है। और कुछ सहृदय उनको देखकर दुःखी हो रहे है। राजनेता इन समस्याओं को सुलझाने की अपेक्षा उलझा अधिक रहे हैं। यदि कहीं सुलझाने का कोई लक्षण दृष्टिगोचर होता भी है तो वह सबल होकर कार्यान्वित नहीं हो पा रहा है। पंजाब कश्मीर आसाम के संकट कम होने के स्थान में अधिक विकट होते जा रहे है। उधर राम जन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण को अशान्तिविषयक बनाया जा रहा है तो मण्डल आयोग-संस्तुत आरक्षण ने सारे देश में विशेषतः छात्र और युवावर्ग में घोर असंतोष पैदा कर भारी उपद्रवों और अशान्ति को जन्म दिया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अंग्रेजी हटाओ गोहत्या बन्द करो, शराब बन्द करो- ये तीन नारे समाचार पत्रों में दिये थे। किन्तु इनमें से किसी एक पर भी आर्यसमाज सक्रिय रूप से कार्य क्षेत्र में नहीं उतरा है। यहाँ तक कि गत अगस्त के द्वितीय सप्ताह में इन्दौर में श्री जगदीश प्रसाद वैदिक और उनके पुत्र डा० वेद प्रताप वैदिक के महान प्रयत्नों से आयोजित अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन के प्रथम सम्मेलन में न सार्वदेशिक सभा के अधिकारी दिखाई दिये न किसी अन्य प्रान्तों के। कुछ इने गिने आर्यसमाजों के प्रतिनिधि वहाँ अवश्य पहुँचे थे। तब ऐसी दशा में आर्य समाज की जागरूकता के विषय में क्या प्रश्नचिह्न नहीं लगता कि उसकी पूर्वोक्त राष्ट्रीय समस्याओं के निराकरण के सम्बन्ध में कहीं भी तो सक्रिय भूमिका नहीं है। वस्तुतः आजकल हमारे सारे कार्यक्रम वार्षिकोत्सवों कुछ सम्मेलनों के आयोजनों तथा उनमें कुछ प्रस्ताव पारित करने मात्र तक सीमित रह गये है। अंग्रेजी हटाओ का नारा तो विपरीत रूप में फलित हो रहा है, जब हम देखते है कि हमारे कुछ शिक्षा संस्थाओं के संचालकों ने अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय स्थान स्थान पर खोलने की होड़ सी लगा दी है।

ऐसी स्थिति में आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रोद्धार के कार्यों में उन्नति की क्या आशा की जा सकती है? यह स्पष्ट है। अतः समय आ गया है कि आर्यसमाज और हमारी प्रान्तीय तथा सार्वदेशिक सभायें अपने अस्तित्व को पहचानें। या तो वे राजनेताओं को विवश करें समयानुकूल कार्य करने के लिए, या स्वयं राजनीति में भाग लेकर संकट की दशा से राष्ट्र को उबारें। इस समय राम-मन्दिर निर्माण की बात पर जितना लोग ध्यान और बल दे रहे है। क्या उसका शतांश भी उन जीवित सहस्रों रामों के विषय में ध्यान दिया जा रहा है, जो काश्मीर नामक अपने ही देश की धरती को छोड़कर देश के विभिन्न भागों में शरणार्थी बनकर रह रहे है। क्या वे अपने अपने घरों को सुरक्षित कभी लौट सकेंगे? क्या यह विषय आर्यसमाज जैसी राष्ट्रीयतावादी संगठन के लिये शोचनीय नहीं है? उन कश्मीरी भाइयों को वर्तमान विपदा में भोजन आवास वस्त्रादि देकर सहायता करना तो अच्छा है, परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण उन्हें अपने घरों में पहुँचाने की बात है। यदि धारा 370 इस कार्य में बाधक है तो उसको समाप्त करने का प्रयत्न क्यों नहीं किया जाता क्या हमारे नेता इन सब बातों को विचारेंगे? ध्यान रखिये- 'क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे'?

बनता बगुला यदि हंस नहीं (गीतिका)

• डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफेसर्स कालोनी
श्यामगंज, बरेली-243005

बनता बगुला यदि हंस नहीं,
क्या अपना हृदय जलाने हो?
क्यों सिन्धु क्षारता को छोड़े,
तुम सत्य स्वयं विसराने हो।
पीतल कैसे बन सके स्वर्ण
क्यों निज को स्वयं भ्रमाते हो।
विश्वासघात जिसको आदत,
क्यों विश्वसनीय बनाते हो?
मर्यादायें जिसने तोड़ी
क्यों उसको परिधि दिखाते हो।
सम्बन्ध जिसे आडम्बर हैं,
क्यों प्रेम मन्त्र समझाते हो?
द्वन्द्वों का दलदल अभिशापित,
मन पंछी जहाँ फँसाते हो।
नभ की उन्मुक्त उडानें लो,
क्यों सीमा में बँध जाते हो?
उत्तरदाई केवल अपने,
पर चिन्ता में घुल जाते हो।
पहचाना लक्ष्य नहीं अपना,
क्या उनको फिर दर्शाते हो।

पं० आशुरामजी आर्य का निधन

डा० भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् वेदों के उर्दू अनुवादक तथा विश्ववेद परिषद चण्डीगढ़ के महामन्त्री पं०-आशुराम आर्य का 10 नवम्बर 1990 को पी०जी०आई चण्डीगढ़ में हृदयाघात के कारण निधन हो गया। वे 77 वर्ष के थे। पं० आशुरामजी तीन दिन पूर्व ही अपनी इंग्लैण्ड में बसी पुत्रियों से मिलकर भारत लौटे थे। अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया गया। 1913 में मुलतान जिले के खानगढ़ में जन्मे पं० आशुराम आर्य देश विभाजन के पश्चात् अम्बाला तथा बाद में चण्डीगढ़ के निवासी बन गये। उन्होंने कुछ काल तक डी०ए०वी० स्कूल में अध्यापन किया तथा इसके बाद पौरोहित्य कर्म को स्वीकार किया। वे एक सफल कर्मकाण्डी पुरोहित थे और चण्डीगढ़ तथा समीपवर्ती नगरों में उन्हें संस्कारों, यज्ञों तथा अन्य कर्मकाण्डों के लिये आमंत्रित किया जाता था। विगत कुछ वर्षों से उन्होंने चारों वेदों का उर्दू में अनुवाद करने का बीड़ा उठाया था। तीन खण्डों में वे ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद के कुछ अंशों के उर्दू अनुवाद प्रकाशित भी कर चुके थे जिनका उर्दू भाषी वर्ग में स्वागत हुआ था। पं० आशुरामजी आर्यसमाज के लिये सर्वथा समर्पित रहे। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। अन्त्येष्टि में पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर०पी० बम्ब जस्टिस टेकचन्द तथा जस्टिस पी सी पण्डित तथा सहस्रों आर्य उपस्थित थे।

आत्म-सम्बोधन

• वीरेन्द्र सिंह चौहान
आ०स० सीतापुर।

तुम कहते हो जग झूठा है, मैं कहता हूँ तुम झूठे हो।
आत्मा की अविचल सत्ता को, तुम भूल चले, तुम भूल चले।
काया की ममता के मद में तुम फूल चले, तुम फूल चले।।
मन की उत्ताल तरंगों में, तुम झूल चले तुम झूल चले।
विषयों के क्षणिक योग पर हो, अक्षुण्ण शान्ति समतूल चले।।

क्या अधिक कहें तुमको प्रियवर तुम अपने से ही रूठे हो।
तुम कहते हो जग झूठा है, मैं कहता हूँ तुम झूठे हो।।

क्या प्रकृति सूर्य को बदल सकी, दुनिया की रातें वही रहीं।
क्रम-नियम सृष्टि के क्या बदले, विद्या की बातें वही रहीं।
जाड़े आये, गर्मी आई, प्यारी बरसातें वही रहीं।
पुनि यहाँ तुम्हारी विषयों के प्रति, अब तक घातें वही रहीं।।

अब तुम्हीं सोचकर यह कह दो क्या नहीं झूठ में तूठे हो।
तुम कहते हो जग झूठा है, मैं कहता हूँ तुम झूठे हो।।

क्या तुमने समझा क्या जाना, सब वृथा हुआ आना जाना।
भोगों के अनृत रूप मद में अविच्छिन्न शान्ति को पहचाना।।
विश्वात्मा के सदपरामर्श को, अन्तस्तल में झुठलाना।
वा अप्रमेय विभु की सत्ता को तुमने क्या कम अपमाना।।

इस बाल-बुद्धि पर हा! अब तक अपने मन बड़े अनूठे हो।
तुम कहते हो जग झूठा है, मैं कहता हूँ तम झूठे हो।।

प्रभात आश्रम से

-वसिष्ठ सं0-"कालचक्र"आर्य पंचाग"

आज मेरे सामने गोविन्दराम हासानंद दिल्ली से प्रकाशित स्वा0 श्रद्धानंद लेखावली, भाग-5 का पृष्ठ 47 है। इस पर लिखा है----"वह दृश्य तो सचमुच देवताओं के लिए भी दर्शनीय था जबकि आर्य समाज के महोपदेशक पं0-रामचरण तथा इस्लाम के प्रचारक मौलवी अहमद सईद दोनों ही अपने अपने धर्मों के कट्टर हिमायती एक दूसरे के निकट बैठते हैं और ब्रिटिश नौकरशाही को प्रताड़ित करने में एक दूसरे का सहयोग देते हैं।"

बात 7 मार्च 1919 ई0 की है। अलीबंधु छिन्दवाड़ा जेल में बन्द थे। असहयोग समिति दिल्ली की अध्यक्षता डाक्टर अंसारी कर रहे थे। इसी पृष्ठ पर ऊपर लिखा है:

महात्मा जी जब हिन्दू मुसलमानों को समान रूप से सत्याग्रह के सूत्र समझा रहे थे, एक विख्यात नेता ने उनसे पूछा- "महात्मा जी, आप एक मुसलमान से सत्याग्रही का आचरण करने की आशा कैसे कर सकते हैं जो नित्य आधा सेर गोश्त खाता है। एक मुसलमान भेड़ के मेमने की भांति पिटते रहना पसन्द नहीं करेगा और अन्त में वह दुराग्रही बने बिना नहीं रहेगा। "महात्मा जी हँस पड़े और बोले- "भाई धीरे धीरे ये लोग भी ठीक हो जायेंगे।"

1857 से भी ऐसा ही स्वर्णिम दृश्य उपस्थित हुआ जब मुगल (बाबर) वंश के अंतिम बादशाह की आज्ञा से अयोध्या की बाबरी मस्जिद गिरा दी गई थी। दुर्भाग्य से परतंत्रता की बेड़ियाँ और कड़ी हुईं। मौलवी अमीर और बाबा रामचन्द्र दास को फाँसी पर लटका दिया गया। ऐसा ही एक स्वर्णिम दृश्य 1919 में फिर उपरोक्त असहयोग आन्दोलन के दिनों में उपस्थित हुआ जब स्वा0 श्रद्धानंद को मुसलमान दिल्ली की जामा मस्जिद में संबोधित करने के लिये ले गये थे जहाँ उन्होंने "ओं त्वं हिः नो पिता....." मंत्र से हिन्दू-मुसलमानों को संबोधित किया था। अब भारत को स्वतंत्र हुए 43 वर्ष हो गये परन्तु केवल कहने मात्र के लिये ।। उस भारतीयता का विकास कहाँ हो रहा है जिसके जानने के लिए 1930 के आसपास का विश्व-समुदाय उत्सुक था। भारतीय दर्शन से अनुप्राणित होकर शिक्षा दी जाती तो ऐसा हो सकना संभव था। वर्तमान कुशिक्षा के प्रभाव से तो अधिक हिन्दू समाज भी मौसम्मी -सुरापाई और आततायी हो गया है। जिस बूढ़े को वर्तमान राजनेताओं के जनकों ने राष्ट्रपिता विख्यात किया, वह तो कहा करता था कि "बिना धर्म के राजनीति बिना गंध का फूल मात्र है।" उसके लिए तो राम दशरथ नंदन मात्र नहीं था। उसने तो विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अनेक बार कहा था कि"आई एम ऐण्ड आई हैव बीन ए डिटरमाइण्डेड ओपोनेण्ट ऑफ मोडर्न सिविलाइजेशन" मैं आधुनिक सभ्यता का पक्का विरोधी रहा हूँ और "हूँ"।

जिस ढाँचे से पश्चिम छटपटा रहा है उसके आकर्षण में हम तथाकथित भारतीय धड़ाधड़ फँसते जा रहे हैं। सहनशील विनम्र हिन्दू की आत्मा को भी अपना मार्ग त्यागने के लिए विवश कर दिया गया है। यदि किसी कोने से उस मानवोचित सभ्यता के समर्थन के लिए आवाज उठती भी है तो उस पर सब ओर से साम्प्रदायिकता के आरोप लगने लगते हैं। कारागार भरने लगते हैं, गोलियाँ चलने लगती हैं, देश खतरे में है का नारा उछालकर कुर्सियाँ सुरक्षित होने लगती हैं, निरीह हिन्दू-मुसलमान के खून से पार्टी के शासन का आधार स्थिर किया जाने लगता है।

आखिर बाबरी मस्जिद है कहाँ? यदि थी भी तो उसे आक्रमण कारी का प्रतीक मानकर 1857 में ही स्वयं मुसलमानों के द्वारा गिरा कर हिन्दुओं को सौंप दिया गया था अब उस स्थान"राम" जो हमारी सभ्यता के प्रतीक हैं, के मन्दिर के जीर्णोद्धार में विरोध क्यों? मन्दिर बने या न बने प्रत्येक भारती को पिछले 150-200 वर्षों की राष्ट्रीय ,सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों को इतिहास का गम्भीर अध्ययन कर अपना कार्यक्षेत्र निर्धारित करना चाहिये। □

आदरणीय लेखक महोदय

आर्य जगत के शिरोमणि नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान, अद्भुत वक्ता पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री-पं0 प्रकाशवीर शास्त्री देश की उन महान विभूतियों में गिने जाते हैं, जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व ने राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गरिमा को बहुत ऊँचा उठा दिया था। ऐसे पुरुषरत्न को अपनी पावन धरती पर जन्म देना इस प्रदेश का सौभाग्य रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का मुख पत्र "आर्यमित्र" उनकी पुण्यस्मृति में, आगामी दिसम्बर 90 में "प्रकाशवीर शास्त्री अंक" प्रकाशित करने जा रहा है। इस अंक में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बहु आयामी स्वरूप पर देश-विदेश के मान्य विद्वज्जनों। राजनीतिज्ञों तथा उच्चकोटि के सन्त पुरुषों के विचारों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में प्रकाशित की जायेगी।

आप उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित रहे हैं और उनके कृतित्व के प्रशंसक भी।

मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा, यदि आप उनके सम्बन्ध में अपने विचारों को मूर्तरूप देते हुए इस अंक में प्रकाशनार्थ मुझे भेजने की कृपा करेंगे।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

आर्य लेखक कोष का शीघ्र प्रकाशन

जिन महानुभावों ने आर्य लेखक कोश के लिये अग्रिम शुल्क भेजा है उनसे तथा अन्य सभी बन्धुओं को सूचित किया जा रहा है कि कोश का मुद्रण कार्य गत अप्रैल से ही आरम्भ हो चुका है। छपाई वैदिक यंत्रालय अजमेर में हो रही है और प्रूफ मैं स्वयं चण्डीगढ़ में मंगा कर देखता हूँ ताकि शुद्ध तथा त्रुटि रहित हो। तथापि इधर आरक्षण विरोधी आन्दोलनों के कारण डाक व्यवस्था गड़बड़ रही है। अतः ग्रन्थ के तैयार होने में विलम्ब होना स्वाभाविक है। ग्रन्थ लगभग 500 पृष्ठों का सुन्दर गेट अप युक्त तथा सजिल्द होगा। अग्रिम मूल्य मात्र 100 रु0 ही है। जिसमें डाक व्यय भी सम्मिलित है। अपना शुल्क आज ही भेज दें ताकि समय पर ग्रन्थ आपको भेजा जा सके।

-डा0 भवानीलाल भारतीय
कोठी नं0- 41, सेक्टर 15 ए,
चण्डीगढ़ 160015,

शोक संवेदना

● जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के भूतपूर्व प्रधान श्री वासुदेव शरण अग्रवाल के द्वितीय पुत्र श्री जयप्रकाश अग्रवाल की रविवार दिनांक 18 नवम्बर 90 को जघन्य हत्या कर दी गई।

उनके शोक में स्थानीय बाजार बन्द हो गये, तथा जनता ने हत्यारे को गिरफ्तार करने तथा कठोर दण्ड दिये जाने की माँग की है।

सभामंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने इस दुःखद घटना पर शोक प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं शोक संतप्त पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

● आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर कानपुर ने आर्यसमाजके उपप्रधान श्री बनारसीलाल के श्वसुर के निधन पर समाज ने शोक प्रस्ताव पारित किया, परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

● मदरसा (फैजाबाद) के श्री-जमुनाप्रसाद जी आर्य का 65 वर्ष की आयु में दि0- 23 अक्टूबर को निधन हो गया। वह अपने पीछे भरापुरा परिवार छोड़ गये हैं, परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

● बक्सर (बिहार) के भू0पू0 मन्त्री श्री राजेश्वरी प्रसाद केसरी की पूज्य माता जी का दि0 3 नवम्बर को निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

स्कूल कालेज में सिगरेट पीने पर प्रतिबंध लगा

—(संजीव पालीवाल)

बरेली, 15 नवम्बर। "सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" यह तो बरसों से सुनते और पढ़ते आ रहे हैं और किसी ने इससे डरकर सिगरेट पीना नहीं छोड़ा लेकिन अगर आप छात्र है और आप अपने स्कूल या कालेज में सिगरेट पीते हैं तो हो सकता है कि आपको निकाल दिया जाये और यदि आप शिक्षक हैं तो आपकी नौकरी पर आँच आ जाये।

इस आशय का एक शासनादेश भारत सरकार ने जारी किया है जिसके अनुसार स्कूल कालेज में सिगरेट के पीने पर प्रतिबंध लगा दिया है। यह आदेश सम्पूर्ण भारत के सभी स्कूल कालेज व विश्वविद्यालयों में भेजा गया है तथा इसको सख्ती से लागू किये जाने की बात कही गयी है। इस आदेश के दायरे में छात्रों के साथ-साथ शिक्षक भी आते हैं। भारत सरकार ने यह कदम शिक्षण संस्थाओं में तथा छात्रों में मादक दवाओं के प्रयोग की बढ़ती प्रवृत्ति को रोकने के लिए उठाया है।

बरेली कालेज के चीफ प्राक्टर के0सी0 जायसवाल के अनुसार नशीले पदार्थों की चेतावनी देते हुए कुछ पोस्टर व बोर्ड भी सरकार द्वारा भेजे जा रहे हैं। जिन्हें कालेजों में जगह-जगह लगाया जायेगा।

उन्होंने कहा है कि वैसे भी बरेली कालेज में सिगरेट व अन्य नशीले पदार्थों का सेवन नगण्य है। प्राचार्य पी0पी0सिंह ने भी यही कहा कि हमें इसकी फिक्र नहीं है क्योंकि हमारे यहाँ छात्र सिगरेट नहीं पीते हैं।

वैदिक धर्म प्रचार

● गुरुकुल अयोध्या के आचार्य-शंकर मित्र जी द्वारा पूज्य आर्य मुनि-वानप्रस्थ के निर्देशन में निम्नांकित ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। मुक्ति पुरम, सिहौली, सैदरवानपुर, औरी, आर्यसमाज केराकतनगर, महिला आर्यसमाज केराकत, दयानन्द बालमन्दिर केराकत, आर्यवीर दल केराकत आदि में यज्ञ, उपदेश, उपनयन, संस्कारादि कार्य क्रम सम्पन्न हुए जिसका प्रभाव महिलाओं व बच्चों और नवयुवकों पर बहुत अच्छा पड़ा।

● आर्यसमाजसहगौतपनपुर{रायबरेली} में वेद प्रचार कार्य दि0- 22 से 24 सितम्बर तक आर्यसमाज रायबरेली के सहयोग से धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ, ग्रामीण जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

● आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर {कानपुर} में दि0- 20 से 26 सितम्बर तक वेदकथा का आयोजन किया गया।

★ आर्यसमाज माडल टाउन बरेली
प्रधान - श्री मोहनलाल चड्ढा,
मन्त्री - श्री ओमप्रकाश बग्गा,
कोषाध्यक्ष- श्री बलदेवराज वर्मा,

स्वामी आत्मानंद सरस्वती अस्वस्थ

आर्यसमाज मन्दिर मऊ में स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी अस्वस्थ होने के कारण अपना इलाज करा रहे हैं समाज के प्रधान श्री रामचन्दर सिंह तथा आर्य वीर दल परि0गोरखपुर के मंत्री श्री ओंकारनाथ जी उनकी देखभाल कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी व मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने स्वामी जी के स्वास्थ्य लाभ की प्रभु से प्रार्थना की।

- रामज्ञा "आर्यमित्र"

सम्पादक के नाम पत्र

मान्य सम्पादक जी,

समाचार है कि गान्धीजी के अहिंसा सिद्धान्त की दुहाई देने वाली भारत सरकार विदेशी मुद्रा कमाने के लोभ में आठवीं पंचवर्षीय योजना में देश के पशुधन को समाप्त करने को कटिबद्ध है और इस हेतु उसने नई वधशालाएं बनाने की योजना बनाई है ताकि 1989-90 में निर्यातित 110 करोड़ रूपये के माँस के स्थान पर 500 करोड़ रूपये का माँस प्रति वर्ष निर्यात किया जा सके। आठ नये कत्लगाह बनाए जाएंगे और 11 पुरानी वधशालाओं का सुधार किया जायेगा। पक्षिओं से होने वाली हानि को रोकने के नाम पर रक्षा-मंत्रालय ने 22 नगरों में वधशालाएं बनाने का निश्चय किया है।

लगता है कि बुद्धिहीन शासक, ऋषि-मुनियों की इस भूमि को, पूरे भारतवर्ष को, एक विशाल वधशाला बनाने पर तुल गये हैं। बिगड़े मस्तिष्कों की ऐसी पाशविक योजनाओं से पर्यावरण का जो विनाश होगा उसकी कल्पना से ही हृदय काँप उठता है। जग नियन्ता का कोप इस देश पर नहीं होगा तो और क्या होगा?

चीन में कम्यूनिस्टों का शासन स्थापित होने के बाद उन लोगों ने सोचा कि पक्षी खेतों से बीज चुग जाते हैं। इसलिए फसल की हानि होती है अतः झट आदेश जारी हो गया कि सब पक्षी मार डाले जाएँ। पक्षी मारकर लाने वाले को सरकार से पुरस्कार मिलने लगा। करोड़ों पक्षी मार डाले गये। फसल उस वर्ष अधिक हुई। योजना बनाने वाले अत्यन्त प्रसन्न। परन्तु फसल के कटने से पहले ही उसे कीड़ा लग गया और अनाज खाने के योग्य नहीं रहा। आयोजक सिर पकड़कर बैठ गये। खोज के बाद होश आया कि निस्संदेह पक्षी खेतों से कुछ बीज चुग जाते होंगे परन्तु बड़ा उपकार वे यह करते थे कि खेतों में होने वाले कीड़ों को भी चुग जाते थे।

जगन्नियन्ता द्वारा स्थापित की गई व्यवस्था को बिगाड़ना मानवता नहीं, बुद्धिहीनता है।

देवदत्त बाली
मन्त्री, वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी
तपोवन, देहरादून।

एक कार सेवक की कलम से

श्री वीरेन्द्र वीर जी निरीक्षक सभा बरेली मण्डल को राम कार सेवकों के साथ दि0 30 अक्टूबर को गिरफ्तार किया गया था, उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि उत्तर प्रदेश, म0प्र0, गुजरात, बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र और महाराष्ट्र लोग बन्दी थे। वहाँ कारसेवकों पर भयानक जुल्म ढाये गये उनका वर्णन करना कठिन है, जो हिटलर नादिरशाह, औरंगजेब जैसे क्रूर शासकों ने अत्याचार नहीं किए वह वर्तमान सरकार ने कर दिखाए।

● दिनांक 7 नवम्बर को श्री झंकारसिंह नजीबाबाद निवासी के यहाँ यज्ञ श्री सूर्य प्रकाश आर्य भजनोपदेशक द्वारा सम्पन्न हुआ।

पातंजल योग-साधना शिविर

आर्य गुरुकुल बड़लूर, कामारेड्डी पातंजल योग साधना {द्वादश} शिविर एवं वार्षिकोत्सव माघ कृष्ण 4 शुक्रवार से माघ कृष्ण 13 दिन रोववार तक श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में योग साधना शिविर लगेगा। अन्तिम दिन वार्षिकोत्सव होगा। अपने इष्ट मित्रों सहित भाग लेने की कृपा करें।

--

बम्बई में नये भवन का उद्घाटन

आर्यसमाज बम्बई की मुलुण्ड शाखा के नये भवन का उद्घाटन समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती की अध्यक्षता एवं बम्बई के सुप्रसिद्ध समाज सेवी नेता कैप्टन देवरत्न आर्य तथा श्री देवदत्त-शर्मा के संयोजन में सम्पन्न हुआ।

शिव सेना प्रमुख- श्री बाल साहेब ठाकरे इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे, हजारों की संख्या में उपस्थित विराट जनसमूह को उन्होंने अपने ओजस्वी विचारों से आन्दोलित किया। हिन्दू समाज को सशक्त और संगठित होकर अन्याय की समाप्ति के लिये प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि अधिकांश राजनेता अपने स्वार्थों को देशहित से ऊपर समझकर राष्ट्र को तोड़ने में लगे हुए हैं,

सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी-आनन्दबोध जी सरस्वती ने देश की स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय अखण्डता के लिये आर्य समाज के योगदान का उल्लेख करते हुए देश की वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति पर चिन्ता व्यक्त की, जिस तरह से पंजाब, काश्मीर आदि की समस्याओं को अनदेखा करके राजनेता कुर्सी के लिये लड़ रहे हैं, वह अक्षम्य देश द्रोह का अपराध है।

सम्मेलन में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें सरकार के बर्बर, अमानुषिक अत्याचारों की तीव्र भर्त्सना करते हुए उसकी बर्खास्तगी की मांग की गयी।

एक चेतावनी

• जगदीश सिंह नरवार
ई0आर 15, नई कालोनी,
कासिमपुर विद्युत गृह
अलीगढ़

उठो आर्यो सम्हलो वरना अस्तित्व है खतरे में आज।
हुआ पतन की ओर अग्रसर अपना प्यारा आर्य समाज ।।

जाति-पांति का बढ़ा प्रभाव है,
कुरीतियों ने किया घेराव है,
तीर्थयात्रा, मृतक-श्राद्ध और
गुरु आई की ओर झुकाव है,

सत्पुरुषों का हुआ अभाव है घुसते जाते धोखेबाज ।
हुआ पतन की ओर अग्रसर अपना प्यारा आर्य समाज ।।

धन-लिप्सा और पद-लोलुपता,
गुटबन्दी व स्वार्थपरता,
रुक्ष-स्वभाव बना है तजकर
सद्विचार, व्यवहार, शिष्टता,

द्वेष-भाव, आचारहीनता की नित बढ़ती जाती खाज।
हुआ पतन की ओर अग्रसर अपना प्यारा आर्य समाज।।

मूर्तिपूजा ढोंग मिटाओ,
पहले घर को शुद्ध बनाओ,
योग-साधना, ईश्वर-भक्ति,
सत्कर्मों में प्रीति -बढ़ाओ

फिर से नई जागृति लाओ, गूंजे वेदों की आवाज ।
हुआ पतन की ओर अग्रसर अपना प्यारा आर्यसमाज ।।

गुरुकुलों की ये है समस्या,
संरक्षण न, स्वयं कुव्यवस्था,
पहले जैसे नहीं रहे
सिद्धान्तवादिता, त्याग-तपस्या,

यदि यही अवस्था रही तो कैसे रखोगे भारत की लाज ।
हुआ पतन की ओर अग्रसर अपना प्यारा आर्य समाज ।।

एक प्रभु, ध्वज एक है अपना,
वैदिक धर्म प्रथक है अपना,
मुख्य ध्येय शारीरिक, आत्मिक
और सामाजिक उन्नति करना,

सबल, संगठित, सात्विक रहना - स्वराष्ट्र, सभ्यता पर हो नाज।
हुआ पतन की ओर अग्रसर अपना प्यारा आर्य समाज ।।

संस्कृत-भाषा पढ़ो-पढ़ाओ,
नये-रक्त को आगे लाओ,
रक्षक बनो, कभी न रक्षित,
सुधारवाद को ही अपनाओ,

"जगदीश" विश्व को आर्य बनाओ - शुद्धि का नित करो सुकाज।
हुआ पतन की ओर अग्रसर अपना प्यारा आर्य समाज ।।

पृष्ठ ८ का शेष..

ख- जिस मन्च {मिम्बर} पर खड़े होकर इमाम खुत्बा पढ़ता है वह भी कुरान के अनुसार नहीं है।

ग- जन्मभूमि भवन में छत से पानी निकलने के लिए 9 नालियां हैं। सभी नाली का आकार सुअर के मुंह का है। कोई मुसलमान अपनी मस्जिदों में सुअर के मुंह वाली नाली नहीं लगाएगा।

घ- जन्मभूमि की पुरानी दीवारों, पत्थरों तथा ईंटों पर संस्कृत श्लोक तथा श्री राम जन्मभूमि का घोष अंकित है जो मस्जिद में नहीं हो सकता।

ङ- जन्मभूमि का मुंह काबा की ओर नहीं है जो मस्जिद के लिए आवश्यक है।

च- भवन का नक्शा व आकार प्रकार कुरान में वर्णित मस्जिद का सा नहीं है।

छ- मस्जिद के साथ वजू {हाथ मुंह धोना} तथा गुसल {स्नान} का स्थान आवश्यक है। जो इस भवन में नहीं है।

ज- मुख्य द्वार पर अंकित कमल का चिन्ह मन्दिर का संकेत करता है।

झ- 42 वर्षों से इस स्थान पर हिन्दुओं द्वारा अनवरत पूजा और अर्चन होता आ रहा है। जबकि आज तक यहां नमाज नहीं पढ़ी गयी।

पर हां मीरबाकी द्वारा लगवाया गया शिलालेख अवश्य मौजूद है जिसमें बाबर के आदेश से मस्जिद बनवाने का उल्लेख है। ऐसा लगता है कि मीरबाकी ने इमारत में मामूली तोड़-फोड़ करके अपनी हुकूमत के बल पर वहां शिलालेख तो लगवा दिया परन्तु इमारत का मन्दिरपना नहीं हटा पाए। इस लिए इस शिलालेख को वहां से हटाकर फैजाबाद में रह रहे मीरबाकी के वंशजों को सधन्यवाद उनके पूर्वजों की विरासत सौंप दी जाए और इस स्थान को मन्दिर ही मान लिया जाए तो किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

इस प्रकार मुस्लिम ग्रन्थों ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा अन्य प्रमाणों के आधार पर रामजन्मभूमि को मन्दिर मान लिया जाए तो यह अनुचित नहीं होगा। इतिहास में आज तक ऐसा उदाहरण नहीं मिलता जिससे यह कहा जा सके कि किसी प्राचीन मस्जिद को तोड़कर मन्दिर या गुरुद्वारा बनया गया हो। पर इसके ठीक विपरीत मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाने के इतिहास में अनेक प्रमाण मिलते हैं। पुरानी मस्जिदों को साउदी अरब तथा मिश्र आदि की सड़कों के निर्माण के लिए हटाने के उदाहरण भी प्राप्त होते हैं। इतिहास के कालचक्र के दौरान अनेक मन्दिर तोड़े गए थे। इनमें मुख्यतः रामजन्मभूमि, सोमनाथ,काशी और मथुरा के मन्दिर हैं।

ऐतिहासिक दस्तावेजों को देखते हुए सरकार को रामजन्मभूमि हिन्दुओं को सौंप देनी चाहिए जिससे रामजन्मभूमि और बाबरी मस्जिद विवाद कोई भी राजनैतिक लाभ नहीं उठा सके। देश का दुर्भाग्य है कि राजनैतिक स्वार्थों के लिए रामजन्मभूमि बाबरी-मस्जिद का सद्भावपूर्ण हल नहीं निकाला जा सका है। भारत के महान् सपूत श्री राम के जन्मस्थल पर स्थित उनके मन्दिर को हिन्दुओं को सौंप दिया जाए। अयोध्या में किसी अन्य स्थान पर मस्जिद बनाई जा सकती है।

इसके अतिरिक्त इसका यह समाधान है। यदि तथाकथित बाबरी-मस्जिद को स्थानान्तरित कर दिया जाए जो कि आज के वैज्ञानिक युग में कोई कठिन कार्य नहीं है अथवा यह स्थान हिन्दुओं को सौंप कर यहां राममन्दिर बनाने दिया जाए और अयोध्या में ही दूसरे स्थान पर नई मस्जिद बना ली जाए एवं हिन्दुओं और मुसलमानों में यह सद्भावना पैदा हो जाये कि राम मन्दिर के निर्माण का सारा खर्च मुसलमान बन्धु उठावें और नई मस्जिद के निर्माण का सारा खर्च हिन्दू उठावें,

तो हिन्दू मुस्लिम एकता का पारस्परिक सौहार्द का और राष्ट्रीयता का एक नया और नायाब उदाहरण उपस्थित हो सकता है। मुस्लिम बन्धुओं को मक्का मदीना की तरह हिन्दुओं की रामजन्मभूमि में उनकी भावनाओं का आदर करते हुए आगे आना चाहिए और रामजन्मभूमि हिन्दुओं को सौंप दिया जाना चाहिए। जिस दिन यह रामजन्मभूमि को सौंपा जाए उस दिन हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए ईद की तरह का त्यौहार मनाया जाना चाहिए।

क्या अधिकार

"चन्द्रपाल सिंह "मयंक"

एडवोकेट, कानपुर

राज्यपाल जी! किया आपने
झाड़-बाड़! क्या सुन्दर {?} काम ।
आप धन्य हैं। किया अपने
सारे भारत को बदनाम ।

"ब्लू स्टार" आपरेशन था
किया देश भर ने स्वीकार।
फिर क्यों तुमने माफी माँगी?
तुमको इसका क्या अधिकार ?

तुमने आज गिराया कितने
नीचे भारत का सम्मान ?
अपने सत्कर्मों {?} से तुमने
किया देश भर का अपमान।

किससे तुमने माफी माँगी?
बोलो - किसने की स्वीकार?
माफी तुम्हें माँगने का था
बोलो-बोलो-- क्या अधिकार?

जुर्म और आतंकवाद के
सम्मुख घुटने टेके, भाई।
ऐसा करके तुमने कितनों
के मन पर है चोट लगाई।

क्या हम कहें? नहीं कुछ हमको
देखो- सूझ रहा भाई।
आखिर इतने नीचे गिरने की
तुमने क्यों ठहराई ?

लालबाग आ0स0 का प्रस्ताव

दिनांक- 11 नवम्बर की अन्तरंग सभा की बैठक में लालबाग आर्यसमाज, लखनऊ ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए, अयोध्या में राममन्दिर के दर्शनार्थ जाने वाले शान्त कारसेवकों पर गोलीवर्षा करने की घोर भर्त्सना करते हुए, न्यायिक जाँच किए जाने तथा दोषी व्यक्तियों को कठोरतम दण्डदिए जाने की मांग की है। प्रस्ताव में कहा गया है कि सैकड़ों शान्त निहत्थे रामधुन करते हुए कारसेवकों को गोलियों से भून दिया गया और उनकी लाशों को सरयू में जाल डालकर खोजने का कार्य भी प्रशासन ने नहीं करने दिया। इस अमानवीय कृत्य की जितनी भी भर्त्सना की जाये कम है। कारसेवकों के इस बलिदान को भारत की कोटि-कोटि जनता कभी नहीं भुला सकती है। राममन्दिर के लिए अपने प्राणों को हँसते-हँसते न्योछावर करने वाले कारसेवकों की आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज जगटापुर {उन्नाव} के रामशंकर जी के पूज्य पिताजी श्री फूलचन्द कटियार का 82 वर्ष की आयु में दि0 2 अक्टूबर को निधन हो गया। समाजने शोक प्रस्ताव पारित कर परमात्मा से प्रार्थना की दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

मृतक कार सेवकों को श्रद्धांजलि

- दिनांक- 30 अक्टूबर व 2 नवम्बर को अयोध्या के राममन्दिर के दर्शनार्थ जाने वाले निहत्थे कार सेवकों पर अन्धाधुन्ध गोली वर्षा करके उनका नरसंहार करने के विरोध में आक्रोश व्यक्त करने तथा दोषी व्यक्तियों को कठोरतम दण्ड दिए जाने के प्रस्ताव निम्न समाजों से प्राप्त हुए उनकी आत्मा की शान्ति एवं परिवारके जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना की गई है-

{1} आर्य केन्द्रीय सभा, आगरा,
{2} आर्यसमाज आगरा नगर,
{3} दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
{4} आर्यसमाज कलकत्ता
{5} आचार्य प्रेम भिक्षु जी, मथुरा
{6} आर्यसमाज अरमापुर, कानपुर।
{7} जिलासभा अलीगढ़
{8} आर्यसमाज जनकनगर, सहारनपुर।

कर्मयोगी बनकर देश की रक्षा करें

आर्यसमाज गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद के उत्सव पर श्री विश्वमित्र-मेधावी शास्त्री कुलपति गु0म0 सिरयू ने दो दिन प्रवचन किया जिसमें देश की ज्वलन्त समस्याओं पर प्रकाश डाला गया । आर्य जनता मन्त्रमुग्ध हो श्रवण किया तथा वैदिक धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न हुई।

शास्त्रार्थ में आर्यसमाज की विजय

जिला सभा चम्पारण के अन्तर्गत जगीरहाबीज वर्दनी {घोड़ासहन} के वार्षिकोत्सव पर दि0- 5 से 7 नवम्बर तक गायत्री महायज्ञ के अवसर पर युग निर्माण गायत्री परिवार के आचार्य श्री शिवकुमार दुबे एवं आचार्य गंगाधर शास्त्री से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ हुआ। आर्यसमाज के अकाट्य प्रमाणों से पौराणिक पण्डितों का मुँह बन्द हो गया और वह दूसरे दिन नहीं आये। स्थानीय जनता पर आर्यसमाज के प्रति अतीव श्रद्धा देखने को मिली।

शोक प्रस्ताव

- स्त्री आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर कानपुर की पूर्व प्रधाना श्रीमती कृष्णादेवी वर्मा के पति श्री सिकन्दरलाल वर्मा का दि0- 29 अक्टूबर को निधन हो गया, समाज ने शोक प्रस्ताव पारित किया परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

शोक समाचार

आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर {कानपुर} के श्री गंगाप्रसाद आर्य के सुपुत्र श्री श्रीप्रकाश आर्य का 17वर्ष की आयु में दि0-11 सितम्बर को तथा इसी आर्यसमाज के पूर्व प्रधान श्री-नानक चन्द जी की पूज्य माता जी का दि0- 13 सितम्बर को निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवारों को धैर्य प्रदान करें।

स्वास्थ्य-सुधा

{1}

समस्या- "मेरे पुत्र आनन्दप्रकाश की आयु 23 वर्ष है। सिर के सामने के बाल काफी नरम हैं और कंघी करने पर बाल झड़ते हैं। मुँह में छाले बहुधा रहते हैं"।

- ओउम् प्रकाश द्विवेदी, सहायक-विकासाधिकारी, बेलसर {गोण्डा}

समाधान- प्रातः दो चम्मच कलौंजी आधा प्याला पानी में भिगोयें- रात्रि में सिल पर पीस कर बालों में मलें। पाँच मिनट तक मलने पर बाल सूख जायेंगे। ऐसा एक मास तक करें। सिर में साबुन का प्रयोग *न करें*। एक लीटर पानी में चार आँवले उबालकर आधा करें। इस आँवला जल में दो चम्मच दही मिलाकर सप्ताह में एक बार तो अवश्य बाल धोया करें। स्नान के बाद नित्य गुरुकुल काँगड़ी का भृंगराज केश तेल लगाया करें। प्रत्येक भोजन बाद ओजस {चरक} दो ढक्कन समान जल में मिलाकर पिया करें।

{2}

पत्र- "मैं पाँच पुत्रियों की माँ हूँ। प्रथम बच्ची 16 साल की है और सबसे छोटी 3 साल की। पुत्र की लालसा दिल से हटती नहीं है"।

- एक बदनसीब महिला, नमस्ते-स्टोर, टुपकाडीह, डाकघर-कुन्डौरी, बोकारोस्टील सिटी {धनबाद}

पत्रोत्तर- परमात्मा आपकी मनोकामना पूर्ण करेगा। निर्माणाधीन "गुरुकुल आश्रम-बिठूर {कानपुर}" को दान देने का मन में संकल्प करें। संकल्पित दान का अंशदान देकर "पुत्रायन कैपसूल" प्राप्त करें। शेष दान पुत्र-जन्म के दिन अर्पित करें।
दो मास की गर्भावस्था के भीतर पुत्रायन कैपसूल लेवें।

योग शिक्षा हेतु

पत्र- "काफी दिनों से योग- क्रियाओं को जानने की इच्छा कर रहा हूँ। आर्यमित्र साप्ताहिक में आपका पता मिला है। आप मुझे भी कुछ योग-क्रियाओं का अभ्यास करा दें।"

- सहदेव, ग्राम-रम्पुरिया, डाकघर-रम्पुरारतन, जनपद-{बरेली} पिन- 243503

पत्रोत्तर- "गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त-बिठूर {कानपुर}" में पाँच सोपानों में योगसाधना सिखाई जाती है। एक सोपान का अभ्यास कम से कम दो सप्ताह तक आवश्यक है। मैं हर मास बिठूर जाता हूँ। कृपया

कार्यक्रम की जानकारी पत्राचार से करें।

:: अपने पत्र के साथ, पत्रोत्तर और पत्रिका हेतु डाक-लिफाफे मेरे पास भेजें-

- गुरुकुलानन्द सरस्वती
- आर्यसमाज पिथौरागढ़

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू / एन०पी० ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
मार्गशीर्ष शुक्ल-१५ संवत् २०४७ वि०
दिनांक: ९ दिसम्बर १९९०
दूरभाष २४५९९२

सेवा में-
12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
(हरिद्वार)

आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से आ०द० से निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने "भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा" के नाम से एक अवैधानिक संगठन खोल कर आर्यजनता में भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इस तथाकथित अवैधानिक संगठन से अपना किसी प्रकार का कोई सहयोग न दें।

- सभामन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) पौष कृष्ण-८ रविवार संवत २०४७ वि दिनांक ९, दिसम्बर ९९० (घोषणा पत्र सं.७/२७-२ ७५)



आपसे महर्षि की आकांक्षा

----- अब तो मेरे शिष्य सभी आर्यसमाजी ही हैं। वह ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथों की सफलता अवलम्बित है। उन्हें ही समस्त आर्य सन्तान, हिन्दुओं में, आर्यत्व की जागृति ला, आर्य राज्य की स्थापना कर इस देश को आर्यावर्त बनाना है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

आजीवन सदस्य	रु. २५१/
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ६३वाँ वर्ष
अंक-४८

एकदा गोमती तीरे
ऋषि के दीवानो! लखनऊ चलो

रुकी है न रोके रुका है सवेरा ।
रुकी है न रोके रुकेगा कदम मेरा ।।

15 तथा 16 दिसम्बर को लखनऊ पहुंचकर राष्ट्र निर्माण का व्रत लें तथा धर्मयज्ञ में अपनी आहुति दें ।

कतिपय विशेष तथा अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण उत्तर प्रदेशीय आर्य-प्रतिनिधि सभा के 105 वें वृहदधिवेशन तथा वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन कर दिया गया है। अब यह अधिवेशन दिनांक- 15 तथा 16 दिसम्बर 1990 को डी0ए0वी0 कालेज, लखनऊ में पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार बड़े ही भव्य समारोह के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों से जूझने तथा राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा के लिए आर्यजनों का यह अपूर्व समागम होगा। इसमें प्रचार की नई दिशाएं निश्चित करने तथा आर्यत्व को विनाश से बचाने के लिए एक नई रणनीति तैयार की जायेगी। यह वृहदधिवेशन केवल सभा के वार्षिक निर्वाचन के लिए ही नहीं है इसमें कार्यक्रम और भावी योजनाओं को सफल मूर्तरूप देने के लिए आर्यजनों को एक मंच पर बैठकर दिशानीति तैयार करनी है

दुर्भाग्य से आज भारत की स्वतन्त्रता का अर्थ यही लगाया जाता है कि हमने विदेशी शासन से मुक्ति पा ली और अंग्रेजों को भारत से भगाकर अपने देश को स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित कर दिया किन्तु यह अर्धसत्य है। हमें अभी इस देश को ही नहीं अपितु समूचे विश्व को आर्यसंस्कृति और सभ्यता से ओत-प्रोत करना है। भारत के प्राचीनतम सांस्कृतिक स्वरूप को पुनः प्रतिष्ठित करना है। जन-जन को आर्य बनाना है। यह कार्य राजनैतिक नेताओं के वश का नहीं है। हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं उन्हें केवल अपने वोटों के समीकरण की चिन्ता है। धर्म और संस्कृति के प्रति पूर्ण उपेक्षा बरती जा रही है। यह कार्य केवल भारत की आर्यजनता कर सकती है और वह निश्चित रूप से करेगी। हमारा पग कभी पीछे नहीं हटा है। हमारे आचार्य ने हमें बताया है--

कुसमस्तवकस्येव द्वे वृत्ती तु मनस्विन
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्येत वनेऽथवा ।।

मनस्वी लोगों की दो ही वृत्तियाँ होती हैं
या तो संसार के शिरमौर बनकर शीर्ष पर चढ़ते हैं
अथवा वनों में मुरझा जाते हैं।

इसलिए हमारे आमन्त्रण को स्वीकार कीजिए, लखनऊ पधारिये

आपका हृदय से स्वागत है ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
—राष्ट्र कवि मैथिली शरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ पौष कृष्ण-८ संवत् २०४७ वि.
दिनांक ९ दिसम्बर १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

सभा का वृहदधिवेशन
(१०५ वर्ष)

प्रदेश के आर्यजनों का एक महान समागम लक्ष्मणपुरी की पवित्र नगरी में 15 तथा 16 दिसम्बर को हो रहा है। हमारा प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से विशालतम तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से विशाल माना जाता है। गंगा यमुना का पवित्र संगम इसी प्रदेश में है। आर्यों के पूर्वज राम, कृष्ण, इसी प्रदेश की रज में खेलकर बड़े हुए थे। उत्तरदिशा में खड़ा हुआ हिमालय आर्यों की श्रेष्ठता और विजय पताका का स्मरण दिला रहा है। ऋषि दयानन्द की यह उपदेशस्थली एवं कर्मस्थली रही है। उन्होंने अपनी प्रचारयात्रा का प्रारम्भ इसी प्रदेश के हरिद्वार नगर में गंगा के पावन तट से किया था।

प्रदेश की आर्यसमाजों को सुव्यवस्थित करने तथा प्रचार अभियान को सुसंगठित एवं सुचारु ढंग से चलाने के लिए इस आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई थी और इस दिशा में बहुत ही प्रशंसनीय कार्य हुआ है। हमारी आलोचनाएं भी हुई हैं किन्तु हमारे कार्यों का मूल्यांकन भी है। हमने 1986 में सभा की ऐतिहासिक शताब्दी बड़े धूमधाम से मनाई थी और कुछ संकल्प लिए थे। प्रदेश के कोने-कोने में फैली हुई लगभग 2000 आर्यसमाजें अनेकों डी0ए0वी0 कालेज, शिक्षणालय, कन्या विद्यालय, गुरुकुल, उपदेशक विद्यालय इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। हमारे उपदेशक और प्रचारक ऋषि मिशन को जिस कर्तव्य निष्ठा से सफल बनाने में जुटे हुए हैं वह प्रशंसनीय है। विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए भी केवल अल्पवृत्ति के सहारे उनके द्वारा किया जाने वाला प्रचार हमें पूर्वयुग के दीवानें आर्यप्रचारकों का स्मरण दिलाता है। ऐसे त्यागी कर्मनिष्ठ दीवानें आर्य प्रचारकों पर चाहे वे भजनीक हों अथवा उपदेशक, प्रतिनिधि सभा को गर्व है। यह निश्चित है कि यदि उत्तर प्रदेश में आर्यसमाजों तथा उनको संगठित करने वाली इस सभा की स्थापना न हुई होती तो यह प्रदेश भी आज ईसाईबहुल किंवा मुस्लिम-बहुल प्रदेश होता अथवा उनका गढ़ तो अवश्य ही बन गया होता।

हमारे प्रदेश का यह सौभाग्य रहा है कि गत चार दशकों से इसी प्रदेश के महान राजनैतिक पुरुषों को राष्ट्र के प्रधानमन्त्री पद पर सुशोभित रहने का अवसर प्राप्त होता रहा है। किन्तु उनके प्रधानमन्त्रित्व काल में अन्य प्रदेशों की बात छोड़िए इस प्रदेश के सांस्कृतिक वर्चस्व को ऊँचा उठाने के लिए उन्होंने क्या किया। जो भी आया चाहे प्रदेश का मुख्यमन्त्री हो अथवा राष्ट्र का प्रधानमन्त्री, उसकी एक ही संस्कृति रही किसी तरह अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण करके इस देश की भाषा, सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को विकृत बना दिया जाय। इस प्रदेश का मुसल्मान उर्दू पढ़ना छोड़ चुका था। हिन्दी को हृदय से आत्मसात करके हिन्दी की योग्यता में अपने आयाम के पग बढ़ा रहा था पर चुनाव आसन्न आते ही आनन फानन में तत्कालीन कांग्रेसी शासन ने उर्दू को प्रदेश की दूसरी राज्यभाषा घोषित कर दिया। संस्कृत को मृतभाषा के समान ही व्यवहृत किया जा रहा है। सार यह है कि भारत की प्राचीनतम अस्मिता से अनभिज्ञ होने के कारण आर्थिक दृष्टि से भले हो हम कुछ उन्नत हो जावें परन्तु यह भारत के निष्प्राण शरीर पर स्वर्णाभूषण पहिनाने के समान ही है।

इसलिए इस राष्ट्र की अस्मिता और गौरव के रक्षार्थ सभी आर्यत्व प्रेमी जनता तथा प्रतिनिधियों से अपेक्षा की जाती है कि वे इस वृहदधिवेशन में बड़ी संख्या में लखनऊ पहुँचकर अपना क्रियात्मक सहयोग देंगे। ■

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का अभूतपूर्व समारोह
१४ वाँ सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन
२३ से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली में आयोजित

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कीजिए वैदिक धर्म प्रचार एवं प्रसार की अनेक योजनाओं को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहायता कीजिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती एवं उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज ने एक संयुक्त वक्तव्य में देश विदेश की बिगड़ती हुई राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दशा पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए वेदाधारित मानव समाज की रचना के आर्य समाज के दृढ़संकल्प को दोहराते हुए प्रदेश एवं विश्व की सभी मानवता प्रेमी जनता से आगामी दिसम्बर में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की अपील की है।

ऋषिवर्य का स्वप्न अभी साकार नहीं हुआ है। परमात्मा की अमरवाणी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। भारतीय आजादी के साथ हमने विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार की जो कल्पना की थी उसका मूर्तरूप अभी बहुत दूर है। अभी हमें बहुत दूर जाना है। पथ कण्टकाकीर्ण अवश्य है पर आर्य वह है जो कभी पराजय स्वीकार नहीं करता, हारता नहीं "चरैवेति चरैवेति" उसका आदर्श है।

उक्त आर्य महासम्मेलन आर्यजाति में नवप्राणों का संचार करेगा। सोई हुई मानवता को जगायेगा और विश्वशान्ति के हमारे वैदिक पथ को प्रशस्त करेगा।

तो, आइए, इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए वैदिक संस्कृति को उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने के लिए अभी से प्राणपण से जुट जायें।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने गंगा यमुना की पावन संगमस्थली के अपने अन्तराल में संजोए इस महान प्रदेश की गौरवमयी परम्पराओं का स्मरण कराते हुए कहा है कि राम, कृष्ण और दयानन्द की यह कर्मस्थली है। इस प्रदेश की जनता ने आर्यसमाज के मस्तक को सदैव ऊँचा रखा है। हमें आशा है प्रदेश की जनता इस सम्मेलन में लाखों की संख्या में सम्मिलित होगी और इस पुण्यकार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर यश की भागी बनेंगी।

शोक प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के भूतपूर्व मन्त्री तथा "आर्यमित्र" के पूर्व सम्पादक श्री पं0 धर्मपाल विद्यालंकार (बदायूँ) के निधन पर कतिपय आर्यसमाजों के शोक प्रस्ताव आर्यसमाज गवाँ (बदायूँ), आर्यसमाज मैनपुरी, स्त्री आर्यसमाज मैनपुरी आदि से प्राप्त हुए हैं।

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उनसे भ्रमित न हो और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरिक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

गो-हत्या बन्दी-एक राष्ट्रीय मांग

विमल वधावन

एडवोकेट दिल्ली

भारत वर्ष की इस पवित्र-पावन धरती पर गोहत्या का अधर्म प्राचीनकाल से लेकर मुस्लिम शासन काल तक नहीं था परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य के भारत में पदार्पण के साथ ही इस अधर्म की नींव रखी गई। इससे पहले हिन्दू-मुस्लिम दोनों ही गाय को पूजनीय मानते थे। अन्तर केवल इतना था कि हिन्दुओं ने गाय को धार्मिक रूप से भी पूजनीय माना था क्योंकि हिन्दुओं के महापुरुष श्री कृष्ण का चित्रण सदैव गाय के साथ ही किया गया था। बस इसी बात का लाभ अंग्रेजों ने उठाया और यह प्रचार किया कि गाय का तो केवल हिन्दुओं के साथ मात्र धार्मिक सम्बन्ध है अत दूसरे समुदाय के लोगों द्वारा इसके मांस भक्षण में कोई पाप नहीं है। इन सब कुकृत्यों के पीछे ब्रिटिश नेताओं की "फूट डालो और शासन करो" की नीति काम कर रही थी। इसी दुष्ट नीति के तहत ही तो हिन्दू और मुस्लिम समुदाय में वैमनस्य पैदा हुआ, कई दंगे हुए और असंख्य जानें गई।

गाय के प्रश्न पर सबसे पहले आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी-दयानन्द सरस्वती ने आवाज उठाई और उन्हीं कदमों पर चलते हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी स्वराज्य मिलने के पश्चात् पूर्ण गोवध रोकने का आश्वासन भी दिया। महात्मा गाँधी तो गोहत्या और नरहत्या को समान समझते थे। शासन सम्भालने के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तो "कैटल प्रिपरवेशन एण्ड डेवलपमेंट कमेटी" भी बना दी थी। इस कमेटी ने 1949 में अपनी रिपोर्ट इस प्रकार दी-

> "जब तक भारत में सम्पूर्ण गोवध बन्द नहीं होगा, तब तक अधिक अन्न उपजाओ की योजना सफल नहीं हो सकेगी"।

गोहत्याबन्दी का प्रश्न न तो साम्प्रदायिक है और न किसी के हृदय को आघात पहुँचाने वाला। विडम्बना ही है कि हमारी सरकार ने इस ओर कभी पहल करने की सोची ही नहीं। स्वतन्त्र भारत की सरकार ने इस ओर कभी पहल करने की सोची ही नहीं। स्वतन्त्र भारत की सरकार भी ब्रिटिश सत्ता की तरह आज तक इसी गलत फहमी में है कि यह हिन्दुओं की धार्मिक मांग ही है और इस पर दूसरे समुदायों द्वारा विरोध होगा। परन्तु इस लेख के द्वारा राजनैतिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी, भिन्न मत मतान्तरों तथा आर्थिक पहलुओं की तरफ से यह सिद्ध किया गया है कि यदि देश में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया जाए तो देश की दरिद्रता, दुख, दीनता और खाद्याभाव दूर होगा और समस्त देशवासी समृद्ध तथा खुशहाल होंगे।

राजनैतिक विचार:-

श्री बाल गंगाधर तिलक ने जनता को यह आश्वासन दिया था कि जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तब पाँच मिनट में पहली कलम की नोक पर गोवध निषेध कानून पास कर देंगे। डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने अपने एक रेडियो भाषण में कहा था कि जो देश कभी घी और दूध का भण्डार कहा जाता था आज वहाँ विदेशों से डिब्बा बन्द पाउडर का दूध और मक्खन मंगाया जाता है, वनस्पति घी भारत वासियों के पेट में विकार उत्पन्न कर रहा है रोगों की भरमार बढ़ती जा रही है, भारत का सात्विक जीवन आज समाप्त होता नजर आ रहा है। इन सबका मात्र एक ही कारण है गाय तथा गोवंश की घटती संख्या"। डा0 राजेन्द्र प्रसाद का यह भी कहना था कि पतन का यह क्रम तब तक नहीं रुकेगा जब तक भारत की सरकार गाय तथा इसके वंश की पूर्ण सुरक्षा की गारन्टी कानूनन नहीं दे देती"।

तुगलक वंशों के बादशाहों ने भी समय-समय पर गाय की रक्षा हेतु कानून बनाए। मुगल बादशाहों के पहले शासक बाबर ने अपने पुत्र हुमायूँ को एक वसीयत में लिखा कि अपने राज्य में गाय की कुर्बानी कभी न होने देना। हुमायूँ को भी गोमांस से अत्यन्त घृणा थी। हुमायूँ के कुछ संस्मरण फारसी में लिखे गये जिनका अंग्रेजी अनुवाद सन 1904 में मेजर चार्ल्स स्टुअर्ट ने किया, जिसके अनुसार- "एक बार अपनी ईरान यात्रा के दौरान अपने सौतेले भाई कामरान और माँ राय की बेगम के पड़ाव पर आराम करते हुए हुमायूँ ने भोजन मंगवाया तो उन्हें उस भोजन में गाय का मांस होने की शंका हुई। पता लगाने पर उनका संदेह ठीक निकला तो वह क्रोधित हुए और बोल उठे- हाय रे कामरान पेट भरने का तेरा यह रास्ता? अपनी पवित्र माँ को भी तू ये गो मांस खिलाता है? उसके लिए चार बकरियां लाने में तू असमर्थ हो गया। हमारे तो पिता की कब्र को झाड़ने वालों तक के लिए गो मांस खाना अनुचित है। पिताजी ने जिस तरह अपने कुटुम्ब वालों का गुजर किया क्या उस तरह हम चारों पुत्र नहीं कर सकते? इन शब्दों के साथ दुःखी बादशाह हुमांयु ने भोजन का थाल एक तरफ सरका दिया और शरबत का गिलास पीकर ही उठ खड़े हुए।

गौरक्षा के सिलसिले में यही दृष्टिकोण हुमायूँ के पुत्र अकबर का था। अकबर के राज्य का पूरा विवरण "आइन-ए-अकबरी" नाम की किताब में मिलता है जिसमें गौरक्षा का तो एक पृथक अध्याय ही है। इसमें लिखा है कि भारत जैसे सुन्दर देश में खेती का आधार गाय ही है, उसके दूध, घी, मक्खन आदि से भारतवासियों का पेट भरता है। इसके बैल खेती करके सारे भारत के लिए अन्न उपजाते हैं। इसलिए गाय तथा उसके वंश की हत्या करना जुर्म है। महाराजा अकबर की स्वयं अपनी गौशाला बड़ी विस्तृत थी। महाराज अकबर के दरबार से 13 जिला हिज्ज सन् 3। शाही {इस्लामिक तिथि} को एक राजकीय फरमान इस प्रकार जारी हुआ।

"सल्तनत के प्रबन्धक गण, कर्मचारी, अमीर उमराव, परगनों के हाकिम और शाही मुल्कों के कारबार के जिम्मेदार जान लें कि न्याय के युग में आज यह फरमान जारी किया जा रहा है जिसका पालन सबके लिए परम आवश्यक है।

गाय की जाति चाहे वह नर हो या मादा, अत्यन्त ही लाभ देने वाली है क्योंकि मनुष्य और पशु अन्न खाकर, जीते हैं, अन्न खेती के बिना नहीं हो सकता खेती हल चलाने से होती है और हल चलते हैं बैलों से, इससे स्पष्ट है कि समस्त संसार और पशुओं तथा मनुष्यों के जीवन का आधार एक गाय जाति ही है। अतः हमारी ऊँची हिम्मत और साफ नियत का यह तकाजा है कि हमारे राज्य में गोहत्या की रस्म बिल्कुल न रहे। यदि कोई व्यक्ति यह काम करेगा तो उसको सुल्तानी गजब में फंसना पड़ेगा और वह दण्डनीय होगा, उसके हाथों और पावों की उंगलिया कटवा दी जाएंगी"।

अकबर की इस परम्परा को उसके पुत्र जहांगीर ने भी उसी प्रकार निभाया।

गाय भारतीय संस्कृति का प्रतिरूप:-

सत्य, न्याय और शांति जहां भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखे हुए थे, अतिथि सेवा इस देश की अमर मार्यादा थी। सदाचार और स्वावलम्बी जीवन इस देश का चरित्र था। इन सबका आधार एवं प्रेरणास्रोत गाय ही थी। उसका परोपकारी जीवन, उसकी सौम्य आकृति, परिश्रमी रूप और शान्त वातावरण ही तो भारतीय संस्कृति का उद्गम है।

गाय से स्वास्थ्य लाभ:-

दूध गाय माता की एक स्वर्णिम देन प्राणधारियों को है। जिन उपायों से शरीर की गाड़ी स्वस्थ रहकर अपने मार्ग पर चलती जाए वे सब पोषक तत्व दूध में विद्यमान हैं। सबसे अधिक सुपाच्य होने के कारण बच्चों के जीवन का तो पहला उपहार ही दूध होता है। गाय के दूध में जीवन निर्माण की समस्त सहायक सामग्री रहती है। दूध में 5 प्रतिशत मक्खन होता है। इसमें विद्यमान कैल्शियम हड्डियों को मजबूत रखता है। विटामिन तथा प्रोटीन भी दूध में पाया जाता है। गाय के दूध में दस गुण होते हैं- यह स्वादिष्ट, ठंडा, कोमल, चिकना, गाढ़ा पौष्टिक सात्विक, सुपाच्य, बाहरी प्रभाव का देर से ग्रहण करने वाला, चित्त को प्रसन्न करने वाला होता है। इन गुणों से यह दूध दर्जनों बीमारियों से शरीर को दूर रखने की ताकत रखता है। मिरगी, पागलपन और सन्तान न होने जैसे रोगों के लिए तो गाय का दूध और घी राम-बाण है। अलग-अलग रंग की गाय का दूध भिन्न-भिन्न रोगों के लिए उपयोगी होता है। गाय की त्वचा कोमल होने से सूर्य की किरणों से

शेष पृष्ठ ४ पर

बाबरी मस्जिद विवाद

पं० अरविन्द कुमार विकसन

करीब 70 करोड़ हिन्दुओं के आजाद भारत में एक छोटी सी, घटिया स्तर की बाबरी मस्जिद को बचाने के लिए करोड़ों रुपए स्वाहा कर दिये। अयोध्या को पुलिस बलों की छावनी बना दिया गया। महज चंद मुस्लिम वोटों के कारण मुलायम सिंह यादव ने अनेक राम भक्तों को गोलियों से भुनवा दिया। काश! इन करोड़ों रुपयों से कई फैक्ट्रियाँ खोली जातीं तो हजारों लोगों को रोजगार मिलता। सबसे पहले गलती तो हिन्दुओं की ही है। मस्जिद को राजनैतिक एवं वोटों का मुद्दा बनाने की कोई जरूरत ही नहीं थी। पंजाब-हरियाणा में आजादी के बाद अनेक मस्जिदें तोड़ी गईं मगर कोई शोर-शराबा नहीं हुआ। हिन्दू-मुस्लिम दंगों में पिछले दिनों भी मस्जिदें क्षतिग्रस्त हुईं, कोई चर्चा नहीं। पाकिस्तान-बांग्लादेश में मुसलमान मंदिर तोड़ते हैं कोई चूँ भी नहीं करता। क्या बाबरी मस्जिद को तोड़ने के लिए राजनैतिक शोर मचाना जरूरी था। भारत के मुसलमान भी इस बात को जानते हैं कि हम अरब या मंगोलिया से आए मुसलमान नहीं हैं। सब डरकर या लालचवश मुस्लिम शासकों के काल में हिन्दुओं में से बने मुसलमान हैं। मगर इन्हें समझाना फिजूल है। विदेशी मुसलमान तक इन्हें असली मुसलमान नहीं मानते ये फिर भी आपे से बाहर होकर मुस्लिम होने का गर्व करते हैं। अयोध्या में राम मंदिर को तोड़कर बाबरी मस्जिद बनाई गई है। यहाँ का मुसलमान इस बात पर विश्वास नहीं करता। उनके मानसिक दिवालियेपन का इससे बड़ा कोई सबूत हो ही नहीं सकता। बाबर मध्य एशिया में फरगाना का राजा था। यह आजकल रूसी तुर्किस्तान में है। 1530 ई० में जहरूद्दीन बाबर काबुल में मरा। काबुल के लोग उसे आज भी "बदमाश विदेशी" कहकर पुकारते हैं। यह कितनी शर्मनाक बात है कि हिन्दुस्तान की रोटी खाने वाला मुसलमान एक बर्बर विदेशी आक्रांता को अपना "मसीहा" समझता है।

बाबरी मस्जिद तो टूटी नहीं मगर पाकिस्तान और बांग्लादेश में अनेक मंदिर तोड़ दिये गये। बांग्लादेश में 120 से ज्यादा मंदिर तोड़े गये। हिन्दुओं को लूटा और हिन्दू महिलाओं के साथ बलात्कार भी किया गया। जो बांग्लादेश 16 दिसम्बर 1971 को भारत की "कृपा" पाकर एक आजाद देश बना था, उसकी हिम्मत इतनी बढ़ गई कि वह हिन्दुओं पर ही जुल्म ढाने लगा। हिन्दुस्तान ही बांग्लादेश का निर्माता है। उसे यह बात भी याद नहीं रही। भारत को चाहिए जिस तरह नेपाल हिन्दू राष्ट्र है उसी तर्ज पर बांग्लादेश से हिन्दू अल्पसंख्यकों को अलग कर एक नया राष्ट्र बनवाने की कोशिश करें। वहाँ करीब डेढ़ करोड़ हिन्दू हैं।

पाकिस्तान में हैदराबाद और कराची में चार हिन्दू मन्दिरों को नुकसान पहुँचाया गया है। भारत सरकार को चाहिए कि पाकिस्तान के हिन्दुओं को भारत बुलाए और इतने ही मुसलमानों को यहाँ से पाकिस्तान भेजा जाए। यह तो जग जाहिर है कि पाकिस्तान के पंजाबी मुसलमान भारतीय सिखों और जम्मू-कश्मीर के मुसलमानों को पैसा, हथियार और प्रशिक्षण देकर भारत में हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं। अफसोस सिखों का है कि जो कौम महज मुसलमानों से ही लड़ने के लिए हिन्दुओं में से बनी थी वह आज मुसलमानों की "कठपुतली" बनकर हिन्दुओं पर ही जुल्म ढा रहे हैं। भारत को भी पाकिस्तान के चारों प्रान्तों-सिंध, पंजाब, ब्लूचिस्तान, और उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त में उसी तर्ज पर आंतकवाद की ज्वाला भड़काने की कोशिश करनी चाहिए जिस तरह पाकिस्तान कर रहा है। लोहा लोहे को काटता है तो आतंकवाद का बदला आतंकवाद ही है। सिंधी मुहाजिरों को इस काम के लिये तैयार किया जा सकता है चूँकि वे खुद ही पाकिस्तान में पीड़ित हैं। कितनी शर्मनाक बात है कि दक्षिण एशिया की एकमात्र महाशक्ति (हिन्दुस्तान) को पिद्दी से पड़ोसी देशों ने ही परेशान कर रखा है। और वह चुप है।

भारत के अलावा दुनिया में कहीं भी ऐसे जाहिल नेता नहीं मिलेंगे जो मुसलमानों को खुश रखने के लिए नैतिकता को भी गिरवी रख देते हों। वे बिना माँगे मुसलमानों को पैगम्बर जयंती की छुट्टी देंगे। अल्पसंख्यकों के नाम पर हथियारों के लाइसेंस बाटेंगे। हिन्दू मन्दिरों की छतरियाँ तुड़वायेंगे। उन्हें पूजा करने से रोकेंगे। उनके शरीयत बिल को मानेंगे। मस्जिदों में जाकर नमाज पढ़ेंगे। मस्जिदों को लाखों रुपये दान देंगे। शंकराचार्यों को गिरफ्तार करेंगे। मुस्लिम तुष्टिकरण ही उनका ध्येय रहेगा। हर मजार की वह सुरक्षा करेंगे इसके बदले भले ही मन्दिरों को तोड़ना पड़े। हिन्दू नरसंहार कराना पड़े। आज हिन्दू जितना असुरक्षित हिन्दुस्तान में है, शायद ही कहीं और हो। ☐

मुक्तक

लाखन सिंह भदौरिया
मैनपुरी

हम कहीं ठहरें नहीं, चलते चलें।
राह के दीपक बनें, जलते चलें।
भोर की अगवानियों की आरती में-
रोशनी हँसते हुए गलते चलें।

(2)

एक क्षण दे दो, किसी को मुस्करा दो।
इस तरह से, आग का पीना सिखा-दो।
रास्ता मुस्कान से सूना न हो-
इस तरह से जिन्दगी जीना सिखा दो।

(3)

मन किसी का तोड़ मत, तू टूट कर-रसखान-बन
सिर्फ पत्थर बन रहा अब आदमी इन्सान-बन।
भाव से छलके हृदय का प्यार दे यदि-दे-सके-
मत अहं की ऐंठ में अकड़ा हुआ, भगवान-बन।

(4)

अनय और हम, आमने-सामने हैं।
समय और हम, आमने-सामने हैं।
सृजन-ध्वन्स कुरूक्षेत्र में आ खड़े हैं
प्रलय और हम आमने-सामने हैं।

(5)

दिनोंदिन हो रही है, जिन्दगी बदतर।
पता क्या मंजिलों का हाल क्या हो मित्र।
प्रगति के युग-चरण लाये कहाँ-चलकर?
डराने लग गये कुछ मील के पत्थर।

महिला मण्डल



माँ की शिक्षा

सुषमा पंत

पंत भवन, रामनगर,
(नैनीताल)

समझाये माता बेटी को
देश पराये जाना है
केवल बी०ए० एम०ए० से ही
जीवन नहीं चलाना है।

विषय बहुत है इस जीवन में
उनका पाठ पढ़ाना है।
केवल पढ़ लिख कर ही बेटी
नहीं गुजारा होना है।

घर विद्या में सबसे पहले
सहन शक्ति का पाठ पढ़ो।
दूजे अब इस घर से जाकर
उस घर को अपना समझो।

माताओं का प्रथम कार्य है
बेटी को समझाने का।
विषय बहुत है इस जीवन में
पढ़ने और पढ़ाने का।

सास ससुर की आज्ञा पालन
ननदी को बहिना जानो।
देवर भ्राता तुल्य तुम्हारे
सर्वस्व पति को ही मानो।

चरित्रबल है विषय श्रेष्ठतम
तुम नित नित इस का जाप करो
नीच पिशाचों और दुष्टों से
रक्षा अपनी आप करो।

संयम और नियम से रहना,
इससे डिगना नहीं होना।
ढोंगी साधु के चक्कर में
अपनी मति नहीं खोना।

अपने घर का रोना बेटी,
कभी किसी से मत रोना।
विकट समय पर भी बेटी
कभी अधीर नहीं होना।

ऊँची शिक्षा पाकर बेटी
सहज नम्रता आती है।
जैसे लदी फलों से डाली
सहज स्वतः झुक जाती है।

जीवन निर्मल निश्छल हो।
अभिवादन से परिपूर्ण रहे।
भाव सदा सद्भाव भरे हों
अभिमानों से दूर रहें।

स्वतंत्र विचारों के सागर में
सदा हिलोरें लेना तुम।
दूर हो रखना दुर्विचार को
पास न आने देना तुम।

घर को अपने स्वर्ग बना।।
अपने कर्तव्यों का आभास रहे।
सर्व सम्पदा शांति सुमति से
सुखी सदा परिवार रहे।

दो कुल की मर्यादा लाडो
हाथ तुम्हारे ध्यान रहे।
अपने बड़े बुजुर्गों का भी
निज दिल में सम्मान रहे।

बेटी अपने बालक को
वो अमृत पान कराना तुम।
नारी का यह प्रथम कार्य है
सुसंतान राष्ट्र को देना तुम।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय मथुरा में स्थापित करने के संबधं में प्रस्ताव

• सोती वीरेन्द्र चन्द्र
कमला कुटीर,
565 सुभाषनगर, इलाहाबाद।

भारतीय संस्कृति पर आधारित मान्यताओं में वर्तमान काल में मूल्यहीनता आई है। उनमें क्रमिक ह्रास हो रहा है। इसका प्रभाव राष्ट्रीय चरित्र के अभाव के रूप में प्रकट हुआ है। राष्ट्र के उत्थान के लिए राष्ट्रीय चरित्र का होना अनिवार्य है। राष्ट्रीय चरित्र नैतिक मूल्यों-नियमों पर अवलंबित होता है। समग्र संस्कृति का मूल यदि देखा जाय तब चरित्र है। चरित्र में राष्ट्रीय चरित्र समाहित है।

भारतीय जीवन दर्शन में सार्थक सहिष्णुता एवं समन्वयता की भावना तथा सदाचरण, सद्भाव एवं संभाव जैसे नैतिक विषय निहित है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में सभ्यता जिन आधार स्तम्भों द्वारा स्थापित होती है उनमें से ये अंग विशेष महत्व रखते हैं। इन चरम मूल्यों के तत्वों से समावेशित भारतीय संस्कृति भारतीय जीवन की अनेकता में अन्तर्व्याप्त एकता का प्रतीक है। नैतिकता ही भारतीय संस्कृति का प्राणतत्व है।

भारतीयता से आत्मीय अनुराग रखने वालों की संख्या दिनोंदिन कम होती जा रही है तथा पाश्चात्य सभ्यता का रंग भारतीयों पर बुरी तरह से चढ़ता जा रहा है। फलत भारतीय सामाजिक मूल्यों, और आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता समाप्त सी होती जा रही है। ऐसी परिस्थिति में मानवीय मनोवृत्तियों का परिष्कार करना आवश्यक है। आज की पुकार है कि भारतीय संस्कृति के अनुकूल आदर्शों पर चला जाय।

भारतीय संस्कृति की मूल स्रोत्र वैदिक संस्कृति है। महर्षि दयानंद सरस्वती ने वैदिक संस्कृति को पुनः जीवंत, प्राणवान एवं सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक जाति, सम्प्रदाय, वर्ग, भाषा-विद्वेष से ऊपर उठ कर राष्ट्रोत्थान की दिशा में राष्ट्र की समृद्धि एवं अभिवृद्धि में सहायक सिद्ध हो। अतएव युवकों को, जो राष्ट्र के भावी नागरिक हैं भारतीय संस्कृति जिसका मूलाधार वैदिक संस्कृति है, के अनुसार उच्चतम शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से महर्षि दयानंद सरस्वती की पुनीत शिक्षा स्थली मथुरा नगरी में, जहाँ से उन्होंने स्वामी विरजानंद सरस्वती से सन् 1860 से 1863 तक शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत देश में ज्योति प्रसारित की थी, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय स्थापना करने की परियोजना का प्रस्ताव है।

इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि युवक राष्ट्र एवं समाज की महत्तम इकाई हैं। अतः केवल एक विश्वविद्यालय स्थापित करने का नहीं वरन् शिक्षा द्वारा राष्ट्र के लिए श्रेष्ठ मनुष्य अथवा राष्ट्रीय चरित्र से युक्त ऐसे भावी नागरिक तैयार करने का ध्येय है जो भारतीय संस्कृति के अनुयायी बनने के साथ राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के प्रति अपने दायित्व को समझें। राष्ट्र और समाज के प्रति उनका कर्तव्य क्या है उसका बोध उन्हें हो। राष्ट्रीय एकीकरण एवं राष्ट्रीय चरित्र की भावनाओं से ओत-प्रोत हो।

शिक्षा किसी राष्ट्रीय उद्देश्य या किसी सांस्कृतिक लक्ष्यों के लिए होनी चाहिए। अत. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय से ज्ञान से दीप्त होकर विद्यार्थियों से उसी प्रकार निकलने की अपेक्षा की जायेगी जिस प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती योगिराज श्रीकृष्ण की पुण्यस्थली ब्रजभूमि में स्थित स्वामी विरजानंद जी के आश्रम से निकल कर प्रकाश स्तम्भ बने।

इस प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय जैसी शैक्षिक संस्था में भारतीय सभ्यता, संस्कृति, परंपराओं संस्कारों, आचार-विचारों एवं रीति-नीति के आधार पर शिक्षा दीक्षा दी जाने की व्यवस्था की जायेगी ताकि अनुशासनहीन एवं असंयमित आचरण से परे राष्ट्रीय चरित्र से युक्त छात्र वहाँ से निकलकर अपनी **जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि** की सेवा में अपना यथोचित योगदान दे सकें। यह युगीन अनिवार्यता है। यहाँ केवल उस विश्वविद्यालय के सोद्देश्यता का रेखा रूपांकन किया गया है, विस्तृत विवरण नहीं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस विश्वविद्यालय की जड़ें भारतीय संस्कृति, जिसका मूलाधार वैदिक सभ्यता है, में होगी। परन्तु उसे आधुनिक परिवेश के अनुरूप विकसित करना होगा ताकि इस के विद्यार्थी अन्य प्रगतिशील विश्वविद्यालयों के छात्रों की भाँति प्रतियोगिता परीक्षाओं आदि में सफलता पूर्वक भाग लेने के हेतु सामर्थ्य रखें, और सक्षम सिद्ध हों। तभी विद्यार्थी इसकी ओर आकृष्ट होंगे और इस विश्वविद्यालय के महत्व को समझा जायेगा।

उपसंहार के रूप में निवेदन है कि उपरोक्त के साथ ही संकीर्णता से दूर, सहिष्णुता, समन्वयता, उदारता, आचरण की सभ्यता एवं राष्ट्रीय एकीकरण जैसे भारतीय संस्कृति के तत्वों में आस्था रखने वाले राष्ट्रीय चरित्र से युक्त भावी नागरिक उत्पन्न करने का इस विश्वविद्यालय का सर्वोपरि उद्देश्य रहेगा।

इस संबंध में विज्ञ महानुभावों के सारगर्भित सुझाव उपरोक्त पते पर आमंत्रित हैं। □

अन्तरंग सभा की सूचना

दिनांक- 15 दिसम्बर 1990 को प्रातः 10 1/2 बजे डी०ए०वी० कालेज, लखनऊ में आर्यप्रतिनिधि सभा, उ०प्र० की अन्तरंग सभा की बैठक होगी।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

पृष्ठ ३ का शेष.....

उसी रंग का प्रभाव उसके दूध में आ जाता है। भैंस की त्वचा मोटी होने से उसमें सूर्य किरणों का प्रवेश कठिन होता है। हृदय तथा पीलिया रोगी को लाल रंग की गाय का, यक्ष्मा के रोगी को कपिला और दमा के रोगी को काली गाय का दूध देना श्रेयस्कर माना गया है। आयुर्वेद के अनुसार घी खाने से आयु बढ़ती है और बुद्धि विकसित होती है, दूध पीने से वीर्य बहुत शीघ्र बनता है अतः दूध घी आदि वस्तुओं के बिना भोजन व्यर्थ है।

गोवंश की रक्षा तथा देश की अर्थ व्यवस्थाः-

यदि गाय तथा उसके वंश से प्राप्त सहायता को आर्थिक आंकड़ों में मापा जाए तो स्पष्ट होगा कि हमारे भारत देश का ही नहीं बल्कि विश्व के समस्त देशों का आर्थिक ढांचा गाय के कन्धों पर ही खड़ा प्रतीत होगा। जिन देशों ने गोवंश की रक्षा के लिए सख्त कदम उठा लिए हैं उन देशों में आरोग्यता, खुशहाली समृद्धि और खाद्यान्नों की बहुलता दूर से ही देखी जा सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो गाय तथा इसके वंश से प्राप्त आर्थिक लाभ का स्पष्ट नक्शा अपनी लघु पुस्तिका "गौ करुणानिधी" में खीच कर ही रख दिया है। उनके अनुसार गाय के दूध और अन्य उत्पादों से गाय से पूरे जीवन में कई हजार मनुष्यों को तृप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक गाय अपने जीवन में अनुमानतः 5 या 6 बछड़े और बछिया पैदा करती है। पुनः बछिया के दूध से भी देश में इन उत्पादों की वृद्धि होगी दूसरी तरफ बछड़े बड़े होकर बैल बनते हैं और प्रत्येक बैल अपने जीवन में हजारों मन अन्न का उत्पादन कराने में सहयोग करते हैं। इस प्रकार बैल से भी लाखों मनुष्यों के अन्न की आवश्यकता पूरी होती है। इन सबके विपरीत गाय के मांस से केवल 80 या 100 मनुष्यों को ही तृप्त किया जा सकेगा और वह भी गाय के जीवन में केवल एक ही बार अतः सहज ही निर्णय लिया जा सकता है कि गाय तथा इसके वंश की रक्षा से देश के हजारों लाखों मनुष्यों का पेट भरना है या इसकी हत्या से मात्र 80 या 100 मनुष्यों का।

इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने यह भी स्पष्ट किया कि जब देश में दूध और उसके अन्य उत्पादों की बाहुल्यता हो जाएगी तो अन्न की खपत में स्वतः ही कमी हो जाएगी जिसका निर्यात विदेशों को करके विदेशी मुद्रा भी अर्जित की जा सकेगी। जब देश के जवानों को दूध के उत्पादों की प्रचुर मात्रा उपलब्ध होगी तो शराब आदि नशों का भी स्वतः ही सेवन कम हो जाएगा।

अतः भारत सरकार को गाय तथा गोवंश की रक्षा के लिए राष्ट्रहित में सख्त से सख्त कदम उठाने चाहिए जिससे भारत देश फिर से प्राचीन रूप सुख-समृद्धि को प्राप्त कर सके। □

महर्षि दयानन्द एवं स्वराज्य प्राप्ति

यतीन्द्र कुमार विद्यारत्न
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

आदिकाल से लेकर महाभारत काल तक एकदेशीय स्वाधीन अखंड आर्यावर्त राज्य रहा। महाभारत के महायुद्ध के बाद आर्यावर्त के भाग्य भविष्य पर खतरे के बादल मंडराने लगे। सारा देश छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। वर्ण व्यवस्था का स्वरूप बिगड़ गया इस प्रकार अस्पृश्यता ने जन्म लिया। शास्त्रों पुराणों में जैसा इन कथाकथित पण्डितों ने चाहा वैसा कोरा झूठ ठूँस दिया। यहाँ तक कि इतिहास को भी रद्दोबदल करने का प्रयत्न किया और फिर इसी प्रकार वैदेशिक साम्राज्य ने जन्म लिया। उन चाण्डाल मुगलों ने हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ जलाए, मन्दिर तोड़े तथा हिन्दुओं की बहू-बेटियों की इज्जत सड़कों व गलियों में लूटी गई। इतना ही नहीं वे पिशाची उन्हें विदेश ले गये जहां इन हिन्दुओं की ललनाओं को कौड़ियों में बेचा गया। यह किम्वदन्ती नहीं अपितु इतिहास का अमिट पृष्ठ है जिसे कदापि भुलाया नहीं जा सकता।

इस प्रकार पहले मुगलों ने हिन्दुओं के मान-सम्मान व धन-जन को भारी हानि पहुँचाई और फिर प्रारम्भ हुआ ईस्ट इण्डिया काल अर्थात् ब्रिटिश की गुलामी का कड़वा सच। "फूट डालो शासन करो" एवं "जिस देश का इतिहास विनष्ट हो जाय वह राष्ट्र स्वतः नष्ट हो जाता है।" ऐसी नीति थी इस अंग्रेजी शासन की। ब्रिटिश संगीनों के सामने हमारा स्वाभिमान लगभग कुंठित हो गया था। अंग्रेजों ने हमारी शिक्षा व इतिहास को बिगाड़ दिया था। स्वतंत्रता संग्राम काल में किसी कवि ने ठीक प्रेरणा दी थीः-

"जिस कौम को स्वयं पर अहसास नहीं होता ।
उस कौम का कभी कोई इतिहास नहीं होता ।।

ऐसी भयावह विषम परिस्थिति में ब्रिटिश की संगीनों के मुँह फिरा देने वाले पाप-पाखण्डियों के ढोल की पोल को खोल देने वाले,वेदों का डिण्डिम उद्घोष करने वाले महर्षि दयानंद का जन्म पूर्व गुजरात के टंकारा नामक गाँव में सन् 1824 में हुआ। महर्षि दयानंद बचपन से ही तार्किक व स्वतंत्र विचारों के आदर्श व्यक्ति थे उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन स्वराज्य प्राप्ति व वेद प्रचार हेतु समर्पित कर दिया। महर्षि दयानंद ने साहित्य माध्यम से वाक् माध्यम से व परम्परा माध्यम से स्वतंत्रता की अग्नि को प्रज्ज्वलित किया।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पुरोधाः-

महर्षि दयानन्द के चरित्र से ज्ञात होता है कि तीव्र विद्या-पिपासु दयानन्द को स्वामी विरजानन्द का पता सन् 1856 में लगता है, लेकिन वे उनके पास 1860 में पहुँचते हैं। यह विलम्ब क्यों? क्या कभी आपने सोचा? अरे यही तो प्रत्यक्ष प्रमाण है कि महर्षि का यह गुप्त काल स्वतन्त्रता संग्राम में बीता ऋषि का स्वलिखित चरित्र भी इन तीन वर्षों पर मौन है। चरित्र के अनसार इस काल में उनके भ्रमण का क्षेत्र कानपुर के आस-पास रहा है। उस समय उक्त क्रान्ति की गुप्त तैयारी की जा रही थी। वैसे भी दयानन्द की आयु उस सयम 36 वर्ष की थी और यह आयु स्वभावतः ही उग्रता को पसन्द किया करती है। वीर विनायक दामोदर सावरकर की पुस्तक "1857 का स्वतन्त्रता समर" के अनुसार उक्त क्रान्ति फैलाने में सभी मतों के साधुओं का सक्रिय योगदान रहा है। धर्मयुग 8 मई 76 के बादूमियां के लेखानुसार स्वतन्त्रता संग्राम की विफलता के उपरान्त नानाजी को दयानन्द ने सन्यास देकर दिव्यानन्द नाम से आगामी अनुकूल काल की प्रतीक्षा करने को कहा था अन्यथा नानाजी आत्महत्या कर लेते।

साहित्य के माध्यम से स्वराज्य बिगुलः-

महर्षि दयानन्द आर्यावर्त की तत्कालीन स्थिति देखकर तिलमिला उठे और उनका हृदय विदीर्ण हो गया। स्वामीजी ऋग्वेद के प्रेता जयतो नरः इन्द्रो-मन्त्रानुसार भारतवासियों को उनके गौरव से परिचित कराते हैं। वे अतीत की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं-- "जो आर्यावर्त देश से भिन्न देश है वह दस्यु तथा मिलेच्छ देश कहाते हैं,-- अब अभाग्योदय से आर्यों के आलस्य प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो क्या कहनी किन्तु स्वयं आर्यावर्त देश में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है, वह विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है। -- कोई कितना भी कहे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि होता है।

इसी प्रकार आगे स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में अंग्रेजों की "फूट डालो शासन करो" की नीति का विरोध करते हुए लिखते हैं-- विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने के कारण-- जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

लार्ड नार्थ बुक को ललकारः-

जनवरी सन् 1973 में इंग्लैड के लार्ड विशप ने वायसराय व स्वामीजी की भेंट का आयोजन किया। स्वामीजी ने वार्ता के अन्त में वायसराय व नार्थबुक को ललकारते हुए कहा था- "मेरे देशवासियों को अबाध, राजनैतिक उन्नीत व संसार के राज्यों के समानता दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। नार्थबुक ने यही वार्ता समाप्त कर दी और भारतीय कार्यालय लन्दन को उसने पूर्ण विवरण देते हुए लिखा कि इस विद्रोही फकीर पर दृष्टि रखने की आवश्यकता है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने वाले प्रथम पुरुषः-

हिन्दी के प्रचार व स्वरूप को यदि किसी ने प्रथम बार राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया तो वह एकमात्र स्वामी दयानन्द थे। स्वामी दयानन्द गुजराती भाषा के पूर्व पंडित थे तथा उनकी मातृभाषा भी गुजराती थी। अपने जीवन में उन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे किन्तु लिखे सभी आर्यभाषा हिन्दी में ही। गुर्जर भाषा में एक भी नहीं लिखा।

हरिद्वार में एक दिन अनेक लोगों ने स्वामी जी से अपने ग्रन्थों का गुजराती,पंजाबी आदि भाषाओं में अनुवाद कराने को कहा तो स्वामी जी ने उत्तर दिया- "दयानन्द के नेत्र तो एक दिन देखना चाहते हैं कि जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक, और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त भर में भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए अपने सकल ग्रन्थ आर्यभाषा में लिखे व प्रकाशित किये हैं"।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि जी का यह दृढ़ विश्वास था कि हिन्दी भाषा ही सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सकती है।

रियासतों में जागरणः- महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य प्राप्ति हेतु रियासतों में स्वाधीनता का मन्त्र फूँका। वे नानाजी के गुरु थे। स्वामीजी ने राव कर्ण सिंह जैसे अभिमानी राजाओं को भी सबक सिखाया। जोधपुर नरेश वेश्यावृत्ति के रोगी थे, एक दिन स्वामी जी ने यह भेद जान लिया और राजा को धर्मशिक्षा में कहा- महाराज राजसिंह के सदृश होता है, वह दर-दर भटकने वाली कुतिया का सेवन कदापि नहीं करता। इस प्रकार स्वामी जी महाराज को इस रोग से मुक्ति द किन्तु स्वयं को इस काण्ड का को बनना पड़ा। इसी प्रकार महर्षि एक दिन जोधपुर रियासत में व्याख्या दे रहे थे जो कुरान की आलोचन के सम्बन्ध में था। इस भाषण को सुनकर फैजुल्ला खाँ के तन-बदन में आग लग गई। वह बहुत ही चिढ़कर बोला- स्वामी जी यदि मुगलों का राज्य होता तो वे आपको जिन्दा न छोड़ते सो उस समय आप ऐसे भाषण न दे पाते। स्वामी जी ने खाँ महाशय को धीरे से उत्तर दिया- यदि ऐसा होता तो मैं कभी थरथराहट में न आता अपितु दो चार राजपूतों की पीठ ठोककर विरोधियों के छक्के छुड़ा देता।

स्वातन्त्र्य वीरों के प्रेरणास्पदः-

महर्षि दयानन्द स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रेरणा स्रोत थे। इस तथ्य को स्वयं इतिहास कारों ने स्वीकारा है। कांग्रेस इतिहास लेखक ने लिखा है कि स्वतन्त्रता संग्राम में 80 प्रतिशत आर्य समाजी थे। स्वामी जी गांधी, सुभाष, बालपाल व लाल इत्यादि अनेक सेनानियों के ज्योति स्तम्भ थे।

— शेष पृष्ठ ८ पर

प्रभात आश्रम से

वशिष्ठ सं० "कालचक्र आर्य पंचांग"

-4-

प्रकृति का एक सामान्य नियम है कि "प्रत्येक क्रिया की ठीक विपरीत दिशा में ठीक उतनी ही प्रति-क्रिया होती है।" मतमतान्तर, समाज संस्कृति, राजनैतिक उत्थान-पतन आदि प्रत्येक क्षेत्र में ऐसा ही देखा जाता है अपवाद वहाँ होता है जहाँ कोई चेतन-शक्ति उस क्रिया को अपनी छाती पर सहनकर उसे निष्क्रिय बना देती है।

समाचारों के अनुसार अयोध्या में रामजन्म भूमि स्थल पर "कारसेवकों ने प्रबल शासकीय विरोध के होते हुए भी दो घण्टों तक कारसेवा पूर्व निर्धारित समय पर आरम्भ कर, जारी रक्खी। विवेकानंद ही नहीं संसार के अनेक प्रबुद्ध लेखकों ने इस हिन्दू जाति को कोमल, मृदु, सहिष्णु जैसे शब्दों से विभूषित किया है और इसके ऊपर आक्रामकों ने भी इसे इसी भाव से परन्तु डरपोक, दाल-भात खाने वाले, धोती धारी जैसे तिरस्कृत शब्दों से पुकारा है।

प्रश्न यह नहीं है कि कहाँ से आ गई इस जाति में इतनी प्रति-शोधात्मक शक्ति? यह तो ऊपर के नियम से ही स्पष्ट है। गुरुरामदास, गुरुतेग बहादुर, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, अरविन्द घोष, तिलक, गाँधी, श्रद्धानंद, हैगडेवार, सुभाष आदि की पीढ़ी के लोगों में वही प्राकृतिक नियम तो झलकता है। प्रश्न यह है कि इस प्रतिक्रिया और पुन क्रिया-प्रतिक्रिया की परिणिति कहाँ होगी? क्या भारत की मस्जिदों-गिरजाघरों को ढाकर, मुसलमानों को कत्ल करके, उनके धार्मिक साहित्य को जलाकर ? नहीं-नहीं ऐसा नहीं होना चाहिए और हमारा यह विश्वास है कि जब तक इस तथाकथित मृदु हिन्दू में अपने ऋषि-मुनियों-तपस्वियों के पवित्र रक्त का किंचित भी अंश है ऐसा नहीं होगा।

परन्तु दूसरी ओर से भी तो नई नई उत्तेजक दुष्क्रियायें नहीं होनी चाहिएँ। मन्दिरों से पहले मस्जिदों पर लाउड स्पीकर लगाये गये, ताजियों के मार्ग के लिये पीतल · काटे गये, हिन्दुओं को मुसलमान बरबस अब तक बनाया जाता रहा। ये सब बातें सभी जानते हैं। हमें चिन्ता है तो यह कि हिन्दुओं का पहले वाला हिन्दू स्वरूप कैसे सुरक्षित रह सकेगा। एक प्रयत्न तो शताब्दियों पूर्व से चल रहा है। वह है हिन्दुओं का संगठन। हम समझते हैं कि इस में किसी भी अहिन्दू को बाधक नहीं बनना चाहिये। यदि कोई बाधक बना तो उसी की हानि है।

दूसरा प्रयत्न अहिन्दुओं की ओर से होना चाहिए। क्या पचास सौ या अधिक से अधिक एक हजार वर्ष पूर्व आप हिन्दू नहीं थे यदि थे तो फिर क्यों अब आप हिन्दू नहीं हो सकते।। शम्सुद्दीन "धर्म भानु" {शम्स =सूर्य, दीन= धर्म} अल्ला हो अकबर "महेश्वर" {अल्ला= ईश्वर, अकबर=महान} क्यों नहीं हो सकते।' पौधा पत्तों को सींचने से नहीं जड़ को सींचने से फलता फूलता है। सन् 1919 ई० में यदि दिल्ली के मुसलमानों ने सार्वजनिक एकता की परवाह न करके ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकानी आरम्भ न की होती और दिल्ली की जामा मस्जिद से उदबोधित वेद मंत्रों के उच्चारण को अन्य मस्जिदों से भी सुनने की सहिष्णुता दिखाई होती तो ना पाकिस्तान बनता और न अयोध्या का विवाद उठता।

आओ, समय की माँग है कि अहिन्दुओं के परिवार के परिवार गाँव के गाँव मण्डल के मण्डल हिन्दु बनने की होड़ लगा दें। और हिन्दू संगठित रूप से अपनी ऋषि परम्परा की जीवन शैली पर मनन कर समाज में उसे पुर्नस्थापित करने में अपना जीवन साफल्य समझें। □

अन्तर्दाह

• पद्मा "साधिका"
73 साकेत, मेरठ।

हृदय भरा है गहन शोक से, पर आँखों में अश्रु नहीं,
क्रूर दानवी कृत्यों के, वर्णन को हैं शब्द नहीं।
हिन्द देश में, हिन्दू जन को, हिन्दू ने ही मरवाया,
किन्तु राम के भक्तजनों ने, नहीं किसी पर हाथ उठाया ।।

हे। बलिदानी राम दुलारो, तुम्हें हमारे कोटि प्रणाम,
व्यर्थ नहीं जाएगा वीरों, दिया है तुमने जो बलिदान।
राम शिलाएँ बन कर तुम तो, नींव बने हो मन्दिर की,
रामार्पण लेकर के तुमने, निधि पायी है जीवन की।।

स्वर्णिम शब्दों में अंकित, होगी यह भीषण गाथा,
मन्दिर में जाने वाला, हर भक्त झुकाएगा माथा।
जहाँ राम का मन्दिर होगा, वहीं तुम्हारा अभिनन्दन,
राम लला से पहले होगा, उनके भक्तों का वन्दन ।।

कैसी हृदय विदारक घटना, घटी राम की नगरी में,
ज्यों रावण ने ऋषि-रक्त, एकत्र किया था गगरी में।
उसी भाँति भक्तों का शोणित, यों ही व्यर्थ न जाएगा,
आज नहीं तो कल यह अपना, निश्चित रंग दिखाएगा।।

तीस अक्टूबर का वह दिन, खूनी माना जाएगा,
काले पृष्ठों पर अंकित, इतिहास में, जाना जाएगा।
अत्याचारी आकाओं ने, खेला खेल घिनौना है,
नादिरशाही बर्बरता को, बना गया जो बौना है।।

लगता था भारत में जैसे, कोई हमलावर आया,
पूर्व काल में लूट मचाने, था जैसे बाबर आया।
कत्ले आम किया दुष्टों ने, नादिरशाही झेंप गई,
अंधा-धुन्ध गोली बारी से, कितनी जानें खेप गईं।।

अवधपुरी में कालनृत्य पर, हाहाकार मचा भारी,
ऐसा दारुण दृश्य देखकर, हतप्रभ थी जनता सारी।
हत्यारों ने बेचारों से, रक्तिम होली खेली है,
तानाशाही शासन की, सीने पर गोली झेली है।।

अपने घर में, अपनों द्वारा, अपनों पर यह अत्याचार,
देश-धर्म पर मिटने वालों, का इतना भीषण संहार।
नहीं विश्व में कहीं मिलेगी, क्रूर कर्म की एक मिसाल,
विवश पुकारा महाकाल को, वही बनेंगे इनका काल।।

माताओं से बेटे छीने, बहनों से उनके भाई,
बच्चे के बापू मरवाए निर्लज्जों को लाज न आई।
माँगों के सिन्दूर पुँछे, माथे की बिंदिया खोई,
रक्त-रंजित भारत माता, फूट-फूट कर रोई।।

यह शक्ति और साधन तो, पंजाब बचा सकते थे,
आग लगी है कश्मीर में, उसे बुझा सकते थे।
किन्तु यहाँ चिन्ता है किसको, राष्ट्र-धर्म- मर्यादा की,
वोट-नोट की नीति यहाँ है, चिन्ता केवल सत्ता की।।

राम-कृष्ण-शिव ही तो अपने भारत की पहचान हैं,
इन सबका ही पूजन करना, भारत का सम्मान है।
ज्ञात नहीं भारत का मानव, पहले शीश झुकाता है,
पद-सत्ता-सम्मान सभी कुछ, फिर प्रसाद में पाता है।।

दुखिया माताओं की आहें, बहनों की अनगिन दुरशीष,
यहीं मिलेगा दण्ड सभी को न्याय स्वयं करता है ईश।
क्रूर-कुकर्मी हत्यारों को, रोने वाला कोई न हो,
वंश नष्ट हो जाए इनको, ढोने वाला कोई न हो।।

श्री देवीदत्त छिम्वाल का निधन

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं आर्यसमाज रामनगर के पूर्वप्रधान तथा नैनीताल के पूर्व विधायक श्री देवीदत्त छिम्वाल का 20 नवम्बर 1990 को एक माह की लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। श्री छिम्वाल आर्यसमाज के लिये समर्पित थे उनके दादा श्री गंगादत्त छिम्वाल ने नैनीताल आर्यसमाज की स्थापना हेतु अपने निजीभवन का एक भाग भी 1874 में परोपकारिणी सभा को दान किया था जो 1875 में आर्यसमाज कहलायी। श्री छिम्वाल अपने पीछे 3 पुत्र एवं भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

आरक्षण का प्रश्न

• पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी

175 जयनगर, जबलपुर (सिटी)

आरक्षण का मूल आधार तो यह था कि भारत में कुछ वर्गों के लोगों को शिक्षा और बराबरी की समुचित सुविधा नहीं मिली है इसीलिये वे पिछड़ गये हैं अतएव उनको दूसरे वर्गों के समकक्ष लाने के लिये सरकार को दस वर्ष लगेंगे और इन दस वर्षों में पिछड़े वर्गों के लोगों को कुछ विशेष सुविधायें दी जायें। उन वर्गों को तेजी से दूसरों के समकक्ष लाने का विचार तो पीछे छूट गया, यदि न छूटता तो दस वर्षों का काम क्या चालीस वर्षों में भी पूरा न होता। सरकारों व दलों तथा उनकी नीतियों व कार्यों का पर्दाफाश करने वाला इससे दूसरा और क्या उदाहरण हो सकता है। दलों व सरकारों तथा पिछड़े वर्गों के नेता लोग तो उन सुविधाओं का लाभ उठाने और बन्दर बाँट करने में जुट गये मैं तुम्हें सुविधायें और आरक्षण देता हूँ तुम मुझे वोट दो। मैं तुम्हारी जाति को ऊपर उठाने का शोर तो बहुत मचाऊँगा और तुम्हारे द्वारा ही रुपया भी खूब खर्च करूँगा पर तुम्हारे वर्गों का पिछड़ापन मिट जाय यह न तो तुम्हारे हित में होगा न हमारे हित में। यह तो फूट डालो और राज करो की नीति है। अतएव हम इन वर्गों की संख्या निरन्तर बढ़ाते रहेंगे कभी हरिजन कभी अनुसूचित जाति कभी अनुसूचित जनजाति कभी अल्पसंख्यक कभी पिछड़े वर्ग कभी शिक्षित रूप से पिछड़े कभी आर्थिक रूप से पिछड़े कभी कृषक कभी ग्रामवासी और कभी बनवासी या गिरिजन आदि। हम इनमें नाना फर्क कर देंगे। न तो इन्हें कभी केवल भारतवासी के रूप में एक होने देंगे न कभी इनके वर्गों का पिछड़ा पन दूर होने देंगे। आधार तो कहने को है शैक्षणिक रूप से पिछड़ा पन या आर्थिक रूप से पिछड़ा पन, परन्तु हम कभी भी इन दोनों को मूलाधार नहीं बनाएंगे हम तो जाति को ही आधार बनाएंगे ताकि सभी सुविधाओं का लाभ वही लोग उठा सकें जो इन जातियों में भी पिछड़े नहीं हैं जो शिक्षित हैं सरकारी अफसर हैं संसद या विधान सभा सदस्य हैं और मंत्री हैं क्योंकि वही तो हमारे सहायक हैं जाति का आधार हटा देने से इनको सुविधायें मिलना बन्द हो जाएँगी। वस्तुतः इन जातियों में भी केवल उन्हीं लोगों को आरक्षण की सुविधायें मिलनी चाहिए जो उनमें शैक्षिक या आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हों, जैसे जो नान ग्रेजुएट हों और जिनकी आमदनी बारह हजार रुपये वार्षिक से कम हो।

शैक्षणिक पिछड़ापन दूर करने के लिए उनके सभी लड़कों व लड़कियों के लिए 20 वर्ष की आयु तक शिक्षा बिल्कुल मुफ्त क्यों नहीं की जाती। उन्हें छात्रावास, भोजन, पुस्तकें, फीस, कपड़े इत्यादि सभी मुफ्त मिलें, छात्रवृत्ति भी मिलें। फिर उन्हें व्यवसाय भी मिले। केवल सरकारी नौकरियों नहीं स्वतंत्र व्यवसाय, ताकि वे पूर्ण सम्मान से जीवन बिता सकें। इस प्रकार सभी पिछड़ी जातियों का पिछड़ापन दस वर्षों में दूर किया जा सकता है नहीं तो आगे भी पचास वर्षों तक नहीं। झूठे व कभी न पूरे होने वाले वादे किए जाते रहेंगे। और फूट डालो तथा राज करो की नीति जारी रहेगी। क्या यही प्रजातंत्र है।

एक दूसरा प्रश्न है कि कितने प्रतिशत आरक्षण किया जाय इसका सीधा उपाय है कि उस जाति की जनसंख्या का जो अनुपात हो उसका आधा प्रतिशत। यदि किसी जाति की जनसंख्या 50 प्रतिशत है तो उसे 25 प्रतिशत आरक्षण मिले। इस तरह चाहे सभी जातियों को भी आरक्षण का लाभ दिया जाये आरक्षण किसी भी हालत में 50 प्रतिशत से अधिक न होगा। अर्थात् आधी नौकरियां खुली प्रतियोगिता के लिए भी रह जाएँगी कि उन्हें चाहे जिस जाति या वर्ग का व्यक्ति अपनी योग्यता के आधार पर ले जाय।

तीसरा प्रश्न है कि आरक्षण कब तक। इसके दो उपाय हैं एक तो ऊपर बताए सभी जातियों या वर्गों को कुल मिलाकर 50 प्रतिशत तक नौकरियों में संरक्षण मिले। या उस जाति के आरक्षण योग्य अयोग्यता के आधार पर क्रमशः घटते हुए अनुपात में तब एक दिन घटते घटते यह आरक्षण स्वयं समाप्त हो जायेगा। पर यहाँ तो सदैव आरक्षण घटाने के बजाए उसे बढ़ाने के ही उपाय किये जा रहे हैं। इससे वर्ग संघर्ष बढ़ेगा और खूनी संघर्ष या क्रान्ति भी हो सकती है। शायद साम्यवाद लाने का यही एक उपाय बचा है। □

पृष्ठ ६ का शेष.....

महान सेनानी श्याम जी कृष्ण वर्मा के शब्दों में- "मैंने राष्ट्र समाज व जाति की जो सेवा की है उसका श्रेय स्वामी दयानन्द को है"।

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के शब्दों में- "स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे"। देवता स्वरूप भाई परमानन्द के शब्दों में- "मैं महर्षि दयानन्द का अनुयायी कहलाने में गर्व अनुभव करता हूँ।"

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के शब्दों में:- "स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं- मैंने संसार में मात्र उन्हें ही गुरु माना है"।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य प्राप्ति हेतु जो योगदान दिया ऐसा उदाहरण अन्यत्र मिलना कठिन है। और वास्तव में महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के महान प्रयास के द्वारा ही भारत 15 अगस्त 1947 को स्वाधीन हो सका। □

● "जिसका जितना ज्ञान और जितनी प्रतिष्ठा अधिक हो उसको अपराध में उतना ही अधिक दण्ड देना चाहिये। शूद्र को सब से कम और ब्राह्मण को सबसे अधिक दण्ड देना चाहिये।"

● "अज्ञानियों के सहस्रों, लाखों करोड़ों मिल के जो व्यवस्था करें उसको कभी न मानना चाहिये।"

संस्कृत की उपेक्षा क्यों?

- डॉ० कैलाश चन्द्र

सी-285, प्रशान्त विहार,
दिल्ली।

सरकार द्वारा संस्कृत की घोर उपेक्षा की जा रही है। संस्कृत भारत की आत्मा है। भारतीय संस्कृति का आधार है। कम से कम 5000 वर्षों से निरन्तर सब प्रकार के साहित्य एवं विज्ञान की समस्त विधाएं संस्कृत माध्यम से ही पुष्पित पल्लवित होती रहीं। भारत की समस्त भाषाएं संस्कृत से जीवन रस प्राप्त करती रहीं। दक्षिण पूर्वी एशिया के सभी देश संस्कृत की शब्दावली से ही अपनी भाषाओं को सजाते संवारते रहे हैं। 19 वीं शताब्दी में यूरोप की भाषाओं में नवीन क्रान्ति का संचार संस्कृत से ही हुआ। इसीलिए तो 150 वर्षों से यूरोप के विद्वान् एशिया के देशों में संस्कृत के व्यापक प्रभाव की खोज में लगे हुए हैं। उन्हीं की खोजों के कारण ही तो भारतीय विद्वानों को भी पता चला कि चीन का सम्पूर्ण साहित्य संस्कृत ग्रन्थों के अनुवादों पर ही आधृत है। मंगोल, तिब्बत में संस्कृत की पूजा है। जापान, कोरिया में संस्कृत मन्त्रों से आराधना की जाती है। और कोरिया, जापान की लिपियाँ भी संस्कृत के आधार पर ही निर्मित की गई है। यूरोपीय विद्वानों ने ही तो 13000 से अधिक संस्कृत शिलालेख केवल कम्बुज देश (कम्पूचिया) में खोजे जहाँ 800 वर्ष संस्कृत राजभाषा रही। उन्हीं ने तो थाई देश और इन्डोनीशिया के जन-जन में व्याप्त संस्कृत पर बृहत्काय ग्रन्थ लिखे। श्री खोन्डा द्वारा संस्कृत इन इन्डोनीशिया)। संस्कृत से ही भारत का गौरव बढ़ा। संस्कृत पढ़ने के लिए है। संस्कृत में रचे ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए संसारभर के देशों से विद्वान् नालन्दा आदि विश्वविद्यालयों में आकर पढ़ा करते थे, जिनके यात्रा वृतान्त भी अब इतिहास का आधार बन गए हैं।

संसार भर को सुसंस्कृत करने वाली संस्कृत, विश्वभर को विश्व कल्याण की ओर उन्मुख करने वाली संस्कृत, मानव संस्कृति के परिष्कार का मार्ग प्रशस्त करने वाली संस्कृत आज भारत में ही, भारतीय शासन द्वारा ही तिरोहित की जा रही है, मारी जा रही है।

समय आ गया है कि राष्ट्र की गरिमा को आघात पहुँचाने वाली तथा देश के मूलाधार पर ही चोट करने वाली नीतियों के विरुद्ध हम आवाज़ उठाएं। भारत माँ की इस विपदा के समय हम अपना कर्तव्य समझें। राष्ट्र की अखण्डता और भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिये प्राण-पण से जुट जायें। कहीं ऐसा न हो कि एक नागालैण्ड या बोडोलैंड ही नहीं दर्जनों ऐसे लैंडों में बंट कर भारत खण्ड-खण्ड हो जाये। □

✯ नागौर आर्यवीर दल का निर्वाचन

दलपति	- श्री निवास व्यास
प्रधान	- श्री शिवप्रसाद मिश्र
मन्त्री	- श्री सुरेश अटल
कोषाध्यक्ष	- श्री सन्तोष कुमार लोहिया

दयानन्द कीर्ति स्तम्भ निर्माण हेतु धन की अपील

महर्षि दयान्द सरस्वती शिला-निर्माण समिति भारत द्वारा हरिद्वार, ऋषिकेश, बद्रीनाथ, केदारनाथ, जोशीमठ, टिहरी, काशीपुर आदि स्थानों पर "दयान्न्द-कीर्तिस्तम्भ" नामक शिलालेख निर्मित करवाये जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में एक सूचना आर्यमित्र 4/11 नवम्बर के अंक में प्रकाशित भी हो चुकी है। मेरा समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं एवं आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि इस कार्य हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग प्रदान कर इस महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करायें जिससे आगे आने वाले समय में इतिहास का निर्माण होगा। धन महामन्त्री महर्षि दयानन्द शिला निर्माण समिति भारत, रामनगर (नैनीताल) के पते पर बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजा जा सकता है।

हरिद्वार शिला का शिलान्यास पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा के द्वारा जनवरी के तृतीय सप्ताह किये जाने की आशा है। काशीपुर कीर्तिस्तम्भ का शिलान्यास पूर्वसांसद श्री सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया द्वारा तथा उद्घाटन मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा सम्पन्न होगा।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कायमगंज का वार्षिकोत्सव दिनांक- 15 से 18 दिसम्बर 1990 को बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के सुविख्यात विद्वान सन्यासी महोपदेशक एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

दिनांक- 7 नवम्बर को श्री झंकार सिंह नजीबाबाद निवासी के यहाँ यज्ञ श्री सूर्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक द्वारा सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज सुन्दरी (बदायूँ)

प्रधान - श्री भजनलाल आर्य
मन्त्री - श्री प्रेमपाल आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री रामपाल आर्य

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो. हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक विष्णुस्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन 1988 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/-रुपये प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रु० में सौ प्रति भेजी जायेंगी।

पता - व्यवस्थापक वेद प्रचार मण्डल
60/13 रामजस रोड करौलबाग
नई दिल्ली-5

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन

दिनांक: १५-१६ दिसम्बर १९९०

उत्तर प्रदेश तथा राष्ट्र की असामान्य एवं अपरिहार्य गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के नियम सं० ८ (ए) के अन्तर्गत उक्त सभा के लखनऊ में सम्पन्न होने वाले १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन कर दिया गया है। अब सभा के उक्त अधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की परिवर्तित तिथियाँ सभा के नियम सं० ८ (ए) के अनुसार निम्न प्रकार घोषित की जाती हैं—

(१) वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन....
दिनांक १५ तथा १६ दिसम्बर १९९०
(शनिवार तथा रविवार)

(२) निर्वाचन परिणाम की घोषणा.... निर्वाचन की समाप्ति के बाद

समय तथा स्थान डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में यथा घोषित पूर्व कार्यक्रमानुसार।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या काण्ड

• भगवती प्रसाद सिद्धान्तभास्कर
जयपुर

श्री राम जन्मभूमि विवाद क्यों नहीं सुलझने पाया है।
क्योंकि सरकार ने ही इसको वोटों के लिये उलझाया है।।
सरकार की मुस्लिम तुष्टिकरण के कारण ही यह नीति है।
हिन्दुत्व विरोधी आरम्भ से ही बनी हुई यह रीति है।।
श्रीराम अयोध्या में जन्मे इतिहास से यही प्रमाणित है।
उनका मन्दिर बाबर से सहस्रों वर्ष पूर्व स्थापित है।।
बाबर द्वारा मन्दिर खण्डित कर जब मस्जिद बनवाई थी।
भीषण संग्राम हुआ था तब सहस्रों ने जान गंवाई थी ।।
फिर मन्दिर निर्माण हुआ, यवनों ने मस्जिद तोड़ी थी।
टूटी-फूटी दीवार एक गुंबज वाली ही छोड़ी थी ।।
इस खण्डहर को मस्जिद कहते पर नवाज न कोई पढ़ते हैं।
पर श्रीराम के मन्दिर में हिन्दु नित पूजा करते हैं ।।
इस धर्म युद्ध में जिन वीरों ने अपने प्राण गंवाये हैं।
वे मरे नहीं हो गये अमर उनके यश जग में छाये हैं।।
जब तक संसार में सूर्य-चन्द्र अपना प्रकाश फैलाएंगे।
"भास्कर" तब तक भारत के जन वीरों के यश गाएंगे ।।

बाल जगत

"वे बच्चे"

● अखिलेश कुमार "आर्य"

-आर्यसमाज कटरा
इलाहाबाद।

समय से जो पढ़ते लिखते हैं
हर कार्य समय से करते हैं
वे बच्चे आगे बढ़ते हैं।

सुभग और समृद्धि मार्ग पर
संतत अडिग जो पग धरते हैं
संयम-नियम के साथ चलते हैं
सत्य मार्ग से नहीं मुकरते
वे बच्चे आगे बढ़ते हैं।

माता-पिता-गुरु की सेवा
जो सत्य बोलत पाते मेवा
नहीं बहाना कभी बनाते
प्यार सभी से करते हैं
वे बच्चे आगे बढ़ते हैं।

ऊँच-नीच व छूआ-छूत से
अंहकार व घृणित कर्म से
हरदम इससे दूर रहते हैं
जो सद्धर्म सुभाव बरतते हैं
वे बच्चे आगे बढ़ते हैं।

देश, जाति, उत्थान हेतु जो
सदा समर्पित रहते आन
देश की अपने मर्यादा की
रखते हरदम सतत सम्मान
जो मानवता के पथ चलते हैं
वे बच्चे आगे बढ़ते हैं।

लघु कथा

आम का पेड़

• अखिलेश सिंह आर्य

सारे पत्ते पीले हो गये तो, क्या हुआ। यह कोई नई घटना तो नहीं, हर साल होता है। जब पतझड़ आता है, हर अंग का कायाकल्प हो जाता है।

पर बात यह नहीं, कि पत्ते पीले क्यों पड़ जाते हैं। बात समझ में आ गयी तब, जब आँगन में आम का पाँच साला पेड़ ठूँठ हो गया। जैसे कोई आभूषण व वस्त्र से विहीन नारी हो। चिड़ियों का वह चहल-पहल बन्द है। जब पत्ते डालों का साथ छोड़ गये, तो चिड़ियां किस पर भरोसा रखें। तब तक पत्ते थे चिड़ियाँ ही नहीं आदमी का हाथ भी धार्मिक कार्यों हेतु पत्तों पर लग जाते थे कल तक कुछ पत्ते थे। हवा रात में तेज बही, सारे के सारे पत्ते डाल से अलग हो जाना ही उचित समझे, शायद अब ये हवाओं के झोंके सहन नहीं कर पा रहे थे। हमें लगा जैसे हमारे प्रति इनका कोई हमदर्दी हो न हो क्यों?' सुबह शाम दोपहर प्रतिदिन इसके नीचे चारपाई डालकर कुछ गुन-गुनाता कुछ लिखता रहता। 'मन पसन्द है'।

वैसे तो सारा धरती के वृक्ष ही अच्छे लगते हैं। पर मन को आम का पेड़ बहुत भाता है। कुछ दिनों में सुकोमल पत्तियां, सुनहले इन्द्रधनुषी रंग में दिखाई दीं। मन को कुछ राहत मिली, "आह"। "कितनी सुन्दर है" ऐसे ही जब छोटा सा पाँच साल का निर्विकार "बालक होता है, कितना अच्छा लगता है। हर तरह से अनुपम फिर जैसे पत्तियां जवान होती हैं, सरसराहट, टूटना, लगना आदि दोष आ जाते हैं। वैसे मनुष्य में भी।

मन कोमल पत्तियों को देख अभिभूत हो गया। ◘

स्वामी आनन्द सरस्वती अस्वस्थ

आर्यसमाज मन्दिर मऊ में स्वामी-आनन्द सरस्वती जी अस्वस्थ होने के कारण अपना इलाज करा रहे हैं समाज के प्रधान श्री रामचन्द्र सिंह तथा आर्यवीरदल परि० गोरखपुर के मन्त्री श्री ओंकारनाथ जी उनकी देखभाल कर रहे हैं। आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी व मन्त्री श्री मानमोहन तिवारी ने स्वामी जी के स्वास्थ्य लाभ की प्रभु से प्रार्थना की।

- रामज्ञा "आर्यपुत्र"

एक कार सेवक की कलम से

- श्री वीरेन्द्र वीर जी निरीक्षक सभा बरेली मण्डल को राम कार सेवकों के साथ दि० ३० अक्टूबर को गिरफ्तार किया गया था, उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि उत्तर प्रदेश, म०प्र० गुजरात, बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र और महाराष्ट्र लोग बन्दी थे वहाँ कार सेवकों पर भयानक जुल्म ढाये गये उनका वर्णन करना कठिन है, जो हिटलर, नादिरशाह, औरंगजेब जैसे क्रूर शासकों ने अत्याचार नहीं किए, वह वर्तमान सरकार ने कर दिखाए।

दहेज रहित विवाह अभियान

कु० रेणु स्नातिका (कन्या गुरुकुल-हाथरस) का विवाह संस्कार इंजीनियर विश्वदीपक (उन्नाव) के साथ जनवरी १९९१ में "गुरुकुल आश्रम, बिठूर (कानपुर) में होगा। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कन्याओं से गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार दहेजरहित विवाह हेतु स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती, आर्यसमाज पिथौरागढ़ (उ०प्र०) को सचित्र विवरण भेजें।

आवश्यक सूचना

सभा के आर्य भजनोपदेशक प्रतियोगिता कार्यक्रम की तिथियाँ परिवर्तित होकर अब दि० १५ दिसम्बर १९९० दिन शनिवार मिति पौष कृष्ण १४ सं० २०४७ वि० की रात्रि को ८ बजे डी०ए०वी० कालेज लखनऊ में पहुँचना निश्चित करें।

-हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेशविभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा
५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

★ आर्यसमाज मलाही (चम्पारण)

प्रधान - श्री वैधनाथप्रसाद आर्य
मन्त्री - श्री जवहरप्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री विनोद कुमार आर्य

आदरणीय लेखक महोदय

आर्य जगत के शिरोमणि नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के प्रधान, अद्भुत वक्ता पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री-पं० प्रकाशवीर शास्त्री देश की उन महान विभूतियों में गिने जाते हैं, जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व ने राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गरिमा को बहुत ऊँचा उठा दिया था। ऐसे पुरुषरत्न को अपनी पावन धरती पर जन्म देना इस प्रदेश का सौभाग्य रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० का मुख पत्र "आर्यमित्र" उनकी पुण्यस्मृति में, आगामी दिसम्बर ९० में "प्रकाशवीर शास्त्री अंक" प्रकाशित करने जा रहा है। इस अंक में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बहु आयामी स्वरूप पर देश-विदेश के मान्य विद्वज्जनों। राजनीतिज्ञों तथा उच्चकोटि के सन्त पुरुषों के विचारों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में प्रकाशित की जायेगी।

आप उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित रहे हैं और उनके कृतित्व के प्रशंसक भी।

मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा, यदि आप उनके सम्बन्ध में अपने विचारों को मूर्तरूप देते हुए इस अंक में प्रकाशनार्थ मुझे भेजने की कृपा करेंगे।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

आर्य महासम्मेलन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियां जोरों पर लाखों की संख्या में आर्य जनता के दिल्ली पहुँचने की आशा

नई दिल्ली- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक विज्ञप्ति के अनुसार आगामी 23 से 26 दिसम्बर 1990 तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को विशाल पैमाने पर आयोजित करने की सभी बुनियादी तैयारियां की जा चुकी हैं। लाखों की संख्या में देश-विदेश से आर्य जनता के पहुँचने की आशा है जिसके लिए दिल्ली प्रशासन के 180 विद्यालयों तथा लगभग 100 आर्यसमाज मन्दिरों में आगन्तुकों के आवास की व्यवस्था हो चुकी है। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के कार्यकर्ता दिल्ली के मुख्य रेलवे स्टेशनों, अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डों आदि पर सम्मेलन में आने वाले लोगों का स्वागत तथा सम्मेलन स्थान के लिए मार्ग दर्शन करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर देश-विदेश के उच्च नेता तथा महानुभाव भी भाग लेंगे। वेद सम्मेलन का उद्घाटन पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डा0 कर्ण सिंह जी करेंगे। एक अन्य समारोह में जम्मू-काश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन के भाग लेने की भी स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समूची आर्य जनता से अपील की है कि इस विशाल कुम्भ से वैदिक विचार धारा के प्रचार-प्रसार को एक नई गति देने का संकल्प लेने के लिए अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।

आर्य महिला समाज द्वारा शिविर

श्रीमती इंदिरागाँधी के जन्मदिवस के उपलक्ष में रमाकालोनी (खण्डवा) आर्यसमाज स्कूल के प्रांगण में आर्यमहिला समाज की ओर से वृहद रोग निदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें नि शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, दवाईयों का वितरण पूर्ण स्वस्थ रहने के लिये चिकित्सकों द्वारा उपस्थित जनों को मार्गदर्शन दिया गया। इस शिविर में डा0 ए0के0 पटेल शिशु रोग विशेषज्ञ, डा0 एस0एल0-गुप्ता, डा0 डी0के0 गंधे, हृदयरोग विशेषज्ञ, डा0 आर0के0 मिश्रा नाक,कान गला रोग विशेषज्ञ, डा0 राजेश वर्मा चर्म रोग विशेषज्ञ, डा0 रसिलामिश्रा महिला रोग विशेषज्ञ, डा0 बसंत वर्मा शिशु रोग विशेषज्ञ ने अपनी सेवाएं दीं। साथ ही स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया और पुरस्कार वितरण करते हुए डा0 रसिला मिश्रा ने कहा कि स्वस्थ शिशु ही आने वाले भारत का नवनिर्माण कर सकते हैं।

प्रशासनिक अत्याचार सम्बन्धी तथ्यों का संग्रह

भारत के संविधान में नागरिकों को देश के एक भाग से दूसरे भाग में आने-जाने, अपने विचार व्यक्त करने, अपनी-अपनी मान्यताओं के साथ पूजापाठ करने आदि के मौलिक अधिकार प्राप्त हैं। इन अधिकारों का हनन वर्ष 1990 के अक्टूबर तथा नवम्बर महीनों में जितने व्यापक और उग्र रूप से श्रीराम कार सेवकों तथा साधारण नागरिकों के साथ शासन द्वारा हुआ है वह सभी के लिए चिन्ता का विषय है। रेल गाड़ियां बीच में रद्द कर दी गईं। जेलों और पुलिस थानों में मारपीट की गई, कारसेवकों का सामान तथा रुपया पैसा छीन लिया गया। समाचार पत्रों तथा संवाददाताओं को भी इस दमन चक्र से नहीं बख्शा गया। उत्तर प्रदेश शासन ने जिस बर्बरता का परिचय दिया, निहत्थे तथा अहिंसक श्रीराम कारसेवकों पर जिस निर्ममता से अश्रुगैस का प्रयोग तथा लाठीचार्ज किया और गोलियों की अंधाधुंध वर्षा की, शवों को पोस्टमार्टम कराए बिना गायब करा दिया, अथवा नदी में फिकवा दिया, उसकी मिसाल स्वतन्त्रभारत के इतिहास में नहीं मिलती।

इन अत्याचारों तथा अवैध दमन के तथ्य संग्रह करने के लिए केन्द्रीय श्रीराम कारसेवा समिति ने न्यायमूर्ति श्री गोपीनाथ जी (उ0प्र0 जस्टिस इलाहाबाद हाईकोर्ट) की अध्यक्षता में एक जाँच समिति की नियुक्ति की है। अत सभी नागरिकों एवं पाठकों से अनुरोध है कि उनकी अथवा उनके मित्रों की जानकारी में, रामभक्तों तथा साधारण नागरिकों के साथ देश में, तथा विशेषत अयोध्या व उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में, शासन तन्त्र एवं शासन द्वारा प्रेरित अराजक तत्वों द्वारा दुर्व्यवहार, अनुचित दमन, हिंसा,हत्या, नागरिकों के मौलिक अधिकारों के हनन तथा अन्य किसी गैर कानूनी कार्यवाही के जो तथ्य हों उनका (यथासम्भव) प्रमाणों सहित) तुरन्त इस पते पर भेजने की कृपा करें- केन्द्रीय श्रीराम कारसेवा समिति, संकटमोचन आश्रम (श्री हनुमान मन्दिर), सेक्टर-6, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110022

प्रजातन्त्र की रक्षा तथा स्वस्थ परम्पराओं को बनाए रखने की दृष्टि से इन तथ्यों का एकत्रित किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इनके आधार पर आवश्यक सहायता एवं क्षतिपूर्ति की व्यवस्था किए जाने का प्रयास किया जावेगा। जनता द्वारा प्राप्त सूचना जितनी तथ्यपूर्ण, प्रमाणिक, नाम, पता, स्थान, पीड़क अधिकारी का नाम व पद (यदि ज्ञात हो तो) का विवरण जितना विस्तृत होगा, समिति को आगे की कार्यवाही सुनिश्चित करने में उतनी ही अधिक सुविधा होगी।

अशोक सिंहल
महामन्त्री
विश्वहिन्दू परिषद

विजय लक्ष्मी पंडित का निधन

प्रसिद्ध राजनयिक, सामाजिक कार्यकर्त्री, उ0प्र0 की भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री तथा अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने वाली श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित का देहरादून में निधन हो गया। वे 90 वर्ष की थी और कुछ समय से अस्वस्थ चल रही थी।

सभाप्रधान श्री इन्द्रराज तथा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके निधन को राष्ट्र की अपूरणीय क्षति बतलाते हुए गहरा दुख प्रकट किया है तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट की है।

तुष्टीकरण की तस्वीर

• पूर्णप्रकाश मित्तल
बिजनौर

जगमोहन, काश्मीर का सूर्य बन,
घाटी रक्षा को आया था।
अलगाववादी हर ताकत को,
उसने धूल चटाया था ।।।
हालातों को बिनपहचाने,
आँखों के अन्धों ने,
काश्मीर के रक्षक को,
वापिस दिल्ली बुलाया ।
सुलझी गुत्थी काश्मीर की,
मित्रों फिर उलझाया ।।
हर बार हुआ ऐसा ही,
जब-जब भारत वीरों ने,
दुश्मन का गला दबाया।
तब-तब गद्दारों ने,
दबाव डाल,
उसको था छुड़वाया ।।
देश के दुश्मन खुश करने को,
क्यों तुष्टीकरण अपनाते हो।
भूल करी जो पृथ्वी सिंह ने,
क्यों उसको तुम दोहराते हो।।
हरकतों से जिसकी,
देश टूट रहा।
वही आज शासन तन्त्र में,
लगा पड़ा।।
यह भारी भूल, दूर हो कैसे।
प्रश्न, आर्यों के दिल में,
लगा पड़ा ।।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मैनपुरी- आर्यसमाज तथा स्त्री आर्यसमाज का 110वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 15 नवम्बर से 5 दिन सामवेद पारायण वृहत् यज्ञ समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज, स्वामी वेदानन्द जी महाराज, आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य निरीक्षक श्री ध्रुवपालसिंह जी "अटल", पं0 वेदपाल जी आर्य आदि सन्यासी नेता एवं भजनीक पधारे। स्थानीय जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७६

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
पौष कृष्ण-८ संवत् २०४७ वि०
दिनांक: ९ दिसम्बर १९९०
दूरभाष २४५९९२

सेवा में-

स्वास्थ्य-सुधा

समस्या - रामेश्वर लाल जी लाहोरी अहमदाबाद के उद्योगपति एवं आर्य सदस्य हैं। इनको अचानक हार्ट-अटैक हुआ और इलाज चल रहा है। आपका परामर्श अपेक्षित है।"

- डा० नागेन्द्र मित्र, गुरुकुल अयोध्या।

समाधान- अर्जुनिन (चरक फार्मेसी) की गोली हर भोजन बाद लेकर अर्जुनारिष्ट दो ढक्कन समानजल के साथ पिया करें। धूप में नीलीकाँच- बोतल में रखा हुआ पानी पिया करें। भोजन में सिंघाड़ा या इसका आटा किसी भी रूप में खाना लाभकारी है। घी में हींग की छौंक लगावें। हल्का सुपाच्य भोजन व फलाहार ठीक रहेगा। दो-मास के बाद पुनः परामर्श लेवें।

--

(2)

समस्या-" मैं 1986 ई० से मधुमेह का मरीज हूँ तथा ब्लडसुगर 130-140 के लगभग रहती है। पेशाब दिन/रात में अधिक आता रहता है तथा कमजोरी काफी महसूस होती है, पहले जैसा जोश-खरोश-उमंग नहीं है।"

-प्रेमनारायण शर्मा, 99 सागर गेट-झाँसी

समाधान- त्रिफलाचूर्ण 100 ग्राम, जामुन की गुठलियों की मींगी 50 ग्राम, बिनौले की मींगी 50 ग्राम, बेल के सूखे पत्ते 50 ग्राम, नीम की सूखी पत्तियाँ 30 ग्राम, रसौत 30 ग्राम और कचूर 30 ग्राम- सभी को कूट-पीस- छानकर शीशी में रखें। यह मधुमेह नाशक चूर्ण 3 ग्राम प्रातः व सायं जल से लेवें। इसके तुरन्त बाद बसन्तकुसुमाकर रस एक रत्ती एक प्याला दूध में मिलाकर पियें। मधुमेह ठीक होजाने पर चूर्ण का सेवन बन्द करके बसन्तकुसुमाकर रस का सेवन कम से कम दो मास तक जारी रखें। उपचार काल में मिठाई-लालमिर्च-तले पदार्थ से बचें। चना मिला गेहूँ आटा का सेवन लाभकारी है। प्रातः खाली पेट कमवार - भुजंगासन, उत्तानपादासन, मत्स्येन्द्र आसन व शवासन किया करें।

समस्यापत्र के साथ तीन बन्द डाक-लिफाफे भेजना चाहिये।

-गुरुकुलानन्द सरस्वती

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) पौष कृष्ण-१४ रविवार संवत् २०४७ वि दिनांक. १६ दिसम्बर १९९० (घोषणा पत्र सं. ७/२७-३-८५)



समानी मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि।।

हों विचार समान सबके चित्त
मन सब एक हो
ज्ञान देता हूँ बराबर योग्य
पा सब एक हों

हों सभी के मन तथा संकल्प
अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे
बढ़े सुख सम्पदा।।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्र देव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :

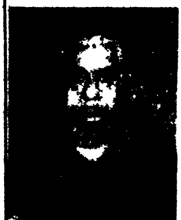
आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू. ३०/
एक प्रति	१ रू मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक . ४९

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न

आगामी वर्ष के लिए पुनः सर्वसम्मति से श्री पं० इन्द्रराज प्रधान एवं श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री निर्वाचित

आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने का संकल्प



श्री पं० इन्द्रराज
सभा प्रधान



श्री मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का 105वाँ वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन दिनांक- 15 तथा 16 दिसम्बर, 1990 को डी०ए०वी० कालेज, लखनऊ के प्रांगण में बड़े ही उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। प्रदेश के कोने-कोने की आर्यसमाजों से भारी संख्या में पधारे हुए प्रतिनिधियों ने राष्ट्र के समक्ष उपस्थित गम्भीर चुनौतियों के संदर्भ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा दिनांक- 23 से 26 दिसम्बर 1990 तक आयोजित आर्य महासम्मेलन की महत्ता को अनुभव करते हुए इसे सफल बनाने का एकमत से संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रदेश की समस्त आर्य जनता से तन-मन-धन से सहयोग देने तथा लाखों की संख्या में उपस्थित होकर सम्मेलन को सफल बनाने की अपील की गई।

प्रतिनिधियों ने **रामजन्मभूमि** एवं तथाकथित बाबरी मस्जिद प्रकरण पर अपने जोरदार विचार प्रकट करते हुए कहा कि **मर्यादा पुरुषोत्तम राम** राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक हैं जबकि बाबरी मस्जिद दासता का चिन्ह है। अत यह सभा रामजन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन हेतु चलाए जा रहे आन्दोलन को अपना पूर्ण सहयोग व सक्रिय समर्थन देती रहेगी।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा अरुण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ - पौष कृष्ण - १४, संवत २०४७ वि.
दिनांक १६ दिसम्बर १९९०, दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

सत्य को स्वीकारते हमारे मुस्लिम भाई

अयोध्याविवाद ने राष्ट्र में एक खतरनाक मोड़ ले लिया है और देश में साम्प्रदायिक तनाव बढ़ता ही जा रहा है। पाकिस्तान इसे तूल देकर भारत की प्रतिष्ठा को मुस्लिम देशों की नज़रों में गिराना चाहता है। वास्ताविकता और सच्चाई को नज़रन्दाज़ किया जा रहा है जिसका परिणाम हमें बहुसंख्यक जनता द्वारा हिन्दूराष्ट्रवाद के प्रति बढ़ते हुए मोह के रूप में दिखाई दे रहा है। कुछ साम्प्रदायिक तत्व इस मसले को उलझाए रखना चाहते हैं क्योंकि इसमें उनको अपना वोट बैंक सुरक्षित एवं अपनी प्रतिष्ठा मुस्लिम समाज में बढ़ती हुई दिखाई पड़ सकती है। यही कारण है कि एक छोटी सी समस्या को इतना बड़ा बनाया जा रहा है। वैसे यह समस्या न इतनी बड़ी है और न ऐसी जो सुलझाई न जा सके। इस देश में मुसलमानों के पास न मस्जिदों की कमी है और न उनके नित नये बनते जा रहे उपासना स्थलों पर किसी ने विरोध प्रकट किया है। अयोध्या की उक्त तथाकथित बाबरी मस्जिद पर कभी न तो नमाज़ पढ़ी गई और न उसे मस्जिद के रूप में कबूल किया गया। अलबत्ता हिन्दुओं की पूजा अर्चना गत 50 वर्षों से भी अधिर्क समय से वहाँ होती चली आ रही है। जिसके लिए प्रमाण देने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि पूजा अर्चना करने के लिए अदालती आदेश मिला हुआ है।

हमारे विवेकशील राष्ट्रभक्त मुसलमान इस सत्य को स्वीकारने लगे हैं। विधानसभा, उ०प्र० के पूर्व अध्यक्ष श्री नियाज़ हसन ने बाबरी मस्जिद के विवादित ढाँचे को भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री-लालकृष्ण आडवाणी के सुझावानुसार स्थानान्तरित कर देने के सुझाव का समर्थन किया है। कांग्रेस के ही एक अन्य नेता श्री सईदुल हसन ने, जो पार्टी की अल्पसंख्यक सेल के संयोजक हैं कहा है- "कि यदि कार सेवा शुरु नहीं की जाती तो मुसलमानों को स्वयं उस स्थल पर मन्दिर निर्माण करना चाहिए"। इसी प्रकार कांग्रेस के एक वरिष्ठ केन्द्रीय नेता श्री बसन्त-साठे ने " दी इकानामिक टाइम्स" को दिए गये साक्षात्कार में कहा है "कि मुसल्मानों को तथाकथित बाबरी-मस्जिद हिन्दुओं को सौंप देनी चाहिए। एक अन्धा आदमी-- अन्धा जज भी उसके ढाँचे को देखकर कह सकता है कि पहिले यह एक हिन्दू ढाँचा था।" श्री साठे अयोध्या मसले पर पार्टी के प्रमुख सलाहकार हैं। इन सभी अभिव्यक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस व्यक्ति ने भी उक्तस्थल को देखा है और वह पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं है तो उसके लिए राममन्दिर निर्माण के पक्ष में अभिमत व्यक्त करने के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है।

अब एक ऐसी तकनीक विकसित हो गई है कि किसी भी भवन को बिना कोई क्षति पहुँचाए उसी स्थिति में दूसरे स्थानों पर स्थानान्तरित किया जा सकता है। पाकिस्तान में सैनिक छावनी का विस्तार करने, सऊदी अरब में सड़क निर्माण करने, और संयुक्त अरब आमीरात में अस्पताल बनवाने के लिए मस्जिदें हटाई गई हैं। कुछ समय पूर्व आन्ध्र प्रदेश में प्राचीनकालीन अनेक मन्दिर एक सुरक्षित जलाशय बनाने के लिए स्थानान्तरित किए गये।

मन्दिर और मस्जिद दोनों ही ईश्वर की उपासना के स्थल हैं। यदि राम का जन्म इस स्थान पर न हुआ होता और मन्दिर को ध्वस्त करके यदि इस तथाकथित बाबरी मस्जिद का निर्माण न किया गया होता तो हिन्दू कभी भी इस स्थल पर मन्दिरनिर्माण के लिए आग्रह शील न होते। अब तो दोनों समुदायों का भाईचारा स्थापित करने के लिए मध्यम मार्ग यही है कि मुसलमान भाई सत्य को स्वीकारें तथा मन्दिर निर्माण के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करें, यही समय की माँग है।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन

दिनांक: १५-१६ दिसम्बर १९९०

उत्तर प्रदेश तथा राष्ट्र की असामान्य एवं अपरिहार्य गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के नियम सं० ८ (ए) के अन्तर्गत उक्त सभा के लखनऊ में सम्पन्न होनेवाले १०५ वें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन कर दिया गया है। अब सभा के उक्त अधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन की परिवर्त्तित तिथियाँ सभा के नियम सं० ८ (ए) के अनुसार निम्न प्रकार घोषित की जाती हैं—

वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन....
दिनांक १५ तथा १६ दिसम्बर १९९०
(शनिवार तथा रविवार)

निर्वाचन परिणाम की घोषणा.... निर्वाचन की समाप्ति के बाद।

समय तथा स्थान डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में
यथा घोषित पूर्व कार्यक्रमानुसार।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश की समस्त जिला-उपसभाओं तथा आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं आर्यकुमार सभा, आर्य-वीरदल, महिलासमाजों के सम्मानित अधिकारीगण एवं समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० से निष्कासित व्यक्ति तथा सभा विरोधी व्यक्ति भ्रामक प्रचार समय समय पर करते रहते हैं- उससे भ्रमित न हों और न ही किसी प्रकार की उन्हें आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी ऐसे व्यक्तियों को आमन्त्रित न करें। इसके अतिरक्त जो भी जानकारी चाहें सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त करें।

—कार्यालय सचिव

धर्म निरपेक्षता बनाम तुष्टीकरण

• डा० गंगाराम
निदेशक - वैदिक शोध संस्थान
अलीगढ़

7 नवम्बर, 1990 को अपनी सरकार के पतन के बाद पूर्व प्रधानमन्त्री श्री वी0पी0 सिंह ने संसद में कहा था कि वे रामजन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर धर्मनिरपेक्षता के खातिर ही पदच्युत हो रहे हैं। गत 30 अक्टूबर और 2 नवम्बर को अयोध्या में उ0प्र0 के मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा सैकड़ों रामभक्त हिन्दुओं की कराई गई हत्या और लाखों रामभक्तों पर ढाये कहर का कारण भी धर्मनिरपेक्षता की नीति ही बताई गई। पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी ने भी धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त को बहुत उच्च बताया किन्तु उ0प्र0 में जनता दल सरकार द्वारा रामजन्मभूमि आन्दोलन के समय पत्रकारों, बुद्धजीवियों और हिन्दुत्ववादियों पर किये गये लोमहर्षक अत्याचारों के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा।

आधुनिक काल में गाँधी जी और नेहरू जी को भारत का सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष नेता माना जाता है, किन्तु अपनी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण 1947 में मजहब के आधार पर भारत-विभाजन को वे भी नहीं रोक पाये। मुस्लिम लीग के नेतृत्व में भारतीय मुसलमानों ने पाकिस्तान के निर्माण के लिये जब "सीधी कार्यवाही" प्रारम्भ कर दी तो गाँधी-नेहरू की धर्मनिरपेक्षता की नीति असहाय सिद्ध हुई।

धर्मनिरपेक्षता अंग्रेजी शब्द "सैक्यूलरिज्म" के पर्यायवाची के रूप में लिया जाता है। वैसे सैक्यूलरिज्म का पर्यायवाची मजहब निरपेक्षता अथवा सर्व पंथ समभाव होना चाहिये क्योंकि धर्म सम्प्रदाय, मजहब या रिलीजन की तुलना में अत्यन्त व्यापक चीज है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार सैक्यूलर का अर्थ है सांसारिक, गैर मजहबी, अपवित्र आदि। साम्यवादियों की सैक्यूलरिज्म की व्याख्या भिन्न है। वे इसका अर्थ मजहब और परमात्मा के अस्तित्व को नकारना कहते हैं। सैक्यूलरिज्म का तात्पर्य मोटे तौर पर यह लिया जा सकता है कि देश में समस्त नागरिकों के लिए एक सा कानून हो तथा मजहब या सम्प्रदाय के आधार पर उनसे कोई भेदभाव न किया जाय। इस दृष्टि से देखा जाय तो युग-युगों से भारत में समस्त हिन्दू शासकों द्वारा सैक्यूलरिज्म की विचारधारा को सर्वोपरि समझा गया। भारत में पहली मस्जिद कालीकट के हिन्दू राजा जमोरिन ने बनवाई थी। मुस्लिम शासकों के द्वारा ही यहाँ "मजहबी राज्य' की स्थापना सर्वप्रथम की गई। औरंगजेब जैसे मतान्ध शासक के समकालीन शिवाजी महाराज ने भी अपने राज्य में सर्वपंथ समभाव की विचारधारा को अपनाया तथा मुसलमानों को वही अधिकार दिये जो हिन्दुओं को प्राप्त थे। इसी प्रकार महाराजा रणजीत सिंह ने भी सर्वपंथ समभाव की विचारधारा को अपनाते हुए अपने राज्य की राजधानी लाहौर में ईसाइयों के लिए पहला गिरजाघर बनवाया।

1947 के पश्चात् भारत सरकार द्वारा अपनाई जा रही सैक्यूलरिज्म की नीति के कारण देश में हिन्दू द्वितीय श्रेणी का नागरिक बन गया है। "हिन्दू" जैसे राष्ट्रीयता बोधक शब्द को साम्प्रदायिक बना दिया गया है। हिन्दू को सवर्ण, पिछड़ा और अनुसूचित के रूप में बाँट दिया गया है। दुनिया के सभी सैक्यूलर देशों में समान सिविल कानून हैं तथा वहाँ रहने वाले मुसलमान एक बार में एक ही विवाह कर सकते हैं, किन्तु भारत में मुस्लिम व्यक्तिगत कानून के तहत मुसलमानों को चार-चार पत्नी रखने का अधिकार दिया हुआ है। यह अजीब विडम्बना है कि यदि कोई हिन्दू किन्हीं अपरिहार्य कारणों से भी दूसरा विवाह कर ले तो उसे तीन बीबियों वाला मुस्लिम दरोगा गिरफ्तार कर सकता है तथा चार बीबियों वाला मुस्लिम जज उसे सजा दे सकता है।

वर्तमान सैक्यूलरिज्म की नीति के कारण शिक्षा के क्षेत्र में भी हिन्दुस्तान में मुसलमानों और ईसाइयों को विशेषाधिकार दिये हुए हैं। भारत में जितनी भी शिक्षा संस्थायें अल्पसंख्यकों के प्रबन्धतन्त्र के तहत चलती हैं, उनमें नियुक्तियों और छात्रों के प्रवेश में उन्हें विशेषाधिकार प्राप्त हैं। उदाहरण के लिये उ0प्र0 के समस्त विद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति शिक्षा सेवा आयोगों द्वारा होती है, जबकि मुसलमानों व ईसाइयों को अपनी अपनी शिक्षा संस्थाओं में भारतीय संविधान की धारा 30(1) में प्रदत्त विशेषाधिकारों के कारण स्वयं करने का अधिकार है। ए0एम0यू0 एक्ट, 1920 के तहत भारत सरकार द्वारा स्थापित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को इसी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण अल्पसंख्यक शिक्षा संस्था बना दिया गया है।

यह भारत सरकार की सैक्यूलरिज्म की नीति का ही परिणाम है कि महाराणा प्रताप के उस राजस्थान में जहाँ उन्होंने घास की रोटियाँ खाना स्वीकार कर लिया, किन्तु अकबर की वर्चस्वता को सहन नहीं किया, मुश्किल से 6 प्र0श0 मुसलमानों के होते हुए भी बरकतुल्ला खाँ को मुख्यमन्त्री सहन कर लिया गया। इसी सैक्यूलर नीति के परिणाम स्वरूप 5 प्र0श0 मुस्लिम आबादी वाले शिवाजी के महाराष्ट्र में अब्दुल रहमान अन्तुले को मुख्य मन्त्री बना दिया गया। जिस पटना (बिहार) में गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज जैसे प्रात स्मरणीय राष्ट्र पुरुष ने जन्म लिया, वहाँ 12 प्र0श0 मुसलमानों के होते हुए भी अब्दुल-गफ्फूर को मुख्यमन्त्री सहन कर लिया गया। इसी प्रकार आसाम में जहाँ 45 लाख बंगलादेशी मुसलमान घुसपैठ कर गये, वहाँ अनवरा तैमूर तथा महर्षि अरविन्द घोष से सम्बद्ध पाण्डचेरी में मु0 फारूकी को मुख्यमन्त्री बना दिया गया। अत मैं हिन्दुस्तान के सभी राजनैतिक दलों के सैक्यूलर नेताओं से पूछना चाहता हूँ कि वे जम्मू-कश्मीर राज्य में 1947 से अभी तक किसी हिन्दू को मुख्य मन्त्री क्यों नही बना पाये जबकि हिन्दू बौद्धों की आबादी वहाँ लगभग 35 प्रतिशत है?

इसी प्रकार राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद में भारत के सैक्यूलर नेताओं के द्वारा जो दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है वह राष्ट्रवादियों की समझ से परे हैं। रामजन्मभूमि का प्रश्न धार्मिक ही नहीं अपितु राष्ट्रीय भी है क्योंकि मुगल आक्रान्ता बाबर के सेनापति मीरबाकी ने हिन्दुओं के हौसला पस्त करने की दृष्टि से ही रामजन्मभूमि पर बने मन्दिर को 1528 में तोड़कर उसी स्थान पर उसके ही मलबे से बाबरी मस्जिद का निर्माण कराया था। अत: स्वतन्त्र भारत में रामजन्मभूमि पर मन्दिर का पुनर्निर्माण राष्ट्रीय स्वाभिमान और भारतीय अस्मिता के लिये परम आवश्यक है। अत: जो लोग रामजन्मभूमि पर मन्दिर के पुनर्निर्माण के विरोधी हैं, वे सैक्यूलर नहीं अपितु साम्प्रदायिक हैं।

वास्तव में हमारे देश के संविधान और विभिन्न सरकारों द्वारा जिस सैक्यूलरिज्म की नीति का अनुसरण किया जा रहा है, वह सर्व पंथ समभाव के भारतीय आदर्श पर आधारित न होकर मुस्लिम- ईसाई तुष्टीकरण की नीति पर आधारित है। इससे कश्मीर घाटी और देश के विभिन्न भागों में मुसलमानों तथा भारत के पूर्वांचल- नागालेण्ड, मिजोरम और मेघालय में ईसाइयों में पृथकता के भाव उत्पन्न हुए हैं। आज भावना की दृष्टि से कश्मीर घाटी पाकिस्तान से सम्बद्ध हो चुकी है। यह तो सशस्त्र भारतीय सेनाओं के शौर्य का ही श्रेय है कि वह भारत का अंग बनी हुई है।

अल्पसंख्यक विशेषकर मुस्लिम वोटों की खातिर सैक्यूलर नेताओं द्वारा जिस तुष्टीकरण की नीति का अनुसरण किया जाता है, वही भारत में साम्प्रदायिकता के लिए उत्तरदायी है। यह धर्म निरपेक्षता नहीं अपितु विकृत धर्मनिरपेक्षता है। विकृत धर्मनिरपेक्षता में आस्था रखने वाले ये नेता यदि विश्व के विभिन्न देशों में अपनाई जा रही सैक्यूलरिज्म की नीति का वस्तुपरक अध्ययन करें तो उन्हें अपनी भूल के परिमार्जन का अवसर मिल सकता है। आज भी कई पाश्चात्य लोकतान्त्रिक देशों में जो अपने को सैक्यूलर देश कहते हैं, क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी कार्यरत हैं। इनमें मुसलमानों के लिए मुस्लिम व्यक्तिगत कानून चलने का प्रश्न ही नहीं उठता। इग्लैण्ड अपने को पूर्ण सैक्यूलर देश कहता है, किन्तु उसमें आज भी राजा या रानी केवल प्रोटेस्टेण्ट ही बन सकता है, कैथोलिक ईसाई भी नहीं बन सकता। वहाँ के राजा को defender of faith (प्रोटेस्टेण्ट मत का संरक्षक) कहा जाता है। वहाँ की संसद में कार्य प्रारम्भ होने से पूर्व प्रोटेस्टेण्ट प्रार्थना होती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में भी प्रोटेस्टैण्ट ईसाई मत की प्रधानता सार्वजनिक कार्यक्रमों के अवसर पर स्पष्टरूप से दिखाई देती हैं, हाँलाकि यह भी अपने को सैक्यूलर देश कहता है। पाश्चात्य देशों में किसी भी अल्पसंख्यक समुदाय के प्रति तुष्टीकरण की नीति नहीं अपनाई जाती।

जहाँ तक समाजवादी देशों का प्रश्न है, उनमें सभी नागरिक कानून के समक्ष समान हैं। सोवियत संघ, चीन, यूगोस्लाविया, बल्गारिया आदि में मुस्लिम अल्प संख्यकों के प्रति किसी भी प्रकार की तुष्टीकरण की नीति नही अपनाई जाती। उन्हें राष्ट्र जीवन में समाहित करने के लिए साम्यवादियों के स्वर्ग 'सोवियत-संघ" ने जिस नीति का अनुसरण किया है वह भारत के समस्त सैक्यूलर

— शेष पृष्ठ ८ पर

अपने घर वापस आओ

• श्री वीरेन्द्र "वीर"
निरीक्षक सभा
बरेली।

यदि कदाचित कोई अपने घर का मार्ग भूल कर अन्यत्र किसी घर में जा कर रहने लगे और बाद को उसे अपने वास्तविक घर तथा घर को पहुँचाने वाले सत्य-मार्ग का स्मरण हो आवे अथवा अन्य कोई स्मरण करा दे, तो उसे अपने घर वापस आने में किन्चित संकोच एवं विलम्ब नहीं करना चाहिए।

अतः ऐ प्यारे भूले-भटके भाइयो। अपने प्राचीन इतिहास, अर्वाचीन-गौरव और अपनी वास्तविकता को पुनः स्मरण करो। तुम अपने लिए जो समझ बैठे हो, वास्तव में तुम वह नहीं हो और जिस घर में तुम अपना घर समझ कर रह रहे हो वह घर {मजहब} वास्तव में तुम्हारा अपना घर नहीं है।

तुम इस भारत वर्ष या आर्यवर्त के मूल निवासी हो, तुम प्राचीन आर्यों की ही सन्तान हो। हमारी तुम्हारी नसनाड़ियों में एक जैसा राम, कृष्ण, गौतम, कणाद और मनु आदि महापुरुषों, ऋषि-महर्षियों का रक्त आज भी अविरल रूप से प्रवाहित है।

कदाचित तुम्हारे पूर्वजों की भूल, अज्ञानता, अदूरदर्शिता, विवशता, प्रलोभन, भय या अन्यान्य परिस्थिति जन्य कारणों से, उन्हें आर्य {वैदिक} धर्म से धर्मच्युत होना पड़ा और वे विदेशी, अवैज्ञानिक, अनैतिक और निराधार मत-मजहब के आडम्बर पूर्ण जाल में फँस कर अपने को मुसलमान या ईसाई कहलाने में गौरव अनुभव करने लगे।

किन्तु यह निर्विवाद एवं ध्रुव सत्य है कि भारत का कोई भी मुसलमान बाहर से नहीं आया है। अतः हम तुम सब एक ही बाप दादा की सन्तान हैं।

अब केवल आवश्यकता है, अपने उस प्राचीन इतिहास को स्मरण करने और उस पर गम्भीरता से विचार करने की, जब मात्र वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य कुछ न था।

रूये जमीं से आती एक वेद की·सदा·थी।
हर सर अदब से वेदों के रूबरू·झुका·था।।

अत. अब अपनी सदियों व्याप्त कुम्भ करणी नींद को त्याग कर, जागृत होने का संकल्प लो। विदेशियों द्वारा थोपे हुए इस्लाम या ईसाईयत के जाल से बाहर निकल आओ। तुम विचार करो कि इस्लाम के संस्थापक मुहम्मद साहब और ईसाईयत के जन्म दाता ईसामसीह, दोनों ही विदेशी थे। इनका हम से और हमारे देश से क्या वास्ता हो सकता है? उनके बताये निराधार, अवैज्ञानिक, दुष्कृत्यों एवं कुभावों से पूर्ण मार्ग पर हम क्यों चलें?

किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर स्थापित मत-मजहब का अस्तित्व बालू पर बनी दीवाल के सदृश्य होता है, जिसके ढह जाने में किन्चित देर नहीं लगती। आप एक बार सच्चे मन से सोचें कि यदि यह सिद्ध हो जाय कि मुहम्मद साहब दुनियाँ में पैदा ही नहीं हुए, तो बताइये क्या इस्लाम मजहब रह जायेगा? इसी तरह यदि ईसा मसीह का जन्म नकारा जा सके तो ईसाई मजहब का भी क्या परिणाम होगा?

किन्तु दूसरी ओर आर्य {वैदिक} धर्म का मूलाधार अपौरूषेय वेद है। वहाँ धर्म की दीवार किसी भी महापुरूष राम, कृष्ण आदि व्यक्ति विशेष के ऊपर नहीं टिकी है। इसी लिए आज लगभग दो अरब वर्षों के सृष्टि काल में पूर्व से अब तक वैदिक धर्म चिरस्थाई, अटल और अपरिवर्तित रूपेण ज्यों का त्यों विद्यमान है।

फिर इन मत मजहबों के सिद्धान्त भी कितने घिनौने अवैज्ञानिक और अविवेक पूर्ण हैं। एक तरफ तो मूर्तिपूजा का विरोध है तो दूसरी ओर स्वयं कब्रों को पूजते तथा मक्का-शरीफ में संगे अस्वद को जा कर चूमते हैं।

संगे अस्वद चूमने को सफर काबे·तक·किया।
बुतपरस्तीहैनहीफिरऔरहै·यह·क्या·जनाब।।

इसी तरह मांस खाना, कुर्बानी के नाम पर जीव हिंसा, अतिनिकटतम रिश्तों में भी विवाह, अनमेल विवाह, बहुपत्नी पृथा, स्त्रियों को पैर की जूती या खेती {निर्जीव} मानना, भूत प्रेतादिक की अवैज्ञानिक, तथ्यहीन अन्ध विश्वासों की मान्यता, केवल अपने पीर-पैगम्बरों के सहारे पापों का क्षम्य मानना आदि बातें दुराचरण की खुली छूट देकर कर्तव्या-कर्तव्य बोध से दूर हटाती हैं। ऐसी बातों पर विश्वास करना कितनी भारी भूल है।

त्यागा अपने धर्म को भूल गये इतिहास
पर देशी-मजहब पर लगे, करने तुम विश्वास।।

जहाँ अपने मत- मजहब के विपरीत अन्य मत मजहब वालों के साथ शत्रुता बर्तने का आदेश हो वह क्या कोई अच्छा मजहब या आदर्श माना जा सकता है।

याद रखो सुबह का भूला यदि शाम को घर वापस आ जाये तो उसे भूला नहीं कहा जा सकता। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, अपने घर वापस आने में संकोच और विलम्ब कैसा ?

"देर आयद दुरस्त आयद"
जब मिट जायें झगड़े मन्दिर मस्जिदों·के।
भेदभीफिरक्यारहेंगेकाफिरोओ·मोमिनो·के।।

अतः इन दुष्कृत्यों और कुभावों के प्रेरक कीचड़ के घिनौने पन से निकल कर पुनः अपने प्राचीन, विवेक, सत्यता, स्वच्छता, समता, न्याय, दया, प्रेम, पवित्रता और आत्मीयता से परिपूर्ण सत्य सनातन वैदिक {मानव} धर्म को अपनाइये, आइये और हमारे हृदय से लग जाइये। हमारी बाहें तुम्हें पुनः सीने से लगाने को कब से वेकल या आतुर हैं। हमारा हृदय अपने प्यारे बिछुड़े भाइयों को पुनः वापस बुलाने को कब से तड़प रहा है।

अपने प्राचीन, मूल, सत्य सनातन वैदिक धर्म की विशेषताओं को जानो, विचारो, और उनका अनुकरण करो। क्योंकि इसकी मान्यता है समस्त पृथ्वी मण्डल को एक वृहतर परिवार तथा समस्त मानव मात्र ही नहीं अपितु प्राणी-मात्र में स्वात्मवत् भावना के द्वारा सर्वदा सर्वत्र प्राणी-मात्र का कल्याण चाहना और करना।

विश्वास रखो हम तुम सभी जन भारत माता की गोद में जन्में, खेले, फले और बड़े हुए हैं। हम तुम एक ही बाप, दादा की सन्तान और परस्पर भाई-भाई हैं। जब हमारी सबकी जन्मभूमि, कर्मभूमि एक है, हमारे पूर्वज एक हैं, तो हम तुम अलग-अलग ढपली बजाना और अलग-अलग राग अलापना छोड़ दें।

हम तुम सब पुनः एक सूत्र में बँध कर साथ-साथ बैठें, साथ रहें, खाये-पियें और सुहृद भाव से परस्पर समुचित सम्बन्ध बनायें। हमारा एक धर्म, एक भाषा, एक ध्वज, एक लक्ष्य, एक आराध्य देव और एक ही उपासन पद्धति हो, तभी हमारे प्यारे भारत राष्ट्र का कल्याण होगा और समस्त विश्व में हमारा मान होगा। □

आवश्यक सूचना

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन रातानाड़ा {जोधपुर} में स्थित है, यह भवन महर्षि के जीवन से सम्बन्धित ऐतिहासिक भवन है, इस भवन में आर्य विचारधारा के सन्यासी वानप्रस्थी महानुभावों के लिए आवास व भोजन की निशुल्क व्यवस्था है, जो भी सन्यासी व वानप्रस्थी रहना चाहें वह – मंत्री, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन, जसवन्त कालेज के पास, जोधपुर के पते से पत्र-व्यवहार करें।

भ्रष्टाचार का जन्म

• पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी
[75 जयनगर, जबलपुर]

अंग्रेजों के शासनकाल में यह समझा जाता था कि घूसखोरी भारत में अंग्रेजों की देन है। परन्तु भारत के स्वतन्त्र होने के बाद भारत में घूसखोरी और भ्रष्टाचार इतना अधिक बढ़ गया है कि ईमानदार आदमी का उससे अपना दामन बचाकर निकल पाना मुश्किल है। भ्रष्टाचार रक्त बीज की तरह दिन दूना और रात चौगुना फैलता ही जाता है। कहते हैं जब तूफान आने को होता है तो शुतुरमुर्ग अपनी गर्दन बालू के ढेर में गड़ा देता है मानों वह नहीं देखेगा तो तूफान भी नहीं आएगा। हमारे शासक और राजनेता भी यही नीति अपना रहे हैं कि मूँदिय आँख कतहुँ कोउ नाहीं।" या तो वे भ्रष्टाचार को देख नहीं पाते या देखते हुए भी अनदेखे बने रहना चाहते हैं। तब उनसे उसे दूर करने की आशा करना ही व्यर्थ है। तब भ्रष्टाचार रूपी कुशा का उत्पादन कर उसकी जड़ में मठ्ठा डालकर उसे कौन दग्ध करेगा कि वह पुन: जन्म न ले सके और जड़ मूल से नष्ट हो जाय। यह कहना बहुत आसान है कि प्रत्येक देश में भ्रष्टाचार है पर इतना नहीं जितना भारत में है। यहाँ तो इसने दशमुख रावण का रूपधर लिया है।

भारत में भ्रष्टाचार का जन्म चुनाव प्रणाली और शासन व्यवस्था में निहित है अतएव बिना इन्हें बदले इसे नहीं मिटाया जा सकता है। चुनाव में विजयी होने के लिए इन्हें विभिन्न प्रकार के लाभ दिलाने के वायदे किए जाते हैं कि उन आकर्षणों से खिंचकर मतदाता उन्हें व उनके दल वालों को विजयी बनावें। ये नीतिगत वादे नहीं होते सीधे सीधे कर्जे माफ करने जैसे आर्थिक लालच होते हैं। क्या यह मतदाताओं को मिठाई पूरी खिलाना, कम्बल बाँटना या शराब पिलाना जैसा नहीं है। उम्मीदवार इस प्रकार अप्रत्यक्ष घूस देता है और आगे भी देते रहने का वायदा करता है। जब इनसे काम नहीं चलता तब जातिवाद की बात उठाता है, या फिर डराता धमकाता है। उम्मीदवार यह कभी नहीं कहता कि मैं ही सबसे अधिक योग्य उम्मीदवार हूँ इसलिए तुम मुझे ही वोट दो। उम्मीदवार के जीत जाने पर उसे उस क्षेत्र का प्रतिनिधि कहना भी गलत है क्योंकि किसी भी बात के पक्ष या विपक्ष में वह अपने मतदाताओं की राय जानने कभी भी नहीं जाता। वह या तो कभी करार भाषण देने जाता है या फिर पाँच वर्ष बाद वोट माँगने जाता है। वस्तुतः तो वह पार्टी उम्मीदवार होने पर अपना भी स्वतन्त्र मत व्यक्त नहीं कर सकता। उसे तो पार्टी सचेतक के व्हिप [चाबुक] के अनुसार ही मत देना पड़ता है, उसका अपना मत चाहे कुछ भी क्यों न हो।

जब एक व्यक्ति दल का नेता चुना जाता है तो उसे बहुमत प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के जोड़-तोड़ करने पड़ते हैं और मन्त्री, संसदीय सचिव या निगमों का अध्यक्ष बना देने के वादे करने पड़ते हैं। क्या यह घूस और भ्रष्टाचार नहीं है। किसी को मन्त्री इस आधार पर नहीं बनाया जाता कि वह उस विषय का पंडित है और दल में उस विषय में वही सर्वोत्तम व्यक्ति है। मुख्य आधार यह होता है कि कितने सदस्यों पर उसका प्रभाव है। कोई भी व्यक्ति किसी भी विभाग का मन्त्री बनाया जा सकता है। मानों मन्त्री पद के लिए किसी भी योग्यता की दरकार ही नही है। फिर मन्त्री बनाने के लिए जाति सम्प्रदाय प्रान्त या जिले का भी विचार किया जाता है, योग्यता का नहीं। मन्त्रि मण्डल की सामूहिक जिम्मेदारी भी एक बड़ा भारी धोखा है जिसके कारण विभागीय गलतियों के कारण किसी भी एक मन्त्री को दण्डित नहीं किया जा सकता है।

राष्ट्रपति के चुनाव में वही दल प्रभावी होता है जिसके सदस्य दोनों संसदों और प्रान्तीय विधायिकाओं में अधिक होते हैं। राष्ट्रपति उस दल से उपकृत होकर सदैव उसका आभारी रहता है। राष्ट्रपति उस दल से उपकृत होकर सदैव उसका आभारी रहता है। इसे हटाने का एक ही उपाय है कि राष्ट्रपति का चुनाव बिना पार्टी आधार के सीधे जनता द्वारा ही हो।

न्यायाधीशों इत्यादि की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधान मन्त्री की अनुशंसा पर होती है। इस प्रकार अप्रत्यक्षरूप से न्यायपालिका के व्यक्ति भी प्रभावित होते हैं। इसे दूर करने के लिए संसद द्वारा चुने गए पैनेल [सूची] में से न्यायपालिका की समस्त नियुक्तियाँ प्रधान न्यायाधीश द्वारा ही की जानी चाहिए।

राष्ट्रपति केवल सर्वोच्च पद को ही सुशोभित करे उसे वस्तुतः सेनाओं व कार्यपालिका का प्रमुख होना चाहिए। उसे प्रत्येक विभाग का सचिव नियुक्त करने का अधिकार होना चाहिए। उसे अपनी सहायता के लिए उपराष्ट्रपति नियुक्त करने का भी अधिकार होना चाहिए। प्रधानमन्त्री व मंत्रियों को केवल विधायी अधिकार ही होने चाहिए, कार्यपालिका व न्यायपालिका के नहीं। सरकारी व व्यक्तिगत उद्योगों की स्वीकृति या अस्वीकृति का अधिकार भी राष्ट्रपति के पास रहे।

न्यायपालिका कार्यपालिका और विधान सभायें और सेना अपने अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण स्वतन्त्र रहें और एक का दखल दूसरे पर न हो, तभी घूसखोरी और भ्रष्टाचार को धीरे-धीरे कम करके मिटाया जा सकता है। भ्रष्टाचार ऊपर से मिटाने से मिटेगा नीचे से मिटाने का प्रयत्न सफल न होगा।

आवश्यक सूचना

डा० कपिलदेव की विदेशयात्रा

भारत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान एवं गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर [हरिद्वार] के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी तीन मास के विदेश कार्यक्रम के अन्तिम चरण में सूरीनाम की राजधानी पारामारीबो पहुँच गए हैं। अमेरिका, कनाडा के व्यस्त कार्यक्रम में 3 दर्जन से भी अधिक व्याख्यान विभिन्न विश्वविद्यालयों, आर्यसमाज, विश्वहिन्दू परिषद तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाओं में वेद तथा भारतीय संस्कृति से संबन्धित विभिन्न विषयों पर दिए हैं।

वैदिक सेन्टर, अटलांटा में "वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता" विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए डा० कपिलदेव द्विवेदी ने कहा कि आधुनिकता के इस युग में व्यक्ति मानसिक और आत्मिक शान्ति के लिए भटक रहा है। वेदों के प्रकाश से ही मनुष्य मानसिक और आत्मिक शान्ति प्राप्त कर सकता है। वैदिक धर्म, पुरातन एवं सर्वश्रेष्ठ है इसे अपनाये जाने की आवश्यकता है। इस संस्था द्वारा डा, दीनबन्धु चंडौरा ने डा० द्विवेदी को अमेरिका पधारने के लिए धन्यवाद दिया और आशा व्यक्त की कि डा० द्विवेदी की तरह समय-समय पर भारत के विद्वान विदेशों में वैदिक संस्कृति के प्रचार के लिए आते रहेंगे।

हिन्दू मन्दिर मियामि फ्लौरिडा में " आचार शिक्षा विषय पर अपने व्याख्यान देते हुए डा० कपिलदेव द्विवेदी ने कहा कि आचार मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की एक प्रक्रिया है। आचार शिक्षा मानव जीवन में सुसंस्कृति का काम करती है। यह दुर्गुणों, दुर्विचारों, सद्भावों और सत्यप्रवृत्तियों का बद्धमूलक है। धार्मिक कर्तव्यों की शिक्षा वेदों में प्राप्त होती है अतः वेदों का अध्ययन एवं स्वाध्याय पर बहुत बल दिया गया है। वेदों के अध्ययन से न केवल ज्ञान की वृद्धि होती है अपितु आचार शुद्धि और दीर्घायुष्य भी प्राप्त होता है। वेदों में ऋषियों के ज्ञान का अमृत भरा हुआ है। सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए वेदों का अध्ययन परम आवश्यक है।

आर्यसमाज मिसिसगा में स्वामी-दयानन्द एवं जीवन दर्शन विषय पर डा० कपिलदेव द्विवेदी ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द ने समाज में अन्धकार को समाप्त करने के लिए वैदिक धर्म की रोशनी दी। उन्होंने अपने कर्मठ जीवन को वेदों के प्रकाश के लिए लगा दिया।

डा० कपिलदेव द्विवेदी तीन मास की धर्मप्रचार यात्रा द्वारा विदेशों में वैदिक संस्कृति का प्रचार करके 5 दिसम्बर को भारत आ गये।

- संवादसूत्र

शोक समाचार

दिनांक 11-11-1990 दिन रविवार को सत्संग के पश्चात् दानवीर एवं समाज सेवी श्री ईश्वर सिंह मलिक, हरियाणा निवासी का देहावसान हो गया। उनकी आत्मा की सदगति एवं शांति तथा दु:खी परिवार जनों को धैर्य पदान करने के लिए दो मिनट का मौन होकर ईश्वर से प्रार्थना की गयी।



तपस्वी राजा

●कु॰ सुनीता

जिसने कामनाओं का नाश कर मन को जीत लिया और शान्ति प्राप्त कर ली, वह राजा हो या रंक, संसार में उसको सुख ही सुख है।

एक दिन अयोध्या के युवा राजा भगीरथ एकांत में बैठे सोच रहे थे - "इस संसार में ऐसा क्या है, जो नष्ट नहीं होता। यह आयु, धन-सम्पत्ति, सुख-वैभव तो एक दिन नष्ट होने वाले हैं। मुझे वही चीज प्राप्त करनी चाहिये जो सदैव रहे।"

वह घन्टों बैठे सोचते रहे, मगर कोई निर्णय नहीं कर पाए आखिर दूसरे दिन वह अपने गुरु महर्षि त्रितल के पास गये। उनसे कहा "महर्षि मुझे राज्य मिला, साथ ही इतना सुख सम्पदा कि जीवन भर भोगी न जा सके, मगर मेरा मन इन सुखों से लगाव नहीं है, क्योंकि ये सब नश्वर हैं। मैं इन दुखों से छुटकारा पाना चाहता हूँ।"

महर्षि ने राजा को बहुत समझाया मगर भगीरथ तो राजा होते हुए भी सुख-दुख से ऊपर उठ चुके थे, उन्होंने राज्य छोड़कर तपस्या करने का निश्चय कर लिया।

गुरु के पास से लौटकर राजा ने अग्निष्टोम नामक यज्ञ का आयोजन किया। उसमें उन्होंने ब्राह्मणों और अपने भाई-बंधुओं को गाय, हाथी, घोड़े तथा अपनी जो भी धन-सम्पत्ति थी, सारी दान में देदी। इसके बाद वह पड़ोसी राजा के पास गये। वह राजा उनका घोर शत्रु था। हमेशा भगीरथ का राज्य हड़पने की ताक में लगा रहता था, मगर कुछ करने में समर्थ नहीं था। राजा भगीरथ को आया देख उस राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। सिंघासन से नीचे उतरकर उसने उनका स्वागत किया - पूछा "महाराज, कहिए कैसे आना हुआ?"

भगीरथ ने मुस्कुराकर कहा- "मैं राज-पाट छोड़कर तपस्या करने जा रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि राज्य आपको सौंप दूं।" सुनकर उस राजा को विश्वास ही नहीं हुआ, मगर भगीरथ ने अपने मंत्रियों और सभासदों की उपस्थिति में सारा राज्य उसे सौंप दिया इसके बाद राजा ने कोपीन वस्त्र धारण किया, हाथ में कमंडल लिया और राज्य को छोड़कर ऐसे चले गए जैसे कभी उस राज्य से उनका कोई नाता ही न था।

चलने चलते वह अपने राज्य की सीमा से दूर पहुँच गये। वहाँ उन्हें कोई पहचानता ही न था। बस, एकान्त में वह भगवान की अराधना में लीन हो गये। कभी सुध आती, तो आसपास के गावों से भिक्षा मांगकर पेट भर लेते थे।

इसी तरह कई वर्ष बीत गये। इस अवधि में राजा ने सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लिया। अब वह संसार के दुःख सुख से ऊपर उठ चुके थे। वह अपने को राजा नहीं, एक साधारण मनुष्य समझते थे।

कुछ दिन बाद वह घूमते-घूमते अपनी राजधानी में आए वहां वह कई घरों में भिक्षा लेने गए। एक दिन अपने मन्त्री के घर भी जा पहुँचे। मन्त्री ने राजा को पहचान लिया। क्षणभर में राजा के आने की बात चारों ओर फैल गई। बहुत से मन्त्री-सभासद और नागरिक इकट्ठा हो गए। राजा की पूजा स्तुति करने लगे। सुनकर शत्रु राजा भी आया। वह भगीरथ के चरणों में गिर पड़ा। बोला- "आप महान त्यागी हैं। अपना राज्य और मेरा राज्य आप दोनों ले लीजिए। मैं आपकी सेवा करूंगा।"

इस तरह सभी ने राजा भगीरथ को रोकना चाहा, किन्तु उनके मन में लोभ मोह नहीं जगा। वह भिक्षा लेकर नगर से दूर चले गये फिर किसी एकन्त स्थान में जाकर तप करने लगे।

वह जिस राज्य की सीमा में तप कर रहे थे अचानक वहाँ के राजा की मृत्यु हो गई। उस राजा की कोई सन्तान नहीं थी। शासक के बिना प्रजा की देखभाल कौन करे। मन्त्री और राज्यकर्मचारी परेशान थे। सभी किसी ऐसे योग्य और गुणवान व्यक्ति की खोज में थे, जो राजसिंहासन पर बैठकर राज-काज चला सके तभी उन्हें पता चला, पास में कोई तेजस्वी मुनि तप कर रहा है। राजा के तप और विरक्ति की बात वहां चारों ओर फैली हुई थी। राज्य के प्रमुख व्यक्ति तप में लीन राजा भगीरथ के पास गये, साथ गये पंडितों और ज्योतिषियों ने कहा- "इस तपस्वी में राजसी गुण हैं। यह राजा होने के सर्वथा उपयुक्त है।" मन्त्री ने भगीरथ से कहा- "तपस्वी का धर्म है, दूसरों का कल्याण करें। हम परेशानी में हैं। आप हमारा संकट दूर करें।"

भगीरथ दयालु थे। बोले- "बताइए, मैं आपके किस काम आ सकता हूँ?"

मन्त्री बोले- "आप हमारे राजा बनकर राजा-विहीन प्रजा की रक्षा करें।"

राजा भगीरथ ने जन-कल्याण के हित के लिए उनकी बात मान ली। वह राजसिंहासन पर बैठकर शासन चलाने लगे शीघ्र ही इस कीर्तिवान राजा के गुणों की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी।

अयोध्या के निवासियों ने भी यह बात सुनी। मन्त्री और राज्यपरिवार के लोग भागे-भागे राजा भगीरथ के पास आए। कहने लगे- "महाराज, आप जिस राजा को राज्य सौंपकर आए थे, उसका निधन हो गया।

अब अयोध्या का और उस राज्य का, दोनों राज्य राजा-विहीन हैं। आप दोनों के राजा बन कर हमारा भी कल्याण करें।'

राजा भगीरथ चुप रहे। तभी उनके गुरु महर्षि त्रिरत्न वहाँ आ पहुँचे। राजा नें गुरु को प्रणाम किया। महर्षि बोले- राजन आपने जिस तरह राजपाट त्यागा, सारे सुख-साधन छोड़े वैसा साधारण मनुष्य तो क्या, बड़े-बड़े त्यागी भी नहीं कर पाते। अब तप करने से आप ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ हो गए हैं। आपने दूसरों के हित के लिए यह राजसिंहासन सम्भाला, अब अयोध्या वासियों की बात भी मान लीजिए।"

राजा भगीरथ ने गुरु की बात मान, उन दोनों राज्यों का शासन सम्भाल लिया। उनका प्रताप देख, बहुत से अन्य राजा भी उनकी शरण में आ गए। इस प्रकार वह कई राज्यों के स्वामी बन, सम्राट कहलाने लगे। किन्तु इतना होने पर भी वह प्रजा के हित के लिए दिन-रात कार्य करते रहते थे।

अब विचारणिय विषय है कि अतीत वर्तमान को क्या शिक्षा देता है। ◘

श्रद्धांजलि एवं अभिनन्दन

केन्द्रीय आर्यसमाज मुरादाबाद की ओर से मुरादाबाद की निम्न आर्यसमाजों ने दि0- 18 नवम्बर को **भगवान राम** के मन्दिर निर्माण में शहीद हुए कारसेवकों की सद्गति एवं शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई यह कार्यक्रम आर्यसमाज गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद में जेल गए कारसेवकों के उत्साह वर्धन एवं आभार हेतु अभिनन्दन किया गया है।

आर्यसमाज गंज स्टेशनरोड, आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी, आर्यसमाज मण्डी चौक, महिला आर्यसमाज, स्त्री-आर्यसमाज, वैदिक सत्संग हरपाल नगर कन्या पाठशाला, मन्त्री केन्द्रीय सभा मुरादाबाद आदि।

शोक प्रस्ताव

दि0- 30 अक्टूबर व 2 नवम्बर को अयोध्या में मुलायम सिंह की नादिरशाही सरकार ने निहत्थे कारसेवकों का नरसंहार करके देश के इतिहास में काला पृष्ठ जोड़ दिया है, जिसकी निम्न समाजों ने एक स्वर से निन्दा की है तथा श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा फैजाबाद, स्त्री आर्यसमाज फैजाबाद, आर्यसमाज सुभाषनगर फैजाबाद, आर्य वेदप्रचार मण्डल फैजाबाद, आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी आदि।

● मण्डल आयोग के आरक्षण के विरोध में आत्मदाह करने वाले छात्र-छात्राओं की दिवंगत आत्माओं की सद्गति तथा शोक संतप्त परिवारों को धैर्य प्रदान करने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, और निम्न आर्यसमाजोंनेइस आशय का प्रस्ताव पारित किया। आर्यसमाज जवाहरनगर मेरठ कैम्ट, आर्यसमाज थापरनगर मेरठ, आदि।

● आर्य समाज खेड़ा अफगान {सहारनपुर} के प्रधान श्री आदित्य प्रकाश गुप्त के पिता जी श्री धर्मदेव गुप्त का दिनांक 28 अक्टूबर को निधन हो गया, इस अवसर पर प्रधान जी की माता श्रीमती शीलादेवी जी ने रू0500/- और एक पंखा आर्यसमाज को तथा रू0100/- सार्वदेशिक सभा को दान दिया। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

गीता जयन्ति

दि0- 28/11/90 को सायं 3 1/2 बजे गीता जयन्ति का कार्य श्री राजेन्द्र अग्रवाल तथा सुरेन्द्र अग्रवाल के गीता के 12 अध्याय के सुमधुर पाठ से प्रारम्भ हुआ। श्री इन्द्रराज जी प्रधान आ0 प्र0 सभा उ0प्र0 ने इस का संयोजन किया। कार्यक्रम की भूमिका में उन्होंने गीता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गीता के अतिरिक्त जितना भी वैदिक साहित्य हमें उपलब्ध है वह सब शान्तिकाल की रचना है। उन्होंने बताया कि सृष्टि के प्रारम्भ में जब मानव उत्पत्ति हुई तब पवित्रतम अन्त:करण वाले अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नाम के चार ऋषियों के अन्त:करण में भगवान ने वेदों का ज्ञान प्रकट किया। उन ऋषियों ने वेद सुनाने प्रारम्भ किए इस प्रकार निरन्तर बहुत समय तक वेद सुनाए जाते रहे इसलिए इन का नाम श्रुति पड़ा। वेदों की दुरुहता को सरल बनाने के लिए वेदों के व्याख्या ग्रन्थों के रूप में ब्राह्मण ग्रन्थों का निर्माण हुआ। दर्शन शास्त्र और उपनिषदें सब शान्ति काल की उपज हैं। संसार के प्रथम राजा मनु ने भी मनुस्मृति का निर्माण शान्तिकाल में ही किया। अन्य स्मृतियां भी शान्तिकाल की उपज हैं। परन्तु गीता संघर्ष काल की उपज है। गीता में तो लिखा है कि शस्त्र सम्पात प्रारम्भ हो गया था। तब अर्जुन ने भगवान् कृष्ण से कहा कि मेरा रथ दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा कर दो ताकि मैं देख सकूं कि मुझे किनके साथ लड़ना है? योगेश्वर श्री कृष्ण चन्द्र जी ने जब रथ को दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा कर दिया तब अर्जुन दोनों ओर खड़े अपने सम्बन्धियों को देखकर घबरा गया और मैं नहीं लड़ूंगा ऐसा कह कर रथ के पिछले भाग में जाकर बैठ गया।

उस अर्जुन की निराशा और हताशा को दूर करने के लिए भगवान-कृष्ण ने रण भूमि में ही अर्जुन को जो कुछ समझाया वह ही गीता है। उस सारी गीता को सुनकर अर्जुन ने कहा कि अब मैं समझ गया हूं और "करिष्ये वचनंतव" अब आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।

पंजाबी में एक कहावत है "जिस ने पढ़ी गीता उस ने घर दा कम न कीता" अर्थात् जिसने गीता को पढ़ा वह घर के कार्यों को छोड़ गया।

परन्तु गीता तो कर्मयोग में लगाती है। क्योंकि यह युद्ध स्थल में कही गई है। इसीलिए हम निराश और हताश होने वाले प्राणियों के लिए ही यह कही गई है। इसलिए गीता का महत्व और गौरव संसार में फैला हुआ है।

गीता का ज्ञान सार्वतान्त्रिक सार्वकालिक और सार्वभौमिक है इसलिए यह गीता रूपी ग्रन्थ। संसार में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इस भूमिका के साथ सर्वप्रथम मञ्च पर विराजमान विद्वानों में से श्री जगन्नाथ जी गुप्त को अपने विचारों को प्रस्तुत करने का निमन्त्रण दिया गया। उन्होंने बताया कि मन की शुद्धि में तीन बड़े विकार हैं। मल, विक्षेप और आवरण। ये गीता के अनुसार यज्ञ, दान और तप से दूर होते हैं। इन उपायों से मनको पवित्र करने का संकल्प लेना चाहिए।

तत्पश्चात् मेरठ कालेज के दर्शन विभाग के पूर्व अध्यक्ष - श्री डा0 रामनाथ शर्मा जी ने महर्षि अरविन्द के विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि जब तक हम गीता के 11वें अध्याय में दर्शाए हुए विराट स्वरूप को नहीं समझेंगे तब तक हमें शान्ति प्राप्त नहीं होगी। जब हम छोटे स्तर से सोचते हैं तो हमें हर बात में शंका और भय रहता है। परन्तु जब ये दृष्टिकोण हो जाए कि भगवान के विराट स्वरूप के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं है। तो जो होना है वह अवश्य होना है। इस भाव के आते ही समस्त समस्याएं, आशंकाएं और कष्ट क्लेश दूर हो जाते हैं।

तत्पश्चात् गीता रसामृत के रचयिता प्रो0 शिवानन्द जी ने मन की चंचलता को दूर करने के लिए गीता के अनुसार अभ्यास को ही मुख्य साधन बताया। अभ्यास से समस्त शंकाएं दूर होती है और मन को शान्ति की ओर अग्रसर होने का अवसर मिलता है। अन्त में श्री राजेन्द्र जी तथा सुरेन्द्र जी को धन्यवाद दिया गया। □

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का अभूतपूर्व समारोह

१४ वाँ सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

२३ से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली में आयोजित

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार कीजिए वैदिक धर्म प्रचार एवं प्रसार की अनेक योजनाओं को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहायता कीजिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती एवं उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज ने एक संयुक्त वक्तव्य में देश विदेश की बिगड़ती हुई राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दशा पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए वेदाधारित मानव समाज की रचना के आर्य समाज के दृढ़संकल्प को दोहराते हुए प्रदेश एवं विश्व की सभी मानवता प्रेमी जनता से आगामी दिसम्बर में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की अपील की है।

ऋषिवर्य का स्वप्न अभी साकार नहीं हुआ है। परमात्मा की अमरवाणी **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। भारतीय आज़ादी के साथ हमने विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार की जो कल्पना की थी उसका मूर्तरूप अभी बहुत दूर है। अतः हमें बहुत दूर जाना है। पथ कण्टकाकीर्ण अवश्य है पर आर्य वह है जो कभी पराजय स्वीकार नहीं करता, हारना नहीं **'चरैवेति चरैवेति"** उसका आदर्श है।

उक्त आर्य महासम्मेलन आर्यजाति में नवप्राणों का संचार करेगा। सोई हुई मानवता को जगायेगा और विश्वशान्ति के हमारे वैदिक पथ को प्रशस्त करेगा।

तो, आइए, इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए वैदिक संस्कृति को उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने के लिए अभी से प्राणपण से जुट जायें।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने गंगा यमुना की पावन संगमस्थली के अपने अन्तराल में संजोए इस महान प्रदेश की गौरवमयी परम्पराओं का स्मरण कराते हुए कहा है कि राम, कृष्ण और दयानन्द की यह कर्मस्थली है। इस प्रदेश की जनता ने आर्यसमाज के मस्तक को सदैव ऊँचा रखा है। हमें आशा है प्रदेश की जनता इस सम्मेलन में लाखों की संख्या में सम्मिलित होगी और इस पुण्यकार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर यश की भागी बनेंगी।

उपदेश विभाग की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों/प्रचारकों/भजनोपदेशकों/ढोलक वादकों का माह दिसम्बर 1990 का कार्यक्रम ।

उपदेशक

1- श्री पंडित केशवदेव जी शास्त्री
7 से 12 खेड़ामजखेड़ा पो0 मुदागंज जनपद शाहजहाँपुर 15 से 18 कायमगंज, फर्रुखाबाद, 20 से 31 अवैतनिक अवकाश।
2- श्री पं0 शिव कुमार जी शास्त्री अवैतनिक अवकाश ।
3- आचार्य देवव्रत जी
प्राचार्य, वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट जनपद गाजियाबाद।
4- श्री विशम्भर दत्त जी शर्मा
3-4 अमरोहा, 7-8-9 गोलागोकरननाथ,
5- श्री डा0 विजयपाल सिंह जी
अलीगढ़, बुलन्दशहर, मथुरा जनपद
6- श्री सुकर्मानन्द जी महाराज
1 से 4 जम्मू, कश्मीर,
7- श्री जयन्त कुमार जी आर्य
माननीय सभा प्रधान जी के निर्देशन में
8- श्री योगेश दत्त जी आर्य
1 से 13 बिजनौर जनपद पूर्वी, 15-16 लखनऊ दिनांक- 23 से 26 देहली अन्तर्राष्ट्रीय आर्य-महा सम्मेलन ।
9- श्री वेदव्रतानन्द जी महाराज
आचार्य, वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट (गाजियाबाद)

प्रचारक

10-श्री गजराज सिंह जी राघव
1-2 सुल्तानपुर भावा, गंगागंज इलाहाबाद 15-16 लखनऊ ।
11-श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य
2-3-4 उद्योतपुर, उन्नाव, 5-6 लखनऊ, 7 से 12 खेड़ा मजखेड़ा पो0 मुदागंज जनपद शाहजहाँपुर 15- लखनऊ, 16-17 रसूलपुर, उन्नाव 28-29-30 हरैया जनपद हरदोई।
12-श्री कमल देव जी आर्य
एटा, मैनपुरी, मथुरा जनपद।
15-16 लखनऊ।
13-श्री रामचन्द्र जी शर्मा,
1 से 10 दिसम्बर, 1990 फैजाबाद, वेद प्रचार मण्डल, 15-16 लखनऊ।
14-श्री सीताराम जी आर्य
हरदोई जनपद हरदोई उन्नाव
15-16 लखनऊ।
15-श्री सीताराम जी शर्मा मंगलौर
15-16 लखनऊ, 1 से 14-हरिद्वार, सहारनपुर जनपद ।
16-श्री नेम प्रकाश जी आर्य
2-3-4 उद्योतपुर, उन्नाव, 6 से 12 नौगवां जसवन्तनगर, जनपद शाहजहाँपुर 15-16 लखनऊ, 28-29-30 हरैया 31 फखरपुर बहराइच।
17-श्रीयुत युगुल किशोर जी
2 से 4 उदोतपुर उन्नाव, 14 ईसानगर, 15-16 लखनऊ ।
18-श्रीयुत तेजपाल सिंह जी आर्य
श्रीमती आशा आर्या सहित
2-3-4 अमरोहा, 8 से 12 गजरौला क्षेत्र, मुरादाबाद, 15-16 लखनऊ, 22 से 26 देहली अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन ।
19- श्रीयुत विक्रम देव जी आर्य
1 से 13 बिजनौर जनपद पूर्वी, 15-16 लखनऊ,
20- श्रीयुत ब्रजपाल जी शर्मा
1 से 13 बिजनौर जनपद पूर्वी, 15-16 लखनऊ ।
21- श्रीयुत मनवीर सिंह जी आर्य
माननीय सभा प्रधान जी के निर्देशन में 15-16 लखनऊ।
22- श्रीयुत धर्म प्रकाश जी प्रेमी
(मण्डली सहित)
1 से 13 मुजफ्फरनगर फैजाबाद, 15-16 लखनऊ। 17-18 टाण्डा अफजल, 19-20 असालतपुर। 21-22 सुरजननगर, 23-24 मायपुर, 25-26 कुआं खेड़ा, 27-29 रामनगर खागूवाला, 30-31 कुर्डेश्वरा ।
23- श्री सीताराम जी आर्य सहारनपुर 1 से 14 फैजाबाद वेद प्रचार मण्डल, 15-16 लखनऊ, 17-18 टाण्डा अफजल, असालतपुर19-20, 21-22 सुरजननगर 23-24 मायपुर, 25-26 कुआखेड़ा 27-28-29 रामनगर खागूवाला 30-31 कुण्डेश्वरा जनपद मुरादाबाद तहसील ठाकुरद्वारा ।
24- श्री खासेराम जी आर्य
1 से 14 जनपद गाजियाबाद, 15-16 लखनऊ।
25- श्री रामलाल जी आर्य
2-3-4 अमरोहा, 8 रजोया, 9-10 करनपुर 11-12 देहरा, कुन्दर्की, तहसील हसनपुर जनपद मुरादाबाद, 15-16 लखनऊ।

ढोलक वादक:-

26- श्री ओमलाल जी आर्य
16-17 रसूलपुर उन्नाव ,
27- श्री अमरलाल जी आर्य
2-3-4 उदोतपुर, उन्नाव,
28- श्री सुभाष चन्द्र जी आर्य
1 से 13 फैजाबाद - मुजफ्फरनगर, 15-16 लखनऊ, 17-18 टाण्डा अफजल, 19-20 असालतपुर, 21-22 सुरजननगर, 23-24 मायपुर 25-26 कुआखेड़ा, 28-29-30 रामनगर, खागूवाला, 30-31 कुर्डेश्वरा तहसील ठाकुरद्वारा जनपद मुरादाबाद।
29- श्री कश्मीरी लाल जी आर्य
1 से 13 बिजनौर पूर्वी, 15-16 लखनऊ, 22 से 26 देहली अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30- श्रीमती आशा आर्या
2-3-4 अमरोहा, 8 से 12 गजरौलाक्षेत्र, मुरादाबाद, 15-16 लखनऊ दि0- 22 से 26 देहली
31- श्री अभयराम जी आर्य
2-3-4 अमरोहा, 8 रजोया 9-10 करनपुर 11-12 देहरा, 15-16 लखनऊ ।

पं0 इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

धीरेन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

सूचना

पं0 आशुराम शान्तियज्ञ

पिथौरागढ़। आर्यसमाज मन्दिर में 28 नवम्बर 1990 को पं0 आशुराम वेद उर्दू अनुवादक (1913-10 नवम्बर 1990) की दिवंगत आत्मा हेतु पं0-लक्ष्मीदत्त भट्ट की अध्यक्षता में शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ।

उक्त अवसर पर स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती ने दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की, तथा पं0 आशुराम जी द्वारा छोड़े गये सामवेद और अथर्ववेद का उर्दू अनुवाद पूर्ण करने की इच्छा प्रकट की।

पृष्ठ 3 का शेष.....

नेताओं के लिए अनुकरणीय है। भारत की तुलना में सोवियत संघ में मुसलमानों की आबादी आनुपातिक दृष्टि से अधिक है, किन्तु फिर भी वे अपने लिए पृथक मुस्लिम व्यक्तिगत कानून की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। राष्ट्रीय एकता के लिए उन्हें रसियन भाषा अनिवार्य रूप से पढ़नी पड़ती है। वे अल्पसंख्यक शिक्षा संस्था नहीं चला सकते। धर्म-परिवर्तन, साम्प्रदायिक दंगे और पृथकता के नारे उन्हें अत्यन्त मँहगे पड़ते हैं।

हालांकि हम 21 वीं शताब्दी में प्रविष्ट होने जा रहे हैं, किन्तु दुनियाँ के सभी इस्लामिक देशों में आज भी मजहबी राज्य स्थापित हैं। इनमें आज भी "मिल्लत" व "कुफ्र" का सिद्धान्त प्रचलित है। सऊदीअरब में कोई भी केशधारी हिन्दू (सिक्ख) रह नहीं सकता। यहाँ कोई भी व्यक्ति "गीता" या सत्यार्थ प्रकाश" अपने पास नहीं रख सकता। गत दिनों हरियाणा के रामकुमार भारद्वाज को सऊदी अरब में इसलिये 6 महीने की सजा हुई क्योंकि उन पर "सत्यार्थ-प्रकाश" पाया गया था। वहाँ मृत्यु के पश्चात् हिन्दू की अंत्येष्टि नहीं की जा सकती। मक्का और मदीना से कोई भी हिन्दू हवाई जहाज से भी नहीं गुजर सकता। भारत से पृथक हुए पाकिस्तान और बंगलादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों को वे अधिकार नहीं जो मुसलमानों को हैं। हिन्दुस्तान के ये सैक्युलर नेता जो वोटों की खातिर मुसलमानों के लिए जमीन-आसमान एक करने तथा उनकी जायज व नाजायज माँगों को पूरा करने के लिये हर समय प्रयत्नशील रहते हैं, वे पाकिस्तान और बंगलादेश में अपने धर्मबन्धुओं की हालत कुत्ते-बिल्ली से भी बदतर देखकर क्यों चुप हो जाते हैं?

भारत के सैक्युलर नेताओं को राष्ट्रहित में अपनी तथाकथित सैक्युलर नीति का वस्तुपरक विश्लेषण करना चाहिये और उन लोगों का तुष्टीकरण बन्द करना चाहिये जो हिन्दुस्तान की एकता व अखण्डता के लिये घातक हैं तथा इसे दारुल-ए-हरब से दारुल-ए-इस्लाम बनाने के लिये कार्यरत हैं। यदि उन्होंने अपनी तुष्टीकरण की नीति का परित्याग नहीं किया तो आगे आने वाले समय में उन्हें कोटि-कोटि हिन्दुओं का कोपभाजन बनना पड़ेगा।

जाड़े की रात

चन्द्रपाल सिंह यादव "मयंक" कानपुर

यह जाड़े की रात।
कटीली यह जाड़े की रात।
बिस्तर में भी काँप रहा है
थर-थर-थर-थर गात।
हवा तीर-सी लगती आकर,
खुलती अगर रजाई।
जाने इतनी ठण्ड कहाँ से
हवा मुई ले आई ?
हड्डी-हड्डी काँप रही है।
कट-कट करते दाँत ।
यह जाड़े की रात। कटीली
यह जाड़े की रात ।
हे भगवान। बड़ा दुख देता
आकर हमको जाड़ा।
जाने इसका हम लोगों ने
है क्या काम बिगाड़ा?
इसको दे दो देश-निकाला।
मानो मेरी बात।
यह जाड़े की रात।
कटीली यह जाड़े की रात।
दादी जी इससे घबरातीं
दादा जी भी डरते।
हम बच्चे भी इस जाड़े में
छींकं - खाँसा करते।
हाय। मुसीबत तब बढ़ जाती,
जब होती बरसात।
यह जाड़े की रात ।
कटीली यह जाड़े की रात।

स्त्री आर्यसमाज साकेत मेरठ के मार्मिक प्रस्ताव

§1§ आरक्षण के सम्बन्ध में बलिदान हुए युवकों के परिवारों को सम्मान जनक, मुआवजा सरकार द्वारा दिया जाए।
§2§ श्री राम जन्मभूमि मन्दिर विवाद में बलिदान होने वाले कार सेवकों तथा अन्य बलिदानियों को सरकार द्वारा तुरन्त मुआवजा दिया जाये।
§3§ साम्प्रदायिक दंगों में मारे गए निर्दोष व्यक्तियों के परिवारों को आर्थिक सहायता सरकार द्वारा तुरन्त दी जाए। तथा पीड़ित परिवारों की भोजन आवास एवं वस्त्रों की सुविधा तुरन्त उपलब्ध कराई जाए उनके उजड़े मकानों और दुकानों को पुनः स्थापित कराया जाय।
§4§ बिजनौर आदि स्थानों पर निर्दोष हिन्दुओं पर प्राणघातक हमलों की निष्पक्ष जाँच हो तथा दोषी अपराधियों को तुरन्त गिरफ्तार करके उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाए।
§5§ ढाका में हिन्दुओं की निर्मम हत्याओं उनकी सम्पत्ति को नष्ट करने और उनकी धार्मिक भावनाओं को कुचलने तथा मन्दिरों को धराशायी करने के विरुद्ध भारत सरकार द्वारा बंगलादेश सरकार को कड़ी चेतावनी दी जाए। तथा पीड़ित लोगों के परिवारों को तुरन्त सहायता दिलाई जाए। और उनकी जानमाल की रक्षा की जाए।

अन्तरंग सभा की सूचना

दिनांक- 15 दिसम्बर 1990 को प्रातः 10 1/2 बजे डी0ए0वी0 कालेज, लखनऊ में आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 की अन्तरंग सभा की बैठक होगी ।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

राष्ट्र भक्ति की भावना का छात्रों में बीजारोपण

• श्री बी॰एस॰वाष्र्णेय

खण्डवा - महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति की ओर से अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह के अन्तर्गत राष्ट्रनेत्री श्रीमती-इंदिरा गाँधी के जन्मदिवस के उपलक्ष में समिति द्वारा संचालित दत्तक शिशु योजना के अन्तर्गत रु0 5000/- संस्था के अध्यक्ष पं0 रामचन्द्रजी आर्य को भेंट करते हुए, श्री बी0एस0वाष्र्णेय, उप पंजीयक, सहकारी समितियां खण्डवा ने कहा कि, सुसंस्कारित छात्र किसी भी राष्ट्र की प्रगति के सूचक होते हैं। अच्छे छात्रों का निर्माण हो सके. वे राष्ट्र निर्माण में एवं राष्ट्रीय एकता में अपनी अग्रणी भूमिका निभा सकें और उनमें समाजसेवा के संस्कार विकसित हो सकें। इसी भावना से प्रेरित होकर आर्यसमाज के स्कूल देश में कार्य कर रहे हैं।

इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी श्री बी0एल0 जैन ने कहा कि, छात्रों में राष्ट्रीय प्रेम की भावना विद्यार्थीकाल से ही जागृत होना चाहिए। तभी वे आगे चलकर राष्ट्र को परमवैभव पर ले जाने में सहयोग दे सकेंगे। आपने पालकों से आग्रह किया कि बालकों को देशभक्त बनावें तथा उन्हें अच्छी कहानियां, प्रेरक प्रसंग आदि की पुस्तकें उपलब्ध कराने का प्रयास करें। बालक की प्रथम गुरु माता है, वही बालक को चाहे जिस रूप में ढाल सकती है। मेरे निर्माण में भी आर्यसमाज के स्कूल का योगदान है। इस अवसर पर श्री कृष्णलाल आर्य ने गरीब छात्र-छात्राओं को गणवेश करने के लिये रु0 4500/- की राशि समिति को दी। लायंस क्लब के अध्यक्ष श्री हीरालाल आर्य ने संस्था में अध्ययनरत विकलांग छात्र को टायसिकल देने की घोषणा की। □

आर्य हवन सामग्री

वैदिक विद्वानों द्वारा प्रशंसित रोगनाशक, सुगन्धित और पौष्टिक हवन सामग्री का ही प्रयोग नित्य करें।

नं0-1 स्पेशल आर्य हवन सामग्री 25/- किलो ।
नं0-2 आर्य हवन सामग्री 10/- किलो।
नं0-3 सामान्य आर्य हवन सामग्री का भाव 8/- आठ रुपया किलो है।

धर्मवीर ग्रन्थमाला

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिल्ली के उपलक्ष में धर्मवीर ग्रन्थमाला के 200/- रुपयों का सैट केवल 100/- मात्र में आर्य समाजों के पुस्तकालयों के लिये हम सादर भेंट कर रहे हैं। डाक खर्च ग्राहक को देना होगा।

धन और आदेश आज ही भेजें।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी, स्वतंत्रता सेनानी
अध्यक्ष

धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग 9856, अहाता ठाकुरदास सरायरुहेला नई दिल्ली-5, दूरवाणी-586545

आदरणीय लेखक महोदय

आर्य जगत के शिरोमणि नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान, अद्भुत वक्ता पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री-पं0 प्रकाशवीर शास्त्री देश की उन महान विभूतियों में गिने जाते हैं, जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व ने राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गरिमा को बहुत ऊँचा उठा दिया था। ऐसे पुरुषरत्न को अपनी पावन धरती पर जन्म देना इस प्रदेश का सौभाग्य रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का मुख पत्र "आर्यमित्र" उनकी पुण्यस्मृति में, आगामी दिसम्बर 90 में "प्रकाशवीर शास्त्री अंक" प्रकाशित करने जा रहा है। इस अंक में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बहु आयामी स्वरूप पर देश-विदेश के मान्य विद्वानों। राजनीतिज्ञों तथा उच्चकोटि के सन्त पुरुषों के विचारों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में प्रकाशित की जायेगी।

आप उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित रहे हैं और उनके कृतित्व के प्रशंसक भी।

मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा, यदि आप उनके सम्बन्ध में अपने विचारों को मूर्तरूप देते हुए इस अंक में प्रकाशनार्थ मुझे भेजने की कृपा करेंगे।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

पं॰ रामदेव जी दिवंगत

मैनपुरी गुरुकुल ज्वालापुर के सुयोग्य स्नातक, आगरा व सं0 विश्वविद्यालय के परास्नातक, दयानन्द-दर्शन व अष्टाध्यायी महाभाष्य के प्रकाण्ड पंडित, डॉ0 सूर्य देव जी शर्मा §अजमेर§ के अनुज तथा स्थानीय आर्यसमाज के वरिष्ठ उप-प्रधान महावैयाकरण आचार्य पं0 रामदेव जी विद्याभास्कर, एम0ए0 का दि0- 28-11-90 को कानपुर में निधन हो गया है। उन्हें दि0- 24-11-90 को लकवा मार गया था। वह 79 वर्ष के थे।

शास्त्री जी के निधन से स्थानीय आर्यसमाज व स्त्री समाज की संयुक्त शोक सभा दि0- 2-12-90 में शास्त्री के अगाध पाण्डित्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए, उन्हें भाव-भीनी श्रद्धांजलियाँ दी गईं तथा उनकी दिवंगत-आत्मा को चिर शान्ति तथा उनके शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करने हेतु परम पिता से प्रार्थना की गई।

- शालिनी गुप्ता

शोक श्रद्धांजलि सभा

आर्यसमाज आर्यनगर बदायूँ में श्री पं0 धर्मपाल विद्यालंकार के निधन पर शोकसभा का आयोजन किया गया जिसमें जिलासभा के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने पंडित जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पं0 जी को "आर्यरत्न" की संज्ञा दी। पंडित जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के कातिल अब्दुल रसीद को साहस के साथ पकड़ लिया था। जो आर्यसमाज के इतिहास में अमर रहेगा। पंडित जी ने आर्यसमाज के क्षेत्र में विभिन्न पदों पर कार्य किया। सभा को अन्य कई वक्ताओं ने सम्बोधित कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रभात आश्रम से

-वरिष्ठ सं0 "कालचक्र आर्ष पंचांग"

जीवन के इस सान्ध्यकाल में तप और साधना के नाते कभी-कभी यहाँ आकर रहलेता हूँ। यहीं के प्रसाद को अनेकों तक पहुँचाना इस लेखमाला का उद्देश्य है।

xx xx xx xx xx

मेरे सम्मुख किसी पुरानी मासिक पत्रिका के अंकों का संकलन है अन्तिम आवरण के नीचे लिखा है: "फार दी प्रोस्पेक्टस एप्लाई टू दी गवर्नर आफ् दी गुरुकुल"- अर्थात् पाठविधि के लिये गुरुकुल गवर्नर से प्रार्थना करें। आवरण के प्रथम पृष्ठ पर लिखा है "वैदिक मैगज़ीन ज्येष्ठ 1965"

"गवर्नर" और "1965" ने मुझे विचारने के लिये विवश किया। पत्रिका आदि से अन्त तक अंग्रेजी भाषा में है। बढ़िया मोटे चिकने कागज पर छपी है, मूल्य भी 64 पृष्ठों का पाँच आने- 30 पैसे मात्र है। बात स्पष्ट हुई वर्ष 1965 ईसवी नहीं विक्रम सम्वत् है अर्थात आज से 2047-1965=82 वर्ष पूर्व की और गवर्नर का अर्थ राज्यपाल नहीं वरन् संचालक या व्यवस्थापक या अधिष्ठाता जैसा कुछ है।

मेरी आँखें झुक गईं उस समय की महान आत्माओं की राष्ट्र भक्ति, सांस्कृतिक प्रेम और लग्न का अनुमान लगाकर। एक ओर उन्हें अपनी "कालगणना" से इतना प्रेम था दूसरी ओर हमारी नवीन संतति अपनी गिनती और गणना के अंकों को पहचानने से भी अनभिज्ञ होती जा रही है। पत्रिका में एक लेख है जिसमें राज्य के उद्देश्य वैदिक मन्त्र की प्रेरणा से निर्धारित करने का विद्वान् लेखक ने प्रयत्न किया है। ठीक है रोटी, कपड़ा और मकान सबको चाहिये परन्तु धन सम्पन्न वर्ग को कर्तव्य निष्ठ करने वाले तपस्वी कहाँ से आएंगे? उस समय की पत्रिकाओं-पुस्तकों में अनमोल विचार भरे पड़े हैं सद्विचार कार्यरूप में परिणित होकर श्रेष्ठ मानवों का निर्माण करते हैं। श्रेष्ठ नागरिकों से ही राष्ट्र की शक्ति बढ़ती है। जिस सभ्यता के पीछे हम मदांध होकर भाग रहे हैं उसका एक शब्द है"ईस्टर" जो अप्रैल के द्वितीय शनिवार से अगले दिन रविवार को "वार्षिकोत्सव" के रूप में सजधज से मनाया जाता है परन्तु विचार कीजिये इसकी शब्द रचना पर जिसका स्पष्ट अर्थ ईस्ट वालों का पूर्व वालों का। और यह भी विचारिये कि यह वैसाखी या सूर्य की मेष संक्रान्ति के आसपास पड़ता है।

आइये गुरुकुल से इस तथ्य कथन पर आप बाल, वृद्ध, युवा जो भी हों, कुछ क्षण विचार कीजिये और अपने लक्ष्य निर्धारण में सामर्थ्य जुटाइये।

कालोऽमूं दिवमजयनत् काल इमाः पृथिवीरुत। काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते।।

शोक सम्वेदना

कुँवर ध्रुवपालसिंह "अटल" ने श्री पं0 धर्मपाल विद्यालंकार के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए प0जी के सुपुत्र श्री महेन्द्रकुमार ऐडवोकेट को समवेदना भरा पत्र लिखते हुए इस असहनीय दुःख को सहन करने की प्रभु से प्रार्थना की है।

हिमाचल के मुख्यमन्त्री शान्ताकुमार से इतिहास की पुस्तक में संशोधन की मांग

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का विशेष पत्र

दिल्ली 22 नवम्बर- हिमाचलप्रदेश के स्कूल शिक्षा बोर्ड की छठी कक्षा में इस समय प्राचीन भारत नामक जो पुस्तक पढ़ाई जा रही है, उसमें वैदिक युग का जीवन नामक अध्याय में गोमांस तथा नशीले पदार्थों के उपयोग का वर्णन करते हुए लिखा है- "विशिष्ट अतिथियों के लिए गोमांस परोसा जाना सम्मान सूचक माना जाता था। मांस खूब खाया जाता था। मधु और सुरा जैसे पेय भी पीते थे।"

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हिमाचल के मुख्यमन्त्री शान्ताकुमार को विरोध प्रकट करते हुए लिखा है कि विदेशी और विधर्मी लोगों ने हमारी गुलामी की कड़ियों को मजबूत करने के लिए इस प्रकार के वीभत्स वर्णन आर्य(हिन्दू) जाति के धार्मिक विश्वासों पर कुठाराघात किया था। लेकिन आज स्वतन्त्रता के 44 वर्ष बाद भी हमारी नई पीढ़ी को यही प्रसंग पढ़ाये जावें बड़ी ही लज्जा की बात है। स्वामीजी ने मुख्यमन्त्री जी से मांग की है कि उक्त पुस्तक में तुरन्त संशोधन कर दिया जावे अन्यथा सरकार उसे जब्त कर ले।

- सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रचारविभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली।

आर्यसमाज के छठे नियम को सफल बनाने हेतु शिविर सत्संग का आयोजन करें

धार्मिक कथा संगीतयोग प्रशिक्षण शिविर एक या चार दिन तक शिविर का आयोजन कर जनसेवा कर लाभ उठावें
डा0 महावीर शास्त्री एन0डी0
भजनोपदेशक द्वारा

आर्यसमाज रोटरी लायन क्लब बालक- बालिका स्कूल कालेज में भाषण वेदों का महत्व 2/, श्री रामकृष्ण दयानन्द-2/, श्री कृष्ण चरित्र 2/, वेद-बाइबिल समीक्षा-2/, विश्व में भारतीय संस्कृति 2/, आदर्श नारियाँ 2/, हिन्दुत्व की विजय 2/, संगीत कवितांक 2/, भारत यात्रा वर्णन 2/, भारत बचाओ 2/, हम बीमार क्यों 2/, सूर्य किरण चिकित्सा 2/, प्राकृतिक चिकित्सा 2/, मिट्टी, वायु, जल चि. 2/, वनस्पति विज्ञान 2/, भोजन चिकित्सा 2/, स्त्री बालरोग चि. 2/, सौ वर्षों तक स्वस्थ रहें-2/, योगासन प्राणायाम चि0 2/, आयुर्वेद चिकित्सा 2/, परिवार कल्याण 2/, महिला योगासान 2/।

नोट- आरोग्य सुखी जीवन का वार्षिक चन्दा 10/- रुपये भेजकर उपरोक्त किसी भी पुस्तक के साथ 12 अंक प्राप्त करें आर्यसमाज के उत्सवों पर आमन्त्रित करें। गाजीपुर के पते से।

डा0 महावीर शास्त्री- भजनोपदेशक
सचालक योगाश्रम- रायगंज गाजीपुर, उ0प्र0
सम्पादक- "आरोग्य सुखी जीवन"
उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0
5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ

राम राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक हैं बाबर नहीं

आर्यसमाज "अनारकली" का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 5 नवम्बर को प्रातः 'गायत्री महायज्ञ के साथ आरम्भ हुआ जिसके संयोजक श्री अनिल-मल्होत्रा उपमन्त्री थे और यज्ञ के ब्रह्मा पं0 जैमिनी शास्त्री थे। सायंकाल पं0 यशपाल सुधांशु की वेद कथा आरम्भ हुई जोकि 8 बजे से 9 बजे तक सम्पन्न हुई इसके संयोजक श्री-अजय सहगल उपमन्त्री थे। कथा से पूर्व श्री आशानन्द, श्री हरिदत्त, श्री हंसराज जी एवं श्रीमती लाज नारंग आदि के मधुर भजन होते रहे, उत्सव 5 से 11 नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। उत्सव पर समाज के प्रधान श्री शान्तिलाल-सूरी एवं मन्त्री श्री रामनाथ सहगल के अतिरिक्त अन्य अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का पूर्ण सहयोग रहा।

आवश्यक सूचना

सभा के आर्य भजनोपदेशक प्रतियोगिता कार्यक्रम की तिथियाँ परिवर्तित होकर अब दि0- 15 दिसम्बर 1990 दिन शनिवार मिति पौष कृष्ण 14 सं0- 2047 वि0 की रात्रि को 8 बजे डी0ए0वी0 कालेज लखनऊ में पहुँचना निश्चित करें।

-हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेशविभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

हमारे पाठक क्या कहते है?

आदरणीय तिवारी जी एवं पाठक जी,
सादर नमस्ते,

"आर्यमित्र" के अंक बराबर मिल रहे हैं, वह प्रशंसनीय सामग्री, सम सामयिक समस्याओं के समाधान कारक लेख-तथा राष्ट्र जागृति की चेतना जगाने वाली रचनाओं से सतत् प्रेरणा देता रहता है "आर्यमित्र" आर्यसमाज का सार्थक प्रहरी होने का दायित्व निभा रहा है, हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

-लखनसिंह भदौरिया "सौमित्र"
भोज पुरा, मैनपुरी

आदरणीय सम्पादक जी,

"आर्यमित्र" का दीपावली विशेषांक मुझे प्राप्त हुआ। आपने जो विशेषांक निकाला है, उसकी वास्तव में सभी ने बड़ी प्रशंसा की है और प्रशंसनीय है भी। सम्पादक जी की सम्पादन कला प्रशंसनीय और धन्यवाद के पात्र है। आपके अच्छे सम्पादकत्व से पत्रिका में चार चाँद लगा दिए हैं।

-सुभाषभाटी
वेदमन्दिर, गीता आश्रम ज्वालापुर
हरिद्वार

सम्पादक जी,

"आर्यमित्र" ऋषि निर्वाण (दीपावली) विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख काफी शिक्षा प्रद एवं प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

रामकुमार आर्य
वाटरवर्क्स जोशी चौहान
सोनीपत (हरियाणा)

उपदेश विभाग की आवश्यक बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा प्रदेश के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों प्रचारकों की आवश्यक बैठक दिनांक- 15-12-90 शनिवार को प्रातः डी०ए०वी० कालेज लखनऊ में 10 बजे यज्ञोपरान्त उसी स्थान पर होगी। माननीय श्री मनमोहन तिवारी, सभामन्त्री महोदय बैठक को सम्बोधित करेंगे उपस्थिति की अनिवार्यता अंकित करें।

- हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

बसन्त मेला

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम (कोटद्वार) में दि० 21 से 23 जनवरी 1991 तक समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा, जिसमें विद्वान् सन्तों व भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है साथ ही नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश भी होगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का आश्चर्यजनक प्रदर्शन होगा। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि वह भामाशाह बनकर गुरुकुल की सहायता करें। इस बार ब्रह्मचारी जी की विदेश प्रचार की फिल्म भी दिखायी जायगी। आर्य जनता विद्वान् सन्तों के धर्म उपदेश सुनने को आमन्त्रित है।

चतुर्थ आर्य युवा सम्मेलन

जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के तत्वावधान में रविवार 25-नवम्बर 1990 को आर्यसमाज मन्दिर श्रृंगारनगर, लखनऊ में चतुर्थ आर्य युवा सम्मेलन हुआ। इसमें लखनऊ के वयोवृद्ध विद्वान् पं० राम चरित्र पाण्डेय को एक दुशाला, 351 रुपये एवं प्रशस्ति के साथ सम्मानित किया गया। आचार्य वागीश शर्मा मुख्य वक्ता रहे। श्री ओम् प्रकाश सेवक सम्मेलन के अध्यक्ष एवं पं० रूपचन्द्र "दीपक" संयोजक रहे।

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
मन्त्री।

वृहद् वेद प्रचार मेला

दि०- 24-25 नवम्बर को आर्यसमाज सरोजिनीनगर एवं आर्यसमाज श्रृंगार नगर के संयुक्त तत्वावधान में सैनिक स्कूल के बोट क्लब मैदान में एक वृहद् वेद प्रचार मेले का आयोजन किया गया तथा 25 नवम्बर को जिला सभा का मासिक अधिवेशन भी वहीं हुआ।

समारोह में क्षेत्रीय जनता ने भारी संख्या में उपस्थित होकर वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य वागीश शास्त्री (एटा), जलेश्वर मुनि वानप्रस्थ (कानपुर), श्री रामनारायण चौधरी (बिहार), आचार्य वेदव्रत अवस्थी प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ, श्री रूपचन्द्र दीपक", श्री जगदीश खत्री उपमन्त्री (द्वय) जिला सभा लखनऊ के विचारों से लाभ उठाया। समारोह का संचालन श्री बाबू सिंह सन्तोषी ने किया।

सम्पादक के नाम पत्र

श्री दौलतराम चड्ढा, 154 रेस्टकैम्प रोड, देवलाली कैम्प नासिक ने भारत के भू० पूर्व प्रधान मन्त्री श्री- वी०पी०सिंह तथा उ०प्र० के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह-यादव को पत्र लिखा है जो पाठकों के अवलोकनार्थ प्रकाशित किया जाता है।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह,
व
श्री मुलायम सिंह यादव

नमस्ते ।

आपको स्मरण होगा कि श्री राजीव गांधी ने अपने शासन काल में मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए शाहबानो के केस, कोर्ट के न्याय को मिट्टी से मिला कर संविधान में परिवर्तन कर दिया। और ईसाईयों को प्रसन्न करने के लिए योरोप से पोपपाल को बुलाकर गरीब हिन्दुओं को ईसाई बनाना चाहा। आप दोनों इससे भी दो पग आगे गए। आपने तैमूर लंग व औरंगजेब व जनरल डायर की भूमिका निभाई। राम के निहत्थे भक्तों पर गोलियों की बौछार की। लेकिन समय आ गया है, राम भक्त अब ऋषियों व पूर्वजों की तरह राम राज्य स्थापित करेंगे। और आप जैसे जयचन्द देखते रह जाएँगे।

पुस्तक समीक्षा

पुस्तिका का नाम-- महर्षि दयानन्द-सरस्वती की प्रामाणिक जन्मतिथि।

लेखक- डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, प्राध्यापक रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी।

प्रकाशक- स्वामी सत्यप्रकाश प्रतिष्ठान आर्यसमाज रायबरेली (उ०प्र०)

मूल्य- पाँच रुपये मात्र ।

प्रस्तुत पुस्तिका में स्वामी दयानन्द लिखित "जन्म चरित्र" "पूना प्रवचन" में स्वकथित आत्मचरित, पं० लेखराम तथा श्री पं० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा लिखे गये जीवन चरित्र, पं० ज्वालादत्त-शर्मा द्वारा रचित स्वामी जी के जन्मविषयक श्लोक के आलोक में तर्क प्रमाण पुरस्सर स्वामी जी की जन्मतिथि फाल्गुण कृष्णा 10 (दशमी) शनिवार सं०- 1881 विक्रमी, तदनुसार 12 फरवरी 1825ई० सिद्ध की गई है। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने भी इसी तिथि को ही स्वामी जी का जन्मदिन माना है। इस तिथि के विरुद्ध अनेक काल्पनिक स्थापनाओं और तिथियों की परीक्षा इस पुस्तिका में है।

वैसे तो वेद के अनुसार प्रत्येक तिथि प्रत्येक समय प्रत्येक स्थान शुभ है। किसी भी समय कोई भी महान आत्मा जन्म ले सकती है। फिर भी महान आत्माओं के जन्मस्थल एवं तिथि तथा समय आदि के विषय में भक्त श्रद्धालुओं की आस्था सदैव से जुड़ी रही है। स्वामीजी के जन्मस्थान, समय और तिथि के विषय में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रकट किए हैं। निःसन्देह लेखक की समीक्षा अभी उसके तर्कों में काफी वजन है। यदि सभी विद्वान् इस विषय में एकमत हो जावें तो आ०स० के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के जन्मस्थान एवं जन्मतिथि के बारे में फैली हुई भ्रान्त धारणाओं का निराकरण हो सकता है और एक सर्वमान्य मान्यता लोक में प्रचलित की जा सकती है। अतः सुधी समीक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे लेखक महोदय से सम्पर्क स्थापित कर एक विवेचित तथा सर्वमान्य मान्यता के सम्बन्ध में निश्चय करेंगे।

आर्यमित्र ऐसी मान्यता का स्वागत करेगा। पुस्तिका पठनीय एवं विवेचनीय है।

- आचार्य इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० दर्शनावाचस्पति

● आर्यसमाज सूरीपुर (बरेली)

प्रधान - श्री सुखन लाल आर्य
मन्त्री - श्री दयाराम आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री बेचेलाल जी

पंजीकरण सं. एल. डब्ल्यू / एन.पी. ७६

12946-श्री पुस्तकाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
{ हरिद्वार }

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
पौष कृष्ण - १४ संवत् २०४७ वि.
दिनांक: १६ दिसम्बर १९९०

दूरभाष
२४५९९३

आर्य वीर दल सम्मेलन सम्पन्न

सुलतानपुर- सार्वदेशिक आर्यवीर दल पूर्वी उ0प्र0 के मन्त्री श्री प्रयागदीन जायसवाल के अनुसार विभिन्न जनपदों के 200 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में दल का दो दिवसीय कार्यक्रम विशेष उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में कई विशिष्ट व्यक्तियों के ओजस्वी व्याख्यान हुए। साथ ही आर्यसमाजों से कहा गया वह अपने यहाँ आर्यवीर दल की हर प्रकार से सहायता करें।

निर्वाचन

आर्यसमाज आर्यनगर भूड {बरेली}

प्रधान - श्री विद्याशंकर "अलनेश"
मन्त्री - श्री विजेन्द्रप्रताप जी
कोषाध्यक्ष- श्री राममोहन राय

आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से आ0द0 के निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने "राष्ट्रीय आर्यप्रतिनिधि सभा" के नाम से एक अवैधानिक संगठन खोल कर आर्यजनता में भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इस तथाकथित अवैधानिक संगठन को अपना किसी प्रकार का कोई सहयोग न दें।

- सभामन्त्री





उत्तर प्रदेश के मुख्य विक्रेता

1- आयुर्वेद सेन्टर, लखनऊ।
2- एस0एस0मेहता, लखनऊ।
3- अलकार फार्मेसी, कानपुर।
4- रामदेव मिश्रा, रायबरेली।
5- शिव आयुर्वेदिक औषधालय, प्रतापगढ़।
6- स्वदेशी औषधालय, गोण्डा।
7- मिश्रा आयुर्वेदिक स्टोर, सुलतानपुर।
8- विनय कुमार अरूण कुमार, इलाहाबाद।
9- कुलदीप चन्द्र सामा, आगरा।
10- बैजनाथ प्रसाद एण्ड सस, फैजाबाद।

शाखा कार्यालय- ६३ गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि सं २२४१/५७) पौष शुक्ल ६ रविवार सवत २०४७वि दिनाक २३ दिसम्बर ९९० (घोषणा पत्र स.७/२७ २ ७५

अनुपम अभिनव अविस्मरणीय

विश्व के आर्यो का अपूर्व समागम

दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर १९९०

आर्यजन इसमें सम्मिलित होकर अपनी संगठन शक्ति का परिचय दें।

—इन्द्रराज सभा प्रधान

पौने दो अरब वर्षो से ससार को सत्य सनातन धर्म, प्रेम, सहिष्णुता और शान्ति का सन्देश देने वाली, जगती के धरातल पर परमपावनी वैदिक सस्कृति की पीयूषधारा प्रवाहित करने वाली हमारी अस्मिता को आज किसी ने ललकारा है। वह शायद यह भूल गया है कि सत्य के सूर्य का प्रकाश किसी के रोके नही रुका है। तिमिराच्छन्न तमस की कालीघटाओं को देखकर शायद तमस यह भूल बैठा है कि प्रभात होने ही वाला है। ज्ञान का सूर्य चमकेगा और आर्यों की पीयूषवर्षिणी ज्ञानगगा फिर अपनी अनन्त जलधाराओं से इस धरती के कोने-कोने को पवित्र कर देगी। **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का सन्देश साकार होगा। कराहती हुई मानवता सुख, शान्ति और समृद्धि का नीड बन जायेगी। हम उस दिव्यज्ञान के सन्देशवाहक हैं जो न कभी मिटा है और न मिट सकता है।

इसलिए आर्यो ! इस अपूर्व समागम में सम्मिलित होकर ससार को अपने अस्तित्व का परिचय दीजिए और कोटि-कोटि कण्ठों से एक स्वर में आकाश को गुजायमान कर दीजिए कि हम तमस से भयभीत होनें वाले नही हैं। हम सूर्य की प्रखर किरणें हैं। हमने ससार में ज्ञान का प्रकाश फैलाया था और फैलाते रहेंगे। हमारा अतीत महान था वर्तमाम उससे भी महान होगा। हम आर्य हैं- सतत प्रगतिपथ पर बढने वाले राही। लक्ष्यप्राप्ति तक बढते जाना हमारा कर्तव्य है। हमने कभी पराजय स्वीकार नही की है।

सम्मेलन में पधारिये, तन-मन-धन से सहयोग दीजिए, और सत्य सनातन वैदिक धर्म की विजय कराइए।

अहमिन्द्रो न पराजिग्ये

अतीत के सन्दर्भ में आज हम

अपने सिद्धान्तों की सर्वोच्चता पर हमें गर्व है और हम अपने अह को सन्तुष्ट भी कर सकते हैं पर जब अतीत पर दृष्टि जाती है तो विस्मयभरा एक अट्टहास हमें कवि के इन शब्दों में झकझोर देता है-

हम कौन थे क्या हो गये हैं
और क्या होंगे अभी।

आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्यायें सभी।

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण

(मनमोहन [illegible])
प्रकाश [illegible]
आर्य मित्र [illegible]
५ [illegible]

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/
वार्षिक	रू ३०/
एक प्रति	१ रू मात्र
विदेश मे	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वॉ वर्ष
अंक ५०

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा अरुण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ – पौष शुक्ल – ६ संवत २०४७ वि.
दिनांक – २३ दिसम्बर १९९०, दयानन्दाब्द १६६
सृष्टि संवत १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

सभा का निर्वाचन

दिनांक- 15 तथा 16 दिसम्बर को लखनऊ में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का 105 वाँ वृहदधिवेशन एवं वार्षिक चुनाव अत्यन्त उत्साह एवं उमंग के वातावरण में सम्पन्न हो गया। आर्य प्रतिनिधियों ने प्रधान पद पर श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री पद पर श्री मनमोहन तिवारी को पुनः सर्वसम्मति से निर्वाचित करके उनके कुशल नेतृत्व और अपने विश्वास को फिर दोहराया है।

हमारा प्रदेश इस समय भीषणरूप में साम्प्रदायिकता की चपेट में है। आगरा, कानपुर, अलीगढ़, मेरठ तथा कई अन्य नगरों से मार-काट तथा आगजनी की खबरें निरन्तर आ रही हैं। इन सभी नगरों में लगातार कर्फ्यू लगा हुआ है फिर भी हमारे प्रतिनिधि प्रदेश के दूरस्थ और कर्फ्यूग्रस्त इलाकों से निकलकर सभा के वृहदधिवेशन में सम्मिलित हुए यह उनकी सभा तथा आर्यसमाज के प्रति अटूट निष्ठा का परिचय देता है।

देश की वर्तमान परिस्थितियों पर आर्य प्रतिनिधियों ने खुलकर अपने विचार प्रकट किए और एकस्वर से यह मत व्यक्त किया कि राजनैतिक स्वाधीनता मिलने पर भी भारत की सर्वांगीण उन्नति तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि इस देश का पूर्ण भारतीयकरण न किया जाय। इस समय आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसी सामाजिक एवं राष्ट्रीय संस्था है जो देश को राष्ट्रीय ऐक्य, प्रेम और शान्ति की डोर में बान्ध सकती है। विदेशी शक्तियाँ भारत को उन्नत नहीं देखना चाहती हैं वे यथाशक्ति अपने धनबल और कूटनीतिक चालों से भारत को खण्ड-खण्ड कर देने का पुनः स्वप्न देख रही हैं ऐसे समय में आर्यसमाज ही इस विखण्डनवाद से राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। प्रतिनिधियों ने आर्यसमाजों को सुसंगठित एवं शक्ति शाली बनाकर प्रचारकार्य को व्यापकरूप से गतिशीलता देने हेतु संकल्प लिया।

रामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण के सम्बन्ध में एक स्वर से यह मत व्यक्त किया गया कि यद्यपि आर्यसमाज मूर्तिपूजा का विरोधी है तथापि राम को मर्यादा पुरुषोत्तम एवं कोटि-कोटि आर्य (हिन्दू) जनता की आस्था का प्रतीक मानता है जब कि तथाकथित बाबरी मस्जिद दासता की प्रतीक है। अतः राम की जन्मस्थली अयोध्या में मन्दिर निर्माणार्थ चलाए जा रहे आन्दोलन को आर्यसमाज अपना पूर्ण समर्थन एवं सक्रिय सहयोग देता रहेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री एवं सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा अन्य मान्य प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि इस देश को ही नहीं अपितु विश्व को आर्यसमाज से महान आशाएं एवं अपेक्षाएं हैं इसलिए प्रतिनिधि अपने दायित्व को समझें। विश्व के कोने-कोने में फैली हुई आर्यसमाजें हमारी समग्र शक्ति का आधार हैं। इन्हें सुगठित करके प्रचारकार्य को जुझारू रूप में गतिशील बनाना समय की पुकार है।

पदाधिकारियों में आर्यव्यक्तित्व के उभरते हुए कुछ नये चेहरे भी इस बार हमारी टीम को प्राप्त हुए हैं। यह सभी पुराने आर्यसमाजी एवं कर्मठ तरुणाई के प्रतीक हैं। सभा को इनसे काफी बल मिलेगा। इन सभी का हृदय से स्वागत है। प्रतिनिधियों के ठहरने भोजन आदि की व्यवस्था बड़ी सराहनीय रही। आर्यमित्र परिवार अपने सभी अभ्यागत प्रतिनिधियों निर्वाचित पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों तथा अधिवेशन में सम्मिलित सभी आर्यबन्धुओं का हृदय से स्वागत करते हुए बधाई देता है और प्रभु से प्रार्थना करता है कि वह इस टीम को अजेय शक्ति प्रदान करें ताकि राष्ट्र की इस विषम परिस्थिति में हमारी सभा और आर्यसमाज अपने दायित्व को भलीभांति पूर्ण करने में समर्थ हो सके। ■

भारत-माँ की पीड़ा मेटो

– चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
एडवोकेट, कानपुर।

आज जरूरत है भारत को,
लौह पुरुष इन्सान की।
कश्मीर, पंजाब बचाले,
ऐसे अटल स्वाभिमान की।।

गीदड़ धमकी से कुछ ना बनता,
ना बनता रोष दिखाने से।
शत्रु भागे दुम दबा कर,
तीखे बाण चलाने से।।
भारत माँ की शान बचाले,
ऐसे अमर बलिदान की।
आज जरूरत ------।।

पाकिस्तानी भूतों से कह दो,
छोड़ें अपनी चाल को।
सोते शेरों को ना छेड़ें,
ना बुलाए अपने काल को।।
हर शत्रु को धूल चटाए।
ऐसे चेतन अरमान की।
आज जरूरत --------।।

कण-कण कश्मीर का रोता,
रोती घाटी की हरियाली।
स्वर्ग समान उस भारत भू-का,
गद्दार बन गया है माली।।
गद्दारों को चुन चुन कर-मारे,
ऐसे भारत के लाल की।
आज जरूरत --------।।

आतंकवाद चरम सीमा को,
लांघ रहा पंजाब में।
हर बल शासन का चरमरा उठा,
देशभक्त पंजाब में।।
दैनिक हत्याओं को रोके,
ऐसे माँ के लाल की।
आज जरूरत ------।।

दशा बिगाड़ी कश्मीर की
उसने अन्दर-अन्दर।
भारत-विरोध की ज्वाला
सुलगाई अन्दर-अन्दर।

सोच-समझ कर उसे बुलाओ।
कहीं न धोखा खाओ।
क्या उसका इतिहास रहा है-
इसे नहीं बिसराओ।

पाकिस्तानी कब्जे में है
जितना भी कश्मीर।
उसके कट जाने से होती
भारत-माँ को पीर।

कुछ भी हो, भारतवालों को
वह हिस्सा लौटाना।
हिस्सा जो कट गया, उसे
फिर से भारत में लाना।

देखो भाई- अपने घर में
जो भी है घुस आया।
बलपूर्वक जिसने इस पर है
निज अधिकार जमाया।

उसे भगाओ। मत उसको
अब और वहाँ रहने दो।
भारत-माता को घावों से
मत पीड़ा सहने दो।

भारत का है भाग। उसे
फिर से भारत में लाओ।
भारत-माँ की पीड़ा मेटो।
उसको सुखी बनाओ।

हुए बहुत दिन अन्यायी को
अब तो मार भगाओ।
नाजायज़ कब्जा करने की
उसको सजा दिलाओ।

दोनों कश्मीर मिल कर
फिर पहले से हो जाएँ।
हम सबका कर्तव्य- कि वह
हिस्सा वापस लौटाएं।

अब्दुल्ला से होशियार
हमको रहना है भाई।
अब्दुल्ला ने कश्मीर में
साजिश खूब रचाई।

—×—

स्वामी श्रद्धानन्द अब अधिक प्रासंगिक हैं

• मनुदेव "अभय" विद्यावाचस्पति
इन्दौर

(हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए कबीर से लगा कर नानक तथा नानक से लगाकर अकबर और महात्मा गाँधी ने बड़े प्रयास किये परन्तु मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की। आज विभाजन के पश्चात भी अलगाव, साम्प्रदायिक उन्माद तथा विध्वंस की कार्यवाहियां इन चारों विभूतियों की असफलता की ओर संकेत कर रही हैं। अब देश में यह नारा लगाना बिल्कुल निरर्थक है।) — सम्पादक

भारतीय इतिहास में इस 20वीं शताब्दी की तीन तारीखें सदैव स्मरण रखी जावेंगी। प्रथम- 23 दिसम्बर 1926 द्वितीय- 30 जनवरी 1948 तथा तीसरी 30 अक्टूबर 1984। इस देश के स्वच्छ क्षितिज के देदीप्यमान नक्षत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को साम्प्रदायिक उन्माद में आकर यहां के मुसलमानों ने अब्दुल रशीद के माध्यम से दिल्ली के भीड़भरे नये बाजार (वर्तमान श्रद्धानन्द बाजार) में दोपहर को 23 दिसम्बर 1926 को उस समय गोली मार शहीद कर दिया, जब वे निमोनिये से पीड़ित थे। देश-विभाजन के पश्चात् 55 करोड़ रूपये पाकिस्तान को भेंट स्वरूप दिलवाने से दुःखी एवं असन्तुष्ट हिन्दू समाज के गोपाल गोडसे के बड़े भाई नाथूराम गोडसे ने विश्व वंद्य महात्मा गाँधी को उस समय गोलीमार दी, जब वे सायं कालीन प्रार्थना के लिए दिल्ली-स्थित बिरला मंदिर में जा रहे थे। 30 जनवरी 1948 का काला-दिवस हमारे इतिहास में एक अमिट कलंक के समान लग गया। बापू शहीद हो गये और उनकी कीर्ति अमर हो गई। इसी प्रकार 30 अक्टूबर 1984 को ब्ल्यू स्टार आपरेशन से विक्षुब्ध होकर एक सिख सिपाही ने तत्कालीन प्रधान मन्त्री- श्रीमती इन्दिरागाँधी को उस समय गोली मार दी, जब वे अपने निवास के परिसर में प्रात 8 बजे अपने कार्यालय पैदल ही जा रही थीं।

इन तीनों विभूतियों का महान बलिदान केवल इसलिए हुआ कि इन्होंने भारतीय समाज को धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक सेवा का उत्तर दायित्व अपने कंधों पर लिया था। परन्तु समाज के एक वर्ग ने इन महापुरुषों की सेवाओं को नकारात्मक रूप में लिया और इन्हें संसार से विदा कर ही चैन की सांस ली। परन्तु पवित्र उद्देश्य के लिए यदि बलिदानों की यह परम्परा समाप्त हो जावेगी, तो यह देश निष्प्राण हो जावेगा। बलिदानी भावना देश का सुदृढ़ सोपान (पायदान) है, शिखर की ओर बढने की दिशा सूचक है। वीरों की भाँति देश, जाति तथा धर्म पर बलिदान हो जाना मानो नया जीवन प्राप्त कर विश्व-मानवता की सेवा के लिए पुन पवित्र प्रयास करना है। जीवन और मृत्यु यह एक क्रम है।

वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में स्वामी श्रद्धानन्द (लाला मुंशीराम) पहिले से अधिक इसलिए प्रासंगिक हैं कि स्वामीजी ने अपने बहुमुखी व्यक्तित्व के द्वारा इस देश की अनेक समस्याओं की जड़ों को गहराई से देखकर पहिचान लिया था। उन्होंने सामाजिक रोग का न केवल निदान ही किया, अपितु एक कुशल वैद्य के समान उसका उपचार भी किया। यह एक बात अलग है कि रोगी ने ही अपने वैद्य का गलाघोंट कर रोग के मुक्त होने का पागल जैसा व्यवहार कर समाज और देश का बहुत अहित कर डाला।

पिछले 2-3 दशकों से देश से अल्पसंख्यक, धर्म निरपेक्ष, साम्प्रदायिकता, कमजोर और पिछड़ावर्ग आदि कुछ राजनीतिक शब्दों का प्रयोग आवश्यकता से अधिक होने लगा। इन पेशेवर राजनीतिज्ञों ने अल्पसंख्यकों के शुभ-चिन्तक बनने के नाम पर उन्हें अपना वास्तविक (रक्षक) बताया। इन्हें अपना मत-कोष (वोट बैंक) बनाकर इन्हें भ्रमित कर इनका दिमाग आस्मान पर चढा दिया। यहाँ तक कि हिन्दू को हिन्दू न कहकर गैर-मुस्लिम शब्द का प्रयोग कर इस देश की अस्मिता को घायल करने का प्रयास किया जाने लगा। आज भी राजनैतिक दलों को मुस्लिम वर्ग वह चटपटी चटनी बन गया है, जिसके बिना कोई भी राजनायिक इन्हें बिना चाटे सन्तुष्टि प्राप्त नहीं कर पाता। यही हमारी चटोरी आदत देश को भयंकर विनाश के कगार पर ले आयी है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने आज से 6 दशक पूर्व इस वर्ग का निदान कर इन्हें अपने में हूण, शक, किरात आदि के समान हजम करने के लिए सुदर्शन चक्र रूपी शुद्धि-चक्र चलाया था। केवल उपासना, पूजा तथा कर्मकाण्ड की भिन्नता के कारण किसी जाति के महापुरुष नहीं बदल जाते। परन्तु न तो हिन्दू समाज ने उस समय स्वामी श्रद्धानन्द की "शुद्धि" की बात माना और न इन मुसलमानों (अल्प-संख्यकों) की राष्ट्र- विरोधी गतिविधियों पर ही ध्यान दिया। देश-विभाजन के पश्चात् भी आज कश्मीर, पंजाब, असम तथा पश्चिमी बंगाल एक महान समस्या के रूप में हमारे सम्मुख खड़े हैं। राजनीति के अध्येता भलीभाँति जानते हैं कि केन्द्र में केवल दल-विशेष की सत्ता बदल देने से, केवल दल बदल देने से देश का कायाकल्प नहीं होता, अपितु दल की अपेक्षा दिल के विचार बदलने से ही देश एक नई करवट ले सकता है। जिस देश में व्यक्ति पूजा और मूर्तिपूजा प्रचलित रहती है। वह देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि अब नैतिक मूल्यों के आधार पर राजनैतिक- लड़ाई समाप्त हो गई है और अब व्यक्ति केन्द्रित राजनैतिकदल केन्द्रीय सरकार बनाने की प्रतियोगिताएं कर रहे हैं। यह एक बड़ा भारी खतरा है। जिसकी ओर सभी देशभक्तों का ध्यान जाना जरूरी है।

शिक्षा के क्षेत्र में निरुद्देश्य शिक्षा-पाठ्यक्रम चलाकर लाखों-करोड़ों सेवकों को नौकरी मात्र का इच्छुक बना डाला। जिसमें न तो नैतिक मूल्यों को ही स्थान है और न चरित्र, देशभक्ति तथा आस्तिकता की चर्चा है। गुरुकुलों में जिस शिक्षा-पाठ्यक्रम को स्वीकार किया गया था, उसमें स्नातक बनने के पश्चात् न तो नौकरी ढूंढने की दरकार थी और शिक्षितों को बेकारी भत्ता देने की गुंजाइश थी।

गुरुकुल की शिक्षा समाप्त कर युवक देश, समाज, साहित्य, पत्रकारिता आदि अन्य विधाओं की ओर स्वमेव ही चला जाता था। आज भी शिक्षा व्यवस्था के नाम के सम्मुख प्रश्न वाचक चिन्ह लगा हुआ है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकलापों के द्वारा जाति-पाँति को समूल नष्ट करने का बीड़ा उठाया था। कोई भी मनुष्य जन्म से न तो नीच होता है और न ऊँचा। समाज में प्रत्येक को अपनी योग्यता प्रतिभा के विकास का पूर्ण अवसर दिया जाकर उसे देश और समाज के लिए उपयोगी बनाया जाना चाहिए। गुरुकुलों में जाति-पाँत का नामो-निशान जड़ से नष्ट कर दिया गया था। ठीक इसके विपरीत, अवसरवादियों तथा स्वार्थियों- पद लोलुपों ने मण्डल का कमण्डल बनाकर देश को ऐसा बंडल दे दिया। जिससे विशाल हिन्दू जाति को सैकड़ों जाति, उपजाति आदि में विभाजित कर आरक्षण का नाम दे दिया। स्वामी श्रद्धानन्द आरक्षण नहीं अपितु दलितों, दीनों गरीबों को संरक्षण दिलाने वाले महापुरुष थे। जाति और वर्ग संघर्ष की भावना के कारण ही देश की रीढ़ टूटती है और देश पराधीन हो जाता है। परन्तु धूर्त राजनीतिज्ञों को देश की स्वतन्त्रता की तनिक भी परवाह न कर जातिवाद का जिन्न पैदा कर दिया। इसे जितनी जल्दी हो सके, उतनी ही जल्दी समाप्त कर हिन्दू समाज की एकता पर अत्यधिक बल देना चाहिए।

वर्तमान में भाषा-वाद, प्रान्तवाद, साम्प्रदायिकता, अगड़ा-पिछड़ा, सामाजिक असामंजस्य आदि ऐसे उन्माद खड़े कर दिये गये हैं, जिससे देश और समाज विघटन की ओर चला जा रहा है। युवा वर्ग में भोगवाद तथा नशीली वस्तुओं का सेवन तथा तस्करी जैसे अपराध देश को खोखला किये दे रहे हैं। हमें इन सारी बुराईयों की जड़ों पर कुठाराघात करना है। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वयं निर्व्यसनी बनकर अपने गुरुकुलों और शिष्यों को श्रेष्ठ सदाचारी तथा देश भक्त बनने की शिक्षा दी थी।

आज देश की विभिन्न समस्याओं को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी श्रद्धानन्द और उनका जीवन दर्शन, उनका संदेश तथा कार्य पद्धति पहिले से कहीं अधिक उपयोगी और प्रासंगिक है। यही घड़ी, हमारे लिए आत्म-चिन्तन तथा प्रतिज्ञा बद्ध होने की है। इतने पर ही हम हमारे राष्ट्र की स्वतन्त्रता, अखंडता तथा संप्रभुता की रक्षा कर सकते हैं। □

एक निर्भीक सन्यासी

• डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम.ए.,
आ०स० गोरखपुर

रैम्जे मैकडानल्ड ने स्वामी श्रद्धानन्द के विषय में लिखा है- "वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित मॉडल लेना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्य कालीन चित्रकार सैंट पीटर के लिए नमूना मांगे तो मैं उसे जीवित मूर्ति (स्वामी श्रद्धानन्द) के दर्शन करने की प्रेरणा करूंगा"। प्रधानमन्त्री मैकडानल्ड के ये शब्द उनकी हृदय की भावना व्यक्त करते हैं। मैंने अपनी प्रथम और द्वितीय श्रेणी में स्वामी श्रद्धानन्द को देखा था। उसी समय से उनके प्रति एक ऐसी श्रद्धा जागृत हो गई थी कि मैं उन्हें अपना आदर्श, अपना पूज्य और अपना श्रद्धास्पद समझने लगा था। मुझे याद है कि दूसरी कक्षा में मैं पढ़ रहा था तब एक दिन हमारे यहाँ दुःख दायक सूचना सुनाई गई कि अब्दुल रशीद ने स्वामी श्रद्धानन्द को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी है। 1926 ई० के दिसम्बर मास की 23 ता० को अब्दुल रशीद नामक एक मुसलमान ने दिल्ली में, प्यास का बहाना करके उनके सेवक को पानी लाने के लिए भिजवा कर, एकान्त पाकर पिस्तौल से गोलियां चलाकर उनकी हत्या कर दी। यह समाचार सुनकर हम सब दूसरी श्रेणी के सभी छात्र जोर-जोर से रोने लगे। मुझे स्मरण नहीं आता कि मैं अपने माता, पिता तथा बहनों की मृत्यु के समय भी उतना नहीं रोया हूँ। हम सब रो रहे थे। हमारे आचार्य-आचार्य क्या? प्रधानाचार्य आए। उन्होंने हमें समझाना शुरू किया था कि उनकी आखों से आंसुओं की धारा और सिसकियों का शब्द निकलने लगा। चले थे, समझाने पर हमारे आचार्य-आचार्य श्रद्धानन्द के शिष्य श्री सोमदत्त विद्यालंकार के आंसुओं और सिसकियों से सारा आश्रम क्रन्दन मय हो गया। मैंने तो दयानन्द स्वामी और श्रद्धानन्द सन्यासी से उज्वल चरित्रवान व्यक्ति नहीं देखा, नहीं सुना, नहीं पाया। हाँ, तो मैं चाहता था उनकी निर्भीकता की चर्चा करना परन्तु उनकी वीर की- मृत्यु का प्रभाव बतलाने लगा। आइए उनकी निर्भीकता की बातें बतायें -

(1) स्वामी श्रद्धानन्द ने जब गुरुकुल का प्रारम्भ किया, उस समय गुरुकुल के चारों ओर घना जंगल था। इस जंगल में हिंसक जन्तुओं की भरमार थी। श्री सोमदत्त जी विद्यालंकार के पिता श्री पं० विष्णुमित्र जी वहां अध्यापक थे। वे छात्रों को साथ लेकर घूमने के लिए निकले थे। उसी समय एक शेर अपनी प्यास बुझाने के लिए गंगा के जल-पान के लिए उधर आ निकला, उस समय गीली बालू से बच्चे मन्दिर आदि बनाने का खेल खेल रहे थे। शेर देखकर श्री प० विष्णुमित्र जी बच्चों के लिए चिन्तित हुए और उन्हें अपने पीछे करके वे आगे खड़े हो गए। बच्चे शेर को देखकर बुरी तरह चिल्ला उठे और पंडित जी बच्चों के लिए किंकर्तव्य विमूढ़ होकर सोच रहे थे कि क्या किया जाय। उसी समय अचानक दैवीय प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द (उस समय महात्मा मुंशीराम) आ गए। वे पंडित जी के पास आकर बोले कि आप बच्चों को संभालें मैं शेर से निपटता हूँ। वीर दूसरों को आपत्ति के समय पीछे धकेलते हैं और स्वयं आगे बढते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द का सामाजिक धार्मिक और राजनैतिक सारा जीवन देखिए तो उन्होंने राष्ट्र और समाज के लिए आपत्ति के समय आगे बढ़कर उसकी रक्षा की है। इस समय भी पंडित जी उन्हें बार-बार रोकते रहे पर वे शेर की ओर आगे ही आगे बढ़ते गए। महात्मा मुंशीराम के सिर पर पगड़ी थी। उसमें पत्थर बांधकर सिर के ऊपर उसे घुमाया। शेर पास आने पर इस अजीब जानवर को देखकर बुरी तरह घबरा गया और दहाड़ता हुआ जंगल की ओर भाग गया। महात्मा जी पंडित जी और बच्चों के पास आकर हंसते हुए बोले-"यह सोचता है कि इस जंगल का राजा मैं हूँ। पर इसे शायद यह मालूम नहीं कि अब इस जंगल के राजा हम हैं।"

इसी प्रकार एक और भी घटना स्वामी श्रद्धानन्द के साथ घटित हुई। वे गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता और आचार्य थे और गंगातट पर बने बंगले में रहा करते थे। उन्होंने छात्रों को कुछ रखा था कि यदि किसी छात्र को कोई शिकायत या कठिनाई हुआ करे तो वह मेरे बंगले में रात को नौ बजे आकर मुझसे मिल लिया करें। एक दिन वे रात को अपनी मेज के सामने बैठे स्वाध्याय में लीन थे, उन्होंने देखा कि कोई दरवाजे पर लटकी चिक को उठाकर आकर आना चाहता है, पर चिक उठ नहीं रही है। स्वामी जी ने जोर की आवाज में कहा "कौन है भाई, चिक को एक तरफ सरकाकर अन्दर आ जाओ ना।" पर वहां कोई छात्र तो था नहीं। शेर चिक को धकेल कर बंगले में दाखिल हुआ। शेर से आँखें मिलीं और स्वामी जी ने मेज के नीचे रखी वेस्ट पेपर का बास्केट- जो फटे कागजों से भरी हुई थी उठा कर दे मारी। फटे कागजों की वर्षा से बुरी तरह घबराकर शेर डरकर जंगल की ओर भाग गया। भागते समय चिक उसके सिर में फंस गई। यह सब शोर सुनकर पास ही रहने वाला सेवक वहां आया और महात्मा जी से पूछा "क्या बात है? दरवाजे की चिक कहां गई?" महात्मा जी बोले "शेर अन्दर आया था। डर कर मेरी चिक लेकर भाग गया।"

स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल का प्रारम्भ जंगल में किया था। जंगल भी साधारण नहीं था उस जंगल में जंगली हाथी, शेर, चीते, बाघ, रीछ और सांप, अजगर और पानी में घड़ियाल भी थे। इन जानवरों, के अतिरिक्त मानव -पशु डाकू भी अपना निवास बना कर रहते थे। कार्यकर्ताओं और विद्यार्थियों की रक्षा के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने कभी सरकारी सहायता नहीं ली। गुरुकुल के पूर्वीय दिशा में सुल्ताना नामक डाकू रहता था और उसका बड़ा आतंक था। उससे तो सरकार भी भयभीत रहती थी। उसका एक यह भी नियम था कि वह डाका डालने के पूर्व जहां डाका डालना होता था उनको सूचित कर देता था। एक बार उसने गुरुकुल को अपना लक्ष्य बनाया और उन्हें सूचित भी कर दिया। बरसात का मौसम था। गंगा का पूर्वीय नाला भी भरकर चल रहा था। उन्होंने गुरुकुल के कर्मचारियों, अध्यापकों और छात्रों की पार्टियां बनाकर गुरुकुल के चारों ओर तैनात कर दीं और सबको लाठियां और हाकियां दे दीं और चार पाँच मशालें भी उनके पास थीं और निर्भयता की यह मूर्ति भी वहां आ गई। सुल्ताना के आक्रमण की आशंका पूर्व की ओर से थी। वह सूचित समय पर आया। वहाँ उसने पचासों मशालों की रोशनी में सैकड़ों ब्रह्मचारियों और कर्मचारियों को लाठी लिए हुए तैयार देखा तो वह वहां से स्वामीजी की ओर बढ़ा। घोड़े पर बैठे-बैठे उसने स्वामी जी को लक्ष्य कर पूछा यह क्या हो रहा है? क्यों मशाल और लाठी लिए इतने आदमी घूम रहे हैं? क्या आप लोगों को मेरा नोटिस नहीं मिला? आप भी इनके साथ डंडा लिए घूम रहे हैं।" स्वामीजी ने कहा-"हमें डाकुओं के सरदार किसी सुलताना ने डाका डालने का नोटिस दिया था। हम उसका सामना करने आए हैं। स्वामी जी ने यह भी बतलाया कि यहां निःशुल्क पढ़ाई होती है। पर, शत्रु का, सताने वाले का तो सामना करना ही होगा। यह सुनकर और स्वामी जी की प्रदीप्त वाणी सुनकर तथा चेहरे पर विराजमान दिव्य तेज को देखकर वह इतना प्रभावित हुआ कि घोड़े से उतर कर स्वामी जी के चरणों को छुआ उनसे क्षमा मांगी और पाँच हजार रुपए भी श्रद्धा स्वरूप दिए। वह एक नई प्रेरणा लेकर वापस लौट गया।

7 मार्च सन् 1919 ई० को रॉलट एक्ट के खिलाफ सत्याग्रह छेड़ने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में कार्य प्रारम्भ हुआ। 50 हजार से ऊपर सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हुए डीलडौल के 6 फुटे सन्यासी श्रद्धानन्द घंटाघर पहुँचे। स्टेज पर बैठे लोगों में नारायणदत्त ठेकेदार, ट्रापिकल इन्श्योरेंस कम्पनी के डाइरेक्टर लाला शंकरलाल, हकीम अजमल खां साहब, और अन्सारी साहब थे। वहां स्वामी जी ने वेद मन्त्रों के उच्चारण के पश्चात् जनता को सम्बोधित कर अपना ओजस्वी भाषण आरम्भ किया ही था कि एक घुड़सवार पुलिस अधिकारी सभास्थल पर आ धमका। स्वामीजी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और अपना भाषण समाप्त करने के बाद 5 बजे सभा समाप्त हुई। उसके बाद पचास हजार आदमियों का जलूस आगे बढ़ा। रास्ते में कुछ सैनिकों ने आकर जलूस भंग करने को कहा और यह भी कहा कि "हम तुम्हें छलनी बना देंगे। यह सुनकर स्वामीजी आगे बढ़े निर्भीकता से मुस्कराते हुए अपने सीने पर से वस्त्र हटाते हुए बोले- "लो मैं सामने खड़ा हूँ। अगर तुम में हिम्मत हो तो पहले मुझे छलनी बनाओ तब दूसरे निहत्थों पर गोली चलाना।" उनके जीवन की यह घटना आज भी इतिहास की स्वर्णाक्षरों से अंकित है और विश्व के इतिहास की यह घटना गंगा और यमुना में जब तक पानी रहेगा। और आकाश में जब तक सूर्य चाँद चमकते रहेंगे चांदनी चौक से एक आवाज सुनाई देती रहेगी-

"स्वामी श्रद्धानन्द की जय" "स्वामी श्रद्धानन्द की जय" "भारतमाता की जय" ■

दलितों के मसीहा-स्वामी श्रद्धानन्द जी

• यशपाल आर्यबन्धु
आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

महापुरुष युग की पुकार होते हैं। युग की पुकार पर ही उनका जन्म हुआ करता है। युग की आवश्यकतायें ही उन्हें आहूत किया करती हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी इसके अपवाद नहीं थे। उनका जन्म भी युग की पुकार पर ही हुआ था। उन्होंने युग के दर्द को समझा था और फिर उसे दूर करने का भरसक प्रयत्न भी किया था। जिस समय स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म हुआ था, यद्यपि उस समय सम्पूर्ण समाज ही पीड़ित था, तथापि दलितवर्ग सर्वाधिक दुःखी, पीड़ित और पद-दलित था। स्वामी श्रद्धानन्द ने समाज की दुखती रग पर हाथ रखा और उसके दर्द को पहचाना, तभी वे दलितों के मसीहा कहलाये।

दलितों को सर्वप्रथम गले लगाने वाले महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। ऊँच-नीच की भद्दी भेद-भावनाओं को उखाड़ फेंकने की भावना सर्वप्रथम उन्होंने ही दी। उसी से प्रेरणा पाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज इस महान कार्य की ओर प्रवृत्त हुए। आर्यसमाज के मंच के अतिरिक्त उन्होंने इस कार्य को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से भी उठाकर एक अनोखी हलचल सी उत्पन्न कर दी। और फिर एक ऐसा भी आया कि जब कांग्रेस ने दलितों के उद्धार की उपेक्षा करनी प्रारम्भ कर दी तो उसके विरोध में स्वामी जी ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सन् 1924 ई0 में "हिन्दू संगठन" नामक एक पुस्तक लिखी थी। 'अस्पृश्यता प्रगति में बाधक है' नामक उसके एक लेख में स्वामी जी की एतद्विषयक पीड़ा मुखरित हो उठी है, उसकी झांकी देखें। अपने उस लेख में स्वामी जी लिखते हैं-

"हिन्दुओं में प्रचलित अस्पृश्यता का अभिशाप उनके सम्मान पर एक बट्टा है और उनके इस पाप का दुष्परिणाम सम्पूर्ण राष्ट्र भुगत रहा है। जब कभी हमारे राजनीतिक नेता स्वराज्य की मांग पेश करते हैं, तो उनके सामने उनके पापों को रखकर उनका मुँह बन्द कर दिया जाता है। जो लोग अपने ही समाज के एक तिहाई लोगों का गुलाम बनाये हुए हों और उन्हें पैरों तले कुचल रहे हों, उन्हें विदेशियों द्वारा किये गये अत्याचारों के विरुद्ध शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं।"

अपने इसी लेख में वे आगे लिखते हैं- "मेरे लिये तो अस्पृश्यता के अभिशाप को उखाड़ फेंकना भारतीय राष्ट्रीयता की सुरक्षा के लिये एक आवश्यक शर्त है। अखिल भारतीय महासभा (कांग्रेस) के 34वें अधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष पद से 27 दिसम्बर 1919 को अमृतसर में बोलते हुए मैंने राष्ट्रीयता को संकट में से निकालने के लिये राष्ट्रीय शिक्षण और अस्पृश्यता निवारण इन दो साधनों पर बल दिया था। अस्पृश्यता-निवारण के सम्बन्ध में मैंने कहा था- "राष्ट्र में एक वस्तु की कमी है। वह क्या है? मुक्ति सेना (साल्वेशन आर्मी) के जनरल बूथकर ने "सुधार योजना-समिति" के सम्मुख अपने वक्तव्य में कहा था कि साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष सुविधा दी जानी चाहिये, क्योंकि वे ब्रिटिश सरकार के आधार-स्तम्भ हैं। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप इस वक्तव्य के अन्तस्तल में घुसकर जानने का प्रयत्न करें कि वे साढ़े छः करोड़ अछूत सरकार के आधार स्तम्भ कैसे बन सकते हैं? चूंकि आप इस पवित्र पण्डाल में इकट्ठे हुए हैं तो मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप यह शपथ उठायें कि इन अछूतों के प्रति आपका व्यवहार इस प्रकार का हो कि उनके बच्चे आपके बच्चों के साथ कालेज और स्कूलों में पढ़ सकें, आप उन्हें अपने परिवारों में उसी प्रकार घुलने-मिलने दीजिये जिस प्रकार आप स्वयं अपने परिवारों में घुलते-मिलते हैं। इसका परिणाम यह होगा कि वे अपनी राजनीतिक और प्रगति में आपके साथ अपने कन्धे भिड़ाकर चल सकेंगे। देवियों और सज्जनों! आप मेरे साथ मिलकर हृदय से प्रार्थना कीजिये कि मेरा यह स्वप्न सत्य सिद्ध हो।"

कांग्रेस से हताश और निराश होकर श्री स्वामी जी ने दिल्ली में दलितोद्धार सभा का गठन किया और उसके वे स्वयं सभापति बने। तब उन्होंने महात्मा गांधी को इसके लिये आर्थिक सहायता दिलाने के लिए उन्होंने महात्मा जी को तार दिया। परन्तु जब बाद में उन्हें पता चला कि कांग्रेस इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कर रही तो उन्होंने एक पत्र 9 सितम्बर 1921 को इस सम्बन्ध में लिखा था। अपने उस पत्र में श्री स्वामी जी ने लिखा कि - "मैंने लाहौर से तार दिया था कि मैं चाहता हूँ कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी द्वारा आर्थिक सहायता दी जावे। परन्तु दिल्ली पहुँचने पर मुझे ज्ञात हुआ कि कांग्रेस के लिए अछूतोद्धार कार्य के लिये व्यय करना असम्भव है। दिल्ली और आगरा के चमारों की केवल मात्र यह मांग थी कि उन्हें कुँओं से पानी भरने दिया जाये, जिनसे हिन्दू और मुसलमान दोनों पानी भरते हैं और उन्हें पानी पत्तों द्वारा न पिलाया जाया करे। मैं अनुभव करता हूँ कि कांग्रेस कमेटी के लिये केवल इस मांग को पूरा कर सकना सम्भव नहीं। केवल इतना ही नहीं, मैंने जिस कांग्रेसी मुसलमान से इस कार्य के लिये सहायता मांगी, उसने उत्तर दिया कि यदि सार्वजनिक कूँओं से, हिन्दुओं ने अछूतों को पानी भरने की आज्ञा भी दी, तो मुसलमान उन्हें बल प्रयोग द्वारा कुँओं से भगा देंगे क्योंकि चमार मुर्दा पशुओं का मांस खाते हैं। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि इन चमारों में से हजारों शराब और मांस को छूते भी नहीं हैं और जिन्हें मुर्दा मांस खाने की लत पड़ भी गई है, अब वे भी आर्यसमाज के प्रचार के परिणामस्वरूप अपनी इस आदत को छोड़ते जा रहे हैं। मैंने यह पत्र आपको केवल सूचना देने के लिए लिखा है कि अब मैं कांग्रेस कार्यसमिति से आर्थिक सहायता के लिये प्रार्थना नहीं कर सकता। मैं अपने सीमित स्रोतों के अनुसार जो कुछ कर सकता हूँ, वह सब करूंगा।"

स्वामी जी दलितोद्धार की समस्या को सर्वाधिक महत्व देते थे और उसे युग की आवश्यकता समझते थे। यही कारण है कि वे इस कार्य को कांग्रेस के प्रोग्राम में सम्मिलित करा देना चाहते थे। अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन से स्वागताध्यक्ष के पद से दिये अपने भाषण में उन्होंने अपने विचार सुस्पष्टरूप से रखे थे। उन्हीं की प्रेरणा से नागपुर

और बारडोली के कांग्रेस-अधिवेशनों में पारित प्रस्तावों में एक शर्त अस्पृश्यता-निवारण की भी रखी गई थी। महात्मा-गाँधी उनके इस विचार से पूर्णतया सहमत थे और उन्होंने अछूतोद्धार को कांग्रेस के कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाया था, पर गांधी जी के जेल जाने के बाद कांग्रेस के अन्य नेताओं ने इस ओर से सर्वथा आँखें मून्द लीं। कांग्रेसी नेताओं के इस रुख से क्षुब्ध होकर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस के महामन्त्री श्री विट्ठल भाई पटेल को 23 मई 1922 तथा 3 जून 1922 को विरोध पत्र लिखे और अपना त्यागपत्र दे दिया। अपने इन पत्रों में स्वामी जी ने अछूतोद्धार के कार्यक्रम को खादी एवं राष्ट्रीय शिक्षा के कार्यक्रम से अधिक आवश्यक बताते हुए इसे अपने कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाने और इसके लिए अधिक धन जुटाने का अनुरोध किया था। उन्होंने अपने पत्र में लिखा था कि- 'आप जानते ही हैं कि मैं तथाकथित दलितों के लिए कितना चिन्तित हूँ"।

स्वामी जी के उपर्युक्त पत्रों को पाकर कांग्रेस कार्यसमिति ने बारडोली के प्रस्ताव पर पुनर्विचार करने के बाद एक उपसमिति बनाई जिसमें श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्री गंगाधर राव देशपाण्डे और इन्दुलाल याज्ञिक के अतिरिक्त श्री स्वामी जी भी सदस्य थे। श्री स्वामी जी को इस समिति का संयोजक बनाया गया था। कांग्रेस कार्यसमिति तथा कांग्रेस कमेटी ने इस कार्य के लिए 2 लाख रुपये जमा करने का प्रस्ताव रखा। श्री स्वामी जी चाहते थे कि धन दो लाख नहीं पांच लाख जमा होना चाहिए और साथ में यह भी चाहते थे कि कांग्रेस कमेटी तत्काल अपने कोष में एक लाख रुपया इस कार्य के लिए दे दे। पर जब उनकी नहीं सुनी गई तो उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। स्वामी जी के पत्रों को पाकर तत्कालीन कांग्रेस महासचिव पं0 मोती लाल नेहरू ने उन्हें एक पत्र लिखा और अपने त्यागपत्र पर पुनर्विचार करने का अनुरोध किया। पर श्री स्वामी जी इस मद पर इतने दृढ़ निश्चयी थे कि उन्होंने पं0 मोतीलाल नेहरू के अनुरोध तक को ठुकरा दिया। इतिहास साक्षी है कि श्री स्वामी जी के विचारों से प्रेरणा पाकर आर्य कवियों ने भी अपनी लेखनी को प्रवाह दे दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द ने जो प्रेरणा दी थी, उसे लोगों ने समझा और अपने कार्यक्रमों का अभिन्न अंग बना लिया। आज स्वामी जी की भावनाओं को कांग्रेस ने भी स्वीकार कर अपनी उस भूल का प्रतिकार किया है। क्या यह स्वामी श्रद्धानन्द की विचारधारा की जीत नहीं ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक रामलीला मैदान दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य समागम

कार्यक्रम की रूपरेखा

२३ दिसम्बर १९९० (रविवार) प्रतिदिन

प्रातः 7 बजे : योग प्रशिक्षणशिविर

संचालक : श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज

संयोजक : श्री प्रेमभिक्षु, मथुरा

प्रातः 8 बजे : वृहद् यज्ञ

अधिष्ठाता : पं० राजगुरु शर्मा (म० प्रदेश)

ब्रह्मा : स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती (दिल्ली)

संयोजक : पं० यशपाल सुधांशु (दिल्ली)

सस्वरमंत्र : गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली के ब्रह्मचारी

पाठ : एवं पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी की छात्राएं

प्रातः 9-30 बजे : वेदोपदेश

: स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती (हि० प्रदेश)

प्रातः 10 बजे : ध्वजारोहण

: पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव

प्रातः 10-30 बजे : भजन-श्री ओमप्रकाश वर्मा

प्रातः 11 बजे : वेद सम्मेलन

अध्यक्ष : डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर।

उद्घाटन : माननीय डा० कर्मसिंह जी

उद्बोधन : महामहोपाध्याय पं० युधिष्ठर मीमांसक श्री-स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती डा० गणेशदत्त आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति पं० प्रियव्रतदास (उड़ीसा) स्वामी-विवेकानन्द सरस्वती (उ० प्र०) डा० प्रज्ञादेवी (वाराणसी)

संयोजक : आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री (उ० प्र०)

मध्यान्ह 2 बजे : महिला सम्मेलन

अध्यक्ष : श्रीमती प्रभात शोभा पांडेता (हरियाणा)

संयोजक : श्रीमती सरला मेहता (दिल्ली)

सायं 4 बजे : आर्य युवा संगोष्ठी

अध्यक्ष : कैप्टनदेवरत्न आर्य (बम्बई)

उद्घाटन : डा० वेद प्रताप वैदिक (दिल्ली)

उद्बोधन : श्री विद्याधरगुरुजी (कर्नाटक)

: डा० आनन्द-सुमन (उ० प्र०)

: डा० आर्यनरेश (हि० प्रदेश)

: श्रीप्रकाश सुवेदी (नेपाल)

: श्री अनिल नरेन्द्र (दिल्ली)

: श्रीमनमोहन तिवारी (उ० प्र०)

: श्री रमाकान्त गोस्वामी (दिल्ली)

संयोजक : श्री विमल वधावन एडवोकेट (दिल्ली)

रात्रि 8 बजे : भजन : कुंवर जोरावरसिंह

रात्रि 8-15 बजे : विदेशों में आर्य समाज

अध्यक्ष : श्री शिशुपाल रामभरोसे (द० अफ्रीका)

उद्घाटन : श्री पी० शिवशंकर (पूर्वकेन्द्रीय मन्त्री)

उद्बोधन : पं० नरदेव विद्यालंकार (द० अफ्रीका)

: पं० धर्मवीर घूरा (मारीशस)

: डा० महेन्द्रस्वरूप (हालैण्ड)

: श्री रुद्रसेन नेपूर (मारीशस)

संयोजक : प० प्रेमचन्द्र श्रीधर

२४ दिसम्बर १९९० (सोमवार)

प्रातः 8 बजे : वृहद् यज्ञ

प्रातः 9-30 बजे : वेदोपदेश-पं० पृथ्वीराज शास्त्री

प्रातः 10 बजे : संगीत-मुख्यमण्डप श्री गुलाबसिंह राघव

प्रातः 10-30 बजे : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (खुला अधिवेशन)

अध्यक्ष : पूज्यपाद श्री-स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

उद्घाटन : माननीय श्री-चन्द्रशेखर जी प्रधानमन्त्री भारत सरकार

स्वागताध्यक्ष : डा० बलरामजाखड़ पूर्व लोकसभाध्यक्ष

घोषणापत्र : पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव (हैदराबाद)

समर्थन : श्री वीरेन्द्र (पंजाब)

संयोजक : डा० धर्मपाल (दिल्ली)

उद्बोधन : पं० राजगुरुशर्मा (म० प्र०)

: पं० इन्द्रराज (उ० प्र०)

मध्यान्ह 2 बजे : आर्यों का आदि देश (संगोष्ठी)

अध्यक्ष : माननीय प्रो० शेरसिंह (पूर्व केन्द्रीयमन्त्री)

उद्घाटन : श्री लक्ष्मीमलसिंघवी

संबोधन : श्रीस्वामी ओमानन्दजी सरस्वती

: प्रो० राजेन्द्रजिज्ञासु

: श्रीराजवीरशास्त्री

: आचार्य सुदर्शनदेव

: श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव

: श्री स्वराज्य प्रकाश गुप्त (दिल्ली)

: श्री यज्ञदत्त शर्मा (दिल्ली)

संयोजक : डा० महेश विद्यालंकार

सांय 4 बजे : आर्य समाज का भावीकार्यक्रम (संगोष्ठी)

अध्यक्ष : श्री वीरेन्द्रजी

संबोधन : श्री छोटूसिंह एडवोकेट

: पं० क्षितीश वेदालंकार

: डा० वाचस्पति उपाध्याय

: डा० प्रशान्त वेदालंकार

: श्री राजेन्द्र चोपड़ा (लन्दन)

: स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

संयोजक : श्री सूर्यदेव

रात्रि 8 बजे भजन : श्रीकुंवर महीपालसिंह

: वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता

\- - - -

अध्यक्ष : श्री एम० नारायण स्वामी (तमिलनाडु)

उद्घाटन : डा० वागीश (उ० प्र०)

उद्बोधन : श्री वटकृष्ण वर्मन (बंगाल)

: डा० भवानीलाल भारतीय (चंडीगढ़)

: श्री श्यामनन्दन शास्त्री (बिहार)

संयोजक : डा० शिवकुमार शास्त्री (दिल्ली)

२५ दिसम्बर १९९० (मंगलवार)

प्रातः 8 बजे : वृहद् यज्ञ

प्रातः 9-30 बजे : वेदोपदेश-पं० मदनमोहन विद्यासागर आन्ध्रप्रदेश

प्रातः 10 बजे : संगीत-पं० सत्यपाल पथिक

प्रातः 10-30 बजे : विशाल शोभायात्रा

(रामलीला मैदान से लालकिले तक)

संयोजक : श्री रामनाथ सहगल (दिल्ली)

मध्यान्ह 3 बजे : श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह (लालकिलामैदान)

रात्रि 8 बजे : कवि सम्मेलन

अध्यक्ष : श्री गोपालप्रसाद व्यास

संयोजक : श्री उत्तमचन्द शरर

—शेष पृष्ठ ७ पर

सभा के नव निर्वाचित पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य

प्रधान - श्री पं0 इन्द्रराज, मेरठ
उपप्रधान- श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सार्वदेशिकसभा, नई दिल्ली।
श्री जयकुमार मुद्गल, मथुरा
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य अमरोहा
श्रीमती डा0 आशारानी-राय कानपुर
मन्त्री - श्री मनमोहन तिवारी, लखनऊ
उपमन्त्री - श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा, बुलन्दशहर
डा0 विनय प्रताप, गोरखपुर
श्री विद्यासागर, सहारनपुर
श्री अरविन्द कुमार, मुजफ्फरनगर
कोषाध्यक्ष- श्री यशपाल, देहरादून
सहायक कोषा0- श्री बांके लाल जी, नैनीताल
पुस्तकाध्यक्ष- श्री देवकी नन्दन, मुरादाबाद
सहायक पुस्त0- श्री वेदप्रकाश आर्य, औरैया (इटावा)
आयव्यय निरीक्षक- श्री वेदप्रकाश इन्जीनियर मेरठ, (सेवानिवृत्त)
प्रतिष्ठित अन्तरंग सदस्य- सर्वश्रीजयनारायण "अरुण" बिजनौर
चौ0 माधवसिंह मेरठ,
महेश्वर पाण्डेय, लखनऊ

अन्तरंग सदस्य

देहरादून - डा0 ब्रह्मवती नारंग
सहारनपुर - श्री वी0वी0गौतम
हरिद्वार - श्री बसन्तसिंह चौहान
मुजफ्फरनगर- श्री देवपाल आर्य
गाजियाबाद - श्री सुन्दरलाल आर्य
बुलन्दशहर - श्री देवेन्द्रकुमार आर्य
अलीगढ़ - श्री राजेन्द्रपाल सिंहआर्य
मथुरा - श्री भुल्ला सिंह रावत
फिरोजाबाद - श्री भगवानसिंह 'एडवोकेट
मैनपुरी - श्री ध्रुवपाल सिंह"अटल"
बरेली - श्री ओमप्रकाश आर्य
बदायूं - डा0 भानुप्रताप आर्य
मुरादाबाद - श्री हरस्वरूप सिंह आर्य
रामपुर - श्री जयदेवसिंह आर्य
बिजनौर - श्री सुरेन्द्रसिंह राजपूत
शाहजहांपुर - श्री कृष्णकुमार सक्सेना
पीलीभीत - श्री मोहन लाल आर्य
गढ़वाल - श्री पूरनसिंह एडवोकेट
अल्मोड़ा - श्री कपिल "अरुण"
टेहरी - डा0 ओमप्रकाश आर्य
पिथौरागढ़ - श्री लक्ष्मीचन्द्र आर्य
झांसी - श्री श्रीपालसिंह आर्य
जालौन - श्री रामशिरोमणि
फतेहपुर - डा0 हर्षवर्धन
इटावा - श्री उमेशचन्द्र स्नातक
जौनपुर - श्री तारानाथ
मिर्जापुर - डा0 मधु चोपड़ा
गाजीपुर - श्री जयकृष्ण आर्य
बलिया - श्री सुदर्शन सिंह
गोरखपुर - श्री विजय बहादुर सिंह
देवरिया - श्री सुरेश आर्य
आजमगढ़ - श्री गोविन्ददास
बस्ती - श्री ओमप्रकाश आर्य
सिद्धार्थनगर - श्री द्वारिका प्रसाद यादव
बहराइच - श्री गोविन्द राम जायसवाल
गोण्डा - श्री मंगलसिंह आर्य
बाराबंकी - श्री गिरिजा प्रसाद द्विवेदी
सुल्तानपुर - श्री प्रयाग दीन जायसवाल
प्रतापगढ़ - श्री राजेन्द्रप्रसाद श्रीवास्तव
लखनऊ - श्री सच्चिदानन्द गुप्त
उन्नाव - श्री विमलकुमार एडवोकेट
हरदोई - श्री रामदेव अग्निहोत्री
सीतापुर - श्री वीरेन्द्र सिंह चौहान
खीरी - श्री आनन्द स्वरूप
इलाहाबाद - श्री सोहन जी पाण्डे

नोटः- जनपद मेरठ, एटा, नैनीताल, ललितपुर, बान्दा, हमीरपुर, कानपुर, फर्रुखाबाद, वाराणसी, मऊनाथभंजन, रायबरेली, आगरा, फैजाबाद के अन्तरंग सदस्यों के निर्वाचन हेतु आगामी अन्तरंग की बैठक में निर्णय किया जाना तय पाया।

- मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

पृष्ठ ६ का शेष....

२६ दिसम्बर १९९० (बुधवार)

प्रातः 8 बजे : वृहद यज्ञ-पूर्णाहुति

प्रातः 9 बजे : वेदोपदेश- पं0 सत्यपालवेद शिरोमणि (अमेरिका)

प्रातः 10-30 बजे : शिक्षा एवं संस्कृति सम्मेलन (गुरुकुलों का एकीकरण एवं आर्य संस्थाओं का आर्यकरण)
अध्यक्ष : श्री स्वामी सत्यप्रकाशजी
उद्घाटन : श्री राजमंगल पाण्डेय, मानव संसाधन मन्त्री- भारत सरकार, नई दिल्ली।
संयोजक : श्री दरबारीलाल
संबोधन . प्रो0 वेदव्यासजी
: डा0 सच्चिदानन्द शास्त्री
. डा0 मण्डनमिश्र.
: श्री सुभाष विद्यालंकार
. श्री उमाकान्त उपाध्याय
: आचार्य दत्तात्रेय बाव्ले

मध्यान्ह 2-30 बजे : महर्षि दयानन्द गो-संवर्धन दुग्ध केन्द्र (गाजीपुर)
अध्यक्ष : श्री हरिकृष्णलाल भगत- पूर्वमन्त्री भारतसरकार
मुख्य अतिथिः श्री बलराम जाखड़-पूर्व लोकसभाध्यक्ष
शिलान्यासः माननीय श्री-राजीवगांधी, पूर्व प्रधानमन्त्री भारत सरकार
संबोधन : श्री रामसिंहजी राठौर, हर्षवर्धन समूह

सायंकाल- 4-30 बजेः आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष जी द्वारा- आर्यसमाज का संदेश
5-00 बजेः धन्यवाद - डा0 सच्चिदानन्द शास्त्री

शान्तिपाठ

श्री रामनाथ आर्य सन्यासी बने

शाहजहांपुर जनपद के ग्राम-मोहनियाँ निवासी तथा आर्यसमाज बहरिया के पूर्व सदस्य श्री रामनाथ जी ने ग्राम मौसमपुर (बदायूं) में श्री रामप्रकाश आर्य के यहाँ आंशिक यजुर्वेद के यज्ञ के समय श्री स्वामी-अखिलानन्द जी महाराज से दि0-29 नवम्बर को सन्यास आश्रम की दीक्षा ली और उनका नाम स्वामी ओमानन्दजी रखा गया। श्री रामप्रकाश आर्य के प्रपौत्र चि0 वेदकुमार आर्य का यज्ञोपवीत तथा पौत्री राजश्री का मुण्डन संस्कार सम्पन्न हुआ।

उत्तर प्रदेश में मन्त्रिमण्डल विस्तार

उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार में नये मन्त्रियों में 18 कैबिनेट 21 राज्यमन्त्री तथा 6 उपमन्त्री मिलाकर मन्त्रिमण्डल के सदस्यों की कुल संख्या अब 54 हो गई है। जिन लोगों को गत 20 दिसम्बर को मन्त्रिपद की शपथ दिलाई गई उनमें सर्वश्री अशोक वाजपेयी, रमाशंकर कौशिक, रवीन्द्रनाथ तिवारी, गौरी शंकर भैयया, जमुना प्रसाद बोस, हरीश कुमार गंगवार आदि प्रमुख हैं।

आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने मन्त्रिमण्डल के सभी नवागन्तुक तथा पुराने सदस्यों को अपनी बधाई प्रेषित करते हुए प्रदेश के सर्वांगीण विकास में उनके योगदान की कामना की है।

वार्षिकोत्सव



आर्यसमाज अमरोहा के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती के स्वागत में बोलते हुए।

आर्यसमाज, अमरोहा के 89वें वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने कहा कि आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्य सनातन वैदिक धर्म के द्वारा सच्ची मानवता का मार्ग प्रदर्शित किया था। उनका हृदय पवित्र एवं सहृदय था। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास की गाथा पढ़ने वाला स्वामी दयानन्द भारत की निर्धनता को देखकर द्रवित हो उठा था। इसी से प्रभावित होकर उन्होंने आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में अछूतोद्धार को विशेष बल दिया। आपने इसी संदर्भ में आर्यसमाज अमरोहा द्वारा लिहाफ वितरण के कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह एक पवित्र कार्य है। दरिद्रनारायण की सेवा ही सच्ची सेवा है। शीत के प्रकोप की पीड़ा को सहन करने वाले निर्धन और असहाय लोगों की सहायता कर यह सच्ची समाजवाद की भूमिका है।

आपने आगे कहा कि आर्यसमाज वर्ण व्यवस्था को गुण कर्म स्वभाव से मानता है। आपने अनेक उदाहरण देते हुए कहा कि आर्यसमाज ने अनेकों अछूत लोगों को उच्च पंडित बनाया है। पिछड़े वर्ग एवं अल्पसंख्यकों के नाम पर सरकार ने भाई-भाई के अन्दर कटुता एवं भय का वातावरण पैदा कर दिया है। आर्य समाज के सिद्धान्त भूलकर हमने भारी भूलें की हैं। इसीलिए आज का यह दुखद वातावरण बन गया है। इसलिए हमें आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारना चाहिये। आर्यसमाज ने हर दिशा में कार्य किया है। आज भी हम सब का बहुत दायित्व है। इसलिए वर्तमान चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें संगठित होना चाहिए।

रामजन्मभूमि के सन्दर्भ में बोलते हुए श्री स्वामी जी ने कहा कि आज सरकार हमारी संस्कृति की धरोहर एवं भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भों की जन्मस्थली के बारे में सन्देह कर रही है। आयोग एवं न्यायालय की आड़ में जाति एवं सम्प्रदायगत राजनीति के माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र को ये नेता लोग साम्प्रदायिकता की आग में झोंकना चाहते हैं। नौ लाख वर्ष पुराने श्रीराम के इतिहास और अयोध्या पर आज ये सन्देह कर रहे हैं यद्यपि श्रीराम और अयोध्या का स्पष्ट प्रमाण बाल्मीकि रामायण में मौजूद है।

इस अवसर पर पं0 जयमुनि शास्त्री ने आर्यों को शक्ति सम्पन्न बनने की प्रेरणा दी। सत्र का पहला लिहाफ वितरण समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें निर्धन एवं असहाय लोगों को 51 लिहाफ वितरित किए गये। गत 9 वर्ष से चल रहे इस कार्यक्रम में अब तक 2243 लिहाफ गरीब जनता में वितरित किए जा चुके हैं। कार्यक्रम के संयोजक श्री सीताराम कप्पु थे। आ0स0 के प्रधान श्रीवीरेन्द्र-कुमार आर्य ने सभी अभ्यागत महानुभावों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य ने पू0 स्वामी-आनन्दबोध सरस्वती को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के निमित्त रु0 4556 भेंट किए तथा पू0 स्वामी जी के ही करकमलों से लिहाफ वितरित कराये गये। समारोह अत्यन्त सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। ◘

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश के समस्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्यकुमार सभाओं, आर्यवीरदल, आर्य महिला समाजों एवं आर्य शिक्षणसंस्थाओं के समस्त अधिकारीगण एवं समस्त आर्यजनता को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने सर्वश्री कैलाशनाथ सिंह वाराणसी, राजपाल आर्य मुजफ्फरनगर, धर्मेन्द्र सिंह आर्य देहरादून, चन्द्रकिरणशर्मा गाजियाबाद, खेम सिंह आर्य लखनऊ तथा रमा शंकर आर्य केराकत को आ0स0 की सदस्यता से निष्कासित कर दिया है। यह निष्कासित व्यक्ति सभा विरोधी भ्रामक प्रचार समय-समय पर करते रहते हैं- उससे आर्य जनता भ्रमित न हो और न ही उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी इन्हें आमन्त्रित न करें। विशेष जानकारी सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त की जा सकती है।

- कार्यालय सचिव

सभा प्रधान जी का आदेश

इस सभा के निरीक्षक- श्री ध्रुवपालसिंह "अटल" की सूचनानुसार; इस सभा की कुछ शिक्षण-संस्थाओं, अर्थात्- दयानन्द व आर्य कन्या स्कूल/कालेज एवं बालमन्दिर आदि, के प्रबन्धकों ने, उसकी अनुमति के बिना, अपनी-अपनी शिक्षण-संस्थाओं की प्रशासन-योजनाओं व नियमावलियों आदि में, स्वेच्छापूर्वक परिवर्तन करके, उन्हें सम्बन्धित उप-शिक्षा निदेशकों तथा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों आदि से, छल पूर्वक, स्वीकृत करा लिया है।

यतः उनका यह कार्य सर्वथा अवैधानिक है और सभा के हित में, इस प्रकार के अवैधानिककार्यों पर तुरन्त ही रोक लगाया जाना परम आवश्यक है।

अतः इस सभा की ओर से-उक्त शिक्षण- संस्थाओं के प्रबन्धकों का इस सभा के मुख-पत्र "आर्यमित्र" के माध्यम से, आदेश दिया जाता है कि-वे उक्त अभिलेखों में, उसकी अनुमति के बिना, स्वेच्छा पूर्वक, कोई भी परिवर्तन न करें।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिलिपि -
(1) उ0प्र0 के समस्त उप-शिक्षा निदेशकों, जिला विद्यालय निरीक्षकों, तथा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को सहयोगार्थ। सादर प्रेषित।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0
लखनऊ।

श्रीराम जन्मभूमि समस्या का हल

श्री एम० सी० गोयल
मुरादाबाद।

बहुत से नेताओं ने यह बात कही है कि श्री राम जन्मभूमि समस्या का सबसे अच्छा हल आपसी बातचीत के द्वारा ही निकाला जा सकता है और यदि ऐसा नहीं हो पाता है तो इसका एकमेव हल न्यायालय के निर्णय को मानना है। कोई भी व्यक्ति खून खराबा नहीं चाहता, यदि इस समस्या का हल शान्तिपूर्वक निकाला जा सकता है, सभी इस हल का स्वागत करेंगे, परन्तु यह इतना आसान नहीं है। आइए देखें इस प्रकार की समस्याएं दुनिया में कैसे हल की जा सकी हैं।

मस्जिद शहीदगंज एवं अन्य बनाम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के मुकदमें में प्रिवी कांउसिल ने मुसलमानों की अपील को यह कहकर 2 मई, 1940 को रद्द कर दिया था कि गुरुद्वारा शहीदगंज सन् 1760 से लगातार सिखों के कब्जे में है (संदर्भ- 1938 का पी०सी०ए० 91, ए०आई०आर० 1940 प्रिवी कांउसिल 116=1940 ए०एल०जे० 522) इसके बाद भी गुरुद्वारा शहीदगंज का 50 साल तक शान्तिपूर्वक कब्जा सिखों के पास रहा परन्तु 2 मई, 1990 को पाकिस्तान की मुस्लिम सरकार ने गुरुद्वारे का जबरदस्ती कब्जा ले लिया और इसे मस्जिद घोषित कर दिया। क्या इतनी बड़ी दुनिया में एक भी मुसलमान ने सिखों पर किए गए इस खुले अत्याचार की निन्दा की? क्या भारत में भारत की सेक्यूलरवादी सरकार या किसी सेक्यूलरवादी व्यक्ति ने पाकिस्तान की मुस्लिम सरकार से यह कहा कि अंग्रेजी राज के सबसे उच्चतम न्यायालय प्रिवी कांउसिल के निर्णय को जिसको आप 50 साल तक मानते रहे हैं, भविष्य में भी मानते रहें? नहीं, किसी ने ऐसा नहीं किया। भारतीय प्रेस ने भी इसके बारे में अपने समाचार पत्रों में कुछ लिखना उचित नहीं समझा।

दूसरा उदाहरण टेम्पल माउंट (Temple Mount) का है जो यहूदियों का पवित्रतम स्थान है और जिसे रोमन लोगों ने सन् 1970 में नष्ट कर दिया था। इसकी पश्चिमी दीवार का केवल एक हिस्सा ही शेष बच गया था। शताब्दियों तक यहूदी लोग इस दीवार के पास जाते थे और रुदन करते थे। 685-691 ई० में मुसलमानों ने वहाँ पर मस्जिद अल अक्सा एवं रौक का मुस्लिम गुम्बद बना लिया जिसमें टेम्पल माउंट की कुछ जमीन को भी शामिल कर लिया और लगभग एक चौरस दीवार बना दी गई जिसमें पश्चिमी दीवार भी सम्मिलित कर ली गई और इस प्रकार टैम्पल माउंट, अल अक्सा मस्जिद और रौक के मुस्लिम गुम्बद का सारा क्षेत्र घेर लिया गया। यहूदी लोग रोते रहे परन्तु मुसलमानों ने उन पर कोई भी दया करने से इन्कार कर दिया। इस घटना के 1300 साल बाद वर्ष 1987 में यहूदियों ने तीसरे अरब-यहूदी युद्ध में मुसलमानों को हराकर जबरदस्ती फौजी ताकत से टेम्पल माउंट को दोबारा प्राप्त कर लिया। तब से लेकर मुसलमान इसके लिए वहां पर आन्दोलन कर रहे हैं परन्तु उनकी हार ही होती रही है।

उपरिलिखित दोनों समस्याएं फौजी ताकत से ही हल की गई। एक मुसलमानों के द्वारा और दूसरी यहूदियों के द्वारा। विश्व में किसी ने भी उनको कानून का सहारा लेने की राय नहीं दी और न ही दुनिया के किसी न्यायालय द्वारा यह समस्या हल हो सकती थी। श्रीराम जन्मभूमि की समस्या भी ठीक इसी प्रकार की है। तब यह बड़े आश्चर्य की बात है कि प्रत्येक ऐरा-गैरा व्यक्ति हिन्दुओं को इस समस्या को न्यायालय के निर्णय द्वारा सुलझाने की राय देता है। यह तो एक हिन्दुओं के लिए राष्ट्रीय सम्मान की बात है और किसी भी न्यायालय की परिधि के बाहर की बात है। यदि खून खराबे से बचना है तो बिना देरी के श्रीराम जन्मभूमि का कब्जा हिन्दुओं को दे देना चाहिए। शक्ति के द्वारा किसी समस्या का हल करना केवल मुसलमानों और यहूदियों पर ही लागू नहीं होता, हिन्दुओं को भी यह रास्ता अपनाने के लिए मजबूर न किया जाए। ■

आदरणीय लेखक महोदय

आर्य जगत के शिरोमणि नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के प्रधान, अद्भुत वक्ता पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री-पं० प्रकाशवीर शास्त्री देश की उन महान विभूतियों में गिने जाते हैं, जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व ने राष्ट्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गरिमा को बहुत ऊँचा उठा दिया था। ऐसे पुरुषरत्न को अपनी पावन धरती पर जन्म देना इस प्रदेश का सौभाग्य रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० का मुख पत्र "आर्यमित्र" उनकी पुण्यस्मृति में, शीघ्र ही स्वर्गीय पं. "प्रकाशवीर शास्त्री अंक" प्रकाशित करने जा रहा है। इस अंक में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बहु आयामी स्वरूप पर देश-विदेश के मान्य विद्वानों। राजनीतिज्ञों तथा उच्चकोटि के सन्त पुरुषों के विचारों की अभिव्यक्ति लिखित रूप में प्रकाशित की जायेगी।

आप उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित रहे हैं और उनके कृतित्व के प्रशंसक भी।

मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा, यदि आप उनके सम्बन्ध में अपने विचारों को मूर्तरूप देते हुए इस अंक में प्रकाशनार्थ मुझे भेजने की कृपा करेंगे।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक

स्वास्थ्य-सुधा

(1)

समस्या- "मेरी आयु 20 वर्ष है। मेरे चेहरा पर मुँहासे एवं दाने निकलते हैं।"
- कु० नीता द्वारा/पीताम्बर मुनि, ग्राम- गब्बरपुर, डिलारी क्षेत्र (मुरादाबाद) पिन- 244 401

समाधान- काले-भूरे धब्बे और मुँहासे हेतु उपटन प्रस्तुत है:-

बाजरे का आटा 50 ग्राम, सन्तरे के सूखे छिलके 50 ग्राम, पीसी-हल्दी 5 ग्राम और तुलसी की सूखी पत्तियाँ 25 नग। सभी को कूटपीस कर रखें। प्रतिदिन दो चम्मच इस चूर्ण में पानी और नीबू रस मिलाकर गूँथ कर उपटन बना लें। इसे चेहरा पर लेप करें। दस मिनट बाद उपटन को हाथ से मसलकर छुड़ावें। पानी से चेहरा धोकर तौलिया से पोछें। कम से कम तीन सप्ताह तक जारी रखें। भोजन के साथ गाजर-सलाद का सेवन करें।

--

(2)

समस्या-" छह वर्षों से बलगम हल्की खाँसी के साथ जाता है। स्ट्रेप्टोमाइसिन की अधिकता के कारण सुनाई कम देता है। शादी हुए डेढ़साल हुए हैं। शीघ्रपतन का रोगी हूँ"।

- एक युवक, बिजनौर (उ०प्र०)

समाधान- प्रातः दो चम्मच च्यवनप्राश खाकर एक प्याला गुनगुन दूध पिया करें। यह आपका प्रातराश हो गया। नियो (चरक फार्मेसी) दो गोली प्रातराश- मध्याह्न भोजन- रात्रि भोजन बाद लेकर लीवोमिन दो ढक्कन और जुफेक्स एक्सपेक्टोरेन्ट दो ढक्कन समान जल के साथ पिया करें। दो मास तक उपचार जारी रखें।

: समस्यापत्र के साथ पत्रोत्तर व पत्रिका हेतु ३ डाकलिफाफे भेजें।

-- स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती, आर्यसमाज पिथौरागढ़- 262501- को भेजें।

जिला सभा आगरा की सूचना

आर्य उपप्रतिनिधि सभा आगरा की एक बैठक श्री हरिगोपाल सिंह चौहान एडवोकेट की अध्यक्षता में हुई जिसमें रामजन्मभूमि के विषय में विचार किया गया। बैठक में सर्वश्री आचार्य प्रेम भिक्षु जी, रोशनलाल-गुप्त, श्री चन्द्र गुप्त, इन्द्र मोहन-मेहता, हरि गोपाल सिंह चौहान, दयानन्द आर्य एडवोकेट आदि ने अपने विचार प्रकट किये। अन्त में सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि विश्व हिन्दू परिषद द्वारा अयोध्या में की जा रही कारसेवा का आर्यसमाज समर्थन करता है और वह कारसेवा में अपना पूर्ण क्रियात्मक सहयोग देगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

प्रधान - श्री प्रो० शेरसिंह जी
मन्त्री - श्री सूबेसिंह जी
कोषाध्यक्ष- श्री ला० रामानन्द शिंगला

एक दीप और बुझा

-वीरेन्द्र "वीर"

निरीक्षक सभा

"अनित्यानि शरीराणि" के अनुसार यह शरीर अनित्य या नश्वर है और भस्मान्तं, ८ शरीरम् के अनुसार इसका अन्त भस्म होने तक है। इस शरीर का प्रारम्भ ऋतु दान से होकर श्मशान (अन्त्येष्टि) में अन्त होता है। जीवात्मा अजर, अमर, अविनाशी है। अतः अन्तिम विदा प्रसन्नता पूर्वक करनी उचित है। किन्तु वर्षों सान्निध्योपरान्त चिर विदाई कष्ट कर होती ही है।

अस्तु गत् 18 नवम्बर रविवार 1990/ 19 नवम्बर चन्द्रवार को मध्य रात्रि ठीक 12 बजकर 24मिनट पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, कर्मठ कार्यकर्ता, यशस्वी वक्ता और लेखक पं0 धर्मपाल विद्यालंकार जी इस नश्वर संसार से, अन्तिम स्वाँस छोड़, पार्थिव शरीर त्यागकर चिर विदा हो गये। उनका जीवात्मा "आत्मानां रथिनं विद्धि शरीरं रथमेवतु" के अनुसार इस शरीर रूपी रथ को त्याग, जीवन यात्रा पूर्ण कर, दूसरे वाहन (पुनर्जन्म) के ग्रहण करने हेतु विदा हुआ, जिससे गुरुवर्य, युग पुरुष, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रज्ज्वलित दीप मालिका "आर्यसमाज" का एक दीप और बुझ गया।

पूज्य पण्डित धर्मपाल जी विद्यालंकार का जन्म अब से ठीक 97 वर्ष पूर्व सन् 1950 वि0 के कार्तिक मास में पूज्यनीय माता श्रीमती कौशल्यादेवी की परम् पावनी कुक्षा से, बदायूँ नगर के टिक्टैट गंज मुहल्ला में हुआ था। आप के पूज्य पिता श्री का नाम श्री-मुन्शी किशन स्वरूप जी था, जो दातागन्ज तहसील के जमींदार सूची में गिने जाते थे।

पूज्य पण्डित जी ने विश्व विद्यालय से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त करने के बाद से अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य जगत की सेवा में समर्पित कर दिया। आप अपने जीवन में दर्जनों संस्थाओं से उनके उच्च पदों पर पदासीन रहकर जुड़े रहे, जिनमें कुछ प्रमुख उल्लेखनीय हैं यथा- भृगु खाल हायर सेकेन्ड्रीस्कूल गढ़वाल, मायापुर इण्टर कालेज हरिद्वार, गुरुकुल काँगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार, महाविद्यालय ज्वालापुर, महाविद्यालय बदायूँ आदि। आपने दैनिक वीर अर्जुन तथा आर्य-मित्र आदि पत्रों में सम्पादन कार्य में भी अमूल्य योगदान दिया। आपने अपने जीवन के सभी पदों पर बड़ी ही निष्ठा, कर्तव्य परायणता और पूर्ण सफलता के साथ कार्य निर्वाह किया।

यद्यपि आप अपने जीवन में कभी भी प्रकटत सक्रिय रूपेण राजनीति में नहीं रहे, परन्तु बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों और सर्वोच्च राजनेताओं के सम्पर्क सूत्र एवं प्रशंसा-पात्र रहे। आपके परिवार में, आपके साथ खिंचे कई सर्वोच्च राजनायकों के छाया चित्र. इस बात के प्रमाण हैं। परोक्षरूप से आप ने स्वतन्त्रता संग्राम कार्य में भी महत्वपूर्ण योगदान किया था।

पूज्य पण्डित जी जीवन भर, तप, त्याग, शान्ति, धैर्य और कर्मठता आदि के वैदिक सिद्धान्तों पर आचरण वान रहे। आपके पास क्रोध तो कभी भी फटकता तक नहीं था। आप अपनी सहधर्मिणी स्व0 श्रीमती राजेश्वरी-देवी से प्राय कहा करते थे कि क्रोधावेश में तुरन्त ठण्डा जल पी लिया करो। इस प्रकार उन्होंने अपने परिवार में कभी भी कलह का प्रवेश नहीं होने दिया। आप सदा मित भाषी, मितव्ययी रहे।

आपका परिवार भी सीमित परिवार रहा, जिसमें आपकी एक ही पुत्री श्रीमती राधा रानी जी हैं, जो वर्तमान समय में शिक्षा-विभाग वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान में प्रवक्ता हैं और एक मात्र पुत्र श्री महेन्द्र कुमार एडवोकेट हैं, जो वर्तमान समय में आर्य उपप्रतिनिधि सभा जनपद बदायूँ के मन्त्री तथा अन्य कई संस्थाओं से जुड़े कार्य कुशल, कार्यकर्ता हैं।

पूज्य पण्डित जी ने स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के हत्यारे अब्दुलरशीद को बड़े ही साहस और वीरता पूर्वक अकेले ही पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया था। उनके इस साहसिक कार्य ने आर्य जगत में सर्वाधिक सम्मान प्राप्त कराया।

आपको भोजन में मीठा खाने और दैनिक स्वाध्याय, पत्र लेखन में विशेष रुचि थी, जो अन्तिम समय तक यथावत् बनी रही। यद्यपि विगत कुछ वर्षों से आप निर्बलता के कारण चलने फिरने से असमर्थ हो गये थे, किन्तु उनका विवेक अन्तिम समय भी स्वस्थ बना रहा।

उनकी अन्त्येष्ठि पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार, बदायूँ नगर के आर्य समाज से प्रारम्भ हुई थी, विशालजन समूह सम्मिलित था। प्रदेश तथा जनपद बदायूँ बरेली की अनेकों आर्य-सामाजिक शैक्षणिक संस्थाओं तथा गण्यमान्य पुरुषों ने उन्हें श्रद्धांजलियाँ प्रेषित की हैं।

पं० धर्मपाल विद्यालंकार जी- दिवंगत



"आर्यमित्र" साप्ताहिक को यह दु:खद सूचना देते हुए हार्दिक कष्ट हो रहा है कि बदायूँ निवासी श्री पण्डित धर्मपाल जी विद्यालंकार का लम्बी बीमारी के पश्चात् अपने निवास स्थान पर देहावसान हो गया। आर्यसमाज बिहारीपुर के साप्ताहिक सत्संग में उनके पुत्र श्री महेन्द्र कुमार एडवोकेट द्वारा प्रेषित पत्र से यह जानकारी आर्यबन्धुओं को सहसा प्राप्त हुई। सभा की शेष कार्य वाही स्थगित कर श्री पं0 विद्यालंकार जी के दु:खद निधन के विषय में शोक सभा की गई। दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिये तथा शोक सन्तप्त पारिवारिक स्वजनों के धैर्य धारण हेतु परमेश्वर से प्रार्थना की गई। 25-11-90 को बदायूँ में शुद्धि संस्कार हुआ ।

पण्डित जी का बाल्यकाल अपने नगर बदायूँ में ही व्यतीत हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् वे गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार में विशेष अध्ययन हेतु भेजे गये। पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी के संरक्षण में रहकर वहीं से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की स्वामी जी की स्नेहमयी कृपा दृष्टि सर्वदा अपने इन अन्यतम विद्वान शिष्य पर बनी रही। वैदिक वाङ्‌मय के सतत अध्ययन के परिणाम स्वरूप आप एक सुयोग्य वक्ता, लेखक तथा गुरुकुलीय परिसर में यशस्वी मुख्याधिष्ठाता के रूप में बहुचर्चित रहे।

स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन में पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ उनका दाहिना हाथ बनकर तन,मन,धन से सदा सहयोग करते रहे। उनकी अस्वस्थता के समय दिल्ली में अनन्य भक्तिपूर्वक अहर्निश सेवा में संलग्न रहे। जब 23 दिसम्बर सन् 1926 को एक मतान्ध मुस्लिम के हाथों से चलाई गई गोलियों के शिकार हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज,उस समय पू0पण्डितजी ने ही साहस पूर्वक निकट आकर अब्दुलरशीद नामक कातिल को अपनी बलिष्ठ भुजाओं में दबोच कर पुलिस के हवाले किया था। शस्त्रपाणि हत्यारे को पकड़ना साधारण बात नहीं थी। आज भी उस अमर हुतात्मा सन्यासी की बलिदान कथा के ऐतिहासिक पृष्ठ पर पूज्य पण्डित विद्यालंकार जी का नाम स्वर्णाक्षरों में ससम्मान अंकित है।

इस दीर्घायु में (लगभग शतायु) भी सर्वदा रविवासरीय सत्संगों में आपकी उपस्थिति मुख्य वक्ता के रूप में देखी जाती थी। आर्यसमाज दयानन्द सेवाश्रम के वार्षिकोत्सव में प्राय मैंने उनके दर्शन किये। सपरिवार उपस्थित होकर तन्मयता के साथ आद्योपान्त सभी कार्यक्रमों का अवलोकन करते थे। इस प्रसिद्ध आर्यसमाज को सदा उनका हार्दिक सहयोग मिलता रहा।

पू0 पण्डित जी अपने पीछे उत्तराधिकारी सुयोग्य पुत्र श्री महेन्द्रकुमार एडवोकेट को आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में छोड गये हैं। साध्वी पत्नी पहले ही इस असार संसार से विदा ले चुकी थीं। इस समय भ्रातृवर श्री महेन्द्र कुमार जी एडवोकेट बदायूँ में सपरिवार निवास करते हैं। आर्यसमाज दयानन्द सेवाश्रम के संगठन-प्रचारमन्त्री के रूप में निष्काम सेवा करते हुए वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार कार्य में लगे रहते हैं। अपने पू0 पिताजी के पदचिन्हों पर चलते हुए ही आदर्श जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

परमपिता परमेश्वर से यही सविनय प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को पारलौकिक सुखद शान्ति-सद्गति प्राप्त करावे तथा पू0 पितृवर्य के चिर वियोग से सन्तप्त पारिवारिक स्वजनों को इस असह्य वेदना को सहने की शक्ति प्रदान करें। वन्दनीय पितृतुल्य पण्डित विद्यालंकार जी के पावन चरणों में सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

-सावित्री देवी शर्मा, बरेली

नया चाँद

• कवि ...त्री एम०ए० आगरा

नया चाँद तो उगा देखिए न... आवे
झुलसे-झुलसे नन्दन वन पर सुख ... ।।1।।
विश्वनाथ था नाम काम से एक नाथ ही बन पाया
तुष्टिकरण या आरक्षण के संरक्षण में ही भरमाया।
जो कलंक की लिए कालिमा वह प्रताप क्यों कहलावे।।2।।
जिन्हें पराजित किया उन्हीं की पकड़ लँगोटी वैशाखी
शेखर शिखर चढ़े हो सज्जित गाने उनकी ही वैशाखी।
नेताओं के अन्तर्मन में कौन कहाँ तक घुस पावे ।।3।।
पहन लिया है, प्यारे तुमने काटों का यह ताज सजीला
वरद विवेकी न्याय त्याग का अपनाया यदि पक्ष लचीला।
भय है, तरणी समझौते की पार लगावे या न लगावे।।4।।
रजत, सीप हैं श्वेत भले ही पर ए दोनों एक नहीं है
धर्म और मत भी बस ऐसे एक न करो विवेक नहीं है।
जो कि रतौंधी में ही रत हो उसको पथ क्या दिखलावे।।5।।
कशमीर, पंजाब प्रान्त में आतंकों के केतु फहरते
निशिदिन हत्या, लूटपाट से पथिक न मन से कहीं ठहरते।
सम्प्रदाय की ज्वालाओं को कैसे कोई आज बुझावे।।6।।
चम्बल, सरयू के तो पुल से नहीं रक्त के दाग धुलेंगे
और शवों की गणना के तो अगणित खाते अभी खुलेंगे।
घायल पड़ी अयोध्या को तो कैसे कोई धीर बँधावे।।7।।
अभी मुलायम रीति नीति के कटु फल तुमको चखने होंगे
छेद मनुजता की छाती के छलनी जैसे लखने होंगे।
कहीं बुखारी तेज तिजारी तुमको भी न सुला जावे।।8।।
अगड़े, पिछड़े अल्पजनों को सदा प्रेम से तुम पालो
किन्तु देश के बहुतों का भी गला घोंटकर मत डालो।
जिससे समता सुन्दरता का स्वर्णिम संग सजता जावे।।9।।
अभी देश का जलता यौवन बार-बार यह पूछेगा
कहो कौन अपराध हमारा आत्मघात क्यों जूझेगा।
है माई का लाल गये लालों का मूल्य चुका जावे।।10।।
रुका राष्ट्र रथ भी आ सकता है तुम्हें सुनाने करुण कहानी
शिलान्यास की घायल गाथा तुमको कर दे पानी-पानी।
राम नाम का मेटन हारा राम राज्य क्यों फिर लावे।।11।।
राजनीति के मानस तट पर नीरक्षीर विवेकी बन
निर्भय, दृढ़, निष्पक्ष भाव से सुलझाओ सारी उलझन।
"प्रणव" भारती जनमन-गण गुण गौरव का गायन गावे।।12।।

दमन और तुष्टीकरण के विरोध में

मेरठ- आर्यस्त्री समाज मेरठ शहर एवं महिला जागृति मंच मेरठ शहर तथा आर्यसमाज रजबन बाजार मेरठ ने निम्नलिखित प्रस्ताव पास कर सरकार से मांग की है:-

दमन और तुष्टीकरण के विरोध में

मुलायम सिंह की क्रूर सालाजार सरकार ने अयोध्या में सैकड़ों शान्त निहत्थे रामभक्त कारसेवकों साधू-सन्तों को निर्ममतापूर्वक मरवा दिया। आरक्षण के कारण उभरती जवानियां अग्नि की भेंट चढ़ गईं। आज भारत सरकार ने भारत की नारियों की ममता का खून किया है।

1- आरक्षण विरोधी मरने वाले वीरों को सम्मानजनक मुआवजा दिया जाये।
सम्प्रदायिक दंगों में शान्त निर्दोष व्यक्तियों को आर्थिक सहायता के रूप में प्रत्येक को एक-एक लाख रुपया बतौर मुआवजे के दिया जाये।
बिजनौर एवं ढाका में निर्दोष हिन्दुओं पर होने वाले प्राणघातक हमलों की निष्पक्ष जाँच कराई जाये। दोषी व्यक्तियों को गिरफ्तार करके उनके साथ कड़ी कार्यवाही की जाये। हिन्दुओं की नष्ट सम्पत्ति का उचित मुआवजा दिया जाये। उनके धार्मिक स्थानों, घर आदि को पुनः स्थापित किया जाये। प्रत्येक मरने वाले बलिदानी कारसेवक को एक-एक लाख रुपया दिया जाये। ◻

वैदिक दर्शनों को पढ़ें

योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, मीमांसा, इन छः वैदिक दर्शनों का संस्कृत भाष्यों सहित अध्ययन तथा वैदिक योग प्रशिक्षण प्राप्त करें।

विशेषताएं- प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण, आदर्श गुरुकुलीय दिनचर्या, प्रतिदिन 2 घण्टे व्यक्तिगत साधना, व्यवहार में यम नियमों का उच्च स्तर से पालन, भोजन, वस्त्र, आवास, पुस्तकादि की निःशुल्क व्यवस्था, लिखित एवं मौखिक परीक्षाएँ, व्यवहार की भाषा संस्कृत।

उपाधियाँ-

दर्शनाचार्य, दर्शन विशारद, दर्शनप्राज्ञ ।

नोट:- आजीवन ब्रह्मचारी को प्राथमिकता, व्याकरण आचार्य, शास्त्री व समकक्ष योग्यता वाले विद्यार्थी प्रवेशार्थ निम्न पते पर पत्राचार करें। स्थान सीमित हैं। प्रवेश मार्च 1991 से प्रारम्भ होगा।

आचार्य
दर्शन-योग- विद्यालय,
आर्यवन विकास क्षेत्र,
रोजड़, प० सागपुर
जिला- साबरकांठा,
गुजरात- पिन- 383307

आर्यसमाज सरदारपुरा, जोधपुर

प्रधान - श्री रमेशचन्द्र भाटिया
मन्त्री- श्री सुखदेव आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री दाऊलाल आसेरी

आदमी को आदमी से

• अखिलेश कुमार आर्य
इलाहाबाद

धर्म की धूरीड़ को न काटियें सखे
आदमी को आदमी से न बाटियें सखे
जिन्दगी है, जिन्दगी इसे सदा भरो
छांट कर अँधेरे को निशांत तू करो
समय की मांग मानकर सुधार निज करो
दर्द की पुकार में "आवाज" निज भरो
भूल को तू पात से न छाँटिये सखे
आदमी ------ सखे।
आज का यह "वर्तमान" कल का अतीत है
जमे हुए अंकुर का यही प्रतीति है
हो सके तमिष हटा, सुधा पिला दो तुम
हो सके तड़ित घटा, सुधा पिला दो तुम
जरा से स्वार्थ में, वसीभूत न बनो
इन्सान के स्वाभिमान को ऐसे न तुम हनो
लहू बहा अगर किसी का, तो, भी तुम्हारा है
तेरा भी इसमें अंश, जीवन की धारा है
सत्य को सुजान से न काटियें सखे
आदमी --------- सखे ।

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

मानव और मानवता ही सर्वश्रेष्ठ

महोदय,

आर्यमित्र दिनांक-9 सितम्बर 1990 का पढ़ने को मिला। आपका सम्पादकीय भी ध्यान से पढ़ा। लेख का प्रथम चरण तो इतना आकर्षक और मानवीय मूल्यों को मूल्यांकित करने वाला है कि पाठक अनायास आपके विचारों में अपने को खो बैठता है। स्वामी जी सर्वांगीण विकास, बहुजनहिताय एवं सुखाय के पहले अगुवा समाज सुधारक रहे हैं। जब शरीर का प्रत्येक अंग विकसित होगा तभी शरीर सुडौल और सुन्दर होगा, उसी प्रकार वह देश गौरववान, शक्तिवान एवं प्रभाववान होगा जहाँ का हर समाज विकसित एवं सुसंगठित होगा। समाज की कुरीतियाँ, शोषण, अत्याचार, व्यभिचार, ऊँच-नीच जैसी देशघाती कुप्रथाओं के विरुद्ध स्वामीजी ने आवाज बुलन्द की थी। उस समय स्वामीजी का प्रबल विरोधी समुदाय जन्मना द्विज ही रहा है और आज जब समता एवं अखण्डता के लिए ही गिरे को उठाने का कार्य प्रारम्भ हुआ ही कि सबसे अधिक आक्रामक रूप वही समूह प्रदर्शित कर रहा है जिसने स्वामी जी का किया था। स्वामी जी के आन्दोलन और देश की स्वतन्त्रता के 43 वर्ष बाद भी यदि आप लोग सबको महान नहीं बना सके तो यह कलंक भी आप पर ही होगा। जन्म से महान कोई नहीं होता। स्थितियाँ और परिस्थितियाँ उसे योग्य और महान बना रही हैं। अछूतों की सम्पत्ति भस्मीभूत करा कर बड़े लोग नाटक देख रहे हैं तो फिर स्वामी जी के अनुयायी कहाँ रह गये।

आप आध्यात्मिक जगत के लोग हैं यदि कुछ कहना है तो मानवकल्याण के लिए कहिए और करिये जो स्वामीजी की मूल धारा रही है। देश को राख बना कर मानवता का गला घोटने वाले समाज के यदि आप पोषक बनेंगे तो निश्चित ही भारत का विशाल समूह आपको एक दिन विदेशी कहेगा।

हरिशंकर
आर्यसमाज हीसीपुर
मीरजापुर

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन.पी. ७९

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
पौष शुक्ल - ६ संवत २०४७ वि०
दिनांक २३ दिसम्बर १९९०

दूरभाष
२५४६६२

डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री का अभिनन्दन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा0 सच्चिदानन्द शास्त्री को आर्यसमाज शालीमार बाग, बी0एन0पूर्वी के वार्षिकोत्सव पर रविवार 2 दिसम्बर 1990 को शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान पं0 क्षितीश वेदालंकार ने उनका शाल उढ़ाकर अभिनन्दन किया। आर्यसमाज की कर्मठ कार्यकर्त्री पूर्व प्रधान दिवंगता श्रीमती शान्तिदेवी के दोनों सुपुत्रों श्री-रवीन्द्र आर्य और श्री मनीष आर्य ने फलफूल तथा ग्यारह हजार रुपये की सम्मान राशि पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री को भेंट की। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा0 धर्मपाल ने कहा कि पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री का सारा जीवन त्याग एवं तपस्या का पर्याय है। उन्हें कभी भी घर-परिवार का मोह नहीं रहा। उन्होंने अपनी लाखों करोड़ों की सम्पत्ति आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए दान कर दी। उनके एक भाई आर्य सत्याग्रह हैदराबाद में शहीद हो गए थे। उनकी स्मृति में उनके पैतृक गांव में एक महाविद्यालय खोला गया। पिछले दिनों वे नीदरलैण्ड और हालैण्ड आदि देशों में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए गए। उन्हें वहाँ जो भी दक्षिणा मिली वह सारी उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए सार्वदेशिक सभा को दान में दे दी। ऐसे आर्य रत्न को सम्मानित करके हम आज धन्य हुए हैं।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) पौष शुक्ल १२ , रविवार संवत् २०४७वि. दिनांक: ३० दिसम्बर १९९० (घोषणा पत्र सं.७/२७-२-७५)



सुनो नई पीढ़ी के बच्चों!

तुम्हें राम की सौगन्ध है।
तुम्हें रहीम की सौगन्ध है।।
तुम्हें इस धरती की सौगन्ध है।।।

- आत्महत्या मत करना,
यह घोर पाप है ।

अन्धंतमः प्रविशन्ति ये के च आत्महनो जनाः

-- यजुर्वेद

अपना आत्महनन करने वाले अनन्तकाल तक अन्धकार (रौरव नरक) की योनियों में पड़े रहते हैं।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम ए

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम.ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क :	
आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१ रु. मात्र
विदेश में	१५ पौंड

प्रकाशन का ९३वाँ वर्ष
अंक - ५१

चाहे आरक्षण का विरोध हो अथवा समर्थन.. आत्महत्या करना पाप है

युवा पीढ़ी आत्मदाह करना बन्द करे- यह राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है।

हमारा राष्ट्र समस्याओं की भयंकर आग में पहिले से ही धू धू करके जल रहा था। जनता दल के पिछले ।। मास के शासनकाल में **रामजन्मभूमि, पंजाब, कश्मीर, असम** की समस्याएं तो उग्र से उग्रतर होती ही चली गईं। इधर प्रशासनिक अक्षमता के कारण मँहगाई अपनी चरमसीमा को छूती हुई चल रही है और जनसाधारण को अपने जीवन यापन के लिए एक कठिन समस्या बनती चली जा रही है। विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार द्वारा मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू कर देने तथा वर्तमान सरकार द्वारा उसका समर्थन कर देने से हमारे देश की उदीयमान युवापीढ़ी, जिस पर राष्ट्र की आशाएं लगी हुई हैं, आरक्षण विरोध के नाम पर न जाने किस उपलब्धि की आशा में आत्मदाह करती जा रही है।

हम मानते हैं कि मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू करने में वी0पी0 सिंह की सदाशयता ही प्रमुख रही होगी क्योंकि उनकी दृष्टि में पिछड़े वर्ग को न्याय दिलाने की कोशिश में ऐसा निर्णय लिया जाना उनके नैतिक मूल्यों की विजय है। परन्तु इसके दूसरे पहलू पर विचार ही नहीं किया गया कि इससे वर्गविद्वेष उत्पन्न होगा और योग्यताओं प्रतिभाओं पर कुठाराघात लग जायेगा। यदि इसी रिपोर्ट को बिना किसी वर्ग का नाम लिए आर्थिक दृष्टि से विपन्न सम्पूर्ण भारतीय समाज के लिए लागू किया जाता और योग्यता का एक निश्चित मापदण्ड नौकरियों में आरक्षण के साथ ही अनिवार्य रूप से जोड़ दिया जाता तो निःसन्देह युवापीढ़ी द्वारा आत्महनन का जो वीभत्स रूप हमें आज दिखाई पड़ रहा है- वह न दिखाई देता।

यह भयंकर राजनैतिक अदूरदर्शिता का परिणाम है। इसने प्रतिभाओं और योग्यताओं के आगे कुंठा का एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है? । यदि योग्य व्यक्ति शासन में नहीं पहुँचेगें तो निश्चित रूप से प्रशासन का स्तर गिरेगा और राष्ट्र की क्षति हो सकती है। संविधान ने प्रत्येक को उन्नति के अवसर की समानता प्रदान की है इसके लिए साधनों की उपलब्धता कराना हमारा नैतिक कर्तव्य है क्योंकि हमारा मूलमन्त्र ही **"सर्वे सन्तु सुखिनः"** रहा है परन्तु इसके पीछे हमें योग्यता की कसौटी भी रखनी होगी। इसलिए हम वर्तमान शासन से इस रिपोर्ट के सभी पहलुओं पर गम्भीरता से विचार करने का अनुरोध करते हैं और अपनी उदीयमान नई पीढ़ी से विनम्र निवेदन करते हैं- कि आत्म-हत्या मत करना, यह महान पाप है। मानव जीवन न जानें कितने सुकृतों से मिलता है। यह परमात्मा की अनमोल देन है थोड़े से निमित्त के लिए इसे नष्ट कर देना भयंकर गुनाह है।

--

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा [illegible] तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ॥
—राष्ट्र कवि मैथिली शरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

सम्वत् पौष शुक्ल-१३ सम्वत् २०४७ वि.
दिनांक ३० दिसम्बर १९९० दयानन्दाब्द-१६६
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

ओ३म् सम्पादकीय

फूंकों से यह चिराग बुझाया न जायेगा

— अमर शहीद स्वा० श्रद्धानन्द

भारत के प्रधानमन्त्री स्व0 नेहरू ने कहा था--

"स्वामी श्रद्धानन्द में निर्भीकता की आश्चर्यजनक पराकाष्ठा थी। लम्बा कद, भव्यमूर्ति, सन्यासी के वेष में बहुत उम्र हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी चमकती हुई आँखें और चेहरे पर कभी-कभी दूसरों की कमजोरियों और बुराइयों पर आने वाली चिड़चिड़ाहट या गुस्से की छाया का गुजरना। मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूँ। अक्सर यह मेरी आँखों के सामने आ जाती है"।

ब्रिटिश प्रधानमन्त्री स्व0 रेम्जे मैकडानल्ड ने कहा था-

"यदि वर्तमान काल का कोई कलाकार ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित माडल सामने रखना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति (स्वामी श्रद्धानन्द) की तरफ इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैंट पीटर के चित्र के लिए नमूना मांगेगा तो मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करूंगा"।

-- और 23 दिसम्बर 1926 को हत्यारे अब्दुल रशीद की गोलियाँ खाने से कुछ दिन पूर्व उस अजेय शक्ति सम्पन्न, दिव्य गुण- आगार सन्यासी श्रद्धानन्द ने स्वयं कहा था--

"अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करके वैदिक धर्म और मातृभूमि की सेवा करूँ"।---- और 23 दिसम्बर 1926 को अगणित दीप जलाकर वह दीप अनन्त में विलीन हो गया।

वह सच्चा राष्ट्रपुरुष था, आर्यसमाज का जाज्वल्यमान नक्षत्र था. बादलों की भाँति परहित में बरसने वाला सन्यासी था। लोग उसे श्रद्धा से श्रद्धानन्द पुकारते थे। उसके हृदय में शोषितों पीड़ितों के लिए अथाह प्रेम था। उसने 30 मार्च 1919 को रोलेट ऐक्ट के विरोध में हजारों की संख्या में निहत्थी जनता का नेतृत्व करते हुए गोरे सिपाहियों के आगे छाती खोलकर निर्भीकतापूर्वक कहा था-

" इस निहत्थी जनता पर गोली चलाने से क्या लाभ। मैं सन्यासी हूँ। मेरी छाती खुली है। पहिले इस पर गोली चलाओ"।

----- वह शुद्धि का दीवाना सन्यासी था। उसकी अन्तर्दृष्टि ने देख लिया था भारतीय राष्ट्रीयता का मूलमन्त्र शुद्धि है। गुरुकुलीय शिक्षा में भारत की नैतिकता छिपी हुई है। केवल यही शिक्षा भारत को जगद्गुरु बना सकने में सक्षम है। वह आर्यजाति का महान प्रहरी था। छुआछूत और जातिपान्ते को मिटाकर वह समग्र भारतीय समाज को एक राष्ट्रपुरुष के रूप में देखना चाहता था। उसका बलिदान आर्यसमाज को युगयुगों तक प्रेरणा देता रहेगा।

आज हम उस वीरवर स्वामी-श्रद्धानन्द की पुण्यतिथि पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मना रहे हैं। उसका जलाया हुआ आर्यदीप अपनी शतशः सहस्रशः ज्योतियों के साथ विश्व के कोने-कोने को प्रदीप्त करे- यही हमारी कामना है। □

नेपाल में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

नेपाल आर्यसमाज शाखा वीरगंज के प्रयत्न से पर्सा एवं बारा जिला (नेपाल) के ग्राम-ग्राम में आर्यवीर दल का गठन हो गया है नवयुवकों में नेपाल के बदलते वातावरण में हिन्दू धर्म संस्कृति के संरक्षण के लिए नई चेतना का संचार हुआ इस युवाशक्ति के बल पर नेपाल आर्यसमाज ने नये संविधान के अन्दर हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की प्रमुख भूमिका निभाई है। नेपाल में हिन्दू महासभा, विश्वहिन्दू परिषद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आदि संस्थाएं भी आर्यसमाज के साथ मिलकर संगठनात्मक सभाएं, प्रदर्शन, जुलूस एवं लाखों की संख्या में हस्ताक्षर अभियान के द्वारा नेपाल संविधान निर्मातृ समिति को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने के लिए बाध्य किया है।

नेपाल आर्यवीर दल मध्यांचल श्रीपुर, मुरलि का गठन

नेपाल आर्यवीर दल मध्यांचल क्षेत्रीय उपाध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश आर्य के संरक्षण में आर्य वीरदल मुरलि का गठन दि0 2 दिसम्बर को हुआ जिसमें सभापति श्री हीरालाल यादव, महासचिव, श्री दिनेश पन्थ, मन्त्री- श्री श्यामनारायण सिंह, कोषाध्यक्ष- श्री सूर्य बहादुर वाराही निर्वाचित हुए।

- आर्यसमाज केल्या रोड के ग्राम पड़री के श्री महादेव शर्मा की धर्मपत्नी का दि0 7 नवम्बर को निधन हो गया दि0- 18/11/90 को शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

-लालमणि आर्य

- आर्यसमाज हलूनगर (रामपुर) के प्रधान श्री म0 बालकराम आर्य का लम्बी बीमारी के बाद दि0-15- दिसम्बर को निधन हो गया वह कर्मठ कार्यकर्ता थे परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई

--

- श्री वीरेन्द्र "वीर" निरीक्षक सभा के अग्रज श्री महावीर सिंह चौहान का 208/ए विहारीपुर सिविल लाइन्स बरेली में दि0-12 दिसम्बर के 54 वर्ष की आयु में निधन हो गया उनकी अन्त्येष्टि उनके बड़े पुत्र डा0 ज्ञानेन्द्र सिंह चौहान द्वारा वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति व शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी का उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को निर्देश

सेवा में,
श्रीमन्त्री जी
आर्यसमाज,

श्रीमन्नमस्ते,

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामजी की जन्म स्थली से बाबरी मस्जिद हटना चाहिए। यह एक परतन्त्रता और पददलिता की निशानी है। आर्य (हिन्दू) जाति की अस्मिता एवं अस्तित्व का प्रश्न है। आर्यसमाज ने इस अन्याय को दूर करने के लिए अयोध्या में चल रहे सत्याग्रह में भाग लेने का निर्णय लिया है। सार्वदेशिक सभा और प्रान्तीय सभा इस विषय में निर्देश दे चुकी है।

इस सन्दर्भ में मैंने यह निश्चय किया है कि मैं स्वयं आर्यसमाज के सत्याग्रही जत्थे के साथ दिनांक- 5 जनवरी 1991 शनिवार को अयोध्या में सत्याग्रह करूँ।

अतः आपको यह निर्देश दिया जाता है कि आप अपने आर्यसमाज से अधिक से अधिक संख्या में दिनांक- 3-1-91 वृहस्पतिवार को सत्याग्रह में भाग लेने वाले आर्यबन्धुओं को आर्यसमाज मन्दिर बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर में दोपहर तक अवश्य भेज दें ताकि रात्रि को नौचन्दी एक्सप्रेस से लखनऊ से अयोध्या के लिए प्रस्थान किया जा सके। हम सब लोग दिनांक- 4-1-91 को दोपहर तक अयोध्या पहुँच जाएगें और दिनांक- 5-1-91 शनिवार को अयोध्या में सत्याग्रह करेंगे। प्रत्येक सत्याग्रही अपने साथ पहनने के कपड़े और दो कम्बल अपने साथ लावें। साथ ही सब आर्य समाजें अपने-अपने सत्याग्रहियों का किराया वहन करें। किराया लगभग प्रति व्यक्ति 200रु0 लगेगा।

भवदीय,
इन्द्रराज
मन्त्री
आर्यउपप्रतिनिधि सभा
जिला मेरठ ।
तथा प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

अल्पसंख्यकवाद के दुष्परिणाम

• डा० कैलाशचन्द्र, नई दिल्ली

भारत की राजधानी दिल्ली के इतिहास में 14 नवम्बर का दिन "कालादिवस" के रूप में मनाया जाता रहेगा। उस दिन पुरानी दिल्ली के मुख्य मार्गों पर घोर सांप्रदायिकता का नंगा नाच होता रहा राष्ट्र विरोधी नारों से आकाश गूंज उठा। दिल्ली का देश भक्त बहुसंख्यक सामाज सब कुछ देखता, सुनता रहा तो भी प्रतिरोध नहीं किया क्योंकि प्रतिरोध करने से दंगे भड़क उठते।

ऐसे नारे सुनने को मिले जिनकी कभी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। जैसे -

1- पाकिस्तान जिन्दाबाद।
2- जब तक सूरज चांद रहेगा,
बाबर तेरा नाम रहेगा।
3- बच्चा बच्चा राम का,
बिरयानी के काम का।
4- दलित मुस्लिम सिख ईसाई,
हिन्दू कौम कहां से आई।
5- भारत में अगर रहना होगा
अल्ला हू अकबर कहना होगा।

आखिर इन नारों के पीछे- कौन-सी मानसिकता काम करती है। इस मानसिकता का कारण क्या है। यह प्रश्न सबके सामने उपस्थित हो गये हैं। बाबर को यह लोग अपना हीरो क्यों मानते हैं। वे बाबर के भक्त क्यों हो गये। क्यों वे राम के बच्चे बच्चे को काटकर उनकी बिरयानी बना कर खा जाना चाहते हैं। वे भारत की जय के बजाये पाकिस्तान जिन्दाबाद क्यों चिल्लाते हैं और क्यों वे हिन्दू समाज के विरुद्ध दलित मुस्लिम सिख ईसाई का साझा मोर्चा बनाना चाहते हैं।

यदि ध्यान से देखा जाये तो बात समझ में आने लगेगी। विदेशी आक्रमणकारी अत्याचारी बाबर को हीरो मानने से स्वत ही बाबर के आक्रमण का विरोध करने वालों के प्रति शत्रु भाव पैदा हो जाता है। यदि बच्चा-बच्चा राम का जन्म भूमि के काम में लगेगा तो जन्म भूमि को ध्वस्त करने वाले बाबर के अनुयायी अवश्य ही उन्हें शत्रु समझेंगे, उन्हें मारने की इच्छा भी होगी।

भारत में भारतीय आस्था वाले तो बाबर को अपना महापुरुष नहीं मानते बल्कि पकिस्तानी ही बाबर का संमान करते हैं। क्योंकि बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना करके विशाल इस्लामी राज्य की नींव रखी। जिसके परिणाम स्वरूप 1947 में पाकिस्तान अस्तित्व में आया। अत बाबर के अनुयायी भारत की जय कैसे कह सकते है। वे तो पाकिस्तान की जय के नारे ही लगायेंगे। चाहे कश्मीर हो या मेरठ मुरादाबाद हो भारत के जिस भाग में भी पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगते हैं उसके पीछे बाबरी भावना ही कार्य करती है।

किन्तु भारत के पाक परस्त अब यह समझ चुके हैं कि वे अकेले अपने विरोधियों को नहीं जीत सकते बाबर के बचे कार्य को यदि पूरा करना है तो उन्हें अन्य अल्पसंख्यकों को भी साथ लेना होगा। चाहे विगत में ईसाई और मुस्लिम समाज के मध्य खूनी युद्ध हुए, सिख समाज से भी उन्होंने अनेक लड़ाईयां लड़ीं, किन्तु अभी तो अपना काम निकालने के लिये ईसाई और सिख समाज को भी भडका कर और साझा मोर्चा बना कर साथ लेना होगा। इतना ही नहीं तो हिन्दु समाज में भी विभ्रम पैदा करके हरिजन एवं स्वर्ण हिन्दू के मध्य खाई बनानी होगी। दलित कहे जाने वाले हिन्दुओं को भी बहका कर अपने साथ लेना होगा तभी बहुसंख्यक समाज शक्तिहीन हो पायेगा। तभी उसे जीता जा सकेगा। इसी कारण जहर उगलने वाले शहाबुद्दीन जैसे भी इन्साफ पार्टी का आडम्बर रच कर अन्य समाजों में हिन्दू विद्वेष पैदा कर रहे हैं।

बाबर एवम् बाबरी भावना आज भारत में वैचारिक ध्रुवीकरण का आधार बन गये हैं। एक ओर बाबर के आक्रमण के विरोधी तो दूसरी ओर बाबरी आक्रमण को उसकी चरम परिणति तक पहुँचाने के इच्छुक जो कहते हैं जब तक सूरज चांद रहेगा बाबर तेरा नाम रहेगा और भारत को बाबर का भारत बना देना चाहते हैं जिसका अर्थ उनकी दृष्टि में यह है कि भारत में यदि रहना होगा अल्लाह अकबर कहना होगा।

4 नवम्बर को गुरुद्वारा बंगला साहेब में सिख स्टूडेंट्स फैडेशन ने तथा अकालीदल के कुछ नेताओं ने एक शहीदी सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें भारी सख्या में कट्टरवादी मुस्लिम नेताओं को भी बुलाया। सम्मेलन में शाही इमाम तथा अन्य मुस्लिम नेताओं ने हिन्दुओं के विरुद्ध लडाई का आह्वान किया परन्तु इतिहास साक्षी है कि पहिले भी मुगलों ने वीर बन्दा बैरागी के विरुद्ध सिखों का साथ लिया किन्तु अपना काम निकल जाने के उपरान्त सिखों का कत्लेआम भी किया घल्लू घेरा की रोमांचक कहानियां, जब चुन-चुन कर सिखों को मारा गया, मानवता के मुँह पर कालख के रूप में इतिहास के पन्नों पर अंकित हैं। जनूनी मुस्लिम शक्तियां सदा ही सिखों को भी उतना ही काफिर मानती रही हैं जितना हिन्दुओं को। सिख इतिहास अधिकांश रूप में बाबर के वंशजों के क्रूर अत्याचारों की ही कहानी है। चाहे पंचम गुरु अर्जुनदेव, और नवम गुरु श्री तेग बहादुर सिंहजी हों या फिर गुरु गोविन्द सिंहजी के चारों पुत्र हों, सभी तो इस्लामी जनून का ही शिकार बने थे। नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली तक ने सर्वाधिक जुल्म सिखों पर ही तो ढायें। आज तक भी अरब देश में सिखों का प्रवेश ही बन्द है। अन्य लोग वहां जा सकते हैं। 1947 के दंगों में भी पाकिस्तानियों की दृष्टि सिखों पर अधिक रहती थी अभी तो पाकिस्तान अकालियों तथा कुछ सिख उग्रवादियों द्वारा सिखों में विद्रोह की भावना फैला कर अपना काम निकालने में लगा है किन्तु भविष्य में वही सिखों को नष्ट करने में भी उतनी ही आतुरता दिखायेगा यह बात अभी कुछ सिख उग्रवादी नेता आवेश और क्रोध के कारण समझ नहीं रहे। वास्तव में उग्रवादी सिख नेतृत्व ने अपने कार्य-कलापों से सिखी को ही हानि पहुँचाई है। सदा से पंजाब के हिन्दू परिवार अपने एक लड़के को सिख बनाते थे। किन्तु अब यह परिपाटी बन्द हो गई। सिन्ध तथा पेशावर के सभी हिन्दु गुरुद्वारों को मानते थे और गुरुग्रन्थ साहेब का ही पाठ किया करते थे। उन्होंने भी उग्रवादियों की गतिविधियों के कारण सिखी से अपना मुँह मोड़ लिया। हिन्दुओं में सिखों के प्रति जो भ्रातृभाव था, आदर प्रेम था, उसको काफी क्षति पहुँच चुकी है। कहीं ऐसा न हो कि कुछ अतिवादी सिख नेताओं द्वारा पाकिस्तानी तत्वों से हाथ मिलाने के कारण इधर भारत में सिखों की छवि खराब हो जाये उधर आगे चल कर पाकिस्तानी भी सिख समाज से पुरानी शत्रुता निकालने का बहाना ढूंढने लगें। □

स्वास्थ्य-सुधा

उपचार दर्पण

(1)

समस्या- "मेरे मित्र और कर्मठ आर्यसमाजी श्री सत्यदेव सैनी की धर्मपत्नी को पुराना कब्ज है, गैस हो जाता है। सिर दर्द होना, कमर तथा पैर में दर्द होता है"।

- डा0 ज्वलन्तकुमार शास्त्री
एम0ए0, पी एच0डी0 अमेठी
(सुलतानपुर)

समाधान- शौच जाने से पहले पानी पिया करें। "ओजस सीरप" (चरक) एक ढक्कन दवा समान जल के साथ प्रत्येक भोजन बाद पिया करें। चोकर सहित रोटी और हरी सब्जी का सेवन लाभकारी है। बडी हरड़ का चूर्ण लगभग 10 ग्राम रात्रिभोजन के आध-घण्टा बाद जल से लिया करें। सप्ताह में एक बार मध्याह्न भोजन में केवल पपीता खायें।

--

(2)

समस्या- "मैं एम0ए0 का विद्यार्थी हूँ तथा साथ ही दुकान भी करता हूँ। पिछले कुछ मास से घण्टा- आधघण्टा पढ़ने के बाद नींद आ जाती है"।

- ओम्कार गंगवार, स्थान/डाकघर-मीरगंज, जनपद-(बरेली)

समाधान- "प्रात काल वायुसेवन किया करें। प्रात क्रमानुसार भुजंगासन-धनुरासन-सर्वांगासन किया करें। प्रातराश में शंखपुष्पी सीरप तीन चम्मच, दूध या पानी में घोलकर पिया करें। भोजन के साथ सलाद व फलाहार लिया करे। रात्रिभोजन के आधघण्टा बाद बडी हरड़ का पाँच ग्राम चूर्ण पानी से लिया करें।

-गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरगढ़।

मधुर वचन बोलें

राजेश प्रताप सिंह बी.ए.
ग्राम हाटा-नदौली देवरिया

अगोरुधाय गविषे, द्युक्षाय दस्म्यं·वचः।
घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत।।
ऋग् 8-24-20

मधुर वचन वातावरण को मधुर बनाने का सर्वोत्तम साधन है। मीठे दो शब्द जितना अमृत का संचार करते हैं, उतना अन्य कोई औषधि नहीं कर सकती है। दीन हीन, विपत्तिग्रस्त, रोगी और असहाय को सहानुभूतिपूर्ण मधुर वचन अवर्णनीय सान्त्वना प्रदान करते हैं। कटु वचन यदि स्नेह सम्बन्धों को तोड़ते हैं तो मधुर वचन टूटे सम्बन्धों को जोड़ते हैं। मधुर वचन ईश्वरीय देन है। इनसे संसार को वश में किया जा सकता है। मधुर बोलने का भी सतत अभ्यास करना पड़ता है। जितना हृदय पवित्र होगा, उतनी ही वाणी में मिठास होगी। शब्द मनुष्य के हृदय का मूर्तरूप है, चित्र है। इसके द्वारा देवत्व, मानवता और दानवता तीनों रूप प्रकट किये जा सकते हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह शब्दों के द्वारा देवत्व की साधना करे। मधुर वचन देवत्व को साधना है। यह वशी करण मन्त्र है, जिसके द्वारा सबको अपने वश में किया जा सकता है। इसीलिए कहा गया है-

कागा काको हरत है,
कोयल काको देत ।
मीठी वाणी बोलकर,
सबका मन हर लेत ।।

मधुर वाणी औषधि के समान गुणकारी है। इसका प्रयोग हमें बहुत सोच समझकर करना चाहिए। हमें कहाँ पर किस तरह की बात बोलनी चाहिए जिससे दूसरों को कष्ट न पहुँचे, इसका ध्यान बहुत आवश्यक है। क्योंकि वाणी में अनमोल शक्ति है। इसके द्वारा हम पूरी दुनिया को वश में कर सकते हैं। आवश्यकता से ज्यादा तथा असामयिक बात हमें कभी नहीं बोलनी चाहिए। हमें उचित और अनुचित का ध्यान रखकर अपने मुँह से वाणी निकालनी चाहिए। कबीरदास जी के निम्न दोहे से यह बात स्पष्ट हो जाती है-

बोली एक अमोल है,
जो कोई बोले जानि।
हिये तराजू तौलिके,
तब मुख बाहर आनि ।।

जिह्वा दुनिया में बहुत बड़े नुकसान भी कर देती है। यह है तो छोटी सी ही पर पूरे छः फुट के आदमी को मार सकती है। कम बोलिए, अधिक सुनिए। बड़ों ने कहा भी है- कह एक, जब सुन दो, खुदा ने जीभ एक दी, कान दो। दूसरों की बातों पर विचार कीजिए और उसके प्रकाश में अपनी धारणाओं को तौलिए और फिर जो सही लगे वह कीजिए। आपका शान्त रहना आपको शक्तिशाली प्रमाणित करता है। कब बोलना चाहिए यह समझना कठिन काम है पर इसका सीखना जीवन की सफलता के लिए आवश्यक है। यदि आप बीमार हैं तो अपना मुँह जरूर बन्द रखिए, यदि आप कोई कठिन समस्या सुलझा रहे हैं तो चुप रहकर उस पर विचार कीजिए। यदि आपको क्रोध आ रहा हो तो मौन धारण कीजिए। बिना पूछे किसी को कोई राय न दीजिए। वाणी का प्रयोग किए बिना आप चुप रहकर देखिए, आप नफे में रहेंगे।

वाणी के विषय में

एक बार वाणी और मन अपनी अपनी श्रेष्ठता के लिए झगड़ते हुए निर्णय के लिए प्रजापति के पास पहुँचे और जाकर कहा,- "महाराज। बतलाइए कि हम दोनों में कौन श्रेष्ठ है।" प्रजापति ने कहा "मनः श्रेष्ठम्, मनः श्रेष्ठम्, मनः श्रेष्ठम न संशयम्" मन ही श्रेष्ठ है, मन ही श्रेष्ठ है, मन ही श्रेष्ठ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। प्रजापति के उत्तर को सुनकर वाणी जरा दुःखी हुई और बोली-"आपका निर्णय तो शिरोधार्य है पर मेरा हृदय इसे मान नहीं रहा है।" प्रजापति ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया- "पर, तुम्हें घबड़ाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि "वाणी तू तो साक्षात् प्रजापति है"।

बात सन् 1997 ई0 की है, नासिक में बम्बई प्रदेश कांग्रेस का वार्षिकोत्सव हो रहा था। बालगंगाधर तिलक, उस समय देश के सबसे बड़े नेता थे। जहाँ वे जाते। वहाँ हजारों आदमी उनके दर्शन और भाषण के लिए एकत्र हो जाते। वहाँ भी उनका भाषण होना था। अपार भीड़ थी। उनके भाषण से पूर्व दादा साहब खापर्डे और दादा साहब केलकर के भाषण हुए। दोनों बुजुर्ग आदमी थे। बुजुर्गों की भाँति वे बहुत देर तक बोलते चले गये। सभी उनके भाषण से थक गये, ऊब गये। उसके बाद जब तिलक महाराज की बारी आयी तब वे भाँप गये कि अब लोग ऊब चुके हैं, इसलिए हाथ जोड़कर बोले -"अभी तक आप दो दादाओं के उपदेश सुन रहे थे, पर मैं तो बाल {बालक} हूँ। इसलिए उपदेश न देकर नमस्कार करता हूँ।" सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठी। कब क्या कहें यह वाणी के सम्यक् प्रयोग के लिए आवश्यक है।

सन् 1926 ई0 में गुरुकुल कांगड़ी को रजत जयन्ती समारोह हो रहा था। तीस हजार से भी अधिक भीड़ थी। डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद दीक्षान्त भाषण देने वाले थे। उन दिनों लाउडस्पीकर न होने से उनके लिए दूर तक आवाज पहुँचाना सम्भव न था। उन दिनों टी0एल0 वास्वानी युवकों में बहुत लोकप्रिय थे। उन्हें भाषण के लिए बुलाया गया। उन्होंने उस विशाल जनसमूह को देखा और अपना ओजस्वी भाषण दिया। उसके बाद राजेन्द्र प्रसाद की बारी आयी। उन्होंने जनता की ओर देखा, सिर झुकाया और बैठ गये। यह देख जनता ने जोर से तालियाँ बजाई। पंडाल गूँज उठा।

ये घटनाएँ यह बताती हैं कि बुद्धिमान् मनुष्य वह है जो यह जानता है कि किस समय उसे क्या और कैसे बोलना चाहिए और कब चुप रहना चाहिए। अतः वाणी को यशस्वी बनाने के लिए पहली और मुख्य बात यह है कि मनुष्य कम बोले। यह भी ध्यान रखें कि कब और क्या बोलना चाहिए। साथ ही व्यर्थ का या असामयिक न बोलकर कितना बोलना चाहिए यह भी ध्यान रखने की बात है।

सम्पूर्ण प्रजाजनों को एक दूसरे के साथ मीठा भाषण करना उचित है, क्योंकि उसी से अहिंसा, अभय, शान्ति सर्वत्र स्थापित होती है और मीठे व्यवहार से ही जगत् वश में आ सकता है।

तुलसी मीठे वचन से,
सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण वह मन्त्र है,
तजिए वचन कठोर ।।

एक बार एक वकील साहब अपने परिवार के साथ रह रहे थे। वे हमेशा तो नहीं पर कभी-कभी आर्यसमाज के सतसंग में चले जाते थे। बच्चा तथा उनकी स्त्री भी साथ रहती थी। एक दिन पति और पत्नी में झगड़ा हो गया। बातचीत बन्द हो गयी। शाम को जब पति अपना कार्य समाप्त कर लौटते तो पत्नी चाय लाती। मेज पर रखकर चली जाती फिर आकर कप-प्लेट ले जाती। दोनों को न बोलते जब पाँच-छः दिन बीत गये तो लड़का बहुत बोर हो गया था। वह शाम को जब वकील साहब आये तो खेलता हुआ वकील साहब के कमरे में गया और गाने लगा "कड़वे बोल न बोल" जब वकील साहब ने कई बार सुना तो कहा, "माँ के पास जाकर बोलो"। वह रसोई घर में गया और बोलने लगा "कड़वे बोल न बोल"। यह सुन माँ बोली "बेटा। पिताजी के कमरे में जाकर बोल।" बच्चा वहाँ गया। वे उसे माँ के पास भेजते और माँ पिताजी यहाँ" वह आँगन के बीच में आया और आर्यसमाज के भजनोपदेशक के भजन के शब्द बोलने लगा। माँ और पिता ने आँगन में आकर उसे गोद में उठा लिया और अपने-अपने आँसुओं से अपने कटु भाषण का प्रायश्चित्त किया। वहाँ सदा प्रेम और शान्ति का राज्य हो गया।

मधुर वचन मनुष्य को शीतलता प्रदान करता है जबकि कटु वचन या कड़वी तीखी बात तीर के समान हृदय को विदीर्ण कर देती है। मीठी वाणी के कारण हम लोकप्रिय हो सकते हैं, हमें समाज में प्रतिष्ठा मिल सकती है, तथा हमारी उन्नति हो सकती है। मधुर वचन बोलकर हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं, क्योंकि मधुर वाणी का हर जगह सम्मान होता है।

ऐसी वाणी बोलिए,
मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे,
आप हूँ शीतल होय।।

कटुवचन दुर्गति के साधक हैं और मधुर वचन दुर्गति नाशक। कटुवचन दुर्गति कारक हैं और मधुर वचन बिगड़ी बातें बनाते हैं, टूटे सम्बन्ध सुधर जाते हैं। मधुर वचन से कोमलता, मधुरता, सरसता और अनुरंजकता आती है। उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। अतः मनुष्य को मधुर समयानुकूल और ओजस्वी वाणी का प्रयोग करना चाहिए। □

आर्यसमाज राममन्दिर निर्माण आन्दोलन के साथ क्यों?

आचार्य प्रेमभिक्षु, एम.ए. मथुरा

आर्यसमाज भारत राष्ट्र और आर्य (हिन्दू) जाति का सजग प्रहरी और जागरूक रक्षक रहा है। अपनी इसी टेक को निभाने के लिये आर्यसमाज देश के स्वतन्त्रता संग्राम में सबसे आगे था, इसी टेक के लिए आर्यसमाज ने हैदराबाद सत्याग्रह, का बिगुल बजाया तथा 22 हजार आर्यवीरों को निजामशाही की दुर्दान्त जेलों में झोंका और सैकड़ों बलिदान दिये, शिव मन्दिर सत्याग्रह किया, शुद्धि आन्दोलन में स्वामी श्रद्धानन्द और पं0 लेखराम जैसे महापुरुषों का बलिदान दिया और इसी टेक के लिये इस

स्वतन्त्र भारत में भी हिन्दी रक्षा और गोरक्षा आन्दोलन में भी आर्यसमाज ने हजारों-हजारों सत्याग्रही भेजे और अनेको बलिदान दिये। तब आज जब आर्य (हिन्दू) जाति पर चतुर्दिक् से संकट के बादल घहरा रहे हैं, आर्यसमाज मूक दर्शक बनकर नही बैठ सकता। अतः अपनी इसी टेक को निभाने के लिये वह आगे आ रहा है।

2- रामजन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण प्रकरण विश्वहिन्दू परिषद ने अपने हाथ में लिया हुआ है और आर्यसमाज सिद्धान्ततः मूर्तिपूजा को नही मानता, अतः अब तक मौन रहना ही उचित समझा गया था। पर अब प्रश्न मूर्तिपूजा का नही, आर्य (हिन्द) जाति के अस्तित्व की

वस्तु को मांगता या भवन को खाली करने को कहता है तो क्या उसे साम्प्रदायिक कहा जायेगा और उसे अदालत का रास्ता दिखाया जायेगा? इस भ्रांति और अन्याय का पर्दाफाश आर्यसमाज को करना है।

रक्षा का है। अतः आर्य समाज का कर्तव्य उसे पुकार रहा है कि वह आगे आये।

3- फिर आर्यसमाज सत्य का पुजारी है। यह सत्य है और ऐतिहासिक तथ्य है कि बाबर के आदेश पर उसके सेनापति मीर बकी ने अयोध्या में श्रीराम जन्म स्थल पर बने मन्दिर को तोड कर मस्जिद बनवाई, तब राम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण की मांग सत्य और न्याय की मांग है, राष्ट्रीयता और मानवता की मांग है। आर्यसमाज जैसे सत्य-न्याय प्रिय संगठन को इसमें सहयोग करना एक पुनीत कर्तव्य है।

4- वी0पी0 सिंह और मुलायम की अन्धी और बहरी सरकार "अर्थी-दोषो न पश्यति" की कहावत के अनुसार रामभक्त सत्याग्रहियों पर जुल्मों का कहर ढा चुकी है, उसने नादिरशाही तथा तैमूरलंग एवं चंगेजखाँ के दानवी अत्याचारों को भी पीछे छोड़ दिया है। इन जुल्मों को देखते रहना अब असह्य हो गया है। इनके प्रतिकार के लिये आर्यसमाज को आगे आना पड़ा है।

5- एक किसी की नींद या गफलत में दूसरा उसकी सम्पत्ति लूट लेता है, या उसके भवन को ही हथिया लेता है, उस पर अनुचित रूप से कब्जा कर लेता है

6- यह भी समझने और समझाने की आवश्यकता है कि आज का मुसलमान भी कल हिन्दू ही था। उसकी नसों में भी मर्यादा पुरुषोत्तम राम और श्रीकृष्ण का रक्त है। श्रीराम भारतीय मुसलमानों के भी पूर्वज हैं। अत. हर समझदार मुसलमान राममन्दिर निर्माण में सहयोग करेगा, जैसाकि अनेक मुसलमान बन्धु कर भी रहे हैं।

7- राममन्दिर निर्माण के इस राष्ट्रिय और सांस्कृतिक कार्य को हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष का रूप वी0पी0 और मुलायम जैसे स्वार्थी नेताओं ने दिया है, यह महापाप है। राम मन्दिर का निर्माण तो राष्ट्रिय स्मारक के रूप में होना चाहिए। आर्यसमाज इस चिन्तन की पृष्ठभूमि के साथ इस आन्दोलन का पूर्ण समर्थन और सहयोग करने के लिए कटिबद्ध है।

आइये, आप भी राम मन्दिर जन्मभूमि-मुक्ति यज्ञ में सहभागी बनें और सत्याग्रह में भाग लेकर कर्तव्य पालन करें। ■

पाप ही क्यों, पुण्य क्यों नहीं

• दर्शन देवी भारद्वाज
अलीगढ़

अति विचित्र समस्या है कि मन पाप की ओर शीघ्रता से क्यों भागता है। पुण्य की ओर प्रयास करने पर भी मन कठिनता से ही लगता है, अन्यथा विपरीत ही गति करता है। पुण्य कर्मों को करने में इतनी शिथिलता इतना आलस्य क्यों? यह अनुताप या विषाद प्रायः अधिकांश मनुष्यों को हुआ करता है। मैं प्रायः सोचती हूँ, "किमहं साधु नाकरवम-किमहं पापं अकरवम्।" मैं पुण्य कर्मों को करना चाहती हूँ, वह मैं कर नहीं पाती हूँ और पाप मय कर्मों को करना नहीं चाहती हूँ, वह मुझसे हो जाता है।

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरतिपूरुषः
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।।
गी0अ0 3/36

इसी प्रश्न को गीता में अर्जुन ने पूँछा, हे वार्ष्णेय बताओ, इच्छा न रहते हुए भी जबरदस्ती से दबा कर जोता गया था यह पुरुष किसकी प्रेरणा से पाप की ओर प्रवृत्त होता है।

काम एव क्रोध एवं रजोगुण समुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्।
गी.अ. 3/37

अर्जुन के प्रश्न का श्री कृष्ण उत्तर देते हैं कि मनुष्य को पाप की तरफ खींचने वाला जो महाशत्रु है, महापापी है, जो बड़ा ही पेटू और सर्वभक्षी है, वह रजोगुण से पैदा होता है। उसके दो नाम और दो रूप हैं। जब आता है तब काम वासना के रूप में आता है और जब बिगड़ता है तब क्रोध का रूप धारण कर लेता है। आधुनिक भौतिक युग में चन्द सन्त- महात्माओं को छोड़कर समस्त मानव जाति काम-क्रोध के पंजे में जकड़ी हुई है। जब इच्छाओं की पूर्ति में बाधा पड़ती है, तब क्रोध आ ही जाता है। क्रोध के आक्रमण से मनुष्य की बुद्धि विकृत हो जाती है और अपने ऊपर का सन्तुलन समाप्त हो जाता है। काम और क्रोध के वशीभूत होकर ही यह मनुष्य पाप की ओर प्रवृत्त होता है। पाप करके क्षीण शक्ति होते ही मनुष्य पश्चाताप और विषाद करता है कि मेरे हाथों पाप ही क्यों होता है, पुण्य क्यों नही? यह अनुताप और पश्चाताप मनुष्य को कुरेद-कुरेद कर खा जाता है। एक घटना याद आ रही है- सन् 53 या 54 की बात होगी। मैं कक्षा 3 या 4 में पढ़ती थी। जहाँ मैं अपने माता-पिता के साथ रहती थी वहीं पड़ोस में एक लड़के की शादी हुई। वधू बहुत ही सुन्दर, सुशील, सौम्य व उच्च घराने की हाई स्कूल पास थी। लड़का कक्षा 6 या 7 तक ही पढ़ा था। मुझे उस समय तो इतना ज्ञान नहीं था, पर अब सोचती हूँ कि वह दुश्चरित्र लड़का था व हीनभावना से ग्रसित होकर अपनी सती साध्वी पत्नी पर बूट की ठोकरों से, उसकी बहिने लात-घूँसों से प्रहार करती थीं। खाने-पीने पर, बोलचाल में यहाँ तक प्रतिबन्ध था कि वह बीमार भी हो गई। इतना अत्याचार सहते हुए भी वह कहती थी कि मुझे घर से मत निकालो, मुझे नौकरानी बना कर रख लो, आप लोग अपने लड़के की दूसरी शादी खुशी से कर लो। मैं अपनी सौत की भी सेवा खुशी से कर लूँगी। परन्तु जङ्गली लोगों ने उसकी एक भी विनती नहीं सुनी और दुश्चरित्रता का लांछन लगाकर, उससे तलाक लेकर दूसरी शादी कर ली। दूसरी पत्नी मर गई, तब तीसरी शादी कर ली। और जब तीसरी पत्नी भी मर गई तब पहले वाली पत्नी को बुलाने पहुँच गया। उस देवी ने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया और कहा जब मेरे आपके साथ रहने के दिन थे, तब तो आपने मेरी प्रार्थना सुनी नहीं और प्रताड़ित करके घर से निकाल दिया। यहीं पर इति श्री नहीं हुई आपने लांछन लगा कर तलाक भी ले लिया। अब मैंने अपना जीवन दूसरों की भलाई में लगा दिया है। अतः मैं आपके साथ जाने में असमर्थ हूँ। वह देवी नहीं आई फलत वह दुश्चरित्र लड़का समय से पहले बूढ़ा और अन्धा होकर मर गया। जब उसकी शक्तियां क्षीण हो गई तब उसको पश्चाताप व दुःख हुआ कि मैंने अपनी

शेष पृष्ठ ६ पर

स्नेह की बातें

•मनोज कुमार सिंह
बगहा {मिर्जापुर}

संसार युद्ध से नही प्यार से चलता है। युद्ध जलाता है, प्यार बसाता है। ममता के कारण माँ पूजनीय है। स्नेह के कारण बहन वंदनीय है और स्नेह दो अनजानों को एक बना देता है।

स्नेह के सरगम की शक्ति कौन नही जानता। विश्व का आधा साहित्य इसी की महिमा गा रहा है। स्नेह पवित्रता का सागर है। उसमें द्वेष नही, ईर्ष्या नही, कलुष नही बस प्यार है। प्यार सब में गुण ढूंढ़ता है।

"मैं" "तुम" और "वे" सब एक हैं। यह एकता का भाव बिना प्यार के कहाँ से आयेगा? जीवन के संकट के क्षणों में एक ही तो सहारा है। पवित्र मन ही स्नेह की गंगा प्रवाहित कर सकता है।

वासना प्यार नही है। वह तो स्वार्थ है। देह की भूख मिटाने का एक प्रवाह है। उसमें व्यक्ति देने की नही, लेने की कामना रखता है, इसीलिए वासना उठाती नही, गिराती है। शुभ कामना स्नेह के साथ रहती है। "सब का भला करो भगवान" की भावांजलि कामना है। प्यार इसका उद्गम है। कल्याण इसका लक्ष्य और निर्माण साधन है।

जो जिससे प्यार करता है वह उसकी हानि नही कर सकता। उसके लिए वह प्राण दे सकता है। स्वयं को मिटाकर दूसरे का उत्थान ही तो प्यार का पावन मन्त्र है।

जीवन का आरम्भ प्यार से, विकास प्यार से, निर्माण प्यार से होता है। पर पता नही कहाँ से स्वार्थ जीवन का संचालक बन जाता है और प्यार के स्थान पर स्वार्थ का डेरा लग जाता है।

स्वार्थ मनुष्य को पशु बना देता है। उसकी देखने की शक्ति नष्ट हो जाती है। समझने की बुद्धि नही रहती। "मैं" ही "मैं" रह जाता है "तुम" और "वे" कहीं भी तो नही रहते। तब प्यार की छाया से भी दूर रहकर मुनष्य स्वार्थ, अंहकार, क्रोध, द्वेष के चक्रव्यूह में फँसकर अपना सर्वनाश कर लेता है।

और परिणाम स्वरूप उसका अपना जीवन भी नष्ट हो जाता है और दूसरों को भी वह विनाश के मार्ग पर ढकेलता है। स्वर्ग नरक में बदल जाता है, जब प्यार समाप्त हो जाता है।

हमें नही ज्ञान कि आप को किससे कितना प्यार है? पर तनिक अपने को टटोलिए तो सही फिर देखिए आप कहाँ खड़े हैं।

क्या आपने कभी अपने से प्यार किया है, उस अपने से, जिसके न रहने पर आपके देह को एक क्षण भी कोई घर में न रखेगा। क्या आपने अपने घर परिवार से प्यार किया है? संसार में लाखों दु:खी हैं, क्या वे आपके इस विशाल परिवार के अंग नही है?

और सोचिए-- आप ने कभी अपने को भी जाना है? धन संग्रह में लोक-पद संग्रह में आप भूल रहे पर क्या उसे भी जाना, जिसे मानने के लिए यह मनुष्य देह मिली थी।

आपने अपनी देह का दुरूपयोग किया, और भटक गये। प्यार का पाठ नही पढ़ा और बहक गये। मन पवित्र नही रहा तो प्रकाश कैसे मिलता?

सोचो और समझो -- प्यार के पथ पर चलना नही आया तो श्रद्धा के गीत कैसे गाते। क्योंकि श्रद्धा प्यार की उपज है। जो प्यार नही कर सकता वह श्रद्धा के भाव नही पढ़ सकता। श्रद्धा विहीन नर आपस में लड़ सकता है, संहार कर सकता है पर निर्माण कभी उसके पास नही फटक सकता।

"श्रद्धा" यज्ञ में नही, श्रद्धा प्रिय में नही, प्रभु में नही, जीवन में नही तो परिणाम यही तो होगा जो हो रहा है।

लोग कहते हैं कि ये नेता पदों के लिए क्रूर पशुओं की तरह लड़ते हैं- ये कैसे आर्य है? हमारी दृष्टि में दोष इनका नही, इनके संस्कारों का है। इन्होंने सीखा है लड़ना, प्यार नही सीखा। झूठ बोलना, धोखा देना, पदों के लिए मुकदमें लड़ना- यदि यही काम हैं, धर्म है तो फिर पाप क्या होगा। अपराध क्या होगा? हम चाहते हैं, एक बार फिर प्यार की गंगा बहानी, और श्रद्धा के गीत समवेत स्वर में गाने।

हे दोस्तो क्या आपने कभी भी गौर से परम पिता परमेश्वर श्री{ओम्} को पुकारा है हम उन्हें भी प्यार करते हैं और आदर देते हैं जो हमें गालियां देते हैं और हमें मिटाना चाहते हैं। हमारा कोई शत्रु नही, हमें सबसे प्यार है। इसलिए आओ द्वेष जला दो। अपने मन में प्यार उत्पन्न करो, श्रद्धा का अमृत बरसेगा और दिव्य अमरता तुम्हारी चरण वन्दना करेगी। □

पृष्ठ ५ का शेष.....

देवी समान पत्नी को क्यों घर से प्रताड़ित कर निकाल दिया। यही वेदना रूपी घुन उसके शरीर को कुरेद-कुरेद कर खा गया। गीता का ही निम्न श्लोक काम-क्रोध से ऊपर उठने की प्रेरणा दे रहा है:-

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामःक्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत।।
- गी0 16/21

काम, क्रोध और लोभ ये तीन आत्मा को नष्ट करने वाले नरक के द्वार हैं, इनको त्याग देना चाहिए। ये तीन कोणों वाला दरवाजा इतना भव्य व आकर्षक है कि मनुष्य न चाहता हुआ भी इनकी ओर दौड़ता जाता है और इसमें फंस जाता है। फंस जाने पर छटपटाता है, आत्मग्लानि होती है और उसमें से निकलना चाहता है। जिस प्रकार पंक में फंसा हुआ हाथी जितनी ही कोशिश उसमें से निकलने की करता है, उतना ही फंस जाता है, उसी तरह मूढ़ मनुष्य सांसारिक प्रलोभनों में फंस कर स्वयं का नाश कर लेता है।

अपने कर्तव्य कर्मों को धर्म पूर्वक करता हुआ, प्रभु की अर्चना करता हुआ मनुष्य जब प्रभु से साक्षात्कार करता है, तब इसकी शक्तियों का विकास होता है। कुटिलताओं से ऊपर उठा हुआ व्यक्ति सुन्दर जीवन वाला होता है "विश्वानि दुरितानि परासुव हे प्रभो। मेरे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कर दीजिए। "युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः" मन्त्र में प्रार्थना है कि प्रभो। कुटिलता व पापमय कर्मों को हम से दूर कर दीजिए। वेद में स्थान-स्थान पर दुर्गुणों को त्यागने का संकेत मिलता है। जब बुराईयों को, कुटिलता को हम अपने हृदय से निकाल देते हैं, तभी मन में सुन्दर सात्विक विचारों का प्रादुर्भाव होता है तथा मन शान्त व प्रसन्न रहता है। कुटिलता मृत्यु का मार्ग है व सरलता ईश प्राप्ति का मार्ग है। प्रभु की उपासना करने से हमारा जीवन उत्तम बनता है व हम यशस्वी होते हैं। महानदेव-शिल्पी जो परमात्मा है, जिसने सूर्य-चन्द्र, नक्षत्र, लोक-लोकान्तर, ग्रह- उपग्रह बनाये हैं उस महान् प्रभु से हमारे शत्रु काम-क्रोध, दोनों ही भयभीत हो जाते हैं। जब उस परमपिता परमात्मा का आश्रय लेते हैं और उसके ज्ञान का प्रकाश हमारी हृदय रूपी गुफा में हो जाता है तब काम-क्रोध उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार सूर्य के उदय होने पर अन्धकार का विनाश हो जाता है। काम जो अब तक विषय-भोगों के प्रति आसक्त था अब शुद्ध व पवित्र होकर उस प्रभु की ओर झुकता है, और उस कामना के द्वारा हम परलोक-नायक प्रभु को प्राप्त करना चाहते हैं। उसके लिए हम प्रीति-पूर्वक उसका मनन व ध्यान करते हैं। प्रभु प्राप्ति का मार्ग सबके लिए समान रूप से खुला है, कोई भी पुकार ले उसको; वह तो सबकी सुनता है, तब वहाँ प्रतिरोध का प्रश्न ही कहाँ रह जाता है? जब हमारा पारस्परिक संघर्ष ही नही होगा तब कामनापूर्ति के अभाव में क्रोध आने का प्रश्न ही पैदा नही होता है। परमात्मा की शरण में जाने पर सभी प्रकार की विषय-वासनाओं से उदासीन हुआ व्यक्ति उन पर विजय प्राप्त करके श्रेय मार्ग का पथिक बन जाता है। आओ हम उस परमपिता को नमन करते हुए उसकी शरण में जाने का संकल्प लें तथा पाप वृत्तियों के प्रकट होते ही उन्हें समूल नष्ट करने में समर्थ हों। □

शोक समाचार

आगरा मे आर्यसमाज मन्दिर ताजगंज, में आज दि0- 11·11·90 दिन रविवार प्रातः यज्ञोपरांत एक शोक आयोजित की गई जिसमें अयोध्या में रामजन्म स्थल पर हुए भीषण हत्याकांड तथा देश के विभिन्न भागों में लोगों की मृत्यु पर गहरा शोक एवं दुख प्रकट किया गया। तथा दिवंगत आत्माओं की सद्गति तथा शोक संतप्त परिवारीजनों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

हिन्दुओं के साथ विश्वासघात

1- 1945 के चुनाव में वीर-सावरकर ने कहा था कि कांग्रेस को मत (वोट) देना पाकिस्तान को मत (वोट) देना है। उस समय गाँधी जी ने सावरकर जी के इस कथन के प्रभाव को कम करने के लिए कहा था कि पाकिस्तान का निर्माण मेरी लाश के ऊपर ही हो सकता है। गाँधी जी ने भारत की राष्ट्रवादी जनता को आश्वस्त किया था कि पाकिस्तान के निर्माण जैसी बेहूदा माग को कभी नहीं मानेंगे परन्तु गाँधी जी के जीवनकाल में ही पाकिस्तान का निर्माण कर भारत को भारत और पाकिस्तान के रूप में विभाजित कर दिया गया। इस तरह स्वतन्त्रता के प्रारम्भ में ही राष्ट्रवादी जनता (हिन्दू जनता) तथा भारत माता के साथ विश्वासघात किया गया।

2- आजादी के बाद घोषित भारतीय संविधान में कहा गया कि भारत में किसी धर्म विशेष के अनुसार कानून नहीं बनाया जायेगा परन्तु अल्पसंख्यकों के लिये अल्पसंख्यक आयोग इत्यादि की स्थापना करके उन्हें धार्मिक आधार पर विशेष सुविधायें दी गई यह राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) और भारतमाता के साथ दूसरा विश्वासघात था।

3- 1965 में तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की दूरदर्शिता तथा हमारे जवानों के अद्वितीय पराक्रम के कारण भारत को पाकिस्तान के साथ युद्ध में विजय मिली इस कारण भारत 1962 के भारत-चीन युद्ध की हार की कालिमा को धोने में काफी हद तक सफल हुआ। उस समय महाशक्तियों के दबाव में ताशकन्द में भारत पाकिस्तान के बीच वार्ता रखी गई। ताशकन्द प्रस्थान करते समय शास्त्री जी (तत्कालीन प्रधानमन्त्री) ने कहा था कि वे (शास्त्री जी) किसी भी कीमत पर जीती हुई जमीन का एक इन्च भी वापस नहीं करेंगे परन्तु ताशकन्द समझौते में भारतीय सेनाओं द्वारा जीती गई सारी जमीन (भू-भाग) पाकिस्तान को वापस कर दिया गया। इस तरह हजारों बलिदानों को व्यर्थ करके राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु-जनता) तथा भारत माता के साथ तीसरा विश्वासघात किया गया।

4- जिस शेख अब्दुल्ला को नेहरू जी द्वारा श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी जो के बलिदान होने पर राष्ट्रवादियों के व्यापक विरोध को ध्यान में रखकर जेल में डाला गया था, इन्दिराजी ने उसे कश्मीर का मुख्य मन्त्री बनाया तथा कश्मीर को राष्ट्रीय ध्वज फहराने या राष्ट्रीय गीत की अनिवार्यता से मुक्त किया तथा कश्मीर को विशेष दर्जा देकर प्रोत्साहित किया जो कि इस्लाम के अतिरिक्त किसी बात को सुनने को तैयार नहीं था। इस तरह भारत माता तथा राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) के साथ चौथा विश्वासघात किया गया।

5- 1977 के आम चुनाव में राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) ने भारी मत से जनता पार्टी को विजय दिलाई जिसके प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई बने। उन्होंने भी सत्ता में आकर अपने पूर्ववर्ती नेताओं की भाँति तुष्टीकरण की नीति को पल्लवित पुष्पित किया। इस तरह भारत माता तथा राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) के साथ यह पाचवा विश्वासघात था।

6- उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने उत्तर प्रदेश में उर्दू लगाने का अध्यादेश दिया जो कि राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) के साथ बहुत बडा विश्वासघात था।

7- नव 1984 के आम चुनाव में राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) ने अपने युवा प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी को अप्रत्याशित रूप से विशाल बहुमत से विजयी बनाया तो उन्होंने राष्ट्रवादी जनता की आकांक्षाओं तथा आशाओं पर तुषारापात करते हुए पृथकतावाद और राष्ट्रद्रोही गतिविधियों को और प्रोत्साहन (हवा) दिया। इसका ज्वलन्त उदाहरण मिजोरम को ईसाई राज्य के रूप में विशेष सुविधायें प्रदान करना है, तथा नई शिक्षा नीति के नाम पर भारतीयता की प्राण संस्कृत को निकाल फेंका गया। इस तरह राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) तथा भारत माता के साथ सातवीं बार विश्वासघात किया गया।

8- इन दीर्घकाल से चले आ रहे विश्वासघातों से आहत राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) ने जनता दल के तथाकथित ईमानदारी और राष्ट्रभक्ति की दुहाई देने वाले विश्वनाथ प्रतापसिंह को प्रधानमन्त्री पद तक पहुँचाया परन्तु इन्होंने भी राष्ट्र विरोधी शक्तियों को उभारा तथा धर्म निरपेक्षता की ओट में पृथकतावादी तत्वों की कठपुतली बनकर मोहम्मद साहब के जन्म दिन पर सार्वजनिक अवकाश की घोषणा की तथा ओ०डायर को मात करने वाली हत्या का नग्न ताडव अयोध्या में कार सेवकों पर अंधाधुंध गोली चलवाकर किया। इन्होंने बहुमत सिद्ध करने के झूठे आश्वासन से पन्द्रह दिन तक और सत्ता का रसास्वादन किया (चिपके रहे), यह चरित्र की दुहाई देने वाले नेता द्वारा भारत माता तथा राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) के साथ अद्भुत विश्वासघात था।

9- भारत के आठवें प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने अपने समाजवादी, तथ्यहीन रागों को अलापते हुए कहा कि अल्पसंख्यकों के हितों की पूर्ण रक्षा की जायेगी और सरकार इसमें किसी प्रकार की ढिलाई नहीं बरतेगी। प्रश्न यह है कि अल्पसंख्यकों के हितों को आघात कहा लग रहा है? बहुसंख्यकों के हितों की उपेक्षा कर उनकी विभिन्न प्रकार से प्रताडित एव अपमानित करना ही क्या धर्म निरपेक्षता की सही परिभाषा है? इस प्रकार इस आठवें धर्म निरपेक्षतावादी नेता ने राष्ट्रवादी जनता (हिन्दु जनता) को एक और विश्वासघात की पीडा पहुँचाई है। इस प्रकार इन कुछ वर्षों के ही विश्वासघातों के विवरण से पता लगता है कि यह नेता निश्चय ही भारत, भारतीयता, भारतीय संस्कृति के आन्तरिक घोर विरोधी रहे हैं।

अब राष्ट्रवादियों तथा राष्ट्रभक्त हिन्दुओं का यह पावन कर्तव्य है कि इनके विश्वासघात के कुचक्र से बचकर राष्ट्र के हित में सगठित होकर इनका सामना करें और भारत माता तथा उसकी संस्कृति की रक्षा करें।

इन्द्रराज	जयन्त कुमार आर्य
सरक्षक	महामन्त्री
राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0	राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन, उ0प्र0

भजनोपदेशक प्रतियोगिता

15- दिसम्बर लखनऊ,

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 में कार्यरत- भजनोपदेशकों की प्रतियोगिता आर्य उपप्रतिनिधि सभा हरिद्वार की प्रधाना श्रीमती सतोष रगन की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई, प्रदेशभर से आये हुए भजनोपदेशकों ने आर्यसमाज और ऋषिदयानन्द जी महाराज के सम्बन्ध में चुने हुए भजनो को सगीतमय शैली में प्रभावी माध्यम से प्रस्तुत कर जनमानस को भाव-विभोर कर दिया निर्णायकों ने निम्नलिखित भजनोपदेशकों को सर्वसम्मति से विजेता घोषित किया

प्रथम -श्री योगेशदत्त जी आर्य,
निवासी- जनपद बिजनौर
द्वितीय-श्री मनवीर सिंह जी आर्य
निवासी- मेरठ
तृतीय- श्री विक्रमदेव जी आर्य,
निवासी- जनपद बिजनौर

उपरोक्त सभी विजेताओं को आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के माननीय सभा प्रधान ने शालों एव नकद धनराशि से सम्मानित किया।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के भूतपूर्व प्रधान श्री विक्रम सिंह जी आर्य सम्भल निवासी ने प्रथम एव द्वितीय विजेताओं को शाल भेंट किए।

-हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेशक विभाग

आर्य जनता सावधान

उत्तर प्रदेश को समस्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों आर्यकुमार सभाओं, आर्यवीरदल, आर्य महिला समाजों एव आर्य शिक्षणसस्थाओं के समस्त अधिकारीगण एव समस्त आर्यजनता को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने सर्वश्री कैलाशनाथ सिंह वाराणसी, राजपाल आर्य मुजफ्फरनगर, धर्मेन्द्र सिंह आर्य देहरादून, चन्द्रकिरणशर्मा गाजियाबाद, खेम सिंह आर्य लखनऊ तथा रमा शकर आर्य केराकत को आ0स0 की सदस्यता से निष्कासित कर दिया है। यह निष्कासित व्यक्ति सभा विरोधी भ्रामक प्रचार समय-समय पर करते रहते हैं- उससे आर्य जनता भ्रमित न हो और न ही उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक सहायता व सहयोग दें। अपने उत्सवों आदि में भी उन्हें आमन्त्रित न करें। विशेष जानकारी सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त की जा सकती है।

- कार्यालय सचिव

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की उपलब्धियां

— श्री आर्येन्दु द्विवेदी ज्ञानपुर (वाराणसी)

आर्यसमाज के आन्दोलनों में हैदराबाद सत्याग्रह को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। हैदराबाद में इस सत्याग्रह में अनेक लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी तथा आर्यसमाज के कुशल नेताओं के नेतृत्व में यह आन्दोलन सफल रहा। जिस प्रकार हृदय शुद्ध रक्त को सम्पूर्ण शरीर में पहुँचाकर उसे शक्तिशाली बनाता है, उसी प्रकार हैदराबाद के सत्याग्रह आन्दोलन ने आर्यसमाज में नवीन चेतना और नूतन प्राणों का संचार किया। इस समय इस आन्दोलन की आवश्यकता थी। इस आन्दोलन ने केवल दक्षिण भारत ही नहीं, अपितु उत्तर भारत में भी आर्यसमाज के आन्दोलन को नयी स्फूर्ति और प्रेरणा मिली। आर्यसमाज की दृष्टि में हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह का असाधारण महत्व है।

सत्याग्रह के कारण- हैदराबाद की अधिकांश जनसंख्या हिन्दू थी, मात्र 10 प्रतिशत मुसलमान थे। हैदराबाद के निजाम को सर्वोच्च कहा जाता था मुस्लिम शासक का यह प्रयास था कि बहुसंख्यक हिन्दूओं पर कठोर प्रतिबन्ध और पाबन्दियों द्वारा उन्हें अपने धर्म को त्यागकर मुसलमान बनने के लिए विवश किया गया। हैदराबाद राज्य में 1920 तथा 1930 में राजनैतिक आन्दोलन को समाप्त करने के उद्देश्य से 2 फरमॉन निकाले गये थे। जिलाधिकारियों को यह निर्देश दिया गया था कि राजनैतिक आन्दोलन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए जलूसों, सभाओं को न होने दें। स्कूल, दलों धार्मिक सभाओं को तथा राजनैतिक सभाओं पर कड़ी निगरानी रखें। राज्य में राजनैतिक संस्थाओं के साथ-साथ धार्मिक संस्थाओं पर भी कड़े प्रतिबन्ध लगा दिए गए थे। निजाम ने हिन्दूओं पर अनेक कठोर प्रतिबन्ध लगा रखे थे। आर्यसमाज तथा मन्दिरों के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा हैदराबाद राज्य में धार्मिक विषयों की देखभाल करने और इस्लाम को प्रोत्साहित करने के लिए एक पृथक धर्म विभाग "महकमा आमूर मजस्वी" नाम से स्थापित की गयी। सरकार का स्पष्ट निर्देश था कि नये मन्दिरों का निर्माण और पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार करने के लिए "महकमा आमूर मजहबी" से अनुमति लेना आवश्यक था। मन्दिर के मीनार की ऊँचाई मस्जिद की मीनार से अधिक नहीं हो सकती थी। यदि कोई मन्दिर की मरम्मत बिना धर्म विभाग की अनुमति से कराता था वह गैर कानूनी होता था तथा गिरा दिया जाता था। यह धर्म विभाग मन्दिरों के निर्माण मरम्मत की अनुमति नहीं दे रहा था।

"हैदराबाद शिया" राज्य है। वहीं इस संप्रदाय से संबंध मुहर्रम का त्यौहार निष्ठा से मनाया जाता है। शिया लोग अपने पहले खलीफा हजरत अली और उनके साथियों के लिए शोक मनाते हैं। हैदराबाद शासन ने यह आदेश दिया कि मुहर्रम के मास में प्रसन्नता का प्रतीक हिन्दू विवाहों का आयोजन न किया जाय। इसके अतिरिक्त व्यायाम शालाओं, अखाड़ों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। अखाड़ों पर प्रतिबन्ध इसलिए लगाया गया था कि हिन्दू आत्मरक्षा में समर्थ न हो पाएं।

निजाम सरकार का प्रतिबन्ध इतना कड़ा था कि किसी सरकारी अधिकारी द्वारा आज्ञा दी जाती थी तो बाद में उसे वापस ले लिया जाता था। उस समय धार्मिक कार्यों के निमंत्रण के लिए एक विशेष कानून बनाया गया। इसके अनुसार सभी धार्मिक नये एवं पुराने जलूसों के लिए तहसीलदार से 15 दिन तक भी आज्ञा न मिली तो धार्मिक कृत्य को रोक देना पड़ता था। आर्यसमाज के सत्संगों तथा घर में धार्मिक भाषणों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। हैदराबाद राज्य में 400 से भी अधिक निजी स्कूल चल रहे थे। मुस्लिम शासकों को यह आशंका थी कि इसके माध्यम से हिन्दू धर्म का प्रचार व पोषण किया जाता है। इसे बन्द करने के लिए शासकों ने इस प्रकार के नियम बनायें कि निजी स्कूल पूर्ण रूप से बन्द हो जाएं। इसके अतिरिक्त निजाम ने धर्म की ध्वजा जिस पर "ओ३म्" आदि अंकित होता था उन झण्डों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। "ओ३म्" आदि झण्डे जहां लगे थे, वह उतरवा दिए गए तथा हैदराबाद रियासत के अधिकारियों को निर्देश था कि भगवान् के नाम को व्यक्त करने वाला कोई भी झण्डा नहीं लगाया जा सकता।

इन सब प्रतिबन्धों के परिणामस्वरूप निजाम राज्य में हिन्दूओं पर अत्याचार की घटनाएं बढ़ने लगीं। धर्मान्ध मुसलमान आर्यसमाजी हिन्दुओं पर घातक हमले करने लगे। पुलिस की सह प्राप्त होने के कारण इनकी हिम्मत बढ़ती चली गयी तथा ग्रामीण क्षेत्रो में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गयी। हिन्दुओं को बलपूर्वक इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाधित किया जा रहा था। चारों ओर आतंक का राज्य था हिन्दूओं पर आक्रमण, लूटपाट, रक्तपात हत्या की घटनाएं आम हो गयी थीं।

इन प्रतिबन्धों को हटाने और धार्मिक स्वतन्त्रता के मौलिक अधिकार को प्राप्त करने के लिए हैदराबाद में आर्यसमाजने आन्दोलन प्रारम्भ किया।

सत्याग्रह की आवश्यकता-

आर्यसमाज ने अपना प्रचार कार्य व्यवस्थित औंर संगठित रूप में सन् 1931 से 1939 तक किया। आर्यसमाज की बढ़ती हुई शक्ति को कुचलने के लिए हैदराबाद की निजाम ने आर्यसमाज की गतिविधियों और प्रचार पर अनेक प्रतिबन्ध और पाबन्दियां लगा दीं। आर्यसमाज ने इसके विरुद्ध पहले वैध से आन्दोलन किया। सफलता न प्राप्त होने पर विवश होकर सत्याग्रह का मार्ग अपनाना पड़ा।

आर्य महा सम्मेलन शोलापुर में दिसम्बर 1938 में सम्पन्न हुआ। जिसमें 4,5 प्रस्ताव पारित किए गए। सत्याग्रह की उपयोगिता को अनिवार्य मानते हुए अपने धार्मिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह शुरु करने की घोषणा की गयी और असंदिग्ध शब्दों में यह स्पष्ट कर दी गयी कि इस सत्याग्रह का उद्देश्य न तो निजाम सरकार को समाप्त करना है, न ही उनका हैदराबाद है। और न ही सत्य, अहिंसा के पवित्र सिद्धान्तों को तोड़ना है। किन्तु केवल उसका यही उद्देश्य है कि निजाम सरकार ने धार्मिक स्वतन्त्रता में जो बाधाएं डाली हैं और प्रतिबन्ध लगाए हैं उसे हटा दिया जाय। जनवरी सन 1939 में आर्यसमाज ने हैदराबाद में धार्मिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह संग्राम शुरु किया था। आर्यसमाज को विवश होकर आत्मरक्षा और वैदिक धर्म के प्रचार पर हैदराबाद की मुस्लिम सरकार द्वारा लगायी गयी अनेकपाबन्दियों और प्रतिबन्धों के निवारण के लिए एवं मुसलमानों द्वारा किए जाने वाले प्रचार और प्रसार को रोकने के लिए सत्याग्रह करना आवश्यक हो गया था।

सत्याग्रह का प्रारम्भ- जब कि महात्मा-नारायण स्वामी जी को सत्याग्रह के नेतृत्व के लिए कहा गया तो उन्होंने एक शर्त रखी थी कि यदि स्वामी स्वतन्त्रता नन्द जी कैम्प का काम सम्भाल लेंगे तो मैं आन्दोलन का नेतृत्व कर सकूँगा। जब श्री स्वामी-स्वतन्त्रता नन्द जीसे प्रार्थना की गयी तो उन्होंने कैंम्प मैनेजर का कार्य सहर्ष स्वीकार कर लिया। शोलापुर में सभी सत्याग्रहियों की व्यवस्था करना तथा आने व जेल जाने वाले सत्याग्रहियों की व्यवस्था का कार्य उन्होंने सम्भाला।

4 फरवरी सन 1939 को महात्मा नारायण स्वामी जी अपने साथियों के साथ भजन गाते हुए गुलवर्गा स्टेशन से हाथों में ओम् का झण्डा लेकर बाहर निकले और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 7 फरवरी 39 को सभी सत्याग्रहियों को एक वर्ष का कठोर दण्ड दिया गया।

इसके पश्चात् श्री खुशहाल चन्द जी के नेतृत्व में 200 सत्याग्रहियों ने 22 मार्च 1939 को गिरफ्तारी दी। श्री धुरेन्द्र शास्त्री, डा0 कपिलदेव शास्त्री, श्री महाशय कृष्ण, श्री ज्ञानेन्द्र सिद्धान्त भूषण, श्री विनायक राव वेदालंकार ने उनके साथ गिरफ्तारी दी। इस सत्याग्रह में सम्पूर्ण भारत के लोगों ने गिरफ्तारी दी।

हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध की सफलता का बहुत बड़ा कारण विभिन्न प्रान्तों की आर्य जनता का पूरा सहयोग देना था। भारत के सभी प्रान्तों से सत्याग्रही भेजे गये। विभिन्न सत्याग्रहियों की गिरफ्तारी के संबंध में हमें आर्यसमाज के इतिहास डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार से निम्नलिखित आंकड़े प्राप्त होते हैं-

राज्य	सत्याग्रहियों की संख्या
पंजाब, सीमा प्रान्त कश्मीर दिल्ली	3,157
निजाम राज्य	3,249
संयुक्त प्रान्त	2085
राजस्थान मालवा	447
बिहार	311
बंगाल	202
मध्य प्रान्त बरार	575
बम्बई	241
सिन्ध	194
मद्रास	66
बर्मा	15
असम	27
सत्याग्रही गिरफ्तारी की कुल सं0-	10,569

—शेष पृष्ठ ९ पर

ज़रा सोचें

बलराज मधोक ने कहा

लखनऊ, 11 दिसम्बर। भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बलराज मधोक ने हैदराबाद, अलीगढ़, कानपुर, बिजनौर इत्यादि स्थानों के दंगों का विश्लेषण करने के बाद कुछ तथ्य सामने पेश किए हैं, जिन पर जनता और सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

वे हैं-(1) दंगे वहीं होते हैं जहां मुसलमानों की "पाकेट्स" हैं या बहुमत है।
(2) हर दंगों को मुसलमान शुरू करते हैं। (3) दंगे साधारणतया शुक्रवार की सामूहिक नमाज के बाद शुरू होते हैं। (4) मस्जिदों की दंगों में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। नमाजी मस्जिदों से निकल कर दंगा शुरू करते हैं। मस्जिदों के अन्दर हथियार इकट्ठा किए जाते हैं और मस्जिदों के अन्दर से भी गोलियां तथा पत्थर बरसाए जाते हैं। (5) दंगों का पहला काम-मुजाहिदों द्वारा छुरेबाजी से इक्के-दुक्के बेखबर काफिरों को मारना होता है। (6) उनका दूसरा निशान पुलिस होती है। उद्देश्य होता है, हिन्दुओं में आतंक पैदा करना और पुलिस का मनोबल तोड़ना। (7) विशेषरूप से उत्तर प्रदेश में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय इन दंगों और दंगाइयों का गढ़ और प्रेरणास्रोत रहा है। हर दंगे में इस विश्वविद्यालय और इसके छात्रों की विशेष भूमिका रहती है। (8) इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण और खतरनाक भूमिका मस्जिदों के इमामों की रहती है जो कुरान के नाम पर मुसलमानों को हिंसा करने और काफिरों को मारने के लिए भड़काते हैं। दुःख की बात है कि बहुत कम लोग इस बात को जानते हैं कि कुरान में अनेक ऐसी आयते हैं जो मुसलमानों को स्पष्टरूप में आदेश देती है कि इमान न लाने वालों (काफिरों, गैरमुस्लिमों) को मारें। ◘

समय का आह्वान

• लाखन सिंह भदौरिया

समय तुमको जगाता है।
नयी गीता सुनाता है।
उठाता क्रान्ति की लपटें-
नया तूफान आता है।

पड़ा जो राह में सोता-
चरण की धूल बन जाता।
उसे आँधी उड़ा देती-
नहीं कोई बचाता है।

घरौंदे टूटने वाले,
बबूले फूटने वाले,
खड़े विस्फोट के मुखपर-
नहीं क्यों होश आता है?

सम्भलने की घड़ी आयी,
बदलने की घड़ी आयी,
जवानी जब उबलती है-
जमाना रंग लाता है।

विलासों में न खो जाओ।
समय के साथ हो जाओ
जहां दम तोड़ती साँसें -
अनय डंका बजाता है।
समय तुमको जगाता है।

पृष्ठ ८ का शेष.....

इस सत्याग्रह में दस हजार से भी अधिक लोगों ने अपनी गिरफ्तारी देकर इस आन्दोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सभी सत्याग्रहियों ने जेलों में कठोर यातनाएं सहन कीं। हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध की सफलता का बहुत बड़ा श्रेय उन व्यक्तियों को है जिन्होंने इस सत्याग्रह संग्राम में निजाम सरकार जेलों में भीषण अत्याचार सहते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया। इस हुतात्माओं के पवित्र रक्त से सिंचित होकर हैदराबाद राज्य में वैदिक धर्म का उद्यान पुष्पित एवं पल्लवित हुआ। कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति इस सत्याग्रह में शहीद हुए वे हैं- श्री परमानन्द, श्री विष्णु भगवान ताड़ूरकर, श्री सुनहरा सिंह, श्री स्वामी कल्याणानन्द जी, श्री माधवराय सदाशिव राव, श्री ताराचन्द्र, श्री अशर्फी लाल, श्री पुरुषोत्तम ज्ञानी, श्री सदाशिव राव, श्री दयानन्द, श्री बदन सिंह, श्री मलखान सिंह आदि। इन सत्याग्रहियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर इस आन्दोलन को सफल बनाया।

सत्याग्रह की समाप्ति- निजाम सरकार ने आर्यसमाज की मांगे मान लीं। सार्वजनिक व धार्मिक सभाओं के लिए अधिक उदार नियम होंगे। जो धार्मिक कृत्य या सभाएँ निजी मकान में उसके लिए कोई सूचना देना आवश्यक नहीं होगा। इस समझौते के बाद 17 अगस्त 1939 को निजाम के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रकाशित एक विशेष फरमान द्वारा सत्याग्रह के सभी बन्दियों को मुक्त करने की आज्ञा प्रसारित की। इस प्रकार सत्याग्रह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस आन्दोलन के कुशल नेतृत्व का श्रेय महात्मा नारायण स्वामी जी को प्राप्त है, वहां सफल संचालन का श्रेय श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी को है। श्री स्वामी स्वतन्त्रता नन्द जी का कार्यक्षेत्र हरियाणा था। अतः सत्याग्रहियों में पंजाब व हरियाणा में उनके भक्त बहुत संख्या में सत्याग्रह में गिरफ्तार हुए।

उपलब्धियां

1- सत्याग्रह की सबसे बड़ी उपलब्धियां यह रहीं कि निजाम सरकार जिस प्रकार हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र रच रही थी, उसका सारा षडयन्त्र विफल रहा। निजाम के अत्याचार की समाप्त हुई और हैदरबाद में हिन्दूओं में अभूतपूर्व जागृति हुई।

2- निजाम ने मन्दिरों के निर्माण जीर्णोद्धार सभा, जलूस यज्ञ, हवन आदि पर जो प्रतिबन्ध लगाए थे वे सर्वदा के लिए समाप्त हो गए।

3- इस सत्याग्रह से आर्यसमाज जो शिथिलता की ओर अग्रसर हो रहा था उसमें नई जागृति और उत्साह उत्पन्न हुआ।

4- इस सत्याग्रह की महान उपलब्धि थी कि आर्यसमाजों में विभिन्न कारणों से जो अलग अलग पार्टियां हो गयी थीं उन्होंने एक होकर आर्यत्व का परिचय दिया। उदाहरण रूप में पंजाब में कालेज पार्टी व गुरुकुल पार्टी दो बड़े दलों में विभक्त थीं। कालेज पार्टी का नेतृत्व उस समय श्री खुशहाल चन्द जी कर रहे थे, जबकि गुरुकुल पार्टी का नेतृत्व श्री महाशय कृष्ण। दोनों ही इस आर्य सत्याग्रह में अधिनायक रहे तथा एकत्व का परिचय दिया।

5- संसार को यह विदित था कि सत्याग्रह जैसा कार्य सफलतापूर्वक महात्मा गाँधी ही कर सकते हैं। "महात्मा नारायण-स्वामी जी ने इस सत्याग्रह का सफलतापूर्वक नेतृत्व करके यह सिद्ध कर दिया कि आर्यसमाज भी सत्याग्रह आन्दोलन सफलतापूर्वक कर सकता है। इस सत्याग्रह की विशेषता यह रही है कि कहीं पर किसी भी विषम परिस्थिति में उन्होंने बदले की भावना से कोई आक्रामक या विद्रोहात्मक कार्य नहीं किया।

6- इस सत्याग्रह की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी कि किसी विशेष प्रान्त ने ही इसको सहयोग नहीं दिया अपितु भारत के प्रत्येक प्रान्त ने अपना सहयोग दिया।

7- इस सत्याग्रह से अत्याचार के विरुद्ध पूरे हिन्दू समाज की चेतना जागृत हुई और भारत के प्रत्येक कोने से हिन्दूओं ने तन-मन व धन से इस सत्याग्रह में सहयोग दिया। यह सत्याग्रह आर्य एवं हिन्दू जनता के एकत्व का प्रतीक था।

8- एक विचित्र उपलब्धि यह भी थी कि कुछ मुस्लिम परस्त या हिन्दू विरोधी या तटस्थ समाचार पत्रों ने जान बूझकर हैदराबाद सत्याग्रह का समाचार देने से मुँह मोड़ते थे। उन समाचार पत्रों की जनता ने ऐसी दुर्गति की थी कि वे आजीवन इस सत्याग्रह को नहीं भूला सकेंगे।

9- आर्य जनता ने ऐसे समाचार पत्रों की सूची तैयार की और बड़े-बड़े चौराहों में इनकी प्रतियां जलायी गईं। जिससे वे निष्पक्ष समाचार देने लगें।

चाकरी की चाह में जलती चिताएं।

• सन्तोष "कण्व"

मण्डल का बण्डल खुला तो बवण्डर मच गया। कहीं आक्रोश है। कहीं प्रतिशोध है। आत्म हत्याओं और आत्मदाहों का दौर है। समाज दो फाड़ हो रहा है। एक दीवार उठ रही है, भाई और भाई के बीच में। सन्देह है। संकोच है। सन्त्रास है।

मनु को "समाज तोड़क" की उपाधि देने वाले ही आज समाज को तोड़ रहे हैं, क्या विडम्बना है। तेवर जोड़ने के हैं- काम तोड़ने के हैं।

बिखराव तो समाज में पहले से ही कम नहीं है। आज इस बिखराव को टकराव में बदल कर राष्ट्र को भटकाव के मार्ग पर डाला जा रहा है। युगों पूर्व विलुप्त हो चुकी वर्णाश्रम व्यवस्था को कोसने व मनु आदि ऋषियों को गालियां बकने वाले ये आधुनिक मनु समाज में जिस व्यवस्था के निर्माण का दुस्साहस कर रहे हैं, उसका आदि देखकर ही अन्त का आभास हो जाता है। "मनु स्मृति" को फूंकने का दम्भ भरने वाले आज जिस स्मृति का सृजन कर रहे हैं, उससे उनके दुर्विवेक, दुर्भाव और दुर्नीति का ही पता चलता है।

इससे भी बड़ी विडम्बना यह है कि देश की तरुणाई दो टके की नौकरी के लिए सूली चढ़ रही है। जिस देश का लोक कवि भीख तक को चाकरी से श्रेष्ठ बताता हो, उस देश का मात्र लक्ष्य मान बैठा है। अब कहीं न कहीं तो गड़बड़ है ही। या तो "निखद चाकरी भीख निदान" का सन्देश उस तक पहुँचा नहीं या फिर शिक्षा का वास्तविक उददेश्य ही कहीं विलुप्त हो चुका है। जीवन का ध्येय ही जब "नौकरी" बन जाए तो चिन्ता स्वाभाविक है। हमारी व्यवस्था में कहीं दोष है। उसका परिहार करना ही पड़ेगा, आज नहीं तो कल।

एक सहस्र वर्ष की पराधीनता के पश्चात भी हमने समाज निर्माण की ओर ध्यान नहीं दिया। यह गुरुतर कार्य तो आर्यसमाज ने अपने हाथ में लिया था। हमने प्रारम्भ भी किया, परन्तु किन्हीं कारणों से अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी। आज मनुस्मृति के जिन अंशों का विरोध कर लोग प्रगतिशीलता का दम्भ भर रहे हैं, उनका खण्डन तो आर्यसमाज कभी का कर चुका है। जन्मना वर्ण व्यवस्था की मान्यता की हमने धज्जियां उड़ाकर रख दी हैं। इसके तथाकथित फोड़ चुके हैं। उन मनगढ़न्त शास्त्रों की दुहाई देकर आज कोई भी जातीय भेदभाव की औचित्यता को पुष्ट करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। हमने शास्त्रार्थों से शास्त्रों का शोधन किया है। प्रेम पूर्वक किया है। पारस्परिक कटुता नहीं पैदा की है। शान्त चित्त से आपसी संवाद द्वारा सत्यासत्य का निर्णय किया है। लोगों को समझाया है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि सामाजिक समरसता की दिशा में एक लम्बी प्रक्रिया का यह प्रथम चरण आर्यसमाज ने सफलता पूर्वक पूरा किया है। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि जो कूड़ा-कचरा निकाल कर हम फेंक चुके थे, उसी को उठा कर लोग समाज में विषघोल रहे हैं। उन्हीं सड़ी गली मान्यताओं पर दिखावटी प्रहार कर अपने मिथ्या पाण्डित्य का ढिंढोरा पीटने वाले ये कुटिल जन एक ओर स्वयं को समाज सुधारक बनने का पाखण्ड रच रहे हैं, तो दूसरी ओर प्रचलित जातिगत आधार को परिपुष्ट कर इस जर्जरित व्यवस्था को बनाएं रखने के कुप्रयास भी कर रहे हैं। विडम्बना यह है कि ये प्रयास सरकार द्वारा हो रहे हैं। रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं। बाड़ खेत को खा रही है। आर्यसमाज के क्रान्तिकारी कार्यक्रम में रोड़े अटका कर सामाजिक एकता तो दिवा स्वप्न ही है।

हमने जन्माधारित जातीय भेदभाव के शास्त्रीय आधार को उखाड़ कर फेंक दिया है। जहाँ तक प्रश्न व्यवहार का है, तो उसमें भी शनैः-शनैः सफलता मिल रही है। हाँ, सफलता की गति धीमी अवश्य है, क्योंकि पुरानी परम्पराओं के टूटने में थोड़ा समय लगता है। अभी तो हमने विचार बदला है। आचार भी बदल रहा है।

"आरक्षण" के विषय में जातीय आधार पर सरकारी नौकरियों में आरक्षण की बात कही जाती है, कि आरक्षण का आधार जातीय नहीं, आर्थिक होना चाहिए। परन्तु यह दोनों ही अवधारणाएं घातक हैं। किसी व्यक्ति की किसी पद पर नियुक्ति का आधार उस पद से सम्बद्ध कर्तव्यों व अधिकारों के निर्वहन की उस व्यक्ति की योग्यता, क्षमता व स्वभाव पर निर्भर करता है। यहाँ कोई, साम्प्रदायिक, आर्थिक जातीय या वंशीय आधार नहीं चलेगा। यह तो सीधी-सादी सौदेबाजी है, नोट और वोट की सौदेबाजी। तुम हमें वोट दो- हम तुम्हें नोट देंगे। नोट अर्थात् नौकरी, नौकरी अर्थात् देश को लूटने की खुली अनुमति। थोड़ा स्पष्ट लिखने के लिए क्षमा करें, सरकारी नौकरियों को आज इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है। दिन-रात लूट-खसोट, काम रत्ती भर नहीं। हम शासन में बैठकर लूटें, तुम प्रशासन में बैठ कर लूटो। कौन देश चलाना है।

आर्यसमाज इस लूट-खसोट से अलग है। हमारी मान्यता स्पष्ट है। प्रश्न किसी की सामाजिक या आर्थिक स्थिति का नहीं है। प्रश्न तो उसकी योग्यता व क्षमता का है। उसके गुण-कर्म-स्वभाव का है। अनधिकारियों को अधिकार देना महाविनाश को आमन्त्रण देना है। क्योंकि-

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते
पूज्यानां च व्यतिक्रमः ।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति
दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।

यह नीतिकार का वचन है। यही तर्क संगत सिद्धान्त है। योग्यता व क्षमता विकसित करना किसी वर्ग विशेष की बपौती नहीं है। यह तो व्यक्ति की संकल्प शक्ति पर निर्भर करता है। इसी से आर्यसमाज की यह मान्यता है कि समस्त राष्ट्रवासियों को अपनी योग्यता व क्षमता के सम्पूर्ण विकास का समान अवसर मिलना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार का कैसा भी भेदभाव हमें मान्य नहीं है। चाहे कोई किसी परिवार में क्यों न जन्मा हो, उसकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति कैसी भी क्यों न हो, अपनी सर्वांगीण उन्नति व विकास के लिए उसको समान साधन व समान वातावरण मिलना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता तो यह अन्याय है, और इस अन्याय का प्रतिकार करना हमारा कर्तव्य है। मात्र प्रतिकार ही नहीं, प्रत्युत अन्याय को समाप्त कर न्याय की स्थापना करना।

आग लगाकर जलने वालों! विष खाकर के मरने वालों! देश के भावी कर्णधारों! क्या यह जीवन इसी लिए है? क्या तुम इतने कायर और निर्वीर्य हो चुके हो कि समस्याओं का सामना करने के स्थान पर आत्मदाह और आत्महत्या कर रहे हो। समय की चुनौतियों को स्वीकार करने का तुममें साहस नहीं रहा। सामाजिक व आर्थिक विषमता के विरुद्ध क्या तुम उठकर खड़े नहीं हो सकते? अविद्या, अन्याय और अभाव से नहीं लड़ सकते?

बोलो! जवाब दो! समय ने तुम्हारे यौवन को ललकारा है। कहीं ऐसा न हो कि आने वाला कल तुम्हारे पौरुष को धिक्कारे! भारतमाता अपनी निस्तेज सन्तान पर आँसू बहाए।

जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति केवल चाकरी से ही हो सकती है, यह भ्रम हमेशा के लिए निकाल दो। शिक्षित होकर नौकरी के याचक मत बनो। परमेश्वर की सृष्टि में अनन्त सम्भावनाएं हैं। अपनी शक्ति को पहचानो। सृष्टि-क्रम को समझो। जीवन के नए मार्ग खोजो। अपने चारों ओर देखो तो सही, करने को कितना कुछ पड़ा है। स्वाभिमानी बनो, भिक्षुक नहीं। रक्षक बनो, भक्षक नहीं। सृजक बनो, विध्वंसक नहीं। चाकरी पर दुर्बल जीते हैं। अरे! चाकरी, और वह भी शासन की। धिक्कार है, ऐसी चाह पर ।

कश्मीर विस्थापितों की सहायता

दिल्ली में कश्मीर के अनेक भाई बहनों को आतंकवादियों के अत्याचारों के कारण अपना घरबार छोड़कर आना पड़ा है। दिल्ली की आर्यसमाजों की ओर से उन्हें समय-समय पर बिस्तर, रजाई, कम्बल तथा खाद्य वस्तुओं की सहायता दी गयी है।

सोमवार 10 दिसम्बर 1990 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मंगोलपुरी और सुलतानपुरी के राहत शिविरों का निरीक्षण करने गए। श्रीस्वामी जी महाराज के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा0-धर्मपाल भी गए। वहां पर आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान श्री-हरवंशलाल शर्मा के सौजन्य से श्री-स्वामी आनन्द बोध सरस्वती को 125 कम्बल वितरित किए गए। श्री स्वामीजी ने कहा कि कश्मीर के भाई बहनों की समस्या से हम सभी का हृदय द्रवित है। हमने सरकार से भी निरन्तर आग्रह पूर्वक अनुरोध किया है कि इस समस्या का शीघ्र समाधान किया जाएगा ।

राम जन्म भूमि समस्या का समाधान

सोती वीरेन्द्र सिंह इलाहाबाद

राम जन्म भूमि का मसला बहुत सरल और साधारण है। लेकिन उसे धर्म निरपेक्षता के नाम पर गलत मोड़ देकर तूल दे दिया गया है।

धर्म निरपेक्षता शब्द के अर्थ पर ध्यान न दिया जाय और सिर्फ उसका आशय लिया जाय, तब वह यह है कि दूसरे के भावों का भी समान आदर किया जाय। पच्चासी फीसदी जनसंख्या की आस्था सदियों से यह है कि राम चन्द्र जी का जन्म उस स्थान पर हुआ था जहां विक्रमादित्य ने अयोध्या में मन्दिर निर्माण कराया था। यह ज़ाहिर है कि उस मन्दिर को सन् 1528 में बाबर ने मस्जिद में बदलवा दिया था। लेकिन पच्चासी फीसदी की भावना की उपेक्षा कर दूसरों की भावना पर ज्यादा बल दिया जा रहा है। अभी हाल में काश्मीर में अनेक मन्दिरों की मूर्तियां तोड़ कर फेंक दी गई। उस वक्त किसी ने यह आवाज़ नहीं उठायी कि यह धर्म निरपेक्षता के खिलाफ है।
सचमुच देखा जाय तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम और हमलावर बाबर में कोई तुलना नहीं।

दलील दी जाती है कि जिस जगह मस्जिद बनाकर नमाज़ पढ़ ली जाती है उसे वहां से हटाया नहीं जा सकता और न ही उसे किसी दूसरे काम में लाया जा सकता है। लेकिन अनेकों उदाहरण हैं जब कि मस्जिदों को उनके नियत स्थान से हटा दिया गया। इसी बीसवीं सदी में सउदी अरबिया में, जहां पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म स्थान मक्का है, सड़कें चौड़ी करने के लिए और नई बड़ी-बड़ी ऊँची-ऊँची इमारतें बनवाने के वक्त जो मस्जिदें बीच में आ रही थीं। उन्हें वहां से हटाकर दूसरी जगह बनवा दिया गया।

एक लेखक ने इस सिलसिले में दो जोरदार मिसालें दी हैं:- सन्-1453 में तुर्कों ने इस्तम्बूल जो अब कांस्टैंटीनोपिल कहा जाता है, कब्ज़ा कर लिया था और विजेता मोहम्मद द्वितीय ने "होली एपासिल चर्च" को मस्जिद में बदल दिया। उस मस्जिद को "फतहे कैमी" का नाम दे दिया गया था। लगभग 500 साल तक वह चर्च मस्जिद के बतौर इस्तेमाल होता रहा और वहां बराबर नमाज़ पढ़ी जाती रही। मगर 1937 में कमालपाशा ने, जो टर्की के एक प्रगतिशील शासक थे, ईसाइयों की भावना का आदर करते हुए वह इमारत उन्हें वापस कर दी।

दूसरी मिसाल शाहजहां के वक्त की है। अहमदाबाद के पास सरसपुर में चिंतामणि पारसनाथ जी का जैन मन्दिर था। उस मन्दिर पर 1645 में औरंगजेब ने जब वह गुजरात के गवर्नर थे अपने कब्जे में कर लिया और उस "कुवतुल इस्लाम" का नाम दे मस्जिद में बदल दिया। इस घटना से दुःखित हिन्दुओं ने शाहजहाँ के दरबार में जाकर औरंगजेब की इस हरकत के बारे में कहा और उसे लौटाने की फरयाद की।

उनकी फरयाद सुनकर बादशाह ने उन मीनारों को जो उस मन्दिर में औरंगजेब ने बनवा दी थीं गिरवाने का हुक्म देकर उस स्थान को हिन्दुओं को लौटा दिया।

क्या बाबरी मस्जिद के बारे में इन मिसालों से नसीहत नहीं ली जा सकती ? राम जन्म भूमि का स्थान वापस कर 462 साल पहले जो उसे मस्जिद में बदल कर ज्यादती की गई थी क्या उसे अब सही कर पच्चासी फीसदी के प्रति सद्भावना व्यक्त नहीं की जा सकती ताकि मसले को खत्म किया जा सके और सौहार्दपूर्ण वातावरण बन जाय। □

यज्ञ शाला का उद्घाटन

दानवीर महाशय अनवार-अहमद खाँ द्वारा प्रदत्त भूखण्ड पर आर्यसमाज विकासनगर की भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन दिनांक- 3 दिसम्बर 1990 को प्रातः 8 से 11 बजे के बीच आ०प्र० नि० सभा, उ०प्र० की उपप्रधान डा० श्रीमती आशारानी राय के करकमलों से सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर अमरशहीद स्वा० श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस तथा लखनऊ जिलासभा का मासिक अधिवेशन भी बड़े समारोह के साथ मनाया जायेगा। जनता की उपस्थिति प्रार्थनीय है ।

काम राम का

• देव द्विज

अब जाग गए तो जीना है,
यदि नहीं जगे तो मरना है।
बहुत जप लिया है राम राम,
अब काम राम का करना है।।
थे राम हमारे "आर्यपुत्र",
बन जाउ आर्य हिन्दुओं मित्र।
रामचन्द्र के उपदेशों से,
कर लो अपना जीवन पवित्र।
हुआ राम मय विश्व सर्वत्र,

जनमानस में खिंच गया चित्र।
वे मर्यादा पुरुषोत्तम थे,
क्या अपनाया उनका चरित्र।
समवेत बने साकेत देश,
पुरुषार्थ राम का धरना है।
बहुत जप लिया है राम राम,
अब काम राम का करना है।।
हे युवक आर्य तुम बन जाओ,
जाति पांति को दूर भगाओ।
सभी परस्पर भाई बन कर,
ऊँच नीच के भेद भुलाओ।
आत्म निरीक्षण पर दृष्टि लाओ,
आरक्षण पर मत ललचाओ।
हीन भावना को विसराकर,
स्वाभिमान से ऊपर आओ।
पतित-दलित संताप सभी का,
पतितों को मिलकर हरना है।
बहुत जप लिया है राम राम,
अब काम राम का करना है।।
प्रिय निषाद को गले लगाया,
शिवरी का सम्मान बढ़ाया।
सब साथ ले लिये बनवासी,
उन्हें राम ने श्रेय दिलाया।
भारत का संगठन दृढ़ाया,
उत्तर -दक्षिण मेल कराया।
भाषा-प्रान्त आदि की सीमा,
हर भेद भाव अवरोध हटाया।
हर भारतीय राम का वंशज,
अब नहीं परस्पर लड़ना है।।
जब सभी आर्य हो जायेंगे,
तब सभी एक हो जायेंगे।
जो आज विरोधी बनते हैं,
कल मन्दिर वही बनायेंगे।
जो पक्षपात दिखलायेंगे,
यदि रावण बनकर आयेंगे।
तो उसी भांति होगा विनाश,
हर वर्ष जलाये जायेंगे।
हो चुका बहुत मद का उफान,
अब मद मर्दन हो मारना है।
बहुत जप लिया राम राम,
अब काम राम का करना है।।
जो हमे स्वर्ग से प्यारी है,
भारत भू की हर क्यारी है।
श्री राम लला की जन्मभूमि,
श्रुति स्मृति लिए उजियारी है।
आ गई आज फिर बारी है,
हुतात्म रक्त बलिहारी है।
उद्धार भूमिका करने को,
हो चुकी सभी तैयारी है।
श्री राम काम आदर्श काम,
अब उठो अयोध्या चलना है।
बहुत जप लिया राम-राम,
अब काम राम का करना है।।

★ आर्यसमाज भूमा (मुजफ्फरनगर)

प्रधान - श्री हुकुमसिंह आर्य
मन्त्री - श्री तेजपाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री नवाब सिंह आर्य

पजाकरण स० एल० डब्ल्यू / एन.पा. ७९

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
पौष शुक्ल - १२ संवत् २०४७ वि०
दिनांक: ३०, दिसम्बर १९९०
दूरभाष २४५९९२

आर्य जनता सावधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को बदनाम करने की दृष्टि से ७१९९० से निष्कासित स्वामी अग्निवेश एवं कैलाशनाथ सिंह यादव ने "भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा" के नाम से एक अवैधानिक संगठन खोल कर आर्यजनता में भ्रामक प्रचार प्रारम्भ कर दिया है। समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इस तथाकथित अवैधानिक संगठन को अपना किसी प्रकार का सहयोग न दें।

- सभामन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।